प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रथम संस्करण
वि० सं० २०१४, शकाब्द १८७९, सन् १९५७ ई०

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य सजिल्द

मुद्रक
एच० एम० कामथ
नेशनल हेराल्ड प्रेस,
लखनऊ

समर्पण

परगत डा० काशीप्रसाद जायसवालको

जिनकी स्मृति अठारह वर्षोंके अनन्त वियोगके बाद भी

मेरे जीवन की प्रिय निधि है

वक्तव्य

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड के 'वक्तव्य' मे यह निवेदन किया जा चुका है कि परिषद् ने इसका प्रकाशन किस परिस्थिति में क्यो स्वीकृत किया था और इसकी मुद्रणशैली में परिषद् की नियम-परम्परा से कुछ भिन्नता होने का कारण क्या है ,

प्रस्तुत खड की छपाई १९५४ ई० में ही शुरू हो गई थी। पहला खड इसके बाद छपने लगा और इससे एक वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो गया। इस खड के प्रकाशन में अनिवार्य कारणो से विलम्ब तो हुआ, पर कठिनाइयो को देखते हुए विलम्ब स्वाभाविक जान पडता है। विज्ञ पाठक इस बात का अनुमान कर सकते हैं।

पहले खण्ड से इस खण्ड का आकार डेवढा है। दोनो खण्ड मिलकर यह इतिहास एक हजार पृष्ठो से अधिक का हुआ है। इसकी विशालता के अनुसार लेखक की श्रमशीलता का अनुमान भी पाठक अनायास कर सकते है।

श्री राहुल जी की साहित्यसेवा पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने साहित्य के विभिन्न विषयो पर जितना अधिक लिखा है, उतना दूसरा कोई एक साहित्यसेवी अबतक नही लिख सका है। उन्हें केवल उद्भट लेखक न मानकर एक सुप्रतिष्ठित साहित्यिक सस्था ही मानना उपयुक्त होगा। उनकी नई खोज और नई प्रतिभा की न देसे हुई हिन्दी-साहित्य की समृद्धि सादर उल्लेखनीय है।

वर्तमान युग की अन्तरराष्ट्रीय राजनीति मे एसिया का महत्त्व दिन-दिन बढ रहा है। उसमे भी मध्य एसिया के साथ भारत के ऐतिहासिक सम्पर्क की प्राचीनता पर ध्यान देने मे इस इतिहास की उपादेयता और भी बढ जाती है। इसकी प्रामाणिकता का अनुभव स्वय पाठक ही कर सकते है, क्योकि श्री राहुलजी के बहुवर्षव्यापी मौलिक अनुसन्धान के परिणाम-स्वरूप यह इतिहास तैयार हुआ है। अत आशा है कि इससे हिन्दी के चिरकालानुभूत अभाव की पूर्त्ति होगी।

कात्तिक-पूर्णिमा, शकाब्द १८७९ — शिवपूजन सहाय

नवम्बर १९५८ ई० — (सचालक)

प्रस्तावना

पुस्तकके अतिम खडको पाठकोके हाथ मे जाते देखकर, मालूम होता है, एक वडा भार सिर से उतर गया। इस सारे समयमे कई वार आशा और निराशाके वीचमें भटकना पडा था। वाधाये कभी प्रकाशकका ओरसे और कभी प्रेसकी ओरस आ जाती थी। एक प्रेसमें प्रथम खडके आठ-दस फार्म कपोज हो जानेके वाद काम रुक गया, और अतमे प्रकाशक वदलने पर ही गाडी आगे चली। द्वितीय खडको मैंने स्वय कागज दे कर अपनी जिम्मेवारीपर प्रेसमें दे दिया, पर प्रेसकी गडवडी इतनी हो गई, कि आशा नही थी, नैया पार होगी। खैर, "कुफ्र टूटा खुदा-खुदा करके"। ऐसी वाधायें उपस्थित न हुई होती, तो ग्रथ तीन साल पहले ही प्रकाशित हो गया होता।

मध्य-एसियाके इतिहासपर किसी भी भाषामे कोई विस्तृत ग्रथ नही है। जो एकाध है भी, वह वहुत सक्षिप्त तथा कालमें वहुत दूरतक हमें नही ले जाते, और न वह आधुनिकतम सामग्रीपर आधारित है। मध्य-एसियाके इतिहासकी सामग्रीकी गवेषणा सोवियत रूसमे वहुत हुई है। किसी-किसी कालपर ग्रथ भी लिखे गये, पर सपूर्ण कालके ऊपर लिखनेको आगेके लिये छोड दिया गया। इन वातो से लेखककी कठिनाई मालूम होगी। इस ग्रथमे अनेक त्रुटिया होनी विल्कुल सभव है। १९४७ के वाद की उपलब्ध सामग्रीका वहुत कम उपयोग मैंने कर पाया है। भारत में सोवियतमे प्रकाशित ग्रथ और अनुसधान-पत्रिकायें सुलभ नही है।

मध्य-एसियामे चीनी मध्य-एसिया भी शामिल है। जिसके किसी-किसी कालपर इस ग्रथमें काफी विवेचन हुआ है, पर पूरी तौरसे लिखना वाकी है। मेरी इच्छा तिव्वत को लेते चीनके इतिहासपर एक विस्तृत ग्रथ लिखनेकी है। यदि उसके लिखनेमें सफल हुआ, तो यह कमी पूरी हो जायगी। पर, इसमें आयु और भौतिक वाधायें ही रास्ता रोके नही है, वल्कि हमारे स्वतत्र देशकी नौकरशाही भी पूरी तौरसे रोडा अटकाने के लिये तैयार है। अग्रेजी शासनमे सिर्फ पहली बार मुझे छिपकर तिव्वत जानेकी जरूरत पडी थी। मेरे राजनीतिक विचार उस वक्त भी वही थे, जो आज है। पर, अग्रेजी सरकार और अग्रेज नौकरशाहोनें सास्कृतिक कार्यके महत्वको समझते वाधा नही दी।

१९३४ ई० में मै दूसरी वार तिव्वत जानेके लिये ब्रिटिश पोलेटिकल एजेंटके पास गतोकमे आज्ञापत्र लेने गया। नाम मालूम होते ही वह वडे हर्षके साथ मिले। और आज्ञापत्र ही नही दिया, वल्कि अधिक आत्मीयता दिखलाने के लिये तिव्वतमें अपने लिय हुए फोटो दिखलाये, कितनी ही वातें पूछी। उसीके स्थानपर १९५० मे जो भारतीय सज्जन थे, वह मिलनेपर विलकुल दूसरे ही सावित हुए। उन्हे तिव्वतके वारेमें कोई जिज्ञासा नही थी, और शिष्टाचारके नाते ही एक-दो मिनटके लिये मिले। नौकरशाही ने एकवार पासपोर्ट देनेसे इन्कार किया, खैर, दूसरी वार कोशिश करने पर वह मिल गया। उसके लिये वडी उत्सुकता इसी कारण है, कि तिव्वतमें भारतीय सस्कृत-ग्रथोकी नई तालप्रतियोके मिलनेकी सभावना है।

ग्रंथके प्रकाशित होनेका सबसे अधिक श्रेय श्रीजगदीशचंद्र माथुर (तत्कालीन शिक्षा-सचिव, बिहार) और श्री शिवपूजन सहाय को है। शिवपूजन बाबू तो ग्रंथको प्रकाशित देखनेके लिये मुझसे भी अधिक उतावले थे।

मसूरी,

२०-१-५६ **राहुल सांकृत्यायन**

विषय-सूची

अध्याय — पृष्ठ

भाग १

उत्तरापथ (१२००-१५५० ई०)

१ चीनमें मगोल-वंश (१२००-१३६८ ई०) ३

१ छिङ-गिस् ३
२ उगेताइ (ताइ-चुङ) ४
३ गू-युग्, गो-दान (चिङ-चुङ) ६
४ मुङ-खे (स्यान्-चुङ) ७
५ कुबिलेइ (शि-चू) ७
(१) मार्को पोलो १०
(२) जाति-व्यवस्था १२
६ थुवु-थेमुर (चेङ-चुङ) १४
७ खु-लुग् (वू-चुङ) १४
८ वोयन्-थू (जुन्-चुङ) १५
९ गेगेन्, शु-तु-फल (यिङ-चुङ) १५
१०. यिसु-थेमुर (ताइ-चिङ-ति) "
११ रिन्-छेन्-फग्-, (यू-चू) "
१२ कुसलऽ (मिङ-तिङ) "
१३ थुग्-थेमुर (वेन्-चुङ) १६
१४ रिन्-छेन्-पल् (निङ-चुङ) १६
१५ थेगन्-थेमुर (शुङ-ति) १६
वंश-वृक्ष १७

२ सुवर्ण-ओर्दू (१२२४-१३७५ ई०) १८

१ जू-छि (तू-शि) १८
२. बा-तू खान, जू-छि-पुत्र २०
(क) बाश्किर-विजय २१
(ख) बोल्गार-विजय २१
(ग) सकसिन-विजय २२
(घ) मास्को-विजय २२
(ङ) कियेफ्-विजय २२
(च) यूरोप-विजय २३

अध्याय — पृष्ठ

मगोल-हथियार २४
३ सरतक २६
४ उलकची २६
५ बेरेक (बरका) २६
६ मङ-गू-ते (मुङ-खे) तेमूर २९
७ तुदा-मङ्गू २९
८ तोगताइ २९
नोगाइके साथ सघर्ष ३०
९ उज्बेक खान ३१
(१) आपसी सघर्ष ३१
(२) यूरोपपर अभियान ३४
(३) मास्को राजुल ३८
(४) इस्लामसे सहानुभूति ३६
१० दिनीबेग ३८
११ जानीबेग ३८
(१) प्लेग महामारी ३८
(२) ईरानपर आक्रमण ३९
१२ बरदीबेग ४२
१३ किलदीबेग ४२
१४ नौरोज़बेग ४२
१५ चेरकेसबेग ४२
१६ ओर्दा शेख ४३
१७ खिजिर ४३
१८ कुलफा ४३
१९ तेमूरखोजा ४३
२० मुरीद ४३
२१ अजीज ४३
२२ हाजीखां ४३
वंशवृक्ष

३ श्वेत-ओर्दू (१२२४-१४२५ ई०) ४५

१. जू-छि ४५

अध्याय	पृष्ठ
२ ओरदा, एमन	४६
३ कोनिचि	४६
४ बायन	४७
५ सर्सावुगा	४८
६ एर्जन	४८
७ मुबारक खोजा	४८
८ चिमिताई	४८
९ उरुस खान	४८
१० तोगताकिया	५०
११ तेमूर्बेग	५०
१२ तोख्तामिश	५१
मास्को-ध्वंस	५१
तेमूरके साथ लड़ाइयाँ	५५
प्रथम महाभियान	५६
द्वितीय अभियान	६०
१३ कोइरिचक	६२
१४ तेमूर कुतुलुक	६२
१५ शादीबेक	६३
१६ पुलाद खान	६३
१७ तेमूर खान	६४
१८ जलालुद्दीन जलावेर्दी	६५
१९ करीमबर्दी	६५
२० चिङ-गिज ओगलान	६५
२१ जब्बार बर्दी	६६
२२ दर्विश खान	६६
२३ कादिर खान	६६
२४ [illegible]	६६
२५ उलू मोहम्मद	६७
२६ सैयद अहमद	६७
२७ मोहम्मद	६७
[illegible] (तुर्क)	६८
२८ मुहम्मद सुल्तान	६९
२९ दौलत बर्दी	६९
३० [illegible] बर्दी	६९
३१ अली बेक	६९
३२ [illegible] (मिर्ज़ा)	६९
३३ कासिम	६९
३४ [illegible], [illegible]	७०

अध्याय	पृष्ठ
वंशवृक्ष	७०
४ रूस रुरिक-वंश (९११-१५९४ ई०)	७१
अवतरणिका	७१
शक-सरमात	७१
वेन्द	७१
अंत	७१
रूसोंके पड़ोसी मगोलायित	७३
वोल्गार	७३
खजार	७४
पेचेनेगा	७५
क कियेफके राजुल	७५
१ रुरिक	७५
२ ओलेग्	७७
३ ईगर	७८
४ ओल्गा, ईगर पत्नी	८२
५ स्व्यातोस्लाव I	८२
६ व्लादिमिर	८३
ईसाई-धर्म स्वीकार	८३
७ स्व्यातोपोल्क	८४
८ यारोस्लाव I	८४
"रुस्कया प्राव्दा"	८५
९ इज्यास्लाव	८६
स्व्यातोस्लाव	८७
१० स्व्यातोपोल्क	८७
११ व्लादिमिर मनोमाख	८७
"ईगर-सेना-गाथा"	८९
ख रोस्तोफ-सुज्दल-राजुल	९०
१२ यूरी I दीर्घबाहु	९०
१३ अन्द्रेइ बगोल्युबोव्स्की	९१
१४ व्सेवोलद	९१
१५ यूरी	९२
१६ यारोस्लाव	९२
नब्गोरोद	९३
१७ अलेक्सान्द्र नेव्स्की	९५
ग मास्को महाराजुल	९६
१८ दानियल	९६
२० इवान I (धनथैला)	९७
२१. सेमेओन	९७

अध्याय	पृष्ठ
२२. इवान II	९७
२३. दिमित्रि दोन्स्की	९८
२४ वासिली	९९
२५. वासिली II अध	९९
२६ इवान III	९९
मगोल शासन समाप्ति	१००
तुर्की	१००
अफनासीकी भारत-यात्रा	१०१
२७ वासिली III	१०६
२८ येलेना	१०६
२९ इवान IV	
राज्य-विस्तार	१०७
येरमक द्वारा साइबेरिया-विजय	१०९
३० फ्योदर	११५
वशवृक्ष	११७

भाग २

दक्षिणापथ (१२२४-१७४३ ई०)

अध्याय	पृष्ठ
१ चगताई वश (१२२२-१३७० ई०)	१२१
१ जगताई	१२१
बुखारा-विद्रोह	१२१
राजावलि	१२५
२ करा हुलाकू	१२६
३ येस्सू मङ्-गू	१२६
करा हुलाकू	१२७
४ एरगेना	१२७
५ अलगू (अरिकबुगा)	१२८
६ मुबारकशाह	१२९
७. बोराक	१२९
८ निगपई	१३१
९ तोका तेमूर	१३१
१० दुवा (दावा)	१३१
११ कुजेक (कचोक)	१३३
१२ तलिकू (खिजिर)	१३३
१३ केबेक	१३३
१४ एसेनबुगा	१३३
केबेक (पुन)	१३४
१५ इलिकदई	१३४
१६. तुवा (दुवा) तेमूर	१३४
१७. तरमाशेरिन (धर्म-छे-रिङ)	१३४
१८. बूज़न	१३५
१९ जेंकिश	१३५
२०. येस्सुन तेमूर	१३६
२१. अली सुल्तान	१३६
२२. मुहम्मद पुलाद	१३६
२३. काजान (गाजान)	१३६
२४ दानिशमद	१३६
२५ बायन कुल्ली	१३६
२६ तेमूरशाह	१३६
२७ इलियास खोजा	१३७
२८ काबिलशाह	१३७
चगताई-अर्थ-नीति	१३७
साहित्य	१३७
वशवृक्ष	१३८
२ हुलाकू-वश (१२५६-१३४५ ई०)	१३९
राजावलि	१३९
१ हुलाकू, खुलागू	१३९
२ अबका	१४३
३ अहमद तगूदर, निकोदर	१४३
४ अरगून	१४३
५ गैखातू	१४४
६ बैदू	१४४
७ गाजन	१४४
८ उल्जैतू (खुदाबन्दा)	१४५
९ अबूसईद	१४५
वशवृक्ष	१४७
हजारा	१४७
साहित्य	१४७
३ तेमूर-वश (१३७०-१५०० ई०)	१४८
१ तेमूरलग	१४८
तोकतामिशपर आक्रमण	१५०
भारतपर आक्रमण	१५१
तेमूरके उत्तराधिकारी	१५४
राजावलि	१५५
१. खलील सुल्तान	१५५
३. शाहरुख	१५५
४. उलुगबेग	१५७

अध्याय	पृष्ठ
साहित्य	१५८
५ अब्दुल्लतीफ	१५८
६ अब्दुल्ला	१५९
७. अबूसईद	१५९
८ अहमद	१६०
कवि नवाई	१६०
९ सुल्तान मुहम्मद	१६२
१० बैसुकर	१६२
११ सुल्तान अली	१६३
१२ जहीरुद्दीन बाबर	१६३
साहित्य और संस्कृति	१६३
वंशवृक्ष	१६४
४ शैबानी-वंश (१५००-९९ ई०)	**१६५**
अबुल्खैर	१६५
राजावलि	१६७
१ मुहम्मद शैबानी	१६७
२ कुचुनजी	१७३
३ अबूसईद खान	१७७
४ उबैदुल्ला	१७८
५ अब्दुल्ला I	१७९
६ अब्दुल्लतीफ	१७९
७ नौरोज मुहम्मद	१७९
८ पीर मुहम्मद	१७९
९ इस्कन्दर	१७९
१० अब्दुल्ला II	१८०
११ अब्दुल मोमिन	१८२
१२ पीर मुहम्मद	१८२
साहित्य संस्कृति	१८३
वंशवृक्ष	१८३
५. अस्त्राखानी (१५९९-१७८३ ई०)	**१८५**
१ दीन मुहम्मद	१८५
राजावलि	१८६
२ बाकी मुहम्मद	१८६
३ वली मुहम्मद	१८६
४ सैयद इमामकुली	१८७
५ सैयद नादिर, नाजिर	१८९
६ सैयद अब्दुल अजीज	१९०
७ सैयद सुभानकुली	१९१
८ मुकीम	१९२
९ उबैदुल्ला I	१९२
१० अबुल्फैज	१९२
११. सैयद अब्दुल् मोमिन	१९४
१२ सैयद उबैदुल्ला II	१९४
१३ सैयद अबुल्गाजी	१९४
वंशवृक्ष	१९५
६ खीवा-खान (१५१५-१७१४ ई०)	**१९६**
१ इलबर्स	१९९
२ सुल्तान हाजी	१९९
३ हसनकुल्ली	१९९
४ सोफियान	१९९
५ बुजुगा	२००
६ अवानेक	२००
७ काल	२०१
८ अकताई खान	२०१
९ दोस्त खान	२०२
मुहम्मद	२०२
१० हाजिम मुहम्मद	२०५
जेन्किन्सन (अंग्रेजी यात्री)	२०५
११ अरब मुहम्मद	२०६
१२ इस्फन्दयार	२०७
१३ अबुलगाजी	२०८
१४ अनुशा मुहम्मद	२११
१५ मुहम्मद एरेंक (औरंग)	२१२
१६ शाहनियाज	२१२
१७ अरब मुहम्मद II	२१२
१८ हाजी मुहम्मद	२१२
१९ यादगार	२१२
वंशवृक्ष	२१२

भाग ३

उत्तरापथ (१५९-१८०१ ई०)

अध्याय	पृष्ठ
१ रूसका प्रसार (१५९८-१८०१ ई०)	**२१७**
१ बीचके जार	२१७
१ बोरिस गदुनोफ	२१७
२ फ्योदोर	२१९
३ दिमित्रि (मिथ्या)	२१९
४. वासिली शुइस्की	२२०

अध्याय	पृष्ठ
५ व्लादिस्लाव	२२१
२ रोमनोफ-वंश	२२४
१. मिखाइल	२२५
चीनतक प्रसार	२२७
२ अलेक्सी	२२७
शासन-यंत्र	२२८
उक्रइन विलयन	२२९
वोल्गाकी-जातिया	२३४
राज़िन-विद्रोह	२३५
साइबेरियामे प्रसार	२३८
चीनसे सबध	२४१
साइबेरियामें विद्रोह	२४४
साइबेरियामे रूसी बस्तिया	२४४
३ फ्योदोर	२४५
४ इवान IV	२४६
५. पीतर I	२४६
पूर्वमें प्रसार	२५१
शासन-सुधार	२५१
शिक्षा और संस्कृति	२५२
पीतरबुर्ग-निर्माण	२५२
साइबेरिया	२५२
चीनके साथ सबध	२५३
६. एकातेरिना I	२५५
७. पीतर II	२५६
८ अन्ना	२५६
९ इवान II	२५७
१० एलिज़ाबेत	२५७
११ पीतर III	२५८
१२. एकातेरिना II	२५९
प्रथम तुर्की युद्ध	२६०
किसान-सघर्ष (पुगाचेफ)	२६१
वैदेशिक नीति	२६२
चीनसे सबध	२६३
शिक्षा और संस्कृति	२६४
रूस प्रतिगामिताका गढ	२६७
१३ पावल I	२६८
साइबेरियाकी जातिया	२७१
२ श्वेत-ओर्दू (१४२५-१७२८ ई०)	२७५
राजावलि	२७५

अध्याय	पृष्ठ
१ बुर्राक	२७५
२ गिराई	२७५
३. बरेदक	२७७
४. कासिम	२७७
५ मीमाश (बिनाश)	२७७
६. ताहिर	२७७
७ उजियाक अहमद	२७८
८ अकनजर	२७८
९. शिगाई	२७९
१० तवक्कल	२८०
११. इशिम	२८१
१२. यमगीर, जहागीर	२८२
१३. तौफीक	२८२
वंशवृक्ष	२८३
३ नोगाई	२८४
१ नोगाइ (१३००-१७२४ ई०)	२८४
१ नोगाई	२८४
२. चुको	२८४
३ बुरी	२८५
४ कराकिज़िक	२८५
५. करा नोगाई	२८६
२ महानोगाई	२८६
१ नूरुद्दीन	२८६
२ ओकस	२८६
३ यमागुरची	२८६
४ शेख ममाई	२८७
५. युसुफ मिर्जा	२८७
६ अली मिर्जा	२८७
७ इस्माईल मिर्जा	२८७
८. दीनमुहम्मद	२८८
९ उरुस	२८९
१० अलूता	२८९
३ कराकल्पक	२९०
१ ऊपरी कराकल्पक	२९१
२. निचले कराकल्पक	२९१
बातिरखान काइप	२९२
४. मुगोलिस्तानके खान (१३२१-१५६५ ई०)	२९३
राजावलि	२९५

अध्याय	पृष्ठ
१ तुगलक तेमूर	२९५
२ इलियास खोजा	२९६
३ खिजिर मुहम्मद	२९७
४ शमाजहान	२९८
५ मुहम्मद	२९८
६. नक्शेजहान	२९९
७ शेरमुहम्मद	२९९
८ ऐइस	३००
९ शातुक	३०१
१० एसेनबुगा	३०१
११ दोस्तमुहम्मद	३०३
१२ यूनस	३०४
१३ महमूद	३०६
१४ मन्सूर	३०७
१५ सईद	३०८
तिब्बतपर जहाद	३११
१६ रशीद	३१२
१७ अब्दुल करीम	३१३
१८ मुहम्मद खान	३१३
१९ इस्माइल खान	३१३
वंशवृक्ष	३१४
५ मित्रिस्तान (१५००-१६५९ ई०)	३१५
१ ईवक	३१५
२ मुर्तुजा	३१५
३ कुचुम	३१६
४ अली	३१८
५ इशिम	३१९
६. अबलई गिराई	३१९
७ दौलत गिराई	३१९
वंशवृक्ष	३२०
६ जुंगार-साम्राज्य (१५८२-१७५७ ई०)	३२१
कल्मक-मंगोल	३२१
मंगोल-राजावलि	३२१
अन्तर्-मंगोलिया	३२४
बाह्य-मंगोलिया	३२४
तातार	३२५
जुंगर-राजावलि	३२५
१ खरखुल	३२५
२ बातुर थैची	३२५
३. सेङ्-गे	३२८
४ गल्दन् I	३२८
५ छेवङ-रब्तन	३३०
शासन-व्यवस्था	३३३
उपज	३३४
६ गल्दन II छेरिङ	३३४
७ वायन	३३५
८ छेवङ दोर्जे	३३५
९ दावा छेरिङ	३३५
१० अमुरसना	३३६
वंशवृक्ष	३३७
७ वोल्गा-कल्मक (१६१६-१७७१ ई०)	३३८
राजावलि	"
१. खुङ थैची उर्लुक	"
२ दै-शिङ	"
३ फुन्-छोग	३३९
४ आयकम् थैची	"
५ छेरिङ दोण्डुव्	"
६ दोण्डुव् अम्बो	"
७ दोण्डुव् थैची	"
८ उबासा	३४०
कल्मकोंका भागना	"
वंशवृक्ष	३४२
८ कजाक-ओर्दू (१७१८-१८१८ ई०)	३४३
क मध्य-ओर्दू (१७१८-१८१९ ई०)	"
१ पुलाद	"
२ अबुल् मुहम्मद	३४५
३ अबलई	३४६
४ वली	३४८
ख लघु-ओर्दू (१७४४-१८१८ ई०)	३५०
१ अदिया	३५०
२ अबुल्खैर	"
३. नूरअली	३५३
४ एरली	३५६
५ इशिम	३५७
६ ऐचुवक	"
७ जती उरा	"
८ शेरगाजी	"
वंशवृक्ष	३५८
ग. महा-ओर्दू (१७८०-९० ई०)	"

अध्याय	पृष्ठ
१. एलवर्स	३५९
२. तिउल वी	३६०
३. कुसियन वी	"
भाग ४	
दक्षिणा-पथ (१७४७-१९१७ ई०)	**३६३**
१ जारशाहीका अंतिम प्रसार (१८०१-१९१७ ई०)	३६५
१४ अलेकेसान्द्र	"
नोपोलियनसे युद्ध	३६६
सुधार	३७०
काकेशस-विजय	३७१
[वोलगाके लोग	३७२
भौगोलिक अभियान	"
दिसवरी-विद्रोह	३७३
चीनसे सपर्क	३७४
१५ निकोलाइ I	"
पूजीवादी विकास	३७६
ईरान-तुर्की-युद्ध	३७७
शामिलका विद्रोह	"
मध्य-एसियाकी रियासतें	३७८
साइवेरियामें प्रसार	३८०
सास्कृतिक और साहित्यिक प्रगति	३८२
हेर्जन (एर्ज्न)	"
व ग. वेलिन्स्की	"
वैज्ञानिक	३८३
साहित्यकार	"
पुश्किन	"
१६. अलेक्सान्द्र I	३८५
तुर्की-युद्ध	३८६
राजनीतिक आन्दोलन	३८७
मध्य-एसियामें प्रसार	३८७
साइवेरिया और चीन	३८८
१७ अलेक्सान्द्र III	३९०
प्रथम मजदूर-आदोलन	३९१
शिक्षा और सस्कृति	३९२
साहित्य	"
मार्क्सवादका प्रचार आरम्भ	३९३

अध्याय	पृष्ठ
१८. निकोलाइ II	३९४
लेनिन	३९५
सस्कृति-साहित्य-विज्ञान	३९६
साहित्य और कला	३९६
रूस-जापान-युद्ध	३९७
१९०५ की क्रांति	३९८
जापानसे सधि	४००
दिसवरका विद्रोह	४०२
वैदेशिक सबध	४०६
औद्योगिक प्रगति	४०८
चतुर्थ दूमाका चुनाव	४१०
विश्व-युद्धकी तैयारी	४११
वल्कान-युद्ध	"
प्रथम विश्व-युद्ध	४१२
मध्य-एसियामें युद्धका प्रभाव	४१४
फर्वरी-क्राति	४१५
२ खोकदके खान (१७४७-१८७६ ई०)	४२०
राजावलि	"
१. शाहरुख वेक	"
२ रहीम वेक	४२१
३ अब्दुलकरीम वेक	"
४ एर्दनी वेक	"
६ आलम खान	४२२
७ उमर खान	४२३
८ मुहम्मद अली	४२४
९ शेरअली	४२७
१०. मुराद	४२८
१२. मल्ला खान	४२९
१३ शाह मुराद	४३१
खुदायार (पुन)	"
१४ सैयद सुल्तान	"
खुदायार (पुन)	४३२
१५ नासिरुद्दीन	४३५
रूसमें विलयन	४३७
वशवृक्ष	४३८
३ बुखाराके अमीर (१७४७-१९२० ई०)	४३९
१ मुहम्मद रहीम	"
२ दानियाल वी	४४०

अध्याय	पृष्ठ
३ शाह मुराद (नगीवेखा)	"
४ हैदर	४४४
शासन-प्रबंध	४४५
वैदेशिक संबंध	"
५ हुसैन	४४६
६ उमर	"
७ नसरुल्ला	"
अंग्रेजोंकी चालें	४४८
प्रथम अफगान-युद्ध	४५०
८ सैयद मुजफ्फरुद्दीन	४५१
रूससे युद्ध	"
९ अब्दुल अहद	४५३
१० मीर आलम	"
शासन-प्रबंध	"
वंशवृक्ष	४५४
४ छोटे-छोटे राज्य	४५५
१ उरातिप्पा और जीजक	"
बाबा बेक, बेक मुराद	४५५
२ शहरसब्ज	"
(१) दानियाल अतालीक	"
(२) खोजाकुल	४५७
(३) अशुर कुली बेक	"
(४) इस्कन्दर	"
(५) बाबाबेक	"
३. कोहिस्तान	४५७
उरगुत	"
४ हिसारके इलाके	४५८
(१) करातगिन	४५९
(२) दरवाज	"
(३) कुलाब	"
(४) शगनान	"
(५) हिसार	"
५ तुखारिस्तान	"
(१) खुल्म	४६०
सिलिच अली	"
(२) कुन्दुज	"
(क) मुराद बी	"
(ख) मुहम्मद अमीन	४७
(३) बदख्शा	४६२
(क) सुलतान शाह	"
(ख) मीर महम्मद	"
(ग) मीर यारबेक	"
(घ) जहांदार	"
(ङ) महमूद	"
(४) मेमना	"
(५) अंदखुद	४६३
(६) शाबिरगान	"
(७) सरीपुल	"
खीवाके खान (१७१४-१८८१ ई०)	
१ बाहरी वंश	"
१ अरक	"
२ शेर गाजी	"
३ इल्बर्स	४६७
४ ताहिर	४६८
५ अबुल् मुहम्मद	"
६ अबुल्गाजी II	"
७ काइप	"
८ अबलगाजी III	४६९
२ ककुरत-वंश	४७०
राजावलि	"
१ इल्तजार	"
२ महम्मद रहीम	४७१
३ अल्ला कुल	४७३
असफल रूसी अभियान	४७४
४ रहीम कुल	४७६
५ अमीन	"
६ अब्दुल्ला	४७७
७. कुतुलुक मुराद	"
८ सैयद मुम्मद	"
मुहम्मद फना	४७९
९. मुहम्मद रहीम	"
रूसी अभियान	४८०
वंशवृक्ष	४८७
तुर्कमान	
१. तुर्कमान भूमि	४८८
२ तुर्कमान कबीले	४८९

अध्याय	पृष्ठ
३ तेक्को का शासन	४९१
४ पोशाक और रूपरेखा	४९३
५ रूससे युद्ध	४९४
साइबेरिया और चीन	४८८
६ अंग्रेजोसे तनातनी	४९७
७ रेल-निर्माण	४९९
८ अश्कावाद	"
९ मेर्व	५००

भाग ५

बोल्शेविक क्रांति (१९१७-२९ ई०)

१. रूसमें क्रांति

१ रूसमें लेनिन	५०३
२ करेन्स्कीकी सरकार	५०४
विद्रोहकी तैयारियां	५०७
३ राजधानीपर अधिकार	५०८
४ दास-जातियोंकी मुक्ति	५११

२ उज्बेकिस्तानमें क्रांति

१ उज्बेक जाति	५१४
२ उज्बेक भूमि	५१७
३ क्रांतिकी लपट	"
४ बोल्शेविक प्रभाव-वृद्धि	५१९
५ खोकंद-स्वायत्ततावादियोंका अंत	५२०
६ समरकंद-विजय	५२४
७ बुखारा-अमीर भगा	५२५
८ उज्बेक जातिका निर्माण	६१७

३ कजाकस्तानमें क्रांति

१ कजाक जाति	५२८
२. १९१६ का विद्रोह	५३०
३ क्रांति-संघर्ष	५३२
४ सोवियत शासनकी स्थापना	५३४

४ किर्गिजिस्तानमें क्रांति

१ किर्गिज	५३५
२ १९१६ का विद्रोह	५३६

५ ताजिकिस्तानमें क्रांति

१ सोग्दियोंके वंशज	५२९
२. बासमची-उत्पीडन	५४२
(१) अनवर पाशा	५४२
(२) ईशान सुल्तान	५४३
(३) फुजेल मकसूम	५४६
(४) इब्राहीम गल्लू	"
३ तजिकिस्तान गणराज्य	"

६ तुर्कमानिस्तानमें क्रांति

१. तुर्कमान कबीले	५४८
२ लालसेना-निर्माण	५४९
३ केर्की-कांड	५५०
४ ईरानका दावा	५५४

मान-चित्र

१ मंगोल-साम्राज्य	४
२ बात्-विजय	१९
३ शक-वंशज	७२
४ रुरिक रूस	७८
५ मास्को-राज्य-विस्तार	९९
६ रुसिया	१०५
७ चगताइ-राज्य	१२३
८ हुलाकू-राज्य	१४२
९. तेमूर-राज्य	१५२
१० शैबानी-अस्त्राखानी राज्य	१७५
११. खीवा खान	१९८
१२ रूस (१७२१ ई०)	२३३
१३ साइबेरियामें विस्तार	२३९
१४ श्वेत ओर्दू	२७६
१५ जुगर-साम्राज्य	२८५
१६ मुगोलिस्तान	२९४
१७ जुगारिया	३२२
१८ मध्य-ओर्दू	३४४
१९ जारशाही प्रसार	४१८
२० मध्य-एसिया (आधुनिक)	५०४-५

परिशिष्ट

१ रूसी भाषा और भारत	५५७
२ स्रोत ग्रंथ	५९३
३ नामानुक्रमणी	६०३

मध्य एसिया का इतिहास

खण्ड २

भाग १

उत्तरापथ (१२००–१५५० ई०)

अध्याय १

चीनमें मंगोल-वंश

(१२००-१३६८ ई०)

१ छिङ-गिस् (१२०६-२७ ई०)

मध्य-एसियामें मगोलोका राज्य कोई अलग-थलग नही था, बल्कि कितने ही समय तक चीनपर शासन करनेवाले मगोल हगान (खाकान, खआन, खान) को ही सभी मगोलखान अपना अधिराज मानते थे। १३ वी सदीमे कोरियासे पोलद और साइबेरियासे पजाब तक मगोलोका साम्राज्य फैला हुआ था। छिङ-गिस्ने अपने विशाल साम्राज्यको अपने जीवन हीमे चारो पुत्रोमे बाट दिया था, लेकिन साथ ही यह व्यवस्था की थी, कि सभी खान अपनेमेंसे एकको अपने ऊपर मानते हुये साम्राज्यमें एक तरहकी एकता कायम रक्खे। घुमन्तू जातियोमे एक तरहकी जनतत्रता स्वाभाविक है। घुमन्तू राजा घुमन्तुओकी अपनी जिस सेनाके बलपर देश-विजय करते है, उसे अपने पक्षमें रखनेके लिये सैनिक जनतत्रता कायम रखना जरूरी है। अपने पूर्वज घुमन्तू-राज्योकी भाति छिङ-गिस्के साम्राज्यमे भी सैनिक जनतत्रता थी। कोई बडे सवालका हल, या खानका निर्वाचन कूरिल्ताईमें होता था, जो सभी राजकुमारो, सैनिक सरदारो और जन-नायकोसे मिलकर बनी थी।

मध्य-एसियामे मगोलोके शासनके इतिहासके समझनेके लिये जरूरी है, कि हम चीनके मगोल-राजवशके इतिहासको भी समझें, साथ ही सुवर्ण-ओर्दू, और ईरानके खुलागू-वशको भी हम नही छोड सकते। इन सबका मैत्री या शत्रुताके रूपमे बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। तगुत नगरके विजयके वक्त छिङ-गिस् आहत हुआ था, जिससे ही अपने चलते-फिरते प्रासाद या महा-गाडीपर ही वह १८ अगस्त १२२७ ई० को मर गया। दुनियामे और राजाओको भी अपने पुत्रोमें राजका बटवारा करते हम देखते है, लेकिन उसका एकमात्र परिणाम उनका जल्दी ही छिन्न-भिन्न हो नष्ट होनेके सिवा और कुछ नही होता। छिङ-गिस् युद्ध और शासनकी व्यवस्थामे अद्भुत् प्रतिभा रखता था, इसलिये उसके बटवारेने कोई उस तरहका दुष्परिणाम तुरत नही दिखलाया और करीब-करीब १२९४ ई० तक खुबिलेके शासनके अन्त तक मगोल-साम्राज्य बहुत शक्तिशाली और एकताबद्ध रहा, जिसमे छिङ-गिस्की दूरदर्शिताका हाथ भी था, इसमे सदेह नही। छिङ-गिस्के मरनेके बादही मगोल-विजययात्रा मन्द नही हुई। १२७९ ई० से सम्पूर्ण चीन, हिन्द-चीन और बर्मापर खुबिले (कुबिलेइ) का शासन स्थापित हुआ। पश्चिम-दक्षिणमें कितना राज्य-विस्तार हुआ, उसके बारेमें हम आगे कहेगे। छिङ-गिस्के मरनेके एक साल बाद (१२२८ ई० मे) मगोल-सेना ईरानमें अस्पहान तक पहुची थी।

छिङ-गिस्की मृत्युके बाद तुरत ही नये हगान (खान) का चुनाव नही हुआ। दो साल (१२२९ ई०) तक छिङ-गिस्-पुत्र तू-लुइ और उसकी रानीकी देख-रेखमें शासन होता रहा और इस सारे समयमे मगोलोकी शक्ति घटनेकी जगह बढती ही रही, यह छिङ-गीसी व्यवस्थाका चमत्कार था।

चीनमें निम्न मगोल खाकान हुये—

१	छिङ-गिस् (चिङ-गीस, ताइ-चुङ)	१२०६-२७ ई०
२	उगेताइ (ताइ-चुङ छिङ-गिस्)-पुत्र	१२२९-४६ "
३	गू-युग (गोदन, उगेताइ-पुत्र चिङ-चुङ)	१२४६-५१ "
४	मुङ-खे (मङ-गू थोलोइ-पुत्र स्यान्-चुङ)	१२५१-५९ "
५	कुबिलइ (ह्वो-बिलइ तू-लोइ-पुत्र, छिङ गिस्-पौत्र शिचुङ)	१२६०-९४ "

६	थु-त्रू-थेमुर (ह्वी-विलइ-पौत्र छिङ-येन्-पुत्र चेङ-चुङ)	१२९४-१३०७ ”
७	त्रू-लुग (धर्मपाल-पुत्र वू-चुङ)	१३०७-११ ,,
८	वोयन्-थू (धर्मपाल-पुत्र जुन्-चुङ)	१३११-२० ,,
९	गे-गेन् (शुद्धफल, वोयन्-थू-पुत्र यिङ-चुङ)	१३२०-२३ ई०
१०	यि-सु-थेमुर, (ताङ-चिङ-ती कमल-पुत्र)	१३२३-२८ ,,
११	रिन्-छेन्-फग् (यिसु-पुत्र यू-चू)	१३२८ ,,
१२	कुसलङ, (मिङ-चुङ त्रू-लुग-पुत्र)	१३२८-२९ ,,
१३	थुग्-थेमुर, (वेङ-चुङ वोयन्-थू-पुत्र)	१३२९-३२ ,,
१४	रिन्-छेन्-पल् (कुसलङ-पुत्र मिङ-चुङ)	१३३२-३३ ,,
१५	थेगन्-थेमुर, (शुङ-न थुग्-थेमुर-पुत्र)	१३३३-६८ ,,

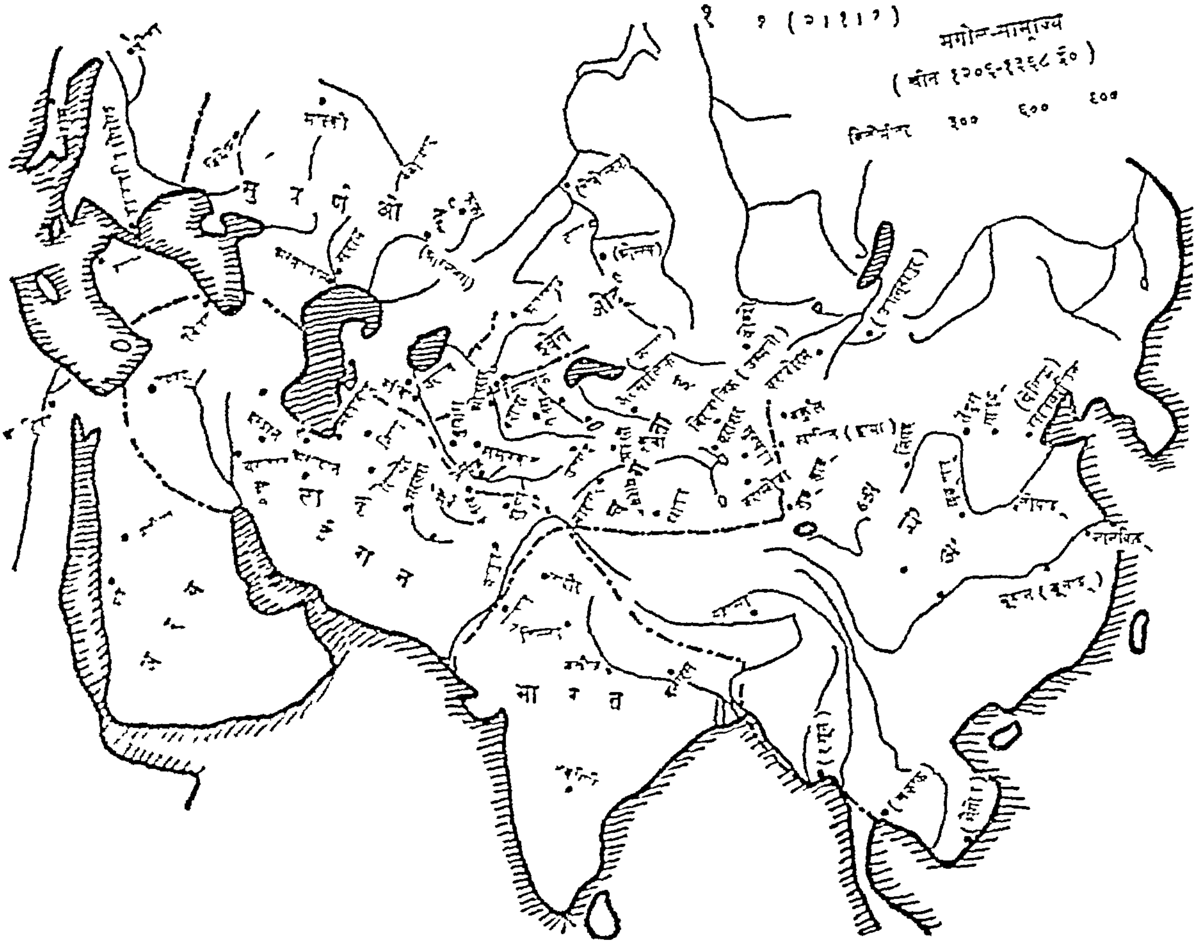

वह राज्यपाल रह चुका था। येल्युका जन्म ११९० ई० मे हुआ था, इस प्रकार राज्य-शासकके इस सर्वोच्च पदपर वह ३९ वर्षके उमरमे पहुच गया। कूरिल्ताईने जू-छि-पुत्र सुन्ताइको बातूके साथ यूरोप-विजयके लिये भेजा। मध्य-एसियाकी मगोल-सेनाने आगे बढकर मेसोपोतामिया, दियारवेकर, और आसपासकी भूमिका सर्वसहार किया। चीनमें अपने बचे-खुचे राज्यके लिये खैरियत मनाते किन्-सम्राट्ने मगोलोसे सुलह करनी चाही, लेकिन मगोल एक समय दो सम्राट् माननेके खिलाफ थे। किनोने जानपर खेलकर मुकाबिला किया और मगोलोको १२३० ई० मे दो बार करारी हार दी। किन्-खतरा इतना बढ गया, कि उगेताइ और उसके भाई तू-लुइने स्वय सेनाकी बागडोर अपने हाथमे ली। इस समय शेन्सी सारा मगोलोके हाथमे था और किन् (सुवर्ण) केवल होनान्के शासक रह गये थे। मगोल कोरियापर भी हाथ साफ करना चाहते थे, इसलिये वहाके राजाने मगोल-राजदूतको मार डाला। इसपर मगोल-सेनाने आक्रमण करके १२३२ ई० मे कोरियापर अधिकार कर लिया। १२३२ ई० मे सफल अभियानके बाद दोनो भाई मगोलिया लौट आये, वही अक्तूबरमे तू-लुइका देहात हो गया। अब छिङ-गिस्-पुत्रोमे जगतइ और चीन-सम्राट् उगेतइ बच रहे थे।

छिङ-गिस् (चगेज) के जीवनमे ही एक बार मगोल-सेना रूसके भीतर तक विजय-यात्रा कर आई थी। लेकिन वह बहुत कुछ लूट-मारका अभियान था। अब वह विजय करके वहा अपना दृढ शासन स्थापित करनेके लिये बढी थी। सुन्ताइने वोल्गाके किनारे अवस्थित बोल्गारोकी राजधानी बोल्गार नगरको जीतना चाहा। वोल्गारोमे पश्चिममे रहनेवाले रूसी खतरेको समझ गये थे बोल्गार-ध्वसके बाद मगोल हमपर पडेंगे। इसीलिये कियेफ और स्मोलेन्स्कके रावलो (राजुलो) ने बोल्गारोकी मदद की, जिससे उनकी राजधानी बच गई।

१२३४ ई० के मई महीनेमे चीनमे ११८ वर्ष शासन करनेके बाद किन्-राजवश समाप्त हुआ। अब दक्षिणी चीनमे सुङ-वश बच रहा था, जो काफी शक्तिशाली था, इसलिये मगोल उससे जल्दी छेड-खानी करनेके लिये तैयार नही थे। किनोपर आक्रमण करते समय उन्होने वचन दिया था, कि इस विजय के बाद हम सुङ-वश के लिये होनान खाली कर देंगे, लेकिन उन्होने वैसा नही किया। अदूरदर्शी दरबारियो ने मगोल-शक्तिका ठीक अदाजा नही लगा सुङ-सम्राट्को भडकाया। छङ-अन् (सि-यन-फू, शेन्सीमे), लोयाङ (होनान्) और पेन-किङ (नानकिङ) यह तीन सुङ-वशकी राजधानिया थी। सुङ-सेनापति-ने आक्रमण करके लोयाङ और पेन-किङको मगोलोके हाथसे मुक्त करा लिया। यह "आ बैल मुझे मार" वाली कहावत थी। मगोलोको अब सुङ-वशकी ओर ध्यान देना जरूरी था। इतने बडे निर्णयको हगान स्वय नही कर सकता था, इसके लिये उसने १२३५ ई० में महा-कूरिल्ताई बुलाई। जिसने सुङ-वशको खतम करनेका निश्चय किया। दक्षिणी चीनके विरुद्ध तीन सेनाये भेजी गई, जिनमें एकको सेनापति ओगोताइ-द्वितीय-पुत्र कू-तन तथा जेनरल तेगरीके नेतृत्वमे सूचाउकी ओर बढना था। दूसरी सेना तुमूताइ और चाङ-जूके अधीन हू-कुङके ऊपर चढी, ओगोताइका तृतीय पुत्र कू-चू, राजकुमार खुन-बुका और जेनरल चागनके नेतृत्वमे तीसरी सेना क्याङ-नान्की ओर बढी। इसी समय जू-छीके पुत्र बा-तूको पश्चिम-दिग्विजयका काम सौंपा गया।

मार्च, १२३६ ई० में कू-चूने सुङ-राज्यकी प्रधान नगरी सियाङ-याङपर अधिकार कर लिया। मगोल-साम्राज्यकी सीमा दक्षिणमे अब याङ-ची तक पहुच गई।

खु-बिले (कुबिलेइ) के पहले मगोल-साम्राज्यकी राजधानी मगोलियामें ओरखोन् और तुला नदियोके बीच कराकोरम थी। राजधानी कहनेसे यह न समझना चाहिये, कि वहा कोई नगर बसा हुआ था। राजधानीका मतलब इतना ही था, खान सरदारोके साथ मीलोतक लगे नम्दे और दूसरे प्रकारके तम्बुओमें अपने घोडो और पशुओके साथ रहता था। ओगोताइने पहलेपहल वहा एक विशाल प्रासाद बनवाया, जिसका उद्घाटन १२३६ ई० में हुआ। इस प्रासादके बनानेमे बहुत परिश्रम किया गया था। चीनी कलाकारो ने मूर्तियो और चित्रोसे उसे अलकृत किया था। इसके चारो तरफ बगीचे लगे थे, और चारो दिशाओमे चार बडे-बडे दरवाजे थे, जिनमेंसे एक हगान (सम्राट्) के लिये, दूसरा राज-कुमारो, तीसरा अन्त पुरिकाओ के लिये था, चौथे दरवाजेसे साधारण जनता जा सकती थी। महलके चारो ओर बडे-बडे सरदारोके अपने महल थे, जिनके बाद बडा नगर था, जिसको ओर्दू-बालिक या

कराकोरम कहते थे। नगरके चारो ओर ऊँची प्राकार थी। कराकोरममे सम्राट्के निजी पारिवारिक खर्चके लिये प्रतिदिन पाचसौ गाडी भोजन-सामग्री आती थी। उसमेंसे कुछ वह अपने परिवारके लिये खर्च करता, बाकी दूसरोंमें वितरित करता। इसी समयसे मगोल घुमन्तुओका सादा जीवन खतम होने लगा और वह हर बातमे दुनियाकी सभ्य जातियोकी नकल करने लगे।

ईरान और काकेशसकी ओर अब मगोल अपना हाथ-पैर बडी दृढतासे बढा रहे थे। १२२७ ई० मे अरास और कुरा नदी तक अर्मेनियापर उनका अधिकार हो गया। उसी साल उन्होने जार्जिया (गुर्जी) को विजय करके अर्मेनियाकी राजधानी अनीका सहार किया। इसी साल २१ दिसम्बरको साइबेरियाके कीमती समूरोंके सबसे बडे बाजार बोल्गारपर बा-तूने आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया, सो भी ऐसा कि जिसके देखनेके लिये नगरमे एक भी आख नही बच रही। पाच वर्ष पहले आत्मरक्षा करके बोल्गार नगरीने जो गुस्ताखी दिखलाई थी, मगोलोंने उसका इस तरह बदला लिया। सिर-दरिया और अराल के उत्तर दूर तक फैली किपचक भूमिके हूणवशधर घुमन्तू लडनेमे मगोलोंसे कम नहीं थे, इसलिये उनपर अधिकार करना मगोलोंके लिये टेढी खीर था। १२३८ ई० मे तू-लुइ (थो-लोइ) के पुत्र मुड-के (मड-गू) ने अपने भाई बुद्-जेकके साथ कास्पियनके किपचकोंपर आक्रमण कर उन्हे जीत लिया। किपचक-राजा पनचीमन और अमेत (ओमेन)-राजा कचर ओगोला मारे गये। कोलोम्ना नगर भी मगोलोंके हाथमे चला गया और उसका राजा रोमन ईगरपुत्र वीरगतिको प्राप्त हुआ। १५ फर्वरीको मास्को लेने उन्होने ब्लादिमिर नगरपर अधिकार कर, पुरोहितोको छोडकर मगोलोंने किसीको प्राणदान देना पसद नही किया। वह वस्तुत किसी देशमे भी युद्धको केवल राजनीतिक युद्ध रखना चाहते थे और उसे धार्मिक युद्धका रूप न लेने देनेके लिये हर तरहकी कोशिश करते थे।

ओगोताइका राज्य करते ११ साल हो गये थे, जब कि दिसम्बर १२४० ई० मे बा-तूकी सेनाने कियेफ नगरका सर्वसहार किया, वहा की सारी कलाकृतिया और इमारते अग्निसात् कर दी। तबसे १५ वीं सदी तकके लिये कियेफ नगर उजाड हो गया। इसी साल अर्मनीका राजा आवक अपनी बहिन तमता के साथ ओगोताइके दरबारमें सम्मान प्रकट करनेके लिये गया। इसी साल किपचक-राजा ओतिसर हगरीकी ओर भागा।

१२४१ ई० मे मगोल-सेना लुबलिन नगरमे दाखिल हुई और उसने विस्तुला तकके प्रदेशको लूटा और जलाया। मार्चमे मगोल क्राकोफ नगरमे थे, फिर लूटते-मारते आग लगाते सेलिसियाकी ओर बढे। ओडर नदीको रतिबरमे पार कर वह ब्रेसलाके सामने पहुचे। आगे भी योजना बना वह लूटने-पाटते लिग्निज नगरकी ओर बढे, जहापर बीस हजार सेनाके साथ ड्यूक हेनरी द्वितीय मुकाबिलेके लिये तैयार था। मगोल-सेना पर बात बतलाई जाती है, जिसमे सदेह है। काटड नदीके तटपर अवस्थित इस मैदानमे—जहा पीछे वाल्स्टाट (युद्धक्षेत्र) गाव बसा—९ अप्रैल १२४१ ई० को वह युद्ध हुआ, जिसने मगोलोंके भाग्यका फैसला किया। मगोल विजय नही प्राप्त कर सके, और गिरियाये हुये वहासे पीछे लौटते वह विजित लिग्निज नगरको जलाते पीछे हटे। इस युद्धमें मरे लोगोंके कान ९ बोरे हुये थे।

इसके पहले ही १२ मार्चको बा-तूने पेस्थमे साढे तीन दिनके सघर्षपर हगरीको हराया था। लिग्निजसे लौटकर उन्होने डालमातियाको लेते अद्रियातिक समुद्रके तटपर बोसियन (यूगोस्लाविया) तक विजय की थी।

हुई थी। १२५१ ई० मे मगोलोने लाहौरको लूटा और जलाया, इस समय दिल्लीके तख्तपर नासिर खुसरू था।

४. मुङ-खे, मङ-गू, स्यान्-चुङ (१२५१-५९ ई०)

मुङ-खे थो (तो) लोइका पुत्र तथाखु-वि-लेई (कुबिलेइ) का अग्रज था। अवसे एक तरह सिहासन थो-लोइकी सतानमे चला गया। इन्ही दोनो भाइयोका छोटा भाई खु-ला-कू (हुलाकू) था, जिसने ईरान और मेसोपोतामियापर भी अपनी सतानो के लिये विजय प्राप्त की। १२५१ ई० मे ही, जिस साल कि लाहौर का सर्वसहार हुआ, मगोल-सेनाये मेसोपोतामियामे प्रविष्ट हुई, जहा उन्होने दियारबेकर और मेयाफरकिनका सर्वसहार किया। इसी समय उत्तराधिकारके लिये झगडेका परिणाम मगोल-राज-कुमारोमे वैमनस्यके रूपमे दिखलाई पडा, जिसके लिये १२५२ ई० मे कूरिल्ताई बुलाई गई। इसी कूरिल्ताईने जहा राजकुमारोके मुकदमोका फैसला किया, वहा जागीरो और अधिकारोका बटवारा भी किया। तुङ-कुङ-चुङ-फू (शेन्सी), होनान् कुबिलेइ (हूबिलेइ) को जागीरमे मिले। उसे सुङ-वशके खिलाफ दक्षिण-चीन मे अभियान करनेवाली सेनाका सेनापति भी नियुक्त किया गया। खाकानके दूसरे भाई खुलाकू (हुलाकू) को ईरानकी ओर बढनेका काम सौपा गया, जिसकी सहायताके लिये कितू-बुकाको नियुक्त किया गया। लेकिन अभी खुलाकूकी दिग्विजय मध्य-एसियाके पहाडो ही तक सीमित थी।

सबसे कडा सघर्ष दक्षिणी चीनमे सुङ-वशके साथ होनेवाला था, जिसके लिये कुबिलेने बडी तैयारी (१२५३ ई०) की। शेन्सीमे उसने एक बडी सेना जमा की, लेकिन दक्षिणकी ओर बढनेमे जल्दी नही की—मगोल-सेनाये पूरी तैयारी और योजनाके साथ अपना अभियान किया करती थी। १२५३ ई० में ही मगोल-सेनाओने पूर्वी तिब्बत ले लिया, और उसी साल मुल्तान भी उनके हाथमे चला गया। इसी साल ईसाई मिश्नरी रुबरिक मुङ-खेके दरबारमे कराकोरम पहुचा। उसने अपने यात्रा-विवरणमें मगोल-साम्राज्य, उसके राजपथो और राजधानीका बहुत अच्छा वर्णन किया है। उसके लिखनेसे मालूम होता है, कि राजपरिवारके लोग ईसाई, बौद्ध और मुसलमान सभीकी पूजाओमे शामिल हुआ करते थे। मार्को पोलोकी महान् यात्रा मुङ-खेके भाई कुबिलेके समय हुई, लेकिन रुबरिकका यात्रा-विवरण भी कम महत्त्व नही रखता।

फर्वरी १२५४ ई० मे खुलाकूने अपनी विजय-यात्रा आरम्भ की। भारी सेनाके साथ वह ईरानकी ओर बढा। ससारमें चारो तरफ मगोलोकी धाक जमी हुई थी। "एक बार खूनके कीचड और खोपडि-योके बडे-बडे मीनार खडा कर गावो और नगरोको ऐसा ध्वस्त कर दो, कि वहा कोई रोनेवाला न रहे, फिर कोई मगोलोके खिलाफ उठनेकी हिम्मत नही करेगा"—उनकी यह नीति सफल हो रही थी। १२५६ ई० में लालो, पूर्व-दक्षिणी तिब्बत और आवा (वर्मा) के राजाओने अधीनता स्वीकार की। कोरियाका राजा अधीनता और सम्मान-प्रदर्शन करने के लिये स्वय हगान (खाकान) के दरबारमें पहुचा। अगले साल (१२५७ ई० मे) तोङ-किन् (अनाम) और था नदी तककी भूमिने मगोलोको अपना स्वामी स्वीकार किया। सुङ-राज पूरी तौरसे खतम नही हो पाया था, लेकिन कुबिलेइके प्रहारोसे अब वह कुछ ही दिनोका मेहमान था। कुबिलेइकी इस सफलतापर मुङ-खेको ईर्ष्या होने लगी। दरबारियोने उसे भडकाया, कि कुबिलेइ स्वय खाकान बनना चाहता है। कुबिलेइको जब यह खबर लगी, तो वह जल्दी-जल्दी अपने भाईके दरबारमे पहुचा। उसके सौहार्द और अधीनता-प्रदर्शनसे मुङ-खे बहुत प्रसन्न हुआ और कुबिलेइके साथ स्वय सुङ-राज्यपर आक्रमण करने चला। इसी साल हगानने अपने भाई खुलाकूको वक्षुके दक्षिणका सेनापति नियुक्त किया।

१८ फर्वरी (१२५९ ई०) को मुङ-खे चुङ-कुये (सू-चाउ) मे मर गया। इस समय तक सारा मगोल-साम्राज्य एक था, और भिन्न-भिन्न खानोने अपनी स्वतत्रता घोषित नही की थी।

५ कुबिलेइ, ह्वोबिलेइ, स-छेन्, शि-चू, (१२६०-९४ ई०)

ह्वोबिलेइ कुबिलेइ खानके नामसे अधिक प्रसिद्ध है। भाईके मरनेके बाद इसने कूरिल्ताईके निर्वाचन-की प्रतीक्षा न कर तुरन्त अपनेको हगान घोषित किया, लेकिन कूरिल्ताईकी रसमको वह हटाना नही

मण करनेके लिये भारी तैयारी करनी शुरु की। द्वीप होनेके कारण जापानपर नौसेनासे ही आक्रमण किया जा सकता था, जिसके लिये हजारो जगी जहाज बनाये जाने लगे।

चीनी भाषाके लिखनेके लिये वर्णमाला नही शब्द-सकेतका उपयोग होता है, जिसमे अकोकी तरह कुछ सुभीते भी है, लेकिन उसमे उच्चारण-सकेतके लिये कोई स्थान नही है। मगोल-भाषा उइगुर (सिरियावाली) लिपिमे लिखी जाती थी, जिसमे डेढ दर्जन भी अक्षर न होनेसे उच्चारण ठीक-ठीक रखना सम्भव नही था। कुविलेइके कहनेपर भारतीय और उससे निकली तिब्बती लिपिसे सुपरिचित होनेके कारण फग्पाने १२६९ ई० मे मगोल-भाषाके लिये एक विशेष लिपि बनाई। इसी साल उसे कुविलेइने ता-पाउ-फा-वड्की उपाधि प्रदान की। १२७१ ई० मे कुविलेइने अपने वशका नया नाम यु-अन रखा, जिस नामसे वह वश आज भी चीनमे प्रसिद्ध है। इसी साल वर्मा (मी-यन) के राजासे अधीनता मनवानेके लिये मगोल-सेना भेजी गई। १२७४ ई० मे जहा सियाङ-याङके विजयमे सम्राट्को बडी प्रसन्नता हुई, वहा यह खबर सुनकर बहुत खेद भी हुआ, कि मगोल नौसेना चु-सिमाकी खाडी मे जापानियो द्वारा घोर रूपसे पराजित हुई, सारा सैनिक बेडा नष्ट हो गया। इसमें शक नही उस समय जापानियोमे भी भारी शत्रु सामुद्रिक तूफान हुआ।

अज्ञात समुद्रके बीचमे हुई चु-सीमाकी हार कुविलेइके विशाल साम्राज्य मे उसकी धाकके कम होनेका कारण नही हो सकती थी। हा, जापानियोमे यह भाव जरूर पैदा हो गया, कि हमारा देश अजेय है। सचमुच ही आगेकी ६ शताब्दियो तक जापान बाहरी शत्रुओसे बचा रहा, जब तक कि अमरीकी नौसेनाने १९ वी शताब्दीके मध्यमें बुरी तरहसे हराकर जापानियोकी आखे नही खोल दी। अगले साल १२७५ ई० मे सेनापति वायनने चिङ-चाउ नगरपर आक्रमण किया। नगर-निवासियोको प्रतिरोध करनेका यही फल मिला, कि सेनापतिके हुक्मसे लोगोकी निर्मम हत्या की गई। इसी साल लिङ-अन् राजधानी-पर भी मगोलोने अधिकार कर लिया। तरुण सम्राट्की अभिभाविका सम्राज्ञीने अधीनता-स्वीकृतिके प्रतीकके रूपमे राजसिहासनको भेजा, लेकिन सेनापति वायनको यह अधिकार नही था, कि वह सुङ-वशका अवशेष भी रहने दे। उसने नगर-प्रबधके लिये चीनियो और मगोलोकी एक परिषद् नियुक्त की। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि उत्तरी चीन आधी शताब्दी पहिले हीसे मगोलोके हाथमे था, इसलिये मगोल-भक्त चीनियोकी कमी नही थी। चार मगोल-अफसर राजधानीकी चीजोके सग्रह करनेके लिये नियुक्त हुये। उन्होने भिन्न-भिन्न राज्यविभागो की मुद्रायें जमा की। अभिलेखा-गारमे उन्हें बहुत-सी कितावें, वही-खाते, ऐतिहासिक स्मृतिचिन्ह, भूगोल और ज्योतिष-सम्बन्धी रेखाचित्र आदि मिले। लिङ-अन् (हङ-चाउ) चीनकी सबसे बडी नगरी थी। उसका घेरा सौ मील (२४ फरसक) था। नदीको आर-पार करने तथा दूसरे कामोके लिये नगरमे बारह हजार पुल थे। नगर बारह विभागोमे विभक्त था, जिनमेंसे हरएकमे बारह हजार घर तथा प्रत्येक घरमे बारह, बीस, चालीस तक व्यक्ति रहते थे। नगरके घर अधिकतर लकडीके थे। राजप्रासादमे बीस बडे-बडे हाल थे। सबमे बडी राजशाला खूब सजी हुई थी। उसकी दीवारोपर ऐतिहासिक दृश्य सोनेसे चित्रित थे। सब मिलाकर नगरमें सोलह लाख आदमी रहते थे—बत्तीस हजार तोसिर्फ रग्रेजोके घर थे। सात सौ मदिर थे। सेनापति वायनने राजमाता, रानी, सम्राट् ली-चुङ और उसके अनुचरोको खानके पास भेज दिया। महल छोडनेसे पहले राजमाता और सम्राट्को खाकान (उत्तर) की ओर मुह करके सात बार दडवत् करनी पडी। कुविलेइकी प्रधान खातून (रानी) ने राजमाता और रानीके साथ अच्छा बर्ताव किया। राजधानीसे लाये सोने-चादी और दूसरे खजानेको देखकर खातून रो पडी। वह इस प्राचीन राजवशके ध्वसमे मगोल-राजवशके उच्छेदकी छाया देख रही थी, सोच रही थी, "उस समय मेरे बच्चो की भी यही हालत होगी, जो कि आज (१२७७ ई०) इनकी हो रही है। मेरे वशकी राजमाता, रानी और सम्राट्को भी एक दिन इसी तरह बेइज्जत हो बदी बनना पडेगा।" लेकिन, मगोल-वशका अत सुङकी तरह नही हुआ, क्योकि मगोलिया इस वशको शरण देनेके लिये मौजूद थी।

कुविलेइका राज्यकाल केवल राजसी तडक-भडक और दिग्विजयोके लिये ही प्रसिद्ध नही था, बल्कि कला और विज्ञानके भारी विकासका भी यही समय था। उसके गणितज्ञ तू-चीने १२८० ई० मे राजाज्ञा पाकर ह्वाङ-हो (पीत नदी) के उद्गमका पता लगानेका काम चार मासमें खतम किया।

१२८७ ई० में तोङ-किङ (हिन्द-चीन) ने अधीनता स्वीकार की। १२९० ई० में १०३ जिल्दोंमें आज भी मौजूद कंजूर (तिब्बती त्रिपिटक) को कुबिलेइने सुवर्णाक्षरोंमें लिखवाया। जापानमें नौसैनिक अभियानमें असफल होनेपर भी कुबिलेइने समुद्र-विजयके निश्चयको छोड़ा नहीं। मृत्युसे एक साल पहिले १२९३ ई० में उसने तीस हजार सेनाके साथ एक हजार जंगी जहाज जावा आदिकी विजयके लिये भेजे। कुछ संघर्षके बाद जावाने अधीनता स्वीकार की।

जिस साल सुङ राजधानीका पतन हुआ, उसी साल मंगोल-सेनापति नासिरुद्दीनने बर्मा और बंगालपर आक्रमण किया। बर्माकी राजधानीपर वह अधिकार नहीं कर सका, लेकिन दोनों देशोंने मंगोलोंकी आंशिक अधीनता जरूर स्वीकार कर ली। १२८८ ई० में बर्मापर पूरी तौरसे भी अधिकार हो गया। इसी समय कोचीन-चीनपर भी मंगोलोंने आक्रमण किया। इसी साल कुबिलेइ का दूत बुद्धकी दंत-धातुकी पूजाके लिये लंका पहुँचा। १२८७ ई० में तोङ-किङ (कोचीन-चीन) ने मंगोल-अधीनता स्वीकार कर ली।

पैंतीस साल राज्य करनेके बाद १२८८ ई० में अस्सी वर्षकी उमरमें कुबिलेइ खानका देहान्त हुआ। "इतने बड़े साम्राज्यपर कुबिलेइसे पहले किसी एक व्यक्तिने शासन नहीं किया था। उसके राज्यमें सारा चीन, कोरिया, तोङ-किङ (कोचीन-चीन), गंगासे परे और पंजाबकी बहुत-सी भारतीय भूमि, साइबेरियासे तुर्की तकके देश, और पोलेंड और हंगरी तककी भूमि सम्मिलित थी।"[1]

(१) मार्को-पोलो—कुबिलेइके शासन और कालके ऊपर वेनिस-निवासी प्रसिद्ध पर्यटक मार्को पोलोकी यात्रा-पुस्तक द्वारा बहुत प्रकाश पड़ता है। १३ वीं शताब्दीमें वेनिस नगर युरोपका सबसे बड़ा व्यापार-केंद्र था। वेनिसी व्यापारियोंने सभी देशोंमें अपनी कोठियोंके जाल बिछा रक्खे थे। इन्हीं व्यापारियोंमेंसे दो जौहरी-भाई मफियो और पोलो १२५५ ई० में व्यापार करने कान्स्तन्तिनोपोल आये। दोनों भाइयोंने वहाँ अपने रत्नोंका बहुत अच्छा दाम पाया। उससे उत्साहित होकर वह पासके क्षुद्र-एसियाके मंगोल-शासित प्रदेशमें सौदा करनेकी गरजसे प्रविष्ट हुये। यह भूमि हुलाकू-वंशके अधीन थी। वहाँ उन्हें कुबिलेइ खानका दूत मिला, जिसने पोलोंसे साथ पेकिङ चलनेका प्रस्ताव किया। मंगोल-साम्राज्यमें जितना सुरक्षित यातायातका प्रबंध था, उतना उससे पहले और बादकी भी कई शताब्दियों तक नहीं देखा गया। मंगोलोंका इतना आतंक था, कि कोई चोरी-बटमारी करनेकी हिम्मत नहीं करता था। युरोपसे चीनकी पूर्वी छोर तक लोग निश्चिन्त हो स्थल-यात्रा करते थे। सामुद्रिक यात्राका भी अच्छा प्रबंध था। दोनों वेनिसी व्यापारी मंगोल-दूतके साथ कुछ समय बाद कुबिलेइके दरबारमें पहुँचे। खानने उनका बड़ा सम्मान किया। उस समय पश्चिमी युरोपमें रोमके पोपका जबर्दस्त प्रभाव था। वह धार्मिक महन्त ही नहीं, बल्कि राजाओंका भी राजा था—किसी को गद्दीपर बैठाना या उतारना उसके बायें हाथका खेल था। कुबिलेइने पूरबके स्वामीके तौरपर पश्चिमी देशोंके प्रमुख पोप ग्रेगरीको एक पत्र लिखकर पोलोंके हाथ भेजा। पोपने इस अवसरसे लाभ उठाना चाहा। हमें मालूम ही है, उससे पहले ही रुब्रुकि मुङ-खेके दरबारमें कराकोरम पहुँचा था। पोपने अपने पत्रका उत्तर पहुँचानेके लिये फिर निकोलो पोलोको चीन जानेकेलिये मजबूर किया। अबकी बार निकोलोने अपने भाई मफियोको ही नहीं बल्कि सत्रह सालके पुत्र मार्को को भी साथ लिया। ईरान, मध्य-एसिया, पामीर, पूर्वी-तुर्किस्तान होते तीनों पोलो चीन पहुँचे। खानने उनका बड़ा सम्मान किया। मार्को पोलोकी प्रतिभा और योग्यतासे प्रभावित हो कुबिलेइने उसपर अधिक अनुकम्पा दिखलाई। उसे साम्राज्यके भिन्न-भिन्न भागोंमें भौगोलिक तथा दूसरी खोजें करनेके लिये भेजा। अन्तमें बढ़ते-बढ़ते मार्कोको याङ-चाउ जैसे एक बड़े समृद्ध नगरका राज्यपाल बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। पोलो बाप-बेटे सत्रह साल चीनमें रहे। गणतंत्री वेनिस नगरके नागरिक होनेके कारण वह केवल बनिया ही नहीं बल्कि सैनिक और दूसरी विद्याओंका भी काफी ज्ञान रखते थे। उन्होंने अपने पश्चिमी दुनियाके ज्ञान-द्वारा मंगोल-शासनको बहुत लाभ पहुँचाया। यद्यपि बारूदकी प्रारम्भिक तोपों, और पाषाणक्षेपक यंत्र (कराबुग) का उपयोग चिङ-गिस खानने भी किया था, लेकिन उसमें अब बहुत-से सुधार और विकास

१ देखो मेरी "बौद्ध-संस्कृति" पृष्ठ ११५-१६

किये गये, जिसमे पोलोका भी हाथ था। इनके सुझावके अनुसार बनाये हुये हथियारोका इस्तेमाल १२७३ ई० मे सियाङ-याङ नगरके मुहासिरेमे किया गया। उस अजेय नगरीको नतमस्तक करनेमे इन यत्रोका वहुत हाथ था, इसमे सदेह नही।

पोलो वडे सम्मान और आनन्दके साथ चीन मे रह रहे थे, लेकिन उधर मातृनगरी वेनिस इतना अपनी ओर खीच रही थी, कि उनकी नजरोमे यह सारा सुख और आनन्द फीका था। उनकी प्रार्थनापर कुबिलेइ खानने प्रसन्नतापूर्वक विदाई दी। इसी समय एक मगोल-राजकुमारी ईरानके मगोल-राजकुमार के साथ व्याह करनेके लिये भेजी जा रही थी। पोलो वाप-बेटो को भी उसी वधू-यात्रामे सम्मिलित कर दिया गया। अबके उनकी यात्रा समुद्र-मार्गसे हुई। वह अठारह महीने वाद पारसकी खाडी मे पहुचे। वन्दरगाहसे राजकुमारीको स्वागत कर समुरालवाले ले गये और पोलो बाप-बेटोने वेनिसका रास्ता लिया, जहा कान्स्तंतिनोपोल होते १२९५ ई० मे पहुचे। तब तक कुबिलेइको मरे एक साल हो गया था। हित-मित्र पोलोकी यात्राओको सुनते नही थकते थे, लेकिन साथ ही वह इस बातका विश्वास करनेके लिये तैयार नही थे, कि हगानका राजस्व प्रतिवर्ष एकपे डेढ करोड सुवर्ण दुचात है, तथा उसके अधीन मिलियनो (करोडो) मानव है। इस सख्यापर विश्वास न कर उन्होने मार्कोको 'मिलियनी' (करोडी) नाम दे दिया था। उस युगमे युरोपमे पडोसी देशोके झगडे आम थे। वेनिस गणराज्यका झगडा गेनवावालोसे था। इसी लडाईमे मार्को पोलो भी भाग लेने गया और युद्धवदी बना। अपने वदी-जीवनमे ही मार्को पोलोने अपनी यात्रा-कथा मध्यकालीन लेखक रस्तिसियन-दे-पीसाको सुनाई, जिसने उसके आधारपर "मार्को पोलोकी यात्राये" नामक प्रसिद्ध पुस्तक तैयार की। मार्को पोलोकी यह यात्रा दुनियाकी यात्रा-पुस्तको मे सिरमौर मानी जाती है, जिसमे उसने अपने देखे हुये स्थानो, व्यक्तियो, रीति-रवाजो और दूसरी चीजोका वडा सुदर विवरण दिया है। वह कहता है—"सम्राट्के दूत काम्-बालू (खान-बालिग, पेकिङ) से यात्रा करते समय हर पचीस मीलपर टिकान पाते है, जिसे वह लोग घोडाचौकी कहते है। प्रत्येक मजिलपर एक वडी और सुदर इमारत उनके ठहरनेके लिये वनी है। इमारतके सभी कमरे वढिया कालीनो और कीमती रेशमी वस्त्रो से सजाये गये है। अगर कोई राजा भी इन मकानोमें आ जाये, तो वह बडे आरामसे ठहर सकता है। इन चौकियोमेंसे कितनोमें चार सौ और किन्ही-किन्हीमें दो सौ घोडे तैयार रहते है। चाहे दूतको ऐसी बे-रास्तेकी भूमिमें भी जाना पड रहा हो, जहापर टिकानकी आशा नही हो सकती, वहा भी कुछ फासलेपर ऐसा विश्राम-स्थान मिल जायेगा, जहा सभी आवश्यक चीजोका प्रबध होगा। इसीलिये सम्राटके दूत चाहे जिस देशसे भी आयें, उनके लिये वहा सभी चीजें तैयार मिलती है।

"जो सम्पत्ति और समृद्धि खाकानके यहा देखी जाती है, उसे कभी किसी सम्राट्, राजा या राजुलके पास नही देखा गया। इन सभी विश्रामस्थानोमे दो लाख घोडे तैयार रहते है, और इमारते दस हजारसे ज्यादा है। सामान इतने बडे पैमानेपर और अद्भुत ढगके है, कि उनका वर्णन करना मुश्किल है।

"इस प्रबधसे खाकान दस दिनकी दूरीके स्थानोंके समाचार एक दिन-रातमें पा लेता है। कितनी ही बार सबेरेके वक्त काम्बालू (पेकिङ) से फल रवाना किया जाता है, और दूसरे दिन शामको वह खाकानके पास चेन्-दू (सन्दा) में पहुच जाता है। आदमी एक दिनमें दो-ढाई सौ मील चले जाते है, और उतनी ही यात्रा वह रातको करते है। इन दूतोके शरीरपर एक चौडी पट्टी वधी रहती है, जिसके चारो ओर घटिया लगी रहती है। घटिया दूरसे ही सुनाई देती है, जिसके कारण चौकीपर पहुचनेके समय दूसरा दूत वहा तैयार मिलता है, जो उसी तरह पहले दूतकी लाई चीजको लेकर घोडा दौडाने लगता है। चौकीका लेखक चीजकी प्राप्तिकी चिट आये हुये दूतको दे देनेके लिये हर वक्त तैयार रहता है। हर चौकीका लेखक दूतके आगमन और प्रस्थानका समय लिख लेता है। हर चौकीपर लगाम-चारजामा लगे तैयार ताजे घोडे मौजूद रहते है। बस उसपर चढो और पूरी चालसे दौडाओ। फिर दूसरी चौकीपर जब दूरसे घटीकी आवाज सुनाई देती है, तो दूसरा घोडा और सवार तैयार हो जाता है। जिस वेगसे वह दौडते है, वह बडा अद्भुत है। रातको भी वह उतना ही तेज चलते है, जितना दिनको, क्योकि उनके साथ मशालची सवार होते है।

"ये घोडसवार-दूत बहुत अच्छा वेतन पाते हैं। वह इतने मुश्किल कामको बिना अपने पेट, सिर और छातीको मजबूत पट्टीमें बाँधे नहीं कर सकते। वह अपने साथ एक अंकित पट्टिका ले चलते हैं, जो इस बातको प्रकट करती है, कि वह बहुत जरूरी कामके लिये जा रहे हैं। इसीलिये यदि संयोगसे कहीं घोडेके अंग-भंग होने या गिर जाने से दूत सडकपर पड जाये, तो वह दूसरा घोडा ले सकते हैं। कोई उसकी मांगसे इन्कार नहीं कर सकता।"

मार्को पोलोने बतलाया है, कि उस समय प्रत्येक बडे शहरमें एक दारोगा रहता था, जिसका काम था रास्तेकी देख-भाल करना।

(२) जाति-व्यवस्था—चाहे भारतकी तरहकी कडी जाति-व्यवस्था न हो, किन्तु सभी सामन्ती शासनोंमें जातिभेदका होना आवश्यक देखा जाता है। ६ठी-७वीं शताब्दीमें ईरानमें जातिभेद करीब-करीब उसी तरहका था, जैसा भारतमें। मंगोलोंमें पहले चीनमें भी जातिभेद था। मंगोलोंने भी अपनी प्रजाको चार वर्गोंमें बाँटा था, जिनमें प्रथममें उनके अपने मंगोल आते थे, द्वितीय वर्गमें से-मू (तुर्क मुसलमान), तूफान (तिब्बती), तुगुत, मध्य-एसिया तथा पश्चिमी एसिया के दूसरे वह लोग थे, जो मंगोलोंके साथ नस्ली या सांस्कृतिक समीपता रखते थे। तीसरे वर्गमें उत्तरी चीनवाले थे, जो कि किन्-शासनके बाद मंगोल-शासन में आये थे। चौथे वर्ग में सुङ-साम्राज्यमें रहनेवाले दक्षिणी चीनी थे, जिन्होंने मंगोलोंका जबर्दस्त प्रतिरोध किया था, इसीलिये उन्हें सबसे निचले वर्गमें रखा गया था। पहले इन्हें किसी राजकीय सेवामें भरती होनेका अधिकार भी नहीं था। चीनमें पहलेसे चली आती अधिकारियोंकी परीक्षाओंमें यद्यपि चीनियोंके सम्मिलित होनेमें कोई रुकावट नहीं थी, लेकिन चाहे चीनी परीक्षामें उच्चसे उच्च स्थान पाये, तब भी बाईं ओरकी सूचीमें उसका नाम लिखा जाता था, जब कि मंगोल और से-मू दक्षिणी सूचीमें स्थान पाते थे। नौकरीमें ले लेनेपर भी चीनियोंको मंगोल-भाषा सीखने और मंगोलोंके धर्मके प्रति सम्मान दिखानेके लिये मजबूर होना पडता। दंड देनेमें भी भेद-भाव रक्खा जाता। यदि कोई चीनी चोरी करता, तो पहले अपराधके लिये उसकी बाईं बाँहमें गोदना गोद दिया जाता, दूसरी बार अपराध करनेपर दाहिनी बाँहमें, तीसरी बार गर्दनपर, जिसे देखकर कोई भी आदमी अपराधीको पहिचान सकता था। लेकिन, उसी अपराधके लिये मंगोलोंको इस तरहका दंड नहीं दे मामूली जुर्माना लेकर छोड दिया जाता था। अगर कोई चीनी किसी मंगोल या से-मू को मार डालता, तो उसे मृत्यु-दंड मिलता और हत्यारेके परिवारसे धन वसूल करके मृत व्यक्तिकी अन्त्येष्टि आदिका खर्च दिलवाया जाता। अगर हत्यारा मंगोल होता, तो उसे शराब के नशे, या झगडेके पागलपनको कारण बतलाकर जुर्माना या निर्वासनका दंड भर करके छोड दिया जाता था। १२७९ ई० की एक मंगोल-राजाज्ञाके अनुसार चीनियोंको हथियार रखनेका अधिकार नहीं था। धनुष-बाण भी न रख पानेके कारण वह शिकार नहीं कर सकते थे। भारतके अंग्रेज शासकोंकी तरह चीनमें मंगोल-शासकोंने भी जगह-जगह मंगोल-छावनियाँ कायम की थीं।

और भी विस्तृत वर्गीकरण करते हुये मंगोलोंने अपनी प्रजाको निम्न दस श्रेणियों में बाँटा था—

(१) उच्च दरबारी, (२) अधीनस्थ या स्थानीय अफसर, (३) लामा (साधु), (४) ताउ-साधु, (५) वैद्य, (६) कारीगर और मजूर, (७) शिकारी, (८) पेशावर लोग, (९) कन्फूसी पुरोहित और (१०) भिखमंगे। मंगोल कन्फूसी आचार्योंको बहुत नीची दृष्टिसे देखते थे, जब कि पुराने चीनी शासनमें कन्फूसी विद्वानों का स्थान राजवंशके बाद ही आता था। इसमें शक नहीं, चीनी विद्या और संस्कृतिके निधिरक्षकोंको उनके अनुरूप स्थान न दे मंगोलोंने बुरा किया था, लेकिन वह यह भी जानते थे, कि चीनी संस्कृति और सामन्तवादके इन अंधे पुजारियोंसे अपने लिये, हम कोई भलाईकी आशा नहीं रख सकते थे। कन्फूसी यदि केवल चीनी संस्कृति और कलाके ही नेता होते, तो समझौता हो जाता अथवा यदि मंगोल पूरी तौरसे चीनी बननेके लिये तैयार होते, तब भी कन्फूसी विद्वानोंको भिखारियोंके पास बैठनेकी जरूरत नहीं पडती। कन्फूसी शिक्षा और विद्वानोंके प्रभावको चीनके सभी सामन्ती शासक अपने लाभके लिये इस्तेमाल करते रहे। अभी हालमें चाङ-काइ-शकने भी इस हथियारका पूरी तौरसे उपयोग करना चाहा। शासकके प्रति आँख मूँदकर सद्भावना और आज्ञाकारिता प्रदर्शित करना कन्फूसी शिक्षाका एक मुख्य अंग है, इसीलिये शासकोंकी उनपर विशेष अनुकम्पा होनी स्वा-

भाविक है। लेकिन कन्फूसी साहित्य और शिक्षामे एकमात्र दास-मनोवृत्ति सिखलाना ही नही है, उसमे कितनेही और भी उच्च सास्कृतिक तत्त्व है, जिनको छोडा नही जा सकता, लेकिन इसका नीर-क्षीर-विवेक करते उपयोग करना नवीन चीनमे ही सम्भव हो सकता है।

मगोल खाकान गैर-मगोल जातियोके लिये स्वेच्छारी और कितनी ही बार अतिनिष्ठुर शासक थे, लेकिन उस निष्ठुरताका प्रयोग वह हर वक्त नही करते थे। यद्यपि मगोलोके साथ उनका खास पक्षपात था, लेकिन अधीनस्थ जातियोको भी वह अधिकारोसे सर्वथा वचित नही रखते थे। प्राय सभी विजित देशोमे उन्होने पुराने राजाओ और सुलतानोको अपने अधीन शासक बनाकर रख छोडा, सिवाय उन देशोके जहाके लोगोने उनका जबर्दस्त प्रतिरोध किया था। कुबिलेइने यद्यपि खानबालिग (पेकिङ) को अपनी राजधानी बना उसे भव्य प्रासादोवाली समृद्ध नगरीमे परिणत कर दिया था, लेकिन उसका भी अधिक समय तम्बुओके भीतर बीतता था। मगोल अपने घुमतू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझते थे, इसीलिये चीन या दूसरे देशो पर शासन करनेवाले सभी मगोल-खाकानोकी राजधानिया चिडिया-रैनबसेरा जैसी ही थी। मगोल-भाषामे राजधानी और प्रासादो को सराय कहते है। उसका अर्थ मुसाफिरोकी सरायका हर्गिज नही था। मार्को पोलोके अनुसार राजपथोके हर मजिलपर "सराय" (प्रासाद) थी, शायद उसीके कारण मुसाफिरोकी टिकानको भी सराय कहा जाने लगा। राजकुमारो और बडे-बडे सैनिक अफसरोको राज्यके भीतर अपने-अपने भूखण्ड मिले हुये थे, जिनपर वह अपनी मर्जीके मुताबिक शासन करते थे। यद्यपि छिङ-गिस्ने मध्य-एसियाके मुसलमानोके साथ बडी क्रूरताका बर्ताव किया था, बलख, मेर्व, तूस जैसे कितने ही समृद्ध नगरोकी वस्तुत उसने ईंटसे ईंट बजा दी थी, जिसके कारण वह फिर नही उठ सके, लेकिन, पीछे मगोलोका बर्ताव मुस्लिम जातियोसे अधिक सहानुभूति-पूर्ण था, यह इसीसे पता लगता है, कि इन जातियोको उन्होने चारो वर्गोमेंसे द्वितीय वर्गमें रक्खा था। कुबिले खानकी बर्मा और बगालपर आक्रमण करनेवाली सेना का सेनापति नासिरुद्दीन भी इसका स्पष्ट उदाहरण है—मगोल ऊचे सैनिक पद को भी मुसलमानोको देनेके लिये तैयार थे। इसका एक और भी कारण था—चाहे मध्य-एसियाके तुर्क मुसलमान हो गये हो, लेकिन जातित वह मगोलोके भाई-बन्द थे। रूसियो और पश्चिमी जातियोके खिलाफ अभियान करते समय मगोलोने किपचक तुर्कोसे भाईचारा लगाकर उन्हे अपनी ओर कर लिया था, जिससे उन्हे एक लडाकू जाति सहायक मिल गई।

मगोल-भाषाके प्रति मगोल-शासकोका अधिक पक्षपात स्वाभाविक था। उनके आज्ञापत्र उइगुर लिपिमे लिखी मगोल-भाषामे हुआ करते थे। १३वी शताब्दीके आरम्भमे चली हुई यह परिपाटी १५वी शताब्दीके आरम्भ तक तेमूरलग और उसके पुत्रोके समय तक जारी रही। कट्टर मुसलमान होते भी यह लोग छिङ-गिस् की वरासतको छोडनेके लिये तैयार नही थे। लेकिन, मगोल-भाषाका विकास जितना होना चाहिये था, उतना नही हो सका। "मगोल-उन्-निगुचा" (तोपचिया), "युवान-चाउ-बि-शी" जैसे कुछ इतिहास या दूसरे विषयोके ग्रथ उस समय मगोल-भाषामे लिखे गये। पीछेके मगोल-शासकोके लिये ग्रथ अधिकतर चीनी या पारसीमे लिखे गये, जो प्राय इतिहाससे सबध रखते थे। चीनमे मगोल-भाषामे जो ग्रथ लिखे गये, उनके अनुवाद चीनीमे भी हुये थे, पीछे मूल (मगोल) ग्रथ लुप्त हो गये और उनके चीनी अनुवाद भर बच रहे। कुबिलेइ खानने अपना ही नही अपने वशका भी धर्म बौद्ध-धर्मको घोषित किया और अपने गुरु फग्पा लामाको तिब्बतका राज्य प्रदान किया, किन्तु उसने बौद्ध-ग्रथोके मगोल-अनुवादका काम बहुत आगे नही बढाया। १५ महाभारतोके बराबर भारतीय ग्रथोके अनुवाद कन्जुर (बुद्ध-वचनानुवाद) और तन्जुर (शास्त्रानुवाद) के नामसे तिब्बती भाषामे मौजूद थे। उनमे (तिब्बती) कन्जुरको कुबिलेइ खानने स्वय सोनेके अक्षरो मे लिखवाया था, लेकिन उनका मगोल-अनुवाद उस समय हुआ, जब चीनसे मगोल-शासन खतम हो गया। मगोल शायद सस्कृतकी तरह तिब्बती भाषामे ही धर्म-ग्रथो का पढना ज्यादा पुण्यदायक समझते थे। आज भी मगोलियामें कन्जुर और तन्जुरके मगोल-भाषामे हो जानेपर भी उन्हे तिब्बती भाषामे पढना ज्यादा पुण्यकार्य समझा जाता है। शायद यह भी कारण रहा हो, लेकिन उस समय आजकी तरह मगोलोमे तिब्बती भाषाका प्रचार नही था, इसलिये अधिकाश लोग तिब्बती ग्रथोको बिना समझे ही पढ सकते थे।

मंगोलोंके समयसे पहले ही चीनी कलाका सुवर्ण-युग थाङ-काल (६१८-८६९ ई०) बीत चुका था, तो भी मंगोलोंने कलाका संरक्षण-संवर्धन किया। नाट्य-कला के विकासमें तो उनका विशेष हाथ रहा। चीनमें संगीत, अभिनय और नृत्यका प्रयोग बड़ी साजसज्जाके साथ बहुत पहलेसे चला आता था, लेकिन तीनों चीजोंका पहले वैसा सुंदर सम्मिश्रण नहीं हुआ था, जैसा कि मंगोल-शासकोंके संरक्षणमें। मंगोल-वंशने नाट्य-कला की बड़ी अभिवृद्धि की, बड़े सुंदर-सुंदर रंगमंच बनवाये। दरबारके समय खानके साथ भिन्न-भिन्न देशोंके राजदूत भी नाटकका अभिनय देखते थे। उस समय नाट्यके लिये जो नियम और व्यवस्था कायम की गई, उससे चीनी रंगमंचको बहुत प्रेरणा मिली, जिसका प्रभाव आज भी देखा जाता है। चित्र-कलामें भी वस्तु-निर्वाचन, उसके चित्रण तथा प्रभावमें विशेष कार्य हुआ। मंगोलोंका गतिमय शक्तिशाली जीवन चित्रोंकी रेखाओंमें अंकित होने लगा, पुराने कालसे चले आये शान्त-रसकी प्रधानताका स्थान अब वीर और रौद्ररसोंने लिया। अब भी शान्त प्राकृतिक दृश्य अंकित होते थे, लेकिन घुड़सवारी, शिकार और बाजके दृश्य अधिक प्रिय थे। अब बलसम्पन्न गतिको प्राप्तकर चीनी चित्रकलाको आगे बढ़नेको एक नया रास्ता मिला।

६ थुवु थेमूर, उल्द-शे-तू, चेङ-चुङ (१२९४-१३०७ ई०)

कुबिलेइने कूरिल्ताईकी शक्तिको कमजोर कर दिया था, जिससे खानोंके निर्वाचनमें पहले-जैसी स्वतंत्रता नहीं बरती जा सकती थी। इसीलिये अब सारे मंगोल-खानजादोंमेंसे किसी एकको चुननेकी जगह सन खानकी सन्तानको ही उत्तराधिकारी समझा जाने लगा। कुबिलेइका पुत्र छिङ-गेन् बापके समय ही मर गया था, इसलिये उसके पुत्र थुवु-थेमुरको गद्दी मिली। अब छिङ-गिस्की पाँचवीं पीढ़ी चल रही थी। एक शताब्दी के विजयोंके बाद भी अभी मंगोलोंकी शक्तिका उतना ह्रास नहीं हुआ था। १३०० ई० में बर्माके सिंहासन-वंचित राजपुत्रने मंगोल-दरबारमें पुकार की, और मंगोल-सेनाने बर्मामें पहुँचकर उसे गद्दीपर बैठाया। कुबिलेइके प्रतिद्वंद्वी अरिग्बुकाके साथ प्रतिद्वंद्विता खतम नहीं हुई थी। कैदू खानने अब भी अपने उत्तराधिकारके दावेको नहीं छोड़ा था। १३०१ ई० में उसने थुवु-थेमुरके ऊपर जबर्दस्त आक्रमण किया, जिसमें चगताइ खान्दान भी उसका सहायक था। करकोरमके पास लड़ाई हुई। ओगोताइ-वंशी और चगताइ-वंशी दोनों खानोंको हार खानी पड़ी, कैदू मारा भी गया। उसकी जगहपर उसका पुत्र चापर ओगोताइ खान बना, जिसने थुवु-थेमुरकी अधीनता स्वीकार कर ली। १३०३ ई० में पिङयाङ और ताइ-युआनमें, फिर १३०४ ई० में पिङ-याङमें भूकम्प हुये, जिनको लेकर तरह-तरहकी भविष्यद्वाणियाँ की जाने लगीं। सौ वर्ष पहले १२०६ ई० में छिङ-गिस् खाकान घोषित हुआ था, इसलिये विरोधी यह भी अफवा उड़ा रहे थे, कि अब मंगोल-वंशका सितारा डूबनेवाला है। १३०६ ई० में कैदूका समर्थक चगताइ दावाखान मर गया, जिससे अगले साल थुवु-थेमुर भी काल कवलित हुआ।

७ खू-लुग, कू-लुक, से-सन्, वू-चुङ् (१३०७-११ ई०)

थुवु-थेमुरके मरनेके बाद उसके भाई धर्मपालका पुत्र खु-लुग कूरिल्ताई द्वारा खाकान घोषित किया गया। भूकम्पके बाद अब १३०८ में अकाल और महामारीकी बारी आई, लेकिन वह सारे साम्राज्यमें नहीं फैल सकती थी। प्रजाको प्राणोंसे मोल चुकाना पड़ रहा था, लेकिन खाकानके दरबार पर उसका क्या प्रभाव हो सकता था? इसी साल चापर खान तथा दूसरे दरबार में आये, जिनकी बड़ी आवभगत हुई। चगताइ और ओगोताइ-परिवारोंके साथ होता संघर्ष अब दब गया था, इसलिये खू-लुग घरेलू-युद्धसे निश्चिन्त था, तो भी १३०९ ई० में युन्नानमें भारी विद्रोह हुआ। युन्नन भारतीयतासे प्रभावित पूर्व-गंधार देशके नामसे प्रसिद्ध था। यहाँके लोग संस्कृतिमें ही आगे बढ़े हुये नहीं थे, बल्कि अच्छे योद्धा भी थे। अपनी स्वतंत्रताके लिये उन्होंने कुबिलेइका जबर्दस्त मुकाबिला किया था और जब कोई दूसरा रास्ता नहीं रह गया, तो उनमेंसे बहुत-से लोग भागकर थाई (स्याम), शान (बर्मा) और अहोम (आसाम) में चले गये, जहाँ उन्होंने नये राजवंशोंकी स्थापना की। १३०९ ई० में उन्हीं गवारोंने अपने देश युन्नानमें जबर्दस्त विद्रोह किया, जिससे खानोंमें मंगोलोंको भारी मुश्किलका सामना करना पड़ा।

यद्यपि कुविलेइके समय ही फग्पा (फग्स्-पा=आर्य) लामाने मगोल-वादशाहके लिये नये अक्षर वना दिये थे, लेकिन इस अक्षरमे अकित पहलेपहल तावेके सिक्के खु-लुगने १३१० ई० मे ढलवाये। इसी साल मगोल-राजकुमार तू-ला (कोकोचू-पुत्र) ने असफल विद्रोह किया। थुवु-थेमुरके समय तक अभी वाहरके मगोल-राजवशोके साथ चीनके खाकानका घनिष्ठ सवध था, उसे अधिपति माना जाता था, लेकिन अव वह सवध शिथिल होने लगा। फर्वरी १३११ ई० मे खु-लुग मर गया और उसकी जगह उसका भाई वोयन्-थू गद्दीपर वैठा।

८ बोयन्-थू, आयुरपरवल, आयुर्बलीभद्र, वूयन्-तू, जुन्-चुङ (१३११-२०ई०)

खु-लुगकी मृत्युके साल ही उसके भाईको गद्दी मिली। ईरानका मगोल-वश कुविलेइके छोटे भाई खुलाकू-खानका था, इसलिये जिस वक्त जू-छी, चगताइ और ओगोताइ खानोका चीनके हगानसे (खकान) से मतभेद या झगडा भी रहता, उस समय भी ईरानके मगोल-वशका हगानके साथ वहुत सौहार्द रहता। १३१२ ई० की फर्वरीमे वोयन्-थू ने अपना दूत ईरानी खान उल-जै-तूके पास भेजा। पुराने कालमे चीनमे हिजडे वनाकर उन्हें अन्त पुरमें ही वडे-वडे स्थान नही दिये जाते थे, वल्कि राज्यके ऊचे-ऊचे पदो पर भी वह पाये जाते थे। १३१४ ई० मे वोयन्-थूने सरकारी नौकरियोमे हिजडोका प्रवेश निपिद्ध कर दिया, लेकिन इसका यह अर्थ नही, कि हिजडे अव वाट के भिखारी वन गये। उसके लिये तो अभी १९११ ई० तक प्रतीक्षा करनी थी। अगले ही साल (१३१४ ई०) एक प्रमुख हिजडेने एक सुदर मन्दिर वनवाया। पिताकी गद्दी न पानेके कारण खुलुग-पुत्र कुसलने १३१६ ई० में चचाके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। यह हम पहले देख चुके है, कि व्यापार और कृपि-उद्योगको धनका प्रधान स्रोत समझकर मगोल-शासक उनकी उन्नतिकी ओर विशेप ध्यान देते थे। डेढ हजार वर्पोसे अधिक समयसे रेशमकी जन्मभूमि चीन अपने सुदर रेशमी कपडोके लिये सारी दुनियामें प्रसिद्ध था। रेशम देशकी आमदनीका एक वडा भाग था। वोयन्-थूके शासन-कालमे १३१८ ई० में सरकारने तूतके वृक्ष लगाने तथा रेशमके कीडे पालनेकी विधिके ऊपर एक पुस्तिका प्रकाशित की। शायद सरकारोकी ओरसे इस तरहकी छपनेवाली पुस्तकोमे यह सवसे पहिली थी।

फर्वरी १३२० ई० में वोयन्-थू मर गया और उसकी जगहपर उसका पुत्र गेगेन् गद्दी पर वैठा।

९ गेगेन्, शु-तु-फल (शुद्धफल), यिङ-चुङ (१३२०-२३ ई०)

मगोल खान-वशमे धर्मपाल, आयुर्वलीभद्र या शुद्धफल जैसे शुद्ध भारतीय नामोका होना कोई आश्चर्यकी वात नही है, क्योकि अव मगोल-राजवश ही नही साधारण जनतामे भी वौद्ध-धर्म जातीय धर्म समझा जाने लगा था। गेगेन् (ग्यु-गेन्) १८ वर्पका था, जव कि वह गद्दीपर वैठा और २१ सालकी आयुमे मर गया। उसके वाद छठे खान थुवु-थेमुरके भाई कमलका पुत्र यिसु-थेमुर गद्दीपर वैठा।

१० यिसु-थेमुर, यिस्सुन-तइमुर, ताइ-चिङ-ति (१३२३-२८ ई०)

अव खानोके शासनमें कोई विशेष वात नही थी। १३२३ ई० में "ताइ-युवान-तोङ-शी" (महा-मगोल-विधान) प्रकाशित हुआ। अगस्त १३२८ ई० मे खान मर गया और उसकी जगह उसका भतीजा रिन्छेन् गद्दी पर वैठा।

११ रिन्-छेन्-फग्, यू-चू (१३२८ ई०)

वहुत कम समय शासन करनेके कारण कितनी ही वशावलियोमें इसका नाम नही मिलता। रिन्-छेन्-फग् तिव्वती शव्द है, जिसका अर्थ है रत्न-आर्य। उसके वाद उसका भाई तथा खु-लुगका पुत्र कुसल गद्दीपर वैठा।

१२ कुसलड, कोसल, मिङ-तिङ (१३२८-२९ ई०)

अव वशकी निर्वलताके सूचक चद दिनोंके खान होते रहे।

१३ थुग्-थेमुर, उलजे-थू जीया-शा-तू, वेन्-चुङ् (१३२९-३२ ई०)

यह वोयन्-थू खाकानका पुत्र तथा गेगेन्का भाई था। इसके शासन-कालमें १३३० ई० मे फिर युन्नन्में विद्रोह हुआ, जो १३३१ ई० मे भी जारी रहा। इसी समय चीन मे अवर्षणके कारण अकाल पडा। उसी सालकी एक घटना बतलाती है, कि पहलेसे चले आये नियमोंका अबभी कितनी कडाईके साथ पालन किया जाता था। खाकानने साम्राजी वर्षपत्रको देखना चाहा, लेकिन अधिकारीने इन्कार कर दिया। यह परिपाटी इसलिये चली आती थी, जिसमे खाकान दरबारी इतिहास-लेखकसे मनमाना न लिखवा सके, इसीलिये दैनदिनीको उसे दिखलाया नही जाता था। थुग्-थेमुरने अपनेको अपवाद बनाना चाहा, लेकिन दैनदिनी लेखकने उसे दिखलानेसे इन्कार कर दिया।

१४ रिन्-छेन्-पल्, निङ-चुङ (१३३२-३३ ई०)

रिन्-छेन्-पल् भी तिब्बती शब्द है, जिसका अर्थ है रत्नश्री। यह कुसलका पुत्र था और केवल दो मास राज्य करके मर गया। इसके बाद अन्तिम खाकानका दीर्घकालीन राज्य शुरु हुआ।

१५ थेगन्-थेमुर, तोगोन्-तिमुर, शुङ-ति (१३३३-६८ ई०)

यह थुग्-थेमुरका पुत्र था। इसने ३५ वर्ष तक शासन किया। जान पडता है, राजवंशकी समाप्तिके लिये हर वंशमे वाजिदअली शाहके पैदा होनेकी आवश्यकता होती है। थेगन्-थेमुर चरम विलासी था। लामा लोगोंका प्रभाव भी राजवंशपर अब चरम सीमा को पहुंचा हुआ था। तिब्बतका धर्म, तान्त्रिक बौद्ध-धर्म है, जिसे लामा-धर्म कहकर कितने ही लोग उसकी सारी जिम्मेवारी तिब्बतके ऊपर मढना चाहते है। लेकिन, तान्त्रिक बौद्ध-धर्म तिब्बतकी उपज नही है। वह भारतमे पैदा हुआ और यही चरम सीमापर पहुंचकर भारतके नाशका एक कारण बना। प्रभावशाली लामोंका खाकानके ऊपर बहुत प्रभाव था। उसका तंत्र-मंत्रपर बहुत विश्वास था। पंच मकार—उन्मुक्त व्यभिचार भी जिसका एक प्रधान अंग था—का खुलकर प्रयोग खानके यहा होता था। बहुत निम्न श्रेणीके यौन-दुराचार साधनके अंग माने जाते थे। मंत्र-तंत्र-सिद्धि तथा भैरवी चक्र के लिये एक मकान बनाया गया था, जिसका नाम रखा गया था "निर्दोष-भवन"। वहा पर यौन-अतिचारकी हद की जाती थी। अन्तःपुरिकाओंको "दिव्य नृत्य" के नामसे बहुत-सी अश्लील चेष्टाओंके प्रदर्शन करनेके लिये मजबूर किया जाता था। चारो तरफ विलासिता और व्यभिचारका बाजार गर्म था। यह वही समय था, जब चीन मे १३२६, १३२७, १३३४, १३३६, १३४२ और १३४६ में जबर्दस्त अकाल पडे थे। खान, उसके दरबारी और अधिकारी भैरवी चक्रमें मग्न थे, जब कि लोग भयंकर कष्टमें गुजर रहे थे। सूखा और अकालके समय किसानोंकी कोई खोज-खबर लेनेवाला नही था। यही नही, अब भी उन्हें दरबारके लिये भारी करोंको देना पडता था। मंगोल-वैसे भी निश्चिन्त विदेशी शासक थे, जिनके साथ चीनियोंका कोई सौहार्द नही था। इस क्रूरता-पूर्ण विलासमय जीवनसे तो चीनी जनताके नाकों दम हो गया। वह और अधिक दिनों तक इस दुःशासनको बर्दाश्त नही कर सकती थी। राजधानीसे दूर दक्षिणमें याङ-चि-उपत्यकामे विद्रोहियोंने सिर उठाया। जंगलकी आगकी तरह विद्रोह जल्दी ही सारे देश मे फैल गया। विद्रोहियो का नेता चू-युवान्-चाङ एक किसानका लडका था। उसने भूख और कष्टके दिन देखे थे, इसलिये वह किसानोंको विद्रोह-में शामिल करनेमें सफल हुआ। मंगोल-सेनाने विद्रोहको पहले कहीं-कहीं दबाया, लेकिन थोडे ही समयमे सारी याङ-चि-उपत्यका चू-युवान्-चाङ के हाथमें चली गई। १३६८ ई० मे उसने अपनेको स्वतंत्र सम्राट् घोषित करके नान्-किङ् में मिङ् (प्रकाश)-वंशकी नींव रक्खी। इसी साल उसकी सेना पेकिङके ऊपर चढी। थेगन्-थेमुरके लिये मंगोलिया अभी सुरक्षित जगह थी, इसलिये वह वहा भाग गया। इस प्रकार चीनमे मंगोल-राज्यका अन्त हुआ। थेगन्-थेमुरके वंशज आगे मंगोलियापर शासन करते रहे, उस समय चीनने-चीनने उनके अनेक राज्य हो गये, जिनका प्रभाव मध्य-एसियाके इतिहासपर पीछे फिर यह जान पडा, जब कि १८ वी शताब्दीके पूर्वार्द्धमें मालूम होता था, मध्य-एसिया मे फिर एक विशाल मंगोल-साम्राज्य कायम होने जा रहा है, लेकिन पलासीकी लडाई १७५७ ई० के समय उसका नाश चीन और रूसके प्रहारोंसे हो गया।

चीनके मंगोल खाकानोंके समय पहले घनिष्ठतापूर्वक किंतु पीछे शिथिलताके साथ चगताइ, जू-छि, हुलाकू आदिके राजवंशोंका संबंध रहा, इसका वर्णन आगे हम करेंगे। तू-लुइ-वंश के वर्णन के बाद अब हम जू-छि-वंशको लेते हैं जिसके शासनमें उत्तरी मध्य-एसिया और रूस बहुत समय तक रहे।

चंगिस-खान-वंशवृक्ष—
(१२०६-१३६८ ई०)

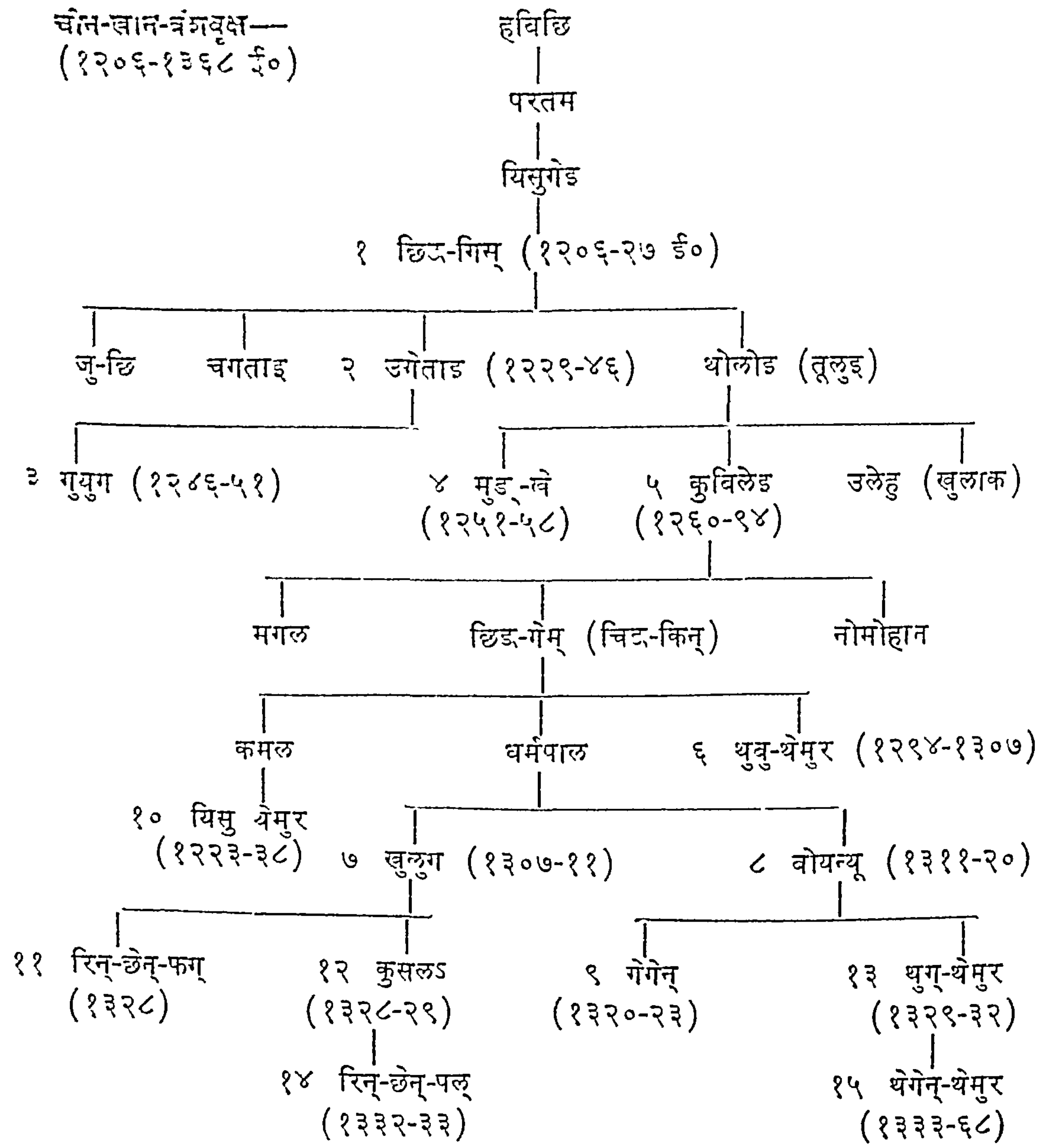

अध्याय २

सुवर्ण-ओर्दू

(१२२४-१४०० ई०)

छिङ्-गिसके ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके ओर्दूको "सुवर्ण-ओर्दू" के नामसे पुकारा जाता है, यद्यपि मुसलमान इतिहासकार इसे अधिकतर कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू) के नामसे याद करते है, और जू-छिके ज्येष्ठ पुत्र ओर्दाके उलुसको अक-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) कहते है। रूसी प्रजा इन्हे जोल्तोय (सुवर्ण-ओर्दू) के नामसे जानती है।

१ जू-छि, तू-शि (म० १२२४ ई०)

छिङ्-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छि या तू-शिकी मृत्यु बापसे छ महीने पहले हुई थी, यह हम कह आये है। जू-छिके बारेमे एक मुसलमान गुमनाम लेखककी कृति "शज्रतुल्-अतराक" (तुर्कवश-वृक्ष) मे कितनी ही बातें कही गई है। मगोलियासे दूर चले गये मगोल तुर्क-समुद्रमे चद बूदोकी तरह थे, और वह उनके भीतर हजम भी हो गये। इसीलिये इस लेखकने मगोल-वशवृक्षको तुर्क-वशवृक्ष कहा। इस तथा दूसरे ग्रथोंके अनुसार भी छिङ्-गिस्को अनुपस्थित देखकर उसके प्रतिद्वद्वी मरकितोने छिङ्-गिसी उलुसको मार भगाया और वह उनकी ज्येष्ठ पत्नी बुर्ते-फूजिन्को और बहुतसे आदमियोंके साथ पकड ले गये। बुर्ते-फूजिन् ककुरत कबीलेके सरदार दाई-नोयन्की पुत्री थी। यही छिङ्-गिस्के चार प्रधान पुत्रो और पाच पुत्रियोकी मा थी। बुर्ते-फूजिन्के पकडे जानेके समय जू-छि माके पेटमे ६ मासके गर्भके रूपमे था। केरइत खान ओङ्-खान छिङ्-गिस्का बडा समर्थक था। वह छिङ्-गिस्को अपना पुत्र मानता था। जब इस घटनाका पता लगा, तो उसने मरकितोपर आक्रमण कर बुर्ते-फूजिन् तथा उसके आदमियोको छुडा लिया, और अपनी धर्म-बधूको फिर छिङ्-गिस्के पास भेज दिया। इसी समय रास्ते मे जू-छि पैदा हुआ। पथमें पैदा होनेके कारण ही उसका नाम जू-छि (पथक) पडा। पीछे चगताइ खानोका जू-छि-वशके कोक-ओर्दू और अक-ओर्दूसे सदा झगडा होता रहा। इसीलिये चगताइ विद्वानोके इतिहास-ग्रथोमे जू-छिको कलकित करते हुये यह साबित करनेकी कोशिश की गई, कि जू-छि छिङ्-गिस्का पुत्र ही नही था। समर्थक इस बातके साबित करनेका प्रयत्न करते है, कि जू-छिकी मा केवल चार महीने छिङ्-गिस्से दूर रही, जब कि रास्तेमे जू-छि पैदा हुआ। "तुर्कवश-वृक्ष" का लेखक यह भी कहता है—"चाहे पुत्र कितना ही अच्छा हो, असली और नकलीके प्रति पिताके प्रेममें जमीन-आसमानका अन्तर होता है। साइन् (छिङ्-गिस्) जू-छि खानके ऊपर हदसे ज्यादा प्रेम और स्नेह रखता था।" जू-छि खानके मृत्युकी खबर जब उलुसमें पहुची, तो उसे बापतक पहुचानेकी किसीको हिम्मत न हुई। यह काम दरबारी कवि उलुग-तुर्जाके सिरपर रखा गया। कविने हिम्मत करके पद्यमें उपमाके रूपमें यह खबर सुनाई, जिसे सुनकर छिङ्-गिस् बहुत दुखी हुआ। कवि और छिङ्-गिस्के दुखोको तुर्की भाषाके पद्यमे प्रकट किया गया है, यद्यपि यह निश्चय है, कि छिङ्-गिस् तुर्की नही बोलता था, इसलिये यह पद्य पीछे बनाये गये है। तो भी इसमें सदेह नहीं, कि छिङ्-गिस्को अपने ज्येष्ठ पुत्रकी सरकसीके बाद भी उसके साथ असाधारण प्रेम था, इसीलिये उसे बहुत दुख हुआ।

ख्वारेज्म-विजयके समय छिङ्-गिस्ने जू-छिको पूर्वमें कयाल्कसे पश्चिममें सकसीनतको दश्ते-किपचक (वर्तमान कजाकस्तान), बोल्गारो, आलानो, बश्किरो, उरुसो और चेरकासोंके देशोंके साथ वह भूमि भी प्रदान की, जहा कि तातारो (मगोलो) के घोडोकी टापें पडें। जू-छिका ओर्दू यद्यपि ज्येष्ठ पुत्र ओर्दा और द्वितीय पुत्र बा-तूके अधीन पहले हीसे दो उलुसोमें बट गया था, लेकिन श्वेत-ओर्दूके सरदार ओर्दाने जिस तरह अपने छोटे भाई बा-तूको अपना अधिपति स्वीकार किया, वैसे ही उसका श्वेत-ओर्दू भी अपनेको बा-तूके सुवर्ण-ओर्दूके अधीन मानता रहा। जू-छि ओर्दूका पूर्वी

भाग (किपचक-भूमि) श्वेत-ओर्दूकी माना जाता था। सुवर्ण-ओर्दूके ३९ शासक हुये—

१	जू-छि, तू-शि छिङ-गिस्-पुत्र	१२२४ ई०
२	बा-तू जू-छि-पुत्र	१२२४-५५ ,,
३	सेर-तक बा-तू-पुत्र	१२५५ ,,
४	उलकची बा-तू-पुत्र	१२५५ ,,
५	बेरेके, बरका, जू-छि-पुत्र	१२५५-६५ ,,
६	मुङ-खे थे-मुर, मग्-थेमुर तोगोन-पुत्र	१२६५-८० ,,
७	तू-दा-मगू तोगन-पुत्र	१२८०-८९ ,,
८	तोग्-ताङ, तोक्-तोगू, मगू-थेमुर-पुत्र	१२८९-१३१३ ,,
९	उज्बेक तोक्-तोगूका भतीजा	१३१३-४२ ,,
१०	तिनी (दिनी) बेग उज्बेक-पुत्र	१३४२ ,,
११	जानी-बेग उज्बेक-पुत्र	१३४२-५७ ,,
१२	बेर्दी-बेग जानी-पुत्र	१३५७-५९ ,,
१३	कुलदी (कुल्या) बेग, जानी-पुत्र	१३५९ ,,
१४	नौरोज (नूरुस) बेग जानी-पुत्र	१३५९-६० ,,
१५	चेरकेस-बेग जानी-पुत्र	१३६० ,,
१६	ओरदा शेख	
१७	खिजिर	
१८	कुलफा	
१९	तेमूर खोजा	
२०	मुरीद	
२१	अजीज, बाजारची	
२२	हाजी एरजन-पुत्र	

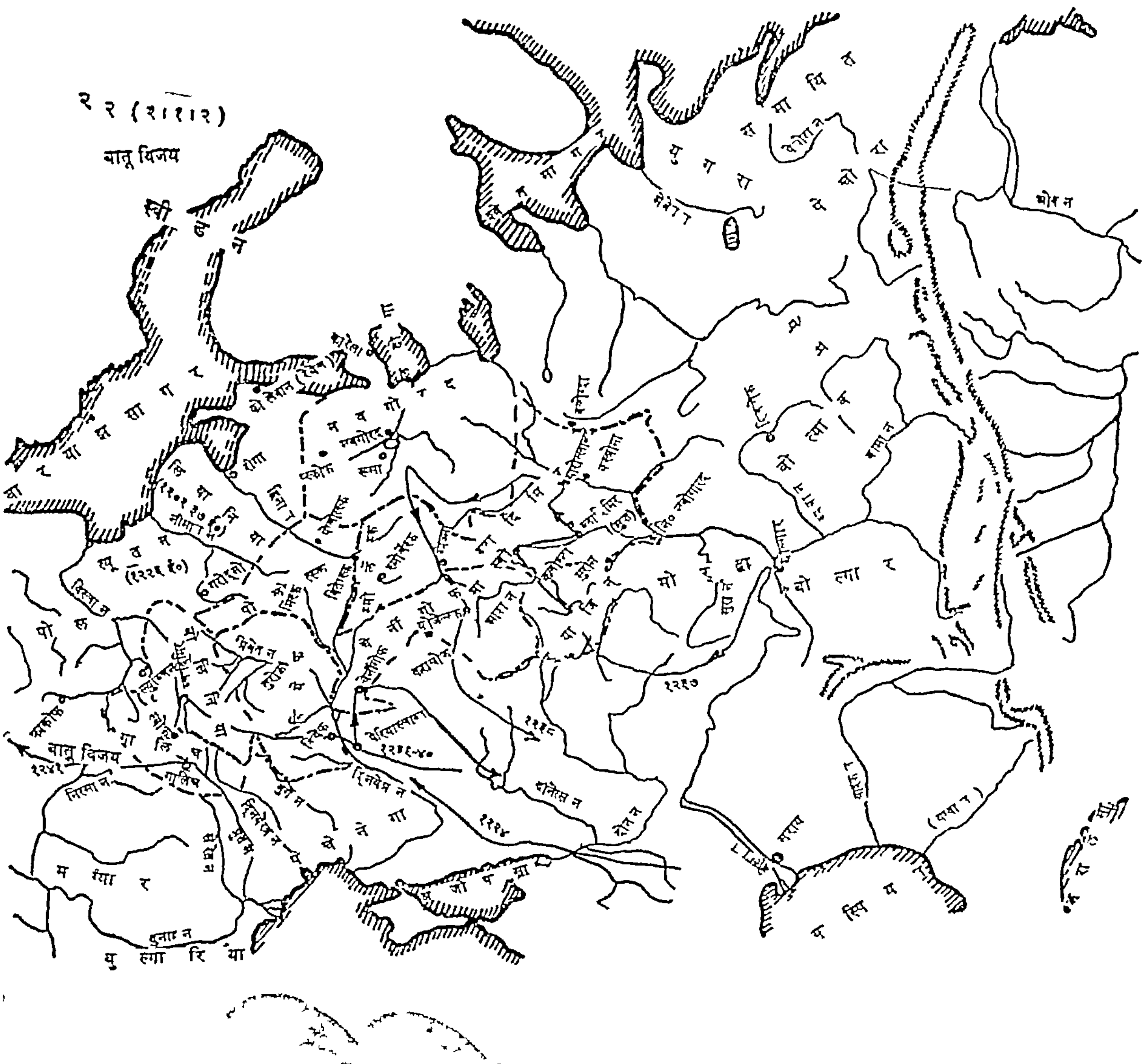

२ बा-तू खान, सायन खान जू-छि-पुत्र (१२२४-५५ ई०)

छिङ्-गिस्के पोतोंमें बा-तू पहला था, जिसने चारों उलुसोंमेंसे एकके खानपद को दादाके जीवनमें ही प्राप्त किया। इसकी मा यू-जिन खातून कुङ्गरत-कबीलेके सरदार अची नोयनकी लड़की थी। यद्यपि बातूसे बड़ा एक और भी भाई उर्दा (ओर्दा) था, लेकिन दादाने इसे ही अधिक योग्य समझा। छिङ्-गिस् पश्चिम दिशाके महत्त्वको समझता था, इसलिये द्वितीय पुत्र होनेपर भी समझ समझ बा-तू को बापका स्थान दिया। बड़े भाई ओर्दाने भी दादाके निर्णय को दिलसे स्वीकार किया, तथा उसके उलुसने भी बातूके उत्तराधिकारियों को अपना प्रधान माना। यद्यपि रूसियोंमें बा-तूका ओर्दू सुवर्ण-ओर्दूके नामसे प्रसिद्ध है, किन्तु पूर्वी इतिहासकार उसे कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू)के नामसे ज्यादा जानते है—ओर्दाका उलुस अक-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) के नामसे प्रसिद्ध था। जू-छि ओर्दू, हम जानते है, लडाकू घुमन्तुओंका समूह था, जो जू-छिके मरनेपर बा-तू और ओर्दामें आधा-आधा बट गया। ओर्दाके उलुसको वाम-दल और बा-तू को दक्षिण-दल भी कहा जाता था। वाम-दलमें वैसे बा-तूके भाई ओर्दा, तुकातेमुर, सिङ्-कुर और सिङ्-कुद भी शामिल थे। समकालीन इतिहासकार मिनहाजुद्दीन जुज़्जानी (११९३-१२२६) ने दिल्लीमें रहते अपने सरक्षक नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह (१२४६-६५ई०) के नामसे प्रसिद्ध "तवारीखे-नासिरी" में लिखा है, कि जू-छिके मरनेपर छिङ्-गिसने बा-तूको जू-छिका स्थानापन्न बनाते हुये उसे किपचकों, कगलियो, ऐमको, इलबारो, अलानो, असियो, रूसियो, चेरकासोंकी भूमि प्रदान की, और वह सभी भूमि भी, जहापर मगोल घोडसवारोकी टापें पडी। यह हम देखेंगे, कि आगे खजार-दर्बन्द—जिसे मगोल थिमुर-कखल्गा (लौहद्वार) कहते है—भी बा-तूके हाथमे था। इस प्रकार काकेशसमें उसके और उसके चचेरे भाई ईरानके खान ग्हु-ला-गूकी सीमा मिलती थी। जुज़्जानीके अनुसार बा-तू मुसलमानोका मित्र था। उसने छावनियों और डेरोंमें मस्जिदे बनवा इमाम और मुअज़्ज़िन नियुक्त किये थे। उसकी मुसलमानी प्रजामे सर्वत्र शाति और समृद्धि देखी जाती थी। इसका अर्थ यही है, कि बा-तू धर्मके बारेमे अपने दादाकी नीतिका अनुगमन करता था। लेकिन ख्वारेज्म, किपचक और काकेशसमे ही उसकी मुसलमान प्रजा रहती थी। बलगिर ईसाई थे। यही बात रूसी तथा दूसरे लोगोंकी थी। ऐसी हालतमे बा-तू यदि स्वय ईसाई हो, तो कोई विचित्र बात नहीं थी। बहुसख्यक जनताको अधिक अनुकूल बनानेके लिये यह अच्छा ढग था। अभी उस समय तक मगोल-राजवशने बौद्ध-धर्मको जातीय धर्म नहीं बनाया था। एक तरह ससारके बडे-बडे धर्मोंकी वह परीक्षा कर रहा था। खुबिलेइ (कुबिलै) कजानने बौद्ध-धर्म स्वीकार कर यद्यपि वह कदम उठाया, जिससे बौद्ध-धर्म मगोलोंका राष्ट्रीय धर्म बन गया, किन्तु खुबिलेइके निर्णयको उन्ही जगहोंमें मगोलोंने माना, जहा बौद्ध-धर्मकी प्रधानता थी, अथवा जहा कोई गैर-कबीली देशी धर्म प्रचलित नही था। बा-तूके उत्तराधिकारी तथा अनुज बरकाने अपने आपको खुल्लमखुल्ला मुसलमान घोषित किया, जिससे उसके अपने मगोलोपर बुरा प्रभाव पडा, जो ही पीछे पूर्वी और पश्चिमी मगोल-साम्राज्यमे मतभेदका एक कारण भी हो पड़ा। सुवर्ण-ओर्दू ऐसी स्थितिमें था, कि यदि उसने ईसाई धर्म को स्वीकार किया होता, तो शायद आगे चलकर रूसियोको उसके विरुद्ध धर्मयुद्धका ख्याल न आता। चगताइ और हुलागू-वशकी साधारण प्रजा सारी मुसलमान थी, जिसके कारण राजनीतिक लाभके ख्यालसे उन्हे इस्लामको स्वीकार करना पड़ा। चगताइ खान तर्माशेरिट—जो कि मुहम्मद तुगलकका समकालीन था—का नाम बौद्ध था, लेकिन पीछे वह कट्टर मुसलमान हो गया। इसके कारण भारतके तुगलक सुल्तान तथा चगताइ खानमें बडी घनिष्ठता स्थापित हो गई। ईरानी खान गज्जन (१२९५-१३०४) ने पहले अपनी राजधानीमें एक सुन्दर बौद्ध विहार बनवाया, लेकिन अतमे राजनीतिक-लाभके लिये उसे इस्लाम स्वीकार करना पड़ा। धर्म किस तरह राजनीतिक चालके लिये इस्तेमाल किया जाता है, उसका यह स्पष्ट उदाहरण है। तोकतगा न ले सुवर्ण-ओर्दूके खानाने इस्लामको क्यों स्वीकार किया, इसका कारण था—मुसलमान तुर्क-व्यापारियोंसे अपने शासनको मजबूत करनेका ख्याल। व्यापारी उस समय दुनियाके नाकेको पकड़ रक्खा था। बोल्गार जातिके उस उपत्यकामें रहनेके कारण

पीछे इसी नदीका वोल्गा नाम पडा। वोल्गाके बाये तटपर अस्त्राखानसे उत्तर वा-तूने अपनी राजधानी बनवाई, जिसका नाम सराय, वा-तू-सराय (या बरका-सराय भी) पड गया। गू-युक कआनके मरने के समय (१२५१ ई०) मगोलोने वा-तूको अपना कआन बनाना चाहा, लेकिन तबतक उसके घोडोकी टापे जर्मनीकी सीमातक पहुच चुकी थीं, इसलिये पश्चिम-विजेताने पूर्व जाना पसद नही किया और उसके समर्थनपर छिङ-गिन्-पुन तू-लुइके पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) को कआन बनाया गया।

दिग्विजय।—१२२४ ई० मे बापकी जगह बैठनेके बाद वा-तू ख्वारेज्म और उसके पश्चिमकी भूमि का शासक बना। मगोलो की प्रथम पश्चिमी विजय स्थायी नही थी, इसलिये वा-तूको फिर लडकर अपनी स्थितिको मजबूत करना पडा। ख्वारेज्म और किपचकके बहुत से भागोने वा-तूके शासनको जल्दी स्वीकार कर लिया, किन्तु सुवर्ण-ओर्दूके आगेके विस्तारके लिये उसे बहुत सघर्ष करना पडा। इसके लिये शायद वा-तू राजी न होता, यदि १२३५ ई० की अपनी दूसरी कूरिल्ताइ (महासमद) मे उगेताइने प्रोत्साहन न दिया होता। इसी कुरिल्ताइमे दक्षिणी चीन तथा और भी दक्षिणके देशोके विजयका निश्चय हुआ था, और वा-तूको वोल्गारो, असो और रूसियोपर अधिकार करनेका काम सौंपा गया था। उसकी मददके लिये उगेताइने अपने पुत्रो गू-युक और कदगन, तु-लुइके पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) और मोकू, एव जू-छिके पुत्रो ओर्दा, और तङ-गुनको सहायतार्थ दिया। इनके अतिरिक्त कुछ और खान-जादो (राजकुमारो) के साथ प्रसिद्ध सेनापति सु-बो-ताइ बहादुर भी साथ था।

वा-तूकी सेना केलरोको विजय करके वाश्किरोपर पडी। वाश्किरोके बारेमे १२३६ ई० में साधु जुलियनने लिखा था—"पूर्वी मगयार (हुगेरियन) या बाश्किर काफिर है। उन्हे न सच्चे ईश्वर-का ज्ञान है और न वह दूसरे देवताओको पूजते है। वह जगली जानवरोकी तरह रहते है, खेती नही करते, घोडो और भेडोका मास खाते, दूध, दूधकी शराब (कूमिस) और खून पीते है। उनके पास घोडे और हथियार प्रचुर परिमाणमे है और वह बडे लडाकू है। उनमे एक कथा मशहूर है, कि मगयार हमारे देशसे गये, किंतु कहा गये, यह नही जानते।" लेकिन जहातक वाश्किर सरदारो और सामन्तोका सबध था, वह अधिकतर ईसाई थे, यह पूर्वी इतिहासकारो के लेखोसे भी मालूम होता है।

(क) वाश्किर-विजय—महाकूरिल्ताइके निर्णयके बाद जो महाअभियान शुरू हुआ, उसके अनुसार १२३८ ई० मे यायिक (ऊराल) नदीके तटपर वा-तूकी साढे चार लाख सेना एकत्रित हुई। इसमे ककली (कगली), नैमन, कराखिताई आदि कबीलोके सैनिक अधिक थे। सेनाको तीन भागो में बाटा गया—(१) मुङ-खे और बे-चुकके अधीन एक सेना सकसिन (निम्न वोल्गा उपत्यका) के सरदार पचिमान (राजधानी सुमरकद) के विरुद्ध भेजी गई, (२) दूसरी सेना सुबोताइके अधीन वोल्गारोके विरुद्ध। (३) स्वय वा-तूने दुश्मनकी सख्या और शक्तिका पता लगानेके लिये अपने भाई सेवानको दस हजार सैनिकोके साथ आगे भेजा। सेवानने हफ्तेके भीतर लौटकर दुश्मनकी जबर्दस्त शक्ति का पता दिया। दोनो ओरकी सेनाये एक नदीके किनारे आमने-सामने खडी हुई। इतिहासकार जुवैनी (१२२६-८३ ई०) के अनुसार वाश्किर सेनाको देख वा-तू अपने शिविरमे चला गया और किसीसे एक शब्द भी न कह बस भगवान्से प्रार्थना करते खूब रोता रहा। उसने सभी मुसलमानोको भी एकत्रित करके दुआ मागनेके लिये कहा। दूसरे दिन युद्ध करनेका निश्चय हुआ। मगोल सेना रात-को ही नदी पार करनेमे सफल हुई और उसके प्रहारमे केलरोके पैर उखड गये। वा-तूकी जबर्दस्त विजय हुई, दुश्मन भारी सख्यामें काम आये, उनकी बहुत-सी सपत्ति हाथ आई। उसी जाडेमें वा-तूके सेनापति सुबोताइने खवान उपत्यकापर अधिकार किया।

(ख) वोल्गार-विजय—१२३८ ई० में सुबोताइ (सुङ-ताइ) ने वोल्गा-उपत्यकाके तटपर अवस्थित वोल्गारोकी राजधानीपर आक्रमण किया। वोल्गारोने ब्लादिमिरके महारावल द्वितीय जार्ज व्सेवोलद-पुत्रसे सहायता मागी। उसका भाई नवोग्रादका शासक तथा अभी-अभी कियेफके सिंहासनपर बैठनेवाला था, जिसके बाद नवोग्रादका शासक प्रसिद्ध रूसी वीर तथा कियेफ-रावलका पुत्र अलेक्सी नेव्स्की हुआ। इस प्रकार कियेफ, नवोग्राद और ब्लादिमिर तीनो राज्य एक ही परिवारके हाथमे थे। रूसियो और वोल्गारोकी सम्मिलित सेनाने मगोलोका जबर्दस्त मुकाबिला किया।

(ग) **सक्सिन-विजय**—मड-खूने सक्सिनोंको हराया। पचिमानने अपने अनुयायियोंके साथ जंगलमें शरण ली। लेकिन मंगोल भगोड़ोंको फिरसे मुकाबला करने लायक क्यों छोड़ने लगे? मुड-खेने जगह-जगह अपनी सैनिक चौकियां स्थापित कीं और अन्तमें पीछा करते-करते वोल्गा नदीके टापूमें उसे जा दबाया। पचिमानके अनुयायियोंमें बहुतसे मारे गये। बंदियोंमें स्त्री-बच्चे तथा स्वयं पचिमान हाथ आया और गुस्ताखीके अपराधमें मुड-खेके हुक्मसे उनके सामने ही पचिमानके दो टुकड़े कर दिये गये।

(घ) **मास्को-विजय**—उसी ग्रीष्म (१२३७ या १२३८ ई०) में खानजादों (राजकुमारों) ने रूसियोंके नगर रस्पान (र्‍याज़न) पर आक्रमण किया। तीन दिनमें ही नगरने अधीनता स्वीकार कर ली। उस समय सिम्बिर्स्क, पेन्ज़ा, तम्बोफ नामसे पीछे प्रसिद्ध स्थानोंमें मोर्दवीन लोग बसते थे, जिनका अपने पड़ोसी रूसियोंसे अच्छा सबंध नहीं था। उन्होंने मंगोलोंके लिये गुप्तचरका काम किया। उनसे पता पाकर मुड-खे और बा-तूकी सम्मिलित सेनाने सीमान्ती नगर र्‍याज़नके ऊपर आक्रमण किया था। र्‍याज़नके रावल जार्जने मंगोलोंसे लड़नेमें सफलता न पा अपने पुत्र फयोदरको भेंटके साथ बा-तूके पास भेजा। बा-तूने भेंट स्वीकार की, लेकिन साथ ही फयोदरसे उसकी बहन और बेटियोंको भेजनेके लिये कहा और यह भी, कि वह अपनी सुन्दरी भार्या एउप्रेक्सिया को दिखलावे। फयोदरने कहा—ईसाई राजकुमार अपनी स्त्रियोंको काफिरोंको नहीं दिखाया करते। इसपर बा-तूके हुक्मसे वह वहीं मार दिया गया, जिसकी खबर पा अपना सतीत्व बचाने के लिये उसकी स्त्रीने अपने पुत्रके साथ छतसे गिरकर जान दे दी। अब भी वर्तमान र्‍याज़नसे दस कोसपर पुराने (स्तारया) र्‍याज़न का ध्वंस मौजूद है।

(१) र्‍याज़न-विजयके बाद बा-तूकी सेना ओकाके किनारे-किनारे कलोम्ना पहुंची और उसपर अधिकार कर मास्को (मस्कव) जा उसे लूटा-जलाया। फिर वह सुज्दलकी राजधानी व्लादिमिरके ऊपर पड़ी। नवगोरद जाते १८ मार्च १२३८ ई० को वोलोखोत्स्की (त्वेर) और तोरज़कपर भी कब्जा किया, लेकिन मंगोल वोल्गाके उद्गम सेलिगोरसे आगे नहीं बढ़े। मंगोलोंके सामने "ग्राम लुप्त हो गये, रूसियोंके मुंड हसियेके सामने घासकी तरह गिरते गये।"

(२) दूसरी सेना इसी समय बा-तूके भाई बेरेकके नेतृत्वमें वोल्गा और दोनके बीचके किपचकोंके ऊपर पड़ी। किपचक-सरदार कोतियक देश छोड़ अपने बंधुओं (मग्यारों) के पास हुंगरीकी ओर भगा।

(३) तीसरी सेना सेदान, बूजक और बूरीके नेतृत्वमें मारी लोगोंके ऊपर पड़ी, जो कि उस समय दक्षिण-पश्चिमी रूसमें रहते थे।

(४) चौथी सेना काकेशसकी पहाड़ियोंकी ओर चेरकासियोंके पीछे पड़ी। १२३८ ई० की सर्दीमें चेरकास-राजा तुकान मारा गया और १२३९ ई० में मंगोलोंने काकेशसके दरबंदपर आक्रमण किया।

मास्कोकी तरफ बढ़ते समय रूसी राजुल रोमनने प्रतिरोध करने मंगोलोंके हाथ अपने प्राण खोये। तीन दिनके संघर्षके बाद मंगोलोंने मास्को (मस्कव) को ले लिया और वहांके राजुल (क्न्याज़) व्लादिमिर (उरुनतु) को मार डाला। फिर वह लोगोंको कत्ल करके नगरोंको बिल्कुल लूटते-जलाते चीजोंको नष्ट करते आगे बढ़े, जिसमें पीछेसे उनपर प्रहार करनेवाला कोई न रह जाय। उस समय सारा रूस छोटे-छोटे राजुलोंमें बंटा हुआ था। वह भला कैसे मंगोलोंके टिड्डी-दलका मुकाबिला कर सकते थे? रूसी जंगलोंमें भागते लेकिन वहांसे भी पकड़कर मारे जाते।

बा-तूके दो सालोंके लूटमारके बाद भी कोजेल्स्क सर नहीं हुआ, कदन तथा बूरीकी सेनाओंके सम्मिलित रूपसे घेरनेके बाद ही उसपर अधिकार हो पाया। मुस्लिम इतिहासकारोंके अनुसार चेरकासियोंके देश ६३५ हिजरी (१२३६-३८ ई०) के अंतमें मुड-खे और कदनने आक्रमण किया, और राजा तुकान मारा गया।

(ङ) **पोलैंड-विजय**—१२३९ ई० के अन्तमें बा-तूके नेतृत्वमें प्रधान सेना द्नियेपर-उपत्यकाके कियेफकी ओर चली। पोलोवसी (किपचक) अपना देश छोड़कर भागे। दक्षिण-पश्चिमी रूसियोंने भी एक होकर

मुकाविला नही कर पाया। मगोल रूसी राजुलोको भगाते कियेफ पहुचे। ६३७ हिजरी (१२४० ई०) की शरद्मे कआन * ओगोताइ का वुलावा आनेसे गो-युक और मुङ-खे किपचक-भूमिके रास्ते मगोलिया लौट गये, लेकिन वा-तूकी विजय-यात्राका सवसे वडा कदम अव उठनेवाला था।

वा-तू अपने भाइयो कदन, वूरी और वू-चेकके साथ रूसियो और कालीटोपियो (स्याहकुलाह) की ओर वढा। इसी समय दिसवरमे नौ दिनो के मुहासिरेके वाद उसने महानगर मनकेरकानको ले लिया। मनकेरकान रूसका सवसे पुराना और वैभवशाली नगर कियेफका ही नाम था, मगोलोने नगरकी होली जला दी, जिसमे शताव्दियोंसे जमा होती कलाकी वस्तुये तथा भव्य इमारते नष्ट हो गई। तवसे १५वी शताव्दी तक कियेफ उजाड रहा।

१२४१ ई० (६३८ हि०) मे ओगोताइ मरा, वसतमे वाकी खानजादे भी वाश्किरोकी भूमि होते मगोलिया लौट गये। इसी साल वा-तूने वाश्किर-राजाको नष्ट किया।

(च) युरोप-विजय—१२३८ ई० मे १२४० ई० के वसततककी वा-तूकी विजय-यात्रा अभूतपूर्व है। इसी समय उसने वोल्गाके कवीलोको परास्त किया, रूसी नगरोको जीता, काला सागरके मैदानो-को अपने हाथमे किया, कियेफको ध्वस्त किया, और फिर अपने सैनिक दलोको दक्षिणी पोलैड (रुथे-निया) की ओर भेजा। उस समय रूसकी तरह पोलैद भी वहुत-से छोटेछोटे राज्योमे वटा हुआ था। मार्च १२४१ ई० मे जव जाडोकी वर्फ पिघली, तो मगोलोके सैनिक शिविर कारपेथीय पर्वतमालाके ऊपर लेम्वरमें थे।

जनवरी १२४१ ई० मे मगोल गोलेनियामे लूट-मार मचाते पोलैदकी राजधानी क्राकोके पास पहुचे। १८ मार्चको पोलोको पराजित कर २४ मार्चको मगोल-सेनापति वैदरने क्राकोको जलाया। मगोल फिर सिलेसिया और रतिवरमे ओडर नदीको पार कर दव्रेस्जव नगरके सामने पहुचे। ९ अप्रैलको मगोल्लोने पोलो और त्युतानिक सरदारो (राजुल हेनरी आदि) की सेनाओको लिग्नित्जके पास वालस्टाट (युद्धक्षेत्र) नामक स्थानमे हराया। लिग्नित्ज, ओत्माखन, वोलातीजको लूटते-जलाते मईमे वह मोरावियामे पहुचे। वहा त्रोपनके इलाके तथा दूसरे स्थानोका उन्होने सहार किया। फ्रासके राजा लुईके पास पत्र लिखते हुये इस ध्वस-लीलाका वर्णन एक ईसाई पादरीने इस प्रकार किया है—"जर्मनीके सभी राजुल, राजा तथा पुरोहित एव हगरीके भी लोगोने हाथमें सलीव लेकर तातारोके खिलाफ अभियान किया। हमारे भाइयोने जो वतलाया है, यदि वह ठीक है, और भगवान्की इच्छा-से वह पराजित हो गये, तो तुम्हारे देश (फ्रास) तक कोई ऐसा नही है, जो तातारोके मुकाविलेमें खडा हो सके।"

वा-तूके दुश्मनको मग्यार-राजा वेलाने शरण दी थी। मगोलोके लिये यह भी एक वहाना मिला। चालीस हजार वदी वा-तूकी सेनाके लिये रास्ता वनाते थे। वा-तूकी एक सेना मोलदाविया, कुमा-सिया, त्रान्सिल्वानियाको नष्ट करते ओरसोवा पहुची, उसने नगरको मलियामेट करदिया। वेलाकी सेनाको १२ मार्चको रुथेनियन डाडेके पास हार खानी पडी थी। सरविया होते वोल्गारिया मे दाखिल हो २५ दिसवरको मगोलोने वहाके ग्रामो-नगरोका सर्वसहार किया। प्लातेन झीलसे होते मगोल क्रोसि-याकी ओर वढकर स्पालत्रो समुद्रतट पर पहुचे और कतारोको ध्वस करते अलवानियामें जा दाखिल हुये। वहासे मईमे कदनकी सेना वोल्गारिया होते लौटकर वा-तूके पास पहुची। उनकी गति कितनी तेज थी, यह इसीसे मालूम होगा, कि वह तीन दिनमें सत्तर मीलकी यात्रा करके पेस्त (वुदापेस्त) नगर पहुच गये।

सुवोदाइ और वा-तू तीन सेनाओके साथ कारपेथीय पर्वतमालाके भीतरसे दुश्मनके दक्षिणी पक्षकी ओर वढे थे। गलीसियासे हुगरीमे घुसकर सुवोदाइकी सेना मलदावियाकी ओर लौट पडी। रास्तेमे जो भी प्रतिरोधी सैनिक-टुकडिया मिली, उनका सफाया करते उसकी सेना पेस्तमें प्रधान सेनासे अप्रैल-के आरभमें—लिग्नित्जके युद्धके जरा-सा ही पहले—आ मिली। इस सेनाको यह पता नही था, कि उत्तरमे क्या हो रहा है। उसने ओडेरके तटपर अवस्थित मगोल-सेनप कैदू और उसके भाइयोके साथ सवध

* कआन=कगान=खाकान=खान खान=राजाधिराज (सम्राट्)

स्थापित करनेके लिये एक सेना भेजी। उगोलिनके विशपकी छोटी सेना हारी, और विशप अपने तीन साथियोंके साथ जान बचाकर किसी तरह निकल भागा। मंगोलोंका अभियान प्रलयकी ध्वंस-लीला जैसा था, जिससे सारे युरोपमें उनका आतंक मचा हुआ था। सभी मुकाबिला करनेकी तैयारी कर रहे थे। सुदूर-फ्रांस भी सैनिक सहायतायें भेज रहा था। हुंगरीके राजा बेला चतुर्थने एक लाखकी सेना तैयार की थी, जिसमें मगयार (हुंगेरियन), क्रोत, जर्मन तथा फ्रेंच सैनिक भी शामिल थे। मंगोलोंकी सैनिक चाल वही थी, जो कि उनके पूर्वज हूणोंकी, और उससे वे अक्सर सफल होते रहे, शत्रु-सेना-के सामने मंगोल पीछे हटने लगते। जब शत्रु इसे पराजय समझकर बेखटके खदेड़ना शुरू करते, तो मंगोल चारों तरफसे उन्हें घेर लेते। निर्णायक युद्ध-स्थल के एक तरफ सायो नदी थी, दूसरी तरफ द्राक्षालताओंसे ढका तोकय पर्वत, तीसरी तरफ लोमनिद्जके घने जंगलों से ढके बड़े पहाड़। सूर्योदयके समय बा-तूकी सेना पुलकी ओर आगे बढ़ी और उसने वहाँकी रक्षक सेना पर एकाएक आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया। अब मंगोलोंकी प्रधान सेना पुलके पार दौड़ी। शत्रु-सेनामें भगदड़ मच गई। युद्ध बड़े जोरका हुआ और दोपहरके करीब ही उसकी समाप्ति हो सकी। इसी समय सुबूताई बेलाकी सेनाके पीछे पहुँचा। हुंगेरियन जान लेकर भगे और मंगोल उनका पीछा करने लगे। दो दिनके रास्तेतक सड़कों-पर युरोपियनोंकी लाशें पटी हुई थीं—चालीस हजार आदमी मारे गये थे। बेलाका भाग्य था, जो कि अपने तेज दौड़नेवाले घोड़ेकी सहायतासे वह बच निकला। वह दुनाइ (दन्यूब) के किनारे-किनारे छिपता भागता रहा और मंगोल उसकी तलाशमें फिरते रहे। अन्तमें बेला कारपेथीय पर्वतमालामें पहुँचा। मंगोलोंने मग्यार राजधानी पेस्तमें आग लगा दी। वह बढ़ते हुये आस्ट्रियासे न्यूस्टाट तक पहुँचे। भ्रोटे जर्मनी और बोहेमिया (चेको) को एक ओर छोड़ते वह दक्षिणकी ओर मुड़ अद्रियातिक समुद्रतटपर पहुँचे और केवल रगूसा को छोड़कर समुद्रतटके सभी नगरोंको उन्होंने लूटा-जलाया। दो महीनेके भीतर मंगोल घोड़ोंने युरोपकी एल्बा नदीके उद्गमसे अद्रियातिकके समुद्रतटतक रौंद डाला। उन्होंने तीन महासेनाओं, एक दर्जन छोटी सेनाओंको हराया और ओलमुत्ज छोड़कर इस भूभागके सारे नगरोंको पराजित किया। स्टर्नबर्गके यारोस्लावने अपने बारह हजार सैनिकोंके साथ ओलमुत्जकी बड़ी बहादुरीसे रक्षा की थी। युरोपके तत्कालीन राजा हुंगरीका बेला और फ्रांसका संत लुई दोनोंही योग्य थे, लेकिन सुबोदाइ, मङ्-गू, कै-दू और बा-तू जैसे महान् सेनापतियोंके सामने उनकी एक भी न चली।

जिस वक्त मंगोल दावानलकी तरह युरोपकी ओर बढ़ रहे थे, उसी वक्त कैसर फ्रेडरिक द्वितीय और पोप ग्रेगरी नवम का द्वंद्व चल रहा था। दोनोंने तुरन्त अपने संघर्षको बंद कर दिया। धर्मयुद्धका प्रचार होने लगा। कैसर नेपल्स और सिसिलीका स्वामी था। वह अल्प्स पर्वतमालाके पारके सभी देशोंपर अधिकार जमाना चाहता था। पोप इसके लिये तैयार नहीं था। अगस्त १२४० ई० से अप्रैल १२४१ तक—जब कि मंगोल युरोपको रौंद रहे थे—फ्रेडरिकने महतराज (पोप) के नगर फायनकाको घेर रक्खा था, जिसे अन्तमें उसने अपने हाथमें कर लिया। दूसरी ओर पोपने २० मार्च १२३९ ई० को फ्रेड्रिकको धर्म-बहिष्कृत कर दिया। साल भर बाद फ्रेड्रिकके विरुद्ध पोपने धर्मयुद्धकी घोषणा की और जर्मन राजुलोंके एक समुदायको फ्रेड्रिकके खिलाफ लड़नेके लिये तैयार किया। युरोपकी यह कमजोरी बतला रही थी कि बा-तूके सफल करनेकी देर थी, फिर इंग्लिश-चैनेल तक कोई भी शक्ति उसकी सेनाको रोक नहीं सकती थी।

मंगोल-हथियार—साधु कार्पीनी दूत बनाकर जिस वक्त मंगोलिया भेजा गया, उससे थोड़ा ही पहले मंगोलोंकी १२३८-४२ ई० वाली विजय-यात्रा हुई थी। कारपीनी दरबारमें इसीलिये भेजा गया था, कि खाकानसे ईसाइयोंकी निर्मम हत्या बंद करनेके लिये प्रार्थना करे। कारपीनीने अपने यात्रा-विवरणमें मंगोलोंकी अजेय शक्तिके बारेमें लिखा है—

"कोई भी अकेला राज्य या देश तातार (मंगोल) का मुकाबिला नहीं कर सकता। तातारोंकी लड़ाई बेवल बलकी नहीं, बल्कि दाव-पेंचकी होती है। युरोपवालोंकी अपेक्षा तातारोंकी संख्या कम है और शारीरिक डीलडौल और शरीर भी वह छोटे हैं। हमारी सेनाओंको भी तातारोंके तरीके अनुसार शिक्षित करने, और उन्हींके युद्ध-नियमोंको कड़ाईके साथ पालनेकी जरूरत है।

जहा तक सभव हो युद्धक्षेत्र ऐसा चुनना चाहिये, जहा चारो ओरकी चीजे दिखलाई पडती हो। सेनाको एक निकायमे नही लाकर खडा करना चाहिये, वल्कि उसे कई विभागोमे विभक्त करके रखना चाहिये। पता लगानेके लिये चारो तरफ चर भेजने चाहिये। हमारे सेनापतियोको रात-दिन अपनी सेनाओको सजग, सदा हथियारवद तथा युद्धके लिये तैयार रखना चाहिये। तारतार शैतानकी तरह सजग रहते है।

"अगर ईसाई दुनियाके राजा और शासक मगोलोके वढावको रोकना चाहते है, तो उन्हे एक सयुक्त परिषद् वनाकर एक उद्देश्यके साथ प्रतिरोध करना चाहिये। ईसाई-राजाओको चाहिये, कि वह अपने सिपाहियोको मजवूत धनुपो, लवी कमानो और तोपो से हथियारवद करे। यही हथियार है, जिनसे तारतार लडते है। इनके अतिरिक्त सैनिकोको अच्छे लोहेकी गदाओ अथवा लवे वेटवाले गडासोको रखना चाहिये। वाणके फौलादी फलोको तारतारोके ढगसे खूव लाल रहते नमक-मिले पानीमे डुवाकर तैयार करना चाहिये। इस तरह वह कवचके भीतरतक घुस सकते है। हमारे आदमियोके पास अच्छे शिरस्त्राण तथा कवच होने चाहिये, जिसमे उनकी रक्षा हो सके। घोडोके लिये भी यही वात है। जो इतने हथियारवद नही है, उन्हे पीछेकी पाती मे रखना चाहिये।"

आस्ट्रियामे न्यूस्टाटपर पहुचकर मगोलसेना अपनी जन्मभूमि (मगोलिया) से ६ हजार मील दूर पहुची थी, और यहापर भी अजेय सावित हुई।

साधु सेवलरीने मगोलोके हथियारोके वारे मे लिखा था—

"उनके कवच भैसके चमडोके वने होते है, जिनके ऊपर जजीरे खिची रहती है। वह अभेद्य होते है जिसके कारण सैनिकका अग सुरक्षित रहता है। वह अपने सिरपर लोहे या चमडेके शिरस्त्राण पहनते है। टेढी तलवार, धनुप-वाण उनके हथियार है। उनके वाणोके फल चार अगुल चौडे—हमारे फलोसे अधिक लवे और लोहे, हड्डी या सीगके वने होते है। उनके दात इतने छोटे होते है, कि वह धनुषकी प्रत्यचाओके ऊपर नही लग सकते। उनकी ध्वजायें छोटी तथा चमरीके काले या सफेद पूछोकी होती है, जिनके सिरेपर ऊनका गुच्छा रहता है। उनके घोडे छोटे, सुडौल और मेहनती तथा सभी तरहकी कठिनाइयो को सहनेके लिये तैयार होते है। वह विना रिकावके सवार हो उन्हे चट्टानो या दीवारोपर हरिनकी तरह कुदा सकते है।"

यह सभी स्वीकार करते है, कि तत्कालीन जगत्मे सेना-सवधी इजिनियरी-निपुणता जितनी मगोलोके पास थी, वैसी उस समय युरोपमे कही नही थी। उनके पाषाण-क्षेपक (कतापुल्त) और वारूदकी तोपे गजव ढाती थी।

जर्मन सीमात नगर लिग्निल्जसे लेकर वोल्गाके किनारे तक शायद ही कोई नगर हो, जो वा-तूकी ध्वस-लीलासे वचा हो। नगर मगोलोकी आखोमें काटेकी तरह चुभते थे। यही नही, कि वहा उनके लिये प्रतिरोधकी सभावना थी, वल्कि स्थिर वासी लोग जिस भूमिको जोतते-वोते थे, वह मगोल सैनिकोको अपने घोडो और पशुओके चरनेके लिये आवश्यक थी। इसीलिये वह नगरो और वस्तियोको उजाड उन्हे घासका मैदान वना देना चाहते थे। वा-तूका युद्ध मगोलो और युरोपियोका ही नही वल्कि घुमन्तू-पशुपालो और स्थिर वस्तीवाले किसानोका भी युद्ध था। यदि इसी समय ओगोताइ न मर गया होता और मगोल-सेनापतिओको लौटनेका वुलावा न आता, तो इसमें कोई शक नही, कि युरोपकी चप्पा-चप्पा भूमिको मगोल-सवारोने रौद डाला होता, सारे नगरोको जला दिया होता। उनकी सफलताका कारण वतलाते हुये एक इतिहासकारने लिखा है—"घुमन्तू जातिया यद्यपि अनियमित सेना है, किंतु उन्हे वहुत आसानीसे गतिशील किया जा सकता है। वह सजग हो तैयार खडी रहती हैं। जो कुछ उनके पास है, उसे वूढो, स्त्रियो और वच्चोकी रक्षामे छोडकर वह हर समय कूच करनेके लिये तैयार रहते है। ऐसी जातिके लिये युद्ध कोई विशेष घटना नही है। घुमन्तुओंके लिये लवी यात्रायें थोडेसे परिवर्तनके सिवा और कुछ नही है। उनके घोडे और रसद सव साथ-साथ होती है।"

मगोल आखिरतक घुमतू रहे। जहा यह उनकी शक्तिका एक वहुत भारी कारण था, वहा यही उनकी कमजोरीका भी मुख्य कारण था। रूसी इतिहासकार करमाजिन (१७६५–१८२६ ई०) के अनुसार—"अगर वे कृषिजीवी वन गये होते, तो शायद रूस अभी भी मगोलोंके अधीन होता।"

वा-तूने विजय-यात्राने लौटकर मास्कोके महाराजुल यारोस्लाव व्सेवोलद-पुत्रको सारे रूसी राजुलोंका सरदार वना दिया। इसी समयसे मास्कोकी प्रधानता शुरू हुई। दो साल वाद गु-युक कआनके राज्याभिषेकके समय यारोस्लावको मगोलिया भेजा गया, जहासे वह लौट नही सका। इसी महोत्सवमें फ्रानिस्कन साधु जान प्लानो कार्पीनी (११८२-१२४६ ई०) भी शामिल हुआ था, जो पोप इन्नोसेत-द्वारा मगोल-सम्राट्को ईसाई वनानेके लिये भी भेजा गया था। वह १६ अप्रैल १२८४ ई० को ल्योन्ससे चला और जर्मनी, वोहीमिया, ब्रेस्लो, क्राको, वोल्दमीर (वोल्हूनिया), कियेफ (४ फर्वरी १२४६ ई०), तारतार-राज्य कानियेफ, ओरेन्जा (दूनियेपर दक्षिणतट), दोन, वोल्गा (वातूमराय), यायिक (उराल-नदी), कोमानियाकी पूर्वी सीमा, कग-ली, तुश, यानीकेन्त (सिरतट), तलस (तरस), इमिल, ओगोताइ-शिविर, नेमन (२८ जून) होते राजधानी कराकोरममें पहुचा। कारपीनीने अपनी यात्राका जो वर्णन किया है, उसमे उनके रास्तेके देशोंका अच्छा परिचय मिलता है। वा-तूके दरवारमे उसने पत्नियोसहित खानको तख्तपर वैठे देखा। खानजादे (राजकुमार) वेचोपर वैठे थे, जिनमे पुरुप तख्तकी दाहिनी ओर और स्त्रिया वाई ओर थी। उसके वर्णनसे यह भी मालूम होता है, कि मुङ-खेके कआन चुने जानेमे वा-तूका खास हाथ था। उस समय छिङ-गिस्-वंशका वही सवसे वडा और सम्मानित राजकुमार था, इसलिये उसकी वातको कोई नही काटता था। मुङ-खेने पश्चिमकी दिग्विजय मे वा-तूकी वडी सहायता भी की थी। मगोल वा-तूको कितने सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे, यह उसके सायन (भले राजा) के नामसे सिद्ध है।

१२५५ ई० में मुङ-खेके राज्याभिषेकके समय वा-तू स्वय नही जा सका। उसने अपनी जगह अपने पुत्र सरतकको भेजा था। इसी समय (१२५५ ई०) इतिल (वोल्गा) के तटपर वा-तूका देहान्त हो गया।

३ सरतक वा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

वा-तूने अपने ज्येष्ठ पुत्र सरतकको मुङ-खे कआनके सिंहासन-महोत्सवमे भेजा था। वही वा-तूके मरनेकी खवर पा मुङ-खे कआनने उसे सुवर्ण-ओर्दूके खानकी यारलिक (शासनपत्र) प्रदान करके भेजा। लेकिन वह अधिक दिनोतक नही जिया। समकालीन मगोल इतिहास-लेखक रशी-दुद्दीन (१२४७-१३१८ ई०) के इतिहास 'जामेउत्-तवारीख' के अनुसार वा-तूके मुख्य पुत्र चार थे—सरतक, तुकात, अवगान और उलकची। सरतक निस्सतान मरा और उसकी जगहपर उसके भाई उलकचीको गद्दी मिली।

४. उलकची वा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

कआनके यारलिकके अनुसार वा-तूकी जेठी रानी वोरकचिन खातूनने उलकचीको गद्दीपर वैठाया, लेकिन वह भी जल्दी ही मर गया। अब वा-तूके मनस्वी भाई वेरेकके लिये रास्ता साफ था।

५ वेरेक (वरका) जू-छि-पुत्र (१२५५-६५ ई०)

वेरेक अपने भाईके समान ही दृढ योद्धा और शासक था। वह भाईके मरनेके साल ही पश्चिममे फैले विशाल मगोल-राज्यका खान वना। वेरेकने भाईके समयमें (१२३८ ई०) ही किपचकोकी भूमिमें विजय प्राप्त कर अपनी योग्यताका परिचय दिया था। कुछ इतिहासकारोंके अनुसार वेरेक प्रथम मगोल राजकुमार था, जिसने इस्लाम-धर्म कबूल किया, यद्यपि उसका यह अर्थ नही, कि उसके समय हीसे सुवर्ण-ओर्दूके खानोंमें इस्लामकी परम्परा चल गई। उसके लिये अभी आठवें उत्तराधिकारी उज्वेक (१३१२-४० ई०)के आनेकी प्रतीक्षा थी, जो कि वा-तूकी पाचवी पीढीमें पैदा हुआ था। 'शजरतुल्-अतराक' के अनुसार वरका खान मुसलमान था। कुछ इतिहासोंमे लिखा है, कि वह मुसलमान-मासे पैदा हुआ था। दूसरी परम्परा कहती है—पैदा होनेपर बहुत चाहा, कि वरकाकी माका दूध उसे दें, लेकिन उसने तबतक दूध नहीं पिया, जबतक कि एक मुसलमान औरतको उसे दूध पिलानेके लिये रख नही दिया गया। बड़ा होनेपर [illegible] के अनुसार जब चारो ओर घूमता सैर कर रहा था, उसी समय संयोगसे [illegible] बुखारामें पहुंचा, जहा उसे एक मुस्लिम मतसे शिक्षा प्राप्त करनेका सौभाग्य

मिला, कहते हैं, "वह महान् सत (शेख) बुजुरगवार हजरत शेख सैफुद्दीन वाखरजी थे, जोकि महान् हजरत शेख नजमुद्दीन कुवराके उत्तराधिकारी थे . । महान् शेखके हुकुमसे वह दश्ते-किपचकमे हाजी तुरकानकी ओर गया, जहा ईतल नदीके तटपर खुलाकू खान (तूलिखान-पुत्र) की विशाल सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ । दरवेशोंके पुण्य-प्रतापसे खुलाकूको हार खानी पडी ।"*

दूसरी कहावत—जिसमे सच्चाईका अश ज्यादा मालूम होता है—जुजजानी द्वारा उद्धृत है, जिसके अनुसार वेरेकके पैदा होनेपर उसके वाप जू-छिने—"इस लडकेको मैं मुसलमान वनाऊगा" यह निश्चय कर उसके लिये मुसलमान धाय रक्खी, खोजदमे उसे इमामो और मौलवियोसे कुरान पढवाया। वा-तूका वेरेकके ऊपर विशेष प्रेम था । भाईके युद्धोमे उसके तीस हजार मुसलमान सवार घोडोकी पीठपर नमाजकी आसनी (जायनमाज) बाधे हुये चलते थे । वहा शरीयतकी सख्त पाबन्दी होती-थी । मुसलमानो में कोई शराव नही पीता था । जुजजानी यद्यपि मूलत ईरानका रहनेवाला था, लेकिन वह गुलामोके शासनके अतमे नासिरुद्दीन मोहम्मदशाहके समय (१२४०-६५ ई०) दिल्ली आकर रहने लगा था । उसने अपने इतिहासमे वेरेकके सवधमे तत्कालीन कथाका उल्लेख करते हुये लिखा है—"६५७ हि० (१२५८ ई०) में समरकदसे नूरुद्दीन सूफीके महन्त जलालुद्दीन सूफीके पुत्र अशरफउद्दीन दिल्लीमें व्यापारके लिये आये । वह अपने साथ इस्लामके वादशाह नासिरुद्दीनके लिये वेरेककी भेट भी लाये थे । वह वेरेकके पक्के मुसलमान वादशाह होनेके वारेमे वाते करते थे, जिनमेसे दोको जुजजानीने अपने ग्रथ "तवकाते-नासिरी" मे उद्धृत किया है—(१) समरकदमे किसी ईसाईका वेटा मुसलमान हो गया। वापने हाकिमोंके दरवारमें फरियाद की, कि मेरे वेटेको वहकाकर मुसलमान वनाया गया है । स्थानीय हाकिमने भी उसका पक्ष लिया। जव इसका पता वेरेकको लगा, तो उसने मुल्लोके पक्षमे निर्णय दिया । यह याद ही है, कि मगोल-शासक धर्मके वारेमे विलकुल तटस्थ रहते थे, जिसका वहुत कुछ पालन उनके अधीन मुसलमान अफसरोको भी करना पडता था । गद्दीपर वैठनेके तीसरे सालकी यह बात वेरेकके कट्टर मुसलमान होनेका पता देती है । हो सकता है, इसीलिये उसने हिंदुस्तानके इस्लामी वादशाहके साथ सवध स्थापित करना चाहा । (२) दूसरी वात—वा-तूके वाद सरतक गद्दीपर वैठा । वह अपने मुसलमान चाचा (वेरेक) को उसके अनुरूप सम्मान नही प्रदान करता था । इसके वारेमे कहनेपर सरतकने जवाव दिया—"तू मुसलमान है, और मैं ईसाई-धर्मका माननेवाला हू । मेरे लिये मुसलमानका मुह देखना भी ठीक नही है।" वेरेकने इस अपमानसे दु खित हो रोते-रोते रातभर अल्लाहसे प्रार्थना की और अल्लाहने दुआ सुनकर सरतकको मार दिया । जुजजानीके अनुसार वेरेकका राज्य किपचको, सकसिनो, वोल्गारो शकलाओ, रूसियोकी भूमि तथा रूमके उत्तर-पूरवतक फैला हुआ था—जेन्द और ख्वारेज्म उसके राज्यमे थे ।

वेरेकके गद्दीपर वैठनेके समय नवोग्राद (० गोरद) गणराज्यके महाराजुल अलक्सान्द्र नेव्स्की तथा उसके भाई सुज्दलके राजुल आन्द्रेइने वधाई और भेट भेजी थी । वा-तूकी पश्चिमकी विजय-यात्राको फिरसे जारी करनेका वेरेकको ख्याल आया, लेकिन पीछे खुलाकू (ईरान) खानके साथ झगडा हो जानेसे वह वही उलझा रहा और पश्चिमी युरोपको मगोल-खतरेसे मुक्ति मिली । तो भी १२५९ ई० मे वेरेकने अपने सेनापतियो वुरुन्दे, नोगाई और तुतूवुगाको दिग्विजयके लिये भेजा था । वह लुण्ठन होते विस्तुला नदी पार कर २ फर्वरी १२५९ ई० को सेन्दोमीर पहुचे । और जगहोमे लूट-मार और अधीनता स्वीकार करानेमे कोई दिक्कत नही हुई, लेकिन सेन्दोमीरवालोने प्रतिरोध किया, जिसपर मगोलोने वहाके लोगोका कत्ले-आम कर दिया । पोलेंदकी तत्कालीन राजधानी क्राको फिर नष्ट हुई । मगोल-सेना ओप्पेलनतक पहुची, जहासे लूटके साथ भारी सख्यामे ईसाई दासोको लिये लौट गई। वेरेककी दो राजधानिया थी—वा-तूसराय और वुलगारी, जिनमें वुलगारी वुलगारो (वोलगारो) की पुरानी राजधानी वर्तमान कजानके आसपास वोल्गा और कामा नदियोके सगमपर अवस्थित थी ।

खुलाकूसे संघर्ष—"तारीख-शेखेउवेस" (१३५६–७८ ई०) के अनुसार : "उस समयके रवाजके अनुसार वेरेकके कितने ही अमीर, खानजादे (राजकुमार) और सैनिक गर्मियोको आजुर-वाइजानमें

* " स्वोर्निक मतेरियलोफ अतनोश्चेरव्स्या क इस्तोरी जोल्तोइ ओर्दी" पृष्ठ—२६४–६५ ।

विताया करते थे। इलखान (खुलाकू) भी जाडोमे चगातू और गर्मियोमे अलदकमे रहता था। मराय-वेरेकने मुहम्मदावाद (अर्रान) होने गुश्तास्क तक वह अरावो (गाडियो) पर आते।" आजुर-वाइजान आजकी तरह उस समय भी दो राज्यो में बटा था—उत्तरी भाग सुवर्ण-ओर्दूके हाथमे था और दक्षिणी भाग इलखान (खुलाकू-वश) के हाथमे। मगोल ओर्दू अपने-अपने पशुओंके साथ चरवाहीके लिये सारी भूमिमें विचरा करते थे, उनका जाडा और गर्मी वितानेका अर्थ केवल एक जगहपर रहकर मनोविनोद करना नही था। झगडेके लिये वहा कोई भी कारण पैदा होना आसान था। वेरेकके भाई वुआल (मोवाल) के पुत्र तुतार (ततार)ने कुछ गुस्ताखी की, जिसके लिये उसे खुलाकूके पास लाया गया। खुलाकूने उसे उनके चचा—वेरेक (वरका) के पास भेज दिया। वेरेकने फिर उसे खुलाकूके पास कान मलनेके लिये भेजा। उसे यह ख्याल नही था, कि भतीजेको खुलाकू मौतका दण्ड देगा, लेकिन खुलाकूसे सवध कुछ पहले ही खराब हो चुका था। सुवर्ण-ओर्दूके अमीरोने कुछ छेड-छाड की, और खुलाकूको उन्हे दड देनेके लिये सेना भेजनी पडी थी। अमीर हारे। उनमें से अमीर निकुदेरके अधीन कुछ मगोल-सेना खुरा-मानके रास्ते भागी। उसने गजनी और विनिकके पहाडोको लेते मुलतान और लाहौरतक अपना अधिकार जमाया। कुमार ततारके मारे जानेके वाद अव दोनो वशोमे शत्रुताकी आग जोरसे भडक उठी। वेरेक इस्लामका वादशाह था और खुविले खानका भाई खुलाकू काफिर। वेरेकने उसके ऊपर इल्जाम लगाया—[1] "उस (हुलाकू) ने मुसलमान नगरोको नष्ट किया, इस्लामी वशोको खत्म किया, अकारण ही खिलाफतका जड-मूलसे उच्छेद किया।" भतीजेका वदला लेनेके लिये वेरेकने ततारके पुत्र नोगाइको तीन तुमान[2] (तीस हजार) सेना देकर वापके खूनका वदला लेनेके लिये भेजा। वह शिरवान पहुचा। खबर पाकर खुलाकूने सारे ईरानमे सेना जमा कर तीन तुमान सेना शिरामून नोयन, अवताइ नोयन और समगरके नेतृत्वमें भेजी। २० अगस्त १२६२ ई० को स्वय खुलाकूने भी अलतगासे प्रस्थान किया। अक्तूवर-नवम्वर १२६२ ई० (जुल्हिजा ६६० हि०) में दोनो ओरकी भारी लडाई हुई। अवताइ नोयनने शिरवानमे एक फरसख (कोस) पर सुलतानचुका नदीके किनारे नोगाइको वुरी तरहसे हराया। नोगाइ जान लेकर भागा। इलखानकी सेनाने २० नवम्वर १२६२ ई० (६ मुहर्रम ६६० हि०) आगे प्रस्थान किया। दरवन्दके घाटेमें—जहा काकेशस पहाड तथा कास्पियन समुद्र एक दूसरेके विल्कुल नजदीक आ जाते है—फिर जमकर जवर्दस्त लडाई हुई। वेरेककी सेना फिर हारी। खुलाकूकी सेनाने दरवन्द पार हो किपचक भूमिको लूटा-वरवाद किया। तो भी सुवर्ण-ओर्दूके खानकी शक्ति अभी क्षीण नही हुई थी। वह सेना एकत्रित करते अवसर ढूढता रहा। इलखानकी सेना लौटते हुये तेरक नदीके तटपर पहुची। जाडोंके कारण नदीका पानी जम गया था। १३ जनवरी १२६३ ई० को सवेरेसे शाम-तक इलखानी सेना उसपरसे पार होती रही। यकायक नदीकी जमी वर्फ टूट गई, जिसमे वहुत-से लोग पानीमें डूव मरे। खुलाकूकी सेना सुवर्ण-ओर्दू सैनिकोकी मार खाती पीछे हटी। इसी समय २२ अप्रैल १२६३ को खुलाकू युद्धमे घायल हो गया, जिससे ८ फर्वरी १२६४ ई० को वह मराग-जगातमें मर गया। लेकिन अव वापके कामको उसके योग्य वेटे अवका खान (आरिक वूगाखान) ने अपने हाथमे ले लिया।

१३ जुलाई १२६५ ई० मे अवकाखानने राजकुमार यशमूतके नेतृत्वमे एक वडी सेना शिरवानकी ओर भेजी। खान स्वय जाडामे माजन्दरानमे रहा। उधर उत्तरमे राजकुमार नोगाइ भी सेना ले शिरवान-की ओर चलकर अकसू नदीके तटपर पहुचा। यशमूत कुरा नदी पार हो गया। १४ नवम्वर १२६५ ई० को दोनो सेनाओमें लडाई हुई, जिसमे तुगाचारका वाप कायर वूगा मारा गया। सेनापति नोगाइ भी जिसमे आहत हुआ। सुवर्ण-ओर्दूकी सेना तितर-वितर हो शिरवानकी ओर लौटी। अव वेरेक स्वय तीस तुमान[2] (तीन लाख) सेनाके साथ आया और दक्षिणमे अवकाखान भी मुकाविलेके लिये चला। दोनो सेनाये कुरा नदीके दोनो तटोपर आमने-सामने पक्तिवद्ध हुई। १४ दिनतक यही हालत रही। वेरेक नदी पार होनेका कोई अवसर न देख ऊपर पहाडमें कही पार होनेके ख्यालसे नदीके किनारे-किनारे निर्झरी की ओर चला, लेकिन असफल-मनोरथ हो रास्तेमें ही उदरशूल (कुलज) की वीमारीसे मर

---

[1] "जामे-उत्-तवारीख" (राशिदुद्दीन) [2] १ तुमान = १० हजार।

गया। दोनो प्रतिद्वंद्वी वेरेक और खुलाकू मर गये, लेकिन उनकी दुश्मनी खतम नही हुई। वेरेकंकी लाशको सदूकमे वदकर वा-तूसरायमे ले जा भाईके पास ही दफन कर दिया गया।

वेरेककी सेना खुलाकूसे उलझनेके पहले इस्ताम्बूल (कुस्तन्तिनोपोल) तककी भी विजय-यात्रा कर चुकी थी, जवकि वहाके राजाने क्रिम नगरको सुवर्ण-ओर्दूके खाकानको प्रदान किया था।

वेरेककी मृत्युके वाद फिर वा-तूकी सतानोमे गद्दी चली गई और तोगोन-पुत्र मङ-गू तेमूर खान वना।

६. मङ-गू तेमूर, मुङ-खे तेमूर (१२६५-८० ई०)

खुविले खाकानने वेरेकके वाद मुङ-खे तेमूरको खानपदकी यारलिक भेजी। यद्यपि उस समय मङ-गू तेमूर खुविलेका कृपापात्र था, लेकिन पीछे उसके विरोधी ओगोताइ-वशी कँदू खानका समर्थक वन गया, जिससे खुविले उसका विरोधी हो गया। रूसके राजुल मङ-गू तेमूरके आज्ञाकारी सामत थे। सुवर्ण-ओर्दू की राजवानी सराय (सराय चिक)मे युरोपीय राजा और राजकुमार भी भेट लेकर कोर्निस वजानेके लिये आते थे। अव मगोल-वश सभ्यता और सस्कृतिका प्रतीक समझा जाता था। रूसके राजुल और महाराजुल मगोल पोशाक और दरवारी रीति-रवाजोको अपने लिये आदर्श मानते थे। इस आदर्श का अनुगमन १८वी सदीके आरभतक किया जाता रहा, जव कि प्रथम पीतरने इन पुराने तरीकोको तुच्छ समझ रूसका युरोपीकरण शुरू किया। मङ-गू तेमूरके १५ सालके शासनमे सुवर्ण-ओर्दूकी शक्ति और राज्यविस्तारमे कमी नही हुई। हा, खुलाकू-पुत्र अवकाखानके साथ चलते झगडेके कारण वह कोई नया काम नही कर सका। मङ-गू तेमूर अपने न्याय और बुद्धिमानीके लिये प्रसिद्ध था, जिसके लिये ही उसे लोगोने केलेकखानका नाम दे रक्खा था।

७ तुदा-मङगू तोगनपुत्र (१२८०-८४ ?)

तुदा-मङगू तुकूकान (तोगोन) का तृतीय पुत्र तथा मङ-गू तेमूरका भाई था। इसकी रानी तुरे कुतुलुक और दादी वा-तूकी प्रभावशाली रानी वोरकचीन दोनो—अलची तातार कवीलेकी थी। तुदा-मङ-गू निर्वल शासक था। जिससे लाभ उठाकर मङ-गू तेमूरके पुत्रो—अलगू और तुगरल एव तोगनके ज्येष्ठ पुत्र तरवू (दरतू) के पुत्रो कुनचोग और तुला वुकाने मिलकर खानको पागल कहकर उसे गद्दीसे उतार पाच सालतक सम्मिलित राज्य किया।

यस्सू-मङगू (. –१२८९ ई०)—"शजरतुल-अतराक" ने यस्सू-मङ-गूको तुदा-मङ-गूका उत्तराधिकारी कहते—"यस्सू मुङ-गू-खान विन-तोगान विन-वातू-खान विन-जोजी-खान विन-चगिस-खान"—पाचवा खान लिखा है। सुवर्ण-ओर्दूके ये पाच साल ऐसे गृह-कलहके थे, जिसमे जहा-तहा अनेक खान वने हो, यह सभव है। इस अव्यवस्थाका अत तोकतोगूके खान वननेके साथ हुआ।

८ तोगताइ, तोकतोगू, मंगूतेमुर-पुत्र (१२८९-१३१३)

सेनापति नोगाइ अपने ओर्दूकी इस दुरवस्थाको चुपचाप देख नही सकता था। अतमे उसकी नजर मङ-गू तेमूरके पुत्र तोकतोगूके ऊपर पडी। तोकतोगूकी मा उलजइ खातून केलमिश अकाखातूनकी पोती या नतिनी थी। अराजकताके समय राजकुमारोकी हत्या आम वात थी, जिसके डरके मारे तोकतोगू भाग गया। वेरेकचरके पुत्र विलिकचीने उसकी सहायता की। उसने वा-तू और वेरेकके समयके प्रसिद्ध सेनापति नोगाइको वुलवाया। अका (ज्येष्ठ) कहकर तोगताइने वहुत लल्लो-चप्पो करके उसे अपनी ओर कर लिया। नोगाइका ओर्दू उजी (द्नियेपर) की उपत्यकामें रहता था। वही सेना और सेनपोको एकत्रित कर नोगाइने समझाते हुये कहा, कि मुझे सायन (वा-तू) खानने आज्ञा दी थी, कि उलुस (ओर्दू) को छिन्न-भिन्न होनेसे वचाना। नोगाइको अपने विरुद्ध होते देख तरवू और मङ-गू-तेमूर के पुत्र पितामह नोगाइके साथ हो गये। नोगाइने कहा—अपने झगडेका फैसला उलुसको छिन्न-भिन्न करके नही, वल्कि कूरिल्ताई (महासंसद) के निश्चयके अनुसार करो। तोगताइने इसी वीच सेना जमा कर इतिल (वोल्गा) उपत्यका में पहुच राजधानीको ले लिया। लेकिन नोगाइ तोगाताइके हाथमें खेलना

नही चाहता था। तोगताइने उसे बहुत सी भेट-पूजा देकर अपनी ओर मिलानेका असफल प्रयत्न किया, तो भी अभी दोनोका सबध बहुत बिगडा नही था। इसी बीच धर्मको लेकर दोनोमे भयानक अनबन हो गई।

नोगाइके साथ सघर्ष—तोगताइका ससुर सलजीदइ बुरगान प्रसिद्ध ककुरत कबीलेका पुराना अमीर था। उसकी बीबी केलमिश अकाखातूनकी पुत्री अलजई खातून तोगताइकी प्रभावशाली रानी थी। केलमिश अकाने अपने पुत्र याइलगका व्याह नोगाइकी पुत्री कबकसे करना चाहा। नोगाइने इसे स्वीकार किया और दोनोका व्याह हो गया। व्याहके थोडे ही समय बाद कबक खातून मुसलमान बन गई। उसका पति तथा ससुर-परिवार बौद्ध (उइगुर) था, इसलिये कबकके साथ याइलग और उसके माता-पिता घृणा करने लगे। लडकीने अपने मा-बाप और भाईको इसके बारेमे कहा। नोगाइ बेटीका अपमान नही देख सका और उसने तोगताइसे माग की—यदि मेरे और अपने बीच पिता-पुत्रका सबध कायम रखना चाहता है, तो सलजीदइ करजूको मेरे हाथमें दे दे। तोगताइ अपने ससुरके साथ ऐसा बर्ताव कैसे कर सकता था? उसने समझानेकी कोशिश की—"वह मेरा पिता और सरक्षक रहा है। पुराना अमीर है। कैसे उसे शत्रुके हाथमे दे दू?" नोगाइकी बीबी चब्री बडी चतुर स्त्री थी। उसके तीनो पुत्र—जूके, तेके और तूरी–सरकारी सेनाके कुछ हजार आदमियोको बहका कर इतिल (वोल्गा) पार भाग गये। तोगताइने नोगाइसे हजारी सेनाको लौटा देनेके लिये कहा, लेकिन उसने तबतक वैसा करनेमे इन्कार कर दिया, जबतक कि सलजीदइ या उसका पुत्र याइलग उसके पास नही भेज दिया जाता। अब सीधे सघर्ष होना निश्चित हो गया।

तोगताइ नोगाइकी शक्तिको जानता था। उसने उससे भिडनेके लिये अक्तूबर-नवम्बर १२८९ ई० (६९८ हि०) में उजी (द्नियेपर) के तटपर तीस तुमान (तीन लाख) सेना जमा की। उस साल जाडोमें द्नियेपरकी धार नही जमी, इसलिये सेनाको पार ले जाना सभव नही हो सका। नोगाइ अपनी जगह बैठा रहा। सन् १३०० ई० के बसतमे तोगताइके ओर्दूने तान नदीके तटपर गर्मी बिताई। सीधी लडाई करनेकी जगह खुर्रांट सेनापति कल-बल-छलसे काम लेना चाहता था। ऊपरसे उसने खानको कहला भेजा—मैं चाहता हू, कूरिल्ताई बुलाकर फैसला किया जाय। लेकिन, दूसरी ओर धोखा देकर वह तोगताइके ऊपर आक्रमण करना चाहता था। खानको यह पता लगते देर न हुई। उसने जल्दी-जल्दी सेना जमाकर तान-उपत्यकाके बखतियारी (नजीमारी) स्थानपर लडाई की। तोगताइको हारकर सरायकी ओर भागना पडा। इसी समय अमीर माजी, मुनान (मुत्रान) और सगूर तीन अमीर नोगाइका साथ छोड अपने खानके पास चले गये। तोगताइ फिर तैयारी करने लगा। उसने बहुत कालसे दरबदके घट्टपाल रहने आये बलग-पुत्र तमातोकतूको बुला भेजा और उसके नेतृत्वमे एक बडी सेना नोगाइके विरुद्ध भेजी। नोगाइको लडनेकी हिम्मत नही हुई। वह उजी (द्नियेपर) नदीकी ओर लौट गया। क्रिम नगरमे पहुचकर उसने बहुतसे लोगोको दासके रूपमे बेचनेके लिये बदी बनाया। लोगोने तोगताइके पास सदेश भेजा—"हम इलखान (तोगताइ खान) के सेवक और अनुचर है। यदि स्वामीकी आज्ञा हो, तो हम नोगाइको पकडकर भेज दे।" नोगाइके पुत्रोको इसकी भनक लग गई और उन्होने एक हजार सेना उनके ऊपर भेजी। हजारी सेनापतिने नोगाइके दूसरे पुत्र तेकेको खान बनानेका लोभ देकर धोखा रचा। इसपर तेकेने आक्रमण कर हजारी सेनाको हराया और उसके अमीरका सिर कटवा लिया। नोगाइ दलके भीतरके झगडोकी खबर तोगताइको बराबर मिल रही थी। वह साठ तुमान (६ लाख) सेनाके साथ उजी पार हो तरकू (बरकू?) नदीके तटपर पहुचा, जहापर कि पहले नोगाइका ओर्दू रहा करता था। नोगाइके पास तीस तुमान थे, लेकिन वह स्वय बीमार था। उसने आदमी-द्वारा तोगताइके पास सदेश भेजा—"तेरे सेवक (मै) ने नही जाना, कि स्वय स्वामी पधारा है। उसकी सरदारी तथा सेना तेरी (इलखानकी) है। सेवक बूढा निर्बल आदमी है। उसने सारे जीवन तेरे पिताकी सेवा की।" ऊपरसे इस तरहकी बाते करते भी नोगाइने अपने पुत्र जूकेको एक बडी सेना ले तरकू नदी पार हो तोगताइपर आक्रमण करनेके लिये कहा। यह मालूम होनेपर तोगताइने भी प्रहार करनेका हुक्म दिया। युद्धमें नोगाइ और उसके पुत्रोकी पूरी तौरसे हार हुई। हजार सवारोके साथ

नोगाइके पुत्र भागकर केलारो और वाश्किरोमे चले गये । घायल नोगाइ सत्तर सवारोके साथ भागा जा रहा था, जब कि तोगताइके रूसी सैनिकोने उसे रास्तेमे पकड लिया। नोगाइने कह दिया—"मै नोगाइ हू, मुझे तोगताइ खानके पास ले चलो।" रूसी सैनिक उसे ले चले, लेकिन नोगाइ रास्तेमे ही मर गया ।

विजयके वाद तोगताइ वा-तूसराय लौटा । नोगाइ-पुत्रोको कही त्राण नही दिखाई पडा । यह हालत देखकर उसकी मा चवी और तूरीकी मा वाइलकने सलाह दी, कि खानके शरणमे चले चलो। इससे नाराज होकर पुत्रोने उनको मार डाला ।

नोगाइ केवल एक सफल महासेनापति ही नही था, वल्कि वह कुटिल नीतिका पक्का खिलाडी था। शायद धर्मकी वात वीचमे न आ गई होती, तो वात यहातक न पहुचती। १३वी सदीके अत होते-होते मगोल-सरदार और सैनिक वौद्ध धर्मको पूरी तौर से अपना चुके थे और इस्लामके प्रति उनका रुख सहानुभूतिका नही था, यद्यपि राजकाजमे अव भी वह तटस्थताका व्यवहार करते थे। वह नही चाहते थे, कि राजवश और सामतवर्गमे अरवोका धर्म फैले। यद्यपि सुवर्ण-ओर्दू और खुलाकूके वशमें घोर शत्रुता थी, लेकिन खुलाकूका इस्लामके ऊपर अत्याचार और खलीफा-वशका उच्छेद करना मगोलोमे अभिमानकी वात समझी जाती थी। वह क्यो पसद करते, कि उनके घरमे ही विभीषण पैदा हो ।

नोगाइने जव तोगताइ खानसे झगडा मोल लिया, तो उसने अपने पुराने शत्रु तथा वापके घातक खुलाकू-वशसे भी सहायता लेनेकी कोशिश की। उसने खुलाकूके पुत्र अवका खानके पास अपने पुत्र तुरी तथा पत्नी चूवी (चवी) के साथ अपनी एक लडकीको भी व्याहके लिये भेज दिया। अवकाने भी तुरीको अपनी कन्या प्रदान की। वह कुछ समयतक ईरानमे रहकर नोगाइके पास लौट आये । झगडा और वढनेपर नोगाइने ईरानके खान गजन (१२९५-१३०४ ई०) से मदद मागी, लेकिन गजन इसके लिये तैयार नही था। उसने मदद देने हीसे नही इन्कार कर दिया, वल्कि तोगताइको सदेह न हो, इसके लिये जाडा अर्रान (दक्षिणी काकेशस) मे न विता वगदादमे विताया। वह वरावर नोगाइको तोगताइसे मिलकर रहनेके लिये कहता रहा ।

तोगताइने तुलावुगाका पक्ष लेनेके अपराधमे अपने भाई तुगरलको मरवा दिया था। फिर भाईकी विधवाको अपनी रानी वना तुगरलके बेटे उज्वेकको खतरनाक चेरकासोके देशमे भेज दिया। चौवीस वर्पके सघर्पमय जीवनके वाद उसके हृदयमे पश्चात्ताप होने लगा था । उसने यह वात अपनी रानीको वतला दी और दो वेगोको राजकुमार उज्वेकको वुलानेके लिये भेजा। अभी उज्वेक नही आया था, इसी वीच (९ जुलाई १३१२ ई० *) इतिल (वोल्गा) नदीमे नौका-विहार करते तोगताइ डूबकर मर गया। तोगताई-पुत्र तुगल जानता था, कि उज्वेक अपनी माके प्रभावसे गद्दीका मालिक वन जायगा, इसलिये उसने उसके मारनेका षड्यत्र रचा। उज्वेकको यह बात मालूम हो गई। सरायमे आनेके बाद उसने महलमें घुसकर तुगलको मार डाला ।

९. उज्वेक खान तुगरल-पुत्र (१३१३-४० ई०)

उज्वेकका शासन इसलिये भी महत्त्वपूर्ण है, कि इसके समयसे सुवर्ण-ओर्दू पूरीतौरसे मुसलमान वनने लगा ।

(१) आपसी सघर्ष—उज्वेकके शासनारभके समय जो षड्यत्र हुआ था, उसके वारे मे "तारीख-हैदरी" (हैदर राज़ी १६११–१८ ई०) के अनुसार तोगताइके वाद अमीरो और नोयनोने वादशाह चुननेके वारेमे एक सभा की, जिसमें वह उज्वेकको गिरफ्तार कर उससे पूछनेवाले थे, कि क्यो तुमने छिड-गिस्के यस्सकको छोडकर अरवोके धर्मको अपनाया । इसी समय एक अमीरने आखसे इशारा किया, और उज्वेक पेशाब-पाखानेका बहाना करके सभासे निकलकर भाग गया। फिर सेना जमाकर लडकर उसने वीस राजकुमारो और तोगताइके दो पुत्रोका कतल कर १३२२ ई० (७२२ हि०) में अपने राज्यको निष्कटक किया । तबसे जू-छि खानाका उलुस "उज्वेक-उलुस" कहा जाने लगा। आरभिक सहायताओके लिये उज्वेकने कुतुलुक तेमूरको खुरासान वख्श दिया ।

* "जेल-जामे-उत्-तवारीख"—अबूसईद

खानके अपने परिवार तथा अमीरोंके परिवारोंमें अब धर्मको लेकर झगडा और भी ज्यादा बढ़ चला। नोगाइकी लडकीका मुसलमान होना एक अलग-थलग घटना नही थी। हमें मालूम है, सुवर्ण-ओर्दू और दूसरे मगोल खानोकी सेनाओमें भी मगोल-सैनिक दालमें नमकके बराबर थे। सारे मध्य-एसिया और उसके उत्तरके घुमतू तुर्क एक बार अवश्य मगोलोके खिलाफ खूब लडे, किंतु परास्त होनेके बाद वह लुढकती बर्फकी गेंदकी तरह मगोल ओर्दूका अग बनते गये। विजयोमें उनका पहले हीसे बहुत हाथ था, और उनकी लूटको वह अपना उचित हक समझते थे। तब भी मगोल और अ-मगोलमें अतर रक्खा जाता था, यह हम चीनके बारेमें लिखते वक्त बतला चुके हैं। यद्यपि मगोल खान दूसरोकी लडकियां लेनेमें एतराज नही करते थे, उनके हरम देश-देशकी सुन्दरियोसे भरे थे, लेकिन वहा भी प्रधानता मगोल रानियोकी ही थी—बापकी ओरसे छिङ्-गिस्का रक्त और माकी ओरसे शुद्ध मगोल सामतका रक्त होना आवश्यक समझा जाता था। शक्तिशाली खानो के समय चाहे बहुसख्यक तुर्क सैनिक इस भेदभावको बर्दाश्त करते हो, लेकिन अब परिवर्तित अवस्थामें वह बराबरीका दावा करने लगे थे। समरकद हो या तबरेज, सराय-बातू हो या काश्गर, सभी जगह मगोलोकी अलग सत्ता बनाये रखनेकी बराबर कोशिश की गई, किंतु आखिर वह बूद बनकर तुर्कसमुद्रमें मिल गये और उनके शासनके अत होनेके कुछ ही समय बाद यह जानना भी मुश्किल हो गया, कि कौन मगोल है। और तो और, स्वय "शज्रतुल-अतराक" जैसे इतिहासकारने भी तुर्क और मगोलका भेद भुलाकर मगोल-वश-वृक्षको तुर्क-वश-वृक्ष लिखा।

अपने बौद्ध पक्षपाती सेनापतियोको हराकर उज्बेकने यह दिखला दिया, कि अब मगोलो की नही, बल्कि तुर्कोंकी तूती बोलेगी। १३१५ ई० में सुवर्ण-ओर्दूके विद्रोही सेनापति बाबाने अपने ओर्दूके साथ ईरानमें जा उल्जैतू खान (१३०४–१७ ई०) के पास शरण ली। अभी ईरानी इलखान मुसलमान नही हुए थे, इसलिये उलजैतू बाबाकी मददके लिये तैयार था। बाबाने ईरानसे ख्वारेज्मके ऊपर आक्रमण किया और उज्बेकके कृपापात्र कुतुलुक तेमूरको मार भगाया। चगताइ खान इस्सन "जेल-जामे-उत्तवा-रीख" के अनुसार बाबा ओगुलकी घटना सितबर १३१५ ई० (जमादी II अतिम ७१५ हि०) को हुई, जब कि वह अपने तुमान (दस हजार सेना) के साथ उज्बेकसे नाराज होकर खुलाकू-वशी खान उलजैतू के पास चला गया। फिर वहासे डेढ हजार सवारोको लेकर उज्बेकके सामत कुतुलुकके ऊपर प्रहार करने ख्वारेज्म गया। कुतुलुककी हार हुई और उसकी सारी सेना बाबा ओगुलकी ओर हो गई। ख्वारेज्मके शहरो—जमशबर, गरबीन, हज़ारास्प, हज़ारज़मीन, कात, केरमारोन, शावकान आदिको लूटकर उसने उजाड दिया, लोगोपर बडे जुल्म किये। बाबा ओगुलके सैनिकोने पतियोंके सामने उनकी बीवियोंके साथ व्यभिचार करनेमें भी आनाकानी नही की। ७०० के करीब इमाम और अशरफ (कुलीन लोग) जान बचानेके लिये मीनारपर चढगये थे। बाबाने लकडी जमाकर आग लगानेका हुकुम दिया। सासतसे मरनेकी जगह बापोने अपने बेटोको मीनारसे नीचे गिरा दिया। बाबाके हाथमें पचास हजार कैदी और लूटकी अपार सपत्ति आई। जब इसकी खबर चगताइ खान एसेनबुगाको खोजन्दमें मिली, तो उस (इस्सन बुगा या यस्साबुग १३०९–१८ ई०)ने अपने पडोसमें बाबाकी सफलता देखना पसद नही-किया। वह बीस हजार सवारोंके साथ एक महीनेके रास्तेको हफ्तेमें पूरा करके ख्वारेज्म पहुचा। बाबा ओगुलसे जबर्दस्त लडाई हुई, जिसमें उसके बहुतसे आदमी मारे गये। बाबाने बदियोको छोड दिया। लूटकी सपत्तिसे भी उसे हाथ धोना पडा और वह कुछ सवारोंके साथ जान बचाकर मेर्वकी ओर भागते चद शाहजादोंके साथ उलजैतूके पास पहुचा। चगताइ और बा-तूके वशोमें अब दोस्ती हो गई थी।

अपने ख्वारेज्मके उज्बेकका बहुत नाराज होना स्वाभाविक था। उसने इसमें उलजैतूका हाथ समझा। फिर दोनो ओरसे दूतोका आना-जाना होने लगा। यह खबर जब चगताइ खान इस्सनबुगा ने सुनी, तो उसने उज्बेकको अपनी ओर खीचनेका प्रयत्न करते हुये सदेश भेजा—"तेमूर कआन (चीन) कहता है, कि उज्बेक क्या बादशाह है? मैं उसकी बादशाही दूसरे उलुस (ओर्दू) को दे दूगा।" इस पर उज्बेक भी कआनसे बिगड उठा।

सघर्षकी खबरसे पहले ही सितबर १३१५ ई० (जमादी अतिम ७१५ हि०) को चीनसे कआनका महादूत सियान-वशी अबकुका ईरानकी राजधानी तबरेजमें पहुचा। अमीर हुसेन गूरगान ईरानी-खानका

प्रसिद्ध अमीर था। वह उस समय उज्बेकके सीमांतके प्रदेश अर्रानसे तबरेजमे आया हुआ था। उसने महादूतकी जियाफत की और खानेके समय प्यालेको बैठे-बैठे अकबुकाके हाथमे देना चाहा। अकबुका इसपर नाराज हो दुत्कारते हुये बोला—"तू सामत और दुर्गपाल होते मेरे सामने बैठा चाहता है, कि मैं तेरे हाथमे प्याला ले लू। तू छिङ-गिसी यास्सा और पुराने शिष्टाचारको भूल गया?" अमीर हुसेनने भी उसका सीधा जवाब दिया—"अमीर इस समय दूत होकर आया है, न कि छिङ-गिसी यास्साका शिक्षक बनकर।" महादूत चुप हो गया।

कआनके दूत ने सुल्तानियोमे जा उलजैतू खानसे कआन का सदेश कहा—"यदि बाबा ओगुल स्वय ख्वारेज्मपर आक्रमण करने गया, तो उसे मेरे पास भेज दो।" खानने कहा—"मुझे खबर नही, मैं ऐसे बुरे कामकी हरगिज इजाजत नही दे सकता था।" उलजैतू नही चाहता था, कि बौद्ध धर्मके पक्षपाती बाबाका समर्थन कर उज्बेक खानको जहाद घोषित करनेका मौका दे। आखिर वह स्वय इस्लामके केंद्र (ईरान, इराक, शाम) का शासक था, जहादकी हवा उसके देशमे भी घातक साबित होती। उसने उज्बेकके दूतके सामने बाबाको मरवा डाला और भारी भेटके साथ स्नेहपूर्ण सदेश देकर महादूतको लौटा दिया।

१३१७ ई० (७१८ हि०) मे उलजैतू मरा। उस समय अभी उसका उत्तराधिकारी अबू-सईद छोटी उमरका था। यह खबर जब दश्ते-किपचक गई, तो उज्बेकके मुहमे पानी भर आया। बेशुमार सेनाके साथ वह दरबदके रास्ते ईरानकी ओर बढा। खान अबू-सईद (१३१७-३४ ई०) भी अपने अमीरोके साथ कराबागकी ओर चला। अमीर चोबान एक बडी सेना ले गुर्जिस्तान (जार्जिया) के रास्ते उज्बेकके मुकाबिलेके लिये बढा। अमीर ईसन कुतुलुक भी एक बडी सेना ले तबरेजसे अर्रान (शिरवान) की ओर रवाना हुआ। दरबदसे खबर आई, कि उज्बेक दश्तेखिजिर (खजारोका मैदान) पार हो आगे बढ दरबद पहुच गया है। शिरवानको लूटते-पाटते उज्बेक कुरा नदीके तटपर पहुचा। कुरा नदी जहा चीनके व्यापारके लिये कास्पियन समुद्रतटसे कालासागरके पास तक व्यापार-धाराका काम देती थी, वहा वह खुलाकू और बा-तू-वशोके सघर्षका मुख्य स्थान रही। अमीर चोबानने उज्बेकके ऊपर इतने कौशलसे आक्रमण किया, कि उसे हार खानी पडी।

अमीर चोबान हुसेनका सितारा अब बहुत ओजपर चढा। अबू-सईदकी नाबालिगीका लाभ उठाकर उसने सारे राज्यको अपने हाथमे ले लिया। उसका मन बहुत बढ गया, और वह उज्बेकको और भी कडा सबक सिखानेकी तैयारी करने लगा। भारी सेना जमाकर फिर वह शिरवान पहुचा। सेनाके एक भागको दरबद पार तेरक नदीकी ओर भेजा और स्वय अपने पुत्रोके साथ पहलेके परिचित गुर्जिस्तानके रास्ते आगे बढा। लेकिन अबके उज्बेकके सामने उसकी नही चली और उसे खाली हाथ लौटना पडा। चीनमे कआन [बोयन्-थू—१३११—२० ई० या गेगेन १३२०—२३ ई०] को खुलाकू-वश और बा-तू-वशके खानोमे इस पारस्परिक खूनी सघर्षोसे बहुत चिंता हो रही थी। उसने अपना एलची (जनदूत, महादूत) भेजा, जो पहले उज्बेकके पास गया। फिर उसके एलचीको भी साथ लेते बगदादमे अबूसईदके पास पहुचा। अमीर चोबानने उनका बडा सत्कार-सम्मान किया और चीनी राजदूतको हमदानके रास्ते विदा किया और उसके कराबाग पहुचनेसे पहले ही जाकर आरामका सब तरहसे प्रबध किया। कआनके एलचीपर इसका बहुत प्रभाव पडा और उसने अपने मालिकसे जाकर अमीर चोबान हुसेनकी बडी तारीफ की। कआनने खुश होकर अमीर चोबानको चारो उलुसो (बातू, खुलाकू, चगताइ और चीन) का अमीर बनाते हुये उसके नाम चार यारलिक (शासन-पत्र) भेजे। अमीर चोबानका जिस समय इस तरह सम्मान और शक्तिवर्धन हुआ, उसी समय उसके अपने पुत्र हसन और तालिश बापसे नाराज हो ख्वारेज्म भाग गये, जहासे वह उज्बेक खानके पास पहुचे। उज्बेकने उनका बडा सम्मान किया और अच्छे-अच्छे दर्जे दिये। पीछे हसन चेरकासो द्वारा युद्धमें मारा गया और तालिश अपनी मौत मरा।

अक्तूबर १३३० ई० (७३१ हि०=१५ अक्तूबर १३३०—३ अक्तूबर १३३१ ई०) को अमीर हुसेन (चोबान) के पुत्र अमीर शेख अलीकी पुत्री अनुशिरवान खातूनका व्याह उज्बेकके पुत्र तथा उत्तराधिकारी दिनीबेकके साथ हुआ।

(२) **युरोपपर अभियान (१३२३-२४)**–ईरानमें फसनेसे पहले उज्वेक युरोपकी खबर लेना चाहता था। ईरानके साथ बराबर अनिर्णीत युद्ध होते रहनेसे बहुत लाभ नही था, जब कि युरोपके समृद्ध नगर लाभके खास साधन थे। १३२३ ई० मे उज्वेककी सेनाने लिथुवानियापर आक्रमण किया। कुस्तुन्तिनोपोलके विजतीन "सम्राटो" के लिये भी यह बहुत सकट का समय था। मगोलोंको प्रसन्न रखनेके लिये कुस्तुन्तिनोपोलके सम्राटो और उनके सरदारोने अपनी सुन्दर कन्याये भेंट की, तो भी वह जान नही बचा पाये। १३२४ ई० मे मगोल अद्रियानोपोलपर एक लाख बीस हजार सेनाके साथ चढ आये। उन्होने थ्रेस प्रदेश (युरोपीय तुर्की और बुल्गारिया) को चालीस दिनोतक लूटा, बहुत-सी सपत्ति और दासोकी तरह बेचने के लिये भारी सख्यामे बदी उनके हाथ आये। जब थ्रेसवालो ने चोरोकी तरह आकर हमला करनेकी निंदा की, तो मगोल-सेनापति तासबुगा (ताशबेग) ने जवाब दिया—"हम ऐसे शासक के अधीन है, जिसकी आज्ञा जब होती है, उसी वक्त हम आगे बढते, पीछे हटते अथवा उसी जगहपर जमे रहते है।"

(३) **मास्को राजुल**–रूसी राजुलोंके अब भी अलग-अलग राज्य थे। मगोलोने शासनके सुभीतेके लिये मास्कोके महाराजुलको सबका मुखिया बना दिया था, किंतु वह यह नही चाहते थे कि, सारा रूस एक राजनीतिक इकाई बन जाये। सुवर्ण-ओर्दूकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी। इस्लामने शक्तिशाली बनानेकी जगह आपसी झगडे पैदा करके मगोलोंको निर्बल करना शुरू कर दिया, जिससे रूसी फायदा उठा सकते थे और मास्कोके महाराजुल जार्जने फायदा उठाया भी। उसने अपने चचा त्वेर्के महाराजुल मिखाईलके खिलाफ खानका कान भरा और उसे २२ नवम्बर १३१९ ई० को अपने प्राणोंसे हाथ धोना पडा। उज्वेक बौद्धोका शत्रु था और इस्लामका कट्टर पक्षपाती, लेकिन ईसाई पादरियोके साथ उसका बर्ताव अच्छा था। मास्कोके ऊपर उसकी विशेष कृपा थी। मास्कोके राजुलने र्याजनके राजुलको अपने अधीन बनाया। चचेरे भाई दिमित्र (त्वेर) ने इसीमें अच्छा समझा, कि दो हजार रूबल* वार्षिक पर अपने महाराजुल पदसे इस्तीफा दे दे, लेकिन वह बापके हत्यारेको क्षमा नही कर सकता था, इसलिये २१ नवम्बर १३२५ ई० में उसने मास्को-राजुलके पेटमें तलवार घुसेडकर उसका बदला लिया। इवान खलीता (१३२५-४१ ई०) अब मास्कोका राजुल बना। वह उज्वेकका और भी कृपापात्र था। उसके बाप यूरीकी हत्याको उज्वेकने एक राजभक्तका बलिदान माना। लेकिन इवान केवल राजभक्त नही रहना चाहता था, वह घृणास्पद मगोलोंके जुयेको हटाकर सारे रूसको एकताबद्ध करना चाहता था। इसीके शासनकालसे मास्को सारे रूसकी राजधानी बनने लगा, और इसीके समय तातारो (मगोलो) को निकाल बाहर करनेके लिये रूसमे सगठन होने लगा। लेकिन साथ ही, इसी वक्त दक्षिणी और उत्तरी रूसमें भेदकी खाई ज्यादा हो चली। इवानने व्लादिमिरको केवल कुछ समयके लिये ही राजधानी माना, तब भी वह अक्सर मास्कोमे रहता था। थोडे ही समय बाद उसने राजधानीको बिल्कुल मास्कोमें बदल दिया। यही नही उसने रूसी ईसाई सम्प्रदाय (ग्रीक चर्च) के महासघराज (मेत्रोपोलितन) को भी अपना केंद्र व्लादिमिरसे हटाकर मास्को लानेके लिये तैयार किया, और ४ अगस्त १३२६ ई०को मेत्रोपोलितन मास्को चला आया। इवानने मास्कोमे पत्थरका पहला गिर्जा बनवाया। उसने खानके दरबारकी कई यात्रायें कीं। १३३३ ई० मे उज्वेकने उसे बहुतसे सम्मान प्रदान किये। अगले साल १३३४ ई० में वह फिर खानके ओर्दूमे था। इवानका प्रतिद्वद्वी राजुल अलेक्सान्द्र (त्वेर) जगह-जगह धक्के खाता उकता गया। उसने सोचा—"ओह, अगर मै इसी तरह निर्वासित रहूगा, तो मेरे बच्चे उत्तराधिकारविहीन रह जायेगे।" अन्तमे उसने उज्वेकको यह कहकर आत्म-समर्पण किया—"महान् खान, मैं तुम्हारे क्रोधका पात्र हू। मै अपने भाग्यको तुम्हारे हाथोमे देता हू। भगवान् और तुम्हारा हृदय जो चाहता हो, वही मेरे साथ करो। तुम्हे मुझे क्षमा करने या दड देनेका अधिकार है। क्षमा करनेपर मैं तुम्हारी दया-के लिये भगवान्से प्रार्थना करूगा और दड देना है, तो उसके लिये मै अपने सिरको अर्पण करता हू।" उज्वेकने उसे क्षमा कर दिया और त्वेर (आधुनिक कलिनिन) का राज्य देकर सम्मानित किया।

* उस समय रूबल तीन-चार इच लबा एक अगुल चौडा चादीका टुकडा होता था।

लेकिन चालाक इवान इतनेसे हार माननेवाला नही था। उसने तरह-तरहकी चुगलिया खाई। अलेक्सान्द्रको फिर बुलाया गया और २८ अक्तूबर १३३९ ई० को पुत्र-सहित उसे मार डाला गया। उज्बेकद्वारा कत्ल किये गये रूसी राजुलोमे ये दोनो छठे और सातवे थे।

एक तरफ इवान खानकी चापलूसी करनेमे सभी दरबारियोका कान काटता था, दूसरी तरफ वह नही चाहता था, कि उसकी जाति मगोलोके सामने इस तरह सिज्दा करते नाक रगडती रहे। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया था, कि जबतक अनेको राजुलोमें बटी रूसी जातिको एक नही किया जाता, तबतक मगोलोका जुआ हटाना सभव नही। अलेक्सान्द्रको खतम करवानेसे पहले १३३३ ई० मे सुज्दलके राजुलके निस्सतान मरनेपर उसके राज्यको उसने अपने राज्यमें मिला लिया। वह दृढ शासक था। उसने अपने राज्यमे व्यवस्था स्थापित की, और सबको आज्ञा पालन करनेके लिये मजबूर किया। रूसियोने देखा महाराजुल और दूसरे राजुलोके राज्यो में कितना अतर है। उसने पहलेसे मौजूद दुर्ग (क्रेमल, क्रेमलिन) को फिरसे बनवाया, मास्कोको लकडीके प्राकारसे घिरवाया। क्रेमलिनके अतिरिक्त उसने कई गिर्जे बनवाये, जिनमें सत मिखाइल राजदेवदूत भी एक है, जिसमे आगे रूसी राजुल दफन किये जाने लगे। शाति और सुव्यवस्थाके कारण मास्कोका व्यापार भी बढ चला। उत्तरके देशोके माल हान्स-सघके व्यापारी लाते और दक्षिणके मालको अजोफ समुद्रके रास्ते गेनोवाके व्यापारी। उसने मोलोगा नदीके मुहानेपर खोलोपगोरोदकमें पहला व्यापारी मेला लगवाया, लोगोंके ठहरनेके लिये सत्रह यात्रिगृह बनवाये। इस मेलेमे साढे तीन हजार चादीका रूबल इवानको मिला। देश और महाराजुल दोनोकी सपत्ति और समृद्धि बढ रही थी। इवानने अपने रुपयेसे नवगोरोद, व्लादिमिर, कोस्त्रोमा और रोस्तोफमे मिल्कियत खरीदी। खानके लिये अपनी प्रजासे कर उगाहना आसान काम नही था। कर उगाहनेवाले अधिकारी ही बीचमे बहुत-सा पैसा खा जाते थे। इवान तुरत कर बेबाक करनेके लिये तैयार था, फिर खानको और क्या चाहिये? १८ वी सदीमें भारतमे प्रचलित नीतिको दुहराते उसने कर उगाहनेका अधिकार इवानको दे दिया। रूसी जनताको भी यह पसद आया, क्योकि तातारोंके नामसे रूसियोमें आतक छा जाता था। खानके कर उगाहनेवाले जब हथियारबद मगोलोके साथ करके लिये घूमते, तो लोगोका प्राण निकलने लगता। इवान अब इस कामको बडी चतुरतासे करने लगा, जिसके कारण रुसियोके एकताबद्ध होनेमें बडी सहायता मिली। उसने क्रेमलिनसे घोषणा की, कि अबसे हमारे परिवार तथा प्रजाके भीतरके झगडोको हमारे बायर (अमीर) निपटाया करेंगे। अपने प्रतिद्वन्द्वियोंके ऊपर वह जरा भी दया दिखानेके लिये तैयार नही था। एक ओर रूसमें वह यह चाल चलते अपनेको मजबूत करनेके लिये साम और दाम दोनो तरीकोको अख्तियार कर रहा था, दूसरी ओर वह जानता था, कि उज्बेकको भी अपने हाथमें रखनेकी आवश्यकता है। वह बीच-बीचमें दौडकर खानके दरबारमें पहुचता और उसे बडी-बडी भेंटो और चापलूसियोसे मुग्ध किये रहता। महाराजुल और खानमें कभी वैमनस्य नही हुआ, तथा दोनो एक ही साल (१३४० ई०) मरे।

इसमें शक नही, उज्बेक अपने ओर्दूको मुसलमान बनानेमें ही बडा सहायक नही हुआ, बल्कि चाहे अनिच्छासे ही सही सारे रूसपर मास्कोके एकाधिकारको कायम करानेमें भी उसका बडा हाथ था। उज्बेककी इस कार्रवाईसे मास्कोके महाराजुलकी ही शक्ति नही बढी, बल्कि रूसी चर्चने भी उससे लाभ उठाया। रूसियोके ऊपर अब चर्चका एकच्छत्र प्रभाव था। चर्चकी सपत्ति विशाल हो गई, उज्बेकके दिये हुये गावोने चर्चकी भू-सपत्तिको और बढा दिया। जैसे मास्को-महाराजुलके हाथमें शक्तिका केंद्रीकरण हुआ, उसी तरह चर्चके महासघराजने पादरियोपर अपना एकाधिपत्य जमाया, जिसके लिये कि रोमन कैथलिक चर्चने पहले हीसे उदाहरण स्थापित कर दिया था।

महाराजुल और महासघराजके लिये उज्बेकने छूट कर दी थी। व्यापार और लोगोंके परिश्रमसे समृद्ध रूसकी सपत्ति उसे चाहिये थी, जो बिना तरद्दुदके खानके पास पहुच रही थी। पर जहातक रूसी जनसाधारणका सबध है, उसकी अवस्था पशुओसे भी बदतर थी। मगोल सैनिको और अफसरोके सामने पहले हीसे जहा उन्हे दात निकालना और पूछ हिलाना पडता था, वहा अब वह महा-

राजुलके वायरोंके भी शिकार थे। रूसी इतिहासकार करमाजिनके अनुसार—"क्रिमिया और कुवानके यहूदी सारी जातिके जीवन-रक्तको जोंकोंकी तरह पी रहे थे।

१३३४ ई० मे ईरानपर फिर आक्रमण करनेके लिये उज्बेकने अभियान किया। अबू-सईद मुकाबिलाके लिये आनेवाला था, लेकिन इसी बीचमें वह मर गया। उसके उत्तराधिकारी अरपा खानने आगे बढ़कर सामना करना चाहा, लेकिन दोनो ही पक्ष अपने ऊपर पूरा भरोसा नहीं रखते थे, इसलिये उन्होंने बिना लडे ही लौट जाना पसंद किया।

उज्बेकका शासन-काल किपचक (सुवर्ण-ओर्दू) के इतिहासमें समृद्धिकी चरम सीमाका है। उज्बेकने अपने राज्यमें शांति और व्यवस्थाको इतनी अच्छी तरहसे कायम किया था, कि पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण चारो तरफसे व्यापारियोंका ताना लगा रहता था। उसकी सेना भी बडी जबर्दस्त थी। लेकिन उससे भी अधिक वह अपनी कूटनीति और भेदनीतिसे काम लेता था। ईरानके हुलाकू-वंशसे झगडा चलते रहनेके कारण युरोपके देश उसकी चोटसे बहुत कुछ बचे रहे। छिङ-गिस् खानके समयसे ही मंगोल अंतर्राष्ट्रीय व्यापारको प्रोत्साहन देते आये थे। काला सागरके तटपर जहा कभी ग्रीक और रोमक व्यापारियोंके बडे-बडे दुर्गबद्ध केंद्र थे, अब वहा वेनिस, गेनोआ और दूसरे स्थानोंके युरोपीय व्यापारी उसी कामको कर रहे थे। अगस्त १३३५ ई० में उज्बेकके प्रतिनिधि कुतुलुक बेगने वेनिसके वाणिज्य-दूतके साथ संधि की और अस्पताली गिर्जेके पीछे बाजारके लिये वेनिसके व्यापारियोंको जगह दी। बिक्रीके ऊपर ३ सैकडा कर सरकारको मिलना निश्चित हुआ था।

तीस साल राज्य करनेके बाद १३४२ ई० में उज्बेक मरा। उज्बेकके सिक्कोंपर उसका नाम निम्न रूपमें लिखा मिलता है—"ग़यासुद्दीन उज्बक खान", "महम्मद उज्बक खान", "उज्बक खान आदिल"।

(४) **इस्लाममें सहानुभूति**—"शजरतुल् अतराक" के अनुसार उज्बेक खानने मुसलमान होनेसे पहले आठ साल राज्य किया और मुसलमान होनेके बाद तीस सालतक। लेकिन इस बातमें संदेह है, जैसा कि पहलेके वर्णनसे मालूम है। उज्बेक खानको आठ सालतक काफिर रखनेसे इस लेखकका मतलब यही मालूम होता है, कि कुतुबुद्-दुनिया (जगत्-ध्रुव) महात्मा जंगी अताके उत्तराधिकारी महात्मा सैयद अताकी महिमाको बढाया जाय। वह यह भी लिखता है, * कि उज्बेक अपने सारे उलुसके साथ सैयद अताके हाथ मुसल्मान हुआ। तबसे किसीके पूछनेपर उसके उलुसके लोग अपने सरदार (बादशाह)के उसीका नाम लेते है, इसीसे उलुसका नाम उज्बेक-उलुस पड गया।

१३१४ ई० में ही उज्बेकने बेमुल्कके राजा और कठपुतली खलीफा नासिरके पास मिस्रमें भेंटके साथ पत्र भेजा था, जिसमे उसने लिखा था—"मेरे राज्यमें अब सिर्फ मुसलमान है। गद्दीपर बैठते ही मैंने उनसे सबोंको कह दिया, कि या तो इस्लाम स्वीकार करो या लडाई लो। जिन्होंने स्वीकार नही किया, उन्हे मैंने लडकर अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया ।" लेकिन उज्बेकके राज्यमें रूसी भी थे, जो मुसलमान नहीं हुये, इसलिये उज्बेकके अपने राज्यमे सिर्फ मुसलमानोंके होनेकी दावेका यही अर्थ है, कि अब सुदूर उत्तरके थोडे-से बाशिंदोंके सिवाय उसकी सारी एसियाई प्रजा इस्लामको स्वीकार कर चुकी थी।

उज्बेकने इस्लामिक शासकोंके साथ घनिष्ठता स्थापित करनेकी बडी कोशिश की। उसने अपनी एक लडकीका ब्याह मिस्रके शासक मलिक नासिरसे किया था। मुस्लिम इतिहासकारोंका कहना—"वह बडा बहादुर और दयालु था", जो उज्बेकके अपने कार्योसे गलत साबित होता है। उसका राज्य ६०० फर्सख (योजन) लंबा था, यह ख्वारेजमसे पोलैन्डकी सीमाकी दूरीसे मालूम है।

(५) **इब्न-बतूता**—मशहूर पर्यटक इब्न-बतूता १३३३ ई० मे क्रिमिया होते दश्ते-किपचक (सुवर्ण-ओर्दू भूमि) पहुंचा। वह उस देशके बारेमे लिखता है—"वृक्ष-वनस्पतिहीन मैदान है, जहा न पहाड है न

* "हर कसे कि अज ईशां मीपुर्सीद कि ई आयन्दा कीस्त। नाम सरदार व पादशाह खुदरा कि उज्बक बूद, मी-गुफ्तंद, बदा सबब अज़आज़्मा मर्दुम् आमद मीनुम ब-उज्बक शुदअंद।"

—शजरतुल्-अतराक ज० ओ० पृष्ठ २९६।

जगल। लोग कडेको ईंधनके तौरपर एस्तेमाल करते है। खानकी राजधानी (सराय) एक चलती-फिरती नगरी है, जिसमे सडके है, मस्जिदे है, भोजनगृह है, जिनका धूआ उनके चलते-फिरते समय ऊपर उठता रहता है। उज्बेक दुनियाके सात बडे राजाओमें है--कुस्तुन्तिनोपोलका तकफीर (सम्राट्), मिस्रका सुलतान, उभय-ईराकका राजा (इलखान), तुर्किस्तान-अतर्वेदका शासक, भारतका महाराजा और चीनका फगफूर (भगपुत्र, देवपुत्र)।" वतूताने खानके वारेमे लिखा है--"प्रत्येक शुक्रवारको नमाजके बाद खान एक सुनहले चँदवेके नीचे सोने-चादी और कीमती जवाहिरोसे जडे सिंहासनपर बैठता है। उसकी वगलमे उसकी एक-एक तरफ दो-दो चारो बीविया बैठती है। सिंहासनके सामने उसके दो पुत्र खडे होते है--एक दाहिने और एक बाये। खानके सामने उसकी लडकिया बैठ गई। जब कोई रानी आई तो खानने खडा हो उसका हाथ पकडकर बैठनेका स्थान बतलाया। वह कभी परदा नही करती। इसके बाद बडे अमीर आये, जो कि सिंहासनके दाहिने और बाये कुर्सियोपर बैठते है। उनके बाद खानके भतीजे तथा दूसरे राजवशी शाहजादे खडे हुये। उसके बाद बडे अमीरोके पुत्रोने अपने दर्जेके अनुसार स्थान ग्रहण किया। जब सब बैठ गये, तो दूसरे लोग भीतर आकर खानको सलाम करके अपने दर्जेके अनुसार अपनी जगहोपर जा बैठे। शामकी नमाजके बाद पटरानी लौट चली। उसके पीछे सुदर-सुदर दासिया और परिचारिकाये चल रही थी। वह गाडियोपर बैठी थी। आगे-आगे सवार और पीछे-पीछे सुदर ममलूक (राजदास) रथका अनुगमन कर रहे थे। सुलतान (खान) की बीबियोका बहुत भारी सम्मान किया जाता है। उनमेसे प्रत्येकका अलग महल होता था, जिनमे उनके अपने अनुचर और सेवक रहते है। ओर्दूमे आकर हरएक भेंट करनेवालेसे आशा की जाती है, कि वह खानकी हर एक रानीके सामने जाकर सम्मान प्रदर्शित करेगा।

बुल्गार नगरी (कजान) सुवर्ण-ओर्दूकी दूसरी राजधानी होनेके कारण अपने पुराने वैभवसे वचित नही हुई। उसकी प्रसिद्धि सुनकर इब्न-बतूता खानके शिविरसे दस दिनके रास्तेको तीन दिनमें पारकर वहा पहुचा। उसने लिखा है--"यहा रात इतनी छोटी होती थी, कि रात्रिकी नमाज आरम्भ करनेसे पहले बहुत थोडा समय मुझे शामकी नमाज पढनेके लिये मिला। मध्य-रात्रिके बाद जल्दी ही सुबहकी लाली छा गई। अधेरेकी भूमि यहासे चालीस दिनके रास्तेपर और उत्तरमे है, जहा कुत्तोवाली बेपहियेकी गाडियोपर यात्रा की जाती है। सारा रास्ता बर्फसे ढका रहता है, जिसपर आदमी या जानवरका पैर नही टिकता। कुत्तेका नाखून बर्फमे चुभकर उसे फिसलनेसे रोकता है। इस अधकार-भूमिमे व्यापारी छोड कोई दूसरा आदमी नही जाता। व्यापारी सैकडो बेपहियेकी गाडियोमे रसद, पानी, ईंधन आदि लेकर जाते है। वहा न वृक्ष है न पत्थर न घोडे। उनका पथ-प्रदर्शक एक अनुभवी कुत्ता होता है, जिसके लिये हजार दीनार देना पडता है। नेता-कुत्तेके खडा होते ही सारे कुत्ते खडे हो जाते है। नेता-कुत्तेका मालिक भी उसे कभी दड नही देता। खानेके समय कुत्तोको पहले खाना दिया जाता है। वहा व्यापार बदलेन द्वारा होता है। व्यापारी अपने मालको निश्चित स्थान-पर रखकर हट जाते है। दूसरे दिन जानेपर अपने मालकी जगह उन्हे सेवल, एरमिनके मृग-छाले और सिंजाबके समूर मिलते है। वह यदि सतुष्ट हुये, तो ले आते है, नही तो छोडकर हट आते है, फिर और माल बढ़ाकर रक्खा जाता है। न पसद आनेपर व्यापारीका माल छोड देते है। व्यापारियोको भी यह मालूम नही है, कि यह देनेवाले कौन है--आदमजाद या राक्षस।"

लम्बे दिनोका वर्णन तेमूरलगकी विजय-यात्रामे भी आता है। कजान ५६ उत्तरी अक्षाशके पास होनेसे वहा दिन और रातका बहुत अधिक बडा होना स्वाभाविक है। यह उस समयके सभ्य जगत्का सीमात नगर था, जिसके बाद साइबेरियाकी जन-जातियोका देश शुरू होता था, जिनके वशज कोमी और खान्ती आदि अब भी वही रहते है, लेकिन अब वह बतूता और दूसरोके देवदानव नही, बल्कि सभ्य और शिक्षित आदमजाद है।

उज्बेकने ग्रीक राजा अन्द्रोनिकसकी लडकी (बेइलुन खातून) से ब्याह किया था। इस ब्याहको रूसके महासघराज थेओगोनोसने कन्स्तन्तिनोपोल जाकर स्वय करवाया था। इसी रानीके साथ बतूता उसके बापके घर भी गया था। बतूता बातूसरायसे ख्वारेज्म और अफगानिस्तान होते भारतकी ओर

आया। उसने लिखा है, कि किपचक-तुर्कोंका सबसे बडा नगर ख्वारेज्म है, जिसपर उज्बेकका शासन है, जिसका अमीर खानके उपराजके तौरपर वहा रहता था। बतूताने ख्वारेजमकी बडी प्रशंसा की है—"ख्वारेज्मियो जैसे संस्कृत और उदार आदमी मैने कही नही पाये और न उनके-जैसे परदेशीके साथ स्नेह रखनेवाले। अगर कोई मस्जिदमे नमाजके समय अनुपस्थित होता, तो मस्जिदके सामने ही इमाम उसे पीटता। इस कामके लिये हरएक मस्जिदमें एक कोडा रहता है।" उज्बेकके इस्लामिक धर्मराज्यका यह अच्छा नमूना है—लोगोसे जबर्दस्ती अल्लाहकी बंदगी करवाई जाती थी। यद्यपि पुराने मुसलमानोंके साथ इस तरहकी कडाई थी और अपनी प्रजाको उज्बेकने जबर्दस्ती मुसलमान बनाया, लेकिन जहातक ईसाई प्रजाका सम्बन्ध था, वह उनके साथ धर्मान्धता नही दिखलाता था।

१०. दिनीबेग, तिनीबेग, उज्बेक-पुत्र (१३४२ ई०)

उज्बेकके बाद उसका पुत्र दिनीबेग गद्दीपर बैठा। उसके दो और भाई जानीबेग तथा खिजिरबेग थे। जानीबेगने भाईके खिलाफ विद्रोह किया। लडाईमे दिनीबेगकी हार हुई। जानीबेगने उसे पकडकर मार डाला और खुद गद्दीपर बैठ गया। अपने दूसरे भाई खिजिरबेगसे भी खतरा देखकर उसे भी उसने मरवा दिया।

११ जानीबेग, उज्बेक-पुत्र (१३४२--५७ ई०)

जानीबेगने सोलह साल राज्य किया। बातू-वंशका यह अन्तिम शक्तिशाली खान था। नियम और व्यवस्थाका वह अपने बापकी तरह ही बहुत पाबन्द था। इसीके समय खुलाकू वंशके पतनसे ईरानमें अशाति और अव्यवस्था मची हुई थी, जिसके कारण बहुत से धनी-मानी तबरेज सराह, अर्दबील, बेलगान, नखचवान आदि शहरोको छोड-छोडकर इधर आ बसे। अभी भी सुवर्ण-ओर्दू केवल एसिया हीतक सीमित नही था। १३४३ ई०में खानकी सेनाने पोलैंदपर आक्रमण किया—उसी साल पोलैंद टिड्डियोका शिकार हो चुका था। लूट-पाट करते हुये किपचकोने लुबलिन नगरको जा घेरा, लेकिन वह उसे सर नही कर सके।

१३४९ ई०मे मास्कोका महाराजुल सिमओन (१३४२-५३ ई०) जानीबेगके दरबारमें पहुचा। उसने भारी भेंट खान और उसके परिवारके सामने पेश की। जानीबेगने भी प्रसन्न होकर महाराजुलको बहुत उपहार और खलअत दी। लियुवानिया अब भी ईसाई नही हुआ था। अब भी वहा कुछ पुराने वेदोंकेसे देवताओंकी पूजा होती थी। वहाका राजा ओल्गर्द मास्को-महाराजुलका भारी प्रतिद्वंद्वी था। ओल्गर्दपर जर्मनोने आक्रमण शुरू कर दिया। उसने अपने भाई कोरिअदको खानके पास मदद मागनेके लिये भेजा। सिमओनने चुगली खाई, जिसपर खानने लियुवानी कुमारको उसके हाथमें दे दिया। उधर महाराजुलका दूसरा प्रतिद्वंद्वी पोलैंदका राजा कसिमिर था, जिसने १३३९ ई०मे गलिसियाको लेने पडोसके बोल्हुनिया प्रदेशको भी अपने हाथमें कर लिया था। रूसी महाराजुल इसे कैसे पसद करता? वह सनातनी ईसाई सम्प्रदाय (अर्थोदक्स चर्च) का अनुयायी था और कसिमिर कट्टर रोमन कथलिक। कसिमिर रूसी ईसाई पादरियोको अपने धार्मिक रीति-रवाजोको छुडाकर जबर्दस्ती कैथलिक बनाता था। इसके कारण लोग उससे बिगडकर लियुवानियोंके पक्षपाती हो गये और उन्होने रूसी महामहाराजको भी प्रेरित किया, कि महाराजुल सिमओनको कहकर लियुवानी कुमार कोरिअदको मुक्त करा दें। इसके लिये उन्होने मुक्ति-धन भी दिया। महाराजुलने अपने वंशकी राजकुमारी दुलियानाको लियुवानियाके काफिर राजा ओल्गर्दसे इस शर्तके साथ ब्याह दिया, कि उसकी सतान ईसाई बनाई जाये। ओल्गर्दने इस प्रकार शक्ति-सचय करके पोलोको बोल्हुनियासे मार भगाया। १५ फर्वरी १३४७ ई०में जानीबेगने वेनिसियोंके साथ सधि की और उन्हें तानामे बाजारके लिये एक जगह प्रदान की।

(१) प्लेग महामारी—१३४५ ई०में एसिया और युरोपके देशोमे भयंकर काले प्लेगकी महामारी आई थी। इसका आरम्भ चीनमें हुआ था, जहा इससे एक करोड तीन लाख आदमी मर गये। कास्पियन समुद्रके दोनो तरफके प्रदेश इस प्लेगके मारे उजाड हो गये। तुर्किस्तान, ख्वारेज्म, सराय—सबमें हाहा-

कार मच गया। आरमेनिया, अवखाजिया, चिरकासके लोग, क्रिमियामे वसे यहूदी, गेनोवा और वेनिसवाले भी तवाह हो गये। आगे वह ग्रीस, सिरिया (शाम) और मिस्रमे भी फैली। गेनोवावाले व्यापारियोके जहाज उसे अपने साथ इताली, फ्रास, इगलैड और जर्मनीमे ले गये। लदनमे इसके प्रकोपसे एक कब्रिस्तानमे पचास हजार मुर्दे गाडे गये। पेरिसके आतकित लोग गुस्सेके मारे यहूदियोका सहार करनेके लिये तैयार हो गये। वह समझते थे, प्लेग लानेवाले यही यहूदी है। १३४९ ई० में वह स्कदनेवियामे पहुची, फिर प्स्कोफ और नवोग्रादके रूसी नगरोमे भी। प्स्कोफके एक-तिहाई आदमी मर गये, शहरका शहर वीमार हो गया था। पैसा खर्च करनेपर भी धनियोको नर्से नही मिलती थी। भयके मारे वीमार मा-वापको छोड वच्चे भाग जाते थे। लोग वहुत अधिक धार्मिकता दिखलाने लगे थे और धनी लोग धार्मिक कार्योमे वडी उदारतासे खर्च करते थे। उस सालके जाडोमे प्लेग तो वद हुई, लेकिन उसके वाद पेचिश (हैजा) तथा खूनके कैकी वीमारी शुरु हुई, जिसमे आदमी मुश्किलसे दो-तीन दिन जी पाता। घुमन्तुओपर प्लेगका प्रभाव और भी भयकर हुआ था।

१३५१ ई०मे भारी अकालसे पीडित व्रातिस्लावापर मगोलोने आक्रमण किया। वहाके राजुलने हुगरीके राजा लुईसे मदद मागी और उसकी सहायतासे वह मगोलोको भगानेमे सफल हुआ—पोल राजा कसिमिरने भी इस समय उसकी सहायता की थी। द्नियेपर नदी अभी भी कुछ समयके लिये मगोलोके हाथमे थी, लेकिन गेलेसिया पोलोके हाथमे चली गई थी। लघुरूस (आधुनिक उक्रइन) लिथुवानियाके हाथ मे तवसे १६वी सदी तक रहा। इस प्रकार लघु-रूसी छिन्न-भिन्न होकर शक्तिहीन हो रहे थे। पडोसी युरोपीय राजाओ तथा मगोलोके अत्याचारोसे पीडित पूर्वी स्लावोकी सहानुभूति अव और अधिक मास्कोकी ओर होती जा रही थी। इसके दो परिणाम हुये—(१) कितने ही लोगो ने द्नियेपर और दोनके तटपर जा घुमन्तू राज्यके रूपमे वहा अपने जापोरोशियान और दोन कसाकके दो गणराज्य स्थापित किये, और (२) दूसरे लोगोने हुगरीके रोमन कैथलिकोके अत्याचारसे भागकर पहिले मगोलोकी भूमिमे, फिर वहा भी पीडित होनेके वाद मोल्दाविया और वलाचियामें जाकर अपनी रियासते कायम की।

मास्कोके महाराजुल सिमओनने अव पहली वार "सर्वरूसमहाराजुल" की उपाधि धारण की। १३५३ ई० में उसके मरनेके वाद उसके भाई इवानको जानीवेगने उसका उत्तराधिकारी वनाया।

१३५५ ई०में ईरानके इलखान-वशका नाश हो चुका था। इससे फायदा उठाकर सेनापति चोवान तेमूरताशके पुत्र मलिक अशरफने आजुरवाईजानपर अधिकार कर लिया। मलिक अशरफके अत्याचारोसे लोग परेशान हो देश छोडकर भागने लगे। ख्वाजा शेख कही (कुजी) शीराजकी ओर भागा और वहासे फिर शामको। दूसरे प्रसिद्ध सत ख्वाजा सदरुद्दीन अर्दवेली ने गेलानका रास्ता लिया। काजी मोहीउद्दीन वुरदइ सरायवरका भागा और वहा अपने उपदेशोके लिये मशहूर हुआ। उसके उपदेशोमे जानीवेग भी शामिल होता था। उस वक्तकी मलिक अशरफ गरदी (राक्षसी) का वडा साफ चित्र शेखशादीने खीचा था, जिसे "तारीख शेख-उवेस" (ज० ओ० पृष्ठ २३०) के लेखकने उद्धृत किया है—"ईरानसे चगताइ देशमे जा उसने उस देशको अपने अधीन किया। कुछ समय अपनी जगह रही। फिर कहते है, तीन रोजसे अधिक कही नही वैठी और तरक नदी पार हो दरवन्द आई। वहासे शिरवान पहुँची। उसने अपना एलची मलिक अशरफके पास भेजकर कहलवाया कि मै खुलाकूके उलुमको जव्त करनेके लिये आ रही हूँ, तू चोवानका पुत्र है, जिसका नाम चारो उलुसोमें तथा यारलिकमें था। अव तीन उलुस मेरे हुकूममें है। मै चाहती हू, कि जूजी (तूती) के उलुसका अमीर तुझे वनाऊ, इसलिये खडा हो जा और मेरा स्वागत कर।' मलिक अशरफने जवाव दिया—'हे उलुस-वरकाके वादशाह, मेरा सम्वन्ध अवका (हलाकू-पुत्र) के उलुससे नही है। यहाका वादशाह गजन है, जिसके अमीरका पद मेरे पास है।"

(२) **ईरानपर आक्रमण**—मोहीउद्दीनन एक दिन अपने उपदेशके वीचमे तवरेज और मलिक अशरफके अत्याचारोका ऐसे शब्दोमे चित्रण किया, कि श्रोता रोने लगे, जानीवेग स्वय रो पडा। मोहीउद्दीनने यह भी कहा, कि वादशाहको हस्तावलम्ब देना चाहिये, जिसमें प्रजाके ऊपर होते इन अत्याचारोका

अन्त हो। अगर बादशाह ऐसा नहीं करता, तो कयामतके दिन अल्लाह उससे जवाब तलब करेगा। जानीबेगके मनमें बातके समानेके लिये मोहीउद्दीनके उपदेशसे भी ज्यादा ईरानके समृद्ध राज्यका लोभ था।

जानीबेगने एक महीनेमें सौ तुमान (दस लाख) सेना तैयार कर ली और वह सन् ७५८ हिजरी-में (२५ दिसम्बर १३५६ ई०–१३ दिसम्बर १३५७ ई०) तबरेजकी ओर रवाना हुआ। कुरा नदी पार करनेकी खबर मलिक अशरफके पास पहुची, तो पहले उसने इसपर विश्वास नहीं किया, फिर अपने सैनिकोंको जमा किया। लेकिन उसके अत्याचारोंके कारण लोग अब उसकी आगमें कूदनेके लिये तैयार नहीं थे। वह शम्बेगाजानी पहुचा। इससे पहले उसने अपनी खातूनों (रानियो), लड़कियो, खजाने, सोना-चादी और जवाहर तथा दूसरी चीजोको आलिजकके किलेमें भेज दिया था, जिन्हें उसने चार सौ ऊटों और हजार खजानेके ऊटोंपर लदवाकर मगवा लिया। शम्बेगाजानीमें बहुतसे लोग जमा हुये थे, जिनसे एक बडी सेना तैयार करके उसने कूजानकी ओर भेजा। फिर खबर मिली, कि बादशाह जानीबेग अर्दबील पहुच गया। लोग कह रहे थे—बादशाहके फौजकी रिकाब लकड़ीकी है, उसके घोड़ोंकी लगामें रस्सियोंकी हैं।

जानीबेगके बारेमें पहुचती इन खबरोंको सुनकर मलिक अशरफ बहुत डर गया। उसने ख्वाजा लूलू माजलू और ख्वाजा शकर खाजिन (कोषाध्यक्ष) को बुलाकर कहा—"खातूनो (रानियो) और खजानोको लेकर ख्वाजा रशीदके चश्मेपर पहुचाओ और वहा मेरा इन्तजार करो। मैं उजान जा रहा हू। अगर मनोरथ सफल हुआ, तो तबरेज आना। अगर बात उल्टी हुई, तो खुईकी ओर जाना, मैं वहा आकर मिल जाऊगा।" उन्हें भेजकर वह खुद उजानकी ओर रवाना हुआ। पहले दिन मेहरानरूद नदीके तटपर सुमताबादमें डेरा डाल उसने दो दिन विश्राम किया। कितने ही अमीर, जो सावाकी ओर चले गये थे, यहा मलिक अशरफके पास आ गये। उसने उन्हें सोना, घोड़ा, हथियार आदि देकर रवाना किया। अखीजूक सेनप भी उनमेंसे था, जो अगले दिन कूच करके सईदाबाद (असदाबाद) गया। उसने वहा लोगोंसे सैनिकोंके लिये अपने घरोंको खाली कर देनेके लिये कहा। उसके नौकरोंमें दो हजार मर्द थे। वह खाने-पीने-रहनेकी तैयारी कर रहे थे, तभी जबर्दस्त आधी-पानी आई।

उजानमें अशरफके भेजे हुये सैनिक एकत्रित हो गये थे, इसी समय जानीबेग सराहकी ओरसे आ पहुचा। विरोधी सेनाको देखकर उसने हुकुम दिया, कि छिड-गिर्स्के शिकार खेलकी तरह इन्हें चारो ओरसे घेर लो। अशरफके अमीरोंने जब यह हालत देखी, तो वह अपनी जान लेकर भाग निकले। मलिक अशरफ अब भी सईदाबादके पुश्तेपर खड़ा था। इसी समय शेख जलकी (बालखजी) ने उसके कानमें कुछ कहा। उसने समझ लिया, कि लड़नेमें कोई फायदा नहीं और वह तबरेजकी ओर भाग चला। उस रात वह शम्बेगाजानीमें ठहरा, फिर सबेरे अपनी खातूनोंके साथ खजानेको लिये रवाना हुआ। लेकिन खजाने-पर उसके रखवाले ही हाथ साफ करने लगे। खातूने भी इधर-उधर बिखर गईं। मलिक अशरफ यह हालत देखकर खुईकी ओर चला। महम्मद बालखजीका घर इसी इलाकेमें था। उसने एक ओर मलिक अशरफका स्वागत करते हुये अपने घरमें उसे ले जाकर ठहराया और दूसरी ओर जानीबेगके पास उसकी खबर भेज दी। जानीबेगने अमीर बयासको इस कामके लिये भेजा, लेकिन घरको घेरकर ढूढनेपर अशरफ वहा नहीं मिला। इसपर अमीर बयास और उसके साथी ख्वाजा महमूदने लोगोकी सभी चीजें जब्त कर लीं। फिर अमीर बयास मलिक अशरफको पकड़नेके लिये तबरेज गया। सड़क-से गुजरते वक्त लोगोंने उसके ऊपर राख फेंककर बडी बेइज्जती की, और उसे ख्वाजा शेख कुजीकी सा मोवैयदके घर ले गये। अमीर काऊस शिरवानी वहा मौजूद था। मौलाना मोहीउद्दीन बेरदईके हाथको चूमकर अशरफ रोने लगा। काऊसने उसे ढारस दिया। इसके बाद उसे बादशाह जानीबेगके पास ले गये। बादशाहने पूछा—"इस देशको तूने क्यो बरबाद किया?" उसने जवाब दिया—"नौकरोंने बरबाद किया, उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।"

बादशाह जानीबेग उजानसे हस्तरूद (अष्टनद) की ओर रवाना हो कयूक् (कूकी) के नजदीक पहुच वहासे लौट पड़ा। उस साल लोगोंने खेती बहुत की थी। जब यह बड़ी सेना उधरसे गुजरी, तो

खेतोमे एक वाल भी न रह गई। कविके कथनानुसार "जालिम गया और उसका जुल्मका कायदा रह गया। आदिल गया और उसके नेक नामकी याद रह गई।"

जानीवेगने चाहा, कि मलिक अशरफको मृत्यु-दड न दे अपने साथ अपने देश ले जाये, लेकिन काऊस और काजी मोहीउद्दीनने वतलाया—"अगर वह जिंदा रहेगा, तो इस मुल्कके लोग कभी चैनसे नही रह सकेगे।" जानीवेगको उनकी सलाह माननी पडी। मलिक अशरफको घोडेसे नीचे उतारते समय उसकी दोनो तरफ तलवारे खडी कर दी गईं, जो उसकी वगलो मे घुस गईं। उसके शिरको काटकर तवरेज ले जा मस्जिद-मरागियानके दरवाजे पर टाग दिया गया। तवरेज-निवासी खुशी मनाते दान-पुण्य करने लगे। जानीवेग दस हजार सवारोके साथ वहा दौलतखाना मे उतरा। एक रात रहकर सवेरेकी नमाज उसने मस्जिद ख्वाजा अलीशाहमे पढी। उसके साथ आये हुये सैनिक सडको और नदियोके किनारे ठहरे थे। इनमेंसे कोई किसी मुसलमानके घरमे नही घुसा।

अशरफकी लोलुपतापर एक पद्य मशहूर है—

"देखो कैसे अशरफ गदहा अपने भाग्यको उघाड रहा है।

अपने लिये मृत्यु और जानीवेगके लिये अपना सोना वटोरता॥"

इस प्रकार १३ सालमें अशरफने जुल्म और अत्याचार करके जो खजाना जमा किया था, उसे जानीवेग ले गया।

ईरानमें इस प्रकार व्यवस्था कायम कर जानीवेग अपने वडे वेटे वरदीवेगको पचास हजार सेना देकर वहाका शासक नियुक्त कर अली अशरफकी लडकी सुलतानवख्त और उसके पुत्र तेमूर-ताशको साथ ले किपचकभूमि लौटा। महमूद दीवानने वडा महोत्सव मनाते वरदीवेगको तव्रेजके तख्तपर वैठाया। अमीर जारुकके पुत्र सराय तेमूरको वजीर वना महमूद भी जानीवेगके पीछे-पीछे रवाना हो गया।

जानीवेग लौटकर वीमार पड गया। मरणासन्न देखकर उसके खैरखाहोने वरदीवेगके पास इसकी खवर भेजी। वरदीवेग जानता था, कि तव्रेजका तख्त किसी समय भी हमारे हाथसे छिन जायेगा, इसलिये तथा सवसे वडा पुत्र होनेके ख्यालसे भी वह तव्रेजसे जल्दी-जल्दी दरवन्दकी ओर रवाना हुआ और दस सेवकोंके साथ आधी रातको चुपचाप तुगलुवाईके घरपर पहुचा। सयोग ऐसा हुआ, कि जानीवेग वीमारी से अच्छा हो गया और उसे खवर मिली, कि वरदीवेग आ गया है। उसने तोगाय तुवलु खातूनसे इसके वारेमे पूछा। खातूनने वेटेकी मुहव्वतसे झूठ वोल दिया। जानीवेगने तुवलुवाईको एकान्तमें वुलाकर चाहा कि उससे भेद लें। तुवलुवाई झूठ वोल वाहर आ वरदीकी सलाहसे उसी समय लोगोको लेकर भीतर घुसा, और एक फर्राश द्वारा जानीवेग खानको २१ जुलाई १३५७ ई० को उसके विस्तरेपर मरवा डाला।

रूसी उसे "भला" जानीवेग कहते थे, जिससे मालूम होता है, कि रूसियोके साथ उसका वर्ताव अच्छा रहा। इसका यह भी अर्थ है, कि मास्कोके महाराजुलोको अपनी शक्ति वढाने और सारी रूसी जातिको एकतावद्ध करनेके मनसूवेमें जानीवेगकी ओरसे कोई वाधा नही हुई। जानीवेगके सिक्के १३४० से १३५७ ई० तकके मिलते हैं, जो सराय गुलिस्ता, नई सराय, नयागुलिस्ता, नया ओर्दू, ख्वारेज्म, मोक्सी, वरचिन और तव्रेजकी टकसालोमें ढाले गये थे।

जानीवेगके इस्लामप्रेमको मुस्लिम इतिहासकारोने स्वीकार किया है। उज्वेकके मरनेके चदही महीने वाद गद्दी सभालते उसने अपने वापके कामको आगे वढाया और सारे उज्वेक-उलुसको मुसलमान वनाया, तमाम बौद्ध मदिरो (वुत-खानो) को धराशायी कराया, वहुत-सी मस्जिदो और मदरसो को वनवा मुसलमानोके फायदेके लिये सभी तरहकी वाते की। चारो तरफसे मौलवी और विद्वान् उसके यहा आते थे। दश्ते-किपचकके अमीरोके पुत्र इस समय वहुत विद्याव्यसनी हो गये थे। अनुनीम अस-कन्दरके अनुसार "उनकी महिमा आज भी मजलिसो और महफिलोमें गाई जाती है, और उस मुल्कका हरएक रस्म-रवाज इस्लामी देशोके वाशिन्दो जैसा है।"

१२ वरदीवेग जानी-पुत्र (१३५७–५९ ई०)

वरदीने अपने वापको ही मरवाकर संतोष नही किया, वल्कि जिस विस्तरेपर वह मारा गया था, उसीपर उसने वापके घातक फरगिको बैठा आज्ञा माननेसे इन्कारियोको मरवाने का इरादा किया। तुगलुवाईने उसकी वातको पसन्द किया और आज्ञा स्वीकार करानेके वहाने वह सारे ही वारह शाह-जादोको वहा जमा करवा मरवाने लगा। वरदीका आठ महीनेका एक सहोदर भाई था। तायदोलू खातूनने उसे गोदमे लिये आकर वहुत मिन्नत की, कि इस मासूम वच्चेको क्षमा कर दे। वेरदीवेगने उसे हाथमे छीन जमीनपर पटकर वही मार दिया। उसने तीन साल तक दृढतापूर्वक शासन किया।

जहातक रूसी राजुलोका सम्वन्ध है, महाराजुल इवान (मास्को), राजुल वासिली (त्वेर), उसके भतीजे वृसेवोलोद (खोल्म) के पदोके लिये वरदीवेगने अपनी स्वीकृति दी।

१३५९ ई० में मास्कोका महाराजुल इवान मर गया, इसी साल किलदीवेग (कुलफा) ने वरदीवेगको कत्ल कर दिया।

१३ किलदीवेग, कुलफा (१३५९ ई०   )

किलदीवेगने वरदीवेगके कत्लके साथ उसके शुरू किये वंशोच्छेदके कामको पूरा कर दिया। अव कोक (सुवर्ण)-ओर्दू राजवंशका एक भी नामलेवा नही रह गया। सारे ओर्दू मे गडवडी मच गई। अमीरोने अधिकारको अपने हाथमे रखनेके लिये वेरदीवेगके हत्यारेको जानीवेगका पुत्र कहकर गद्दीपर वैठाया। हर अमीर अपनी शक्तिको वढानेके लिये पीठ पीछे षड्यन्त्र रच रहा था। इसी षड्यन्त्रमे अमीर यगलि-वुगा, अमीर अहमद और अमीर नाङ-गू-दाई निर्वासित हुये। इसी समय सरकारके एक वडे अधि-कारी नग्लसवाई (?) ने किलदीवेगको मार एक दूसरे आदमीको गद्दीपर वैठाया, जो कि तीन रोज वाद मारा गया।

१४ नौरोजवेग, १५ चेरकेसवेग (१३७४ ई०)

ये दोनो भी इसी तरह कुछ दिनोके लिये सिंहासनपर वैठे। फिर कोक (सुवर्ण) ओर्दूके अमीरोने श्वेतओर्दूके खान चिमतांईके पास जा गद्दी सभालनेके लिये वहुत निमत्रण और आवेदन किया, लेकिन उसने उसे न स्वीकार कर अपने भाई ओर्दाशेखको भेजा।

१६. ओर्दाशेख

श्वेत-ओर्दूका यह राजकुमार वातूके सिंहासनपर वहुत दिनोतक नही टिक सका। किसीने "कैसे कोक-ओर्दूके सिंहासनपर अक-ओर्दूका आदमी वैठेगा" कह एक रात तलवारसे ओर्दाशेखका काम तमाम कर दिया। इसपर अमीरोने कुछ वेगुनाह आदमियोके ऊपर अपराध लगाकर मरवाया।

१७. खिजिर ससीवूगा-पुत्र

अव ओर्दाशेखके भाई खिजिर ओगलानको गद्दीपर वैठाया गया, जो भी नौ महीना राज्य करनेके वाद खतम हुआ।

आगे इतिहासकार अनुनीम अम्वन्दरने निम्न खानोका होना वतलाया है—

१८ कुलफा, ससीवूगा-पुत्र

खिजिरके एक साल भी वादशाही न करके मर जानेके वाद उसके भाई कुलफाको गद्दीपर वैठाकर नौ महीने वाद उसे भी कत्ल कर दिया गया।

१९ तेमूरखोजा, ओर्दाशेख-पुत्र

फिर तेमूरखोजा अमीरोका खिलौना बना। वह बडा ही व्यभिचारी निकला। लोग दो साल तक उसे बर्दाश्त करते रहे। एक रात किसी स्त्री के साथ बलात्कार करनेके लिये घरमे घुसा देख, पतिने अनजाने ही उसे तलवारके घाट उतार दिया।

२०. मुरीद ओर्दाशेख-पुत्र

इसने तीन सालतक राज्य किया, लेकिन अब इन खानोमे बदचलनी विशेषकर अप्राकृतिक व्यभिचारका मर्ज बहुत फैल गया था। अपने अमीरुल्-उमरा (अमीरोके अमीर) मोगलबक-पुत्र इलियासके सुदर लडकेपर मुग्ध हो मुरीदने चाहा, कि बापको मारकर उसका स्थान बेटेको दे दे। यह भेद मुरीद-खानकी खातूनको मालूम हो गया। उसने ईर्ष्या या बेवकूफीसे यह खबर इलियासके पास भेज दी। उसने अवसर न दे खानको ही मार डाला।

२१. अजीज तेमूरखोजा-पुत्र

इसकी आदत भी अपने पूर्वगामियो जैसी थी और इसने प्रसिद्ध सत सैयद अताके वशवाले एक लडकेको भ्रष्ट किया। भेद खुलनेपर पश्चात्ताप करके उस लडकेसे इसने अपनी लडकी ब्याह दी, लेकिन तीन साल बाद फिर वही चाल चलने लगा, जिसके कारण उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा।

२२ हाजी खा एर्जन-पुत्र

श्वेत-ओर्दूके खान एर्जन (१३१९-४४ ई०) के पुत्रको अब बलिका बकरा बनानेके लिये लाया गया। वह कुछ दिनो तक अच्छा रहा, फिर खानदानी बदचलनी का भूत इसके सिरपर भी सवार हुआ। एक बार तोबा की, लेकिन फिर वही रफ्तारे-बेढगी। अन्तमे वह आधी रातको अपने सोनेके वस्त्रोमें ही मार डाला गया।

अनुनीम अस्कन्दरके अनुसार हिजरी सन् ७५१* से ७६५ के बारह सालोमे आठ बादशाह हुये। इसके बाद श्वेत-ओर्दूके खान उरुसखानने श्वेत-ओर्दू और कोक-ओर्दूको इकट्ठा करके शासन करना शुरू किया, जिसका परिणाम तोकतामिशके रूपमे एक बार जू-छिके वशका चरम उत्कर्ष तथा तेमूर-लगके प्रहारके कारण उसका सत्यानाश हुआ।

सुवर्ण (कोक)-ओर्दूके रूपमे मगोल-शक्ति आधे युरोपतक छा गई। रूसके तो सभी शासक उसके अधीन दाससे थे। यद्यपि मगोलोने अपने इन अधीन लोगोपर बहुत अत्याचार किये, लेकिन तब्रेज और दूसरी जगहोके निर्मम हत्याकाडोके सामने वह कुछ नही थे। मगोलोके शासनके साथ ही वाणिज्य और शिल्पकी बडी वृद्धि हुई थी, जिसके कारण जहा मगोल शासकोको बहुत लाभ हुआ, वहा मास्कोको आगे बढनेका मौका मिला और धीरे-धीरे पुरानी बुल्गार नगरीका स्थान मास्कोने ले लिया। व्यापार द्वारा प्राप्त प्रचुर धन-राशिके बलपर मास्कोके महाराजुलोने सुवर्ण-ओर्दूके खानोको अपने वशमे कर अपनी शक्ति बढाई, रूसका एकीकरण करना शुरू किया और अन्तमे रूसकी शक्तिके उत्कर्ष तथा जू-छि-वशके आतरिक कलहके कारण सुवर्ण-ओर्दूका अस्तित्व खतम हो गया। इसी कालमें मास्कोके महाराजुलोने खानकी ओरसे कर उगाहनेका अधिकार पा अपनी ओरसे इस कामपर अपने अधीनस्थ बायरोको लगाया——रूसी प्रजा अब बायर, महाराजुल और खान तीनोके उत्पीडन तथा शोषणके नीचे दबकर कराहने लगी। उसका स्वतत्रता-प्रेम और जनतात्रिकताकी भावना लुप्त हो चली, और अत्याचारके मारे कितने ही रूसी भाग-भागकर दूसरी जगहोमे जाकर बसने लगे।

---

* ७५१ हि० (११मार्च १३५०–२७फर्वरी १३५१ ई०), ७६५ हि० (१०अक्तूबर–२७ सितंबर १३६३ ई०)

सुवर्ण-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष
(१२२४–१३७४ ई०)

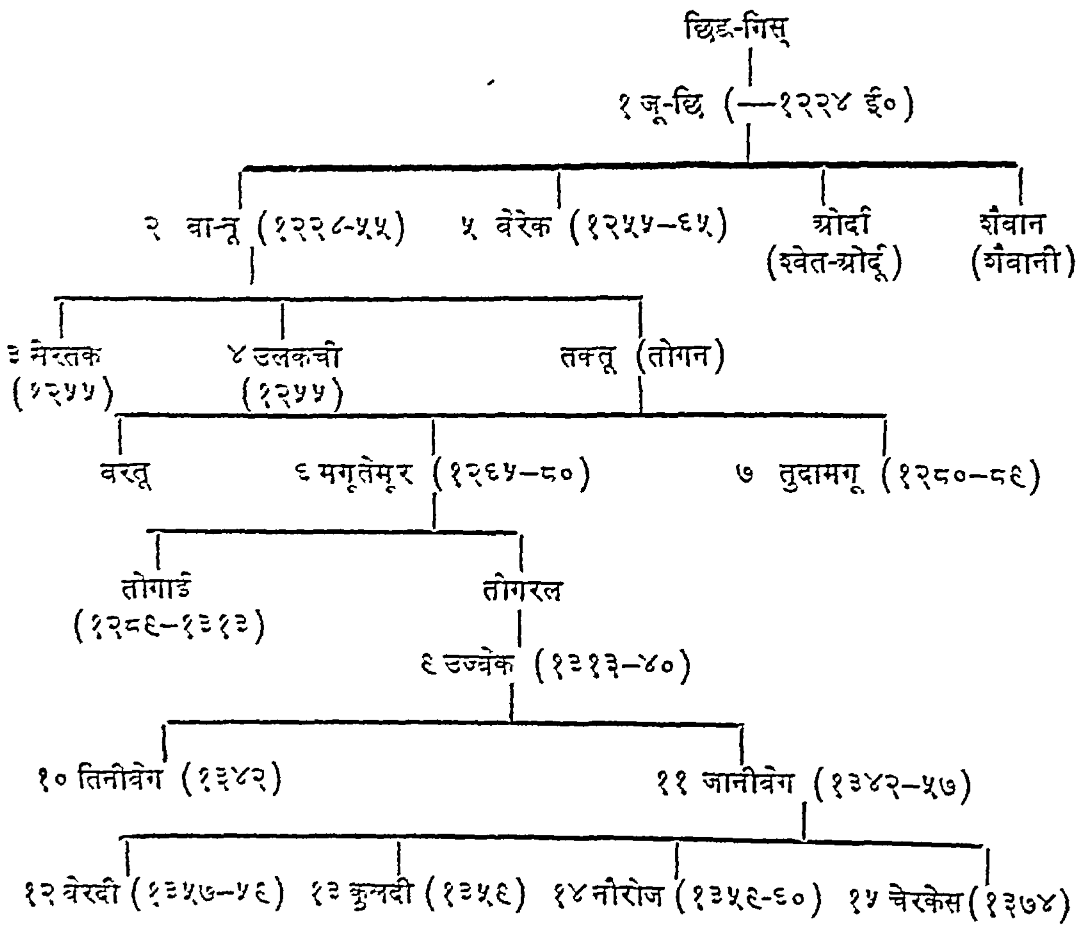

अध्याय ३

श्वेत-ओर्दू

(१२२४-१४२५ ई०)

१ जू-छि (तू-शी) खान

छिङ-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके बारेमें हम पहले बतला चुके है। उसके मरनेके बाद उसका सिंहासन ज्येष्ठ पुत्र ओरदाको न मिलकर बा-तूको मिला। ओरदाको बापके राज्यका पूर्वी भाग मिला, लेकिन उसने अपने वंशको बा-तूके सिंहासनके अधीन माना। ओरदाका उलुस श्वेत-ओर्दू (अक-ओर्दू) नामसे प्रसिद्ध हुआ, जिसके खान निम्न प्रकार थे :—

		काल
१	जू-छि, छिङ्-गिस्-पुत्र	–१२२४ ई०
२	ओरदा जू-छि-पुत्र	१२२४ ,,
३	कोनिचि ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र	–१३०१ ,,
४	बायन कोनिचि-पुत्र	१३०१ ,,
५	ससीबूगा बायन-पुत्र	१३०९ ,,
६	एर्ज़न ससीबूगा-पुत्र	१३०९–४४ ,,
७	मुबारक खोजा एर्जन-पुत्र	१३४४ ,,
८.	चिमतई एर्जन-पुत्र	१३४४–१३६१ ,,
९	उरुस चिमतई-पुत्र	१३६१–७० ,,
१०.	तोकताकिया उरुस-पुत्र	१३७० ,,
११	तेमूरबेग उरुस-पुत्र	१३७०–७५ ,,
१२.	तोकतामिश तुलि-पुत्र	१३७५–९७ ,,
१३	नूजी ओगलान	१३९५
१४	तेमूरकुतुलुक, तेमूरबेग-पुत्र	१३९५–१४०० ,,
१५	शादीबेग, तेमूरबेग-पुत्र	१४००–८ ,,
१६	पूलाद तेमूरबेग-पुत्र	१४०८–१० ,,
१७	तेमूर कुतुलुक-पुत्र	–१४११ ,,
१८	जलालुद्दीन तोकतामिश-पुत्र	१४११–१२ ,,
१९	करीमबरदी तोकतामिश-पुत्र	१४१२–
२०	कपक, किबेक	.
२१.	चिङ-गिज	१४१७ ,,
२२	जब्बारबरदी तोकतामिश-पुत्र	,,
२३	मुहम्मद	१४२२–३८ ,,
२४	बोराक, बुराक, बुर्क	१४२५–२८ ,,
२५.	सैयत अहमद	...
२६	दरबीस	...
२७	क़िबेक	–१४२२
२८	उलुग मोहम्मद	१४३७

२ ओरदा, एसन, एछन जू-छि-पुत्र (१२२४–)

ओरदाके राज्यके भीतर सिगनाक, तरम, उतरार जैसे प्रसिद्ध वाणिज्य-नगर थे। इसके ओर्दूके दक्षिण और दक्षिण-पूर्वमें चगताई, पूर्वमे ओगोताई तथा पश्चिममें वा-तूका ओर्दू था, जिसका कि यह अग माना जाता था। उत्तरमें वह साइबेरियाके भीतरतक घुसा हुआ था। ओरदाका ओर्दू (पशुपाल सैनिक परिवार-समूह) गर्मिया बलकाश समुद्रके पासकी चरागाहोमे बिताता और जाडोमें सिर नदीपर चला आता था। ओरदाका पुत्र कूली खुलाकूके ईरान-विजयमे शामिल होनेके लिये ख्वारेज्मसे दहिस्तान और माजदरान गया था।

३ कोनिचि, कोची ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र (–१३०१ ई०)

मगोल इतिहासकर रशीदुद्दीन*(१२४७–१३१७ ई०) के अनुसार यह ओरदा (श्वेत) उलुसका बहुत समयतक शासक रहा। अरगून खान (१२८४–९२ ई०) और गजनखान (१२९५–१३०४ ई०) के साथ इसका बहुत अच्छा सम्बन्ध था और उनसे सौगातो और दूतोका आदाना-प्रदान होता था। कोनिचि असाधारण मोटा था, कोई घोडा उसे ढो नही सकता था, इसलिये वह गाडी पर एक जगहसे दूसरी जगह जाता था। इसके पुत्रोमें मुख्य चार थे—बायन, बचकरतइ, चगुनबुका, मकुदई। मारको पोलोने इसके बारेमे लिखा है —

"सुदूर उत्तरमे एक खान है, जिसका नाम कोनिचि है। वह तारतार (मगोल) है और उसके सारे लोग तारतार है, जो नियमपूर्वक तारतार धर्मको मानते हैं। यह बडा ही पाशविक धर्म है, लेकिन वह उसका उसी तरह पालन करते है, जैसे कि छिङ-गिस् और दूसरे मुख्य तारतार। खान किसीके अधीन नही है, यद्यपि वह छिङ-गिस् खानके शाही वशका तथा महान् कआन (कुबिले खान) का नजदीकी सबधी है। इस खानके पास न नगर है न महल। वह और उसके लोग सदा या तो खुले मैदानोमें रहते है या बडे पहाडों और उपत्यकाओमे। वह अपने जानवरोंके दूध और मासपर गुजारा करते है। उनके पास अनाज नही होता। खानके पास बहुसख्यक लोग है, लेकिन वह किसीके साथ युद्ध नही करता। उसकी प्रजा बडी शातिसे रहती है। उनके पास भारी सख्या में पशु—ऊट, घोडे, बैल, गाय, भेडें आदि है।

"उनके देशमे तुम्हे बीस मुट्ठीसे अधिक लम्बे तथा बिल्कुल सफेद विशालकाय भालू मिलेंगे। वहा बडी-बडी काली लोमडिया, जगली गदहे और भारी सख्यामें सेबल होते है। यही सेबल वह जन्तु है, जिसके चमडेकी बहुमूल्य पोशाक बनती है, एक-एकका दाम हजार बेजन्त (सिक्के) होते है। वहापर वेयर (चमडी जन्तु) भी बहुतायतसे होते है और फरऊनी चूहे भी। इन्हींके शिकारपर लोग सारी गर्मिया बिताते है। वस्तुत वहा सब तरहके जगली जानवर बहुतायतसे होते है, क्योंकि उनका देश बहुत दुर्गम और वन्य है।

"इस खानका देश ऐसा है, जहा घोडे नही जा सकते, क्योंकि वहापर बहुतायतसे झीले और चश्मे है, साथ ही बहुत बर्फ, कीचड और दलदल भी है, जिसपर घोडे नही चल सकते। यह कठिन मुल्क तेरह दिनोंके रास्तेतक फैला हुआ है। हर दिनकी यात्राके बाद एक टिकान है, जहापर कि सब तरहका इन्तिजाम है। प्रत्येक टिकानपर घर बने हुये है, जिनमें चालीस कुत्ते तैयार रहते है। यह कुत्ते आकारमे गदहोंसे कम नही होते। यही कुत्ते एक टिकानसे दूसरी टिकानतक सवारी-गाडियोंको खीचते है। इनकी गाडिया बिना पहियेकी होती है। गाडीके ऊपर भालूका चमडा रखकर सवार बैठ जाता है। हरेक गाडीको ६ कुत्ते खीचते है। कुत्तोका कोई कोचवान नही होता।. अगली टिकानपर नये कुत्ते और गाडी तैयार मिलती है।..

---

* "जाम-उत्-तवारीख" ज० ओ० पृष्ठ ८२

"तेरह दिनकी यात्राके अन्तपर आसपासके पहाडो और उपत्यकाओ के रहनेवाले लोग बडे शिकारी होते है। वह उन बहुमूल्य छोटे-छोटे जन्तुओको पकडते है, जिनसे कि उनको भारी लाभ होता है। यह जन्तु है–सेबल, एरमिन, वेयर, एरकुलिन, काली लोमडी तथा और बहुत-से प्राणी। इन्हीके चमडोका बहुमूल्य समूर बनाया जाता है। शिकारी जाल इस्तेमाल करते है . . । उस प्रदेशमे सर्दी इतनी अधिक है, कि लोगोके सारे निवास धरतीके भीतर होते है, वह सदा भूधरे हीमे रहते है।"[1]

मार्को पोलोने यहा जिस देशका वर्णन किया है, वह साइबेरिया है, इसमे सन्देह नही। उसे यह खबर कुबिलेके दरबारमे गये कोनिचिके दूतमडलसे मिली होगी।

इतिहासकार अबुल्-फेदाके अनुसार कोनिचि बामियान और गजनी तथा कुछ काबुलके पासवाले प्रदेशोका भी शासक था। खुलाकूके ईरान-विजयके समय उसकी मददके लिये आये अक-ओर्दूवालोने यह स्थान अपने हाथमे कर लिये थे, इस प्रकार अक-ओर्दूका यह दक्षिणी भाग उत्तरी भागसे बिल्कुल अलग-थलग था, बीचमे चगताई-वशकी भूमि थी। ओरदा-पुत्र कुलीने खुलाकूकी मदद करते समय अफगानिस्तानके उत्तर-पश्चिमवाले इस प्रदेशपर अपना शासन स्थापित करके भी उसे श्वेत-ओर्दूके अधीन ही रखा। खुलाकूको पीछे कुलीसे इतना भय लगा, कि उसने उसे जहर दिलवा दिया।

१२९३ ई० मे कोनिचि (कुबी) का दूतमडल इलखान (ईरानी शासक) जयखातूके दरबारमे आया था। कोनिचि हिजरी सन् ७०१ (१३०१-१३०२ ई०) में मरा।

४ बायन कोनिचि-पुत्र (१३०१-९०)

बायनको पिताका राज्य कुछ सघर्षके बाद मिला। शायद इसे उत्तरवाला भाग ही मिला, बामियान-गजनाको उसके भाई कुबलुक (क्यूलुक) ने ले लिया। बायनके हाथमे यह दक्षिणी भाग न जाने पाये, इसके लिये चगताई खान दावा और ओगोताइखान कैदूने भी कुबुलुककी मदद की थी। बायनका दूसरा भाई मङ-ताई था। इसकी बीबी नुकुलुन खातून प्रभावशाली ककुरत कबीलेकी थी। पिताके मरनेपर मगोल प्रथाके अनुसार तीन सौतेली मायें तरकुजिन, जिकथुन् और अलताचू भी इसकी बीबिया बनी। इन चारोके अतिरिक्त उसकी तीन और बीवियोका भी पता लगता है। श्वेत-ओर्दूका दूसरा खानजादा-कुतुकू-पौत्र, तेमूरबूका-पुत्र कुबुलुक (कोबलेक, क्यूलुक)से बायनका जबर्दस्त सघर्ष रहा। १३०९ ई० में कुबुलुकने दक्षिणी राज्य (बामियान-गजना) छीना था। थोडे दिनो बाद बायनने फिर उसपर अधिकार कर लिया। कैदू और दावा कुबलुककी पीठपर थे और बायनका राज्यकेद्र चगताई राज्यके पार दूर पडता था, तो भी ख्वारेज्मसे इलखानके इलाकामें होते श्वेत-ओर्दूकी सेनायें गजनी पहुच सकती थी। सुवर्ण-ओर्दूके साथ बायनका बहुत अच्छा सबध था, लेकिन तोगताइ खान नोगाइकी लडाइयोमे फसे होनेसे कोई बडी मदद करनेमे असमर्थ था। बायनने इलखान गजनको मदद देनेके लिये लिखा, और उसने मदद भी दी। समकालीन इतिहासकार रशीदुद्दीन लिखता है–"हमारे काल में अठारह बार बायनने कुबुलुकसे लडाई की।" कुबुलुकके साथ हो कैदू और दावाकी भी सेनायें लडती रही। कैदूके मरनेके बाद जब उसका पुत्र चापर ओगोदाइ-उलुसका खान बना, तो तोगताईने उसे कई बार लिखा, कि दावा खानको कुबुलुककी मदद करनेसे रोको, लेकिन बापकी तरह वह भी कुबुलुककी पीठपर था। उसने जवाब दिया–"गजनसे लडते समय कुबुलुकने हमारी सहायता की, इसलिये हम उसकी मदद करते है।" हिजरी सन् ७०२[2] में बायनने अपने बापके समयके अमीर केलस तथा तुकतेमूरके नेतृत्वमे एक बडी भेंट भेज, गजनको कहलवाया कि हम चापर और दावाके विरुद्ध लडने जा रहे है, तोगताई खान हमारा सहायक है। उसने दो तुमान (बीस हजार) सेना हमारे पास भेजी। सेना आगे बढी, लेकिन कैदू और चगताईके उलुसोने बीच मे पडकर कआनकी सेनासे उसे

---

१ यूल-सम्पादित मार्को पोलो २ ४१०-१२। २ २६ अगस्त १३०२—१४ जुलाई १३०३ ई०।

मिलने नहीं दिया। कुबुलुकने उनकी सहायतासे हमारा कुछ इलाका छीन लिया। ओरदा-उलूसका अधिक भाग हमारे साथ है, आदमियोंकी हमें कमी नहीं है। हां, पैसेकी जरूरत है। इसपर गजनने वायन और उसके खातूनोंके लिये बहुत-से बहुमूल्य उपहार तथा काफी सोना भेजा।

१३०९ ई० में कुबुलुक शक्तिशाली था। उसने उसी समय गजना और वामियानको छीन लिया था। उसके वाद उसका पुत्र कमतिमूर वहां का शासक बना। श्वेत-ओर्दूके लोग वायनके भाई मुङ्-ताईकी ओर थे।

५ ससीबूगा वायन-पुत्र (१३१९ ई०)

वायनके वाद उसका पुत्र ससीबूगा सिरपारवाले राज्यका स्वामी बना और गजना-वामियान अब कोनिचि-पुत्र मुङ्-ताईके हाथमें चला गया। ससीबूगाकी मा कुतुलुन (नुकुलुन) खातून थी। काजी अहमद गफ्फारी (मृत्यु १५७७-७८ ई०) ने अपने ग्रंथ "नस्खजहानारा" में ससीको नौकाका पुत्र बतलाया है और कहा है, कि वह अपने भाईके वाद गद्दीपर बैठा, लेकिन रशीदुद्दीन जैसे समसामयिक तथा मगोल-वंशके एक प्रामाणिक इतिहासकारके सामने गफ्फारीकी वातका मूल्य नहीं है।

६. एर्जन, एबिजन, ससीबूगा-पुत्र (१३१९–४४)

एर्जनका पचीस सालका शासन श्वेत-ओर्दूकी शक्ति और समृद्धिकी चरमसीमाका था। अपनी योग्यताके कारण वह उज्वेक खानका बहुत ही कृपापात्र था। राज-काजमें चतुर होते हुये, वह बडा विद्याप्रेमी था। उसने उतरार, सावरान, जद, वारजकद नगरोंमें बहुतसे मदरसे, खानकाहे (मठ) और मस्जिदें बनवाईं। मार्को पोलो द्वारा वर्णित, कोनिचिकी बर्बर प्रजाके समयमें अब अक-ओर्दू कहासे कहा चला गया था? छिङ्-गिस्के तारतारों के पुराने धर्म छोडकर अब वह कट्टर मुसलमान हो चुके थे। इतिहासकार अनुनीम अस्कन्दरके[1] अनुसार "एर्जनने सारे तुर्किस्तान (अक-ओर्दू) को स्वर्गोपम (खुल्दबरी) बना दिया"। श्वेत-ओर्दूको ऐसी समृद्धि फिर स्वप्नमें भी नहीं मिली। उज्वेकके खानने एर्जनको गद्दीपर बैठाया था। पीछे इसके लडके खिजिर ओगलान और खुलफा उज्वेकके सिंहासनपर बैठे, यह हम पहले बतला चुके हैं।

पचीस साल राज्य करनेके वाद ७४५ हि०[2] में एर्जन मरा और सिगनाक नगरमें इसकी कब्र बनाई गई।

७. मुबारक खोजा एर्जन-पुत्र (१३४४ई०–)

यह भले बापका नालायक लडका निकला। अपने लोभ और बदमागीके कारण ६ महीने मुश्किलसे राज्य कर पाया। इसके बाद दो सालतक अलताईके पहाडों और किरगिजो की भूमिमें मारा-मारा फिरता रहा। मरनेके वाद इसे भी सिगनाकमें दफनाया गया।

८ चिमताई एर्जन-पुत्र (१३४४–६२ ई०)

जानीबेगने इस भलेमानुस खान को गद्दीपर विठाया। सुवर्ण-ओर्दूके सिंहासनके खाली होनेपर वहांके अमीरोंने बहुत चाहा, कि चिमताई बातूके सिंहासनपर बैठे, लेकिन उसने कबूल नहीं किया। इसीसे समय बर्दीबेग, जानीबेग और किलदीबेगके दुराचार और अन्यायपूर्ण शासन हुये थे। सुवर्ण-ओर्दूके अमीरों (शासकों) के चरम पतनको देखते हुये उसने अपने सिंहासनपर ही संतुष्ट रहना पसन्द किया। बहुत जोर देनेपर उसने अपने भाई ओरदा शेखको वहां भेज दिया।

९. उरुस खान चिमताई-पुत्र (१३६१–७० ई०)

यह बडा ही मनस्वी खान था। सुवर्ण-ओर्दूकी नैयाके डगमगानेके समय इसने अपने वापपर बहुत जोर दिया, कि कोक-ओर्दूको भी अक-ओर्दूमें मिला लिया जाय, लेकिन चिमताईने नहीं माना। अब

---

[1] ज० ओ० पृष्ठ २७०। [2] १५ मई १३४४–३ मई १३४५ ई०।

गद्दीपर बैठनेके बाद इसने सकल्प किया, कि सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूको मिलाकर छिङ्-गिस्के पुत्र जुछि और पौत्र वा-तूके समयके वैभवको पुन. स्थापित किया जाय। इसने गद्दीके महोत्सवके समय ही जल्से मे अपने इन विचारोको प्रकट किया। अमीरोने उसे पसद किया। उन्हे बडे-बडे इनाम दिये गये। लेकिन उसके अपने वशके तुका-तेमूर परिवारवाले तुईख्वाजा (तुलीख्वाजा)ने इसका विरोध किया, जिसके लिये उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा—तुइख्वाजा मनकिशलकका शासक था। पिताकी इस हत्याका वदला लेनेकी भावनाने उसके पुत्र तोकतामिशको उत्तेजित किया। लेकिन, अभी वह कम उमरका था, इसलिये क्या कर सकता था? तोकतामिश एक वार ओर्दूसे भाग गया, लेकिन लौटके आनेपर उसकी उमरका ख्याल करके क्षमा कर दिया गया। जब उरुस खान कोक-ओर्दूका भी स्वामी वन गया, तो तोकतामिश फिर भागकर विश्वविजेता तेमूरलग (१३०७–१४०४ ई०)के पास गया। उस समय तेमूरलग चगताई ओर्दूके दक्षिणी राज्यको अपने हाथमे करके उत्तरी राज्य (मुगोलिस्तानपर) पाचवा आक्रमण करना चाहता था। तेमूरने अपने सेनापति तेमूर उज्वेकको खानजादा तोकतामिशका स्वागत करनेके लिये भेजा। समरकन्द पहुचनेपर तेमूर उज्वेकने खानजादेको तेमूरके सामने पेश किया। तेमूरने तोकतामिशका राजसी स्वागत करते हुये सोना, जवाहरात, हथियार, वहुमूल्य पोशाक, घोडे, ऊट, तम्बू-ध्वजा-पताका, नगाडे तथा दास-दासी प्रदान किये और विदा करते वक्त उसे "पुत्र" कहकर सम्वोधित किया। तेमूरने उसे सावरान, उतरार, सिगनक, सैरान, सेराय तथा किपचकके दूसरे नगरोका स्वामी (शासक) वनाते यायिक (उराल) और सिर नदीके बीचके प्रदेशका राज्य प्रदान किया। यह भूभाग उरुस खानके अधीन था, इसलिये यह मान-प्रदान केवल मौखिक ही हो सकता था। उरुस खान चुप नही रह सकता था। उसने अपने पुत्र कुतुलुकवूगाको तोकतामिशका मुकाविला करनेके लिये भेजा। कुतुलुकवूगा लडाईमे घायल होकर दूसरे दिन मर गया, तो भी तोकतामिशकी हार हुई और उसे फिर भागकर तेमूर लग की शरण लेनी पडी। लगडे तेमूरने फिर उसका पहले ही जैसा सम्मान करके फिर नई सेना दी। उरुस खानके ज्येष्ठ पुत्र तेगूताकियाने फिर तोकतामिशको हराया। तोकतामिश वडी मुश्किलसे सिर नदी तैरकर पार हुआ। उसका पीछा करते हुये कजनजी वहादुरने तीरसे उसके हाथको घायल कर दिया था। घासमें पडे तोकतामिशको अकस्मात् तेमूर लग द्वारा दिये मत्री इतिगू वेरलसने देखा। फिर वह उसे लेकर वुखारामें तेमूरके पास पहुचा। तेमूरने फिर उसे और भी वडे साजोसामान तथा सेनाके साथ भेजा। इस समय यदकू (मङ्गुत या तिमिर कुतुलुकका पुत्र) तोकतामिशका समर्थक वनकर वुखारा चला आया था। उसने खवर दी, कि उरुस खान वडी सेना लेकर लडनेके लिये आ रहा है। केपेक मङ्गुत और तुलजियानने तेमूरके दरवारमे जाकर उरुस खानके सदेशको कहा—"तोकतामिश मेरे पुत्रको मारकर तुम्हारी शरणमें चला आया है। तुम मेरे शत्रुको मेरे हाथमे अर्पण कर दो, यदि इन्कारी हो तो मै युद्ध घोषित करता हू। हमें अव युद्धक्षेत्र चुनना होगा।"

तेमूर लगने उत्तर दिया—"तोकतामिशने अपनेको मेरी शरणमें दे दिया है। मै उसकी रक्षा करूगा। जाकर उरुस खानसे कह दो, कि उसकी ललकारको ही स्वीकार नही करता, वल्कि मै और मेरे सिपाही सिहकी तरह—जो कि जगलमे नही वल्कि युद्धक्षेत्रमे वास करते है—लडनेके लिये तैयार है।"

तेमूर लगने अमीर यदकूकोइको समरकन्दका शासक नियुक्त कर १३७६ ई०के अन्तमे प्रस्थान कर उतरारके मैदानमे डेरा डाला। उरुस खान अपनी सेनाके साथ वहासे चौवीस फरसक दूर सिगनाकमें था। एक जवर्दस्त आधी-पानी आया, जिसके वाद भयकर सर्दी हो गई। इसकी वजह से तीन महीनेतक कोई सैनिक कार्रवाई नही हो सकी। फिर तेमूरने कताई वहादुर और मोहम्मद सुलतानशाहको रातमें आक्रमण करनेका हुक्म दिया। जवर्दस्त सघर्ष हुआ। उरुस खान-पुत्र तेमूर मलिक ओगलानने तीन हजार सेनाके साथ मुकाविला किया। कताई वहादुर और एरेक तेमूर मारे गये, तेमूर मलिक भी आहत हुआ। तेमूर लगकी विजय हुई। उसने अवू-मोहम्मद सुलतानशाह और अमीर मर्वशेरको भी पता लगानेके लिये भेजा।

लडाई आगे नही हो सकी। उरुस खान दश्तेकिपचक लौट गया और तेमूर लग केश (शहरसव्ज) की ओर। नौ साल राज्य करनेके बाद १३७० ई० मे उरुस खान स्वाभाविक मृत्युसे मर गया।

अनुकूल समय देखकर तेमूर फिर दश्तेकिपचककी ओर रवाना हुआ। उसके सेनाग्रका सेनापति तोकतामिश था, जो बडी तेजीसे बढते हुये पद्रह दिनमे सैरामकामिश (हरिनोके नरकट) में पहुच गया और एकाएक आक्रमण करके उसने शहरको लूट लिया। वहासे उसे बहुतसे घोडे, ऊट और भेडे हाथ लगी।

१० तोग्ताकिया, उरुस-पुत्र (१३७०--)

पिताकी जगहपर यह गद्दीपर बैठा, लेकिन दो ही महीने बाद मर गया। इसके बाद इसके भाई तेमूरबेग (तेमूर मलिक) को गद्दी मिली।

११ तेमूरबेग, तेमूरमलिक उरुस-पुत्र, मोहम्मदखान-पुत्र (१३७०-७५ ई०)

यद्यपि सिंहासनके लिये उसका प्रतिद्वद्वी तेमूर लग जैसे विख्यात विजेता की सहायता-प्राप्त तोकतामिश था, लेकिन तेमूरबेगको इसकी परवाह नही थी। वह हद दर्जेका ऐशपसद था, रात-दिन शराबमे मस्त रहता। उसके अत्याचारोसे लोग परेशान थे। तो भी तोकतामिशने इसके ऊपर आक्रमण करके फिर एक बार हार खाई। लेकिन तेमूरबेकके अत्याचारोसे उसके बडे-बडे अमीर भी परेशान थे। उनको विश्वास होने लगा था, कि इसके रहते श्वेत-ओर्दूको अच्छे दिनोकी आशा नही हो सकती। एक प्रसिद्ध अमीर ओरग तेमूरने तेमूर लगके पास भागकर उसे और उभाडा। तेमूरने अबके गयासुद्दीन, तरखन, तोमन तिमूरके बख्शी खोजाके साथ भेजा। जागीर मागनेपर न देनेसे नाराज होकर एक और अमीर उज्बेक तेमूर भी तेमूर लगके पास भाग आया, जिसने उससे कहा—"तेमूर मलिक दिन-रात शराबमे मस्त पडा रहता है। पहर भर दिनतक सोता रहता है, जो कि भोजनका समय है। किसीकी हिम्मत नही, कि उसे जगाये। लोग अब उससे उकता गये है, और चाहते है, कि तोकतामिश आवे।" उस समय तोकतामिश सिगनकमे था। तेमूरने तोकतामिशको खबर दी। तेमूरबेकने जाडो (१३७७ ई०) को करातागमें बिताया। १३७७ ई० में तेमूर लगने तोकतामिशको हमला करनेके लिये हुक्म दिया। इसी जाडेमे तेमूरबेकका एक बडा भारी दरबारी कापबहादुर भी उसका साथ छोडकर तोकतामिशके पास चला आया। तोकतामिशने आक्रमण करके तेमूरबेकको पूरी तौरसे हरा दिया और उरुसखोजा द्वारा विजयका समाचार तेमूरलगके पास भेजा। तेमूरने भारी खुशी मनाई, उरुसखोजाको खलअत और सुनहरा कमरबन्द दिया, लौटनेके समय धन और घोडे प्रदान किये।

जाडोमे फिर तोकतामिश सिगनकमें रहा तेमूरबेकका पीछा करते पश्चिमी किपचकके सेमक स्थानकी ओर बढा।

इसपर भी तेमूरबेकको होश नही आया। वह ७८५ हिजरी (६ मार्च १३८३—२३ फर्वरी १३८४) मे निर्णायक लडाई लडनेके लिये करातालकी ओर बढने लगा। तेमूरबेकने गद्दीपर बैठते समय बेवकूफीसे अक-ओर्दूके एक तुमान (सिराय मोलकुल) को अपने चचेरे भाई मोहम्मद ओगलानको दे दिया था। अब उसने मोहम्मदको तोकतामिशके विरुद्ध लडनेके लिये कहा। मोहम्मद जानता था, कि ओरदा-उलुस तोकतामिशके पक्षमे है। उसने तेमूरबेकको मना किया, जिसपर तेमूरबेकने उसे तोकतामिशका पक्षपाती कहकर भरी सभामे मरवा डाला और वही उसने सौगद खाई, कि जो भी मेरी इच्छाके विरुद्ध जायेगा, उसकी यही हालत होगी।

तोकतामिश और तेमूरबेकमे करातालके पास ससाडमे लडाई हुई। तेमूरबेकने हारके साथ प्राण भी गवाये। इसी लडाईमे एक स्वामिभक्त अमीर बलिजक पकडकर विजेता तोकतामिशके पास लाया गया। तोकतामिश बलिजककी ईमानदारीपर पूरा विश्वास रखता था। उसने उससे कहा—"अगर तू मुझे अपना बादशाह मान ले, तो मैं तेरे सम्मान और अधिकारको जरा भी कमी नही करूगा, बल्कि राज्यकी बागडोर तेरे हाथमे सुपुर्द कर दूगा।" बलिजकने जवाब दिया—"मैंने अपने जीवनका सबसे अच्छा भाग तेमूरबेगकी सेवामे बिताया। मै इसे सहन नही कर सकूगा, कि उसके सिंहासनपर कोई दूसरा बैठे। जो मुझे तेमूरबेगकी गद्दीपर बैठा देखना चाहे, उसकी आखें फूट जाय। अगर तू मेरे ऊपर

कृपा करना चाहता हूँ, तो मेरा सिर काटकर तेमूरके सिरके नीचे रख दे, और उसकी लाशको मेरी लाशपर लिटा दे, जिसमे उसका कोमल शरीर धूलमे न लिपटे।" तोकतामिशने उसकी इच्छा पूरी की।

१२ तोकतामिश तूलि-पुत्र (१३७५-९७ ई०)

तोकतामिश बापकी हत्याका बदला ले सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूके सम्मिलित सिंहासनपर बैठा। उसकी मा कुतन कुनचेक प्रसिद्ध ककुरत कबीलेकी अमीरजादी तथा मनस्विनी स्त्री थी। इतिहासकार अनुनीम असकदर के अनुसार तोकतामिश बहुत ही मुस्तैद, प्रतापी, सुदर तथा स्वभावसे भी सुदर बादशाह था। वह अपने न्याय और सदाचारके लिये प्रसिद्ध था। अस्कन्दरके अनुसार उसमें दोष यही था, कि उसने अपने उपकारक तेमूरलगसे कृतघ्नता की। तेमूरबेकपर विजयप्राप्त करते ही तोकतामिशने अपने सारे उलुसको सुव्यवस्थित किया।

तोकतामिशने बेरेकसरायको अपनी राजधानी बनाया। बा-तूने अस्त्राखानके पास वर्तमान सेली-त्रेन्नोय गावकी जगह अपनी राजधानी—बातू-सराय बनाई थी। उसके भाई बेरक (१२५५-६६ ई०) ने वोल्गाकी शाखा अखतूबे नदीके तटपर आधुनिक स्तालिनग्रादके समीप सराय-बेरेकके नामसे नई नगरी बसाई, लेकिन बातू सरायसे हटाकर बेरेक सरायमें राजधानी ले जाना उज्बेक खानका काम था। तोकतामिशके समय सुवर्ण-ओर्दू राज्य एक बार फिर ख्वारेज्मसे पश्चिममे रूसी राजुलोके भीतर, तथा क्रिमिया, काकेशसके दरबन्द तथा बाकूतक फैल गया। पश्चिममे राज्यसीमा द्नियेस्तर नदी, और पूरबमे तबोल-इरतिश-सगम एव मध्य सिर-दरिया थी। तोकतामिशने सत्रह साल (१३९२ ई०) तक अच्छी तरह शासन किया, फिर इतिहासकारोके अनुसार उसे शरारत सूझी और वह तेमूरलगसे छेडखानी कर बैठा।

१३८० ई० मे तोकतामिशके क्रिमिया-शासक रमजनने वेनिसगणके प्रतिनिधि अन्द्रेय वेनेरिसके साथ व्यापारिक समझौता किया।

मास्को-ध्वंस (१३८२ ई०)—तोकतामिश जू-छिके पुत्र ओरदाके वशका नही था, बल्कि उसका पूर्वज छिङ-गिस्‌वशी राजकुमार तुका-तिमुर था। ममाइ (करातालके पास) की विजयके बाद वह पूर्वी और पश्चिमी दोनो किपचको—सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दू—का स्वामी बना। विजयकी खबर सुनते ही रूसी राजुल जल्दी-जल्दी अपनी भेंट और तलवार चढानेके लिये उसके दरबारमे पहुचे। मास्को-महाराजुल दिमित्रिके दो कवचधार कुतुलुकबुगा और मोकस दूसरे खड्गधारियोके साथ भिन्न-भिन्न राजुलोकी राजधानियोमे खानकी सुनहली मोहरलगी यारलिकके साथ गये। लेकिन तोकतामिश इतनेसे सतुष्ट नही होनेवाला था। वह कर लेते हुए खानोकी प्रभुताको पूर्ववत् स्थापित करना चाहता था, जिसे उठा फेकनेकी रूसी राजुलोने इधर कोशिश की थी। उसने खानजादा अकखोजाको सात सौ सिपाहियोके साथ यह कहला भेजा, कि रूसी राजुल भेट और तलवार ही नही भेजें, बल्कि खुद बेरेक-सरायमे हाजिरी देनेके लिये आयें। अकखोजाने स्वय निज्नीनवोगोरद (निचला नवीन नगर) मे ठहर दूसरे दूतको सदेशके साथ मास्को भेजा। हालहीमे दोनके तटपर महाराजुल दिमित्रिको जो विजय प्राप्त हुई थी, उससे गर्व करते उसने जानेमे आनाकानी की। सालभरकी तैयारीके बाद उसे एकाएक खबर मिली कि सेना पार करनेके लिये तारतारोने बुल्गारोकी नावें पकड ली है, र्‍याजनका राजुल पथप्रदर्शक बन उन्हे ओका नदी पार करानेके लिये रास्ता दिखला रहा है। इस खबरको सुनकर बहुतसे राजुलोने हिम्मत हार दी। महाराजुलके धर्मपिता निज्नीनवोगोरदके राजुल दिमित्रिने अपने दो पुत्रोको खानके दरबारमे भेज भी दिया। उस समय खानका शिविर सिरनागमे था, जहा वह तोकतामिशसे मिले।

मास्को-महाराजुल दिमित्रि राजधानीको बायरोके हाथमे छोड सेना-सग्रहके लिये कोस्त्रोमाकी ओर गया। ओका नदीपर अवस्थित सेपूकोफ नगरको लेकर तोकतामिश मास्कोपर चढा। गिर्जोके घटे बजाकर नागरिकोको इकट्ठा कर एक बडी सभा की गई, पुराने रूसी रवाजके मुताबिक प्रति-

रक्षाके लिये बहुमतके अनुसार फैसला लेना था। तबतक कितने ही लोग शहर छोडकर भाग चुके थे, जिनमें महानधर्मनायक कुप्रियान भी था, जो त्वेर चला गया था—कुप्रियान रूसी नही था, इसलिये उसकी कायरताको लोगोंने विशेष तौरसे बुरा माना। शहरमे खलबली मची हुई थी। इसी समय एक तरुण लिथुवानी राजकुमार ओसतेइको दिमित्रिने मास्को भेजा—ओसतेइ प्रसिद्ध लिथुवानी राजा ओलगर्दका पौत्र था। उसके कामोको देखकर लोगोंके दिल कुछ मजबूत हुये। पासके गावोंके किसान भी अपने सामान और परिवारोंके साथ मास्कोमें शरण लेने चले आये थे। उन्होंने भी ओसतेइकी पुकारको सुना। नगरकी रक्षाके लिये साधुओंने भी हथियार मागे। इस प्रकार अप्रशिक्षित किन्तु बहादुर नागरिकोंकी कई पल्टनें प्राकारकी रक्षाके लिये तैयार हो गईं। बहुत समय नही बीता, कि जलते गावोंके धुयेंने तार-तारोंके आनेकी सूचना दी। २३ अगस्त १३८२ई० को तारतार उपनगरमें पहुच गये। आक्रमणकारियोमें कितने ही रूसी भाषा जानते थे। उन्होंने महाराजुलके बारेमे पूछा। जवाब मिला—वह मास्कोमे नहीं है। नगरको घेरकर तारतारोंने बाणोकी वर्षा करते बहुतसे नगर-निवासियोको मार डाला, लेकिन रूसियोंने भी जो भी हाथ आया उसीसे तारतारोका मुकाबिला किया—उन्होंने उनपर उबलते पानीको फेंका, बडे-बडे पत्थर गिराकर तारतारोंको चकनाचूर किया। तीन दिनतक जबर्दस्त आक्रमण होता रहा—खैरियत यही थी, कि किपचकोंके पास तोपखाना नही था। इस तरह काम न चलते देख तोकता-मिशने छलसे काम लेना चाहा। उसने अपने कुछ सरदारो तथा निजनीनवोगोरदके दोनो राजुलपुत्रोको भेजकर कहलाया खान लोगोंको अपनी आज्ञाकारी प्रजा समझता है। उनके प्रति उसका कोई दुर्भाव नहीं है। वह केवल अपने शत्रु महाराजुलको चाहता है। वह तुरत नगरको छोड जानेके लिये तैयार है, यदि उसके पास भेंट भेजी जाये और भीतर आकर नगरको देख लेनेका मौका दिया जाय। ओसतेइने साधुओं, बायरों और लोगोंसे सलाह ली। उन्होंने निज्नीनवोगोरदके राजुलके दोनो पुत्रो वासिली और सिमेओनकी इस बातपर विश्वास किया, कि खान अपने वचनको नही तोडेगा। नगरके फाटक खोल दिये गये। मूल्यवान् भेंटे लिये ओसतेइ आगे-आगे, उसके पीछे सलीब लिये हुये साधु, फिर बायर और साधारण जनता चली। ओसतेइको सीधे खानके तम्बूमें ले जाकर मार डाला गया। फिर संकेत पाते ही हजारो तारतारोंने नगी तलवारें ले लोगो को जबह करना शुरू किया। फिर वह नगरमें घुस पडे। बिना नेताके सिपाहियोंमे भगदड मचनी ही थी। वह औरतोकी तरह रोते-कादते सडकोंपर इधर-उधर भागने लगे। तारतारोंने बूढो, बच्चो, स्त्रियो और साधुओंमे कोई भेद न कर सबको तलवारके घाट उतारा। गिर्जाके दरवाजोंको खोलनेपर वहा रक्खी हुई गावके लोगोकी सम्पत्ति मिली, जिसे तारतारोंने लूट लिया। वहा चादी-सोनेकी मूर्तिया, बहुमूल्य भाड तथा दूसरी चीजें बडे भारी परिमाणमे मिलीं। महाराजुलका खजाना, बायरो (सामन्तो) और धनी व्यापारियोंकी चिरकालसे जमा होती सम्पत्ति तारतारोंके हाथ लगी। इसके साथ सबसे बडी हानि जो हुई, वह थी पुरानी पुस्तकों और हस्तलेखोंकी तारतारो द्वारा होली जलाना। सम्पत्ति लूटनेके बाद उन्होंने घरोमे आग लगा दी, फिर तरुण रूसियोंके झुडको आगे-आगे हाकते पासके खेतोमे जाकर उन्होंने भोज किया।

तोकतामिशकी सेना सारे रूसमे फैल गई। व्लादिमिर, ज्वेनीगोरद, यूरियेफ, मोजाइस्क, दिमित्रियेफ आदि रूसी नगरोंकी भी वही गति हुई, जो मास्कोकी। पेरेइस्लाव (यारोस्लाव्ल) नगर आगकी भेंट हुआ, लेकिन लोग नावमे भाग निकलनेमें सफल हुये। कलोम्नापर भी अधिकार करके तोकतामिश लौट गया। ओका पार हो अपने पथप्रदर्शक जातिद्रोही र्याजन-राजुलके राज्यको उसने बडी निर्दयताके साथ लूटा और नष्ट-भ्रष्ट किया।

रूसकी स्वतंत्रता जो काम इतने दिनोंमे हो रहा था, उसपर भारी चोट पहुची। इवान और सेमि-योनने तारोंकी चापलूसी करके देशमे जो समृद्धि पैदा की थी, उसका सर्वनाश हो गया। लोग कहने लगे—"तारतारोंपर न विजयी होनेवाले 'हमारे पुरखा' भी हमारे जैसे अभागे नही थे।"

यद्यपि तोकतामिशने महाराजुल और उसकी राजधानी मास्कोका सर्वनाश कर दिया, लेकिन उसने देखा, कि बिना महाराजुलकी सहायताके पहलेकी तरह रूसियोंसे कर उगाहने और अपनी आज्ञा स्वीकार करवानेमे सफलता नहीं प्राप्त कर सकता, इसलिये उसने फिर अपने पूर्वगामियोका रास्ता स्वीकार

किया। अपने एक मुरजा (मिर्जा) के द्वारा उसने दिमित्रिके पास सहृदयता दिखलाते हुये संदेश भेजा–अब भी तुम मेरी अधीनता स्वीकार कर पहलेकी तरह काम करो। दिमित्रिने अपने पुत्र वासिलीको भेजा। मास्कोके नष्ट हो जानेपर मूल्यवान् भेंट कहासे भेजी जा सकती थी ? तो भी तोकतामिशने वासिलीके साथ अच्छा बरताव किया। उसने महाराजुलकुमारको दरबारमें जामिनके तौरपर रक्खा और मास्कोके ऊपर नये कर लगाये।

खानोकी शक्तिको क्षीण हो जानेपर रूसका प्रतिद्वन्द्वी लिथुवानियाका राजा समझा जाता था। अबतक लिथुवानी ईसाई धर्मको न स्वीकार कर वैदिक देवताओके भाईवन्दोको ही अपना इष्टदेव मान रहे थे। उनकी वीरताके कारण ईसाई समुद्र इन काफिरोके द्वीपको अपने भीतर बर्दाश्त कर रहा था। एक इतिहासकार लिखता है—"बहुतसे लोग शायद यह नही जानते, कि १४ वी सदीके अततक मध्य-युरोपके इतना नजदीक विलेनुस नगरीमे काफिरोका धर्म राजधर्म था।" *लिथुवानी राजा लादिस्लाउस (ह्लादश्रवा) ने पोल-राज्यकी उत्तराधिकारिणी कुमारी हेदविगके साथ ईसाई धर्म स्वीकार करते हुये व्याह किया। इसी समय राजाके साथ उसके साथियोने भी बपतिस्मा लिया। युरोपके धर्मपरिवर्तनवाली कहानी लिथुवानियामे भी दुहराई गई और विलनामे काफिरोकी जितनी मूर्तिया और पवित्र वृक्षस्थल थे, सबको एक ओरसे ईसाई पादरियोने नष्ट कर दिया। पुराने पुरोहितोको उनकी मृगछालाकी पोशाकके बदलेमें सफेद पोशाक बाटी गई। लिथुवानियाके राजाको इसकी जरूरत क्यो पडी ? अपने पडोसियो को देखते हुये ग्रीक और रोमन सस्कृतिसे लिथुवानियाके सरदार भी प्रभावित हुये बिना नही रहे। भीतर ही भीतर सस्कृतिके साथ धर्मका भी प्रभाव उनमेंसे कितनो हीपर पडता जा रहा था, जिससे आगे चलकर काफिर और ईसाईका सवाल सिंहासनके लिये खतरेका कारण हो सकता था। उधर लादिस्लाउसने देखा, कि ईसाई धर्म स्वीकार करनेपर मैं पोल राजकुमारीके साथ पाणिग्रहण कर पोलन्दका भी स्वामी बन जाऊगा, इसलिये हजारो वर्षोसे चली आई लिथुवानी सभ्यता और धर्मके बहुतसे चिह्नोको मिटा देनेमे उसने हाथ बटाया। महराजुल दिमित्रिका तोकतामिशके साथ फिर अच्छा सबध स्थापित हो गया, इसलिये लिथुवानियन राजाके आक्रमण करनेपर उसे तोकतामिशका एक भारी सहारा मिल गया। १३८९ ई० मे दिमित्रिके मरनेपर उसका पुत्र वासिली महाराजुल बना।

पश्चिमकी दिग्विजयके बाद तोकतामिशने अपने राज्यके पूर्वी भागकी व्यवस्थामे हाथ लगाया। उसने विरोधियोको बडी निष्ठुरतासे पीस डाला, जिसमे उसकी अपनी बीबी तावलुइने भी अपने प्राण खोये। तेमूर लगसे झगड पडना अकारण नही था। जू-छिके समयसे ही ख्वारेज्म उसके उलुसका था, जिसे तेमूरने जबर्दस्ती छीन लिया था। उरुस खानके समय, जो राज्यमे गडबडी मची थी, उससे फायदा उठाकर हुसेन सूफी यङ-हदाई-पुत्र (ककुरत) ने ख्वारेज्मके कात और खीवा जिले हडप लिये। तेमूरने देखा, कि हुसेनकी पीठपर कोई नही है, इसलिये 'ख्वारेज्म जगताई-उलुसका है' कहकर उसे मागा। तेमूर यद्यपि एक बडी सल्तनतका स्वतत्र शासक था, लेकिन उसने जगताई वशके खानको समरकदकी गद्दीसे नही उतारा और अपने लिये केवल अमीरकी साधारणसी पदवी स्वीकार की थी। इस प्रकार उसने जगताई खानकी ओरसे ख्वारेज्मपर दावा किया। हुसेन सूफीने उसका जवाब दिया—"तलवारसे जीता तलवारसे ही लौटाया जा सकता है।" तेमूर दौड पडा। कातमे कुछ थोडेसे प्रतिरोध के बाद शहरपर तेमूर लगका अधिकार हो गया। निर्मम हत्या हुई, स्त्री-बच्चो सहित बहुतसे लोग दास बनकर बिकने के लिये बंदी बनाये गये। हरे-भरे ख्वारेज्मको तेमूरकी आगमें जलना पडा। कातसे हुसेन सूफी भाग गया, और थोडे दिनो बाद मर गया। तेमूर लगने दया दिखाते हुये हुसेन सूफीके पुत्र युसुफ सूफीको इस शर्तपर वहाका शासक बनाया, कि वह अपनी चचेरी बहिन तथा सुन्दरताके लिये सर्वत्र प्रसिद्ध सेविनबेईको तेमूर-पुत्र जहागीरके साथ व्याह दे। युसुफने पहले तो बात मान ली, लेकिन जल्दी ही उसने शर्तको तोडकर कातको लूटना और लोगोको भगाना शुरू कर दिया। दड देनेके लिये १३७२ ई० मे तेमूर फिर

*ज० ओ० पृ० ३३७

आया। युसुफने आत्मसमर्पण किया। सेविनबेग (खानजादी) का व्याह जहांगीरके साथ हुआ और युसुफको क्षमा मिली। दो साल बाद १३७४ ई० मे फिर तेमूरको कातके रास्ते ख्वारेज्मकी ओर बढना पडा, लेकिन अपने किसी अमीरकी ओरसे समरकंदपर खतरा होनेकी खबर सुनकर वह लौट गया। इसी साल उसने तोकतामिशको किपचकोंका खान स्वीकृत किया था।

जिस समय तेमूर-लग उतरारमें उरुस खानसे लडनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय युसुफ सूफीने बुखारा जिलेपर आक्रमण करके लूट-मार मचानी शुरू की। तेमूरने उसे हिदायत करनेके लिये दूत भेजा, जिसे युसुफने जेलमें डाल दिया। इसके बाद एक दूसरे दरबारी दूतको तेमूरने रेशमपर ताजी कस्तूरीसे लिखा शासनपत्र देकर भेजा। युसुफने इस दूतकी भी वही गति की। बुखाराके पास उसने कुछ तुर्कमानोंके ऊट लूट लिये। १३७८ ई० के बसतमें राजधानीके सामने पहुचकर युसुफने कहा—"इतने मुसलमानोंको मरवानेकी जगह यही अच्छा है, कि आओ हम दोनो द्वंद्व-युद्ध करके हार-जीत का फैसला कर लें।" तेमूरने इसे स्वीकार किया। मित्रोंके वर्जित करनेपर भी शाही कवच और शिरस्त्राण पहनकर तेमूरने द्वंद्व-युद्धके लिये नगरद्वारसे बाहर जा युसुफको ललकारा, लेकिन वह लडनेके लिये सामने नहीं आया। उसी समय तेरमिजसे कुछ ताजे खरबूजे (सरदे) आये, जिनमें से कुछको सोनेकी थालमें रखकर, तेमूरने अपने दुश्मनके पास भेजा, लेकिन युसुफने उन्हें मोरीमें फेंक दिया और लानेवालेको थाल बख्श दिया। फिर दोनोंमें घमासान लडाई शुरू हुई। नगरका मुहासिरा करके युसुफने उस समयके पुराने ढगके तोप-खानेसे प्राकारको तोडनेकी कोशिश की। मुहासिरा तीन महीने छ दिन रहा। युसुफ सूफी इसी बीचमें असफल होकर मर गया। तेमूरके हाथ भारी हीरा-मोतीका खजाना आया। उसने सभी शरीफों, हकीमों और विद्वानोंको स्त्रियों-बच्चोंके एक बडे समूहके साथ ख्वारेज्मसे पकडकर केश (शहरसब्ज) भेज दिया। इस प्रकार १३७९ ई० में ख्वारेज्मपर तेमूर-लगका अधिकार हुआ।

पूरब और पश्चिमकी सफलताओंके कारण तोकतामिशको अपनी शक्तिपर विश्वास हो गया था। इधर युसुफ सूफीकी लडाइयोंमें वह यह भी समझता था, कि तेमूर-लग अजेय नहीं है। जू-छिके सिंहासनका मालिक और छिन्-गिसी शाहजादा होकर वह कैसे बर्दाश्त कर सकता था, कि ख्वारेज्म एक मामूली तुर्क सरदारके हाथमें चला जाय। वह जानता था, कि चगताई खान केवल गुडिया बनाकर समरकदके सिंहासनपर रखा गया है। तोकतामिशने ख्वारेज्म मागा, लेकिन मुहसे वैसा न कहकर भी तेमूर-लगका जवाब भी हुसैन सूफी जैसा ही था—"तलवारसे जीता तलवारसे ही लौटाया जा सकता है।" तोकतामिश तेमूरके विरुद्ध सिर-दरिया पार हो सीधे समरकदकी ओर बढ सकता था, अथवा ख्वारेज्मपर आक्रमण कर सकता था, लेकिन उसे तेमूर-लगका निर्बलस्थान वहा नहीं मालूम हुआ। उसने खुलाकूकी राजधानी तब्रेज—जोकि अब तेमूर-लगके हाथमें थी—को लक्ष्य कर काकेशीय दरबन्दके रास्ते अभियान किया। उसके साथ बेक बुलाद, ऐमाबेक, यागलीबेक, गजनशी आदि बारह ओगलान (राजकुमार) थे, जिनका मुखिया पुलादबेक था। तोकतामिशकी सेनाने सिरवान होते हुये आजुरबाइजानके भीतर घुसकर तब्रेजको घेर लिया। लोगोंको जब यह खबर मिली, तो वे अपने कूचो और मुहल्लोंमें दरवाजोंको डाल मोर्चाबदी कर हथियारबद हो अपने-अपने मुहल्लोंकी हिफाजत करने लगे। आक्रमणकारियोंने नागरिकोंके प्रतिरोधको बहुत मजबूत देखा। वह शम्बेगाजानीमें उतरे और कमजोर स्थान ढूढनेके लिये आठ दिनतक नगरका चक्कर लगाते रहे। जब कोई वैसा स्थान या अवसर नहीं मिला, तो उन्होंने आदमी भेजकर अमीर वलीको सुलह करनेके लिये बुलाया। अतमें तै हुआ, कि अमीर वली शहरसे दो सौ पचास तुमान सोना दिलवा दे, जो कि तोकतामिशकी सेनाके घोडोंकी नालोंका दाममात्र ही था। बृहस्पतिवार १३८५-८६ ई० (७८७ हि०) को शहरके मालिकों और ख्वाजाओंको इकट्ठा निश्चय किया गया कि हर मालिक एक तुमान नकद दे। ढाई सौ तुमान भेज देनेके बाद लोग निश्चिन्त हो गये। उन्होंने तैयारी ढीली कर दी और बहुतोंने हथियार भी उतार दिये। उसी समय तोक-तामिशकी सेना शहरके ऊपर टूट पडी और कत्ल तथा लूटका बाजार गरम हो गया। प्रतिरोधकी शक्तिया छिन्न-भिन्न हो गई थीं। तोकतामिशकी सेनाने तेमूर-लगके तब्रेजको आठ दिनतक लूटा और

कतल किया, जिसमे करीब एक लाख आदमी बडी निर्दयतासे मारे गये। किपचकोने किसीपर दया नही दिखलाई। उन्होने लोगोको नगा मादरजाद करके सडको, कूचो, मुहल्लोमे वर्फपर बैठा दिया। स्त्रियो, लडकियो और छोकरोमे जिन्हे सुन्दर देखा, उन्हे लिया, बहुतसे आदमियोको भी बदी बनाया, फिर धरोमे आग लगा दी। तोकतामिशने मास्कोमे जो किया था, उसीकी आवृत्ति उसकी सेनाने तबरीजमें की, और यही बात पीछे तेमूर-लगने दिल्लीमे दुहराई। एक इतिहासकार ने लिखा है—"काफिरोने लोगोपर वह जुल्म किया, कि लिखनेवाला यदि एक सालतक लिखता रहे, तो नही पूरा कर सकता। इस शहर और इन मुसलमानोपर क्या-क्या नही बीती ?"

अमीर वली सुलतानियासे जा चुका है, यह सुनकर उनको उसपर विश्वासघाती होनेका सदेह हुआ। तोकतामिशी सेनाने सुलतानिया और दूसरी जगहोको भी उसी तरह लूटा-पाटा। इसके बादभी तबरीजके लोगोमे कुछ सुगबुगाहट देख फिर दो दिन दो रात उसे कतल और लूटका शिकार बनाया। फिर कितने ही किपचक नखजवानकी ओर अर्रानके प्रदेशमे जा लूट-मार करने लगे, कुछ इसी कामके लिये कराबाग चले गये। जाडा खतम होने से पहले ही दो लाख बदी बना तोकतामिश आये रास्ते लौट गया। तेमूर इस समय ईरानके झगडोमे फसा था, इसलिये आजुरबाइजानके सर्वसहारकी बातको सुनकर भी दिल मसोसकर रह गया। तोकतामिश अपने साथ प्रसिद्ध कवि कमालको लेता गया था, जिसने चार सालतक राजधानी बेरेकसारायमे रहकर उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

तेमूरके साथ लडाइया

प्रथम युद्ध—ईरानके झगडेसे छुट्टी पाकर १३८७-८८ ई० (७८९ हि०) के बसतमे तेमूर-लग उरुस नदीके तटपर था, जबकि उसने सुना कि तोकतामिश दूसरी बार दरवदकी ओरसे आकर आक्रमण करना चाहता है। तोकतामिशके अमीरोने मना किया, कि तेमूर अब भीतरी झगडोसे छुट्टी पाकर मुकाबिलेके लिये तैयार है, इसलिये लडनेके लिये नही जाना चाहिये। लेकिन, तोकतामिशने उनकी बात नही मानी। खुलाकू-वशियो और बातू-वशियोके पुराने युद्धोकी तरह फिर उत्तरसे तोकतामिशी सेना कुरा नदीके तटपर पहुची और दक्षिणसे तेमूर भी बेरदआ होते वहा पहुचा। उसने नदीपार की खबर जाननेके लिये गुप्तचर भेजे, जिन्होने लडाई करके भारी क्षति उठाई। फिर कुमकके लिये आई तेमूरी सेनाने तोकतामिशकी विजयिनी सेनापर आक्रमण करके उसे बुरी तरह हराकर दरबदतक उसका पीछा करके बहुतसे बदी बनाये। तेमूरने कृतघ्नताके लिये बहुत फटकारकर तोकतामिशके बदी अमीरो-को खलअत और धन देकर घर भेज दिया।

इस विजयके बाद तेमूरने सरकश तुर्कमान सरदार करामोहम्मदसे लोहा लिया और फिर फारस-पर आक्रमण कर उसे अपने राज्यमे मिला लिया। इसी समय डाकियाने आकर खबर दी, कि तोक-तामिश अतर्वेद (मावरा-उन्नह्र) की ओर बढ़ रहा है। तोकतामिशने सिगनकसे प्रस्थान कर साबरानपर आक्रमण किया, लेकिन तेमूरी सेनापतिके जबर्दस्त प्रतिरोधके कारण उसे मुहासिरा उठा लेना पडा। इसके बाद तोकतामिश दूसरे इलाकोको तबाह करने लगा। प्रतिरोध करनेके लिये तेमूर-पुत्र शाहजादा उमरशेख मिर्जाने एक बडी सेना ले सिर-दरिया पार हो आगे बढते उतरारसे पाच फरसक पूरब युकलिक स्थानमे तोकतामिशकी सेनापर आक्रमण किया, लेकिन उसे हार खानी पडी। अदिजानमें पहुचकर उसने अपनी बिखरी सेनाको फिरसे एकत्रित किया। इसी समय पता लगा, कि मुगोलिस्तानके शासक अका-तूराने भी विश्वासघात करके चढाई कर दी है और वह सैराम तथा ताश्कदके नजदीक पहुच गया है। उमरशेखने अकातूराको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। तोकतामिशके किपचक समृद्ध सोग्द-देशको लूटनेके लिये आगे बढ रहे थे, जिनका एक दल बुखाराके सामने पहुच गया था, जिसने वहाके सुन्दर प्रासाद जेंदगिर-सरायको जला दिया। तेमूर उनकी ओर लपका। नजदीक आनेपर शत्रुकी सेना-मेंसे कुछ दश्तेकिपचक (कजाकस्तान)की ओर कुछ ख्वारेज्मकी ओर भागे। तेमूरने अपने अफसरो—बेरातखोजा और कुकिलताशको युकलिककी पराजयके लिये दड दिया—"कुकिलताशको दाढी-मूछ मुडवा चेहरेको काले-लाल रगसे रगा, सिरको स्त्रीकी तरह सजा शहरमे नगे पैर दौडाया गया।"

युसुफके मरनेके बाद ख्वारेज्म उसके भाई सुलेमान सूफी तथा वहनोई इलिकमिस ओगलान (किपचक राजकुमार) के हाथमें था। यह दोनों तोक्तामिशको अपना प्रभु मानने लगे, इसपर तेमूरने उनके विरुद्ध चढाई की। तेमूरी सेनाके हरावलके सचालक शरणागत श्वेत-ओर्दू राजकुमार तेमूर कुतुलुक ओगलान और कुजी ओगलान थे। बगदादके और शेदरिस नदीके पार होनेके बाद पता लगा, कि दोनों राजकुमार तोक्तामिशके पास भाग गये। शाहजादा मीरानशाह (तेमूर-पुत्र)ने पीछा करके उनको पकड लिया। तेमूर ख्वारेज्मकी राजधानी उरगज पहुचा। उसे नगर और निवासियोंपर इतना गुस्सा आया था कि उसने नगरको गिरवाकर वहा जौ बुवा दिया और निवासियों को समरकद भेज दिया। फिर तीन साल बाद ही नगरके पुन स्थापनाके लिये हुकुम दे इस कामपर उसने मुसिकी यदकि कुचीन-पुत्रको नियुक्त किया। मुसिकीने नगरको फिरसे बनवाकर लोगोको बसाया, उरगज, कात और खीवाके चारो ओर नगर-प्राकार बनवाये।

तोक्तामिशने देख लिया, कि अब तेमूर-लगके साथ मामूली छेडखानीसे काम नही चलेगा। उसने १३८८ ई० (७९० हि०) में अपने महाअभियान शुरू करनेके पहले बहुत भारी सेना जमा की। इस सेनामें चिरकासी, बुल्गार, किपचक, क्रिमियावासी, कफा, अलानिया, अजक, बाश्किर और रूसी सभी जातियोंके सैनिक थे। पता लगनेपर तेमूर भी भारी सेना ले समरकदसे ६ फरसख पर अवस्थित सगरूज स्थानमे मुकाम किया। वहासे उसने अपने सारे राज्यमें सेना जमा करनेके लिये तवाची भेजे। उस साल जाडा बहुत सख्त रहा। चारो ओर जमीन बर्फसे ढकी हुई थी। पता लगा, कि किपचक हरावल इलिकमिश ओगलानके नेतृत्वमे सिर-दरियापार हो ओतरार (उतरार)के पास अजक-जैरनुकमें डेरा डाले हुये है। तेमूरने तुरत हमला करना चाहा, लेकिन उसके अमीरोने घुटने टेककर प्रार्थना की, कि और सेनाके आनेतक प्रतीक्षा की जाय। तेमूरने नही माना। बर्फ कही-कही घोडोंकी छातीतक थी। उसीमें स्थानीय सेना ले वह रात-दिन कूच करने लगा। रास्तेमें उमरशेख मिर्जा अपनी सेना ले आ मिला। पीछेसे रास्ता काटनेके लिये सेना भेजकर दूसरे दिन तैलम्वार पहाड पार करनेपर दुश्मन सामने दिखाई पडा। भयकर युद्ध हुआ। तोकतामिशकी बुरी तरह हार हुई। सिर-दरिया पार करके उसने जो गलती की थी,उसके कारण बहुतसे सैनिक डूब गये और अधिक सख्याको तेमूरने घेरकर मार डाला। तोक्तामिशका राज्य-सचिव ऐरदीबरदी बदी बनाकर तेमूरके पास लाया गया। तेमूरने उसका बहुत सम्मान कर बहुतसे उपहार दे लौटा दिया। तेमूरने स्वय लौटकर फर्वरी ७९१ हि० (३१ दिसम्बर १३८८–२१ नवबर १३८९ ई०) मे समरकदके पास अकारमे डेरा डाला।

वसन्त(१३८९) शुरू होते-होते खुरासान, बलख, कुन्दुज, खतलान, बदख्शा, खुत्तलान, हिसार, शादुमान आदि नाना देशोंसे सेनाये आ पहुची। खोजन्दके सामने दूसरी भी और कितनी ही जगहोंमें सिर-दरियाके ऊपर नावोंके पुल बनाये गये। १३८९ ई० (७९१ हि०) के प्रारभमें अभियान शुरू हुआ। आरिस (आर्च) नदीके किनारे दुश्मनके हरावलपर तेमूरी सेनाने एकाएक आक्रमण कर दिया। तोक्तामिशकी सेनाने सावरानपर अनफत आक्रमण किया और उसे यस्सी (तुर्किस्तान) की ओर हटनेके लिये मजबूर होना पडा। यहा खुली जगहमें तोक्तामिशकी सारी सेना पडी हुई थी। तेमूरको सामने आता देखकर तोक्तामिशकी सेना भाग चली। तेमूरने पीछा किया और कुछको पकड लिया। अब तेमूर-लगने अलकुसुनामें जाकर डेरा डाला। तेमूरके सामने इस वक्त दो शत्रु थे, एक तोकतामिश और दूसरा चगताईकी उत्तरी शाखा मुगोलिस्तान (राजधानी अलमालिक) का खान। दोनोंमें मुगोलिस्तानका खान कम बलिष्ठ मालूम हुआ, इसलिये उसीको पहले खतम करनेके ख्यालसे तोक्तामिशके पीछे न पडकर तेमूर समरकद लौट आया।

प्रथम महाभियान (१३९०ई०)

तेमूरने अच्छी तरह समझ लिया, कि दश्तेकिपचक (तोक्तामिशके राज्य) का अभियान खेल नही है, इसलिये उसने बडी तैयारी की—तुर्क और ताजिकोंकी भारी सेना जमा की, सालभरके लिये

रसद इकट्ठा की। हर एक आदमीको हुकुम दिया कि वह एक धनुष, तीस बाण, एक प्रत्यचा और एक कमरबद जमा करे। सारी सेना घोडसवार थी। हरएक घोडसवारको एक घोडा फाजिल अपने साथ रखना था। दस आदमियोके ऊपर एक तबू, दो बेल्चे, एक फरसा, एक हसिया, एक आरा, एक कुल्हाडा, एक रुखानी, सौ सुइया, सवा चार सेर रस्सी, एक बैलका चमडा और एक मजबूत तवा दिया गया। सेनाको सरकारी घोडोके साथ शिरस्त्राण, कवच और नकद पैसा भी दिया गया था। ताश्कद छोडनेके बाद तेमूरने हुकुम दिया, कि महीनेमें प्रतिव्यक्ति साढे आठ सेर आटा मिलेगा। रोटी, कुल्चा (बिस्कुट) आदि शिविरमे किसीको नही मिलेगा। खानेके लिये जल्दी-जल्दी आटेकी लपसी बना लेनी होगी। तेमूरने वृश्चिक राशिमे समरकद छोड जाडेको समरकद जिलेमें ही बिताया। आगेके लिये प्रस्थानसे पहले खोजन्दमे उसने वहाके प्रतापी सत शेख मस्लहतके मकबरेका दर्शन करके उसपर दस हजार दीनार चढाये। ताश्कदमें तेमूर चालीस दिनतक सख्त बीमार पडा रहा। उसकी सेनाके पथप्रदर्शक तमूर कुतुलुक ओगलान, तेमूर मलिकखान, गूनेजी ओगलान, इदिकू उज्बेक थे, जिनमेंसे पहले तीन किपचक राजकुमार थे। १६ जनवरी १३६१ ई० को अपनी प्रियतमा भार्या तथा मुगोलिस्तानके हाजीबेक इरखानकी पुत्री चुलपान मलिक आगाके साथ तेमूरने प्रस्थान किया।

कुछ दिनोतक सेना कारासमनमें ठहरी। यहा तोकतामिशके दूत तेमूरके दरबारमे आये। उन्होने शाहबाज और नौ घोडे भेटकर दडवत् पड धरतीपर ललाट रगडकर सम्मान प्रकट करते अपने मालिक-की प्रार्थना दुहराते हुये कहा—"बुरी सलाहमें पडकर तोकतामिशने विद्रोह किया, अब वह क्षमा मागता है।" तेमूरने बाजको अपने हाथपर बैठाकर कहा—"सारी दुनिया जानती है, कि मैने तोकतामिशकी रक्षा की, कितनी कुर्बानिया करके उसे तख्तपर बैठाया, लेकिन मुझे अनुपस्थित देख उसने तबरीजपर आक्र-मण कर दिया। मै अफसोस प्रकट करनेपर क्षमादानके लिये तैयार था, फिर भी उसने दुष्ट काफिरो को साथ ले मेरे सीमातपर आक्रमण किया। काफिरोने दूर-दूरतक लूट-मार की। जब मै अपनी प्रजाकी सहायताके लिये पहुचा, तो वह नीचता दिखलाते हुये हट गया। अब वह फिर मुझे झूठे वचनोद्वारा धोखा दना चाहता है। उसने बहुत बार विश्वासघात कर लिया है, अब वह मुझे फिर धोखा नही दे सकता। मै उसे दड देनेके मसूबेसे आया हू, और उसे बिना पूरा किये नही छोडूगा। तो भी अगर वह ईमानदारीसे अपनी सदिच्छा दिखलाना चाहता है, तो, अपने प्रथम-मत्री अलीबेकको मेरे पास भेज दे। मै राज्यका हित देखते बुद्धिके अनुसार कार्रवाई करूगा।"

तेमूरने दूतोके लिये भारी दावत दी। उन्हें कमखाबके कफतान (जामे) भेट किये, साथ ही खास स्थानमे टिकाकर निगाह रखनेके लिये ताकीद भी कर दी।

२१ फर्वरी १३९१ ई० को युद्ध-महापरिषद् बैठी। युद्धके पक्षमें निर्णय करके ज्योतिषियोसे शुभमुहूर्त ठीक करवाया गया। तोकतामिशके दूत लौटा दिये गये। तेमूरी सेनाने कूच किया। उसकी सेना यस्सी (आधुनिक तुर्किस्तानशहर), कराचुक (तुर्किस्तानसे पाच फरसखपर सिर नदीमे गिरने-वाली नदीके ऊपर), और साबरानके रास्ते आगे बढते उत्तरकी ओर मुडकर ६ सप्ताह वृक्ष-वनस्पति-हीन मैदानमें चली। बहुतसे घोडे रास्तेमे चारे बिना मर गये। ६ अप्रैल १३६१ ई० को तेमूरी सेना नीले पानीवाली नदी (सरूक उजेन, सरीसू) के तटपर पहुची। नदी बढी हुई थी, इसलिये थके हुये घोडोको कुछ दिनो विश्राम दिया गया। २६ अप्रैलको प्रसिद्ध मैदान (कुनचुकताग=लघु-पर्वत) पर पहुची। दो दिन और चलनेपर इस प्रदेशका सबसे बडा पहाड उलुगताग (महापर्वत) आया—पहिले इन पर्वतोका नाम ओरताग (उच्च पर्वत) और करताग (गदा पर्वत) था। आगूज तुर्को-के खान अपनी गर्मिया यही बिताते थे। इन पहाडोसे बहुत-सी नदिया निकलती हैं। तेमर-लग उलुगतागके ऊपर चढा और वहापर उसने २८ अप्रैल १३६१ ई० को शिला-लेख खुदवाकर एक पाषाणस्तभ स्थापित करवाया।

यह शिलालेख आजकल लेनिनग्रादके एरमिताज-सग्रहालयमे है। अभिलेखमे ऊपर तीन पक्तिया अरबीमे, फिर आठ पक्तिया उइगुर-लिपि तथा तुर्की भाषामें है। उइगुर लिपिके कायदेके

अनुसार इस लेखकी पंक्तिया ऊपरसे नीचे न हो बायेंसे दाहिने तथा अरबी पंक्तियोके समानान्तर हैं। तुर्की भाषामें मूल लेख निम्न प्रकार है —

१ तरिक येती यूज़ तोकसन उचन्दा कोइ
२ यिल याज़निंग अरा ए तूरान निंग सुल्तान इ
३ तेमूर वेग इकी युज़ मिंग सेरगि विलए इसमी उचुन तोकतामिश कान निंग
४ कनिंगा योडरिदी वू येरगे येतिप वेलगू वोलसुन तेंप
५ वू ओवा-नी कोपरदी
६ तङ-री निसफत वेरगेंई इन्शल्ला
७ तङ-री इल किशीगे रहमत किलगे विज-नी दुआ विलाये
८ याद किलगे ।

["७९३ हि० सन् (१३९१ ई०) के वसत के मध्यमे तूरान-सुल्तान तेमूरवेग दो लाख सेनाके साथ तोकतामिश-खानसे लडनेके लिये आया ।. यहा पहुचकर (उसने) इस स्तंभ (चिह्न) को स्थापित किया। यदि भगवान् चाहे, तो वह लोगोको सौहार्द देवे और हमें आशीर्वादपूर्वक याद कराये ।"]

आगे प्रस्थान करते सेना दूसरे दिन इलान्चुक (सर्प-सदृश) नदीपर पहुची। आठ दिन और चलनेके बाद अताकरागुई (अनाकरागुई, करातुरगई) नदीपर पहुची। अबतक ताश्कद छोडे चार मास हो चुके थे। रसद कम होने लगी थी। एक भेडका दाम सौ कुवेक (दीनार) हो गया था, अन्न भी उसी तरह महगा था। तेमूरी सेना जंगली चिडियोके अडे, सभी तरहके जानवरोंके मास, यहातक कि घास भी खानेके लिये मजबूर हुई। उसके लिये तोकतामिशसे भी अधिक निष्ठुर उसके देशकी प्रकृति साबित हुई। रसदमे सिर्फ आटा, बाजरा और घास मिला हुआ सूप (रस) मिलता था। सिपाहियोका ही खाना अफसर भी खाते थे। इस बयाबानमे शिकारोकी कमी नही थी। छिङ-गिस्के महाशिकारकी प्रणाली लोगोको भूली नही थी। ६ मई १३९१ ई० को उसी शिकारको रचा गया। आदमियोने दूर तककी भूमि घेर ली। घिरावेमें पडे हरिन तथा दूसरे जानवर बडी सख्यामे मारे गये। वह इतने अधिक फसे थे, कि उनमेंसे सिर्फ मोटे-मोटे जानवरोको ही मारा गया। तेमूरकी भारी सेनाके लिये कितने ही दिनोंके वास्ते मास मिल गया। आगे बढती हुई वह तोबोल नदीके उद्‌गमके पास पहुची। वही तेमूरने अपनी सेनाकी परेड देखी—भालो, तलवारो, खाडो, गदाओ, चर्मकी ढालोंसे सज्जित बाघका चमडा डाले घोडोपर सवार सैनिक अफसर उसके साथ थे। तेमूरने स्वय अपने सिरपर पद्मराग-जटित एक मुकुट पहिना था। उसके हाथमें गदा थी, जिसके सिरे पर बैलका चेहरा था। तेमूरने अपनी सेनामें इनाम बाटा। सेना "सुरिम" (धावो) का नारा बुलन्द करते बाजेकी आवाज-पर अपने बादशाहके सामनेसे सलामी देती निकली।

फिर ज्योतिषियोंने शुभमुहूर्त देखा और १२ मईको मिर्जा मुहम्मद सुल्तान बहादुर (तेमूर-पौत्र) की अधीनतामें हरावल सेना आगे बढी। दो दिन जानेपर दुश्मनका पता उसके छोडे डेरोंसे लगा, जिनमें अब भी आग मौजूद थी। अन्तमें वह तोवोल (छोटा वृक्ष)—जो कजाकोकी तोबुल और रूसियोकी ताबूला नदी है—के तटपर पहुचे। पार होनेके बाद पता लगानेवाली टुकडीने लौटकर बतलाया, कि सत्तर जगहोंमें आग मिली, किन्तु दुश्मनका कही पता नही। यह सुनकर तेमूर भी जल्दी-जल्दी तोबोलतट-पर पहुचा। उसके तुर्कमान सरदार शेख दाऊदके दलने लगातार जल्दी-जल्दी दो दिन-रातके कूचके बाद कुछ झोपडोको देखा। वह प्रतीक्षा करने लगे। जब उनमेंसे एक सवार निकला, तो उसे पकड-कर तेमूरके पास ले आये। पूछनेपर बदीने कहा—"मैंने एक महीने पहले तोकतामिशके देशको छोडा। कुछ दिन हुये दस कवचधारी सैनिक मैंने पासके जगलमें छिपे देखे।" तेमूरने उनके पीछे सिपाही भेजे, जो कुछको साथ घायलो बदी बनाकर ले आये। उनसे निश्चित खबर पा फिर सेनाने जल्दी-जल्दी कूच करना शुरू किया। २६ मईको तेमूर यायिक (उराल) नदीके तटपर था। नदीके ऊपरकी ओर पार

कर ६ दिन चलनेके बाद सेमुर नदीके तटपर जाकर सेनाने डेरा डाला। वहा पता लगा, कि तोकतामिश-की सेना हाल हीमे यहासे हटी है। तेमूरने हुकुम दिया—"चुपचाप आगे बढो और रातको आग मत जलाओ।"

४ जून १३९१ ई० को तेमूर इक (शकमाराकी शाखा) के तटपर था। तोकतामिश उस समय केर्क अथवा कोरुक (सूखा)-गुल नामक झीलके ऊपर डेरा डाले बुलगार (कजान) और अजक क्रिमिया के ओर्दूके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, साथ ही उसने यायिक (उराल) के घाटोपर छापामार तैनात कर रक्खे थे। अब भूमि दलदलवाली थी, जिसमे चलना तेमूरके सवारोके लिये बहुत मुश्किल था। जल्दी ही खबर आई, कि शत्रुकी तीन पल्टने आगे पडी है। तेमूरने युद्धव्यूह रचनेका हुकुम दिया और ढाल, तूणीर और पैसे बाटे। एक बदीसे–जिसे पीछे मार डाला गया–पता लगा, कि तोकतामिश गहरी चाल चलकर अपने शत्रुओको फसाना चाहता है। सैनिक अफसर मुबश्शिर बहादुरद्वारा पकडे चालीस बदियोको भी बडी निष्ठुरतापूर्वक मारा गया—शायद साथमे बदी लेकर आगे बढना तेमूर पसद नही करता था। इन बदियोने कहा, कि हम केर्कगुलमे तोकतामिशके पास जा रहे थे, लेकिन उसे नही पा सके। अतमे शत्रुकी एक सेनाका पता लगा। ऐकू तिमूर बरलस अपने दलको लेकर आगे पता लगानेके लिये बढा। शत्रुकी बडी सेना देखकर सात-आठ आदमियोके साथ स्वय पृष्ठरक्षा करता वह पीछे लौटा। देखते ही शत्रु उसकी ओर दौडे। एक तीरसे बरलसका घोडा घायल हो गया और दूसरे तीरसे वह स्वय भी आहत हुआ, लेकिन वह खबर देनेके लिये बेतहाशा घोडेको दौडाता रहा। घोडा गिर गया, तो उसने दूसरे घोडेको लिया। उस घोडेको भी शत्रुओने तीरसे घायल किया और वे घेरकर मुबश्शिरका सिर काटकर साथ ले लौट गये, कुछ साथी भी उनके हाथ लगे। इसी समय एक दूसरी तेमूरी सेना आ गई, जिसके कारण शत्रुओने पीछा करना छोड दिया।

तेमूरके यहा अमीर-पुत्रोको तरखनकी उपाधि थी, जिन्हे शाही तबूमे किसी वक्त भी आनेकी इजाजत थी। छिड्गिस्के समय भी तरखनकी पदवी प्रचलित थी। तेमूरने तरखनो और उनके वशजोके नौ कसूर माफ कर रक्खे थे।

चलते-चलते तेमूरी सेना ५४° अक्षाशमे पहुची, जहा गर्मियोमे असली रात नही होती और गोधूली-के बाद ही उषा चली आती है। इसके कारण यह सवाल पैदा हो गया, कि रातके अभावमे चौबीस घटेमें पाच बार नमाज पढनेकी व्यवस्था कैसे की जाये। इमामने फतवा देकर रातकी नमाजसे लोगोको छुट्टी दे दी। तोकतामिशकी यही नीति थी, कि पीछे हटते-हटते शत्रुको उसके मुख्य स्थानसे दूर खीचते ऐसी जगह लाओ, जहा रसद-पानी दुर्लभ हो जाय। तेमूरने युद्ध-परिषद् बुलाई और सेनापतियोसे सलाह करके बीस हजार सेनाके साथ उमरशेख मिर्जाको आगे शत्रुके ऊपर भेजा। इसी समय ५-६ दिन बर्फ पडती रही, जिसके कारण सर्दी बहुत बढ गई। सोमवार १८ जून (१३९१ ई०)को आसमान साफ हुआ। अब बुल्गारोके देशमें कन्दुर्च स्थानमें पहुचकर तेमूरने अपनी सेनाको व्यवस्थित करते हुये कुरानके फातेहा सूरा (अध्याय) की सात आयतो (पक्तियो) के अनुसार उसे सात डिवीजनोमे बाटा। थकी होनेपर भी सेनाका उत्साह मद नही था। तेमूरने रिश्वत देकर काम लेना चाहा और तोकता मिशके झडाबरदारसे ठहरा लिया, कि युद्धके समय वह झडेको गिरा देगा। जब अमीर अकतागको वामपक्षका सेनापति बन युद्ध छेडनेको कहा, तो उसने तोकतामिशसे माग की, कि हमारे सबधीके हत्यारे अमीरको इसी वक्त मेरे हवाले किया जाय। तोकतामिशने युद्धके बाद देनेका वचन दिया, लेकिन वह इससे सतुष्ट नही हुआ और अपने सारे अकताग (श्वेत-पर्वत) कबीले तथा कितने ही दूसरे आदमियोके साथ चला गया। तेमूरके क्षुद्र-एसियापर आक्रमण करते समय यह अकताग कबीला दोबरूजामें रहता था। हालमें वह दन्यूबपार अद्रियानोपोलमें बस गया था।

युद्ध आरभ करनेसे पहले तेमूरने घोडेसे उतरकर दो रकूअ (नमस्कार) नमाज पढी। सेनाने "अल्लाह अकबर" और "सुरून" का नारा लगाया। ढोल और लोहेके झाझ बजे। इसी समय अलीके वशज तथा शरीफोंके मुखिया सैयद बरकाने विजयकी भविष्यद्वाणी करते सिर नगा करके हाथ उठा दुआ की। शेखुल्-इस्लाम (इस्लामके महागुरु) अहमदजानके वशज इमाम ख्वाजा जियाउद्दीन युसुफ

और शेख इस्माईल कुरानकी आयत पढ रहे थे—"ओ मुसलमानो, अल्लाहके आशीर्वादको याद रखो। वही है, जो कि तुम्हारे ऊपर हथियार चलानेवाले शत्रुओंके हथियारोको रोक देता है। अल्लाहसे डरो। विश्वासियोको उसपर विश्वास करना चाहिये।" मुट्ठीभर ककडिया लेकर दुश्मनकी ओर फेंकते हुये इमामने चिल्लाकर कहा—"उनके चेहरे काले हो जायें।" फिर तेमूरकी ओर मुह करके इमाम बोला—"जहा चाहे जा, अल्लाह तेरी रक्षा करेगा।"

चतुर्थ सेनाके कमाडर अमीर सैफुद्दीनने सबसे पहले आक्रमण किया और शत्रुके वाम-पक्षको तोड दिया। तोकतामिशके आदमियोने चारो ओर फैलकर उसे घेरना चाहा, लेकिन उन्हे रोककर पीछे ढकेल दिया गया। वामपक्ष कुछ नष्ट हो गया और कुछ पीछे हटनेके लिये मजबूर हुआ। इसके बाद दूसरे सेनापति अपनी सेना लेकर आगे बढे। भयकर हत्याकाड होने लगा। तोकतामिशने तेमूरके केंद्र–दक्षिणपक्षके प्रहारको रोकना असम्भव समझकर उसके वाम-पक्षपर प्रचड प्रहार किया। वामपक्ष टूट गया और मुख्य भागसे उसके कितने ही अश अलग हो गये। तोकतामिशने वस्तुत बीचसे चीरकर पीछा जा धरा। बडी भयकर अवस्था थी। तेमूरने आदमियोको विश्वास पैदा करनेके लिये अपने पोते अबूबकरको हुकुम दिया। उसने गारदके दस हजार सवारोको ले वहा जा घोडेसे उतरकर कहा—"तबू गाडो, आग जलाओ, खाना तैयार करो।" इसका प्रभाव तोकतामिशके ऊपर पडा और जब तेमूरकी रिश्वतके कारण उसके झडाबरदारने झडेको नीचा कर दिया, तो उसकी रही-सही हिम्मत भी टूट गई। वह पीछे हटकर गुरजी या लिथुवा-नियाके राजा वितुत (वियोल्द) के पास भागा। युद्ध तीन दिनतक होता रहा, जिसमे एक लाख किपचक मारे गये। तेमूरको भारी परिमाणमें रसद और दूसरी चीजें मिली।

युद्ध-क्षेत्रमे ही डेरा डलवा विजयके लिये अल्लाहको धन्यवाद देते तेमूरने सेनामे इनाम बाटे और हर दस आदमीमेंसे सातको शत्रुका पीछा करनेका हुकुम दिया। वह वोल्गातक गये, जिसमें कतलसे बच गये शत्रुओमेंसे कितने ही डूब गये और थोडेसे ही प्राण बचाकर निकल पाये; जिनके भी बीबी-बच्चे, गुलाम और धन-सम्पत्ति तेमूरी सेनाके हाथ लगे। तोकतामिशका रनिवास भी पकडा गया। तेमूरी-सेनाने अजक (त्रिमिया), सेराय, सेरायचुक, हाजीतरखन (अस्त्राखान) तक लूट-मार और ध्वसलीला मचाई। सुवर्ण ओर्दूके लिये यह इतना जबर्दस्त प्रहार था, कि उसके बाद वह फिर अपनी पुरानी स्थिति मे नही पहुच सका। उसकी जनसख्या बहुत कम हो गई, वोल्गातट उजाड हो गया और शताब्दियोंके परिश्रमसे बनी वहाकी समृद्धि खतम हो गई। तेमूरने उरतुपा (स्तावरोपोल) जिलेके कदुरताके तटपर अपना शिविर गाडा। योद्धाओने यहा विश्राम किया। उनके साथ घोडो, ऊटो, ढोरो, भेडो और तरुण दास-दासियोकी भारी सख्या थी। रूप-रगमें अत्यत सुन्दर पाच हजार तरुण-तरुणिया तेमूरकी सेवामें गई। लूटका माल इतना मिला कि सारी सेना सतुष्ट हो गई। उरतुपामें छब्बीस दिन रहकर तेमूरने विजयोत्सव मनाया। यहीपर लघुविजय (फतेहनामा-कुचुक) लिखा गया।

इसके बाद तेमूर समरकदकी ओर लौटा। अक्तूबरमे वह सावरानमे था, फिर उतरार होत राजधानी समरकद पहुचा।

याग्यालान लिये उइगुर अक्षर तथा मगोल भाषा में २० मई १३९३ ई० की लिखी हुई तोकतामिश-की याग्लिग (आज्ञापत्र) मास्कोमे अब भी मौजूद है, जिससे मालूम होता है, कि १३९१ ई० की भारी पराजयके बाद फिर वह अपनेको सभालने लगा था और तीन-चार वर्षोंमें इतना सभल गया, कि तेमूरको फिर उसकी तरफ ध्यान देना पडा।

द्वितीय अभियान (१३९५ ई०)—२८ फर्वरी १३९५ ई० को फिर तेमूरने तोकतामिशके विरुद्ध प्रस्थान किया। उसके अन्त पुरकी कुछ रानिया सुलतानिया (ईरान) भेज दी गई और कुछ समरकदमें रखी गई। इस्लुद्दीन अतमानिगोसे दूत भेज तेमूरने तोकतामिशको समझाने-बुझानेकी कोशिश की, लेकिन उसका उत्तर बडा उद्दडतापूर्ण था। दूत लौटकर काकेशसके सानुओपर कास्पियन

समुद्रसे पाच फरसख (लीग) दूर अपने स्वामीसे आकर मिला। उस वक्त वाम-पक्ष समुद्र-तटसे पहाडके ऊपरतक विखरा पडा था। अवकी तेमूरी सेनाने काकेशसके चरणोमें कास्पियनके पश्चिमी किनारेका रास्ता लिया था। सेनाको दरवदके दुर्गम घाटीको पार करनेमें दिक्कत नही हुई। तोकतामिशकी प्रजा काडतकने छेडखानी की, जिन्हे तेमूरने भयकर हत्या करके खतम कर दिया, उनके गावोको नष्ट कर दिया। सेना आगे बढती चली। तोकतामिश तेरेक नदीके किनारे मुकाविलेकी प्रतीक्षामे वैठा हुआ था, लेकिन तेमूरी सेनाको देखते ही वहासे भाग चला। पहिले कुरापर और तेरेकपर तेमूर तथा तोकतामिश एकत्रित हुये थे। २२ अप्रैल १३९५ ई० को दोनोमे युद्ध हुआ। शत्रुके सेनापतियोके आगे बढनेकी खवर पाकर तेमूरने अपनी सत्ताईस सेनाओके साथ आक्रमण कर शत्रुको पीछे हटा दिया। पीछा करते हुये उसके आदमी अधिक दूरतक चले गये, जिसके कारण तोकतामिशकी सेनाने मुडकर जव हमला किया, तो उन्हे तितर-वितर होकर पीछे भागना पडा। यह खवर सुनकर शत्रुने और भी पीछा किया। तेमूर उनपर वाणोकी वर्षा करने लगा। उसका तरकश खाली हो गया। तलवार और भाला भी टूट गये। इसी समय तोकतामिशके सैनिकोने उसे घेर लिया। इस समय शेख नूरुद्दीन और उसके पचास वहादुरोने घोडेसे उतरकर वाणवर्षा करके तेमूरको आड दिया। दूसरे अमीर भी दुश्मनकी तीन गाडियोको पकडने-में सफल हुये, जिनकी मददसे उन्होने मोर्चा-वदी कर दी। सेना आसपास जमा होने लगी, वाजे वजने लगे। शत्रुने समझ लिया, कि उसका प्रधान शिकार कहा है, किन्तु वह इस मोर्चाविन्दीको नही तोड सका। इसी समय शत्रुकेदक्षिणपक्षको तेमूरी सेनाने ध्वस्त कर दिया। तो भी तेमूरके वामपक्षकी स्थिति अच्छी नही थी। शत्रुने उसे तोडकर चारो ओरसे घेर लिया था। अपने कमाडरके हुकुमपर सैनिक घोडेसे उतर अपनी-अपनी ढालोके नीचे घुटने समेटकर बैठ गये। चारो ओरसे वर्षाकी बूदोकी तरह हथियारोके प्रहार होने लगे। इसी समय जहानशाह वहादुर अपने घोडसवारोको लेकर दौडा, और प्रहार करनेवाली शत्रुसेनाके दोनो पक्षोपर टूट पडा। पलडा पलट गया। वह और उसके साथी दूसरे सेनापतिने मिलकर शत्रुके वामपक्षको मार भगाया। फिर केंद्रके साथ सघर्ष आरभ हुआ। किपचक सेनापति यागलिवीने तेमूरी सेनापति उसमान वहादुरको द्वद्वयुद्धके लिये ललकारा। दोनो मैदानमे उतरे। उनके अनुयायियोने भी अपने सेनापतियोका अनुकरण किया। यागलि ी शायद पोलराजा यागेलोन था। सघर्ष भयकर हुआ, किंतु अतमे किपचक सेनाको हारना पडा। तोकतामिश ओगलानो (राजकुमारो) और नोयनो (अमीरो) के साथ भागा। तेमूरी सेनाने उसका पीछा करके भारी सख्यामें किपचकोको तलवारके घाट उतारा। जो वदी हाथमे आये, उन्हें भी पीछे प्राणोसे हाथ धोना पडा। इस विजयसे प्रसन्न हो तेमूरने सिर नगा करके घुटने टेक अल्लाहके सामने दुआ पढी। अमीरोने तेमूरके ऊपर रत्नोकी वरसा की। तेमूरने लूटके माल और अपने पासके धनमेंसे भी सैनिकोमें खूव उदारतापूर्वक इनाम वाटा।

तोकतामिशका पीछा करते हुये वोल्गाके किनारे-किनारे तेमूर उकाकतक गया और वोल्गाके तूरानू घाटपर थोडी देर ठहरा। उसने उरुस खानके पुत्र तथा अपने शरणागत कोइरिअक ओगलान को सुनहली खलअत और कीमती कमरवद प्रदान करके उज्वेक रिसालेके साथ किपचकोका खान वनाया। तोकतामिश वोल्गारोके जगलोमें भागा। पहले ही अभियानवाले घाटसे वोल्गा-पार हो तेमूर सोने, चादी, समूर और दूसरे वहुमूल्य मृगछालो, रत्न-मणि, मोतीकी अपार राशि तथा भारी सख्यामे सुन्दर लडके-लडकियोको लिये दनियेपरकी ओर चला। उसके किनारे मङकिरमान स्थानमे जाकर वरकियारोक ओगलानके डेरेपर जा पडा और उसे विल्कुल नष्ट कर दिया। वरकियारोक मुश्किलसे जान वचाकर भागा। पीछा करते तेमूरी सेनाने दोनके तटपर उसके रनिवासको जा पकडा, लेकिन वरकियारोक भाग निकला। तेमूरने ओगलानके रनिवासके साथ अच्छा वर्ताव किया, और घोड तथा दूसरी भेंटे दे उसे वरकियारोकके पास भेज दिया। मीराशाह अपनी सेना लेकर दूसरी ओर गया हुआ था। उसने एलात्ज किलेको सर किया। मास्कोंका तरुण महाराजुल वासिली अपने चचा व्लादिमिर्को राज-धानी सौंप ओका नदीके पीछे कलोम्नाकी ओर भाग गया। वहासे उसने महासवराजको लिखा, कि कुमारी (मरियम) देवीकी प्राचीन मूर्तिको मास्को ले जाओ, जिसमे देवीके प्रतापसे नगरकी रक्षा हो।

भक्तोंकी दो पांतियोंके बीचमे मूर्ति लाई गई। लोग चिल्ला रहे थे—"भगवान्‌की मा, रूसको बचाओ।" मास्कोके एसम्प्सन गिर्जेमें कुमारीका बड़ा स्वागत किया गया। तेमूर दोनसे कुछ दूर आगे बढ़कर लौट गया। भगवान्‌की माने मास्कोको बचा लिया, नहीं तो तेमूरने उसकी वही दशा की होती, जो कि उसने चार वर्ष बाद १३९८-९९ ई० मे दिल्लीकी की। तेमूरने कुमारीके प्रतापसे नही, बल्कि शरद् और हेमन्तके कठोर जाड़ेके भयसे वहां और रहना पसद नही किया। वह दक्षिणमे चलकर अजक (क्रिमिया) पहुचा। लोगोकी सारी प्रार्थना व्यर्थ गई। उसने मुसलमानोको अलग करके बाकी लोगोको एक ओरसे कटवा दिया और शहरमें आग लगवा दी। फिर कूबान और जार्जियामें सत्यानाश मचाने आगे बढ़ा। काकेशसके युद्धको उसने धर्मयुद्ध (जहाद) घोषित किया था। भारतकी भाति ही उसने इस देशको भी काफिरोको मिटाकर शुद्ध करना चाहा। उनकी बस्तियोको तेमूरी सेनाने जला दिया, उनके गिर्जों और मूर्त्तियोको नष्ट कर दिया। हाजीतरखन (अस्त्राखान) नगरमे विश्वासघातकी खबर पा जाड़ोमे तेमूर वहा पहुचा। लोगोने वोल्गाके पानीकी बर्फ जमाकर शहरके चारो ओर प्राकार बना दरवाजे काट रक्खे थे, लेकिन तेमूरके सामने बर्फका मोटा दुर्ग नही ठहर सका। भीतर घुस मनुष्यो, पशुओ और संपत्तिको हटानेका हुकुम दे उसने नगरमे आग लगा दी। वहां से तेमूर किपचकोकी राजधानी सराय-बेरेकमें पहुचा। वहा भी नागरिकोको भेड़ोकी तरह जबह करके शहरमे आग लगा दी।

इस प्रकार किपचक देशको पूरी तौरसे बरबाद करके तेमूर दरबद और आजुरबाइजानके रास्ते लौटा। वह अपने साथ बहुतसे किपचकोको भी ले आया था, जिनमें बोल्गारीके पासवाले वोल्गातटके निवासी कराकल्पक (काली टोपी) भी थे, जिनकी सताने आज अराल-समुद्रके पास कराकल्पकियो के स्वायत्त-गणराज्यमें बसी हुई है।

इसके बाद तेमूर बहुत नहीं जिया, और १३९९ ई० मे मर गया। इसका वर्णन हम यथास्थान करेंगे।

तेमूरके लौट जानेपर तोकतामिश फिर १३९८ ई० में सरायबेरेक पहुचा, लेकिन तेमूर कुतुलुकने तबतक उसे संभाल लिया था। कुतुलुकने तोकतामिशको मार भगाया। वहासे अपनी बीबी, दो पुत्रों, खजाने और बहुतसे अनुयायियोंके साथ भागकर वह कियेफ गया। सुवर्ण-ओर्दूका वह अंतिम महान् शासक था। जिस तरह उसके वैभवका सितारा चमका, उसी तरह वह अस्त भी हो गया।

१३ कोइरिजक ओगलान नूजी, ओगलान, उरुस-पुत्र (१३९६ ?)

नूजी ओगलान उस समय तेमूर-लंगके दरबारमें रहता था, जबकि तेमूरने किपचकोपर द्वितीय अभियान किया। एक इतिहासकारके अनुसार तोकतामिशकी पराजयके बाद तेमूरने उसे जू-छिका उलुस ७७७ हि० (२ जून १३७५–२० मई १३७६ ई०) में दे दिया, लेकिन इस सन्‌मे गलती मालूम होती है, क्योंकि तेमूरका दूसरा अभियान १३९५ ई०मे और पहला अभियान १३९० ई० में हुआ था।

१४ तेमूर कुतुलुक, तेमूरबेक-पुत्र (१३९५–१४०० ई०)

तेमूर-खाने सबसे पहले आक्रमणके समय ७७९ हि०, (१० जून १३७७ ई०–२९ जून १३७८ ई०) यह तेमूर-खाके साथ था और तोकतामिशकी प्रथम पराजय होनेके बाद ७९३ हि० (६ दिसम्बर १३९० ई०–२४ नवम्बर) में तेमूरने इसे उसके उलुसका खान बनाया। द्वितीय अभियानमें तेमूरके किपचकसे हटते ही तोकतामिशसे इसका संघर्ष हुआ। नोगाई सरदार इदिकू कुतुलुकके पक्षमें था। वह तोकतामिशको तो मार भगानेमें सफल हुआ, लेकिन उसके पूर्वी भागपर तोकतामिश उरुस-पुत्रका अधिकार बना रहा। १३९७ ई०में लिथुवानी राजा वितूतने तेमूर कुतुलुकके ऊपर आक्रमण किया और कई हजार तातारोंको उनके स्त्री-बच्चोंके साथ पकड़ ले गया। ये तातार पीछे [illegible] और [illegible] बन गये। ईसाइयोंके बीचमें इस्लामको कायम रखना उनके लिये मुश्किल था, इसलिये वह धीरे-धीरे पड़ोसी जातियामें मिश्रित होकर ईसाई बन गये, और केवल तातार उनका नामभर रह गया। तेमूर कुतुलुकने इसी समय फिर अपनी शक्तिको इतनी मजबूत कर ली, कि उसने वितूतको

भाग की, कि अपने राज्यके कियेफ नगरमे भागे तोकतामिशको मेरे पास भेज दो। वितूतके इन्कार करनेपर उसने आक्रमण कर दिया और ५ अगस्त १३९९ ई० को लिथुवानी और किपचक सेनाओ मे भारी लडाई हुई। वितूतको अपने वारूदी हथियारोपर बहुत भरोसा था, जिनका आविष्कार मगोलोके वारूदी हथियारोके सहारे हालमे ही युरोपमे किया गया था। लेकिन उस समयकी तोपे अभी बहुत आरभिक अवस्थामे थी, दागनेसे पैदा हुई गर्मीको उनकी धातु बर्दाश्त नही कर सकती थी। कुतुलुककी सेनाने पीछे जाकर लिथुवानी पक्तिको तोड दिया। लेकिन, तोकतामिश वहासे निकल चुका था, वितूतको भी जान लेकर भागना पडा। लिथुवानी सेना नष्ट हो गई। किपचकोने भगोडोका पीछा कर कितनो हीको मारा और कितनोको वदी वनाया। तारतारोने लुत्स्कतक लिथुवानी राज्यको लूटा। उन्होने कियेफ नगरपर भारी जुरमाना लगाया। इसके वाद सात सालतक और तोकतामिश इधर-उधर भटकता फिरा। अन्तमे वह पश्चिमी साइवेरियाके तुमान-जिलेमे शादीबेकके हुकुमसे इदिकूके हाथो मारा गया।

कुतुलुक ८०२ हि० (३ सितवर १३९९ ई०—१२ अगस्त १४०० ई०) मे वोल्गाके किनारे कजान नगरमें मरा।

१५. शादीबेक, तेमूरबेक-पुत्र (१४००-१४०८ ई०)

किपचकोका पूर्वी भाग अव भी कोइरिअकके हाथमें था। उसके पश्चिमी भागपर शादीबेक शासन करने लगा। बीचमे हुई गडवडीके कारण शेख होकर मास्कोके महाराजुल वासिलीने कई सालोसे कर नही भेजा था। १४०५ ई० मे कर उगाहनेके लिये खानका दूत मास्को पहुचा। तेमूर कुतुलुकने लिथुवानी राजाको पाठ पढाकर अपनी काफी धाक जमा ली थी, इसलिये महाराजुलने दूतकी भी भेट-पूजा की और कर भी वेवाक कर दिया। ८०८ हि० (२३ दिसवर १४०५—२१ जनवरी १४०६ ई०) मे शादीवेकका अमीर इदिकू ख्वारेज्मको तेमूरियोसे छीन अमीर अकाको वहाका राज्यपाल वना लौट गया। शायद इसी साल ईद-रमजानके दिन इराकियोकी एक वडी जमात तेमूरी मिर्जा खलील सुल्तानसे नाराज हो गई और समरकद छोडकर ख्वारेज्म चली गई। तुगा तेमूरखानके पौत्र दुकमान वादशाहके पुत्र पीरवाद-शाह तेमूरी सुल्तान अबूसईदके डरसे भागकर माजन्दरान (ईरान) में भाग गया था। वह वहासे ख्वारेज्ममे आ गया, जव उसने देखा कि वह तेमूरियोके हाथसे निकल गया है। इपीर वादशाहको इराकियोने ख्वारेज्मका वादशाह वनाया और मिर्जा खलीलके दिये हुये धनको उसे भेट दे वह माजन्दरान चले गये। ख्वारेज्मका हाकिम अव भी अका था।

शादीवेक ८११ हि० (२७ मई १४०८—१५ मई १४०९ ई०) मे मर गया।

१६ पूलाद खान, तेमूरबेक-पुत्र (१४०८—१४१० ई०)

भाईकी जगहपर पूलाद गद्दीपर वैठा और अमीर इदिकू सारी सल्तनतका वजीर-आजम वना। उसने अकाको लौटा उसकी जगह वगजलेको ख्वारेज्मका राज्यपाल वनाया।

पश्चिमी राजा कही खानोकी शक्तिको कमजोर न समझ ले, इसलिये १४०९ ई०की शरद्में तारतारोने दक्षिणसे दुनियेपरकी ओर वढते लिथुवानियापर आक्रमण किया। मास्कोके महाराजुलने कर वाकी रखा था और ऊपरसे तोकतामिशके पुत्रको भी शरण दी थी। पूलादने इस अपराधके लिये दड देनेके वास्ते एक वडी सेना मास्कोके विरुद्ध भेजी। महाराजुल वासिली केवल तोपो और जाडेपर भरोसा कर सकता था, इसलिये रानीको लेकर वह कस्त्रोमा भाग गया। दिसवर १४१० को तारतार सेना मास्कोके सामने पहुची। तीस हजार सेना महाराजुलके पीछे पडी, और उसने पेरियेस्लाव्ल, जालेस्की, रोस्तोफ, दिमित्रोफ, सेरपूकोफ, निजनी-नवोग्राद और गोरदेत्स नगरोको लूटकर जला दिया। एक वार फिर रूसियोको वा-तू और तोकतामिशके दिन याद आने लगे। रूसी इतिहासकार करमाजिनके अनुसार—"अभागे रूसी प्रतिरोध करनेकी जगह भेडोके झुडकी तरह भेडियोद्वारा पीछा किये जा रहे थे।" उनमेंसे कुछ कतल किये गये, कुछ तारतार धनुर्धारियोके वाणोंसे विंधे। तरुण दास वनाने-वेंचने के लिये पकड

लिये गये, सयान कपडे छीनकर नगे करके जाडेमे मरने के लिये छोड दिये गये। आदमियोको एक दूसरेके साथ जजीरोमे बाध दिया गया और एक तारतार चालीससे अधिक आदमियोको कावूमे रख सकता था। लेकिन, मास्कोका मुहासिरा सफल नही रहा। दूसरा चारा न देखकर इदिकू तीन हजार रूवल जुरमाना लेकर लौट गया। लौटते वक्त उसने र्याजन नगरको लूटा। इदिकूने इसी समय महाराजुलको पत्रमे लिखा था —

"इदिकू, राजुल-पुत्रो और राजकुमारोसे सलाह लेनेके वाद वासिलीको अभिनदन भेजता है। यह मालूम करके, कि तुमने तोकतामिशके पुत्रोको शरण दी है, महान् खानने मुझे आज्ञा दी, कि तुम्हारे विरुद्ध चटाई करू। तुम हमारे व्यापारियोके साथ ही दुर्व्यवहार नही करते, वल्कि तुमने हमारे दूतोका भी वडा अपमान किया है। अपने वूढे आदमियोंमे पूछो, कि क्या पहले कभी ऐसा होता था। उस समय रूस अपनी राजभक्तिके लिये मशहूर था। वह खानका पवित्र सम्मान करता था और नियमपूर्वक कर अदा करता था। हमारे व्यापारियो और दूसरोके प्रति सम्मान प्रदर्शित करता था। इसकी जगह तुमने क्या किया? जब तेमूर कुतुलुक सिंहासनपर वैठा, तो क्या तुम स्वय आय या तुमने अपने राजकुमारो या अपने एक वायरको भी भेजा? तेमूरके मरनेके वाद शादीवेकके आठ वर्षोंके शासनकाल में क्या तुमने एक वार भी आज्ञाकारिताका कोई भी काम किया? और अतमें पूलाद खानके तीन वर्षोके सिंहासनपर वैठनेके कालमे क्या तुम या जेठे रूसी राजपुत्रोमेसे कोई अपने कर्त्तव्यको पालन करनेके लिये ओर्दूमें गया? तुम्हारे सारे काम अपराधपूर्ण हुये। जब फेदोर कोसका जीता था, तो सारे रूसी उसकी सलाह मानकर अच्छा वर्ताव करते थे, लेकिन तुम अब उसके पुत्र जानकी वात नही मानते, जो कि तुम्हारा कोषाध्यक्ष और मित्र है। तुम वडोकी सलाह माननेसे इन्कार करते हो, जिसका परिणाम देख ही रहे हो, तुम्हारे देशकी वरवादी हो रही है। अगर तुम इससे वचना चाहते हो, तो अपने सबसे वुद्धिमान् वायरो—इलिया, पीतर, जान निकितिच आदिकी वात मानो और अपने किसी वडे अमीरके साथ वह भेट भेजो, जिसे रूस जानीवेकके पास भेजा करता था। रूसी लोगोकी गरीवीकी वाते वताकर तुमने जो खानको वहलाना चाहा है, वह सब झूट है। हम तुहारे देशके कोने-कोनेको देख चुके है। हम जानते है कि हर दो हलके ऊपर तुम्हें एक रूवल कर मिलता है। यह पैसा कहा जाता है? हम तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नही करना चाहते। तुम क्यो एक अभागे भगोडेकी तरह काम कर रहे हो? सोचो और अकलकी वात मानो।"

लेकिन महाराजुलके ऊपर इदिकूके उपदेशका कोई असर नही हुआ, क्योकि वह किपचककी भीतरी हालतको अच्छी तरह जानता था।

८१३ हि० (६ मई १४१०–२४ अप्रैल १४११ ई०) मे पूलाद खानको तेमूर खानने मार भगाया।

१७. तेमूर खान, तेमूर कुतुलुक-पुत्र (१४१०-१४११ ई०)

इतिहासकार अब्दुर्रजाक समरकदी (१४२२ ई०) के अनुसार * यह तेमूर कुतुलुक खानका पुत्र था, लेकिन शपफारीने इसे शादीवेकका पुत्र कहा है। शायद यह तेमूर कुतुलुकका ही पुत्र था। पूलाद खानके वक्त राज्यका हर्ता-कर्ता अमीर इदिकू था, इसलिये उसको दवाये विना तेमूर अपनेको सुरक्षित नहीं समझता था। इदिकू भागकर ख्वारेज्म जा तैयारी करने लगा। तेमूरने अजक वहादुर और गजनके नेतृत्वमे सेना भेजी। ख्वारेज्म-शहर (उरगज) से दस दिनके रास्तेपर साम नामक स्थानमें लडाई हुई। ख्वारेज्मका राज्यपाल वगजले मारा गया और इदिकू हारकर ख्वारेज्म भाग गया—यह शायद ८१४ हि० (२५ अप्रैल १४११—अप्रैल १४१२ ई०) के आरभकी वात है। तेमूरके सेनापति दनिला और गजन भी पीछा करते हुये ख्वारेज्म पहुचे। उन्होंने ६ महीना इदिकूको मुहासिरेमे रक्खा। इसी समय पता लगा, कि तोकतामिश-पुत्र जलालुद्दीनने तेमूरको हराकर गद्दी छीन ली।

* 'मतल-उस्-सादैन-व-मज्म-उल्-वहरैन्"

१८. जलालुद्दीन, जलाबेर्दी, सेलेनी, तोकतामिशका ज्येष्ठ पुत्र (१४१४ ई०)

जलालुद्दीनने गद्दी सभालते ही ख्वारेज्ममें लडते किपचक सेनापतिके पास पैगाम भेजा, कि इदिकू हमारा दुश्मन है, उसे पकड लाओ। फिर उसने दूसरा सदेश भेजा, कि अगर इदिकू अपने पुत्र सुल्तान महमूद तथा उसकी पत्नी (जो कि जलालकी वहन भी थी) को मेरे पास भेज दे और सिक्का तथा खुतवा मेरे नामसे जारी करे, तो उससे लडाई मत करो। अमीर गजन भी जलालुद्दीनका वहनोई था। उसने सुलह करनी चाही। उधर दकिना तेमूर खानका वहनोई था, इसलिये उसने दूसरे सदेशकी ओर ध्यान नही दिया। इसी समय तेमूरखानके फिर लौट आनेकी खवर मिली। गजनने दकिनाको शराव पिला मतवाला कर अपने नौकर जान ख्वाजाको भेज तेमूरको मरवा दिया। यह खवर सुनकर जलालुद्दीनने अमीर गजनको वहुत-वहुत धन्यवाद देते हुये सदेश भेजा, कि गजन खा मेरा अमीर है, उसका हुकुम मानो। अमीर दकिनाने तेमूरके लिये लोगोको वहकाया। लेकिन ख्वारेज्मका मुहासिरा और जोरका हुआ। अमीर खिजिर ओगलान राजकुमार होनेसे दर्जेमे सवसे वडा था। उसके वाद दकिना फिर गजनका दर्जा था। किपचक सेनापतियोने अमीर इदिकूसे सुलह कर लेना ही अच्छा समझा, क्योकि जलालुद्दीन खानकी वैसी ही आज्ञा थी। अमीर इदिकू सुलह करनेके वाद शहरसे वाहर निकल आया। खूव एक दूसरेकी जियाफतें होने लगी। सेनापति मुहासिरा हटाकर किपचक भूमिकी ओर लौटे जा रहे थे। इसी समय वलूकिया गावमें उनकी कजुलई वहादुरसे मुलाकत हुई। उसने विना सर किये ही लौटनेकी वात लेकर ताना मारा—"ख्वारेज्मको दखल किये विना कैसे लौटे जा रहे हो?" अमीरोने कहा—"हमने सात महीना मुहासिरा करके युद्ध किया, लेकिन शहर सर नही कर सके, तेरे पास तो चार हजारसे वेशी मर्द भी नही है। लौटनेकी सलाह हुई। हमने सुलह कर ली। इदिकू अपने पुत्रको खानके पास (जामिन) भेजेगा।"

कजुलईने उत्तर दिया—"मै अकेला ही इदिकूके लिये काफी हू" और वह गर्वके साथ ख्वारेज्मकी ओर चल पडा। अमीर इदिकूको भी खवर लग गई। सेना कम होनेसे वह चालसे काम लेना चाहता था। वह दिनमें छिपा रहता और केवल रातको सफर करता। नजदीक आनेपर इदिकूने अपनी सेनाको दो भागोमें वाटकर एक भागसे कहा, कि तुम थोडा लड करके पीछे हटो और रास्तेमें पुराने नम्दोके वघे वोगचोको फेंकते आओ। युक्ति काम कर गई। कजुलईकी सेना वोगचोको वटोरनेके लिये विखर गई, इसी समय इदिकू टूट पडा। कजुलई मारा गया। इदिकूने उसके सिरको झडे-पताके आदिके साथ ख्वारेज्म भेजा। कजुलईके भगे हुये आदमियोने जव अपने सेनापतिके झडेको चलते देखा, तो समझा कि वह विजय-यात्रा करते हुये ख्वारेज्म जा रहा है, तो वह छिपी जगहोंसे आकर वहा पहुचे और इदिकूके जालमें हजारो आदमी फस गये।

इतिहासकार गफ्फारी (मृत्यु १५७६ ई०) के अनुसार * "जलालुद्दीन और करीमवरदी कपक जव्वारवर्दी, मोहम्मदखान और दूसरे राजकुमारो जैसोने कुछ समयतक हकूमत की।" इस तरह अव किपचककी राजावली जल्दी-जल्दी वदलते खानोके कारण गडवडीमे पड गई। कुछको छोड-कर यह कहना मुश्किल है, कि कौन खान किसके वाद गद्दीपर वैठा।

१९. करीमबर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१४ ई०)

करीमबर्दी कुछ दिनोतक गद्दीपर रहा। शायद इसे जव्वारवर्दीने मार डाला, जिसका भी शासन थोडे ही दिनोतक रहा।

२०. चिङ-गिज ओगलान (१४१४ ई०)

समरकदीके अनुसार चिङ-गिज ओगलानको जव्वारवर्दीने हराकर स्वय गद्दी संभाली।

---

* "नस्ख-जहानारा"।

२१. जब्बारवर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१७ ई०)

इसीके समय ८१५ हि० (१३ अप्रैल १४१२—२ अप्रैल १४१५ ई०) में तेमूर-लगके पुत्र शाहरुख ने ख्वारेज्मके ऊपर सेना भेजी, जिसमें खुरासानके अमीर अली, और अमीर इलियासखोजा दोनो सेनापति थे। अन्तर्वेदसे भी पाच हजारकी सवार सेना ले सेनापति मूसा आया। दोनो सेनाये ख्वारेज्म-मे आकर मिल गई। इस समय इदिकूका पुत्र मुवारकशाह ख्वारेज्मका राज्यपाल था, जिसने सेनाकी खवर पाकर डरके मारे वापके पास भाग जाना पसन्द किया। मुल्लाओ और नगरके वडे-वडे लोगोने नगरको शाहरुखकी सेनाके हाथमें समर्पण कर दिया। दूसरे सेनापति लौट गये, अमीर शाह-मुल्क कुछ समयतक देशके सुप्रवन्धके लिये ठहरकर ८१४ हि० (३ अप्रैल १४१३—२२ मार्च १४१४ ई०) को राजधानी हिरात चला गया।

२२ दर्विस खान

शायद यह उरुसखान-वशज था। इसने थोडे ही दिनो राज किया।

२३ चकरा खान (१४१६ ई०)

यह उरुस खानका वशज था। यह कुछ समयतक तेमूर-पुत्र मीराशाह और पौत्र अवूवकरके दरवारमें रहा था। अमीर इदिकूने इसे किपचक वुलाया। अवूवकरने ६ हजार सवार साथ कर दिये, जिनके साथ सिल्ट वरगर नामक एक युरोपीय सैनिक भी था। गुरजी, शेरवान, दरवद, अस्त्राखान होते यह सेना सेतजुल्ते सराय (?) पहुची। वहा कितने ही ईसाई रहते थे, जिनका एक विशप भी था। सिल्ट वरगर ने लिखा है, कि वहाके पादरी लैटिन जानते थे, लेकिन प्रार्थना और गीत तारतार भाषामें करते थे। इदिकूके साथ चकरे और सिल्ट वरगर भी इपविस (सिविर) की ओर गये—यही साइवेरिया नाम का सवसे पुराना उल्लेख मिलता है। सिल्ट वरगरका कहना था, कि साइवेरियामें तीस दिन लवा एक पहाड है (शायद उसका अभिप्राय उराल पर्वतसे है)। उसके आगे निर्जन भूमि पृथिवीके छोरतक चली गई है। इस पहाडके निवासी जगली तथा दूसरोंसे भिन्न है। केवल उनके हाथ और चेहरोपर केश नही होते, नही तो सारा शरीर केशोंसे ढका होता है। वह पहाडोमे जानवरोका शिकार करते है और पत्ता तथा घास जो भी मिलता है, उसीपर गुजारा करते हैं। इलाकेके शासकने इस जगली जातिकी एक स्त्री, एक पुरुष एव गदहेसे-वडे-नही एक जगली घोडे तथा दूसरे जानवर इदिकूके पास भेजे थे। मार्कोपोलोकी तरह सिल्ट वरगरने लिखा है, कि वहा कुत्ते हैं, जो गाडी खीचते हैं। इन गाडियोमें समूरी छाले भरे रहते है। ये कुत्ते गदहोंके वरावर होते है और जगली लोग इन्हे खाते भी हैं। निवासियोको उगिने (उगरी) कहा जाता है। जव उनमें कोई अविवाहित तरुण मर जाता है, तो उसे वढिया कपडा पहनाते हैं, भोज करते है, फिर लाशको अर्थीपर रखकर ऊपर सुन्दर चदवा टागकर जलूस निकालते है। आगे-आगे तरुण-जन सुन्दर पोशाक पहने चलते है, पीछे-पीछे मा-वाप और दूसरे सवधी रोते हुये अनुगमन करते हैं। खाने-पीनेकी चीजोको कब्र पर ले जा वही श्राद्ध-भोज करते है। चारो ओर वैठे तरुण खाते-पीते है, और सवधी रोते रहते हैं। उस भूमिके आदमी रोटी नही खाते, मटर छोडकर वहा कोई अनाज नही होता।

चकरा नौ मास ही गद्दीपर रहा, फिर उलुक मोहम्मदने आक्रमण करके उसे भगा इदिकूको भी वदी वना लिया।

२४ किवेक, कपक, तोकतामिश-पुत्र (१४२२ ई०)

उलुग मोहम्मद स्वय गद्दीपर न वैठकर दूसरोको राजा वनाता रहा, इसीसे किवेकको भी पश्चिमी किपचककी गद्दीपर वैठनेका मौका मिला। इसी समय अपने पिता कोइरियकके मरनेपर वोरक पूर्वी किपचक-सिहासनपर वैठा। १४२२ ई० में उसने किवेकको हराया, लेकिन दूसरे साल नई सेना एकत्रित कर किवेक फिर लडनेके लिये लौटा।

२५ उलुक मोहम्मद खान

यह तूका-तेमूर-परिवारका और उरुसखानियोका विरोधी था। इसीने बोरकखानको हराया।

२६. सैयद अहमद खान

शायद यह उलुक मोहम्मदके वाद गद्दीपर बैठा। बच्चा ही था, जबकि अमीरोने इसे खान बनाया, जिस पदपर वह सिर्फ पैंतालीस दिन रहा।

१७ मार्च १४१६ ई० को मुगीसुद्दीन उलुगबेक (शाहरुख-पुत्र) का डेरा खोजन्द नदी (सिरदरिया) के तटपर शाहरुखिया नगरके सामने था। इसी समय ख्वारेज्मसे खबर मिली, कि जब्बारवर्दीने चिङ-गिज ओगलानको भगा उज्बेक—उलुसको अपने हाथमे कर लिया है। मिर्जा उलुगबेक सिर-दरिया (सेहून) पर पुल वनवा सफर महीने (३१ मार्च—२८ अप्रैल १४१६ ई०) के अन्तमें समरकद पहुच गया। उज्बेक-देश (दश्तेकिपचक) से भागकर आये ख्वाजा लाकके पुत्रोने प्रार्थना की, कि उज्बेक-देश बरबाद हो रहा है, उसे बचाये।

२७. मोहम्मद खान तोकतामिश-पुत्र (१४२२-१४२५ ई०)

शायद ८२२ हि० (२८ जनवरी १४१९—१६ जनवरी १४२० ई०) मे (छिङ-गिस् ओगलानका सबधी) बोराक ओगलानने उज्बेक (किपचक) राज्यसे भागकर मिर्जा उलुगबेक गूरगानके पास आ "हस्तचुम्बन" का सौभाग्य प्राप्त किया। उलुगबेकने उसपर बहुत कृपा दरसाई। कुछ समय वह समरकदमें उसके पास रहकर फिर अपने देश लौट गया। मिर्जा उलुगबेक भी ताशकदसे आगे कूच करके बुरलकके पास पहुचा। वहा उसे उज्बेकोकी ओरसे भागकर आये वलखू नामक आदमी ने उज्बेक-राज्यकी बरबादीकी खबर दी, जिसका समर्थन वहासे आये व्यापारियोने भी किया। इससे मालूम होगा, जू-छि-उलुस या दश्तेकिपचक अब उज्बेक देश कहा जाने लगा था।

अब्दुर्रजाक समरकदी शाहरुखके समय "वकाया-निगार" (घटना-लेखक) था। उसने ८२४ हि० (६ जनवरी—२५ दिसबर १४२१ ई०) के "वकाया" (घटनाओ) को लिखते हुये बतलाया है—"सुलतान केशजीने करावाग (ईरान) से दश्तेकिपचकमे जा मुहम्मदखानकी अधीनता स्वीकार की। खानने उसके साथ बडा अच्छा बरताव किया और शाहरुखकी सल्तनतके प्रति अपना सद्भाव प्रकट किया। सुल्तान केशजी वहासे जीकदा महीने (२८ अक्तूबर—२६ नवम्बर) को लौटा। यद्यपि उत्तरी घुमन्तुओ-में आपसमें खूनी गृह-कलह छिडा हुआ था, लेकिन उसके कारण दक्षिणके ग्रामो-नगरोके निवासी निश्चिन्त नही रह सकते थे।" गृह-युद्धोके कारण भी उत्तरके घुमन्तुओका टिड्डीदल दक्षिणकी ओर प्रस्थान कर सकता था। समरकदीने ८८५ हि० (२६ दिसबर १४२१—१४ दिसबर १४२२ ई०) के "वकाया" में फिर लिखा है—"दश्तेकिपचकसे उज्बेक विलायतके बादशाह मुहम्मदखानके पाससे आलमशेख ओगलान और पूलाद अपने साथ शिकारी बाज, घोडे आदि उपहार लेकर आये। शाहरुखने प्रति-उपहार रूपमें उन्हें सोना, घोडे, कुलाह, कमरबद आदि खानके लिये तथा एलचियोके लिये भी उचित इनाम दिये।" इससे मालूम होता है, कि मुहम्मदखान और शाहरुख दोनो आपसम अच्छा सबध बनाये रखनेकी कोशिश कर रहे थे। ८२६ हि० (२ नवम्बर १४२६—२१ अक्तूबर १४२७ ई०) के "वकाया" में लिखा है—शाहरुख कुछ दिनो ग्रीष्म-निवासके वास्ते बदगिस इलाकेमे गया था, इसी बीचमे शाहरुखका नौकर ख्वारेज्म-राज्यपाल (अमीर) ने ख्वारेज्मसे आकर निवेदन किया, कि बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूको अपने हाथमे कर लिया, उज्बेक उलुसका अधिकाश बोरककी ओर हो गया। लेकिन जान पडता है, १४२५ ई० मे भी अभी मुहम्मदखानके शासनका बिल्कुल अत नही हुआ था, क्योकि ८३० हि० (२ नवम्बर १४२६—२१ अक्तूबर १४२७ ई०) के "वकाया" में लिखा है, कि ८२८ हि० (२३ नवम्बर १४२४—१२ नवम्बर १४२५ ई०) मे बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूपर अधिकार कर लिया। सारा उलुस उसके अधीन हो गया।

खानोंके इस परिवर्तनसे मालूम होगा, कि अब तोकतामिशके पुत्रो और पौत्रोका आपसमें संघर्ष चल रहा था। एकबार फिर उरुसके पौत्र बोरकने सिंहासनपर अधिकार जमाया।

बोरक खान, बुर्राक, कुइजी-पुत्र (१४२५–२८ ई०)—बोरकको यह सफलता दक्षिणमे मिली थी। तोकतामिशके बाद उसकी सतानो और तेमूरकी सतानोमे आपसमे पैतृक वैमनस्य चलता रहा। दक्षिणने उरुसखानकी सतानोंका पक्ष लिया और मिर्जा उलुगबेककी सहायतासे बोरकको सफलता मिली। लेकिन सफल घुमन्तू सरदार कभी कृतज्ञता माननेके लिये तैयार नही होते, यह बात किसीसे छिपी नही है। राजगद्दी सभालनेके बाद ही ८२९ हि० में वह मिर्जा उलुगबेककी सीमापर अवस्थित सिगनाक नगरमे आया। इससे पहले ८२३ हि० (१७ जनवरी १४२०—५ जनवरी १४२१ ई०) मे वह उलुगबेकके पास शरणार्थीके तौरपर आया था और उलुगने उसे शिक्षा और सहायता देकर विलायत-उज्बेक भेजा था।

तोकतामिशकी तरह बोरक खानने दक्षिणकी ओर मुह फेरनेसे पहले रूसकी ओर विजय-यात्रा की थी। १४२९ ई० मे तारतारोंने ग्याजन नगरको लूटा। तीन साल बाद कजानके तारतारोने गालिच, कोस्त्रोमा आदि नगरोंको बरबाद किया। १४३० ई० में तारतार राजकुमार हैदर लिथुवानिया के भीतर घुस गया और उसने तीन सप्ताह मुहासिरा करनेके बाद मत्सेन्स्कको सर किया। रूसी अब कर रोकनेकी हिम्मत नही कर सकते थे। १४३७ ई० मे कुचुक (छोटे) मुहम्मदने उलुक मोहम्मद खानको मार भगाया। उलुकने रूसमे जाकर शरण ली, लेकिन कुचुकने उसे वहासे निकलनेके लिये मजबूर किया। उलुक बुलगारोकी भूमिमे चला गया, वहा कजान नगरको उसने फिरसे बसाया और कजानके खान-वंशकी स्थापना की। इससे मालूम होगा कि अभी किपचकोकी शक्ति बिल्कुल खतम नही हुई थी।

बोरक खानने सिगनाकमे आकर मिर्जा उलुगके पास यह कहकर एलची भेजा—"आपकी सहायता और शिक्षासे मुझे सिंहासन मिला, इसके लिये मै बहुत-बहुत कृतज्ञ हू, लेकिन सिगनाक हमारे श्वेत-ओर्दू वंशकी राजधानी है, उसे हमे दे दिया जाय।" इधर वह उलुगखानसे चिकनी-चुपडी बाते कर रहा था और उधर उसके आदमी सिगनाक इलाकेपर हाथ सफा करनेमे लगे थे। वहाके तेमूरी हाकिम अमीर अरसलन ख्वाजा तरखनने उलुगबेकके पास खबर भेजी, कि ओगलानके नौकर (अफसर) इलाकेको बरबाद कर रहे है, अपनेको पूरा हाकिम समझकर सरकारका मजाक उडा रहे है। उलुगबेकने भारी सेना जमा करके उधर कूच करनेका निश्चय किया, लेकिन उसके बाप शाहरुखने युद्धकी बरबादीको बतलाते हुये उसे वैसा करनेसे रोकते हुये भी राजकुमार (मिर्जा) मुहम्मदकी अधीनतामे सेना दे अतर्वेदकी ओर भेजा। जोकीने १७ फर्वरी १४२७ ई० को समरकदकी ओर प्रस्थान किया और वहा जाकर बडे भाईकी सेनामे मिल गया। संयुक्त-सेनाने आगेकी ओर कूच किया। इतनी भारी सेनाको देखकर बोरक एक बार डर गया, लेकिन वह अपने पूर्वजो की भूमि लेने आया था, क्या मुह लेकर पीछे लौटता? किपचक-सेना एकाएक शत्रुके ऊपर टूट पडी। मिर्जा उलुगबेगको अपनी सख्याका अभिमान था, लेकिन किपचकोने उसके छक्के छुडा दिये। पासा पलटने लगा। सैनिक उलुगबेकके घोडेकी बाग पकडकर उसे मैदानसे बाहर लाये। सारी सेना हारकर समरकदकी ओर भागी। उज्बेकोके हाथमे भारी सपत्ति आई। इतनी घबराहट मच गई, कि लोग समरकद नगरके दरवाजोको बद करने लगे। उन्हें बहुत समझा-बुझाकर रोका गया। बोरककी सेनाने तुर्किस्तान और अतर्वेदके सारे इलाकोको लूटा और बरबाद किया। यह खबर खुरासानमें शाहरुखके पास पहुची।

इस घटनाने साबित कर दिया, कि बद्धमूल सामन्तशाही चुस्त घुमतुओंके सामने निर्बल साबित होती है। शाहरुखको अब होश आया, जब खतरा सामने दिखाई पडा। लेकिन, उज्बेकोंके तेमूर-वंशका स्थान लेनेमे अभी पौन सदीकी देर थी, जबकि तेमूरी शाहजादा बाबरको मध्य एसियाई अतर्वेद छोडकर भारतीय अतर्वेदका रास्ता नापना था। शाहरुखको एक बडी सेना लेकर समरकद आया देख

वोरकको वहासे हटना पडा। शाहरुख इस अभियानसे ६ अक्तूवर १४२७ ई०को खुरासान लौटा। दक्षिणमे इस तरह सफल हो वोरक अपने पूर्वी पडोसी चगताईवशकी उत्तरी शाखाके राज्य मुगोलिस्तान-पर जा पडा। ८३२ हि० (११ अक्तूवर १४२८—२९ सितवर १४२९ ई०) में उलुगवेकने अपने वाप शाहरुखके पास हिरात खवर भेजी, कि वोरक और मुगोलिस्तानके सुल्तान महमूदमे भारी युद्ध हुआ, जिसमे सुल्तान महमूदने वोरकको कतल कर दिया।

२८ मुहम्मद सुल्तान, तेमूरखान-पुत्र, तुगलक-तेमूर-पौत्र (१४२५-३८ ई०)

वोरकके वाद मुहम्मद सुल्तान गद्दीपर वैठा। ख्वारेज्मका तेमूरियोके हाथमें जाना किपचकोको वहुत खटकता था, आखिर जू-छिके राज्यका आरभ ख्वारेज्मको लेकर हुआ था। मुहम्मदने ८३४ हि० (१९ सितवर १४३०—८ सितवर १४३१ ई०) के अतमे अपनी सेना ख्वारेज्मपर भेजकर वहा वहुत लूट-पाट मचाई, लेकिन वह उसे ले नही सका। मुहम्मद सुल्तानने अपनी राजधानी क्रिममें वनाई थी।

२९ दौलत बर्दी

वोरक जिस वक्त अपने पूरवके पडोसियोंसे लडने गया था, उसी समय मुहम्मद पश्चिमी किपचकका खान वन वैठा, लेकिन जल्दी ही दौलत वरदी तोकतामिश-पुत्रने उसे हटा दिया। वह तीन दिन ही शासन करने पाया था, कि वोरक खान फिर आ गया।

३०. कादिर बर्दी

शायद यह तोकतामिशका पुत्र था, जिसे इदिकूने मारा। इदिकू भी लडाईमे या सिर-दरियामें डूवकर मरा।

३१ शादीबेक

गयासुद्दीन शादीवेकने भी थोडे ही समय शासन किया। मुहम्मद सुल्तान तेमूर-खान-पुत्रके समयसे ही किपचककी राजनीतिक अवस्था इतनी अस्त-व्यस्त रही, कि राजावलीका ठीकसे पता नही लगता।

३२ सैयद खान, सैदक खान

इसने कुछ दिनोतक शासन किया, फिर जानीवेकका पोता और सैयद खानका पुत्र कासिम खान गद्दीपर वैठा।

३३. कासिम खान, सैदक खान-पुत्र (१५०९—१५२३ ई०)

दश्ते-किपचकका खान होते ही कासिम खानको सैवक खानसे मुकाविला करना पडा। ९१५ हि० (२१ अप्रैल १५०९—९ अप्रैल १५१० ई०) में सैवक खानने चढाई करके कासिमको हराया। ९३० हि० (१० नवम्वर १५२३—२८ अक्तूवर १५२४ ई०) मे कासिम खान मरा।

३४ अकनजर, हकनजर खान, कासिम-पुत्र (१५२३)

वापके वात अकनजरको गद्दी मिली। अव श्वेत-ओर्दूके दो टुकडे हो गये थे, जिनमें एकका शासक अकनजर था, और दूसरेके जू-छि-पुत्र शैवानके वशज।

श्वेत-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष

(—१२२४–१४१० ई०)

- छिङ-गिस्
  - १ जू-छि (–१२२४ ई०)
    - बा-तू
    - बेरक
    - २ ओर्दा (१२२४—. ..)
    - ३ कोनिचि (१३०१)
    - ४ बायन (१३०१–..)
    - ५ ससीबूगा (–१३३६)
      - ६ एर्जन (१३३६–४४)
        - ८ चिमतइ (१३४४-६१)
          - ९ उरुस (१३६१-७०)
            - १० तोक्ताकिया (१३७०)
            - ११ तेमूरबेक (१३७०–७५)
              - १८ तेमूर कुतुलुक (१३९५-१४००)
              - शादीबेग (१४००-८)
              - पूलाद(१४०८-१०)
      - ७ मुबारक खोजा (१३४४)

अध्याय ४

रूस (रूरिक-वंश)

(९११–१५९४ ई०)

अवतरणिका

मध्य-एसियाके इतिहासको स्पष्ट करनेके लिये चीन और ईरानके तत्कालीन इतिहासके साथ रूसके इतिहासका भी कुछ परिचय आवश्यक है, क्योंकि शताब्दियोतक वह एक दूसरेको प्रभावित करते रहे हैं। ईरान जहा अपनी भाषा और सस्कृतिसे मध्य-एसियाके साथ समीपता स्थापित करता है, वहा चीन काफी समयतक उसके ऊपर सीधे राजनीतिक प्रभाव रखता रहा। रूसका प्रभाव यद्यपि आरभमें अधीन-जातिके सिवा और रूपमें नही देखा जाता, किन्तु आगे वह बढते-बढते सबसे अधिक प्रभावशाली हो जाता है। हालकी दो शताब्दियोमें तो मध्य-एसियामे बहुतसे परिवर्तन लाते रूस आज एक नये ससार-का निर्माण कर रहा है। ऐसी स्थितिमे रूसी इतिहासपर सिहावलोकन किये बिना हम मध्य-एसिया की कितनी ही बातोको समझ नही पायेगे।

(क) शक-सरमात

शकोके विशाल देश (शकद्वीप) के बारेमें हम पहले कह आये है और यह भी बतला आये है, कि शक और सिथ एक ही थे। इन्हीकी कालासागर और कास्पियन समुद्रके उत्तरमें रहनेवाली शाखा सरमात कही जाती थी। आगे यह नाम भूलसा जाता है, और ईसाकी प्रथम शताब्दीमे वेनिद (वेन्द) और अत दो नये लोग हमारे सामने आते है, जो शक-सरमात-वशके ही है।

वेन्द—वेन्दका शब्दार्थ है जलनिवासी या नदीनिवासी। यह विस्तुला नदीसे द्नियेपर और द्नियेस्तर नदियोके ऊपरी भागोमें रहते थे, यही पश्चिमी स्लावो (पोल, चेक, स्लावक) के पूर्वज थे।

अन्त—अन्तका शब्दार्थ है सीमातवासी। ईसाकी प्रथम शताब्दीमे यह द्नियेस्तरसे दोनतककी भूमिमे रहते थे।

पूर्वी और पश्चिमी स्लावोके अलावा शक-सरमातोकी एक दक्षिणी शाखा भी थी, जिससे दक्षिणी स्लाव (युगोस्लाव) खोरवात, सर्व (मकदूनी) और बोल्गारी स्लाव जातिया निकली। रूसी विद्वान् अ० अ० शाह्मातोफके अनुसार सारी रूसी जातिया—रूसी, उक्रइनी और बेलोरुसी—अतोकी सतान है, लेकिन अकदमिक म० स० ग्रुसेव्स्की अतोको केवल उक्रइनोका पूर्वज मानते है।

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें चीनसे पश्चिमी देशोका जो व्यापार-मार्ग खुला था, वह भारत और ईरानतक ही सीमित नही था, बल्कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें ही दक्षिणी रूस भी इस व्यापारिक क्षेत्रके भीतर था—ख्वारेज्मसे रूसका बहुत घनिष्ठ व्यापारिक सबध था। उस समय वोल्गा नदीका नाम फिन भाषामें रा था, जिसे तुर्कोंने इतिल बनाया और फिर तटपर बुल्गारोके रहनेके कारण वोल्गा नाम पडा। हूणोकी बाढके आनेसे पहले ईसाकी प्रथम शताब्दीमें उरालके पास तुर्क जातिया रहती थी—चुवाश, याकुत (साइबेरिया) और आधुनिक तुर्क एक ही जाति-के हैं।

रूसियोंका सबब अतोंसे है। यह अत ईसाकी चौथी सदीमें द्नियेस्तरसे दोनके आगेतक फैले हुये थे। इनके पश्चिमी पडोसी गाथ क्रिमियामें तथा द्नियेस्तरके पश्चिममें रहते थे। अतोंका सबसे पुराना उल्लेख हमें केर्चमें प्राप्त एक अभिलेखमें मिलता है। चौथी सदीमें हूणोंकी बाढ आकर अतोंको उत्तरकी ओर ढकेलती गाथोंके ऊपर आ पडी। ३७६ ई० में हूण-राजा बलम्बरने गाथ-राजा वीनीतरको लड़ाईमें मार उसकी खोपड़ीका प्याला बनाया। हूणोंद्वारा भगाये गये गाथ अपने पडोसी अतोंके ऊपर पडे। इस संघर्षमें अत-राजा बोग अपने पुत्रों और सत्तर सामंतोंके साथ मारा गया।

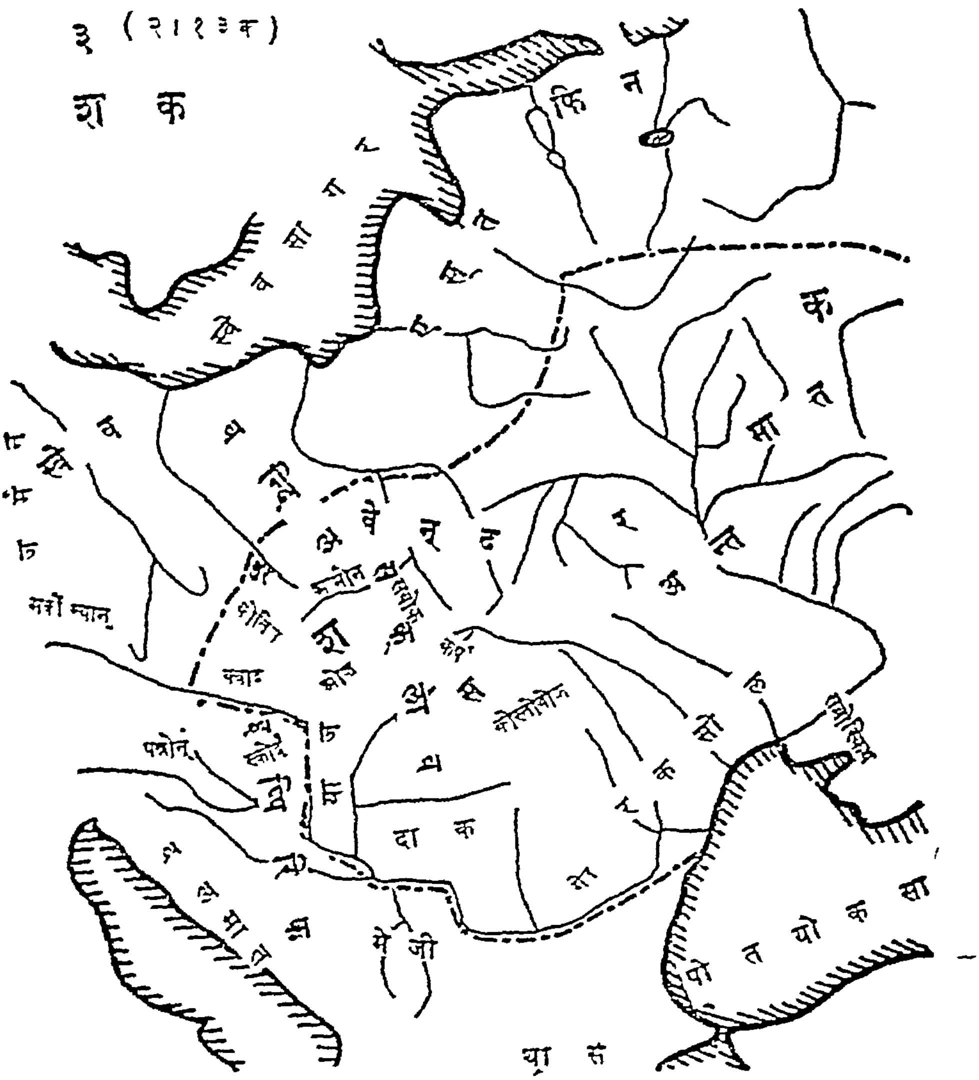

हूणोंने कुछ समयतक दन्यूब और तिनिया नदीके बीचमें अपना राज्य कायम किया। पाचवी नदीके पूर्वार्धमें उनके राजा अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०) के प्रतापसे सारा पूर्वी युरोप कापता था।

हूणोंके बाद पाचवीं सदीमें आवारोंकी बाढ पूरबसे पश्चिमकी ओर चली। तुर्कोंके प्रहारके मारे उनके पहलेके स्वामी अब जान बचानेके लिये पश्चिमकी ओर भागे। इसीपर तुर्कोंके राजा सिलजीबुलने कहा था—"वह (आवार) चिडिया नहीं हैं, जो कि हवामें उड जायेंगे। तुर्कोंकी तलवारोंसे भागकर, मछली नहीं है, कि गहरे पानीमें चले जायेंगे। जायेंगे पृथ्वीपर ही। जब मैं हेफतालोंसे लडाई खतम कर लूंगा, तब आवारों पर पड़ूंगा, तब वह मेरे हाथसे नहीं निकल सकेंगे।" आवारोंने दक्षिणी रूससे पहुंचकर कास्तन्तिनोपोलमें रोमके सम्राट्के पास अपना दूत भेजकर शरण मांगी। ५६२ ई० के आसपास सम्राट् योस्तीनियनने उन्हें बसनेके लिये भूमि दी। काला सागरके पश्चिमी

किनारेपर पुरानी स्किफिया (शक)-भूमिमे पहुचकर इस्त्रा (दन्यूव) के तटपर जा उन्होने विश्राम किया ।

आवारोकी वाढ आनेपर फिर हूणोकी तरह अपने लिये खतरा देखकर अतोने सुलह करनेके लिये उनके पास अपने राजा मेजमिर इदरी-पुत्र तथा केलायस्त आदि सरदारोको समझौता करनेके लिये भेजा, लेकिन आवारोने उन्हे मार डाला। रोमने आवारोको शरण दी थी, क्योकि उसके लिये इस टिड्डीदलसे वचनेका कोई दूसरा रास्ता नही था। आवार रोमन-साम्राज्यके भीतर लूट-मार करना अपना हक समझते थे। पूर्वी-रोमन (विजन्तीन) सम्राट् मावरिक (५८२–६०२ ई०) के समय अत विजन्तीनकी सैनिक सेवा करते थे। उस समय स्लावोका यह सबसे शक्तिशाली कवीला था। सम्राट् फोक (६०२–६१० ई०) और हेराकिल (६१०–६४१ ई०) के समय भी अत शक्तिशाली वने रहे, यद्यपि अब विजन्तीन सम्राटोंके ध्यान को इधरसे हटाकर सासानियो (ईरानियो) और अरवोके सघर्षोंने अपनी ओर खीच लिया था। ७वी सदीमें इस प्रकार हम अतोको विजन्तीनके घनिष्ठ सवधमे देखते हैं। निश्चय ही अतोका ऊपरी वर्ग (सैनिक और शासकीय प्रधान) ग्रीसकी पिछली सस्कृतिसे वहुत प्रभावित थे। १०वी-११वी शताब्दीके कियेफके रूसी लोग अतोके खूनके ही नही, वल्कि उनकी सस्कृतिके भी उत्तराधिकारी थे। अत कृषि जानते थे, लेकिन अधिक उत्तरवाले उनके लोग पशुपालनपर ज्यादा ध्यान देते थे। दासता भी उनमे प्रचलित थी। अकदमिक न० स० देर्झाविनके अनुसार[1]—"१०वी सदीके कियेफ रूस (और कियेफ राजुल) उसी भाषाको वोलते थे, जिसे कि छठी सदीके अत लोग, उसी पेरुनको पूजते और उसी पुराने पथपर चलते थे, जिसपर छठी सदीके अत।"—उनके देवताओमें स्वारोग, सरोग-पुत्र स्वारोजिक (स्वारोचिष), दाजवोग (सूर्य, यह भी स्वारोग-पुत्र) मुख्य थे। देवियोमे लादा (ह्लादा), वेस्ना (वसता), देवा और जीवा प्रधाना थी।

१०वी सदीके अरव लेखक मसऊदीके अनुसार—"उनमें कुछ ईसाई भी हैं, कुछ काफिर, जो सूर्यकी पूजा करते हैं।" इसके दो शताब्दी वाद प्राय १२०० ई०मे इब्राहिम वेसिफ शाह-पुत्र लिखता है—"इनमें कुछ ईसाई और दूसरे सूर्य या नभकी पूजा करते हैं।" ९४९ ई०में लिखते हुये कान्स्तन्तिन वगरया नरोद्नी उनके अग्निपूजक होनेकी भी वात करता है। १२वी शताब्दीमे लिखते हुये किरि-लिता तुरेव्स्कीने उन्हें वृक्ष, नदी, पर्वत और जल की पूजा करनेवाला वतलाया है।

१० वी शताब्दीके पूर्वार्धमें रूसके पडोसी खाजार, महा-वोल्गार और विजन्तीन थे, जिनके साथ वह व्यापार करते थे। अरव लेखक इब्न-हौकल (९७६-९७७ ई०) भी खाजारो और वोल्गारोके साथ रूसोके व्यापारकी वात कहता है।

(ख) रूसोके पडोसी मगोलायित

वोल्गार—हूणोके आनेसे पहले ही उरालके पास मगोलायित जातिके लोग वसते थे, शायद वोल्गार उन्हीमेंसे थे। चौथी सदीमें हूणोके वोल्गासे पश्चिम पहुचनेंके तुरत ही वाद वोल्गार, कास्पियन समुद्रके पश्चिमोत्तरीय मैदानोमे देखे गये, लेकिन वहा वह ज्यादा दिनोतक नही ठहर सके, क्योकि दूसरे घुमतू उनकी जानके गाहक वन गये। इन्ही वोल्गारोमेंसे कुछ भागकर पश्चिममें दन्यूवो-के किनारे पहुचे, जहा स्थानीय स्लावोमे वह घुल-मिलकर अपनी रूपरेखा और भाषाको भी खोकर अव वुल्गारिया-निवासियोके नामपर ही अपना चिह्न छोड गये। दूसरा भाग वहासे वोल्गातटपर गया, जहा उसने वोल्गार-राज्यको स्थापित किया और 'रा' और इतिल नामसे मशहूर नदीको वोल्गा नाम दिया। यह बोल्गार निम्न और मध्य-वोल्गाकी उपत्यकाओमें पहले निरे घुमक्कड पशुपाल रहे, फिर एक अरव-लेखकके अनुसार वह जौ-गेहूकी खेती भी करते थे। इनकी राजधानी कामा और वोल्गाके सगमसे कुछ नीचे वडी ही समृद्ध व्यापारिक नगरी थी, जहा हर साल रूस, काकेशस, विजन्तीन और मध्य-एसियाके व्यापारी आते थे। वोल्गार अपनेसे उत्तरवाले देशको "अधकार भूमि"

१ "स्लावियाने व्-द्रेव्नोस्ती" पृ० १८।

रहते थे। वहांसे वह अपनी चीजोंको बदलकर समूर लाते थे। मुसलमान व्यापारियोंके संपर्कमें आनेसे इनमें मुस्लिम संस्कृति और धर्म फैला और १० वीं सदीतक वोल्गार शासक और सरदार मुसलमान बनकर अरबोंकी नकल करना अभिमानकी बात समझने लगे। इस समयतक वह अपना सिक्का भी ढालने लगे थे।

१०वीं सदीके आरम्भमें इब्न-फज्लान एक अरब दूत-मंडलका सदस्य बनकर वोल्गारोंकी भूमिमें गया था। उसने अपनी यात्राका एक बड़ा ही सुन्दर वर्णन छोड़ा है। वोल्गार राजधानीसे नातिदूर दूत-मंडलका स्वागत करते हुये उसे एक विशाल तथा अच्छी तरह सुसज्जित तंबूमें ले जाया गया, जिसमें आर्मेनी गलीचे बिछे हुये थे। रूमी कमखावसे ढँके सिंहासनपर खान बैठा था। उसके दाहिनी ओर सरदार बैठे थे। मांसके टुकड़ों और मधुकी शराबसे मेहमानोंकी जियाफत की गई। इब्न-फज्लानने वहां रूसी व्यापारी भी देखे। वह बड़े ही लंबे-तगड़े तथा हर वक्त कटार, छुरी और तलवार लटकाये फिरते थे।

यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि वोल्गार और खजार राज्योंके स्थापित होनेके बाद वोल्गातट युरोप और एसियाके व्यापार-मार्गका महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया। वोल्गाका ऊपरी भाग पश्चिमी द्विना नदीके पास पहुंच जाता है, जो कि बाल्तिक समुद्रमें गिरती है। इसी तरह फिनलन्दकी खाड़ीके लिये भी जलपथ थोड़ी ही दूरपर मिल जाता है। इन नदियोंके बीचके स्थल-मार्ग दुर्गम पहाड़ोंके नहीं थे, इसीलिये व्यापारी इन स्थल-मार्गपर अपनी नावोंको ढकेल कर ले जाते थे। ८ वीं-१० वीं शताब्दियोंमें व्यापारके लिये यहां भारी संख्यामें अरब व्यापारी आते थे, जो मास खरीदनेके बदले भी अपने छोटे-छोटे चांदीके सिक्के देते थे। ये अरब सिक्के उस समय पूर्वी युरोप, बाल्तिक-राज्यों, स्कैंडिनेविया और जर्मनीतकमें प्रचलित थे।

खज़ार—६ठी–८वीं सदी में मंगोलियासे अराल और कास्पियन समुद्रतक जो घुमन्तू तुर्क रहते थे, इन्हींमें खजार भी थे। ६ठी सदीमें वोल्गारोंकी तरह खजार भी काकेशसके उत्तरमें चरवाही करते थे। ८ वीं सदीमें इन्होंने निम्न वोल्गा-उपत्यकामें अपना राज्य स्थापित किया। अब वह अर्ध-घुमन्तू हो गये—जाड़ोंमें नगरोंमें रहते और गर्मियोंमें अपने ऊंटों, घोड़ों, भेड़ोंको लिये मैदानोंमें चरवाही करते। पशुपालन ही उनकी मुख्य जीविका थी, इसके अतिरिक्त थोड़ी-सी खेती और अंगूरकी बागवानी भी कर लेते थे। इनका शासक एक खाकान होता था, जो राजकाजमें सीधे भाग न लेकर देवतासा माना जाता था। उसके सहायक और सरदार शासनका काम देखते थे। पहले इनकी राजधानी बलाजर (दक्षिणी दागिस्तान) थी, लेकिन ७२२-२३ ई०में अरबोंने आक्रमण करके इनकी राजधानीको जब ध्वस्त कर दिया, तब इन्होंने वोल्गा और सागरके संगमपर वोल्गाके डेल्टामें इतिलको अपनी राजधानी बनाया। व्यापारकी भी भारी सुविधा होनेके कारण इतिल एक बड़ी नगरी बन गई। खाकानका ईंटका महल एक द्वीपमें था, जिसको नावोंके पुलद्वारा किनारेसे मिला दिया गया था। नगर-प्राकारके बाहर लकड़ीके घर तथा घुमन्तुओंके तंबू रहते थे। इन्हींमें ख्वारेज्मी, अरब, ग्रीक, यहूदी, भारतीय आदि व्यापारी आकर रहते थे। इतिलकी बाजारोंमें सारी दुनियाका माल भरा रहता था। ख्वारेज्मके पास होनेके कारण वहांवालोंका यहांके व्यापारमें विशेष हाथ था। उस समय खजार-खाकान और उसके सरदार मुसलमान नहीं यहूदी थे। दोनके तटपर खजारोंका एक और भी बड़ा व्यापारिक नगर सरकेल था। इस नगरके निर्माणमें बिजन्तीन (रोम) इंजीनियरोंने सहायता की थी। उत्तर और पूरबके घुमन्तुओंसे रक्षा करनेके लिये नगर दृढ़ प्राकारोंसे घिरा था। दक्षिणमें वर्तमान मखचकलासे नातिदूर समंदर नामका एक और भी सुन्दर शहर था, जिसके पास अंगूरोंके बहुतसे बाग थे। ९वीं शताब्दीमें खजार अपने उत्कर्षकी चरम सीमापर पहुंचे थे। अजोफ-समुद्रके तटतक तथा क्रिमियाका भी कुछ भाग खजारोंके शासनमें था। दूनिपेर और ओकाकी उपत्यकाओंमें रहनेवाली स्लाव जातियां इन्हें कर देती थीं। उत्तरमें उनकी सीमा मध्य-वोल्गामें वोल्गारोंसे मिलती थी। कास्पियन समुद्रका नाम खजार समुद्र (बहीरा खजार) इन्हींके कारण पड़ा, जिसे पीछे मुसलमानोंने हजरत खिजिरके नामसे जोड़कर खिजिर-समुद्र बना दिया।

पेचेनेग—खाजारोके पडोसी पेचेनेग भी तुर्की जातिके थे, जो ९वी शताब्दीके पूर्वार्धमे यायिक (उराल) और इतिल (वोल्गा) नदियोके बीचमे घुमक्कडी करते थे। ९वी शताब्दीके उत्तरार्धमे दूसरे घुमन्तुओके साथ सघर्ष होनेके कारण यह पश्चिममे जा दोन और द्नियेपरके बीचकी भूमिमें घूमने लगे। इनकी सख्या काफी थी। मगोलियाके हूणोके समयसे ही हम देखते है, कि घुमन्तुओके ऊपरी वर्गमे सस्कृतिका अभाव होना आवश्यक नही है—पेचेनेगके सोने-चादी के बर्तन, कमरबद आदि पुरातत्त्वकी सामग्रिया जो खुदाइयोमे मिली है, उनसे यह बात सिद्ध होती है। पेचेनेग अपने पडोसी स्लावोको सबसे ज्यादा हानि पहुचाते थे।

(ग) कियेफके राजुल

पुराने अंतोके वशज ८वी-९वी शताब्दीमे छिन्न-भिन्न हो गये। बेटा होनेपर उसके हाथमे वह तलवार पकडाते थे, किंतु बिखरी हुई तलवारे शक्तिहीन साबित हो रही थी। ९वी शताब्दी-के उत्तरार्धमें एक बडी निराशाजनक स्थितिमे रूस लोग रह रहे थे, यद्यपि उनकी वीरतामे जरा भी कमी नही आई थी। बिखरी हुई तलवारे इकट्ठा करनेवाले व्यक्तिकी प्रतीक्षा हो रही थी। ऐसे व्यक्तिके आनेके लिये रास्ता भी साफ था। रूसके भीतरसे कई वणिक्पथ पूरबमे चीन, दक्षिणमे बिजन्तीन और ईरान, पश्चिममें युरोपकी ओर जाते थे। स्कैडेनेवियाके व्यापारी बहुमूल्य रेशम, समूरी छाल, अबर तथा दूसरी चीजोका व्यापार करने आते थे। बाल्तिक समुद्रसे पश्चिमी द्विना होकर वोल्गा नदीसे मिलनेवाले रास्तेकी बात हम कर चुके है। स्कैंडेनेवियावाले फिनलद खाडीसे नेवा नदीको पकड उसके उद्गम इल्मन झीलमें पहुच लोवात नदीद्वारा ऊपरकी ओर चलने। वहासे उन्हे पश्चिमी द्विना नदी पर पहुचनेमें थोडी दूरतक नावको स्थलमार्गपर घसीटना पडता। इल्मनसे दूसरी नदी द्वारा वह थोडा स्थलमार्ग पारकर वोल्गा नदीके वणिक्पथपर पहुच जाते। इसी तरह द्नियेपर पहुचनेका भी जल-स्थल-मार्ग था। इन वणिक्पथोपर जहा व्यापारियोके सार्थ चलते थे, वहा कुछ लोग व्यापारके साथ लूट-पाट भी भारी लाभका साधन मान उससे बाज नही आते थे। पश्चिमी युरोपमें स्कैंडेनेवियाके निवासी नार्समेन उस समयके बडे साहसी यात्री थे, जो व्यापारके साथ लूट-मारको भी अपना पेशा बनाये हुये थे। वह सशस्त्र सगठित दलोमें हो रूसमे व्यापार करनेके लिये आया करते। उन्होने ९वी शताब्दीमें रूसके भीतरसे जानेवाले मार्गोको अपना क्रीडाक्षेत्र बनाया। नार्समेन वरगीके नामसे अधिक प्रसिद्ध थे। अपने कोनुग (राजकुमारो) के नेतृत्वमें लूट-मारके लिये उन्होने अपने सैनिक दल सगठित किये थे। वह स्लावो और दूसरे लोगोके ऊपर आक्रमण करके उनकी मूल्यवान् चीजोको जहा लूट लेते, वहा स्त्री-पुरुषोको पकड ले जाकर कन्स्तन्तिनोपोलके बाजारोमें अथवा वोल्गारो और खाजारोकी राजधानियोमे बेंच देते।

१ रूरिक

इन्ही वरगियोमेंसे कुछने ग्रीक जानेवाले मार्गमें अपनी गढिया बना ली, वह स्थानीय स्लावोपर शासन करते हुये उनसे कर उगाहने लगे। कितनी ही बार स्लाव बिगडकर वरगी कोनुगोको मार डालते, फिर कोई स्थानीय स्लाव राजुल राज करने लगता। परपरा कहती है, कि ९वी शताब्दीके मध्यमें रूरिक (रोयरिक, रोरिक) नामक एक साहसी वरगीने नवोगोरदमें अपना अड्डा जमाया। नवोगोरद कालासागर और द्नियेपर नदीसे उत्तर जानेवाले रास्तेपर एक बडा महत्त्वपूर्ण स्थान था। रूरिकका भाई सिनेउस ब्येलोओजेरो (श्वेत सरोवर) पर जम गया। फिनलदकी खाडीसे वोल्गा और उरालवाला वणिकपथ वहीसे होकर जाता था। तीसरा भाई त्रुवोर इज्वोरस्क नगरपर डट गया, जो कि बाल्तिकसे आनेवाले रास्तेका केंद्रीय नगर था। इन तीनो भाइयोके अतिरिक्त दो और वरगी कोनुग अस्कोल्द और दिरने कियेफ नगरको अपने हाथमे किया। ग्रीसके पथपर कियेफ बहुत महत्त्वपूर्ण नगर था। इसी तरह बाल्तिकसे पश्चिमी द्विनाके मार्गपर भी वरगियोने अपनी गढिया बना रक्खी थी। वरगी आकर स्लावोकी भूमिमें अधिकतर लूट-मार करते, फिर धनको लेकर अपने देश लौट जाते। उनमेंसे कितने ही रूस-राजुलोके अनुचर अथवा स्वतंत्र सरदार बनकर भी बस गये। वरगियोंसे

स्लावोंका नाकोंमें दम था, पर वह सख्यामें पीछेके मगोलोंकी तरह बहुत थोडे थे। वरगी सरदार स्लावो-मेंसे भी अपने अनुचर भर्ती करते थे। रूसमें स्थायी तौरसे बसनेवाले ये वरगी स्लाव-समुद्रमे बहुत जल्दी ही अपने नामोंको मिटा रूस बन गये, रूसी भाषा बोलने तथा पेरुन और स्वारोगकी पूजा करने लगे। रुरिक, उसके भाइयो तथा साथियोंकी भी यही हालत थी।

रुरिक-वंशावली—रुरिकके वंशमें निम्न राजा हुये —

		काल
	क कियेफ	
१	रुरिक	९०० ई०
२	ओलेग, रुरिक-पुत्र	–९११ "
३	ईगर, रोरिक-पुत्र	९११-४५ "
४	ओल्गा, ईगर-पत्नी	९४५-५७ "
५	स्व्यातोस्लाव I ईगर-पुत्र	९५७-७३ "
६	व्लादिमिर I स्व्यातोस्लाव-पुत्र	९७८-१०१५ "
७	स्व्यातोपोल्क I व्लादिमिर-पुत्र	१०१५-१९ "
८	यारोस्लाव I व्लादिमिर-पुत्र	१०१९-५४ "
९	इज्यास्लाव I यारोस्लाव-पुत्र	१०५४-७३ "
	स्व्यातोस्लाव II यारोस्लाव-पुत्र	१०७६ "
	इज्यास्लाव I (पुन)	१०७३ "
१०	स्व्यातोपोल्क II इज्यास्लाव-पुत्र	१०७३-१११३ "
११	व्लादिमिर II मनोमाख	१११३-२५ "
	ख रोस्तोफ-सुज्दल	
१२	यूरी I दीर्घबाहु, व्लादिमिर मनोमाख-पुत्र	–११५७ "
१३.	अन्द्रेयी, बगोल्यूबोव्स्की यूरी-पुत्र	११५७-७४ "
१४	व्सेवोलोद I यूरी-पुत्र	११७६-१२१२ "
१५	यूरी II व्सेवोलोद-पुत्र	१२१२-१२३८ "
१६	यारोस्लाव II व्सेवोलोद-पुत्र	१२३८-४६ "
	स्व्यातोस्लाव III व्सेवोलोद-पुत्र	१२४७-४८ "
	अन्द्रेयी II यारोस्लाव-पुत्र	१२४९-५२ "
१७	अलेक्सान्द्र नेव्स्की यारोस्लाव-पुत्र	–१२६३ "
	ग मास्को जार	
१८	दानियल	१२६३-१३०३ "
१९	यूरी III दानियल-पुत्र	१३०३-२५ "
२०	इवान I कलिता, दानियल-पुत्र	१३२५-४१ "
२१	सेमेओन, इवान-पुत्र	१३४१-५३ "
२२	इवान II इवान-पुत्र	१३५३-५९ "
२३	दिमित्रि इवान II-पुत्र	१३५९-८९ "
२४	वासिली I अब, दिमित्रि-पुत्र	१३८९-१४२५ "
२५	वासिली II अन्नामिनी-पुत्र	१४२५-६२ "
२६	इवान III वासिली II-पुत्र	१४६२-१५०५ "
२७	वासिली III इवान III-पुत्र	१५०५-३३ "
२८	येलेना, वासिली III-पत्नी	१५३३-३८ "
२९	जार इवान, वासिली III-पुत्र	१५३८-८४ "
३०	फ्योदोर, इवान IV-पुत्र	१५८४-९८ "

२ ओलेग रूरिक-पुत्र (९११ ?)

१० वी शताब्दीके आरंभमे रूरिक-पुत्र ओलेग द्नियेपर-उपत्यकाके कुछ भागोका स्वामी था। पुराने इतिहासकार लिखते है, कि ओलेग पहले नवोगोरदके स्लावोपर शासन करता था, किन्तु पीछे वह द्नियेपर-उपत्यकामे चला गया और स्मोलेन्स्क क्रिविचीको जीतकर नीचेकी ओर वढते अपने दोनो देशभाइयो अस्कोल्द और दिरको मारकर उसने कियेफपर अधिकार कर लिया, जहासे पडोसके द्रेव्ल्यान लोगोको अपने अधीन करते हुये खाजारोके अधीनस्थ सेवेरियान और रादिमिची स्लावोको अपने अधीन किया। इस प्रकार ओलेग नवोगोरद और कियेफ दोनोका स्वामी वन जानेके वाद द्नियेपर वणिक्पथका भी स्वामी हो गया। धीरे-धीरे और कितने ही छोटे-छोटे राजुलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर कर वह "रूसका महाराजुल" वनकर दूसरे राजुलोपर शासन करने लगा। कियेफके महाराजुलके अधीन हो अव द्नियेपर-उपत्यका और इल्मन-सरोवरके स्लाव एकतावद्ध हो गये। इस एकतावद्ध राज्यको रूस कहा जाने लगा। यह कहना मुश्किल है, कि रूस किस भाषाका शब्द है। जो भी हो १०वी शताब्दीके आरभमे वहुत-से स्लाव कवीलोको, जो कियेफके शासकके अधीन एकतावद्ध हुये थे, उनको यही नाम दिया गया, और इतिहासमे उन्हे "कियेफ रूस" कहा जाने लगा।

यद्यपि कियेफ राजुलोकी अधिकाश प्रजा स्लाव थी, लेकिन उनमे कुछ मेरिया, वेसी और चुद जैसी अरूसी कवीले भी थे। अभी ये जातिया आर्थिक तौरसे अधिक विकसित नही थी। पशुपालन, शिकार, कुछ कृषि और मामूली दस्तकारी उनकी जीविका थी। अभी वह एक दूसरेके ऊपर आर्थिक तौरसे इतने निर्भर नही थे, कि उनका एक घनिष्ठ सघ वन जाता। ये पूर्वी स्लाव कृषि-समूहो (वेर्व) मे जीवन विताते अभी भी जनयुगके रीति-रवाजोको पकडे हुये थे। उनकी भूमि साझेमे हुआ करती थी, लेकिन रूरिकोके अधीन एकतावद्ध होनेपर व्यापारका सुभीता और भी वढा, जिससे उनके भीतर धनी-गरीव होने लगे। गरीव अपने धनी वधुओके कमकर वनने लगे। भूमिपर भी वैयक्तिक अधिकार माना जाने लगा। इस प्रकार उनके भीतर सामती सवध कायम हो गया।

आगे कियेफ-राज्यने पूर्वी युरोपमें विशेष महत्त्वका स्थान प्राप्त किया। विजन्तीन (पूर्वी रोम) का प्रभुत्व सारे कालासागर और उसकी तटवर्ती भूमिपर था। अल्प-विकसित जातिया कभी अपने लूट-मारसे उसको चिढाती थी और कभी विजन्तीनके शासक स्वय लूट-मार करनेपर उतारू हो जाते। ऐसे ही किसी आक्रमणके वदलेमें ८६० ई० मे स्लावोने वज (ओक) वृक्षोको खोखला करके अद्नोदेरेव्की (एकदारुक) नावोका वेडा तैयार किया और कान्स्तन्तिनोपोल वदरगाहके छोर (सुवर्ण-शृग) पर पहुचकर राजधानीके लिये खतरा पैदा कर दिया। तूफानने स्लावोकी एकदारुक नावोको तितर-वितर कर दिया, नही तो इसमें सदेह नही, कान्स्तन्तिनोपोल उनकी दयाका भिखारी होता। ९११ ई० में फिर उन्होने अपनी प्रभुता दिखलाकर अपने अनुकूल सधि करवाई।

९१३-९१४ ई० मे स्लावो (रूसो) ने अव कास्पियनके किनारोपर भी आक्रमण शुरू कर दिया। इसके लिये वह अपनी नावोको अजोफ सागर होते दोन नदीमें ले जाते और उसी जगहपर अपनी नावोको कधोपर उठाकर वोल्गामे पहुचाते, जहा दोनो नदिया एक दूसरेके वहुत समीप पहुच गई है और जहा १९५२ ई० के वसतमे यातायातके लिये वडी नहर चालू हो गई। रूसलोग वोल्गासे नीचे कास्पियन समुद्रमे जा काकेशसकी वस्तियोमें लूट-मार करते। कितनी ही वार खाजार भी उनको अछूता नही छोडते, और रूसोको भारी हानि उठानी पडती।

ओलेगका शासन काफी लवा था, सभवत १०वी शताब्दीके उत्तरार्धके आरभतक। अपने चालीस सालके राज्यमे उसने रूसको एक-राज्य वनानेका ऐतिहासिक काम पूरा किया। उसके कामका कितना महत्त्व है, यह इसीसे मालूम होगा, कि कार्ल मार्क्सने "१८वी सदीमें गुप्त कूटनीति" (अध्याय ५) में उसका उल्लेख करते हुये कहा है —

"रूसके प्राचीन नक्शे हमारे सामने उससे कही अधिक विशाल युरोपीय क्षेत्रको प्रदर्शित करते है जिसका कि वह आज गर्व कर सकता है। ९वी शताब्दीसे ११वी शताब्दीतक उसका लगातार वढाव इसी-

की ओर सकेत करता है। हम ओलेगको अट्ठासी हजार आदमियोके साथ विजन्तीनपर आक्रमण करते, उसे कान्स्तन्तिनोपोल राजधानीके फाटकपर विजय-चिह्नके तौरपर अपनी ढाल स्थापित करते, और निम्न (पूर्वी रोम) साम्राज्यको सम्मानहीन सधि करनेको मजबूर करते देखते है। ईगर आगे उसे (विजन्तीनको) अपना करद बनाता है। स्व्यातोस्लाव इस बातको गौरवके साथ कहता है—'ग्रीक मुझे सोना, मूल्यवान् वस्तुए, चावल, फल और शराब भेजते है, हुगरी ढोर और घोडे देती है, रूससे मधु, मोम, समूरी छाल और मनुष्य मिलते है।' ब्लादिमिर क्रिमिया और लिवानिया (बाल्तिक प्रदेश) को जीतता है, और ग्रीक सम्राट्की कन्याको उसी तरह छीनता है, जैसा कि नेपोलियनने जर्मन सम्राट् से किया।"

मार्क्सके इस उद्धरणसे मालूम होगा, कि रूस १० वी शताब्दीमे कहासे कहा पहुच गया।

३ ईगर रूरिक-पुत्र (९११–४५ ई०)

१०वी शताब्दीके द्वितीय पादमें ओलेगके स्थानमे उसका भाई ईगर कियेफका महाराजुल बना। उसने अपने भाईकी सफलताओको आगे बढाकर और भी कितने ही राजुलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया, दक्षिणी बुग नदीकी उपत्यकाको जीता और कियेफके शासनके खिलाफ विद्रोह करनेवाले द्रेव्ल्यानोको कर देनेके लिये मजबूर किया। ९४१ ई०मे ईगरने विजन्तीनके विरुद्ध एक भारी सामुद्रिक अभियान किया। रूसोने कान्स्तन्तिनोपोलकी बहुत-सी बस्तियोको ध्वस्त किया, लेकिन अतमें ग्रीक बेडेने उन्हे अपने बदरगाहसे कालासागरकी ओर खदेड दिया। वहासे जाकर रूसोने क्षुद्र-एसियाके तटको लूटा—बरबाद किया। बडी मुश्किलसे ग्रीक-सरकार एक भारी स्थल-सेना भेजकर वहासे उसे हटानेमे सफल हुई। ईगरके पोत और हथियार अभी बिल्कुल आरभिक अवस्थामे थे, जबकि "ग्रीक

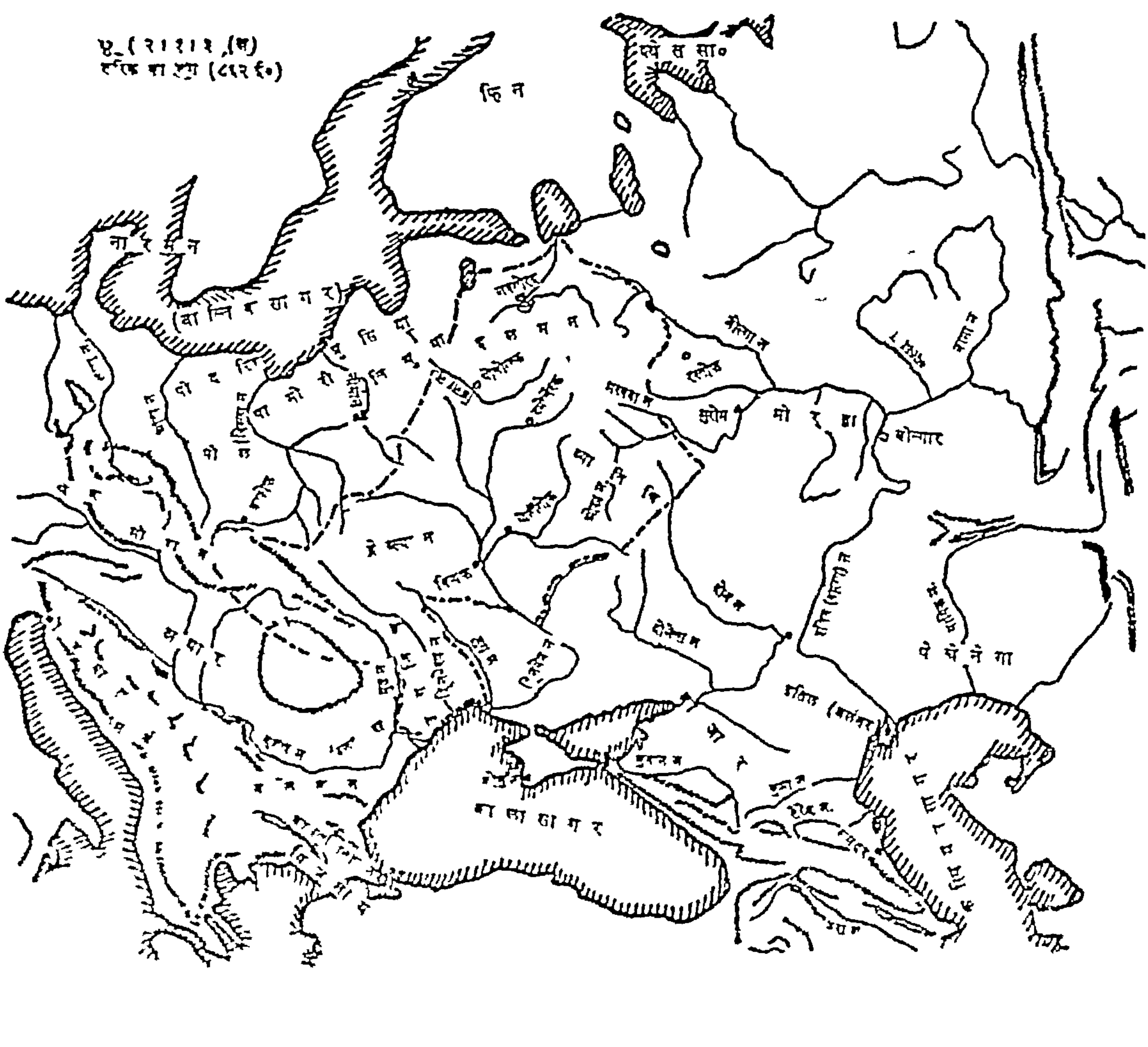

४-(२।१।१,(ख)
रूरिक का रूस (८१२ ई०)

अग्नि" के नामसे प्रसिद्ध एक तरहका भभकनेवाला तरल पदार्थ ग्रीक अपने शत्रुओपर फेकते थे। "ग्रीक अग्नि" के सामने ईगरके सैनिक बेडेको बहुत बुरी तरहसे हारना पडा। आगसे बचनेके लिये बहुतसे रूस * पानीमे कूदकर डूब मरे। बचे-खुचे पोत अपने देशकी ओर लौटे। यद्यपि ग्रीकोने उस समय रूसोको हरा दिया, लेकिन इन अर्ध-घुमतू लडाकू जातियोके लिये एक बारकी हार कोई महत्त्व नही रखती। इसलिये ग्रीक सरकारने ९४५ ई०मे ईगरके साथ एक नई सधि की, जिसमे व्यापारिक सबध स्थापित करनेके साथ उभय पक्षके शत्रुओके विरुद्ध सैनिक मित्रताकी शर्ते भी स्वीकृत की गई थी।

३३२ हिजरीके आरभ (४ सितबर ९४४ ई०)मे रूसोने कास्पियन तट-भूमिको अपना लक्ष्य बनाया था। कास्पियन तटको लूटते हुये वह कुरा नदीके भीतर घुस गये और ऊपरकी ओर बढते उन्होने बरदआ नगरीको ले लिया। यहासे वह आसपासके इलाकोमे लूट-मार करने लगे। लेकिन यहाका जलवायु अनुकूल न होनेसे बीमारीके कारण बहुतमे रूस मर गये, उनकी सख्या कम हो गई। इसी समय अरब फौजोने उन्हे एक किलेमे घेर लिया। बडी मुश्किलसे रातके अधेरेमे वह नावोमे पहुच अपने प्राणो और लूटे धनको बचाकर भागनेमे सफल हुये।

कियेफ रूसके राजुलोने दूसरोके धनको लूटना और पुरुष-स्त्रियोको पकडकर दास बनाना अपने वैध शासनका एक अग मान लिया था। वह पिछले सालकी जमा की हुई लूट और बदियोको नावोपर चढाकर द्नियेपर नदीसे कालासागरकी ओर भेजते। द्नियेपरके जलप्रपात रास्तेमे पडते, जिनपर नावे टूटकर चकनाचूर हो जाती, इसलिये ऐसी जगहोपर उन्हे बल्लोके सहारे कधेपर उठाकर आदमी ले जाते। लूटके मालके लिये यहा पडोसी लुटेरे पेचेनेगोके आक्रमणका भारी डर रहता और कितनी ही बार उनकी अन्यायोपार्जित सपत्ति पेचेनेगा (तुर्की) घुमन्तुओके हाथमे चली जाती। द्नियेपरके मुहानेमें पहुचकर यात्री आरामकी सास लेते और भगवान्से कृतज्ञता प्रकट करते। वहा एक छोटे द्वीपपर अवस्थित बज (ओक) वृक्ष-देवताको भेट-पूजा चढाते। फिर कालासागरके पश्चिमी किनारेसे होते वह कान्स्तन्तिमोपोल जारग्राद (राजनगरी) जाते। वहा वह अपने दासो, समूरी छालो और दूसरी चीजोको बेचकर बदलेमे कपडा, शराब, फल तथा शौकीनीकी दूसरी चीजे खरीद लेते।

अपनी प्रजासे कर उगाहनेमे इन राजुलोका व्यवहार बहुत कठोर होता था। इसके लिये लडाकू द्रेव्ल्यान (दीहाती) अक्सर विद्रोह कर उठते थे—"अगर भेडियेको भेडोके गल्लोमे आनेका चस्का लग गया, और वह न मारा गया, तो वह सारी भेडोको निगल जायेगा"—कहते हुये ३१ अगस्त ९४५ ई० को उन्होने अनुचरोसहित ईगरको मार डाला।

अभी रूस ईसाई नही हुए थे। इसी समय ईगरके शासनकालमें ही ९२२ ई० में मुसलमान पर्यटक इब्न फज्लानने वोल्गाके किनारेके नगरोकी यात्रा की थी। उसने रूसोके बारेमे लिखा है— "मैने रूसोको उस समय देखा, जबकि वह अपने पण्य द्रव्योको लेकर इतिल (वोल्गा) के किनारे आये थे। मैने उनके जैसे सर्वांगपूर्ण आदमी कही नही देखे। वह खजूरके वृक्षकी तरह (सीधे तथा) लालवर्णके होते है। वह न कुर्ता पहनते है, न कफतान (जामा), बल्कि उनमेंसे पुरुष एक तरहका चोगा जैसा कपडा पहनते है, जिसे एक बगलसे डालकर अपनी एक (दाहिनी) बाह खुली रखते है। हरएक आदमी अपनी तलवार, छुरे और कटारको नही छोडता। इनकी तलवारें लम्बी तथा लहरदार होती है। पैरसे कधेतक उनके शरीरपर हरे वृक्षो, मूर्त्तियो और दूसरी चीजोंके चित्र बने होते है। उनकी प्रत्येक स्त्रीके नितम्बके पास पतिकी सपत्तिके अनुसार लोहे, ताबे, चादी, सोनेकी डिबिया लटकती रहती है। हरएक डिबियामें एक छल्ला होता है, जिससे बधी छुरी नितम्बपर लटकती है। वह अपने कठमे सोने और चादीकी मालाये पहनती है। हरएक पुरुष जब दस हजार दिरहमका सौदा कर लेता है, तो अपनी स्त्रीके लिये एक माला और बीस हजार दिरहमका सौदा करनेपर दो माला खरीद देता है। हर दस हजार दिरहम सौदेकी वृद्धिके साथ मालाकी सख्या भी बढती रहती है, जिससे स्त्रीके पास बहुत-सी मालायें हो जाती है। उनके यहा मिट्टीकी बनी हुई हरी गुरियाको सबसे अच्छा अलकार समझा

* आजके रूसी नामसे भिन्न कियेफके इन पुराने लोगोको "रूस" कहा जाता था।

जाता है। यह मिट्टी जहाजोंपर होती है, जिसको वह बहुत दाम देकर खरीदते है—एक गुरियाका दाम एक दिरहम। अल्लाहके सृष्टि करनेके समयसे ही ये गदे है, पाखाना-पेशावके समय सफाई नही करते, बिल्कुल जगली गदहो जैसे। वह अपने नगरमे आकर इतिल (वोल्गा) के घाटपर उतरते है—इतिल बडी नदी है। नदी-तटपर बहुतसे लकडीके घर बने है, जिनमें वह ठहरते है। एक-एक घरमे दस-बारह आदमी या कम-बेसी जमा हो जाते है। प्रत्येकके पास मोढा होता है, जिसके ऊपर वह बैठता है। हरएकके पास अपनी सुन्दरी दासी होती है, जो उसके सामान को देखती है। कभी-कभी वह एक दूसरेके खिलाफ लडनेके लिये जमा हो जाते है और कभी व्यापारके लिये निकलते है। प्रतिदिन सवेरे दासी बडी डोलमे पानी भरकर ला अपने स्वामीके पास रख देती है। स्वामी उसमें अपना मुह, हाथ, बाल और सिर धोता है। उसीमें पोटा-खखार फेंकता है। जब वह अपना काम कर लेता ह, तो दासी डोलको उठा ले जाती है और उसीमे अपने स्वामीकी तरह मुह धोती-धाती है। इसी तरह उसी बाल्टीके पानी को घरमे रहनेवाले सब इस्तेमाल करते है। अपने मुह-बालको धोते है।

"नावमे आनेपर उनमेंसे हरएक अपनी रोटी, मास, दूध और पानकी चीजे लेकर बडे जगलमे चला जाता है, और पृथ्वीपर बने मनुष्य जैसे चेहरेके सामने भेंट-पूजा रखकर कहता है—"स्वामी, बग (भगवान्), अपने सामान और दास-दासीके साथ, सबोलके समूरी छालोके साथ मैं दूरसे आया हू।" इस प्रकार अपने सभी सौदोका नाम गिनाकर फिर कहता है "—मै तेरे पास यह भेंट ले आया हू।" फिर वह भेटको देवताके सामने रखते कहता है—"मै चाहता हू, कि तू मेरे व्यापारमें सोना-चादीके पैसो-को देनेमे सहायता करे।" व्यापार अच्छा होनेके बाद फिर वह प्रार्थना करता है—"मेरे स्वामीने मेरी इच्छा पूरी की, मुझे जरूर उसकी भेंट-पूजा करनी चाहिये।" फिर वह कितने ही बैलो और भेडोको ले जाकर बलि चढा कुछ मास उसी बडे वृक्षके नीचे छोड देता है, बैलो और भेडोंके गलेको उसी वृक्षके नीचे काट-कर जमीनपर रख आता है। जब रात आती है, तो कुत्ते आ उन्हे खा जाते है। तब वह फिर कहता है—"मेरा बग (भगवान) मेरे ऊपर प्रसन्न है, उसने मेरी सारी बलि खा ली!" उनमेंसे जब कोई बीमार पडता है, तो उसके लिये एक ओर झोपडी बनाकर वहा उसे रख देते है। बीमारके लिये थोडी-सी रोटी और पानी रखनेके सिवा न कोई वहा जाता है और न उससे बातचीत करता या मिलता-जुलता है। अगर वह अच्छा हो जाता है, तो साथमे जाता है, अगर मर जाता है, तो उसे जला देते है। यदि वह दास होता है, तो उसे धरतीपर छोड देते है, जहा उसे कुत्ते और गिद्ध खा जाते है। . .

मुझे बतलाया गया, कि वह मरनेके बाद अपने सरदारोकी बहुत धूमधामसे अत्येष्टि-क्रिया करते है। मैंने उसे देखना चाहा। मुझे उनके एक बड़े आदमीके मरनेकी खबर मिली। मै उसे देखने गया। उन्होने अर्थीपर ढाककर मुर्देको दस दिनोतक रक्खा। इसी बीच मुर्देके कफन सीने और दूसरे काम होते रहे। अत्येष्टि यही है, कि गरीब आदमीके लिये वह छोटी-सी चिता बना उसपर लाशको रखकर जला देते है। धनी आदमी होनेपर उसकी सम्पत्तिको इकट्ठा करके उसके तीन भाग करते है, जिसमेंसे एक भाग परिवारको मिलता है, दूसरे भागसे वह कपडा-लत्ता खरीदते है और तीसरे भागसे श्राद्धके दिनके खान-पानकी चीजें लाते है। अपने स्वामीके मरनेके बाद उसकी दासी साथ जलती है। वह उसे रात-दिन शराब पिलाकर मस्त रखते है, जिससे कोई-कोई हाथमें प्याला लिये ही मर जाती है। जब कोई सरदार मर जाता है, तो उसका परिवार मृतपुरुषके दास-दासीसे पूछता है—"तुममेंसे कौन स्वामीके साथ मरेगा?" उनमेसे कोई कह उठता है—"मै"। जब एक बार 'मै' कह दिया, तो उसके लिये मरना अनिवार्य हो गया, वह अपनी बातसे मुकर नही सकता। अधिकतर साथ जलनेका काम दासिया करती है। जब वह आदमी मरा, जिसके बारेमे मुझे बतलाया गया था, तो उसकी दासियोसे पूछा गया—"कौन उसके साथ मरेगा?" उनमेसे एक दासीने कहा—'मै'। उन्होने उसी समय उसके ऊपर दो दासिया नियुक्त कर दी, जिसमे वह उसकी रखवाली करें। मृतकके लिये वह दूसरे काम करने लगे। उन्होने कफन तैयार किया और जो दूसरी आवश्यक चीजे थी, उन्हें भी तैयार किया। दासी रोज खूब आनन्दसे खाती-पीती। जब दाहका दिन आया, तो मै भी नदीपर गया, जहा चिता तैयार थी। चिताके ऊपर बहुत-सी लकडिया रक्खी थी। उसीके ऊपर लाकर अरथीको रख दिया गया। फिर वह मेरी समझमें न आनेवाली

भाषामें कुछ कहते हुये एकके-पीछे एक चलने लगे। लाश अब भी अर्थीमें पड़ी थी। फिर उन्होंने मोढा ला चितापर रख उसे ग्रीक रेशमी कपड़े, तकिये आदिसे ढाक दिया। फिर एक बूढी स्त्री आई, जिसे कि वह लोग मृत्युका देवता (यमदूता) कहते हैं। वह मोढे पर बैठ गई। उसीके कहनेके अनुसार सिलाई तथा दूसरे काम होते हैं। वही दासीको मारती है। उन्होंने उसे चितापर बैठा दिया, फिर मरनवालेके पहने हुए कपड़ेको वहां रक्खा। उसीके सामने उन्होंने मद्य, फल और वाद्ययंत्र (बलालैका) रक्खा। सफेद चेहरा हो जानेके सिवा मुर्देमें कोई परिवर्तन नही दीख पड़ता था। उन्होंने उसके ऊपर रेशमी कुर्ता, जामा, मदली, जरीदार जूता आदि रक्खा, सिरके ऊपर रेशमकी बड़ी टोपी रक्खी। फिर चितापर उसके कपड़ोको बिछाकर तकिया रक्खी। फिर पान (मद्य), फल रख दिया। कुत्तोने आ चिताको गिरा-पड़ा दिया। फिर मृत पुरुषके सारे हथियारोंको उन्होंने क्रमसे उसके पास सजा दिया। फिर उसके दो घोडोको लाकर उन्होंने वही तलवारसे मारकर उनके मासको चितापर रख दिया। फिर वह दो बैल लाये। उन्हे भी उसी तरह मारकर चितापर फेंक दिया। फिर मुर्गी-मुर्गा लाये, उन्हे भी मारकर वही डाल दिया। फिर मरनेके लिये तैयार दासी लाई गई, जिससे हरएकने कहा—"अपने स्वामीसे कहना, कि हमने केवल उसके प्रेमसे यह सब किया।" दासीने अपना पैर चितापर रख अपनी भाषामें कुछ कहा। उसे हटा दिया गया। फिर उसने वही किया, जो कि पहली बार किया था। फिर उसे तीसरी बार हटाया गया। उसने फिर वही किया। . फिर उसे उन्होंने मुर्गी दी जिसे उसने सिर मरोड़कर फेंक दिया। उन्होंने मुर्गीको उठाकर उसी चितामें डाल दिया। मैंने दुभाषियेसे पूछा, कि उस दासीने क्या कहा? उसने जवाब दिया—'उसने पहली बार कहा—'हा, मै अपने बाप और अपनी माको देखती हू।' दूसरी बार उसने कहा—'हा, मैं देखती हू अपने मरे हुये बंधुओंको, मानो वह (यहा) बैठे हुये हैं।' फिर उसने तीसरी बार कहा—'हा, मैं देखती हू अपने स्वामीको, जैसे वह बड़े सुन्दर हरे-भरे राइ (स्वर्ग) में बैठे हैं, उनके साथ पुरुष और बच्चे भी हैं। वह मुझे बुला रहे हैं। मुझे उनके पास ले चलो।' पीछे उसे चितापर ले गये, और चीजे निकालकर उस यमदूता बुढियाको दे दी, जो दासीको मारने जा रही थी। फिर बुढियाने पैरोके कडोको निकालकर, उनमेसे दोको दासीको दे दिया। फिर उसे चिताके पासकी झोपडी म ले गये, जहा पुरुषोंने उसे प्यालेमें शराब लाकर दिया। उसने उसे पिया। दुभाषियेने मुझसे कहा, 'वह अपनी सहेलियोंके साथ प्रार्थना कर रही है।' फिर उसे दूसरा प्याला दिया गया। उसने उसे ले पीते हुये एक लम्बी गीत गाई। लेकिन बुढिया प्याला पीनेसे रोककर उसे वहा ले गई, जहा उसका स्वामी लेटा हुआ था। मै देख रहा था, कैसे वह छटपटा रही थी। उसने अपने सिरको चौतरे और चिताके बीचमें किया, और बुढियाने गलेसे पकडकर उसे चौतरेपर पहुचाया। . फिर पुरुषोने लकडियोको पीटना शुरू किया, जिसमे कि (दासी का) रोना-चिल्लाना सुनाई न दे, और आगे दूसरी दासिया डरकर अपने स्वामीके साथ मरनेसे इन्कार कर दे। फिर मरनेवाली दासीको लाकर उसके स्वामीकी बगलमें रख दिया—दोने उसके पैरोको पकड रखा था, दोने उसके हाथोको, यमदूता बुढियाने उसे गलेसे पकडा था। पुरुषोने उसे तान रक्खा था। बुढियाके सामने बडा खाडा रक्खा था, जिसे उसने दासीकी पसलियोके बीचमे घुसेड दिया। दो पुरुषोंने भी उसपर प्रहार किया। अभी भी वह मरी नही थी। फिर मृत पुरुषके बहुत नजदीकके संबंधीने आकर एक जलती लकडी उठा उससे चितामें आग लगा दी। फिर दासीको उसके स्वामीके पास ले आकर रख दिया गया। इसके बाद लकडीके टुकडोको लिये लोग आये और उन्हें चिताके काठपर फेंक दिया। आग पहले घासमे लगी, फिर चितामे, फिर लाशमें। आग जलने लगी। इसी समय जोरकी हवा चली, जिससे आगकी लपटे धाय-धाय करके बलने लगी। मेरे पास एक रूस पुरुष खडा था। उसने मुझसे कुछ कहा। मैने दुभाषिये से पूछा—'उसने क्या कहा।' दुभाषियेने जवाब दिया—'वह कहता है, अरबके लोग (मुसलमान) मूर्ख है। वह जिस आदमीसे प्रेम करते है, उसे ले जाकर जमीनमें गाड देते है, जहा उसे कीडे-मकोडे खा जाते हैं। हम (रूस) तो उसको आगमें जला देते हैं और वह तुरन्त राइ (स्वर्ग) मे चले जाते हैं।' फिर उसने मुस्कराते हुये लम्बी हसी हसते कहा-'देखो, इसीसे खुश होकर भगवान्ने हवाको भेजा है। फिर नदीके तटपर सजाई चिताकी जगहपर श्वेत सफेदा-वृक्षके टुकडेपर उस पुरुष और रूसोके राजाका नाम लिखकर रख दिया गया।'

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि भारतमे सतीप्रथा शकोके साथ ईसवी-सन्‌के आरभमें आई। हमारे शक तथा रुसी एक ही वशके थे, यह हम बतला चुके हैं। इसीलिये दोनोकी सतीक्रियामें कितनी ही समानता देखकर आश्चर्य करनेकी आवश्यकता नही है।

४ ओलगा, ईगर-पत्नी (९४५-५७ ई०)

ईगरका उत्तराधिकारी उसका पुत्र स्व्यातोस्लाव छोटा बच्चा था, इसलिये राज्यका शासन उसकी मा ओलगाने सभाला। ओलगा स्लाव थी, इसलिये रुरिककी तीसरी पीढीमे स्व्यातोस्लाव भाषा और आकृति सबमे स्लाव था ।

५ स्व्यातोस्लाव I, ईगर-पुत्र (९५७-७३ ई०)

स्व्यातोस्लावने अपने बाप-दादोके विजय और वीरतापूर्ण कामोको और आगे बढाया। उसका सारा जीवन अभियानोमें बीता। वह कभी अपनी यात्राओमें रसदकी गाडिया नही ले जाता, अपने घोडेकी जीनका तकिया बनाकर धरतीके ऊपर सो जाता और आधे पके हुये घोडेके मासको खाता। स्व्यातोस्लावने कभी धोखा देकर शत्रुपर आक्रमण नही किया। जब किसीके विरुद्ध चढाई करता, तो पहलेसे दूतद्वारा सदेश भेज देता—'मै तुम्हारे विरुद्ध कूच करना चाहता हू।'

स्व्यातोस्लावसे पहले ही द्नियेपर-उपत्यका और इलमन सरोवरका प्रदेश कियेफ राज्यमे सम्मिलित था। स्व्यातोस्लावने पहले द्नियेपरसे पूरबमें रहनेवाली स्लाव-जातियोकी ओर ध्यान दिया और ओका-उपत्यकाके व्यातिची लोगोको जीतनेके बाद दूसरोके ऊपर आक्रमण किया। १० वी शताब्दीके साठवे सालके आसपास उसने वोल्गाके किनारेके बुल्गारो और खाजारोको हराया, फिर उत्तरी काकेशसपर आक्रमण कर वहाके कसोव्री (चिरकाम) और यासी (ओसेती) जातियोकी भी वही हालत की। ९६७ ई० में उसने दन्यूबतटवासी बुल्गारोके ऊपर चढाई की, जो अब नामके ही बुल्गार थे, नही तो भाषा, आकृति आदिमे उसी स्लाव जातिके थे, जिसका कि उनका विजेता। इस आक्रमणका यही कारण था, कि बुल्गार अपने पडोसी ग्रीक (पूर्वी रोम) सम्राट्‌पर बराबर आक्रमण करते उन्हे जबर्दस्त हारपर हार दे रहे थे। ग्रीक रोकनेमें असमर्थ थे, इसलिये उन्होने स्व्यातोस्लावको मददके लिये बुलाया। उसने बुल्गारोको पूरीतौरसे हराकर दन्यूबतटपर अवस्थित बुल्गारियाकी राजधानी पेरेया (स्लावेत्स) में स्थायी तौरसे अपनी छावनी स्थापित करनेकी योजना बनाई। स्व्यातोस्लावने कहा—'यहा यह मेरे देशका केंद्र है। यहा सभी अच्छी चीजे—सोना, कीमती कपडे, शराब और फल ग्रीकोकी ओरसे प्रवाहित होते रहते है, चेको तथा मगयारोके देशोसे चादी और घोडे एव रूसोके देशसे समूरी छाल, मधु, माम और दास-दासिया आती है।"

स्व्यातोस्लावके रूपरगके बारेमें ग्रीक ऐतिहासिकोने लिखा है—"वह कदमें मझोला—न बहुत बडा न बहुत छोटा था, उसकी भौहे घनी, आखें नीली, नाक छोटी, दाढी मुडी और सिर घुटा था। केवल खोपडीके ऊपरी भागमे लबे बाल थे। उच्च कुलका परिचायक बालोका एक गुच्छा (शिखा) उसके सिरमे एक ओर था। उसकी गर्दन मोटी, कधा चौडा, सारा शरीर सुन्दर सुडौल था। उसके एक कानमें सोनेका मणिजटित कुडल था। उसकी पोशाक एक सफेद स्वच्छ कुर्तेके सिवा और कुछ नही थी।"

रुरिक-सतानोके शासनके समय रूसके भिन्न-भिन्न स्थानोमें निम्न राजकुल थे—नवोगोरद, रस्तोफ-सुज्दल, मुरमो-र्याजन, स्मोलेन्स्क, कियेफ, चेर्नीगोफ, सेवेर, पेरेयास्लाव्ल, वोल्निन्स्क, गालित्स, पोलोत्स, तूरोफ पिन्स्क, जिनके नीचे कितने ही छोटे-छोटे ठाकुर होते थे। कालासागरके पासवाला मैदान उस समय तुर्कोके हाथमे था, जो पेचेनेग, तुर्की, बेरेन्दे, चेर्नीक्लोबुक (कराकल्पक) जैसे भिन्न-भिन्न कबीलोमें बटे थे—पेचेनेगोका देश कियेफकी भूमिसे एक दिनके रास्तेपर पडता था।

६ व्लादिमिर, स्व्यातोस्लाव-पुत्र (९७३--१०१५ ई०)

स्व्यातोस्लावको अपने अभियानोसे फुर्सत नही थी। अपनी अनुपस्थितिमें राज्यका भार उसने अपने तीन पुत्रोपर छोड रक्खा था। ज्येष्ठ पुत्र यारोपोल्क पोलेयानोकी भूमि—जिसमें कियेफ नगर भी था—का शासन करता था। ओलेगके अधीन द्रेव्ल्यानोकी भूमि थी, और नवोगोरद व्लादिमिरको मिला था। बापके मरते ही तीनो भाइयोमे झगडा शुरू हुआ। यारोपोल्क और ओलेग युद्धमें काम आये, और पूर्वी स्लावोकी भूमि व्लादिमिरके शासनमे एकताबद्ध हो गई। इसके बाद व्लादिमिरने गालिच (हालिज) के प्रदेशको अपने राज्यमे मिलाया और विरोध करनेवाले पोलोके ऊपर आक्रमण किया। व्लादिमिरने अपने पडोसी लिथुवानियोपर भी आक्रमण किये, लेकिन उसका ध्यान सबसे अधिक पेचेनेगोकी ओर था, जो कि उसकी दक्षिणी सीमापर आक्रमण करते रहते थे। उसने इन घुमतुओसे प्रतिरक्षाके लिये जगह-जगह गढिया बनवाई और वहा अपने लडाकू लोगोको लाकर बसा दिया।

ईसाई-धर्म स्वीकार—अभी तक कियेफ रूस अपने पूर्वजोके धर्मपर ही आरूढ थे। यद्यपि उनका व्यापारिक और सैनिक तौरसे भी ग्रीसके साथ घनिष्ठ संबंध था, जिसके कारण ईसाई पुरोहित भी अपने व्यापारियोके साथ उनके यहा आया करते थे। ईगरके समय भी कियेफमे ईसाइयोके कुछ गिर्जे थे। पहले ही निकोलाइ ख्रिसोवेर्द (९७९–९९१ ई०) ईसाई-प्रचारक बनाकर स्लावोमें भेजा गया था। इसमें संदेह नही कि आभिजात्य वर्गमे कितने ही ईसाई-धर्मको स्वीकार कर चुके थे, तो भी अभी अपने जनयुगके (कबीलाशाही) पूर्वजोके धर्मको रूस छोडना नही चाहते थे। जनयुगका धर्म अपने-अपने कबीलो देवताओ और रीति-रवाजोके साथ घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध रहता है। जब राज्योकी सीमा कबीलोको तोडकर आगे बढती है, तो राज्य की एकतामे कबीलाशाही धर्म बाधक होता है, फिर किसी सामन्ती धर्म को स्वीकर करनेकी जरूरत पडती है, ता कि वह राजा और भिन्न-भिन्न कबीलोवाली प्रजाके भीतर पहिले के रक्तसंबंधके टूटनेपर अपने (धर्म) द्वारा एक नये संबंधको स्थापित करे। स्लावोंसे बाहर भी राज्यविस्तार होनेके कारण अब व्लादिमिरको एक व्यापक धर्मकी अवश्यकता पडी। इसके लिये उसका ध्यान यहूदी धर्मकी ओर भी गया था—हमे मालूम है, कि खाजार खगान यहूदी धर्मके माननेवाले थे। पुरानी ऐतिहासिक परंपरासे मालूम होता है, कि ९८६ ई० में व्लादिमिरने यहूदी धर्म स्वीकार करना इन्कार कर दिया। रूसोके सगे भाई बुल्गारियावाले ईसाईधर्मको स्वीकार कर चुके थे। काला समुद्रके उत्तरी और पूर्व-उत्तरी तटपर क्रिम, खोरसुन आदि नगरोमें धनी ईसाई ग्रीक व्यापारी रहते थे, जिन्होने वहा अच्छे-अच्छे गिर्जे बना रक्खे थे। व्लादिमिरने रोम-दरबार की तडक-भडक, उसके कला-कौशल और विचार-धारा को भी देखने-सुननेका मौका पाया था। अपने पास-पडोसकी गौरांग जातियोंमें इस्लामको न फैला देखकर उसकी ओर उसका आकर्षण नही हो सकता था। इन सामान्ती धर्मोंके मुकाबिलेमें स्लावोका पुराना धर्म ओझा-सयाना-पुरोहितोका धर्म था, इसमें पुराने जनयुगीन ठाकुरोकी प्रतिष्ठा अधिक थी, जो नवजात उच्चवर्ग के लोगोको सम्मान नही देना चाहते थे, जो कि उनके लिये प्राचीन कालसे सुरक्षित था। इन्ही नये अ-कुलीन ठाकुरोने प॒ले ईसाईधर्मकी ओर हाथ बढाया। कहा जाता है, ईगरकी विधवा ओलगाने भी ईसाई-धर्म स्वीकार किया था, जो असंदिग्ध नही है। ९८७ ई० मे बिजन्तीन साम्राज्यके भीतर एक बडा विद्रोह उठ खडा हुआ था। इसी समय उत्तरसे दन्यूबके बुल्गारोने भी हमला करना चाहा, जिसपर बिजन्तीन सरकारने व्लादिमिरको सहायताके लिये बुलाया और ९८८ ई० मे व्लादिमिरके साथ संधि की। व्लादिमिरने ग्रीक-सम्राट्की बहिन अन्नासे ब्याह करनेकी इच्छा प्रकट की। सम्राट्ने इस शर्त्तपर ब्याह करना स्वीकार किया, कि व्लादिमिर ईसाई-धर्मको स्वीकार करे। उस समय कान्स्तन्तिनोपोलमें दो सम्राट् राज्य कर रहे थे, अन्ना दोनो हीकी बहिन थी। विद्रोह-दमन करनेके उपहारस्वरूप अन्ना मिलनेवाली थी, लेकिन जब काम निकल गया, तो सम्राटोने अपने वचनको पूरा करनेमे ढिलाई दिखानी शुरू की। इसपर व्लादिमिरने आक्रमण करके क्रिमिया प्रायद्वीपके खेर्सोनेस (खोरसोन) नगरको घेर लिया, और बिजन्तीनको अपना वचन पालनेके लिये मजबूर किया। उसी समय व्लादिमिरने ग्रीक-चर्चकी पद्धतिके अनुसार बपतिस्मा ले राजकुमारी अन्नासे ब्याह किया। ९८८ ई० में खोरसोनसे रानी अन्नाके साथ कियेफ लौटने पर उसने कियेफके सारे लोगोको जबर्दस्ती द्नियेपर नदीमें

डुबकी लगवा ग्रीक-पादरियोंद्वारा उन्हे बपतिस्मा दिलवाया। धर्मान्धताके पागलपनमे पुराने स्लाव-देवताओंकी मूर्तियां—जो अधिकतर काठकी होती थीं—जला दी गईं। महादेवता पेरुनकी एक मूर्ति द्नियेपरमें फेंक दी गई। इसी तरह जबर्दस्ती बपतिस्मा दिलवा थोडे ही दिनोमें प्राय सारे नागरिक रूस ईसाई बना दिये गये, लेकिन गावोंमे पेरुन-पूजकोंकी समाप्ति इतनी जल्दी नही हो पाई।

७ स्व्यातोपोल्क I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१५-१९ ई०)

व्लादिमिरके मरते ही उसके पुत्रोमे गद्दीके लिये जो भयकर संघर्ष शुरू हुआ, उसमें स्व्यातोपोल्कने अपने भाइयो—बोरिस, ग्लेब और स्व्यातोस्लाव—को मारकर कियेफकी गद्दी ले ली। इसपर पिताके समयसे ही नवोगोरदका शासक व्लादिमिर-पुत्र यारोस्लावने नवोगोरदवालोकी मददसे स्व्यातोपोल्कपर आक्रमण किया। स्व्यातोपोल्क हारकर अपने ससुर पोलन्दके राजुलके पास भाग गया। दामादकी मदद करनेके लिये पोलन्द राजुल बोलेस्लाउसने रूसपर आक्रमण किया और पश्चिमी बुगके किनारे यारोस्लावको हरा कियेफमे दाखिल हो अपने दामादको गद्दीपर बिठाया। पोलोने इतने हीसे सतोष न कर देशमे लूट-पाट मचानी शुरू की, जिसका प्रतिरोध रूसोने भी बहुत जोरसे किया। जब लूट-पाटकर नगरों और गावोंमे जाडा बितानेके लिये पोल इकट्ठा हुये, तो लोगोंने विद्रोह करके उन्हे मार डाला। बची-खुची सेनाके साथ बोलेस्लाउस् पोलन्द भागा। पोलोकी सहायतासे वंचित स्व्यातोपोल्कको यारोस्लाव और उसके नवग्रादियोंके हाथ हार खानी पडी और भागते समय वह मारा गया।

८. यारोस्लाव I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१९–५४ ई०)

यारोस्लाव अब कियेफ और नवोगोरदका महाराजुल बना, लेकिन अभी भी एक प्रतिद्वंद्वी उसका भाई म्स्तिस्लाव मौजूद था, जोकि काकेशसके समीप तमन प्रायद्वीपमे तमूतरकानका शासक था। उसने आक्रमण करके यारोस्लावसे सेवेर्स्क भूमि तथा चेरनीगोफ नगरको छीन लिया। द्नियेपर नदी दोनो भाइयोंकी सीमा बनी। १०३६ ई० में भाईके मर जानेपर सेवेर्स्क प्रदेशको फिर यारोस्लावने कियेफ-राज्यमे मिला लिया। यारोस्लावके समय ईसाई-धर्मने कियेफ-रूसोंपर पूर्ण विजय प्राप्त की, ईसाई-चर्च (धर्मसंघ) का संगठन हुआ, और कान्स्तन्तिनोपोलके महासंघराजने रूसोंके लिये एक संघराज नियुक्त किया। कियेफके पास पेचेर्स्क-मठ इसी समय बना, जिसने शासकवर्गमें शिक्षा फैलानेमे बडा काम किया।

कियेफ-राज्य अब युरोपके महत्त्वपूर्ण राज्योंमेंसे था। ग्रीक-संबंधके कारण उसका सांस्कृतिक तल भी ऊँचा हो गया था। यारोस्लाव-परिवारका संबंध अब पश्चिमी युरोपके राजघरानोंसे होने लगा था। यारोस्लावकी बहिन पोल-राजासे व्याही थी। उसके दामादोंमें फ्रांस, नार्वे और हुगरी (मगयार) के राजा थे। यद्यपि यारोस्लावने पोलन्दकी सहायतासे सिंहासन पाया था, लेकिन अब वह इतना शक्तिशाली था, कि पोलन्दके भीतरी मामलोंमे दखल देता था। बोलेस्लाउस्के मरनेके बाद पिताके राज्यमें छीने गये गालिच प्रदेशको उसने फिर ले लिया। १०४३ ई० में उसने अपने पुत्र व्लादिमिरके नेतृत्वमें एक असफल अभियान कान्स्तन्तिनोपोलके विरुद्ध भेजा। पश्चिमकी ओर बाल्तिक प्रदेशपर जर्मन आक्रमण करने लगे थे। यारोस्लावने प्रतिरक्षाके लिये यूरियेफ (एस्तोनियामें तर्तू) नगरको बसाया, और बाल्तिकके लोगोंको अपने अधीन कर लिया। उसने वोल्गाके किनारे अपने नामसे यारोस्लाव्ल नगर बसाया। दक्षिणमें पचेनेगोंसे उसका संघर्ष बराबर जारी रहा।

यारोस्लावके समयमें ही पहला कानून-ग्रंथ (विधान-संहिता) "यारोस्लाव्स्की-प्राव्दा" के नामसे संपादित हुआ, जिसपर ईसाई विजातीय कानूनोंका प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पडता है। इसी प्राव्दा (सत्य) द्वारा जनकुलों चले आते खूनका बदला लेना सारी जातिके लिये आवश्यक होनेकी जगह परिवारके सदस्यों तक ही सीमित रहते हुये रह गया—"अगर कोई आदमी दूसरेको मार डाले तो भाई का बदला भाई ले, बापका बदला पुत्र, पुत्रका बदला भाई-भतीजा-भांजा भी। अगर कोई बदला

लेनेवाला न रह जाय, तो मरे हुये आदमी के लिये चालीस ग्रिवना (दो सौ ग्रामकी चादीकी सिल्ली) देना होगा।" यारोस्लावके पुत्रके शासनकालमे वदला लेनेके विधानको ही उठा दिया गया, और इस प्रकार जनयुगकी एक पुरानी प्रथाको सामतयुगने समाप्त कर दिया।

सुव्यवस्थित रूसी चर्चके स्थापित हो जानेपर अब वाकायदा पुस्तके भी लिखी जाने लगी, वाइवल तथा दूसरे धार्मिक ग्रथोके साथ-साथ ग्रीक इतिहास-ग्रथोका अनुवाद करते, रूसी लिखित साहित्यका आरभ किया गया। यारोस्लावके समयमे ही रूसका इतिहास लिखनेका प्रथम प्रयत्न किया गया, जिसे कि उसके मरनेके वाद पेचेर्स्क-मठने सपादित किया। इसको "आरभिक-इतिहास" (नचल्नया लेतोपिस्) कहते है। इसमे राजुलोकी जीवनिया, और वहुत-सी कहानिया जमा की गई है। मूल पुस्तक अपने १११६ और १११८ के सशोधित सस्करणोके रूपमे "पुराने वर्षोका इतिहास" के नामसे अव भी मौजूद है। यारोस्लावके समयमे ही कियेफमें ग्रीक वास्तु-शास्त्रियोकी देख-रेखमे सोफिया-गिर्जे का निर्माण हुआ। विजन्तीन ढाचेको लेते हुये भी इसमे रूसी वास्तुकलाका सम्मिश्रण किया गया। ११ वी शताब्दी-की रूसी कलाकी यह सर्वोत्कृष्ट इमारत है। गिर्जेके भीतरकी दीवारोपर सुन्दर भित्ति-चित्र और फर्श-पर वढिया पच्चीकारीका काम है। उस समयके विदेशी यात्री कियेफके वैभवको देखकर उसे "कान्स्तन्तिनोपोलका प्रतिद्वद्वी" कहते थे। कियेफके नमूनेको लेकर यारोस्लावके पुत्र व्लादिमिरने नवो-गोरदमे भी उसी तरहका सोफिया-गिर्जा वनवाया।

आर्थिक ढांचा—यह कह चुके है, कि ९वी शताब्दीसे पहले रूस कृषिजीवी थे, यद्यपि नगरो और द्नियेपर-उपत्यकासे दूरके जगलोमे रहनेवाले अव भी पशुपालनपर अधिक निर्भर करते थे। अभी भी उनका राजनीतिक ढाचा वहुत-कुछ जनयुगीन था, और राजुलोको अपने लोगोकी रायका वहुत ख्याल रखना पडता था। न पसद आनेपर लोग साफ जवाव देते थे—"राजुल, हम तो नही जाते, तू अपनी लडाई जाके लड।" लेकिन ११ वी शताब्दीमे पहुचते-पहुचते जनयुगीन ढाचेके स्थानपर सामती ढाचा कायम हो गया था, जिससे जहा सामतोकी शक्ति बढी, वहा साधारण जनतामे सापत्तिक विषमता भी वढी। कुछ लोगोके पास भूमि और सपत्ति अधिक आ गई, और इस प्रकार वहुत खेतोवाले धनी जमीदारोका एक वर्ग पैदा हो गया, जिन्हे **वायर** कहा जाता था। ये राजुलोके वडे सहायक थे। इनके अतिरिक्त मठोके पास भी वहुत धन-धरती हो गई। उनके महत भी वायरोकी तरह राजुलोके समर्थक थे। अवतक धरतीपर जो वैयक्तिक नही वल्कि पचायती अधिकार चला आता था, वह खतम होने लगा। वडे-वडे शहरोके आसपास राजुलो, वायरो और मठोके गाव वस गये थे। दास अभी तक लूटकर वेचनेके ही काममे आते थे। खेतोमे काम करनेके लिये गरीव किसान और मजदूर ज्यादा लाभदायक समझे जाते थे, जिन्हें कि कर्ज खिला या दूसरी तरहसे जमीदार अपना वधुवा वना लेते थे। लेकिन अभी ११वी शताब्दीमे भी अधिकाश किसान समूहवद्ध होकर रहते राजुलोको केवल कर दे दिया करते थे। ११ वी शताब्दीके अन्ततक यह स्वतत्र किसान-समूह वहुत-कुछ अपने अधिकार खो चुके थे। वहुत दवानेमे जातीय स्वतत्रताकी भावना जव कभी जाग उठती, तो वह राजुलो और वायरोके खिलाफ विद्रोह कर उठते, या अन्यत्र भाग जाते। भागा हुआ किसान पकडनेपर दास वना दिया जाता।

"रुस्कया प्राव्दा"—यारोस्लावके समय निर्मित विधान (प्राव्दा) के आधारपर ही उसके पुत्रो और पौत्रोंके समय "रुस्कया प्राव्दा" (रूसी विधान) के नामसे एक विधान-सहिता वनी, जिसमें उन विधानोको खासतौरसे स्थान दिया गया, जिनके द्वारा जनसाधारणको जमीदारो (वायरो) और सामतो की सपत्तिपर हाथ वढानेसे रोका जाता था—खेतकी मेड तोडने और पशुओंके चुराने आदिके अपराधमे जुर्मानोका विधान किया गया। वायरका अपने दास और अर्धदास रियायापर क्या अधिकार है, इसे भी उसमे वतलाया गया। जनयुगसे खूनके वदलेमे खूनीसे सारे कवीलेको वदला लेनेका जो अधिकार चला आता था, और जिसे यारोस्लाव-प्राव्दाने केवल परिवारके व्यक्तियोतक ही सीमित कर दिया था, उसकी जगह अव "रुस्कया प्राव्दा" ने "विरा" (अर्थदड) का विधान करने उसका परिमाण चालीस ग्रिवना निश्चित कर दिया—वायरको मारनेपर यह जुर्माना दूना (अस्सी ग्रिवना) देना पडता, लेकिन

दामके मारनेपर विरा न दे केवल दाम-स्वामीको पचास ग्रिवना दे देना पर्याप्त समझा जाता था। "रुस्कया प्राव्दा"मे यह भी कहा गया है—"अगर किसी आदमीपर तलवारसे प्रहार किया गया हो लेकिन वह मरा न हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना, और घावकी चिकित्साके लिये आहत आदमीको एक ग्रिवना पानेका अधिकार होगा। अगर एक दात तोडदिया गया हो और मुहसे खून निकला हो, तो जुर्माना बारह ग्रिवना और दातके लिये एक ग्रिवना देना होगा।" मधु अब भी आयका एक अच्छा साधन समझी जाती थी और चीनी-गुडके अभावमे रूसोंके लिये वही एकमात्र मिठाईकी चीज थी। शराब बनानेमें भी उसका बहुत व्यवहार होता था, इसीलिये "रुस्कया प्राव्दा" ने विधान किया था—"अगर कोई आदमी ऐसे वृक्षको काटे, जिसमें जगली मधु-मक्खिया रहती हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना और आधा ग्रिवना वृक्षका (दाम) देना होगा।"

पहले चीजोके विनिमयका माध्यम जगलके इलाकोमे पशु-चर्म और खेतवाले इलाकोमे पशु था। इसीलिये पुराने समयमें पैसेको "स्कोत" (पशु) या "कुनी" (चर्म) कहते थे। रूसोंके पास अपना सिक्का नहीं था। अरबो, ग्रीको या पश्चिमी युरोपवालोके सिक्के उस समय रूसोमें भी चला करते थे। ११ वी शताब्दीके आरभमे ग्रीक सिक्कोकी नकल करते कियेफ रूसोने भी थोडेसे अपने-अपने सिक्के ढाले, जिनके ऊपर राजुलका चेहरा बना रहता—सिक्कोका रवाज अधिकतर नगरोमें था।

९ इज्यास्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०५४—७३ ई०)

यारोस्लावके मरनेके थोडे ही दिनो बाद रूसोकी एकता भग होने लगी और यारोस्लावके पुत्र स्वतत्र रूपसे अपने-अपने प्रदेशोपर शासन करने लगे। सबसे बडा लडका इज्यास्लाव कियेफ और नवो-गोरदका स्वामी बना। द्नियेपरके वणिक्पथपर ये दोनो बहुत महत्त्वपूर्ण नगर थे, इसलिये इज्यास्लावका स्थान बहुत महत्त्व रखता था। दूसरे पुत्र स्व्यातोस्लावको चेर्नीगोफका इलाका मिला और व्सेवोलदको पेरेयास्लाव्ल और रोस्तोफ-सुज्दल। दूसरे इलाके दूसरे राजकुमारोंके हाथोमे चले गये। पहले तीनो बडे लडके आपसमें मेलसे रहते, मिलकर शत्रुओंसे देशकी प्रतिरक्षा करते थे, कभी-कभी इकट्ठा होकर राजकाजकी बातोमे सलाह भी करते थे। १०६८ ई० मे जब कियेफके कारीगरो और किसानोंने विद्रोह किया, तो उन्होंने इकट्ठा होकर अपने बापकी "प्राव्दा" का सशोधन और परिवर्धन किया। यारोस्लावके पुत्रोंके सबसे भयकर शत्रु थे तुर्कजातीय पोलोव्त्सी—अपनी भाषामें इनका नाम दूसरा ही होगा, लेकिन रूसी उन्हे इसी नामसे पुकारते थे। यारोस्लावके शासनके खतम होनेके समय ११ वी शताब्दीके मध्यमें ही पूरबसे आकर पोलोवत्सियोंने आक्रमण करके कालासागरके उत्तरवाली मैदानी भूमिपर अधिकार कर लिया और वहा रहने पेचेनेगोको पश्चिममें दन्यूबकी ओर भगा दिया। पोलोवत्सी घुमतू पशुपाल थे। उनके बहुतसे छोटे-छोटे कबीले थे, जिनके अपने-अपने खान (राजा) हुआ करते थे। पशुओंपर निर्भर होनेके कारण वह एक जगहसे दूसरी जगह घूमा करते और समय-समयपर रूसोकी भूमिपर चढाई कर उनके पशुओं और पुरुष-स्त्रियोको पकडकर लौट जाते। उनका आक्रमण बडा ही भयकर और अचानक होता। ग्रीक लेखक उनके बारेमे कहते है—"पोलोवत्सी पलक मारते-मारते प्रकट होकर लुप्त हो जाते है। आक्रमण खतम होते ही लूटके मालसे लदे अपने घोडोको कोडोंसे मारते वह आधीकी तरह निकल जाते है, मानो वह उडती हुई चिडियाको पकडना चाहते है। तुम्हारे आख उठाकर देखनेसे पहले ही वह निकल चुके रहते है।" १०६८ ई० मे इज्यास्लाव अपने दोनो भाइयो स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदके साथ पोलोवत्सियोको दबानेके लिये गया, लेकिन बुरी तरहसे हारकर उन्हे युद्ध-क्षेत्रसे भागना पडा। इज्यास्लाव कियेफ पहुचा। पोलोवत्सियोंके आक्रमणो और लूटमार से सत्रस्त किसानोंने इकट्ठे हो इज्यास्लावसे माग की, कि हमें हथियार दो और साथ चलकर शत्रुओंसे लडो। इज्यास्लावको भय लगने लगा, कि कहीं वह हथियार मेरे ही विरुद्ध न उठाये जाय। उसके इन्कार करनेपर लोगोंने राजुलके महलको लूट और बरबाद कर, उसकी जगह उसकेद्वारा जेलखानेमे बद पोलोत्स्कके राजुल व्सेस्लावको मुक्त कर कियेफका राजुल घोषित किया। इज्यास्लाव भागकर पोलद पहुचा, जहाँसे पोल राजा बोलेस्लाउसकी सहायतासे कियेफ लौटा। व्सेस्लाव विश्वासघात करके

चुपचाप रातको पोलोत्स्क भाग गया। इज्यास्लावने लोगोसे भारी खूनी बदला लिया। पोल सैनिक कियेफ राज्यके नगरोमे जगह-जगह छावनी डालकर रहने लगे। उन्होने अपने अत्याचारोसे इतना तग किया, कि लोगोने जानपर खेलकर उनकी हत्या कर डाली।

पोलोवत्सी जैसे जबर्दस्त शत्रु सिरपर थे, तो भी यारोस्लावके बेटोकी एकता देरतक नही रह सकी। विदेशियोसे मदद लेकर इज्यास्लावने फिरसे सिंहासनपर अधिकारकर जनताके ऊपर जो अत्याचार किये, उनसे लोगोमे उसके प्रति भारी घृणा पैदा हो गई। इससे फायदा उठाकर १०७३ ई० मे स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदने आक्रमण करके इज्यास्लावको कियेफसे भगा दिया। अब स्व्यातोस्लाव कियेफकी गद्दीपर बैठा।

स्व्यातोस्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०७३--१११३ ई०)

स्व्यातोस्लाव थोडे ही दिनोतक भाईको सिंहासनसे वचित रख सका। इज्यास्लाव भागकर जर्मन-सम्राट् और रोमके पोपके पास मदद मागने गया, और अतमे पोलोकी मददसे उसने फिर अपने सिंहासनको प्राप्त किया, लेकिन वह थोडे ही समय बाद अपने भतीजोसे लडते हुये मारा गया।

यारोस्लावके पौत्रोमे भी बराबर सघर्ष जारी रहा——कभी कोई किसीको भगाता और कभी कोई फिरसे अपने राज्यको प्राप्त करता। आपसकी लडाई और पोलोवत्सियोके आक्रमणोसे देशकी हालत बहुत बुरी हो गई थी। इसीलिये १०९७ ई० मे कुछ प्रभावशाली राजुलोने ल्यूबेकमे जमा होकर सोचा——"हम क्यो रूस-भूमिको नष्ट कर रहे है?" उन्होने कहा——"हम आपसमे एक दूसरेके साथ विश्वासघात करनेका उपाय सोच रहे है। पोलोवत्सी हमारे देशका तहस-नहस करते इस बातसे प्रसन्न है, कि हम आपसमे लड रहे है। आओ, आजसे हम मेलसे रहे।" उन्होने अतमें यह निश्चय किया, कि हरएक राजुल अपने पैतृक राज्यको अपने पास रक्खे। अब कियेफ इज्यास्लावके पुत्र स्व्यातो-पोल्कके हाथमे रहा।

१० स्व्यातोपोल्क II, इज्यास्लाव-पुत्र

जब एक दूसरेके हित परस्परविरोधी हो, तो इस तरहके भावुकतापूर्ण आदर्शवादी फैसले देर तक कैसे माने जा सकते थे? हमने भिन्न-भिन्न देशोमे ऐसे अवसरोपर राजुलो और राजाओकी परिषदे होती, और उन्हें अच्छे निर्णयो पर पहुचते देखा है। पर आर्थिक स्वार्थोंकी चट्टानोके ऊपर उनके चकनाचूर होते भी देर नही लगती। स्व्यातोपोल्कको कियेफका अधिकार मिला और उसके चचेरे भाई व्लादिमिरको उसके पिता व्सेवोलदका पेरेयास्लाव राज्य मिला।

११ व्लादिमिर मनोमाख, व्सेवोलद-पुत्र (१११३-२५ ई०)

व्लादिरमिर विजन्तीन-सम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख का धेवता था। इस सम्बन्धका उसे अभिमान भी था, इसीलिये वह व्लादिमिर मनोमाख (एक-राजा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। परिषद्के उठते देर नही हुई, कि फिर राजुलोमे झगडा शुरू हो गया। स्व्यातोपोल्कने अपने एक राजुल भाई वासिल्कोको धोखेसे पकडकर उसके प्रतिद्वद्वी दाविद ईगर-पुत्रके हाथमे दे दिया, जिसने उसे अन्धा करके जेलमे डाल वासिल्कोके नगरोपर अधिकार कर लिया। इसपर व्लादिमिर मनोमाखने दूसरे राजुलोका नेतृत्व करके वासिल्कोके छुडानेके लिये आक्रमण कर उसे मुक्त कर दिया। ११०० ई० मे राजुलोकी दूसरी परिषद् हुई, जिसमें उन्होने दाविदको व्लादिमिरके सिंहासनसे वचित कर दिया। आपसी सघर्षके समय पोलोवत्सियोकी खूब बन आई, और वह रूसकी भूमिमें बहुत भीतरतक लूट-मार करने लगे। परिषद्मे मनोमाखने मिलकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान करनेका प्रस्ताव किया, जिसे मानकर सभी रूसी राजुलोने व्लादिमिर मनोमाखके नेतृत्वमे पोलोवत्सीके ऊपर चढाई की। सामूहिक शक्तिके सामने पोलोवत्सी बुरी तरहसे हारे, और विजेता रूस ढोरो, घोडो, ऊटो, लूटके माल तथा बन्दियोके साथ लौटे। ११११ ई०मे उन्होने फिर एक अभियान किया, जिसमें वह पहलेसे भी अधिक सफल रहे।

स्व्यातोस्लाव १११३ ई० मे मरा, उसके बाद ही कियेफमे विद्रोह उठ खडा हुआ, जो नगरसे दीहातमे फैलने लगा। साधारण जनताके इस विद्रोहका कारण बायरो और सूदखोरोका अत्याचार था। विद्रोहियोने शहरमे उनके घरोको लूटकर नष्ट-भ्रष्ट किया। इसके कारण बायर, महन्त और छोटे-मोटे सामन्त डरने लगे। कियेफके बनियोने व्लादिमिर मनोमाखके पास सदेश भेजा—"आओ राजुल, कियेफमे। अगर तुम नही आओगे, तो यह समझ रक्खो, कि और भी बहुत बुरी बाते होगी—साधारण लोग बायरो और मठोको तग करेगे।"

व्लादिमिरने अपने अनुचरोसहित आकर विद्रोहको दबा दिया, लेकिन केवल बलपूर्वक दबानेसे काम नही चल सकता था, इसलिये उसने जनसाधारणके ऊपर होते अत्याचारोको भी कम किया। कियेफ ले लेनेके बाद व्लादिमिरने देशको और अधिक छिन्न-भिन्न होनेसे बचाना चाहा, और दूसरे राजुलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। जो नही मानते थे, उन्हे उनके नगरोसे वचित करनेकी उसमे क्षमता भी थी, इसलिये सभी राजुलोने उसे अपने ऊपर माना। व्लादिमिरने एक बार फिर अपने पुरखोके वैभवको स्थापित कर दिया। युरोपके दरबारोमे भी व्लादिमिरकी बडी धाक थी। ग्रीक-सम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख उसका नाना ही था। उसकी एक पोती एक ग्रीक राजकुमारसे व्याही थी। व्लादिमिरकी बहिन जर्मन-सम्राट्से व्याही थी, और व्लादिमिर स्वय इगलिश-राजाका दामाद था। उस समय बिजन्तीन-राज्यमे जो गृह-कलह चल रहा था, उसमे भी उसने दखल दिया। व्लादिमिरकी सेना दन्यूबके किनारेतक पहुची, और वहा अपने दावेको प्राचीन रूस-भूमि (उस्मार्टल) पर स्थापित किया।

व्लादिमिर बडा ही निर्भीक और बहादुर पुरुष था। उसने अपने पुत्रोको फटकारते हुए एक बार लिखा था—"अपनी जान बचानेके लिये शत्रुके सामनेसे मैं कभी नही भागा और खतरेका सदा निर्भयतापूर्वक सामना करता था। बच्चो, न तुम सेनासे डरो और न पशुसे। तुम्हारा काम पुरुषोचित होना चाहिये। मैने रात या दिन, सर्दी या गर्मी कभी अपनेको आराम लेने नही दिया।" वह शिकारका बडा शौकीन था, जिसमे कई सर्तबे उसने अपनेको खतरेमे डाला। दो सर्तबे जगली बैलने उसे अपनी सीगपर उठा लिया, एक बार हरिनने सीगसे घायल किया, एक बार एक जगली सूअरने उसकी बगलसे लटकती तलवारको तोड दिया, एक भालूने उसके कपडोको फाड डाला और एक भयकर जानवरने एक बार हमला करके उसे और उसके घोडेको गिरा दिया।

व्लादिमिर केवल एक निर्भीक योद्धा ही नही बल्कि शिक्षित पुरुष भी था। राजपरिवारमे शिक्षा और सस्कृतिका अधिक प्रसार होनेसे उसे भी शिक्षित होना ही था। उसका पिता व्सेवोलद एक शिक्षित व्यक्ति था, जो पाच विदेशी भाषाओको जानता था। स्वय सुशिक्षित व्लादिमिरने विद्याके महत्त्वको दिखलाते हुए एक बार अपने पुत्रोको लिखा था—"जो तुम जानते हो, उसे न भूलो, और जो नही जानते, उसे पढो।" वह बडा स्वाध्यायप्रेमी था। अपनी सैनिक यात्राओमे भी वह सदा अपने पास पुस्तके रखता था। उसने "बच्चोकी शिक्षा"के नामसे एक दिलचस्प पुस्तक लिखी थी।

व्लादिमिर कियेफ-रूसके शासनकी अन्तिम चकाचौंध करनेवाली ज्योति था। देशमे जो बिखराव प्रारम्भ हो गया था, उसे व्लादिमिर थोडे ही समयतक रोक सका। उसके मरते ही फिर रूस-भूमि अनेक छोटी-छोटी रियासतोमे बट गई, जगह-जगह स्वतत्र राजुल शासन करने लगे। इनमेसे कुछ महत्त्वपूर्ण रियासते थी—कियेफ, चेरनीगोफ, गालिच, स्मोलेन्स्क, पोलोत्स्क, तुरोफ-पिन्स्क, रोस्तोफ-सुज्दल, र्याजन्, नवोगारद और व्लादिमिर-वोल्हुन्स्क। ये सभी राजुल स्व्यातोस्लाव-पुत्र व्लादिमिरके वशज थे। कियेफ अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखता था, इसलिये वह राजुलोकी छीना-झपटीका बराबर अखाडा बना रहा। सैनिक जीवनसे अनभ्यस्त विलासी राजुल अब कियेफका कोई ख्याल नही रखते थे। जहा व्लादिमिर मनोमाख अपने घोडे, बाज और रसोईका भी काम

अपने नौकरोंपर न छोड़ अपने हाथों करनेके लिये तैयार रहता, वहां इन राजुलोंका जीवन आरामपसंदीका था। इन्हीं बातोंके कारण राजुलोंकी शक्ति भी कम हो गई, और धनी बायर अब राजुलोंको अपनी बात माननेके लिये मजबूर कर सकते थे, इसीलिये हर बातमें वह उनकी सलाह लेते थे। राजुल अगर कोई बात अपने योद्धाओंकी सम्मति बिना करते, तो वह जवाब देते—"राजुल, तूने हमारी रायके बिना यह निश्चय किया, इसलिये हम तेरे साथ नहीं जायेंगे।" इस समय पुराने समयकी प्रभावशालिनी संस्था 'वेचे' (पंचायत) का भी महत्त्व बढ़ गया था—वेचे नागरिकोंकी पंचायत थी, जिसपर बायरों और धनी नागरिकोंका भारी प्रभाव था। जब किसी बातका निर्णय करना होता, तो घंटा बजाकर या चिल्लाकर नागरिकोंको वेचे (सभा) के लिये जमा किया जाता। अगर वेचे प्रस्तावको स्वीकार करती, तो लोग चिल्लाकर कहते—"हम सब चलेंगे और हमारे बच्चे भी।" लेकिन कभी-कभी नगरके लोग राजुलकी लड़ाईमें शामिल नहीं होना चाहते, तब कहते—"राजुल, मेल करो, नहीं तो अपनी विपता आप संभालो।" इस प्रकार १२वीं शताब्दीमें कोई राजुल वेचेकी रायके बिना किसी शत्रुके साथ युद्धसे अपनी प्रतिरक्षा करनेकी हिम्मत नहीं रखता था। राजुलके सिंहासनपर बैठनेके समय वेचे पहिले उससे अपनी शर्तें मनवाती। ऐसे भी अवसर आये, जब कि नापसन्द होनेपर वेचेने राजुलको निकाल बाहर किया और किसी दूसरे राजकुमारको यह कहकर निमन्त्रित किया—"आ राजुल, हम तुझे चाहते हैं।"

उस समय एक तरफ वेचेका अधिकार बढ़नेसे बायरों और धनिक नागरिकोंके हाथोंमें अधिक शक्ति आ गई थी, तो दूसरी तरफ बाहरी शत्रुओंसे अच्छी तरह मुकाबिला करनेके लिये रूसमें कोई मजबूत संगठित शक्ति नहीं रह गई थी। इसी समयकी स्थितिमें एक अज्ञात कवि ने "ईगर-सेना-गाथा" लिखी थी।

ईगर सेना-गाथा—कालासागरके उत्तर एक मंगोलायित घुमंतू कबीला पोलोवत्सी ९वीं-१०वीं शताब्दी में रहता था। कियेफ-रूसोंके साथ इसका बहुत दिनोंतक संघर्ष रहा। रूसी भाषाका आदिकाव्य "ईगर-सेना-गाथा" इन्हीं संघर्षोंके संबंधमें लिखा गया है। पोलोवत्सी इतने प्रबल थे, कि रूस उनसे अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ थे, जिसका एक कारण यह भी था कि, रूस स्वयं बहुतसे छोटे-छोटे टुकड़ोंमें बटे थे, जिनमें आपसमें बराबर लड़ाई होती रहती थी। पोलोवत्सी जब हमला करने आते, तो काफी प्रतिरोध नहीं कर सकते थे। इन युद्धोंका सबसे ज्यादा सत्यानाशी प्रभाव गांवोंके किसानों-पर पड़ता था। "सभी नगर और गांव निर्जन हो गये थे। हम उन खेतोंपरसे गुजरे, जिनमें कभी घोड़ों और ढोरोंके झुंड तथा भेड़ोंके गल्ले चरा करते थे। लेकिन, वहां सभी चीजें वीरान पड़ी थीं। अनाजके खेतोंमें जंगल जम गया था, जिसमें वन्य पशु रहा करते थे।" पुराने इतिहास-लेखकका कथन पोलोवत्सी-आक्रमणोंके असरको बतलाता है। पोलोवत्सी भारी संख्यामें रूसोंको बंदी बनाकर अपने साथ ले जाते थे। "आफतके मारे, भूख-प्याससे काले पड़े वे अभागे अपरिचित देशकी ओर वस्त्रहीन नंगे पैर कदम बढ़ा रहे थे। उनके पैर कांटोंसे छिल गये थे। आंखोंमें आंसू भरकर वह एक दूसरेसे कहते थे—"मैं अमुक और अमुक नगरका हूं।" दूसरा जवाब देता—"मैं अमुक और अमुक दीहातका हूं।" रूसी भाषाके इस कलापूर्ण अमर लघु-काव्यमें राजकुमार ईगरका पोलोवत्सी घुमंतुओंके साथके संघर्षका वर्णन है। १२वीं शताब्दीके अंतमें किसी अज्ञात लेखकने इसे लिखा था। सेवेर्स्क राजुलोंने तंग आकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान किया, जिसका नेता राजुल ईगर स्व्यातोस्लाव-पुत्र था। जब रूस-राजुलोंसे उसने अपने साथ आ मिलनेके लिये कहा, तो सेवेर्स्क राजकुमारोंने इन्कार कर दिया। पीछे उन्होंने अपना स्वतंत्र अभियान किया, जिसमें वह बुरी तरहसे हारे, ईगर बंदी हुआ। कविने रूस-भूमिके महान् वीरके तौरपर ईगरका चित्रण किया है—"सैनिक उमंगोंसे भरे उसने अपने सैनिकोंका नेतृत्व करते हुये रूस-भूमिकी रक्षाके लिये पोलोवत्सियोंके ऊपर अभियान किया।" ईगरने अपने सैनिकोंसे कहा—"भाइयो और योद्धाओ! बंदी बननेसे मर जाना अच्छा है। मैं चाहता हूं अपने भालेको पोलोवत्सी मैदानके छोरसे तोड़ डालूं। रूसजन! मैं चाहता हूं, तुम्हारे साथ अपने सिरको गिरा

दू, या अपने शिरस्त्राणसे दोनके जलको पीऊ ।" "काफी लोहित मदिरा वहा नही थी, रूस वीर अपने युद्ध-भोजको खतम कर रहे थे। उन्होने अपने वधुओको पान करनेका अवसर दिया, और रूस-भूमिके लिये स्वय अपने जीवनका उत्सर्ग किया।" युद्धक्षेत्रमे पडे हुये वीरोंके शवोको देखकर कौवे किस तरह अपना भोज कर रहे थे, इसे कविने कितने शक्तिशाली शब्दोमें चित्रित किया है —

"भाई भाईसे वोला—'यह मेरा है,
और यह भी मेरा है, राजुल छोटीको वडी चीज कहने लगे, विश्वासघात के लिये।
और म्लेच्छ पोलोवत्सी विजयी बनकर रूस-भूमिमे आये।"

रूस-राजुलोको एक होनेके लिये कवि कहता है —

"प्रभुओ, अपने पैरोको सुनहली रिकावोमें रक्खो,
आजके अपने ऊपर होते अत्याचार तथा रूस-भूमिके लिये,
स्व्यातोस्लाव-पुत्र वीर ईगरके घावोंके लिये।"

रूसी भाषाके इस आदिकाव्य (वीरगाथा)से रूसी साहित्यका आरभ होता है और समस्त रूसी जातिको विदेशियोके विरुद्ध एक होनेका सदेश देता है। अगली शताब्दियोने देखा, कि वह सदेश व्यर्थ नही गया। ईगरके खूनका रूस वदला चाहे पोलोवत्सीसे न ले पाये हो, लेकिन उन्होने रूसके शत्रुओंसे सदा वदला लिया। इसी काव्यके वीर नायकके नामपर रूसमें पुरुपोका सवसे अधिक प्रचलित नाम ईगर पाया जाता है। द्वितीय महायुद्धमें स्तालिनग्रादसे फासिस्तोको खदेडते हुये हजारो रूसी सैनिकोने दूनियेपरके तटपर पहुचकर अपने शिरस्त्राणोसे उस पवित्र जलको पीकर ईगरकी अपूर्ण इच्छाको पूरा किया।

ख रोस्तोफ-सुज्दल-राजुल

१२ वी शताब्दीमे जव दूनियेपर-उपत्यकाकी रूस-भूमि पोलोवत्सीके आक्रमणोका शिकार हो अपने ऐतिहासिक महत्त्वको खो वैठी थी, इसी समय उत्तर-पूर्वी रूस-भूमिमें वोल्गा और ओका नदियोके वीच रोस्तोफ-सुज्दलका एक नया राज्य स्थापित हुआ, जिसने रूसके इतिहासमें महत्त्वपूर्ण काम किया। यह भूमि कियेफ जैसी उर्वर नही थी। जगली भूमि थी, जिसमे जगली जानवर और मधुमक्खिया वहुत थी, नदियोमे मछलियोंकी वहुतायत थी, लेकिन जहातक खेतीलायक भूमिका सवध है, ऐसी भूमि वल्याज्मा नदीके तटपर ही थी। ओका और उसकी शाखा मस्क्वा नदीके किनारे रहनेवाले स्लाव जातिका नाम व्यातिची था। समय-समयपर आसपासके स्लाव भी यहा आकर वसते जा रहे थे। रोस्तोफ यहाका प्रधान नगर था, जिसका उल्लेख पहले-पहल १०वी शताब्दीमे मिलता है। इस भूमिकी दूसरी प्राचीन नगरी सुज्दल थी। यारोस्लावके शासनकालमें उसने अपने नामसे यारोस्लाव्ल नगरको ११ वी शताब्दीमे वसाया। व्लादिमिर नगरको सभवत व्लादिमिर मनोमाखने १२ वी शताब्दीमें कायम किया। इस प्रकार व्यातिचियोकी इस भूमिमें रोस्तोफ, सुज्दल, यारोस्लाव्ल और व्लादिमिर—चार नगर थे, पाचवा नगर मस्क्वा (मास्को) आगे स्थापित होकर जगद्विख्यात वननेवाला था।

व्यातिची स्लावोके पडोसमे मेरिया, वेसी और मोर्दावी रूसी-भिन्न जन-जातिया रहती थी, जिनका मुख्य काम था शिकार, मधु-सग्रह तथा थोडी-सी खेती। इनके अलग-अलग कवीलोपर अपने-अपने ठाकुर शासन करते थे। रूसियोंके ईसाई हो जानेके वाद भी यह लोग वहुत समयतक अपने जन-जातीय धर्मको मानते थे। उस समय ओका और वोल्गाके तटोपर यह काफी सख्या में वसते थे।

१२ वी शताब्दीमें रोस्तोफ-सुज्दलके इलाके तथा दूनियेपर-उपत्यकामें भी रूसी और अ-रूसी लोगोके खेतो और भूमियोको वायरो और महतोने अपने हाथमें कर लिया था और जन-साधारण बधुवाले रह गये थे—ओका और वोल्गाके वीचके लोगोको पादरियोने जवर्दस्ती ईसाई वनाया था।

१२ यूरी I दीर्घवाहू, व्लादिमिर मनोमाख-पुत्र (११५७ ई०)

१२ वी सदीके पूर्वार्धमे रोस्तोफ-सुज्दलमें एक स्वतत्र राजुलका शासन कायम हुआ था, जिसका प्रथम गद्दीधर व्लादिमिर मनोमाखका पुत्र यूरी था। यह धनी वायरोकी जमीनको जवर्दस्ती छीन लेनेमें

आनाकानी नही करता था, शायद इसीलिये उसका नाम "दोलगोरुकी"–दीर्घबाहु पडा। जहा पीछे मास्को नगर बसा, वही बायर कुचकाका गाव था। यूरीने उस गावको ले मास्को नदीके किनारे वही अपने लिये एक महल बनाया, जहापर ११४७ ई०मे उसने अपने मित्र चेर्नीगोफके राजुलका स्वागत किया था। यह गाव सुज्दल और चेर्नीगोफ दोनो रियासतोकी सीमापर था। यूरीने पहले मास्कोके चारोतरफ एक लकडीकी दीवार बनवाई, जिसे ११५६ ई० मे दुर्गके रूपमे परिणत कर दिया। यूरी अपने समयका सबसे अधिक शक्तिशाली रूसी राजुल था। उसने वोल्गा-तटवाले बुल्गारोको कई बार लडाईमें हराया और पुराने नगर नवोगोरदको अपने राज्यमें मिला लिया। कियेफपर भी अधिकार करके कियेफ-राजुल बनकर वह ११५७ ई० मे मरा।

१३ अन्द्रेइ बगोल्युबोव्स्की, यूरी-पुत्र (११५७–७४ ई०)

यूरीके पुत्र अन्द्रेइके शासनकालमे रोस्तोफ-सुज्दलकी शक्ति और बढी। उसने पडोसके कितने ही राजुलोको अपना सामंत बनाया। ११६९ ई० में उसने अपने सामन्तोकी सेनाके साथ कियेफ-पर आक्रमण किया और तीन दिनोतक उस प्राचीन नगरीको लूटा। अगले साल अन्द्रेइने नवोगोरदके ऊपर अपनी सेना भेजी, लेकिन नवोग्रादियोने उसे बहुत हानि उठाकर खाली हाथ लौटनेके लिये मजबूर किया। नवोगोरद अन्नके लिये सुज्दलपर निर्भर था। अन्द्रेइने वहा अन्नका जाना रोक दिया, जिसके कारण नवोगोरद आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर हुआ। ११६९ ई० की लूट और व्सलीलाके बाद कियेफ शताब्दियोतक सभल नही सका, लेकिन सुज्दल-राज्यका नगर व्लादिमिर अन्द्रेइकी राजधानी बनकर खूब फलने-फूलने लगा। अन्द्रेइने अपनी नई राजधानीका निर्माण पश्चिमी युरोपके कलाकारो और वास्तु-शास्त्रियोके परामर्शानुसार बडे भव्यरूपमे किया। इसी समय व्लादिमिरमें प्रसिद्ध उपेन्स्की गिर्जा बनाया गया, जिसके चित्रोमें पाश्चात्य कलाका प्रभाव दिखाई पडता है। व्लादिमिर नगरके पास बोगोल्युबोवो (भगवत्-प्रिय) उसकी दुर्गबद्ध जमीदारी थी, जहापर अन्द्रेइ अक्सर रहा करता था, इसीलिये उसको "बोगोल्युबोव्स्की" कहा जाने लगा। वह बायरोकी शक्तिको बढते नही देखना चाहता था, इसीलिये उसने कुचका जैसे कितने ही बायरोको मार भगाया और अपने दरबारियोमें साधारण जनोको रक्खा। लोग कहते थे—"राजुलकी जमीदारीमे घासके चप्पलमें घूमना बायरकी जमीदारीमे सुन्दर जूता पहनके घूमनेसे अच्छा है।" अन्द्रेइने जनसाधारणसे आये अपने दरबारियो और नगर-निवासियोकी सहायताके आधारपर रूसी रियासतोको सगठित करनेकी कोशिश की, लेकिन अभी उनके आर्थिक सबध इतने दृढ नही थे, कि यह सगठन मजबूत होता। इसीलिये बायरोका उच्छेद करना उसके लिये सभव नही हुआ। तो भी बायरोको वह बहुत असतुष्ट कर चुका था। उन्होने षड्यत्र करके ११७४ ई० में बोगोल्युबोवोके प्रासादमें चुपकेसे घुसकर अन्द्रेइको मार डाला। इसके बाद भारी लूट-पाट मची। बायर बहुत नाराज थे। वह केवल अन्द्रेइकी हत्यासे ही सतुष्ट नही हुये। उन्होने उसके भाइयोको भी वचित करके उसके भतीजोको शासन करनेके लिये निमत्रित किया। लेकिन व्लादिमिरके नागरिको और अन्द्रेइके छोटे दर्जेके अनुचरोने बायरोकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। बायरोने धमकाया—"हम व्लादिमिरको जलाकर खाक कर देंगे या वहा अपने पसद्निक (नगरपाल) अनुशासन करने के लिये भेजेंगे।" तो भी वह अपने मनोरथमें सफल नही हुये। नागरिको और साधारण जनताकी सहायतासे अंद्रेइका भाई व्सेवोलद यूरी-पुत्रने बायरोको हराकर उन्हे अपनेको राजुल स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया।

१४ व्सेवोलद, यूरी-पुत्र (११७६–१२१२ ई०)

व्लादिमिर (क्ल्याज्माटटी) राजधानी बननेके बाद अब रोस्तोफ-सुज्दल राज्यका नाम व्लादिमिर राज्य हो गया। व्सेवोलदने "व्लादिमिर-महाराजुल"की उपाधि धारण की। उसने नवोग्रादवालोंमे अपने पुत्रो और भतीजोको शासकके तौरपर स्वीकर करवाया। स्मोलेन्सकके राजुलोने भी उसकी अधीनता स्वीकार की। र्याजनके न माननेपर राजुलको जेलमें डाल अपने पुत्रको वहा

ले जाकर बैठा दिया। जब लोगोने इसका विरोध करना चाहा, तो उसने र्याज़नका बहुत तहस-नहस किया। उसकी इतनी तत्परता देखकर भी "ईगर-सेना-गाथा" के कविने व्सेवोलदके लिये कहा—

"महाराजुल व्सेवोलद अपनी नावोंके पतवारोंसे,
तू वोल्गाके पानीको बिखरा नही सकता,
और न अपने सैनिकोके शिरस्त्राणोंसे दोनको उलीच सकता।"

वोल्गाके बुल्गार अब भी शक्तिशाली थे, जिनसे व्सेवोलदने कई लडाइया लडी। पोलोवत्सीके खिलाफ भी उनकी भूमिमे उसने एक बहुत बडा अभियान किया। व्सेवोलदने सुदूर गुरजी (जार्जिया) के राजाके साथ सबध स्थापित किया और वहाके कारीगरोको बुलवाकर राजधानीमें द्मित्रोफ गिर्जा बनवाया। व्सेवोलद पिताकी तरह ही बायरोंसे घृणा करता था। अपने बहुतसे पुत्रोके कारण लोगोने व्सेवोलदका नाम "बोल्शोये ग्नेज्दा" (भूरिश कुलाय) रख दिया था। व्सेवोलदके मरनेके बाद उसके हर एक पुत्रको अलग-अलग ठकुराइया मिली, जिनकी सख्या पुत्रोंके समय पाच और पौत्रोके समय बारह हो गई। इनमे परिवारके ज्येष्ठ व्यक्तिको व्लादिमिर नगरका राज्य तथा "व्लादिमिर-महाराजुल" की उपाधि मिलती।

१५ यूरी व्सेवोलद-पुत्र (१२१२–१२३८ ई०)

व्सेवोलदके मरनेके बाद व्लादिमिरके राजुलोने ओका और मध्य-वोल्गाके बीचमें रहनेवाले रूसी-भिन्न जातियोंकी भूमिको हडपना शुरु किया। केवल मोर्दावी कितने ही समयतक और अपनी स्वतन्त्रता कायम रख सके। महाराजुल यूरीने १२२१ ई०मे ओका और वोल्गा नादियोके सगमपर निज्नीनवोगोरद (निचला नवोगोरद, वर्त्तमान गोर्की) नगर और दुर्गकी स्थापना की। यहासे रूसी राजुल मोर्दावियोकी भूमिमे लूट-मार करते थे। मोर्दावियोने अपने राजा पुरगसके नेतृत्वमें जबर्दस्त प्रतिरोध किया और एक बार उन्होंने निज्नीनवोगोरदपर आक्रमण करके उसकी बाहरी बस्तियोको जला दिया।

यूरीको प्रभुता दिखलानेका अब मौका नही रह गया था, क्योकि गद्दीपर बैठनेके समय (१२१२ई०) जो मगोल तूफान सुदूर चीनमें अपनी प्रलयलीला मचा रहा था, वह अब उसके घरमें पहुच गया। यूरी अपनी सेनाके साथ वोल्गाके उत्तरमे सित नदीके करीब वोल्गाकी एक शाखाके किनारे एक बडे मैदानमे पडा हुआ था। उसको खबर मिली, कि बुल्गार राजधानीको मगोल नष्ट-भ्रष्ट कर चुके। मगोलोका मुकाबिला करनेके लिये रूसी राजुलोका एक होना आवश्यक था, जिसके लिये वह तैयार नही थे। र्याजन मगोलोका पहला शिकार होना था, जिसके बाद यूरीकी बारी थी, लेकिन यूरीने र्याजनको सहायता देनेसे इन्कार कर दिया। मगोलोने र्याजनको दखलकर उसको भूमिसात् कर दिया। फिर व्लादिमिरपर आक्रमण करके उसे नष्टकर आसपासकी ठकुराइयोके लोगोको अपनी तलवारोंसे घासकी तरह काट डाला। एक महीनेके भीतर उन्होंने १४ नगरोको दखल किया और जलाया, मास्को भी जिनमेंसे एक था। अब (१२३८ ई०) में बा-तूके मगोल सित नदीके पासवाले मैदानमे अवस्थित यूरीकी सेनापर पडे। यूरी लडाईमें काम आया। बा-तू नवोगोरदकी भूमिपर भी बढना चाहता था, लेकिन रास्तेके जगलो और दलदलोने उसे आगे बढने नही दिया। इसके बाद मगोलोने कियेफ और सुदूर पश्चिममें गालिच-वोलोहुन्स्कके राज्यको लेते पोलन्द तथा पूर्वी युरोपके और भी कितने ही राज्योका ध्वस किया। रूसियोंके ऊपर अब मगोलोका कठोर शासन स्थापित हो गया, लेकिन मगोल जानते थे, कि सीधे शासन करनेसे किसी रूसी राजुलद्वारा शासन करना बेहतर है, इसलिये उन्होने यूरीके भाई यारोस्लावको व्लादिमिरका महाराजुल मान लिया।

१६ यारोस्लाव व्सेवोलद-पुत्र (१२३८–४६ ई०)

महाराजुलकी नियुक्ति करनेसे ही सतोष न कर बा-तूने रूसके मुख्य-मुख्य नगरोंमें अपने नगरपाल

(वसकाकी) नियुक्त किये। मगोल कर उगाहनेमे कितनी निर्दयता करते थे, इसे एक जनगीत बतलाता है—

यदि किसी आदमीके पास पैसा नही,
तो उससे वह उसका वच्चा लेते।
यदि आदमीके वच्चे न होते,
तो उससे उसकी बीवी लेते,
यदि आदमीके गृहिणी न होती,
तो उससे वह उसके शरीरको ही लेते।

एक समकालीन लेखक मगोल अत्याचारके वारेमें लिखता है —"हमारे पुरखो और भाइयोके खूनमे भूमि पानीकी तरह भीग गई, हमारे वहुतसे भाई और वच्चे वदी वनाकर (तारतार) ले गये, हमारे गावोमें जगल लग गये, हमारी कीर्त्ति धूमिल हो गई, हमारा सौंदर्य नष्ट हो गया, हमारा धन गैरोकी सपत्ति बना, हमारे श्रमका फल काफिरोके हाथमे चला गया, हमारा देश विदेशियोके हाथमे पड गया।" ऐसी स्थितिमें यदि रूसमे विद्या और सस्कृतिका ह्रास हुआ, तो कोई आश्चर्य नही। रूसी नगरोकी होली मचाते समय मगोलोने प्राचीन रूसी साहित्य और कलाकी भी होली मचा दी।

लेकिन सव तरहसे रूसियोको निरीह और निर्वल बनाते हुये भी मगोलोने उनके हाथमें एक वडा हथियार दे दिया था, वह था व्लामिदिरके महाराजुलोको दूसरे रूसी राजुलोके ऊपर मानना। यह काम उन्होने किसी परमार्थ वुद्धिसे नही किया था, वल्कि इस प्रकार समयपर नियमपूर्वक करकी भारी राशिको प्राप्त करना उनके लिये वहुत आसान हो गया था। मगोल खान अपने इसी स्वार्थके कारण व्लादिमिरके शासकको "व्लादिमिर और सारे रूसका महाराजुल" स्वीकार करते हुये उसे **यारलिक** (अधिकार-पत्र) देते थे। कर उगाहनेके लिये जो एकता कायम हुई थी, वह मगोल-शक्तिके क्षीण होनेके समय एक सवल राजनीतिक शक्तिमे परिणत हो गई।

नवोगोरद—पूर्वी स्लाव अभी भी जनयुगीन समाजहीमे थे, जवकि कियेफ-रूसकी स्थापना हुई थी। वस्तुत भिन्न-भिन्न परिस्थितियोके कारण पूर्वी स्लावोका सामाजिक विकास अपने पश्चिमी पडोसियोके वरावर नही हो पाया था। इसमें अपने शक पूर्वजोके समयसे ही चली आती उनकी स्वच्छद लडाकू वृत्ति भी काम कर रही थी। वह पशुपाल-जीवनको पूरीतौरसे छोडनेके लिये तैयार नही थे। यद्यपि ईसवी-सन्के आरभ और वादकी चार शताब्दियोमें हूणोके पहुचनेसे पहिले ही निम्न द्नियेपर आदि प्रदेशोमे स्लावोने नागरिक-जीवन स्वीकार कर लिया था, और महाराजुल व्लादिमिरके ईसाई-धर्म स्वीकार करने से वहुत पहले ही ग्रीक सस्कृतिसे उनके पूर्वज अतोका घनिष्ठ सवध स्थापित हो गया था, लेकिन अभी अधिकाश रूस जनयुगके मनोभावोको ही अपनाये हुये था। रूसी भाषाका हमारी सस्कृत और प्राकृत भाषाकी तरह सश्लेषणात्मक रह जाना—शब्द और धातुकी रूपावलियोका सस्कृत जैसे चलना—भी शायद उसी सामाजिक मद परिवर्तनके कारण हुआ। हमारे यहा ईसाकी ६ठी-७वी शताब्दीमें भाषा जहा श्लिष्ट रूपको छोड, विश्लिष्ट वन चुकी थी, वहा रूसी भाषा आज भी वहुत-कुछ श्लिष्ट है। यह कोई आश्चर्यकी वात नही है, क्योकि रूसके सामाजिक सगठनमे जनयुगीन जनतात्रिकताके भाव वहुत पीछेतक काम करते रहे। कियेफ रूसकी शक्तिके निर्वल होनेपर छोटे-छोटे राजुलोके साथ **वेचे**का प्रभाव भी इसी वातको वतलाता है। जहा दूसरे राज्योमे यह साधारण जनोकी जनतात्रिकता अपने राजुलोको अधिक स्वछदता न देनेका कारण वनी, वहा नवोगोरदके नागरिकोमे इसने आभिजात्यवर्ग के गणराज्यका रूप लिया और समय-समयपर होनेवाला वहाका राजुल पूरी तौरसे गणसभा—वेचे—के हाथमे था। नवोगोरदकी परिस्थिति ही ऐसी थी, जिसने उसे एक गणतात्रिक नगरके रूपमे विकसित होने दिया। यह स्लावोकी एक वहुत पुरानी नगरी वोल्गाके उद्गमके पास इल्मन सरोवरने पूर्वीय वणिक्पथके ऊपर वसी हुई थी। वहा हाट और मेलेका मैदान था। इसी मैदानमें नगरकी **वेचे** वैठा करती थी। पासके मुहल्लेमे मुख्यत व्यापारी, शिलपकार और मजदूर वसते थे। नगरके पूर्वकी ओर—सोफिइस्कया—मे एक दुर्ग था, जिसमें प्रसिद्ध सोफिया गिर्जा खडा था। यही नवोगोरदका वडा पादरी (विशप) रहता था।

नवोगोरद नगरसे नवोगोरद-राज्य आरभ हो जाता था, जो ओनेगा और लदोगा सरोवरो एव फिनलन्दकी खाडीतक फैला हुआ था। नवोगोरदके बायरो और व्यापारियोके जहा-तहा गाव और खेतिया (कर्मान्त) थी। उन्होने पूरबमें उरालकी पहाडियोतककी आदिम जातियोको अपने अधीन कर रक्खा था, जिनसे वह करके रूपमे बहुमूल्य समूरी छाले और चादी वसूल करते थे। व्यापार, जगल और शिकारकी उपज नवोगोरदकी समृद्धिके कारण थे। अनाजके लिये उन्हें अपने पडोसी सुज्दलपर निर्भर रहना पडता था। नवोगोरदका सबध बाल्तिक समुद्रके वणिक्पथसे था, जिसके जरिये वह युरोपके साथ व्यापार करते थे। जर्मन और स्वीड् व्यापारी भी इस व्यापारसे उनके सहभागी थे। वर्षमें दो बार जर्मन "अतिथि" व्यापारके लिये नवोगोरद आया करते थे। गर्मियोके "अतिथि" फिनलन्द खाडीसे नेवा नदी होकर नाव द्वारा आते, और जाडेके "अतिथि" बाल्तिक तट (लिवोनिया) से बर्फपर फिसलनेवाली बिना पहिये की गाडियो (स्लेज) द्वारा आते। उत्तरी युरोप और नवोगोरदसे व्यापार करनेवाली जर्मन नगरियो को १४ वी सदीमे हसे कहा जाता था। नवोगोरदके व्यापारी रूसकी चीजोको इन हसीय नगरियोके माध्यमद्वारा जहा युरोपमे पहुचाते, वहा स्वय युरोपीय वस्तुओको उनसे लेकर वह रूसके नगरोमे फैलाते। शिकारपर जीवन बितानेवाली सुदूर उत्तरकी नेन्सी नामसे प्रसिद्ध जातियोंसे (जिन्हें नवोगोरदीय लोग समायित कहते थे) कीमती समूर मिलते थे। समोयित अधिक उत्तरके तुद्रा-क्षेत्रमे रहते थे। उनसे दक्षिण तायगा भूमिमें कोमी शिकारी रहते, उत्तरी उराल की ढलानो पर युग्रा कहे जानेवाले लोग रहते थे—जो कि आजकलकी मान्सी (वोगुल) और खान्ती (ओस्तियाक) जातिया है। इनकी भूमि (जिसे बुल्गार "अधकारभूमि" कहते थे), अपने समूरी जानवरोके लिये प्रसिद्ध थी। तुद्रावाले लोगोकी मुख्य जीविका थी बारहसिंगा पालना, जल-पक्षियो और ध्रुवकक्षीय लोमडियो का शिकार करना। इन पिछडी हुई जातियोके निरकुश राजा थे नवोगोरदीय बायर और व्यापारी। उनके अत्याचारोसे कभी-कभी मजबूर होकर वह विद्रोह भी कर बैठती थी। ११८७ ई० में युग्रा लोगोने नवोगोरदके कर उगाहनेवालेको मार डाला, जिसपर कई सालतक नवोगोरदसे उनपर सैनिक अभियान भेजे जाते रहे।

नवोगोरद नगरका सबसे प्रभुताशाली वर्ग था बायरोका। सबसे अच्छी भूमि और विजित क्षेत्र उनके हाथमें थे, जिनमे वह अपने अर्धदासो और किसानोकी मददसे अधिया (पोलोविना) पर खेती कराते थे। बायर अपने असामियाको गाव छोडकर जाने नहीं देते थे। हस्तशिल्प भी यहापर बहुत उन्नत था, लेकिन शिल्पकार भी बायरो और व्यापारियोके अधीन थे। गरीब मजूरोका काम था माल ढोना और नाव खेना। इस प्रकार इस गणराज्यकी सपत्तिके मालिक थे बायर और व्यापारी। काले (चोर्निये) गरीब लोग उनके लिये अपना जीवन और श्रम भेंट करते थे। रूसी नगरोकी तरह नवोगोरदमे भी एक राजुल रहता था, लेकिन यहाकी वेचेकी शक्ति सबसे अधिक थी। १२वीं शताब्दी के प्रथम पादमे बायरो और व्यापारियोद्वारा नियत्रित वेचेने इस बातका रवाज किया, कि वहा के सभी मुख्य-अधिकारी नवोगोरदकी बायरोमसे चुने जाये। व्लादिमिर मनोमाखके पौत्र व्सेवोलदके राजुल होनेके समय ११३६ ई० में वेचेने विद्रोह कर दिया, क्योंकि व्सेवोलद कुछ अधिक स्वतत्रतासे काम लेना चाहता था। विद्रोहियोने दो महीनेतक व्सेवोलद और उसके परिवारको बदी रख फिर मुक्त कर दिया। तबसे वेचेकी शक्ति सर्वोपरि हो गई। यद्यपि नवोगोरद अपने यहा सदा एक राजुल रखता था, लेकिन जब कभी भी राजुल कुछ स्वतत्रता दिखलाने लगता, तो उसे बोरिया-बिस्तर बाधके निकल जाना पडता। वेचेके अधिवेशनके लिये लोगोको घटे बजाकर सूचना दी जाती, सभी लोग मैदानमें इकट्ठे होते। कभी-कभी एक ही समय वेचेकी बैठक तोर्गोवया और सोफिस्कया दोनो जगहोपर होती, दोनोके निर्णय कभी-कभी एक दूसरेसे भिन्न होते, ऐसी अवस्थामें दोनो वेचेका वोल्खोफ पुलके आरपार झगडा होता। इस प्रकार सारे निरकुश शासनके स्थापित होनेसे पहले ही नवोगोरदमें एक सफल प्रजातात्रिक व्यवस्था स्थापित था।

हसके सौदागर मध्यकालमें यहा व्यापार करनेके लिये नवोगोरद आते थे। १२वी शताब्दी-मे इन्होने पीटर्सकी गिर्जाके सहारे अपनी एक व्यापारिक बस्ती स्थापित की, जो कि दूसरेकी

भूमिपर अनधिकार-चेष्टा थी। उन्होने व्यापारके साथ-साथ ईसाई-धर्मके प्रचारका भी आड लिया जिसमें उन्हे रोमके पोपकी सहायता प्राप्त थी। लोग पूर्वजोकी पुरानी सस्कृतिके प्रतीक अपने धर्मको छोडकर ईसाई वननेके लिये तैयार नही थे, इसपर पोपने उनके विरुद्ध धर्मयुद्ध घोषित कर दिया। उत्तरी जर्मन व्यापारियोने लिवोनिया (बाल्तिकतट) के विजय करनेका इसे अच्छा मौका देख इसके लिये जहाज दिये। वडा पादरी नियुक्त होकर जव अपने धर्मयोद्धाओके साथ लिवोनिया आया, तो वहाके लोगोने कहा—"अपनी सेना लौटा दो। हमें तलवारसे नही, वल्कि शव्दोसे समझाओ।" लेकिन वह तो तलवारसे ईसाई-धर्मका प्रचार करने आये थे। उनके पास देशियोकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हथियार थे। लडाईमें उन्होने लिवोनियावालोको हराया, लेकिन वडे पादरीका घोडा उसे शत्रुके दलमें ले गया, जहा प्रथम विशपको धर्म-प्रचार करते हुये शहीद वननेका मौका मिला। जर्मनोने सारे देशको लूट-मारकर वर्वाद कर दिया। नये विशप अलवर्टने पश्चिमी द्विनाके मुहानेके पास १२०१ ई० में रीगा नगरको वसाया। वहा जर्मन उपनिवेशियोको वसाकर व्यापार और धर्म-प्रचार किया जाने लगा। अगले साल (१२०२ ई० में) खड्गवीरके नामसे पोपने एक नई धर्मसेना सगठित करनेकी आज्ञा प्रदान की। यह वीर अव खुलकर देश-विजय करने लगे। लोग विरोध करते, तो वह ग्रामो और नगरोको जला देते, सभी पुरुषोको मार डालते और स्त्रियो और वच्चोको दास वनाकर वेच देते। लोग भागकर जगलोमे चले जाते, जहा यह धर्मसैनिक उनको शिकार करते पकडते। एक जर्मन सम-सामयिक लेखकके अनुसार—"वह उन्हे पीटते हुये गावमे ले आते। भगोडोका पीछा करते रास्तोंमे होते उनके घरोमें घुस उन्हें वाहर घसीटकर मार डालते। जो अपनी छतो या लकड़ीके टालोपर चढकर आत्मरक्षाका प्रयत्न करते, उन्हे पकडकर काट डालते। गावसे भागते हुये लोगोको उनके खेतो में भी पीछा करते। वहासे यदि पवित्र देववनोकी तरफ भागते, तो वह देववृक्ष उनके खूनसे लाल हो जाते। पाचसौसे अधिक आदमी लडाईके स्थानमे और वहुतसे खेतोमे, रास्तोपर तथा दूसरी जगहोंमें मारे गये।" ईसाके धर्मके प्रचारका कैसा सुदर तरीका था!

जर्मन धर्मयोद्धा इसलिये भी सफल हो रहे थे, क्योकि लिवोनीय लोगोमें एकता नही थी। विशप अलवर्टके मरनेके वाद लिवोनी धर्मयोद्धाओको कई वार वुरी तरहसे हार खानी पडी, जिससे उनका धार्मिक उत्साह कम होने लगा। इसी समय एक दूसरी जर्मन धर्मसेना—त्युतोनिक आकर मौजूद हुई। यह धर्मसेना १२वी शताव्दीमें फिलस्तीनमें मुसलमानोके साथ लडनेके लिये स्थापित की गई थी, जिसे पोपने इस नये धर्मक्षेत्रमें भेज दिया। जव लिथुवानी जातिके प्रसी कवीलोकी भूमि—नीमेन और विस्तुला नदियोके द्वावे—में इन त्युतोनिक धर्मयोद्धाओके पैर पडे, तो वहा कार्ल मार्क्सके अनुसार—"१३वी शताव्दी के अन्तमे यह समृद्ध देश निर्जन भूमिमें वदल गया, गाव और जुते हुये खेतोकी जगह जगल और दलदल आ मौजूद हुये। लोगोमेसे कितने ही मार डाले गये, कितनोको वदी वनाकर ले गये और वाकी लिथुवामे भागनेके लिये मजवूर हुये।"

१२३७ ई० मे लिवोनी खड्गवीर और त्युतोनिक धर्मसेना वाल्तिक प्रदेशको जीतनेके लिये एकतावद्ध हो गई।

१७ अलेक्सान्द्र नेव्स्की, यारोस्लाव-पुत्र (१२६३ ई०)

जर्मन धर्मयोद्धाओके अतिरिक्त स्वीड व्यापारी भी नवोगोरदकी भूमिपर आख गडाये हुये थे। जर्मन धर्मवीर वाल्तिक तटको दखल कर रहे थे, और स्वीड व्यापारी फिनलन्दकी खाडीपर हाथ साफ करना चाहते थे, जिसमे कि वह पूर्वी युरोपके व्यापारके एकमात्र स्वामी वन जाये। १२४० ई० मे स्वीड राजा कौन्ट वर्गरके नेतृत्वमें नेवाके ऊपर स्वीडोने आक्रमण किया, लेकिन नेवाके मुहानेपर उनके उतरते ही नवोगोरदके महाराजुल अलेक्सान्द्रने उनपर भीषण प्रहार किया। इस समयतक वा-तू खानका राज्य पूरी तौरसे स्थापित हो चुका था, और महाराजुल अलेक्सान्द्रने वा-तूकी कृपा प्राप्त कर ली थी। राजनीतिक चाल हीमें नही, वल्कि सैनिक कौशलमें भी अलेक्सान्द्र असाधारण पुरुष था। एक समकालीन लेखकके अनुसार—"विजय करते हुये वह अजेय था।" अलेक्सान्द्रके नेतृत्वमें नवोगोरदके सैनिकोने

अद्भुत वीरताका परिचय दिया। स्वीड पूरी तौरसे पराजित हुये और वह अपने जहाजोंपर बैठकर भाग निकले। नेवा-तटपर हुई इसी विजयके उपलक्षमें अलेक्सान्द्रका नाम अलेक्सान्द्र नेव्स्की पड गया। आज भी सोवियत रूसके दूसरे नम्बरके सबसे बडे नगर लेनिनग्रादके प्रसिद्ध राजपथका नाम नेव्स्की है।

अलेक्सान्द्रने और भी लडाइया लडी, लेकिन इसके पहले एक बार उसे वेचेका कोपभाजन हो नवोगोरदसे निर्वासित होना पडा था। पर जब वाल्तिक-तटमें जर्मनोंने आक्रमण किया, तो वेचेने फिर उसे बुला लिया, और कई लडाइयोंमें उसने जर्मनोंको बुरी तरहसे हराया, जिनमें ५ अप्रैल १२४२ ई० को लडी गई "बर्फकी लडाई" निर्णायक साबित हुई। नवोगोरदके लोगोंने पाच सौ जर्मन धर्मवीरोंको मारकर उन्हें सात मीलतक खदेडा और पचास बदी बनाये। इस युद्धमें हारनेके बाद जर्मन वीरोंने फिर रूसी भूमिकी ओर हाथ बढानेकी हिम्मत नही की।

नवोगोरदवालोंने ही अपनेसे पश्चिम वाल्तिकके रास्तेपर प्स्कोफ नगर स्थापित किया था, जो १४वी शताब्दीमें नवोगोरदसे स्वतत्र हो एक गणराजीय नगरमें परिणत हो गया। स्वतत्र गणनगर होते हुये भी नवोगोरद और प्स्कोफके लोग अपनेको व्लादिमिर-महाराजुलके अधीन मानते थे। १४वी शताब्दीके प्रथम पादमें व्लादिमिर-राज्यके भीतर एक और बडा सघर्ष त्वेर तथा मास्कोके राजुलोंके बीच शुरू हो गया। यह दोनो नगर ऐसी जगह स्थित थे, जहापर मगोल मुश्किलसे पहुच पाते थे, इसीलिये दूसरी जगहोंके भी कितने ही शरणार्थी यहा आकर बस गये थे, जिसकी वजहसे दोनो नगरोंका आर्थिक विकास बडी तेजीसे हुआ। त्वेर ऊपरी वोल्गा तथा उसकी शाखा त्वेरत्साके सगमके पास बसा हुआ था। नवोगोरदसे वोल्गा होकर कास्पियनतक जानेवाले वणिक्पथको त्वेरसे होकर गुजरना पडता था। इसी व्यापारके कारण त्वेरके नागरिक बडे समृद्धिशाली हो गये थे।

मास्को नगर वोल्गामें गिरनेवाली ओका नदीकी शाखा मास्कवाके तटपर अवस्थित था। ऊपरी वोल्गासे ओकाकी ओर सीधा आनेवाला वणिक्पथ मास्कोकी भूमिसे गुजरता था। यहासे निम्न-वोल्गाकी ओर भी आसानीसे जाया जा सकता था, साथ ही दोनका ऊपरी भाग नजदीक होनेके कारण अजोफ और कालासागर होते पूर्वी युरोपका वणिक्पथ भी यहासे खुला हुआ था—क्रिमिया और कालासागरके तटपर इतालीके व्यापारियोंने अपनी बहुतसी व्यापारिक बस्तिया बसा रक्खी थीं। इन्हीं कारणोंसे मास्कोको विकासका त्वेरसे भी अधिक सुभीता प्राप्त था।

ग मास्को महाराजुल

१८ दानियल, अलेक्सान्द्र नेव्स्की-पुत्र (१२६३–१३०३ ई०)

१३वीं शताब्दीके आरम्भमें मास्कोकी एक छोटीसी रियासत थी, जिसमें मास्को नगर तथा रूजा और ज्वेनीगोरदके दो और छोटे-छोटे कस्बे सम्मिलित थे। लेकिन अब उसपर अलेक्सान्द्रका पुत्र दानियल राज्य कर रहा था, जो अपने पिताकी तरह ही योग्य और महत्त्वाकाक्षी था। १३०१ ई० में उसने मास्कवा और ओकाके सगमपर अवस्थित कलोम्ना नगरको ले लिया। १३०२ ई० में उसे पासके पेरेयास्लाव्ल राज्यका उत्तराधिकार मिला, जिसके कि अधीन पहिले मास्को था। अब मास्को ज्यादा बढ गया था, तो भी अभी वह त्वेर (आधुनिक कलिनिन) का मुकाबिला नही कर सकता था, विशेषकर इसलिए भी कि मगोल खानने वहाके महाराजुल मिखाइल यारोस्लाव-पुत्रको १४वी शताब्दीके आरम्भमें ही "ब्लादिमिर-महाराजुल" स्वीकार कर लिया था। किसी रूसी राजुलको अधिक शक्तिशाली न होने दिया जाये, इसके लिये मगोल खानोंकी यह नीति थी, कि वह कभी एकका समर्थन करते और कभी दूसरेका। उज्बेग खानने ब्लादिमिरके महाराजुलको अधिक शक्तिशाली देख मास्कोके राजुल यूरी दानियल-पुत्रका पक्ष लेना शुरू किया।

१९. यूरी III दानियल-पुत्र (१३०३–२५ ई०)

यूरीके ऊपर उज्बेग खानकी इतनी कृपा थी, कि उसने अपनी बहिनको यूरीसे ब्याह दिया और [illegible] महाराजुलके तख्तके लिये मगोल सेना साथ कर दी। उज्बेकिस्तानके मुस्लिम इतिहासकार

पक्का मुसलमान कहते हैं, तो भी राजनीतिमें वह इस तरहके व्याहको बुरा नहीं समझता था। यह भी याद रखनेकी बात है, कि पश्चिमके मंगोल शासकोंमें सभी मुसलमान नहीं हुये, बल्कि कितने ही व्याह-शादीके सम्बन्धसे ईसाई होकर रूसियोंके भीतर हजम हो गये। मंगोलोंकी सहायताके बाद भी यूरीकी हार हुई और उसकी रानी—उज्बेककी बहिन—बंदिनी बनी, और उसी अवस्थामें मर भी गई। यूरीने खानके सामने त्वेर-महाराजुल मिखाइलके ऊपर इल्जाम लगाया, कि उसने उसे जहर देकर मरवा दिया। खानने मिखाइलको मृत्युदंड दिया और यूरीको महाराजुलका पद प्रदान किया। इसी समयसे मास्कोका सितारा चमकने लगा। यूरी बहुत दिनोंतक इस पदका उपभोग नहीं कर सका और वह मिखाइलके एक पुत्रद्वारा मारा गया। उज्बेकने यूरीके हत्यारेको मरवा डाला, लेकिन मास्कोको अधिक शक्तिशाली न होने देनेके लिये अबकी महाराजुल-पदको उसने मिखाइलके पुत्र अलेक्सांद्रको प्रदान किया। पर, रूसके आर्थिक जीवनमें मास्कोकी जैसी स्थिति थी, उसके कारण पासा पलटा नहीं जा सकता था।

२० इवान I खलीता, दानियल-पुत्र (१३२५–४१ ई०)

मास्कोमें यूरीका स्थान उसके भाई इवान I ने ले लिया, जिसका नाम खलीता (पैसेका थैला) पड़ गया था, क्योंकि उसके पास बहुत पैसा था। इवान खलीता ही नहीं था, बल्कि वह बड़ा चतुर और कुटिल शासक भी था। मास्कोकी शक्ति बढ़ानेके लिये वह हर तरहके हथियारोंको इस्तेमाल करनेके लिये तैयार था। उस समय रूसी संघराज व्लादिमिर नगरमें रहता था—कियेफके नष्ट हो जानेके बाद संघराजकी गद्दी यहीं चली आई थी। यूरीने कोशिश की थी और इवान खलीताने भी कोशिश करके संघराज पीतरको इस बातके लिये राजी कर लिया, कि वह अपनी गद्दीको व्लादिमिरसे मास्को ले आये। तबसे मास्को रूसके सबसे बड़े धर्माचार्यकी राजधानी बन गया, जिससे मास्कोकी शक्ति बढ़नेमें बड़ी सहायता मिली। अब धार्मिक बहिष्कारकी धमकी देनेसे छोटे-मोटे राजुल भी मास्कोकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार हो जाते। धर्मराजका कोश भी मास्को-राजुलकी सहायता करनेके लिये तैयार था। इवान खलीता मंगोल खान, उसकी खातूनों और अनुचरोंपर सोनेकी वर्षा करनेके लिये तैयार रहता था, फिर वह क्यों न उसके पक्षमें होते? १३२७ ई० में खानने अपने दूत चोलखानको एक बड़ी मंगोल सेनाके साथ त्वेरके विरुद्ध भेजा। मंगोलोंने नगरको लूटना शुरू किया, इसपर लोगोंने विद्रोह कर दिया और चोलखान तथा उसके सैनिक खतम कर दिये गये। इवान खलीताने दौड़कर खानके पास पहुँच त्वेरको दंड देनेके लिये अपनी सेवायें पेश कीं। खानने उसे एक बड़ी मंगोल सेना दी। इवानने त्वेरपर आक्रमण करके उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। त्वेरके महाराजुल अलेक्सांद्रने भागकर प्स्कोफमें शरण ली। संघराजने प्स्कोफवालोंको धार्मिक बहिष्कारकी धमकी दी। उनसे सहायता न पा महाराजुल लिथुवानिया भाग गया। पीछे वह त्वेर लौटा और खानने भी उसे क्षमा कर दिया, पर पीछे फिर इवान खलीताकी चालोंमें पड़कर खानने उसे ओर्दूमें बुलवाकर मार डाला। मास्को-राजुलका मनोरथ सिद्ध हुआ और १३२८ ई० में उसे महाराजुलका पद मिल गया। यही नहीं, सारी रूस भूमिसे कर उगाहनेका इजारा भी खानने खलीताको दे दिया। खलीता समयसे पहले ही नगद कर बेबाक करनेके लिये तैयार रहता था, फिर खान क्यों नहीं वैसा करता? इवान खलीताने अपने शत्रुओंको दबाने तथा मास्कोकी शक्तिको बढ़ानेमें किपचक (मंगोल) खानका खूब इस्तेमाल किया। उसके मरते समयतक मास्को राज्य काफी विस्तृत हो चुका था, और उसका प्रतिद्वंद्वी त्वेर अपनी समृद्धिके बहुतसे साधनोंको खो चुका था। अब सारी मास्क्वा-उपत्यका (कलोम्नासे मोजाइस्कतक) मास्को-महाराजुलकी थी—मास्को-साम्राज्यकी नींव पड़ गई।

२१ सेमेओन, इवान I-पुत्र (१३४१–५३ ई०)

खलीताके मरनेके बाद महाराजुल पद उसके पुत्र सेमेओनके हाथमें रहा।

२२ इवान II, इवान I-पुत्र (१३५३-५९ ई०)

भाईके बाद इवान I गद्दीपर बैठा, फिर उसका पुत्र दिमित्रि मास्कोका स्वामी बना।

२३ दिमित्रि दोन्स्की, इवान II-पुत्र (१३५९-८९ ई०)

महाराजुलको तरुण देखकर पडोसी राजुलोने मास्को-राज्यपर हाथ फेरना चाहा, लेकिन दिमित्रिके पीठपर अब सघराज अलेक्सी और मास्कोके वायरोका हाथ था। जिनके प्रयत्नसे खानने दिमित्रिको महाराजुलका पद प्रदान किया। वायरोने वालक दिमित्रिको घोडेपर चढाकर प्रतिद्वद्वी सुज्दल राजुलपर आक्रमण कर दिया और हाथसे निकल गये व्लादिमिर-नगरपर फिर अधिकार कर लिया। दिमित्रिके ३६ वर्षके शासनमें मास्कोकी शक्ति वहुत वढी, जिसमें एक कारण (मगोल सुवर्ण-ओर्दूकी) शक्तिका कमजोर होना भी था। १३६६ ई० में दिमित्रिने मास्कोको पत्थरकी दीवारोंसे दुर्गवद्ध किया, इससे पहले उसके चारो ओर वजकी लकडीका नगर-प्राकार था। उसने त्वेर, र्‌याजन और निज्नीनवोगोरोदके राजुलोपर जवर्दस्त आक्रमण किये, जिसपर उसके शत्रुओने लियुवन राजा ओलिगर्दसे मदद ली, और तीन वार मास्कोके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन मास्को अजेय सावित हुआ। पादरी, सघराज अलेक्सी और वायर सब तरहसे मदद देनेके लिये तैयार थे। मास्कोने कोमी जातिके लोगोको अपने अधीन कर उन्हें ईसाई वनानेका प्रयत्न किया। ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ मास्कोकी शक्ति वढती गई। शक्तिके मदमें मास्कोने मगोलोंमे भी छेड-छाड शुरू की। अब मगोलोका सुवर्ण-ओर्दू छोटे-छोटे खानोमें वट चुका था, जिनमें सबसे शक्तिशाली ममाईखान था। मास्कोकी इस छेडखानीको मगोल कैसे वर्दाश्त करते? ममाईने १३७८ ई० में र्‌याजनपर आक्रमण करनेके लिये एक तारतार सेना भेजी, जिसका लक्ष्य था मास्कोकी ओर वढना। लेकिन ममाईकी सेनाको वोझा नदीके किनारे भारी हार खानी पडी। ममाईने अब लियुवानी राजा जागिएलोसे समझौता किया और स्वय एक वडी सेना लेकर लडनेके लिये आगे वढा। र्‌याजनके राजुलने अपने प्रतिद्वद्वी मास्कोके महाराजुलके विरुद्ध ममाईसे मेल कर लिया। इधर महाराजुल दिमित्रिने भी डेढ लाखकी सेना एकत्रित कर ली थी। जातीयताके जोशमें आकर सारी रूसमें रूसी राजुलके झडेके नीचे इकट्ठा हो गये थे। यही नही, राजा ओलिगर्दके दो लियुवानी राजकुमार भी वेलोरूसी और लियुवानी सैनिकोंके साथ ममाईसे युद्ध करनेके लिये आये। दिमित्रिने अपनी सेनासहित ओकापार हो दोनके किनारे पहुच युद्ध-परिषद् वुलाई। कुछ लोगोकी राय थी "दोनके पार जाओ राजुल" और दूसरे कह रहे थे "मत जाओ, वहा वहुत शत्रु है।" दिमित्रि मना करनेवालोकी वात न मान दोनपार हो गया। ८ सितम्बर १३८० ई० को कुलिकोवोका भीषण और निर्णायक युद्ध हुआ। कुलिकोवोका युद्धक्षेत्र नेप्र्याद्वा नदी और दोनके सगमपर अवस्थित था। युद्ध भीषण हुआ, यहा सैनिकोंकी धरती खूनसे लाल हो गई, जहा जगह-जगह लाशें पडी थी। तारतारोको पहले कुछ सफलता हुई, लेकिन इसी समय छिपे हुये रूसी सैनिकोने अपना पीछा करते तारतारो पर पीछेकी ओरसे आक्रमण कर दिया। ठीक समयपर हुये इस जवर्दस्त प्रहारसे तारतारोकी पूरी हार हुई। वह जान वचानेके लिये भाग निकले और रूसी सवारोने पीछा करके उनके शिविरको लूट लिया। दोनतटपर हुये इसी युद्धके विजयके उपलक्षमें दिमित्रिको "दोन्स्की" (दोनवाला) कहा जाने लगा।

इस लडाईके थोडे दिना वाद तोख्तामिशसे लडते हुये ममाई मारा गया। उसके वाद तोकतामिशने १३८२ ई० में अचानक मास्कोपर आक्रमण कर दिया। महाराजुल दिमित्रि तैयार नही था, इसलिये सेना जमा करनेको वह उत्तर चला गया। वायरोने भी जान लेकर भागना चाहा, इसपर मास्कोमे विद्रोह हो गया। स्वतत्रता-प्रेमी नगरवासियोने क्रेमलिन (दुर्ग) के फाटकपर पहरेदार वैठा दिये, [illegible] महाराजुलानी और सघराजको अनिश्चित कोई नगरसे वाहर न जाने पाये। तोकतामिशकी सेनाने [illegible] आक्रमण किया। नागरिकोने उसका पूरा प्रतिरोध किया। तीन दिनतक लडाई करनेके वाद भी [illegible] तोकतामिशने उनसे [illegible] सुनाया दे नगरके दरवाजेको खुलवाया और [illegible] किया। इसके वाद रूसी लोग फिर खिराज दाखिल कर देने लगे। यद्यपि कुलिकोवोके युद्धने [illegible] इसे मुक्त नही कर दिया, किन्तु उनके मनमें अव यह भाव पैदा हो गया था, कि [illegible] मगोलोको [illegible] मुकाविला कर सकते है।

२४. वासिलीI, दिमित्र-पुत्र (१३८९–१४२५ ई०)

पिताके कामको पुत्रने और आगे बढाया। वासिलीने निज़्नीनवोगोरदको ले लिया।

२५ वासिली अध II वासिली I-पुत्र (१४२५–६२ ई०)

वासिलीके पुत्र वासिलीको अपने मनोरथमें अधिक सफलता प्राप्त करनेमें सबसे भारी बाधा पारिवारिक सघर्ष था। उसका चचा यूरी स्वय महाराजुल बनना चाहता था। खानने वासिलीको जब यह पद प्रदान किया, तो दोनोमें खुला सघर्ष शुरू हो गया, जो बीस सालतक जारी रहा। इस सघर्षमें कितनी ही बार मास्को एक हाथसे दूसरे हाथमे जाता रहा। एक बार वासिली तीर्थयात्राके लिये त्रोयत्सा गया हुआ था, उसी समय उसके प्रतिद्वद्वी राजुल शेम्याकाके सिपाहियोने उसे पकडकर मास्कोमें ले जा अधा कर दिया, जिसके कारण उसका नाम त्योम्नी (अध) पड गया। वासिलीने फिर जल्दी ही अपने राज्यको प्राप्त कर लिया, और उसके बाद उसकी शक्ति फिर बढी।

१४ वी सदीके अन्तमे रूसमे ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ विद्याका प्रचार भी कमसे कम उच्च वर्गमें काफी था, लेकिन अध वासिली "निर्ग्रंथ और निरक्षर" था, जिससे सिद्ध है, कि अभी रूसी सामन्तवर्गमे विद्याकी उतनी अवश्यकता नही मानी जाती थी।

५. (२।१।४)

मास्को-राज्यविस्तार

(१२२६-१४६२ ई०)

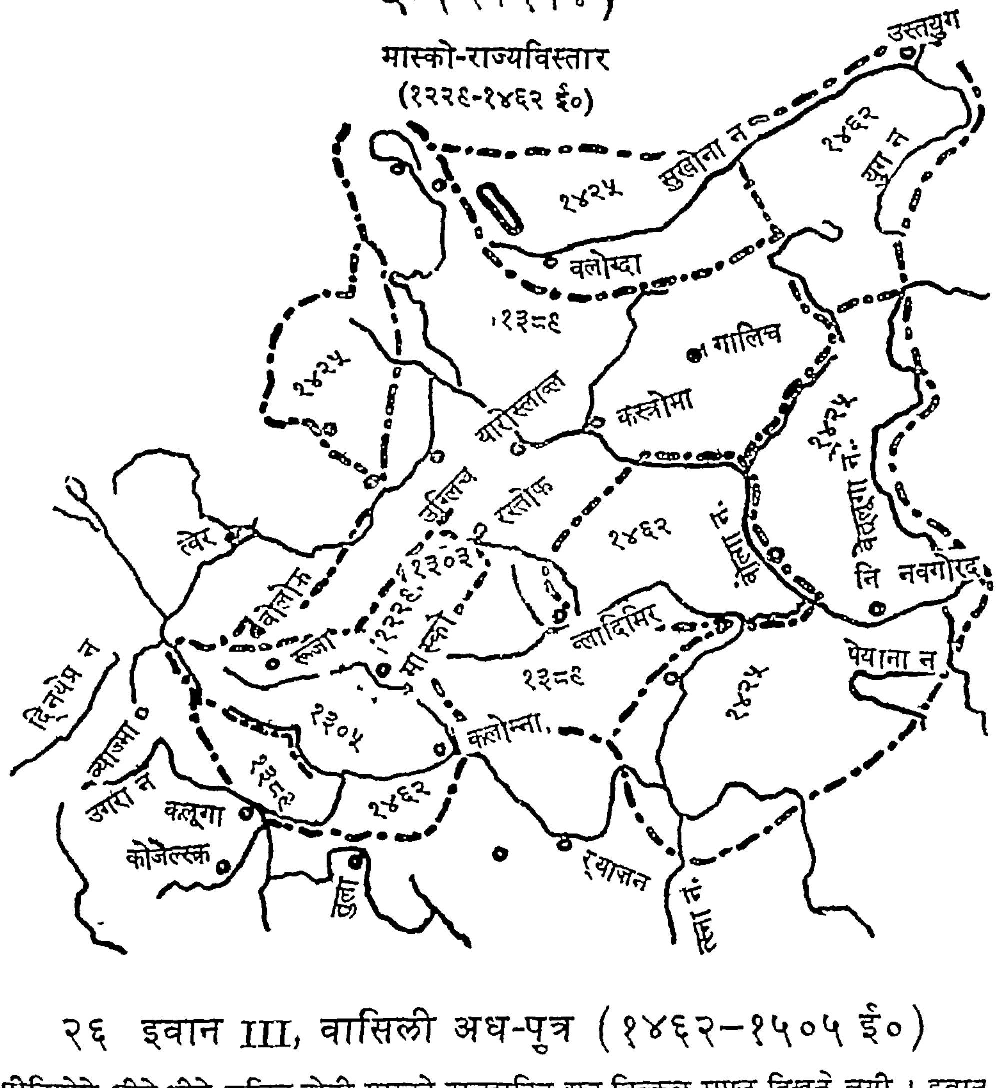

२६ इवान III, वासिली अध-पुत्र (१४६२–१५०५ ई०)

पीढियोसे धीरे-धीरे सचित होती मास्को-राजशक्ति अब बिल्कुल स्पष्ट दिखने लगी। इवान III सारे उत्तर-पूर्वी रूसका एक सुसगठित राज्य बना लिया। नवोगोरद अभीतक मास्कोसे अपनेको स्वतत्र

भी इवानने अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। उसने उरालकी ओर भी कई अभियान भेजे। १५०० ई० मे इवानकी सेनाने उराल पर्वतश्रेणी अर्थात् युरोपकी सीमासे पार हो एसियाकी सीमामे पैर रक्खा। वहाके निवासी नेन्सी अब मास्कोके करद बन गये। राज्यविस्तारके प्रयत्नमें कितनी ही बार उसे बाधाका भी सामना करना पडा, लेकिन बाधाओंके होते भी इवान आगे बढनेमे सफल रहा। सैनिक-शक्ति तो उसकी प्रबल थी ही, किन्तु उससे भी अधिक उसकी कूटनीति काम कर रही थी। क्रिमिया और साइबेरियाके तारतारोको सुवर्ण-ओर्दूके अवशेषमे भिडाकर उसने अपना काम निकाला।

मास्को नगरी जहा एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानी हो गई थी, वहा वह व्यापारका भी सबसे बडा केंद्र थी। जाडोमें बर्फ बनी हुई मास्क्वा नदीके ऊपर व्यापारी अपनी दूकानें रखते थे। एक युरोपीय यात्रीने उस समयका वर्णन करते हुये लिखा है—"सारे जाडेभर अनाज, मास, सूअर, ईंधन, भुस और दूसरी आवश्यक चीजे बेचनेके लिये वहा लाई जाती है। नवम्बरके अन्तमे मास्कोके पास-पडोसके लोग अपनी गायो और सूअरोको मारकर नगरमे बेचनेके लिये लाते है। यह बडा आनन्दका दृश्य होता है, जबकि बर्फके ऊपर चमडे निकाले हुये जानवरोको बहुत भारी परिमाणमे अपने पैरोपर हम खडा देखते है।"

इवान III ने मास्कोको एक बडी अन्तर्राष्ट्रीय शक्तिमे परिणत कर दिया। उसने शासन, सेना, और कोशको जहा केंद्रित कर दिया, वहा सैनिक हथियार और कौशलमे भी बहुत वृद्धि की। इवानने पश्चिमी युरोपसे कारीगरोको बुला तोपे ढलवाकर रूसी तोपखानेको मजबूत किया। उसकेद्वारा स्थापित रूसी तोपखाना तबसे ही दुनियाका सबसे शक्तिशाली तोपखाना बन गया, जिसे सोवियत-कालमें भी रूसने अक्षुण्ण रखा—हिटलरकी सेनाओंको भगानेमे रूसी तोपोका काफी हाथ रहा। इवानको अब सभी राजा अपनी उच्च दिरादरीमें सम्मिलित करनेके लिये प्रस्तुत थे। जर्मन-सम्राट्ने राजाकी उपाधि देनी चाही, लेकिन इवानने "मुझे उसकी अवश्यकता नही" कहकर लेनेमे इन्कार कर दिया। पोपने भी उसकी ओर मित्रताका हाथ बढाया। वेनिसके धनी गणराज्य तथा पश्चिमी युरोपके दूसरे व्यापारी कालासागर और क्रिमिया होते मास्को पहुचने लगे। इवानने पश्चिमी युरोपसे तोप ढालनेके लिये ही कारीगर नही मगवाये, बल्कि वास्तुशास्त्री तथा शिल्पशास्त्रियोको भी बुलाया।

इवानके प्रभावको बढानेके लिये इसी समय एक और भी अच्छा मौका मिल गया। ईसाई धर्म कैथोलिक और अर्थोदक्स दो सम्प्रदायो (चर्चों) मे विभक्त है, जिसमे कैथोलिक पोपका केंद्र रोम नगर है और ग्रीक अर्थोदक्स चर्चका महासघराज कान्स्तन्तिनोपोलमे रहता था। १४५३ ई० म तुर्क सुल्तानने कान्स्तन्तिनोपोलपर अधिकार करके पूर्वी रोमक (बिजन्तीन) साम्राज्यको खतम कर दिया। तुर्कोंका राज्य कालासागर-तट, काकेशस और बलकानमे दन्यूब नदीके किनारे वीना नगरके पासतक फैल गया। वेनिस और पोपकी मध्यस्थतासे इवानन अन्तिम ग्रीक सम्राट्की भतीजी सोफिया पाल्नेओलोगससे व्याह किया। वेनिस और रोमको आशा थी, कि इस प्रकार वह इवानकी शक्तिसे तुर्कों-को खतम करनेमे सफल होगे, लेकिन इवान किसीका हथियार बननेके लिये तैयार नही था। क्रिमियाके खानोद्वारा इवानने तुर्कोंके साथ सम्बन्ध स्थापित किया। ईरानसे भी उसने सम्बन्ध स्थापित किया। इस प्रकार मास्कोके व्यापारी कान्स्तन्तिनोपोल और ईरान तककी यात्रा करने लगे। इन्ही व्यापारियो में त्वेर (कलिनिन) नगरका अफनासी निकितिन भी था, जिसने १४६७–७२ ई० में ईरानके रास्ते समुद्रद्वारा भारतकी यात्रा की थी। अफनासीने अपना यात्राविवरण "खोज़ेनिये ज़ा-त्रि-मोर्या" (तीन समुद्रो पारकी यात्रा) लिखकर हमारे लिये छोडा है।

अफनासीकी भारतयात्रा—त्वेरके रूसी सौदागर निकितिन अफनासीने "तीन समुद्रो पारकी यात्रा" की थी। वह वास्को-द-गामाके भारत पहुचने (१४९८ ई०) से ३२ वर्ष पहिले हिन्दुस्तानमे आ बहमनी (बीदर) सुल्तान मुहम्मदशाह III (१४६२–८२) के राज्यमे ६ वर्ष (१४६६-७२ ई०) तक रह रूस लौट स्मोलेन्स्कमें मर गया। उसके यात्रा-विवरणके कुछ अंश है —

मैं पवित्र स्पास (त्राता)के गिर्जेसे महान् राजुल मिखाइल बोरिसपुत्र और त्वेरके प्रधान पादरी गेन्नादीकी कृपामयी अनुमति प्राप्तकर रवाना हुआ। वोल्गा नदीसे चलकर पवित्र शहीद बोरिस और ग्लेबके 'जिवो नचाल्नया त्रोइत्जा' (जीवनप्रदायक त्रिमूर्ति) के पवित्र मठमे पहुचा। साधु मकरी और उनके भाइयोंने मुझे आशीर्वाद दिया। (फिर) मैं उगलिच गया। उगलिचसे कोस्त्रोमा (त्वेर) के राजुल अलेक्सान्द्रके पास पहुचा। सारे रूसके शासकने मुझे स्वतत्र जीवन प्रदान किया। इसी तरह मुझे निज्नीनवगोरदमें उसरक्षक मिखाइल किस्लेफ और जकात-अफसर इवा साराके पास जानेकी अनुमति मिल गई।

मझसे पहले ही वासिली और पापी (मैं) चल पडे थे। फिर भी मुझे (निज्नी) नवोगोरदमें शाह शिरवानके तातार राजदूत हसनबेगके लिये प्राय दो सप्ताह रुकना पडा। वह महाराजुल इवाके पास नब्बे बाज लेकर आया था। मैं जहाजपर चढ उसके साथ वोल्गाकी राह चला और कुशलपूर्वक कजान, ओर्दा, ओसलान, सराइ और बेरेकेजाम लाघ गया।

हम बुजान नदीमें पहुचे। वहा हमे तीन बदमाश तातार मिले। उन्होंने हमें गलत खबर दी, कि सुल्तान कासिम सराइ तीन सौ तातारोके साथ पडा सौदागरोकी राह देख रहा है। शिरवानके राजदूत हसनबेगने उनमेसे प्रत्येकको तीन-तीन मलमलके थान दिये, जिसमे वे हमे अस्त्राखानके आगेतक पहुचा दे। मैं अपना जहाज छोडकर अपने साथियोके साथ राजदूतके जहाजपर सवार हो गया। हम अस्त्राखान पास रहे थे, (आकाश में) चाद चमक रहा था, इसी समय वहाके हाकिमने हमे देख लिया। उसे तातारोने चिल्लाकर कहा—भागना मत! और उसने हमारे पीछे अपने सिपाही छोड दिये। बुगुन पहुचते-पहुचते उन्होने हम पापियोको पकड लिया, और हममेंसे एकको गोली मार दी। हमने भी उनके दो आदमी मार डाले। हमारे छोटे जहाजको वहा रोककर उन्होने लूट लिया और मेरा सारा सामान नौकाके साथ ही उनके कब्जेमे चला गया।

बडी नौकासे (भागकर) हम समुद्र-तटतक पहुचे, लेकिन (हमारी) नाव वोल्गाके मुहानेपर जमीनपर लग गई। तातार वहा हमसे आ पकड कर और नावको पानीमें खींच ले गये। उन्होने (हम) चार आदमियोंको कैद कर लिया और बाकियोको समुद्रकी ओर भगा दिया। वह हमे बहावके विरुद्ध जाने नही देते थे, जिसमे हम उनके खिलाफ खबर न दे दे।

अब हम दो नावोमे दर्बन्द (कास्पियन) समुद्रकी ओर चले। एकमे राजदूत हसनबेग, हम रूसी और तेजिक लोग—कुल दस आदमी थे और दूसरीमें छ मास्कोके और छ त्वेरके निवासी चल रहे थे। इस सामुद्रिक यात्रामें हम तूफानमे पड गये और तटमें टकरा जानेसे छोटी नावके लोगोको केताकोने पकड लिया।

हम कोइतुलमे शिरवान शाहके पास पहुचे । हमने उससे वडी मिन्नत की, कि वह हमपर दया करे और हमारे रूस लौटनेमे मदद करे , पर हमारी सख्या वहुत थी । उसने हमे कुछ न दिया । वहुत रो-धोकर हममेसे हर एकने अपनी राह ली । जिनको रूसमे काम था, वह रूस चले गये, कुछ उधर जिधर उनकी आखे ले गई गये, कुछ शेमाखमें ही पडे रहे और कुछ काम करने वाकू चले गये ।

मै फिर दरवन्दसे वाकू गया, जहा कभी नही वुझनेवाली अग्नि (ज्वालामाई) सदा जलती रहती है । वाकूसे मै समुद्रकी राह चपकुर जा वहा छ महीने रहा । फिर जाकर माज़न्दरानके मुल्कमे सारामे एक महीने रहा । उसके वाद मै आमूल गया और वहा एक महीने रहा । फिर आमूलसे मै देमावन्द गया और देमावन्दसे रै (तेहरान) । यही मुहम्मद (पैगम्वर) के पोते और अलीके वेटे शाह हुसैनकी हत्या हुई थी और उसके शापसे सत्तर नगर नष्ट हो गये थे । रैसे मै गज़ान आया और वहा एक महीना रहा । गजानसे नाइन और नाइनसे येज्द (उयेज्द), जहा मै एक महीना ठहरा । येज्दके वाद मै सिर्दजान आया और फिर तारूम, जहा मवेशियोको चारे 'अल्त्वीन' के वदले खानेको खजूर देते है ।

तारूमसे मै लार गया और लारसे वन्दर । यही ओरमुज्द (ओर्मुज) का वन्दर है । फिर भारतीय सागर, जिसे फारसीमे हिन्द-समुदर कहते है । ओरमुज वन्दरसे समुद्र केवल चार मील है ।

हिन्दू मास नही खाते, न तो वाझ मवेशीका, न भेडका, न मुर्गे-मुर्गियोका और न मछलीका । वह सूअर भी नही खाते, यद्यपि देशमे सूअरोकी वहुतायत है । दिनमें वह दो वार भोजन करते है, और रातमें कुछ नही खाते । वह शराव नही पीते और न दूसरा ही ऐसा पेय, जो नशा कर दे । वह मुसलमानोके साथ नही खाते-पीते । उनका भोजन अच्छा नही होता । वह आपसमें भी एक दूसरेके साथ नही खाते-पीते, (यहातक कि) अपनी पत्नियोके साथ भी नही (खाते) । वह चावल और रोगन (घी) मिली खिचडी और अनेक प्रकारकी सव्जिया खाते है, जिन्हे वह रोगन (घी) या दूधके साथ पकाते है । वह दाहिने हाथसे खाते है, वायें हाथसे कुछ नही खाते । वह चम्मचका इस्तेमाल नही जानते । सफरके समय हर आदमी अपना भोजन (खीर) आप पकाता है । भोजनके समय वह पर्दा कर लेते है, जिसमे मुसलमान उनका खाना न देख ले । अगर मुसलमान खाना देख ले, तो हिन्दू उसे नही खायेगे । खाते समय वह अपनेको कपडेसे भलीभाति ढाक लेते है, जिसमें कोई उन्हें देख न सके ।

रूसियोकी ही भाति हिन्दू भी पूर्वकी ओर मुह करके प्रार्थना करते है । वह दोनो हाथ ऊपर उठाकर सिरपर रख लेते है, फिर जमीनपर पड जाते है, यही उनका प्रणाम (साष्टाग प्रणाम) करना है । भोजनके पहले उनमेंसे कुछ (लोग) अपने हाथ-पाव धोते है और कुल्ला करते है । देवालयोमें कोई दरवाजा नही होता, उनका रुख पूर्वकी ओर होता है—कुछ मूर्तियोका मुख उत्तरकी ओर भी होता है । जव हिन्दुओमें कोई मर जाता है, तो उसके शरीरको जलाकर राखको पानीमे डाल देते है । जव किसी औरतके वच्चा होता है, तो पति उसे ले लेता है । लडकेका नामकरण पिता करता है और लडकीका माता । उनके आचार-व्यवहार अच्छे नही है और न उनमें कोई शर्म है । मिलते और अलग होते समय वह ईसाई साधुओकी भाति अपने दोनो हाथ जमीनकी ओर कर लेते है, कुछ वोलते नही ।

दावुलसे कालीकट २५ दिनका रास्ता है, कालीकटसे सिंहल (लका) १५ दिनका । सिंहलसे जावत (जावा) १ महीनेका, जावतसे पेगू (वर्मा) २० दिनका, पेगूसे चीन और महाचीन फिर एक महीनेका । यह सारी यात्रा समुद्रकी राह है । चीनसे खिताईकी यात्रा खुश्कीसे छ महीनेकी और समुद्रसे चार दिनोकी है । भगवान् मेरी रक्षा करे ।

वीदरमें तीन दिनो तक चाद प्राय पूरा चमकता है । हिन्दुस्तानमे गर्मी वहुत नही है । ओर्मुज और वहरैनमे—जहा मोती निकलती है—वडी गर्मी पडती है, जद्दा, वाकू, अरव, मिस्र और लारमें भी । खुरासानमे गर्मी इतनी ज्यादा नही, लेकिन चगताई (मध्य-एसिया) में वहुत है । शीराज, यज्द और कजानमे गर्मी है, पर वहा जोरकी हवा चलती है । गीलानमें वडी गर्मी है, वहुत पसीना निकलता है । वावुल, खुम्स और दमश्क भी गरम है । अलेफ इतना गरम नही । शेवास्त और जार्जियामे सभी कुछ वहुतायतसे मिलता है । वैसे तुर्कीमे भी सव चीजोकी वहुतायत है । रूमानियामें फल वहुत है और खानेकी सभी चीजें

गर्मी है। पोदोलियामें फल सब जगहोंसे अधिक होते हैं। भगवान् इसकी रक्षा करे, भगवान् उसे बचाये। इस संसारमें इसके समान (अच्छा) कोई दूसरा मुल्क नही, यद्यपि वहाके बायर अच्छे नही हैं। परन्तु इसकी भूमि बनाई जा रही है, उससे बड़ी भलाई होगी। मेरे भगवान्, भगवान्, भगवान्, भगवान् (बोग् मोइ)।

हे मेरे भगवान्, मेरी आशाये तुझपर लगी हैं। मेरे भगवान्, मेरी रक्षा कर ले। मै नही जानता कि हिन्दुस्तानसे किधरको जाऊ। ओर्मुजसे खुरासानको राह नही, चगताईके लिये रास्ता नही और बहरैन और यज्दके लिये भी कोई मार्ग नही। सर्वत्र विद्रोह हो रहे हैं, सर्वत्र बादशाह भगाये जा रहे हैं, मिर्जा जहान शाहको उजून (हसन) बेग ने मार डाला है, सुल्तान अबू-सईदको जहर दे दिया गया है। उजून (हसन) बेग अब शीराजमें है, पर उस मुल्कने उसको स्वीकार नही किया है। यादगार मोहम्मद उसके पास नही जाता, वहा जानेमे उसे खतरा मालूम होता है। और कोई राह नही। (मेरे) मक्का जानेका मतलब है मुसलमान हो जाना। ईसाई होनेकी वजहसे मक्का जानेमे (मेरी) खैरियत नही, क्योकि वहा जाते ही मुसलमान बना लिया जाऊगा। हिन्दुस्तानमे रहनेका मतलब है, अपने पास जो कुछ है, सबको खर्च कर डालना, क्योकि यहाका रहन-सहन महगा है। मै अकेला हूँ, पर मेरा रोजाना खर्च ढाई अल्तीना (अशर्फी) है। यहा मन भरकर शराब मैंने कभी नही पी।

हम मस्कत पहुचे। वही मैने पास्का (ईस्टर) त्योहार मनाया। फिर तीन दिनोमे ओर्मुज पहुचा। २० दिन ओर्मुज शहर मे ठहर गया और वहा तीन दिन रहकर बारह दिनकी यात्राके बाद शीराज़ पहुचा, जहा सात दिन रहा। शीराजसे पद्रह दिनकी यात्रा कर अबरकुन पहुचा और वहा दस दिन ठहर, नौ दिनमें येज्द पहुचा, जहा ८ दिन रहा। येज्दसे पाच दिनमे अस्पहान पहुचा, और वहा छ दिन ठहरा। वहासे काशान जा पाच दिन रहा। काशानसे कुम गया। कुमसे सवा, सवासे सुल्तानिया और सुल्तानियासे तब्रीज। तब्रीजसे मै हसनबेगके कबीलेमें पहुच, उनके बीच १० दिन ठहरा। वहासे कही जानेका रास्ता न था, लड़ाई चल रही थी। हसनबेगने तुर्क सुल्तानके विरुद्ध अपनी ४० हजार सेना भेजी थी। सेनाने सिवास और तकातपर कब्जा कर लिया, तकातमे आग लगा दी। उन्होने अमसपर भी अधिकार कर लिया, अनेक गाव लूट लिये, फिर वह किरमानकी ओर बढे। मैने सेनाका साथ छोड़ आरज़िन्जान ([illegible]) की राह ली और वहासे त्रेपोजन्द जा पहुचा।

[illegible] दिन हो मै त्रेपोजन्द पहुचा और पाच दिन वहा ठहर, एक जहाजपर जा कफाका किराया [illegible] दिया, तथा कफामे जकात कर देनेके लिये कुछ सिक्के बदले।

[illegible] फौजदार और शासकके भाईने मुझे बड़ा नुकसान पहुचाया। वह मेरा सारा सामान [illegible] अपने महलमें उठा ले गया, और चूकि मै हसनबेगके कबीलेकी ओरसे जा रहा था, इसलिये [illegible] मेरी तलाशी ली।

है, स्रष्टा और चित्रकार है। वह सारे पापोंका क्षमा करनेवाला है। वही सभी वस्तुओंको बढानेवाला है, हमारी अन्तरात्माओंको जानने और स्वीकार करनेवाला है। वही आकाश और पृथ्वीमें व्याप रहा है, सबकी रक्षा कर रहा है, वही सर्वोच्च, सर्वमहान्, सर्वदर्शी, सर्वश्रोता है। वह न्यायकारी, समीचीन और शालीन है।

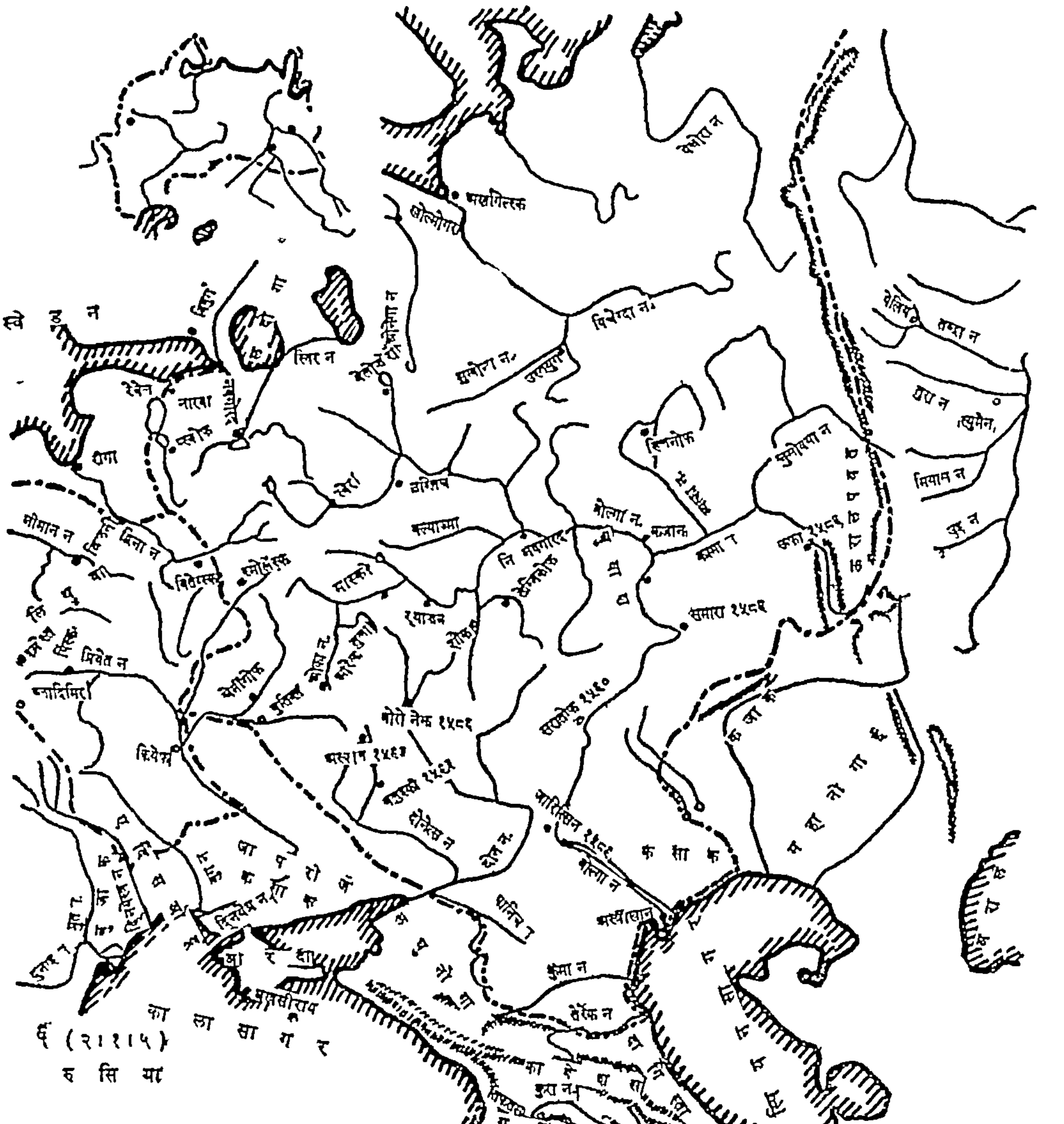

कान्स्तन्तिनोपोलके तुर्कोंके हाथमें चले जानेके बाद और ग्रीक राजकुमारीसे व्याह कर लेनेपर इवान अपनेको ग्रीक सम्राटोंका सीधा उत्तराधिकारी मानने लगा। उसने विजन्तीन राजमुद्रा—दो शिर-वाले बाज—को अपनी राजमुद्रा बनाई। दरबारके समय वह रत्नजटित सिंहासनपर एक मुकुट धारण करके बैठता था, जिसे "मनोमाख" मुकुट कहते थे, और जिसके बारेमें परम्परा कहती है, कि उसे व्ला-दिमिर मनोमाखने अपने नाना ग्रीकसम्राट् कन्स्तन्तिन मनोमाखसे पाया था।

इवानने अपनी राजधानीको भी अब राजसी ढंगसे सजाना शुरू किया। पहले मास्कोके सारे घर लकडीके होते थे, राजप्रासाद भी लकडीका था। इवानके समयसे पत्थरके मकानोंकी वृद्धि होने लगी। इतालियन वास्तुशास्त्री रिदाल्फो दि फ्योरावेन्तेको बुलाकर उसने नये वास्तु-साधनोंका प्रयोग कराया। विदेशी शिल्प-शास्त्रियोंने इवानके लिये जो इमारतें बनाई थीं, उनमेंसे कुछ—क्रेमलिनकी दीवारें और मीनार, पत्थरके गिर्जे, पाषाण-प्रासाद तथा सुंदर ग्रानोवितया पलाता—अब भी मौजूद हैं। इवान अब अपनेको सचमुच ही अभिमानी ग्रीकसम्राट् मानता था। जरा भी आज्ञा-

उत्तराधिकार बह बोयरोंको मृत्यु या निर्वासनका दंड देता था। बोयर कहते थे—"सबसे महानुकूलानी ... इतने लोगोंके साथ आई, वहां सभी बात उलट-पुलट गई।"

२७. वासिली III, इवान III-पुत्र (१५०५-३३ ई०)

वासिलीके शासनका वही समय है, जब कि भारतमें बाबर और हुमायूं राज्य कर रहे थे। इस समय रूस कहीं तेजीसे अपना राज्यविस्तार और शक्ति-संचय कर रहा था। जो रियासतें बापके समय अब भी स्वतंत्र थीं, उन्हें वासिलीने मास्कोमें मिला लिया—प्स्कोफ १५१० ई० में मास्कोके अधीन हुआ। और रियाजन १५२१ ई० में रूसके साम्राज्यका अभिन्न अंग हो गया। १५१४ ई० में तीन बार तोप दागनेके बाद स्मोलेन्स्ककी जनता दिखाने आ गई और वहांके विशिष्ट नागरिकोंके साथ महाराजुलने विनम्र शब्दमें प्रार्थना की—"नगरको मत नष्ट करो, शांतिपूर्वक हमें ले लो।" अब वासिली III स्मोलेन्स्कके सारे राज्यका राजा था। समकालीन विदेशी भी लिखते हैं—"वासिलीकी शक्ति सारी दुनियाके राजाओंसे बढ़कर है, वह सबके जीवन और सम्पत्तिका पूर्णतया स्वामी है।" मास्कोवाले खुले आम कहते थे—"हमारे राजाकी इच्छा भगवान्की इच्छा है।" बोयर भी उसके सामने भीगी बिल्ली बन गये थे। जब किसीको राजा पसन्द नहीं करता, वह चूं तक करनेकी हिम्मत नहीं रखता था। वासिलीने थोड़े ही इतने ही आदमियोंको अपना विश्वासपात्र बनाया था, जिसमें से दो-तीन सब बातोंमें उसके सलाहकार थे। उसके समकालीन साधु फिलोथियसने लिखा था—"मास्को दुनियाकी महान् राजधानियां—प्राचीन रोम और द्वितीय रोम कान्स्तान्तिनोपाल—का उत्तराधिकारी है, मास्को तीसरा रोम है, और चौथा कोई नहीं होगा।"

२८. येलेना वासिली III-पत्नी (१५३३-३८ ई०)

वासिलीने मरते वक्त सिंहासनका अधिकारी अपने तीन वर्षके पुत्र इवानको छोड़ा था। उसके नाबालिग रहनेसे शासनकी बागडोर उसकी मां रानी येलेना वासिलियेव्ना-पुत्री ग्लिन्स्की-वंशजाके हाथमें रही। वासिली III ने बोयरोंकी स्वेच्छाचारिताको बहुत दबाकर देशकी शक्तिको छिन्न-भिन्न करनेवाले उस वर्गका उन्मूलन कर डाला था। अब बोयरोंने फिरसे अपने स्थानको प्राप्त करना चाहा, लेकिन येलेना रानिया रानी नहीं थी। उसने बोयरोंके हर प्रयत्नको व्यर्थ किया। पर राजा और बोयर (सामन्त) एक ही जातिके हैं, दोनोंके स्वार्थ एक तरहके हैं, शादी-ब्याह आदि सम्बन्ध भी उनका आपसमें होता है, इसलिये कब तक इनका प्रहार अलग रक्खा जा सकता था? रानी अभी मुश्किलसे पांच वर्ष शासन कर पाई थी, कि बोयरोंने उसे जहर देकर मार दिया।

२९. इवान IV, वासिली III-पुत्र (१५३८-८४ ई०)

राजमाताको मारकर बोयरोंने शक्ति अपने हाथमें ले ली और आठ वर्षका बालक इवान विलोनेवी सिर्फ गद्दीपर बिठा दिया गया। लेकिन बोयरोंमें भी सिर्फ स्वार्थपरता इतनी थी, कि वह आपसमें [illegible] करने लगे। पहले राजकुल शुइस्की और बेल्स्कीके बीचमें सख्त संघर्ष हुआ और शुइस्कीके समर्थकोंने [illegible] अपने विरोधी राजकुल बेल्स्कीको गिरफ्तार कर लिया। शुइस्कीके हाथमें भी शक्ति देर तक नहीं रही। ग्लिन्स्कीवंशने—जिसकी पुत्री राजमाता येलेना थी—अन्द्रेइ शुइस्कीको १५४३ ई० में मार डाला। बोयर तीन वर्षों तक शासन करते रहे। वह केन्द्रीकृत सरकारके विरुद्ध थे और चाहते थे, कि देश फिर छोटे-छोटे रजवाड़ोंमें बट जाये। शासन क्या था, अपने भाई-भतीजों-भांजों और रिश्तेदारोंमें जागीर और इलाकोंको बांटना, जो जनसाधारणकी लूटका एक खुला तरीका था। [illegible] दो राजकुमार—[illegible] और रजानके [illegible]—ने फिर [illegible] पर सत्ता करनी शुरू की। बोयर अपनी स्वार्थपूर्तिमें इतने मस्त थे, कि वह बच्चे महाराजकुमारके खाने-पहननेका भी ख्याल नहीं रखते थे। तरुण इवानने अपनी मांके समयके दरबारको भी देखा था। उस समय महाराजकुमारका कितना सम्मान था? अब उसके मालिक इस बच्चेकी कोई परवाह नहीं करते थे। खास विशेष उत्सवोंके समय उसको सिंहासनपर बैठाकर सम्मान-प्रदर्शनका

अभिनय किया जाता था। वालक इवान मेधावी था। छोटी उमरसे ही उसने लिखना-पढना सीख लिया था। उसे कितावोके पढनेका वडा शौक था। स्वय सुशिक्षित सघराज मकरीने इवानके ऊपर वहुत प्रभाव डाला था। लडकपनसे ही अपनी आखोके सामने वायरोको लूटते, खून-खरावी करते देख, स्वय उपेक्षित हो इवानके स्वभावमे क्रूरता भी सन्निविष्ट हो गई थी।

ऐसे होनहार वालकको वहुत दिनोतक गुडिया वनाके नही रक्खा जा सकता था, विशेपकर जव कि वायरोमे स्वय आपसी खूनी सघर्ष चल रहे थे। सत्रह वर्ष की उमर (१५४७ ई०) में इवानने सिंहासनको सभालते हुये पूर्वजोकी "महाराजुल" उपाविसे सन्तुप्ट न हो ज़ारकी उपाधि स्वीकार की। इवान IV पहला रूसी ज़ार था—ज़ार-क्ज़ार-कैज़र-कैसर अर्थात् रोमक सम्राट्का ही विगडा रूप है।

वायरोने अपनी सामन्ती जागीरदारिया फिरसे स्थापित कर ली थी। उसके कारण लोगोकी वुरी हालत थी। उन्होने १५४७ ई० मे मास्कोमें ग्लिन्स्की दलके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसी समय भारी आग लग जानेसे नगरका वहुत-सा भाग जल गया था, जिसके कारण लोगोकी हालत और भी खराव हो गई और वह ग्लिन्स्कियोकी स्वेच्छाचारिताके खिलाफ उठ खडे हुये। वह ज़ारकी नानी अन्ना ग्लिन्स्कयाके ऊपर जादूसे नगरमे आग लगानेका दोप लगाते थे। विद्रोहमें ग्लिन्स्की वशका एक आदमी मारा गया और वाकी जान लेकर भाग गये। ज़ार स्वय वोरोब्योवो गाव (वर्तमान लेनिन-पर्वत) मे भागकर जा छिपा।

जव विद्रोह दवा दिया गया, तो साधारण जनताकी सतान एक चतुर और ईमानदार अफसर अलेक्सी अदाशेफ शासनका मुखिया वना। अदाशेफने अपने साथ एक प्रभावशाली दरवारी पादरी सेल्वेस्तर तथा कुछ शक्तिशाली वायरोको मिला इज्ब्रान्नया रादा (वृत-परिषद्) वनाई, जिसकी रायके विना तरुण ज़ार कोई निर्णय नही कर सकता था।

राज्य-विस्तार—इवान IV के शासनारम्भके समय उत्तर-पूर्वी रूस एकतावद्ध हो चुका था। अव रूसका विस्तार आसपासकी जातियोको जीतकर ही किया जा सकता था। वासिली III के समयमे क्रिमियाके खानकी मददसे कजानके तारतारोने अपनेको स्वतत्र कर लिया था, इसलिये इवानको कजानके खानसे सवसे पहले भुगतना था, जिसके लिये तारतारोने रूसी भूमिपर लूट-मार मचाकर वहाना भी पैदा कर दिया था। कजान मध्य-वोल्गाके ऊपर एक महत्त्वपूर्ण नगर था, जिसके विरोधी शक्तिके हाथमें रहनेपर वोल्गा-कास्पियनका वणिक्पथ खतरेमें पड जाता था और पूर्वमे उराल तथा आगेके विस्तारकी गुजाइश नही रह जाती थी। उधर तुर्कोने कालासागरको अपनी झील वनाकर काकेशसतक अपनी वाह फैला ली थी। अस्त्राखान और कजानके खान भी हमेशा तुर्कीकी ओर आशा लगाये रहते थे। इस प्रकार पूरवसे रूसको खतरा भी था। इवानने पहले कजानको खतम करनेका निश्चय किया। १५५० ई० का महाभियान असफल रहा, इसपर उसने १५५१ ई०के वसतमें मारियोकी भूमिमें वोल्गाके पहाडी किनारेपर स्वीयाजस्क नगर वनाया, जो कि कजानके सामने पडता था। मारी लोग अवतक कजानको कर देते थे, अव वह जारको कर देनेके लिये मजवूर हुये। स्वीयाजसकका दृढ दुर्ग वन जानेके वाद रूसी कजानको घेर सकते थे। कजानके तारतारोने जवर्दस्त प्रतिरोध किया, लेकिन रूसियोके पास डेढ लाख सेना थी, दूसरे उनके पास शक्तिशाली तोपखाना भी था। नगरके भीतर तीस हजार तारतार सेना थी। कुछ महीनेतक तारतारोने प्रतिरोध किया, लेकिन जव शक्तिशाली तोपोने नगरके प्राकारको उडा दिया, तो वह कहातक प्रतिरोध करते? अन्तमें २ अक्तूवर १५५२ ई०को रूसी कजानको दखल करनेमें सफल हुये। कजानके पतनके साथ तातारोका प्रतिरोध खतम नही हुआ। वह कई सालोतक लडते रहे, उनके सहायक तारतार ही नही, मारी, उदमुत, चुवाश और मोर्दा जैसी रूसीभिन्न जातिया भी थी। कजानके उच्छेदके वाद पहलेके खान और सामन्तोकी अधिकाश सम्पत्तिको इवानने अपने अफसरो और पादरियोमें वाट दिया और लोगोको अर्धदास वना दिया। कितने ही जारभक्त तारतार सामन्त अभी भी अपनी भूमिके मालिक रहे। इस प्रकार वोल्गाकी जनता चक्कीके दो पाटोके नीचे पिसने लगी। कजानके विजयके वाद वाश्किरोने भी इवान-

की अधीनता स्वीकार की। फिर उनमें भी पूर्व साइबेरियाके खान यादगारने १५५५ ई० में मास्कोको कर देना स्वीकार किया। अगले साल १५५६ ई० में अस्त्राखानकी बारी आई। मास्कोकी सेनाको वहाँसे खानको भगानेमें कठिनाई नहीं हुई। अस्त्राखान नगर ले लेनेके बाद सारी वोल्गा नदी रूसके हाथमें थी। कास्पियनके तटपर बसा अस्त्राखान अब मध्य-एसिया और ईरानके साथ होनेवाले व्यापारका केंद्र बन गया। उत्तरी काकेशसके छोटे-छोटे अमीर बराबर आपसमें लड़ते रहते थे, जिससे इवानको मौका मिला, और उसने तेरेक नदीके किनारे एक किला बनवाना चाहा। लेकिन इवान अभी तुर्कोंसे झगड़ा नहीं मोल लेना चाहता था, इसलिये तुर्कोंके दबाव देनेपर उसने नगर बनानेका ख्याल छोड़ दिया। तो भी रूसी कसाक (स्वतंत्र किसान) नहीं रुके और वह तेरेकके तटपर बराबर बने रहे। तारतार सवार लूट-मारको आमदनीका एक वैध साधन मानते थे, खासकर काफिरोंके विरुद्ध वैसा करना तो पुण्यका काम था, इसलिये घोड़ोंपर चढ़े वह बराबर इस ताकमें रहते थे, कि कैसे रूसकी भूमिमें घुसकर वहाँ लूट-मार मचाई जाये। इसके लिये मास्कोको मैदानी जगहोंमें जगह-जगह फौजी चौकियाँ—स्तानित्सा (थाना)—स्थापित करनी पड़ी। स्तानित्सामें एक ऊँचा मीनार या वृक्ष होता था, जिसपर बैठा एक सैनिक बराबर देखता रहता। जैसे ही दूर धूल उठती दिखाई पड़ती, वह उतरकर घोड़ेपर चढ़ दूसरी स्तानित्सामें खबर देता, वहाँसे दूसरा सवार तीरकी तरह निकलता, इस प्रकार बहुत जल्दी ही खबर मास्कोतक पहुँच जाती, और प्रतिरोधका उचित प्रबंध कर दिया जाता।

कास्पियनतटको लेकर अब रूस केवल स्थलशक्ति नहीं रह गया था, किन्तु कास्पियन वस्तुतः एक महासरोवर है, जिसका महासमुद्रोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है। इस कमीको दूर करनेके लिये बाल्तिक समुद्र-तटपर अधिकार करना जरूरी था, जिसमें कि रूसका पश्चिमी युरोपके देशोंसे सीधा संबंध हो जाये। जब बाल्तिकतट (लिवोनिया) की ओर इवानने हाथ बढ़ाया, तो लिवोनियाके पड़ोसी लिथुवानिया, स्वीडन और डेन्मार्क चुप रहनेवाले नहीं थे। पर जारकी शक्ति (धन और जनका बल) इतनी बढ़ चुकी थी, कि समुद्रपारसे आकर लिवोनियाको मदद देना मुश्किल था। जर्मन धर्मसेनाने अच्छी तरह डटकर प्रतिरोध किया, लेकिन ग्रूनेवाल्डमें उसे जो हार खानी पड़ी, उसके बाद वह फिर सँभल नहीं सकी। जनवरी १५५८ ई० में इवानने लिवोनियाके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। कितने ही महीनोंकी लड़ाईके बाद लिवोनियाका बहुत ही महत्त्वपूर्ण बंदरगाह रीगा रूसियोंके हाथमें चला गया। उसके बाद यूरियेफ नगरकी बारी आई और आगे १५६१ ई० तक सारी लिवोनिया इवानके हाथोंमें थी। सामने खतरेको देखकर पड़ोसी राज्य रेवेल (तल्लिन) ने स्वीडन और डेनमार्कको अपना संरक्षक बनाया और अवशिष्ट लिवोनियाने पोलराजा तथा लिथुवानियाके शासककी शरणमें जाना पसन्द किया। इस तरह लिवोनिया कई राज्योंमें बँट गया। अब रूसको पोलन्द, स्वीडन और डेन्मार्कके साथ बीस वर्षतक लड़ना था।

लिवोनियामें बराबर सफलता ही नहीं होती रही, बल्कि कभी-कभी रूसियोंको वहाँ हानि भी उठानी पड़ी थी। ऐसे समयमें बायर फिर अपना सर उठाना चाहते थे। वह जारके हाथमें सारी शक्ति नहीं रहने देना चाहते थे। इवान इस तरहके घरेलू झगड़े पसन्द नहीं कर सकता था, उसने १५६५ ई० में शासन-प्रबंधको नये तरहसे संगठित करना चाहा। बायरोंपर उसको विश्वास नहीं था। एक दिन यकायक वह अपने विश्वास-पात्र शरीर-रक्षकोंके साथ मास्को छोड़कर वहाँसे सौ किलोमितरपर अवस्थित दुर्ग-बद्ध अलेक्सेन्द्रोवा-स्लोबोदोवा गाँवमें चला गया। वहाँसे उसने संघराजको पत्र लिख बायरोंकी विश्वास-घातकी तालिका बनाकर भेजते हुये सिंहासन छोड़ देनेकी घोषणा की। इसपर मास्कोके नागरिकों, पादरियों और कितनेही बायरोंने जारके पास जाकर मास्को लौटचलनेके लिये बड़ी प्रार्थनाकी। इवानने स्वीकार किया, और मास्को लौटकर उसने विश्वासघाती बायरोंको दंड दे राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सबोर) की बैठक बुलाई। इसके साथ ही उसने "ओप्रेच्निना" (पृथक् राज्य) के नामसे अपने विश्वास-पात्रोंका एक और संगठन तैयार किया, जो जारके हुकुमको बजा लानेके लिये बराबर तैयार रहती थी। इवानने अपने सारे राज्यको दो भागोंमें विभक्त किया—जेम्श्चिना (भूमिक) जिसका शासन बायरोंकी दूमा (समद्) जारके अधीन रहकर करती थी और ओप्रेच्निना, जो सीधे जारके अधीन

थी। ओप्रेच्निनावाली भूमिमें राज्यके सबसे अच्छे तथा केंद्रीय प्रदेश थे, जिनका सैनिक और आर्थिक महत्त्व सबसे ज्यादा था। स्वय मास्को नगरको भी इसी तरह दो हिस्सोमें बाट दिया गया था। जेम्स्चिना भागमें बायर और ओप्रेच्निना भागमें वेवोद (राजपुरुष) दोनो साथ-साथ काम करते थे। ओप्रेच्निनाकी राजधानी अलेक्सेन्द्रोवा-स्लोवोदोवा थी, जहापर जार अपनेको अधिक सुरक्षित समझता था। ओप्रेच्निनाका काम था सामन्तो (बायरो) की शक्तिको कमजोर करना और छोटे-छोटे भूमिपति-सरदारोका एक वर्ग तैयार करना।

जार इवान निरकुशताको राजाका आवश्यक अधिकार समझता था। उसका कहना था—राजशक्ति भगवान्की ओरसे मिली है। जारकी आज्ञाका उल्लघन करना महापाप है। जारकी सभी प्रजा उसकी सेवक है, उसको अपनी प्रजाको क्षमा करने या मारनेका अधिकार है। जारकी शक्तिको सीमित करना अपराध ह, क्योकि इसके कारण देशकी प्रतिरक्षा खतरेमे पड जाती है।

इवान अपनी शक्तिको इस तरह दृढ करते हुये रूसकी आर्थिक और सैनिक शक्तिको मजबूत करता जा रहा था। इसी समय १५७१ ई० में क्रिमियाके खान दौलत गिराईने एकाएक आक्रमण कर दिया और प्रतिरोधका मौका दिये विना क्रेमलिन छोड सारे मास्कोको जलाकर भारी सख्यामे बदियो-को दास वनाकर वेचनेके लिये पकड ले गया। दूसरे साल १५७२ ई० मे जब फिर उसने अपनी लूटमार-को दुहराना चाहा, तो ओका नदीपर ही जेम्स्की वेवोदोने रोककर मास्कोको वचा लिया। जेम्स्की वेवोद वायर थे। उनकी इस सेवाको देखकर जारको अब ओप्रेच्निना की अवश्यकता नही मालूम हुई और उसी साल उसने उसे तोड दिया। इवानने रूसमें एक धर्म, एक नाप-तोल और एक भूमि-नाप स्थापित कर रूसकी एकताको और आगे बढाया।

१५७६ ई० मे पोलन्दके राजा सिगिस्मद अगस्तसके मरनेके बाद स्तिफन बथोरी राजा निर्वाचित हुआ। उसने जर्मन और हुगेरियन सैनिकोकी भरती तथा तोपखानेके विकासद्वारा अपनी शक्तिको बढाकर १५७९ ई०में रूसके जीतनेके लिये अभियान किया। १५८१ ई०में एक लाख सेनाके साथ उसने प्स्कोफको घेर लिया, लेकिन सारी शक्ति लगाकर भी वह उसे ले नही सका। इवानको केवल पोलन्दसे ही लडना नही था, बल्कि स्वीडनने भी इसी समय लिवोनियाके लिये उसपर आक्रमण कर दिया। स्वीडिश सेनाको आसानीसे सफलता मिली। यद्यपि इवान अपने राज्यकी प्रतिरक्षामे सभी जगह असफल रहा, लेकिन प्स्कोफके प्रतिरोधने उसे अवसर दे दिया, कि अच्छी शर्तोंके साथ अपने शत्रुओसे समझौता कर ले। इवानने लिवोनियाको छोड दिया और बथोरीने रूसी नगरोपरसे अपना अधिकार हटा लिया। इसी तरह स्वीडनके सामने भी उसे समझौता करना पडा। इस प्रकार उसका पचीस साल (१५५८–८३ ई०) का सघर्ष अधिकतर वेकार गया, जब कि १५८४ ई० में इवान मरा।

इवान सुशिक्षित, दूरदर्शी और कुशल शासक था। वह अच्छा लिख लेता था। लेकिन, कभी-कभी उसपर सनक सवार हो जाती, तो वह क्रूरकर्मा सिद्ध होता, जिसके ही कारण लोगोने उसका नाम ग्रोज्नी (क्रूर) रख दिया था। एक बार क्रोधाध हो उसने अपने वेट राजकुमार इवानपर डडा चला दिया, जिससे वह मर गया। इवानका शासन रूसके इतिहासके लिये बडा महत्त्व रखता है, और देशके शक्तिशाली और एकताबद्ध करनेमे उसकी सेवाओको आज भी बडे आदरसे याद किया जाता है।

येरमकद्वारा साइबेरिया-विजय—इवानके शासनका एक महत्त्वपूर्ण काम है, रूसका साइबेरियाकी ओर विस्तार। हम कह आये हैं, कि वासिली III और उसके पिताके समय ही रूसका विस्तार उरालकी जनजातियोकी ओर हो चुका था। साइबेरियाकी बहुमूल्य समूरी छालें सोना-जवाहरके दाम विकती अपना विशेष आकर्षण रखती थी। इसलिये बहुतसे साहसी रूसी शिकारी और व्यापारी उरालकी ओर जा वसे थे, इन्हीमें नवोगोरदसे आया एक व्यापारिक परिवार स्त्रोगनोफ भी था। वस्तुत स्त्रोगनोफका पूर्वज पहले सुवर्ण-ओर्दूका एक तारतार मिर्जा (राजपुरुष) था। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर उसका नाम स्पीरिदोन पडा। चौकठेमे मढी गोलियो (अवकस) द्वारा गिनती करनेका

रवाज चीनमे पहिलेहीसे था, रूसमे इसका रवाज स्पीरिदोनने ही चलाया। मुसलमानसे ईसाई होनेके कारण मगोलोने उसे पीट-पीटकर मार डाला, इसी कारण उसके परिवारका नाम स्त्रोगोन (पीटन) पडा। स्पीरिदोनके पौत्र तथा कोस्मेसके पुत्र लूकसने जार वासिली अधको कजानके खानसे छुडानेमें पैसेमे सहायता की थी, इसलिये उसे नमककी खानोकी इजारादारी मिल गई, जिससे वह बहुत धनी हो गया। वासिलीने ग्रेगोरी और याकूव दो स्त्रोगोनोफ-भाइयोको कामा नदीके पासवाले प्रदेशमें चुसोवयाके तटपर अपनी रक्षाके लिये दुर्ग बनानेका अधिकार दे दिया था, जिसमें कि वह साइबेरियनो और नोगाई तारतारोसे अपनी रक्षा कर सके। स्त्रोगोनोफ अपने पास सैनिक और तोपें रख जारकी ओरसे इलाकेका शासन-प्रबंध भी करते थे। उन्हे गावोके बसाने, नमककी खानोको चलाने तथा कर देकर मछली और नमकको बीस वर्षतक बेचनेका ठेका मिला था। स्त्रोगोनोफने १५५८ ई०मे चुसोवया नदीपर ककोरका कसवा बसाया, १५६४ ई०मे केरगेदानका किला और कुछ ही साल बाद सेल्वा नदीके किनारे कितनी ही और बस्तिया बसाईं। अग्रेज ईस्ट इडिया कम्पनीकी तरह अनेक व्यापारियोकी कम्पनीकी जगह यहा एक परिवारको व्यापार, राज्यशासन और देश-विजयका अधिकार दे दिया गया था। ईस्ट इडिया कम्पनीकी तरह कितने ही साहसी तरुण और गुडे स्त्रोगोनोफके राज्यकी ओर भी आकृष्ट हुये थे। १५७२ ई० मे स्त्रोगोनोफोने एक विद्रोहमे चेरेमिसो, ओस्तियाको और वाश्किरोको जीतकर वहा जारका राज्य घोषित किया। स्त्रोगोनोफोकी इस तरह साइबेरियामें प्रगतिको वहाका राजा कुचुम खान (१५५५–९५ ई०) अपने लिये खतरेकी बात समझता था, जो जारकी अधीनता स्वीकार करनेवाले यादगार खानको हटाकर अब स्वय खान बना था। उसने जुलाई १५७३ ई० में बहुतसी रूसी बस्तियोको नष्ट करनेके लिये अपने भाई अलताकुलके पुत्र महमेतकुलको भेजा। महमेतकुल जारकी प्रजा बने ओस्तियाकोको मार उनके बीबी-बच्चोको पकड ले गया। उसने एक रूसी अ याक चेवाकोफको भी मार डाला। नोगाई मिर्जा दीन अहमदकी पुत्रीसे अपने बेटे अलीका ब्याह करनेके कारण कुचुमको बहुत अभिमान हो गया था। स्त्रोगोनोफोने जार इवानसे आक्रमणकारियोको दड देनेकी स्वीकृति पानेके साथ निम्न बातोकी भी आज्ञा मागी—तोबोल नदीके तटपर बस्तिया बसा नगर और दुर्ग बनाना, तोपखानेका उपयोग तथा सैनिकोकी भरती करना, एक सीमित समयतकके लिये लोहा, रागा, सीसा, गधककी खानोमें काम जारी करना। जारने प्रार्थनाको स्वीकृत करते हुये ३० मई १५७४ ई० को आज्ञा दी, कि वह हमारी प्रजा ओस्तियाको और वोगलोकी रक्षा करें, और इर्तिश-उपत्यकाके तारतार खानोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करें। राजाज्ञामें स्त्रोगोनोफोके लिये यह भी रियायत दी गई थी, कि वह बुखारावालो और कजाकोके साथ बिना शुल्क दिये व्यापार कर सकते है। जारने अधिकार तो मुहमागेसे भी अधिक दे दिया, लेकिन उसे काममे लानेकी दोनो भाई-स्त्रोगोनोफोमें शक्ति नही थी। ६ सालके भीतर ही दोनो भाई मर गये और उनकी अपार सम्पत्तिका मालिक छोटा भाई सिमाओन स्त्रोगोनोफ-परिवारका मुखिया हुआ, जिसके सहायक याकूव-पुत्र मासिम और ग्रेगोरी-पुत्र निकितस् थे।

काकेशसके उत्तरमे दोन नदीके तटपर बसे स्वतत्र लडाकू किसान—कसाक—ईरान और बुखाराके तरफसे आनेवाले व्यापारियोके कारवाको लूटना अपना अधिकार समझते थे। उनकी हिम्मत इतनी बढ गई थी, कि एक बार उन्होने ईरानी शाहके पास भेंट लेकर जाते जारके दूतमडलको भी लूट लिया। उनके मारे निम्न-वोल्गा-उपत्यकामें आतक छाया हुआ था। १५७७ ई० मे इवानने उनके विरुद्ध सेना भेजकर उन्हे तितर-बितर कर दिया। इस समयके भागनेवाले कसाकोकी एक टुकडी अपने आतमन (सर्दार) येरमक तिमोथियेफके नेतृत्वमें कामा नदीकी ओर गई। येरमक (येरमोलाई, हेरमोलोस) को मासिम स्त्रोगोनोफने अपने नये बसाये नगर ओरेलमे इस ख्यालसे नौकर रख लिया, कि उसके दलका उपयोग साइबेरियाके खानके विरुद्ध करेगे। स्वामीकी आज्ञा पा येरमक अपने आदमियोके साथ ८ अक्तूबर १५७८ ई० में प्रस्थानकर चुसोवया नदीके किनारे-किनारे चल ८ अक्तूबर १५७८ ई० को सिलवा तक पहुंचा। वहा उसने एक दुर्ग बनाया, जिसका नाम पीछे येरमकोवो-गोरोदिची पडा। जाडोंमें

येरमक वही ठहरा। उसने अपने तीन सौ कसाकोको वोगुलोके देशमे भेजा, जो कि साइवेरियन खानकी सीमातकका पता लगा लूटके मालसे लदे लौट आये। येरमकके साथ तीन ईसाई पुरोहित और एक साधू भी थे, इसलिये उसे साधारण डाकू नही कहा जा सकता। येरमककी इन सफलताओ को देखकर स्त्रोगोनोफने उसे तीन तोपे, प्रत्येक सैनिकके लिये डेढ सेर वारूद, डेढ सेर सीसा, तीन पुड (सवामन) आटा, दो पुड वकला, एक पुड विस्कुट, एक पुड नमक, ढाई पुड मक्खन दिया—आदमी पीछे नमक लगाया हुआ एक सूअर, हर सौ आदमीपर एक पवित्र मूर्तिके साथ एक झडा भी दिया। रात-दिन तैयारी करनेके वाद कुछ रसदको वही छोड येरमकका दल चल पडा। येरमक अपने साथियोके मनोविनोदके लिये वाजे ले जाना नही भूला। कसाक सेनाका मुख्य-सेनापति येरमक था और दूसरे सेनापति थे इवान कोल्जोफ, इवान ग्रोसा तथा वोगदान व्रियास्गा। इनके अतिरिक्त कुछ छोटे-छोटे और भी अफसर थे। कसाक सैनिकोका सगठन शतिक और दशकके रूपमे था। उस समय रूससे ओव नदीकी ओरके रास्ते क्रमश निम्न प्रकार विभक्त होते थे —

(१) विम नदी—वुचेगदा—विश्चेरा नदी (कामकी शाखा)—लोसवा नदी—तावदा नदी—तोवोल नदी—ओव ।

(२) विम नदी—वुचेगदा—इशमा नदी—पेचोरा नदी—शोकुर नदी—सिगवा (लपिना)-ओव नदी ।

(३) वुचेगदा—इशमा नदी—आलेस नदी—इलिश नदी—सोसवा नदी—ओव नदी ।

(४) वुचेगदा—इशमा नदी—वुचेगदा—इशमा नदी—उसा नदी—सोव नदी—ओव—नदी ।

इन रास्तोमे सवसे अधिक प्रचलित था—सिगवा और सोसवा होकर जानेवाला रास्ता ।

इतिहासकार मूलरके अनुसार येरमककी सेनामे पाच हजार आदमी थे, जव कि साइवेरियन पवाडा उनकी सख्या आठ सौ चालीस वतलाता है। इस सैनिक टुकडीने रूसके लिये उस विजयका आरम्भ किया, जिसने कुछ ही समयमे सारे साइवेरियाको जारके चरणोमे डाल दिया ।

५ जुलाई १५७६ ई० (भारतमे अकवरके शासनकाल) मे येरमक-सेनाने प्रस्थान किया । कुछ जिरियानी लोग उनका पथप्रदर्शन कर रहे थे। चुसोवया नदीकी ऊपरी धार उथली और धीमी थी। येरमक-दल अपनी छोटी नावे लेकर इसी धारसे उत्तरकी ओर वढा। सेराव्रेंकाके तटपर वह जाडोके लिये रुक गये। यहाके निवासी वोगलोने रूसियोके साथ अच्छा वर्ताव किया, लेकिन कसाकोने उन्हें निष्ठुरतापूर्वक लूटकर इसका वदला दिया। उनके इस अत्याचारके कारण आगेके सारे कवीलोमें आतक और घृणा पैदा हो गई। १५८० ई०के वसतके आनेपर येरमक-दल फिर आगे चला। उरालकी नाटी पहाडियोको पारकर वह वरदाके पनढरपर पहुचा, जो कि ध्रुवीय महासागर तथा कास्पियनमें जानेवाले जलका विभाजक है। जहापर वह जाडोके लिये ठहरे, वहासे दस वर्स्त (कोश) चलनेपर लडाई शुरू हो गई, साथ ही वीमारीने भी शत्रुका काम किया, जिसके फलस्वरूप अव केवल सोलह सौ छत्तीस कसाक वच रहे। लेकिन येरमक और उसके साथी हिम्मत हारकर पीछे लौटनेवाले नही थे। वह १२ मई १५८० ई० को रवाना हो जल्दी ही तगिल नदीके तटपर पहुच गये। पहिलेकी नावोको वह पीछे छोड आये थे, इसलिये कुछ सप्ताह ठहरकर यहा उन्होने नई नावे वनाईं, जिनपर चढकर वह तुरा नदीके तटपर पहुचे। यहा एक तारतार सरदार पेपच (पस) रहता था, जो पडोसी वोगलोका भी शासक था। उसने तीर-धनुब चलाया, लेकिन वारूदी हथियारोके सामने तीर-धनुप क्या करते ? उसके आदमी भाग गये और येरमक-दलने उनके डेरोको दखल करके लूट लिया। कसाक लूटते-पाटते तुराके किनारे-किनारे आगे वढे। चिङगी (त्यू-मेन) नगरको उन्होने वडी आसानीसे ले लिया। इस उपजाऊ इलाकेमे उन्होने शरद्-निवास करके चारो ओर लूट और छालेके रूपमें कर वसूल किया। येरमकने एक टुकडीको कुचुमखानके सीमात तुरा-तोवोलके सगमपर वसे तुरखन किलातक भेजा। वहा एक तरखन (राजकुमार) रहता था। उस समय कुचुमखानका तहसीलदार कुतुगाई भी तरखनके पास आया हुआ था। कसाक आक्रमण कर कुतुगाईको अपने साथ पकड ले गये। येरमकने वहुत खातिर करके उससे वहुतसी वातोका पता लगाया, और उसे इनाम तथा खान, उसकी खातूनो और कुमारोके

लिये भेंट देकर विदा किया। येरमकको चालको कुचुमने समझ लिया और रूसी पोशाकमे लौटे कुतुगाईकी बातोंपर विश्वास न कर सेना जमा करनी शुरू की।

मई १५८१ ई० मे येरमक-दलने तुरासे आगे प्रस्थान किया। थोडा ही आगे जानेपर ६ तारतार-राजकुमारोंके अधीन आई सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ। विजय कसाकोंके साथ रही। उन्होंने बडी निष्ठुरतापूर्वक शत्रुओंको कतल किया। लूटका जो माल हाथ आया, उसे बाकी बचे हजार कसाक साथ नहीं ले जा सकते थे। उन्होंने बचे मालको जमीनमे गाड दिया और फिर नावपर तोबोल नदीमे आगे बढे। नदीके ऊँचे किनारोंपर भुर्ज वृक्षोंके जगल थे, जिसमे छिपकर तारतार लडते, लेकिन बन्दूकोंके सामने उन्हे भागना पडता। आगे बढनेपर तोबोलनदी जहा पतली हो गई वहा तारतारोंने जजीर बाधकर नावोंको रोकनेकी कोशिश की। येरमक वहा १६ जुलाईको पहुचा। तारतार यसाउल अलीशेरकी एक भी न चली और येरमक उन्हें मारता-पीटता आगे निकल गया। अन्तमें वह तोबोल और ताबदा नदीके सगमपर पहुचे, जहासे कि रूसका व्यापार-मार्ग जाता था। प्रस्थान करते वक्त येरमक-दलने यहींतक आनेका निश्चय किया था। लेकिन येरमक उतनेमे सतुष्ट होनेवाला नही था। आठ दिन वहा ठहरकर उसने कुचुमके राज्यके बारेमें और जाननेके वास्ते फिर आगेके लिये प्रस्थान किया। कुचुमने तारतारों, ओस्तियाकों और वोगुलोकी एक सेना जमा कर उसे महमेतकुलके अधीन प्रतिरोध करनेके लिये भेजा, राजधानी सिबिरकी रक्षाके लिये नई खाईं बनवाई और पास-पडोसके तारतार अमीरोंको भी अपने नगरोंको दुर्गबद्ध करनेके लिये कहा। चुवास-पर्वतके पास इर्तिश नदीपर कुचुमने मोर्चाबदी कराई। येरमक जब ताबदासे आगे बढते मिर्जाबाखान-गाव (बाखान्स्की-युर्त्त) मे पहुचा, तो महमेतकुल वहा लडनेके लिये तैयार था। यद्यपि महमेतकुलके पास दसगुने (दस हजार) सवार थे, लेकिन पाच दिनके युद्धके बाद उसे बुरी तरहसे हारना पडा। येरमकके सारे अभियानका यही सबसे बडा युद्ध था। बारूदी हथियारोंके सामने तीर-धनुषकी क्या पेश जाती? तारतारोंने कुछ नीचे तुरबाके सगमपर फिर असफल प्रतिरोधकी कोशिश की। इसके आगे तोबोल और इर्तिशके सगमसे १६ वर्स्त पहले एक सरोवरपर फिर कुचुमके दर्बारी कराचिनके नेतृत्वमें तारतार जमा थे। उनकी सख्या देखकर कसाक कुछ भयभीत हो लौटनेकी सोचने लगे, लेकिन एक वोगोल बूढेने तारतारोंकी कमजोरीको बतलाकर उनकी हिम्मत बढाई। इस प्रकार येरमक-दल लडते-लडते आगे बढता गया। १२ अगस्त १५८१ ई० तक अब उनके पास लूटमें बहुत भारी परिमाणमें सोना, चादी, मोती, जवाहिर, पशु, अनाज और मधु आ गया था। इसी समय ग्रीक ईसाई सम्प्रदायके अनुसार चौदह दिनका व्रत आया। येरमकने चौदह दिनकी जगह चालीस दिन व्रत रखनेका हुकम दिया।

२६ सितम्बरको फिर कसाकोंने प्रस्थान किया। अब वह इर्तिश नदीमें जा रहे थे। उन्होंने तारतार-कुमार अतिककी बस्ती (साउस्त्रोफनी) को आसानीसे ले लिया। सामान नावोंपर लदा था। सख्या भी कम हो गई थी। वह सोचने लगे लौटें या आगे बढे। अन्तमें उन्होंने आगे बढनेका ही निश्चय किया। अब वह खानके राज्यके गर्भमें पहुच रहे थे। कुचुम अपने लोगोंके साथ चुवासके दुर्गबद्ध प्रदेशमे प्रतिरोधके लिये तैयार था। कुचुमका आक्रमण इतना जबर्दस्त था, कि येरमक और कोल्जोफ भी "भगवान् बचाये" चिल्लाते आगे बढे। तारतार अपने (शायद अधे) सरदार को घेरे हुये खडे थे, इमाम और मुल्लाह "या मुहम्मद" पुकार रहे थे। कसाक मोर्चेके तीन खुले स्थानोंकी ओर दौडे। महमेतकुल लडाईमें घायल हुआ था, जिसे इर्तिशपर नावद्वारा पहुचाया गया, बाकी सेना हताश हो भागने लगी—भागनेवालोंमे सबसे पहले ओस्तियाक सरदार थे, उनके बाद तारतार। कुचुम कुछ खजानेके साथ इर्तिशकी शाखा इशिम नदीकी ओर भागा। इस युद्धमें एक सौ सतर रूसी मारे गये, जिनके लिये बहुत पीछेतक तबोल्स्क नगरके गिर्जामें विशेष प्रार्थना की जाती थी। कुचुमने कजान या बुखारासे लोहेकी दो तोपें मगवाई थीं, जिन्हे भागते वक्त उसने इर्तिशमे फेंक दिया था। कसाकोंने निकालकर उन्हें विजयकी निशान बनाया। चुवाश, बिजिक, सुसगन, अबालक नगरोंके तारतार-अमीर कुचुमके साथ भाग गये। कुचुम भागते समय थोडी देरतक तोबोल नदीके तटपर अवस्थित यालृतुरामें ठहरा था।

७ नवम्बर १५८१ ई०को येरमक सदलवल राजधानी सिविरमे दाखिल हुआ। वहाकी छोटी कोठरियोमे मुश्किलसे खान और उसके अनुचर रह सकते थे। राजधानीकी एक ओर इर्तिश नदी और दूसरी ओर सिविरका नामकी एक छोटी नदिका वह रही थी, वाकी दो तरफ धुस्सकी मोरचेबर्दी थी। मकान सारे लकडीके थे, इसलिये पीछे उनका कोई अवशेष नही रह गया। खानकी राजधानीमें समूरी छाल तथा दूसरी वहुमूल्य वस्तुयें भारी परिमाणमे मिली, लेकिन आहारकी कोई चीज नही प्राप्त हुई।

विजयके तीन दिन वाद देमियान्का नदीसे होते एक ओस्तियाक सरदार येरमकके पास सम्मान प्रदर्शन करनेके लिये आया। वह अपने साथ समूर, मछली तथा दूसरी खाद्य वस्तुयें ले आया था। येरमकने थोडासा कर लेकर खातिर-सम्मान प्रदर्शन करके उसे लौटा दिया। धीरे-धीरे भय छूट गया और इर्तिश तथा तोवोल-उपत्यकाओंके और वहुतसे कवीले भेट ले-लेकर पहुचने लगे। लेकिन, अभी सिविरखानने हथियार रख नही दिया था। अन्नके अभावमे मछली रूसियोका प्रधान खाद्य थी। वीस रूसी मछली मारने गये थे। महमतकुलने एकाएक आक्रमण करके उन्हे मार डाला। येरमकने पीछा करके महमतकुल और उसके आदमियोको इर्तिश नदीके तटपर अवस्थित शम्सिन्स्की गावमे पकडकर घोर वदला लिया। कुछ ही आदमी अपने सरदारके साथ वहासे वच निकले। इस विजयके वाद अमीर इशवरदीने येस्केल्विनियान (तावदा) झीलसे आकर अधीनता ही नही स्वीकार की, बल्कि और छोटे-छोटे राजाओसे अधीनता स्वीकार करानेमें रूसियोकी सहायता की। सुकलेन (शायद वोगल) सरदारने भी छालोके रूपमें कर प्रदान किया।

सिविर-विजयकी खवर देनेके लिये येरमकने अपने साथी इवान कोल्जोफको मास्को भेजा, जिसके साथ कुचुमके अधीनता स्वीकार करनेका पत्र भी था। कोल्जोफ जाडेके मध्यमें बर्फवाला जूता पहने, समूरके कोटसे शरीर ढाके लम्बी-पतली वेपहियेकी गाडीको कुत्तो और बारहसिंगोसे खिंचवाते इशवरदीको पथप्रदर्शक वना तावदासे पहाडोके रास्ते होते चेरदिन पहुचा।

इससे कुछ पहले चेरदिनको एक वोगल सरदारने लूटा था। वहाके कमाडर वासिली पेलेपेलिजिनने जारके पास शिकायत भेजी थी, कि स्त्रोगोनोफोने दोनवाले विद्रोही कसाकोको शरण दी है, जिन्होने वोगलोको लूटा, उसीसे नाराज होकर उन्होने हमारे ऊपर आक्रमण किया। इसपर जार इवानने नाराज हो २८ नवम्बर १५८२ ई० को स्त्रोगोनोफोके पास सख्त पत्र लिखकर येरमक तथा उसके साथियोको बुरा-भला कहा था। लेकिन इसके थोडे ही समय बाद जब कोल्जोफने अपने साथियोंके साथ मास्को पहुचकर सिविर-विजयकी खुशखबरी दी, तो जारने अपनी वातको वापस ले लिया और दो मूल्यवान् कवच, एक चादीका प्याला, अपने पहननेका एक समूरी चोगा, तथा कितने ही और कपडे येरमकके लिये और दूसरे इनाम उसके साथियोके लिये भेजकर कोल्जोफको लौटाया।

महमतकुल अभी भी हाथ नही आया था। १५८२ ई० के शुरूमें पता लगते ही येरमकने साठ सैनिकोको उसपर अचानक हमला करनेके लिये भेजा। इर्तिशके किनारेसे नातिदूर तुलार झीलके पास, जहा पीछे कुलारेप्स्कया स्लोवोदा गाव वसा, एक जगह डेरा डाले पडे महमतकुलपर कसाक टूट पडे। अपने वहुतसे आदमियोको मरवाकर महमतकुल वदी वना। कुचुमके विरुद्ध महमतकुल अच्छा जामिन मिला, यह समझकर येरमक बहुत खुश हुआ, और उसने उसे बडी खातिरके साथ सिविर नगरमें अच्छी तरह रखा। कुचुम भागकर इशिम नदीकी ओर चला गया। वही सिविरके पुराने खान वेग-फुलातके पुत्र सैदियतने बुखारासे लौटते समय कसाकोसे मेल करके अपने पिताके शत्रुपर आक्रमण कर दिया। तबतक सबसे शक्तिशाली अमीर मिर्जा कराचा भी कुचुमका साथ छोड चूलिम्स्कोये सरोवर-पर चला गया था। सैदियतके आक्रमणने कुचुमकी हालत और बुरी कर दी।

१५८२ ई० के वसतमें येरमकने पचास सैनिकोके साथ वोगदान ब्रियास्गाको इर्तिशके तारतारो तथा ओस्त्रियाकोसे कर उगाहनेके लिये भेजा। तारतारोने प्रतिरोध किया। उनकी गढी अरिन्द्-

सियकाके तटपर थी। कसाकोंने आक्रमण करके उसे तोड दिया। यह तारतार अभी भी मुसलमान नही थे। वह अपनी खून लगी तलवारको चूमते थे। सैनिकोने वहामे वहुतसे छाले और रसद येरमकके पास भेजी। फिर आगे वढते हुये कितने ही और कवीलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजवूर किया। तुरतेस नदीके तारतार तथा पडोसी उवाती तारतारोने भी अधीनता स्वीकार की। इर्तिशके किनारेके उग्रोने भी कर देना स्वीकार किया। कसाक-टुकडी इर्तिशके साथ-साथ ओव नदीतक जा फिर सिविर-नगरमें लौट आई। रास्तेमें उन्हें कितनी ही वार लडना पडा, लेकिन उनका एक भी आदमी नुकसान नही हुआ।

१५८२ ई० की गर्मियोको येरमकने सिविरमे विताया। फिर महमतकुलके साथ वहुतसी भेंट और शुल्ककी वस्तुयें देकर उसने मास्को दूतमडल भेजा। १५६३ ई० में त्रियाजगाने जो रास्ता पकडा था, उसी रास्ते वह इर्तिशके नीचे ओवकी ओर चले। आगे तावदा नदीके तारतारोसे भारी लडाई हुई, झील लाशोंके मारे गदी हो गई, इसीलिये उसका नाम पगन्नुये ओजेरो पडा।

जारने नवविजित सिविर (साइवेरिया) देशपर शासन करनेके लिये पाच सौ कसाकोंके साथ सेमिओन दिमित्रि-पुत्र वोल्खोव्स्कीको २२ मई १५८३ ई० को मास्कोसे रवाना किया। वह नवम्वरमे सिविर पहुचा। इसके वाद ही साइवेरियामें अकाल पड गया। येरमकका अभियान इतना निष्ठुर और ध्वसकारी था, कि वहा अन्न मिलना मुश्किल हो गया। कितने ही कसाक भूखके मारे मर गये। उसके वाद चर्मरोगने आफत ढाई। वोल्खोव्स्की स्वय मौतका शिकार हुआ। मिर्जा कराचाने कजाकोंसे सुरक्षित रखनेके वहाने कोल्जोफ और उसके चालीस साथियोको वुलाकर मार डाला। तारतारो और ओस्तियाकोने अव आम विद्रोह कर दिया, जिसके कारण कितने ही कर-उगाहनेवाले कसाक मार डाले गये। कराचाने अन्तमें सिविर नगरको भी घेर लिया। येरमकके ऊपर नगरकी रक्षाका भार छोडकर अधिकाश कसाकोने रातके वक्त सोसकानमें पडे कराचाके डेरेपर छापा मारकर उसे दखल कर लिया। मारे जानेवालो में कराचाके दो पुत्र भी थे, लेकिन कराचा भाग निकलनेमें सफल हुआ। फिर सेना जमा करके तारतारोने हमला किया। उस वक्त दुश्मनकी गाडियोसे मोरचावदी करके रूसियोने उनका मुकाविला किया। काफी हानि उठानेके वाद तारतार भाग गये। अव रूसियोकी धाक चारो ओर जम चुकी थी। पास-पडोसके तारतारो और ओस्तियाकोने समझ लिया, कि प्रतिरोव करनेसे कोई फायदा नही हो सकता, इसलिये उन्होंने अधीनता स्वीकार की, सिविरमे अव खाने-पीनेकी चीजे काफी आने लगी।

साइवेरियाका नाम इसी सिविर नगरके कारण पडा, यद्यपि रूसी भाषामें सिविरका अर्थ उत्तर (दिशा) भी है। सिविर नगर साइवेरियाके कीमती समूरोंके व्यापारका वड़ा केंद्र था, इसलिये वहा वुखाराके व्यापारी भी आया करते थे। मुमकिन है, साइवेरियाके समूर और अल्ताईके सोनेके लिये मध्य-एसियासे यहा आनेवाला मार्ग वही पुराना वणिक्पथ हो, जिससे वुखाराके वाणिज्य-सार्थ यहा आया करते थे। वुखाराके कारवाके आनेका समय था। पता लगा, कुचुम उसपर हमला करना चाहता है। येरमकने कारवाकी रक्षार्थ डेढ सौ सैनिक भेजे और स्वय भी वगाई नदीके सगमतक गया। कारवा नहीं आया। येरमक अपने दलको लेकर वेगुइशेव्स्कोये सरोवरपर अवस्थित तारतार-राजकुमार वेगुइशके गढपर आक्रमण किया, प्रतिरोव करनेमें प्राय सारे तारतार मारे गये। इसके वाद येरमकने शमसा और कियाचिक, साला, कोर्दकपर चढाई की। सालामे थोडा-सा प्रतिरोध हुआ। कोर्दकके आदमियोंने भागकर जगलमे शरण ली। तेवेन्दा (तुवेंदा) के तारतार-राजा येलिगइने अपनी सुदरी लडकीका येरमकसे व्याह करना चाहा, किन्तु येरमकने विवाहसे इन्कार करते हुये उसे अभय वचन दिया। कुचुम इसी लड़कीको अपने लडकेके लिये चाहता था। इशिमके सगमकी लडाईमें पाच कसाक मारे गये। वाकी दल इर्तिशके साथ-साथ आगे चला। अटसकाकुन झीलके ऊपर प्रसिद्ध तारतार किला कुल्लरा था, जो कलमक मगोलोंसे सीमाकी रक्षाके लिये वनाया गया था। उसके ऊपर पाच रोज घेरा डाल लौटते वक्तके लिये छोडे कसाक-दलने इर्तिशके पूरव कुलारचोव झीलके ऊपर अवस्थित ताशदकान नगरपर आक्रमण किया, जो

विना लडाईके ही सर हो गया । फिर शिस् और इर्तिशके संगमपर बसे तारतारोंके अन्तिम गाव शिसतमकपर पहुचे । कसाक गरीवोंसे कर नही थोडी-सी भेंट लेते थे, जिसका प्रभाव साधारण जनतापर अच्छा पड रहा था। जब वह लौटनेके लिये ताशदकान पहुचे, तो बुखाराके कारवाके आनेकी खबर मिली। उससे मिले विना ही कसाक-दल येरमकके नेतृत्वमें सिविरकी तरफ लौटा। वह अपने पहलेके एक डेरे—येरमकोवा पेरेकोफ—के पास एक भीटे (ज़रेवो गोरोदिश्ची) पर पहुचे, जिसके बारेमें तारतारोका कहना था, कि यह उसी कूसिम-तुरा (कुमारी दुर्ग) का अवशेष है, जिसको कि कुमारियोने अपने लहगेमें मिट्टी ढो-ढोकर बनाया था। दुश्मनसे अब कसाक निश्चिंत हो गये थे, इसलिये विना संतरी रखे ही उन्होने वहा डेरा डाल दिया। कुचुमके चरने तीन बन्दूको और कितने ही कारतूसोको ले जा कसाकोके वारेमे उसे खबर दे दी। वह अपने आदमियोके साथ आकर उनपर टूट पडा। येरमक शत्रुओकी पातीको चीरता नदीके किनारे उस स्थानपर पहुचा, जहापर अपनी नावोके होनेकी उसे आशा थी। नाव न पाकर वह नदीमे कूद पडा। जारने जिस कवचको उसकी रक्षाके लिये भेजा था, वही उसके मरनेका कारण बना—कवचके बोझके मारे १७ या १८ अगस्त १५८५ ई० को येरमक नदीमें डूबकर मर गया। इस प्रकार एक क्रूर किन्तु साहसी पुरुषकी जीवन-यात्रा समाप्त हुई ।

येरमकका शव अवालकसे १२ वर्स्तपर २५ अगस्तको येपचिन्स्की नामक तारतार गावमें मिला। कवचका एक भाग और ओस्तियाकोकी देवमूर्तिसे वेलोगोर्स्कके लिये एक घंटा बनाया गया और दूसरे भागको मिर्जा कैंदोलको दिया गया। येरमकका चोगा राजकुमार सैंदियतको मिला, और तलवार तथा कमरबन्द मिर्जा कराचाको। मुल्लोने पूजाके डरसे येरमककी कबरको छिपा दिया ।

इस लडाईसे सिर्फ एक आदमी बच निकला, जिसने सिविरमें जाकर खबर दी। तारतारोसे भयभीत नेताविहीन एक सौ पचास भूखे कसाक २७ अगस्त १५८४ ई० को सिविर छोडकर लौटनके लिये मजबूर हुये। कुचुमने उन्हें नही छेडा और अपने पुत्र अलीको भेजकर सिविरपर फिरसे अधिकार कर लिया। जल्दी ही पुराने खानवंशके राजकुमार सैंदियतने अलीको मार भगाया। साइबेरियाका अभियान निष्फल नही हुआ, और न रूसियोका पैर तोबोल नदीके तटपर सिविर नगरतक ही आकर रुक गया।

३०. फ्योदर, इवान IV-पुत्र (१५८४-९८ ई०)

इवान IV ने क्रोधांध हो अनजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र इवानको मार दिया। क्रूर इवानके मरनेके समय उसके दो पुत्र जीवित थे, जिनमेंसे फ्योदर उसकी पहिली बीबी अनस्तासिया रोमनोवासे था और दूसरा शिशु दिमित्रि उसकी अन्तिम स्त्री मरिया नागायासे। अनस्तासिया रोमनोफ वंशकी थी, जो कि जल्दी ही रूरिक-वंशका स्थान लेनेवाला रूसका अतिम राजवंश बनने जा रहा था। फ्योदर रूसका जार बना और जारकुमार दिमित्रि अपनी मा और नानावंश (नगाय) के साथ उगलिच नामके छोटेसे नगरमें एक छोटी-सी जागीर देकर निर्वासित कर दिया गया। दिमित्रि बहुत दिनोतक नही जिया, और १५९१ ई०में मर गया। फ्योदर चिररोगी, बहुत दुर्बलबुद्धि किंतु साधु स्वभावका आदमी था। वह अपना सारा समय भगवान्‌की भक्तिमें बिताता। गिर्जेके घंटोको बजाते उनकी टुन-टुनकी आवाज सुननेमें उसे बडा आनंद आता था। लोग खुलेआम उसे मूर्ख कहते थे। राज्यका शासन जारके संबंधियों और उसके कृपापात्र बायरोके हाथमें चला गया, जिनमें बायर बोरिस फ्योदर-पुत्र गदुनोफ जल्दी ही सबसे अधिक प्रभाव-शाली बन गया। गदुनोफ-परिवार पुराने रूसी राजुल-वंशोमेंसे नही था, इसलिये वह उच्चकुलीन होनेका दावा नही कर सकता था। लेकिन इवान IV के अन्तिम दिनोमें बोरिसका प्रभाव बहुत बढ गया था, जिसमें उसकी बहिन इरिनाका जार फ्योदरसे ब्याह होना भी एक कारण था। वैसे बोरिस गदुनोफ बडा ही योग्य और गुणीपुरुष था, यद्यपि उसने ईसाई-धर्मके अनुसार पुस्तकोकी शिक्षा अच्छी तरह नही पाई थी। कुलीन बायर पुराने रीति-रवाजोका पालन करना आवश्यक समझते थे, किंतु बोरिस उनकी पर्वाह नही करता था। वह विदेशियोंसे मिलने-जुलनेमे जरा भी आनाकानी नही करता था।

अपने बहनोईकी ओरसे शासनका भार सभालते ही उसका पहला काम था, अपने काममें बाधा देनेवाले बायरोको दरबारसे निकाल बाहर करना। वह स्वय विदेशी राजदूतोसे मुलाकात करता और अपने घरमे राजदरबार जैसा ठाट रखता था। गदुनोफ ग्रीक चर्चके महत्त्वको समझता था। इस चर्चका सबसे बडा महन्त या महासघराज कान्स्तन्तिनोपोलमे रहता था, जो कि १४५३ ई० में सुल्तान मुहम्मद उसमानअली तुर्कके हाथमें चला गया था। यह कैसे पसद किया जा सकता था, कि ईसाई-धर्मके एक बडे सम्प्रदायका महागुरु ईसाई-विरोधी सुल्तानके मातहत रहे। १६ वी सदीके अन्तमें महासघराज जब-तब मास्को आने लगा था, जहा उसे बहुत भेंट-पूजा मिलती थी। इसी तरहकी एक यात्रामें महासघराज जेरेमिया जब मास्को आया, तो गदुनोफने उससे रूसी चर्चके लिये एक पृथक् सघराज होनेकी स्वीकृति ले ली। १५८६ ई० मे इस प्रकार बना प्रथम रूसी सघराज योब गदुनोफका अनुगामी था।

जार पयोदरके शासनके अन्तिम वर्षोंमें सारा शासनयत्र बोरिस गदुनोफके हाथमे चला गया। गदुनोफकी सफलताओने भी उसके प्रभावको बढानेमें सहायता की। लिवोनियाके युद्धमें रूसके हार खानेपर बाल्तिक तटको स्वीडनने दखल कर लिया था, जिसके कारण पश्चिमी युरोपसे रूसका सीधा सबध नही रह गया था। गदुनोफने इसके लिये १५९० ई० में स्वीडनसे लडाई शुरू की, और १५९५ ई० की सधिके अनुसार स्वीडनको मजबूर होकर फिनलन्द खाडी और लदोगा-सरोवरके तटके भूभाग (इवान-गोरद, याम, कोपोरये, करेला)को दे देना पडा। उस समय-राज्यके सामने किसानोकी एक बडी समस्या थी—रूसी किसान भूमिपतियोके शोषण और अत्याचारके कारण अपने गावोको छोड दक्षिण-पूर्व और उत्तरकी सीमात-भूमिमें बसते जा रहे थे, जिसके कारण खेतोका जोतना मुश्किल हो गया था। उन्हें मजबूर करके रखनेके लिये स्वीटनसे युद्ध होते समय (१५९२-९३ ई०) ही किसानोकी गणना की गई थी। उस वक्त जो किसान जिस जमीदारके अधीन दर्ज किये गये थे, उन्हें १५९७ ई० की राजघोषणाके अनुसार वही रहनेके लिये मजबूर किया गया।

१५९८ ई० में जार पयोदरके मरनेके साथ प्राचीन रूरिक-राजवश समाप्त हो गया। जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय परिषद्) ने १५९८ ई० में बैठक करके बोरिस गदुनोफको नया जार चुना।

रूरिक-वशने रूसके लिये बडा ही ऐतिहासिक काम किया। इसीके शासनकालमे जनयुगके अवशेषो को खतम करके रूसमे एक शक्तिशाली सामन्ती व्यवस्था कायम की गई, फिर रूसके भिन्न-भिन्न टुकडो-में बटी रियासतोको इकट्ठा करके बृहत्तर रूस देशके निर्माण करनेका प्रयत्न किया गया। इसमें मगोलोने आकर दो शताब्दियोतक कुछ बाधा जरूर डाली, लेकिन अन्तमें फिर एकीकरणका काम बहुत जोरसे शुरू हुआ और रूसकी सीमाए उत्तरमें फिनलन्दकी खाडी, पश्चिममें बाल्तिक-समुद्र, दक्षिणमें कास्पियन सागर और पूरबमे सिबिर नगरतक फैल गई। दक्षिणी सीमा कालासागरतक पहुच जाती, लेकिन कान्स्तन्तिनोपोलके तुर्कोने (१४७५ ई० में) क्रिमियाके खानको अपने अधीन करके उधरका रास्ता रोक दिया। यद्यपि आगेकी पौन शताब्दी रूसके लिये बहुत अच्छी साबित नही हुई, लेकिन साथ ही एक बार जहातक वह अपने पैरोको रख चुका था और जहा जनताका स्वार्थ सहायता देनेके लिये मौजूद था, वहासे उसे पीछे हटाया नही जा सकता था। रूसको और आगे ले चलनेका काम अब प्रथम पीतरको करना था, जो कि औरगजेबका तरुण समकालीन था। अकबरकी मृत्युसे सात वर्ष पहले पयोदरका देहान्त हुआ। देशके एकीकरण और दृढताके लिये जैसे अकबरने भारतमें काम किया था, वही काम रूरिक-वशके १६ वी शताब्दीके जारोने किया। अकबरके कामको औरगजेबने बेकार कर दिया, लेकिन रूसके सौभाग्यसे उसे जार पीतर जैसा दूरदर्शी शासक और चतुर सेनानायक मिला, जिसने रूसके पिछडेपनको हटानेका काम बडी सफलतापूर्वक किया।

रुरिक-वंशवृक्ष
(....६११-१५६८ ई०)

१ रुरिक (६११-?)

२ ओलेग (६११ ई०)
३ ईगर = ४. ओलगा (६४५-५७) (. ६४५)

५ स्व्यातोस्लाव I (६५७-७३)

यारोपोल्क
ओलेग
६ व्लादिमिर I (६७३-१०१५)

७. स्व्यातोपोल्क (१०१५-१६)
८ यारोस्लाव (१०१६-५४)

६. इज्यास्लाव (१०५४-७३)
स्व्यातोस्लाव II (मृ० १०७६)
व्सेवोलद

१० स्व्यातोपोल्क (१०७३-१११३)
११ व्लादिमिर II मनोमाख (१११३-१५)

ओलेग (मृ० १११५)
मिस्तस्लाव
१२ युरी I दीर्घबाहु (सुज्दल) (-११५७)

स्व्यातोस्लाव (मृ० ११६४)
१३ अन्द्रेइ (११५७-७४)
१४. व्सेवोलद (११७६-१२१२)

ईगर (वीर) (मृ० १२०२)
१५ युरी II (१२१२-३८)
१६ यारोस्लाव II

१७ अलेक्सान्द्र नेव्स्की (-१२६३)
यारोस्लाव (त्वेर) (मृ०१२७२)

१८ दानियल (मास्को) (१२६३-१३०३)

१६. युरी III (१३०३-२५)
२० इवान I खलीता (१३२५-४१)

२१ सेमअ्योन (१३४१-५३)
२२ इवान II (१३५३-५६)

२३ दिमित्रि (१३५६-८६)

युरी
२४ वासिली I (१३८६-१४२५)

२५ वासिली II अघ (१४२५-६२)

२६ इवान III (१४६२-१५०५)

२७ वासिली III (१५०५-३३)=[illegible]

२६. इवान IV [illegible]

[illegible]

भाग २

दक्षिणापथ (१२२४–१७४७ ई०)

अध्याय १

चगताई-वंश

(१२२२–१३७० ई०)

छिङगिस्के मरने के बाद उसका राज्य चार उलुसोमे विभक्त हुआ–(१) जू-छि-उलुस या सुवर्ण-ओर्दू (किपचक-राज्य), जिसके बारेमें अभी हम कह चुके है, (२) ओगोताई-उलुस, चगताईके उत्तर-पूर्वमें था, जिसके खान एमिल और कुवानमें रहते थे, (३) तूलुइ-उलुस, जो कि ओगोताई उलुस-के उत्तरमें था और (४) चगताई (जगताई, जगदाई)-उलुस जिसके हाथमें अन्तर्वेद, सप्तनद और पूर्वी तुर्किस्तान था। इन चारो उलुसोके अतिरिक्त कुबिलेइ खानके अनुज खुलाकूने ईरान, इराक, शाम और आज़रबाइजानमे अपना एक अलग राजवश कायम किया था। छिङ-गिस्ने ही अपना राज्य चार भागोमें विभक्त करके चारो पुत्रोको दे दिया था, लेकिन साथ ही चारो उलुसोके खानोको एक कआन (महाखान) के अधीन रहनेकी व्यवस्था भी कर दी थी। यह व्यवस्था बहुत-कुछ १३वी शताब्दीके अन्त (कुबिलेके मृत्युके समय १२९४ ई०) तक चलती रही, जिसमे सबसे अधिक बाधा ओगोताइ और चगताई-उलुसोकी ओरसे दी गई।

१. जगताई, छिङ-गिस्-द्वितीय पुत्र (१२२७–४२ ई०)

छिङगिस्ने अपने द्वितीय पुत्र चगताई (जगताई, छगताई) को जो भूभाग दिया था, उसमे अन्तर्वेद (आमू और सिर-दरियाके बीचका भाग), काश्गर, बदख्शा, बलख–अर्थात् उइगुर डाडे, अल्ताई और हिन्दूकुश पर्वतमालाओके बीचके देश शामिल थे। चगताई-भूमिमें आजकल चीनी-तुर्किस्तान, सोवियत कजाकस्तान-किर्गिजस्तान-उज्बेकिस्तान-ताजिकिस्तान-तुर्कमानिस्तान और अफगानिस्तान शामिल है। चगताईवशने ७७१ हि० (१३७० ई०) तक १४६ वर्ष राज्य किया, फिर उसका स्थान तेमूर और उसके वशजोने लिया। लेकिन, तेमूरकी सतानोने अबू-सईद (१४५१–६९ ई०) तक चगताई-वशके किसी व्यक्तिको गुडिया खान बनाकर कायम रक्खा। जिस तरह अब्बासी खलीफोकी राजशक्ति खतम हो जानेपर भी बगदादमें उन्हें कठपुतली खलीफा बनाकर कायम रक्खा जाता रहा, उसी तरह छिङ-गिस्के वशकी पवित्रताका खयाल करके चगताई खानोको समरकन्दकी गद्दीपर रखा जाता रहा। चगताई-उलुस १२२७ ई० से १३१८ ई० तक रहा। उसके बाद राज्यशक्तिको हथियानेके लिये मगोल और अ-मगोल, स्वदेशी और विदेशी दलोका झगडा उठ खडा हुआ, जिसमें अन्तर्वेदमें स्वदेशी तुर्कोंका पलडा भारी हो गया और इस प्रकार अन्तर्वेद (मावरा-उन्-नह्र) और मुगोलिस्तानके दो राज्य पैदा हो गये। चगताई खानकी राजधानी अल्मालिक इलि-उपत्यकामें वर्तमान कुलजा नगरके पास थी।

छिङ-गिस्के अन्त पुरमे पाच सौ खातूने (रानिया) और वेटिया थी। हरेक बडे विजयमे हाथ लगी सुदर राजकन्याओमेंसे एकको हरएक सेनापति अपने कआनके पास भेजना आवश्यक समझता था। बापकी तरह उसके लडकोके भी बडे-बडे रनिवास थे, तो भी प्रमुख रानिया (खातूनें) मगोल-वशकी ही होती थी।

चगताई खान अपने पिताके यस्सा (नीतिशास्त्र) का पडित तथा उसपर अक्षरश चलनेवाला माना जाता था। यस्साके अनुसार घरेलू जानवरोको जबह (हलाल) करना या दिनमें बहते पानीमे नहाना वर्जित था। जगताईने यस्साके विरुद्ध आचरण करनेपर एक मुसलमानको मृत्युदड दे दिया था। उसका शासन दृढ किंतु न्यायानुमोदित था। उसके राज्यमे डाकका बहुत अच्छा प्रबन्ध था। यद्यपि वह जबर्दस्त

पियक्कड था, किन्तु राजकाजके देखनेमे गफलत नही करता था। लोग उसके कठोर नियमोको भी मानते, क्योकि वह भरसक अन्याय नही होने देता था। उसके यहा सभी धर्मो और जातियोके लोग समान थे। समान दृष्टिसे देखे जानेका यह अर्थ नही था, कि मगोलोके समान ही दूसरे लोगोको भी माना जाता था। उसकी प्रजामें अधिकाश मुसलमान थे, इसलिये उसने मुसलमानोको बडे-बडे दर्जे दिये थे, तो भी बडे पदोपर मगोलोके बाद तुर्कोको अधिक देखा जाता था। इसका कारण भी था—केवल दक्षिणके थोडेसे अशको छोडकर उसकी प्रजा अधिकाश तुर्क थी। तुर्को और उनके सरदारोने तुर्क जातिके इतिहासमें प्रवेश करनेके समय (६ठी सदीके मध्य) से ही सैनिक जीवनको नही छोडा और वह अब भी जब-तब घुमन्तू जीवनका भी अभिनय करते थे, क्योकि मध्य-एसियामे घुमन्तू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझा जाता था। चगताई और जू-छिके उलुस तुर्कोके ऊपर शासन करते थे। अतमें इन उलुसोके मगोल भी इन्ही तुर्कोमें विलीन हो गये। लेकिन, चगताई खानके लिये अभी वह समय दूर था। चगताईने यलजपुत्र मसूदबेगको अन्तर्वेदका शासक नियुक्त किया था, जो कि तुर्क मुसलमान था। मसूद पहले चीनमें भी शासक रह चुका था। उस वक्त राज्यमें व्यक्ति-कर आमदनीका एक बडा स्रोत था, जो सम्पत्तिके अनुसार प्रतिव्यक्ति एकसे सात तका (११० जूयेनी) होता था। सभी धर्मोके पुरोहित करसे मुक्त थे।

अपने गुरु तातातुगाकी शिक्षासे चगताईने फायदा उठाया था। गुरुने शिक्षा दी थी—शासकको न्यायपरायण और उत्साही होना चाहिये। समरकन्द तथा बुखाराकी जगह अलमालिकको राजधानी बनाना चगताईके बाद उसके वशजोको भी पसद आया, क्योकि वहा उनके बहुसख्यक घोडो और पशुओके चरानेके लिये विशाल चरागाहें थी। अभी राजशक्ति मगोल तलवारोके ऊपर निर्भर थी, जो ऐसे खानको कभी नही पसन्द करते, जो पूर्वजोके जीवनको छोडकर नगरके-विलासी जीवनमें फस गया हो। मगोलोका शासन आर्थिक शोषणका था ही, इसलिये सारी निष्पक्षता दिखलानेपर भी मुल्ला मगोल काफिरोके विरुद्ध लोगोको भडका दिया करते थे, जिसके कारण विद्रोह हो जाना आसान था।

बुखारा-विद्रोह (१२३२ ई०)—१२३२ ई० मे बुखारामें मगोलोके विरुद्ध जो विद्रोह हुआ, उसका नेता एक छलनी बनानेवाला महमूद था। वह बुखारासे तीन लीग (योजन) दूर तारावमें पहले-पहल १२३२-३३ ई० (६३० हि०) मे प्रकट हुआ। उसने दावा किया—अल्लाने मुझे दिव्य शक्ति देकर भेजा है। पहले शायद भूत भगानेका काम करके उसने अपने प्रति लोगोंके मनमें विश्वास पैदा किया। मुसलमान हो जानेपर भी पुराने भूत-प्रेत लोगोके मनसे गये थोडे ही थे—मुसलमान भी जिन, शैतान आदिपर विश्वास करते थे। महमूदकी दिव्यशक्तिको पहले उसकी बहिनने स्वीकारा, फिर उसके दूसरे कितने ही अनुयायी बने। सब जगह हल्ला हो गया है, कि सत महमूदके पास जो जाता, उसकी बीमारिया छूट जाती है। फिर अबे-लूले-लगडे बडी भारी सख्यामें उसके पास पहुचने लगे। जब २०वी शताब्दीके मध्यमे उडीसाके नैपालबाबाके पास लोग रेलो-मोटरो-विमानोसे दौडने लगे, तो आजसे सवा सात सौ वर्ष पहलेके अतर्वेदके लोगोका ऐसा करना कौनसी आश्चर्यकी बात थी? महमूदका यश तारावसे चलकर राजधानीमें पहुचा। मुल्ला शम्सुद्दीन महमूदने पहले हीसे भविष्यद्वाणी लिख छोडी थी, कि मुसलमानोका मुक्तिदाता तारावमें पैदा होगा। धर्मांध महमूदने जल्दी ही देखा, कि उसके अनुयायियोकी सख्या बहुत अधिक हो गई है और वह मगोलोके विरुद्ध उठ खडे होने के लिये उसकी आज्ञा भर चाहते है। इस परिस्थितिको देखकर बुखाराके राज्यपाल और दूसरे अधिकारी घबडा उठे। उन्होने उस समय खोजदमे अवस्थित मसूदबेगके पास सलाहके लिये खबर भेजी और इधर नये पैगम्बरको दुआ देनेके लिये बुखारा बुलवाया। मौका पाते ही उस पागलको मरवा डालनेका निश्चय किया गया था, किंतु महमूद उतना पागल नही था। उसे षड्यत्रका पता लग गया। उसने साथ चलने वाली मगोलोकी ओर मुह करके एकाएक उनके विश्वासघातके लिये भर्त्सना करते यहा—मै तुम सबको इसी समय अधा कर देता हू। मगोल रक्षियोके दिलमें इसका भारी भय छा गया। उन्होने इसे उसकी दिव्यशक्तिका प्रमाण समझा। बुखारामें महमूदका स्वागत

राजसी ढगसे हुआ। उसे सल्जूकी सुल्तान सजरके वनवाये महलमें ठहराया गया। दर्शन करनेवालो की भारी भीड लगने लगी। लोग यह सोचकर अपनी जीभ निकाले खडे होते, कि महमूदके थूककी एक वूद हमारे मुहमे चली जाये और हम सारे रोगो और आफतोंसे मुक्त हो जायें। वुखाराके मुल्लो और अमीरोने इस अद्भुत सतको अपनी दूकानदारी और अधिकारके लिये खतरनाक समझा। उन्होने मगोलोको उसे मार डालने की सलाह दी। सव होते भी महमूदको उनके फदेसे निकलकर पडोसके पहाडमे भाग जानेमे कोई अडचन नही हुई। लोग पैगम्वरके पीछे-पीछे चले। किसानोने हल्ला उडाया, कि पैगम्वर हवासे उडकर उस पहाडमे चला गया। लोगोकी भक्ति और भी वढ गई। महमूदने जब देखा, कि शासक उसका प्राण लेनेके लिये तैयार है, तो उसने हथियार उठानेके लिये हुकुम देते हुए कहा "अव समय आ गया है, कि काफिरोको कतल कर दिया जाय।" थोडे ही समय वाद महमूद पैगम्वर और सुल्तानके रूपमे एक भारी अधविश्वासी भीडको लिये वुखारामे दाखिल हुआ। उसने मुल्ला शम्शुद्दीन महमूदको वुखाराका सदरे-जहान नियुक्त किया, और लोगोको हुकुम दिया, कि धनियो तथा

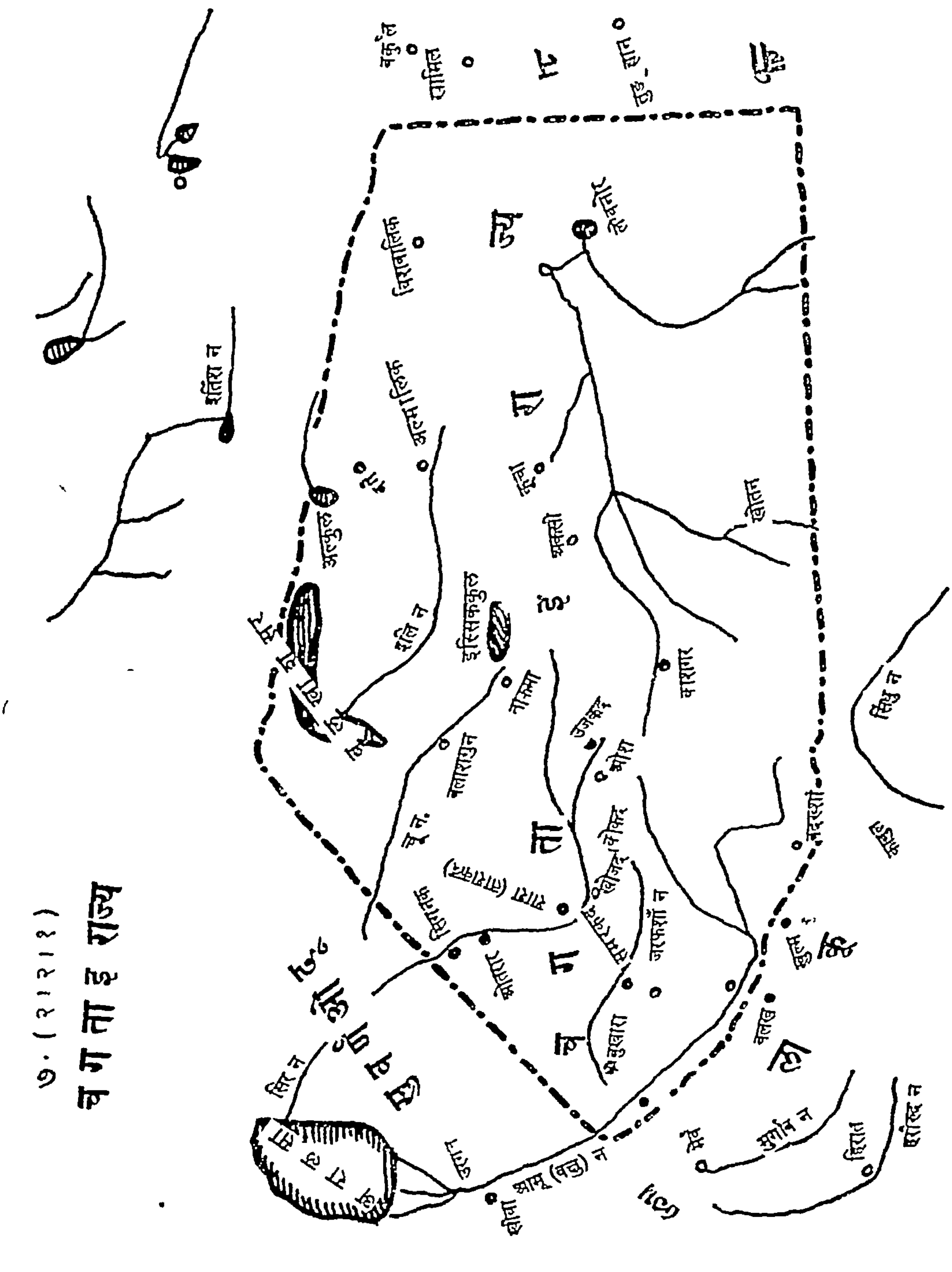

अमीरोंको लूटो। अपने भक्तोंको उसने विश्वास दिलाया—"मेरे पास एक गुप्त सेना है, जो हवामे मेरे हुकुमकी प्रतीक्षा कर रही है। देखो उन हरितवस्त्रधारियोको और उन दूसरे श्वेतवस्त्र-धारियोको, जैसे ही मै सकेत करूगा, वह हमारी मददके लिये उतर आयेगे।" भीडमेसे एक आदमीने कहा, "हा, मै देख रहा हू।" फिर सभीने वही बात दुहराई। महमूदने अगले जुमा (शुक्रवार) को अपने नामका खुतबा पढवाया। उसने धनियोकी सम्पत्ति जब्त कर ली। बुखाराकी सुदरिया बहुत भारी सख्यामें उसके घरमें चली आई। बुखाराके धनी-मानी करमीनाकी ओर भाग गये, और वहासे मगोल सैनिकोको लेकर फिर बुखारा आये। महमूद अपने एक शागिर्दके साथ निहत्था ही उनसे मिलने चला गया। अधविश्वासियोकी भारी भीड भी पीछे-पीछे थी। इसी समय अकस्मात् धूल लिये आधी उठी, जिसमें आदमी एक-दूसरेको देख नही सकते थे। चमत्कारोपर विश्वास करने-वाले मगोल डरके मारे भागने लगे। बुखारियोने पीछा करके उनमेसे बहुतोको मारा, लेकिन इसी समय उन्होने पीछे मुडकर देखा, कि उनका पैगम्बर मारा जा चुका है। महमूदका स्थान उसके भाई ने लिया, लेकिन वह एक ही सप्ताह शासन कर सका। इसी समय मगोल सेनापति इल्दिर नोयन और जेद्दगिन कुरजी काफी सेना लेकर आ पहुचे। पहले ही आक्रमणमें महमूदके अनुयायी भाग खडे हुए। मसूदबेगने मगोलोको नगर लूटनेसे तबतक रोके रखा, जबतक कि खानके पाससे आज्ञा न आ जाय। चगताईने लूटनेकी आज्ञा नही दी।

मगोलो और उनके सरदारोके बारेमे कितने ही लोग ख्याल करते है, कि वह बर्बर थे, लेकिन एक युरोपीय लेखक बर्थोल्दका कहना है—"मगोलोका सबध ऐसी जातियोंसे हुआ था, जो सभ्यताके उच्च तलपर थी। अपनी जन्मभूमि (मगोलिया) की तरहकी खुली जगहोके लिये उनके दिलोमें भारी प्रेम था। नगरो और बस्तियोको वह भ्रष्टाचार और नामर्दीका स्रोत मानकर बडी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे।" उनके लिये आदर्श जीवन था पशुपालोका—अर्थात् अपने पशुओको लिये सफेद नम्देके तम्बुओ में खुली जगहोंमे रहना। बस्ती और नगरके वासियोको वह तबतक छेडना नही चाहते थे, जबतक कि वह आज्ञाकारी रहें। बल्कि, ऐसे लोगोके लिये वह युद्धध्वस्त नगरोको फिरसे बसानेमें सहायता और प्रोत्साहन देते थे। इराक के जैसे कितने ही शहर उनकी लडाइयोके कारण उजड गये थे, लेकिन मगोलो ने वहाके लोगोको घुमन्तू जीवनकी ओर लौटानेका प्रयत्न नही किया। काश्गर प्रदेशकी अवस्थामें कुछ भेद था। मगोलोने जल्दी ही इस प्रदेशको अपने हाथमें कर लिया था। तरिम-उपत्यका उस समय उइगुरोकी थी, जो बौद्धधर्मी रह सस्कृतिमें अधिक विकसित हो चुके थे। वह अब घुमन्तू नही बल्कि बस्तीमें रहना पसन्द करते थे, और उन्होने चीनी तुर्किस्तानके नागरिक जीवनको स्वीकार कर लिया था। उइगुरो (कराखानियो)के उत्तराधिकारी कराखिताई भी जल्दी ही नागरिक जीवनके प्रभावमे आ गये थे। लेकिन, जिस तरह पश्चिमी तुर्किस्तानमें नगरोके जीवनको फिरसे स्थापित करनेमें चगताइयो ने सहायता की, वही बात पूर्वी तुर्किस्तानमें नही हुई। वहा उजडे हुए नगर फिर नही बस सके, न टूटी नहरे फिरसे जारी की जा सकी, जिसके कारण हरे-भरे गाव और सुदर नगर बालुकासमुद्रमें डूब गये।

मगोलोके शासनकालमें दूसरी विद्याओका प्रचार और विकास रुक गया, हा, इस्लामिक धर्म-शास्त्र और उससे भी ज्यादा सूफी-सतोका प्रभाव अवश्य बढा। इस समयसे सूफीसतो (खोजो,शेखो) का प्रभाव इस भूमिमें इतना जबर्दस्त स्थापित हो गया, जितना किसी दूसरे इस्लामी देशमें देखा नही जा सकता। इसी समयसे इन सतोके परिवारोने स्थायी तौरसे देशका धार्मिक और सास्कृतिक नेतृत्व अपने हाथोमें ले लिया। सतों और सूफियोकी ओर लोगोका इतना झुकाव शायद इसीलिये हुआ कि मगोलोने विजयी इस्लामको धूलमें मिला दिया था। ससारमे किसी ओरसे आशा न रह जानेपर अब लोगोका ध्यान सूफियोके चमत्कारपूर्ण रहस्यवादी उपदेशो और विचित्र जीवनोकी ओर खिच गया।

चगताईके शासनके आरम्भ होते ही मगोलोद्वारा ध्वस्त नगरो और गावोको फिरसे आबाद करनेके लिये सबसे जरूरी बात थी, भयभीत किसानों और कारीगरोको समझा-बुझाकर काममे लगाना। हम देख चुके है, नगरोंके भीषण नर-सहारके समय भी मगोलोने कारीगरोको प्राण-दान देकर

उनके दिलमे विश्वास कायम करनेकी कोशिश की थी। चगताई-शासकोके सहानुभूतिपूर्ण भावने भी लोगोके दिलमें विश्वास पैदा किया। मसूदवेग चगताई खानका परम विश्वासपात्र अधिकारी था, तो भी उसके अधीनस्थ नगरोमें कितने ही मगोल शासक भी नियुक्त थे, जैसे समरकन्दका शासक जोङ्-सान ताउ-फू और बुखाराका बुका-बोशा, जिनमे पहला शायद चीनी था। चगताईका वजीर हेजिर तुर्क था। मसूदने लोगोकी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये मदरसे भी कायम किये। १२३४ ई० में बुखाराके मसूदवेग और शेरकुली मदरसोमे हजार विद्यार्थी पढते थे।

गर्मियोमें चगताई खानका निवास कूयाश (सूर्य) अलमालिकके पास कोक (नील) पर्वत में रहता था। जाडोमें वह मेराउरिक (? मेराउजिक)—इलामे रहता, जो इलिके तटपर था। कूयाशके पास चगताईने कुतुलुग (पवित्र) गाव बसाया था। चीनी पर्यटक चान-चुनके अनुसार चगताई का ओर्दू इलि नदीके दक्षिणी किनारेपर—शायद उसी जगह जहा कि उसके उत्तराधिकारीका ओर्दू—उलुस-इफ या उलुस-इकमें था। चगताईका इल-अलरगू (सबसे बडा नगर) अलमालिक था। चगताई-की उइगुर प्रजामे अब भी कुछ बौद्ध थे, और कुछ ईसाई। इन दोनो हीके साथ मुसलमानोकी सख्त दुश्मनी थी। अभी सप्तनदके मुस्लिम जिलोमें भी काफी गैर-मुस्लिम रहते थे—उदाहरणार्थ, चू-उपत्यकाके नेस्तोरी। १२५३ ई० में जब रुबरिक इधरसे गुजरा, तो कयालिकसे उत्तर तीन फ्रासीसी मील (ल्यू, १३॥ वर्स्त) पर उसने एक गाव देखा, जिसके सारे निवासी ईसाई थे और वहापर उनका गिर्जा भी था। इस्सिकुल सरोवरके तटपर भी इसी नामके एक नगरमें १४वी सदीमे अर्मनी साधुओके मठ थे। मार्को पोलोके अनुसार चगताई स्वय ईसाई था। जो भी हो, मुसलमानोको जानवरोके हलाल करने और बहते पानीमे नहानेके लिये मृत्युदड देना, उन्हे भडकानेके लिये काफी था। इसी भावको प्रकट करते चगताईकी मृत्युपर किसी मुसलमानने पद्य लिखा था—

"जिसकी डरसे कोई पानीमे नही उतरता था,
वह डूब गया गहरे समुद्रमें।"

आज्ञाका विरोध करनेके लिये चगताईके हुकुमसे ६२६ हि० (३० XI १२२८—२१ X १२२९ ई०) में मुल्ला अबू-याकूब-यूसुफ सैकाकी मारा गया, जिसकी कब्र १६वी सदीमे भी तेकेस नदीके तटपर मौजूद थी। लेकिन, यह सब होते हुए भी चगताई मुसलमानोका द्वेषी नही था, यह इससे भी सिद्ध है, कि उसके बहुतसे राजविभागोके प्रमुख मुसलमान थे। सबसे शक्तिशाली और धनी व्यापारी कुतुबुद्दीन खवास-आमिद था। ख्वारेज्मशाह मुहम्मदकी एक कन्या कुतुबुद्दीनसे व्याही थी और दूसरी चगताईके हरममे थी।

चगताईने अपने जीवनमें ही ओगोताई कआनकी सम्मतिसे अपने पोते करा हुलाकूको अपना उत्तराधिकारी बनाया था। वह दिसम्बर १२४१ ई० मे मरा।

चगताई-वशमे निम्न खान हुये—

१	चगताई, छिङगिस्-पुत्र	१२२७-४२ ई०
२.	करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र	१२४२-४६ "
३	येस्सू मङ्गू, चगताई-पुत्र	१२४६-५१ "
	करा हुलाकू (पुन)	१२५१ "
४	ओरगाना खातून, कराहुलाकू-पत्नी	१२५१-५९ "
५	अलगू, अरिकबुगा, बेदार-पुत्र	१२५९-६५ "
६	मुबारकशाह करा हुलाकू-पुत्र	१२६६ "
७	बोराक इसुनदावा-पुत्र	१२६६-७१ "
८	निकपाई सरवान-पुत्र	१२७१-७४ "
९	तोका तेमूर कदमी-पुत्र	१२७४-८२ "
१०	दुवा, दावा, बोरा-पुत्र	१२८२-१३०७ "

११	कुजेक, कोन्चोग्, दुवा-पुत्र	१३०७-८ ई०
१२	तलिकू, खिजिर, कदर्मी-पुत्र	१३०८-९ "
१३	केबेक, दुवा-पुत्र	१३०९ "
१४	एसेनबुका, ईसनबुका, दुवा-पुत्र	१३०९-१८ "
	केबेक (पुनः)	१३१८-२६ "
१५	इल्चिकदई, इलिचिगिदई, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१६	दुवा तेमूर, दुर्रा तेमूर, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१७	तर्मा शेरिन, मजर, दुवा-पुत्र	१३२६-३४ "
१८	बजन, बोजन, दुवा-तेमूर-पुत्र	१३३४ "
१९	जेङकिस खलील, एबुगेन-पुत्र, दुवा-पौत्र	१३३४-३८ "
२०	येस्सुन तेमर, एबुगेन-पुत्र	१३३८-४० "
२१	अली सुल्तान, ओगोताई-वंशज	१३४०-४२ "
२२	मुहम्मद पुलाद, कोन्चोग-पुत्र	
२३	काजान, गाजान, यसाउर-पुत्र	१३४६ "
२४	दानिशमन्द, ओगोताई-वंशज	१३४६-४८ "
२५	बायनकुली, सूरगू ओगलान-पुत्र	१३४८-५८ "
२६	तेमूरशाह	१३५८– "
२७	इलियास खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र	–१३६३ "
२८	काबिलशाह	१३६३-६६ "

२ करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र (१२४२––४६ ई०)

छिङगिस् जिस वक्त हिन्दूकुश-पर्वतमालाके अजेय दुर्ग बामियान पर आक्रमण कर रहा था, उसी समय उसका अत्यन्त प्रिय पौत्र मोतुगान मारा गया। शायद बापके मारे जानेपर छिङगिस्का भारी शोक करना करा हुलाकूके लिये चगताईके प्रेम और उत्तराधिकार पानेका कारण हुआ। गद्दीपर बैठने समय करा हुलाकू छोटा था, इसलिये राजकाजका भार अभिभाविकाके रूपमें उसकी दादी एबुसकिनने अपने हाथमें लिया। अभिभाविकाने पहिला काम यह किया, कि हकीम मजीदुद्दीन और अपने पतिके हवाशाय वजीर हेजिरको हकीमसे मिलकर चगताई खानको मरवानेके इल्जाममें मरवा डाला। उसने अपने बहनोई हबश अहमदको अपना वजीर बनाया। अभी अवस्था ठीक नहीं हुई थी, कि इसी समय ओगोताई कआन मर गया और कूयुकने जबर्दस्ती कआनपदको ले लिया। उसने अपने सभी विरोधियोंको उनके पदसे निकाल दिया, जिनमें एबुसकेन भी थी। कूयुकने ६४५ हि० (८ V १२४७—२८III १२४८) में इस्सुनको चगताई-उलुसका खान नियुक्त किया, जिसके कारण केवल अलमालिकमें ही नहीं, सारे चगताई-उलुसमें गड़बड़ी फैल गई। मसूदबेगको भी भागकर बातूके पास शरण लेनी पड़ी। कआनका निर्वाचन १२४६ ई० तक नहीं हो सका था। कुरिल्ताई (महासभा) की बैठकमें ओगोताईके पुत्र कूयुक (गुयुक) को कआन चुना गया। कूयुक ईसाई-धर्मका पक्षपाती तथा चगताईकी तरह ही इस्लाम-विरोधी था। अब साम्राज्यमें ईसाइयोंका मान बहुत बढ़ गया था। गूयुक कआनने करा हुलाकूको हटाकर चगताई-पुत्र येस्सू-मुङ्के (येसू-मङ्गू) को खान बनाया।

३ येस्सू मङ्गू, येसू-मुङ-खे (१२४६-५१ ई०)

येसू-मुङ्के सदा शराबमें मस्त रहता था, राजकाजका काम उसकी रानी तुगाशी देखती थी। साम्राज्यमें उसे बहाउद्दीन हबश जैसा योग्य ख्वाजा-अमिदा (वजीर) मिला था। ख्वाजा हबशने चगताई खानके हत्या पुत्रके साथ अपने एक-एक पुत्रको लगा रक्खा था। येसू-मुङ्केके दरबारमें विद्वान् बहाउद्दीन मेर्गीनानी रहता था। उसका पिता फरगानाका शेखुल्-इस्लाम और मा कराखानी वंशजा थी। गूयुकके समय बातू भारी सेनाके साथ पश्चिममें दिग्विजयके लिये भेजा गया था। इसी समय हुलाकू-

को दक्षिणमे दिग्विजयके लिये भेजा गया । अभी यह दिग्विजय-सेना कयालिक नगरसे सात दिन पर अवस्थित (सप्तनदके दक्षिणके अलाताऊ पर्वतके पास) अलाकामकमे थी, कि गूयुक कआनके मरनेकी खबर मिली । अब तुलुइका ज्येष्ठ पुत्र तथा कुबिलेईका बडा भाई मुङ-खे (मङ-गू)कआनकी गद्दीपर बैठा । ओगोताईके पौत्रोने इसका विरोध किया । वह समझते थे, कि गूयुकके बाद अब उनके उलुसका कआन होना चाहिये । इस विरोधमे येसू-मङ-गू भी ओगोताईके पौत्रोके साथ था । १२५१ ई० मे राजधानी कराकोरममें कूरिल्ताई बुलाई गई, जिसमे मुङ-खेके गद्दीपर बैठनेका बडा विरोध हुआ । मगोलोमे भीषण सघर्ष शुरू हो गया । सतहत्तर बडे-बडे सरदार मारे गये, और बहुतसे खानजादे दूर-दूर निर्वासित कर दिये गये, जहा कितनेही मर गये । चगताई-गद्दीसे वचित करा हुलाकूने मुङ-खेका पक्ष लिया । कआन अब भला येसू-मङगूका क्यो पक्ष लेने लगा ? करा हुलाकूने अपने भाई बुरीके साथ एक बडी सेना ले चढाई की । येसू-मङगू, तुगाशी खातून और बुरी आसानीसे पकड लिये गये । तुगाशी करा-हुलाकूको दे दी गई । येसू-मङगू और बुरी भागकर बातूके ओर्दूमे चले गये, जहापर बुरीको मृत्युदड दिया गया, और उसके बारह भाइयोके साथ येसू-मङगूको भी उसकी जन्मभूमिमे भेज दिया गया । येसूको फिर खानका स्थान मिलनेवाला था, किन्तु वह रास्ते हीमे मर गया । तुगाशी खातूनपर मुकदमा चलाकर उसे घोडेके नीचे रौंदवाकर मरवाया गया ।

करा हुलाकू (पुन १२४६ ई०)

करा हुलाकूके राज्य सभालनेपर हवश आमिद फिर वजीर हो गया । उसने बहाउद्दीनको जेल-में डाल दिया । बहाउद्दीन ने कवितामें बहुत स्तुति की, लेकिन सब बेफायदा । रानी एरगेनाने नमदेमे लपेट ठोकरें लगवाती उसकी हड्डी तुडवाई । करा हुलाकू अधिक दिन नही जी सका । उसके बाद उसकी रानी ओरगाना(एरगेना)ने गद्दी सभाली ।

४ एरगेना, ओरगाना, करा हुलाकूपत्नी

एरगेना मजुलता, सौंदर्य, और प्रतापमे अपने समयकी तीन अद्वितीय मगोल-राजकुमारी बहिनोमेंसे थी, जिनके बारेमें कहा जाता था, कि दुनिया का कोई चित्रकार उनके रूपको अपनी तूलिकासे चित्रित नही कर सका—तीनो बहनें चगताई, बा-तू और खुलाकू-वशी खानोकी रानिया थी ।

मुङखे कआनद्वारा पश्चिमके दिग्विजयार्थ भेजी गई सेनाओमेंसे कराकुरम और बिशबालिगसे आनेवालियोको चगताई-भूमिमें मिलना था । वहासे कयालिक और ओतरारके बीच पहुचनेपर ओरदा (जूछि-पुत्र)के पुत्र खकिरिन (खूकिरान) को इस भारी सेनाका सचालक बनना था । लेकिन अब बातू और मुङखे कआनमे मतभेद हो गया था । मुङखेने इसी बातको साधु रुबरिकसे कहा था—"जैसे सूर्य अपनी किरणोको सर्वत्र फैलाता है, उसी तरह मेरी और बातूकी राज्यशक्ति भी देश-देशमे फैली हुई है ।" यह कहना इसी बातको सिद्ध करता है, कि अब कआनका बातूपर कोई दबाव नही था । कआन और बातूकी सीमा तलस (तरस) से थोडा पूरबमें मिलती थी ।

प्रधान-वजीर हवश हमीद (अमीद) और उसका पुत्र नासिरुद्दीन राजकाजमे ओरगानाकी सहायता करते थे । रानीकी योग्यतासे कोई इन्कार नही करता । इतिहासकार वस्साफके अनुसार ओरगाना स्वय बौद्ध थी । १२८४ ई० मे ओरगाना अलमालिकमें ही थी, इसी समय कआनका अनुज तथा रानीका बहनोई खुलाकू पश्चिमी एसियाके दिग्विजयके लिये आते हुए उससे मिला । वहासे खुलाकू की सेना सप्तनद और सिर-उपत्यका होते १२५५ ई० के वसतमे समरकन्द पहुची । इससे दो साल पहले (१२५३ ई० में) साधु रुबरिक सप्तनदसे गुजरा था । उसने अपने यात्रा-विवरणमे इस प्रदेशका अच्छा वर्णन किया है । लडाईके ध्वसके रूपमें उसने इलितटपर मिट्टीकी दीवारोवाले अनेक खडहर देखे थे । उससे कुछ दूरपर एक प्रसिद्ध नगर इलानबालिक था, जहासे १२५५ ई० में अर्मनी राजा गयतोन गुजरा था । उसने लिखा है—पहाडसे निकलकर बहुतसी नदिया बलकाश झीलमें गिरती है । यहीपर कयालिक नामका बडा नगर था । जहा बहुतसे व्यापारी रहते थे । यहाकी मैदानी भूमिमे पहले बहुतसी बस्तिया थी, जिन्हे तातारोने ध्वस्त कर दिया । सप्तनदके उत्तरी भागमे अब

मगोल बुमन्त् रहा करते थे। इतिहासकार जुवेनीके अनुसार मुङ्खे कआनने उज्कन्दको करलुकवशी अरसलनखानके पुत्रको प्रदान किया था।

हुलाकू (ख्लाकू)ने ईरान पहुच वहासे चाद्रतेको किसी काममे इलि और चूके बीचकी भूमि (सप्तनद) द्वारा कआनके पास भेजा। यह चीनी यात्री १२५९ ई० मे सप्तनद होकर गया था। वह इस प्रदेशका नाम इ-तू (इ-द्रू) बतलाता है और कहता है, कि वहा बहुतसी जातियोकी बस्तिया है। उस समय इस प्रदेशमें बहुत वृक्ष थे।

ओरगानाने सप्तनद और अन्तर्वेदपर दस सालतक अच्छी तरह शासन किया।

कआनके मरनेपर फिर जो उथल-पुथल हुई, उससे चगताई-उलुसमे भी गडबडी मची। मुङ्खे-कआन ६५८ हि० (१८ XII १२५९—७ XI १२६० ई०) मे मरा। अब कआनके सिंहासनके लिये मुङ्खेके दो भाइयो कुबिले और अरिकबुगाका झगडा हुआ। अरिकबुगाने अलगूको और कुबिलेने बूरी-पुत्र अबिश्काको चगताई खान बनाया। अलगूकी शक्ति ज्यादा मजबूत थी। उसने ओरगानाको भगाकर अलमालिककी गद्दी सभाल ली।

५ अल्गू, अरिकबगा, बेदार-पुत्र (१२५९–६५ ई०)

कुबिलेद्वारा निर्वाचित चगताई खान अबिश्काको रास्तेमे ही कुबिलेके प्रतिद्वद्वीने बदी बना लिया, लेकिन पीछे अलगूने इसका बदला कुबिलेके प्रहारके समय सहायता देनेसे साफ इन्कार करके लिया। यही नही, उसने अरिकबुगाके तीन कर उगाहनेवालोको पकडकर उनके पासके पैसोको छीनकर मरवा डाला, और इसके बाद वह खुल्लमखुल्ला कुबिलेका समर्थक बन गया।

तुर्किस्तान भाग अलगूके राज्यमे सम्मिलित था। उसके पास डेढ लाख सवार-सेना थी। ओरगानाने अरिकबुगाका पक्ष लेते उसके पास सदेश भेजा, इसपर अलगूने पाच हजार सैनिकोके साथ उचाचर और बिकी ओगलान तथा अमीरोमेंसे हबश अमीर-पुत्र सुलेमानको भी बितिकची और अबिश्काके साथ समरकन्द, बुखारा तथा अन्तर्वेदके दूसरे इलाकोमें सीमानोकी रक्षाके लिये भेजा। अलगूको सुवर्ण-ओर्दूके खिलाफ ख्वारेज्मसे भी सफलता मिली।

इस विश्वासघातसे नाराज होकर अरिकबुगाने कुबिलेके सकटकी पर्वाह न कर अलगूपर चढाई कर दी। ऐसा अच्छा मौका पाकर कुबिलेने आक्रमण करके राजधानी कराकोरमको अरिकबुगासे छीन लिया। उधर अरिकबुगाने भी अलगूसे चगताईराजधानी अलमालिक ले ली। अलगू भागा, और काशगर, खोजन्द होते समरकन्द पहुचा। अरिकबुगाने ६६२ हि० (४ XI १२६३—२४ X १२६४ ई०) के जाडोको अलमालिकमे बिताया। उसने अलगूके अनुयायियोके साथ बडा निष्ठुर बर्ताव किया, और पास-पडोसके इलाकोको इतना उजाड दिया, कि भयकर अकालके मारे हजारो आदमी मर गये। अरिकबुगाके इस क्रूर बर्तावसे उसके अच्छे-अच्छे सेनापतियोने साथ छोड दिया। तब उसे होश आया और समझौतेके लिये तैयार हुआ। ओरगाना और मसूदबेग बातचीत करनेके लिये नियुक्त किये गये। अन्तमे चगताईका प्रदेश अलगूको दे देना पडा। खाली कोशको भरनेके लिये मसूदबेगने फिर प्रयत्न करना शुरू किया। अलगूका एक और भी दूसरा भयकर प्रतिद्वद्वी था ओगोताईका पौत्र कैदू (काइ-दू), जिसने बातूकी सहायतासे अन्तर्वेदके उत्तरी भाग—तुर्किस्तान प्रदेश—को हडपनेकी कोशिश की, लेकिन, अरिकबुगासे छुट्टी पाकर अलगूने उसे मार भगाया। ओरगाना अलगूकी प्रिया पत्नी थी, जिसकी मृत्युके थोडे ही समय बाद ६६४ हि० (१३ X १२६५—३ IX १२६६ ई०)में अलगू भी मर गया। अन्तिम समयमे अलगूको सदेह हो गया था, कि ओरगाना अन्तर्वेदके मुसलमानोका अधिक पक्षपात करती है, जिससे ही पापके कारण वह मरी।

अलगूका प्रतिद्वद्वी कैदू बहुत समयतक कुबिले खानका भी जबर्दस्त प्रतिद्वद्वी रहा। कुबिलेको कआनका महासिंहासन और सभी तरहके भौतिक साधन प्राप्त थे, किन्तु कैदूको केवल अपने कौशल तथा वीरताके ऊपर लडना था। उसने न कभी शराब पी और न कूमिस ही। पहले वह पहाडोके भीतर छिपकर कआन और अलगूसे लडता रहा। फिर उसने बेरेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) और अलगूके बीचमें

झगडा डलवा दिया। वेरेकने किसी ज्योतिषीसे सुना था, कि कैंदू वहुत भारी आदमी होगा, इसलिये वह उसकी सहायताके लिये तैयार होगया। जू-छि उलुसकी मददसे कैंदू काफी शक्तिशाली हो गया, और उसने अलगूकी एक वडी सेनाको हराकर नष्ट कर दिया। अलगूने दूसरी जवर्दस्त सेना भेजी, जिसने ओतरारके पास वेरेक खानको हराया—यह १२६५ ई० के अन्त या १२६६ ई० के आरम्भ की वात है। इन आरम्भिक लडाइयोके वाद अलगूको सफलता मिलने लगी और वह अपने सभी इलाकोको अपने हाथ में करनेमें सफल हुआ।

६ मुबारकशाह, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६ ई०)

इतिहासकार जमाल करशीके अनुसार ओरगाना-पुत्र मुवारकको १२६६ ई० मे आहनगर उपत्यकामें खान वनाया गया। चगताई खानोमें वह पहला मुसलमान था, यद्यपि अभी खानोका इस्लाम अधिकतर दिखावेके लिये था। सारी प्रजाके मुसलमान होनेके कारण ऐसा करनेमे लाभ था। मुवारकको वहुत कोमलप्रकृति और न्यायप्रिय कहा जाता है। कुविलेने उसको चगताई खान स्वीकार कर भी उसके सौतेले भाई वोराकको उसका उपराज वनाया, जिसमे कही मुवारककी शक्ति ज्यादा न वढ जाये। इस समय अव चगताई-राज्यके भीतर मुल्की,गैरमुल्की, मगोल-अ-मगोलका सवाल छिड गया था, जिसके उठानेमें वोराकका भी हाथ था। निम्न सिर-उपत्यका भी अव कैंदूके हाथमें चली गई थी। कैंदूके चालीस पुत्र अलग-अलग सेनाओके सेनापति थे। लूटप्रेमी, घुमन्तू मगोल और तुर्क वडी सख्या में कैंदूके झडे के नीचे चले गये थे। कैंदू अन्तर्वेद ही नही, कुविलेके राज्यको भी लेना चाहता था। कुविलेने उसके विरुद्ध अपने पक्षको मजवूत करनेके ख्यालसे वोराकको मुवारकका उपखान वनाकर अल्मालिक भेजा था, लेकिन वोराकने शुरूसे ही कैंदूके साथ सहानुभूति दिखलानी शुरू की। दोनोने वुखारा और समरकन्दके हथियार वनानेवाले (वस्साफ) के अनुसार ६६१ हि० (१५ XI १२६२–६ X १२६३ ई०) में सोलह हजार कारीगरोको भेंडोकी तरह आपसमें बाट लिया। इनमेंसे पाच हजार वातूको, तीन हजार हुलाकूको और वाकी कआनको मिले। उज्गद और पूर्वी तुर्किस्तानमें भी वोराकको सफलता मिली। इन सफलताओके वाद अव मुवारकको गद्दीपर वनाये रखनेकी जरूरत नही थी, इसलिये सितम्वर १२६६ ई० मे उसे वन्दीखानेमें डाल दिया गया, और सौतेले भाई वोराकने सीधे गद्दी सभाल ली।

७ बोराक, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६-७१ ई०)

कैंदू कुविलेके विरुद्ध सफल नही हो रहा था, जूछि-उलुस भी प्रवल था, इसलिये वह चगताई–राज्य से ही कुछ छीन सकता था, इसीलिये वोराक और कैंदूमें पूर्वी सिर-उपत्यका और सप्तनदके लिये झगडा हो गया। १२६८ ई० में जूछि-उलुसके खान मङ्गू-तेंमूरकी सहायतासे कैंदूने सिर-उपत्यकाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन उसके कुछ ही समय वाद कैंदू और मङ्गू तेमूरमें लडाई हो गई। इस अवसरसे फायदा उठाते हुए वोराक भी कैंदूके ऊपर चढ दौडा,। दोनोमें सेहून (सिर-दरिया) के तटपर लडाई हुई। कैंदू और किपचक-सेनाकी हार हुई। वहुतसे लोग मारे गये या वन्दी वने, भारी सम्पत्ति लूटमे मिली। यह खबर सुनकर मङ्गू-तेमूरने अपने चचा वेरकेचरको पाच तुमान (पचास हजार) सेना देकर भेजा। उसने वोराकको वुरी तरह हराया। वह समरकन्दकी ओर भी वढना चाहता था, लेकिन कैंदूने उसे मना कर दिया।

इस युद्धमे हारकर वोराक अन्तर्वेदकी ओर भागा। उसकी सेना विना लूटका माल पाये ही लौट रही थी, इसलिये उसे सतुष्ट करना आवश्यक था। वोराकने इसके लिये वुखारा और समरकन्दके लोगोको केवल शरीर ले नगरसे वाहर निकल जानेका हुकुम दिया, जिसमें कि सेना नगरको लूटकर अपना मनोरथ पूरा कर सके। लोगोके वहुत रो-धोकर विनती करने, भारी कर देने तथा हथियार वनाने वाले सिकलीगरोके रात-दिन हथियार वनानेके लिये वचन देने पर वोराकने अपने इरादेको छोड दिया। वडे जोरसे तैयारी होने लगी और वोराक जल्दी ही फिर लडनेके लिये तैयार हो गया।

कैंदू केवल योग्य सैनिक ही नही, वल्कि एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। वह अरिकवुगा की गलतीको दुहरा नही सकता था। वह जानता था कि मेरा सवसे जवर्दस्त शत्रु कुविले खान है,

इसलिये उसने शान्तिसे काम लेना चाहा और मेल करानेके लिये बोराकके लगोटियायार किपचक ओगलानको उसके पास भेजा। बोरकने अपने मित्रका खूब स्वागत किया। दोनोने एक दूसरेको प्याला दिया, सलाह हुई, कि जूछि, चगताई और कैंदूके उलुसोके बीच मित्रता स्थापित करनेके लिये एक कूरिल्ताई (महापरिषद्) बुलाई जाय।

६६७ हि० (१० IX १२६८–१ VIII १२६९ ई०) के वसत (मार्च-अप्रैल १२६९ ई० में) तलस और कॅजककी मैदानी भूमिमे कूरिल्ताई एकत्रित हुई। कैंदू और बोराक दोनो अपने-अपने रक्त तथा सुवर्णसे मिश्रित मदिराको एक साथ शान्तिचषकमें पीकर एक-दूसरेके अदा (परम मित्र) बने। कूरिल्ताईमें कैंदूने कहा था—"हमारे महान् पितामह (छिङ-गिस्) ने दुनियासे युद्ध किया तलवार और बाणके बलपर विशाल राज्य स्थापित किया। जब हम अपने पुरखाकी ओर देखते है, तो हम सब भाई भाई है। लेकिन हममें कुछ भी मेल नही।" इसके जवाबमें बोराकने कहा—"बात ठीक है। मै भी उसी वृक्षका फल हू। मेरे पास भी थोडा-बहुत यूर्त (ओर्दू) है। चगताई और ओगोताई (कैंदूका पितामह) छिङ-गिस् खानके ही पुत्र थे। ओगोताई कआनसे कैंदू, चगताईसे मै, जेठे भाई जूछिसे बेरकेचर और मङ्गू-तेमूर और कनिष्ट भाई तू-लुईसे हुलाकू और कुबिले है।

"हमारे समयमें पश्चिमातका स्वामी मङ्गू-तेंमूर खताई-माचीनका राजा कुबिले खान है, जिसके राज्यकी लम्बाई-चौडाईको भगवान् ही जानता है। पश्चिमानमें आमूसे सिरिया और मिस्रतक पिताद्वाराअर्जित राज्यका खान अबका है। दोनोके बीचमें हमारा राज्य, तुर्किस्तान और किपचक है। मुझे अपना कसूर नही मालूम होता।' इसपर कैंदू और बोराक दोनोने कहा—"सत्य तुम्हारी ओर है। अब यही निर्णय है, कि आजके बाद हम एक दूसरेके विरोधी नही बनेंगे।"

इस प्रकार गरमागरम भाषण करते और भावुकता दिखलाते हुए मगोल-राजवशियोने आपसमे मेल किया। उनके लाखो घोडो और पशुओके लिये चरागाहोकी अवश्यकता थी, जो गर्मीकी अलग और जाडेकी अलग होती थी। गर्मीके दिनोमे ओर्दू ऊची ठडी जगहोमें जाकर अपने तम्बू लगाता और जाडेके दिनोमें ऐसी जगहपर, जहा हवा और सर्दी कम होती तथा कुछ घास-चारा भी मिल सकता था। कूरिल्ताईने याइलक (गरम चरागाह) और किशलक (सर्द चरागाह) निश्चित कर दिये गये। कैंदूके ओर्दूको सप्तनदमें स्थान दिया गया। मुस्लिम इतिहासकार कैंदूकी न्यायप्रियताके वडे प्रशसक है—कैंदूने सफल युद्ध करके अपने राज्यमें व्यवस्था कायम की थी।

कूरिल्ताईके फैसलेका प्रभाव ज्यादा दिन नही रहा। जब आर्थिक स्वार्थ एक-दूसरेके विरोधी हो, तो स्थायी मेल कैसे हो सकता है? बोराकको इस बटवारेके कारण अन्तर्वेदका एक-तिहाई हिस्सा—खोजदसे समरकन्दके पासतककी भूमि—कैंदूको देना पडा। बोराक इस क्षतिको पूर्ण करनेके लिये आमूके दक्षिण (हुलाकूके राज्य) खुरासानपर चढा। लूट-पाटके मारे किसान भागने लगे। गावोके उजड जाने पर भारी अकालका सामना करना पडता, इसलिये दोनो खानोने वजीर मसऊदबेगको भेजकर किसानो को सान्त्वना देनेका प्रयत्न किया। वस्तुत इसवक्त वडी बुरी अवस्थामे था। बोराक अबका खान (ईरान) पर चढ दौडनेके लिये उतावला हो रहा था। मसऊदने ऐसा न करनेकी सलाह दी, तो गुस्सेमे आकर बोराकने उसे सात कोडे लगवाये, जिसके लिये पीछे उसे खेद हुआ। तो भी उसने अपना सकल्प नही छोडा। रुपये-पैसे का हिसाब करनेके वहाने मसऊदबेग अबका (इलखान) के पास गया, लेकिन उसका असली उद्देश्य था इलखानकी सैनिक स्थितिका पता लगाना। इलखानको पता लग गया। वडी मुश्किलसे मसऊदबेग जान बचाकर भाग सका। इस तरह असफल होनेपर चगताई खानने ईरानमें रहते चगताई-राजकुमार निकूदरको फोडनेके लिये एक गुप्तचर भेजा। अतमे अपने पुत्र बेग-तेमूरको एक तुमान सेना के साथ राजरक्षाके लिये भेजा। कैंदूने भी कितने ही राजकुमारोको सेना देकर बोराककी सहायताके लिये भेजा, जिनमें मोतूगन-पौत्र बुरी-पुत्र अहमद, चगताई-पौत्र सरबान-पुत्र निकबेई ओगुल, और ओगोताई-पौत्र कैंदू-पुत्र चालिगू (याल्गू) थे। सभी लोग वक्षु (आमू दरिया) पार होनेके लिये तेरमिजकी ओर रवाना हुए। दूसरी सेना गू-युक कआन-पौत्र, हकुरखान-पुत्र चुबाद, तथा कैंदू-पुत्र किपचकके साथ शीबामें वक्षु नदी पार होनेके लिये भेजी गई। एक और भी सेना मदकिशालकसे होते कोकाजू

कुचुकके नेतृत्वमे रवाना हुई। अपने पुत्र बेक तेमूरको दस हजार सेना दे बोराक अन्तर्वेदमें छोड नावोंके पुलसे वक्षु पार हुआ। उसका कैम्प मेर्वमे पडा, जहासे उसने अपने सैनिकोंको कुबिले कआनके भतीजे खुलाकू-पुत्र अबकाके सारे देशको लूटकर बरबाद करनेका हुकुम दिया। उस समय खुरासान का राज्यपाल अबका-पुत्र अरगून था। बोराककी सेना खुरासानमें दाखिल हुई और उसने वदख्शा, कोसिम, शापूरगान, तालिकान, मेर्व-शायान, तथा नेशापोर (२८ अप्रैल १२६९ ई०) तकके प्रदेशको लूटा और उजाडा। थोडेसे प्रतिरोधके बाद सारे खुरासानपर बोराकका अधिकार हो गया। उसका मुकाबिला करनेके लिये अबका आजुरबाइजानसे चला। हेरातके पास दोनो सेनाओंमें लडाई हुई, जिसमें बोराकको हार खानी पडी। अबकाने पराजित सेनाका पीछा किया। शायद सारी चगताई सेना नष्ट हो जाती, लेकिन सेनापति जलेरताईने बडे कौशलसे उसे नष्ट नही होने दिया। अबकाने अन्तर्वेदके बहुत से इलाकोको लूटा। उस वक्त मगोलोके सामने मुसलमान चापलूसी करते कहातक गिर गये थे, इसका उदाहरण यह घटना है—अबकाने खाते समय एक बार अपने वजीर शम्शुद्दीनकी ओर चाकूके नाकपर सूअरका मास रखकर बढाया। वजीरने जमीन चूमकर इस अत्यन्त हराम भोजनको खा लिया। इसपर खानने अपना प्याला उठाकर उसकी तरफ किया। उसके न लेनेपर अबकाने कहा—"इसने प्याला लेनेसे इन्कार करके मुझे नाराज नही किया, लेकिन यदि इसने मासको लेनेसे इन्कार किया होता, तो मैं उसी चाकूसे इसकी आखे निकाल लेता।"

जिस समय बोराकने खुरासानपर सफल आक्रमण किया, यदि उसी समय उसके मित्रोमें फूट न हो गई होती, तो शायद अबकाको इतनी आसानीसे सफलता न मिलती। बोराकका अदा (परम मित्र) किपचक ओगलान चगताई सेनापति जलेरताईके किसी बर्तावसे असतुष्ट हो साथ छोडकर चला गया। बोराकने उसे दड देनेका वचन दिया भी, किंतु किपचक ओगलान नही रुका। गू-युक कआनके पुत्र जवात ने भी इसी समय साथ छोड दिया। अबकाने एक और चाल चली। उसने बोराकके तीन दूतोंको पकड सासत देकर उनसे यह स्वीकार करवाया, कि हम अपने खानकी ओरसे गुप्तचरका काम करने आये है। वह मृत्युकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे, कि इसी समय धूलिधूसरित धावनने आकर खबर दी—"मेरे स्वामी! दरबन्द (कास्पियन) की ओरसे शत्रुओ (किपचकों) ने भारी सख्यामें आकर देशपर धावा बोल दिया है, पश्चिमी प्रदेश तलवार और आगसे ध्वस्त किये जा रहे है।" अबका यह खबर सुनकर आजुरबाइजानकी ओर चला गया और बोराकके दूतोको भागनेका मौका मिल गया। बोराक विजयने कुछ निश्चितसा हो गया, किंतु, फिर अचानक लौटकर अबकाने हेरातके पास बोराकको जबर्दस्त हार दी। बोराक इस लडाईमे घायल हुआ। अपनेको खतरेमें डालकर सेनापति मेरगुल और जलेरताईने बोराकको निकालकर वक्षुपार न कराया होता, तो बोराककी जान न बचती।

इस भीषण पराजय और मित्रोके विश्वासघातके बाद बोराक ६६९ हि० के वसत (मार्च-(अप्रैल १२७१ ई०) में मर गया।

८ निगपई, सरवान-पुत्र (१२७१–७४ ई०)

नये खानके शासनकालमें भी चगताई और ओगोताई उलुसोका झगडा जारी रहा। कैदूने निगपईको खान बनाया, इसपर बोराक और अलगूके पुत्रोने विद्रोहकर दिया। इस सघर्षमें जरफ्शा-उपत्यकाके सारे नगर नष्ट हो गये। निगपई पीछे कैदूके विरुद्ध हो गया और उसके साथ लडते हुए १२७४ ई० में मारा गया।

९. तोका तेमूर, कदमी-पुत्र (१२७४–८२ ई०)

निकपाई और तोका तेमूरका नाम कितनी ही वंशावलियोमें नही मिलता, जिसका कारण यही हो सकता है, कि उनका शासन गृह-युद्धोंके समयका था, जिसमे एकसे अधिक राजकुमार तख्तके दावेदार थे।

१०. दुवा, तुवा, दावा, बोराक-पुत्र (१२८२–१३०७ ई०)

चगताइयोमें दुवा बहुत शक्तिशाली खान, और कैदूका पक्का साथी था। उसके लिये इसने कैदूसे खानोसे बहुतसी लडाइया लडी। प्रसिद्ध इतिहासकार शम्शुद्दीन जुवैनी इसका वजीर था। अबका

की सेना लूट-पाट करते ६७१ हि० (२६ VII १२७२–१६ VI १२७३ ई०) में बुखारा पहुच महान् नगरको लूट वहाके नागरिकोमेंसे पचास हजारको वन्दी वना जव लौट रही थी, तो सेनापति चापरने आक्रमण करके उनमेंसे कितने ही वन्दियोको छुडा लिया। तीन साल वाद फिर अवकाने आकर देशको वरवाद किया, जिसका सुधार दुवाके शासनकालमें ममऊदवेगके योग्य प्रवन्धके कारण हो पाया। श्वेत-ओर्दूके वायन खानसे भी दुवाका विशेष झगडा था, क्योकि वह कैदू और दुवाके विरोधियोका पक्षपाती था। १३वी सदीके प्रथम वर्षमे इन दोनो दलोने अठारह लडाइया लडी। वायनके पीठपर तेमूर कआन था, सुवर्ण-ओर्दू और इलखान (ईरान) भी वायनके दलमें सम्मिलित थे——दुवाके विरुद्ध उत्तर-पश्चिममें तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू) और वायन (श्वेत-ओर्दू) की सेनायें थी, दक्षिण-पश्चिममें गाजनखान (ईरान) और दक्षिण-पूर्वमें वदख्शाका शासक भी चीन-सम्राट् (कुविलै) के पक्षपाती थे। इतने जवर्दस्त शत्रुओंसे घिरे रहते भी देशकी समृद्धि और राज्यकी शक्तिको वनाये रखना दुवा की योग्यताका परिचायक था।

कैदूके चालीस पुत्र थे, यह हम कह आये है। उसने छिङ्-गिस् खानकी तरह अपने राज्यको अपने ४० लडकोमें वाट दिया था——वडेको चीन सीमान्तपर, वेकेचेरको जूछि सीमातपर सरवानको अफगानिस्तानमे सर्वज्येष्ठ पुत्र चापरको सवसे अधिक सघर्पके स्थान सप्तनदमें रक्खा था। कैदूकी-पुत्री खुतुलुन चागा भी वडी ही वीर तरुणी थी। अपने पिताके अभियानोमे भाग लेनेके कारण उसने व्याह नही करना चाहा। कैदू उसे वेटी नही, वेटेकी तरह प्यार करता था। उसने उसे स्वयवर चुननेके लिये कहा। जव कोई वर नही मिला, तो गाजन खान (ईरान) को देना चाहा, लेकिन खुतुलुन चागाने यह पसन्द नही किया और अपने पिताके वडे दरवारी एक चीनीको अपना हाथ दिया। कैदू करशीके अनुसार १३०१ ई० मे (दूसरोके अनुसार १३०३ ई० के वसतमें) लडाईमे मरा। उसका मृत शरीर चू और इलि नदियोके वीचके ऊचे पहाड सिवालिकमें दफनाया गया।

कैदूके मरनेके वाद अव दुवा सवमे प्रभावशाली खान था। उसने १३०३ ई० के वसतमें चापर को कैदूका उत्तराधिकारी वनाया, जिससे कैदू-पुत्रोमे झगडा उठ खडा हुआ। वाहर भी शत्रुओका भय था ही। तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू खान) ने वायनके शत्रु कुङलुकको समर्पण करनेकी माग की। इन्कार करनेपर उसने दो तुमान सेना दे वायनकी पीठ ठोकी। फर्वरी १३०३ ई० के आरम्भमें वायनका दूत दुवा और चापरके साथ मिलकर लडाई करनेकी वात तै करने वगदाद गया।

दुवा एक कुशल सैनिक ही नही था, वल्कि कैदूकी तरह एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। यद्यपि शक्ति छिन्न-भिन्न करनेवाले विरोधी तत्त्वोंसे उसे लडना पड रहा था, लेकिन वह समझ रहा था, कि यदि लडाई इसी तरह चलती रही, तो कुछ ही समयमें अन्तर्वेद, सप्तनद, किपचक और ईरान-इराक से छिङ्गिस-वंशका नाम मिट जायेगा। इसीलिये वह सोच रहा था, कि कआनकी अधीनतामें सभी उलुसोका एक सघ वनना चाहिये। उसने इसके लिये एक योजना वनाई–(१) सभी आपसमे शातिसे रहते कआन (चीनके मगोल सम्राट्) को अपना प्रभु मानें, (२) सभी देशोमें व्यापारकी स्वतन्त्रता हो। उसने इस योजनाको सवसे पहले कआन तोगनोगूके पास भेजा, जिसने उसे वहुत पसन्द किया। इसके वाद अगस्त १३०४ ई० मे चापर और दुवाके दूत योजनाको लेकर ईरान गये। वहा तथा पीछे जूछिके दरवारमें भी इस योजनाका स्वागत नहीं हुआ, शायद उन्होने इसे दुवाकी एक चाल समझा।

चगताई राजकुमार अपने यूर्तोको लेकर चरागाहोमें घूमा ही करते थे, जहा किसी छोटीसी वातपर भी लेकर झगडा हो पडना स्वाभाविक था। १३०५ ई०में अन्तर्वेदमें चापरका कुछ चगताई राज-कुमारोसे भारी झगडा हो गया। इसके लिये तरुणोंके लडकपनपर अफसोस प्रकट करते लोग समझौता करनेके लिये तालास्दम जमा हुये। ओगोताईके राजकुमार जोचोकवालिकमें चापरके भाई शाहके ऊपर टूट पडे। उस समय दुवाका सेनापति दक्षिण-सप्तनदके अरपा-उपत्यकामे हेमत-वास कर रहा था। शाह अपने सात हजार आदमियोंके साथ भागकर अपने भाई वेकेचरके पास पहुचा। विरोधी राजकुमारोने नगर-ग्रामोके पासवाले नगरोको लूटा। चापरको यह खवर कआनकी सेनासे लडते समय घटाईके पास मिली। वहासे हार खाकर वह तीन सवारोंके साथ भागकर दुवाके पास गया।

रशीदुद्दीनके अनुसार दुवा १३०६ ई० मे मरा और वस्साफके अनुसार १३०७ ई० मे।

११. कूजेक, कुचोक, दुवा-पुत्र (१३०७-८ ई०)

दुवाके मरनेपर वरकुलसे बुलाकर कुजेकको अलमालिकके पास सेवकुन स्थानमे गद्दीपर बिठाया गया। यह युलदुजमे मरा। इसके समयमे भी गृह-युद्ध जारी रहा, और बुरीवाशीके पास तथा सिर-उपत्यकाके पूर्वी भागोमे कई लडाइया हुईं। अपने प्रतिद्वद्वी ओगोताई राजकुमार कुरसेवेसे लडकर भागते समय कुजेक मारा गया।

१२ तलिकू, तलिक, खिजिर, कदमी-पुत्र (१३०८-१० ई०)

बुरीको १२५१ ई० में कतल किया गया था, यह हम बतला चुके हैं। उसीका पुत्र तलिकू अब गद्दीपर बैठा। इस समय जल्दी-जल्दी खानोका वदलना यही बतला रहा था, कि अब सत्ता दरबारियो-के हाथमे थी और खान उनके खेलके मुहरे थे। मुस्लिम दरबारियो और प्रजाको प्रसन्न करनेके लिये तलिकूने खिजिरके नामसे अपनेको मुसलमान घोषित किया, जिससे मगोल राजकुमार नाराज हो गये—अबतक मगोलोने बौद्ध धर्मको जातीय धर्मके तौरपर स्वीकार कर लिया था, इसलिये वह नही पसन्द कर सकते थे, कि उनका खान मुसलमान बन जाये। इसी भावनासे प्रेरित हो तीन सौ सवारोके साथ दुवा-पुत्र केबेकने रातको भोजके समय खेमेमे घुसकर खानको मार डाला। वस्साफके अनुसार तलिकू ७०८ हि० (२१ VI १३०८—१२ V १३०९ ई०) मे गद्दीपर बैठा, दूसरे इतिहासकारोके अनुसार ७०९ हि० (११ VI १३०९—२ V १३१० ई०) में गद्दीपर बैठा, तथा ७१० हि० (३१ V १३१०—२१ IV १३११ ई०) मे उसकी मृत्यु हुई।

१३ केबेक, दुवा-पुत्र (१३१० ई०)

केबेक बहादुर और स्पष्टवादी खान था। चापरने पिताकी शत्रुताको उसके पुत्र केबेकतक कायम रक्खा, लेकिन उसे हार खानी पडी। अब चगताई-उलुस अस्त-व्यस्त हो चुका था। चापरने त्युकमे, बङ्-केचर और उरुस-पुत्रोके साथ मिलकर केबेकके ऊपर चढाई की, लेकिन उसे इलि नदीके पश्चिममे पराजित होना पडा। फिर इलिके रास्ते जाकर उसने त्युकमेको हराकर उसके युर्तको छिन्न-भिन्न कर दिया। त्युकमेने पूरबमें भागकर कआनके पास चीनमें जाना चाहा। भागते समय त्युकमेकी भिडत केबेककी सेनासे हो गई, जिसमें वह मारा गया। राजकुमारोके इस घरेलू सघर्षोंके कारण कृषि और व्यापारको भारी क्षति हुई। केबेकने इस सघर्षको वन्द करनेके लिये ७०९ हि० (११ VI १३०९—२ V १३१० ई०) में कूरिल्ताई बुलाई और उसके इस निर्णयको स्वीकार किया, कि गद्दी उसके भाई एसेनबुकाको दी जाय, और वह कआनके अधीन रहे।

१४. एसेनबुगा, ईसनबुका, दुवा-पुत्र (१३१०-१८ ई०)

कैदूका विशाल राज्य अब छिन्न-भिन्न हो गया था, और उसका अधिकाश चगताई-उलुसके हाथमें चला आया था। कैदूके पुत्रोमेंसे शाहके पास कुछ इलाके रह गये थे। एसेनबुगाने राज्यके भीतर और बाहर शान्ति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। इसके लिये उसने १३१२ ई० में उज्वेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) के साथ मित्रता स्थापित की, जो १३१५ ई० तक रही, जबकि चगताई और जूछि दोनो उलुसोने अपने शत्रु उलजैतू (ईरान) पर आक्रमण किया। चगताई सेनाने इलखानी सेनाको हराकर हेरात तक उसका पीछा किया। चार महीनेतक यह प्रदेश चगताइयोके हाथमे रहा और उनकी सेनाने वहा बहुत अत्याचार किये।

कआन बयन्तुका ओर्दू जाडोमें कोबुक-तटपर और गर्मियोमे एसुन मोरान (इर्तिश-शाखा) पर रहता था। ऐसे ही समय एसुन मोरानके पास उसका चगताई उलुससे झगडा हो पडा। कआनकी दूसरी सेना उस समय चालीस दिनके रास्ते पर थी। तोकाजीके नेतृत्वमे कआनकी सेनाने एसेनबुगाके हेमत-वास (इस्सिकुलके समीप) और ग्रीष्मवास (तलसके समीप) को लूटा-पाटा। इस समय (१३१२ ई०) एसेनबुगाकी उज्वेक खानके साथ मित्रता थी। जब कआनकी सेनाके आक्रमणकी बात एसेनबुगाको मिली, तो वह खुरासान छोडकर उत्तरकी ओर लौटा। लेकिन इलखान उल्जैतू खुदावन्दा

एसेनके अत्याचारोको कैसे भूल सकता था? एसेनबुगासे नाराज उसका मुसलमान हुआ भाई यसाउर उस समय ईरानमे रहता था। उल्जैतूने उसे सेना देकर ७१६ हि० (२३ III १३१६–१४ II १३१७ई०) मे वक्षुपार भेजा। एसेनबुगाकी भारी हार हुई और वह अन्तर्वेद छोडकर भाग गया। उल्जैतूकी सेना-ने देशमे लूट-मार मचाई, और उसने बुखारा, समरकन्द और तेरमिजके निवासियोको बीच जाडेमें जबर्दस्ती दूसरे स्थानोमें भेज दिया, जिसके कारण उनमेसे हजारो मर गये।

एसेनबुगा १३१८ ई० मे मरा। प्रसिद्ध पर्यटक इब्न-बतूताके अनुसार वह शामानी (बौद्ध) धर्मको मानता था, यद्यपि मुसलमानोके साथ उसका वर्ताव अच्छा था।

केबेक पुन. (१३१८–२६ ई०)

केबेकने इसलिये गद्दी छोडी थी, कि चगताई-उलुसके आपसी झगडे मिट जाये और राजशक्ति मजबूत हो, लेकिन ऐसेनबुगाके अत्याचारोने अवस्था और शोचनीय बना दी। केबेक फिर गद्दीपर बैठा, लेकिन वह एकता स्थापित करनेमे सफल नही हुआ। चगताई-उलुस अब दो भागोमें बट गया। अन्तर्वेदमे मुसलमान (तुर्क) अमीरोका प्रभाव अधिक था और पूर्वी भागमें मगोल अमीरोका। पूर्वी भाग—सप्तनद और पूर्वी तुर्किस्तान—मुगोलिस्तान के नामसे इसी समय अलग होने लगे, जिसका प्रथम खान एसेनबुगा-पुत्र तुगलुक तेमूर हुआ। केबेकद्वारा गद्दीसे वचित होनेका बदला एसेनबुगाके पुत्रने इस बटवारे द्वारा लिया। अब भी केबेकके शासनमे अफगानिस्तान, अन्तर्वेद और सप्तनदका बहुतसा भाग था। केबेकने अपनी राजधानी नखशेबमे रक्खी, और वहासे ढाई फरसख* पर अपने लिये एक करशी (महल) बनवाया, जिसके ही कारण पीछे नकशेबका नाम करशी पड गया। इब्न-बतूताके अनुसार केबेकको उसके भाई तरमाशेरिन (धर्म-छे-रिङ) ने मार डाला।

१५ इलिकदई, इलचीगिदई, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

केबेकके बादके खान जल्दी-जल्दी बदलते रहे या वजीरोके हाथकी गुडिया बनेरहे। इसी समय कैथलिक मिस्नरियोने ईसाई-धर्मके प्रचारमें बडी सरगरमी दिखलाई।

१६ तुवा-तेमूर, दुवा-तेमूर, दुरी तेमूर, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

खान बननेसे पहले यह एक पूर्वी जिलेका ठाकुर था। वहाँ रहते १३१५ ई० मे इसके पास चीन-से सहायता आई थी। गद्दीपर यह कुछ ही महीनो रह पाया, क्योकि इसके भाईका हत्यारा तरमाशेरिन राज्यपर घात लगाये हुए था।

१७ तरमाशेरिन, धर्म-छे-रिङ, दुवा-पुत्र (१३२६–३४ ई०)

धर्म-छे-रिङ संस्कृत धर्म और तिब्बती छेरिङ (दीर्घायु) दो शब्दोसे मिलकर बना है। इसका नाम ही बतलाता है, कि चगताई-वंशपर बौद्ध-धर्मका कितना प्रभाव था, लेकिन तरमाशेरिनने अपनेको कट्टर मुसलमान सिद्ध करनेकी कोशिश की। राजवंशका डूबता सितारा मुसलमान बनकर अवलम्ब ढूँढ रहा था। तरमाशेरिन १३२६ ई० के अन्तमें गद्दीपर बैठा और खान बनते देर नही लगी, कि उसने मुसलमान बन अलाउद्दीन नाम धारणकर धार्मिक कर्तव्यपालन करनेके लिये अफगानिस्तान और पजाब तक जहाद (धर्मयुद्ध) शुरू कर दिया, लेकिन इसी समय अलमालिक और राज्यका पूर्वी भाग हाथसे निकलकर मुगोलिस्तानके खानके हाथमें चला गया। मुगल-राजकुमारोका प्रभाव अब खतम हो चुका था। इस्लाम तुर्क मुसलमान अमीर सर्वेसर्वा थे। यह मगोलोकी संस्कृतिपर इस्लामकी विजय थी। लेकिन यहा केवल इस्लाम और गैर-इस्लाम धर्मका ही झगडा नही था, बल्कि युद्धजीवी घुमन्तू और कृषि-व्यापार-जीवी स्थायी निवासियोका भी द्वद्व चल रहा था। युद्धजीवी घुमन्तुओमे मगोल ही नहीं, बल्कि भारी सख्यामे तुर्क भी शामिल थे।

[illegible] तरमाशेरिनने ७२५ हि० (१८XII १३२४—८XI १३२५ ई०) में आक्रमण किया था, लेकिन नये [illegible] गजनीमे जबर्दस्त हार खाकर वक्षुपार भागना पडा। इब्न-

* १ फरसख—६ [illegible]=१२ [illegible]=३ मीलके करीब।

वतूता दो महीनेतक बुखारामे तरमाशेरिनका मेहमान रहा। वह इसे बडा ही पक्का मुसलमान कहता है। अपने समसामयिक दिल्लीके सुल्तान मुहम्मद तुगलकके साथ इसका बहुत अच्छा सबध था और तुगलककी इस्लाम-भक्तिका वह अनुकरण भी करना चाहता था। इब्न-वतूताने लिखा है—एक बार किसी धार्मिक भूलके लिये मुल्लाने तरमाको लोगोके सामने फटकारा। खानने उसे बुरा न मान आसू बहाते हुए तोबा किया। इब्न-बतूताके अनुसार उसने अपने सिहासन और प्राण इस्लामके लिये न्योछावर कर दिये थे।

इस्लामकी इतनी अधभक्ति देखकर मगोल-राजकुमार चुप रहनेके लिये तैयार नही थे, आखिर उन्हें भी धर्म-भक्ति करनेके लिये तिब्बतसे बौद्ध-धर्म मिल चुका था। १३३४ ई० में दुवा तेमूरके पुत्र बूजनके नेतृत्वमे विद्रोह हुआ—इब्न-वतूताके अनुसार बूजन मुसलमान था, जो सदिग्ध है। तरमा हारकर भारतकी ओर भागा जा रहा था। वलखके राज्यपाल तथा केबेकके पुत्र यङगीने उसे पकडकर बूजनके पास भेज दिया, जिसने उसे समरकन्दके पास कतल करवा दिया।

१८ बूजन, बोजन्द, दुवा तेमूर-पुत्र (१३३४ ई०)

अपना-अपना मतलव सिद्ध करनेके लिये दरबारमे अब इस्लामी और इस्लामविरोधी दो दल हो गये थे। बूजन इस्लामविरोधी दलका अगुवा था—इन्हें मगोल और गैर-मगोल दल कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। बूजन ईसाइयो और यहूदियोका अधिक पक्ष करता था—बौद्धोका उसके राज्यमें अभाव-सा था। इसके अल्पकालीन शासन मे ईसाइयो और यहूदियोके मन्दिर अधिक बने, प्रचार भी बढा। इससे पहले १३२९ ई० में ही दोमनिकन साधु थामस मन्तजोला अन्तर्वेदमे कैथलिक धर्मका प्रचार करने आया था। मगोल-शासक मुस्लिम धर्माधतासे भय खाते चाहते थे, कि उनकी प्रजापर मुल्लोका एकाधिपत्य न रहे, इसीलिये वह बौद्ध-धर्मके साथ-साथ ईसाई धर्मको भी प्रोत्साहन देते थे। बूजन अपने प्रतिद्वद्वी बहुतसे अमीरो और राजकुमारोको जरा-जरासे सदेहपर बहुत क्रूर दड देता था। इसके कठोर शासनसे लोग तिलमिलाकर विद्रोह कर बैठे, जिसमें प्रसिद्ध ताजिक नेता हुसेन कर्तने प्रमुख भाग लिया। अरपाखानसे खुरासानको छीननेके लिये बूजन जब बुखारामे था, उसी समय अन्दखोई और शापूरगान (सिबोरगान) के तुर्क कबीलोने अरलत और एवरदीको लूटा। तुर्कोंने अपने सजातीय तथा अत्यन्त प्रभावशाली अमीर कजगनसे सहायता ली। हेरातके शासक मलिक हुसेन तथा वजीर अलाउलमुल्क खुदावन्दजादा (तेरमिज)ने भी उनकी सहायता की। लडाईमें बूजन पकडा गया और उसे उसके शत्रुओके हाथमे दे दिया गया। इब्न-वतूताके अनुसार यसाउर-पुत्र खलीलने बूजनको मार डाला और १३३४ ई० में ही जेंकिश (चेगिज) ने उसका स्थान लिया।

१९ जेंकिश (जिकशी), खलील, दुवा-पौत्र, एबुगेन-पुत्र (१३३४–३८ ई०)

यह भी इस्लामी पार्टीका नही बल्कि मुर्सेबीके अनुसार बौद्ध था। मगोलोने किसी दूसरेको खान बनाया, जिसपर जेंकिश ताराजमे मगोलोको हराते अलमालिक पहुचकर गद्दीपर बैठा। फिर आगे बढते उसने बिशबालिग और कराकोरम (मगोलिया) को ले लिया, जिसपर कआन (चीन-सम्राट्) को दब-कर सुलह करनी पडी। अलमालिकमें वजीर अलाउलमुल्क खुदाबदजादाको शासनके लिये छोडकर वह समरकन्द लौट आया, लेकिन पीछे सदेह हो जानेपर उसने अलाउलमुल्कको मरवा डाला। बिशबालिक और कराकोरमके विजयकी बात कहातक ठीक है, इसे नही कहा जासकता, लेकिन १३३२ई०में जेंकिशने चीन-दरबारमे भेट भेजी थी। वह अधिकतर अलमालिकमे रहता था। कैथलिक मिश्नरी वहा बडे जोरसे धर्म-प्रचार कर रहे थे। कैथलिक चर्चने फ्रासिस्कन साधु निकोलाई (मिखाइल) को चीनका आर्चबिशप (लाट-पादरी) बनाकर भेजा था। अलमालिकमे जेंकिशके दरबारमें उसका बडा सम्मान हुआ। कुछ ही समयमें राजधानीमें पादरियोका भारी जमाव हो गया—बरगडीका रिचार्ड, अलक-सदरियाका साधु फ्रासिस्क, रायमुन्द और इसी तरह कितने ही और धर्म-प्रचारक वहा मौजूद थे। खानका सात वर्षका पुत्र बपतिस्मा लेकर योहन बना। स्पेनिश साधु पसखालिस १३३८ ई० में धर्म-प्रचारार्थ उरगजसे अलमालिक जा पाच महीने रहा।

आगे जेंकिज और मलिक हुसेनमें लड़ाई हुई। हुसेनने उसे पकड़कर क्षमा कर दिया। उस समय जेंकिज हेरातमें था, जबकि १३४७ ई० के वसंतमें बतूना वहांसे भारतके लिये प्रस्थान कर रहा था।

२० येस्सुन तेमूर, एसुन, एबुगेन-पुत्र (१३३८–४० ई० ?)

थोड़े दिन राज्य करनेके बाद ओगोताई-राजकुमार अली सुल्ताननें इसे हटाकर इसका स्थान लिया। इसने थोड़े समय पहले सप्तनदमें ईसाइयोंपर भारी अत्याचार हुए और आठ शताब्दियोंसे चला आया नेस्तोरीय सम्प्रदाय वहांसे सर्वदाके लिये उच्छिन्न हो गया।

२१ अली-सुल्तान, ओगोताई-वंशज (१३४०–४२ ई० ?)

अली-सुल्तान मुस्लिम पार्टीका था, किंतु इसके जुल्मसे ईसाई ही नहीं मुसलमान भी पनाह मांगते थे।

२२ मुहम्मद पुलाद, पोलाद, कुजेक-पुत्र (१३४२ ई० ?)

अली-सुल्तानको हटाकर कुछ समयतक यह चगताई खान रहा।

२३ काजान, गाजान, यसाउर-पुत्र (७३३–४७ हि०* ?)

यह भी बड़ा अत्याचारी था। इसके डरके मारे दरबारी पहले अपनी वसीयत करके तब खानके पास जाते थे। इसके १३-१४ सालके शासनमें चारो तरफ आतंक फैला रहा। प्रभावशाली वजीर कजगनने उससे पिंड छुड़ानेके लिये विद्रोह कर दिया। पहली लड़ाई ७४४ हि० (२६ मई १३४३—१५ अप्रैल १३४४ ई०) अथवा मीरखोजन्दके अनुसार १३४५ ई० में हुई, जिसमें खान जीता और अमीर कजगन की एक आंख तीर लगनेसे फूट गई। सफल होनेपर भी खान शत्रुओंका पीछा नहीं कर सका। उसने जाड़ा करशीमें बिताया। सख्त जाड़े और हिमवर्षाके कारण घोड़े और बोझा लादनेके बहुतसे पशु मर गये। ७४७ हि० (२४ अप्रैल १३४६–१५ मार्च १३४७ ई०) में फिर लड़ाई हुई, जिसमें खानकी हार हुई और उसका अत्याचारी शासन खतम हुआ।

२४ दानिशमन्द, ओगोताई-वंशज (१३४६–४८ ई०)

अमीर कजगनको एक गुड़िया खानकी जरूरत थी। उसने ओगोताई दानिशमन्द ओगलान (राजकुमार) को लाकर गद्दीपर बिठाया। दो साल बाद उससे मन ऊब गया, फिर उसने बायन कुल्लीको गद्दीपर बिठाया।

२५. बायन कुल्ली, सुरगू ओगलान-पुत्र, चगताई-वंशज (१३४८–५८ ई०)

कजगनके अनुकूल होनेसे यह दस सालतक खान बना रहा। अमीर कजगन एक तो स्वदेशी तुर्क था, दूसरे बड़ा ही चतुर और न्यायप्रिय भी, इसलिये वह बहुत जनप्रिय था। कजगनके मरनेपर उसका लड़का अब्दुल्ला वजीरआजम (महामंत्री) बना, जिसने बायनको कुदुजमें शिकार करते समय कतल करवा दिया—अब्दुल्ला बायनकी बीबीका यार था। अब अब्दुल्लाने तेमूरशाह ओगलान-को गद्दीपर बिठाया।

२६ तेमूरशाह (१३५८—ई०)

किन्तु अबकी इतनी शान और पवित्रता स्थापित हो गई थी, कि खानके सिंहासनको कोई छेड़नेकी हिम्मत नहीं रखता था। स्वयं तेमूरलंगने भी खान बनना नहीं चाहा और विश्वविजयी होनेके बाद भी वह "अमीर तेमूर" या "सुल्तान तेमूर" ही बना रहा। अब्दुल्लाका प्रभाव बापके बराबर नहीं था। तेमूरशाहको जिस तरह गद्दीपर बिठाया गया, उससे दरबारी नाराज हो गये। अमीर बायन सुल्दूज अब्दुल्लाके विरुद्ध चढ़ाई करनेके लिये जब समरकन्दकी ओर जा रहा था, तो रास्तेमें केश (शहरसब्ज) का सामन्त हाजी बिरलस भी उसके साथ हो लिया—यही हाजी सैफुद्दीन बिरलस तेमूर

* २२ IX १३३२–१२ VIII १३३३ ई० से २४ IV १३४६–१५ III १३४७ ई०

लगका चचा था। अब्दुल्ला हारकर अन्दराव (अफगानिस्तान) की ओर भागा, और उसने अपना बाकी जीवन वही बिताया। चगताई-शासनकी बागडोर अब अत्यन्त अयोग्य भारी पियक्कड सेलदूज तथा हाजी बिरलसके हाथोमे थी। सारे राज्यको अमीरोने अपनी-अपनी रियासतोमे बाट लिया, जिसमे केश (शहरसब्ज) और आसपासका इलाका बिरलसको मिला। चारो ओर गृहयुद्ध और अराजकताका दौरदौरा था।

२७. इलियास खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र (–१३६३ ई०)

तेमूरशाहकी जगह इलियास गद्दीपर बिठाया गया। चगताई-वंशकी पश्चिमी शाखाकी जहा यह अवस्था थी, वहा उत्तर-पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खान अभी इतने शक्तिहीन नही हुए थे। अन्तर्वेदकी अवस्थाके बारेमे सुनकर अलमालिकका खान तुगलक तेमूर एक बडी सेना लेकर समरकन्दकी ओर चला। आपसमे लडते छोटे-छोटे अमीर भला उसका मुकाबिला कैसे कर सकते थे? हाजी सैफुद्दीन बिरलस (तेमूरका चचा) बिना लडे ही खुरासानकी ओर भाग निकला। उसके भाई तुरगाई बिरलसके तरुण पुत्र तेमूर लगने चचासे राय लेकर तुगलक तेमूरसे भेट की। तरुणसे खान इतना प्रभावित हुआ, कि उसने केशके निवासियोपर अत्याचार नही किया। तुगलक तेमूरने अन्तर्वेदको जीत कर अपने पुत्र इलियास खोजाको समरकन्दमे उपराज घोषित कर तेमूर लग बिरलसको विश्वास-पात्र जान वजीर (अमात्य) नियुक्त किया। तुगलक तेमूर काशगरकी ओर लौट गया। अमीरोके आपसी झगडोमें पडना तेमूरने पसन्द न कर बुखारा तथा खीवा होते कास्पियनतटवर्ती रेगिस्तानोका रास्ता लिया। इस निर्जन भूमिमे वह कितने ही समयतक मारा-मारा फिरता रहा। अन्तमे वह अपने केश लौटे कुछ साथियोको लेकर वक्षु नदीके दक्षिण चला गया। ७६५ हि० (१० अक्तूबर १३६३–३० अगस्त १९४६ ई०) में कुदुजके पास दानियालकी सेनाको हराकर तेमूर उसका पीछा कर रहा था, इसी समय तुगलक तेमूर खानके मरनेकी खबर आई और इलियास खोजा समरकन्द छोडकर बापकी गद्दी सभालने अलमालिक चला गया। तेमूर लगने तुरत अन्तर्वेद लौट सरदारोकी कूरिल्ताई बुलाकर काबिलशाहको खान घोषित किया।

२८ काबिलशाह (१३६३–६९ ई०)

काबिलको छिङ्-गिस्-वंशका अन्तिम चगताई खान तो नही कह सकते, क्योकि तेमूरके वंशने भी अबू-सईदके समय (१४६७–६४ ई०) तक छिङ्-गिसी राजकुमारोको बराबर समरकन्दकी गद्दीपर गुडिया खान बनाये रक्खा। ८ अप्रैल १३६७ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) तक काबिलशाह बहुत कुछ अपने पूर्वजो जैसा ही खान रहा। उसके बाद तेमूरने बाकायदा अपनेको शासक घोषित किया, यद्यपि उसने खान-परपराका उच्छेद नही किया।

चगताई-अर्थनीति––मगोल-शासन घुमन्तू सैनिक सामन्तोका शासन था, जो अपनेसे भिन्न जातियोके लिये निरकुश था, किन्तु जहातक मगोल सामन्तो और राजकुमारोका सबध था, खानके लिये बहुमतकी इच्छाका उल्लघन करना आसान काम नही था, क्योकि सेना उनकी थी। मगोल शासक नागरिको और ग्रामीणोकी गाढेकी कमाईको उडाना अपना हक समझते थे। पहले कितने ही समयतक इनके भीतर सैनिक जीवन कायम रहा, किंतु आगे विलासिता बढनेके कारण उसका ह्रास होने लगा। इसके साथ ही राजपरिवार और सामन्त-परिवारोकी सख्या बढनेके कारण प्रजाका शोषण-उत्पीडन और भी भयकर होने लगा। उनके सहकारी तुर्क घुमन्तू थे, जो देशमें शताब्दियो पहलेसे अपना प्रभाव जमाये हुए थे, और छिङ-गिस्की सेनामे दूध-पानीकी तरह मिल गये थे। वह अब अपने स्वार्थोंको हाथ से जाने देनेके लिये तैयार नही थे। मगोल-राजपरिवार और मगोल अमीर-परिवारोकी निर्बलताके समय तुर्कोंने शासनकी बागडोर भी अपने हाथमें सभाल ली। प्रजाका शोषण पूर्ववत् जारी रहा, तो भी अन्तर्वेदकी सम्पत्तिका महास्रोत––अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य और सुदर दस्तकारी–सूखा नही था।

साहित्य––मगोलोके सर्वसहारी प्रहारके बाद साहित्यकी और धाराए रुकसी गई, लेकिन धर्मशास्त्र (शरीयत), धार्मिक साहित्य, सूफी साहित्य, मदिरावाद फूलता-फलता रहा। मुल्लो और

सूफियोकी मगोल-दरवारमे वडी इज्जत थी। जिसके कारण इस्लामिक शरीयतका प्रभाव भी वढ चला। कहना चाहिये शरीयत और सूफीमतका इतना प्रभाव मध्य-एसियाकी जनतापर पहिले कभी नही पडा था। कुछ परिवारोने शरीयत और सूफीवादके लिये अपनी पुश्तैनी गद्दी वना ली, और उनका सम्मान पैगम्वरोकी तरह होने लगा। इन परिवारोमे सिताजी और खावन्द वहुत प्रसिद्ध थे। जमालुद्दीन मिताजी—मृत्यु ६४० हि० (१ VII १२४२–२२ V १२४३ ई०)—एक सूफी कवि था, जो ६२८ हि० (९ XI १२३०–३० IX १२३१ ई०) में खोजन्दमें आकर वस गया था, और मगोलोके आक्रमणके समय ६४० हि० में मरा। वुखाराके खावन्द-परिवारका अमीर शम्शुद्दीन-पुत्र कमालुद्दीन अच्छा कवि था, जिसके कई दीवान (कविता-सग्रह) मौजूद है। इसने "मिन्हाजुल्-मुजक्करीन" के नामसे भक्तमाल जैसा एक जीवनचरितात्मक ग्रन्थ लिखा। इलखान अवकाकी सेना-द्वारा ६७१ हि० (२९ VII १२७२–१९ VII १२७३ ई०) में वुखाराकी लूटके पहले ही दिन कमा-लुद्दीन मर गया। शाह फखरुद्दीन, मुल्ला ताजुद्दीन इस समयके दूसरे साहित्यकार थे। मुल्ला ताजुद्दीन ७३० हि० (२५ X १३२९–१५ IX १३३० ई०) में मरा। इसने "वोस्ताने-मुजक्करीन" लिखा। तरमाशेरिनके वाद मगोल-राजवश जल्दी-जल्दी मुसलमान होने लगा। मगोलोके लिये इस्लामके समुद्रमें डेढ ईंटकी अलग मस्जिद वनाकर रहना आसान नही था। मगोल-राजवश वौद्ध-सतो और लामाओ की अधभक्ति सीख चुका था, अव वही अन्धभक्ति उनकी सूफियोके प्रति हो गई। मानके वढनेके साथ सूफियोकी सख्या भी वहुत वढी। मुल्लाओका गढ वुखारा अव सूफियोका भी गढ वन गया, इसीलिये उस समय किसी कविने लिखा था—

"वुखारा मीरवी दीवाना।
लायक जजीरे-जिंदानखाना।"

(वुखारा जा रहा है पागल, वह तो जेलखानेकी जजीर जैसा है।)

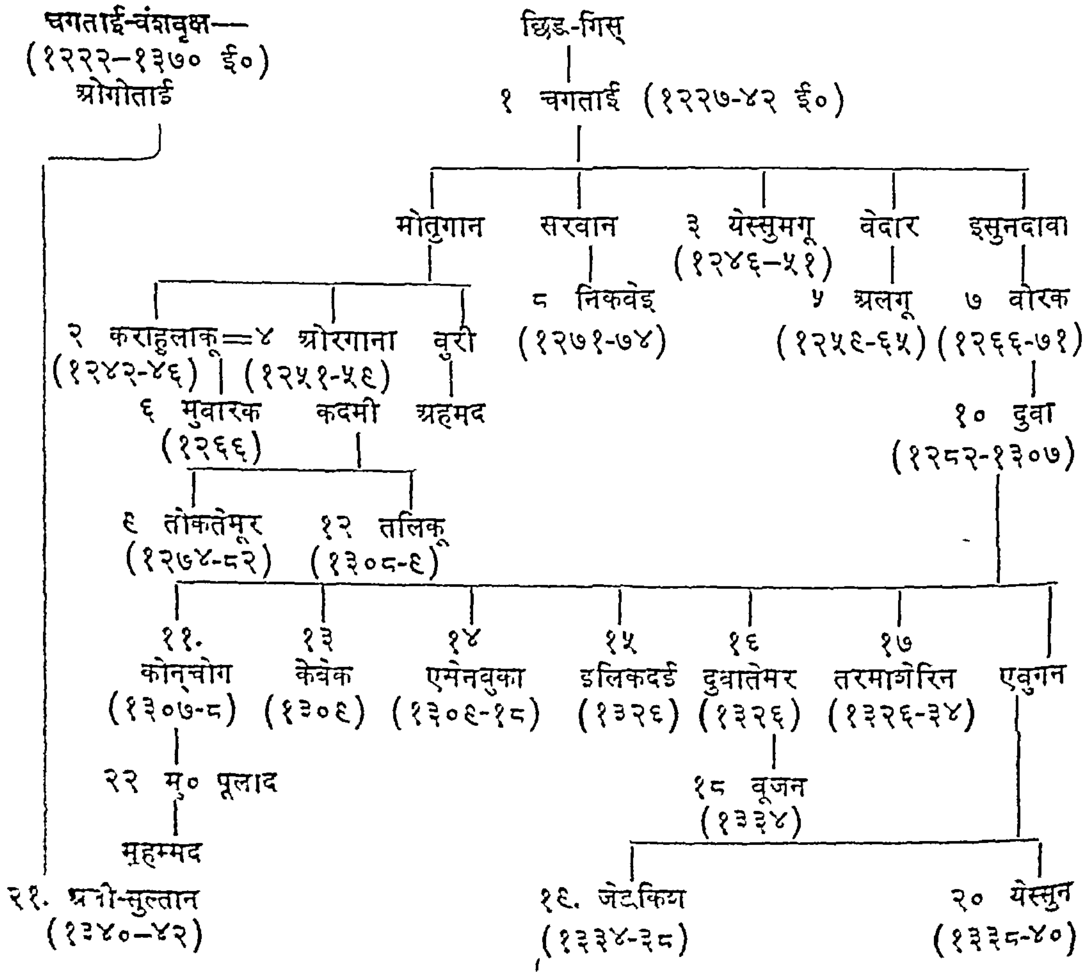

अध्याय २

हुलाकू-वंश

(१२५६–१३४७ ई०)

हुलाकूने ईरान-इराक तथा दूसरे देशोको विजय करके अपने वशकी स्थापना की थी। हुलाकू-के बाद इसकी राजधानी तब्रीज हो गई। सभी मगोल खानोंके ऊपर कश्रान (खाकान, हागान) माना जाता था। उसके नीचे भिन्न-भिन्न उलुसोके खानोको इलखान कहते थे। इल या एल जन (कबीले) का पर्याय है। इसीसे एलची शब्द निकला, जिसका अर्थ है जनदूत या राजदूत। पीछे "इलखान" ईरानी मगोल-राजवशके लिये रुढ हो गया।

इलखानोकी नामावली निम्न प्रकार है—

१	हुलाकू, तूलुइ-पुत्र	१२५६–६४ ई०
२	अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र	१२६४–८२ „
३	अहमद तगूदर, हुलाकू-पुत्र	१२८२–८४ „
४	अरगून, अबका-पुत्र	१२८४–९२ „
५	गैखातू, अबका-पुत्र	१२९२–९५ „
६	बैदू, तरगई-पुत्र	१२९५ „
७	गाजन, अरगून-पुत्र	१२९५–१३०४ „
८	उलजैतू, अरगून-पुत्र	१३०४–१७ „
९	अबूसईद उलजैतू-पुत्र	१३१७–३५ „
१०	अरपगोन, सूसू-पुत्र	१३३५–३६ „
११	मूसा, अली-पुत्र	१३३६–३७ „
१२	मुहम्मद येल, कुतुलुग-पुत्र	१३३७–३८ „
१३	सातीबेग, उलजैतू-पुत्र	१३३८–४० ,
१४	शाहजहा तेमूर, अलाफेफ-पुत्र	१३४० „
१५	सुलेमान, युसुफशाह-पुत्र	१३४०–४४ „
१६	नौशेरवा	१३४४ „

१ हुलाकू, खूलागू, तूलुइ-पुत्र (१२५६–६४ ई०)

हुलाकू (जन्म १२१६ ई०) छिड-गिस्के पुत्र तूलुइका बेटा चीनके प्रसिद्ध कश्रानो मुङखे और कुबिलेइका अनुज था। मुङखेन १२५२ ई०में जो कूरिल्ताई बुलाई थी, उसमें ईरान-इराकके विजयका भार हुलाकूके ऊपर दिया गया। हुलाकू कूच करते हुए १२५३ ई०के मार्चमें अलमालिकके पूर्वके पहाडो में पहुचा। फर्वरी १२५४ ई०में चगताईकी राजधानी अलमालिकमें उसकी साली रानी ओरगानाने उसका स्वागत किया। सितम्बर १२५५ ई० में अपनी सेनासहित वह समरकन्द पहुचा और २ जनवरी-को उसने वक्षु पार कर लिया। फिर खुरासान होते मध्य-ईरानमे पहुच हसन बिन-सब्बाहके गढ अल्-मौतको विजय करके ध्वस्त कर दिया। कवि खैयाम और इस्लामी चाणक्य निजामुल्मुल्कके सहपाठी तथा इस्माईली सम्प्रदायके मुखिया हसन बिन-सब्बाह (सब्बाह-पुत्र) ने शिष्योको जीते-जी स्वर्गकी सैर करानेका प्रवन्ध करते हुये अल्मौत नामका नगर और दुर्ग स्थापित किया था। हसनके चेलोसे राजाओ और राजमन्त्रियोको भी प्राणोका डर बना रहता था, इसीलिये कोई उसे छेडता नही था। हुलाकूने

सूफियोकी मगोल-दरवारमें वडी इज्जत थी। जिसके कारण इस्लामिक शरीयतका प्रभाव भी वढ चला। कहना चाहिये शरीयत और सूफीमतका इतना प्रभाव मध्य-एसियाकी जनतापर पहिले कभी नही पडा था। कुछ परिवारोने शरीयत और सूफीवादके लिये अपनी पुश्तैनी गद्दी वना ली, और उनका सम्मान पैगम्वरोकी तरह होने लगा। इन परिवारोमे सिताजी और खावन्द वहुत प्रसिद्ध थे। जमालुद्दीन मिताजी—मृत्यु ६४० हि० (१ VII १२४२–२२ V १२४३ ई०)—एक सूफी कवि था, जो ६२८ हि० (९ XI १२३०–३० IX १२३१ ई०) में खोजन्दमें आकर वस गया था, और मगोलोके आक्रमणके समय ६४० हि० में मरा। वुखाराके खावन्द-परिवारका अमीर शम्शुद्दीन-पुत्र कमालुद्दीन अच्छा कवि था, जिसके कई दीवान (कविता-सग्रह) मौजूद है। इसने "मिन्हाजुल्-मुज़क्करीन" के नामसे भक्तमाल जैसा एक जीवनचरितात्मक ग्रन्थ लिखा। इलखान अवकाकी सेना-द्वारा ६७१ हि० (२९ VII १२७२–१९ VII १२७३ ई०) में वुखाराकी लूटके पहले ही दिन कमा-लुद्दीन मर गया। शाह फखरुद्दीन, मुल्ला ताजुद्दीन इस समयके दूसरे साहित्यकार थे। मुल्ला ताजुद्दीन ७३० हि० (२५ X १३२९–१५ IX १३३० ई०) में मरा। इसने "वोस्ताने-मुज़क्करीन" लिखा। तरमाशेरिनके वाद मगोल-राजवश जल्दी-जल्दी मुसलमान होने लगा। मगोलोके लिये इस्लामके समुद्रमें डेढ ईंटकी अलग मस्जिद वनाकर रहना आसान नही था। मगोल-राजवश वौद्ध-सतो और लामाओ की अधभक्ति सीख चुका था, अव वही अन्धभक्ति उनकी सूफियोके प्रति हो गई। मानके वढनेके साथ सूफियोकी सख्या भी वहुत वढी। मुल्लाओका गढ वुखारा अव सूफियोका भी गढ वन गया, इसीलिये उस समय किसी कविने लिखा था—

"वुखारा मीरवी दीवाना।
लायक जजीरे-जिदानखाना।"

(वुखारा जा रहा है पागल, वह तो जेलखानेकी जजीर जैसा है।)

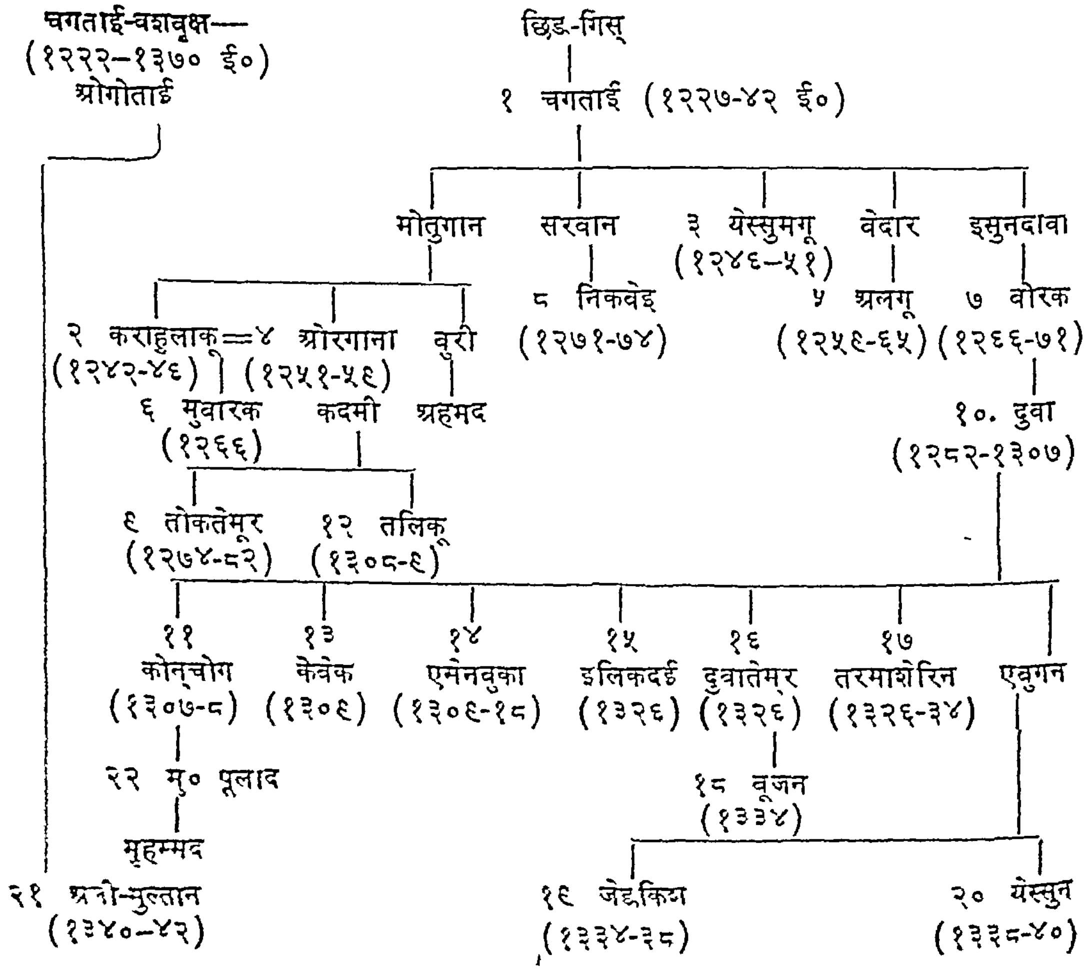

अध्याय २

हुलाकू-वंश

(१२५६–१३४७ ई०)

हुलाकूने ईरान-इराक तथा दूसरे देशोको विजय करके अपने वशकी स्थापना की थी। हुलाकू-के बाद इसकी राजधानी नब्रीज हो गई। सभी मगोल खानोके ऊपर कआन (खाकान, हागान) माना जाता था। उसके नीचे भिन्न-भिन्न उलुसोके खानोको इलखान कहते थे। इल या एल जन (कबीले) का पर्याय है। इसीसे एलची शब्द निकला, जिसका अर्थ है जनदूत या राजदूत। पीछे "इलखान" ईरानी मगोल-राजवशके लिये रूढ हो गया।

इलखानोकी नामावली निम्न प्रकार है---

१	हुलाकू, तूलुइ-पुत्र	१२५६–६४ ई०
२.	अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र	१२६४–८२ "
३	अहमद तगूदर, हुलाकू-पुत्र	१२८२–८४ "
४	अरगून, अबका-पुत्र	१२८४–९२ "
५	गैखातू, अबका-पुत्र	१२९२–९५ "
६	बैदू, तरगई-पुत्र	१२९५ "
७	गाजन, अरगून-पुत्र	१२९५–१३०४ "
८	उलजैतू, अरगून-पुत्र	१३०४–१७ "
९	अबूसईद उलजैतू-पुत्र	१३१७–३५ "
१०	अरपगोन, सूसू-पुत्र	१३३५–३६ "
११	मूसा, अली-पुत्र	१३३६–३७ "
१२	मुहम्मद येल, कुनुलुग-पुत्र	१३३७–३८ "
१३	सातीबेग, उलजैतू-पुत्र	१३३८–४० ,
१४	शाहजहा तेमूर, अलाफेफ-पुत्र	१३४० "
१५	सुलेमान, युसुफशाह-पुत्र	१३४०–४४ "
१६	नौशेरवा	१३४४ "

१ हुलाकू, खूलागू, तूलुइ-पुत्र (१२५६–६४ ई०)

हुलाकू (जन्म १२१६ ई०) छिङ-गिस्के पुत्र तूलुइका बेटा चीनके प्रसिद्ध कआनो मुङखे और कुबिलेइका अनुज था। मुङखेने १२५२ ई०में जो कूरिल्ताई बुलाई थी, उसमे ईरान-इराकके विजयका भार हुलाकूके ऊपर दिया गया। हुलाकू कूच करते हुए १२५३ ई०के मार्चमें अलमालिकके पूर्वके पहाडो में पहुचा। फर्वरी १२५४ ई०में चगताईकी राजधानी अलमालिकमें उसकी साली रानी ओरगानाने उसका स्वागत किया। सितम्बर १२५५ ई० मे अपनी सेनासहित वह समरकन्द पहुचा और २ जनवरी-को उसने वक्षु पार कर लिया। फिर खुरासान होते मध्य-ईरानमे पहुच हसन बिन-सब्बाहके गढ अल्-मौतको विजय करके ध्वस्त कर दिया। कवि खैयाम और इस्लामी चाणक्य निजामुलमुल्कके सहपाठी तथा इस्माईली सम्प्रदायके मुखिया हसन बिन-सब्बाह (सब्बाह-पुत्र) ने शिष्योको जीते-जी स्वर्गकी सैर करानेका प्रबन्ध करते हुये अल्मौत नामका नगर और दुर्ग स्थापित किया था। हसनके चेलोसे राजाओ और राजमन्त्रियोको भी प्राणोका डर बना रहता था, इसीलिये कोई उसे छेडता नही था। हुलाकूने

इस गढ़को तोड़कर उसे हमेशाके लिये नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, और उसके बाद इस्माईली फिर अपने लिये वैसा सुदृढ़ दुर्ग नहीं बना सके। इसी इस्माईली सम्प्रदायके गुरु हमारे यहांके आगाखान हैं, या यों कहिये, हुलाकूकी आगीसे उड़े पत्तोंमेंसे एक हैं। मार्च १२५७ ई० को हुलाकूने हम्दानके लिये प्रस्थान किया। छिड़-गिस्की दिग्विजयमें उसके सेनापति हम्दानतक ही आ पाये थे। यहांसे हुलाकूको उस रास्तेपर जाना था, जिसपर मगोल घोड़ोंकी टाप नहीं पड़ी थी। ईरानके जिस भागको छिड़-गिस्के सेनापतियोंने जीता था, उसपर भी अभीतक मगोल शासन पक्का नहीं हो पाया था। हुलाकू अब इस कामको बड़े दृढ़तासे करता चल रहा था। १८ जनवरी १२५८ ई०को वह खलीफाकी राजधानी बगदादके पूर्वमें था। ४ फर्वरीको उसने बुर्जेअली किलेको ध्वस्त किया। खलीफा पूरी तौरसे पराजित हो १० फर्वरीको हुलाकूके शिविरमें कोरनिश करने गया। यद्यपि खलीफाकी राजशक्ति तीन शताब्दियों पहले ही खतम हो चुकी थी, लेकिन इस्लामके पोपके तौरपर उसका सम्मान अब भी बहुत अधिक था। देश-देशके स्वतन्त्र सुल्तान उसके पास बड़ी-बड़ी भेंटें भेजकर उसके दिये चार अक्षरोंके नामोंको बड़े अभिमानपूर्वक अपने नामके साथ जोड़ते थे। खलीफाका हुलाकूके दरबारमें सलाम बजाने जाना वैसा ही था, जैसा कि हालमें सूर्यदेवीके पुत्र जापानके मिकादोका अमेरिकन जेनरल मेकआर्थरके सामने दंडवत् करना। लेकिन हुलाकू सापको पालनेके लिये तैयार नहीं था। वह समझता था, खलीफा मुसलमानोंको भड़का सकता है, इसीलिये बड़े लड़केके साथ खलीफाको उसने २० फर्वरी को मरवा दिया।

बगदादपर अधिकार करके विजित देशकी व्यवस्थाके लिये कुछ समयतक हुलाकू रुका, फिर वह पश्चिमकी विजय-यात्राके लिये निकला, और २५ जनवरी १२६० ई० को जाकर उसने हलब (अलेप्पो) पर अधिकार किया। शाम (सिरिया) की राजधानी (दमिश्क) की ओर बढ़नेपर उसका मुकाबिला मिस्रके ममलूक सुल्तान सैफुद्दीन फीरोजसे पड़ा। हुलाकूके सेनापति कीतू-बुगाने मिस्रियोंके पास निम्न शब्दोंमें अन्तिमेत्थम् भेजा—

"तुमने सुना होगा, कैसे हमने एक विशाल साम्राज्यको जीता, कैसे हमने पृथिवीकी गदगियोंको हटाकर शुद्ध किया, और अधिकांश लोगोंको कत्ल कर डाला। तुम्हारा काम है, भागना और हमारा काम है पीछा करना—जहां भी तुम जाओ, जिस रास्तेसे भी जाओ, वहां तुम्हारा पीछा करना। तुम कैसे हमसे बच सकते हो? हमारे घोड़े बड़े तेज हैं, हमारे बाण बड़े तीक्ष्ण हैं, हमारी तलवार वज्र जैसी है, हमारे हृदय पहाड़की तरह कठोर हैं, हमारे सैनिक बालूके कणोंकी तरह असंख्य हैं। किले हमें रोक नहीं सकते, न हथियार ही। हमारे विरुद्ध तुम्हारी प्रार्थनाओंको भगवान् नहीं सुनेगा। तुम हीन उपायोंसे अपनेको बचाना चाहते हो और शपथ-पूर्वक की हुई प्रतिज्ञाओंको तोड़ते हो। विद्रोह और अव्यवस्था तुम्हारे भीतर फैली हुई है। अपने अभिमानके लिये तुम्हें अब भयंकर दण्ड मिलनेवाला है। अन्यायी अपने भाग्यसे शिक्षा लेने जा रहे हैं। हमारे साथ युद्धका मसूबा रखनेवाले अब पछतानेवाले हैं। जो हमारी शरणमें आना चाहते हैं, केवल उन्हींकी रक्षा होगी। अगर तुम हमारी आज्ञा और पेश की हुई शर्तोंको मानोगे, तो हमारे वैभवमें भागीदार बनोगे, यदि प्रतिरोध करोगे, तो नष्ट हो जाओगे। आत्महत्या मत करो। जिसे पहलेसे सजग कर दिया गया है, उसे अपने लिये सावधान रहना चाहिये। तुमसे कहा गया है, कि हम काफर हैं, पर हम तुमको पापी समझते हैं। जिस भगवान्‌की आज्ञाएं अमिट हैं, जिसका फैसला पूर्णतया न्यायानुमोदित है, वही तुम्हारे ऊपर हमें विजयी बना रहा है। हमारी आंखोंमें तुम्हारी सबसे जबर्दस्त सेनायें भी आदमियोंकी एक छोटीसी टुकड़ी है। तुम्हारे प्रसिद्ध वीरोंको भी हम तुच्छ समझते हैं। तुम्हारे राजाओंको हम घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। जवाब देनेमें जल्दी करना। ऐसा न हो, कि युद्ध तुम्हारे ऊपर आग लगा दे और तुम्हारे ऊपर अपनी चिनगारियां फेंकने लगे। हमारा कहा न करोगे, तो जो भयंकर सत्यानाश तुम्हारा होनेवाला है, उसमें कहीं त्राण नहीं पा सकोगे और तुम अपने देशको रेगिस्तान बना दोगे। हम पहलेसे चेतावनी देकर तुम्हारी भलाई करना चाहते हैं, तुम्हें तुम्हारी नीचतासे टराना चाहते हैं। अब तुम ही एकमात्र (हमारे) शत्रु रह गये हो, जिसके विरुद्ध हमें कूच करना है। तुम्हारे और जो लोग भी देशी आदेशका अनुगमन करते हैं, सौतन्ते

डरते हैं; उनके लिये भी सुरक्षाका यही रास्ता है, कि वह कश्रानकी श्राज्ञाको माने। मिस्रको कहो—हुलाकू इस भूमिके बडोको अपमानित करने आ रहा है, वह बच्चोको वहा भेज देगा, जहा बूढे गये है।"

इसका जवाब सुल्तान फीरोजने इस प्रकार दिया—

"ओ तरुण, तुमने अभी-अभी अपना जीवन आरम्भ किया है, इसीलिये तुम जीवनकी ओर इतना कम ध्यान देते हो। तुमने अभी दस दिनोकी ही समृद्धि और सौभाग्यका उपभोग किया है। ऐसा होनेपर भी तुम सारी दुनियासे अपनेको बडा समझते हो और अपनी आज्ञाको भवितव्यताकी आज्ञा मानकर उसे अनिवार्य समझते हो। तुम क्यो मुझसे ऐसी माग कर रहे हो, जिसे कि तुम पा नही सकते? क्या तुम अपनी चालाकी, अपनी सैनिक शक्ति और अपनी हिम्मतसे एक भी तारेको बन्दी बना सकते हो? तुम शायद नही जानते, कि पूरबसे पश्चिमतक अल्लाके बन्दे, धर्मात्मा पुरुष, राजा-रंक, बच्चे-बूढे, सभी इस (मेरे) दरबारके दास है, वह मेरी सेना है। जब मैं अलग-अलग प्रतिरोधियोको इकट्ठा हो जानेकी आज्ञा दूगा, तो पहले ईरानके मामलेको ठीक करूगा, फिर तूरान (तुर्किस्तान) पर चढूगा और वहा हरएक आदमीको उसके पदपर स्थापित करूगा। इसमे सन्देह नही, कि मेरे इस कामके परिणाम-स्वरूप पृथिवीपर अशाति और गडबडी फैलेगी, लेकिन यह सब मै बदला लेनेके लोभसे नही करता और नही लोगोकी वाहवाही लूटना चाहता हू। मै इसके लिये उत्सुक नही, कि सेनाके बजते बाजोके साथ आदमी मारे जाय। मै दुआ या शापको भी नही पसन्द करता। मेरे, कश्रान और हुलाकू—सबके पास एक-सा ही दिल है, एक-सी ही भाषा है। अगर मेरी तरह तुम भी मित्रताका बीज बोना चाहते हो, तो मेरे सेवकोकी खाइयो और मोर्चाबन्दियोसे तुम्हारा क्या काम है? भलाईके रास्तेको पकडो और खुरासान लौट जाओ। यदि तुम लडना ही चाहते हो, तो मेरे पास हजारो सेनाये है, जो कि बदला लेनेके समय आनेपर समुद्रको सुखा देंगी।"

३ सितम्बर १२६० ई० को मगोल और ममलूक सेनाओमें भीषण लडाई हुई। यद्यपि ममलूक सुल्तान-खलीफाने अपने लिखे अनुसार ईरान और तूरान (मध्य-एसिया) की ओर पैर नही बढाया, लेकिन हुलाकूकी सेनाको उसने पूरी तौरसे हराकर अफ्रीकामे बढनेका रास्ता बन्द कर दिया। हुलाकूकी विजयिनी सेनाको ही मिस्तियोने नही रोका, बल्कि तैमूरलगकी विजययात्रा भी यही आकर खतम हो गई। नील-उपत्यका एक छोटासा देश है। वह कैसे विश्वविजेताओकी सेनाओको रोक सका, इसका कारण उतनी उसकी अपनी शक्ति नही थी, जितनी कि बडीसे बडी सैनिक शक्तिका भारी बिखरावके कारण अन्तमें क्षीण हो जाना—तरिम, चू, मुरगाब, जरफशा (सोग्द) और खुद हमारे यहाकी प्राचीन सरस्वती (-घग्घर) भारी जलप्रवाहको लेकर चलती है, लेकिन अन्तमें उनके पानीको सोखते हुए रेगिस्तान उन्हे अपनेमें लीन कर लेता है।

मिस्रकी ओर आगे न बढ सकनेपर हुलाकू लौट पडा। तब्रेजको लेकर १२ सितम्बर (१२६० ई०)को उसने आगेकी विजययात्रा शुरू की, और दियारबेकर, जजीरा, रोहा (एदेस्सा), अर्रान और निसिबीके नगरोपर अधिकार किया। रोहाके पास हुलाकूने मगोल सैनिक शक्तिका एक बहुत बडा प्रदर्शन किया, जिसे देखने के लिये रोम और अर्मनीके राजा भी उपस्थित थे। दमिश्कपर अधिकार करनेके बाद हुलाकूने दुनियाका सबसे पहला कागजी नोट (चाउ) जारी किया, दूसरे इतिहासकारोका मत है, कि वह पहलेपहल १२ अप्रैल १२६४ ई० को तब्रेजमें जारी किया गया।

विजयोके बाद हुलाकूने मरगाको अपनी राजधानी बनाया, जिसे उसका लडका तब्रेजमें ले गया।

हुलाकू और उसके चचेरे भाई बरका खान (१२५५–६५ ई०) का पहले मेल था, उसके बाद दोनोमें झगडा होनेका कारण बरकाने हुलाकूके इस्लाम और खिलाफतके ध्वस करनेकी बात बतलाई, लेकिन वस्तुत झगडा काकेशसपर अधिकारका था।

काकेशसकी ओर बढते हुए अब जूचि-उलुसकी सीमा नजदीक आ गई तो अनिश्चित विजित देशोके लिये दोनोमे झगडा शुरू हो गया। यह बतला आये है, कैसे ११ नवम्बर १२६२ ई० को जूचि-उलुसके खान बेरकेसे मुकाबिला करनेके लिये हुलाकूकी सेना दरबन्द पहुची, लेकिन वही बरकाके सेनापति नोगाईने उसे हराकर पीछे हटा दिया। बरका और मिस्र-सुल्तान फीरोज दोनो हुलाकूके शत्रु

थे। "शत्रुका शत्रु मित्र" की नीतिके अनुसार सुवर्ण-ओर्दू और मिस्रमें मेल-जोल करनेका प्रयत्न होने लगा। १२६३ ई० के शरद्‌में बर्काका दूतमंडल मिस्रके सुल्तानके पास पहुँचा।

मिस्र और दरबन्दकी हारोंके बाद हुलाकूने समझ लिया, कि हमारे राज्यका जितना विस्तार हो सकता है, उतना हो चुका। इसीलिये अब वह शासन-प्रबन्धमें लग गया। १२६४ ई० में उसने कई शासन-सुधार किये। १९ रबी II ६६३ हि० (८ फर्वरी १२६४ ई०)को हुलाकू जगात (मेरगाम) में मर गया।

हुलाकूकी पटरानी ओइरोत (मंगोल)-राजकुमारी कूबेक (ओलेज) खातून थी।

हुलाकूके अलमौतके किलेके ध्वस्त करते समय इस्माईली पोप अलाउद्दीन मुहम्मदने मुहक्क्किक नासिरुद्दीन तूसी (१२०१-७४ ई०)को अपने बन्दीखानेमें डाल रखा था। तूसी बहुमुखी प्रतिभाका धनी था। हुलाकूने उनकी कदर की। तूसी हुलाकू और उसके बेटे अबका खानके शासनकालमें बहुत सम्मानित रहा। उसने "जिज़्रे इलखानी" नामसे एक पंचांग बनाया।

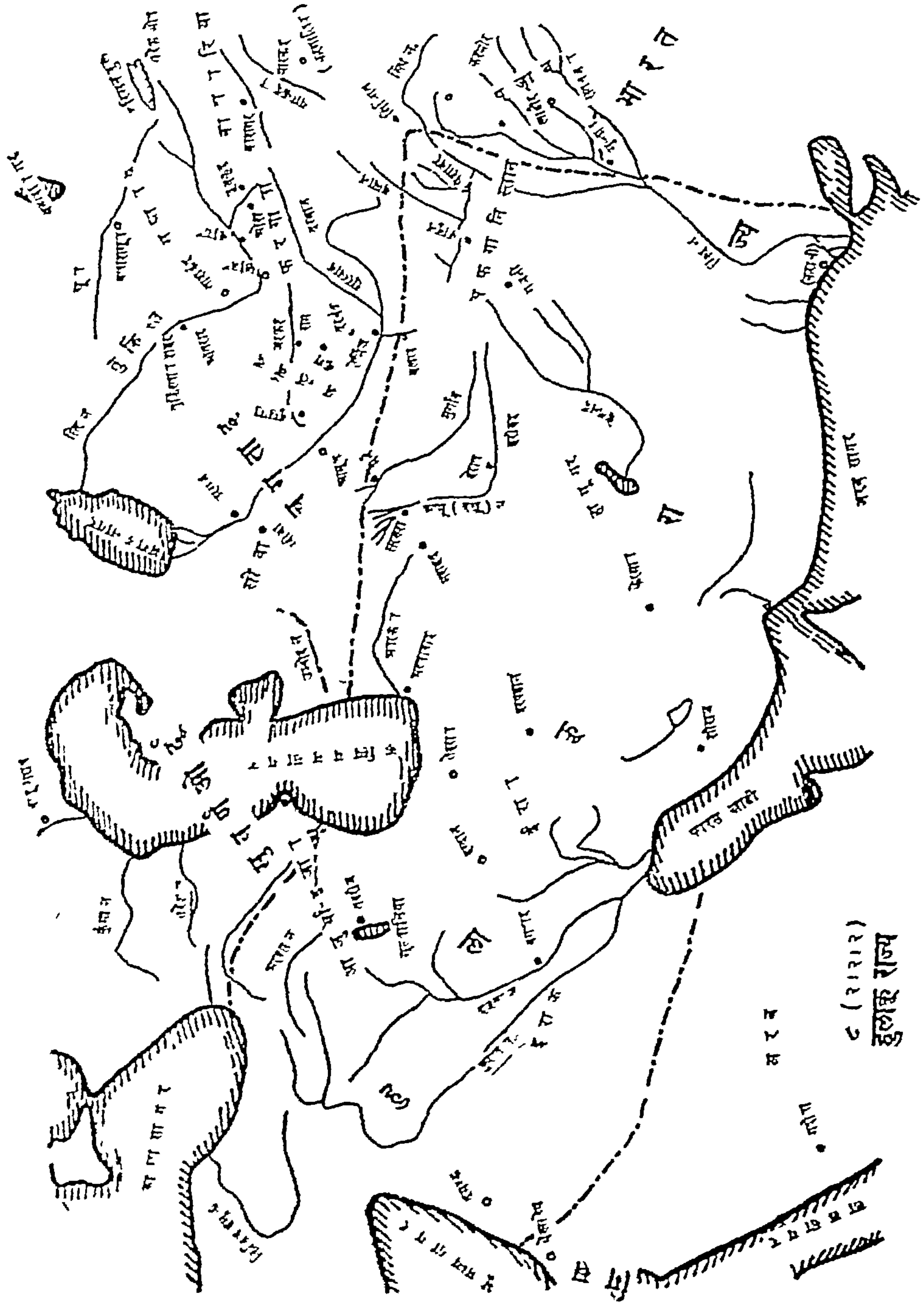

८ (२।२।२) हुलाकू राज्य

२. अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र (१२६४–८२ ई०)

अबका बापकी तरह ही एक कुशल सैनिक और शासक था। बापके समय बेरका खानसे जो झगडा हुआ था, वह इसके समयमें भी जारी रहा। बेरकाके उत्तराधिकारी बातू-पुत्र मङ्गू-तेमूर (१२६५–८० ई०) के साथ भी इसकी लडाइयां होती रही। नोगाई-द्वारा पिताकी हारका बदला लेनेके लिये अबकाने राजकुमार यशमुतके अधीन एक बडी सेना ले १९ जुलाई १२६५ ई०को प्रस्थान किया। कुरा-तटपर पहुचकर दोनों ओरकी सेनायें दाव-पेच ढूढने लगी, और लडाई नही हो पाई।

२६ नवम्बर १२७० ई०को कुबिलेका भेजा यारलिक (शासन-पत्र) जगातमें मिला। अबका बराबर अपने चचा कुबिलेका पक्षपाती रहा, जब कि चगताई और ओगोताई-वशके खान उसके प्रतिद्वंद्वी थे। जगताई-खान बोरक अबकासे खुरासान को छीनकर बहुत दिनोतक अपने अधिकारमें नही रख सका। अबकाने खुरासानका बदला ६७२ हि० (२९ VII १२७२–१९ VI १२७३ ई०)मे अन्तर्वेद तथा बुखाराको लूटकर लिया।

फारसीका महान् कवि (मुशर्रिफुद्दीन) **सादी** (११८४–१२९२ ई०) हुलाकू और अबकाके समयमें ही हुआ था, जिसने अपने दो महान् ग्रन्थो "बोसता" और "गुलिस्ता" को १२५७-५८ ई० में लिखा था। लेकिन, सादी-जैसा स्वतन्त्रचेता पुरुष मगोलोका दरबारी नही हो सकता था। सर्वश्रेष्ठ सूफी कवि मौलाना जलालुद्दीन **रूमी** (१२०७–७३ ई०) भी हुलाकू और अबकाके समयमे ही हुआ था। रूमी वस्तुत रूममे नही बल्कि १२०७ई० मे बलखमें पैदा हुआ था, जहासे वह अपने बापके साथ नेशापोर (खुरासान) गया और अन्तमे मक्का और दूसरी जगहोकी यात्रा करते बापके साथ क्षुद्र-एसियाके कोन्या (इकोनियम्) नगरमें रहने लगा। इसकी प्रसिद्ध कृति "मस्नवी" (कथाकाव्य) में सत्ताईस हजार शेर हैं, जिसका स्थान दुनियाके महान् काव्योमें है। सादी और रूमी हुलाकू-अबकाके कालकी उपज हैं, इसलिये उनकी कविताओपर उस समयकी स्थितिका प्रभाव पडना जरूरी है। सादीने वैरागियो और दरवेशोकी जिंदगी पसन्द की, और मौलाना रूमीने वेदान्ती रहस्यवाद स्वीकार किया, इसका कारण मगोलोकी ध्वसलीलासे पैदा हुआ निराशावाद था।

३. अहमद तगूदर, निकोदर, हुलाकू-पुत्र (१२८२–८४ ई०)

अबकाके मरनेपर उसके भाईने गद्दी सभाली। उसने अपनी अयोग्यताको ढकनेके लिये इस्लाम स्वीकार किया, जिसपर मगोल बिगड गये और अबकाके पुत्र अरगूनने उसे मार डाला।

४ अरगून, अरगोन, अबका-पुत्र (१२८४–९२ ई०)

हुलाकूके समयसे ही राज्यका वजीर-आजम ख्वाजा शम्सुद्दीन चला आता था। उसके प्रभावको न सहकर अरगूनने ६८३ हि० (२० III १२८४–८ II १२८५ ई०) में उसे मरवा दिया। अरगूनको परेशान करनेके लिये बाप-दादोके समयसे ही किपचकोके साथ झगडा चला आ रहा था। २१ सितम्बर १२८६ ई० को अरगूनका शिविर मेरागमे पडा था। छिटपुट झडप होती ही रहती थी। इसी बीच २६ मार्च १२९० ई० को दूतोने आकर खबर दी, कि किपचक-सेना आगे बढती दरबन्द[1] आ पहुची है। किपचक और इलखानके झगडोमें दरबन्दका ज्यादा महत्त्व था। किपचकोके आनेकी खबर पाकर अरगूनने तुकाल, शिकतुर नोयन और कुजुकबलके नेतृत्वमे एक बडी सेना २७ मार्चको रवाना की। इस सेनामे तुगाचार और दूसरे मगोल अमीर भी थे। २१ अप्रैल (१२९० ई०) को सेनाका हरावल करासू नदीपर पहुचा। मेगलान बुका आदिके नेतृत्वमे उत्तरसे दो तुमान (बीस हजार) किपचक-सेना आ रही थी। इलखानियोंने नदी पारकर उसपर आक्रमण किया। दुश्मनके तीन सौ सवार मारे गये और कितने ही बन्दी बने। ३ मई १२९० ई० को अरगून विलियासुवरमे पहुचा। अन्तमे राजकुमार बैदूने विद्रोह करके इसे मार डाला।

---

१ दरबन्द (द्वारबन्ध) दो थे, जिनमे एक मध्य-एसियामें तेर्मिजके उत्तरके पहाडोका लौहद्वार था, और दूसरा बाकूसे उत्तर काकेशस पर्वत तथा कास्पियन समुद्रके मिलनस्थानपर।

सादी शाराजी इनीके समय (६९१ हि०) मरा। सादीने हिन्दुस्तान, काशगर और पश्चिममें मिस्रतककी यात्रा की थी। हुलाकूके शीराजके राज्यपाल अलाउद्दीन और उसके भाई दोनो वजीरआजम शम्सुद्दीन सादीके बडे भक्त थे, जिनके कारण सादीका परिचय अबकासे हुआ था, लेकिन यह नही कहा जा सकता कि अरगूनसे भी उसका परिचय था। सादीका बादशाहोसे ज्यादा मेल-जोल न था, तो भी उसने लिखा है—

बादशह सायये-खुदा बाशद्।
साया बा-ज़ात आश्ना बाशद्।

(राजा भगवान्की छाया है। छाया है यदि वह भगवान्से परिचित हो।)

अल्लामा कुतुबुद्दीन (मृत्यु १३११ ई०) तब्रेज़ी अपने समयका बडा विद्वान् था। अरगूनका कृपापात्र कवि औहदी (मृत्यु १३३७ ई०) इसी समय हुआ था। यही समय था, जब कि भारतमें अमीर खुसरो-जैसा फारसीका महान् कवि पैदा हुआ। खुसरोका बाप छिङगिसी हमलेके मारे बहुतसे दूसरे तुर्कोकी तरह मध्य-एसियासे भागकर भारत चला आया था। अमीर खुसरो जब मुल्तानके हाकिम सुल्तान मुहम्मदके दरबारमें था, उसी समय ६८३ हि० (२० III १२८४–८ II १२८५ ई०) अरगून खानके एक सेनापति तैमूर खानने बीस हजार सवार लेकर पजाबपर हमला किया, और लाहौर, दीपालपुरको लूटते-मारते वह मुल्तानकी ओर बढा। मुकाबिलेके लिये गया सुल्तान मुहम्मद मगोलो के सामने हारा और मारा गया। अमीर खुसरो और उनके साथी दूसरे कवि हसन देहलवी भी अपने स्वामीके साथ इस सघर्षमे शरीक थे। मगोल दोनोको बन्दी बनाकर बलख ले गये। अमीर खुसरो दो सालतक बलखमें रहा, जिसके बाद उसे छुट्टी मिली और वह लौटकर दिल्ली चला आया। इस घटनाका बडा ही करुणापूर्ण वर्णन अमीर खुसरोने अपनी कवितामे किया है, जिसको हम पहिले उद्धृत कर चुके है।

५ गैखातू, अबका-पुत्र (१२९२–९५ ई०)

अरगूनके बाद बेटेको वचित कर भाईको गद्दी मिलना यही बतलाता है, कि अभी सैनिक जनतन्त्रताका मगोलोमे बिलकुल उच्छेद नही हुआ था। गैखातूका समकालीन किपचक खान तोकताई बडा ही शक्तिशाली था, लेकिन पीढियोंसे लडते-लडते तग आकर अब वह चाहता था, कि काकेशसके लिये चलती रहनेवाली लडाई बन्द की जाय। उसने कोनिचि ओगलान (राजपुत्र) को शातिदूत बनाकर १३ जुलाई १२९३ ई० को भेजा। २८ मार्च १२९४ ई० (२८ रबी II ६९३ हि०) को तोकताईका भेजा दूसरा दूतमडल भी आया, जिसके मुखिया राजकुमार कलिनतई और उलाद थे। दलननोरमें उनसे बातचीत कर २ अप्रैल १२९४ ई०को गैखातूने बडे सम्मानके साथ उन्हें बिदा किया। किपचकोकी ओरसे अब इलखानको कुछ निश्चितता-सी थी।

६ बैदू, तरगई-पुत्र (१२९५ ई०)

बैदू अधिक दिनोतक शासन नही कर पाया और जल्दी ही उसे हटाकर गाजनने सिंहासन दखल कर लिया।

७ गाजन, अरगून-पुत्र (१२९५–१३०४ ई०)

गाजन इस्लामका धर्मराज कहा जाता था। इसमें शक नही कि उसके समयसे ईरानके मगोल-राजवशपर इस्लामका प्रभाव बहुत जोरसे पडने लगा। किपचक खानसे फिर झगडा शुरू हो गया। ३ मई १३०१ ई०को तोकताई खानका दूत आया, लेकिन सुलह नही हो सकी। इसपर गाजन एक बडी सेना ले सिरवान और गुर्जिस्तान होते दरबन्द पहुचा। तोकताईको उसकी सेनाके सामने हारकर भागना पडा। इलखानके प्रतिद्वद्वी मिस्रके सुल्तान-खलीफाके साथ किपचक खानका सबध अच्छा था, यह बतला चुके है। मिस्रका सुल्तान केवल राजा ही नही बल्कि खलीफा (धर्मगुरु) भी था। किपचक खान ने उसे अपनी लडकी दी थी। गाजनने अपनी ओरसे काजी नासिरुद्दीन तब्रीजी और काजी कमालुद्दीन मोसली को दूत बनाकर तोकताईके पास भेजा। मिस्री दूतमडल हिल्लामें आकर गाजनसे बातचीत कर रहा था। इसी समय २१ जनवरी १३०२ ई०को तोकताईके भी दूत तीन सौ सवारोके साथ आ पहुचे।

गाजन किपचक-दूतमंडलसे बहुत अच्छी तरह मिला। तोकताई अपने प्रभावशाली वृद्ध सेनापति नोगाईके झगडेसे निवट चुका था, और अब अर्रान और आजुर्बाइजानको लेना चाहता था। उसका कहना था—पितामह छिङ्गिस्ने यह प्रदेश वातू खानको दे दिया था। लेकिन, गाजन तलवारसे जीते इलाकेको बात-से कैसे लौटा सकता था? उसने धमकी दी——यदि हमारी बात नही मानोगे, तो तुम्हारे विरुद्ध करा-कोरमसे क्रिमियातककी सारी शक्ति तथा दस तुमान (एक लाख) सेना डेरोमे तैयार खडी है। गाजनने यह भी कहा—हुलाकूके समयसे ही यह भूमि हमारी है। भूमि लौटानेकी बात तलवारकी भाषामे ही हो सकती है।

३० जनवरी १३०३ ई०को नववर्षका पर्व आया। राज्यके वजीर, अमीर, गुरजी (जार्जिया) अर्मनी, रोमके राजा एव खुरासान-मिस्र-सिरिया आदिके लोग भी भेंट लेकर आये। तीन दिन तीन रात बडे धूमधाममे महोत्सव मनाया गया। दान-इनाममे इस्लामके सुल्तानने बडी उदारता दिखलाई। इतिहासकार वस्साफ गाजनको इस्लामका सुल्तान कहता है, लेकिन इस्लामका सुल्तान बननेसे पहले गाजनने ईरानमे एक बडा बौद्ध विहार बनवाया था। पर, जब उसने देखा, चीन और मगोलिया यहासे बहुत दूर है, इसलिये वहा सर्वत्र प्रचलित बौद्ध-धर्म इस्लामी ईरान-इराकमें कोई सहायता नही दे सकता, तो वह मुसलमान हो गया।

गाजनके समय रशीदुद्दीन फज्लुल्ला (१२४७–१३१८ ई०) गणित, दर्शन और चिकित्सा-शास्त्रका उच्च कोटिका विद्वान् था। अबकाका वह विश्वासपात्र दरबारी था। गाजनने उसे अपना वजीर बनाया। अबूसईदने थोडे दिनोके लिये उसे हटा दिया था, पीछे उल्जैतूको विरेचनमे जहर देकर मारनेका अपराध लगा, उल्जैतूके पुत्र इब्राहिमने उसे मरवा दिया। रशीदुद्दीन अपने समयका बहुत बडा इतिहास-कार भी है। उसकी पुस्तक "जामे-उत्-तवारीख" एक विशाल और बहुमूल्य इतिहासग्रथ है।

८. उल्जैतू, मुहम्मद खुदाबन्दा, अरगून-पुत्र (१३०४–१७ ई०)

इलखानोने बगदादके खलीफाको खतम किया, लेकिन मिस्रके खलीफाका वह कुछ बिगाड नही सके। बगदादका खलीफा सुन्नियोका धर्मगुरु था, और मिस्रका खलीफा शियोका। उल्जैतूने इस्लाम-प्रेम दिखलानेके लिये अपना नाम मुहम्मद खुदाबन्दा रखा। ईरान अभी शियोका नही हुआ था, लेकिन उल्जैतूने अपनेको शिया दिखलानेके लिये शियोके बारह इमामोके नामवाले सिक्के चलाये। उल्जैतूका अपने प्रतिद्वन्द्वी किपचकखानो तोकताई और उज्बेक (१३३३–४० ई०)से मुकाबिला था। ३१६ ई०में किपचक-राजकुमार बाबा ओगलान भागकर उल्जैतूकी शरणमें आया। उसने उसे सहारा दिया। बाबा तुरत ही अपनी सेना लेकर ख्वारेज्मपर चढ गया, जो उज्बेकखानके राज्यमे था। इसके लिये उज्बेकने दूत भेजा और किस तरह बाबा ओगलान ख्वारेज्मसे मारकर भगाया गया, यह हम पहले कह आये है।

मगोलोके शासनकालमें जिस तरह शरीयतके विद्वानों और सूफी कवियोकी कृतिया अधिक प्रचलित हुई थीं, उसी तरह फारसी गद्य-कथासाहित्यके विकासका भी यही समय था। तुगराई (मृत्यु १३२४ ई०) मशहदी इस समयका बहुत बडा कथाकार था, जिसके "मिरातुल्-मफतूह", "कुजुल् मआनी", "चश्मये फैज" आदि कितने ही कथाग्रन्थोका बहुत मान हुआ।

९ अबूसईद, उल्जैतू-पुत्र (१३१७–३५ ई०)

अबूसईद कम उमरमें ही गद्दीपर बैठा था, इसीलिये शासनका सारा प्रबन्ध उसके सेनापति अमीर चोबानके हाथमे था। चोबानने उज्बेक खानकी सेनाको खदेडकर दरबन्दके पार तेरेक नदीतकके प्रदेशको लूटा था, इसलिये उसका प्रभाव बहुत अधिक हो गया था। उसके नौ पुत्रोमें सबसे बडा अमीर हसन खुरासान और माजदरानका राज्यपाल था, और हसनका बडा पुत्र तालिश अस्पहान पारस-केर-मानका। हसन और तालिशका बापसे झगडा हो गया, जिससे चोबानने उनपर आक्रमण कर दिया। हसन और तालिश दहिस्तानके रास्ते ख्वारेज्म भागे। वहाके राज्यपाल अमीर कुतुलुक तेमूरने उनका स्वागत करते उज्बेकखानके पास भेज दिया। उज्बेकने उनकी बडी खातिर की। चेरकासियोके खिलाफ उज्बेक खानकी ओरसे लडते हुए हसन घायल हो गया। उज्बेकने बडी चिकित्सा कराई, लेकिन वह न बचा। उसका लडका बहुत दिनोतक जीता रहा।

७३५ हि० (१ सितम्बर १३३४–२३ जुलाई १३३५ ई०)मे उज्वेकखानकी सेनाने फिर दश्तेखाजार—कास्पियनके उत्तर-पश्चिमतटके मैदानी प्रदेश—के रास्ते अर्रान और आजुर्वाइजानपर आक्रमण करनेके लिये प्रस्थान किया। अबूसईद भी खबर सुनकर मुकाबिलेके लिये चला, किन्तु करावाग-में ३१ अक्तूबर १३३५ ई० (१० रबी I ७३६ हि०) को इस "दीनदार नेककिर्दार वादशाहके प्राण-पक्षीने शरीरके पिजडेसे उडकर उत्तम स्वर्गको वर बनाया।" उज्वेकखानने अपनी सेनासहित आगे बढ कुरा नदी तकके सारे इलखानी प्रदेशको बरबाद कर दिया। तारीफ यह कि मुसलमान इतिहासकारोके लिये अबूसईदकी तरह उज्वेक खान भी धर्मराज था। दरबारी कवि औहदीने अपने सरक्षक अबूसईदकी तारीफमे अपनी मस्नवी "जामेजम"मे लिखा है—

दो जहा रासिलयं-ईद जदन्द।
-सिक्क बर-नाम बूसईद जदन्द॥
दर्-चमन गुफ्त बुलबुल ओ कुमरी।
मदहि-गुल गुली उलुल-अमरे॥

(दोनो लोकोकी खुशीका पारितोषिक किया, अबू-सईदके नामपर सिक्का चलाया। उपवनमें बुलबुल और कुमरीने इस फूलकी तारीफ की।)

अबूसईदके मरनेपर भारी शोक मनाया गया। मस्जिदोके मीनारोको शोक-प्रकाशक कपडोसे ढाक दिया गया था।

अबूसईदके वाद हुलाकू-वशका पतन बहुत जल्दी-जल्दी होने लगा और ग्यारह वर्षोके भीतर ६ खान गद्दीपर बैठे।

अबूसईदके समय "तारीखे गुजीदा" नामक इतिहासके बहुत सुदर ग्रथका लेखक हम्दुल्ला मुस्तौफी (मृत्यु १३४९ ई०) हुआ था। मुस्तौफीने अपने ग्रथको प्रसिद्ध इतिहासकार रशीदुद्दीनके बेटे गयासुद्दीनको समर्पित किया था। इस ग्रन्थके उद्धरण फज्लुल्ला-पुत्र अब्दुल्ला शीराजी (मृत्यु १३२८ई०) ने अपने ग्रथ "तारीखे वस्साफ" में दिये है। दिल्लीके फारसी कवि अमीर खुसरो (१२५३–१३२५ ई०) का यह समकालीन था।

२ (२ हुलाकू-वंशवृक्ष)
(१२५६—१३४५ ई०)

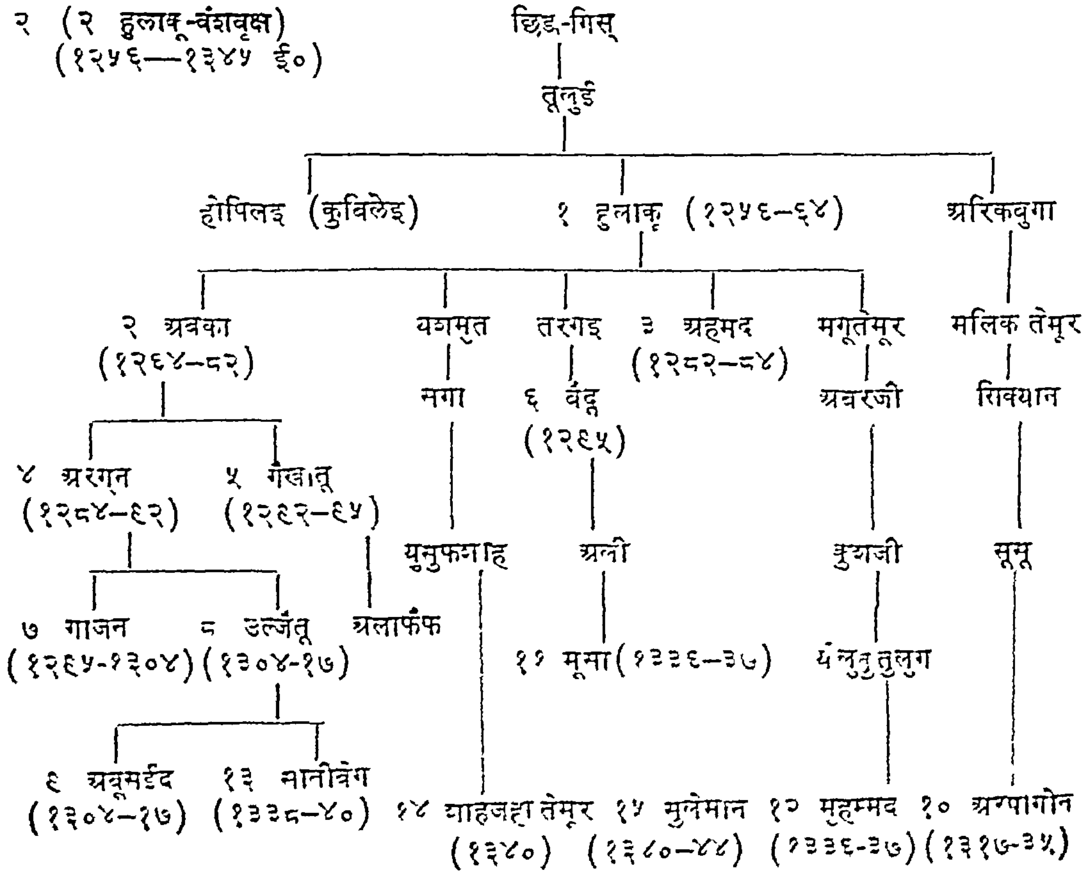

अबूसईदके बाद अब छिङगिसी राजकुमार पूरी तौरसे मुसलमान थे। मंगोल अब संस्कृतिहीन नही थे, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता, न्यायप्रियता आदि गुणोके कारण उनकी संस्कृति उच्च स्तरकी थी; किन्तु इस्लामके समुद्रमे उनका कोई बस नही चला। दरबारियोने जब शक्ति हथिया ली, तो गुडिया खानको कभी अपने शक्तिशाली वजीरोको प्रसन्न करनेके लिये और कभी प्रजाके प्रभावशाली वर्गको अपनी ओर करनेके लिये इस्लाम लाना जरूरी था। अन्तमें मंगोल-वंशकी समाप्ति होकर इसकी जगह पाच छोटे-छोटे राजवंश कायम हुये, जिनका अन्त तैमूरलंगने अपने दिग्विजयमें किया। यह पाचो खानदान थे—(१) जलायर, (२) मुजफ्फरी, (३) सर्वदारी, (४) बनीकर्त्त और (५) चोबानी। जलायर सुल्तान ओवेसके बाद सुल्तान अहमद हुआ, जिसे १३८० ई०मे तैमूरने खतम किया।

हजारा—मंगोलोके शासनकालमे जो मंगोल इधर आकर रह गये थे, उनमेंसे कुछ तो साधारण तुर्क जन-समूहमे विलीन हो गये, किन्तु कुछ घुमन्तू हिन्दूकुश (हिन्दूकोह)की उपत्यकाओमे जाकर कृषक और पशु-पालका जीवन बिताने लगे। इनके पचीस कबीले थे, जो आजकल हजाराके नामसे अफगानी-ताजिको और वक्षु-उपत्यकाके दक्षिणवाले तुर्कोंके बीचमे रहते हैं। इनकी भाषा तुर्की नही, एक तरहकी फारसी है, लेकिन बाबरके समयतक यह मंगोल-भाषा बोलते थे। अबुलफजल (अकबरके प्रधान-मंत्री)ने इन्हें मङ्गू खानका वंशज कहा है, और यह भी उल्लेख किया है, कि इनकी स्त्रिया पुरुषो जैसी ही लडनेमें बहादुर होती है। अफगानिस्तान और सोवियत मध्य-एसियाके सुन्नी मुसलमानोके महासमुद्रके बीचमें अपनेको शिया बनाये रखना हजारोकी विशेषता है। विद्वानोने इनकी भाषामें कितने ही मंगोल शब्द भी ढूढ निकाले है।

साहित्य—इलखानियोके समयमें फारसी गद्य-पद्य-साहित्यकी रचनाये बढी, यद्यपि इस साहित्यमे निराशावादकी ही प्रधानता है। इस कालकी कविता तीन श्रेणियोमे बाटी जा सकती है—सूफी रहस्यवाद, गजल (प्रेम-पद्य), कसीदा (स्तुतिप्रशंसा) और उपदेश।

इनमे सूफी कवि थे—फरीदुद्दीन अत्तार (१११९–१२२९ई०)–जिसे प्रथम मंगोल आक्रमणमे एक मंगोल सैनिकने मार डाला, सादी, औहदी, इराकी और मगरबी।

गजलके कवि थे—मौलाना रूमी, सादी और हाफिज।

कसीदाके कवि—कमाल इस्माईल और सुलेमान सावजी।

उपदेशात्मक रचना करनेवालोमें निपुण थे—सादी और इब्न-यमीन।

अध्याय ३

तेमूर-वंश

(१३७०–१५०० ई०)

१ तेमूरलंग (१३७०–१४०५ ई०)

तेमूरके पिता तुरगाई बरलसको अमीर कजगनने केश (शहरसब्ज) और नख्शेव (करशी) के इलाके दिये थे। अपने स्वरचित जीवनचरित्र "तुजुकाते-तेमूर"[1] मे तेमूरने लिखा है—"बारह वर्षकी उमरमे ही मुझे अपनी असाधारण बुद्धि और दिमागी शक्तिका पता लगने लगा, और मैने अपनेको अध्ययन और आत्मसयमका अभ्यासी बनाया। अठारह सालकी उमरमें मै खेलो और बहादुरीके विनोद-कार्योमे अपनी चतुराईके लिये कम अभिमान नहीं रखता था। मै अपना समय कुरान पढने, शतरंज खेलने तथा बहादुरोके अनुरूप दूसरे खेलोमे बिताता था।" १३५६ ई० में तेमूरके पिताने उसे अमीर कजगनके पास दूत बनाकर भेजा। कजगन उससे इतना प्रसन्न हुआ, कि उसने अपने लडके सेलाखानकी बेटी ओलजे तुरकान खातूनसे उसका व्याह कर दिया और "मिंगबाशी" (सहस्रपति) का पद दे हुसेन कर्त (खुरासान) के विरुद्ध अभियानमे जाते समय तेमूरको अपने साथ ले गया। अभियान सफल रहा, किंतु इसी समय कजगनकी हत्या कर दी गई और थोडे ही समय बाद तेमूरका पिता भी मर गया। अमीर कजगनके पौत्र अमीर हुसेनके साथ तेमूरकी मित्रता हो गई। अभी वह अमीर कजगनकी हत्याका बदला लेनेकी सोच रहे थे, कि मुगोलिस्तानका खान तुगलक (ध्वजाधारी) अन्तर्वेदपर चढ दौडा।

हम कह आये है, कैसे अन्तर्वेदके चगताई-राज्यकी डावाडोल स्थितिको देखकर जाते (सीमाती) मुगोलिस्तानके खान तुगलक (ध्वजाधारी) तेमूर[2] ने ७६१ हि० (२३ XI १३५६—१३ X १३६० ई०) मे काशगरके रास्ते आकर आक्रमण किया। खोजन्द नदी पार कर लेनेपर अमीर बायजीद जलायर उससे आ मिला। दोनो शहरसब्ज (केश) की ओर बढे। तेमूरलंगके चचा हाजी बिरलसने पहले मुकाबिला करनेका ख्याल किया, लेकिन फिर उसे व्यर्थ समझकर खुरासानकी ओर भागना ही अच्छा समझा। चचाकी सलाहसे तेमूरलंग किस तरह लौटकर समरकन्दमें प्रधान बना, इसके बारेमे हमने अन्यत्र बतलाया है। तेमूर और उसके वंशज अपनेको छिङ-गिस्-वंशी सिद्ध करनेकी बहुत कोशिश करते है। भारतमें तो उसके वंशजोने अपने खानदानका नाम ही मुगल रख दिया। लेकिन, वस्तुत वह छिङगिस्-वंशज नही थे। कुछ इतिहासकारोने उन्हें चगताई-सेनापति कराचार नोयनके वंशका बतलाकर मगोल सिद्ध करनेकी कोशिश की है, लेकिन वस्तुत बिरलस तुर्क थे। हा, वह उन तुर्कोंमेंसे थे, जो कि मंगोलोके मध्य-एसियाकी ओर बढनेके समय उनकी सेनामें बहुत भारी संख्यामे शामिल हो गये। वह मंगोलोके विश्वासपात्र सरदारोंमेंसे थे, लेकिन जब मंगोल-शक्ति निर्बल हो गई, तो वह उनके तुर्क-प्रतिद्वंद्वी बन गये। अमीर कजगनके बाद इनका जोर अन्तर्वेद और तुर्किस्तान (मध्य-सिर-उपत्यका) में बढा। मंगोल-राज्यकी बंदर-बाटके समय तेमूरका पिता हाजी तुगाई बिरलस तुर्कोंकी कोरकान (गूरगान) शाखाका मुखिया और केश (शहरसब्ज) इलाकेका स्वामी बन गया, जिसके मरनेपर उसका उत्तराधिकारी उनका भाई हाजी बिरलस हुआ—

---

१ "तुजुकाते-तेमूर" (तेमूरके नियम) तुर्कीमे लुप्त तथा फारसी अनुवादमे ही प्राप्य है।

२ जन्म ७३० हि० (२५ X १३२६—१५ IX १३३० ई०), गद्दी ७४८ हि० (१३ IV १३४७—३ III १३४८ ई०), मुसलमान ७५४ हि० और मृत्यु ७६४ हि० (२१ X १३६२—११ IX १३६३ ई०)

हाजी बिरलसको किन्ही-किन्ही इतिहासकारोने तेमूरलंगका भाई भी लिखा है। तेमूरलंगके बापका स्थान हाजी बिरलसने लिया, इसमे कोई मतभेद नही है। यही केश नगरमे ५ शाबान ७३६ हि० (१९ मार्च १३३६ ई०)को तेमूर पैदा हुआ। बचपनसे ही उसमे नेतृत्वके लक्षण दिखलाई पडने लगे। लडकोकी पचायत और शिकारमे निपुणता दिखलाकर साबित कर रहा था, कि वह एक कुशल शासक और सैनिक होगा। तुगलक तेमूरने तेमूरलंगके आनेपर उससे प्रभावित हो उसे केशका हाकिम बना दिया। जब खान काशगर लौट गया, तो अमीरोमें झगडा बढ चला। अगले साल ७६२ हि० (११ XI १३६०--२ X १३६१ ई०)मे खान फिर अन्तर्वेद आया और अमीरो-को भगाकर उसने समरकन्दपर फिर अधिकार कर वहाका शासन अपने पुत्र इलियास खोजा ओग-लानके हाथमें दिया और तेमूरलंगको उसका मुख्य-पारिषद् (अतालीक) नियुक्त किया। लेकिन तेमूरकी दूसरे अमीरोसे नही पटी और वह अमीर कजगनके पौत्र तथा अपने साले अमीर हुसेनकी खोजमें भाग निकला।

समरकन्दसे भागनेके बाद तेमूर कराकुमके उसी रेगिस्तानकी ओर गया, जो कि उत्तराभिमुख वक्षुसे कास्पियन समुद्रतक फैला हुआ है। यहा उसे बहुत तकलीफ उठानी पडी। निर्जन मरुभूमिमे खानेका भी ठिकाना नही था। तेमूर अपने तुजुकातमे लिखता है—मैं और मेरी पति-परायणा पत्नी ओल्जाई अमीर हुसेनसे मरुभूमिमें मिले और फिर महीने भर रात-दिन रेगिस्तानमें भटकते रहे। कितनी ही बार हमें अन्न और जल भी मुयस्सर नही हुआ। अन्तमे एक तुर्कमानने हमे पकडकर बन्दी बना लिया और ओल्जाईको एक ऐसी पशुशालामे ले जाकर बन्द कर दिया, जो पिस्सुओ और खट-मलोसे भरी थी। तेमूर किसी तरह साले और बीवीके साथ वहासे भागकर केश पहुचा। थोडे ही दिनो-मे उसके पुराने साथी उसके पास जमा हो गये, जिनके साथ वक्षु पार हो वह दक्षिणके इलाके (पुराने बाह्लीक)मे चक्कर काटता रहा। अन्तमे लूट-पाट करनेके लिये सीस्तानके ऊपर आक्रमण किया और बलूचियोमे एक किला छीन लिया। लेकिन जल्दी ही लोगोने उसके ऊपर आक्रमण किया, जिसमें उसके पैरमे चोट लग गई और वह जिन्दगीभरके लिये लग (लगडा) हो गया। मगोलो और तुर्कों-में तेमूर नाम बहुत अधिक पाये जाते है, जिनसे अलग करनेके लिये वह इतिहासमे तेमूर-लग (तेमूर लगडा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। तेमूरके साले हुसेनने इसी समय बलखपर अधिकार कर लिया। तेमूर भी वही चला गया। धीरे-धीरे तेमूरके पद्रह सौ अनुयायी हो गये। ७६५ हि० (१० अक्तूबर १३६३--३० अगस्त १३६४ ई०) में इलियास खोजाकी सेनाके साथ उसकी प्रथम भिडत वक्षुके बाये तटपर कुदुजके नजदीक हुई। यद्यपि इलियासकी सेना पाचगुनी थी, लेकिन तेमूरने उसपर पूर्णतया विजय प्राप्त करके सेनाको नदी पार भगा दिया। इसी समय पिताके मरनेकी खबर सुनकर इलियास बापकी गद्दी सभालने अलमालिककी ओर दौडा, और तेमूर बहुत आसानी-से जेतो (मगोलिस्तानियो)को अन्तर्वेदसे निकालनेमें सफल हुआ। अब तेमूर अपनी जन्मभूमि-का स्वामी था, लेकिन प्रतिद्वद्वियो और बाधाओकी कमी नही थी, इसलिये उसने प्रभावशाली सरदारो की एक कूरिल्ताई बुलाई, जिसमे रिक्त सिंहासनपर काबिलशाहके बैठानेका निर्णय हुआ। तेमूर-वशने अबूसईदके समय (१४५१-५२ ई०)तक मगोल खानोको समरकन्दकी गद्दीपर बनाये रक्खा, जो यही बतलाता है, कि अन्तर्वेदके लोगोमे चिङ्गिसी राजवशके साथ एक विशेष तरहका लगाव स्थापित हो गया था। खानकी जगह सभालनेपर तेमूरको भारी विरोधका सामना करना पडता।

जाडा बीतते ही इलियास खोजा एक बडी सेना लेकर फिर अन्तर्वेदकी ओर आया। तेमूरका शिविर इस समय चिनास और ताशकन्दके बीचमें था। हुसेनने सिर-दरियाको पार कर लिया। लडाईमे दो हजार आदमियोको मरवाकर हुसेन अपनी राजधानी साली-सराय (नदीके परले तट-पर) चला गया और तेमूर करशीकी ओर भागा। जेतोने फिर समरकन्दको ले लिया। इसी समय तेमूरकी मददके लिये जेतोके घोडोमें महामारी फैल गई, जिसमे बहुत सारे घोडे मर गये और उन्हें अपना सामान पीठपर ढोनेके लिये मजबूर होना पडा। वह अन्तर्वेद छोडकर चले गये। तेमूरके लिये यह बहुत अच्छा अवसर मिला था, किन्तु इसी समय हुसेनसे उसका बिगाड हो गया, जिनके

कारण उससे पूरा फायदा नहीं उठा सका। हुसेनने पहले धोखेसे तेमूरको खतम करवाना चाहा, जब उसमें सफलता नहीं मिली, तो उसके खिलाफ अमीर मूसाको सेना देकर भेजा। मूसा बलखसे वक्षु पार हो उत्तरकी ओर बढ़ा, लेकिन तेमूरने उसे हरा दिया। फिर हुसेन स्वयं सालीसरायसे एक भारी सेना लेकर चला। तेमूर करशी होते बुखारा लौटा फिर अन्तर्वेद छोड़ ख्वारेज्मकी ओर भाग गया। हुसेन अब सारे अन्तर्वेदका स्वामी था। तेमूरने जाड़े भर तैयारी की। वसंत शुरू होते ही एक छोटी किन्तु बहुत ही सुशिक्षित और बहादुर सेनाके साथ आक्रमण कर उसने ताशकन्द ले लिया, फिर समरकन्द और करशीसे अपने प्रतिद्वंद्वीकी सेनाको चीरते वह जलायर अमीर कैखुसरोसे जा मिला। कैखुसरोने अपनी लड़कीका तेमूरके पुत्र जहांगीरसे ब्याह कर भारी सेनासे उसकी मदद की। तेमूरने पीछे मुड़कर हुसेनको वक्षुपार मार भगा दिया। जेतोके सामन्त अमीर जलायरसे तेमूरका मेल हुसेनके लिये बहुत भयंकर था और अन्तमें उसने बहनोईसे संधि कर ली। हुसेनको तेमूरने उसके विद्रोही सामन्त बदख्शाके हाकिमको दबानेमें सहायता भी दी। लेकिन, जब तेमूरके ऊपर जेतोंने प्रहार किया, तो हुसेनने विश्वासघात किया, और अन्तमें हारकर तेमूरके हाथमें बन्दी हुआ। तेमूर उसे मारना नहीं चाहता था, लेकिन उसके अमीरोंने बहुत जोर दिया और अन्तमें ७७१ हि० (५ VIII १३६९—२६ VI १३७० ई०)में उसे अपने बहनोईको मरवाना पड़ा।

अब तेमूरका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं रह गया था। इसी समय १३६९ ई०में बलखमें उसने एक बड़ी कुरिल्ताई बुलाई, जिसमें चगताई-राज्यके सभी अमीर, तेमूरके गाढ़े दिनों और लड़ाईके साथी तथा उसके पुराने प्रतिद्वंद्वी भी शामिल हुए। सबने तेमूरको अपना शासक स्वीकार किया और मंगोलों तथा उनके पूर्वजोंके समयसे चली आई प्रथाके अनुसार ८ अप्रैल १३६९ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) को तेमूरलंगको एक सफेद नम्देपर बिठाकर उसे चारों ओरसे पकड़कर उठाया, और धर्मगुरु सैयद बरकाद्वारा अल्लाहकी दुआ पढ़े जानेके बाद अमीर घोषित किया। वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशपर अपना दृढ़ शासन स्थापित कर तेमूरने समरकन्दको अपनी राजधानी बनाया।

७८२ हि० (७ IV १३८०—२६ II १३८१ ई०) में तेमूरने अपने पुत्र मीराशाहको खुरासानपर अधिकार करनेके लिये पहले भेज फिर स्वयं भी वहां पहुंचा। इस समय ईरान कई राजवंशोंमें बंटा हुआ था। उनमेंसे सर्वेदारवंश था, जिसके—(१) अब्दुर्रजाक (एक वर्ष दो मास), (२) मसऊद (७ वर्ष), (३) शम्सुद्दीन, (४) लोगान तेमूर, (५) कल्लाव हैदर, (६) यहिया करवी, (७) हसन दम्गानी, (८) अली मोवैयद अब्दुर्रजाक—आठ शासकोंने उत्तरी ईरानपर पैंतीस साल शासन किया। अन्तिम शासक अब्दुर्रजाकने तेमूरकी अधीनता स्वीकार कर ली। खुरासानमें हिरातको राजधानी बना कर्तवंश शासन कर रहा था। तेमूर इसी वंशके खिलाफ चढ़ा। राजधानीके पास भारी लड़ाई हुई। कितने ही नगर कावूशान, तूस, नेशापोर, सब्जवार ध्वस्त होकर ईंटों और मिट्टीके ढेर बन गये। खुरासानके बाद तेमूरने सीस्तान, बलोचिस्तान और अफगानिस्तानपर आक्रमण किया। इस प्रकार १३८६ ई० (७८८ हि०)में वह ईरानपर आक्रमण करनेके लिये स्वतंत्र था। असहानका सारा इलाका और फारस मुज्जफरी-वंशके हाथमें था। इराक और आजुरबाइजानके इलाके अब भी इल्खानी अमीर चोबानके वंशके हाथमें थे। बगदादने बिना प्रहारके ही अधीनता स्वीकार कर ली, इस प्रकार खिलाफतकी राजधानी तेमूरके हाथमें आ गई।

ईरानपर विजय प्राप्त करनेके बाद तेमूर समरकन्द लौटा। समरकन्दका भाग्य जाग उठा। तेमूरने अपने दरबारको बड़े ही दबदबेके साथ सजाया। समरकन्दमें एकसे एक सुंदर महल, मस्जिदें और मदरसे बनवाये, जिनके बनानेके लिये शाम, ईरान और भारततकके वास्तु-शास्त्री और शिल्पी बुलाये गये। लाखोंकी संख्यामें देश-विदेशोंके दास-दासियोंमेंसे काफी समरकन्दमें लाये गये, जिनके कारण समरकन्दके शिल्प और उद्योगोंको आगे बढ़नेमें बड़ी सहायता मिली।

तोख्तामिशपर आक्रमण—इसी वक्त पहलेके आश्रय-प्राप्त किपचक खान तोख्तामिशसे तेमूरका झगड़ा हो गया और उसे अपने उत्तरी सरहदी शक्तिको तोड़नेकी आवश्यकता पड़ी। तोख्तामिश विरुद्ध-स्थिति सम्हाल सकता न होनेपर १३८५ ई०में कावेशसके रास्ते तब्रेजपर जा पड़ा, और इस्लामियोंके

समयसे चले आते इस समृद्ध नगरको लूटकर बर्बाद कर दिया। इसका बदला लेनेके लिये १३८७ ई० में तेमूरने काकेशसके रास्ते दरबन्द पहुच तोकतामिशको बुरी तरह हराया। १३८८ ई० (७९० हि०)मे तोकतामिशने सिरदरियाकी ओरसे भारी आक्रमण किया। तेमूरको उसके लिये ७९२ हि० (२० XII १३८९—१० XI १३९० ई०)मे प्रथम महाभियान करना पडा। वह सिर-दरियाके पार हो उत्तरमे बढने-बढते ६ अप्रैलको वोल्गारोकी भूमिमे अवस्थित कचुकताग (लघु-पर्वत) मे पहुचा। फिर उलुगताग (महापर्वत)पर चढकर उसने आसपासकी भूमिका अवलोकन किया। यहीपर उसने २८ अप्रैल १३९१ ई०को एक शिलालेख लिखकर स्थापित किया।

आगे तोकतामिशको तेमूरने कैसे हराया, इसका वर्णन हम पहिले कर चुके है *।

उस करारी हारके बाद भी तेमूरके हटते ही तोकतामिश फिर सबल हो उठा, जिसके लिये तेमूरको २५ फर्वरी १३९३ ई०मे दूसरा महाभियान काकेशसके रास्ते कास्पियनसे पश्चिम-पश्चिम करना पडा। १३ अप्रैलको वह तेराक नदीपर पहुच गया। तोकतामिशको हारकर पीछे भागना पडा। तेमूर उसका पीछा करके आगे वोल्गाके किनारे-किनारे सराय पहुचा। नगरवासियोको घर छोड बाहर निकल जानेका हुकुम दे उसे खूब लुटवाया। फिर मास्कोकी ओर जाना चाहता था, जिसके लिये भगवान्की मा (मरियम)का बडा जुलूस निकाला गया, बडी पूजा-प्रार्थना की गई, और भगवान्की माने मास्कोको बचा लिया। तेमूरने क्रिमियाके बडे नगर अजाकको भी लूटा। सोना, चादी और रतन लदवाये तथा सुदर दास-दासियोके समूहको लिये वह दरबन्दके रास्ते लौटा। तेमूरकी विजय-यात्राओमे छिङगिस्की विजय-यात्राने प्रेरणा दी थी, लेकिन जहा छिङगिस् हर एक विजयपर अपना दृढ शासन स्थापित करता था, वहा तेमूरके बहुतसे अभियान केवल लूटमारके लिये होते थे।

७९९ हि० (५ X १३९६–२६ VIII १३९७ ई०)में पाच सालकी अनुपस्थितिके बाद तेमूर राजधानी समरकन्द लौटा। वक्षु-तटपर अपनी खातूनो, पुत्रियो-पौत्रियो तथा राज-कुमारोके साथ पहुचनेपर लोगोने उसका अपार स्वागत किया। खुशीमें उसने सोना और जवाहर लुटाये। तेमूर साठ वर्षका हो चुका था। इसी समय उसने तौकेल खानमसे शादी करके उसे "दिलकुशा" प्रासाद प्रदान किया। अभी भी उसकी लूटसे तृप्ति नही हुई थी, और अब उसकी नजर सिधु और गगाकी ओर थी।

भारतपर आक्रमण—८०० हि० (२४ IX १३९७—१५ VIII १३९८ ई०)को उसने भारतके लिये प्रस्थान किया। उसका पौत्र पीर मुहम्मद पहले ही आकर मुल्तानका मुहासिरा किये हुये था। तेमूर बलख और हिन्दूकोहके रास्ते काबुल पहुचा। ८०१ हि०के पहले दिन (१३ सितम्बर १३९८ शुक्र) उसने सिध नदीको पार किया। रास्तेमें नगरोको लूटता और लोगोकी लाशो-से सडकोको पाटता जब सतलजके किनारे पहुचा, तो पीर मुहम्मद भी उससे आ मिला। फिर भारतकी राजधानी दिल्लीकी बारी आई। बदियोके मारे जल्दी चलनेमे रुकावट हो रही थी, इसलिये उनसे छुट्टी पानेके लिये उसने एक लाख बदियोको कतल करवा डाला। यह इतना अमानुषिक कार्य था, जिसे करनेकी हिम्मत कुछ जल्लाद नही कर सकते थे, इसलिये सारी सेनाको हुकुम हुआ, कि हर एक आदमी इस काममे सहायता करे। इतिहासकार नासिरुद्दीन इसका बडा करुणापूर्ण वर्णन करता है। उसके लिये अपने पद्रह हिन्दी दासोका मारना बहुत मुश्किल हो गया था। जो जरा भी ढिलाई करता, उसे पीटा जाता। अपने व्यापार और राजसी वैभवके लिये प्रसिद्ध दिल्लीने अपना खजाना तेमूरके लिये खोल दिया, लेकिन तेमूरने दया नही दिखलाई। वही हालत मथुराकी हुई—वहाके मदिर ध्वस्त कर दिये गये और मूर्तिया तोड दी गई। रास्तेमे हर एक आदमीको मारते और लूटनेसे बची हर एक चीजको नष्ट करते तेमूर हरिद्वारकी ओर पहाडके भीतरतक घुस गया। उसके इतिहासकारोने गढवालके पर्वतवासियोके भीषण प्रतिरोधका वर्णन किया है, लेकिन तब भी वहाकी राजधानी तेमूरके हाथसे बच न सकी। कुछ लोगोका मत है, कि तेमूर देहरादून-

* विशेषके लिये देखो पृष्ठ ५६-६२

की तरफ गया था, लेकिन उस समयके अलकनन्दा और भागीरथीके प्रदेशोका केन्द्र दूनकी उपत्यका नही, बल्कि श्रीनगरके आसपास कहीपर था। वहासे उसे लूटमें बहुतसा धन मिला था।

यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि तेमूरकी भारतपर चढाई केवल लूट-पाटके लिये हुई थी। भारतसे अपार सम्पत्ति और लाखो दास-दासी लेकर तेमूर उसी साल (१३९८ ई०) समरकन्द लौट गया।

सिरिया-विजय करते समय वहाके शासक मिस्रके ममलूकोको हुलाकूकी तरह तेमूर भी नही दबा पाया। दुबारा हम्ला करके वह उनके हाथमे दमिश्कको ही छीन सका।

सिरिया-विजयके बाद ८०५ हि० (१४०३ ई०)के वसतमें क्षुद्र-एसियाकी विजयके लिये तेमूर सिवास और करासहर होते यनकुरु (अगोरा) के मैदानमे पहुच सुल्तान बायजीदसे भिडा। उसमानअली तुर्कसेना तेमूरके सामने पूरी तौरसे पराजित हुई। सुल्तान बायजीद अपने रनिवासके साथ तेमूरका बदी बना। अब सारे क्षुद्र-एसिया (भूमध्य-सागरसे काला-सागरके तटतक) का स्वामी तेमूर था। यहासे लौटकर जब तेमूर समरकन्द गया था, उसी समय स्पेनके राजा तृतीय हेनरीका दूत दोन रूय गोनजा-

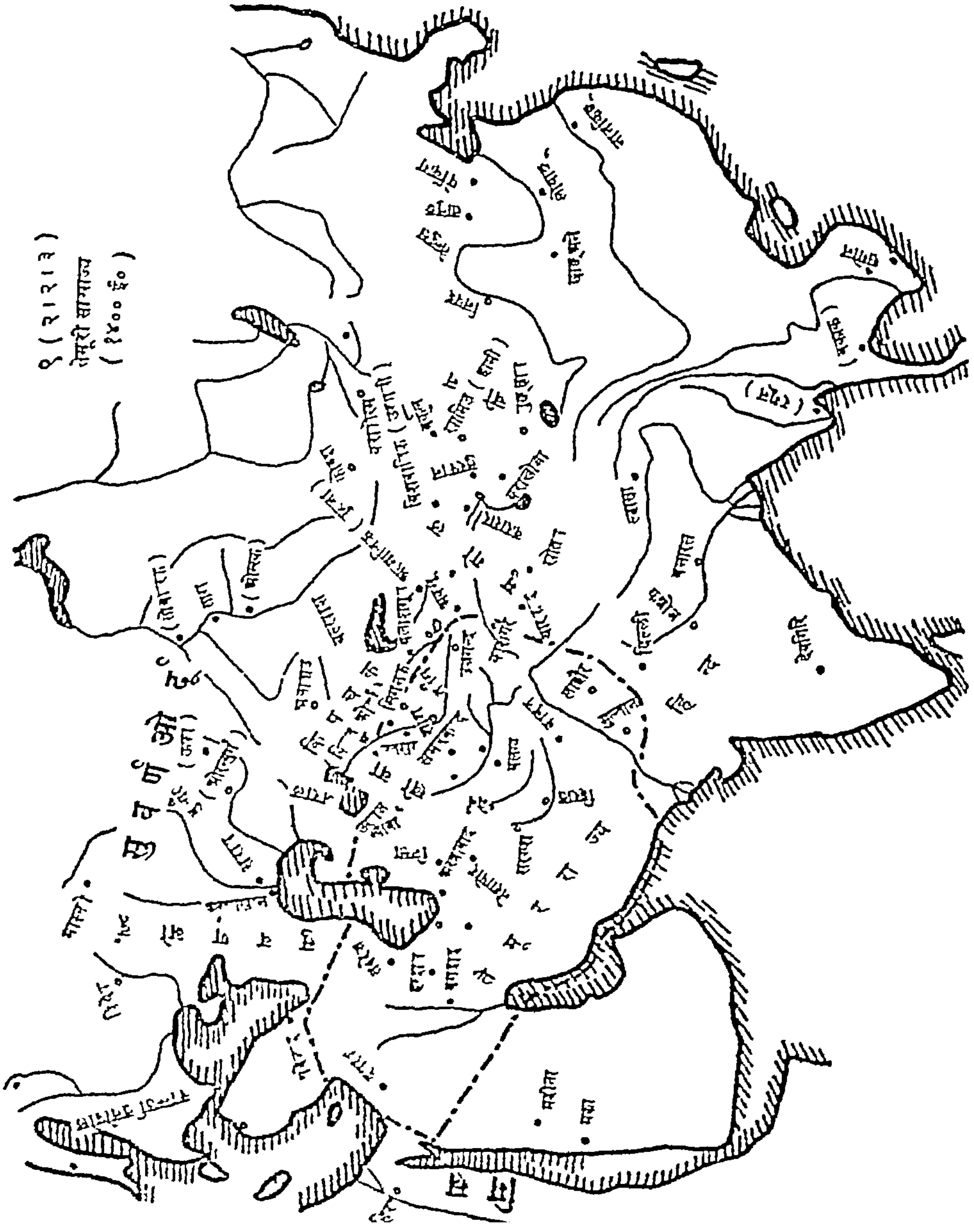

१ (२।२।३) तैमूरी साम्राज्य (१४०० ई०)

लेज दे क्लावियो समरकन्दमे उसके दरवारमे पहुचा। क्लावियोने अपनी यात्राका वहुत सुन्दर वर्णन किया है। तेमूरका दरवार उस समय एक वडे ही विशाल और कीमती तम्वूके भीतर लगा हुआ था। उसकी रानिया विना किसी परदेके तेमूरके पास तख्तपर वैठी थी। यही नही, तेमूरकी खातूनो (रानियो)ने अपनी मद्य-गोष्ठीमें क्लावियोको अलग निमन्त्रित करके सम्मानित किया था। इससे स्पष्ट है, कि तेमूरके समयतक अभी मध्य-एसियाके तुर्क राजपरिवारमे परदा-प्रथा जारी नही हुई थी, लेकिन उसके वशजोने भारतमे पहुचकर जल्दी ही उसे अपना लिया।

जनवरी १४०५ ई० (८०७ हि०—१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)मे फिर तेमूर अपनेको विजय-यात्रासे रोक नही सका। पश्चिममे उसके घोडोकी टाप रूसकी भूमितक पहुच चुकी थी, लेकिन जवतक पूरवमे चीन-विजय न कर ले, तवतक वह छिड्गिस्के समकक्ष कैसे हो सकता था? इसीलिये जाडेमे ही उसने अभियान कर दिया। लेकिन, फरवरीमे सिरतटपर ओतरारमें पहुचकर वीमार हो १७ फरवरीको वही मर गया। चरित्रलेखक अहमद अरवशाह-पुत्रने जाडेके मुहसे तेमूरके वारेमे कहलवाया है—

"ओ क्रूर अत्याचारी, अपनी गतिको रोक! कवतक तू दुखी दुनियाको अपनी तलवार और आगसे नष्ट करता रहेगा? अगर तू शैतान है, तो यह भी समझ ले, कि मै भी एक शैतान हू। हम दोनो वूढे है, हम दोनोंके सामने एक ही लक्ष्य है, और वह है दासोको अपने जूए के नीचे लाना। अगर तू मानव-जातिका उच्छेद करना जारी रक्खेगा और दुनियाकी निर्जन और ठडी वनाएगा, तो समझ ले मेरी सास उससे भी कही अधिक ठडी और ध्वसकारी है। तू अभिमान करता है अपनी उस असख्य सेनापर, जो कि तेरा हुकुम वजा लानेके लिये दौड पडती है और जिसके द्वारा तू सभी चीजोको नष्ट-भ्रष्ट कर सकता है, तो मेरे इन जाडेके दिनोको भी याद कर, जो कि सर्वशक्तिमान्के श्वासोकी मददसे हर चीजके नष्ट करनेकी क्षमता रखते है। मै किसी वातमे तुझसे कम नही। जरा देर ठहर! वदला लेनेके लिये मै अभी पहुच रही हू और तेरी सारी आग और क्रोध मेरी वर्फीली आधी द्वारा लाई ठडी मौतसे तुझे नही वचा सकते।"

तेमूर अपने वारेमे "मेन् तिङ्री-कुली तेमूर" (मै भगवान्का दास तेमूर) लिखता था, लेकिन जिस भगवान्का दास तेमूर था, वह अवश्य ही निष्ठुर रहा होगा। छिड्गिस् और उसके उत्तराधिकारियोने भी तलवार और आगसे दुनियाको जीता था, लेकिन अनावश्यक हत्याके वह इतने पक्षपाती नही थे, जितना कि खूनका प्यासा तेमूर। ईरानी शियोको दासके तौरपर वेंचना, एक वडी समस्या थी, क्योकि मुसलमानको दास नही वनाया जा सकता। इस समस्याको मुल्ला शमशुद्दीनके इस फतवाने हल कर दिया—शिया मुसलमान नही है, वल्कि काफिरोसे भी वदतर है।

यदि तेमूर चाहता, तो अपनेको खान (वादशाह) क्या खलीफा घोषित कर सकता था। तेमूरकी सेना उसके कौशल और सार्वत्रिक विजयोके कारण उसपर इतना विश्वास रखती थी, और उसके हुकुमकी इतनी पावन्द थी, कि अपार सम्पत्तिके लूटनेमें लगी होनेपर भी तेमूरके ना करनेपर अपने हाथोको तुरत रोक देती थी। ऐसी अधभक्त सेनाके वलपर पैगम्वर वनना उसके लिये विल्कुल आसान था। कवियोके प्रति तेमूरकी विशेष सहानुभूति नही थी, लेकिन वह दरवारमे कवियो, गायको, सूफियोका सत्कार करता था। नकशवन्दी दरवेशोके सम्प्रदायका सस्थापक ख्वाजा वहीउद्दीन [मृत्यु ७९१ हि० (३१ XII १३८८—२१ XI १३८९ ई०)], ख्वाजा अहरार, ईशान मखद्दूम कासानी और सूफी अल्लामदारपर उसकी वडी आस्था थी। कवियो और सूफियोने उसके खूखार सैनिकोके मनको नरम करनेमे शायद ही कुछ काम किया हो।

वोल्फके अनुसार तेमूर "लम्वे-चौडे कदका आदमी था। उसका सिर असाधारण तौरसे वडा तथा ललाट चौडा था। रग उसका वहुत ही सुन्दर लाली लिये हुये गोरा था। उसके लम्वे वाल जन्मसे ही (ईरानी) पुराण-प्रसिद्ध जालकी तरह सफेद (व्लौंड) थे। अपने कानो में वह दो वहुमूल्य हीरे पहना करता था। उसके चेहरेपर हमेशा गभीरता और एक तरह की उदासी छाई रहती थी। उसे

हास-परिहास और चुहल बिल्कुल पसन्द नही थी, खास करके झूठका तो वह बहुत भारी शत्रु था। झूठकी जगह वह अपनी रायके विरुद्ध सचको ज्यादा पसन्द करता था। तेमूर जिस बात या लक्ष्यको पकड लेता या आज्ञा दे देता, उसे फिर उलटता नही था। अतीतके लिये उसे कभी अफसोस नही हुआ और न अनागतकी आशामे उसने कभी आनन्द मनाया। उसे कवि और विदूषक पसन्द नही थे। उसे प्रिय थे चिकित्सक, ज्योतिषी, धर्मशास्त्री। वह अक्सर अपने सामने शास्त्रार्थ कराया करता। सबसे ज्यादा भक्ति उसकी दरवेशो (साधु-सतो)के ऊपर थी, जिनके आशीर्वादसे वह अपनी विजयोकी सफलता समझता था। लिखना-पढना वह जानता था और जीवन-घटनाओपर उसने अपनी लेखनी चलाई भी है। उसकी स्मृति बहुत तेज थी। वह अरबी नही जानता था, लेकिन तुर्की, मगोल और फारसी भाषाये अच्छी तरह जानता था। वह कट्टर मुसलमान नही था, क्योकि वह छिड्गिस्के यासा (तुरा) को कुरानके ऊपर मानता था। उसने अपने कानून (तुजुक)को यासासे लेकर बनाया। बाबर और अकबरने भी अपने पुरखा तेमूरका ही अनुकरण किया। प्रसिद्ध ही है, कि भारतीय मुगल राजकुमारोका खतना नही होता था। तेमूर यात्रियो और दरवेशोसे दूसरे मुल्कोके बारेमे जहा ज्ञान प्राप्त करनेकी कोशिश करता था, वहा इस कामके लिये उसने खुद भी अपने आदमी दूसरे देशोमें भेज रखे थे।

तेमूरके उत्तराधिकारी—और बातोमें छिड्गिस्का अनुकरण करते भी तेमूरने अपने राज्य-को नही बाटा। उसने अपने जीवनमें ही अपने पौत्र (जहागीर-पुत्र) पीर मुहम्मदको अपना उत्तराधिकारी चुना था। तेमूरकी मृत्युके समय वह कधारमे था। उसके आनेसे पहले ही दूसरे पुत्र खलील सुल्तानने सेनाके बलपर अपनेको अमीर घोषित कर दिया। तेमूर-पुत्र शाहरुख हिरात (खुरासान)का शासक था, सिहासनके लिये उसका भी दावा था। उसे खुरासान, सीस्तान और माजन्दरानका राज्य मिल गया, तो भी वह चुप न हुआ। खलील सुल्तानकी राजगद्दीकी घोषणा सुनकर शाहरुख भी अपने एक सेनापतिको हिरातमे छोड वक्षुकी ओर चला। खलील और पीर मुहम्मदने समझौता कर लिया, कि खलीलके बाद पीर मुहम्मद उत्तराधिकारी होगा। दोनोकी सयुक्त शक्तिके सामने शाहरुख उस वक्त कुछ नही कर सका, लेकिन दो साल बाद उसने अन्तर्वेदको खलीलसे छीन लिया, और ८१७ हि० (२३ III १४१४—११ II १४१५ ई०) तक अस्पहान और शीराजतक बढकर तेमूरके प्राय सारे राज्यका शासक बन गया। समरकन्द, बुखारा, हिरात, मर्व, सब्जवार, शुस्तर, अस्त्राबाद और शीराज-जैसे नगर उसके हाथमे थे।

साहित्य और कला—यद्यपि तेमूरने ललित कलाओंके लिये सहृदय हृदय नही पाया था, लेकिन दुनियाके दूसरे बादशाहोंके दरबारी ठाटको बहुत पसन्द करता था, इसीलिये अनिच्छापूर्वक भी उसके द्वारा कलाको प्रेरणा मिली। वास्तुकलाके लिये विशेष तौरसे, क्योकि उसे महलो, मस्जिदो और अच्छी-अच्छी इमारतोके बनानेका बडा शौक था। समरकन्दमे अब भी उसकी बनवाई कुछ इमारते मौजूद है। उसके समय इस दिशामे जो कार्य आरम्भ हुआ, उसकी पूर्णता उसके लडके शाहरुख और पोते उलुगबेगके समय हुई। तेमूरने १३७१ ई०मे तुरकान आकाका रोजा समरकन्दमे बनवाया था, जो शाहजिंदाके नामसे अब भी एक सुन्दर इमारत है। बीबी खानमकी मस्जिद (समरकन्द मे) १३९९-१४०४ई०में तैयार हुई थी, जो आज यद्यपि बहुत टूटी-फूटी अवस्थामे पहुच गई है, किन्तु है एक सुन्दर इमारत। तेमूरकी अपनी समाधि "गोरे-अमीर" जिसे उसके लडके शाहरुखने बन-वाया, अब भी समरकन्दकी भव्य इमारत है।

तेमूरके कालकी एक बहुत बडी देन है अरबी लिपिकी नस्तालीक शैली। अरबके आरम्भिक खलीफोंके समय अरबी भाषा कूफी लिपिमे लिखी जाती थी जिसका स्थान जल्दी ही टेढी-मेढी नस्ख लिपिने लिया। आज भी कुरान और अरबीकी पुस्तके इसी लिपिमे छपी मिलती है। लेकिन तेमूर-के दरबारी मीरअली तब्रेजी [जन्म ७८१ हि० (१९ IV १३७९—७ III १३८० ई०)—मृत्यु-८०७ हि० (१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)] ने नस्ख लिपिके टेढे-मेढे अक्षरोको तोड-कर सीधा कर दिया, और उससे एक बहुत ही सुन्दर लिपि "नस्तालीक" निकल आई। अरबी-भिन्न

फारसी आदि भाषाओके लिए नस्तालीक लिपि वहुत पसन्द की गई। भारतमे भी उर्दू इसी लिपि-मे लिखी जाती है। छापेके जमानेमे टाइपकी सुविधाके कारण "नस्ख" फिर आगे वढ गई—ईरानमे उसीमे पुस्तके और अखवार छपते है। लोगोको वहुत अफ्सोस है, कि टाइपोके बनानेमे सुविधा न होनेके कारण मुद्रण-कलाने नस्तालीकको उपेक्षित कर दिया। लेकिन हमारे यहा उर्दूके लिये टाइपोसे अधिक लिथोका प्रचार है, जिसके कारण उर्दमे अब भी तेमूरके समयकी देन 'नस्तालीक'का वहुत प्रचार है। नस्तालीकके प्रचारमे सबमे अधिक हाथ हिरातके सुलेखकोका है, जिन्होने लेखन-कलाका मान इतना ऊचा कर दिया, जहापर उसके वाद फिर वह नही पहुच सका।

राजावलि—तेमूर-वशमे निम्न सुल्तान हुए —

१	तेमूर-लग	१३७०-१४०५ ई०
२	खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र	१४०५–६ ,,
३	शाहरुख, तेमूर-पुत्र	१४०६–४७ ,,
४	उलुगवेग, शाहरुख-पुत्र	१४४७–४९ ,,
५	अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र	१४४९–५१ ,,
६	अब्दुल्ला, शाहरुख-पुत्र	१४५१–५२ ,,
७	अबूसईद, मीराशाह-पुत्र	१४५२–६९ ,,
८	अहमद, अबूसईद-पुत्र	१४६९–९३ ,,
९	सुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र	१४९३–९४ ,,
१०	वैसुकर, मुहम्मद-पुत्र	१४९४–९७ ,,
११	सुल्तानअली, मुहम्मद-पुत्र	१४९७–१५०० ,,
१२	बाबर, उमरशेख-पुत्र	१५००–१ ,,

२ खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र (१४०५–६ ई०)

खलील सुल्तानमे वहुतसे गुण थे, लेकिन वह सीमासे अधिक साखर्च था, जिसके कारण खजाना खाली होते देर नही लगी। उसमे दूसरी कमजोरी यह थी, कि वह भी नूरजहा-प्रेमी जहागीरकी तरह शादमुल्कका गुलाम था। इन कारणोंसे जल्दी ही उसके बडे-बडे समर्थक उदासीन या अलग हो गये। १४०६ ई०मे खुदादाद और शेख नूरुद्दीनने स्वामीसे विद्रोह करके समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। उस समय तो किसी तरह उसे बचाकर अगले साल नूरुद्दीनके साथ सुलह कर ली, लेकिन, फिर खुदादादने दूसरे अमीरोको मिलाकर समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। बातचीत-के वहाने विद्रोहियोने सुल्तानको बहकाकर उसे कैद कर लिया और नगरपर उनका अधिकार हो गया। यह खवर सुनकर शाहरुखने अपने सेनापति शादमुल्कको खुदादादको दड देनेके लिये भेजा। खुदादाद समरकन्द छोडकर भाग गया। शादमुल्क खुले दरवाजो समरकन्दके भीतर घुसा। उसने रानी शादमुल्कके साथ वडा ही घृणाजनक दुर्व्यवहार किया, जो शाहरुखके लिये अच्छा नही था। शाहरुख अपने तरुण पुत्र उलुगवेगको राज्यपाल वना समरकन्दमे रख हिरात लौट गया। खलील उस समयतक भागकर मुगोलिस्तानमे चला गया था, किंतु शादमुल्कका वियोग वह नही सह सका और हिरातमें जाकर उसने अपने भाईको आत्मसमर्पण कर दिया। शाहरुखने उसे सम्मानपूर्वक हिरातका राज्यपाल वना दिया, लेकिन वह उसी साल मर गया।

३ शाहरुख, तेमूर-पुत्र (१४०६–४७ ई०)

तेमूर खानदानका यह सवसे वडा और प्रतापी वादशाह था। वहुत दिनोसे हिरातमे रह जानेके कारण उस नगरके साथ इसका इतना प्रेम हो गया था, कि तेमूरकी गद्दी सभालनेपर भी उसने अपनी राजधानी समरकन्दमे नही बदली। तेमूरी-वश और मध्य-एसियाकी कला और साहित्यका

चरम उत्कर्ष शाहरुखके समय हुआ। उसने अपने बडे पुत्र उलुगवेगको समरकन्द (अन्तर्वेद) का शासक बना दिया था, जिसने वहा अपनी सुरुचि और विद्याप्रेमका परिचय दिया।

अब्दुर्रजाक समरकन्दी शाहरुखका बहुत कृपापात्र इतिहासकार था। इसने "वकाया" लिखना शुरू किया, जिसकी परिपाटी भारतमे भी मुगलवशने जारी की। तत्कालीन इतिहासके लिये सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओके ये दरवारी अभिलेख बहुत ही उपयोगी है। समरकन्दीके ग्रथ "मतलऽसादेन" मे प्रतिवर्षकी घटनाओका उल्लेख है। ८१२ हि० (१६ मई १४०९–६ अप्रैल १४१० ई०)की "वकाया" लिखते समय वह कहता है—'उज्वेकमुल्क (किपचक)के स्वामी पुलाद खानका अमीर अदिकू बहादुर और अमीर ईसाके नोकर (अफसर) दूत बनकर आये। उन्होने शिकारी जानवर और दूसरी चीजे भेट की। मिर्जा (राजकुमार) मुहम्मद जौकीके लिये लडकीकी खास्तगारी करते हुये शाहरुखने खानके लिये बहुतसी भेटें और दूतोंके लिये बहुतसे इनाम दिये।" अगले साल भी राजधानी हिरातमे "वलायत-उज्वेक" और "दश्ते-किपचक"से अमीर अदिकू दरवन्दके रास्ते और अमीर शेख इब्राहीम शरवानके रास्ते दूतमडल लेकर आये।

८१५ हि० (१३ अप्रैल १४१२ ई०—४ मार्च १४१३ ई०)मे समरकन्दी लिखता है—स्वारेज्म-को लेकर शाहरुखका किपचकोंके साथ सघर्ष हो गया। ८२२ हि० (२८ जनवरी—१९ दिसम्बर १४१९ ई०) में किपचक खान बुराकने उलुगवेगके ऊपर आक्रमण किया। तेमूरने जैसे तोकतामिश-को सरक्षण देकर आगे बढाया और अन्तमें वह भस्मासुर बनने लगा, वही बात बुराक खानने अपने भूतपूर्व सहायक और सरक्षक उलुगवेगके साथ की। ८३० हि० (२ नवम्बर १४२६–२३ सितम्बर १४२७ ई०)में बुराक ओगलानने अन्तर्वेदपर भीषण आक्रमण किया। समरकन्दमे लोग इतने डर गये, कि उन्होने नगरका दरवाजा बन्द करनेका विचार शुरू किया। उलुगवेगके हारकर भागनेकी खबर सुनकर शाहरुख स्वय एक बडी सेना लेकर समरकन्दकी ओर आया और बुराकको अन्तर्वेद छोडकर भागना पडा।

शाहरुखने थोडे ही समयमें तेमूरद्वारा विजित प्राय सारे साम्राज्यको अपने हाथमे कर लिया। उसके बाद जब-तब स्वारेज्म या सिर-दरियाकी ओर किपचको (उज्वेको)के आक्रमणका मुकाविला करना पडता था, नही तो वह अपने समयको साहित्य, सगीत और कलाके विकासमे लगाता था। सगीतका वह प्रेमी ही नही था, बल्कि उसने इसके लिये स्वय बहुतसे गीत बनाये थे। ८२०–२३ हि० (१४१७–२० ई०) मे शाहरुखके दरबारमे चीनसे एक दूतमडल आया, जिसके उत्तरमे ८२३ हि० (१७ I–५ XII १४२० ई०)में शाहरुखने अपना दूतमडल चीन भेजा। शाहरुखका बडा लडका उलुगवेग ज्योतिष और गणितका विद्वान् तथा भारी सरक्षक था। इसी तरह उसका छोटा लडका बैसुकर पुस्तको और ललित कलाका बडा प्रेमी था। बैसुकरने इस दूतमडलके साथ नक्काश (चित्रकार) ख्वाजा गियासुद्दीनको कर दिया था, जिसमे कि वह चीनी जीवनके हर पहलूको चित्रित करके लाये, तथा चीनी चित्रकलाको नजदीकसे देखे।

८३९ हि० (२७ जुलाई १४३५–१६ जून १४३६ ई०)मे स्वारेज्मकी ओरसे दूतने खबर दी कि किपचक शासक अबुल्खैर ओगलानने अचानक दश्त (किपचक-मैदान)की ओरसे स्वारेज्म-पर आक्रमण कर दिया है और वहाका राज्यपाल सुल्तान इब्राहीम शादमुल्क-पुत्र भाग गया है। शहर-को सर करके किपचकोने उसे लूटा बरबाद किया, फिर अपने देश लौट गये। ८४४ हि० (२ जून १४४०–२३ अप्रैल १४४१ ई०)मे अस्त्राबादकी ओरसे खबर आई, कि दश्तकी ओरसे आकर उज्वेक-सेना मुल्कमे लूट-पाट मचा रही है। वहाका शासक अमीर हाजी यूसुफ जलाल कुतलुग कुछ नही कर सका। "वकायानिगार" (घटना-लेखक) समरकन्दीने लिखा है—"कही-कही उज्वेक-सैनिक कजाक होकर (उज्वेक कजाकशुदा) माजन्दरान प्रदेशमे भी घुस आये और वहासे लौट गये।" १४४० ई०में अभी "कजाक" शब्द एक विशेष जातिका वाचक नही हुआ था, बल्कि उज्वेकोंके लुटेरेपनेको दिखलानेके लिये ही यहा कजाक शब्दका प्रयोग हुआ, लेकिन पीछे उज्वेक (किपचक)

तुर्कोंके एक भागको कजाक कहा जाने लगा, जिनके ही नामपर आज सोवियत सघका दूसरे नबरके सबसे बडे गणराज्यका नाम कजाकस्तान है और आज कजाक शब्द लुटेरेका पर्यायवाची नही समझा जाता ।

अन्तर्वेदपर किपचको (उज्वेको)का आक्रमण १४१२ ई०से ही होने लगा था। उसके वादके अट्ठाईस वर्षोंमे उनके साथ वहुतसे सघर्ष हुये । पहले वह मध्य-सिर-उपत्यका और ख्वारेज्मतक लूट-पाट मचाते थे, पीछे अव माजन्दरानतक हाथ वढाने लगे। यद्यपि अभी अन्तर्वेदके उज्वेकोके हाथो-मे जानेमे साठ वर्षकी देरी थी, किंतु उनका आतक अभीसे छा गया था और १४४० ई०मे शाहरुखने हुकुम दिया था—"हर साल दसहजारी अमीरोमेंसे कुछ वलायत-माजन्दरानमे जा सजग रहते वास करे।" इसके वाद मिर्जा वैसुकर, फिर मिर्जा अलाउद्दीन दोनो राजकुमारोने भी वहा जाकर डेरा डाला। इसी साल अमीर हाजी युसुफ जलील, उसका भाई अमीर शेख हाजी और दूसरे दसहजारी अमीर अपनी सेना लेकर वहा पहुचे, किंतु यकायक उज्वेक सेना उनके ऊपर टूट पडी और अमीर हाजी युसुफ मारा गया ।

८४५ हि० (२२ मई १४४१ ई०–१२ अप्रैल १४४२)मे शाहरुखने इतिहासकार अब्दुर्रजाक के नेतृत्वमे एक दूतमडल भारत भेजा। तेमूरियोके कितने उदार विचार थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि शाहरुखने अपने दूतमडलको दिल्ली या वहमनी रियासतके पास न भेजकर उस समयके दक्षिणके सबसे शक्तिशाली हिंदूराज्य विजयनगरमे भेजा, जिसमें एक सुभीता यह भी था—ईरान शाहरुखके राज्यमे था, जिसका समुद्रके रास्ते भारतके साथ व्यापारिक सबध विजयनगरके समुद्र-तटद्वारा स्थापित था । यह दूतमडल हिरातसे चलकर केरमानके रास्ते ओरमुज्द वदरगाहपर पहुचा, जहासे जहाजमे बैठकर भारत आया। अब्दुर्रजाकने विजयनगरका वहुत ही सुदर वर्णन "मतलऽसादेन"मे किया है ।

राज्यपाल होनेके समय भी शाहरुखने हिरातको वहुत ही समृद्ध और अलकृत किया था, लेकिन जब उसने उसे तेमूरी राज्यकी राजधानी बना दिया, तो हिरात सारे इस्लामिक जगत्का एक बडा सास्कृतिक केन्द्र वन गया। विद्वानो और कला-विशारदोका वहा वडा सम्मान था । वावरने अपने ग्रथमे लिखा है, कि हिरात-जैसा शहर दुनियामे नही है । हिरातमे चित्रकलाकी एक खास कलम—सूक्ष्मचित्र—का आरम्भ किया गया, जो कि शायद पहिले समरकन्दसे वहा आई। हिरात नगरके पश्चिमोत्तरमें शाहरुखने १४१८–३७ ई०मे अपनी रानी गौहरशादका रौजा मस्जिदके साथ बनवाया। यह वहाकी सबसे सुदर इमारत है। शाहजहा भी एक समय खुरासान गया था, जिसका ही प्रधान नगर हिरात है। हो सकता है ताजमहल वनानमे उसे यहाके गौहरशाद-के रौजेसे प्रेरणा मिली हो। इस रौजेका निर्माण कवामुद्दीन शीराजी नामक एक कुशल वास्तुशास्त्री-ने किया था। यही गौहरशाद उलुगवेग और वैसुकरकी मा थी, जिससे शाहरुख वहुत प्रेम करता था। वैसुकरने हिरातमे एक कितावखाना वनवाया था, जिसकी इमारत अत्यन्त सुदर ही नही थी, वल्कि वहापर पुरानी पुस्तकोका वहुत अच्छा सग्रह था, और कितने ही सुलेखक पुस्तकोको लिखते रहते थे । हुसेन वैसुकरने १४३० ई०मे "शाहनामा"की एक वहुत ही सुदर प्रति लिख-वाई, जो कि आजकल तेहरानके सग्रहालय मे है ।

४. उलुगबेग, शाहरुख-पुत्र (१४४७–४९ ई०)

उलुगवेगने अपने पिताके उपराजके तौरपर एकतालीस वर्ष (१४०६–४७)तक समरकन्द-मे रहते अन्तर्वेदका शासन किया। ज्योतिष और गणितके विकासमे उसने खासतौरसे सहायता की। तारो और ग्रहोके ठीक-ठीक वेधके लिए उसने एक वहुत वडी वेधशाला समरकन्दके पास कोहक नदीके ऊपर वनवाई, जिसका आरम्भ ८३२ हि० (११ अक्तूवर १४२८— १ सितम्वर १४२९ ई०) में हुआ था। इसके दरवारमे तथा वेधशालाके विद्वान् काजी जादरूम गयासुद्दीन, जमशीद मोहीउद्दीन काशानी, इसराईली (यहूदी) सलाहुद्दीन थे। यहीपर प्रसिद्ध सारणी ८१४ हि० (५ जुलाई १४३७–

२६ मई १४३८ ई०)मे तैयार हुई। उलुगबेगकी वेधशालाके ध्वसावशेष नगरके पूर्वी उपान्तमे चोपान-अता पहाडीपर अब भी मौजूद है। उसकी ज्योतिष सारणी—"जीजे-उलुगबेग"—सदियो-तक यूरोपमें भी मान्य रही। पूर्वके देशोमे बनी सभी ग्रह-सारणियोमे यह सबसे अधिक पूर्ण और शुद्ध थी। इसमे —(१) समय और युग, (२) समय-माप, (३) ग्रह-कक्षा, (४) नक्षत्र-ताराके स्थान दिये गये है। इसका बहुत ही सुदर पहला सस्करण प्रोफेसर ग्रीफ्सने १६४२–४८ई०मे आक्सफोर्ड में छपवाया था। डाक्टर टामस हाइडने १६६५ ई०मे इसका लातिनी अनुवाद प्रकाशित कराया। उलुगबेगकी नक्षत्र (तारा)-सूची इतनी पूर्ण है कि आज भी खुली आखोसे दिखलाई देनेवाले उतने ही (डेढ हजार) तारोकी सूची बन पाई है समरकन्दको उलुगबेगने मध्य-एसियाकी उज्जयिनी बना दिया था।

उलुगबेगके बनवाये महल, मस्जिद, मदरसे वास्तु-कलाके अत्यन्त सुदर नमूने है। अगर उसके पिताने हिरातको भव्य बनाया, तो उलुगबेगने समरकन्दको भी उससे पीछे नही रहने दिया। उसके महलोको सजानेके लिये चीनके सुदर चित्रकारो और कलाकारोने आकर वर्षो काम किया था। चीनी बरतनोका उसके पास बहुत ही सुदर सग्रह था।

८५० हि० (२९ III १४४६—१७ II १४४७ ई०)मे पिताके मरनेपर तेमूरी सिंहासन-का अब उलुगबेग उत्तराधिकारी था, इसलिये उसे समरकन्द छोडकर हिरात जाना पडा। उलुग-बेग सैनिक योग्यता नहीं रखता था, न कूटनीतिका पडित ही था, इसीलिये वह दो सालसे अधिक शासन नही कर सका। जल्दी ही उसके प्रतिद्वद्वी अलाउद्दौलाने समरकन्दका किला उससे छीन उलुगबेगके पुत्र अब्दुल्लतीफको बदी बनाया। उलुगबेगने आक्रमण करके सुलहकी सबसे पहली शर्त यह रक्खी, कि अब्दुल्लतीफको भेज दिया जाय। दूसरी शर्ते अलाउद्दौलाने पूरी नही की, जिससे फिर लडाई शुरू हुई। अलाउद्दौला हारकर मशहद (खुरासान)की ओर भागा। इसी समय तुर्क-मानोने हिरातको और उज्बेकोने समरकन्दको लूटा। उलुगबेगने वर्षो लगाकर "चीनीखाना" को चीनी कलाकारो द्वारा अलकृत करवाया था और सुदर चीनी बर्तनोका अद्भुत सग्रह करवाया था। उन सबको पल मारते-मारते उज्बेकोने नष्ट कर दिया। जल्दी ही पुत्रवत्सल पिताके विरुद्ध अब्दुल्लतीफने विद्रोह कर दिया और आक्रमण करके उसे बन्दी बना दिया। उसने इतनी ही नृशसता नही दिखलाई, बल्कि चुपकेसे एक ईरानी गुलाम भेजकर बापको मरवा दिया।

उलुगबेग बहुत ही कोमल स्वभावका आदमी था, कला और विज्ञानके पीछे तो वह पागल था। उसकी कोमलहृदयताने तोकनामिशकी कहानियोको जानते हुये भी बोराक ओगलानका सरक्षक बनवाया। उसके विद्या-प्रेमकी प्रतीकके रूपमे बुखारामे उसके हुकुमसे बने एक मदरसेमे बहुत सुदर अक्षरोमे अब भी एक छोटासा अभिलेख मौजूद है। "तलबल्-इल्म फरीजत अला-कुल्ले मुव स्लेमुन्व मुस्लेमात" (विद्या पढना हरएक मुसलमान स्त्री-पुरुषका कर्तव्य है)।

साहित्य—ख्वाजा इस्मत बुखारी उलुगबेगका राजकवि था। उसके अतिरिक्त सियाली, बुरुन्दक, रुस्तम खूरियानी आदि भी दरबारके फारसी कवि थे—अभी तुर्कीको साहित्यकी भाषा नही स्वीकार किया गया था, तो भी उलुगबेगके पिता शाहरुखने तुर्की गीत बनाये थे। उमरशेख-पुत्र सुल्तान इस्कन्दर और खलील मिर्जा दोनो राजकुमार फारसीके कवि थे। शाहरुखके लडके बैसुकरका पुत्र बाबर मिर्जा सुदर प्रतिभाशाली कवि था जो तरुणाईमे ही मर गया। यह भारतके मुगल-सम्राट् बाबरसे भिन्न था। तुर्की कवि मिर्ही अहमद मिर्जाने "लताफतनामा"के नामसे एक मसनवी (कथाकाव्य) लिखी थी। इसी वशमे आगे पैदा होनेवाला जहीरुद्दीन बाबर तलवारका ही धनी नही, बल्कि सरस्वतीका वर-पुत्र भी था।

५. अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र (१४४९-५१ ई०)

पिताके रक्तसे रगे नृशस अब्दुल्लतीफको निश्चित हो राज्य भोगनेका मौका न मिला। पिता तथा अपने प्यारे सम्बन्धियोकी निर्मम हत्या सामन्तोके लिये कोई असाधारण बात नही समझी

जाती, इसीलिये संस्कृतमें कहावत मशहूर है—"जनकभक्षा राजपुत्रा" (पिताके भक्षक होते हैं राजपुत्र)। अब्दुल्लतीफका एक बड़ा प्रतिद्वंद्वी तेमूर-पौत्र मीराशाहपुत्र अबूसईद (सम्राट् बाबरका दादा) था। उसे अब्दुल्लतीफने हरा दिया। किंतु अब्दुल्लतीफके महापापको अधिक दिनोंतक बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था। उलुगबेगके एक स्वामिभक्त सेवकने इस आततायीको ८४५ हि० (१४ फर्वरी १४५०–५ जनवरी १४५१ ई०)में मार डाला।

६　अब्दुल्ला, शाहरुख-पुत्र (१४५१–५२ ई०)

साल-साल दो-दो सालके लिये गद्दीपर बैठनेवाले तेमूरी शासकोंने अब बतला दिया, कि वंशकी नैया डावाडोल हो रही है। अब्दुल्लाने उन्हीं उज्बेकोंकी सहायतासे समरकन्दको प्राप्त किया, जो कि तेमूरी-वंशका स्थान लेनेवाले थे। "वकायानिगार" समरकन्दीने ८५५ हि० (३ फर्वरी १४५१–२५ दिसम्बर १४५३ ई०)में लिखते हुए बतलाया है—"इसी बीच राजसेवकोंने खबर दी, कि उज्बेक बादशाह अबुल्खैर खान (१४२८–६८ ई०)—जो बहुत दिनोंसे अपने दरबारका दोस्त और शुभेच्छु है—आज्ञा पानेपर सेवामें आना चाहता है। सुल्तानकी स्वीकृति पाकर अबुल्खैर जल्दी-जल्दी अब्दुल्लाके ओर्दूमें आया। सुल्तानने उसका बड़ा स्वागत किया। (पीछे) अबुल्खैरने समरकन्द-विजयकी तदबीर अबूसईदको बतलाई। फिर दोनों यस्सी नगरके सीमांतसे ताशकन्द और खोजन्दके इलाकेमें आये। जब अब्दुल्लाको पता लगा, कि अबूसईद उज्बेक खानकी सेनाके साथ आ रहा है, तो वह एक बड़ी सेना ले कोहक नदी पार हो आगे बढ़ा। दोनों सेनाएं आमने-सामने खड़ी हुईं और दोनोंमें २२ जून १४५१ ई० शनिवार (२२ जमादी II ८५० हि०)को भयंकर लड़ाई हुई जिसमें अब्दुल्ला मारा गया और भारतीय मुगल-वंश-संस्थापक बाबरका पितामह, अबूसईद विजयी हुआ।

७　अबूसईद, मीराशाह-पुत्र (१४५२–६९ ई०)

अबुल्खैरको उसकी सहायताके लिये अबूसईदने बहुतसी भेंट दे कृतज्ञता प्रगट की, और अब्दुल्लतीफकी हत्यामें हाथ रखनेवालोंको भी दंड दिया। शाहरुखके मरनेके बादसे ही जो गृह-कलह चल रहा था, उसे दबानेमें अबूसईद सफल हुआ। तेमूरी वंशका यह अन्तिम शक्तिशाली सुल्तान था। जैसा कि पहले बतला चुके हैं, अभी भी छिङ्-गिस्वंशी खान समरकन्दकी गद्दीपर बैठा करते थे। अन्तर्वेद, पूर्वी ईरान और अफगानिस्तान अबूसईदके राज्यमें थे। वह चतुर सैनिक और कुशल शासक था। इसका समकालीन तुर्कीका सुल्तान मुहम्मद II था, जिसने १४५३ ई०में कान्स्तन्तिनोपल लेकर बलकान (युरोप)में इस्लामी राज्यकी स्थापना की।

रबी I ८६४ हि० (२६ दिसम्बर—२५ जनवरी १४५९—६० ई०)के आरंभमें इसके दरबारमें कलमकों (मंगोलों) और किपचकोंके दूत आये, जिनका अबूसईदने बहुत सम्मान किया। लेकिन उत्तरके घुमन्तुओंकी मित्रता बादलके छांहसे बढ़कर नहीं होती। ८६९ हि०के जमादी II (फर्वरी १४६५ ई०)के मध्यमें खबर मिली, कि किपचक खान अबुल्खैरके भाई सैयद यक्का सुल्तानको अमीरों (उच्च अफसरों)ने ख्वारेज्ममें पकड़कर हिरात भेज दिया, जहां वह बन्दीखानेमें पड़ा है। अबूसईदने उसे अपने पास बुलाया, और "उस सदाचारी सुभक्त तरुण"को बहुत सम्मानपूर्वक घोड़ा, सोना, कुलाह और इनाम प्रदान कर वलायत उज्बेकमें भेज दिया। लेकिन उज्बेक घुमन्तू इन उपकारोंको देरतक कैसे याद रख सकते थे, जब कि दक्षिणके समृद्ध नगरोंको लूटकर ही वह मौजका जीवन बिताते अपने सैनिकोंमें अनुशासन कायम रख सकते थे। ८७२ हि० (२ अगस्त १४६७—२२ जून ६८ ई०)की घटनाके बारेमें समरकन्दीने लिखा है—मरदुमें-उज्बेक (उज्बेक लोगों)के प्रहारसे अन्तर्वेदको हरसाल जहमत और बर्बादी उठानी पड़ती रही, लेकिन इस साल वहांसे ऐसी खबर नहीं आई। इसी समय ख्वारेज्मसे दूतने आकर कहा, कि किपचकोंकी भूमिसे देरसे कजाक हुये मिर्जा मुल्तान हुसेनने ख्वारेज्मपर आक्रमण किया। तेमूरी अमीर उसके सामने नहीं टिक सके, और मिर्जाने ख्वारेज्मको पामाल किया। यह खबर सुनकर अबूसईदने अपने सभी उच्च सेनापतियोंको ख्वारेज्म जानेका

आदेश दिया, लेकिन उधर आजुर्वाईजानमें भी उजुन हसनबेगने खतरा पैदा कर दिया था, इसलिये इसी साल अबूसईद सेना लेकर उधर गया और लड़ाईमें बन्दी हुआ। उजुन हसन (१४६७–७८ ई०) ने अबूसईदको शाहरुखकी बेगम गौहरशादके पुत्र यादगार मिर्जाके हाथमें दे दिया, जिसने अपनी माकी हत्याका बदला लेते अबूसईदको मार डाला। अबूसईदके ग्यारह पुत्रोंमें एक उमरशेख मिर्जा था। इसीका पुत्र बाबर था। जिसने भारतमें मुगल-साम्राज्यकी स्थापना की।

अबूसईदको भी सुन्दर इमारतोंके बनानेका बड़ा शौक था। आज भी उसकी लड़की सुल्तान खाविन्द बिकीके रौजेकी सुन्दर इमारत समरकन्दमें "इशरतखाना"के नामसे मौजूद है।

८ अहमद, अबूसईद-पुत्र (१४६९–९३ ई०)

अहमद एक मामूली बुद्धिका आदमी था, ऊपरसे वह कभी शराबमें मतवाला रहता और कभी भक्ति और खुदाके इश्कमें गर्क। इसके समयमें दरबारी अमीर अक्सर विद्रोह करते रहे। खुरासान बिल्कुल स्वतन्त्र हो गया, जिसपर तेमूर-वंशी सुल्तान हुसेन (१४६९—१५०६ ई०) हिरातमें शासन करता रहा। अहमदने अपने भाई उमरशेखको फरगाना देकर उसे दूसरोंके हाथों में जानेसे बचा लिया। उमरशेखके फरगानामें शासन करते समय ही उसका पुत्र बाबर पैदा हुआ। अहमदके सत्ताईस सालके शासनमें समरकन्दको फिर तरक्की करनेका मौका मिला।

कवि नवाई—हिरातने स्वतन्त्र होकर अपने गौरवको फिर लौटा लिया। हुसेन मिर्जा (१४६९–१५०६ ई०)के शासनकालमें हिरातने साहित्य और कलामें चरम उन्नति की, जिसका बहुत कुछ श्रेय तुर्की साहित्यके कालिदास अली शेर नवाईको है। नवाई १४४१ ई०में हिरातमें पैदा हुआ था। उसके बचपन और जीवनका भी अधिकतर भाग हिरातमें बीता। वह शिक्षा प्राप्त करनेके लिये समरकन्द भेजा गया। वहाका सबसे बड़ा धनी दरवेश मुहम्मद तरखन उसका सरक्षक था। सुल्तान अहमद मिर्जाके समय नवाई बुखारा और समरकन्दका सबसे बड़ा जमींदार था। हिरातमें रहते बचपनमें हुसेन मिर्जा नवाईका सहपाठी था। जब हुसेन मिर्जा हिरातकी गद्दीपर बैठा, तो उसने समरकन्द में सुल्तान अहमद मिर्जाको नवाईको भेजनेके लिये लिखा। समरकन्दमें रहते वक्त नवाईको जिन लोगोंके सम्पर्कमें अधिक आना पड़ा था, उनमें सूफी सत खोजा उबैदुल्ला अहरार मुख्य था। सत-महन्त होनेके साथ खोजा अहरारकी जमींदारीका ठिकाना नहीं था। कहावत है—कोई आदमी अपने गदहेपर चढ़ा अन्तर्वेदमें उत्तरसे दक्षिणकी यात्रा कर रहा था। सैकड़ो मील चलता गया, लेकिन जब भी किसी लहलहाते खेतके बारेमें पूछता, तो लोग कहते—'यह खोजा अहरारका है।' इसपर मुसाफिरने अपने गदहेको भी खेतकी तरफ हाकते हुए कह दिया—"जा तू भी खोजा अहरारका हो जा।" खोजा अहरारकी महिमा सबसे अधिक इसलिये फैली कि वह अपनी अपार सम्पत्तिका उपयोग परोपकारमें करता था। नवाई भी बहुत भारी जमींदार था, अहरारकी प्रेरणासे उसने भी अपनी सम्पत्तिको वैसे ही कामोंमें खर्च करनेका निश्चय किया।

सुल्तान हुसेन सूक्ष्मचित्र, सुलेखनकला, वास्तुकला और सगीतका बड़ा प्रेमी था। अली शेर नवाई तो विद्वानों और कलाकारोंका अपने सुल्तानसे भी बड़ा सरक्षक था। हिरातमें एसियाके ही भिन्न-भिन्न देशों के व्यापारी नहीं आते थे, बल्कि १४९४ ई० में एक फ्रांसीसी कारवा भी आया था। भारत, चीन आदि के व्यापारी तो सदा ही आते रहते, इसलिये यहापर विद्वानों और कलाकारोंके लिये विचार-विनिमयका अच्छा अवसर मिलता था।

१४६९ ई०में समरकन्दसे लौटनेके बाद १४८७ ई०तक नवाई सुल्तान हुसेनके दरबारका एक बहुत ही शक्तिशाली अमात्य था। दरबार छोड़नेके बाद उसने अपने बड़े-बड़े निर्माण-कार्य आरम्भ करके पूरे किये। उसकी बनवाई सबसे बड़ी इमारत "इखलास" (स्नेह) बीस साल-में तैयार हुई, जो हिरात नगरके बाहर यजील नहरके किनारे अवस्थित थी। कितने ही हजार आदमी इसके बनानेके लिये रोज काम करते थे। कितनी ही बार नवाई स्वयं मजदूरोंकी तरह काम करता। "इखलास"के भीतर सुन्दर मदरसा, खानकाह तथा मस्जिद बनी हुई थीं। खानकाहसे पश्चिम

"खानकाह-शफाइया" (सार्वजनिक अस्पताल) था, जहापर अपने समयके प्रसिद्ध चिकित्सक हकीम गयासुद्दीन मुहम्मद चिकित्सा करते थे। यहाकी बहुतसी इमारतोमे "मदरसा निजामिया" भी था, जिसमे अच्छे-अच्छे अध्यापक नियुक्त थे। नवाईने और जगहोपर भी खानकाहे और मदरसे बनवाये, जिनमे "मदरसा-खुसरविया" मेर्वके अब्दुल्लाखान-किलेमे अवस्थित था। खुरासान और ईरानके दूसरे स्थानोमे मुसाफिरोके आरामके लिये नवाईने पचास रवाते (धर्मशालाए) बनवाई थी। उसके आश्रित इतिहासकार खोन्दमीरके अनुसार नवाईने हम्माम (स्नानागार) और चौदह मस्जिदे इस्तिखर सेरख्स और अस्त्रावादमे बनवाई थी।

नवाईको जहा अपने परोपकारी कामोके लिये खोजा अहरारसे प्रेरणा मिली थी, वहा उसकी काव्यप्रतिभाको निजामी (११६१—१२०३ ई०) और जामी (१४१४—९२ ई०) की कविताओसे भारी प्रेरणा मिली थी। जामी नवाईका समकालीन था, और हिरातके पास हीमे रहता था। फारसी भाषाका वह अन्तिम महाकवि था। यद्यपि नवाईने "फानी" (नाशमान)के नामसे फारसीमे भी कविताए की है, लेकिन वह अमर है अपनी तुर्की कविताओके कारण। आजकल मध्य-एसियाकी सबसे प्रगतिप्राप्त उज्बेक जातिका वह परम श्रद्धाभाजन कवि है। उज्बेक राजधानी ताशकन्द मे नवाई नाट्यशालाके नामसे एक बडी ही विशाल और सुन्दर रगशाला स्थापित की गई है। नवाई-की जीवनीको लेकर उज्बेक-लेखक ऐबकने एक उपन्यास "नवाई" लिखा है, जिसपर उसे स्तालिन पुरस्कार प्राप्त हुआ। नवाईने सत्तरसे अधिक पुस्तके लिखी है, जिनमे उसका "खमसा" (पचक) सबसे अधिक प्रसिद्ध है। जिन विषयोको लेकर नवाईने अपने पाच काव्य लिखे, उन्हीपर पहले निजामीने और उसके बाद खुसरो देहलवी (१२५३—१३२५ ई०)ने भी सुन्दर काव्य लिखे है—

निजामी (११६१–१२०३)	खुसरो (१२५३–१३२५)	नवाई (१४४१–१५०१)
१. मख्जनुल् - असरार	मत्लउल्-अनवार	खैरतुल्-अबरार
२ खुसरो-व-शीरी	शीरी-खुसरो	फरहाद शीरी
३ सिकदरनामा	आईने-सिकन्दरी	सद्दे-सिकन्दरी
४ लैला-व-मजनू	मजनू-लैला	लैला-मजनू
५ हफ्त-पैकर	हश्त-बहिश्त	हफ्त-किश्वर

नवाईसे पहले तुर्की भाषाने साहित्यमें ऊचा स्थान नही प्राप्त किया था। यद्यपि नवाईने अपनी कृतियोको हिरातमे बैठकर लिखा था, लेकिन हिरातमे तुर्कोंकी काफी सख्या रहते भी, वह खुरासानी ईरानी भाषाका प्रदेश था। पूर्वी तुर्की भाषा (चगुताई तुर्की)मे भी स्थानोके अनुसार भेद हो गया था, और सबसे शिष्ट अन्दिजान (फरगाना)की तुर्की समझी जाती थी। बाबर स्वय वही पैदा हुआ था। उसने बाबरनामामें नवाईकी भाषाके बारेमें लिखा है*—

"अन्दिजान ऐले नयग लफ्जे कलम बेरल, रास्ते तोर हानी हो जू केम नीर अली शेर नवाई नयग मुसन्निफाते बावजूद हरेदा नशो-नुमा तापैव तोर बोतेल बेल दो।"

(अन्दिजानके लोगोकी भाषा मीर अली शेर नवाईके ग्रन्थोकी भाषासे मिलती है, जिसे कि उसने हिरातमे लिखा था।)

अन्दिजान काश्गरसे दूर नही है। तुर्की साहित्यकी सबसे पहिली पुस्तक "कुतदगु-बिलिक" काश्गरमे नवाईसे तीन शताब्दी पहिले लिखी गई थी। "कुतदगु-बिलिक"की भाषा प्राचीन उइगुर भाषासे बहुत घनिष्ठ सबध रखती है। हम कह आये है, कि उइगुर और तुर्क पहले एक ही जातिका नाम था। प्राचीन उइगुर भाषाके नमूने कितने ही बौद्ध सूत्रोके अनुवादके रूपमे अब भी प्राप्त है। छिङ्गिस् और उसके बेटो-पोतोके राज्यमें किपचक, ईरान और अन्तर्वेदके सभी जगहके दरबारो और आफिसोमें उइगुर लेखक हुआ करते थे, जिनमे अधिकाश भिक्षु थे, जिसके कारण

* "बाबरनामा" पृष्ठ २ ख (लन्दन १९०६ ई०)

लेखकको बक्सी (भिक्षुका उइगुर अपभ्रंश कहा जाने लगा। इसी प्राचीन उइगुर भाषा और लिपि-का प्रचार सारे चगताई राज्यमें हुआ और पीछे इसे चगताई भाषा कहा जाने लगा। जब अन्तर्वेदमें उज्वेकोंका शासन स्थापित हुआ, तो वहाँके सभी तुर्क उज्वेक कहे जाने लगे, तबसे इस भाषाका नाम उज्वेकी पड़ गया। आजकल वह इसी नामसे प्रचलित तथा उज्वेकिस्तान गणराज्यकी राज्यभाषा है। मगोल चगताई तुर्कोंमें विलीन हो गये, इसीलिये पीछे कहा जाने लगा—"तुर्क कौम लारी जूजी दूरदार यग व जगताई" (जू-छि चगताई तुर्क कौमके थे)।

नवाईका काम सुन्दर इमारतों और उपकारी संस्थाओंके निर्माण तथा काव्योंतक ही सीमित नहीं था, वह विद्वानों और कलाकारोंके लिये कल्पवृक्ष था। एसियाका एक अद्वितीय चित्रकार कमालुद्दीन बेहजाद (मृत्यु १५२१ ई०) नवाईके ही संरक्षणमें आगे बढ़ा, जिसे कि "नजाकते कलम बेनजीर" (तूलिकाकी कोमलतामें अनुपम), "सूरतेहालका मुसव्विर" (यथारूप चित्रण-कर्ता) और "द्वितीय मानी" कहा जाता है। मानी ईरानका पैगम्बर (२१६–२७६ ई०) चित्रकला-में भी अद्वितीय समझा जाता था। मानीकी चित्रकलाके नमूने अब प्राप्त नहीं हैं। ईसाकी तीसरी सदीके बाद चित्रकलाके एकसे एक दुश्मन दुनियामें आये, जिनके हाथमें मानीके चित्रोंका बच निकलना संभव नहीं था। लेकिन बेहजादके बनाये हुये चित्र अब भी दुनियाके संग्रहालयोंमें मिलते हैं।

सुल्तान अली मशहदी, मीर अली मजनू, मुहम्मद शिकावी जैसे सब समयके लिये अनुपम सुलेखक नवाईके दरबारमें थे। सुल्तान अलीने नवाईके "खम्से"की एक प्रति १४९२–९ ई०में लिखी थी, जो कि आजकल लेनिनग्रादके राजकीय लोक-पुस्तकालय (प्राच्य ५६०)में मौजूद है, जिसमें लेखकने लिखा है—"खम्सा मीर अली शेर नवाई ब-खते किब्लउल्कुत्ताब मौलाना सुल्तान अली मशहदी" (मीरअली शेर नवाईका पचक, लेखकशिरोमणि मौलाना सुल्तान अली मशहदीके अक्षरोंमें) सुल्तान अलीको बुढ़ापेमें भी अपनी लेखनीपर कितना अभिमान था, यह उसकी प्रतिलिपि की हुई एक पुस्तक के अन्तमें मौजूद निम्न पद्यमें मालूम होगा—

मरा उम्र शस्त व-से शुद बेशकम्।
हनोजम् जवानस्त मुश्की कलम्॥
तवानम् हनोज अज खफी-वो-जली।
नविश्तन् कि अल्-अब्द सुल्तान् अली॥

(मेरी उम्र कम-बेशी तिरसठ हो गई, किन्तु अभी भी मेरी काली कलम जवान है। अब भी मैं सूक्ष्म और स्थूल हस्ताक्षर सुल्तान अलीके साथ लिख सकता हूँ।)

नवाईका देहान्त ३ जनवरी १५०१ ई०को हुआ।

९ सुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र (१४९३–९४ ई०)

भाईके मरनेके बाद पाँच तरुण भतीजोंको मारकर मुहम्मद समरकन्दकी गद्दीपर बैठा। यह बड़ा क्रूर, पियक्कड़ और व्यभिचारी था, जिसके कारण उसके अमीर विरुद्ध हो गये और थोड़े ही समय बाद उसकी शायद अकाल-मृत्यु हो गई।

१० बैसुंकर, मुहम्मद-पुत्र (१४९४–९७ ई०)

बापके मरनेपर मसऊद, सुल्तान अली और बैसुकरमें तख्तके लिये झगड़ा हुआ, और अन्तमें स्वारन सालकी उमरमें बैसुकर सुल्तान बना। अहमदके समयमें ही उत्तरके उज्वेक और देशके भीतर अमीर बहुत शक्तिशाली होने लगे। बैसुकरकी तरुणाईमें उनको और भी आगे बढ़नेका मौका मिला, जिससे आरम्भिक करनेपर अमीरोंने बुखारासे उसके भाई सुल्तान अलीको बुलाया। बैसुकर भाग गया, किन्तु पीछे फिर अमीरोंने उसे ही बुखारा गद्दीपर रहने दिया। सुल्तान अली बुखाराकी ओर भागा और फिर थोड़ी तैयारी करनेके बाद बुखारासे समरकन्द आया। दूसरा भाई मसऊद भी उनकी

सहायतार्थ दक्षिणसे आया। उमरशेख-पुत्र बाबर मिर्जा इस समय खोकन्द (फरगाना)का स्वतन्त्र शासक था। उसकी भी नजर समरकन्दपर थी। चारो ओरसे निराश होकर बैसुकर अपने भाई मसऊदकी शरणमे [९०३ हि० (३० VIII १४९७—२१ VII १४९८ ई०)] भागा, जिसके पास ही रहते ९०५ हि० (८ VIII १४९९—२८ VI १५०० ई०)मे वह गुमनाम मरा।

११ सुल्तान अली, मुहम्मद-पुत्र (१४९७–१५०० ई०)

तेमूरी राज्यको बाबर और सुल्तान अलीने आपसमे बाट लिया। दोनो ही कम उमरके थे, इसलिये शासनकी बागडोर अमीरोके हाथमे थी। सुल्तान अली तीन साल ही राज्य कर पाया, कि एक सौ चालीस वर्ष पुराने तेमूरी वशके दीपकको उज्वेकोके खान शैबानीने बुझा दिया। बाबरने वशकी नैयाको डूबनेसे बचानेकी कोशिश की, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।

१२ जहीरुद्दीन बाबर, उमरशेख-पुत्र (१५००–१ ई०)

हम कह चुके है कि अहमदके समरकन्दकी गद्दी सभालनेके समय उसका भाई उमरशेख फरगानाका शासक रहा। बाबर वहीपर १४८१ ई०मे पैदा हुआ और बापके बाद फरगानाका शासक बना। शैबानीके समरकन्दपर पैर जमानेसे पहले बाबरने भी समरकन्दकी ओर हाथ फैलाया था, लेकिन उज्वेक सेनाने उसे हरा दिया। समरकन्द लेकर मुहम्मद शैबानी निश्चित नही रह सका। एक बार बाबरने समरकन्द, मियानकुल और करशीसे उसे भगा दिया, लेकिन बुखारासे उज्वेकतक भी चिपटे रहे। अगले साल ९०७ हि० (१७ VII १५०१—७ VI १५०२ ई०)मे शैबानीने बडे जोरका आक्रमण किया, और बाबरके पैर उखड गये। समरकन्दसे भगाये जानेपर वक्षुपार हो बाबरने कुदुज ले लिया। ईरानी शाह इस्माईलकी मदद लेकर और किस तरह बाबरने बारह सालतक तेमूरकी भूमि लेनेका प्रयत्न किया, इसे हम आगे बतलायेगे। कुदुजसे ही बीस हजार सेना जमा करके बाबरने ९०९ हि० (२६ VI १५०३—१६ V १५०४ ई०) मे काबुलको दखल कर लिया और वहासे भारतपर आक्रमण करके १५२६ई०मे लोदियोसे दिल्लीका तख्त छीनकर मुगल-वशका सस्थापक बन गया। जो बाबर मुट्ठीभर उज्वेक घुमन्तुओके सामने सारे प्रयत्न करनेके बाद भी टिक नही सका, वही बाबर हिंदुस्तानको जीतनेमे सफल हुआ, यह यही बतलाता है कि उस समयकी परिस्थितिमे सैनिक तौरसे घुमन्तू जितने मजबूत थे, उतने स्थिर बस्तीवाले नही। साथ ही हिदुस्तानकी लडाईने कभी लोकयुद्धका रूप नही लिया, लडनेवाले मुट्ठीभर सामन्त और उनके अनुचर थे, अधिकाश जनता शासकोके अत्याचार और स्वेच्छाचारसे तग होकर इतनी निराश थी कि वह यही कहती थी—"कोउ नृप होय हमहि का हानी।"

साहित्य और सस्कृति—अब भी तेमूरवशी छिडगिस्के "यासा" (विधान) और तेमूरके "तुजुक" (व्यवस्था)को मानते थे, और मुसलमान होते हुये भी धर्मांध नही थे। तेमूरवशके रूपमे मध्य-एसियामे तुर्कजाति गौरवके शिखरपर पहुची। इस समय बडे-बडे विद्वान् और कलाकार पैदा हुए। तेमूर स्वय कलम चलाना जानता था। उसका पुत्र शाहरुख सुन्दर गीतोका लेखक था। उलुगबेग गणित और ज्योतिषका विद्वान् तथा सरक्षक था। उसका छोटा भाई बैसुकर पुस्तको और चित्रकलाका प्रेमी था। बाबर कवि-लेखक, शासक-योद्धा था। इस कालमें बुखारा, समरकन्द और मेर्वमे बडे-बडे धर्मशास्त्री (फकीह, दार्शनिक और कवि हुये, जिनमे फारसीका कवि जामी (१४१४–१४९२ ई०) और तुर्की साहित्यका सर्वश्रेष्ठ कवि नवाई (१४४१–१५०१ ई०) भी थे। तुर्की भाषाका मान सबसे अधिक इसी समय हुआ। अरब खलीफोके समय अरबी भाषा सरकारी भाषा थी। ताहिरियोने अरबीकी जगह फारसीको दी, तबमे फारसी ही राजकाज और साहित्यकी भाषा समझी जाने लगी। तेमूरियोने यद्यपि फारसीको स्थानच्युत नही किया, लेकिन तुर्कीका सम्मान जरूर बढाया, जिसमे नवाई और बाबरका हाथ बहुत अधिक था। बाबरकी देखादेखी जहागीरने भी तुर्कीमे "तुजुक जहागीरी" लिखी, लेकिन शायद वह आखिरी मुगल था, जो कि भारतमे अच्छी तुर्की बोल-लिख सकता था। तुर्की वैसे सभी मध्य-एसियाके तुर्कोकी भाषा थी,

लेकिन जैसा कि हमने पहले कहा, अन्दिजान और काश्गरमें बोली जानेवाली तुर्कीको ही साहित्य-की भाषा माना गया। तुर्की भाषाके संबंधमें यह कहा जा सकता है कि जितना ही पूरब जाये, उतना ही वह अधिक शिष्ट रूपमें मिलती है। यहां तुर्की भाषामें हमारा मतलब पूर्वी तुर्कीसे है, जिसे पहले चगताई और आजकल उज्बेकी कहा जाता है। यारकन्द काश्गरकी भाषाका भी इसी भाषा-से संबंध है। पश्चिमी तुर्कीमें तुर्कमानी, आजुरबाईजानी और उसमान अली (तुर्की राज्यकी) भाषाएं सम्मिलित हैं, जो आपसमें भेद रखते हुये भी एक दूसरेसे बहुत समानता रखती हैं।

तेमूरी-वंशवृक्ष—
(१३७०-१५०० ई०)

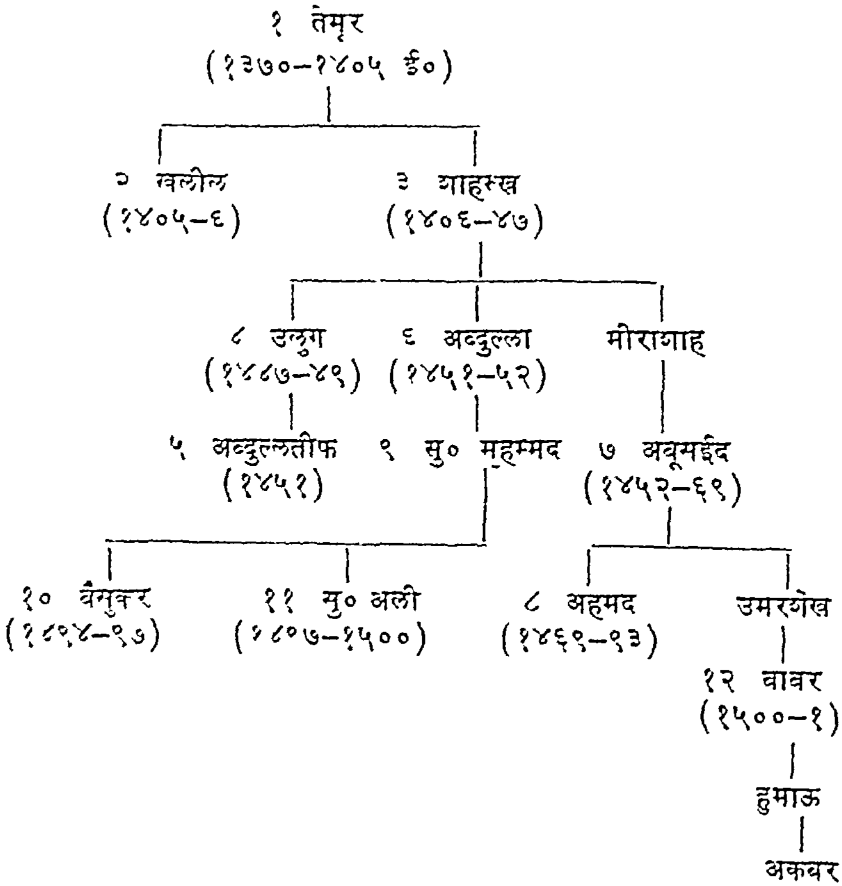

अध्याय ४

शैबानी-वंश

अबुल्खैर---तोकतामिशके सुवर्ण-ओर्दूके गौरवको पुन जागृत करनेका प्रयत्न विफल होनेपर तूरान-अधित्यका (किरगिज-स्तेपी)का स्वामी बुराक खान हुआ, जिसने तेमूरियोको बहुत तग किया। उसके बाद अबुल्खैर [जन्म १४१३ ई० (८१६ हि०)] का प्रताप बढा। इसका पौत्र तथा अन्तर्वेद-विजेता शैबानीके नामसे मशहूर है। वह जू-छिके पुत्र शैबानके वशका था।

शैबानी-वश यद्यपि छिङ्गिस्-पुत्र जू-छिके पाचवे लडके शैबानके नामसे प्रख्यात हुआ, लेकिन वह मुहम्मद शैबानीके अन्तर्वेद जीतनेसे पहले किपचक या उज्बेक नामसे प्रसिद्ध था। उज्बेक खान (१३१३-४० ई०) सुवर्ण-ओर्दूका एक शक्तिशाली शासक तथा इस्लामका धार्मिक धर्मराजा था, इसीलिये जू-छिका उलुस, विशेषकर बा-तू-वशकी प्रजा पीछे उज्बेकके नामसे प्रसिद्ध हुई है, यह हम बतला चुके हैं। जू-छि-उलुस आरम्भ हीमे बा-तू और ओर्दाके उलुसोमे विभक्त हो गया था, जिसमें बा-तूका उलुस सुवर्ण-ओर्दू और ओर्दाका श्वेत-ओर्दूके नामसे पुकारा जाता था। उज्बेक सुवर्ण-ओर्दूका खान था, इसलिये सुवर्ण-ओर्दवालोका ही नाम उज्बेक पडना चाहिए, लेकिन पीछे इसका उतना ध्यान नही रखा जाता रहा, और सारे जू-छि-उलुस या किपचक-जातिको उज्बेक कहा जाने लगा। हम यह भी देख चुके हैं, कि इन्ही उज्बेको या किपचकोको लूट-मार करनेके कारण अन्तर्वेदी कजाक कहने लगे, जिससे आगे किपचकोकी एक शाखा कजाक नामसे प्रसिद्ध हुई। जू-छिकी सातवी पीढीमे अबुल्खैर किपचकोका जबर्दस्त खान हुआ, जिसने अन्तर्वेदकी राजनीतिमे दखल दिया। बाबरके दादा अबूसईदको तख्तपर बैठानेमे उसका मुख्य हाथ था। उज्बेक-राज्यका सस्थापक वस्तुत यही अबुल्खैर था। अभी बीस सालका भी नही हुआ था, कि उसने तेमूर-पुत्र शाहरुखके कुछ इलाकोको छीन लिया। उज्बेक गद्दीका मालिक बननेसे पहले उसे सुवर्ण-ओर्दूके मुखिया मुस्तफा खानको हराना पडा, जिसमे मिली भारी लूटकी सम्पत्तिको अपने अमीरो और सैनिकोमे बाटकर वह सर्वप्रिय हो गया। निम्न-सिर-दरियाके तटपर अवस्थित सिगनक किपचकोके हाँथसे निकल गया था। अबुल्खैरने उसके ऊपर आक्रमण किया और शाहरुखके स्थानीय राज्यपालको आत्मसमर्पण करना पडा। फिर अबुल्खैर आगे बढकर अककुरगान, अरक, सूजक और उजकन्द ले सूजकपर बख्तियार सुल्तान, सिगनकपर मनाहदान ओगलान और उजकन्दपर बखसमवी मगुतको शासक नियुक्त किया। उसने जाडा सिर-उपत्यकामे बिताते १४४८ ई०के वसतमे इलाककी ओर बढनेकी तैयारी की। इसी समय पता लगा, कि शाहरुख मर गया, और उलुगबेग गद्दी सभालने खुरासानकी ओर गया है। समरकन्दको अरक्षित-सा देख अबुल्खैरने उधर कूच कर दिया। समरकन्दके राज्यपाल जलालुद्दीन बायजीदने बहुत-सी भेट देकर अबुल्खैरके पास कहलवाया---"उलुगबेग सदा खानके साथ अच्छा सबध रखता था, इसलिये यही अच्छा है, कि खान हमारी भेट स्वीकार करके लौट जाय।" अबुल्खैर बिना समरकन्दको लूटे ऐसा करके अपने अमीरो और सैनिको को सन्तुष्ट नही रख सकता था। समरकन्दपर अधिकार कर विशेष तौरसे "चीनी-खाना"की चित्रशालाकी दीवारोपर सुन्दर-सुन्दर पच्चीकारी किये चित्रोको उज्बेकोने अपनी गदासे मारकर तोड दिया। सोनेके कामको उन्होने सोनेके लोभसे कुरेदकर निकाल लिया। इस प्रकार "कई वर्षोंके परिश्रमके बाद बने हुये कलाके कामोको कुछ घटोमे उन्होने नष्ट कर दिया।"

शाहरुखके उत्तराधिकारियोमे उसका पौत्र अब्दुल्ला मिर्जाने आपसी झगडोमे हारकर तुर्किस्तानकी ओर भाग यस्सी (तुर्किस्तान शहर)के किलेपर अधिकार कर लिया। अबुल्खैर

भारी सेना लिये अबूसईदको गद्दी दिलानेके वास्ते समरकन्द आया । गर्मियोंकी गर्मीमें उसे भागनेके लिये मजबूर होना पड़ रहा था । इसी समय उसने येदेची (मंत्रद्वारा वर्षा करानेवाले)को वर्षा बरसानेके लिये कहा । कहते हैं, वर्षा हुई, और अबुल्खैरकी सेना जीजक-के सँगिस्तानके रास्ते आसानीसे पार हो गई । अब्दुल्ला उस समय तुर्किस्तान, अन्तर्वेद, बदख्शा और काबुलका स्वामी था । बुलालगरके तटपर कनवानके मैदानमें अवस्थित शीराजमें अबूसईद-समर्थक अबुल्खैरकी उज्बेक-सेना और अब्दुल्लासे १४५२ ई० (८५५ हि०)में लड़ाई हुई । अब्दुल्लाने राज्य और प्राण दोनों गवाये । अबुल्खैरने पकड़े हुये बंदियोंको छोड़ दिया और अपने सैनिकोंको लूटनेसे मना किया । समरकन्दमें उसने स्वयं बागे-मैदानमें डेरा डाला, और उसके अमीर कगुलमें ठहरे । एक बड़ा दरबार रचाकर अबुल्खैरने अबूसईदको गद्दीपर बैठाया । फिर वह अपनी इस्लाम-भक्ति और शास्त्रोंके ज्ञानका परिचय देता अन्तर्वेदके शेखुल्इस्लाम (इस्लामिक-धर्मराज)से कितने ही समयतक सत्संग करता रहा । अबूसईदने रोज उसके पास भेंट और सौगात भेजी, तथा उलुगबेगकी पुत्री राबिया सुल्तान बेगमको अबुल्-खैरसे प्रदान किया । शांति स्थापित करके अबुल्खैर दश्तेकिपचककी ओर लौट ही रहा था, कि जुगारियाके कल्मक राजा उजतेमूर थैशीकी जीभमें पानी भर आया, और उसने अन्तर्वेदकी ओर बढ़ना चाहा । इसपर अबुल्खैर और कल्मकोंकी सेनाएं नूरतुकाईके इलाकेमें चिर नदीके पास कोक-काशानामें एक-दूसरेसे भिड़ीं । कल्मकोंने उज्बेकोंको करारी हार दी । उज्बेक और कल्मक दोनों ही घुमन्तू लड़ाकू जातियां थीं, जिनमें उज्बेक जहां तुर्क मुसलमान थे, वहां कल्मक मंगोल बौद्ध । १५वीं सदीके मध्यमें जो बौद्ध मंगोलोंने किपचक भूमि और अन्तर्वेदकी ओर पैर बढ़ाना शुरू किया, तो अगली तीन शताब्दियोंतक वह रुके नहीं, और जैसा कि हम आगे देखेंगे, उस समय उनकी सफलताओंको देखकर सम्भावना होने लगी थी, कि अपने पूर्वज छिङ्-गिस्की तरह शायद वह भी सारे पूर्वी-पश्चिमी तुर्किस्तान, किपचक-मंगोलियाके मालिक बनें । कोक-काशानामें हारकर अबुल्खैर सिगनककी ओर भागा । कल्मकोंने ताशकन्दके प्रदेश तथा तुर्किस्तान और शाहरुखिया आदि नगरोंको लूटा, फिर वह सैराम होते चू-उपत्यकाके रास्ते लौट गये । शायद यह तेमूर थैशी ओइरोद मंगोलोंके दक्षिणपक्ष (सेगोन-सार)का चिङ्-साङ् (उपराज) तथा एसेन तायशीका उत्तराधिकारी था । कल्मक परम्परामें अबुल्खैरको बोल्गारी खान कहा गया है । अपने इसी अभियानमें खोशोत मंगोलोंने सबसे पहले नाम पैदा किया । खोशोत कबीलेके प्रमुख अबनू गल्दनके दो पुत्र अराक तेमूर और बर्गेन तेमूर संयुक्त शासक थे ।

इस युद्धके बाद अबुल्खैरका ध्यान अब दश्तेकिपचककी ओर ज्यादा हुआ, जिसके कारण यह भूमि अधिक समृद्ध हुई । १४५५ ई०में एक बार फिर अबुल्खैरने तेमूरी खलीफ-पुत्र मोहम्मद मिर्जाको गद्दीपर बिठानेके लिये अपनी सेना भेजी, मगर अबूसईदसे हारकर उसे खाली हाथ लौटना पड़ा । अबुल्खैरके धन और प्रतापको बढ़ते देख उसके सबधियोंने ईर्ष्या करके विद्रोह कर दिया, जिससे ८७४ हि० (१४६९ ई०)में अबुल्खैर मारा गया । अबुल्खैरका राज्य किरगिज स्तेपीके पश्चिमी भागपर था । १४६५ ई० (८७० हि०)के आसपास कुछ उज्बेक अबुल्खैरसे असन्तुष्ट हो जू-छिवशकी एक दूसरी शाखाके सुल्तान गिराई और जानीबेगके साथ मुगोलिस्तानमें भाग गये जिन्हें वहांके खान ईसानबुगाने स्वागत कर चू-नदीके पास अपने राज्यके पश्चिमी भाग-में स्थान दिया । इन्हींको पीछे उज्बेक-कजाक और अन्तमें कजाक कहा जाने लगा । कजाक सुल्तानों-का राज्य इस प्रकार १४६५ ई०में शुरू हुआ, और १५३३ ई० (९४० हि०) तक वह पुरानी उज्बेक-भूमिके अधिकांश भागके शासक हो गये । १४६९ ई० (८७८ हि०)में अबुल्खैरके मरनेपर कितने ही उज्बेक फिर मुगोलिस्तानसे अपनी भूमिमें लौट आये । अबुल्खैरने ख्वारेज्म और निम्न स्यार-दरिया-सिर-उपत्यकापर अधिकार कर लिया था । अबुल्खैरके पुत्र थे—बूदगू या शाह बूदग, शाह मुहम्मद, अहमद सूर महम्मद, हैदर, सञ्जर, इब्राहीम, कूचुनजी, सुइउनिच, अकयुन और सैयद खान । इनमें सत्तापर पुत्रोंमें झगड़ा उठ खड़ा हुआ । ख्वारेज्म-शासक यादगारकी सन्तानोंने ख्वा-

कर जबर्दस्त संघर्ष हुआ। बूदगकी कजाकोंके खानों—गिराई और जानीबेगसे भी बहुत प्रतिद्वंद्विता थी, जो कि सिर-उपत्यकामें रहते थे। कजाकोंकी मददके लिये मुगोलिस्तानका खान यूनस आया। युद्धमें बूदगने हारकर अपना शिर कटवाया। इसी बूदग (बदाग)का पुत्र था अबुल्-फतह मुहम्मद शैबानी, जिसने अन्तर्वेदमें शैबानी-वंशका शासन स्थापित किया। जिस समय उज्बेक दक्षिणमें मध्य-एसियाकी ओर बढ़ रहे थे, उसी समय रूस, तारतारों (मंगोलों)के जूयेको फेंककर मजबूत हो रहा था। मुहम्मदने पहले-पहल १५०० ई० (९०६ हि०)में अन्तर्वेदको जीता, किन्तु इसी समय उन्नीस वर्षकी आयुमें बाबरने आकर उसे बुखारा छोड़ सब जगहोंसे खदेड़ दिया। अगले साल १५०१ ई० (९०७ हि०)में बाबरको मुहम्मद शैबानीने सारे अन्तर्वेदसे भगा दिया और १५०५ ई० (९११ हि०)तक फरगाना भी बाबरके हाथसे जाता रहा, यही नहीं, ख्वारेज्म, हिसार (ताजिकिस्तान) और मेर्वको भी शैबानीने ले लिया।

राजावलि—शैबानी-वंशके खानोंकी नामावली निम्न प्रकार है—

१	मुहम्मद शैबानी, बूदग (बदाग)-पुत्र	१५००–१२ ई०
२	कूचुनजी, अबुल्खैर-पुत्र	१५१२–३० ,,
३	अबूसईद, कूचुनजी-पुत्र	१५३०–३२ ,,
४	उबैदुल्ला, महमूद-पुत्र	१५३२–४० ,,
५	अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र	१५४० ,,
६	अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र	१५४०–५१ ,,
७	नौरोज अहमद, सूयुनजी-पुत्र	१५५१–५६ ,,
८	पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र	१५५६–६१ ,,
९	इस्कन्दर, जानीबेग-पुत्र	१५६१–८३ ,,
१०	अब्दुल्ला II, इस्कन्दर-पुत्र	१५८३–९६ ,,
११	अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र	१५९६–९७ ,,
१२	पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र	१५९७–९९ ,,

१ मुहम्मद शैबानी, बदाग-पुत्र (१५००–१२ ई०)

मुहम्मदका जन्म १४५१ ई०में हुआ था। बापके मारे जानेपर उसके नाना उइगुर शेख हैदरने उसका पालन-पोषण किया था। उस समय किपचक-भूमिकी शक्ति निर्बल थी। उसके शासक थे—सैदिक, ऐबक (शैबानी ओर्दूके खान हाजी मुहम्मदका पुत्र), अरबशाहकी सतानें, श्वेत-ओर्दूके खान बोराकके पुत्र जानीबेग और गिराईबेग उसके बाद मंगित या नोगाई खान या यमगुरची, अब्बास और मूसा। नानाके मरनेपर मुहम्मद और उसके भाई महमूदको अमीर कराचिनबेगने अपने संरक्षणमें ले लिया। हैदरको ऐबकने हरा दिया, इसपर अमीर कराचिन अस्त्राखानी कासिमखानके दरबारमें भाग गया, जहां उसके साथ मुहम्मद और महमूद दोनों भाई भी गये। कासिमखानने अपने अमीरुलउमरा तैमूरबेग नोगाईके संरक्षणमें दोनों भाइयोंको दे दिया। जिस समय सुवर्ण-ओर्दूके ऐबक खानने अस्त्राखानको भी आ घेरा उस समय मुहम्मद और महमूद तरुण थे। दोनोंने कराचिनके साथ लड़ते हुये शत्रुओंकी पांती तोड़कर निकल भागनेमें सफलता पाई। फिर मुहम्मद अपने पुराने देश निम्न-सिर-उपत्यकामें लौटा। लोग खान-पुत्रोंके झंडेके नीचे आकर खड़े होने लगे। मुहम्मद कजाकोंके खान जानीबेग-पुत्र इराचीके साथ साबरानके पास लड़ा, किन्तु असफल हो उसे बुखाराकी ओर भागना पड़ा। तैमूरी अहमद मिर्जाके राज्यपाल अमीर अब्दुल अली तरखनने उसे बुखारामें बड़े सम्मानके साथ रक्खा। फिर अहमद मिर्जाने अपने पास बुलाकर उसका बहुत अच्छी तरहसे आतिथ्य किया। दोनों भाई दो सालतक बुखारामें रहे। इस बीचमें वह अन्तर्वेदसे अच्छी तरह परिचित हो गये। इसके बाद अब्दुल अलीको साथ लिये दोनों खानजादे अपनी जन्मभूमिकी ओर बढ़े। अरतक किलेके पास जानेपर खोजा बेगचिकने—जो कि अपने कबीलेका मुखिया तथा किपचकोंके सबसे पुराने अमीरोंमेंसे था—किलेकी कुंजी लाकर

मुहम्मदके हाथमें दे दीं। इस आरम्भिक सफलताके बाद मुहम्मद सिगनक शहरकी ओर बढा। वहा उसे मगित (नोगाई) सरदार मूसाका दूत मिला, जिसने उसे दश्तेकिपचकका खान बननेके लिये अपने स्वामीकी ओरसे निमत्रण दिया। मुहम्मद उसके पास गया और मूसाके प्रतिद्वद्वी कजाक खान वेरेदकको हरानेमे मुहम्मदने सहायता की, पर अब मूसा बहानेबाजी करते कहने लगा, कि मगित लोग राजी नही है। निराश होकर मुहम्मद शैवानीने दश्तेकिपचकमे लौट मूजकपर अधिकार कर जानीवेग-पुत्र मुहम्मद सुल्तान (कजाक)से कई लडाइया लडी, लेकिन अतमे हारकर उसे मगिशलक (कास्पियनतट) होते ख्वारेज्मकी ओर भागना पडा। खुरासानके शासक सुल्तान हुसेन मिर्जाके राज्यपाल अमीर नासिरुद्दीन अब्दुल खालिक फीरोजशाहने उसे बहुत-सी मूल्यवान् भेटे प्रदान की। ख्वारेज्मसे कराकुल होते मुहम्मद बुखारा पहुचा और फिर अली तरखनके साथ समरकन्द। अन्तर्वेदके बादशाह अहमद मिर्जाकी मुगोलिस्तानके खान महमूद खानसे ताशकन्द-शाहरुखियाके लिये लडाई हो रही थी, जिसमे अहमद मिर्जाके साथ १४८८ ई०मे मुहम्मद शैवानी भी शामिल हुआ। सिर-दरियाकी शाखा चिर (चिरचिक)के तटपर दोनो सेनाओकी भिडत हुई। शैवानीने अपने उपकारमे विश्वासघात करते शत्रुके साथ चुपके-चुपके सलाह कर ली थी, कि यदि मुझे अपना सिंहासन मिल जाय, तो मैं अपने सपक्षियोमें गडबडी पैदा करके उनका साथ छोड दूगा। अगले दिन मुगोलिस्तानी सेना चिर (चिरचिक) नदी पार हुई—पैदल सेना आगे-आगे थी, और रिसाला पीछे-पीछे। शैवानीने अपनी योजना पूरी की। सुल्तान अहमद मिर्जा हारा और उसके बहुतसे आदमी भागते हुये नदीमे डूबकर मर गये। मुगोलिस्तानी खानने पारितोपिकके रूपमे मुहम्मद शैवानीको तुर्किस्तान शहर दे दिया। लेकिन तुर्किस्तान शहर श्वेत-ओर्दूके खानोका था, इसलिये कजाक खान जानीवेग और गिराईका मुगोलिस्तान-के खान महमूदके साथ झगडा होना जरूरी था। महमूदने शैवानीकी सहायता की, अबुल्खैरके पुराने सैनिक भी मुहम्मद शैवानीके झडेके नीचे आ जुटे थे। मुहम्मदके उज्बेकोने जानीवेग और गिराईके कजाकोसे लोहा लिया। आसपासके कई किलोको हाथमे करके शैवानी सिगनकपर चढा, जहा कजाक खान वेरेदकसे भिडत हुई। इसी समय पता लगा कि फीरोजशाह ख्वारेज्मसे खुरासान गया हुआ है। फिर क्या, मुहम्मद शैवानी ख्वारेज्मपर चढ दौडा। कई दिनोंके आक्रमणके बाद भी वह सफल नही हुआ। इसी समय फीरोजशाह लौट आया। शैवानीने ख्वारेज्म छोडकर बुलदुमके किले-पर आक्रमण किया, जिसका ध्वसावशेष खीवासे ८८ वर्स्त (२४३/४ फरसख) पर अब भी मौजूद है। इसके बाद वेजिर (वेसिर) शहरको जा लिया, किन्तु खुरासानी सेनाने आकर उसे वहासे भगा दिया। फिर मुहम्मद शैवानी कितने ही नगरोको लूटते-पाटते इलाक और अस्त्राबादतक गया। इसी समय मुगोलिस्तानके खान महमूदका निमत्रण मिला और वह ओतरार (उतरार) चला गया।

सावरानके लोगोका वहाके दारोगा (राज्यपाल) कुल मुहम्मद तरखनके साथ झगडा हो गया। उन्होने उसे निकाल बाहर कर नगरकी कुजी मुहम्मदके भाई महमूद शैवानीको दे दी, और सारे तुर्किस्तान (मध्यसिर-उपत्यका)के लोगोने दोनो शैवानी भाइयोको अपना शासक मान लिया। इसी समय कजाकोने आक्रमण करके महमूदको पकडकर कजाकसरदार कासिम—जो कि महमूदका मौसेरा भाई था—के हाथमे दे दिया। कासिमने कुछ दिन रखकर सैनिक पहरेमे उसे मूजकके लिये रवाना किया, किन्तु रास्तेमे महमूद भाग निकला, और उसने उगुजमान पहाडपर जाकर भाईसे भेट की। फिर दोनो भाई ओतरार गये। थोडे ही समय बाद कजाक खान वेरेदकने ओतरारपर आक्रमण किया, लेकिन कुछ दिनो बाद सुलह हो गई।

मुहम्मद इधरसे छुट्टी पा यस्सी (तुर्किस्तान) जा वहाके दारोगा मुहम्मद मजीद तरखन * को कैद कर ओतरार लाया, लेकिन मुगोलिस्तानके खान महमूदने आकर उसे छुडाकर समरकन्द भेज दिया। अभीतक महमूद खान (मुगोलिस्तानी) मुहम्मद शैवानीपर बहुत विश्वास रखता था, लेकिन अब उसे मालूम हो गया, कि वह बडा ही अविश्वसनीय और खतरनाक आदमी है, इसीलिये वह

* तरखन=राजकुमार (तुर्की)

उज्बेकोका साथ छोड कजाकोकी ओर हो गया। कजाकोने यस्सीको लेना सम्भव नही समझा, इसलिये ओतरारपर आक्रमण करके महमूद सुल्तानको घेरना चाहा, लेकिन उसमे वह सफल नही हुये। फिर दोनो दलोमे सुलह हुई और कजाक खान वेरेदकने अपनी दो वहिनोमेसे एकको मुहम्मद शैवानी और दूसरीको उसके पुत्र मुहम्मद तेमूरको दिया। मुहम्मद शैवानी जैसे भी हो तैसे अपना मतलव सिद्ध करनेवाला आदमी था, उसे वचन, शपथ या उपकारका कोई ख्याल नही था। अपने राज्यविस्तारमे उसने किसी भी तरीकेको इस्तेमाल करना उठा नही रक्खा। ईमानदारी तो उसे छू नही गई थी। महमूद खानने उसकी वहुत सहायता की थी, लेकिन उसके मनमे भी उसने सदेह पैदा कर दिया। तो भी मुगोलिस्तानी खान समरकन्द और वुखाराके जीतनेकी अपनी योजनामे शैवानीका उपयोग करना चाहता था। लेकिन उससे शैवानीकी शक्तिके वढनेमे ही सहायता मिली।

१४९७ ई०मे वावरने समरकन्दको लेनेके लिये आक्रमण किया, उस समय महमूद शैवानी बाबरके प्रतिद्वद्वी सुल्तान वैसुकर मिर्जाके वुलानेपर ओतरारसे गया। सुल्तान महमूद शैवानीको जीजकमे पहुचकर हार खानी पडी, तव उसका भाई मुहम्मद शैवानी मदद करने आया। अवकी वार एक हजार जेतो (मुगोलिस्तानी खानकी सेना)ने धोखा दिया, और मुहम्मदको भी मुहकी खानी पडी। शैवानीके लिये ईमान-धर्मकी पावन्दी जरूरी नही थी, लेकिन सूफियो और शेखोकी करामातपर उसका वहुत विश्वास था। एक वार उसने शेख मसूरको भोजन कराया। जब वह दस्तरखानके कपडे को वीचसे उठा रहा था, तो शेखने कहा—"तुझे मालूम नही, कि इस कपडेको वीचसे खीचकर नही, वल्कि चारो कोनोंसे मोडकर उठाया जाता है। इसी तरह देशको उसकी राजधानीपर दखल करके नही, वल्कि उसके सीमान्तोपर अधिकार करके जीता जाता है।" इस गुरुमन्त्रके वाद मुहम्मद शैवानी अपने अनुयायियोको लेकर अतर्वेदके समृद्ध और सुखी इलाकोके ऊपर चढ दौडा जिसका कि कोना-कोना वह अपने भगोडे जीवनमे देख चुका था। लूटका माल मिल रहा था, इसलिये घूमन्तू सैनिकोकी क्या कमी हो सकती थी? शैवानीकी सेनामे दश्तेकिपचकके सभी इलाकोके उज्वेक शामिल थे, पीछे खीवासे भी कितने ही मगित आ मिले। तुर्किस्तान और ओतरारके शासक उसके दो चचा कूचुनजी और सुईजनिच थे, जो अपने सवधी हमजा सुल्तान और महवूव सुल्तानके साथ एक वडी सेना लेकर भतीजोके दलमे शामिल हो गये। उत्तरमे घुमन्तुओकी इतनी जवर्दस्त शक्ति तैयार हो रही थी, और उधर दक्षिणमे तेमूरी सुल्तान आपसमे दगल लड रहे थे। गृह-युद्धके भडकानेमे वावरका मुख्य हाथ था। वापसे मिले फरगानापर सतुष्ट न रहकर उसने १४९७ ई०मे समरकन्दको आकर ले लिया, लेकिन थोडे ही दिनो वाद उसे छोडना पडा और वहाका शासन महमूद मिर्जा-पुत्र सुल्तान अलीके हाथमे चला गया। एक उज्वेक रखेली जूरे-वेगी आगा सुल्तान अलीकी मा थी, शायद इस कारण भी दूसरे शाहजादे उसे गद्दीपर देखना नही चाहते थे। लेकिन अव तेमूरी सुल्तान दरबारियोके हाथके कठपुतली भर रह गये थे, इसलिये असली शक्ति सुल्तान अलीके हाथमें नही थी, वल्कि चार सौ सालोसे शेखुल्-इस्लाम होते आये वशके मुखिया खोजा अहिया सर्वेसर्वा था।

मुहम्मद शैवानीको तेमूरियोकी भीतरी कमजोरिया अच्छी तरह मालूम थी। अन्तर्वेदके और स्थानोकी लूट-मारसे शक्तिशाली वन वह १५०० ई० (९०६ हि०)मे समरकन्दपर पहुचा। दस दिनतक उसने नगरको घेरे रक्खा। शेखके पुत्रने दरवाजेसे निकलकर शैवानी सेनाको हरा पीछे ढकेल दिया, लेकिन शैवानीने मौका पा चहार-राह दरवाजेसे नगरमे घुसनेमे सफलता पाई और विना प्रतिरोधके ही वह वागेनौके ग्रीष्मप्रासादमे पहुच गया। अव उसे नगरके भीतर रह गये शत्रुओसे लडना था। युद्ध मध्याह्नमे शुरू हो आधी राततक जारी रहा। मुहम्मद शैवानीने वीरता दिखलाने-मे खतरेकी विलकुल परवाह नही की। दूसरे दिन खवर मिली, कि अव्दुल अली तरखनका पुत्र और कितने ही और तरखन (राजकुमार) वुखारासे सहायताके लिये आते दवूसियाका मुहासिरा किये हुये है। यह खवर सुन उज्वेकोने समरकन्दके मुहासिरेके लिये थोडीसी सेना छोड पहले तरखनोकी ओर मुह मोड और उन्हे हराकर वे वुखाराके ऊपर जा धमके, जिसके सर करनेमे वहुत कठिनाई नही

हुई। शैवानीने वहा कुछ सेना और अपने अन्त पुरको रखकर कराकुलपर आक्रमण किया। इसी समय बुखारावालोने उज्वेक-सेनाको मार डाला। खबर मिलते ही शैवानीने तुरन्त लौटकर वुखारा शहर-पर अधिकार करके वहाके नागरिकोसे बहुत सख्त बदला लिया। फिर वह समरकन्दपर आया, जिसके विजयमे अली मिर्जाकी अपनी मा—जोकि उज्वेक जातिकी थी—ने विश्वासघात किया। बाबर उसके बारेमे लिखता है—"अपनी जडता और मूर्खताके कारण उसने शैवानी खानके पास गुप्त रीतिमे सदेश भेजकर प्रस्ताव किया, कि यदि तुम मेरे साथ व्याह करो, तो मेरा लडका इस शर्तपर समरकन्दको समर्पण कर सकता है, कि जब तुम अपने पैतृक राज्यको प्राप्त कर लोगे, तो इस नगरको मेरे बेटे सुल्तान अली को दे दोगे।" इसी कारण चहार-राह दरवाजा अरक्षित मिला। जब शैवानी बागे-मैदानमे पहुचा, तो सुल्तान अली मिर्जा विना किसीसे कुछ कहे कुछ अनुचरोके साथ चहार-राह दरवाजेसे निकलकर शैवानीसे मिला। शैवानीने उसकी कोई इज्जत न कर उसे निचले आसन पर बैठाया। सुल्तान अलीके जानेकी खबर सुनकर खोजा अहिया भी पहुचा, लेकिन शैवानीने चार सौ वर्षोंके शेखुल्-इस्लाम-वशका कुछ भी ख्याल न कर उठकर उसका स्वागत भी नही किया, और खूब कडे-कडे शब्दोमें उसे फटकारा—"अभागी दुर्बल स्त्रीने पति पानेके लालचसे अपने खानदान और लडकेकी इज्जतको धूलमे मिला दिया, लेकिन उसके साथ भी अच्छा बर्ताव नही हुआ, क्योकि शैवानी उसको अपनी रखेलिनोके बराबर भी नही समझता था।" १५०० ई० (९०६ हि०)मे समरकन्दको सर करनेके बादसे शैवानीका सन-जलूस (अभिषेक-सवत्) चला। तीन-चार दिन बाद सुल्तान अलीको उसने मरवा डाला, फिर खुरासानकी ओर यात्रा करते समय तुरन्त ही उसने विश्वासघाती खोजा अहिया और उसके दो पुत्रोको कत्ल करवा दिया।

शैवानी और उसके अमीरोको समरकन्द जैसा समृद्ध-सुन्दर नगर मिला, "लेकिन उसके सैनिको-का नागरिक जीवनसे प्रेम नही था। नगरमे कुछ दिनो रहनेके बाद शैवानीने अपने सात-आठ हजार सैनिकोंके साथ खोजा-दीदारके पास जा डेरा लगाया।" दो हजार सैनिक शहरके आसपासमे छावनी डाले पडे रहे और नगरके भीतर सिर्फ छ सौ सैनिक रह गये थे। १९ सालके बाबरको जब यह पता लगा, तो उसने दो सौ चालीस आदमियोको लेकर बडे साहसका काम करना चाहा। नगरके सैनिकोको सजग देखकर उसे कितनी ही बार अपने इरादेको रोकना पडा। लेकिन एक रात खोजा अब्दुल मकरम सत्तर या अस्सी आदमियोको लिये मोगाकपुल होते प्रेमियोंकी गुफाके सामनेसे नगर-प्राकार फादनेमें सफल हुआ और पीछेसे जा फीरोजा दरवाजाके रक्षक सिपाहियोंके ऊपर टूट पडा। इस आक्रमणमे दरवाजेके गारदका कमाडर फाजिल तरखन मारा गया। मुकरमके आदमियोने कुल्हाडेसे ताला तोड दरवाजा खोल दिया। अब बाबर भी शहरके भीतर दाखिल हुआ। इस समयके बारेमे बाबर लिखता है—"नागरिक गहरी नीदमें थे, लेकिन दूकानदारोने जब अपनी दूकानोसे झाककर देखा और उन्हें असली बातका पता लग गया, तो उन्होने शुक्रिया अदा करनेके लिये भगवान्से प्रार्थना की। नगरके बाकी लोग भी जल्दी जाग उठे और अपने लोगोकी सहायता पा हमने पागल कुत्तेकी तरह उज्वेकोको हर एक कूचे और सडकमें पत्थरो और लकडियोंसे पीट-पीटकर मारा।" चार-पाच सौ उज्वेक सैनिक मारे गये। उज्वेकोंकी ओरसे नियुक्त नगर-कोतवाल जानेवफा जान बचाकर शैवानीके पास भागा। बाबर मदरसा-उलुगबेगकी ओरसे होते मेहराबोवाली शाला (उलुगताक)मे जाकर बैठा। नागरिकोंने नये तेमूरी बादशाहको बधाई दी। दूसरे दिन मालूम हुआ, कि आहनीदरवाजा (लौहद्वार) अब भी शत्रुओंके हाथमे है। बाबर पन्द्रह-बीस आदमियोके साथ उधर दौडा, लेकिन उसके पहुचनेसे पहले ही नगरके गुडोने उन्हे बाहर निकाल दिया था। जब मुहम्मद शैवानीको यह खबर मिली, तो डेढ सौ सवारोके साथ आकर उसने दरवाजा आहनीपर आक्रमण करना चाहा, लेकिन उसे व्यर्थ समझकर वह लौट गया। समरकन्दपर अधिकार हो जानेके बाद आसपासके बहुतसे इलाकोसे उज्वेक मार भगाये गये। सोग्द और मियानकुलपर बाबरका अधिकार था, और खोजार तथा करशीपर बाकी तरखन (बुखारा-राज्यपाल)का। मेर्वमे लौटकर शैवानी-सेनाने सिर्फ बुखाराको अपने हाथमे लौटा पाया।

— उस साल तो यही मालूम हो रहा था, कि वावर फिर तेमूरकी कीर्तिको जगाके रहेगा, लेकिन शैवानी भी चुप रहनेवाला आदमी नही था। उसने तैयारी करके १५०१ ई०के वसन्तमे कराकुल और दवूसिया ले लिया। अप्रेल या मई १५०१ ई०मे शैवानीसे लडनेके लिये वावरने सरेपुलके पास जाकर मोर्चाबन्दी की। उसके शिविरसे शैवानीका शिविर चार मीलपर था। चार-पाच दिनोतक दोनो दलोमें मामूली झडप होती रही। यद्यपि अभी मददके लिये आनेवाली सेनाकी प्रतीक्षा करनेकी जरूरत थी, लेकिन ज्योतिपियोका वतलाया मुहूर्त वीता जा रहा था, इसलिये सहायता आनेसे पहले ही वावरने युद्ध छेड दिया। उज्वेकोकी युद्धविद्यामे एक ज्यादा प्रचलित चाल थी "तुलुगमेह" अर्थात् शत्रुके पार्श्वोको प्रहार करके मोड देना, दूसरी चाल थी सरपट दौडते वाण-वर्पा करना, इसके लिये सेनानायक और सिपाही दोनो पीछा किये जानेपर सरपट लौट पडते। शैवानीकी सेना वावरसे कही अधिक थी। इसी समय मुगोलिस्तानकी सेनाने वावरके साथ धोखा दे दिया। वावरकी पूरी हार हुई। वह अपने दस-पन्द्रह अनुयायियोके साथ कोहक नदीकी धारमे कूद पडा। सवार और घोडे दोनो वख्तरदार थे, जिसके कारण उनके शरीरपर भारी वोझा था, तो भी किसी तरह भागकर वह रातसे पहले ही समरकन्द पहुचे। वावरने इस समयके अपने उतावलेपनके ऊपर एक शेर लिखा—

"जो उतावला होकर जल्दीमे अपनी तलवारपर हाथ रखेगा,
वह उस हाथको अफसोस करते हुये अपने दातोसे काटेगा।"

उलुग-मदरसेमे चादर-सफेदके नीचे ठहरकर वावर शहरके वचानेकी तैयारी करने लगा। नगरके वहुतसे निकम्मे और फजूलके "गाजी" हर मुहल्ले और कूचेसे वडी सख्यामे आकर मदरसेके फाटकपर "पैगम्वरकी जय" करते उतावलापन दिखला रहे थे। तजर्वेकार लोग रोकनेकी कोशिश करते, तो उन्हे वह गाली सुनाते। वात न मानकर वह गये और उज्वेकोसे खूब पिटे। वावरने पीछे हटते समय रक्षा करनेके लिये सेना भेजी, लेकिन तवतक गाजियोकी भीड पिटकर तितर-वितर हो चुकी थी। अव सिपाहियोको नगरके मुहासिरेकी लडाई लडनी थी। वीच-वीचमे सैनिक वाहर निकल छापा मारकर कितने ही गिर काट लाते। मुहासिरेके कारण नगरमे वाहरसे खूराक आनी वन्द हो गई, जिसके कारण भीषण भुखमरी और अकाल पडा। गरीव लोग कुत्तो और गदहोका मास खाने लगे। घोडोको वृक्षोका पत्ता खिलाया जाता। ऐसी स्थितिमे कितने दिनोतक अपनेको रोके रखता, समरकन्दको आत्मसमर्पण करना पडा। वावरकी वडी वहिन खानजादा विदेशी लुटेरे शैवानीके हाथमे पडी। अपनी मा और कुछ दूसरी औरतोको साथ लिये वावर आधी रातको नदीको पारकर समरकन्दसे भाग निकलनेमे सफल हुआ। जीजकमें पहुचनेपर उसे एक नई दुनिया जान पडी, जव समरकन्दकी भुखमरीके वाद उसे बढिया मोटा मास, वारीक आटेकी अच्छी तरह पकी हुई रोटी, मीठे तरवूजे और स्वादिष्ठ अगूर भारी परिमाणमे मिले—चरम अकालसे वह चरम सुकालमे पहुच गया था। अव सोग्द (अन्तर्वेद)का स्वामी शैवानी था। उसने मुगोलिस्तानी खान महमूदको अगूठा दिखला दिया, जिसने जाकर ताशकन्द-शाहरुखियाको हाथमे किया। जाडोमे सिर नदीके जम जानेपर उसे आसानीसे पार हो शैवानीने ताशकन्द शाहरुखियाको लूटा। १५०२ ई०मे मुगोलिस्तानी राज्यपाल सुल्तान अहमद तम्वोलने अपने मालिकसे विद्रोह करके शैवानीको सहायताके लिये वुलाया। शैवानीने पहुचकर महमूद खानको वुरी तरहसे हराया, और उसके साथ आया वावर मिर्जा जान वचाकर फरगानाके दक्षिणवाले पहाडोमे भाग गया। मुगोलिस्तानी खानको दौलत सुल्तान खानम (अपनी वहिन), तथा अम्वा सुल्तान खानम, कुरुज खानम आदि कई राजकुमारियोको जून १५०३ ई०मे भेट देनी पडी। शैवानी फरगानाके मुख्य नगरोमे उज्वेक छावनिया रखकर लौट आया।

१५०५ ई०तक सारा फरगाना, ख्वारेज्म और हिसार (ताजिकिस्तान) आदिके इलाकोपर भी शैवानीका अधिकार हो गया। अव वह अपनी सारी सेना ले तेमूरके द्वितीय पुत्र उमरशेखके वशज हुसेन वेकरासे खुरासान छीननेके लिये दक्षिणकी ओर वढा। पहले साल वह वलख नगरतक अपना अधिकार करके समरकन्द लौट गया। हुसेनने अपने पडोसी ईरानी शाह इस्माईल और वावरसे भी

मदद मागी। वावर ९०९ हि० (१५०३–४ ई०)मे कावुलका राजा वन चुका था। वह भी हुसेनकी मददके लिये खुरासान आया, लेकिन तवतक हुसेन मर चुका था, और उसके दोनो वेटोमें राज्यके वटवारेको लेकर भयकर फूट पैदा हो गई थी। शैवानी जैसे भयकर शत्रुको शिरपर देखकर भी ऐसा करना वावरको वहुत वुरा लगा—"दस फकीर एक चट्टानपर वैठ सकते है, किंतु दो राजाओंके लिये सारा भूमडल छोटा है।" वावर निराश होकर लौट गया। ९१२ हि० (१५०७ ई०)के वसन्तमे शैवानी फिर सेना ले वक्षु पार हुआ, और रास्तेके इलाकोको जीतते जूनमे मुरगाव नदी भी पार हो गया। खुरासानकी राजधानी हिरात नगरी तुरन्त उसके हाथमे आ गई। वहाका किला कुछ देरतक प्रतिरोध करता रहा, लेकिन दो-तीन सप्ताह वाद किलेने भी आत्मसमर्पण किया। शैवानीने हिरातके साथ इतनी मेहरवानी की, कि एक लाख तका कर लेकर कला और विज्ञानके इस महान् केन्द्रको अपने लुटेरे उज्वेकोंके हाथो वरवाद होने नही दिया। शैवानीने अपनी सेनाके साथ शहरके वाहर डेरा डाला। हुसेन वेकराके वेटे मुजफ्फर हुसेन मिर्जाकी वीवीके सौंदर्यको सुनकर अट्ठावन वर्षका शैवानी उसपर मुग्ध हो गया। उसने उसे अपने हरममे दाखिल किया। हिरातके राजभवनमें उसे भारी परिमाणमे सोने-चादीके वर्तन, वहुमूल्य लाल, हीरे, मोतिया तथा दूसरे रत्न प्राप्त हुये।

उसकी सेनाने वाकी तेमूरी राजकुमारोको हराते सारे खुरासानको अपने हाथमे कर लिया। वावर शैवानीसे हारा और जला-भुना हुआ था, इसलिये उसे अपने शत्रुमें केवल दोष ही दोष दिखलाई पडते थे। शैवानी कवि था, और उसकी कवितायें वुरी नही होती थी, लेकिन "वावरनामा"मे वावर लिखता है—"विल्कुल अज्ञ होते भी उसने ढिठाई दिखलाते हुये काजी अख्तियार और मुहम्मद मीर युसुफ (खुरासाने प्रसिद्ध मुल्ला) जैसे विद्वानोंके सामने कुरानकी व्याख्या करते व्याख्यान दिया। उसने कलम उठाकर सुलेखक मुल्ला सुल्तान अली और चित्रकार वेहजादके लेखो और चित्रोका सशोधन किया। वह अपने उवा देनेवाले शेरोको मेम्वरसे पढकर सुनाता था, और उन्हे उसने लिखवाकर चारसूमे टगवा दिया था।" आधुनिक कालके तुर्की साहित्यके एक विद्वान् वाम्वेरीने शैवानीकी कविताके वारेमे लिखा है—"शब्द और अर्थ दोनोकी दृष्टिसे शैवानीकी कविता पूर्वी तुर्की साहित्यकी सर्वश्रेष्ठ कृतियोमें है, और उससे पता लगता है, कि शैवानीको तुर्की, फारसी और अरवीका ज्ञान वहुत अच्छा था।"

शैवानीने वावरका पीछा भी करना चाहा, लेकिन कधार नगरके मुहासिरेमे असफल रहनेके कारण वह कावुलकी ओर नही वढा। १५०८ ई०मे उसने मुगोलिस्तानके खान महमूदको ताशकन्दमें जाकर हराया। खानने फरगानाके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन अपने पाच पुत्रोंके साथ प्राण खोनेके सिवा उसे कुछ हाथ नही लगा।

पूर्वी और दक्षिणी प्रतिद्वद्वियोसे निपटनेके वाद भी अभी उत्तरमे कजाक खान कासिमके दो लाख सैनिक मौजूद थे। जाडोमे दोनोंके ओर्दू घास-चारेके सुभीतेवाले स्थानमें डेरा डाला करते थे। शैवानीका ओर्दू उस समय कुरुकमे था। १५०९-१०ई०के जाडोमे एक दिन कासिम खान अपनी सेनाके साथ आ पहुचा। उज्वेकोने अपने लूटके मालको छोड दौडकर शैवानीको खवर दी। शैवानीने तुरन्त पीछे हटनेके लिये नगारा वजवाया और जाडोंके अन्ततक उज्वेक वडी अस्तव्यस्त अवस्थामें समरकन्द पहुचे।

यह कह चुके है कि मगोल कवीलोंके अवशेष हजाराके नामसे अफगानिस्तानके पश्चिमी पहाडोंमे रहते थे। शैवानी १५१० ई०मे उनपर आक्रमण करनेके लिये हिंदूकोहके भीतर घुस गया। लेकिन लौटते वक्त हेल्मन्दकी उपत्यकामे उसे आदमियो और पशुओकी वडी क्षति उठानी पडी। खुरासानमें पहुचनेपर उसके पास दो सेनाए आ गई और उसने क्षतिग्रस्त सेनाको तुर्किस्तान जानेकी छुट्टी दे दी।

शैवानीका प्रतिद्वद्वी ईरानी शाह इस्माईल सवसे अधिक शक्तिशाली था। उसने आजुरवाइजानी तुर्क-वश (श्वेत-मेष)का उच्छेद करके सारे ईरानपर अधिकार करते हुये सफावी-वश (१४९९–१५२८ ई०)की स्थापना की थी। वह कैसे देख सकता था, कि पूर्वी ईरान-खुरासानपर उज्वेकोका

अधिकार हो। ९१६ हि० (१० IV १५१०–१ III १५११ ई०)मे उसने खुरासानपर आक्रमण किया। उस समय उज्बेकोकी सेना हिरातमे एकत्रित हुई थी। शैबानीकी सेना इस्माईलकी अपेक्षा कम थी। वह हिरातमे छावनी छोड मेर्वकी ओर लौटा। मशहदकी तीर्थयात्रा समाप्त कर शाह इस्माईलने उज्बेकोका पीछा किया। तूकेराबादके पास दोनो सेनाओमे जबर्दस्त लडाई हुई, शैबानी हारा और शाहकी सेना उसे मेर्वकी दीवारोतक खदेड ले गई। शैबानी मेर्वमे दुर्गबद्ध हो गया और शहरके आस-पास शाह इस्माईलने घिरावा डाल दिया। इस तरहकी कायरता दिखलानेके लिये शाहने शैबानीको फटकारते हुये चिट्ठी लिखी। यद्यपि शैबानी इस तरहकी व्यर्थकी वीरता दिखलानेका नही, बल्कि कल-बल-छलका पक्षपाती था, लेकिन उस वक्त अपने बीस हजार घुडसवारोको लिये इस्माईलकी चालीस हजार सेनाके साथ लडनेके वास्ते मैदानमे चला आया। लोगोने उसे प्रतीक्षा करनेकी सलाह दी, लेकिन उसने नही माना और सामने और पीछे दोनो तरफसे आक्रमण कर दिया। इसमें शक नही, उज्बेकोने युद्धमें बडी बहादुरी दिखलाई, लेकिन सख्यामे दूने सफावी भी लडनेमे निर्बल नही थे। उज्बेक-सेना छिन्न-भिन्न हो गई, शैबानी पाच सौ सवारोके साथ भागकर पशुओके एक हातेमे जा छिपा। दूसरी तरफ द्वार न होनेसे नदी-तटकी ओर प्राकारसे उज्बेक सैनिक एक दूसरेके ऊपर कूदे, खानको कूदनेमे चोट आई। दुश्मनोने उसके शरीरको आदमियोके ढेरमेसे निकालकर मार डाला, और शैबानीका सिर काटकर शाहको भेट किया। उसने आज्ञा दी, कि शैबानीके शरीरको टुकडे-टुकडे करके राज्यके भिन्न-भिन्न भागोमे प्रदर्शित किया जाय। इस्माईलने उसके चमडेमे भूसा भरकर तुर्क-सुल्तान बायजीदके पास भेज दिया। बायजीद सुन्नियोका सबसे बडा नेता था, और इस्माईल शियोका, इसलिये उसने तुर्क-सुल्तानके पास सुन्नी भाई तथा महान् उज्बेक-नेताकी इस दुर्गतिको दिखलाना चाहा। शैबानीकी खोपडीमे सोना मढवाकर इस्माईलने शराबके प्यालेके तौरपर प्रदर्शन कराया।

इसमे शक नही, शैबानी उत्तरी घुमन्तुओका अन्तिम सबसे बडा विजेता था, जिसने मध्य-एसियामे एक बडे राज्यकी स्थापना की। लेकिन इसी समय ईरानमे सफावी जैसा शक्तिशाली वश स्थापित हो गया, जिसने ईरानको शिया घोषित करके पूर्वी और पश्चिमी सुन्नी देशोके बीचमे पच्चरका काम किया। वक्षु (आमू-दरिया)तक इस्माईलने बढकर फिर उसे एक बार ईरान और तुरानके बीचकी सीमा बनाई।

२ कूचुनजी (१५१२–३० ई०)

शैबानी घुमन्तू राजवश था, इसलिये हजारो वर्षसे स्थापित अपनी पुरानी व्यवस्थाके अनुसार उसके हरएक राजकुमारको छोटे-छोटे प्रदेशका राजा बनाया जाता था। वह अपने ऊपर एकको खान मानते थे। खानके मरनेपर वशके सभी कुमार मिलकर उसका उत्तराधिकारी खान तथा आवश्यकता होनेपर कलगा (युवराज) चुनते थे, इसमे योग्यतासे अधिक रिश्ते और उमरमे सर्वज्येष्ठका ख्याल काम करता था।

मेर्वमे शैबानीकी जो दशा हुई, उसकी खबर सुनकर बाबर काबुलसे अपने पूर्वजोके देशकी ओर चला, लेकिन नेताके मर जानेसे शैबानी-सेना नष्ट नही हो गई थी। जानीबेग सुल्तान उस समय उपराज था, जिसके झडेके नीचे फिर बडी सेना इकट्ठी हो गई। इसी सेनाने मुगोलिस्तानका कत्ले-आम किया था, जिसमे "तारीख रशीदी"का लेखक इतिहासकार हैदर बाल-बाल बचा था। बाबर अपनी सेनाले आमू पारकर खुत्तलके प्रधान शहर दश्तेकुलाकमे पहुचा। यहा वक्षुके पास फिर दोनो सेनाओमे झडप हुई, लेकिन शक्ति आजमा लेनेपर दोनोने लडनेकी हिम्मत नही दिखलाई। बाबर वक्षु पार हो कुदुज लौट गया और शैबानी-सेनापति हमजा सुल्तान हिसारको। मेर्वसे शाह इस्माईलने शैबानीकी बीबी खानजादा बेगमको भेज दिया था, जो अपने भाई बाबरसे जा मिली। बाबरने इसके लिये इस्माईलको बहुत धन्यवाद देते हुये अन्तर्वेद जीतनेके लिये उससे सैनिक सहायता मागी।

शाह इस्माईलकी भेजी सेनाको भी साथ ले बाबर फिर पहाडी रास्तेसे आमू दरिया पारकर उत्तरकी

ओर बढा । आसकी एक शाखा मुरखावपर पुलेसगीनको हमजा सुल्तान दखल किये हुये था । बावरको मालूम हो गया, कि दुश्मन बहुत शक्तिशाली है, तो भी साहस करके पुलकी आशा छोड नदी पार करनेकी कोशिश की । लेकिन, जल्दी ही उसे एक दुर्गम रास्तेमे आवदराकी ओर लौटना पडा । उज्बेक उसका पीछा कर रहे थे । आधी रातको खबर लगी, कि उज्बेक नजदीक आ गये है । बावरने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया और हमजा सुल्तान तथा मेहदी सुल्तान बावरके बन्दी बने । बावर चगताइयोकी पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खानका नाती था, इसलिये चगताई-वंशज होनेका दावा करता था । उसने इस सफलताके बाद और भी आगे बढकर दरबन्दे-आहनी (लौहद्वार)तक उज्बेकोका पीछा किया । यार मुहम्मद नज्म-सानी (द्वितीय तारा)ने करशीको लूटा और लोगोको कत्ल किया । अब पामीरमे हिसार और खुत्तलान, खोजर तथा आमूके दक्षिण कुदुजके प्रदेश बावरके हाथमे आ गये । दर्रा-खैबरसे दरबन्दतकके प्रदेशको कुछ समयके लिये अपने हाथमे करके बावरको प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी, लेकिन वह जबतक समरकन्दमें पहुचकर तेमूरके तख्तपर नही बैठता, तबतक अपनी सफलतासे सन्तुष्ट नही हो सकता था । उसके इस मनोरथको पूरा करनेके लिये शाह इस्माईलने भारी सेना भेजी । उज्बेक सेनापति उबैदुल्लाने करशीमे मोर्चाबन्दी कर रखी थी, बाकी उज्बेक समरकन्द भाग गये थे । बावरने साठ हजार सयुक्त सेनाके साथ आक्रमण करके उबैदुल्लाको हराकर बाकी उज्बेकोको भी किजिलकुमके रेगिस्तानमे भगा दिया । दूसरे उज्बेक सुल्तानोको जब पता लगा, तो सामने होकर लडनेकी जगह उन्होने तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका)की ओर भागना ही अच्छा समझा । बावर अब सारे अन्तर्वेदका स्वामी था ।

८ अक्तूबर १५११ ई०को समरकन्दमे बावर तेमूरके सिहासनपर बैठा । इस वक्त उसे कितनी प्रसन्नता हुई होगी, इसे कहनेकी अवश्यकता नही । उसे क्या पता था, कि यह आठ महीनोकी चादनी है । हा, उसके बाद उसे एक और भी विशाल और वैभवशाली साम्राज्यको भारत मे स्थापित करनेका मौका मिलेगा । इस समय "बावरका राज्य" तारतारी रेगिस्तानोसे गजनी और काबुलतक था, जिसमे कुदुज, हिसार, समरकन्द, बुखारा, ताशकन्द, सेरम, खाकन्द (फरगाना) आदि नगर सम्मिलित थे । यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि खुरासान अब शाह इस्माईलका था ।

लेकिन शाहकी मदद बावरके लिये बहुत महगी पडी । उसने शाहके नामका खुतबा पढवाया । एक शिया बादशाहके नामका खुतबा पढे जाते देख सुन्नी अन्तर्वेद कैसे सन्तुष्ट हो सकता था ? बावरने स्वय ईरानी पोशाक धारण की, और अपनी सेनाको भी वैसा ही करनेका हुक्म दिया । खासकर ईरानी टोपी धारण करनी अनिवार्य कर दी, जिसमें शियोके बारह इमामोके चिह्न बने हुये थे, और पोशाकमे एक लम्बी लाल पट्टीको लगानेके लिये कहा, जो कि बीचमे होकर पीठके पीछे लटकती थी, जिसके कारण ईरानियोको किजिल-बास (रक्त-केश) कहा जाने लगा । बावर जरूर समझता होगा, कि शिया-धर्म, शियोकी वेश-भूषा तथा शिया इस्माईलको अपना प्रभु स्वीकारकर वह सुन्नियोका कोप-भाजन बनेगा, लेकिन उसके लिये और कोई रास्ता नही था । प्रजाके असन्तोषकी खबर उज्बेकोको लगी, और १५१२ ई०के वसन्तमे एक उज्बेक-सेना ताशकन्दकी ओर बढी, दूसरी रेगिस्तानके रास्ते उबैदुल्लाके नेतृत्वमे यतीकुडुप (सप्तकूप) होती बुखाराकी ओर । ताशकन्दमे मुकाबिला करनेके लिये बावरने सेना भेज दी, और स्वय उबैदुल्लाकी ओर चला । कुलमलिकमें दोनोमें जबर्दस्त सघर्ष हुआ, लेकिन यह चमत्कारसे कम नही था, जो कि १८ अप्रैल १५१२ ई०मे बावरकी चालीस हजार सेनाको तीन हजार उज्बेकोने हरा दिया—अर्थात् एक उज्बेक दस बावरी सैनिकोसे भी अधिक युद्धक्षमता रखता था । पीछे भारतपर विजय प्राप्त करनेके समय हर एक बावरी सैनिक शायद हिदुस्तानी सैनिकोसे दसगुणीसे अधिककी क्षमता रखता था । इसमे कारण नागरिक विलासितापूर्ण जीवन तथा पारस्परिक फूट हो सकती थी ।

कुलमलिकमे हारनेके बाद बावरके लिये समरकन्दमे भी शरण नही थी । अब वह शाह इस्माईलके पास जानेके लिये दरबन्दकी ओर चला । दरबन्दमे भी मोर्चाबन्दी हो चुकी थी । शाह इस्माईलने

यार मुहम्मदके नेतृत्वमें साठ हजार तुर्कमान भेजे, जिन्होने उज्बेक सेनापति हमजाको हराकर लौहद्वार (दरबन्द) पार हो खोजार (गुजार), करशीको लूटा। करशीमें पन्द्रह हजार नागरिकोको बिना यह ख्याल किये कत्ल कर डाला गया, कि वह उज्बेक है या स्थानीय नागरिक, बूढे-बच्चे है, या स्त्री। इसी कत्ले-आममें कवि बीनाई भी मारा गया। शिया अपनी धर्मान्धताका परिचय दे रहे थे। बाबर समझ गया, कि अब उसे अन्तर्वेद क्षमा नही कर सकता, इसलिये अपनेको उसने अलग कर लिया। इसके बारेमें हैदरने लिखा है—"इस्लाम (सुन्नी-धर्म)का प्रभाव कुफ्र और अविश्वासके ऊपर विजय पाने लगा, सच्चे धर्मकी विजय घोषित हुई। आक्रमणकारी बुरी तरहसे हारे, और उनमेंसे अधिकाश युद्धक्षेत्रमें मारे गये। गिज्दुवानके बाणोने करशीके खूनका बदला लिया। मीर नजीम तथा दूसरे सभी तुर्क-मानोके मुख्य सेनानायक नगरमें भेज दिये गये।"

मीर नजीमके दबदबेके बारेमें वही इतिहासकार लिखता है—उसके रसोईखानेमें प्रतिदिन सौ भेडे, असख्य मुर्गे-मुर्गिया, हस, बतके और चालीस खर्वार (५६० सेर ?) दालचीनी, केसर और दूसरे मसाले इस्तेमाल होते थे। उसके खानेकी तश्तरिया या तो बिलकुल सोनेकी थी या बहुत मूल्यवान् चीनी मिट्टीकी। अब बाबरने सदाके लिये अन्तर्वेदसे बिदाई ली, और वह काबुल लौट गया।

जिस वक्त दक्षिणमें बाबर-इस्माईल और उज्बेकोका इस तरह सघर्ष हो रहा था, उसी समय मुगोलिस्तानके खानने पूरबसे अन्दिजानके रास्ते प्रधान उज्बेक-सुल्तान सुयुन्जिक खानके ऊपर आक्रमण किया और जरफ्शा-उपत्यकामें समरकन्दसे चालीस मील पूर्व बिशकन्द (पजकन्द) में उसे पूरी तौरसे हरा दिया। यह वह समय था, जब कि बाबर ईरानी सेना लेकर समरकन्दकी ओर बढ रहा था।

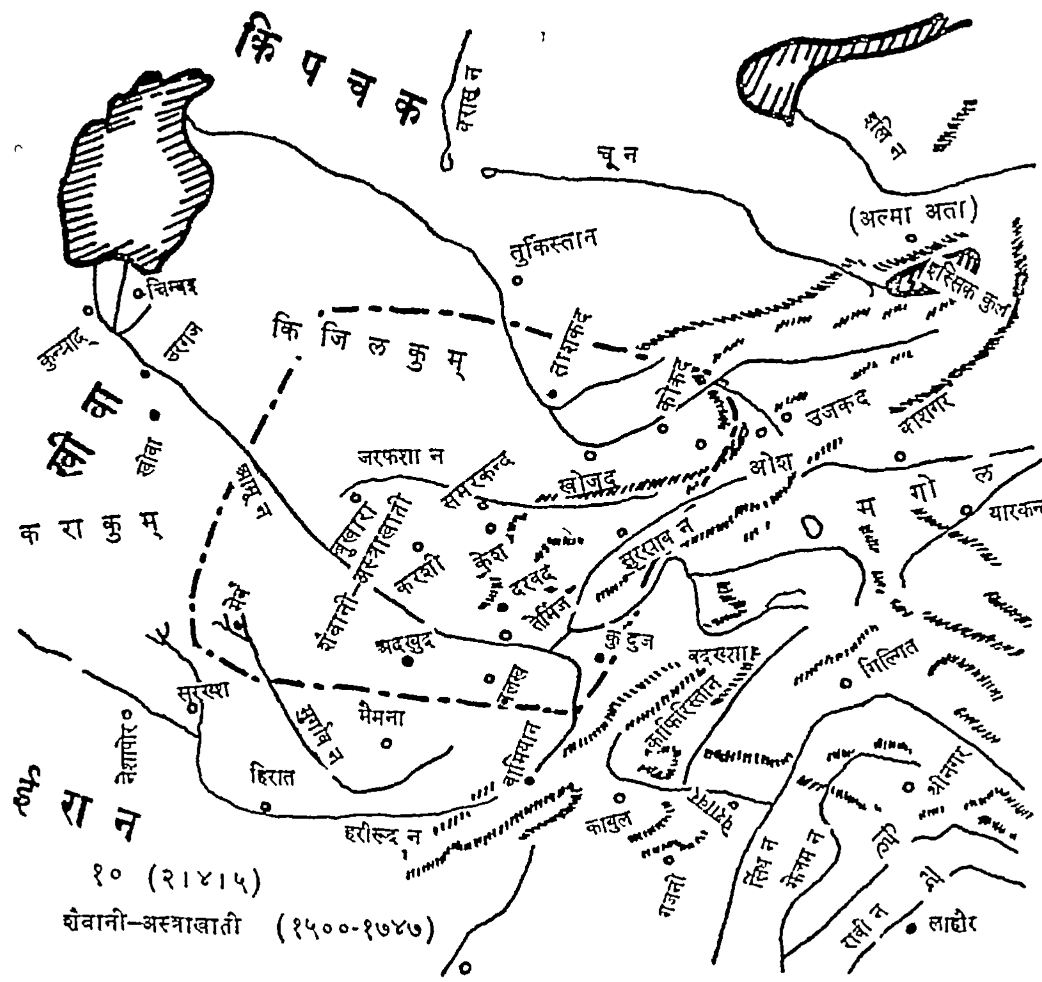

१० (२।४।५)
शैबानी–अस्त्राखाती (१५००-१७४७)

बुखारासे उत्तर गिज्दुवानमें शाह इस्माईलके सैनिकोका जानीबेग-सुल्तानने किस तरह मुकाबिला किया, इसे "तारीख रशीदी"में मिर्जा हैदरके शब्दोमें सुनिये—

"उज्बेक सुल्तान उसी रातको किलेके भीतर प्रविष्ट हुये, जिस रात तुर्कमान (इस्माईलके सैनिक) और बाबर घुसे थे। तुर्कमान और बाबर महलके सामने छावनी डालकर मोर्चाबन्दीके यंत्रोंको ठीक-ठाक करनेमें लगे हुये थे। सूर्योदयके समय उन्होंने उपनगरमें अपनी सेनाओंको शत्रुकी ओर मुह करके खड़ा किया। दूसरे पक्षने भी लड़ाईकी तैयारी की। उज्बेकोंके उपनगरमें होनेसे युद्धक्षेत्र बहुत सकरा था। उज्बेक-पैदल-सेनाने चारों ओरसे बाणोंकी वर्षा करनी शुरू की, और जल्दी ही इस्लामकी ताकतने कुफ्र और नास्तिकताके हाथको तोड दिया, सच्चे धर्मकी विजय घोषित हुई। इस्लामके विजयी वीरोंने धर्मविद्वेषियोंके झडेको गिरा दिया। तुर्कमान पूरी तौरसे हारे, उनमेंसे अधिकाश लड़ाईके मैदानमें मारे गये। करशीमें तलवारसे जो घाव हुये थे, उनको बदलेके बाणोंकी सिलाईने सी दिया। विजेताओंने मीर नजीम और सभी तुर्कमानोंको नरकमें भेज दिया, बादशाह (बाबर) निराश और दुःखी हो हिसारकी ओर लौटा।"

बाबरका यह अन्तिम प्रयत्न था। उसने काबुल लौटकर अब अपनी शक्तिको हिन्दुस्तान जीतनेमें लगाया।

गिज्दुवानके युद्ध ९१८ हि० (१९ III १५१२–७ II १५१३ ई०)के बाद शैबानी सुल्तानोंने अपने तुरा और यास्साक (कानून)के अनुसार मुहम्मद शैबानीके चचा कूचुनजीको अपना खान बनाया और सूयुन्जिक कलगा (युवराज)के पहले ही मर जानेके कारण जानीबेग कलगा बनाया गया। लेकिन वह भी पहले ही मर गया। जानीबेगने शैबानी सुल्तानो (राजकुमारो)मे इलाके बाट दिये, जिसमें कूचुनजीको समरकन्द, सूयुन्जिकको ताशकन्द, उबैदुल्लाको कराकुल-करशी-बुखारा और जानीबेगको समरकन्द-मियानकुल-कर्मीना मिला।

ताशकन्दपर आक्रमण करनेवाली सेनाका सचालक सूयुन्जिक था। उसने नगरपर अधिकार कर लिया। १५१२ ई०मे सुल्तान सईद खान मगोलिस्तानीने पाच हजार सेना ले फरगानासे होकर सूयुन्जिकके ऊपर आक्रमण किया। विश्वकन्दमे हार खाकर सुल्तान सईद अन्दिजान पहुचा। गिज्दुवानमे भारी विजय प्राप्त करनेके बाद सूयुन्जिकने सईदकी ओर मुह किया, लेकिन सईदने अन्दिजान, अक्सी और मरगिनानमे मजबूत सैनिक छावनिया रख दक्षिणके पहाड़ोका रास्ता लिया। सईदने कजाकोंके शक्तिशाली खान कासिमको सहायताके लिये बुलाया, जो कि शैबानियोका भी शत्रु था। दश्तेकिपचकके गर्भमे रहनेवाले इस खानके पास बड़ी भारी सेना थी। वह सईद खानकी मददके लिये दक्षिणकी ओर चला। सैरामके राज्यपालने बिना लडे ही किलेकी कुजी कासिमके हाथमे दे दी। फिर कजाकसेना रास्तेके नगरो और गावोको लूटती-पाटती ताशकन्दकी ओर चली। १५१३-१८ ई०मे सूयुन्जिक कजाक खानके प्रतिरोधमे ही लगा रहा। १५१५ ई०मे कासिमने किसी दूसरी दिशामे लूट-पाट करनेके लिये अभियान किया, तब कजाकोंसे छुट्टी पा उज्बेक फरगानाकी ओर मुडे। सुल्तान सईद खान बिना मुकाबिला किये ही काशगरकी ओर भाग गया, जहा उसने कई साल शासन किया। फरगानापर फिर उज्बेकोंका अधिकार हो गया।

गिज्दुवानकी विजयमें शाह इस्माईलकी सेनाकी जो गति हुई थी, उससे उज्बेकोंकी हिम्मत बढ गई और उन्होंने एक बार बलखतक घुमकर खुरासानमें लूट-पाट की, लेकिन जब शाह इस्माईलकी सेनाके प्रहारका भय लगा, तो वह पीछे हट आये। शाह इस्माईल १५२३ ई०मे मर गया, और उसका बालकपुत्र तहमास्प (१५२४–७६ ई०) तख्तपर बैठा। इस समय फिर उज्बेकोको मौका मिला और १५२५ ई०मे उबैदुल्ला एक बडी सेना ले मेर्व जीतते खुरासानकी ओर बढा। अप्रतिरक्षित मशहद नगरने आत्मसमर्पण किया। उबैदुल्ला तूसको भी लेते अस्त्राबाद पहुचा, और अपने पुत्र अब्दुल अजीजको वहाका शासक बना बल्खकी ओर लौटा। आजुरबाईजानसे सेना आई, लेकिन उसे उज्बेकोंने बोस्तामसे हरा दिया, और अस्त्राबाद अब्दुल अजीजके ही हाथोंमे रहा।

उबैदुल्लाने जाडोंको गोरियान (गोरी सुल्तानोंकी मूलभूमि)मे बिताया। ९३४ हि० (२७ सितम्बर १५२७–१७ अगस्त १५२८ ई०)में उसने सात मासतक हिरातका मुहासिरा किया। शाह तहमास्प एक बडी सेना ले उसके मुकाबिलेके लिये आया, जिसे देख उबैदुल्ला हट गया।

फिर उसने ईरानी शाहसे मुकाबिला करनेके लिये भारी तैयारी शुरू की, और डेढ लाख सेना लेकर दक्षिणकी ओर चला—छिङ्-गिस्के बाद इतनी बडी सेना वक्षु पार नही हुई थी। यद्यपि ईरानी सेनामे पचास हजार ही आदमी थे, लेकिन वह बडे तजर्बेकार और अनुशासन-सपन्न थे। उन्होने (टर्कीके) उस्मानी तुर्कोंके साथ अनेक सफल लडाइया लडी थी। युरोपने मगोलोसे सीखकर बारूदके हथियारोमे बहुत तरक्की कर ली थी। उस्मानी तुर्कोंने उनसे तोप और पलीतेकी बन्दूकोका इस्तेमाल सीखा था। उस्मानी तुर्कोंके प्रतिद्वन्द्वी सफावी इन नये शक्तिशाली हथियारोके विना कैसे सफलता पा सकते थे ? आविष्कारोके इतिहाससे मालूम है, कि युद्ध-सम्बन्धी आविष्कार सबसे जल्दी प्रचलित हो जाते है। तहमास्पकी सेनामे दो हजार तोपची और छ हजार बन्दूकची थे। उज्बेकोकी सेना यद्यपि तीनगुनी थी, लेकिन उनके हथियार वही पुराने—तीर-धनुष और तलवार-भाले थे। शाह तहमास्प मशहद और हिरातके रास्ते जामके समीप पहुचा—मुख्य सेना मशहदमे डेरा डाले पडी थी। बीस हजार ईरानी सवारोको दुश्मनकी छावनीका पता लगानेके लिये भेजते हुये हिदायत दी गई, कि कोई आदमी अपनेको खाइयोसे बाहर न दिखलाये। इधर मत्रशास्त्रियोको लगा दिया गया था, कि वह जादू करके शत्रुको ऐसा बना दे, कि उनमेंसे एक भी बच निकलने न पाये। अभी तैयारी पूरी नही हुई थी, कि शाह तहमास्पने युद्ध करनेकी ठान ली। २५ सितबर १५२९ ई० को जाममे दोनो सेनाये एक दूसरेसे भिडी। यह ९ मुहर्रम करबलामें इमाम हुसेनकी शहादतका दिन था, इसलिये शिया शाहने इसी पवित्र दिन युद्ध छेडना अच्छा समझा। बीचमे तोपोको रक्खे बीस हजार चुनी हुई सेना खडी थी, जिनके साथ शाह भी था। उज्बेक पार्श्वोंपर आक्रमण कर दोनो छोरोको पीछे ढकेल पीछेसे भी डेरोको लूटने लगे। लेकिन पार्श्वोंके इस प्रकार ढकेल दिये जानेपर भी केंद्र मजबूत रहा। ठीक समयपर तोपोको बाधनेवाली जजीरे गिरा दी गई और वह आग और गोले उगलने लगी। तिगुना जनबल रखते हुये भी उज्बेक घास-मूलीकी तरह कटने लगे। युद्धक्षेत्रमे उनके पचास हजार आदमी काम आये, लेकिन उन्होने बीस हजार अपने शत्रुओका भी सहार किया। उज्बेकोकी भारी हार हुई।

तहमास्पके विजयसे बाबर प्रसन्न नही शकित हो उठा। उसे डर लगा, कही वह खुरासानसे हमारे राज्यकी ओर भी न बढ आये। बाबरने अपने बेटे हुमायूको पचास हजार सेना देकर आगे बढनेका हुक्म दिया—हुमायू उस वक्त पिताकी ओरसे बदख्शाका राज्यपाल था। बेटेको इस तरह रवाना करके बाबर स्वय मुगोलिस्तानी राजकुमार सुल्तान वेसके साथ समरकन्दकी ओर चला। वेसके भाई शाह कुल्लीने हिसारको ले लिया। तुरसुन मुहम्मद सुल्तानने त्रेमिज और कबादियानपर हाथ साफ किया। जिस समय हुमायू इस प्रकार, कूचुनजी खानको तहस-नहस करनेमें व्यस्त था उसी समय बाबर आगरामें कूचुनजीके दूत अमीन मिर्जाकी बडी आवभगत कर रहा था। भोजके बाद सिरकमाश मलमलका जामा, और बहुमूल्य बटन, सोना तथा दूसरी चीजें भेंटमे पा ३१ जनवरी १५२९ ई०को उज्बेक-दूत बाबरसे विदा हुआ। दूत अमीन मिर्जाको एक खाडा, एक कमरबन्द, एक हाथीका अकुश तथा कई हजार तका इनाम मिला था। इसी तरह दूतकी बीबी मेहरबान खानम और उसके पुत्र पूलादको भी बाबरने भेट-इनाम देनेमे बडी उदारता दिखलाई। दूतको क्या पता था, कि जिस समय पिता उसकी इतनी खातिर कर रहा है, उसी समय उसका बेटा (हुमायू) उज्बेकोंके राज्यमे आग और तलवारका जौहर दिखला रहा है।

लेकिन इस भीषण सग्रामके खतम करनेका समय यकायक आ गया, जब कि १५३० ई०में कूचुनजी मर गया और उसी सालके दिसम्बरमे बाबरकी प्रार्थना स्वीकृत हुई—हुमायू बीमारीसे बच गया, लेकिन उसके बदलेमें अल्लाने बाबरको बुला लिया।

३ अबूसईद खान (१५३०-३२ ई०)

कूचुनजी (अबुल्खैर-पुत्र)के राज्यकालमें ही उसके उत्तराधिकारी (कलगा) चुने गये सूयुन्जिक तथा जानीबेग खोजा (मुहम्मद-पुत्र) मर गये, इसपर कूचुनजीके पुत्र अबूसईदको खान चुना गया। पिताकी भाति इसने भी अपनी राजधानी समरकन्दमें रक्खी। लेकिन, उज्बेक सैनिक-

शक्तिका सचालक अब उबैदुल्ला था, जो बुखारामे रहता था। ईरानियोसे एक बार बुरी तरहसे हार खानेके बाद भी उबैदुल्ला फिर खुरासानकी ओर बढना चाहता था, मगर अबूसईद और दूसरे सुल्तान (राजकुमार) इससे सहमत नही थे। बारूदके हथियारोने इन घुमन्तुओकी हिम्मत तोड दी थी। ईरानका मछलीवाला झडा एक बार फिर सारे खुरासानपर फहराने लगा। तहमास्पने अपने भाई बहराम मिर्जाको अपना उपराज बनाकर खुरासानका शासक बनाया। उबैदुल्ला सेनाका प्रधान-सेनापति था, इसलिये उसने राय न होनेपर भी १५३१ ई०में मशहदकी ओर अभियान किया, लेकिन वहासे हार खाकर भागनेके सिवाय कुछ हाथ नहीं लगा। घुमन्तू टिड्डी-दलकी तरह हारसे भय खाकर सदाके लिये पीछे नही भाग सकते। १५३२ ई०में उज्बेक-सेनाने हिरात, मशहद, अस्त्राबाद और सब्जवारतकके सारे प्रदेशको डेढ सालतक लूटा-बरबाद किया। घिरावेमे पडे हिरात शहरके लोगोने अन्नाभावमे कुत्ते-बिल्लियोको खाकर खतम कर दिया। शहर आत्म-समर्पण करनेकी सोच रहा था, इसी समय तहमास्पको पश्चिममे उस्मानी तुर्कोंसे छुट्टी मिल गई और वह खुरासानकी ओर बढा, जिसपर उबैदुल्ला लौट गया। ९३९ हि० (३ VIII १५३२–२४ VI १५३३ ई०) मे अबूसईद मर गया।

४ उबैदुल्ला, महमूद-पुत्र (१५३२–४० ई०)

विजेता मुहम्मद शैबानीका भतीजा उबैदुल्ला खान बनकर और भी निरकुश हो गया। १५३५ ई० में उसने फिर खुरासानमे लूट-मार करनेके लिये सेना भेजी, और अगले साल खुद खुरासानकी ओर बढा। चार मासतक हिरातपर उसका अधिकार रहा, जिसमें उसने शियोपर बहुत अत्याचार किये। शाह तह्मास्पका पूरबमे ही जबर्दस्त शत्रु नही था, पच्छिममे उस्मान अली तुर्कोंसे उसका सघर्ष चलता रहता था, जिसमे राजनीतिके साथ-साथ शिया-सुन्नीका झगडा भी शामिल हो जानेसे युद्धका रूप बहुत भीषण होता था। जब वह अपनी अधिकाश सेना ले पूरबकी ओर बढता, तो पच्छिमका शत्रु प्रहार करने लगता, और जब वह पश्चिमकी तरफ मुह करता, तो पूरबकी ओरसे प्रहार होने लगता। जब शाह तहमास्प खुरासानमे उबैदुल्लाके खिलाफ सेना लेकर आया, तो उबैदुल्ला देश लौट गया। तोपो और बदूकोके डरके मारे अब उज्बेक जमकर लडनेकी हिम्मत नही करते थे, लेकिन खुरासानमे लूट-मार करनेके लिये वह दो-तीन बार और जाते रहे।

इसी बीच खीवा (ख्वारेज्म)मे उज्बेकोका एक और स्वतत्र राज्य कायम हो गया, जिसके कारण वहा गडबडी फैल गई। उससे फायदा उठा उबैदुल्ला अपने अमीरोके साथ उरगजके ऊपर चढा। ख्वारेज्मके राजकुमार मदगिशलककी ओर भाग गये। उरगज पहुचकर उबैदुल्लाने उन्हे पकडनेके लिये सेना भेजी और अवानेक खान अपने सारे लोगोके साथ वेजिरसे उत्तर बेगातकिरी स्थानमे पकडा गया। उबैदुल्लाने अवानेकको उमरगाजीके हाथमें दे दिया, जिसने उसे मारकर अपने बापकी हत्याका बदला लिया। उबैदुल्लाने ख्वारेज्मको अपने पुत्र अब्दुल अजीजके हाथमे दे दिया। वहाके निवासी सर्तो (फारसी भाषाभाषियो) और तुर्कोको उबैदुल्लाने नही छेडा। उज्बेकोको चार भागोमे बाटकर उसने बुखारा (उबैदुल्ला), समरकन्द, ताशकन्द और हिसारके सुल्तानोको दे दिया। लेकिन अवानेक खानका पुत्र दीन मुहम्मद अब भी अपनी रियासत देरूनका स्वामी था। उसके पास उरगजसे भी कितने ही भगोडे आ गये थे। दीन मुहम्मदने खीवापर धावा कर दारोगा (राज्यपाल) और उसके आदमियोको हराकर मार दिया। हजारास्पका दारोगा भी जान लेकर भागा। अब्दुल अजीजकी भी हिम्मत उरगजमे रहनेकी नही हुई, और वह भी वहासे खिसका। खबर सुनकर उबैदुल्ला चार हजार सेना लेकर पहुचा, जिसके मुकाबिलेके लिये दीन मुहम्मद भी अपने तीन हजार सैनिकोके साथ तैयार था। अमीरोने मना किया, लेकिन दीन मुहम्मदने नही माना। घोडेसे उतरकर उसने अपने कुर्तेपर मिट्टी फेंकते हुए कहा—"मेरे अल्लाह, मै अपना आत्मा—प्राण तेरे हाथोमे देता हू और अपना शरीर धरनीको।" फिर उसने पीछे मुह फेरकर कहा—"मै अपनेको मरा हुआ समझता हू। तुममेंसे जिसको अपना प्राण मुझसे ज्यादा प्यारा हो, वह मेरे साथ आगे न बढे, जिसको नही वह आये।"

यह कहकर दीन मुहम्मद फिर घोडेपर चढा। उसके सैनिक भी उत्साहसे भरे उसके पीछे-पीछे चले। पहली भिडतमे ही उन्होने दुश्मनोको भारी क्षति पहुचाई। दोनो उज्बेक जातिके ही लोग थे, इसलिये समझौतेकी बात चलने लगी। इसी बीच ९४६ हि० (१९ V १५३९–८ IV १५४० ई०)मे उबैदुल्ला मर गया। इतिहासकार हैदरके अनुसार पिछले सौ सालोमे उबैदुल्ला जैसा बादशाह नही हुआ था। वह बडा ही सदाचारी, नम्र, धार्मिक, सयमी, न्यायपरायण, उदार और वीर पुरुष था। उसने अपने हाथसे कई कुरानकी प्रतिया लिखी। तुर्की-अरबी-फारसीका वह कवि तथा सगीतज्ञ था। उसके समयमे राजधानी बुखारा हुसेन मिर्जाके हिरातकी याद दिलाती थी।

५ अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र (१५४० ई०)

यह थोडे ही समय बाद मर गया, और फिर उसका भाई गद्दीपर बैठा।

६. अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र (१५४०–५१ ई०)

१५२६ ई० में बलख जीतनेके बाद उसे जानीबेगके पुत्र पीर मुहम्मदके बेटेको दे दिया गया था। अब्दुल्लतीफके समय १५४७ ई०मे अपने भाई हुमायूसे विद्रोह करके बाबर-पुत्र कामरान काबुलसे बलखकी ओर भागा। पीर मुहम्मदने उसका स्वागत किया और उसे सेना देकर लौटाया। कामराननें गोरी और बकलानपर अधिकार कर लिया। इस समय पीर मुहम्मद उसके साथ था और यहीसे सेना देकर लौट गया। प्रतिद्वन्द्वी भाईकी इस तरह सहायता करनेके लिये बादशाह हुमायू बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने बलखके विरुद्ध अभियान किया। हुमायू इस वक्त अन्दराव, तालिकान होते नारीडाडेको पार हो निलबरकी सुन्दर उपत्यकामे होते बकलान पहुचा और सेनाको ऐबकके ऊपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया——बलख-राज्यमे ऐबक एक बहुत ही उर्वर और समृद्ध इलाका है। ऐबक ले लेनेके बाद खोलम होते हुमायूकी सेना आगे बढी, लेकिन प्राकृतिक और मानवी प्रतिरोध इतने कडे हुये, कि उसे लौटना पडा। हुमायूके लौट जानेपर कामराननें बदख्शापर असफल आक्रमण किया। अब्दुल्लतीफके शासनकालमे की यही एक महत्त्वपूर्ण घटना है। ९५९ हि० (२९ दिसबर १५५१–१८ नवम्बर १५५२ ई०)में अब्दुल्लतीफ मर गया।

७. नौरोज मुहम्मद, सूयुनजी-पुत्र (१५५१-५६ ई०)

उज्बेक और उस्मानअली तुर्क-राज्योके बीचमे सुन्नियोकी घृणाके पात्र सफावी शियोका राज्य था, जिनसे दोनो लडते रहते थे। इसके कारण दोनो सुन्नी तुर्क-शासकोके बीचमे अब बहुत घनिष्ठता स्थापित हो चुकी थी, जिसे व्याह-शादीद्वारा भी दृढ करनेकी कोशिश की जाती थी। नौरोजके शासन कालमे दोनो राज्योमे दूतोका बहुत दानादान होता रहा।

८ पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५५६-६१ ई०)

पीरमुहम्मदके शासनके बारेमें यही कहा जा सकता है, कि अभी शैबानियोकी शक्तिका ह्रास होना शरू नही हुआ था।

९. इस्कन्दर, जानीबेग-पुत्र (१५६१-८३ ई०)

इस्कन्दरके शासनकालमें राज्यका सर्वेसर्वा उसका पुत्र अब्दुल्ला था। अब्दुल्लाने १५५६ ई० में बुखाराकी शाखाको खतम कर दिया। फिर ९६८ हि० (२२ IX १५६०–१३ VII १५६१ ई०)मे उसने अपने पिताको "खाकानेजहा" (दुनियाका राजा) घोषित किया। ९८६ हि० (१० III १५७८–२९ I १५७९ ई०)मे उसने समरकन्दकी शाखाको भी खतम कर दिया, जिससे पहिले १५८१

ई०मे बाबाजान मुल्तानपर उसने विजय प्राप्त कर ली थी। अब्दुल्ला असाधारण आदमी था, इसमे सन्देह नही। जीजकमे समरकन्दकी ओर आनेवाले रास्तेमे जीलानउति टाडेपर एक चट्टानके ऊपर उसने एक अभिलेख खुदवाया है—"रेगिस्तानको पार करनेवालो और जलथलके यात्रियोको मालूम होना चाहिये, कि ९७९ हि० (२६ मई १५७१–१५ अप्रैल १५७२ ई०)मे खलाफनके सहायक, महाखाकान सर्वशक्तिमान् महाखान इस्कन्दरखान-पुत्र अब्दुल्लाके तीस हजार सैनिको, और बोरका खानके पुत्रो दरवेशखान-बाबाखान आदिकी सेनाओके बीचमे युद्ध हुआ। उसकी सेनामें सुल्तानके पचास सम्बन्धी और तुर्किस्तान-ताशकन्द-फरगाना-दश्तेकिपचकके चालीस हजार योद्धा थे। तारोके सौभाग्यसूचक समायोगसे शाहकी सेनाको विजय प्राप्त हुई। उपर्युक्त सुल्तानोमे बहुत-से मारे गये, और बहुतसे बन्दी हुये। इस एक महीनेके भीतर इतना खून बहा, कि जीजक नदीके पानीके ऊपर खून तैरता रहा। ।"

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि चट्टानोपर अभिलेख खुदवानेवाले मध्य-एसियामे बहुत कम ही खान और सुल्तान हुये।

९८७ हि० (२८ II १५७९–१९ I १५८० ई०)में बाबाखानने ताशकन्द ले अपने भाई दरवेशको मार डाला। अब्दुल्लाको यह खबर खोकन्दके इलाकेमे मिली। उसने पहुचकर ताशकन्दके पास बाबाको हराकर भगा दिया। अब्दुल्लाको सूचना मिली, कि वह कजाकोके बीच जाकर छिपा है। इसपर उसने उसे पकडनेके लिये तलस और सैरामतक सेना भेजी। १५७९-८० ई०में कजाकोंने यस्सी और सरवान ले लिया, फिर सरवान-सुल्तानके नेतृत्वमे बुखारातक और बादमें समरकन्दतकके इलाकेको लूटा। इसी बीच बाबाका कजाकोके साथ झगडा हो गया और वह उनके कई सरदारोको मार, उनके खान सिगाईको हराकर भारी लूटके मालके साथ ताशकन्द लौटा।

बाबाने फिर अब्दुल्लाकी नीद हराम कर दी और १५८१ ई०में वह उसके विरुद्ध उजकदतक पहुचा। जब उसका डेरा कराताउमे पडा हुआ था, उसी समय सिगाई खान उसके पास आया, जिसे उसने खोजन्द शहर प्रदान किया। कजाकोमे और घनिष्ठ मित्रता करनेके लिये बुखारामे एक बहुत बडा जल्सा मनाया गया, जिसमें अब्दुल्लाके पुत्र अब्दुल-मोमिन और सिगाईके पुत्र तवक्कलने खेलमे अपनी सिद्धहस्तता दिखलाई। १५८३ ई०मे अब्दुल्लाने फरगाना और अन्दिजानको जीता, जिसमे कजाक तवक्कल खान उसका सहायक रहा। बाबा सुल्तानके पतनके बाद तुर्किस्तान और ताशकन्दने अब्दुल्लाकी अधीनता स्वीकार की। इसी साल पिताके मरनेपर अब्दुल्ला शैबानी-तख्तपर बैठा।

१० अब्दुला II, इस्कन्दर-पुत्र (१५८३–९६ ई०)

अब्दुल्ला अकबरका समकालीन था। बापके समयमे भी सारा राजकाज तथा दिग्विजय अब्दुल्ला ही करता रहा। अब्दुल्लाकी सबसे बडी इच्छा थी, मुहम्मद शैबानीके साम्राज्यकी सीमाओ-तक अपने राज्यको पहुचाना, जिसमें वह बहुत कुछ सफल भी हुआ। शैबानियोका वह सबसे बडा खान था। इस्कन्दरके मरनेके वक्त वह खोजन्दमें था। वही शैबानी-सुल्तानोने उसे अपना खाकान चुना, और मक्काके जमजमके पानीमे भिगोकर पवित्र किये गये सफेद नम्देके ऊपर बैठाकर उसे अपने कधोपर उठाया। इस प्रकार छिङ्-गिस् और उसके पहलेसे चली आई नम्दारोहण (सिहासनारोहण) की रसम अदा की गई। अमीर वहासे जमीन गये, जहासे गद्दी पानेकी खबर दी गई। अपने पिताके समयमें ही अब्दुल्लाने कजाक-मरुभूमिसे काबुलकी सीमातकके बहुतसे प्रतिद्वद्वियो और शत्रुओको परास्त किया, और छोटी-छोटी रियासतोमे बटे उज्बेक-राज्यको एकताबद्ध किया था। इसके राज्यकी सीमा उत्तरमे सिर नदीसे आगेकी मरुभूमितक तथा पूरबमे काश्गर और खोतनतक थी।

दक्षिणमें अकबर और सफावी शाहके साम्राज्य उसके आगे बढनेमे बाधक थे, लेकिन बलख और बदख्शाको उसने दिल्लीसे छीन लिया था ।

शाह तहमास्पके मरनेपर अब्दुल्लाकी शक्ति और भी अधिक बढी। ख्वारेज्म आपसी फूटसे अस्त-व्यस्त था, जिसका अन्त करनेवाला शाह अब्बास (१५८७–१६२९ ई०) ईरानके अत्यन्त शक्ति-शाली शाहोमेंसे था। १५८५ ई०मे शाह अब्बासको उस्मानी तुर्कोंकी लडाईमे फसा देखकर उज्बेकोने हिरातपर आक्रमण कर दिया और नौ महीनेके मुहासिरेके बाद उसपर अधिकार कर लिया। इस लडाईमे राज्यपाल अलीकुल्ली खान शामलू और कितने ही दूसरे ईरानी सेनापति काम आये । सुन्नी-उज्बेक शियोको काफिरोसे भी बदतर मानते थे, इसलिये उन्होने हिरातियोके साथ बहुत कठोर बर्ताव किया। सदियोसे शिया-सुन्नी मुल्ला कलमकी लडाई लड रहे थे, और उनके सुल्तान अपनी तलवारो द्वारा एकको मिटाकर इस भेदको मिटाना चाहते थे । तरुण शाह अब्बास जब कजवीनसे अपनी सेना लेकर खुरासानकी ओर बढा, तो अब्दुल्ला चुपकेसे मेर्व होते बुखारा लौट गया । मशहद पहुचनेपर अब्बासको पता लगा, कि तुर्कोंने गुरजी (जार्जिया)पर आक्रमण कर दिया है। अब्बास जल्दी-जल्दी उधर लौटा, लेकिन लडाईमे उसकी हार हुई। इसकी खबर पाते ही अब्दुल्ला मशहदपर चढ दौडा। उसके हरावलका नेतृत्व अब्दुल-मोमिनके हाथमें था, जिसने मशहदपर भारी अत्याचार किये । अब्दुल-मोमिन बडा ही बर्बर, क्रूर, महत्त्वाकाक्षी आदमी था। वह एक बडी सेना लिये दीन मुहम्मदके साथ जल्दी-जल्दी आगे बढा। हिरातका राज्यपाल तथा अब्दुल्लाका विश्वासपात्र सेवक कुलबाबा कोकलताश भी उसके साथ था। इस सेनाने पहले नेशापोरपर आक्रमण किया। कुछ थोडेसे आदमी पकडकर छोड दिये गये । नेशापोरको लूटकर वह शियोके पवित्र नगर मशहदपर चढे—लूट-मारके भयसे बहुतसे गावके लोग भी मशहदको सुरक्षित समझ वहा चले आये थे। इतने आदमियोके लिये अन्न कहासे मिलता ? अकाल पड गया। पहले ही प्रहारमे नगरपर उज्बेकोका अधिकार हो गया, और वहाके राज्यपाल उम्मत खान उस्ताजलूका सारा प्रयत्न व्यर्थ गया। अब्दुल-मोमिनके सैनिकोने शहरके भीतर जाकर देखा, कि "बहुसख्यक स्त्री-पुरुष, सत और विद्वान्, सभी इमाम रजाके रौजेके बाहरी आगनमे इस आशासे जमा हो गये है, कि स्थानकी पवित्रताके कारण शायद उन्हें प्राणदान मिल जाय। लेकिन, उज्बेक शिया-पवित्रस्थानको कब माननेवाले थे ? उन्होने बिना किसी विचारके जो भी चीज सामने आई, उसे काटा और नष्ट कर दिया।" पैगबरके नातीकी मतान इमामरजाके वशजोको भी उन्होने नही छोडा—वह बेचारे अपने पूर्वज शहीदकी कब्रसे लिपटे हुये थे । कहा जाता है, अब्दुल-मोमिन स्वय उस समय मीर अलीशेखके महलसे तमाशा देख रहा था, जब कि उसके आदमी अपनी तलवारोको इन निरपराध स्त्री-पुरुषोके खूनसे रग रहे थे । न जाने कितने अच्छे-अच्छे विद्वान् और धर्मशास्त्री भी इस हत्याकाडमें मारे गये। हजारो आदमियोके करुण क्रदनसे भी उज्बेको का दिल नही पसीजा । सिर्फ सडको और आगनोको ही नही, बल्कि पवित्रतम स्थानो और मस्जिदोको भी उन्होने खूनसे रग दिया । मशहदके हत्याकाडमे अलीके वशजोकी कब्रोको भी अब्दुल मोमिन ने नही छोडा, और उन्हें तोड-फोडकर नष्ट कर दिया । तीन शताब्दियोसे तीर्थयात्री और दूसरे धार्मिक लोगोने जो मूल्यवान् भेटें—अतिविशाल सोने और रूपेके दीपस्तम्भ, बहुमूल्य धातुओ और रत्नोसे जटित कवच, दुर्लभ रत्न, तथा दूसरी कितनी ही अनमोल चीजें—इमामरजाकी समाधिपर चढाई थी, उन सबको विजेताओने लूट लिया। यही नही, उन्होने वहाके विशाल पुस्तकालयको भी ध्वस्त कर दिया, जिसमे पुराने सुल्तानोके दान दिये कितने ही प्रसिद्ध कुरानके अत्यन्त सुन्दर कलापूर्ण हस्तलेख थे । "शियोकी पुस्तकें" कहकर उन सबको घसीटकर सडकोपर ले गये और फाडकर उन्हे पूरी तौरसे नष्ट कर दिया। सुन्नी विजेताओने मुर्दोंके ऊपर भी रहम नही किया। इमाम रजाके पास सोये शाह तहमास्पकी लाशको जलाकर उन्होने हवामे उडा दिया।

शाह अब्बास उस समय बीमार था, इसलिये तेहरानसे नही आ सका। जैसे ही स्वस्थ हुआ, वह तैयारी करने लगा । लेकिन अधिकाश खुरासान—हिरात, मशहद, सेरख्स, मेर्व, खाफ, जाम, फूसङ्, गोरियान—अब्दुल्लाके हाथमें करीब-करीब उसकी मृत्युके समयतक रहा।

१५८६ ई० मे ही अब्दुल्लाको खुरासानकी ओर गया जानकर उत्तरसे कजाकोने लुटेरोके घर-को लूटनेका निश्चय किया और तवक्कल खान तथा उसके भाई इशिमके नेतृत्वमे वह अन्तर्वेदपर चढ आये। लूटकर जब वह रेगिस्तानकी ओर लौट रहे थे, तब अब्दुल्लाके भाई उबैदुल्लासे उनका मुकाबिला हुआ।

जिंदगीभर सघर्ष करते हुये भी अब्दुल्लाका जीवन असफल रहा, ऊपरसे अन्तमे पुत्र अब्दुल मोमिन-के बर्तावोने उसे और दुखी बना दिया। उत्तरके कजाक उसे दम नही लेने दे रहे थे। १५९६ ई०मे उनके खान तवक्कलने फिर चढाई की, और ताशकन्दको लूटा, फिर ताशकन्द एव समरकन्दके बीचमे अब्दुल्लाको बुरी तरह हराया। उधर शाह अब्बास ख्वारेज्मके उज्बेकोसे दोस्ती कर उनकी मददसे मेर्व, मशहद और हिरातको छीननेके लिये तैयार था। इस प्रकार अब्दुल्लाने अन्तमे अपनी आखोके सामने ही अपने कियेपर पानी फिरत देखा और ६ फर्वरी १५९७ ई०को अर्थात् अकबरसे आठ वर्ष पहले बेटेके हाथो प्राण खोया।

११ अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र (१५९६–९७ ई०)

अब्दुल्लाके मरते ही देशमे अराजकता फैल गई। पिताको मारकर तख्त लेनेकी इच्छा रखनेवाले पुत्रने गद्दी सभालने ही पहले पिताके विश्वासपात्र सेवकोको मरवाना शुरू किया, जिसके कारण दरबारी उसके खूनके प्यासे हो गये। उसे चारो ओर षड्यत्र ही षड्यत्र दिखाई देता था। जुलाई १५९७ ई०मे गर्मीसे बचनेके लिये वह रातमे यात्रा कर रहा था। मशालची और कितने ही सवार उसके साथ थे। उरातिपा और जमीनके बीचमे एक सकरा दर्रा आया, जिसमे मशालचीके साथ सिर्फ दो सवार एक साथ गुजर सकते थे। इसी समय इस आततायीके ऊपर बाणोकी वर्षा होने लगी। मोमिन घायल होकर गिर पडा, और हत्यारोने तुरन्त उसका शिर काट लिया। दूसरे दिन पीछेसे आनेवालोने पोशाकसे उसके धडको पहचाना। इस प्रकार छ महीना शासन करनेके बाद इस राक्षसने सचमुच ही नरकका रास्ता पकडा।

१२ पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५९७–९९ ई०)

अब्दुल मोमिनके मरनेपर तख्तके बहुतसे दावेदार उठ खडे हुये, लेकिन शैबानी-वशके अन्तिम खान बननेका सौभाग्य पीर मुहम्मदको हुआ। जुलाई १५९८ ई०में शाह अब्बासने हिरातके पास कूल्सेसालारमे उज्बेकोको करारी हार दी, और उनसे सब्जवार, मशहद और हिरात छीन लिया। देशकी इस अवस्थाकी खबर कजाकोको भी मिले बिना नही रही, और तवक्कल अपने सत्तर-अस्सी हजार सवारोके साथ तुर्किस्तान-शहर, अक्सी, अदिजान, ताशकन्द, समरकन्दको लूटते-अधिकार करते बुखारा पहुचा। पीर मुहम्मद पन्द्रह हजार सैनिकोके साथ नगरमे घिर गया। बारहवें दिन फाटकसे बाहर निकल उसने कजाकोको बुरी तरह हराया। लुटेरोके विरुद्ध लोग एक हो गये थे। मियानकुलके उजुनसकालमे दुश्मनोसे फिर मुकाबला हुआ। बाकी मुहम्मद भी युद्धके आरम्भके समय भाग ले रहा था, लेकिन इसी समय खुरासानमे अब्बासद्वारा उज्बेक-सेनाके घोर पराजयकी खबर पहुची। कजाकोसे महीनेभर केवल जब-तब झडप करते रहनेके बाद युद्ध हुआ, जिसमें दोनोकी बहुत क्षति हुई। तवक्कल घायल न हो जाता, तो शायद उज्बेकोका उसी समय खातमा हो जाता। तवक्कल ताशकन्द लौटकर मर गया, और एक नक्शबन्दी शेख (माबु)ने बीचमे पडकर कजाको और उज्बेको-में सुलह करवा दी। बाकी मुहम्मदको समरकन्द मिला, लेकिन वह तो पीर मुहम्मदसे तख्त छीनना चाहता था। पीर मुहम्मद समरकन्दमें लडते वक्त मारा गया, और बाकी महम्मदकी इच्छा पूर्ण हुई। बाकी मुहम्मद अब्दुल्ला II की बहिन जोहरा खानम तथा जानीबेग सुल्तानका बेटा था। पीर मुहम्मद-के साथ शैबानी-वशका अन्त हुआ।

इतिहास-लेखक वेम्बरीके अनुसार शैबानियोके कालमे पूर्वी और पश्चिमी इस्लाम पूरी तौरसे अलग हो गया, और उसने वह रूप लिया, जो उसका आज भी मौजूद है। ईरान, चीन (सिङ-क्याग) और हिन्दुस्तान पूर्वी इस्लामके अन्तर्गत हुये और पश्चिमके देश पश्चिमी इस्लाममे। चीन और मध्य-एसियाके मुसलमानोमे साधु-सतो, जादूगरो और ज्योतिषियोका बहुत ज्यादा मान था। यदा-तासी (जादूके पत्थर)से वह वायु-जल-नियत्रण, रोगमुक्ति और युद्धमे विजय प्राप्त करना चाहते, इस्लामसे भी अधिक उसके सतो और सूफियोपर विश्वास रखते थे। मगोलोके शासनकालमे मुट्ठीभर मुल्लो और सूफियोके खानदानोने धर्मकी इजारादारी अपने हाथमे ले ली थी, जिनके सामने अत्यन्त शक्तिशाली और स्वेच्छाचारी सुल्तान भी शिर झुकानेके लिये तैयार थे। यह लोग राजा और प्रजा दोनोके भक्तिभाजन थे—साधारण जनता समझती थी, कि उनके पास दिव्य शक्ति है। उनके प्रति सुल्तान और खान केवल भारी सम्मान ही नही दिखलाते थे, बल्कि अपनेको उनका तुच्छ सेवक साबित करनेकी कोशिश करते थे। मखदूम आजम मौलाना खोजकी काशानी—प्रसिद्ध खोजा अहरारका शिष्य—अपने त्याग और वैराग्यपूर्ण जीवनके लिये बहुत माननीय समझा जाता था, और अपनी दिव्य शक्तिके कारण लोगोमे सम्मान ही नही भयकी दृष्टिसे भी देखा जाता था। वह २१ मुहर्रम ९४९ हि० (७ मई १५४२ ई०) मे मरा। उसकी समाधि देहबिदमे है, जहापर हालतक लोग भारी सख्यामे तीर्थयात्राके लिये जाते थे।

साहित्य-सस्कृति—शैबानी-कालमे तुर्की भाषा और साहित्यका सर्वत्र प्रचार हुआ। कितने ही कवि अब केवल तुर्की (उज्वेकी)मे ही कविता करते थे, यद्यपि अन्तर्वेदके गाव-गावमे भी ताजिकोके रहनेसे पुरानी भाषा फारसीका इतना प्रचार था, कि प्राय सभी तुर्क स्त्री-पुरुष द्विभाषी थे। इन कवियोमे सबसे प्रसिद्ध उज्बेक-राजकुमार मुहम्मद सालेह था, जिसके पिताको तेमूरियोने ख्वारेज्म-के राज्यसे वचित कर दिया था वह तरुणाईमे ही शैबानियोके दरबारमे चला आया। अपने महाकाव्य "शैबानीनामा"द्वारा किसी-किसीके मतमे वह नवाईसे भी बडा कवि है। इस समयके दूसरे बडे कवि थे—अमीर अली कियातिब, प्रथम शैबानी-राजकवि मुल्ला नौरक, मुल्ला मुशफिकी (मृत्यु १५८५ ई०), काजी पायन्दा, जमीनी, वजीर। पायन्दाने कुलबाबा कोकलताशकी प्रशसामे एक काव्य लिखा, जिसमे बिंदीवाले अक्षरो (बे, ते, जीम, चे, खे, जाल, जे, शीन, ज्वाद, जोय, गैन, फे, काफ और नून) का प्रयोग नही किया। शीरी खोजा उबैदुल्लाकालीन, और खैर हाफिज [मृत्यु ९८१ हि० (१५७३-७४ ई०)] इस कालके मशहूर सगीतकार और गायक थे—खैर हाफिज अब्दुल्लाके दरबार-मे था।

शैबानीकालमे खान, खानजादो तथा अमीरोने मस्जिदो, मदरसो और रौजोको बनानेमे होड-सी लगा रक्खी थी। वजीर कोकलताशने १५२७ ई० (९३४ हि०)मे समरकन्दमे अपने नामकी विशाल मस्जिद बनवाई, जिसके सगमर्मरके मेम्बर (वेदी) को कूचुनजी खानने प्रदान किया। अब्दुल्ला खानका बनवाया मदरसा बोल्शेविक क्रातिके पहलेतक मौजूद था। इसके विशाल फाटकपर कुरानकी आयते लिखी हुई है, जिसके एक-एक अक्षर दो फिट लम्बे है। अब्दुल अजीज खानने अरबोके वक्तकी बनवाई मोगक मस्जिद (पारसी मदिर)की मरम्मत करवाई और बुखारासे थोडी दूरपर अवस्थित खोजा बहाउद्दीनके सुन्दर मकबरेको बनवाया। अबसईदने समरकन्दमे एक बडा मदरसा बनवाया। करोडपति मीर अरबने बुखारामे एक मदरसा स्थापित किया, जिसके बारेमे हालके लेखकोने लिखा है—"यह सारे मध्य-एसियाका सबसे अधिक धर्मस्व-सपत्ति रखनेवाला मदरसा है।"

इस समयके सुल्तानोमे सभी जगह कवि होनेकी बडी लालसा थी, और उनमेंसे कुछको कविकर्ममे सफलता भी मिली। इस्माईल, तहमास्प, अब्बास फारसीके कवि थे। मुहम्मद शैबानी, उबैदुल्ला, अब्दुल्ला II भी कवि थे। बाबर, हुमायु और अकबरने भी कविता की, जिसमे बाबर तो तुर्की भाषा का आज भी एक श्रेष्ठ कवि माना जाता है।

शैबानी-वंशवृक्ष—
(१५००-९९ ई०)

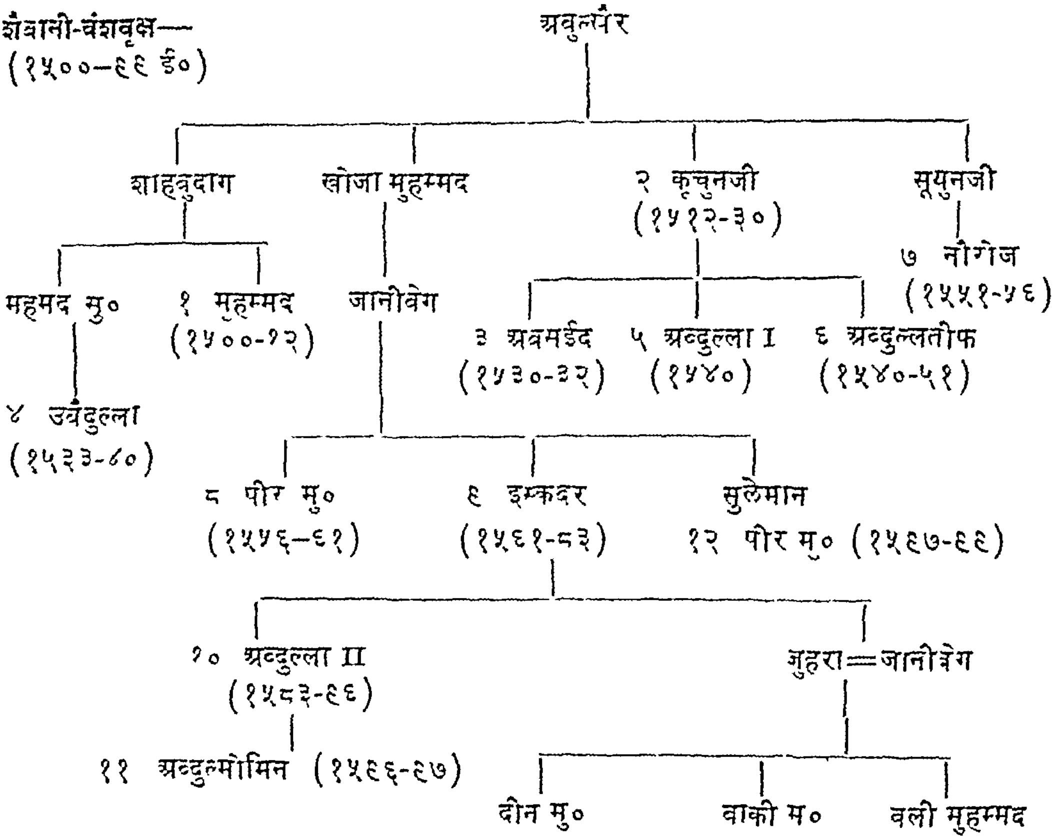

अध्याय ५

अस्त्राखानी (१५९९--१७४७ ई०)

१ दीन मुहम्मद (१५९८ ई०)

सुवर्ण-ओर्दूकी राजधानी सरायवरका जब ध्वस्त हो गई, और जू-छिका उलुम कई टुकडोमे बट गया। उस वक्त उनके एक खानकी राजधानी वोल्गा और कास्पियनके सगमपर अस्त्राखान थी। सुवर्ण-ओर्दूके प्रसिद्ध खान कूचुक मुहम्मदका पुत्र अहमद उसका उत्तराधिकारी बना। कूचुकका दूसरा पुत्र चुवाक सुल्तान था, जिसका पुत्र मगिशलक और पौत्र यार मुहम्मद थे। जब रूसियोने अस्त्राखानको भी छीन लिया, तो यार मुहम्मद खानने भागकर बुखारामे इस्कन्दर खानके पास शरण ली। अस्त्राखानी और शैवानी दोनो ही जू-छिके वशज थे। इस्कन्दरने यार मुहम्मदका बहुत सम्मान किया और उसके लडके जानीबेग सुल्तानके साथ अपनी लडकी जोहरा खानमका व्याह कर दिया। जानीबेग ९७५ हि० (८ जुलाई १५६७–२८ मई १५६८ ई०) की विजय-यात्राओमे अपने साले अब्दुल्लाके साथ रहा। अब्दुल्लाके समय उसके भाजे दीन मुहम्मदने खुरासानके कई शहरोपर शासन किया, अन्तमे वह निसा और अबीवर्दका राज्यपाल बना। अब्दुल मोमिनने उसके पिता जानीबेगको जेलमें डाल दिया था, इसपर विद्रोह करके दीन मुहम्मदने हिरात लेनेका असफल प्रयत्न किया। अब्दुल मोमिनके मरनेके बाद ईरानी फिर खुरासानको जीतनेका प्रयत्न करने लगे। इसने भी हाथ-पैर फैलानेकी कोशिश की। अब्दुल मोमिनके बाद शहर-शहरमे खान (राजा) बनते जा रहे थे। दीन मुहम्मदने भी मक्का-मदीनासे लौटे अपने दादा सुल्तान यार मुहम्मदके नामसे खुतबा और सिक्का चलाना चाहा। मेर्वमे कासिम सुल्तानने अपना राज्य कायम किया, लेकिन जल्दी ही वह मार डाला गया। मेर्वको भी दीन मुहम्मदके छोटे भाई वली मुहम्मदने बडे भाईके नामसे दखल कर लिया। जुलाई १५९८ ई०मे नूर मुहम्मदको हराकर शाह अब्बासने हिरात ले लिया। दीन मुहम्मद हारकर भागा जा रहा था, लेकिन शाही कपडोके कारण पहचाना गया और काराई घुमन्तुओने उसे मार डाला। बाकी मुहम्मदने तवक्कलसे लडकर पराजित होते समय खबर दी और उसे समरकन्दका राज्य मिला।

शायद हिरातमे कुल्लेमालारके निर्णायक युद्धके समय ही यार मुहम्मद और जानीबेग मारे गये, यद्यपि इससे पहले ही हिरातमे यार मुहम्मदने अपनेको खान घोषित कर दिया था। दीन मुहम्मदके मरनेपर उसके स्वामिभक्त नौकर खाकी यमाउल्ने खानम और उसके दोनो बच्चो इमामकुल्ली और नादिर (नासिर)को अपने घोडेकी पीठपर दोनो ओर रखकर सरपट भागते हुये उनकी जान बचाई। नादिर मुहम्मदके पैरमे गोली लग गई, जिससे वह जन्मभरके लिये लगडा हो गया। बाकी मुहम्मद और वली मुहम्मद अन्तर्वेदमे थे। बाकी मुहम्मदने राज्य सभाला। इतना कहनेसे यह मालूम होगा, कि यद्यपि बाकी मुहम्मदके गद्दी सभालनेके बाद एक नये अस्त्राखानी राजवशकी स्थापना हुई, किन्तु वस्तुत दोनो ही राजवश उज्बेक जातिके ही थे। सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी मुसलमान खान उज्बेकके नामसे किपचकोकी यह सज्ञा हुई, यह हम कह आये है। शैबानी और अस्त्राखानी ही नही, बल्कि दोनोके उत्तराधिकारी तथा अन्तिम राजवश मगीत भी उज्बेक ही था। बोल्शेविक क्रातिने मगीत-वशका उच्छेद करके वहा सोवियत गणराज्य कायम कर देशको उज्बेकिस्तान नाम दिया।

राजावलि—इस वंशमें निम्न खान हुये —

१	दीन मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१५९८ ई०
२	वाकी मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र, इस्कन्दर-नाती	१५९९–१६०५ "
३	वली मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१६०५–८ "
४	सैयद इमामकुली, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६०८–४२ "
५	नादिर मुहम्मद, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६४२–४७ "
६	अब्दुल अजीज, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६४७–८० "
७	सुभानकुली, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६८०–१७०२ "
८	मुकीम, सुभानकुली-पुत्र	१७०२–७ "
९	उबैदुल्ला I, सुभानकुली-पुत्र	१७०७–१७ "
१०	अबुल्-फैज मुहम्मद, सुभानकुली-पुत्र	१७१७–४७ "
११	अब्दुल मोमिन, अबुल्फैज-पुत्र	१७४७ "
१२	उबैदुल्ला II, अबुल्फैज-पुत्र	१७५१ "
१३	अबुलगाजी, इब्राहीम-पुत्र इमामकुली-वंशज	

२ वाकी मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र (१५९९-१६०५ ई०)

हम बतला चुके हैं, कि कैसे दीन मुहम्मदने पहले ही खुरासानमे अपनेको स्वतन्त्र खान घोषित किया। अब्दुल मोमिनके मारे जानेके बाद उसने अन्तर्वेदकी ओर पैर बढाया और वहाका शासक बन गया। वस्तुत वाकीने ही अस्त्राखानी वंशकी नींव रक्खी। इसने हिसारके पहाडी इलाके (ताजिकिस्तान)को सर किया और इसके भाई वली मुहम्मदने बलखको ले लिया, जिसे कि पीर मुहम्मदके भाई इब्राहीमने ईरानसे आकर हथिया लिया था। इब्राहीमके शिया होनेसे लोग नाराज थे, साथ ही वह पियक्कड और बहुत क्रूर भी था। उसे हटा उबैदुल्लाको बैठाया गया, जिसे वली मुहम्मदने हिसारसे आकर भगा दिया। काराई तुर्कमानोंने उसके भाई दीन मुहम्मदको मारा था, उसका बदला लेनेके लिये वाकी मुहम्मदने १६०२ ई०मे कुंदुजपर हमला किया। उज्वेकोने अपने पुराने शत्रुओं (तुर्कमानो)से बडा ही निष्ठुर बदला लिया। बहुत-से तुर्कमान भागकर कुंदुजके किलेमे बन्द हो गये। किला बहुत मजबूत था। उज्वेकोंने बारूद लगाकर दीवारके एक बडे भागको उडा दिया, जिसके साथ सैकडो तुर्कमान भी चिथडे-चिथडे होकर उड गये। फिर आक्रमण करके किलेको ले उज्वेकोने किसीको जीवित बन्दी नही बनाया। तुर्कमानोके काराई कबीलेको इस लडाईमे बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, जिसके बाद वह फिर अपनेको सभाले नही सके—काराई तुर्कमान शाह अब्बासके सहायक थे। उज्वेकोने शापूरगान और अन्दखूईको ले बिलुक-अकचीतक देशको लूट-मारकर उजाड दिया। ईरानी इनके मुकाबिलेके लिये आये, लेकिन बलखके पास बाबर अब्दुलके मकबरेके नजदीक उनमे महामारी फैल गई। ऊपरसे उज्वेकोने दोनो ओरसे हमला कर दिया। शाह अब्बास बडी मुश्किलसे कुछ हजार आदमियोंके साथ जान बचाकर भाग सका।

१६०५ ई०मे वाकी बीमार पडा और असाध्य रोगसे मुक्ति पानेके लिये एक प्रसिद्ध संत शेख आलिम अलीजानकी शरणमे गया। शेखने उसे वक्षु (आमू-दरिया) की ताजी हवा सेवन करनेकी सलाह दी। वाकी मुहम्मदको खटोलेमे लिटा नावपर ले गये। वह कई दिनोतक नदीकी हवा खाता घूमता रहा। अन्तमे रजब १०१४ हि० (१२ नवम्बर–१२ दिसम्बर १६०५ ई०) मे अर्थात् अकबरकी मृत्यु-महीने रजब १०१४ हि० में मरा।

३ वली मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र (१६०५–८ ई०)

यह बडा ही शराबी और व्यभिचारी था, ऊपरसे लोग इसके वजीर शाहबेग कोकलताशके जुल्मोंसे भी परेशान थे, इसलिये इसके भतीजे सैयद इमामकुलीके नेतृत्वमे विद्रोह हो गया। वली ईरानकी ओर

भागा। शाह अब्बाससे अस्सी हजार सेनाकी मदद ले वह फिर वक्षुकी ओर चला। मखदूम आजमके वंशज खोजा मुहम्मद अमीनसे इमामकुल्लीको सहायता प्राप्त हुई। खोजा (सत)ने अपने सूफियोंके चोगेके ऊपर धनुष-बाण लटकाकर पहला तीर छोड़ा, फिर दुआ पढ़कर मुट्ठीभर मिट्टी शत्रुओंकी ओर फेंक दी—जिसका अर्थ था, शत्रु अंधे हो जाय। तुमुल युद्ध हुआ। मामियान सरोवरके किनारे इस युद्धमें वली मुहम्मदने तख्त गवा अपनेको भतीजेके हाथमें बंदी पाया। शायद भतीजा चचाको छोड़ भी देता, लेकिन शेखका हुक्म था, इसलिये कत्ल किये बिना कैसे रह सकता था? वली मुहम्मद-के पुत्र रुस्तम और रहीम ईरान भाग गये।

४. सैयद इमामकुल्ली बहादुर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६०८–४२ ई०)

यह जहांगीर और शाहजहांका समकालीन था, और भारतीय मुगल-साम्राज्यसे इसकी सीमा मिली हुई थी। जिस वक्त अब्दुल मोमिनने मशहदमें कत्लेआम किया था, उसी समय इमामरजाके वंशजोंके मुखिया अबूतालिबने दीन मुहम्मदके घोड़ेकी लगाम पकड़कर अपने परिवारके लोगोंके प्राणोंकी भिक्षा मांगी। दीन मुहम्मद उनके बचानेके लिये उसी मुहल्लेमें ठहरा और उसने अबूतालिबकी बेटी जोहरा बानूसे व्याह किया। इसी जोहरा बानूसे इमामकुल्ली और नजर (नादिर मुहम्मद, नासिर) मुहम्मद पैदा हुये। यद्यपि बापकी ओरसे यह उज्बेक या छिङ-गिस्के वंशज होनेका अभिमान कर सकते थे, लेकिन पैगंबर मुहम्मदकी बेटीकी संतान होनेके कारण आगे अब अस्त्राखानी खानोंने अपने नामके साथ सैयद लगाना शुरू कर दिया। इमामकुल्लीका दीर्घकालीन शासन अन्तर्वेदकी उन्नति और समृद्धिका समय था। उसके शासनकी यह एक और भी विशेषता थी, कि इसने बिना किसी युद्ध और विजयकी लूट-पाटके अपने राज्यको खुशहाल बनाया। अपने भाई नादिर (नजर) को इसने बलखका राज्यपाल बनाकर मुगल-साम्राज्य की सीमापर रख दिया। इमामकुल्ली दृढ़ शासक होते हुये भी बड़ा ही धार्मिक, शिक्षित, सत्संग-प्रेमी और स्पष्ट वक्ता था। राजधानी बुखारा इस समय धन-जन, कला-सौंदर्यसे भरी फल-फूल रही थी। इमामकुल्लीका पड़ोसी शाह अब्बास शक्तिशाली होते हुये भी एक बार भारी मुंहकी खा चुका था। हां, उत्तरके कजाक और कलमक अब भी खतरनाक थे, जिसके लिये इमामकुल्लीको १६१२ ई०में कजाकों और कल्मकोंको हरानेके लिये सिर-दरियाके उत्तरमें अशगरा और कराताग-तक जाना पड़ा। उसने अपने इकलौते पुत्र इस्कन्दरको ताशकन्दका राज्यपाल बनाया। कुछ ही समय बाद वहां विद्रोह हो गया, जिसमें पुत्र मारा गया। विद्रोहको दबानेके लिये इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको भी बलखसे बुला लिया, और सारी सेना लेकर ताशकन्दको घेर लिया। ताशकन्दियोंने प्रतिरोध करनेका निश्चय किया। इकलौते बेटेकी मृत्युसे पागल इमामकुल्लीने शपथ कर ली थी, कि मैं तबतक हत्याकांडको बन्द नहीं करूंगा, जबतक कि ताशकन्दियोंका खून मेरी रिकाबतक न पहुंच जाये। नगर सर होनेपर लूट-मार शुरू हुई। कुछ घंटोंके कत्लके बाद लोगोंने खानको बहुत समझाया, लेकिन वह तो प्रतिज्ञा कर चुका था। तब मानवरक्त-से भरे एक हौजमें घोड़ेपर चढ़कर वह खड़ा हुआ। खून रिकाबतक पहुंच गया, खानकी प्रतिज्ञा पूरी हुई, और निर्मम हत्या बन्द हुई। लेकिन यह विजय स्थायी नहीं थी। कुछ ही सालों बाद कजाकोंने ताशकन्दको फिर अपने हाथमें कर लिया। इमामकुल्लीने भी संघर्षको बेकार समझकर कजाकखान तुरसुनसे सुलह करके १६२१ ई०में ताशकन्दको उसके हाथमें दे दिया।

इमामकुल्लीके ऊपर इकलौते पुत्रकी मृत्यु और ताशकन्दमें वही खूनकी नदीका, जान पड़ता है, बड़ा भारी प्रभाव पड़ा था। वह कितनी ही बार शाही लिबासको छोड़ फकीरोंका चोगा पहिन बुखारामें घूमता था। उस समय उसका वजीर नजर दीवानबेगी और उसका भक्त अब्दुल बकी भी साथ रहता था। इस प्रकार वह अपनी आंखों प्रजाकी दशा देखना चाहता था। कवि "तुराबी" और मुल्ला "नखली" उसके बड़े कृपापात्र थे। खान खुद भी कवि था। एक तरुण मुल्ला किसी सुन्दरीपर मुग्ध हो गया। त्योहारके लिये प्रेमिकाके पास सुन्दर पोशाक भेजकर उसने अपने प्रेमका परिचय देना चाहा, लेकिन मुल्लाके पास इतना धन नहीं था। सोचा "माले-काफिरां हस्त बर-मोमिन

हलाल" (काफिरोका माल मुसलमानोके लिये हलाल है)। उस समय क्या बोल्शेविक क्रांतिके होनेतक हिन्दू जौहरियो और महाजनोकी कितनी ही दूकानें बुखारामें थी। मुल्लाने हिन्दू जौहरीकी दूकान तोडनेका निश्चय किया और अपने दो नौकरोंके साथ वहा पहुचकर आसानीसे दरवाजेको खोल लिया। फिर रत्नोकी एक पिटारीके साथ निकलकर सडकपर आया। इसी बीच आहट पा हिन्दू जौहरी जाग उठा और हल्ला मचाते हुये जाकर उसने मुल्लाकी गरदन पकडी। उधर मशाल हाथमे लिये पहरेदार भी पहुच गया। मुल्लाने तुरन्त मारकर मशालको गिरा दिया, और अधेरेमें बोल उठा--"ओह, नजर दीवानबेगी, तुमने बडा मूर्खतापूर्ण मजाक किया।" जवाब मिला--"आला हजरत (परमभट्टारक), मैं नही, यह अब्दुल वमी कुरजी था।" पहरेवालेको जब मालूम हुआ, कि खानका दल भेस बदले आ पहुचा है, तो वह डरकर भाग निकला। हिन्दू जौहरीने खानसे प्रार्थना करते पहरेवालेके कर्त्तव्य न पालन करनेकी शिकायत की। पूछ-ताछ करनेपर मुल्लाके प्रेम और साहसकी सारी बातका पता लग गया। खानने जौहरीके मालको लौटवा दिया, लेकिन मुल्लाकी दिक्कतोको देखकर उसे दड न दे इतना पारितोषिक दिया, जिसमे वह अपनी प्रेमिकाको भेट भेज सके।

१६२० ई०मे रूसी जार मिखाइल फ्योदर-पुत्र (मृत्यु १६४५ ई०)ने इमामकुल्लीके पास यह सिखलाकर अपना दूतमडल भेजा, कि किसीको भेंट-बखशीश न देना, खानके तख्तके पास बुलानेपर ही जाना, यदि दूसरा दूत हो, तो उसके आसनके नीचा होनेपर ही अपने आसनपर बैठना। जारका दूत बुखारा पहुचा। महलके एक अफसरने जारके पत्रको लेना चाहा, लेकिन रूसी दूतने उसे देनेमे इनकार किया। जारकी ओरसे अभिनन्दन भेट करते हुये जब जारका नाम लिया गया, तो खान उठकर खडा नही हुआ। इसपर दूतने कहा--"सभी राजाओका कायदा है, जारका नाम लेनेपर खडे हो जानेका।" इमामकुल्लीने इस ढिठाईका जवाब नरमीसे दिया--"बहुत दिनके बाद रूसी राजदूत आया है, इसलिये मै वैसा करना भूल गया, मेरी मशा अनादर करनेकी नही थी।"

इमामकुल्लीने जहा जारके साथ दौत्य-सम्बन्ध स्थापित किया था, वहा उसने अपने सिंहासनारोहणकी सूचना देनेके लिये जहागीरके पास भी अपना दूत भेजा था। रसीले जहागीरने इमामकुल्लीकी बेगमका भी कुशल-मगल पूछा, जो कि मुस्लिम शिष्टाचारके विरुद्ध था। लेकिन जहागीर मुस्लिम शिष्टाचारका उतना प्रेमी नही था, उसका वश मुस्लिम शरीयतसे ज्यादा छिड्-गिसी यास्साको मानता था। उसने मुस्लिम सुल्तानो और इस्लामिक रवाजोको धत्ता बताते हुये अपने सिक्कोपर मूर्तिया अकित कराई थी। जहागीरको बुखाराके दूतने इतना ही जवाब दिया, कि मेरा मालिक सासारिक इश्कसे मुक्त है, वह इस दुनियाकी चीजोसे प्रेम नही करता। इसपर जहागीरने तुरन्त जवाब दिया--"तुम्हारे खानने कब इस दुनियाको देखा, जो कि उसे इतना वैराग्य हो गया ?" इमामकुल्लीका दूत वैद्य था। परिहास करनेके बाद भी जहागीरने उसे बहुत-सा सोना, जवाहर तथा जरीके काम किये हुये एक तम्बूको देकर विदा किया। बहुत जोर देनेपर शिकारके समय खान दूतसे मिलनेके लिये राजी हुआ। दूतने सुनहले तम्बूमे सारी भेटोको सजा दिया। इमामने शिकारसे लौटते वक्त एक नजर डाली, फिर रहीम परवानेजीकी ओर मुह करके बोला--"ले जा, इस सबको हमने तुझे दे दिया।" दूसरे दिन भारतीय दूतने दरबारमें एक तलवार पेश करते हुये खानसे कहा--"अकबर शाहको दो बढिया तलवारे मिली थी, जिनमेंसे एकको सम्राट्ने अपने लिये रख लिया है, और दूसरेको उसने अपने भाईके पास मित्रताके चिह्नके तौरपर भेजा है।" खानने हाथमे लेकर तलवारको मियानसे निकालना चाहा, किन्तु वह नही निकली, इसपर उसने कहा--"तुम्हारी तलवारोका निकालना बहुत मुश्किल है।"

दूतने जवाब दिया--"केवल यही ऐसी है, क्योकि यह शातिकी तलवार है, अगर यह युद्धका हथियार होती, तो अपने मियानसे तुरन्त निकल पडती।"

"नख्ली" और "तुराबी" दोनो दरबारी कवियोमे प्रतिद्वन्द्विता रहा करती थी। खानने उनके बारेमे हिन्दी दूतकी राय पूछी, जिसने तुरन्त जवाब दिया--"ओ खान, तुराब (मिट्टी)से ही

नख्ल (खजूर) उगती है।" इस तरह उसने दोनो कवियोको प्रसन्न रखनेकी कोशिश की। जहागीर-का दूत १०३६ हि० (२२ सितम्बर १६२६ ई०—१३ अगस्त १६२७ ई०)मे बुखारासे लौटा। इसके बाद ही जहागीर मर गया और शाहजहा गद्दीपर बैठा। मुगल बाबरके समयसे ही अपने पूर्वजोकी भूमिकी ओर चाहभरी दृष्टिसे देखा करते थे। इसी इच्छाको पूरी करनेके लिये शाहजहा एक बडी सेना ले काबुलसे आगे बढा। खबर पाकर इमामकुल्ली भी अपने भाई नादिर, दस भतीजो-के साथ एक बडी सेना ले बलख पहुचा। सभी पैदल थे, सिर्फ इमामकुल्ली घोडेपर सवार था। लोग भेट करनेके लिये आये। इमामके लिये रास्तेमें पावडे बिछा दिये गये। बडा स्वागत हुआ। फौजी तैयारी करते इमामकुल्लीने दादखा हाजी मसूरको दूत बनाकर शाहजहाके पास काबुल भेजा। शाह-जहाने कहा—"मै तो सिर्फ सूबोको देखनेके लिये आया हू।" नादिरकी शियोसे मित्रता थी, जिससे ईरानके साथ उसका अच्छा सम्बन्ध रहा, तो भी मेर्वके लिये एक बार उसने असफल कोशिश की। १६२१ ई०मे भी नादिरने पायन्दा मिर्जाको दूत बनाकर उसके द्वारा पचास तुर्किस्तानी घोडे मुगल-दरबारमें भेजे थे। अडतीस सालके शासनके बाद इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको बलखसे बुलाकर राज्य सौप दिया। इस समय वह बीमारीके कारण अन्धा हो गया था। जुमाकी नमाजके बाद उसने अपने सामने भाईके नामका खुतबा पढवाया और फिर अन्तिम जीवन बितानेके लिये मदीनेका रास्ता लिया। सारे लोग यह दृश्य देखकर रो रहे थे।

५ सैयद नादिर मुहम्मद, नाजिर, नासिर, दीन मुहम्मद-पुत्र(१६४२-४७ ई०)

नादिरके खजानेमे अपार धन था, जो आठ हजार ऊटोका भार (चालीस हजार मन) आका जाता था। उसकी घोडसालमे आठ हजार घोडे थे। उसके पास कीमती छाले पैदा करनेवाली अस्सी हजार कराकुल भेंडे थी, कीमती गुलाबी साटनसे भरी चार सौ सन्दूकें थी। इतनी सम्पत्ति उसे मिली थी। वह उसे बाटकर नाम कमाना चाहता था, लेकिन भाईने प्रजारजनद्वारा जितनी कीर्ति अर्जित की थी, वह उसे मिलनी सभव नही हुई।

नादिर-पुत्र अब्दुल अजीजने पिताके रुष्ट होनेपर उसे मनानेके लिये क्षमापत्र लिखा। दूसरा भाई सुभानकुल्ली समझाने गया। विद्रोह दबानेके लिये भेजा गया पुत्र कुतुलुक सुल्तान विद्रोह करके कुदुजके किलेमे दुर्गबद्ध हो गया। पिताकी आज्ञा पा किला सर करके सुभानने उसे मरवा डाला। इसपर नादिरने कहा, कि मैने मारनेके लिये नही कहा था। सुभान महत्त्वाकाक्षी था। वह चाहता था कि मुझे "कलाखान" (महासेनापति)की पदवी प्राप्त हो। न मिलनेपर बापसे बागी हो उसने बापके खिलाफ दिल्लीके बादशाह शाहजहासे मदद मागी। शाहजहाने अपने दोनो पुत्रो मुरादबख्श और औरगजेबको एक बडी सेना देकर भेजा। खुसरू सुल्तानने बलखमे प्रतिरोध करना चाहा, लेकिन उसे बन्दी बनाकर भारत भेज दिया गया। किसीने इसी बीच नादिरको बतलाया, कि हिन्दी सेना तुम्हारी मददके लिये नही, बल्कि बलखपर अधिकार करने आई है। इसपर नादिर रातको ही अपने खजानेको जमा करके शाबूरगान और अन्दखुदकी ओर से भागकर शाह अब्बास II के पास चला गया। उसकी मा इमामरजाकी सतान थी, इसलिये अब्बासने उसका बडा सम्मान किया। उधर चगताई (शाहजहाकी) सेना आगे बढती गई, और उसने वक्षुके दक्षिणके नगरोमें अपने शासक नियुक्त किये। सारे उज्बेक भागकर वक्षुपार चले गये। दो सालतक आमू दरिया (वक्षु) और हिन्दूकोहके बीचके प्रदेशपर शाहजहाका शासन रहा। भारत जैसे गरम मुल्कके सैनिक यहाकी सर्दीके मारे परेशान थे। मुगल इतिहासकारने लिखा है—"जो घरसे बाहर निकलते, वह ठडा होकर मर जाते, और जो भीतर रहते, वह अपनेको गरम करनेके लिये आगके सामने झुलसते रहते।" भारतीय सेनाने, इसमें शक नही, हिन्दूकोह पार करके इस इलाकेको बहुत बरबाद कर दिया, जिसके कारण बलखमे अकाल पड गया। १०६० हि० (४ जनवरी १६५० ई०—२५ नवम्बर १६५० ई०)के जाडोमे एक खरवार (गदहेका बोझ) अनाजका दाम हजार फ्लोरिन (रुपये) था। जाडा बहुत ही सख्त था। अन्तमे जब हिन्दी सेनाको लौटनेके लिये मजबूर होना पडा,

तो एक ओर हिन्दूकोह (हिंदूकुश)के ऊचे दर्रोंकी सर्दीने भारी सख्यामे वलि लेनी शुरु की और दूसरी ओर उज्वेक सैनिकोंने उन्हे गिद्धकी तरह नोचना शुरु किया। हजारोंकी सख्यामे लोग रास्तेमे मर गये। अगले साल "तारीख मुकीमखानी"का लेखक जब दूत बनकर इसी रास्ते भारतकी ओर आ रहा था, तो उसने सब जगह भारतीयोके ककालोके ढेर देखे।

सेना लौटानेसे पहले शाहजहाने नादिरको अपना राज्य सभाल लेनेके लिये कहा। नादिर लौटा, लेकिन उसके बेटोमे झगडा हो गया, जिसपर नाराज हो नादिरने राज्यको बाटकर* मदीनेका रास्ता लिया। वह रास्ते ही मे मर गया, पर उसकी लाश मदीनेमे उसके भाईके पास दफनाई गई।

नादिर खानके प्रिय पुत्र कासिम सुल्तानके बारेमें इतिहासकारोका कहना है, कि अस्त्राखानियो-मे कोई इतना बहादुर, बुद्धिमान्, उदार और साहसी नही हुआ। वह अच्छा कवि और सुन्दर गद्य-लेखक था। एक हजार शेरोका उसका दीवान (कविता-सग्रह) मौजूद है, जिसमे उसने शायद इस्पहानीका अनुसरण करते बहुतसी रचनायें की है। "तुराबी" और "नखली" दोनो इस समयके कवि थे, इसे हम बतला आये है।

बुखारामे अब युरोपके नये हथियारोका प्रचार हो चला था, लेकिन उलुगबेगके बाद विज्ञानकी ओर बढनेका कोई प्रयत्न नही हुआ। अब तो वहा धर्म और मुल्लोने अपना एकच्छत्र राज्य कायम कर दिया था। शैबानियोके शासनके अन्तिम कालमे युरोपीय व्यापारी अन्थनी जेंकिन्स १५५८-५९ ई० में बुखारा पहुचा था, इससे पहले पोलो भ्रातृ-युगल तीन साल (१२६४–६७ ई०) बुखारामें रहे थे, जब कि चगताई खानोका राज्य था और बुखाराकी कोई प्रधानता नही थी। बुखारा पहले भी समय-समयपर अन्तर्वेदकी राजधानी रहा, किन्तु अस्त्राखानियोके शासनके आरम्भ होनेके साथ-साथ वह अब स्थायी राजधानी बन गया।

६. सैयद अब्दुल अजीज, नादिर-पुत्र (१६४७–८० ई०)

गद्दी सभालनेके बाद अब्दुल अजीजने अपने भाई बलख-शासक सुभानकुल्लीको रास्तेका काटा समझ हटाना चाहा। इस कामके लिये उसने अपने दूसरे भाई (कवि) कासिम मुहम्मदको भेजा। लेकिन कासिमको हारकर हिसारकी ओर भागना पडा, और सुभानकुल्लीको युवराज कबूल करके समझौता करना पडा। ख्वारेज्म बहुत समयसे अस्त्राखानियोके अधीन रहता चला आया था, लेकिन १६६३ ई०मे अबुलगाजीने स्वतन्त्र होनेका निश्चय कर लिया। वह निम्न-वक्षु-उपत्यकासे बुखारियोको भगाते हुये अन्तर्वेदके भीतर घुस आया। करमीनामे अब्दुल अजीजने उसे हराया। अबुलगाजीने घायलकी हालतमे नदी तैरकर अपनी जान बचाई। लेकिन ऐसे एक हारसे हार माननेवाले थोडे ही होते है? अबुलगाजीने दूसरी बार तैयारी की, और आगे लूटते-पाटते वह बुखाराके दरवाजेतक पहुच गया। उसका उत्तराधिकारी और पुत्र अनुशा खान और भी साहसी निकला। उसने १०७६ हि० (१४ VII १६६५–४ VI १६६६ ई०)मे एक बडी सेना लेकर चढाई की। उस वक्त अब्दुल अजीज करमीना गया हुआ था। उसकी अनुपस्थितिमे अनुशाने बुखारापर अधिकार कर लिया। अब्दुल अजीज भी कम साहसी नही था। वह केवल चालीस अनुयायियोके साथ बुखाराके अर्क (किले)मे घुस गया और लोगोको युद्ध करनेके लिये तैयार किया। ख्वारेज्म वालोके सभी विरुद्ध हो गये और सामूहिक शक्तिके बलपर अब्दुल अजीजने अनुशाको बुरी तौरसे हराया। अब्दुल अजीज शरीरमे महाकाय था, लेकिन जूता उसके पैरोमे चार सालके बच्चे जैसा लगता था। युद्धमें वह बडा ही साहसी और काममें तत्पर रहता था। अपने पूर्वजोसे उसने भी शेखो और सूफियोकी आदत सीख ली थी, और कितनी ही बार दूसरे सासारिक कामोको छोडकर एकातमे ध्यान और भजन करने लगता। उसने भी अन्तमे अपने भाई सुभानकुल्लीको तख्त देकर मदीनेका रास्ता लिया।

---

* बाटमे सुभानकुल्लीको बलख और खोजा सालूको ऊपरी-वक्षु-प्रदेश मिला।

प्रसिद्ध सुलेखक मुल्ला हाजी इसके यहा सात सालतक रहा, और उसने खानके लिये "हाफिज" का दीवान उतारा।

७. सैयद सुभानकुल्ली, नादिर-पुत्र (१६८०–१७०२ ई०)

गद्दीपर बैठनेके बाद इसने अपने पुत्र इस्कन्दरको "कलाखान" बनाया, लेकिन दो वर्ष बाद उसके भाई मसूरने जहर देकर उसे मरवा दिया। पिताने फिर तीसरे पुत्र उबैदुल्लाको बनाया, उसे भी दूसरे बेटेने कत्ल करवा दिया। बेटोंके इस विद्रोहसे वह बहुत परेशान था। उसके मंत्री मुकीम खानने व्यापारियो और कारीगरोपर भारी टैक्स लगाकर चीन और युरोपके कारीगरोद्वारा बनाई सुन्दर कलाकी चीजो और गोटेवाले मखमल लिये। चार महीने बाद वह भी षड्यंत्रका शिकार हुआ। फिर चौथे पुत्र मसूरको राज्यपाल बनाया।

इसी समय खीवासे भी झगडा उठ खडा हुआ। खीवाके अमीरने १०९५ हि० (२० XII १६८३–९ XI १६८४ ई०)मे बुखारापर चढाई की। सुभानकुल्लीके सेनापति मुहम्मद बीने उसे मार भगाया, लेकिन दूसरे साल फिर उसने आक्रमण किया। इसके बाद ११०० हि० (२६ X १६८८–१६ IX १६८९ ई०)मे खीवाका खान बुखाराके दरवाजेतक पहुच आया था। अब भी मुहम्मद बीने उसे बुरी तरहसे हराकर पीछे भगाया। कुछ समयके लिये खीवाने सुभानकुल्लीकी अधीनता भी स्वीकार की।

ख्वारेज्मका खान अनुशा बडा शक्तिशाली शासक था। उसे भगानेमे मदद देनेके लिये सुभानकुल्लीने अपने बेटे सादिकको बुलाया, लेकिन उस वक्त उसके शासित इलाके (बलख)मे भी भीतरी-बाहरी झगडे थे, इसलिये वह वहा लौट गया। इस बेहुक्मीके लिये सुभानने अपने बेटेको दड देना चाहा, इसपर उसने बगावतका झडा खडा कर दिया। उसने इससे पहले अपने दो भाइयो अब्दुल गनी और अब्दुल कयूमको मारकर औरगजेबके पास मैत्री करनेका प्रस्ताव किया। यह खबर सुनकर १६८५ ई०में सुभानकुल्ली अपने पुत्रके विरुद्ध खानाबाद पहुचा, जहासे उसने बहुत स्नेहपूर्ण पत्र भेजकर उसे क्षमा कर देनेका वचन दिया, किन्तु जब पुत्र आया, तो उसके पैरोमे बेडी डलवा कालकोठरीमे बद कर दिया, जहा वह तीन महीने बाद (१६८६ ई०मे) मर गया।

इस समय तुखारिस्तानके दो कबीलो मेमना-अन्दखुदवाले मिंग, और बलखके पासके किपचकोमे बडी लडाई थी। सुभानकुल्लीने मशहदकी तीर्थयात्रा करनेकी सोची। इसी वक्त खीवाके खान अनुशाके बुखाराकी ओर लूटपाट करनेकी खबर आई। सुभानकुल्ली आया और उसके सेनापति मुहम्मद बीने खीवाकी सेनाको बुरी तरह हराया। अनुशा अपने ही लोगोद्वारा मारा गया, और उसका पुत्र एरेंग सुल्तान ख्वारेज्मकी गद्दीपर बैठा।

औरगजेबको दिये वचनके अनुसार सुभानकुल्लीने महमूद जान बीके नेतृत्वमें खुरासानपर एक सेना भेजी, जो देशको लूटकर बहुतसे स्त्री-बच्चोको बदी बना लौट आई। इसी बीचमें एरेंगकी सेनाने फिर बुखारापर धावा किया। दस दिनतक बुखारावालोने मुकाबिला किया, लेकिन जबतक बदख्शा-बलखका राज्यपाल महमूद बी अतालीक नही पहुचा, तबतक ख्वारेज्मियोको दबाया नही जा सका। अतालीकके आनेपर ख्वारेज्मियोकी हार हुई और खीवाके आदमियोने षड्यंत्र करके एरेंग खानको मार डाला। सुभानका शासन खीवावालोने स्वीकार किया। १६८७ ई०मे वहा उसके नामका खुतबा और सिक्का चला और सुभानने शाहनियाज इशिक आकाको वहाका राज्यपाल नियुक्त किया। सुभानका तुर्कीके सुल्तान अहमद II (१६९१–९५ ई०)के साथ भी दौत्य-सबध था, जिसके पास प्रशसा करते हुये उसने अपने पत्रमें लिखा था—"फ्रेंक काफिरो और अभागे अधर्मियो (किजिलबासो)को भूतलसे नष्ट कर देने-जैसे अल्लाहके महान् काममें आप लगे है।" मुस्लिम जगत्मे इस समय बुखाराका नाम बडे गौरवसे लिया जाता था। औरगजेबने सुभानकुल्लीके पास दूतके साथ एक हाथी और कितनी ही और मूल्यवान् भेटे भेजी। तुर्कीका सुल्तान अहमद II उसे प्रशसापूर्ण पत्र लिखते समय "भाई"के नामसे सबोधित करना नही भूलता था।

मुभानकुल्लीको पढने-लिखनेका भी शौक था। उसने ग्रीक-चिकित्सकों—गेलन और हिप्पोक्रेत—तथा यूसुफी मेनाकी पुस्तकोंके आधारपर तुर्की भाषामें वैद्यकपर एक पुस्तक लिखी, जिसमें रोगमुक्तिके एक बड़े साधन गंडा-तावीजको लिखना वह नहीं भूला।

अस्सी सालकी उमर हो जानेपर उसने अपने पुत्र मुकीमको बलखसे बुलाकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, और १११४ हि० (२८ V १७०२–१८ IV १७०३ ई०) में मर गया।

८ मुकीम, मुभानकुल्ली-पुत्र (१७०२–७ ई०)

मुकीम खानको गद्दी सँभालते ही अपने बड़े भाई उबैदुल्लाके विरोधका सामना करना पड़ा। मगीत कबीलेका शक्तिशाली सरदार रहीम बी बड़े भाईका समर्थक था, इसलिये पाँच सालतकके बड़े संघर्षके बाद मुकीमको अपने हाथमें शक्ति लेनेमें सफलता मिली।

९ उबैदुल्ला I, मुभानकुल्ली-पुत्र (१७०७–१७ ई०)

अब अस्त्राखानी वंशमें भी गुड़िया सुल्तान होने लगे। उबैदुल्ला, मगीत-सरदार रहीम बीके हाथका कठपुतली था।

१११५ हि० (१७ V १७०३–८ IV १७०४ ई०) में कुकुरत कबीलेवालोंने उबैदुल्लाके शहर खानाबादपर आक्रमण किया। अतालीक महमूद बी उनसे लड़ने गया, जिसमें उसका भाई अब्दुल्ला मारा गया। महमूद बीने इस खतरनाक कबीलेको पूरी तौरसे दंड देनेके लिये आज्ञा मांगी, क्योंकि उन्होंने वक्षुकी भूमिमें लूट-मार मचा रक्खी थी। मुकीम खानकी आज्ञा पा महमूद बी जल्दी-जल्दी कूच करते हुये तीन दिनमें कबादियान किलेपर पहुँचा, जिसे कि कुकुरतोंके सहायक दुश्मन कबीलेने दखल कर रक्खा था। महमूद बीके सामने उन्होंने आत्मसमर्पण किया। कबादियानसे एक सेना रुख महमूद बी कुकुरतोंके विरुद्ध चला, जो अपने डेरे और चीज-वस्तुओंको छोड़कर भाग गये। महमूदने बहुतोंको मारा, लेकिन दुश्मनोंके पामीरके पहाड़ोंमें भागकर छिप जानेपर पीछा करना आसान नहीं था। अतालीक महमूद बीने धन ले लड़कों-बच्चोंको छोड़ दिया। फिर उसने तगिदीवान और दर्रे-हुस्मकी ओर उनका पीछा किया और ककाई किलेमें डेरा डाल चारों ओर सेना भेजकर कुकुरत कबीलेको नष्टप्राय कर दिया। जब वह बलख लौटा, तो मुकीमने उसे और उसके साथियोंको बहुत मूल्यवान् खिलअत तथा दूसरी भेंटें प्रदान कीं।

१० अबुल्फैज, मुभानकुल्ली-पुत्र (१७१७–४७ ई०)

उबैदुल्ला खान अतालीक रहीम बीसे झगड़ पड़ा, जिसके लिये उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा। रहीमने उसकी जगह अबुल्फैजको खान बनाया। उज्बेकोंने इसके समय भी खुरासानपर आक्रमण करना जारी रक्खा। ऐसे ही एक आक्रमणमें उन्होंने नादिर (पीछे दिल्ली लूटनेवाले महान् विजेता नादिरशाह)को पकड़ लिया था। १७१८ ई०में उज्बेकोंने अब्दाली-अफगानोंके सरदार आजादुल्लासे मेल करके खुरासानको लूटा। सफी-कुल्ली खानके अधीन तीस हजार ईरानी सेना आई, जिसने खुरासानसे बारह हजार उज्बेक-सेनाको हराया, लेकिन उसे खुद उज्बेकोंके मित्र अफगानोंसे हारना पड़ा।

१७३६ ई०में ईरानी सेनापति नादिरशाहने गुरजी (जार्जिया)में उसमानी तुर्कोंको बुरी तरहसे हराकर उत्तर-पूर्वकी ओर नजर फेरी, और उसके पुत्र रजाकुल्ली खानने अबुल्फैजकी सेनापर आक्रमण किया, लेकिन इसी समय इल्तवर्स खीवासे अपने उज्बेक भाइयोंकी सहायताके लिये आ गया, जिससे उनकी जान बच गई।

१७३६–३८ ई०में नादिरने कंधारका मुहासिरा करते समय अपने पुत्र रजाकुल्लीको बादगियो और मर्वो (मरवेचको)के रास्ते अफगानोंके दोस्त अलीमरदाशा (अन्दखुद)के खिलाफ

भेजा। पडोसी घुमन्तुओने अलीमरदाका साथ छोड दिया और रजाकुल्लीने उसे वन्दी वनाकर वापके पास भेज दिया। रजाकुल्लीने शापूरगान और अक्सी ले वलखको भी जीत लिया, फिर वक्षुपार हो अवुल्फैजकी शक्तिको नष्ट करना चाहा, लेकिन इसी समय ख्वारेज्मके खान इलवर्सने आकर फिर अपने भाई उज्वेकोको वचा लिया। हार खानेके वाद नादिरने रजाकुल्लीको इस वहानेसे वुला लिया—'उच्च तुर्कमान कुलो तथा छिङ-गिस् खानकी सतानोके पैतृक-देशोपर हाथ नही मारना चाहिये।"—यह अगूर खट्टे-जैसी वात थी।

नादिर दिल्ली लूटनेके लिये चला गया और लौटते समय पेशावरमे उसे अवुल्फैजका पत्र मिला, जिसमे लिखा था—"मै पुराने वशकी अन्तिम सतान हू। मै तुम्हारे जैसे शक्तिशाली वादशाहका विरोध करने की काफी शक्ति नही रखता, इसीलिये मै अलग रहकर तुम्हारी भलाईके लिये दुआ करता रहता हू। तो भी, यदि तुम मुलाकात करके मुझे सम्मानित करना चाहते हो, तो मै एक अतिथिके तौरपर तुम्हारा उचित सत्कार करूगा।" अवुल्फैजने अपने दोस्त खीवाके खानको भी वैसा ही करनेको कहा। लेकिन नादिरशाहने इस चापलूसीभरी वातको वडी घृणाकी दृष्टिसे देखा। दिल्लीसे तीन सौ हाथियो, मोती-हीरा-जटित तम्वू, वहुत-सी सम्पत्ति और शाहजहाके प्रसिद्ध सिंहासन तख्त-ताऊसके साथ लौटकर नादिर कुछ दिनो हिरातके पूर्वके पहाडो (कोहिस्तान) मे ठहरा। यहीसे उसने रूसी साम्राज्ञी एलिजावेथ (१७४१–६१ ई०) तथा अवुल्फैजके पास कुछ भेटे भेजी।

नादिरने अव इलवर्सके सत्यानाश करनेका निश्चय किया। वह बुखाराके सीमान्तपर वक्षुतटके करकी स्थानमे पहुचा, जहापर अस्त्राखानियोका सर्वेसर्वा रहीम वी भेट लिये उपस्थित था। वहासे नादिर चारजूय गया। तीन दिनमे वक्षुपर नावोका पुल वनवाकर वहुतसी सेनाको खजानेकी रक्षाके लिये छोड वह वुखारासे एक मजिल पहले कराकुलमे पहुचा। अवल्फैजने सुन्दर अरव घोडोकी भेंट लिये अपने अमीरो और मुल्लाओके साथ स्वागत किया। नादिरशाहने खानको वैठनेके लिये स्थान देते उसे "शाह" के नामसे सम्वोधित किया। अवुल्फैजने अपनी वेटीको नादिरशाहसे व्याहा और नादिरने अपनी वहिनको अवुल्फैजके भतीजेके लिये दिया। रहीम वीको नादिरशाहने खानकी उपाधि देकर छ सौ तुर्कसेनाका नायक वनाया। इस तरह वुखाराको अपने अधीन कर वह खीवाकी ओर वढा। इलवर्सने अधीनता स्वीकार करानेके लिये आये नादिरके दूतको मरवा दिया था। नादिर अव उसके ऊपर चढा। इलवर्स खानकाहके किलेमे घिर गया। तीन दिनकी गोलावारीके वाद इलवर्सने अपनेको नादिरके रहमपर छोड दिया, और खूनखार नादिरने उन्तीस प्रधान अफसरोके साथ उसे कत्ल करवा दिया। चारजूय लौटकर नादिरने अपनी नव-विवाहिता वीवीको उसके पिताके पास भेज दिया। मेर्वके रास्ते जव वह खुरासानमे पहुचा, तो वही २३ जून १७४७ ई०को उसके एक अनुचरने उसे मार डाला।

नादिरशाहकी मृत्युकी खवर पाकर अव रहीम वीने अवुल्फैजको गद्दीपर वैठाये रखनेकी जरूरत नही समझी, और उसे पैमनारमें मीर अरवके मदरसेमें कैद कर दिया। ईरानी इसपर क्षुव्ध हुये, तो रहीमने कहा—"मै तो मामूली उज्वक हू। नदिरशाहने तो न जाने कितने वडे-वडे खानदानी राजाओको लूटा-मारा।" ईरानी सेना जव रहीम खानको घेरनेका मसूवा वाधने लगी, तो रहीमने गिलजई अफगानोका कान भरा—नादिरने तुम्हारे देश कन्धारको अव्दालियोके हाथमे दे उन्हे भूमि, स्त्री और वेतन देनेका वचन दिया है। उन्होने उसकी वात मान ली। रहीम वीने उसी रात अवुल्फैजको मार डाला। दूसरे दिन ईरानियोने रहीम वीसे सुलह कर ली। अपने तोपखानो, तम्वुओ और रसदके सामानको छोड जानेके लिये रहीम वीने उन्हें अच्छी भेट देकर देश लौट जानेकी छुट्टी दे दी। इस प्रकार कुछ ही महीनोमें रहीम वीने ईरानियोके प्रभुत्वको वुखारासे खतम कर दिया।

११ सैयद अब्दुल् मोमिन मुहम्मद, अबुल्फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अबुल्फैजको मारकर अभी रहीम बी सीधे गद्दीपर बैठनेके बारेमे निश्चय नही कर पाया था। उसने अपने दामाद तथा निहत खानके पुत्र अब्दुल् मोमिनको गद्दीपर बैठा दिया। एक दिन मीठे खरबूजे कपडेसे ढाक्कर खानके पास आये थे। बीबीने पूछा—"क्या है ?" उसने जवाब दिया—"तुम्हारे बापका शिर है, जिसने मेरे बापको मारकर देशपर अधिकार कर लिया है।" बीबीने यह बात बापसे कह दी और रहीमने अब्दुल् मोमिनको कुयेमें ढकेलकर मरवा दिया।

१२ सैयद उबैदुल्ला II, अबुल्फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अफगान—अफगानोका उत्कर्ष इसी समय होने लगा। महमूद बीके समय सुलेमान पर्वत-श्रेणीमे उनका एक छोटा-सा कबीला था, जिसने अपनी शक्ति बढाते-बढाते एक समय वक्षुसे सिन्ध-तटतककी भूमि ले ली। जातिकी तौरपर सिन्ध-तटतक अब भी पस्तून (अफगान) रहते है, लेकिन पश्चिममे काबुलके पासकी कोहदामन-उपत्यकासे ही ताजिको, फिर हजारो और अन्तमें उज्बेकोके इलाके आ जाते है। तो भी वक्षु (आमू)के तटतक अब भी अफगानिस्तानकी राज्यसीमा है। १८वी सदीके आरम्भमे अर्थात् औरगजेब और उसके कुछ उत्तराधिकारियोंके समयतक उज्बेकोसे बचनेके लिये अफगान भारत और ईरानके बादशाहोकी प्रजा बनकर उन्हें कर देते थे। लेकिन जब सफावी-वश (१४९९–१७२२ ई०)का सितारा डूब गया, तो गिलजई कबीलेके सरदार महमूदके नेतृत्वमे अफगानोने अस्पहानतकपर आक्रमण करनेका प्रयत्न किया, जहासे नादिरने उन्हें मार भगाया। इस अन्तिम एसियाई महान् विजेताके पतन, भारतीय "मुगल"-साम्राज्यके क्षीण होने एव उत्तरमे बुखाराके उज्बेकोमे फैली गडबडीसे फायदा उठाकर अफगानोने वक्षु और सिंधके बीचके नादिरके जीते हुये देशको हडप लिया। अहमदशाह दुर्रानी (अफगान-सरदार)ने नादिर-वशज तथा तैमूरके पौत्र शाहरुख मिर्जासे मेल करके ११६६ हि० (८ XI १७५२–२९ IX १७५३ ई०) में वक्षुसे दक्षिणवाले इलाकेको बुखारासे छीन लिया, जिसमे मैमना, अन्दखूई, आकचा, शापूरगान, शेरपुल, खुल्म, बलख, बदख्शा और बामियान अवस्थित है। विजेता अफगान सेनापति बेगीखान पीछे सदर-आजम अहमदका उत्तराधिकारी बना। १२०३ हि० (२ X १७८८–२३ VIII १७८९ई०) मे तैमूरशाहको बहावलपुरके अभियानमे फसा देख उज्बेकोने वक्षु पार हो अपने बहुतसे इलाकोको फिर ले लिया। १२०८ हि० (९ VIII १७९३-३० VI १७९४ ई०) मे तैमूरशाह मर गया, जिसकी जगहपर उसका पुत्र शाहजमा काबुलकी गद्दीपर बैठा। इसीके समय बुखाराके मगीत अमीर मासूम-ने हमला किया, और बलख घिरा रहा। शाहजमा उस समय भारत और खुरासानके अभियानोमे व्यस्त था, किन्तु जब उससे उसने छुट्टी पा ली, तो मासूमने लडनेकी जगह उससे सुलह करना ही अच्छा समझा। शाहजमाके प्रतिद्वन्द्वी भाई शाह महमूदको अमीर मासूमने १२१४ हि० (५ VI १७९९-२६ IV १८०० ई०)मे बखारामें शरण दी।

बेगीखानको वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशके जीतनेके उपलक्षमें सदर-आजमकी उपाधि मिली। अमीर मासूम और बेगीखान मगीती अमीर शाह मुरादकी भी उपाधि थी, जो कि रहीम बीका भतीजा था।

अस्त्राखानी कालकी इमारतोमें मदरसा-शेरदिल भी है, जो १६१० ई०में बना था।

१३ सैयद अबुल्गाजी, इब्राहीम-पुत्र (१७४७, ई०)

रहीम बीके हाथका यह अन्तिम अस्त्राखानी कठपुतली खान था, जिसके बाद रहीमने स्वय गद्दी सभाल ली।

अस्त्राखानी-वंशवृक्ष—
(१५१५–१७४७ ई०)

- इस्कन्दर (शैवानी)
  - जुहरा=जानीवेग
    - १ दीन मु० (१५९८)
      - ४. इमामकुल्ली (१६०८-४२)
        - रजव मु०
          - इब्राहीम
            - १३ अबुल्गाजी (१७४७)
      - ५ नादिर मु० (१६४२-४७)
        - ६ अब्दुलअजीज (१७४७-८०)
        - ७ सुभानकुल्ली (१६८०-१७०२)
          - ९ उबैदुल्ला I (१७०७-१७)
          - ८ मुकीम (१७०२-७)
          - १० अबुल्फैज (१७१४-४७)
            - ११ अब्दुल् मोमिन (१७४७)
            - १२ उबैदुल्ला II (१७४७)
            - शम्सबानू=शाहमुराद
    - २ बाकी मु० (१५९९-१६०५)
    - ३ वली मु० (१६०५-८)
- खुदायार अतालीक
  - दानियालबी
    - शम्सबानू=शाहमुराद

अध्याय ६

खीवा-खान

(१५१५–१७१४ ई०)

ख्वारेज्म अब अपनी राजधानी खीवाके नामसे प्रसिद्ध होने लगा था। ख्वारेज्मकी भूमि पश्चिममें कास्पियन और दक्षिणमे खुरासानसे अलग करनेवाले रेगिस्तान कराकुम और पूर्वमें बुखारासे अलग करनेवाले रेगिस्तान किजिलकुममे घिरी हुई बालुका-समुद्रमें द्वीपकी तरह है—उत्तरमें अराल समुद्रके दोनो तरफ भी मरुभूमि है। इस अपार वालुका-राशिके भीतर रहते भी ख्वारेज्म हमेशासे बडा ही उर्वर और समृद्ध देश, तथा युरोपके साथके व्यापारका केंद्र रहा। रेगिस्तानोके कारण ही दक्षिण और पूर्वके राज्योकी अपेक्षा इसका सम्बन्ध वोल्गा-उपत्यकासे अधिक रहा। सदियोतक जू-छि उलुसने इसपर शासन किया। बहुत पीछे सफावियोने मौका पाकर खीवाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन, जब उज्बेकोने मुहम्मद शैवानीके नेतृत्वमे अन्तर्वेदको जीता, तबसे उज्बेकोकी ही प्रधानता खीवापर भी हो गई। १५१० ई०में शैवानीको हराकर शाह इस्माईलने ख्वारेज्मको बाटकर वहा अपने तीन राज्यपाल नियुक्त किये —(१) खीवा-हजारास्प, (२) उरगज, (३) वेसिर (वेजिर)। ख्वारेज्ममे सुन्नी धर्मकी प्रधानता थी, और सफावियोने शिया-धर्मको राजधर्म घोषित किया था। इससे फायदा उठा उमर गाजीने शियोके विरुद्ध ख्वारेज्मियोको उभाडना शुरू किया और दो साल बाद ही हुसामुद्दीन कतल नामक एक धार्मिक नेताने वेसिरके लोगोको समझाकर उज्बेक खान वरकाके पुत्र इलवर्सको लाकर गद्दीपर बैठा दिया।

वरका खान जू-छि-पुत्र शैवानके प्रपौत्र पूलाद खानके पुत्र अरवशाहकी सतानोमे से था। अबुल्खैरके दादा इब्राहीम ओगलानका भाई यही अरवशाह सुवर्ण-ओर्दूके छिन्न-भिन्न टुकडोमेंसे एकका खान था—अरवशाह और इब्राहीम दोनोने बापकी सम्पत्तिको आपसमें बाट लिया, इस प्रकार अरवशाह भी एक छोटासा खान (राजा) बन गया। इब्राहीमके पोते अबुल्खैरने अपनी शक्ति कितनी बढाई, इसका वर्णन हम तेमूरी-वशके वर्णनमें कर आये है। अरवशाहके बेटे हाजी तुली (तुगलक हाजी) का एक ही पुत्र तेमूरशाह था, जो कि कल्मकोके युद्धमें मारा गया। उइगुरोके सरदारने तेमूर-शेखकी खानमसे विदाई देते समय पूछा, तो खानमने कहा—"मुझे तीन महीनेका गर्भ है।" इसपर उइगुर घुमन्तू थम गये। यह खबर पाकर कुछ दूर चले गये नेमन कबीलेवाले भी ठहरकर बच्चेके पैदा होनेकी प्रतीक्षा करने लगे। छिड्-गिस्के पवित्र खूनकी इतनी महिमा थी, कि अपने भावी खानकी आशामें उन्होने अपने लाखो पशु-प्राणियोके साथ वहा ठहर जाना आवश्यक समझा। छ महीने बाद खानमको बच्चा पैदा हुआ, जिसका नाम यादगार रक्खा गया। उइगुरोने दूसरे कबीलोके पास भूयुनजी (भेट) भेजनेके लिये न्योता भेजा। नेमन काला घोडा भेजकर यादगारके ओर्दूमे लौट आये। उनके आनेपर माने गोदमे ले बापके तम्बूमे खानके आसनपर बच्चेको विठा दिया। उइगुरोने अधिक सम्मान दिखलानेके लिये अपने स्थानको खानके दरबारमे नेमनोको दे दिया। इसी तरह और भी कितने ही कबीले खबर पाकर अपने खानके पास लौट आये, लेकिन उइगुर और नेमन यही दोनो उज्बेक कबीले खानके कराची (विपत-सपतके साथी) रहे।

बडा हो यादगारने अपने उलुसका अच्छा नेतृत्व किया। उसके चार पुत्र हुये—वरका (वेरेका), अबलेक, अर्मानेक और अलक। १५वी सदीका समय था, लेकिन अभी भी मगोल भाषा बिल्कुल विस्मृत नही हुई थी, यह खानजादोके नामसे पता लगता है। अमीन अरबी नही मगोल-भाषाका शब्द है, जिसे अरबीमे जान, फारसीमें होश, और उज्बेकी तुर्कीमें तिन कहते है। "शैबानीनामा"में चारो पुत्रोको वरका, अबल्क, अबका और इलबानेक कहा गया है। वरका शरीरसे बहुत ही शक्ति-

शाली था। उसके समयमें अबुल्खैर दश्ते-किपचकका सबसे शक्तिशाली खान था। उसने १४५५ ई०में बरकाके नेतृत्वमें एक सेना बुखाराके खान अब्दुल्लतीफके पुत्रकी मददके लिये भेजी। उज्बेक अपने सहयोगी बुखारियोंसे झगड पडे, और सोग्द इलाकेके लूटके मालको ऊटोपर लादे लौट गये। कुछ समय बाद दो नोगाई खानो मूसाबेग और कुजाश मिर्जाके बीचमें लडाई हो गई। कुजाशके जीतनेपर मूसाने बरकासे सहायता मागी—नोगाई-वंश ज्यादा सम्माननीय समझा जाता था। बरकाने इस शर्त्तपर सहायता देनी स्वीकार की, कि मेरा पिता यादगार खान बनाया जाये और मूसा उसका प्रधान बेक (अमीर) बने। मूसाने स्वीकार किया। सफलताके बाद यादगारको सफेद नम्देके ऊपर उठाकर बाकायदा खान घोषित किया गया। यादगार खान अभियानपर चला। उसके हरावलका नायक मूसाबेग था। जाडेके दिन थे। जमीन बर्फसे ढँकी थी। घास-चारेका ठिकाना नही था। घोडे दुबले होते गये और रसद खतम हो गई। लौट चलनेकी बात कहनेपर बरकाने इन्कार कर दिया। एक पहाडीपर चढकर देखा, तो (उश्तउर्त) के परे एक उपत्यकामें कुजाश मिर्जाके तम्बू दिखाई पडे। बरकाने तुरन्त आक्रमण कर दिया। कुजाश पकडकर मारा गया, और उसके डेरे लूट लिये गये। बरका सुल्तानने कुजाशकी लडकी मलाई खानजादाके साथ व्याह किया। इस घटनाके कुछ ही समय बाद यादगार मर गया। अबुल्खैरकी मृत्यु भी इससे थोडा ही पहले हुई थी। अबुल्खैरकी मृत्युके बाद उसके उज्बेक जहा-तहा बिखर गये। उज्बेक कहावत है—"अगर तुम दुश्मनको अपने बापके घरकी ओर दौडते देखो, तो तुम्हें उसके साथ होकर लूटमे भागीदार बनना चाहिये।" बरका भला अबुल्खैरके धन और शक्तिकी लूटमे क्यो पीछे रहता ?

कुछ सालो बाद अबुल्खैरका पौत्र प्रसिद्ध विजेता मुहम्मद शैबानीका डेरा निम्न सिर-उपत्यकामे बरका सुल्तानके पास पडा था। उसने अपने आदमियोको हुक्म दिया—"रातको घोडोपर चढकर जाओ, और सूर्योदयके वक्त बरकाके तम्बूपर टूट पडो, दूसरी किसी चीजका ध्यान न करके सिर्फ उसको पकड लाओ।" बरका अपने तम्बूमे था। उसने घोडोके टापकी आवाज सुनी, और उसी समय कधेपर एक समूरी चोगा डालकर नगे पैर सरकडेके जगलोमें घुस गया। बर्फ पडी हुई थी। एक सरकडेने उसके पैरको घायल कर दिया, लेकिन वह उसकी परवा न कर सिर-दरियाके किनारे उगनेवाले उन्ही सरकडोके घने जगलमे छिपा रहा। शैबानीके आदमी इधर-उधर पूछ-ताछ करने लगे, जिसपर उइगुर कबीलेके एक ईनक (सरदार) मुगाने कह दिया, कि मै ही बरका हू। उसे पकडकर मुहम्मद शैबानीके पास ले गये। शैबानी बरकाको अच्छी तरह पहचानता था। उसने मुगासे पूछा, कि तुमने झूठ क्यो कहा। इसपर मुगाने जवाब दिया—"मैने उसका बहुत नमक खाया है। मै उसकी विपत्ति-सपत्तिमें साथी रहा हू। मैने सोचा, यदि मै उसका पीछा करनेवालोमेंसे कुछको इस तरह फसा रक्खू, तो उसे भागनेका अच्छा मौका मिलेगा। बाकी, अब जो तुम्हारी मर्जी हो, मेरे साथ करो।" शैबानीने प्रसन्न हो उसे इनाम देकर छोड दिया। उधर शैबानीके कुछ आदमी खूनसे पता पा बरकाको पकड लाये। शैबानीने उसे मार डाला, और उसके शिविरको लूट लिया। बरकाकी विधवा खातून अबुल्खैरके द्वितीय पुत्र खोजा मुहम्मद सुल्तानकी बीबी बनी। उसे पहले ही गर्भ था, जिससे जानीबेग (अब्दुल्ला खानका दादा) पैदा हुआ। बरकाके पहले हीके दो पुत्र इलबर्स और बलबर्स थे, जिनमे बलबर्स दोनो पैरोंसे लुज था। इन्ही दोनो भाइयोमेंसे एक इलबर्सको हुशामुद्दीनने वेसिरकी गद्दीपर बैठाया।

राजावलि—बरका-वशी खीवा-खान निम्न प्रकार हुये—

१	इलबर्स, बरका-पुत्र	१५१५ ई०
२	सुल्तान हाजी, बलबर्स-पुत्र	
३	हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र	
४	सोफियान, अमीनेक-पुत्र	
५	बुजुगा, अमीनेक-पुत्र	
६	अवानेक, अमीनेक-पुत्र	

७	काल, अमीनेक-पुत्र	१५३९–४६ ई०
८	अकताई, अमीनेक-पुत्र	१५४६ "
९	दोस्त, बुजुगा-पुत्र	१५५९ "
१०	हाजी मुहम्मद, अकताई-पुत्र	१५५९–१६०२ "
११	अरब मुहम्मद, हाजी मुहम्मद-पुत्र	१६०२–२१ "
१२	इसफन्दियार, अरब-पुत्र	१६२२–४२ "
१३.	अबुल्गाजी, अरब-पुत्र	१६४३–६३ "
१४	अनुशा, अबुल्गाजी-पुत्र	१६६३–८६ "
१५	एरेग, अनुशा-पुत्र	१६८६–८७ "
१६	शाहनियाज	१६८७–१७०२ "
१७	अरब मुहम्मद, अनुशा-पुत्र	१७०२ "
१८	हाजी मुहम्मद, अनुशा-पुत्र	१७१४ "
१९	यादगार, अनुशा-पुत्र	

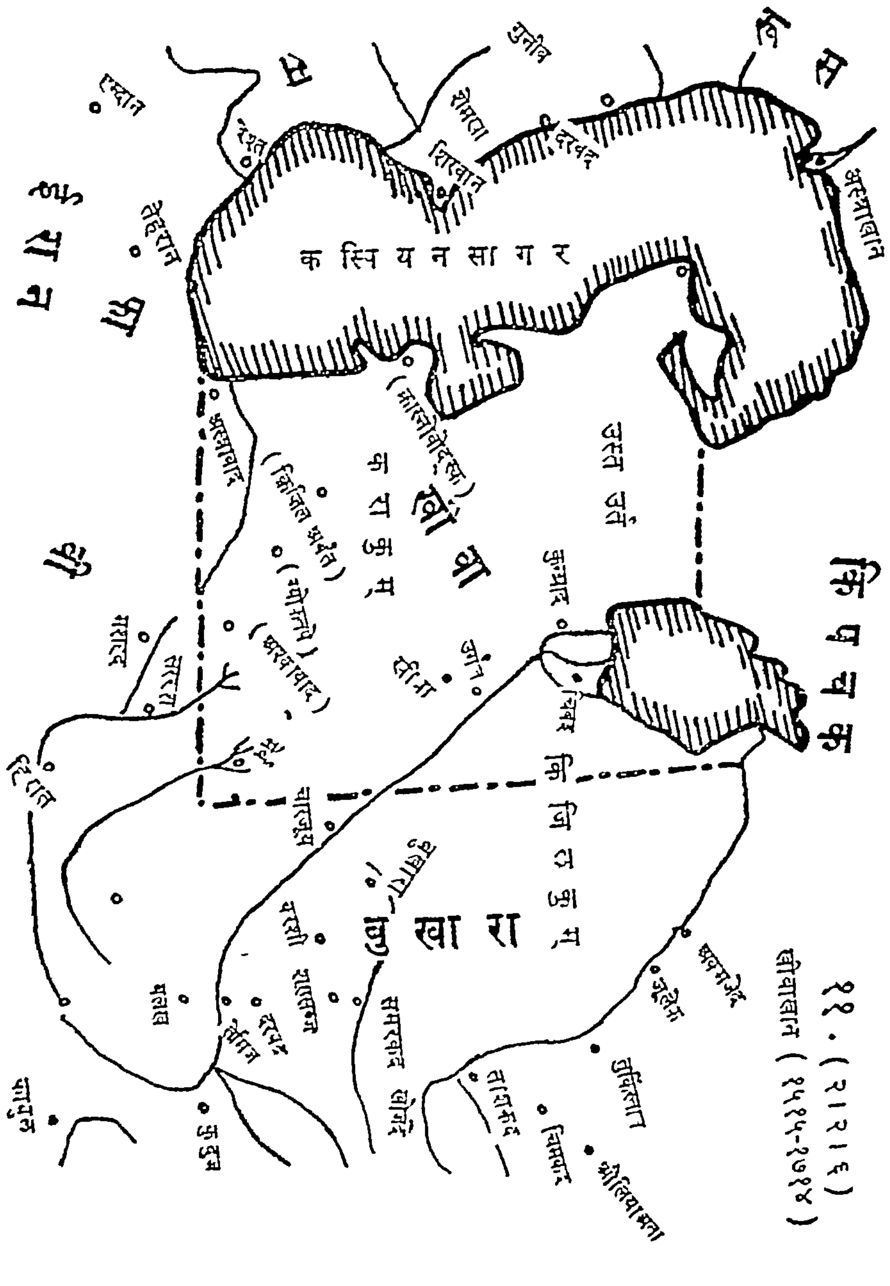

१९. (२१२।९) खीवाखान (१५१५-१७१४)

१. इलबर्स, बरका-पुत्र (१५१५ ई०)

इलबर्सको बुलाकर इधर छिपा रक्खा गया और उधर षड्यंत्रियोने घृणास्पद शिया ईरानियोके ऊपर आक्रमण करके उन्हे मार डाला, केवल एक ईरानी भागकर जान बचा पाया। दूसरे दिन ईरानी राज्यपालके महलमे लाकर इलबर्सको खान घोषित किया गया। उज्बेक और सरत (फारसीभाषी) दोनो ही सुन्नी होनेसे शियोके साथ घृणा करते थे। उन्होने इस समय बडा उत्सव मनाया। इसके बाद यगी शहर और तेरसेकने भी इलबर्सकी सेनाके सामने शिर झुकाया। इलबर्सने अपने भाई बलबर्सको "बिलि-किच"की उपाधि दे यगीशहरका शासक बनाया। उरगजमे अभी ईरानी राज्यपाल सुल्तानकुल्ली अरब शासन कर रहा था, लेकिन तीन ही महीने बाद इलबर्सने सुल्तानकुल्लीको भी महलमे पकडकर सभी नौकरोके साथ मार डाला। हजारास्प और खीवाकी छावनियोने वहाके सरतोसे राय पूछी, तो उन्होने रहनेके लिये जोर दिया। दश्तेकिपचकसे अब इलबर्सने अपने भाई-बंधोको बुलाया और बूढे उइगुरकी बात नही मानी—"उज्बेकोमे बादशाहकी महिमा अपने अधीनोके प्रेमपर निर्भर करती है।" यादगारके सभी पुत्र मर चुके थे, किन्तु अबलेक खानका एक पुत्र और अमीनेक खानके छ पुत्र अपने परिवारो और ओर्दूके साथ आकर उरगजमे बस गये। इलबर्स स्वय वेजिरमे रहता था। उसके भाई-बंधोने खीवा और हजारास्पको इतना लूटा और बरबाद किया, कि इन शहरोको और कातको भी ईरानी छोड गये। १५२३ ई०मे शाह इस्माईल मर चुका था। खुरासान पर्वतश्रेणीके उत्तरवाले महीने और देरूनतक उसके सभी राज्यपाल अपने स्थानोको छोडकर भाग गये। उज्बेकोके लिये खुरासानियो और तुर्कमानोके ऊपर लूटके अभियान करनेकी छूट मिल गई। इन अभियानोमे लुज बलबर्स रथपर चढकर अगुवा बनता था। किजिल-बासोपर विजय प्राप्त करनेके उपलक्षमे इलबर्सके सात पुत्र गाजी (धर्मयोद्धा) कहलाये।

२. सुल्तान हाजी, बलबर्स-पुत्र

इलबर्सके मरनेपर दोनो भाइयोके पुत्रोमे सबसे बडा सुल्तान हाजी गद्दीपर बैठा, किन्तु राज्यकी सारी शक्ति उसके चचेरे भाई सुल्तान गाजीके हाथमे रही। सुल्तान गाजी बहुत ही धनी और स्वेच्छाचारी था। एक साल राज्य करनेके बाद सुल्तान हाजी मर गया, और उसके बाद यादगार-वंशकी ज्येष्ठतम सतान होनेसे हसनकुल्लीको खान बनाया गया।

३. हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र

उरगजको इसने अपनी राजधानी बनाया। इलबर्स और अबानेकके पुत्रोने इसके ऊपर आक्रमण किया, और मुहासिरेके कारण उरगजमे भुखमरी शुरू हो गई। चार महीने बाद उसने आत्म-समर्पण किया। हसनकुल्लीपर अगकनाईके वधका दोष लगाया गया था, जिसके लिये उसके ज्येष्ठ पुत्र बलाल सुल्तानको मारकर बदला लिया गया। हसनकी विधवा और दूसरे पुत्र समरकद भेज दिये गये।

४. सोफियान, अमीनेक-पुत्र

अमीनेक (अबानेक) का पुत्र सोफियान उरगजमे खान बना। खानजादोमें रियासतोका फिरसे वितरण किया गया, जिसमे बरका सुल्तानके पौत्रोको वेजिर, यगीशहर, तेरसेक, देरून, खुरासान और मगिशलकके तुर्कमान मिले। अबानेक खानके चार पुत्रोको खीवा, हजारास्प, कात, बलदुमाज, नीकीची सूबुई (नदी-तटका इलाका), बगाबाद, निसा, अबीवर्द, चिहारदे, मेहीने, जेजे तागबुई (पहाडी इलाका), और साथ ही आमू, बलखान और देहिस्तानके तुर्कमान भी मिले। उस समय अबुल्गाजीके अनुसार वक्षु नदी बलखानमे कास्पियन समुद्रमे गिरती थी, और आजकल जहा विकराल रेगिस्तान खडा है, वहा बहुतसे समृद्ध ग्राम और नगर बसे हुये थे। पाच शताब्दियो बाद, अब फिर कास्पियन समुद्रकी ओर वक्षुकी एक धारा मनुष्योके हाथोद्वारा मोडी जा रही है, जिसके कारण फिर इस मृत भूमिमे जीवन सचार होनेवाला है। बलखानके नजदीक रहनेवाले इरसारी तुर्कमानोने कुछ

समयतक सोफियानको कर दिया, इसके बाद खानकी ओरसे कर उगाहनेके लिये जब आदमी भेजे गये, तो उन्हें इन घुमन्तुओंने मार डाला। इसपर सोफियान एक बडी सेना ले इरसारियो तथा पडोसी खुरासानके सलूरियोके डेरोंपर आक्रमण करके लूट-मार करते बहुतसे स्त्री-बच्चो और सम्पत्तिको अपने साथ ले गया। उस समय कितने ही तुर्कमानोने चू-तटकी निर्जल-अधित्यका (प्लेटो) मे शरण ली थी। उन्हें चारो ओरसे घेर लिया गया, जिसके कारण बहुतसे प्यासके मारे मर गये। अवानेक-पुत्र अगताईको उन्होने वचन दिया, कि हम तुम्हारी सतानके सदा भक्त रहेगे। अगताईने बीचमें पडकर प्रत्येक मारे गये कर-उगाहकके लिये हजार भेडे अर्थात् कुल चालीस हजार भेडें दड देनेपर समझौता करा दिया। इरसारियोने सोलह हजार, खुरासानी सलरियोने सोलह सौ, और तेके-सारिक-यामूत—इन तीन कबीलोने आठ हजार भेडें दी। कुछ समय बाद तुर्कमानोकी जनगणना करके उनके ऊपर निम्न प्रकार कर लगानेका निश्चय हुआ—

इनगकी सलूर (भीतरी सलूर)	१६०००, तथा उसके ऊपर		१६०० खानकी रसोईके लिये।			
हसन कबीला	१६०००	और	१६००	"	"	"
अरबाजी (भीतरी सलूर)	४०००	और	४००	"	"	"
गोकलान	१२०००	और	१२००	"	"	"

अदकली (खिजिर), अली, तीवेची — इन तीनो वक्षु-तटवासी कृषक कबीलोको अपनी उपज और भेडोंमेंसे कुछ कर और अदकली (सैनिक) भी देने पडे।

सोफियानके मरनेपर खीवा उसके पुत्रोंको खोरिशके रूपमे मिला।

५. बुजुगा, अमीनेक-पुत्र

भाईका स्थान जिस वक्त बुजुगाने लिया, उस वक्त बुखाराके उबैदुल्ला खान और ईरानी शाह तहमास्पके बीचमें सघर्ष हो रहा था। ख्वारेज्मी भी इससे फायदा उठानेके लिये पील-कुपरुकीतक जा खोजन्द और अस्पेराई (अस्त्राबादके समीप)पर टूट पडे। शाह तहमास्पके ऊपर पश्चिमसे उसमान-अली तुर्क भी प्रहार कर रहे थे। दुश्मनोंमें फूट डालनेके लिये शाह तहमास्पने छिङ-गिस् खानके खूनसे सबध जोडनेके लिये बुजुगा खानसे पुत्री मागी। खानने अपनी पुत्री न होनेसे अपनी भतीजी तथा सोफियान खानकी पुत्री आइशाको देना चाहा। विवाहपत्र लिखवानेके लिये लडकीका भाई आगिम सुल्तान गया। शाहने उसका कजवीनमें स्वागत-सत्कार किया और खोजन्द-शहर (ईरान)को उसे जागीरमें दिया। उसने सोनेके नौ डले, चादीके नौ डले, अच्छी जातिके सुसज्जित नौ घोडे, रेशमके ऊपर सोनेके काम किये नौ तम्बू तथा समुचित कालीन और तकिये, एक हजार थान रेशम, आदि बुजुगा खानके लिये भी भेट भेजे। इसके फलस्वरूप कुछ समयके लिये ख्वारेज्मी उज्बेकोने ईरानी सीमापर लूट-मार बन्द कर दी। काफी दिनोतक राज्य करनेके बाद बुजुगा मर गया और उसकी जगह उसका भाई अवानेक खान बना।

६ अवानेक, अमीनेक-पुत्र

बुजुगाके तीनो पुत्रो दोस्त मुहम्मद, ईस मुहम्मद और बुरहमसे पहले दोनोको कातकी जागीर मिली। अवानेककी दो बीबिया मगीत कबीलेकी थी, और एक दासी थी। दासीसे उसका पुत्र दीन मुहम्मद हुआ, जो लडकपनसे ही युद्धके खेल खेला करता था। उस समय अस्त्राबादके पासका इलाका उरगजके उज्बेकोंके हाथमें था। दीन मुहम्मद बीस सालका हो गया। उसने इस इलाकेको अपने लिये मागा। न देनेपर उसने चालीस सहायकोंके साथ जाकर एक तुर्कमान बेक (सरदार)के ऊटो और भेडोको लूट लिया। तुर्कमान बेकने अपने स्वामी मुहम्मद गाजी सुल्तान इलबर्स-पुत्रको इसकी खबर दी। मुहम्मद गाजीकी बहिनकी शादी हाल हीमे अवानेक खानसे हुई थी। उसने छापा मारकर दीन मुहम्मदको पकड, लूट मालको छीन, कुछ दिनो बदी रख उसे हाथ-पैर बाधके घोडेपर सवार करके बापके

पास भेज दिया। लेकिन दीनू (दीन मुहम्मद) ऐसा-वैसा आदमी नही था। उसके लिये उसके साथी अपना खून-पसीना एक करनेके लिये तैयार थे। उन्होने रास्ते हीमे दीनूको छुडा लिया। दीनूने बाप और सौतेली मा तमगाज चुराको झूठी चिट्ठी लिखी, कि तमगाजकी बहिन बहुत बीमार है। बहिन और बहनोईकी चिट्ठी पाकर मुहम्मद गाजी आया, तो पता लगा, चिट्ठी जाली थी। बहिनने भाईको बहुत सावधान कर दिया। इसी समय दीनूके आदमियोके पैरकी आहट सुनकर मुहम्मद गाजी अस्तबलमें रक्खी सूखी लीदके ढेरमे जा छिपा, किन्तु आदमियोने उसे पकड लिया और उसकी गर्दन काट दी। यह खबर वेजिरमे गई। निहत सुल्तानके भाई सुल्तान गाजीसे मिलने अली सुल्तान गया था। उसने भाईके वधका गुस्सा अली सुल्तानको मारकर निकाला—"खूनका बदला खून" घुमन्तू कबीलोका एक सर्वोपरि विधान है। इलवर्सका ओर्दू वेजिरमें रहता था और अवानेकका ओर्दू उरगजमे। खानने अपने कबीलेवालोको मना किया, लेकिन वह अली सुल्तानके खूनका बदला लेनेके लिये अधीर थे। दोनोका किर-मगिशलकके छोरपर अवस्थित कुमकदमे युद्ध हुआ, जिसमे अवानेककी जीत हुई। इलवर्सके खानदानको मारकर सामानको लूट लिया गया। सुल्तानकी बेगा उलुग तूबे अपने लडको और लडकियोके साथ बुखारा जानेके लिये छोड दी गई, जहापर बलवर्स सुल्तानका भी परिवार पहलेसे ही रहता था। अब सारा ख्वारेज्म अवानेक खानके लडकोका था। खानने अपने लिये उरगज रख बाकी अपने बेटे-पोतोमे बाट दिया। दीन मुहम्मदको सुल्तान गाजीवाला देरून इलाका मिला।

सुल्तान गाजीके दो पुत्र उमर गाजी और शेर गाजी बुखारामे रहने लगे थे। उमरने बापके खूनका बदला लेनेके लिये उबैदुल्ला खानसे सैनिक सहायता ले अवानेकपर आक्रमण किया, और उसे मारकर पितृ-ऋण चुकानेमे सफल हुआ।

इस झगडेके बाद भी देरूनका इलाका दीन मुहम्मदके हाथमें रहा, जहा अवानेकके दो बेटे भी ख्वारेज्मसे भागकर आ गये थे। दीन मुहम्मदने खिजिर कबीलेकी शाखा अदकालोके बेक (सरदार) को सैनिक सहायता देनेके बदले तरखून (राजकुमार) की पदवी और सेनामे वामपक्षमें स्थान पानेका सम्मान प्रदान किया, तथा अदकालियोको उज्बेकोमे गिने जानेका प्रलोभन दे अपनी ओर कर लिया। इस प्रकार एक हजार अदकाली सैनिक मिले। तीन हजार और सैनिकोको जमाकर दीन मुहम्मदने खीवापर चढाई कर दी, और बुखारासे आई उबैदुल्लाकी सेना को हराकर १५३९ ई०के आसपास परिवारकी रूठी लक्ष्मीको मना लिया।

७ काल, अमीनेक-पुत्र (१५३९–४६ ई०)

लेकिन ख्वारेज्मका खान अब भी अवानेकका भाई काल खान हुआ, जिसने सात वर्षतक शासन किया। उसके समयमे ख्वारेज्म कितना धनधान्यपूर्ण था, वह इस कहावतसे सिद्ध है—"काले खानने गद्दी पकडी, एक पैसेमे रोटी तगडी।"

८ अकताई खान, अमीनेक-पुत्र (१५४६ ई०)

नये खानने वेजिरको अपनी राजधानी बनाया। काल खानके पुत्रोको कात नगरकी, उसी तरह सोफियान खानके पुत्रो यूनस और पहलवान-कुल्लीको भी जागीर मिली थी। लेकिन, बुजुगा खान, अवानेक खान और अकताई खानके बेटोने मिलकर अपने इन सम्बन्धियोको भगा दिया और वह बुखारामे शरण लेनेके लिये मजबूर हुये। छिने हुये इलाकेकी बाटमे अवानेक खानके पुत्र अली सुल्तानको देरून दिया गया, उसके भाई महमूदको उरगज, हाजिमको वगाबाद, दीन मुहम्मदको निसा और अबीवर्द, और बुजुगाके दोनो पुत्रो ईस और दोस्तको खीवा-हजारास्प मिले। सोफियानके पुत्र यूनसने नोगाइयोके प्रसिद्ध सुल्तान इस्माईलकी लडकीसे व्याह किया। वह अपने चालीस अनुचरोके साथ बुखारा जा रहा था। तुतूक उस समय निर्जन था और लोग उरगजके पास डेरा डाले हुये थे। इसी समय यूनसको अपने पूर्वजोकी सम्पत्तिको लौटानेका ख्याल आया, और रातमे अपने साथियोके साथ महलमे घुसकर उसने राज्यपाल सरी मुहम्मद सुल्तानको पकड पहरेमे अकताई खानके पास वेजिरमें

भेज दिया। सैनिक और नागरिक महमूदसे परेशान थे, इसलिये उन्होंने यूनसका स्वागत करते हुये उसे खान घोषित कर दिया। अकताई सेना लेकर आया, लेकिन उसे हारकर भागना पड़ा। यूनस और अकताईकी पुत्रीके बेटे कासिम सुल्तानने पीछा करके नानाको पकड़कर उरगज लेजा चुपकेसे अकताईको इस तरह मार डाला, कि उसके शरीरपर कोई घावका चिह्न नहीं दिखाई पड़ता था—मालूम पड़ता था, जैसे वह स्वाभाविक मृत्युसे मरा हो। निहतकी लाशको उसके परिवारके पास वेजिरमें भेज दिया गया। मृत खानके पुत्रोंने बदला लेनेके लिये उरगजपर चढ़ाई की, और यूनसको बुखारा भाग जाना पड़ा, लेकिन किसी अनुचरने छिपे हुये कासिम सुल्तानको पकड़ा दिया। उरगज शत्रुओंके हाथमें गया, और कासिम कत्ल कर दिया गया। सोफियान खान और काल खानके वंशका उच्छेद हो गया और अवानेक खानके लड़के खुरासान भाग गये। फिर बटवारा हुआ, अकताई खानके परिवारको वेजिर और उरगज मिले, और बुजुगा खानके पुत्रों ईस, दोस्त और बुरुसको खीवा, हजारास्प और कातके इलाके।

९ दोस्त खान, बुजुगा-पुत्र (१५५६ ई०)

दोस्त बड़े ही नरम स्वभावका आदमी था। भाई ईसने उरगज मागा, और अपने लिये सिर्फ खीवा-को रखनेके लिये कहा। दोस्तके देनेपर भी हाजिमने इन्कार कर दिया। इसपर ईसने हाजिमको वहासे हटानेके लिये हमला कर दिया। सात दिनतक मुहासिरा करनेपर भी सफलता नहीं मिली। इसपर खिसियाकर उसने उइगुर और नेमन कबीलेके आदमियोंको छोड़ बाकी सभी बंदियोंको बड़ी निष्ठुरतासे मार डाला, और फिर खीवा जाकर इन कबीलोंके उज्बेकोंको वहासे भगाकर उनका स्थान दुश्मन कबीलेको दे दिया। कुछ समय बाद १५५६ ई०में वह फिर उरगजपर चढ़ा, और सात दिनके असफल मुहासिरेके बाद धोखेसे सरतोंके मुहल्लोंमे घुस गया। अकताईका पुत्र नेमन उइगुर कबीलेवालोंके साथ वेजिरकी ओर हट गया। कुछ समय बाद हाजिम मुहम्मदने अपने भाइयों तथा अवानेक-पुत्र अली सुल्तान एवं दीन मुहम्मद-पुत्र अबुल्सुल्तानकी सहायतासे उरगजपर आक्रमण किया। चार महीनेके मुहासिरेके बाद किला तोड़नेके लिये आक्रमण करते समय ईस सुल्तान मारा गया। कुछ सैनिकोंने खीवामें जा दोस्त मुहम्मदको भी मार डाला। ईसके दो लड़के वहासे भागकर बुखारा जा वहीं मरे। खीवा-राजवंशमें राजपरिवारोंका कत्लेआम और उच्छेद आम बात थी। अब बुजुगा खानका वंश समाप्त हो गया। यह घटना ९६५ हि० (२४ X १५५७–१४ IX १५५८ ई०) की है।

१० हाजी मुहम्मद, हाजिम, अकताई-पुत्र (१५५६–१६०२ ई०)

हाजिम अकबरका समकालीन था। खान घोषित होने समय इसकी उमर उन्तालीस सालकी थी। इसने वेजिरको अपनी राजधानी बनाया, और अली सुल्तानको उरगज, हजारास्प तथा कात मिले। हाजिमके भाई महमूदको आधा खीवा, उलुग-तूबे-ताश-कूनिशके तुर्कमान, दूसरे भाई तेमूरको आधा खीवा मिला। दीन मुहम्मदके पोते नूर मुहम्मदके इलाके मेर्वपर हमला किया करते थे। दीन मुहम्मदको निसा और अबीवर्द मिला था, यह हम बतला आये हैं, जहासे वह बराबर ईरानके शियोंपर जहाद किया करता था। शाह तहमास्पने सेना भेजकर अबीवर्दको छीन लिया। दीन मुहम्मद इसपर सीधे कजवीन चला गया। वह साहसका पुतला था। शत्रुके हाथ मारे जानेका उसे कोई डर नहीं था। फिर शाहकी जाली चिट्ठी लाकर उसने अबीवर्दको खाली करवा लिया। फिर एक-एक करके किजिल-बाश (शिया) बादशाहके अनुयायियोंको मारा। तहमास्प उसे दंड देनेके लिये आया, तो दीन मुहम्मदने चालीस-पचास आदमियोंके साथ सीधे शाहके पास जा उसके दामनको चूमा। शाहने अपना एक हाथ उसकी गर्दनपर और दूसरा हाथ छातीपर रखकर देखा, उसकी सास बिल्कुल स्वाभाविक-सी चल रही है। इसपर उसने आश्चर्य करते हुये कहा—"जरूर यह (हृदय) पत्थरका है।"

फिर दीनूके सम्मानमे शाहने एक बडी दावत की और क्षमा करके अबीवर्द भी उसे प्रदान कर दिया।

बुखाराके खान उबैदुल्लाने मेर्वमे योलुम बीको अपना राज्यपाल नियुक्त किया था। लोगोने विद्रोह कर दिया, इसपर तीस हजार सेना लेकर उबैदुल्ला आया। योलुमने दीन मुहम्मदसे मदद मागी। दीन मुहम्मद अपने सवारोके साथ उस जगह पहुचा, जहापर मुरगाव नदी वालुका-राशिमे अन्तर्धान हो जाती। उसने अपने सवारोको दोनो वगलोमे वृक्षकी डालिया वाधकर धीरे-धीरे चलनेके लिये कहा। धूलसे आसमान छा गया। बुखारी सेना उसे देखकर डर गई। एक ओरसे दीन मुहम्मदकी भारी सेना और दूसरी तरफ योलुमकी फौज, दोनोंके वीचमें पडकर मरनेकी जगह बुखारियोने घर लौट जाना ही अधिक पसन्द किया। दीन मुहम्मदने इस प्रकार मेर्वपर अधिकार करके अपनेको वहाका खान घोषित किया, और वही रहते चालीस वर्षकी उमरमें ९६०हि० (१८XII१५५२–८ XI १५५३ ई०) मे मरा। उसने अपने द्वितीय पुत्र अवुल मुहम्मदको अपना कलखान (युवराज) वनाया था, जो उसके बाद मेर्वकी गद्दीपर वैठा।

एक समय अवुल मुहम्मदके पुत्र जलालने खुरासानपर आक्रमण किया। प्रतिरोधके लिये ईरानियोने मशहदमे सेना जमा की। दोनो ओरकी सेनाओमे लडाई हुई, जिसमे अपने दस हजार उज्बेकोके साथ जलाल मारा गया। अवुल मुहम्मदको अपने इकलौते पुत्रके मारे जानेका भारी सदमा हुआ, जिसका इलाज हकीमोने दूसरा पुत्र प्राप्त करना वतलाया। मेर्वकी एक लोली (डोम या रोमनी) स्त्री वीवीजेह तम्बुरिन वजा और चित्र खीचकर जीविका कमाती थी। उसने व्याह नही किया था, किन्तु उसके पास चार सालका लडका था। उसी लडकेको लाकर घोषित कर दिया गया कि, यह अवुल मुहम्मदका लडका है। अवुल मुहम्मदने उसका नाम नूर मुहम्मद रखा। यही नूर मुहम्मद अवुलके मरनेके वाद मेर्वके गद्दीपर वैठा। कितने ही सालो बाद हाजिमके पुत्रोने यह कहते हुये उसपर आक्रमण किया—"हम लोली (वेश्या) के लडकेको नही मान सकते।" इसपर नूर मुहम्मदने वुखारावालोके पास सदेश भेजा—"मै तुम्हारी ओरसे राज्यपाल होनेके लिये तैयार हू।" अब्दुल्ला खानने आकर मेर्वको तो ले लिया, लेकिन साथ ही नूर मुहम्मदको अगूठा दिखला दिया। नूर अव उरगजमे हाजिमकी शरणमे गया। अवानेक-पुत्र अली सुल्तानको उरगज-हजारास्प-कातके अतिरिक्त निसा, अवीवर्द और तागवुई भी मिले थे। वहासे वह वसत और गर्मियोमें वरावर खुरासानपर आक्रमण करके पीलकुरुकी, तरशीज, तरवेत, जाम और खारकारमें लूट-मार मचाया करता था। अली सुल्तानसे नूर मुहम्मदसे जुरजान, जार्जरूम, कराइलू और अस्त्रावादको जीत लिया। अव उसके पास चालीस हजार सेना थी। वह अपने प्रत्येक उज्बेकको प्रतिवर्ष सोलह भेडें देता था, जिसके लिये तुर्कमानोसे कुछ कर लेता, कुछ ईरानकी लूटमेंसे, और एक पचमाश भाग अपने पाससे भी देता था। एक वार उसने ईरानियोकी पन्द्रह हजार सेनाको हराकर पाच हजार घोडे पकडे थे। ईरानको इन्ही चढाइयोमें ९७६ हि० (२६ VI १५६८–१७ V१५६९ ई०)मे अली सुल्तानके मारे जानेके वाद उसका पुत्र सजर निसामें उसका उत्तराधिकारी हुआ, किन्तु पच्चीस वर्षकी आयुमें ही निस्सतान मर गया। अली सुल्तानके मरनेपर हाजिम खानने वेजिरको अपने भाई मुहम्मद सुल्तानको दे दिया और स्वय जाकर उरगजमें रहने लगा। तुर्कीके सुल्तान—जो सुन्नियोका खलीफा भी था—का दूत मिलकर शियोपर हमला करनेकी प्रेरणा देनेके लिये हिन्दुस्तान गया था। अव वह उसी वातके लिये वुखारा आया। वुखारासे वह उरगज और मगिशलकके रास्ते जव लौट रहा था, उसी समय हाजिमके पुत्र मुहम्मद इब्राहीमने उरगजमे उसे लूट लिया और मुश्किलसे यात्रा भरके लिये थोडासा पैसा छोड दिया। वुखाराका खान अब्दुल्ला इसपर नाराज हो गया। उधर कास्पियनके पश्चिमी तटका इलाका शिरवान तुर्कीके सुल्तानके हाथमें था। अन्तर्वेदके व्यापरियोको उरगजसे आगे मगिशलक पहुच जहाजसे कास्पियन पार कर शिरवानके रास्ते यात्रा करनी पडती थी, क्योकि कास्पियनका दक्षिणी तट शियोके हाथमें था, जहा सुन्नी व्यापारियोके जान-मालकी खैरियत नही थी। उक्त घटनासे एक साल पहले हाजी किरतास एक वडे कारवा और मक्काके तीर्थयात्रियोके साथ उरगज पहुचा। उसे भी पुलाद सुल्तानके पुत्र वाबा सुल्तानने लूटकर

बुखाराकी ओर खदेड दिया। नूर मुहम्मदने मेर्वको लेकर अब्दुल्लाके मनोरथको असफल कर दिया था, इसलिये अब्दुल्लाने बडी तैयारी की। हाजिम खान अपने उज्बेकोपर विश्वास नही करता था। वह अपने पुत्र मुहम्मद इब्राहीमके हाथमे उरगजको छोड अपने दूसरे पुत्र अरब मुहम्मद सुल्तानकी जागीरमे वेरून चला गया। बुखारी सेनाके आनेपर ख्वारेज्मी-उज्बेक खीवा और हजारास्प आदि नगरोको छोड वेजिर * भाग गये।

खीवासे निकला दो हजार परिवारोका विशाल गिरोह किसी उत्सवके जलूसकी तरह मालूम होता था। पातीसे खडा होनेमें उन्हे आधा दिन लगा था। उन्होने अपनी गाडियोपर घरकी मुर्गियो, चटाइयो और सभी चीजोको लटका रक्खा था। बुखारी सेनाने खीवापर अधिकार कर नागरिको-के साथ मित्रतापूर्ण घोषणा करके वेजिरका रास्ता पकडा। रास्तेमे उसने पुलाद सुल्तानके अनुचरोको तितर-वितर करते हुये उनका सामान लूट लिया। वेजिरमे आपसमे फूट थी, इसलिये वह शत्रुसे कैसे मुकाबिला करते? एक मासतक नगरका मुहासिरा रहा। बुखारी अब्दुल्ला खानने माग की थी—"मै केवल बाबा सुल्तानको दड देनेके लिये आया हू, तुम मेरे पास निर्भय चले आओ।" खान स्वय अब्दुल्लाके शिविरमे चला गया, और इस प्रकार आपसी फूटके कारण सारा ख्वारेज्म बिना एक भी प्रहारके अब्दुल्लाके हाथमे चला गया। अब्दुल्ला वहाके भिन्न-भिन्न शहरोमे अपने राज्यपाल नियुक्त करके १००२ हि० (१७ IX १५९३–१८ VIII १५९४ ई०) में बुखारा लौट गया। पीछे अपनी शपथकी कोई पर्वा न करके अब्दुल्लाने बीस-बाईस राजकुमारोको अक्सूमे डुबाकर मरवा दिया और लोगोके ऊपर भारी कर लगाया। हाजिम खान अपने बचे-खुचे सुल्तानोके साथ भागकर शाह अब्बास I के पास चला गया, और उसका पुत्र सुईउनिच मुहम्मद अपने दो पुत्रोके साथ काफिर शियोके पास जाना पसद न कर तुर्कीमें शरणार्थी हुआ। इस समय अब्दुल्लाका खूनखार पुत्र बलखका राज्यपाल अब्दुल मोमिन सफावियो (ईरानियो) से लड रहा था। ख्वारेज्ममें सेना कम रह गई थी, यह खबर पाकर हाजिमके पुत्र अरब मुहम्मदने चुपचाप अस्त्राबादके लिये प्रस्थान कर दिया। पीछे हाजिम भी आ पहुचा। तुर्कमान मदद करनेके लिये तैयार ही थे। इस प्रकार अरब मुहम्मदने १००४ हि० (६ XI १५९५–२७ VII १५९६ ई०) मे कई शहरोको ले लिया। लेकिन जब अब्दुल्लाने भारी सेना भेजी, तो दुश्मन तितर-बितर हो गये। हाजिम अस्त्राबाद होते शाहके दरबारमे पहुचा। अब्दुल्लाको बाबा सुल्तानसे मुकाबिला करनेके लिये हजारास्पका चार मासतक मुहासिरा करना पडा। अन्तमे बाबा सुल्तान पकडकर मारा गया और ख्वारेज्मपर फिर बुखाराका शासन स्थापित हो गया।

१००५ हि० (२५ VIII १५९६–१६ VII १५९७ ई०) मे अब्दुल्लाके मरनेपर शाहने स्वय सेना लेकर बोस्तामपर चढाई की, और हाजिम तथा उसके पुत्र अरब मुहम्मदको ख्वारेज्म जानेके लिये आदेश दिया। हाजिम उस समय पद्रह आदमियोके साथ कुरेन पहाड़ मे एक तेके कबीलेके डेरेमें था। अब्दुल्लाके बाद उसके उत्तराधिकारी अब्दुल् मोमिनके भी कत्लकी खबर सुनकर वह आठ दिनमे चलकर उरगज पहुच गया, और उसका शासन फिरसे ख्वारेज्मपर स्थापित हो गया। उसने अपने पुत्र अरब मुहम्मदको खीवा और कात दिया, पौत्र इसफन्दियारको हजारास्प, और अपने लिये उरगज तथा वेजिरको रक्खा। जिन उज्बेकोको जबर्दस्ती बुखारा ले जाया गया था, वह भी लौट आये। इसी समय नूर मुहम्मद भी ईरानसे अपनी पुरानी जागीरमें लौट आया था। नूर मुहम्मद उज्बेकोको सताता और तुर्कमानो तथा सरतोका पक्षपात करता था। यह खबर सुन शाह अब्बासने एक मासके मुहासिरेके बाद मेर्वको उससे छीन लिया। अबीवर्द, निसा और देरून भी शाहके हाथमे चले गये, जहापर उसने अपने राज्यपाल नियुक्त किये। नूर मुहम्मदको वह पकडकर अपने साथ ईरान ले गया, जहा वह बन्दीखानेमे मरा।

* बर्तोल्दके अनुसार इसका ध्वसावशेष उस्तउर्तकी अधित्यकामे चिकके नजदीकका देवकेसकेन है, अथवा कुन्या-उरगजके दक्षिण-पश्चिम २४ मीलपर अवस्थित शेरवानका ध्वसावशेष है, जो वक्षु-कास्पियन नहरके बननेकी प्रतीक्षामे सोया हुआ है।

हाजिम मुहम्मद १०११ हि० (२१ VI १६०२–१२ V १६०३ ई०) में मरा।

जेन्किन्सनकी यात्रा—हाजिम मुहम्मदके शासनकालमे अग्रेज व्यापारी जेन्किन्सन खीवासे गुजरा था। उसके यात्रा-विवरणसे उस समयकी बहुतसी बातोपर प्रकाश पडता है। जेन्किन्सनने १३ अप्रैल १५५८ ई०को अपने मालके साथ मास्को छोडा और १४ जुलाईको वह अस्त्राखान पहुचा। अपने मालके ढोनेके लिये वहा उसने बनी-बनाई नाव खरीदी, और कास्पियन समुद्रके उत्तरी तटसे होते यायिक (उराल) और यम्बा नदियोके मुहानोको बाई ओर छोडते वह २७ अगस्तको मगिशलकमे उतरा। उसके साथ और भी कितने ही ईरानी तथा तातार व्यापारी अपनी नावोमे चल रहे थे। मगिशलकके राज्यपालने ऊटोका इन्तिजाम कर दिया। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि उसे काफी भेंट-पूजा देनी पडी। जेन्किन्सन अब अपना माल ले स्थल-मार्गसे वेजिर पहुचा। वह लिखता है—लोग बडे नोचनेवाले हे। मुझे प्रत्येक ऊटके लिये तीन रूमी चमडे और चार लकडीके वर्त्तन देने पडे, राज्यपालको अलग नौ चमडे और चौदह दूसरी चीजे भेंट देनी पडी। जिस कारवामे जेन्किन्सन चल रहा था, उसमे हजार ऊट थे। पाच दिनकी यात्राके बाद वह मगिशलकके उस इलाकेपर पहुचा, जिसपर तेमूर सुलतानका अधिकार था। सुल्तानने बडा अच्छा बर्ताव किया और जेन्किन्सनको मास और घोडीका दूध दिया। उसने उससे पद्रह रूबलकी चीजे ली, लेकिन उसके बदलेमें एक घोडा इनाम दे अपने तम्बूमे अग्रेज व्यापारीकी जियाफत भी की। वहासे रेगिस्तानके भीतर बीस दिनका रास्ता चलना पडा। खानेके लिये एक घोडा और एक ऊट मारना पडा। पानी कभी दो दिनपर मिलता था, सो भी खारा-सा। अब कारवा कास्पियनकी एक खाडीपर पहुचा, जहाके तुर्कमान सरदारने धमकाकर पैसा वसूल किया। जेन्किन्सन लिखता है कि, इस समय (१५५८ ई०) वक्षु (आमू-दरिया) यहीपर कास्पियन-समुद्रमें गिरती है।

६ अक्तूबरको रवाना होकर तीन दिनकी यात्राके बाद वह शहर वेजिर (सेलीजर) में पहुचा। अजीम (हाजिम) खान अपने तीन भाइयोके साथ यही रहता था। जेन्किन्सनने ६ अक्तूबर (१५५८ ई०)को खानसे भेंट की, और भेटके अतिरिक्त रूसके जारका पत्र भी उसे दिया। खानने घोडेके मास और दूधसे दावत कर, रास्तेके लिये सुरक्षा-पत्र भी दिया। वेजिरका दुर्ग एक ऊचे पहाडपर था। खानका घर बहुत ऊबड-खाबड और दुर्बल मिट्टीका था। लोग बहुत गरीब थे। दक्षिण का इलाका अधिक उर्वर था। उसने लिखा है—"यहा एक बढिया फल दोनी (तरबूजा) होता है, जो बहुत बडा और उसमें पानी भरा होता है। लोग खानेके बाद पेयकी जगह इसे खाते है। एक और भी फल है, जिसे खरबूजा कहते है, और वह खीरेके जैसा बडा पील रगका तथा मीठा होता है। एक और भी अनाज जेगुर (बाजरा) होता है, जिसके डठल बेतकी तरह ऊचे होते है और उसके सिरेपर चावलकी तरह दोनोके गुच्छे लगते है, मानो छोहारोके लच्छे है। सिंचाईके लिये वक्षुमे इतना पानी ले लिया गया है, कि नदी अब कास्पियनतक नही पहुचती।"

वेजिरसे दो दिन चलनेके बाद जेन्किन्सन उरगज पहुचा। यहा भी कर देना पडा। जेन्किन्सनने हाजिमके भाई अली सुल्तानसे भेंट की, जिसने गृहयुद्ध करते सात वर्षोमें चार शहर लिये और खोये। युद्धके कारण यहा बहुत कम व्यापारी आते थे, इसलिये मालकी बिक्री अच्छी नही थी। जेन्किन्सन केवल चार केरसियोको बेच सका। यहासे कास्पियनतकका प्रदेश तुर्कमानोका देश कहा जाता था, और शासक थे हाजिम खान और उसके भाई। "जो भिन्न-भिन्न माताओ और कुछ दासियोके पुत्र होनेसे एक-दूसरेसे ईर्ष्या करते, एक-दूसरेको खतम करनेकी कोशिश करते है।" आपसके युद्धमें उनमेंसे हारकर कोई बच निकलता, तो आमतौरसे साथ ही उसके अनुचर भी रेगिस्तानमें चले जाते, और रास्तेके पानी लेनेके पडावोपर छापा मारते। इसी प्रकार वह कारवाको लूटते रहते, जबतक कि फिर वह घरेलू सघर्षके लिये अपनेको काफी मजबूत न कर लेते।

उरगज छोडकर वक्षुके किनारे-किनारे सौ मील चलनेपर जेन्किन्सन एक स्थानपर पहुचा, जिसको वह आरदोक कहता है—यहा तेज प्रवाहवाली धारा थी, जो कि वक्षुको छोडनेके बाद हजार मीलपर उत्तरमे जा भूमिमे विलीन हो जाती है, फिर प्रकट होकर खिताई समुद्रमें जाकर

मिलती हैं। आगे जेन्किन्सनको कात नगर मिला। वहाके लोग हाजिमके भाई सरामेत सुल्तानकी प्रजा थे। जेन्किन्सनने सुल्तानको अपने प्रत्येक ऊट मालके लिये एक रूसी लाल चमडा और दूसरे कर दिये। सुल्ताननें उसके साथ प्रतिरक्षी भेज दिये। "प्रतिरक्षी भी खाऊमल थे। तीन दिन जानेके बाद उन्होंने और आगे जानेके लिये भारी रकम मागी और न देनेपर वह लौट गये। फिर कारवाके खोजे (स्वामी) वहीं मुकाम करनेपर जोर देकर *भेडकी पसलीकी हड्डीसे शुभाशुभ* सगुन विचारने लगे। वह इस हड्डीको जलाकर उसकी राखकी स्याही बनाकर कुछ अक्षर लिख रहे थे। इसी समय एक निर्वासित राजकुमारने अपने कुछ अनुयायियोंके साथ जबर्दस्त आक्रमण किया, लेकिन व्यापरियोंने भी उसका मुकाबिला किया।" जेन्किन्सनके पास कुछ बन्दूकें थी, जिन्होंने इस समय बडा काम दिया। लोगोंने अपने पशुओ और सन्दूकोका मोर्चा बना लिया, और उसके पीछेसे गोलिया दागी जाने लगीं। रातके वक्तमें डाकू सुल्ताननें संदेश भेजा, कि हम मुसलमानोंको छोड देंगे, यदि तुम अपने क्रिस्तान साथियोंको हमारे हाथमें दे दो। लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ अन्तमें कुछ भेंट और एक ऊट देकर जान छुडानी पडी। यात्री फिर वहासे बुखारा गये। जब व्यापार करके जेन्किन्सन उरगज लौटा, तो रूसके जारके पास जानेवाले हाजिम खानके चार दूत भी उसके साथ हो लिये। १५६५ ई०में जार पयोदरके पास खीवासे नये राजदूत भेजे गये थे।

११. अरब मुहम्मद, हाजिम-पुत्र (१६०२–२१ ई०)

अरब मुहम्मद जहागीरका समकालीन था। इसने अपने पुत्र अस्फन्दयारको हजारास्पकी जगह कातका इलाका दिया। कुछ समय बाद १६०२ ई०में यायिक-तटनिवासी हजार रूसी कसाकोंने आकर उरगजको लूटा और हजारसे अधिक नागरिकोंको मार डाला। वह लूटे मालको हजार गाडियोंपर ले चले। अरब मुहम्मदने उनके रास्तेको काट दिया, जिससे कसाक रेगिस्तानमें भटक गये, जहा पानीके अभावके कारण उन्होंने पशुओंका खून पी प्यास बुझाई। पाच दिनतक उन्हें खून भी नहीं मिला और ऊपरसे उज्बेक चारों ओरसे आक्रमण कर रहे थे। एक बार उज्बेक पीछेसे उनकी गाडियोंके मोर्चेके भीतर घुस गये और उन्हें टुकडे-टुकडे कर डालनेमें सफल हुये। सिर्फ एक सौ कसाक किसी तरह बचकर अरालके किनारे पहुचे। उन्होंने तूकके किलेके पास अपना किला बनाया और कुछ समयतक वह मछली खाकर जीते रहे। अन्तमें अरब मुहम्मदने उनके किलेको दखल कर लिया।

पूर्वसे कलमक-मगोल अरालकी ओर पैर फैलाते हुये अब यहा भी आकर आक्रमण करने लगे। वह खोजाकुल और शेख जलील पर्वतके बीचमें पहुचकर तूकतक उज्बेक डेरोको लूटकर बूरीचीके रास्ते लौट गये। अरब मुहम्मदने पीछा करके माल और बदियोंको छुडा लिया, लेकिन कलमक हाथ नहीं आये। कुछ समय बाद नेमन कबीलेवालोंने इलबर्स खानकी सतान खुसरो सुल्तानको अपना खान बननेके लिये बुलाया, जिसने षड्यंत्र किया, लेकिन परदा खुल जानेपर खुसरो और षड्यत्री सेना मारे गये। दो साल बाद फिर षड्यंत्र हुआ। इसके दस साल बाद (१६१५ई०) कलमकोंने आकर वही लूट-मार मचाई। सोलह साल राज्य करनेके बाद १६१८ ई०में हबश इलबर्सके दो सोलह और चौदह सालके पुत्र अरब मुहम्मदसे विद्रोह कर खीवासे उरगजपर चढ आये। छोकरे भला इतनी हिम्मत कैसे करते, असलमें यह काम उनके अनचरोंका था, जिनकी सख्या लूटकी लालचसे बहुत बढ गई थी।

खीवाके खानोंमें इस तरहका विद्रोह और वशोच्छेद असाधारण घटना नहीं समझी जाती थी, यह हम देख चुके हैं।

१०१३ हि० (३० V १६०४–२० IV १६०५ ई०)मे (इतिहासकार अबुलगाजीके जन्मके एक साल पहले) अरब मुहम्मदने एक नहर खुदवाई, जो तूक, उरगज होती अराल समुद्रमें गिरती थी। तुला (अक्तूबर-नवम्बर)मासके आते ही इस नहर को बन्द कर दिया जाता, और फसलके कट जानेपर फिर खोल दिया जाता था। कुछ सालो बाद यह एक तीरकी मारसे अधिक चौडी कर दी गई।

इस नहरके कारण खेतीको इतना फायदा हुआ, कि गेहू बहुत सस्ता हो गया। सारे इलाकेमे गेहूकी फसल खडी दिखलाई पडती थी। दोनो खान-पुत्रोने अन्न-भडारोको खोलकर अनाजको गरीबोमे बाटना शुरू किया। अन्तमें उन्हे वेजिर शहर और उस इलाकेमें रहनेवाले तुर्कमानोको देकर समझौता किया गया। दोनो चार हजार अनुयायियोके साथ बापसे मिलकर वेजिरमे जा पाच साल तक शातिपूर्वक रहे। छठे साल (१६२० ई०) जब खान उरगजमे था, उसी समय इलवर्सने आक्रमण करके खीवा ले अपने पाच सौ आदमियोको भेजकर बापको भी वन्दी बना लिया। खजाना लूटकर उसने "कुत्तो और चिडियोमे विखेर दिया, और बेगोको निकाल बाहर किया।" इसके बाद वह वेजिर लौट गया। अब अस्फन्दयार और अबुलगाजी (प्रसिद्ध इतिहासकार) बापके सहायक बन गये, और दोनोने मिलकर इलवर्स सुल्तानके ऊपर आक्रमण किया। इलवर्स किर (उश्तउर्त)की ओर भागा, और उसका माल-असबाब लूट लिया गया। अबुलगाजीने बापको बहुत समझाया, कि विद्रोहियोको इसी वक्त नष्ट कर देना चाहिये, लेकिन बापका सहालकार अतालीक हुसेन हाजी भीतरसे विद्रोहियोके पक्षमे था। उसने वैसा नही होने दिया। अस्फन्दयार भी बहुत आगे बढना नही चाहता था। हबश और इलबर्स दोनो अबुलगाजीके भारी शत्रु थे। इस अपूर्ण अभियानके बाद अरब मुहम्मद खान खीवा लौटा, अस्फन्दयार हजारास्प गया और अबुलगाजीको कात मिला। पाच महीने-बाद अब खानको अक्ल आई, और उसने अपने पुत्रोको खुले तौरसे आक्रमण करके दड देना चाहा। अली सुल्तानकी खुदवाई नहर तस्ली-यामिशके तटपर लडाई हुई। खान हारकर बदी बना। हबशने बापको अवा कर तीन बीबियो और दो छोटे पुत्रोके साथ उसे छोड दिया। अब हबश अस्फन्दयारके पीछे पडा। अबुलगाजी डरके मारे कात होने बुखारा भाग गया। अस्फन्दयार अपने दूसरे दो भाइयो शरीफ और ख्वारेज्मशाहके साथ हजारास्पमे किलाबन्द हो गया—यह १०३० हि० (२६ XI १६२०–१७ X १६२१ ई०)की बात है। चालीस दिनके मुहासिरेके बाद दोनो पक्षोमे समझौता हुआ—अस्फन्दयार मक्का चला जाये, शरीफ मुहम्मदको कात मिले और ख्वारेज्मशाह तथा अफगान दोनो छोटे भाई बाप-माके साथ खीवामे रहे। अगले साल (१६२२ ई०) इलवर्सने बाप, अपने भाई ख्वारेज्मशाह और अस्फन्दयारके दो पुत्रोको मरवा डाला और दूसरे भाई अफगानको मरवानेके लिये हबशके पास भेज दिया—लेकिन हबशने उसे रूस भेज दिया, जहा वह १६४८ ई०मे मरा। हाजिम सुल्तानकी लडकी अलतून खानिम—अफगानकी विधवा—ने कासिमोफमें अपनी बनवाई तकियामे पतिके शवको दफनाया।

१२. इस्फन्दयार, (अस्फ०) अरब-पुत्र (१६२२–४२ ई०)

यह शाहजहाका समकालीन था। ख्वारेज्ममे तुर्क और सरत दो जातिया बसती थी। सरत पुराने बाशिन्दे ईरानी जातिके थे, और तुर्क जातिमे तुर्कमान पुराने कगलियो या गूजोकी सतान थे, जिनका सलजूको और उसमानअली तुर्कोसे निकटका सम्बन्ध था। उज्बेक वहा मुहम्मद शैबानीके साथ आये थे। सरतोका शासन उठे युग बीत गये थे, लेकिन तुर्कमानोके पूर्वज सलजूक बहुत दिनोसे इस भूमिके शासक थे, इसलिये वह अब भी अपनेको स्वामी समझते थे। इसीलिये उनसे तथा नये स्वामी उज्बेकोसे बराबर सघर्ष होता रहता था। यदि खान तुर्कमानोका पक्ष करता, तो उज्बेक नाराज होते, उज्बेकोका करता, तो तुर्कमान शत्रु बन जाते। अरब मुहम्मदने यही गलती की थी, कि उसने दोनोको सभालकर नही रक्खा। बापकी पराजयके बाद अस्फन्दयार शाह अब्बासके पास ईरान भाग गया और उससे सहायता लेकर देरून और बलखान पर्वतको लेनेमें सफल हुआ। यही तेके, सारिक और यामूत तुर्कमान कबीलोके तीन सौ जवान उससे आ मिले। उसने रातके वक्त वक्षु-तटपर तूक किलेके सामने पडे हबशके डेरेपर छापा मारा। लेकिन हबश प्राण बचाकर इलबर्सके पास जानेमे सफल हुआ। इलाकोका फिरसे बटवारा हुआ, जिसमे हबशको उरगज और वेजिर (वजीर) और इलबर्सको खीवा-हजारास्प मिला। शरीफ और अबुलगाजीके अनुचरोने भी मदद दी थी, किन्तु हारकर अस्फन्दयारको मगिशलक भागना पडा। अपने सहायक तीन हजार

तुर्कमानोको लेकर फिर वह उरगज पहुचा, जहा बीस दिनतक लडाई होती रही। इलवर्स अन्तमे पकडकर मार डाला गया। हवश पहले कराकल्पकोमें भागा, फिर यम्बाके नोगाइयोमे पहुचा, जिन्होने इसे पकडकर अस्फन्दयारके पास भेज दिया और उसने भाईके खूनसे हाथ रग लिया। अस्फन्दयार उज्बेकोके विरुद्ध तथा सरतो और तुर्कमानोका पक्षपाती था। सरतोंसे लडाईमे मदद नही मिल सकती थी, किन्तु बडे-बडे धनी व्यापारी इन्हीमे थे, जिनसे धनकी बडी मदद मिलती थी।

१३ अवुलगाजी, अरब-पुत्र (१६४३–६३ ई०)

प्रसिद्ध इतिहास-लेखक अबुलगाजी १०१४ हि० (१६ V १६०६–६ IV १६०५ ई०)में पैदा हुआ था। उसके बाप अरब मुहम्मद खानने उसी साल उरालके काफिर कसाक-रूसियोको हराया था, इसीलिये बच्चेका नाम अबुल-गाजी (काफिरोसे लडनेवाला) रक्खा गया। इलवर्सके साथ बापकी लडाईमे वह दक्षिणपक्षका कमाडर था, जिसमे एकके बाद एक उसके तीन घोडे मारे गये। बापकी हार होनेपर वह एक अनुचरके साथ भाग निकला। शत्रु उसका पीछा कर रहे थे। आकर एक बाण मुहमें लगा, जिससे जबडेकी हड्डी टूट गई। लेकिन वक्षु-तटके घने फराम (झाऊ)के जगलोमे वह छिपनेमे सफल हुआ। फिर अपने कवच और हथियारोको फेककर घोडेपर नदीमे कूद पडा। प्यासा घोडा पानी पीनेके लिये जरा रुकना चाहता था, लेकिन पीछा करनेवाले शत्रु बाण छोड रहे थे। कोडा नही था, कि घोडेको मारकर आगे बढाये। घावके कारण मुहमे खून भरा हुआ था, अपने भारी कवचके कारण घोडा पानीमे डूबने लगा और नाक-कान ही थोडे-थोडे बाहर निकले हुये थे। इसी समय अबुलगाजीको बूढे सैनिककी बात याद आई—"चारजामेसे उतर एक पैरको रिकाबमें और दूसरेको घोडेकी पूछपर डाल चारजामेके पिछले छोरको एक हाथसे पकडे—दूसरे हाथसे लगामका इशारा करते चले, तो पानीमे भी बोझ हलका करनेमे सहारा मिलता है।" उसने ऐसा ही किया और वह सहीसलामत नदी पार हो गया। वह कात पहुचा। वहासे कितने ही आदमी, नये घोडे और रसद ले वह समरकन्द पहुचा, जहा इमामकुल्ली खानने उसका अच्छा स्वागत किया। इसके दो साल बाद भाई अस्फन्दयार खान घोषित हुआ। अबुलगाजी और शरीफ फिर देश लौट आये। अबुलगाजीको उरगज और शरीफको वँजीरके इलाके मिले। अस्फन्दयारने अपने पास खीवा, हजारास्प और कातको रक्खा। लेकिन देरतक शाति कहा रह सकती थी? जल्दी ही भाइयोमें फिर झगडा उठा। अस्फन्दयार सरतो और तुर्कमानोका पक्षपाती था, और उसके दोनो भाई उज्बेकोके। फसल कट जानेके बाद १६२४ ई०मे अबुलगाजी अस्फन्दयारसे मिलने खीवा गया। तीन दिन रहनेके बाद घोडे कस लिये थे, इसी समय खानने हुक्म दिया, कि सभी नेमनो और उइगुरोको कत्ल कर दिया जाय। बातकी बातमे सौ उज्बेक मार डाले गये। इतना ही नही हजारास्प और रुस्तमीनारेसीमें डेरा डाले सभी खानभक्त उज्बेक बूढे-बच्चोतक मार डाले गये, किसी नैमन और उइगुरको जीता नही छोडा गया। शरीफको इन दोनो कबीलोंको कत्ल करनेके लिये उरगज भेजा गया, और अबुल-गाजीको मार डालनेकी गरजसे खीवामे रोक लिया गया। इसी समय उज्बेकोने धमकी दी, कि यदि अबुलगाजीको नही छोडा गया, तो हम राज्य छोडकर चले जायेंगे। छोड दिये जानेपर अबुलगाजीने उरगज पहुचकर उसे जनशून्य-सा पाया। वक्षु नदी पहले पाससे बहती थी, अब उसने अपनी पुरानी धार छोडकर नई धारा पकड ली थी। अबुलगाजी तूकके किलेमें ठहरा, जहा शरीफ भी उससे आ मिला। दोनो भाइयोके आसपास भारी सख्यामें उज्बेक जमा हो गये। उन्होने तुर्कमानोपर आक्रमण करनेका विचार किया, लेकिन इसका पता तुर्कमानबेक मुहम्मद हुसेनको लग गया, और वह अपने अनुयायियोंके साथ अस्फन्दयारके पास चला गया। अब दोनो भाई उज्बेकोको लिये खीवापर चढे। स्याईवानाक नहरके ऊपर बने ताशकुपुरुक (पाषाणपुल)पर कितने ही भूखसे अधमरे तुर्कमान मिले, जिन्हें उन्होने मार डाला। लेकिन इसी समय कल्मक-मगोल उनके ऊपर आ पडे और वह कितने ही उज्बेकोको पकड ले गये। कल्मकोका आतक इतना छाया हुआ था, कि अबुलगाजीके कितनेही सहायक साथ छोड गये। खीवाके तुर्कमानोको हिम्मत और मदद मिल गई। उन्होने चश्मीके पास

छ दिनतक युद्ध किया, लेकिन कोई फैसला नही हुआ, इसपर घर लौट जानेकी सलाह हुई। इसी समय अस्फन्दयारने तुर्कमानोको वढावा दिया। यद्यपि तुर्कमानोकी सख्या उज्वेकोसे दसगुनी थी, लेकिन तो भी युद्धका परिणाम अनिश्चित ही रहा। अस्फन्दयारने गर्मिया खीवामें बिताई, अबुलगाजी और शरीफ उरगजमे रहे। १६२८-२९ ई०मे एक पुच्छलतारा निकल रहा था, जिसे भारी असगुन माना जाता था। उज्वेकोमेंसे कुछ अन्तर्वेदकी ओर भाग गये और कुछ तुर्किस्तानमे, इस प्रकार उनके निम्न तीन वडे-वडे भाग हुये—(१) वुखाराकी ओर जानेवाले, (२) मगीतो (नोगाइयो) मे जानेवाले, (३) कजाकोमे जानेवाले। अबुलगाजी उज्वेकोके उस गिरोहके साथ था, जो कजाकोकी भूमिमें गया और शरीफ बुखारावालोके साथ। तीन साल वाद (१६३१-३२ ई०) उनमेंसे दो हजार परिवार फिर ख्वारेज्म लौट आये, जिनमे आठ सौ बुखारावाले परिवार भी आकर मिल गये। अब यह लोग अरालमें सिरके गिरनेवाले इलाकेमे पशुचारण करने लगे। अस्फन्दयारने उन्हे चैनसे नही रहने दिया और आक्रमण करके उनका नाम-निशान मिटा दिया।

अवुलगाजी कजाकखान इशिमके पास जाकर रहने लगा। वहा उसका परिचय राजकुमार तुरसुनसे हुआ, जिसके साथ वह दो साल ताशकन्दमे जाकर रहा। इशिमने तुरसुनको उसी समय मार डाला, लेकिन अवुलगाजीको इमामकुल्लीके पास बुखारा जाने दिया। यहा उसे अस्फन्दयारके अत्याचारोसे ऊव गये ख्वारेज्मी तुर्कमानोका निमत्रण मिला और वह खीवा पहुचा। अस्फन्दयार हजारास्प लौट गया था। इसी बीच शरीफ भी अवुलगाजीसे आ मिला और दोनोने मिलकर अस्फन्दयारपर आक्रमण करके उसे हरा दिया। लेकिन इतनेसे सघर्ष खतम नही हुआ। फिर कितनी ही लडाइया और लूटपाट होती रही। एक बार अबुलगाजीको खुरासानमें बेगलरवेगने पकडकर हमदानमे शाह अव्वास I के पौत्र शाह शफीके पास भेज दिया, जिसने उसे अस्पहानमें नजरबन्द कर दिया—अवुलगाजीको दस हजार तका पेंशन और रहनेके लिये मकान मिला था। १६३०-४० ई०तक अवुलगाजी इस तरह ईरानमें बदी रहा। उसने धीरे-धीरे आठ घोडे खरीदकर भिन्न-भिन्न जगहोमें छिपा रक्खे। यही उसके कुछ विश्वासपात्र नौकर भी आ मिले। अवुलगाजी स्वय एक नौकर-का साईस वना। घोडे तैयार कर लिये गये थे। नगाडखानेमे जिस वक्त मध्य-रात्रिका नगाडा वज रहा था, उसी वक्त वह सडकसे होकर निकल पडा। द्वारपर पहुचकर उसने चिल्लाकर कहा—"खोलो दरवाजा"। दरवाजा खुल गया और अवुलगाजी अपने साथियोके साथ चलता बना। बोस्तामके पास जब वह एक कब्रिस्तानसे गुजर रहा था, तो वहा कोई मुर्दा दफन किया जा रहा था। अवुलगाजीने वही एक गरीब सैयदसे बातचीत करके रसद तथा तीन घोडोके बदलनेका प्रबन्ध किया। गलतीसे उसने मग्जका रास्ता पूछ लिया, जिससे लोगोको सदेह हो गया, कि यह भगोडे उज्वेक कैदी हैं। प्रत्युत्पन्नमति अबुलगाजीने झट वहाना कर दिया, कि हम शाहके चिरकासी मुहम्मद कुल्लीबेग है—और एक प्रसिद्ध मुल्ला—से मिलने जा रहे है। इस तरह चिरकामी मुहम्मद कुल्लीबेग वनकर अबुल गाजीकी जान बची। आगे जाकर जब वह रेगिस्तानके छोरपर पहुचे, तो मगिशलकके कितने ही भगोडे तुर्कमान आ मिले। उनसे मालूम हुआ, कि वोल्गाकी ओरके कलमकोने आक्रमण किया था, वह वहुतसे पशुओको लूट ले गये। अबुलगाजीने अपना परिचय दिया। तुर्कमानोने उसे अपने पास जाडा वितानेके लिये निमन्त्रित किया। जाडोके बाद वसतमे अवुलगाजीको तेक्के (तुर्कमान) कवीले—जो कास्पियनके पूर्वी तटके पासके वलखान पहाडमें रहते थे—के पास जानेको कहा। वहा जाकर अवुलगाजीने दो साल बिताये। फिर वह मगिशलक पहुचा, जो कि अब कलमकोके अधीन था। कलमक सरदारको जब वात मालूम हुई, तो उसने अबुलगाजीको वुलाकर सालभर नजरवन्द रक्खा। अन्तमे १६४२ ई०मे वह उरगज लौटनेमे सफल हुआ। इसके छ महीने वाद अस्फन्दयार मर गया, शरीफ मुहम्मद दो साल पहले ही मर चुका था, इसलिये ख्वारेज्मकी गद्दी अब अबुलगाजी वहादुरके लिये हाजिर थी।

जहा खूनखरावी और लूट-मारको खेल समझा जाता हो, और हर एक वातका फैसला केवल तलवारसे किया जाता हो, वहा जीवन कैसे व्यवस्थित रह सकता है? आश्चर्य तो यह है, कि इतनी

२७

मारकाट रहनेपर भी रूसके साथ होनेवाला व्यापार अब भी बन्द नही था। व्यापार सचमुच ही बडी-बडी लडाइयोंके भीतरसे भी अपना रास्ता निकाल लेता है। दोनो लडनेवाले सरदार भेंट-पूजा लेकर व्यापारीका रास्ता छोड देते है। ख्वारेज्ममे बडी अशान्ति थी, जब कि अस्फन्दयारकी मौतके सालभर बाद अबुलगाजी अरालके उसी इलाकेमें खान घोषित हुआ, जहापर वक्षु अराल-समुद्रमे गिरती है। इस इलाकेमे प्राय सारे ही उज्वेक बसते थे। ख्वारेज्मके बाकी भागोमें अस्फन्दयारके दो पुत्रो युसन और अशरफके अनुयायी तुर्कमान रहते थे। खुतबा उस समय बुखाराके खान नादिर महम्मदके नामसे पढा जाता था, जिसके पास अशरफ जामिनके तौरपर रहता था। अबुलगाजीने दो बार चढाई करके खीवाके उपनगरको लूटा। नादिर मुहम्मदने खीवा और हजारास्पमे अपने राज्यपाल नियुक्त किये थे और अस्फन्दयारकी विधवाको उसके एक पुत्र और कन्याके साथ करशीमे रहनेके लिये भेज दिया था। बुखारी राज्यपाल वस्तुत सैनिक कमाडर था, नागरिक शासन अस्फन्दयारद्वारा नियुक्त तुर्कमान अमलोके हाथमे था। इसी समय बुखारासे खानका पौत्र तथा खुसरो सुल्तानका पुत्र कासिम सुल्तान निगरानीके लिये ख्वारेज्म आया, किन्तु वह तुर्कमान अमलोंसे छेडखानी नही करता था। कासिमके आनेकी खबर सुनकर अबुलगाजीने और सेना जमाकर खीवापर चढाई की। बुखारी सेना बहुत अधिक थी, जिससे लडनेके लिये अबुलगाजीकी सेना कई टुकडियोंमें बट गई। खीवाके हजार सैनिकोमे आठ सौ कवच-शिरस्त्राणसे इस तरह ढकेहुये थे, कि उनकी सिर्फ आखें दिखलाई पडती थी। अबुलगाजीके आदमियोंमेंसे केवल पाच कवचधारी थे। लेकिन अबुलगाजीने बहुत अच्छी तरहसे व्यूह-रचना की। लडाईका फैसला होनेसे पहले ही याकूब तुपितको भेजकर कासिमको बुखारा बुला लिया गया। थोडे समय बाद नादिर स्वय बुखाराका खान नही रहा और उसके बेको (अमीरो) ने उसके बेटे अब्दुल अजीजको तख्तपर बैठाया। खीवामे नियुक्त बुखारी सेना भी अब भाग गई और १६४४ ई०मे अराल-तटसे आकर अबुलगाजीने खीवापर अधिकार कर लिया। अबुलगाजीने सार्वजनिक क्षमादानकी घोषणा करतेहुये भगोडे तुर्कमानोको लौटनेके लिये कहा। भगोडे तुर्कमानोंके सरदार गुलाम बहादुर, दीन मुहम्मद, उनउनबेगी और उरुसबेगीने हजारास्पके पासके रेगिस्तानमें डेरा डालकर अपने अक-सक्कालो (जेठो)को भेज आत्म-समर्पण किया। खानके वचन देकर बुलानेपर वह आये थे, लेकिन जियाफतमे खाना शुरू करनेके समय ही अबुलगाजीके हुक्मसे उनका कत्लेआम शुरू हुआ। तुर्कमान भारी सख्यामें मारे गये, माल-असबाब लूट लिया गया और उनके बीबी-बच्चे दास बना दिये गये। इस हत्याकाडके बाद अबुलगाजी खीवा लौटा, और थोडे समय बाद उसने तेयेनमे तुर्कमानोंके एक दूसरे समूहपर आक्रमण करके उन्हें लूटा-मारा। यही खीवा और बलखके भगोडोने बाम-बुरनियामे पनाह लेनेके लिये एक पत्थरका किला बनाया था। उन्होने अपने परिवारको करारुमी भेज दिया। उनपर भी आक्रमण करके अबुलगाजीने एक-एक आदमीको मार डाला, और लगे हाथो कराकुमीमें पडे उनके डेरोको भी लूट लिया। लेकिन मगोल कोरोत(कलमक) ख्वारेज्मके लिये अब एक भारी समस्या हो उठे थे। १६४८ ई०में अबुलगाजीने उन्हे हराया, तो भी व्यापार करनेके लिये आये तोरगुत (मगोल) सरदार बायनको सुरक्षित घर जाने दिया। १६५१ ई०में अबुलगाजी उनके सरदारके साथ वैराज तुर्कमानोको नष्ट कर औरतो-बच्चोको पकड ले गया। अगले साल तूजके अमीरो और सारिक तुर्कमानोकी बारी आई, इसी साल तोरगुत (वोल्गा) कल्मकोने हजारास्पके पास लूट-मार की, जिन्हें अबुलगाजीने भगाकर बहुत दूरतक पीछा किया।

इस प्रकार कुछ सालोंकी सरगरमीके बाद अबुलगाजीने सभी तुर्कमानोंको दबाकर कितने ही समय तक शान्तिपूर्वक राज्य किया। १०४६ हि० (५ VI १६३६–२६ VI १६३७ ई०)मे उसके भाई शरीफके दामाद सुभानकुलीने अपने भाई अब्दुल अजीज खान (बुखारा)के खिलाफ मदद मागी। बत्तीस ख्वारेज्मी कुमारोंके खूनका बदला लेनेका यह अच्छा मौका था। अबुलगाजीने मदद दी और उसके सेनापति बेककुली इरनेकने कराकुलके इलाकेको लूट-मारकर उजाड दिया और वह बुखाराके पासके गाव सुइदन्तिचबालातक जाकर कुर्केदेनिक लौट आया। फिर उसी साल बुखारी सेनाको

हराकर कराकुलको जला चारजूयके इलाकेको भी उसने वरवाद किया। कुछ महीने वाद (१६५४-५५ ई०) वह याइजी इलाकेको नेरेजेमतक लूटते कराकुल होते भारी सख्यामे युद्धवदियोको लिये खीवा लौटा। यह सव देखते हुये भी अब्दुल अजीज खानको सामने आनेकी हिम्मत नही हुई। १०६५ हि० (११ XI १६५४—२ X १६५५ ई०) मे ही ख्वारेज्मियोने करमीनापर अधिकार करके लूटा। इन लडाइयोमें अबुलगाजी स्वय शामिल होता था। एक वार खतरेसे वचानेके उपलक्षमे अबुलगाजीने अपने पुत्र अनुशा (अनुशाह) को एक झडा, एक सेना तथा हजारास्पकी कमाड प्रदान की। अबुलगाजीने १६५८ ई०मे वरदजा इलाकेको लूटा, जिसमें कि वुखारा शहर है। १६६१ ई०मे उसने फिर वुखारा इलाकेको लूटा। इस तरह अपने सहधर्मियोको अनेक वार लूटने-मारनेके वाद उसका ख्याल काफिरोको लूटकर पुण्य कमानेका हुआ। इसके लिये उसकी नजर ईरानी किजिल-वासो और वोल्गाके पासवाले कल्मकोपर पडी। उसने दूतद्वारा अब्दुल अजीज खानके पास सुलहका प्रस्ताव भेजा, और शासनका काम अनुशाको सौप दिया। लेकिन उसे पुण्य-अर्जनका अवसर नही मिला और घोर युद्ध तथा अशातिके वीस सालके शासनके वाद वह १०७४ हि० (५ VIII १६६३—२५ VI १६६४ ई०) मे मर गया। एक तरफ वह खूनका प्यासा निपट श्वापद था, तो दूसरी तरफ उसकी लेखनीने एक वडे ही सुन्दर इतिहास-ग्रथको हमारे लिये छोडा। अपने समकालीन औरगजेवके कितने ही अवगुण उसमें भी थे।

१४. अनुशा मुहम्मद बहादुर, अबुलगाजी-पुत्र (१६६३—८६ ई०)

वापने वुखाराके साथ मैत्री कर ली थी, लेकिन वेटा उसे माननेके लिये तैयार नही था। उसने वुखाराके नजदीक जूयेवारके खोजोको जाकर लूटा। उस समय अब्दुल-अजीज खान करमीनामें था। खवर सुनते ही वह दौडा। आधी रातको जब वहा पहुचा, उस समय नगर ख्वारेज्मियोके हाथमे था। केवल चालीस दासोको लिये उसने रक्षि-सैनिकोके ऊपर पड अपने लिये रास्ता वनाया, और लडते-लडते वह आर्क (किले) में जा पहुचा। उसने ख्वारेज्मियोके कत्ले-आमका हुक्म दे दिया। उज्वेको, ताजिको या विदेशी व्यापारियोमे जिनके हाथमें भी हथियार था, सभी शत्रुओके ऊपर टूट पडे—नगर के वाहर जानेवाले सारे रास्ते वाडे खडी करके वन्द कर दिये गये थे। ख्वारेज्मियोका भीषण सहार हुआ, लेकिन अनुशा एक छोटी-सी टुकडीके साथ भागकर ख्वारेज्म पहुचनेमें सफल हुआ। इस मारके कारण थोडी देरके लिये अनुशाकी हिम्मत टूट गई।

यद्यपि अब्दुल अजीज खानने ख्वारेज्मियोके आक्रमणका सफल प्रतिरोध किया, लेकिन तव भी १६८० ई०मे अब्दुल अजीजको सुभानकुल्लीके लिये गद्दी खाली करनी पडी। सुभानका आरम्भिक शासन बेटोके विद्रोहके कारण कमजोर था, इसलिये अनुशाको फिर हिम्मत हुई, और उसने १६८३ ई०में आक्रमण करके नगरो और गावोको वुखारा शहरके आसपासतक ध्वस्त कर दिया और वहुत से माल और युद्धवदियोके साथ लौट गया। सुभानने हाल हीमे विद्रोह करनेवाले अपने पुत्र सादिकको सहायताके लिये वुलाया, लेकिन रास्तेमे उसने सुना, कि अनुशाने खुरासानपर आक्रमण करके वहा अपने नामका सिक्का और खुतवा चलाया है। हिसार (ताजिकिस्तान) और खोजन्दके अमीर भी अव खुली तौरसे सुभानकुल्लीसे विद्रोही वन गये और उसके कितने ही दरबारी भी अनुशाके पक्षमें हो गये। यह स्थिति देखकर सादिकने वुखारा जानेकी जगह लौटकर वलखकी रक्षा करना अधिक पसन्द किया। इसपर खानने वदख्शाके राज्यपाल महमद वी अतालिकको वुलाया, जिसने गिज्दुवानमें अनुशाकी सेनाको पूरी तौरसे हरा दिया, यह हम पहले वतला चुके है। अगले साल (१६८५ ई०) खानको वलखके झगडेमे फसा देखकर वुखाराके द्वारपर अनुशा फिर आया, किन्तु मुहम्मदजान अतालीकने वलखसे आकर फिर उसे हरा दिया। इसके कुछ ममयवाद जव सुभानकुल्ली मशहदमें तीर्थ-यात्राके लिये गया था, तो अनुशाने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण किया, लेकिन लोगोने एक होकर भयकर हत्याके साथ ख्वारेज्मियोंको हटनेके लिये मजवूर किया—

इस संघर्षमें बहुतसे ख्वारेज्मी नेता भी मारे गये। अनुशा फिर चढ़ाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन अमीरोंने मना करते हुए कहा, कि कलमक बड़ी सेना लेकर हमारे ऊपर आक्रमण करने आ रहे हैं, उनसे लड़नेके लिये एरेक (औरंग) को सेनाका संचालक बनाकर भेजो। सेना हाथमें आते ही एरेकने बापको पकड़ लिया और लाल लोहेसे दागकर उसे अंधा बना तख्तसे उतार दिया।

१५ मुहम्मद एरेक, औरंग, अनुशा-पुत्र (१६८६–८७ ई०)

ख्वारेज्मके दरबारमें भी कितने ही अमीर सुभानकुल्लीके पक्षमें थे। एरेकने सुभान-कुल्लीके पक्षवाले अमीरोंको देश-निकाला दे दिया, फिर बुखारी सेनाको खुरासानमें गई जानकर बुखारापर चढ़ाई की। सुभानकुल्लीने दस दिनतक नगरकी रक्षा की, फिर महमूद बी अतालीक आ गया, जिसने बुखाराके नगर-प्राकारके नीचे ख्वारेज्मियोंको हरा उनमेंसे बहुतोंको बन्दी बना लिया। इस बीच सुभानपक्षी अमीरोंने उरगंजमें षड्यंत्र कर रक्खा और लौटते ही एरेकको जहर देकर मार डाला।

१६ शाहनियाज खान (१६८७–१७०२ ई०)

ख्वारेज्मके खानोंका वंश गोत्र-वधके लिये हदसे अधिक बदनाम हो गया था, जिसके कारण वहाँके अमीर उन्हें पसन्द नहीं करते थे, इसलिये एरेकके मरनेके बाद विद्रोहियोंने सुभानकुल्लीके पास कोई शासक प्रदान करनेके लिये अपना शिष्टमंडल भेजा। सुभानकुल्लीने शाहनियाज इशिक आकाको राज्यपाल बनाकर भेज सिक्का तथा खुतबा अपने नामसे जारी कराया। सुभानका शासन कई सालोंतक रहा। उसने १७०० ई०में रूसी जार पीतर I के पास दूत भेजकर प्रार्थना की, कि हमारे देशको अपने संरक्षणमें ले लो। उसी साल ३० जुलाईको पत्रद्वारा पीतरने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। १७०२ ई०में सुभानकी मृत्युके बाद, जान पड़ता है, शाहनियाजका शासन भी खतम हो गया।

१७ अरब मुहम्मद II, अनुशा-पुत्र (१७०२ ई०)

१७०२ ई०में पीतर I ने एक मित्रतापूर्ण संदेश भेजकर अरब मुहम्मद और उसके लोगोंको अपनी प्रजाके तौरपर स्वीकार किया, इस प्रकार हम देख रहे हैं कि औरंगजेबके शासनके अन्तिम समयमें रूसी जारकी बाहु ख्वारेज्मतक पहुँच चुकी थी।

१८. हाजी मुहम्मद बहादुर, अनुशा-पुत्र (१७१४ ई०)

इसके बारेमें इतना ही मालूम है, कि १७१४ ई०में इसका दूत पीतरबुर्गमें पीतर I के दरबारमें पहुँचा था।

१९ यादगार, अनुशा-पुत्र (१७१४ ई०)

यह १७१८ ई० में मरा था। जान पड़ता है, यह अधिक समयतक राज्य नहीं कर पाया। इसके साथ बेरेका खानकी सन्तानोंका शासन ख्वारेज्ममें खतम हो गया, और उनका स्थान बाहरसे नये-नये आते खानोंने लिया।

खीवाखान-वंशवृक्ष
(१५१५–१७१४ ई०)

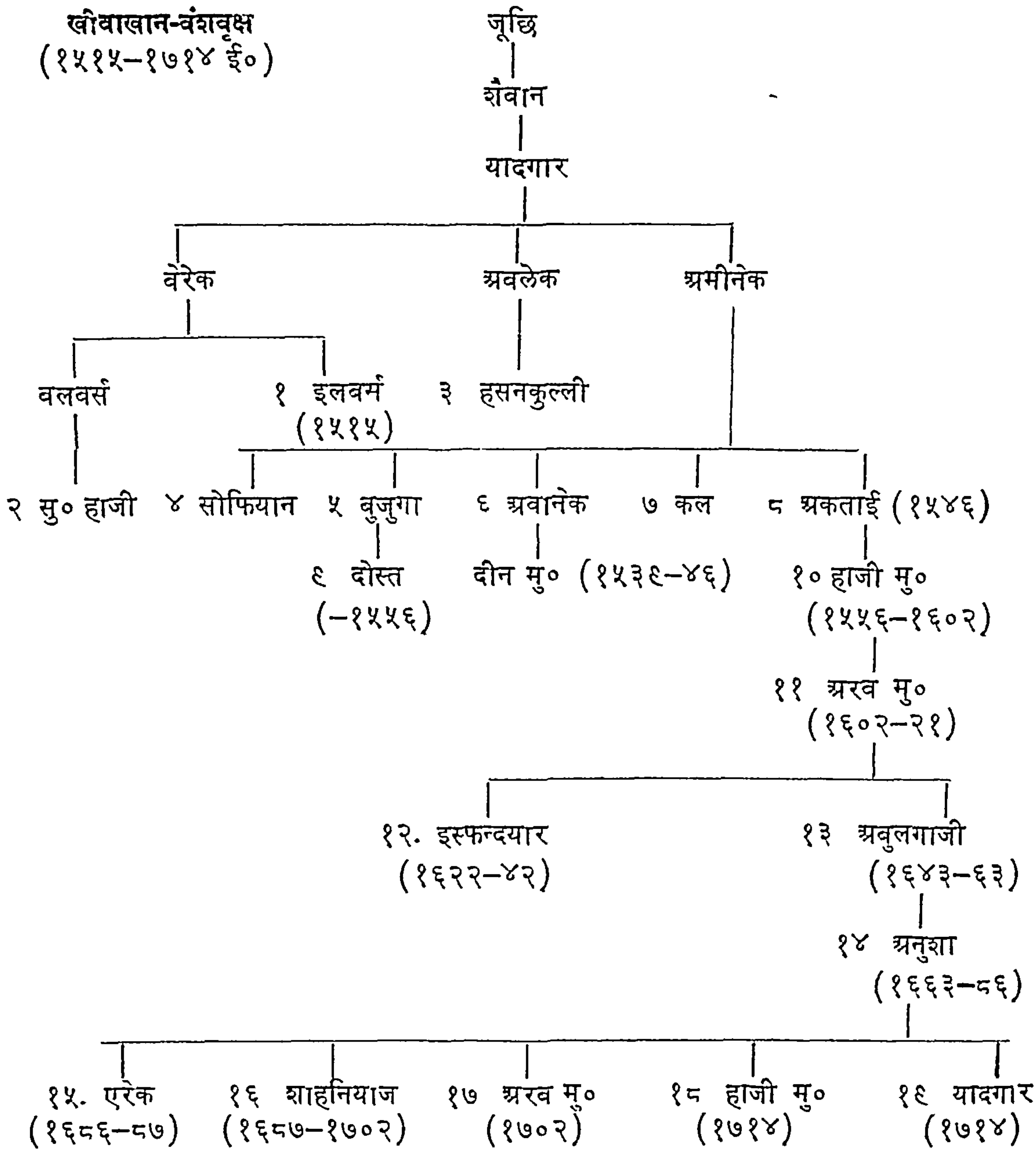

भाग ३

उत्तरापथ

अध्याय १

रूसका प्रसार

(१५९८–१८०१ ई०)

१. वीचके जार

१. बोरिस गदुनोफ (१५९८-१६०५ ई०)

१६वी सदीके अन्ततक रोरिक-वशके नेतृत्वमे रूसका किस तरहसे एकीकरण और प्रसार हुआ, इसके वारेमे हम कह आये है। रूरिकवशी अन्तिम जार फ्योदोर इवान-पुत्रके मरनेके साथ १५९८ ई०में रूरिक-वशके खतम होनेपर वोरिस गदुनोफ जार बना। विवाह-सबध तथा फ्योदोर-के समय शासनकी वागडोर हाथमे रखनेके कारण गदुनोफको कठिनाई नही हुई और १५९८ ई० में "जेम्स्की सवोर" (राष्ट्रीय परिषद्)में एकत्रित सामन्तो और व्यापारियोके वहुमतने वोरिस गदुनोफको मास्कोका जार निर्वाचित किया। वोरिसने इवानIVकी नीतिपर चलते हुये देशमें व्यवस्था कायम रखनेकी सफल कोशिश की। पुराने राजुलो और सामन्तोके परिवार हमेशा देशको विकेन्द्रित करनेकी कोशिश करते थे, इसलिये इवानIIIकी तरह गदुनोफको भी उन्हे कडाईसे दवाना पडा। निकिता रोमन-पुत्र और उसके परिवारवाले—जो पीछे रोमनोफके नामसे प्रसिद्ध हुये—गदुनोफके लिये सवसे अधिक चिताके कारण थे। रोमनोफोका सवध जार फ्योदोरसे था, और नागरिकोमे उनके मुखिया फ्योदोर निकित-पुत्रके वहुतसे अनुयायी थे। गदुनोफने गुप्त सूचनाओके वलपर उनपर षड्यत्र करनेका आरोप लगाया, और सभी भाइयोको उत्तरकी ओर निर्वासित कर दिया। फ्योदोर रोमनोफ इसी समय पापा फिलारेतके नामसे साधु वन गया। अपने भूमिपति शत्रुओको गदुनोफने दवा दिया, लेकिन इसी समय किसान विद्रोहके रूपमे दूसरा भारी खतरा उठ खडा हुआ।

१६०१ ई०में रूसमें अकाल पड गया—पहले वहुत वर्षा हुई, फिर शरद्के आरभ हीमें पाला पडा, जिसके कारण सारी फसल वरवाद हो गई और वसतमे खेतोमे कोई अनाज नही पैदा हुआ। वसतकी वोआईके लिये किसानोके पास वीजतक नही रह गया। लोग भूखके मारे घास और भोजपत्रकी छाल खा रहे थे। कोई-कोई गाव तो सारा-का-सारा मर गया। मास्कोकी सडकोपर भी विना दफनाई लाशे पडी हुई थी। यह भयकर अकाल तीन वर्ष (१६०१–१६०३ ई०)तक रहा। तालुक-दारो, मठो और व्यापारियोके पास भारी परिमाणमे गल्ला था, लेकिन उन्होने उसे महगे भावो-पर वेचकर धन जमा करना पसद किया। सामतो और जमीदारोने उस समय खाना देनेसे इन्कार करके अपने सेवकोतकको भी भगा दिया। भुखमरोके विद्रोहका भय देखकर गदुनोफने हुक्म दिया, कि सरकारी वखारोको खोलकर लोगोमे अनाज वाटा जाय, लेकिन वाटने वालोने उसमे भी अपने लिये खूव पैसे वनाये। सरकारके पास इतना गल्ला भी नही था, और जिनके पास वहुत गल्ला था, वह मूल्यके और भी अधिक वढनेकी आशामे अपनी वखारोको खोलना नही चाहते थे। "मरता क्या न करता"के अनुसार अव भूखसे मरते किसानो और अर्धदासोने अपनी टुकडिया वना जमीदारो और वनियोको लूटना शुरू किया। उनमेंसे कुछ दोन-उपत्यका और ब्रयास्कके जगलो-में चले गये। १६३० ई०मे खलोपको कसलोपके नेतृत्वमे किसानोकी एक वडी टुकडी राज-धानी (मास्को)के पास पहुची, जिसकी जारकी सेनासे एक भयकर लडाई हुई, जिसमे जारका वोयवद (राज्यपाल) इवान वसमानोफ मारा गया। वडी मुश्किलसे जारकी सेनाने राजधानीसे विद्रो-

हियोको भगा पाया । खलोपको कसलोप आहत होकर पकडा गया, लेकिन जल्दी ही मर गया । वहुतसे किसान और अर्ध-दासोको जारके वोयवदोने मास्कोकी ओर आनेवाली सडकोके किनारेके वृक्षोपर लटकाकर फासी दे दी ।

इसी समय प्रतिद्वद्वी पोलन्दने रूसकी इस हालतसे फायदा उठाया और पोल-राजा सिगिस्मद III ने एक मिथ्या दिमित्रि को अपने हाथका हथियार वनाना चाहा । रोमन कैथलिक धर्मराज पोपको जव यह खवर मिली, तो उसने भी दिमित्रिका समर्थन किया । अफवाह फैलाई गई, कि जार-पुत्र दिमित्रि उगलिचमे मारा नही गया, वल्कि वह भागकर पोलन्द चला गया। वोरिस गदुनोफ जिस समय गद्दीपर वैठा, उसी समय उक्रइनने पान (सामन्त) आदम विस्नियोवियेच्कीके गढमे एक आदमी प्रकट हुआ, जिसने अपनेको इवान IVका पुत्र दिमित्रि घोपित किया । मास्को-सरकारको जव यह पता लगा, तो उसने उसके वारेमे कहा—यह दिमित्रि एक भूतपूर्व साधु ग्रिगोरी ओतरेपयेफ है, जो कि कस्त्रोमाके एक छोटेसे सामन्ती घरानेमें पैदा हुआ । ग्रिगोरी जवानीमे कितने ही मठोमे घूमता रहा, फिर उसने अपना कुछ समय मास्कोमें विताया, और अतमें दूसरे तीन साधुओके साथ पोलन्द भाग गया । आधुनिक इतिहासकारोका कहना है, कि मिथ्या दिमित्रि कौन था, इसका पता लगाना मुश्किल है ।

पोल अमीरोने मिथ्या दिमित्रिके प्रकट होनेकी खवरका वडा स्वागत किया । उसे विस्नियोवियेच्कीके एक सवधी तथा सम्बोरके वोयवोद यूरी म्निस्जेफके पास पहुचाया गया । १६०४ ई०के वसतमें राजा सिगिस्मदIII ने राजधानी क्राकोमे दिमित्रिका स्वागत किया । उस समय तुरत रूसके साथ खुली लडाई करना पसद नही किया गया, लेकिन इस वातकी कोशिश की गई, कि दिमित्रिके पक्षपाती उसकी सेनामे आकर शामिल हो । पोल अमीरोको रूसके धनका लोभ था, इसलिये वह दिमित्रिकी हर तरहसे सहायता करनेके लिये तैयार थे । दिमित्रिने पोप, पोलन्दके राजा तथा अमीरोको वहुत वडे-वडे वचन दिये । पोपको खुश करनेके लिये उसने कैथलिक-धर्म स्वीकार किया और सभी रूसियोको कैथलिक वनानेका वीडा उठाया । पोल-राजाको उसने स्मोलेन्स्क नगर तथा चेर्निगोफके इलाके (सेवेर्स्क)को देनेका वचन दिया । म्निस्जेफ परिवारको उसने नवगोरद और पुस्कोफ प्रदेशका शासक वनानेका वादा करते कहा, कि जारके खजानेसे जो कुछ भी पैसा और रतन-जवाहर मिलेगा, वह तुम्हारा होगा । इस शर्तपर यूरी म्निस्जेफने अपनी लडकी मरीनाका व्याह मिथ्या दिमित्रिसे करना कवूल किया—मरीना रूसी जारित्सा (जारानी) वनती । दिमित्रिके लिये सारी तैयारी सम्वोरमे होने लगी । तैयारीके वाद १६०४ ई०के शरद्के अन्तमे चार हजार पोल-सेना तथा कई सौ रूसी कसाकोंके साथ दिमित्रिने कियेफके पास द्नियेपर नदी पार किया । विना प्रतिरोध किये ही कितने ही नगरोने दिमित्रिकी अधीनता स्वीकार की। वोरिस गदुनोफके शासनसे असतुष्ट अकालके मारे कितने ही भगोडे किसान, अर्ध-दास तथा छोटे-छोटे सैनिक भी उसके झडेके नीचे जा खडे हुये । वहुतसे किसान सचमुच ही उसे इवानIVका पुत्र समझने लगे । उनको यह भी विश्वास था, कि वह हमे अर्ध-दासतासे मुक्त कर देगा । १६०४ ई०के अन्तमे मास्कोकी सेना दिमित्रि द्वारा घेरे गये नवगोरद-सेवेर्स्कको मुक्त करनेके लिये पहुची । मिथ्या दिमित्रिने चाहा, कि विना लडे सेवेर्स्ककी ओर चला जाय । जनवरी १६०५ ई०मे वह सेवेर्स्कके पास दोवरोनीची गावमें हारकर अपने वचे-खुचे आदमियोंके साथ पुतिवलकी ओर भाग गया। विजय प्राप्त करनेके वाद भी गदुनोफकी हाल वेहतर नही हुई । विद्रोहियोके नये-नये दल आकर आक्रमण करते रहे । जारकी सेना क्रोमीके किलेको घेरे हुई थी । दोनके कसाक दिमित्रिकी ओर होकर लडने लगे । इसी समय जारकी सेनाने भी दिमित्रिके विरुद्ध लडनेसे इन्कार कर दिया और वहुतसे सिपाही मैदान छोडकर घर चले गये । इसी अवस्थामे अप्रेल १६०५ ई०मे गदुनोफ एकाएक मर गया । सामन्तोने तुरन्त उसके सोलह वर्पके पुत्र फ्योदोरको जार घोपित कर दिया ।

गदुनोफके शासन-कालमें ही १५९८ ई०मे साइवेरियामें जाकर रूसी प्रवासियोके वसनेका पहिला उल्लेख मिलता है । जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेके वाद ये लोग उगलिचसे भागकर पूर्वमे

चले गये थे। साइबेरियामे रूसियोकी कुछ बस्तिया बल्कि पहले ही १५८७ ई०मे तबोल्स्क नगरकी स्थापनाके समयसे बसने लगी थी। १६०४ ई०मे तोम्स्क नगर भी स्थापित हो गया।

२ फ्योदोर, बोरिस-पुत्र (१३ अप्रेल–१ जून १६०५ ई०)

फ्योदोरको गद्दी नही बल्कि थोडे दिनोके लिये खाली सिंहासनपर बैठकर रूसकी राजावलीमे नाम लिखवानेका मौका मिला। गदुनोफके हटते ही मिथ्या दिमित्रिका रास्ता खुल गया। क्रोमामें जो बची-खुची सरकारी सेना रह गई थी, वह भी पीतर बसमानोफकी अधीनतामे दिमित्रिकी ओर चली गई। सामन्त पहिले हीसे गदुनोफसे घृणा करते थे, क्योकि वह राजुलोके अस्तित्वको खतरेमे डाले हुये था। राजुल वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीने पहले उगलिचमे जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेकी गवाही दी थी। अब उसने अपनी बातसे इन्कार करते कहा, कि गदुनोफ जार-पुत्रको मारना चाहता था, किंतु वह जान बचाकर भाग गया। वह जिंदा है और अब राजधानीकी ओर आ रहा है। दिमित्रिके दूतोके मास्को पहुचनेपर अमीरोने जार फ्योदोर और उसकी माको मार डाला। दिमित्रिने बिना किसी विरोधके जून १६०५ ई०मे अपने सहायक पोलोके साथ रूसी राजधानीमे प्रवेश किया—यह अकबरकी मृत्युका साल था।

३ दिमित्रि, मिथ्या (१६०५–६ ई०)

दिमित्रिने जारके पुराने सिंहासनपर बैठते ही अपने असली रूपको दिखलाना शुरू किया। पहले उसने असतुष्ट किसानोको विश्वास दिलाया था, कि हम तुम्हारी हालत बेहतर बनायेगे, लेकिन अब उसने फिर जमीदारो और सामन्तोकी पूर्व-स्थितिको मजबूत करना शुरू किया। ऊपरसे जो पोल अमीर और दूसरे अनुचर आये थे, वह अपनेको रूसियोका विधाता समझते उनके साथ बडा दुर्व्यवहार करते दोनो हाथोसे नोच-खसोट कर रहे थे। दिमित्रिके चारो तरफ भाडेके विदेशी नौकर भरे हुये थे। दिमित्रि स्वय बहुत भारी परिमाणमे पैसा पोलन्द भेज रहा था। अब लोगोकी आखे खुली और मास्कोके नागरिकोने खुल्लमखुल्ला शिकायत करनी शुरू की। १६०६ ई०के बसतमे दिमित्रिकी बीबी मरीना आई, जिसके साथ पोल अमीरोका एक बडा दल बहुतसे अनुचरोको लिये आया। मरीनाके साथ दिमित्रिका विवाह-महोत्सव बडे ठाट-बाटसे मनाया गया, कई दिनोतक मौज होते रहे। शराबमे मस्त उसके विदेशी सहायकोने इस समय और भी गजब ढाया, जिससे जनता क्रोधमे पागल हो गई। राजुल वासिली शुइस्कीने इस अवस्थासे फायदा उठा षड्यन्त्र रचा और १७ मई १६०६ ई०को घण्टेकी आवाजके सकेतको सुनते ही लोग मुकाबिलेके लिये खडे हो चिल्ला उठे––"चलो लितवो पर! लितवोकी क्षय!!"—रूसी उस समय पोलोको लितवा कहते थे। मिथ्या दिमित्रिको जब खतरेकी खबर मिली, तो महलके सामने काफी भीड जमा हो चुकी थी। जान बचानेके लिये खिडकीसे कूदा, जिसके कारण वह बुरी तरह घायल हो गया। लोगोने पहुचकर उसे तुरन्त ही मार डाला। कुछ दिनो बाद मिथ्या दिमित्रिके शरीरको जला उसकी राख एक तोपमे भरकर उसे उसी ओर मुह करके दाग दिया गया, जिधरसे वह आया था। सारे नागरिक शहरमे ढूढ-ढूढकर पोल अमीरो और दरबारियोको मारने लगे। पत्थर, छुरा, डडा जो कुछ भी हाथ आया, उसीसे उन्होने हथियारबद पोलोपर आक्रमण किया। दो हजार पोल मारे गये और बाकियोने मोर्चाबदी छोड आत्म-समर्पण कर दिया। बायरोको डर लगा, कि विद्रोही जनसाधारण कही उनके विरुद्धभी कुछ न कर बैठे, इसलिये उन्होने सबसे पहले सिंहासनपर किसीको बैठाकर राजशक्तिको मजबूत करना जरूरी समझा। उन्हे राष्ट्रीय परिषद् (जेम्स्की सबोर)को बुलानेकी हिम्मत नही हुई। डर रहे थे, शायद अधिकाश नागरिक और अमीर भी विरोध करें, इसलिये पुराने राजुलवशी वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीका नाम बिना निर्वाचनके ही १९ मईको क्रेमलिनके सामने जमा हुये लोगोके बीच जारके तौरपर घोषित कर दिया।

इस गडबडीके समयके जार निम्न थे—

१	बोरिस गदुनोफ	१५९५–१६०५ ई०
२	फ्योदोर, बोरिस-पुत्र	१३ अप्रेल-१ जून १६०५"
३	दिमित्रि (मिथ्या)	१६०५–६ "
४	वासिली, इवान-पुत्र शुइस्की	१६०६–१०"
५	ब्लादिस्लाव, सिगिस्मद-पुत्र	१६१०–१३ "

४ वासिली शुइस्की, इवान-पुत्र (१६०६-१० ई०)

शुइस्कीने वायरोको वचन दे दिया था, कि मै तुम्हारी सम्मतिसे राज्य करूगा, और क्रास (सलेब) के ऊपर कसम खाई थी, कि विना वायरोकी दूमा (ससद)की रायके मृत्युदड नही दूगा, न दडित-पुरुषके सवधियोकी सम्पत्ति जब्त करूगा। रूसके भिन्न-भिन्न नगरोमे उसके जार होनेकी घोषणा की गई। धनी वायरोने सवसे अधिक लाभके पदोपर झपट्टा मारा, और उन्होने फिर मनमानी करनी शुरू की। पुराने राजुलवर्गो और नये जमीदार-वनियो—वायरो—के स्वार्थ एक नही थे। सामन्त कब बरदाश्त करने लगे, कि सभी बडे-बडे पदो को वायर दखल कर लें। जल्दी ही विद्रोह उठ खडे होनेकी शका होने लगी। वायरोने प्रतिरक्षाके लिये क्रेमलिनमे तैयारी शुरू की, उसकी दीवारोपर तोपे लगा दी, और खाइयोंके ऊपरके पुलोको हटा दिया।

किसान-विद्रोह (१६०६-८ ई०)—किसानोने विद्रोह किया, लेकिन वह सगठित नही था। जहा-तहा छिटपुट लोग सरकारके विरुद्ध आक्रमण कर रहे थे, जिससे सरकारी सेनाको अच्छा मौका मिला, और एक जगहके विद्रोहको दवा देनेपर दूसरी जगहके विद्रोहको दवाना आसान था। सवसे ज्यादा खतरनाक और जवर्दस्त विद्रोह था मजदूरो, अर्ध-दासो और कसाकोका, जिसका नेता इवान वलोत्निकोफ (१६०६-७ ई०) था। अपनी जवानीके समय वलोत्निकोफ एक वायरका अर्ध-दास था, जिसके अत्याचारोसे परेशान हो वह दोन-उपत्यकाके कसाकोमे भाग गया, जहा वह तारतारोंके हाथमे पड गया। उन्होने उसे दास बनाकर तुर्कोके हाथमे वेच दिया। कुछ दिनो तक वलोत्निकोफ दूसरे वदियोकी तरह पैरोमे वेडी पहने नावकी पतवार चलाता रहा, लेकिन थोडे ही समय वाद वह तुर्कोकी दासतासे मुक्त होनेमे सफल हुआ। तुर्कोसे युरोपके भिन्न-भिन्न देशोमे कितने ही साल घूमनेके वाद रूसी सीमातके भीतर लौट आया। इसी समय शुइस्कीके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हुआ था। वलोत्निकोफने विद्रोही सेनाका नेतृत्व स्वीकार किया। समसामयिक लेखक उसकी असाधारण शारीरिक शक्ति, तीक्ष्ण वुद्धि और वहादुरीकी प्रशसा करते है। विदेशी लेखक उसे "युद्धवीर" कहते थे। युद्धोमे उसने अपनी सैनिक प्रतिभाका अच्छा परिचय दिया था। जहा-कही भी वलोत्निकोफकी सेना जाती, किसान अपने जमीदारोंके विरुद्ध होकर उसकी सेनामे आ मिलते। शहरके गरीब भी उसकी तरफ हो जाते। वलोत्निकोफकी सेना पुतिवलसे जल्दी-जल्दी क्रोमी, सेरपुखोफ और कलोम्ना होती मास्कोकी ओर वढी। अक्तूवर (१६०६ ई०)के मध्यमे वलोत्निकोफ मास्कोके सामने पहुचा। राजधानीके चारो तरफ प्रतिरक्षाके लिये तेहरी पत्थरकी दीवार तैयार की गई थी। वलोत्निकोफ उसे सर नही कर सका, फिर मुहासिरा करके वैठ रहा। उसने नागरिकोंसे अपील करते पत्र लिखकर लोगोमे वटवाया, किसानो और अर्धदासोको कहा—अपने वायरो और जमीदारोको खतम कर डालो, मै तुम्हे राजुलोंकी भूमि प्रदान करूगा। वलोत्निकोफकी सेनामे कुछ असतुष्ट राजुल भी थे, जिन्होने इस खतरेको देखा। र्याजनके सामत तथा ल्यापुनोफ-भ्रातृयुगल वलोत्निकोफका साथ छोडकर शुइस्कीकी ओर हो गये। इसपर जारकी सेनाकी हिम्मत और शक्ति वढी, जिसके साथ ही कितने ही और अमीर जारकी ओर हो गये। वलोत्निकोफको वची-खुची सेना लेकर दक्षिणकी ओर हटना पडा। उसने जाकर कलूगामें छावनी डाली। १६०७ ई०के वसतमे जारकी सेनाने कलूगाको घेर लिया, लेकिन इसी समय विद्रोहियोंकी एक नई सेना वलोत्निकोफकी मददके लिये आ गई और शुइस्कीकी सेनाको वुरी तरहसे हार घेरा उठाकर भागना पडा।

वलोत्निकोफ आगे वढकर तुला पहुचा, जहा कसाकोका एक नया दल उससे आ मिला। इसी दलमे पीतर नामक एक आदमी था, जो अपनेको जार फ्योदोर (इवान-पुत्र)का बेटा कहता था, यद्यपि वस्तुत फ्योदोरका कोई बेटा नही था। गर्मियोमे शुइस्की एक बडी सेना जमाकर चार महीनेतक तुलामे बलोत्निकोफपर आक्रमण करता रहा। जारके सेनापतियोने देखा, कि वलोत्निकोफको जल्दी हराया नही जा सकता और जाडोमे घेरा रखना मुश्किल होगा, इसलिये उन्होने पासकी उपा नदीके ऊपर एक ऊचा वाध वाध दिया, जिससे नदीका पानी इकट्ठा होकर जोरसे शहरके भीतर वढा, जिससे वलोत्निकोफकी रसद और वारूद वह गई। इसपर समर्पणकी वात होने लगी। जार वासिलीने वचन दिया, कि मै सभी विद्रोहियोको क्षमा कर दूगा, लेकिन उसने अपनी वचनका पालन नही किया। इवान वलोत्निकोफको उत्तरमे करगोपोलकी ओर भेजकर अधा करके डुबा दिया गया, और वहुतसे दूसरे विद्रोहियोको खलोपी (गृहदास) और अर्धदास बनाकर अमीरोको दे दिया गया। वलोत्निकोफ मारा गया, उसके सैनिक तितर-बितर हो गये, लेकिन शुइस्कीके विरुद्ध विद्रोह नही दवा। वोल्गा-उपत्यकाके मोर्द्विन और मारी (चेरेमिसी) विद्रोही बने और उन्होने रूसी किसानो और अर्ध-दासोको साथ लेकर निज्नी-नवोगोरदको घेर लिया। उस समय तो जारकी सेना उन्हे हटानेमें सफल हुई, लेकिन १६०८ ई०की शरद्मे सारी मध्य-वोल्गा उपत्यका विद्रोही वन गई।

इधर देशके भीतर इस तरहकी विद्रोहाग्नि जल रही थी, उधर पोल भी चुप नही बैठे थे। उन्होने यह अफवाह फैलाई, कि मास्कोमें खिडकीसे कूदकर मरनेवाला आदमी वस्तुत दिमित्रि नही था, वल्कि दूसरे आदमीने अपनी जान देकर जार दिमित्रिके भागनेमे सहायता की। यह अफवाह यद्यपि दिमित्रिके मरनेके दिनसे ही उडाई जाने लगी थी, लेकिन उसका प्रभाव उस समय अधिक नही पडा। १६०८ ई०के वसतमें एक नया जार-पुत्र मिथ्या दिमित्रि II मास्कोके सीमातपर प्रकट हुआ। उसके साथ पोलदकी सरकारी सेना और दूसरे वहुतसे सैनिक थे। लिथुवानी सामन्त यान सपिएहा ७५०० पैदल और सवार सेना लेकर आया, हेतमन रोजिन्सकी भी चार हजार आदमियो के साथ पहुचा। इसी तरह दोन और जापोरोज्ये कसाक भी मिथ्या दिमित्रि IIके साथ आ मिले। वोल्खोफके पास १६०८ ई०के वसतमें जारकी सेनाने हार खाई और दिमित्रि IIकी मुख्य सेना कलूगा और मोजाइस्कके रास्ते मास्कोकी ओर वढी। उन्होने मास्कोपर अधिकार करनेकी विफल कोशिश की। इसके वाद पोलोने राजवानीसे थोडी दूरपर मास्क्वा नदीके ऊचे तटपर अवस्थित तुशिनो गावमे मोर्चावदी करके डेरा डाला, जिसके ही कारण लोगोने मिथ्या दिमित्रि IIको "तुशिनो जार" अथवा "तुशिनोका चोर" कहना शुरू किया। मास्कोकी स्थिति वहुत वुरी हो गई थी। नगरमें आहारका अकाल था। कितने ही वायर और राजुल शुइस्कीके पतनको निश्चित समझकर मिथ्या दिमित्रिके पास चले गये। मास्कोपर घेरा डालकर मिथ्या दिमित्रिकी सेनाने आसपासके महत्त्वपूर्ण स्थानोपर अधिकार करना शुरू किया। राजधानीसे सत्तर किलोमीतरपर अवस्थित त्रोइत्स्क-सेर्गियेफ मठ (आधुनिक जागोर्स्क)को पोलोने लेना चाहा। लेकिन रक्षाके लिये पासके किसान भी मठकी ऊची दीवारोके भीतर पहुचे हुये थे। मठने अपनी तोपो और सैनिकोके वलपर पोलो और दिमित्रिकी सेनाको मार भगाया। ऊपरी वोल्गाके नगरोमें उसे जरूर सफलता मिली, क्योकि वहाके लोग जार और वायरोसे इतनी घृणा करते थे, कि उन्हे मिथ्या दिमित्रि सच्चा दिमित्रि मालूम होता था।

लेकिन दिमित्रिको जितनी सफलता होती जाती थी, उतना ही उसके सहायक पोलोका अत्याचार और अपमानजनक वर्ताव वढता जाता था। वह नगरोमे पहुचकर व्यापारियोके मालको छीनते, किसानो और कारीगरोपर भारी कर लगाते, जरा भी आनाकानी करनेपर उनके घरो और खेतोकी फसलको जला देते। कितने ही रूसी वायरो और जमीदारोकी सम्पत्तिको क्षतिपूर्तिके तौरपर उन्होने छीन लिया। लोग उनके विरुद्ध खडे होनेके लिये मजबूर हुये। छिटफुट होते विद्रोह १६०८ ई०में देशव्यापी गोरिल्ला-युद्धके रूपमे परिणत हो गये।

शुइस्कीने देखा, कि वह अकेला दोनो ओरकी मारको नही बर्दाश्त कर सकता, इसलिये उसने स्वीडेनके राजा चार्ल्स नवमसे मददके बदलेमे संधि द्वारा करेला (केखहोल्म)के नगर और आसपासके प्रदेशको स्वीडेनको दे दिया। चार्ल्सने इसके बदलेमे पोलोको भगाने तथा जारकी शक्तिको मजबूत करनेके लिये सहायता देनेका वचन दिया। स्वीडेनने १६०९ ई०के वसंतमें पन्द्रह हजार सेनाके साथ जेकब देलागारदीको भेजा। इस सेनामें स्वीड्, जर्मन, अंग्रेज, फ्रेंच और दूसरे कितने ही देशोंके भाडेके सैनिक थे। शुइस्कीका भतीजा राजकुमार स्कोपिन-शुइस्की भी अपने रूसी सैनिकोंको लिये इस सेनाके साथ हो गया। सेना रास्तेमें कितने ही नगरो और कस्बोको मुक्त करती तुशिनोकी ओर बढी। पोल भी आखिरी दाव लगानेके लिये तैयार थे। १६०९ ई०के ग्रीष्ममे भिन्न-भिन्न पोल सेनाओने जगह-जगहपर आक्रमण करके लूट-मार की, और इसी सालकी शरद्मे पोल राजा सिगिस्मद IIIने एक बडी सेना ले रूसके भीतर घुसकर स्मोलेन्स्क नगरपर घेरा डाल दिया। सीधे रूस और पोलन्दके बीच खुलकर लडाई होने लगी। सिगिस्मदको अब मिथ्या दिमित्रि IIकी अवश्यकता नही थी। जनवरी १६१० ई०में मिथ्या दिमित्रि II पोल सहायतासे वंचित होकर तुशिनोसे कलूगाकी ओर भागा। उसके साथ अब भी कुछ पोल इस आशासे चल रहे थे, कि शायद मास्कोका सिंहासन आखिरमे उसको ही मिले। दिमित्रिका पक्ष लेनेवाले रूसी बायरो और राजुलोने आशा छोडकर सिगिस्मदके साथ समझौता करना चाहा, और पोल राजाके पुत्र व्लादिस्लावको मास्कोका जार स्वीकार करते हुये ४ फर्वरी १६१० ई०मे संधि की। सिगिस्मदने अपने पुत्रकी ओरसे वचन दिया, कि वह अमीरो और जमीदारोके अधिकारोपर प्रहार नहीं होने देगा और भगोडे किसानोको उनके पास लौट जानेके लिये मजबूर करेगा।

५ व्लादिस्लाव सिगिस्मद-पुत्र (१६१०-१३ ई०)

मार्च १६१० ई०मे रूसी-स्वीडिश सेना मास्कोके भीतर दाखिल हुई। उधर मास्कोपर अधिकार करनेके लिये एक पोल सेना पहुंची, जिसके विरुद्ध शुइस्कीने अपने भाई दिमित्रि शुइस्कीके नेतृत्वमे एक सेना भेजी। जून १६१० ई०में क्लुशिनो गांवके पास दोनो सेनाओमें लड़ाई हुई, लेकिन लडते समय जर्मन और स्वीड भाडेके सैनिक रूसियोका साथ छोडकर पोलोकी ओर मिल गये—उन्हें तो पैसेसे काम था। पोलोने स्वीडोको स्वतन्त्रता-पूर्वक लौट जानेकी इजाजत दे दी। जुलाई १६१० ई०में मास्कोके नागरिकोमें भूखे मरनेकी और शक्ति नही रह गई, और उन्होने वासिली शुइस्कीके खिलाफ विद्रोह कर दिया। बायरो और राजुलोने वासिलीको पकडकर उसे साधु बननेके लिये मजबूर किया, जिससे कि वह राजकाजमें दखल न दे सके। शासन-भार अब सात बडे-बडे बायरोकी बनी सरकारके हाथमें चला गया, इसीलिये इस सरकारको सेमी-बायर्-श्चिना (सात बायर शासन) कहा जाता था। बायरोने अपनी स्थितिको मजबूत नही देखी, इसलिये उन्होने इस शर्तपर व्लादिस्लावको मास्कोका जार बनना स्वीकार किया, कि वह बायरोंके साथ मिलकर शासन करे। विश्वासघातियोंने समझौता करके पोल-सेनाको मास्कोके भीतर आने दिया। संघराज फिलारेत तथा कुछ और बायरोका एक प्रतिनिधि-मंडल स्मोलेन्स्ककी दीवारोंके बाहर सिगिस्मद III से मिलकर संधि करनेके लिये गया। लेकिन, पोलोंने इन देशद्रोहियोको उनके कियेका अच्छा मजा चखाया और सबको पकडकर पोलन्द भेज दिया। इन प्रतिनिधियोने मास्कोमे गुप्त रीतिसे चिट्ठियां भेजकर अपनी हीन स्थिति और पोलोंके विश्वासघातके बारेमें सूचित करते कहा, कि पोलोंकी अधीनता स्वीकार मत करो, आपसमे इसके बारेमें राय करो तथा हमारे पत्रको "नवोगोरद, बलोग्दा और निजनीमे भेज दो, जिससे सब इस बातको जान लें।" पोल राजाकी मंशा वस्तुत स्वयं मास्कोका जार बननेकी थी।

मास्कोके भीतर पहुंचकर फिर पोलोने मनमानी शुरू कर दी, और जरा भी विरोध करनेपर लोगोंको तुरन्त गिरफ्तार करके बंदीखानेमें डाल दिया जाता। पोल अमीरोने क्रेमलिनमे जारके खजानेको लूट लिया। उधर अपने राजाके नेतृत्वमे एक पोल सेना स्मोलेन्स्कको घेरे रही।

उत्तरमे स्वीडोने फिनलन्द-खाडीके दक्षिणी तटपर अधिकार करके नवोगोरदको खतरेमे डाल दिया। व्यापारियो और कारीगरोकी हालत बुरी हो गई थी, क्योकि नगरोके भीतर आपसी व्यापार बिल्कुल बद हो गया था। जमीदारो और अमीरोकी हालत भी खराब थी, क्योकि उनके खेतोमे काम करनेके लिये आदमी नही रह गये थे।

मास्कोमे पोलोने बहुत कोशिश की, कि लोग पोल-राजाकी राजभक्ति स्वीकार करे, लेकिन वह इसके लिये तैयार नही थे। जिन बायरोने विश्वासघात करके पोलोको बुलाया था, उनके खिलाफ घृणाजनक पत्र प्रसारित हो रहे थे। रूसी चर्चका प्रधान सघराज हर्मोगेननने भी इसी समय पोलोके विरुद्ध अपने विचार प्रकट किये और १६१० ई०के अन्तमे उसने भिन्न-भिन्न नगरोमे अपनी घोषणा भिजवाकर कहा, कि राजधानीकी मुक्तिके लिये रूसी जनताको आगे बढना चाहिये। सघराजकी घोषणाने लोगोको और भी उत्तेजित कर दिया। जब इसकी खबर पोलोको मिली, तो उन्होने सघ-राजको जेलमे डालकर तरह-तरहकी यातना देनी शुरू की, लेकिन उसने हिम्मत नही छोडी।

व्लादिस्लावको जारका सिंहासन तो मिला, लेकिन उसे और उसके बापको रूसियोने चैनसे रहने नही दिया। मास्कोको मुक्त करनेके लिये सारे देशमे तैयारी होने लगी। जनवरी १६११ ई०मे र्याजनके वोयवोद (राज्यपाल) प्रोक्रोपी ल्यापुनोफने मास्कोकी मुक्तिके लिये स्वयसेवको-का सगठन शुरू किया, जिसमे पहिले मुख्यत दक्षिणी जिलोके अमीरोकी सैनिक टुकडिया शामिल हुई। ल्यापुनोफने कसाको और अर्धदासोको भी पैसे और मुक्तिका लोभ देकर अपनी ओर खीचा। शक्ति बढाकर एक सैनिक टुकडी राजकुमार दिमित्रि मिखाइल-पुत्र पजार्स्कीके नेतृत्वमे पोलोके ऊपर प्रहार करने लगी। इस सेनाका हरावल ठीक समयपर मास्कोके पास पहुचा, और पोल तथा देशद्रोही बायरोने मास्कोमे आग लगा दी। जलते हुये घरोके बीच लडाई जारी रही, पर अतमे धूयें और आग-की ज्वालाने रूसी सेनाको शहरसे बाहर निकलनेके लिये बाध्य किया। राजकुमार पजार्स्की इसी लडाईमे घायल हुआ। कुछ महीनेतक मास्कोके बाहर रहकर फिर कोशिश की, लेकिन वह राज-धानीको मुक्त नही करा सके। ३० जूनको सेना-सगठनके बारेमें कसाको और सामन्तोने आपसमे समझौता किया, जिसमे सामन्तोका प्रतिनिधि ल्यापुनोफ था और राजकुमार दिमित्रि त्रुबेत्स्की तथा अतमन इवान जारुत्स्की कसाकोके प्रतिनिधि थे। समझौता ठीकसे चला नही, दोनो पक्षोमे जब-तब झगडा हो उठता। ३० जूनको वह यहातक बढा, कि कसाकोने प्रोक्रोपी ल्यापुनोफको मार डाला, जिसके बाद स्वयसेवक-सगठन छिन्न-भिन्न हो गया। सामन्त अपने सैनिकोको लेकर चले गये और सिर्फ कसाक सैनिकोका एक भाग मास्कोके सामने रह गया।

उधर स्मोलेन्स्कके प्रतिरक्षियोने करीब-करीब दो सालतक पोलन्दकी भारी सेनाका मुका-बिला किया। पोल राजाने तोपोके गोलोसे सफलता न पाकर बडे-बडे वादोसे फुसलाना चाहा, लेकिन स्मोलेन्स्कके नागरिक इसके लिये तैयार नही थे। जून १६११ ई०के आरम्भमे पोल किलेकी दीवारको एक जगह उडानेमे सफल हुये, नागरिकोने जलते हुये नगरकी सडकोमें आखिरी लडाई लडी। बहुतोने शत्रुके हाथमे पडनेकी जगह आगकी ज्वालामे कूदकर जान दे दी। सत्तर मन बारूदके एक ढेरमें आग लगा दी गई, जिससे रूसियोके साथ बहुतसे पोल भी चिथडे-चिथडे उड गये। बहुत थोडेसे प्रतिरक्षी पोलोके हाथ बदी हुये। जिस समय स्मोलेन्स्कको पोलोने लिया, उसी समय स्वेडोने उत्तरमे नवोगोरद नगरपर अधिकार किया।

कसाको और सामन्तोके झगडेके कारण यद्यपि सैनिक स्वयसेवकोका सगठन छिन्न-भिन्न हो गया था, लेकिन रूसियोने पोलोके विरुद्ध अपनी तलवार मियानमे नही रक्खी। निजनी-नवोगोरदने फिरसे स्वयसेवकोके सगठनमे आगे बढकर काम किया और मास्कोकी लडाईमे घायल प्रसिद्ध वीर राजकुमार दिमित्रि पजार्स्कीको सेनाका सचालक बननेके लिये निमन्त्रित किया। चारो ओर फिर एक नया उत्साह दिखाई देने लगा। मास्कोमे पोलोको जब पता लगा, कि हमारे विरुद्ध एक बडी भारी सेना जमा हो रही है, तो उनमें घबराहट मच गई। उनसे भी ज्यादा

भयभीत थे देशद्रोही बायर। उन्होंने लोगोसे बहुत कहा, कि पोल राजकुमार व्लादिस्लावकी अधीनता स्वीकार करो, लेकिन लोग इसके लिये तैयार नही हुये।

१६१२ ई०के वसतमे स्वयसेवक-सेना निजनी-नवोगोरदसे यारोस्लाव्ल पहुची। सब जगह लोग बडे उत्साहके साथ स्वागत करते आ-आकर उसमे भर्ती हो रहे थे। यारोस्लाव्लमे सेना चार महीने रही। यहापर उन्होंने राष्ट्रीय सरकार सगठित की और शासन-प्रबधके भिन्न-भिन्न विभाग कायम किये। स्वयसेवकोमे भिन्न-भिन्न नगरोके अमीर, तथा सभी वर्गोके आदमी, कसाक, किसान और स्त्रेलेत्सी (धनुर्धर) ही नही, बल्कि तारतार, मारी और चुवाश जैसे अ-रूसी जातियोके भी लोग सम्मिलित थे। सेनाने अपना केद्र यारोस्लाव्लमे रक्खा, लेकिन उसकी टुकडिया चारो तरफ फैलकर देशको पोलोंसे स्वतन्त्र करने लगी। पोल आकर रूसके भिन्न-भिन्न इलाकोमे फैल तो गये थे, लेकिन उनको देशका परिचय कम था, इसलिये हर जगह ग्रामीणोको पथ-प्रदर्शनके लिये मजबूर करते। कितने ही पथ-प्रदर्शकोने उन्हे ऐसी जगह पहुचा दिया, जहा वह रूसी स्वयसेवको के हाथमे पडकर नष्ट हो गये। ऐसे ही पथ-प्रदर्शकोमे कस्त्रोमाका एक किसान इवान सुसानिन था। उसने पोलोका पथप्रदर्शन करते उन्हे इसुपोव्स्कोयके दलदलमे डाल दिया। पोलोने सुसानिनको मार डाला, लेकिन वह स्वय दलदलमें मरनेसे नही बचे। पीछे इवान सुसानिनका पद्य-नाटक (ओपेरा) बना, जो आज भी रूसियोमे बहुत जनप्रिय है।

१६१२ ई०के अगस्तके अतमे स्वयसेवक-सेनाका मुख्य अग मास्कोकी दीवारोके नीचे पहुचा। यद्यपि उसका जबर्दस्त प्रतिरोध हुआ, लेकिन वह मास्को नदीके तटपर पहुचे बिना नही रहा। स्वयसेवकोका एक मुख्य सेनापति कुजमा मीनिन चार सौ आदमियोके साथ नदीके पार हो पोलोके पक्षपर प्रहार करने लगा। पोल इसकी आशा नही रखते थे, इसलिये पहली ही चोटमे भागकर अपने डेरोमे घुस गये। चार सौ गाडियोमे भरी उनकी रसद कुजमाके आदमियोके हाथमे पडी। मास्कोमे डेरा डाले पडी पोलसेनाको अब न कहीसे अन्न मिलता और न बाहरसे सहायता आनेकी आशा थी। अन्तमे लडाई और भूखकी मारसे परेशान हो २६ अक्तूबर १६१२ ई० को क्रेमलिनके फाटकपर लडाई करते उन्होने आत्म-समर्पण किया और मास्को मुक्त हो गया।

२ रोमनोफ-वंश (१६१३ १९१७ ई०)

मास्कोको मुक्त करनेके बाद जारके निर्वाचनके लिये राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सबोर)को बुलाया गया। सभामे सबसे ज्यादा जनप्रिय बायर रोमनोफ थे, जिनकी लडकिया जार इवान IV और फ्योदोरको व्याही थीं। सामन्तो और बायरोको उनसे भूमि, किसान तथा दूसरी चीजो के मिलनेकी आशा थी। रोमनोफ-परिवारका प्रधान व्यक्ति फिलारेत था, जो कि रस्तोफका सघराज किन्तु अब पोलदमे बदी होकर चला गया था। वह साधु भी था, इसलिये जार नही बन सकता था। १६१३ ई०के आरम्भमे राष्ट्रीय सभाने उसके सोलह वर्षके पुत्र मिखाइलको जार निर्वाचित किया, जो बुद्धि और आचरण दोनोंमें दुर्बल था।

रोमनोफ-वश रूसका अन्तिम राजवश था, जो कि अकबरकी मृत्युके सात साल बाद अस्तित्व-मे आ १९१७ ई०की बोल्शेविक क्रान्तितक शासन करता रहा। इस वशके अन्तिम आठ जार नाममात्र के ही रोमनोफ थे, वह वस्तुत जर्मन थे, जिसके कारण दरबारमे हमेशा जर्मनोकी तूती बोलती रही। इस वशमें निम्न जार हुये—

१	मिखाइल, फिलारेत-पुत्र	१६१३–४५ ई०
२	अलेक्सान्द्रा, मिखाइल-पुत्र	१६४५–७६ "
३	फ्योदोर, अलेक्सान्द्रा-पुत्र	१६७६–८२ "
४	इवान१, अलेक्सान्द्रा-पुत्र	१६८२–३६ "
५.	पीतर१, अलेक्सान्द्रा-पुत्र	१६९६–१७२५ "
६	एकातेरिना१, पीतर I-पत्नी	१७२५–२७ "

७	पीतर II, अलेक्सान्द्र-पुत्र	१७२७–३० ई०
८.	अन्ना, इवान V-पुत्री	१७३०–४० ”
९	इवान VI, अन्ना-पुत्र	१७४०–४१ ”
१०	एलिजावेथ, पीतर I-पुत्री	१७४१–६१ ”
११	पीतर III, पीतर I-नाती	१७६१–६२ ”
१२	एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी	१७६२–९६ ”
१३.	पावल I, पीतर III-पुत्र	१७९६–१८०१ ”
१४	अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र	१८०१–२५ ”
१५	निकोलाइ I, पावल I-पुत्र	१८२५–५५ ”
१६	अलेक्सान्द्र II, निकोलाइ I-पुत्र	१८५५–८१ ”
१७	अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र	१८८१–९४ ”
१८	निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र	१८९४–१९१७ ”

१. मिखाइल, फिलारेत-पुत्र (१६१३–४५ ई०)

वस्तुत शासनसूत्र मिखाइलके नामसे अव उसकी मा और सवधियोके हाथमे था । नई सरकारको देशमे व्यवस्था कायम करनेमें काफी दिक्कतका सामना करना पडा । अस्त्राखानमे भागे हुये जारुत्स्कीने अपनेको जार दिमित्रि घोषित किया, लेकिन उसको सहायता नही मिली और अन्तमें लोगोने उसे और उसकी स्त्री मरीनाको पकडकर सरकारके हवाले कर दिया । जारुत्स्कीको मास्कोमें फासी हुई, मरीना जेलमें मरी और उसका वच्चा भी फासीपर चढा दिया गया । यद्यपि पोलन्दसे सघर्ष कम हो गया, लेकिन रूसकी भीतरी कमजोरियोको देखकर स्वीडो-ने नवोगोरदपर अधिकार करके सघर्ष जारी रक्खा । उनसे छुटकारा १६१५ ई०मे प्स्कोफमे उनके प्रसिद्ध योद्धा राजा गस्ताव अदल्फसको हराकर ही हुआ । रूसी भी लडाई वढाना नही चाहते थे, क्योकि उसके कारण देशका व्यापार तथा सारा आर्थिक जीवन चौपट हो गया था, लोगोकी हालत वुरी थी । इगलैण्ड और हालैडको वीचमे डालकर १६१७ ई०के आरम्भमे, स्तोल्वोवोकी सधि हुई, जिसके अनुसार स्वीड सेनाने यद्यपि नवोगोरद और उसके इलाकेको खाली कर दिया, लेकिन फिनलन्द-खाडीका सारा तट तथा कितने ही नगर अपने हाथमे ही रखे, इस प्रकार रूस वाल्तिक समुद्रसे वचित रहा । व्लादिस्लाव अभी भी रूसी सिंहासनकी आशा नही छोडे था । १६१८ ई०मे वह एक वार मास्कोतक पहुचा, लेकिन वहासे मार भगाया गया । आखिर उसने भी १६१८ ई०के अन्त में साढे चौदह सालके लिये मास्कोके साथ सधि कर ली, लेकिन स्मोलेन्स्क और आसपासके इलाके तथा सेवेर्स्क (चेरगीनोफ)के इलाकेको पोलोने नही छोडा । इस सधिके वाद जारका पिता फिलारेत रोमनोफ वदीखानेसे मुक्त हुआ । मास्को पहुचनेके तुरन्त ही वाद उसे सारे रूसी चर्चका महा-सघराज वना दिया गया और अवसे जीवनभर (१६१९–३५ ई०) वही रूसका वास्तविक शासक था । सभी राजादेश जार और उसके वापके नामसे निकाले जाते थे । फिलारेतको महास्वामी ("वेलीकी गसुदार")की उपाधि मिली थी । वह अव धर्म और राज्य दोनोका कर्णधार था । इस असीम शक्तिको इस्तेमाल करके उसने केन्द्रीय सरकारको वहुत मजवूत किया । मास्कोने १६३२ ई०में स्मोलेन्स्कको लौटानेकी कोशिश की, लेकिन पोलन्दने राजनीतिक चालसे क्रिमियाके तारतारोको मास्कोसे उलझा दिया, और इस प्रकार उस साल स्मोलेन्स्कका अभियान व्यर्थ गया । १६३३ ई०मे महासघराज फिलारेत मर गया ।

इस समय पोलन्दके षड्यन्त्रके कारण मास्कोके दक्षिणी सीमातको क्रिमियाके तारतारोंसे वहुत खतरा पैदा हो गया था । वह जव-तव रूसके भीतर घुसकर गावो और शहरोमे लूटपाट मचाते थे । प्रतिरक्षाके लिये दक्षिणी सीमातकी मोर्चावदी अव आवश्यक हो गई थी । तारतार दोनके कसाको-पर भी हमला करते थे, इसलिये वह भी उनको दवानेके लिये सव तरहसे तैयार थे । क्रिमियाके

तारतारोकी पीठपर उधर तुर्कोका सुल्तान भी था, जिसका अधिकार काकेशससे अजोफ समुद्रके तट तक था। १६३७ ई०मे दोनके कसाकोने अजोफके किलेपर आक्रमण किया। दोन नदीद्वारा अजोफ-समुद्रके भीतर पहुचनेमे तुर्कोका यह किला भारी बाधक था। दो महीनेके मुहासिरेके बाद कसाकोने किलेको सर कर लिया। तुर्की सुल्तान इसे कैसे बरदाश्त कर सकता था? उसने १६४१ ई०मे शक्तिशाली तोपखानेके साथ एक भारी सेना उनके विरुद्ध भेजी। मुट्ठी भर कसाक सेनाने चौबीस बार तुर्कोके आक्रमणको विफल कर दिया। अन्तमे एक और बडे आक्रमणके समय उन्हे मास्कोसे सहायता मिली। मिखाइलकी सरकार बिना जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय सभा)की सम्मति लिये तुर्कोके साथ युद्ध नही छेडना चाहती थी। सभाने उसके लिये स्वीकृति नही दी, इसपर सरकारने कसाकोको अजोफ छोडकर चले आनेकी आज्ञा दी।

यह १७वी सदीका मध्य या शाहजहाका समय था। उस समय भारतके किसानोकी भी हालत रूसके किसानोसे बेहतर नही थी। जमीन बडे-बडे जमीदारो और सामन्तोकी थी, जो अपने विलासितापूर्ण जीवनके लिये उनका अधिकसे अधिक शोषण करते थे। किसानोके लिये अपने गावोमें अब आशा नही रह गई थी। उनमेंसे कितने ही किसानी छोडकर व्यापारी बन गये और कुछ दूसरी जगहोमें भाग गये। १७वी शताब्दीके ये जमीदार अपने किसानो, अर्धदासो और कारीगरोके हाथके कामोसे सतुष्ट नही थे। राजधानीके धनी अमीर और बायर इतालीके मखमल, इगलैण्डके ऊनी कपडो और विदेशी समूरी टोपियोको पहनते थे। उनको बहुमूल्य आभूषणो और विदेशी शराबोका चसका लग गया था। उनके घरोमें बहुत तरहकी विदेशी चीजे इस्तेमालमे आती थी और यह सारी विलास-सामग्री किसानोकी कमाईसे मिले पैसेके बलपर ही खरीदी जा सकती थी। उदाहरणके लिये उस समयके एक बहुत बडे बायर बोरिस इवान-पुत्र मोरोजोफको ले लीजिये। उसके पास तीन सौ गाव थे, जिनमे चालीस हजार अर्धदास रहते थे, जिनसे उसे दस हजार रूबल मासिककी आमदनी थी, जो आजकलके हिसाबसे लाखो रुपया होगा। उसकी बहुतसी बखारे थी, जिनमे लाख पूद (१ पूद=१८ सेर) अनाज भरा रहता था। पोलन्दके साथकी लडाईमे अनाजका भाव महगा हो गया। उस समय अपने अनाजको बेचकर मोरोजोफने बहुत पैसा जमा किया। उसकी जमींदारीमें सात सौ नौकर थे, जो किसानोकी अलग नोच-खसूट करते रहते थे। मोरोजोफके पास इतना पैसा जमा हो गया था, कि उसने उससे लोहेका कारखाना, पोटाश-कारखाना कायम किये और अपने किसानोको वहा जाकर काम करनेके लिये मजबूर किया। उसके पोटाशको विदेशी व्यापारी खरीद ले जाते थे।

अब कारखानोके बढानेकी अवश्यकता समझी जाने लगी थी। लडाईके लिये लोहेकी सबसे अधिक अवश्यकता होती है, इसलिये लोहेकी उपज बढाने के लिये एक डच व्यापारी एडरू विनियसको लोह-धूनो(ओर)मे काम करनेका ठेका दिया गया और उसने तुलामे पहला लोहेका कारखाना खोला, जिससे आगे चलकर तुला रूसका लौह-केन्द्र बन गया। उसके कुछ समय बाद एक स्वीडने मास्कोके पास काचका कारखाना खोला।

कारखानेका रवाज यद्यपि बढने लगा, लेकिन अब भी व्यापार रूसके आर्थिक जीवनमे खास स्थान रखता था, जिसके कारण कितने ही विदेशी राज्योसे उसका घनिष्ठ सबध स्थापित हुआ। इसी समय पश्चिमी युरोपसे व्यापार करनेके लिये अर्खन्गेल्स्क प्रधान बदरगाह बन गया। गर्मियोमे जब समुद्र बर्फसे मुक्त रहता, तो बहुत-से अग्रेज, डच और जर्मन जहाज अपना-अपना माल लेकर वहा पहुचते—जिसमें ऊनी कपडे, रेशमी कपडे, मूल्यवान् बर्तन तथा दूसरी विलासिताकी चीजे होती। रूसी व्यापारी नावोमे साइबेरियाके समूर, चमडे, भागके कपडे, पोटाश, शूकरमास तथा गावो और नगरोके कारीगरोकी बनाई और भी कितनी ही चीजें भरकर उत्तरी द्विना नदीसे हो अर्खन्गेल्स्क पहुचते। वहा दोनो ओरसे क्रय-विक्रय होता। एसियाके साथ व्यापार मुख्यत अस्त्राखानद्वारा होता था, जहापर बुखारी और ईरानी व्यापारी पूर्वी देशोके मालको लेकर पहुचते थे। इस व्यापारसे लाभ उठानेके लिये हमारे भारतीय व्यापारी और कुछ कारीगर भी अस्त्राखानमें

जा पहुचे थे। इवान IVने भारतीय कारीगरोको वहासे मास्को बुलवा मगवाया था। व्यापारके वढानेके कारण अब नगरोकी सख्या और समृद्धि वढने लगी और धनी व्यापारियोका एक अलग वर्ग स्थापित होने लगा। देशकी शाति और केन्द्रीकरणने इस काममें बडी सहायता की।

चीनतक प्रसार--रूसका विस्तार साइवेरियामे पूर्वकी ओर हो रहा था। ऐसी अवस्थामे चीनके वारेमे ज्यादा जानकारी प्राप्त करना उसके लिये आवश्यक था। बुखाराके व्यापारी जहा एक ओर अपने कारवाको लेकर चीनमें पहुचते थे, वहा दूसरी ओर वह अस्त्राखान भी आते थे। सम्भव है, उनके साथ कुछ चीनी भी रूसमे पहुचे हो, लेकिन रूस अब पेकिङ्से ज्यादा नजदीकका सबध स्थापित करना चाहता था। १५६७ ई०मे ही पेत्रोफ और यालीसेफ नामक दो कसाकोको इसलिये भेजा गया, कि वह पडोसी लोगोकी भाषा, रीति-रवाज आदिके वारेमे जानकारी प्राप्त करे। उन्हे विशेषकर चीन-राज्य, मगोलोकी भूमि और ओब महानदीके बारेमें जानकारी प्राप्त करनी थी। वह पेकिङ्-की ओर वढते हुये कलगनतक पहुचे। लेकिन देवपुत्र सम्राट्के लिये वह कोई भेट नही लाये थे, इसलिये सम्राट् मू-चुङ् (१५६६-७२ ई०)के दरवारमे गये विना ही उन्हे लौटा दिया गया। १६०८ ई०मे फिर इसके लिये कोशिश की गई, जिसमे मगोल राजा अल्तनखाकी फिर सहायता ली गई, लेकिन इसका भी कोई परिणाम नही निकला। इसके बाद जार मिखाइलके समय १६१६ ई०मे तुमे-नेत और पेत्रोफ नामक दो कसाकोको तोवोल्स्कसे इसी कामके लिये भेजा गया। वह चीन तो नही पहुच सके, लेकिन अल्तन खानके दरवारमे कुछ समयतक रहे और खानने रूसी जारके अधीन होना स्वीकार किया। १६१९ ई०में पेंतलिन और मदोफ भेजे गये। वह भी अपने साथ भेंट नही लाये थे, इसलिये चीनी सम्राट्के दर्शनसे वचित रहे। हा, उन्हे चीनकी ओरसे एक चिट्ठी दी गई, जिसे लेकर वह तोवोल्स्क लौटे, लेकिन उस चिट्ठीको उस समय कोई नही पढ सका, और डेढ सौ साल वाद १७७६ ई०मे पेकिङ्में लाकर एक जेसुइत पादरीकी सहायतासे उस चिट्ठीका अनुवाद कराया गया।

इस प्रकार मिखाइलके समयमे चीनके साथ कोई बाकायदा दौत्य-सवध स्थापित नही किया जा सका।

मिखाइलके मरनेके वाद उसका पुत्र अलेक्सी सोलह वर्षकी आयुमे गद्दीपर वैठा।

२ अलेक्सी, मिखाइल-पुत्र (१६४५-७६ ई०)

लडके जारको बाज उडाने और दूसरे खेलोका बडा शौक था और राज्यकी सारी शक्ति एक धनी बायर वोरिस इवान-पुत्र मोरोजोफके हाथमे थी, जिसने सभी ऊंचे पदोपर अपने भाई-भतीजे-भाजोको भर दिया। जारके वशसे और भी घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये उसने एक साधारण वायर मिलोस्लाव्स्कीकी एक लडकीका ब्याह जार अलेक्सीसे करवा उसकी दूसरी लडकीको स्वय ब्याह लिया। पोलन्दके युद्धके कारण देशकी आर्थिक हालत वहुत खराब हो गई, और साथ ही युद्धमे असफलता भी रही। मोरोजोफको सवसे पहले राजकोषकी स्थिति सुधारनी थी, इसके लिये उसने जहा सैनिकोका वेतन कम किया, वहा कई कर लगाये, जिनमे सबसे भारी नमकपर था। नमक इतना महगा हो गया, कि लोग मछली सुरक्षित रखनेके लिये उसे खरीदकर नही लगा सकते थे, जिसके कारण हजारो मन मछलिया सडने लगी, और मोरोजोफ-को जल्दी ही इस करको उठा देना पडा। इन सब कारणोंसे लोगोकी हालतपर इतना बुरा असर पडा, कि अलेक्सीके आरम्भिक शासनकालमे कितने ही विद्रोह हुये। १ जून १६४८ ई०को तीर्थ-यात्रासे लौटकर जार मास्को आया, तो लोगोने उसके पास जाकर मोरोजोफकी लूट-खसूटके वारे-मे शिकायत की। उस दिन आवेदन-पत्र देनेवालोको कोडोकी मारसे भगा दिया गया, लेकिन दूसरे दिन एक जन-समूहने क्रेमलिनके दरवाजेसे राजमहलमे पहुचकर माग की, कि नगर-कोतवाल ल्योन्ति प्लेश्चेयेफको हमारे हवाले किया जाय। ल्योन्ति वडा ही क्रूर और पाशविक अत्याचारी था। वायर शान्त करनेके लिये आये, लेकिन उन्होने उन्हे भगा दिया। इसके बाद जनताने वायरो और सरकारी अफसरोंके घरोपर आक्रमण किया। एक वडा अफसर मार डाला गया, नगरमे जगह-जगह

आग लगा दी गई, सन्त्रस्त जारने प्लेश्चेयेफ और त्रखानियोतोफ दो जालिम दरबारियोको जनता के हाथमें दे दिया, जो उसी समय मार डाले गये। फिर लोगोने मोरोजोफके शिरकी माग की। लाल मैदान*मे भारी भीड उमड आई थी। जारने लोगोंके सामने कसम खाकर अपने आदमियो द्वारा कहलवाया, कि मोरोजोफको सरकारसे निकाल दिया जायगा। उसी रातको उसे मास्कोसे निकाल-कर एक दूरके मठमे भेज भी दिया गया। इसी समय कितने ही असतुष्ट सामन्त भी आ गये और नागरिको तथा सामन्तोने मिलकर जारके पास आवेदन भेजा, कि एक नई विधान-सहिताके बनानेके लिये जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय सभा)को बुलाया जाय।

मास्कोके अतिरिक्त दूसरे शहरोमें भी विद्रोह उठ खडे हुये थे, इसलिये जारको राष्ट्रीय सभा जल्दी-जल्दी बुलानी पडी। सभाके सदस्योमे बहुमत नागरिको और जनपदीय सामन्तोका था। सभी मागोको मान लिया गया और जनवरी १६४९ ई०मे नई विधान-सहिता स्वीकार की गई। शाहजहाके कालमें बनी इस विधान-सहिताद्वारा किसानोंके ऊपर सामन्तोका पूरा अधिकार स्थापित करके उन्हे अर्ध-दास बना दिया गया। नागरिकोको यह अधिकार मिला, कि सभी बायरो और चर्चकी जायदाद दीहात नही नगरोकी मानी जाय, और उन्हे सामन्तो और अमीरोकी तरह कर उगाहने और राजसेवाओका अधिकार मिले। १६५० ई०मे नवोगोरद और प्स्कोफमें विद्रोह हो गये, जिनमे प्स्कोफका विद्रोह विशेष तौरसे खतरनाक था। लोगोने जारके वोयवद (राज्य-पाल)को हटाकर वहा स्वायत्तशासन स्थापित कर लिया और जारसे माग की, कि वोयवदकी अदालतमें हमारे अपने प्रतिनिधियोको बैठनेकी इजाजत होनी चाहिये। मास्कोने इसका जवाब दिया—"कभी ऐसा नही हुआ, कि बायरो और वोयवदोंके साथ अदालतमे कमेरे (मूजिक) बैठें।" प्स्कोफके विरुद्ध सरकारी सेना गई, लेकिन उसे बुरी तौरसे हारना पडा। पीछे जब वहाके बनियो और अमीरोने देखा, कि इस सघर्पमें उनका भी ठौर-ठिकाना नही रहेगा, तो उन्होने विश्वासघात करके जारके निरकुश अधिकारको फिरसे स्थापित करनेमे मदद दी—१६५० ई०के विद्रोहोको दमन करनेमें भावी महासघराज निकोनका खास हाथ था।

शासन-प्रबन्ध—जारका अधिकार असीम था। जो कानून और नियम बनाये गये थे, उनका अन्तिम लक्ष्य यही था, कि अर्ध-दासो और किसानोंके ऊपर बायरोका पूरा अधिकार रहे। जार सबके ऊपर स्वेच्छाचारी शासक ही नही था, बल्कि देशका वह सबसे बडा बायर (जमीदार) भी था। अमीरो और दूसरे जमीदारोंके लिये यह जरूरी था, कि जारकी शक्ति खूब दृढ हो, जिसमें वह उनके वर्ग-स्वार्थकी रक्षा कर सके। जारकी इच्छा ही सारे देशके लिये विधान थी। सामन्ती कुलोंके बायर भी अपनेको जारका सेवक कहते थे और गाव या नगरके साधारण लोग तो अपनेको वह भी नही कह सकते थे। वह जारके "नन्हेंमे अनाथ" थे। जारको सम्बोधित करनेपर वह अपने-को छोटा बनाते हुये पीतरकी जगह पेतरूशका (पीतरवा), इवानकी जगह इवाशका (इवनवा) कहते थे। जारको वह देवता मानते हुये धरतीपर ललाट रखकर उसे प्रणाम करते।

राज्यके महत्त्वपूर्ण विषयोपर निर्णय करनेका काम जारके दरबारी बायरोकी दूमा (परिषद्) करती थी। इस परिषद्में केवल सामन्त (राजुल) और बायर ही सम्मिलित होते थे, लेकिन १७वी शताब्दीमें साधारण कुलके प्रभावशाली नये बनी भी उसमें सम्मिलित कर लिये गये।

सरकारी दफ्तरोंके कई दर्जे और विभाग थे। एक विभागका नाम "प्रिकाजी" था, जिसका मुखिया एक बायर और जिसके एक-दो सहायक-लेखक (द्याकी) होते। आफिसके साधारण कामोको पद्याचिये (निम्न-लेखक) करते। सैनिक काम-काजकी व्यवस्था अलग थी। रज्र्यादनी-प्रिकाज (सैनिक आफिस) सेना-सचालन विभागका काम करता था। स्त्रेलेत्स्की आफिसका काम था, स्त्रेलेत्स्की सैनिकोंके कामको देखना, पसोल्स्की प्रिकाज (दूत-कार्यालय) विदेश-विभागका काम देखता। स्थानीय शासन-प्रबन्धके मुखिया वोयवोद (राज्यपाल) होते, जो राज्यके नगरोंके शासनके लिये

*लाल या "क्रास्नी" रूसी शब्दका अर्थ सुदर और रक्त दोनो है, पहिले इसका अर्थ "सुदर मैदान" लिया जाता था, किन्तु बोल्शेविक क्रातिके बादमे क्रातिके प्रिय रग लालको माना जाने लगा।

वायरो और सामन्तोमेंसे नियुक्त किये जाते। वोयवोद नगरके सैनिक और असैनिक सभी अधिकारो का प्रमुख था। वही न्याय प्रवन्ध करता, नगर और उसके इलाकेके लोगोसे कर उगाहता, एक तरहसे वह अपने इलाकेका स्वच्छद जार था।

चर्च सुधार—रूस सदियोसे ग्रीक चर्चका पक्का अनुयायी था। चर्चके साधुओ-पुरोहितो. एव मठो-गिर्जोका जाल गावोमे भी विछा हुआ था, लेकिन तबतक अभी उसका पूरी तौरसे केन्द्रीकरण नही हुआ था—यही नही कितने ही कर्मकाड और रीति-रवाजको लेकर चर्चकी कई शाखाये हो गई थी। प्स्कोफमे लोगोके आन्दोलनको दवानेमे मदद देनेवाला निकोन अव महासघराज था। निकोन मठोकी जायदादके साथ अपनी इच्छानुसार जैसा चाहता वैसा करता। उसके पास वहुत भारी निजी सम्पत्ति थी। वह चर्चके भीतर अपनेको सर्वशक्तिमान् जार समझता था। उसके अत्याचारोंके कारण साधु-पुरोहित उसे "जगली जानवर" कहते थे। निकोनने चाहा, कि भेदोको मिटाकर सारे चर्चको एक कर दिया जाय। इसके लिये उसने पूजा-पद्धतियो और रीति-रवाजोमें परिवर्तन करनेकी आज्ञा दी। निकोनके सामने पश्चिमी चर्चके रोमन-पोपका उदाहरण मौजूद था। उसने अपनेको पूर्वी चर्चका पोप वनाना चाहा। ग्रीक और कियेफके सुशिक्षित साधुओ-ने पद्धतियो और क्रिया-कलापोके सशोधनका काम किया। निकोनने आज्ञा दी, कि पहले जैसे दो अगुलियोंसे सलेव खीच पूजाकी मुद्रा की जाती थी, अव उसे तीन अगुलियोसे करना चाहिए। वढते-बढते उसने इस सिद्धान्तको भी चलाना चाहा, कि आध्यात्मिक (धार्मिक) शासन सासारिक शासनसे ऊपर है "आध्यात्मिक शासन सूर्यकी तरह है, जव कि सासारिक शासन चन्द्रमा जैसा है—चन्द्रमा अपना प्रकाश सूर्यसे प्राप्त करता है।" निकोन "महास्वामी" (बैलीकी गसूदर) की उपाधि धारण कर राजकाजमे भी दखल देने लगा—सैनिक अभियानो तकके लिये भी आज्ञा निकालने लगा। उसकी इस अनधिकार चेष्टासे सामन्तो और अमीरोमे भारी असतोष पैदा हो गया। यद्यपि वह चर्चको मजबूत करनेके निकोनके प्रयत्नको पसद करते थे, लेकिन नही चाहते थे, कि महासघराजके सामने जार अकिंचन हो जाये। होते-होते इस वैमनस्यने भयकर रूप धारण किया, जिसपर निकोन एकाएक अपने पदको छोड एक मठमे एकातवासी वन वैठा। उसने समझा था, कि दरवारी खुशामद करते उसे फिरसे पद सभालनेके लिये प्रार्थना करेंगे, लेकिन उसे निराश होना पडा। निकोनके कामोकी जाच करनेके लिए जारने १६६६ ई०मे दो ग्रीक सघ-राजोकी समिति वनाई। समितिने अपना निर्णय दिया, कि निकोनने राजशक्ति हथियानेका प्रयत्न किया। तो भी उसके चर्च-सबधी सुधारोको स्वीकार किया गया। निकोनको एक साधारण साधु वनाकर उत्तरके एक मठमें निर्वासित कर दिया गया।

निकोनने जो सुधार किये थे, उससे यद्यपि रूसी चर्चमे एकता स्थापित हुई, लेकिन कितने ही सनातनियोने इन सुधारोको माननेसे इन्कार कर दिया। उन्होने "रस्कोल्निकी" (मतभेदी) अथवा पुराणविश्वासी नामसे अलग सम्प्रदाय वना लिया। आज भी रस्कोल्निकी कितनी ही जगहो-मे काफी सख्यामे मिलते है। इन विरोधियोमें एक मास्कोका अव्वाकुम था, जिसे उसके विरोधके लिये पूर्वी साइबेरियामे निर्वासित कर दिया गया, जहा प्राय दस वर्पोतक जारके वोयवोदोने उसके साथ वडा कठोर वर्ताव किया। निर्वासनके वाद अव्वाकुमने रूस लौटकर फिर अपने कामको शुरू किया। अब उसे उत्तरमें पुस्तोजेर्स्क स्थानमें बदी बनाकर एक अवेरे तहखानेमें डाल दिया गया। राज्यको इतने हीसे सतोष नही हुआ, वल्कि १६८१ ई०में अव्वाकुमकी होली जलाई गई। वहुत दिनोतक रस्कोल्निकी सम्प्रदायका मुख्य केंद्र रूससे वाहर रूमानियामें था। क्रान्तिके वाद ही उनके साथका भेदभाव दूर हुआ, और उनका केन्द्र रूसकी भूमिमें चला आया।

उक्रइनका मिलन—१५६९ ई०में लिथुवानिया और पोलन्दमे एक समझौता हुआ, जिसके अनुसार दोनो एक हो गये। उसी समयसे उक्रइनका वहुत वडा भाग पोलन्दके हाथमे चला गया। उक्रइनी लोग पोल जमीदारो और सामन्तोके जूयेके नीचे कराह रहे थे। सवसे अच्छी भूमिको लेते वढते-वढते द्नियेपर नदीके वाये तटके गावोंके भी स्वामी पोल वन गये। ऐसे आर्थिक शोषण, राज-

नीतिक अत्याचार और दुर्व्यवहारको उक्रइनी लोग कबतक चुपचाप बर्दाश्त करते ? स्लाव जातिके होनेपर भी पोल जहा कैथलिक होनेसे रोमके पापाको भगवान्‌का अवतार मानते, वहा उक्रइनी ग्रीक चर्चके अनुयायी थे। पोल अमीर और जमीदार चाहते थे, कि उनके किसान भी रोमके पापाको मानें, ताकि विना चू-चिराके हमारे जूयेको उठाते रहे। इसके लिये भी कोशिश की जाने लगी, कि कैथलिक और ग्रीक चर्चको एक संघमें मिला दिया जाये। योजना यह थी, कि दोनो चर्च पूजा-पद्धति अपनी-अपनी रक्खे, लेकिन रोमके पापाको अपना प्रमुख मानें। इस कामके लिये १५९६ ई०में ब्रेस्त नगरमे एक चर्च-सभा बुलाई गई। सभाका बहुमत इसे नही पसद करता था, कि ग्रीक-चर्च रोम-चर्चके अधीन हो जाये, तो भी अल्पमतके निश्चयको स्वीकार करते पोल राजाने वैसा राजादेश निकाल दिया। इसपर असतोष बढना ही था। धार्मिक एकताकी आडमे असल उद्देश्य तो था, किसानो और कमेरोपर अमीरोका निर्बाध अधिकार स्थापित करना। अत्याचारोके मारे कितने ही उक्रइनी और बेलोरुसी किसान भागकर निम्न-द्नियेपर-उपत्यकाकी खाली जगहोमें चले गये जो ज़ापरोझे कसाकके नामसे प्रसिद्ध हुये। इसी समय रूसी जमीदारो के अत्याचारोसे बचनेके लिए बहुतसे किसान दोन-उपत्यकामें भाग गये, जो दोन-कसाक कहलाये। उक्रइनके भगोडे किसानोने द्नियेपरके जल-प्रपातके पास खोर्तित्सा द्वीपमें अपना एक दुर्ग बनाया। अबतक तुर्क और क्रिमियाके तारतार उक्रइनकी भूमिमे घुसकर लूट-मार करना अपना हक समझते थे, लेकिन अब ज़ापरोझे कज़ाक कालासागरके तटकी उनकी भूमिमे हाथ साफ करने लगे। इनका कोई एक निश्चित निवासस्थान नही था। जब लूट-मारसे काफी माल प्राप्त हो जाय, और थोडेसे पशु-पालनसे काम चल जाये, तो स्थायी बस्ती बाधनेकी क्या अवश्यकता ? कही-कही उनके मोर्चाबदी किये डेरे होते थे, जिन्हे सेच कहा जाता था। वसतके आरभमे कसाक सेचपर जमा होते। उस समय यह द्वीप जनसकुल हो उठता। इसी समय कसाक अपना मुखिया (अतमन) तथा दूसरे सेनानायक निर्वाचित करते। सैकडो कसाक वीरी (वेद) की लकडीकी नावे वनाने या मरम्मत करनेमें लग जाते, हथियारोको ठीक करते। सब तैयारी हो जानेके बाद इन्ही नावोपर चढकर वह बडी तेजीसे कालासागरमे पहुच जाते, और फिर तट-भूमिपर लूट-मार शुरू कर देते। कभी-कभी तो वह सुल्तानकी राजधानी कान्स्तन्तिनोपोलतक भी धावा मारते। उनकी नावोकी गति इतनी तीव्र होती, कि तुर्क सतरी खतरेकी खबर भी नही दे पाते थे। जाडोमें कसाकोकी सेच जनशून्य हो जाती। उस समय वह अपने लूटके मालको ले जाकर उक्रइन और पोलन्दके नगरोमे बेंच दूसरी चीजें खरीदते।

१६वीं शताब्दीके अन्तमे ज़ापरोझे कसाकोकी सख्या काफी बढ गई। पोल राजा स्तेफन बाथोरीने उनकी सैनिक क्षमताको देखकर उन्हे अपना सचिकाबद्ध (रजिस्टरबद्ध) सैनिक बनाना शुरू किया—जिसके कारण ऐसे कसाक "रजिस्टरबद्ध कसाक" कहे जाने लगे। उनको राज्य-की ओरसे कुछ वेतन तथा शहरोमे रहनेके लिये मकान मिलते थे। रजिस्टरमे नाम लिखे कसाकोकी सख्या बहुत कम थी। १६वीं सदीके अन्तमें ज़ापरोझे कसाकोमे भी धनी-गरीबका भेद स्थापित हो गया। राजा उनके सरदार (हेतमन, अतमन) को अपना अफसर बनाता।

धनी-गरीबके भेदने उक्रइन और बेलोरसियामें जनसाधारणको विद्रोह करनेके लिये मजबूर किया। इन विद्रोहोमे ज़ापरोझे कसाक प्राय किसान-विद्रोहियोका साथ देते—कभी-कभी रजिस्टर-बद्ध कसाक भी उनके सहायक बन जाते। विद्रोही किसान पोल जमीदारोकी गाडियोमे आग लगा देते, और हाथ लगनेपर उन्हे मार भी डालते। पोल फिर सेना लेकर आते और किसानोंसे बडी क्रूरताके साथ बदला लेते। इस वक्त भी कितने ही विद्रोही किसान अपने गावोको छोडकर मध्य-द्नियेपर-के घने जगलोमे भाग जाते, जहासे अपने शत्रुओपर छापामारी करते।

१६३० ई०के आसपास ज़ापरोझेकी सेच पोलोंके खिलाफ एक बार फिर उठी, जिसे आसानीसे दबा दिया गया, क्योंकि उनके धनी मुखिया और सरदार विश्वासघात करनेके लिये तैयार थे। पोलोंने ज़ापरोझे कसाकोको उक्रइनमें घुसनेसे रोकनेके लिये द्नियेपरके प्रपातके ऊपर कोदक्स फ्रेंच

इजीनीयरके तत्त्वावधानमे एक किला वनवाया, जिसके तैयार हो जानेपर पोल हेतमनने कसाकोके साथ मजाक करते हुये कहा—"कोदकके वारेमे तुम क्या सोचते हो ?"

"मानव हाथोने जिसे वनाया, वह मानव हाथोद्वारा नष्ट किया जायेगा।"—यह जवाव कसाक सरदार वगदान ख्मेल्नित्स्कीका था। /

कुछ वर्षों वाद सचमुच ही कसाकोने कोदक दुर्गको नष्ट कर दिया, और १६३८ ई०से पहले पोल सेना उक्रइनके विद्रोहको नही दवा सकी।

१६४८ ई०के वसतमें फिर लोगोने पोलन्दके खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस विद्रोहके आरम्भक ज़ापरोज़े कसाक और उनका नेता वगदान (भग-दत्त) ख्मेल्नित्स्की था। वगदान उक्रइनमे वहुत जनप्रिय था। वह शिक्षित था। कियेफकी अकदमीमे उसने पढा था, और लातीनी भाषा भी जानता था। कसाकोके कितने ही साहसपूर्ण अभियानोमें उसने भाग लिया था। अभी वह वीस वर्षसे कुछ ही वडा था, कि पोलोंके साथ मिलकर उसने तुर्कोंके खिलाफ लडाई लडी थी। उस समय तुर्कोंकी सीमा पोलन्दसे मिलती थी, और कितने ही उक्रइनी गाव तुर्कोंके हाथमें थे, जिनके साथ तुर्क वडा दुर्व्यवहार करते थे। वगदानका वाप चेचोरा जासीके पास तुर्कोंकी लडाईमे मारा गया और वगदान स्वय तुर्कोंका वदी वना, जहा उसे दो सालतक रहनेके वाद मुक्ति मिली। वगदान एक अच्छा खाता-पीता समृद्ध जमीदार था, और पोल राजकीय सेनाके रजिस्टरमे भी उसका नाम था। लेकिन, उसके देशभाइयो (उक्रइनियो)के साथ पोलोका जैसा दुर्व्यवहार हो रहा था, उसके कारण वगदान अपनेको रोक नही सका। पोलोका शासन मनमानी था। एक दिन एक पोल जमीदारने दखल करनेका सरकारी परवाना ला एकाएक वगदानकी जमीदारीपर अधिकार कर लिया, और सारे परिवारको जजीरोमे वाघ दिया। वगदानने जव न्याय करनेकी वात कही, तो पोल जमीदारने वगदानके दस वर्षके लडकेको कोडेसे पीटते हुये मार डाला। वगदानने राजाके दरवारमें जाकर न्याय पानेकी कोशिश की, लेकिन वहासे भी उसे खाली हाथ लौटना पडा। जो भी थोडीसी धन-दौलत-जमीदारी उसके पास थी, वह खतम हो चुकी, साथ ही उसके वेटेकी निर्मम हत्या की गई, उसे भी वह भूल नही सकता था। उसने अच्छी तरह समझ लिया, कि इन सारे अत्याचारोका कारण देशकी परतन्त्रता—उक्रइनका पोलन्दके हाथमें रहना है। उसने अपने कसाक-मित्रोको जमा करके उनका एक दल वनाया, और फिर उनसे पूछा—

"क्या हम अपने भाइयोको इस हालतमे छोड दें ? देशमे सभी जगह मैंने अपनी आखो भयकर अत्याचार होते देखा है। हमारे अभागे भाई हमसे सहायता माग रहे है।"

इसके जवावमे एक वूढे कसाकने कहा—"अव तलवार उठानेका समय आ गया है, पोलोंके ज्येको उतार फेकनेका समय आ गया है।" पोल जमीदारोको भी इसकी भनक लग गई, और उन्होने वगदानको जेलमें डाल दिया, लेकिन वह भागकर ज़ापरोज़े पहुचनेमे सफल हुआ। अव उसने सगठित रूपसे पोल जमीदारोपर धावा वोलना शुरू किया। पोल अपना सव कुछ छोड जान लेकर भागने लगे। यह खवर सुन उक्रइनमें और जगहोमे भी विद्रोह होने लगे। वगदानने सोचा, हमारी शक्ति और भी मजवूत हो सकती है, यदि क्रिमियाके तारतार खानसे मित्रता हो जाये। इसके लिये वह स्वय क्रिमियाकी राजधानी वक्सीसराय गया। खान उस समय पोल-राजासे वहुत नाराज था, क्योकि कितने ही वर्षोंसे उसने भेट नही भेजी थी। खानकी ओरसे वगदानका वडा स्वागत हुआ, और अपने उद्देश्यमें सफल होकर लौटा। खानने वगदानकी मददके लिये अपने एक राजकुमारके नेतृत्वमे तारतार सैनिक भी भेजे। कसाकोने वगदानका भारी सम्मान करते अपनी सभामें उसे कसाक सेनाका हेतमन (मुखिया) घोषित किया और हेतमनके दर्जेका चिह्न एक वुलवा (गदा) भेट की।

१६४८ ई०के वसतसे कसाकोने पोलोपर खूव जोरके साथ आक्रमण करना शुरू किया। मईके आरम्भमे वगदानने एक वडी पोल सेनाको हराया, जिसमें कसाको और तारतारोको वहुत-सा लूट-का माल मिला। सफलताके साथ-साथ अव वगदानके अभियानोने उक्रइनी जनताके मुक्ति-युद्धका

हार खाया। १६४८ ई०के सितम्बरमे पोल सेनाकी पिल्याव्का नदीके तटपर और भी भयंकर हार हुई। इस हारके बाद बगदानके लिये पोल-राजधानी वारसाका रास्ता खुल गया था। बगदान उक्रइनसे पोलोको ल्वोफ और जामोस्त्येतक खदेडकर कियेफ लौटा। लोगोने उक्रइनके मुक्तिदाताके तौरपर उसका स्वागत किया। तीन सौ वर्षोंतक पोलोकी गुलामीमे रहनेके बाद कियेफ अब स्वतन्त्र हुआ था। पोल सरकारने उक्रइनकी शक्तिको समझ लिया और सधि कर लेनेमें ही भलाई समझी। बगदानने माग या प्रतिज्ञा की—"मै सारी उक्रइनी जनताको पोलोकी गुलामीसे मुक्त करके ही दम लूगा।" पोल दूतोके साथ बातचीतका कोई फल नही हुआ, इसपर १६४९ ई०के ग्रीष्ममे बगदानने नया अभियान शुरू किया। क्रिमियाके तारतार अब भी उसके साथ थे, लेकिन पोलोने प्रलोभन देकर खानको अलग कर दिया और बगदानने अपनी शक्तिको देखते हुये सधि करना ही पसद किया। इस सधिके अनुसार उक्रइनका स्वतन्त्र शासन स्थापित हुआ, जिसका हेतमन बगदान माना गया। रजिस्टरबद्ध कसाकोकी सख्या छ हजारसे चालीस हजार कर दी गई।

१६४९ ई०की ज्बोरोफकी यह शान्ति-सधि भी उक्रइनको पूरी स्वतन्त्रता नही दिला सकी। पोल इस सधिको अपनी आगेकी तैयारीके लिये सिर्फ बहाना बनाना चाहते थे। १६५१ ई०के आरम्भमे उन्होने फिर पश्चिमी उक्रइनपर आक्रमण कर दिया। उसी सालके वसतमे एक बडी सेना लेकर पोल-राजा स्वय चढ आया। पोपने अपने पोल-अनुयायियोको इस धर्मयुद्धमे भाग लेनेके लिये घोषणा की—उक्रइनियोके साथ युद्ध करनेमे जो भी पाप होगा, हम उसको क्षमा करते है। बगदानके साथ क्रिमियाके खानकी सेना थी, लेकिन ऐन-मौकेपर जून १६५१ को बेरेस्तमे तारतारोने धोखा दे दिया। बगदानने जल्दीमे खानके पास जाकर सेनाको लौटनेके लिये कहा, लेकिन खानने सेना लौटानेकी जगह बगदानको ही अपने पास पकड रक्खा। बिना नेताके भी कसाक और उक्रइनी किसान कितने ही दिनोतक मोर्चा बाधे पोलोंसे लडते रहे। उन्होने एक असाधारण शक्ति और हिम्मतके धनी पुरुष बोगुनको अपना नेता चुना। कसाकोने अपने पराक्रमका खूब परिचय दिया। एक घिरी कसाक-टोलीके पास पोलोने आत्मसमर्पण करनेके बदले प्राणदान देनेका वचन दिया, जिसका जवाब था—"हमे अपने प्राण प्यारे नही है। हम शत्रुकी दयाको घृणाकी दृष्टिसे देखते है।" यह कहकर वह एक-दूसरेसे गले मिल पोलोंके ऊपर टूट पडे। तीन सौ कसाकोमेंसे एक-एक वीर-गतिको प्राप्त हुआ। इतनी वीरता दिखलानेके बाद भी पोल सेनाको रोका नही जा सका। महीनें भर बाद जब खानने बगदानको छोडा, तो कियेफ पोलोंके हाथमें चला गया था और तारतारोने देशको लूटकर बरबाद कर दिया था। १६५१ ई० की शरद्में जो सधि करनी पडी, उसके अनुसार सारे सघर्षमे प्राप्त सभी चीजोको हाथसे खो देना पडा। पोल जमीदार फिर उक्रइन लौटे और विद्रोहमे शामिल होनेके दडस्वरूप किसानोके ऊपर अकथनीय अत्याचार करने लगे। किसान अपने गावोको छोड-छोड दुनियेपरके बायें तटपर जमा हो वहासे रूसी राज्यके भीतर जाकर बसने लगे। पोलोंके अधीनकी उक्रइन-भूमि जल्दी ही जन-शून्य होने लगी, भगोडे उक्रइनी जाकर उत्तरी दोनेत्सकी ऊपरी उपत्यकाकी उर्वर-भूमिको आबाद करने लगे। पोल राजाने क्रिमियाके खानके साथ शाति स्थापित कर उसे चालीस दिनके लिये उक्रइनी जनताको लूटनेकी खुली इजाजत दी थी। क्रिमियाके तारतारोने लूटते-पीटते हजारो स्त्री-पुरुषोको ले जा जिन्दगीभर दास रहने के लिये बेंच दिया। इन्हींके बारेमें एक उक्रइनी लोकगीतमें कहा गया है —

"उक्रइनी लोग दुख भुगत रहे हैं, उन्हे कही छिपनेकी जगह नही,
घुमन्तू सवारोंके ओर्दू बच्चोके शरीरपर दौड रहे है,
कोमल शिशुओको रौंदते,
उनके पीछे हथियार—जजीरमें बधे जालिम खानके शिकार।"

१६४८–५१ ई०की लडाइयोंसे उक्रइनियोको इस बातका पता लग गया, कि बिना बाहरी सहायताके पोलोंके हाथमे अपने देशको मुक्त नही किया जा सकता। इसीलिये जब १६५२ ई० में उक्रइनके किसान और कसाक दूसरी बार विद्रोह करनेके लिये तैयार हुये, तो बगदानने

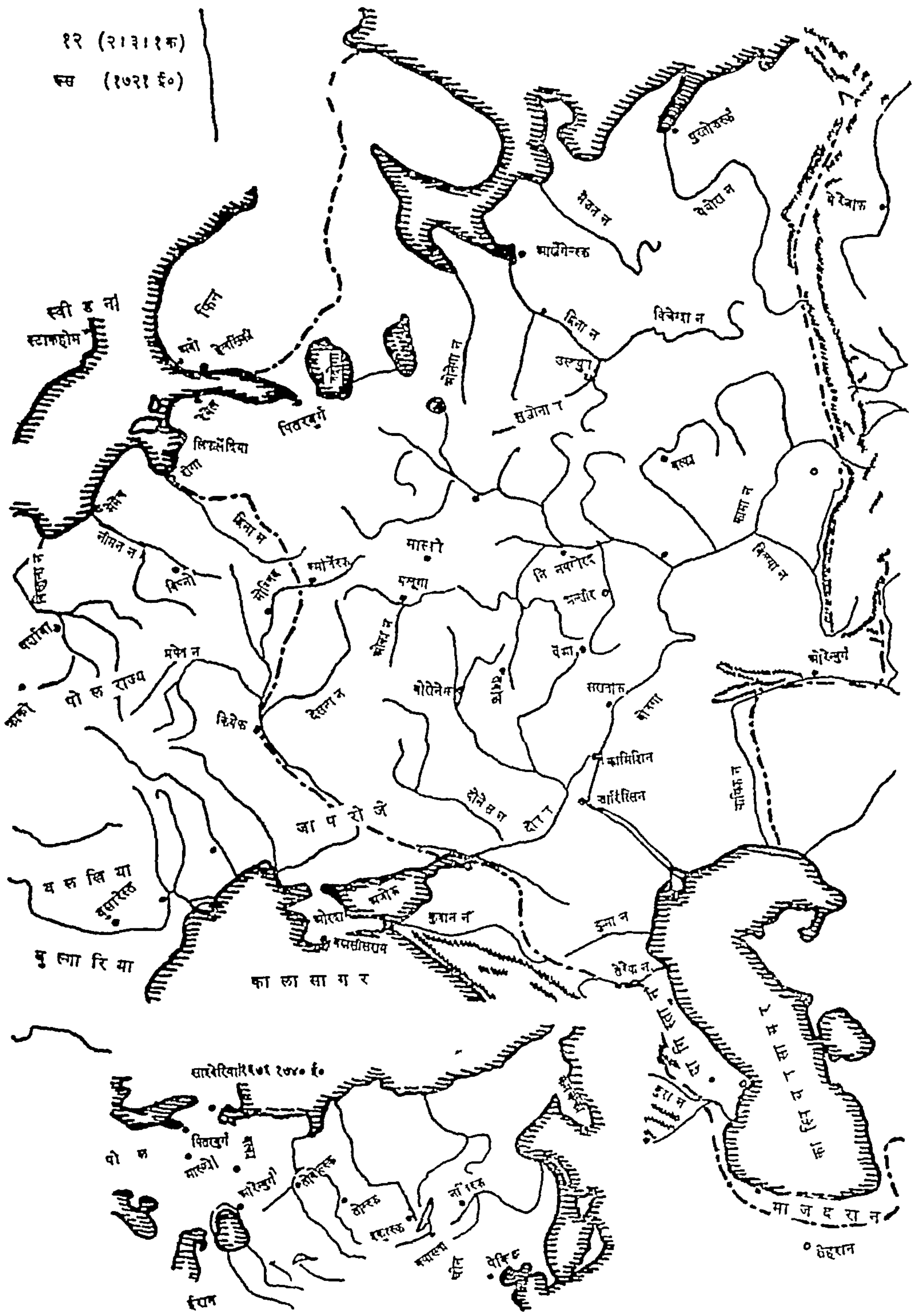

उक्रइनको रूसमे मिला लेनेके लिये मास्को-सरकारसे वातचीत शुरू की । १६५३ ई०के शरद् मे मास्कोमे "ज़ेम्स्की सवोर"के अधिवेशनमें निश्चय हुआ, कि उक्रइनको अपने सरक्षणमें ले लिया जाय, और पोलन्दके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की जाय। ८ जनवरी १६५४ ई०मे उक्रइनी कसाकोके प्रतिनिधियोका सम्मेलन—रादा—पेरेयास्लाव्लमे हुआ, जिसमे मास्कोके दूत भी शामिल हुये थे। रादाको सम्बोधित करते वगदानने अपने लोगोकी दयनीय अवस्थाका चित्र खीचते हुये कहा था—

"तुम सब जानते हो, कि हमारा शत्रु हमे पूरी तौरसे मिटा देना चाहता है, जिसमें हमारी भूमिमें रूस (उक्रइनी) नाम फिर कभी न लिया जा सके। इसीलिये तुम चार शासकोमे से किसी एकको अपने लिये चुन लो पहला है तुर्कीका सुल्तान, जो कि ग्रीकोपर जुल्म ढा रहा है, दूसरा है क्रिमियाका खान, जिसने हमारे भाइयोके खूनसे अनेक वार अपने हाथोको रगा है, तीसरा है पोल-राजा, जिसके अमीरोंके अत्याचारके वारेमे कहनेकी अवश्यकता नही और चौथा है महारूसका पूर्वी जार।"

हजारों कंठोंने एक जवाब दिया —"हम पूर्वी जारके अधीन रहना चाहते हैं।"

इसके बाद मास्कोमें समझौता हुआ, और रूसने उक्रइनके स्वायत्त-शासनके अधिकारको स्वीकार किया—उक्रइनी सरकारके लिये लोकनिर्वाचित हेतमन (प्रधान) बनाना स्वीकार किया गया। उक्रइनके लिये स्वेच्छाचारी जारका शासन भी पोलोंसे कम कठोर नहीं था, पर उक्रइनी और बेलोरुसी भाषा, धर्म और संस्कृतिमें रूसियोंके सगे भाई थे, इसलिये उनको यही रास्ता अच्छा लगा। फिर १६५४ ई० में पोलोंसे लड़ाई शुरू हुई, जो बीच-बीचमें रुकती हुई तेरह वर्ष (१६५४–६७ ई०) तक चली। इसी युद्धमें प्रायः सारी बेलोरुसिया भी पोलोंसे मुक्त हो गई। रूसकी विजयिनी सेना लिथुवानियाके मुख्य नगर बिलनोमें दाखिल हुई। उधर सारी उक्रइन-भूमिको मुक्त करते हुये बगदान और मास्कोके वोयवोद पोलन्दकी सीमाको पार हो लुबलिन नगरको लेनेमें सफल हुये। इसी बीच १६५६ ई० में स्वीडनके राजा दशम चार्ल्सने भी पोलन्दके ऊपर आक्रमण करके वारसा (वरसावा), क्राको और दूसरे पोल-नगरोंपर अधिकार कर लिया। इस अचानक प्रहारके कारण पोल मास्कोके साथ शांति-भिक्षा मांगनेके लिए तैयार हो गये। पर, शांति अस्थायी ही हो पाई, क्योंकि पोलन्द सारे उक्रइन और बेलोरुसियापर अपने अधिकारको छोड़नेके लिये तैयार नहीं था। बाल्तिक समुद्रतट रूसके लिये इस समय खतरनाक था—जबतक स्वीडनको समुद्रतटसे भगाया न जाय, तबतक रूस अपनेको सुरक्षित नहीं समझ सकता था। इसके लिये १६५६ ई०में स्वीडनसे लड़ाई शुरू हो गई, लेकिन कुछ सफलता होनेपर भी युद्ध कई वर्षोंतक अनिर्णायक रूपमें चलता रहा। अन्तमें १६६१ ई०में रूसने अपनी असफलता स्वीकार करते यथापूर्व-स्थितिको मानते करसिकी-सन्धि-पत्रपर हस्ताक्षर कर दिया। बगदान १६५७ ई०में मरा। वह यह देखकर प्रसन्न था, कि उक्रइन अब जालिम पोलोंसे मुक्त है।

वोल्गाकी जातियां—१७वीं सदीमें अब भी वोल्गाके दोनों तटोंके घने जंगलों और मैदानोंमें उराल-अल्ताई-वंशकी अ-रूसी जातियां रहती थीं। व्यत्का नदीकी पूर्वी वनभूमिमें उदमुर्त (वोत्याक), रहते थे। वोल्गाके बायें तटपर व्यत्का और वेतुल्गा नदियोंके बीचमें तथा वोल्गाके दक्षिणी तटपर, वोल्गा और सुरा नदियोंके बीचमें मारी (चेरेमिसी) लोग रहते थे। मारियोंके पड़ोसमें चुवास और मोर्द्विनी रहते थे, जिनकी बस्तियां निम्न ओका और ऊपरी सुराकी भूमिमें थीं। निम्न कामाके दोनों तटोंपर तातारों (तारतारों) की बस्तियां थीं। बाशकिर (तुर्क) कामाके दक्षिणी-पूर्वकी भूमि एवं ऊफा नदीके किनारे बसते थे। कुछ बाशकिर उरालके परे तबोल् नदीके ऊपरी भागमें भी रहते थे। इन सभी जातियोंको इवान IVने कजानके खानपर विजय प्राप्त करनेके बाद अपनी प्रजा बना लिया था। जारकी सरकार १५५२ ई०तक वोल्गा-भूमिके अपने पराजित लोगोंसे वही कर वसूल करती थी, जो कजानके खान तथा उसके सामन्त उनसे लिया करते थे। जारके कर उगाहनेवालोंका बर्ताव भी इन लोगोंके साथ अच्छा नहीं था, कितनी ही बार वह लोगोंके पशुओं और अन्नको जब्त कर लेते। रूसी महन्तों और जमींदारोंने भी वहांकी बहुत-सी उर्वर भूमि और जंगलोंपर अधिकार कर लिया था—इन जंगलोंमें भारी संख्यामें कीमती समूरी खालवाले जानवर रहते थे। ग्रीक चर्चने यहांके लोगोंको निकोनके समय जबरदस्ती ईसाई बनानेमें बड़ी सरगरमी दिखलाई। ईसाई पुरोहित मोर्द्विनी गांवोंके किसानोंको जमाकर बपतिस्मा दे उन्हें बाध्य करते, कि वह अपने पवित्र वनों-उपवनों और पितरोंकी कब्रोंपर बने लकड़ीके ढांचोंको जला दें।

बाशकिर लोग मुख्यतः पशुपाल थे। वह समूरी जानवरोंका शिकार, जंगली मधुका संचय और मछुवाही भी किया करते थे। १७वीं सदीमें अब वह कहीं-कहीं खेती करने लगे थे, और जहां-तहां लकड़ीके बने उनके झोपड़े भी खड़े होने लगे थे। ग्रीष्ममें वह अपने ढोरों और घोड़ोंको चराने-के लिये चरगाहोंमें और शरद्के अन्तमें अपने जाड़ेके निवास-स्थानोंमें चले जाते। पहले उनमें अपने छोटे-छोटे कबीलोंका जनसत्ताक संगठन था, लेकिन अब वह पुराने समयसे चला आता संगठन टूटने लगा था। भूमिपर कबीलेका साझी अधिकार हटकर अब उसके बड़े और अच्छे भागपर तरखनों (राजकुमारों) और बातुरों (बहादुरों) का अधिकार हो गया था। इस प्रकार धनी-गरीब-

का वर्ग-भेद उनमे स्थापित हो चुका था। बाशकिर रूसी सरकारको कई तरहके मूल्यवान् समूरी खालोको करके रूपमे देते थे। १७वी सदीमे अब रूसी महत और जमीदार भी इनकी भूमिमे पहुच-कर घने जगलो, मछलीभरी नदियो, नमककी खानो, हरे-भरे चरागाहो, तथा खेतीके लिये उपयुक्त बजर भूमिको अपने हाथमे करने लगे। इसके कारण पशुपाल बाशकिरोको बडी बाधा होने लगी, जिसके लिये असतोप और विद्रोह करनेका परिणाम यही हुआ, कि वहापर ऊफा जैसे कितने ही दुर्गबद्ध नगर रूसियोने स्थापित कर दिये।

वोल्गा-प्रदेशकी अ-रूसी जातियोमे कलमक (कलमख) भी थे। कलमक मगोलोकी एक शाखा थी, इसे हम आगे बतलायेगे। वह १६३० ई०के आसपास निम्न-वोल्गाकी भूमिमे आये। पहले यह घुमन्तू जाइसन सरोवरके उत्तरकी पहाडियोमे विचरते थे, जिसे जुगारिया भी कहा जाता है। कलमकोंके कई भिन्न-भिन्न कबीले थे, जिनका अलग-अलग राजा होता था। वैसे सभी कबीले एक-दूसरेसे स्वतन्त्र थे, लेकिन जब सारी जातिके ऊपर कोई खतरा आता, तो सबसे शक्तिशाली जातिके राजाके अधीन वह अपना लडाकूसघ स्थापित कर लेते। १७वी सदीके आरम्भमे कलमकोके एक बहुसख्यक कबीलेका डेरा इर्तिश नदीके ऊपरी भागमे था। इर्तिशके किनारे येरमककी विजयके बाद रूसियोकी बहुतसी बस्तिया बस गई थी। इर्तिशके इन कलमकोने रूसी कसबोपर आक्रमण करना शुरू कर दिया, जिसका बदला भी लिया जाने लगा। फिर दक्षिण-पश्चिमकी ओर बढते १६३० ई०के आसपास उन्होने यायिक (उराल) और वोल्गाके बीचकी भूमिको दखल कर लिया। १६५६ ई०मे कलमकोने रूसकी अधीनता स्वीकार की। १७वी सदीके अन्त तथा १८वी सदीके आरभमे वोल्गा-कलमकोका शासक आयुका बडा शक्तिशाली खान था। यद्यपि उसने जारकी अधीनतासे इन्कार नही किया, लेकिन वह अपनेको स्वतन्त्र समझता था, और वोल्गाके किनारेके रूसी नगरोपर आक्रमण करनेसे भी बाज नही आता था। जो कलमक जुगारियामे रह गये थे, उन्होने १७वी सदीके अन्ततक एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया, जो धीरे-धीरे साम्राज्य-का रूप लेने लगा।

रूसी शासकोके अत्याचारके कारण वोल्गाके लोग जब-तब विद्रोह कर बैठते थे, लेकिन १६६२ ई०मे इस विद्रोहने खतरनाक रूप लिया। उस साल एक ही समय बाशकिर-भूमि और पश्चिमी साइबेरियाके बहुत भागोमे बगावत हो गई। येरमकद्वारा पराजित सिबिरके कूचुम खानके एक वशजने तातारो, बाशकिरो और पश्चिमी साइबेरियाके वोगुलो (मसियो)के विद्रोहका नेतृत्व किया। विद्रोहियोने रूसियोके किलेबद नगरोपर आक्रमण किया, उनके मठो और बस्तियोको नष्ट कर दिया। यह विद्रोह कई सालतक चलता रहा। विद्रोहके दमन कर देनेके बाद जारशाही सरकार ने बाशकिरोकी और कितनी ही भूमि छीन ली, बाशकिर जवानोको जबरदस्ती सेनामे भर्ती करके क्रिमियामे लडनेके लिये भेजा। इसके कारण १६७५ ई०के आसपास फिर विद्रोह उठ खडा हुआ। छिटपुट होते विद्रोहोको १६८२ ई०मे सैयद सादिर जैसा नेता मिल गया। कलमकोका प्रधान आयु-का खान भी बाशकिरोकी सहायता करने लगा। लेकिन, अन्तमे बौद्ध कलमको और मुसलमान बाशकिरोकी प्रतिद्वद्विता इतनी बढी, कि कलमक जारकी ओर हो गये, और विद्रोहको कुचल दिया गया।

राजिन-विद्रोह—जार अलेक्सी (अलेक्सान्द्र)के कालमे रूसकी राजशक्ति और सीमा बहुत बढी, लेकिन देशमे सघर्षो और विद्रोहोंके भीतरसे ही। इन विद्रोहोमे स्तेपन राजिनके नेतृत्व-मे हुआ किसानोका विद्रोह बडा भयकर था। भूखे गरीब कसाकोमे अशातिका होना स्वाभाविक था। इसी अशातिका नेता येरमक था, जिसने साइबेरियामे रूसकी सीमाको बढाया। कसाक स्व-भावत स्वच्छन्दताप्रेमी तथा लडाकू होते है। रूसी वोयवोद उनको नाराज होनेका बहुत मौका दे देते थे। १६६६ ई०मे कसाक आतमन (सरदार) वासिल्ीने दोनके गरीब कसाकोको मास्को-के विरुद्ध भडकाया और एक बडी कसाक सेना ले तुलातक पहुच गया। उसके साथ दक्षिणी जमींदारोंके कितने ही अर्ध-दास किसान भी शामिल हो गये। इसी समय दोनके गरीब किसान विद्रोहियोको

आतमन स्तेपन तिमोफेयेफ-पुत्र राज़िन-जैसा नेता मिल गया। १६६७ ई०के वसतमे राज़िन अपने सैनिकोको लिये दोनसे वोल्गाकी ओर वढा। उसके कसाकोने जार, महासघराज और धनी व्यापारियोकी अनाज तथा दूसरी पण्य वस्तुओंसे लदी बहुत-सी नावोको पकड लिया, जिनमे देश-निकाला पाये पैरोमे वेडी पडे कितने ही वदी भी थे। उन्हे मुक्त करके राज़िनने वदियो, स्त्रेलेत्सी (राज-सैनिको) और मल्लाहोसे कहा—"अब तुम सब स्वतन्त्र हो, जहा इच्छा हो वहा जाओ। मै तुम्हारे साथ जबरदस्ती नही करूगा। जो कोई मेरे साथ रहना चाहता है, वह स्वतन्त्र कसाक माना जायगा। मै केवल वायरो और धनी जमीदारोसे लडनेके लिये आया हू, गरीबो और सीधी-सादी जनताको भाईके तौरपर मै अपना भागीदार बनानेके लिये तैयार हू।"

इसके बाद राज़िनके कसाक नावोपर चढकर अस्त्राखानके किलेसे बचते कास्पियनमें गये। फिर अपने पच्चीस नावोमे जा उन्होने यायिक (उराल) नदीके तटपर बसे यायित्स्क नामक दुर्गबद्ध नगरपर अधिकार कर लिया। राज़िनने जाडोको यायिकके तटपर विताया। अगले साल वह समुद्रसे होकर ईरानके तटपर पहुचा। उसके पास कई हजार कसाक थे। उसने कास्पियन-तटवर्ती काकेशसकी भूमिको लूटा, और ईरानके शाहके पास कई आदमी भेजकर कहलवाया, कि मै और मेरे कसाक तुम्हारे देशमे सदा रहनेके लिये तैयार है, क्योकि हम मास्कोके वायरोंके अत्याचारको नही सह सकते। शाहने राज़िनके दूतोको पकडकर मरवा दिया। इसपर कसाकोने ईरानके नगरोमें लूट-पाट करनी शुरू की। शाहने पचास नावोमे सैनिक भरकर भेजे, लेकिन राज़िनने उनमेंसे अधिकाशको डुबा दिया। सफलता होनेपर भी इन लडाइयोंमें कसाकोको बहुत क्षति उठानी पडी, जिससे उनकी सख्या कम होती जा रही थी। बचे हुओमे बीमारी फैलने लगी, इसलिये राजिन वायरोंके राज्यसे वाहर ईरानमें रहनेका ख्याल छोडकर १६६९ ई०की शरद्में फिर अस्त्राखान पहुचा। उसकी अनुपस्थितिके समय अस्त्राखानकी छावनी और मोर्चावदीको बहुत मजबूत कर लिया गया था। राजिनने दोनकी ओर जानेके लिये इजाजत मागी। अस्त्राखानके वोयवोद जानते थे, कि नगरके अधिकाश लोगोकी सहानुभूति राजिनके साथ है, इसलिये उन्होने इस शर्तपर उन्हे जानेकी इजाजत दी, कि वह अपने लूटके माल और हथियार समर्पित कर दें। अस्त्राखानके गरीबोंने बडे उत्साहके साथ राजिनका स्वागत किया। वह उसे वत्का (बापू) कहते थे। राजिनके कसाक पहले फटे-चीथडोमे गये थे, लेकिन अब वह गोटेदार रेशमी कपडे पहने हुये थे। राजिनने खूब दिल खोलकर सोनेकी मुहरो और दूसरी चीजोको लोगोमें बाटा। हथियार रखनेमे इनकार करके अपनी हथियारबद सेनाके साथ राज़िन दोनकी ओर चल पडा। अस्त्राखानके निवासियोमेंसे भी कितने ही उसके साथ हो लिये।

चारो ओरसे दोन-कसाक राज़िनके झडेके नीचे आने लगे। इसके बाद कई बार जारशाही सेनासे उसने सफल मुकाबिला किया। जारित्सिन (आधुनिक स्तालिनग्राद)के निवासियोने उसे शहरपर अधिकार करनेमे मदद दी। १६७० ई०के वसतमें राजिन दूसरी बार वोल्गाके किनारे पहुचा। पहले वह साधारण लुटेरेके तौरपर आया था, यद्यपि उसकी उदारताकी ख्याति उसी समय चारो ओर फैल गई थी, लेकिन अब वह कई हजार अनुशासन-सम्पन्न सेनाका कमाडर था। वह वोयवोदो, अमीरो और धनी व्यापारियोका दुश्मन था, लेकिन गरीबोका पक्षपाती और दासोका हर जगह मुक्तिदाता। राजिनकी दानशीलता, उदारता और गरीबोंके प्रति प्रेम ऐसी आकर्षणकी चीज थी, जिससे वह चारो तरफ मशहूर हो गया। जारित्सिन लेनेके बाद उसने अब रूसके भीतर बढनेका निश्चय किया, लेकिन इससे पहले उसने अस्त्राखानपर अधिकार करके निम्न-वोल्गामें अपनी सत्ता जमा लेना आवश्यक समझा। अस्त्राखानके वोयवोदने स्त्रेल्त्सीकी एक सेना राजिनके विरुद्ध भेजी, लेकिन सैनिक अपने अफसरोको मारकर विद्रोहियोंमे जा मिले। जून १६७० ई०में राजिन अस्त्राखानके पास पहुचा। पत्थरकी दीवारोसे घेरकर नगरको बहुत मजबूत कर लिया गया था, दीवारो और मीनारोपर तोपे लगी थी, लेकिन बहुतसे स्त्रेल्त्सी तथा नगरके लोग राजिनके स्वागतके लिये अधीर थे। गोधूलीके समय घटे बजने लगे, यह इस बातका सकेत था कि कसाको-

ने आक्रमण कर दिया है। कसाक अंधेरेमें चुपचाप किलेके पास आ सीढिया लगाकर दीवार फाद नगरके भीतर कूद पडे। नागरिक भी उनकी मददके लिये दीवारके पास प्रतीक्षा कर रहे थे। नगर-के समर्पण करनेकी सूचना तोपोकी पाच आवाजसे दी गई। राजिनके कसाकोके साथ अस्त्राखानके गरीब भी शामिल हो गये और उन्होने वहाके अमीरो तथा प्रतिरोधकोको मार डाला। सवेरा होते-होते अस्त्राखानपर राजिनका पूरा अधिकार था।

राजिनकी विजय-यात्रा अब शुरू हुई। जारके स्त्रेल्त्सी और साधारण लोग राजिनकी सहायता करनेके लिये हर जगह तैयार थे। उसने सरातोफ (पुराना सरातोफ वोल्गाके वाये तटपर था), समारा (आधुनिक कुइविशेफ)को आसानीसे अपने हाथमे कर लिया, लेकिन सिम्बिर्स्क (आधुनिक उलियानोव्स्क)को लेनेमे वडे जवरदस्त प्रतिरोधका सामना करना पडा। उसके आदमी गाव-गावमे घूमकर राजिनके नामसे कह रहे थे—"सभी उत्पीडितो और गरीबोको विद्रोहके लिये खडा हो जाना चाहिये।" राजिन यह भी कहता था—"मै महाप्रभु (जार)के लिये देशद्रोही वायरो और अमीरोसे लड रहा हू।" वह नही जानता था, कि जार उसी वर्गका सबसे शक्तिशाली आदमी है, जिसके विरुद्ध उसने जहाद छेडी है। प्राय एक महीनेतक राजिनने सिम्बिर्स्क नगरका मुहासिरा किया। १६७० ई०के अक्तूबरके आरम्भ-मे नई सेना आ गई, और एक घनघोर लडाई हुई। तलवारोकी खपाखपमे वीर राजिन निश्शक लडता दिखाई पडता। उसके सिरपर एक गोली लग गई थी, एक पैर भी गोलीसे घायल हो गया था, तो भी वह लड रहा था। सारी वीरता दिखलानेपर भी सुशिक्षित सुशस्त्रित बहुसख्यक जार-सेनाके सामने राजिनको हार खानी पडी। वह थोडेसे कसाकोके साथ दोनकी ओर निकल भागा। राजिनके हारनेके वाद भी वोल्गाकी भिन्न-भिन्न जातियो—कलमक, तातार, मोर्द्विनी, मारी, चुवाश और वाशकिर—तथा दाहिने तटके प्रदेशोके रूसी किसानोने विद्रोहको वहुत समयतक जारी रक्खा। जारकी सेना इन विद्रोहियोसे खूनी वदला लेने लगी। वदी किसानोको वह पकडकर अर्जमस नगरमे ले गये, जहा उन्हे वडी सासत देकर मारा गया। नगरके चारो ओर फासीकी टिकटिया खडी कर दी गई थी। एक विदेशी प्रत्यक्षदर्शीने लिखा है, कि तीन महीनेके भीतर अर्जमसमें ग्यारह हजार आदमियोको फासीपर चढाया गया। किसानोके नेताओने अन्तिम समयतक वडी निर्भयताका परिचय दिया। जल्लादने एकसे पूछा—

"तुम क्या करना चाहते थे?"

"हम मास्कोको लेना और तुम्हारे सभी वायरो, अमीरो और लिखनीचदोको मार डालना चाहते थे।"

एक किसान स्त्री-नेता अल्योनाको जलाकर मारनेका दड दिया गया। वह दडाज्ञा सुनकर जरा भी न घवडाई और मरते समय वोली—

"जैसे मै लडी, यदि वैसे ही दूसरे भी लडे होते, तो राजुल यूरी (सेनापत्ति)को हमारे सामनेसे जान लेकर भागना पडता।"

१६७१ ई०के आरम्भमे वोल्गाके दक्षिण-तटके विद्रोहियोको दवानेमें सफलता मिली। अव जारशाही राजिनके पीछे पडी थी। अप्रैल १६७१ ई०मे उसे पकडकर मास्को ले गये, जहा राजिनको भीषण सासत दी जाने लगी, लेकिन तब भी उसने मुहसे एक वार भी आह नही निकाली। जून १६७१ ई०में उसको मारनेसे पूर्व जल्लादोने पहले हाथो और पैरोको काट दिया, फिर सिरको धडसे अलग कर दिया। जारकी सरकारने राजिनको मारकर सतोषकी सास ली, लेकिन साधारण जनताके लिये राजिन मरा नही। वह समझती थी, कि वायरोने किसी दूसरेको मारा है, राजिन तो अब भी वचकर कही छिपा हुआ है। वह फिर एक बार हम दुखियोकी मददके लिये आयेगा।

जनताका राजिनके प्रति कितना सद्भाव था, वह लोकगीतोकी निम्न पक्तियोंसे मालूम होगा—

उठ हे सूर्य, हे मैले-कुचैले,
तू जो कि पहाड़ोंके ऊपर इस प्रकार छाया है,
जो कि हरे उगे हुये पौधोंपर छाया है,
हमारी हड्डियोंको गरमाओ। हम ईमानदार जन हैं।
यद्यपि हम गरीब हैं, किन्तु हम किसीका जूआ नही उठायेंगे,
चोर हम नही है, और न भयकर डाकू,
स्तेपान राज़िन हमारा नेता है।

रूसी भाषाका कालिदास पुशकिन स्तेपन राजिनको रूसी इतिहासका अत्यन्त काव्यमय पुरुष कहता है।

साइबेरियामें प्रसार—हम पहले कह चुके हैं, कि कैसे येरमकने सिबिरके खानको हराकर रूसी सीमाको ओब और इर्तिश नदीके तटतक पहुचा दिया। साइबेरियाके जगलोंसे मिलनेवाली समूरी खाले सोनेके भाव बिकती थीं, और साथ ही वहाके लोगोको पकडकर दास बनाकर बेचना भी आमदनीका एक अच्छा खासा स्रोत था, इसलिये रूसी व्यापारियो और साहसियोका उधर खिचना स्वाभाविक था। समूरी खालोंको पहले वह वहाके स्थानीय शिकारियोंके हाथसे खरीदते थे। फिर रूसी शिकारियोंने स्वय जगलोमे दूर-दूर तक घुसकर शिकार करना शुरू किया। यह शिकारी कभी-कभी ऐसे स्थानोंमे पहुचने लगे, जहापर जारके सैनिक कभी नही पहुच पाये थे। इसी तरह कुछ पीढियोंमें रूसी येनिसेइसे अखोत्स्क समुद्रतक अपना अधिकार स्थापित करनेमें सफल हुये। जहा नदियोका सहारा था, वहा शिकारियो और व्यापारियोकी टोली नावोंपर चढकर जाती, फिर नावोको आदमियोंके कधोपर उठाकर एक नदीसे दूसरी नदीमे परिवर्तित कर लेते। जार गदुनोफके कालमे रूसी व्यापारी और शिकारी मगोलियामे पहुच चुके थे। गदुनोफके समय वहा एक बडा सैनिक अभियान भेजा गया था। स्थानीय शिकारी (नेन्त्सी) इसे बर्दाश्त कैसे करते, लेकिन अपने पुराने हथियारो और बिखरी हुई अल्प-सख्याके बलपर बेचारे सफल प्रतिरोध कैसे करते? रूसी दूर-दूर जगलोमें लकडीके किले बनाकर जम जाते। इस प्रकार उन्होने निम्न-येनिसेइ-उपत्यकाके मार्गपर अधिकार कर लिया। उसके कुछ समय बाद उन्होने मध्य-ओब और मध्य-येनिसेइमे भी पहुच १६१९ ई०मे येनीसेइस्क नगरकी स्थापना की। यहासे अब वह येवेकी, बुर्यत तथा उस प्रदेशके दूसरे लोगोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करने लगे। दस वर्ष बाद येनिसेइ नदीके तटपर क्रास्नोयार्स्क नगर स्थापित हुआ, लेकिन यहा किरगिजोने उनसे जबरदस्त मुकाबिला किया। पर, मुकाबिलेसे डरकर रूसी अपने आगेके प्रसारको रोक नही सकते थे। यनिसेइस्क नगरसे अगारा नदीके किनारे चलते हुये रूसी बैकाल महासरोवरपर पहुच गये। १७वी शताब्दीके मध्यमे उन्होने अगाराके बैकालसे निकलनेके स्थानके पास ही इर्कुत्स्कका शरद्कालीन निवास-स्थान बनाया। बुर्यत मगोल अपनी वीरताके लिये प्रसिद्ध थे। उन्होंने अपनी भूमिपर हस्तक्षेप करते देखकर रूसियोंके साथ जबरदस्त सघर्ष किया, जिसमें असफल होकर कितने ही मगोलिया चले गये, लेकिन वहाके मगोल-सामन्तोंके अत्याचारके कारण कितनो हीने फिर लौटकर जारके जूयेको अपने कधेपर रक्खा। इसी समय येनिसेइसे लेना नदीकी ओर जानेवाला महत्वपूर्ण रास्ता स्थापित किया गया। रूसियोने अफवाह सुनी थी, कि लेनाके किनारे समूरी खालोकी खानें भरी पडी हैं, जिसे सुनकर येनिसेइस्क और मगजेया दोनो जगहोंसे रूसी साहसियोकी भीड टूट पडी। उन्होने लेना-उपत्यकाके निवासी याकूतोके ऊपर प्रहार करके उनकी समूरी खालो, पशुओं (बारहसिगो)पर ही हाथ नहीं साफ किया, बल्कि स्त्री-बच्चोको भी बेचनेके लिये बदी बनाया। व्यापारियो और शिकारियोकी पहुच स्थापित होते ही येनिसेइस्कके सैनिक अधिकारियोंने लेनाके तटपर याकुत्स्क नामका गढ स्थापित किया। कुछ ही समय बाद जारने याकुत्स्कके लिये वोयवोद (राज्यपाल) भेजना शुरू किया। याकुत्स्कमे जम जानेके बाद सैनिक, व्यापारी और शिकारी और भी आगेके अज्ञात इलाकोकी खोजमें लग पडे, और उत्तर-पूर्वमे ध्रुवकक्षीय समुद्रके तट तक याकूगिरो (ओदुरियो)के प्रदेशमें पहुच करके उनसे कर लेने लगे।

रूसी शिकारी पहाडोमे जब लेनाके उद्गमकी ओर पहुचे, तो उन्हे खबर लगी, कि शिल्का और जेयामे अन्न और चादी भरी पडी है। तुगुस लोगोने भी इस खबरकी पुष्टि की। इसपर साइबेरियाके वोयवोद गोलोविनने १६४३ ई०मे अपने एक क्लर्क वाच्तेयारोफकी अधीनतामे सात आदमियोको पता लगानेके लिये उक्त दोनो नदियोकी उपत्यकाओकी ओर भेजा। वाच्तेयारोफ इस कामके योग्य नही था, इसलिये वह खाली हाथ लौट आया। फिर उसी साल गोलोविनने पोयार्कोफके नेतृत्वमे एक बडी टोली यह कहकर भेजी, कि वहाके लोगोसे जाकर कर उगाहो, और जो देनेसे इन्कार करे,

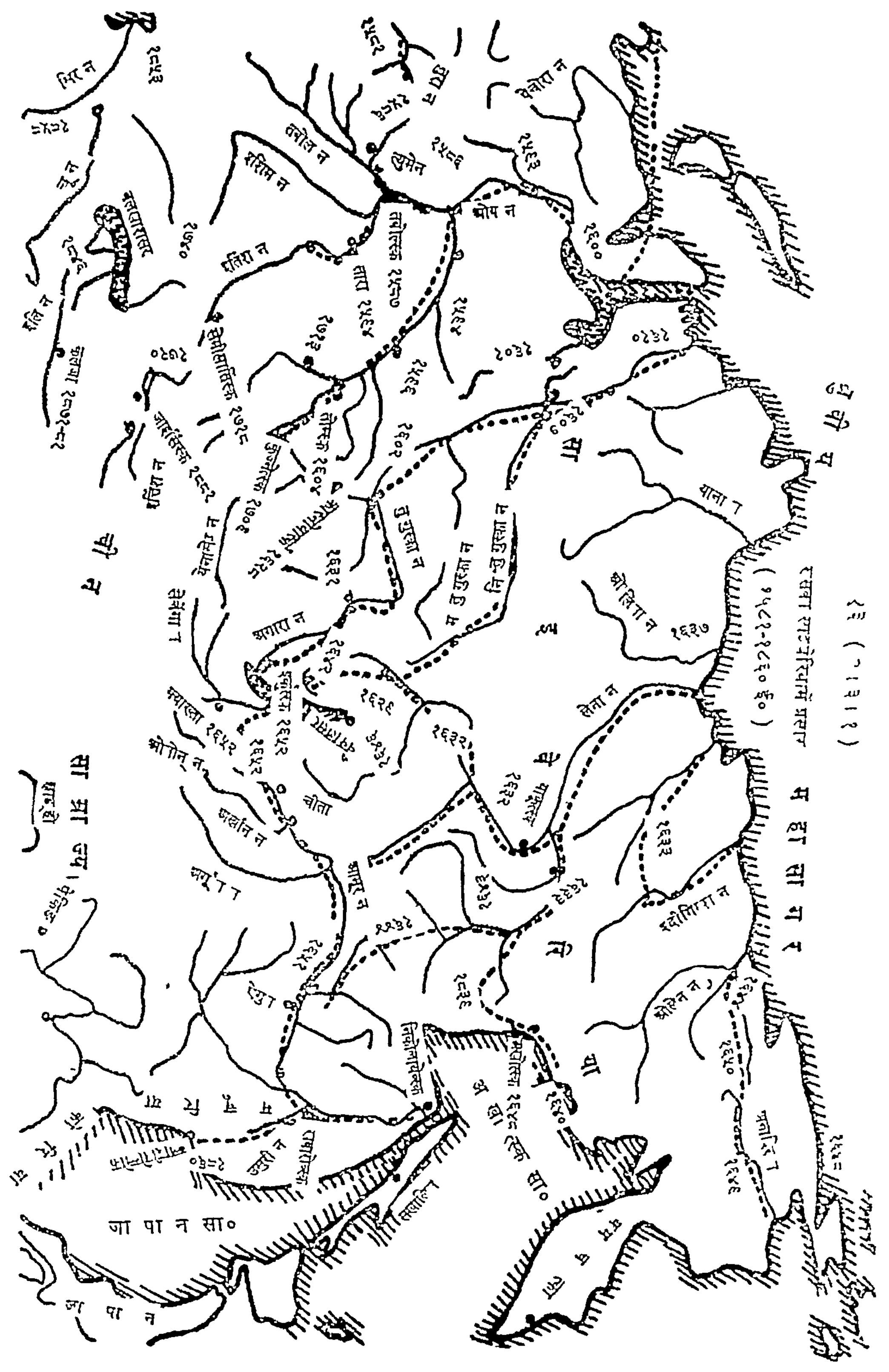

उनमे लडाई करो। जेयाके तटपर पहुचनेपर पोयार्कोफको अन्नके लिये निराश होना पडा। वहाके लोग अधिकतर चीनसे आये अनाजपर गुजारा करते थे। पोयार्कोफ ने अपने सत्तर आदमियोका पासमे रहनेवाले दौरी लोगोकी वस्तियोमे भेजा, लेकिन उन्होने रूसियोको अपने गावोके भीतर आने नही दिया। खाली हाथ लौटनेपर अपने लोगोने उन्हे रसद देनेमे इन्कार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ, कि उन्हे अव स्थानीय लोगोको लूट-मारकर जीवन-यापन करनेके लिये मजबूर होना पडा। वसतके आनेपर यह टुकडी नावपर दमेयानदीके नीचेकी ओर वढी। स्थानीय लोगोको खूनखार रूसियोका पता पहले हीसे लग गया था, इसलिये वह उनको आते सुनकर भाग निकले। तो भी तीन गिल्यिक पकडे गये, जिनके द्वारा रूसियोने कर उगाहनेमें सफलता पाई। आगे वढते-वढते रूसियोने आमूर नदीके मुहानेपर पहुच जाडा वितानेके लिये वहा डेरा डाल दिया। मडली जून १६४६ ई०मे याकुत्स्क लौटी। अभियान सफल रहा, क्योकि उन्होने एक नई भूमिका पता लगाया, लेकिन साथही उनकी यात्राद्वारा लोगोमे वडा भयसचार हो गया। अज्ञात कालसे पूर्वी साइवेरियाकी यह जातिया चीनको कर दिया करती थी, इसलिये अव उन्होने चीन सरकारतक अपनी गुहार पहुचाई।

१६४८ ई०मे रूसी व्यापारियोंके एक समूहने कोलुमा नदीके मुहानेके पूर्व ध्रुवीय समुद्र-तटकी भूमिके वारेमे पता लगानेका निश्चय किया। उन्हे मालूम हुआ, कि समुद्री जानवर वालरस वहीं जाकर वच्चे देता है। वालरसका दात वहुत महगा विकता था, इसलिये वह उस अज्ञात भूमिकी ओर खिचे। इसके लिये याकुत्स्कके व्यापारियोने कसाक सिमाओन देझन्येफके नेतृत्वमे सात नावो के साथ एक अभियान भेजा। यह लोग कोलुमाके मुहानेसे समुद्रके किनारे-किनारे आगे वढे। नावें मजवूत नही थी, इसलिये अधिकतर टूट-फूट गईं, तो भी देझन्येफकी कुछ नावोको एक तूफान वहाकर अमेरिका और एसियाको मिलानेवाली समुद्रकी उस पतली धारमे ले गया, जिसका नाम पीछे वेरिंगकी खाडी पडा। उस समय युरोपमे कोई नही जानता था, कि एसिया और अमेरिकाकी सीमाओको केवल एक पतलीसी सामुद्रिक प्रणाली अलग करती है। आजकल एसियाके उत्तर-पूर्वीय अन्तिम अन्तरीपको देझन्येफ अन्तरीप कहा जाता है। इस प्रकार हम देखते है, शाहजहाके शासनके अन्तिम वर्षोमें ही रूसी साइवेरियाके पूर्वी छोरतक पहुच गये। जाच-पडताल करनेवालोने लेनाकी शाखा अलदल नदीसे होते अखोत्स्क समुद्रके तटपर पहुचकर वहा अखोत्स्क (शिकारवाला) गढ स्थापित किया, और वेचारे एवेंकी लोगोने वारूदी हथियारोंके सामने प्रतिरोधको व्यर्थ समझकर अधीनता स्वीकार की।

पश्चिमी संस्कृतिका प्रभाव—१७वी सदीके रूसमे अभी शिक्षाका प्रसार केवल अमीरो और व्यापारियोमे था। स्त्रिया सिर नही ढकती थी, किन्तु जवतक विवाहित नही हो जाती, तवतक पुरुषोसे अलग रहती। वह अपरिचितकी ओर देखनेकी हिम्मत नही कर सकती थी। धनियोकी स्त्रिया अपना समय पूजा-पाठ या गोटा वनानेमे लगाती। अमीरोकी पोशाक वहुत भारी होती थी। वाहरी चोगा एडीतक पहुचता था, और लम्वी आस्तीन भी छोड देनेपर धरतीको छूनेसी लगती थी। उत्सवके समय वहुत मूल्यवान् ऊनी या रेशमी कपडे पहने जाते थे। हीरा-मोती-जटित सोने या चादीके वडे-वडे वटन चोगोमे लगते थे। सामन्त लोग समूरकी वडी लम्वी टोपी पहिनते थे, जो नीचेकी अपेक्षा ऊपर अधिक चौडी होती जाती और इतनी भारी होती थी, कि आदमी सिरको आसानीसे घुमा नही सकता था। पुरुष वालोको काटकर रखते थे, लेकिन दाढीको वडी सावधानीसे वढाते थे। विना दाढीके आदमीको समझा जाता था, कि वह हर तरहके पाप कर सकता है। दाढी मुडाना स्वय भी पाप-कर्म था। लेकिन, १७वीं सदीमे ही पश्चिमी युरोपका प्रभाव धीरे-धीरे रूसके उच्च वर्गपर पडने लगा। व्यापारने पश्चिमी यूरोपके व्यापारियोंसे रूसका सवध वहुत घनिष्ठताके साथ स्थापित कर दिया था। अव कितने ही युरोपी रूसमे लोहे, काच आदिके कारखाने स्थापित करने लगे थे। मास्को और दूसरे नगरोमें वहुतसे ग्रीक, अग्रेज, जर्मन, डच और पोल व्यापारी तथा शिल्पी रहने लगे थे। उनमेंसे कुछ चद दिनोंके लिए आते और कितने ही रूसी नगरोंके वासी हो गये थे। मास्कोकी सरकार विदेशियोंको—विशेषकर शिक्षितो, सैनिक विशेषज्ञो, डाक्टरो, चित्रकारो तथा

दूसरे कलाकारो-शिल्पियोको—अपने यहा आकृष्ट करनेकी कोशिश करती थी। सभी विदेशी कामके नही थे। उनमेंसे कितने ही मौज उडाने, या गुप्तचरी करनेके लिये आते थे, पर इसमे भी शक नही, कि कितने ही अपनी विद्या और अनुभवसे रूसियोको लाभ पहुचाते थे। १६वी सदीके अन्तमे ही मास्कोमें विदेशियोंके रहनेके मुहल्ले बन गये थे, जिन्हे पीछे "जर्मन (मह) वस्ती" कहा जाता था। १७वी सदीके मध्यमे उन्हे यौजा नदीके किनारे प्रेयोब्रजेन्स्कोये गावके पासमे परिवर्तित कर दिया गया। कितने ही रूसी इनके सम्पर्कमे आकर युरोपीय सस्कृतिसे प्रभावित होते रहे—यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि आजकी तरह उस समय भी रूसियोके लिये "यूरोपा" एक दूसरा ही महाद्वीप था। पश्चिमी युरोप सस्कृतिके साथ-साथ विलासितामे भी वहुत आगे वढा हुआ था। मास्कोके अमीर पुरुष-स्त्री भी इगलैण्ड, जर्मनी, फ्रास और दूसरे युरोपीय तथा पूर्वी देशोमे राजदूत बनकर जाते थे। रूसी व्यापारी भी कोशिश कर रहे थे, कि अपनी पण्य-वस्तुओको सीधे युरोपके नगरोमें जाकर वेंचे, लेकिन विदेशी व्यापारी इसमे हर तरहकी वाधा उपस्थित करते थे।

उच्च वर्ग ही नही रूसी शिक्षित तथा वुद्धिजीवी वर्गपर भी पश्चिमी युरोपका प्रभाव पडने लगा था। जार अलेक्सी मिखाइल-पुत्रके समयका एक प्रभावशाली वायर ओरदिन-नाश्चोकिन् युरोपके नमूनेपर शासन-प्रवन्ध सगठित करनेका पक्षपाती था। उक्रइनके रूसमे मिल जानेसे, पोलन्द और पूर्वी युरोपके साथ सास्कृतिक सम्पर्क स्थापित होनेमें वडा सुभीता हुआ। शताब्दियोके सिद्धहस्त कियेफके मूर्त्तिकार, चित्रकार तथा दूसरे कलाकार मास्कोमे आकर काम करने लगे। वायरोंके घरोमे उक्रइनी विद्वान् शिक्षकका काम करते थे। एक सुशिक्षित वेलोरूसी साधु सिमेओन पोलोत्स्की जार अलेक्सीके परिवारमें शिक्षक था। पोलोत्स्कीने नाटक और कवितायें लिखी। उसके पद्य वहुत प्रसिद्ध थे। वह साहित्य और काव्यशास्त्रकी भी शिक्षा देता था। वहुतसे विदेशी विद्वानोने इतिहास, युद्धविज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष, गणित, भूगोल, प्राकृतिक विज्ञान तथा दूसरे विज्ञानोकी पुस्तकें १७वी सदीमें रूसी भाषामें अनुवादित की। यह याद रखना चाहिये, कि यही हमारे यहा औरगजेबके शासन-का समय था, जिसमे जहादी लडाइया छोड विद्या-विज्ञानकी चीजोकी तरफ कोई ध्यान नही दिया गया था। रूसी शिक्षित अव सिर्फ धार्मिक साहित्य हीसे सतुष्ट नही थे, वह पश्चिमकी धर्मनिरपेक्ष कहानियो और उपन्यासोको अपनी भाषामे पढने लगे थे। अमीरो तथा व्यापारियोंके दैनिक जीवन और वेश-भूषापर भी पश्चिमका प्रभाव पडने लगा था। १७वी शताब्दीके उत्तरार्धमे शरावी साधुओ, लोभी न्यायाधीशो, और घूसखोर अमलो, तथा मूर्ख अमीरोके ऊपर व्यग्य करते कितने ही प्रहसन लिखे गये थे। सक्षेपमे कहा जा सकता है, कि अव साहित्यमे वास्तविक जीवन—वस्तुवाद—के लानेकी कोशिश की जाने लगी थी। साहित्य हीमे नही, रूसी चित्रमे भी वस्तुवाद घुसने लगा था। प्रसिद्ध कलाकार सिमओन उशाकोफकी कला वास्तविकताका दर्पण-सी थी, जिसमें तत्का-लीन जीवनकी झाकी मिलती थी। उस वक्त भी आजकी तरह वहुतसे कलाकार ऊटपटाग-बेढगी टेढी-मेढी रेखाओ और रगोंके पीछे इतने पागल थे, जिन्हे कलाका वास्तविकताके पास जाना फोटोग्राफी मालूम होता है। १७वी शताब्दीमे पहले-पहल मास्कोके दरवारियोको नाट्यकलाका परिचय मिला, जव महावस्तीके एक पुरोहित गटफ्रिड ग्रेग्रोरीने जार अलेक्सीके शासनकालमे रूसी विद्यार्थियो और जर्मन नटोसे एक नाटकमडली बनाई, और ऐतिहासिक कहानियोको लेकर रगमचपर नाटक खेले। पीछे एक खास मकान वनाकर रूसी भाषामे लिखे नाटकोका भी अभिनय होने लगा। अभिनयके समय एक खास आसनपर वैठकर जार भी उसे देखता था, लेकिन जारानी अलग एक परदेमे वैठकर ही देख पाती थी। नवीनताकी तरफ अभिरुचि इतनी वढ गई थी, कि महासघराज निकोनने जल-भुनकर सभी देशी वाद्ययत्रोकी होली जला डालनेकी आज्ञा दी।

चीनसे सबध—जार अलेक्सीने अपना पत्र देकर पेर्फिलियेफको १६५९ ई०मे चीन-सम्राट् शी-चू (१६४४-१६६१ ई०)के पास भेजा। सम्राट्ने उससे मुलाकात की। इसे कहनेकी आवश्यकता नही, कि रूसी दूतको दरवारमें कोतौ (साष्टाग प्रणिपात) करना पडा। रूसी दूतको दस पूड (४ मन) चाय देकर विदा किया गया। चाय शायद यह पहली वार स्थलमार्गसे मास्को पहुची। इसके वाद १६६९ ई०में अबलिनके अधीन और १६७५ ई०में परफेन्निकोफके नेतृत्वमे रूसी कारवा (वाणिज्य-

सार्थ) उरगा-कलगनके रास्ते चीन भेजे गये। असली राजकीय दूतमडल १६७५ ई०मे गया, जब कि निकोलाइ स्पाथेरीको जारने अपना दूत बनाकर चीन दरबारमे भेजा। सम्राट्ने उसका अच्छी तरह स्वागत किया, सगीतके साथ दूध-मक्खनसे बनाई चायकी दावत की। चीनी दरबार-के बर्तमे व्यवहार अबुद्धिमत्तापूर्ण ही नही अपमानपूर्ण भी होते थे, किसी गलतीसे नाराज होकर सम्राट्ने जारकी भेटको करके रूपमे स्वीकार कर स्पाथेरीको हटा दिया।

आमूर-विजयसे व्यापारियोको भारी लाभ हुआ था। उसे देखकर १६४९ ई०मे एक व्यापारी येरोफेइ खबारोफने अपना समय और धन एक अभियानके सगठनमे लगाया। वोयवोद फ्रास-बेकोफने भी पैसे और सहानुभूतिसे उसका उत्साह बढाया। डेढ सौ स्वयसेवक तैयार किये गये, जिनके लिये हथियार, भोजन-सामग्री खबारोफने प्रस्तुत की। आमूर-निवासियोपर विजय प्राप्त करनेके लिये प्रस्थान कर पहले वह ओलेकमाके रास्ते चले, जो नया रास्ता था। आगे पहाड पार करनेमें लोगोने कोई कठिनाई नही उपस्थित की, लेकिन उन्हे रूसियोकी क्रूरताका पता लग गया था, इसलिये जहा-कही भी वह पहुचते, लोग अपने गावोको छोडकर भाग जाते। पहली दो बस्तियोमे उन्हे एक भी आदमी का पूत नही मिला, तीसरी बस्तीमे पहुचनेपर तीन सवार मिले। खबारोफने बहुत समझानेकी कोशिश की, कि हम केवल शातिके साथ व्यापार करनेके लिये आये है, लेकिन जैसे ही सवार लोगको पता लगा, कि यह उन्ही सत्यानाशी बर्बरोमेसे है, तो वह भाग चले। खबारोफके आदमी तीन दिनतक व्यर्थ ही उनका पीछा करते रहे। पाचवे जनशून्य गावमे एक बुढिया मिली। पता लगानेके लिये उसे बहुत सासत दी, लेकिन बुढियाने जो बाते बतलाई, वह पीछे झूठ निकली। अन्तमे खबारोफको खाली हाथ ही इर्कुत्स्क लौटना पडा, तो भी वह वोयवोदको यह समझा सका, कि यदि आमूर-प्रदेशको जीता जाय, तो वहासे काफी अनाज मिल सकता है।

खबारोफ इर्कुत्स्कमे उतने ही समय तक ठहरा, जितनेमे रसद और हथियार-सहित एक अच्छे दलको सगठित करके वह फिर अपने कामको शुरू कर सके। अबकी बार वह आगे बढते हुये अलबाजीन पहुचा। वहाके दौरी लोगोने एक दिन दोपहरसे शामतक लडाई की, लेकिन तोपो और बन्दूकोंके सामने तीर-धनुष क्या कर सकते थे? खबारोफने अलबाजीनको अपना केन्द्र बना जल्दी-जल्दी उसे किलाबन्द किया और पडोसके गाव गुइगुदारपर एकाएक आक्रमण करके लोगोको रूसका करद बनाया। गुइगुदारोकी अवस्था देखकर दूसरे लोगोने भी अधीनता स्वीकार करनेमे ही भलाई समझी। एक-एक आदमीसे कई-कई बार कर वसूल किया गया। इसकी शिकायत करनेपर खबारोफने लोगोको इकट्ठा होकर बात करनेके लिये बुलाया। तीन सौ आदमियोकी सभामे खबारोफने उनसे मारी बाते पूछी। इसके बाद कुछ समयतक रूसियोका बर्ताव वहाके लोगोके साथ मित्रतापूर्ण रहा। दौरी रूसियोंके डेरोमे आते, रूसियोको भी अपने घरोमे निमन्त्रित करके काफी रसद-पानी देते। खबारोफको अब उनपर विश्वास हो गया था, लेकिन एक दिन सबेरे ही उठनेपर उसने देखा, कि सभी दौरी अपना गाव छोडकर भाग गये है। जाडेका मौसिम था, बहुत दूरतक दौड-धूप नही की जा सकती थी, आहार भी काफी नही था। खबारोफके दलके लिये आगे बढनेके सिवा दूसरा रास्ता नही था। अपनी नावोमें चढ आमूरके नीचेकी ओर चलते अचनी नामक मछुओके इलाकेमे पहुचकर उन्होने डेरा डाल दिया। स्थानीय लोगोका प्रतिरोध व्यर्थ था।

चीन-दरबारमे की गई पुकारकी अब सुनवाई हुई, और एक चीनी सेना रूसियोंके विरुद्ध भेजी गई। आरम्भमे चीनियोने सफलता पाई, लेकिन सम्राट्ने अपने जेनेरलको हुक्म दिया था, कि रूसियो-को बिना मारे बदी बनाना चाहिये। इससे खबारोफके आदमियोको सुविधा मिल गई, और उन्होने चीनियोको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। खबारोफके मुट्ठीभर आदमी कितने दिनोतक लडते रहते? अन्तमें चीनियोने अलबाजीनके किलेको सर करके उसे नष्ट कर दिया, जिसे सालभर बाद रूसियोने फिर बना लिया, और तब चीनियोकी तोपोने प्राय सालभर तक व्यर्थ ही उसे सर करनेका प्रयत्न किया।

१६५४ ई०मे खबारोफकी जगह स्तेपानोफ नियुक्त किया गया। वह सुगरी नदीके नीचेकी ओर बढते हुये उसी सालके मई महीनेमे एक चीनी सैनिक टुकडीसे मिला। दोनो ओरसे गोला-गोली

चले । चीनियोंके जबरदस्त प्रहारसे रूसी नावोपर चढकर नीचेकी ओर भागे । चीनियोने नदीतटके निवासियोको गाव छोडकर देशके भीतर चले आनेके लिये कहा, जिसमे रूसी सैनिक उन्हे तकलीफ न दे सके, और स्वय आहारसे वचित हो भूखे मरे। बीचके समयमे चीनी दूसरी लडाईकी तैयारी करते रहे। ३० जून १६५८ ई०में सुगारी नदीके मुहानेपर फिर लडाई हुई। इस युद्धमे दो सौ सत्तर आदमियोके साथ स्तेपानोफका पता नही लगा, और करीब उतने ही कसाक पहाडोमे भाग गये। अब उनका काम चोरी-डकैती (कज़ाकी) करना रह गया। इस लडाईके बाद नेर्चिन्स्कतक आमूकी धारा शत्रुके खतरेसे मुक्त हो गई । चीनियोने निश्चित हो अपनी सेना लौटा ली। लेकिन इसी समय नेर्चिन्स्कको मदद मिली । इलिम्स्कके कसाक अपने वोयवोदको मारकर भाग गये और उन्होने पहाडके परले पार सखालिन और यालुम नदियोके सगमपर अलबाजीनका किला बनाया, जिसे चीनी और तातार याकसा कहते थे। अलबाजीनके ये कसाक अपनी शक्ति और इलाकेको बराबर बढाते जगह-जगह गढियोको कायम करके दौरी और दुचेरी लोगोसे कर उगाहन लगे।

१६८३ ई०मे अलबाजीनके कसाकोने बीस चीनी शिकारियोको जीते-जी गाड दिया। यह खबर सुनकर चीन सरकार बहुत नाराज हुई। उसने एक चीनी सेना भेजी, जिसने १२ जून १६८५ ई०में अलबाजीनको घेरकर वहा चीनका झडा गाड दिया। चद ही दिनोके प्रतिरोधके बाद अलबा-जीनियोने आत्म-समर्पण किया । किलेको बिल्कुल तोड दिया गया। चीनी सेना वहासे अयहून गई। उनके जानेके बाद कसाकोने लौटकर जाडोमे अलबाजीनको फिरसे तैयार कर लिया। चीनी सेना फिर अयहूनसे आई, और उसने ७ जुलाई १६८६ ई०मे दूसरी बार अलबाजीनका मुहासिरा किया। इसी समय रूससे एक प्रतिनिधिमडल आया, जिसने सम्राट् खाङ्-सी (शेङ्-चू १६६१-१७२३ ई०) से जारकी ओरसे निवेदन किया, कि जार युद्धसे नही शातिके साथ मामलेका फैसला करना चाहते हे। खाङ्-सीने निवेदनको स्वीकार करके मुहासिरेको उठा लेनेका हुक्म दे दिया। यही समय था, जब कि एलियोत (ओयरोत) और खलखा मगोलोंके बीचमे रूसी सीमातके पास लडाई हो रही थी। चीनियोने रूसी अधिकारियोके पास पत्र भेजकर शिकायत की, कि रूसी सीमातके लोग हमारे यकसा और चूनिपचूको लूटते-मारते, तथा चीनी शिकारियोंके साथ बुरा बर्ताव करते है। उन्होने यकसाके वोयवोद अलेक्सीपर इल्जाम लगाया, कि उसके दुर्व्यवहारोसे मजबूर होकर जेनेरलको यकसा मुहासिरा करना पडा, जिसमें यकसाको अन्तमे आत्मसमर्पण करना पडा। पत्रमे आगे लिखा गया था —

"तो भी परमभट्टारकने यह समझकर रूसियोंके साथ उनके पदके अनुसार बर्ताव करनेके लिये आज्ञा दी, कि रूसी राजुल वोयवोदके कामको नही पसद करेगे। यही वजह है, जो यकसाके एक हजार रूसी सैनिकोको बदी बनानेके बाद उनके साथ कोई बुरा बर्ताव नही किया गया, बल्कि जिनके पास घोडे, हथियार या रसद नही थी, उन्हे यह चीजे देकर इस घोषणाके साथ लौटा दिया, गया, कि हमारे सम्राट् युद्ध पसद नही करते, वह अपने पडोसियोके साथ शातिपूर्वक रहना चाहते है। परमभट्टारककी इस उदारतासे अलेक्सीको बहुत आश्चर्य हुआ, और उसने आखोमे आसू भरकर कृतज्ञता प्रकट की।"

कुछ समयतक बातचीत करनेके बाद सम्राट् खाङ्-सीने रूसी और चीनी प्रतिनिधियोको मिल-कर बात करनेके लिये निपचू स्थान निश्चित किया। ३१ जून १६७९ ई०को चीनी प्रतिनिधिमडल क्या सेना-मडल निपचू पहुचा, जिसमे अफसर, सिपाही और नौकर-चाकर लेकर नौ-दस हजार आदमी, तीन-चार हजार ऊट और कम-से-कम पद्रह हजार घोडे थे। वोयवोदने शिकायत की, कि चीनी सुलह नही लडाई करनेके लिये आये है और रूसी दूतमडलने १८ जुलाईतक यह कहते हुये आने-से इन्कार कर दिया, कि दोनो तरफके आदमी समान सख्यामे होने चाहिये। अतमे चीनियोने निम्न बातें कहकर समझौता किया रूसी भी उतनी ही सख्यामे आ सकते है, लेकिन बैठकके समय प्रति-निधियोको तलवार छोडकर दूसरा कोई हथियार साथ नही लाना चाहिये। धोखा न किया जाय, इसके लिये रूसियोकी तलाशी चीनी, और चीनियोकी तलाशी रूसी लेवे। बडे-छोटेका ख्याल हटाने-के लिये दोनो राजदूतोका तम्बू एक दूसरेसे सटा रहे, जिसमे वह अपने-अपने तम्बूमे बैठकर बातचीत कर सके ।

समझौतेके लिये एकत्रित यह सम्मेलन वस्तुत दोनो राज्योंके वैभवका प्रदर्शन था। रूसी तम्बू बहुत साफ-सुथरा था। उसके भीतर तुर्की कालीन बिछा हुआ था। चीनी तम्बू अपेक्षाकृत सादा था, जिसके बीचमे एक लम्बी बेंच रक्खी हुई थी। जब दोनो राजदूत अपने तम्बुओमें पहुचे, तो रगीन ध्वजा-पताकाये फहरा रही थी, नगारे बज रहे थे। रूसी दूतने पहले घोडेसे उतरकर कुछ कदम आगे बढकर चीनी राजदूतसे पहले तम्बूमें पधारनेके लिये प्रार्थना की। बीचमे एक मेज रखकर दोनो राजदूत आमने-सामने बेंचोपर बैठ गये। अनुचर खडे रहे, और दुभाषिये मेजके छोरपर बैठे। बैठनेके बाद बातचीत शुरू हुई। दोनो ओरसे इतनी बढ-चढकर मागे पेश की गई, कि उनमेंसे कोई उन्हे मान नही सकता था। गरबिलोन चीनी दूतमडलका दुभाषिया था। उसके कहनेके मुताबिक "बस इतना ही बढे कि दो कदम पीछे हटे।" कई दिनोतक मोल-भाव होता रहा। ऐसा मालूम होने लगा, कि सधि-वार्ता भग हो जायगी, लेकिन अन्तमें किसी तरह समझौता हुआ। ६ सितम्बरको सधिपत्रका अन्तिम मसौदा तैयार करके ऊचे स्वरसे पढा गया, और फिर मुहर और हस्ताक्षर करके दोनो पक्षोको एक-एक प्रति दी गई। ९ सितम्बर १६८९ ई०को अन्तमे "दोनो पक्षोंके मुख्य प्रतिनिधियोने खडे होकर सधिपत्रकी प्रतिको हाथमे ले अपने-अपने प्रभुओंके नाममे, सारे ससारके प्रभु सर्वशक्तिमान् भगवान्की शपथ लेकर अपने मनकी ईमानदारीका प्रदर्शन किया।" इसके बाद दोनो ओरसे भेंटे दी गई। युरोपके किसी राज्यने बिल्कुल समानताके तत्पर की गई चीनकी यह पहली सधि थी।

साइबेरियामें विद्रोह—बहुत थोडे समयके भीतर ही रूसियोने उरालसे अखोत्स्क समुद्र तककी भूमिपर अधिकार कर लिया था। रूसी अफसर साइबेरियाके निवासियोपर भारी कर लगाने लगे, उधर रूसी व्यापारी सस्ती शराब पिलाकर मिट्टीके मोल बहुमूल्य समूरी छालोको लोगोंसे छीनने लगे। लोग विद्रोह करनेके लिये मजबूर होते, दबाये जाते, लेकिन कुछ वर्षो बाद फिर उठ खडे होते। एक बार वह याकुत्स्क नगरको नष्ट करनेमे करीब-करीब सफल हो गये थे। बुर्यत मगोल और एवेंकी हथियार रखनेके लिये तैयार नही थे। जार अलेक्सीके शासनकालमें पश्चिमी साइबेरियामें भी एक जबरदस्त विद्रोह हुआ था।

साइबेरियामें रूसी बस्तियां—रूससे अखोत्स्क पहुचनेमें एसियाके सबसे चौडे उत्तरी भागको आरपार करना पडता है। यह प्रदेश इतना सर्द है, जिसके सामने रूसकी सर्दी लडकोका खिलवाड है, लेकिन तो भी १७वी सदीमे व्यापार और शिकार रूसियोको उधर खीच ले गये। सरकार सैनिकोंके साथ कितने ही दूसरे लोगोंको भी वहा भेजने लगी। थोडे ही समय बाद सरकारने समझा, कैदियोको वहा भेजकर बसाना अच्छा है। हमें मालूम है, आस्ट्रेलियाको भी बसानेके लिये पहले अग्रेज कैदी ही भेजे गये थे—वह अग्रेज कैदियोंके लिये कालापानी बना था। बायरो और अमीरोंके लिये विद्रोही गरीबोंसे पिड छुडानेका यह अच्छा मौका था। दूसरी तरफ अपने प्रभुओंके अत्याचारोंसे पीडित कितने ही किसानोने भी मुक्त हवामें सास लेनेके ख्यालसे साइबेरियामें प्रवास करना शुरू किया। पहले वह उरालतक पहुचे, फिर आगे बढने लगे। साइबेरियामें जगह-जगह किलाबदी करके बहुतसे सैनिकोको रखना पडता था। उनके लिये अन्न भी एक समस्या थी, क्योकि साइबेरियाके अधिकाश कबीले अभी शिकारी अवस्थामे थे, खेतीको एक तरह वहा नये तौरपर शुरू करना था। जो किसान साइबेरिया जाते, उन्हे मुफ्त भूमि मिलती, और बीज-रुपया उधार दिया जाता। इसके बदलेमे वह "प्रभुके लिये" एक निश्चित मात्रामें खेती करके अनाज सरकारको दे देते। रूसके किसानो और साइबेरियाके किसानोमें यही अन्तर था, कि यहा वह किसी जमीदारके लिये नही, बल्कि जारके लिये काम करते थे। किसानोंके अतिरिक्त बहुतसे रूसी व्यापारी भी आकर साइबेरियामे बस गये, जिनमेंसे कितनोने अपनी खेती-बारी कायम कर ली और कुछ सैनिक सेवामें भी दाखिल हो गये। इस तरह १७वी सदीके अन्ततक अर्थात् औरगजेबके अन्तिम वर्षोतक साइबेरियामें जगह-जगह रूसी बस्तिया और गाव बन गये थे। रूसियोने साइबेरियामें उत्पादनको बढाकर औरोंको भी बहुत प्रोत्साहन दिया। धीरे-धीरे खेतीका प्रसार बढा और १७वी सदीके अन्ततक पश्चिमी साइबेरियाके दक्षिणी जिले कृषिप्रधान हो गये। रूसी प्रवासियोने एसियाके उत्तरी भागकी खोज-पडतालमें बहुत काम किया। उन्होने वहा लोहेकी खानो, और नमककी खानोका पता लगाकर काम शुरू

किया । रूसी यात्रियोने अपने यात्रा-विवरण तथा साइबेरियाके नक्शे प्रकाशित किये । रूसी सरकारके लिये साइवेरिया अर्थागमका एक वहुत ही महत्त्वपूर्ण स्रोत था । वहाकी वहुमूल्य समूरी छालोकी पश्चिमी युरोप, चीन और ईरानमे वडी माग थी । इस आमदनीसे सरकार अपने सैनिक खर्च और नौकरोके वेतनोको देनेमे समर्थ थी ।

३ फ्योदोर, अलेक्सी-पुत्र (१६७६–८२ ई०)

जार अलेक्सीके मरनेके बाद उसका पुत्र फ्योदोर गद्दीपर वैठा । इसने दो वार व्याह किया, जिसमे पहली स्त्री मीलोस्लाव्स्की-कुलकी कन्यासे उसकी सोफिया आदि कई लडकिया तथा दो पुत्र फ्योदोर और इवान हुये । मरनेसे थोडा समय पहले जार अलेक्सीने नारुश्किन कुलकी कन्या नतालिया किरिलोव्नासे व्याह किया । नतालिया जारके एक कृपापात्र वायर अर्तमान मत्त्रयेफ परिवारमे पाली-पोसी गई थी, जहा उसे पश्चिमी सस्कृतिके घनिष्ठ सवधमे आनेका मौका मिला था । मत्वयेफका घर युरोपीय ढगसे सजा रहता था। उसके पास युरोपीय अभिनेताओकी एक मडली थी । १६७२ ई० में नतालियाको एक पुत्र पैदा हुआ, यही पीछे महान् जार पीतर I हुआ । अलेक्सीके मरनेके बाद फ्योदोर जब गद्दीपर वैठा, तो उसकी उम्र चौदह वर्षकी थी । वह मस्तिष्क और शरीरका वडा ही दुर्वल वालक था । जारके अन्तिम समयमे नतालियाके सवधके कारण नारुश्किनोका प्रभाव वढ गया था, लेकिन फ्योदोरके मातृ-कुलके होनेसे मीलोस्लाव्स्कियोने अधिकार अपने हाथमे सभाल लिया । पश्चिमी युरोप और वाहरी देशोके प्रथम प्रभावके परिणामस्वरूप १६८७ ई०मे मास्कोमे प्रथम स्थायी शिक्षण-सस्था "स्लावानिक-ग्रीक-लातिन-अकदमी"के नामसे स्थापित हुई ।

नारुश्किन इसे वर्दाश्त करनेके लिये तैयार नही थे, कि मीलोस्लाव्स्की दरवारमे सर्वेसर्वा हो जायें । आखिर उनका भी नाती जार-पुत्र पीतर था । जार फ्योदोर १६८२ ई० मे निस्सतान मर गया, उसके उत्तराधिकारी उसके दो भाई—सहोदर इवान तथा सौतेला पीतर थे । इवान यद्यपि उमरमें वडा, लेकिन दिमागसे वहुत कमजोर था । फ्योदोरके शासनकालमे मीलोस्लाव्स्कियोने जो मनमानी की थी, उसके कारण वह अप्रिय-से हो गये थे, इसलिये जारके जीवित-कालमे ही उन्होने नारुश्किनोके साथ मैत्री स्थापित की । जैसे ही जार फ्योदोर मरा, महासघराज और वायरोने छोटे जारकुमार पीतरको जार घोषित कर दिया । महलके सामने जमा हुई भीडने वडी हर्प-ध्वनिसे इसका स्वागत किया, लेकिन मीलोस्लाव्स्की कुल इसे माननेके लिये तैयार नही हुआ । उन्होने स्त्रेल्त्सी (सैनिको)को भडकाया, जिनको कि काफी समयसे वेतन नही मिला था । ५ मई १६८२ ई० को स्त्रेल्त्सी वहुतसी तोपे अपने अधिकारमे कर झडा लिये नगाडा वजाते क्रेमलिनके भीतर घुस गये । लोगोने हल्ला उडाया, कि नारुश्किनोने इवानको मार डाला, इसपर पीतरकी मा नतालियाने दोनो भाइयो—इवान और पीतरको लाकर खिडकीपर खडा किया । लेकिन स्त्रेल्त्सियोका क्रोध शात नही हुआ । वह महलके भीतर घुस गये, और सवसे पहले जिस आदमीको उन्होने खतम किया, वह था नारुश्किनोका मुखिया राजुल दोल्गोरुकी । शामतक वायरोको पकड-पकडकर वह मारते रहे । वह वायरोको घसीटते हुये सैनिक मजाक उडाते थे—"यह वायर लरमोदानोव्स्की है, दूमाके सदस्यके लिये रास्ता दीजिये ।" मारे गये आदमियोमे वायर अर्तमान मत्वयेफ और जारानीके दो वडे भाई भी थे । अन्तमे जारानीने स्त्रेल्त्सियोके पैंतीस वर्षके वाकी वेतनको देनेका वचन दिया और उनके आग्रहपर इवान और पीतर दोनोको सयुक्त जार घोपित किया गया—इवानको प्रथम जार माना गया । उनकी नावालिगीके समय राजभगिनी सोफिया सरक्षिका घोपित की गई ।

सोफियाका शासन—सोफियाका सवसे घनिष्ठ मित्र "प्रथम मत्री" राजुल वासिली गोलित्सिन उस कालके सवसे सुशिक्षित वायरोमे से था । वह चाहता था, कि देशमे नये सुधार किये जाय । लेकिन, अभी रूसको पोलंदसे निवटना था । इसी समय तुर्कीके साथ पोलदका वैमनस्य वढा, जिससे उसे रूसके साथ समझौता करनेके लिये मजवूर होना पडा । तुर्कीके विरुद्ध पोलद और वेनिस (इताली) को मदद देनेके लिये आस्ट्रियाने सधि की थी । तुर्कीके साथ युद्ध छिडा हुआ था । मित्र-शक्तियोने वीनामे तुर्कीकी सेनाको हराया, और सुल्तानको आस्त्रियन राजधानीका मुहा-

सिरा उठाना पडा। अभी भी तुर्कीको पूरी तरह दवाया नही जा सका था, इसलिये मित्र-शक्तियोको रूसकी सहायताकी अवश्यकता पडी। इस प्रकार १६८६ ई० मे पोल-राजाने मास्को अपना दूतमडल भेजा, और कुछ समयकी बातचीतके वाद दोनो देशोमे "सनातन" सधि हो गई। पोलदने कियेफ और उसके पासके थोडेसे इलाकेको रूसको देना स्वीकार किया और रूसने तुर्की सुल्तानके सामन्त क्रिमियाके खानसे तुरत लडाई छेडनेका वचन दिया। १६८७ ई० मे राजुल वासिली गोलित्सिनके अधीन पहली रूसी सेनाने क्रिमियापर आक्रमण किया, लेकिन उसे पूर्णतया असफल होकर लौटना पडा। फिर १६८९ ई० के वसतमे और भी वडी सेनाके साथ गोलित्सिन तातारोके किले पेरकोफ पर पहुचा, जिसे तातारोने क्रिमियाके स्थलडमरूमध्यके सबसे सकरे स्थानपर बनाया था। गोलित्सिन इस किलेको नही ले सका, और फिर उसे लौटना पडा। इतना धन और प्राण गवाकर असफल होनेका परिणाम सोफियाकी सरकारके लिये अच्छा नही हुआ। लोगोने खुलकर असतोष प्रकट करना शुरू किया।

४ इवान VI, अलेक्सी-पुत्र (१६८२-९६ ई०)

यद्यपि इवान और पीतर दोनो सयुक्त जार घोषित हुये थे, लेकिन सरक्षिका सोफिया इवानकी सहोदरा थी, इसलिये एक तरहसे शक्ति उसके हाथमे होनेसे पीतर उपेक्षितसा था। अपनी माके साथ उपनगरमे पीतरका समय अधिकतर प्रेयोब्रजेन्स्कोयके महलमे वीतता था। वहा जगलोमें वह अपने लगोटिया यारोके साथ सिपाहियोका खेल खेला करता। वह मिट्टीके छोटे-छोटे किले वनाते, फिर उसपर आक्रमण करनेका दाव-पेच लगाते। कुछ सालो वाद पीतरने अपने साथियोकी दो नकली पलटनें बनाई, जिनमेंसे एकका नाम उसने प्रेयोब्रजेन्स्की रक्खा और दूसरेका नाम सेमओनोव्स्की—ये दोनो गाव पास-पासमे थे। एक वार अपने दादाकी चीजोमे पीतरको एक पालवाली विदेशी नाव मिली। पीतरने अव उसे लेकर नौचालनका खेल शुरू कर दिया। मास्कोके एक विदेशी निवासी ब्राटने उसे नौ-सचालनकी शिक्षा दी। ब्राट पहले नौसेनामे रह चुका था। मास्कोके पास वहनेवाली नदी यउजा (यौजा) छोटी थी, इसलिये पीतर अपनी नावको लेकर इज्माइलोवोके तालावमे पहुचा। लेकिन वह भी नावके मोडने-माडनेके लिये पर्याप्त नही था, इसलिये पीतर अव माकी आज्ञा लेकर पेरेया-स्लाव्लके वडे सरोवरमें गया। उसकी वहिन सोफिया पीतरके इन सैनिक खेलोमे लगे रहनेको पहले पसद करती थी, क्योकि इस प्रकार वह दरवारके षड्यन्त्रोकी ओर ध्यान नही दे सकता था, लेकिन आयुके वढनेके साथ-साथ पीतरके नकली सैनिक असली होते जा रहे थे। पीतर सत्रह वर्षका हो गया था। उसके लडकपनके खेलकी दोनो पलटने अव यूरोपीय ढगपर शिक्षित मास्कोकी पलटन वन गई थी। सोफियाको जव खतरेका पता लगा, तो उसने रास्तेके इस काटेको अलग करना चाहा। उसने अपनेको कागज-पत्रोमे "परमशासक" लिखना शुरू किया। वह स्त्रेल्त्सियोको अपनी ओर मिलानेके लिये उनको भोज-भाज देने लगी। पीतर और सोफियाके सबध विगडते गये। अन्तमे अगस्त १६८९ ई० की एक रातको पीतरको खबर लगी, कि सोफिया आक्रमण करनेके लिये स्त्रेल्त्सियोको तैयार कर रही है। पीतर तुरन्त घोडेपर सवार हो त्रोयत्स्क-सेर्गियेफके दुर्गवद्ध मठमे पहुचा। वहीपर उसकी "नकली" पलटन जमा हो गई और एक स्त्रेल्त्सी पलटनके साथ कितने ही अमीर और कुछ वायर भी आ मिले। स्त्रेल्त्सियोंके भडकानेका सोफियाका सारा प्रयत्न विफल हुआ। पीतरके समर्थकोकी सख्या दिनपर दिन वढती गई, और महीने वाद शक्ति पीतरके हाथमे आ गई। सोफियाको मठमें साधुनी वनके रहनेके लिये मजबूर होना पडा, और उसके सहायक राजुल वासिली गोलित्सिनको उत्तरमे निर्वासित कर दिया गया।

५ पीतर I, अलेक्सी-पुत्र (१६९६-१७२५ ई०)

औरगजेवके शासनके अन्तके साथ हम भारतके इतिहासको आधुनिक इतिहासके रूपमे वदलते नही देखते, लेकिन पीतरके शासनके साथ रूस आधुनिक जगत्मे प्रवेश करता है। जैसा कि पहले कहा गया, १६८२ ई० मे अपने भाई इवानके साथ पीतर भी सयुक्त जार घोषित हुआ। असली राजशक्ति

को हाथमे लेनेमे वह १६८९ ई० मे सफल हो गया था, तो भी अभी उसका भाई इवान १६९६ ई० तक जारके तौरपर मौजूद रहा । पीतरकी मा ऐसे परिवारकी कन्या थी, जिसमे पश्चिमी युरोपके फैशन वहुत कुछ स्वीकृत किये जा चुके थे । मास्कोमे कितने ही पश्चिमी युरोपके व्यापारी, विद्वान् और शिल्पी रहते थे, जिनके मुहल्लोमे भी पीतर जाया करता था । पश्चिमी युरोपमे उस समय ज्ञान-विज्ञानकी रोशनी फैलने लगी थी, आधुनिक युद्धकला तथा सामरिक यन्त्रोका विकास हो रहा था । पीतर जैसे प्रतिभाशाली तरुणको साफ मालूम होने लगा, कि रूसको महान् वनानेके लिये हमे पश्चिमी युरोपसे वहुतसी वाते सीखनी होगी । उनके सीखनेके लिये सिर्फ वादशाही हुक्मसे काम लेना वेकार समझ, वह स्वय आस्तीन समेटकर सीखनेके लिये दिलोजानसे कूद पडा । पीतरके शासनके प्रथम अठारह वर्ष औरगजेवके अन्तिम वर्ष थे । यह भी उल्लेखनीय वात है, कि पीतरका दूत भारत आकर औरगजेवसे सूरतमे मिला था । पीतर रूसको जहा एक सुसगठित शक्तिशाली राष्ट्रके रूप मे वडे तेजीसे परिणत कर रहा था, वहा हिन्दुस्तानी औरगजेवका काम उससे विलकुल उलटा था । पीतर ज्ञान-विज्ञान और सहिष्णुता द्वारा रूसका एकीकरण कर रहा था, और औरगजेव धर्मान्धता द्वारा मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करनेके प्रयत्नमे राष्ट्रको छिन्न-भिन्न कर रहा था । औरगजेवकी अदूरदर्शिताका फल भारतने १७०७ से १९४७ ई० तक भोगा । यही समय है, जब कि पीतरकी जमाई नीवपर रूस दुनियाका अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्र वन गया । यह आश्चर्य करनेकी वात नही है, यदि वोल्शेविक पीतरकी प्रशसा करते नही थकते । वस्तुत वह रूसके सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र-निर्माताओमे मे था ।

वहिन सोफियाके शासनके खत्म होनेके वाद पीतरकी मा नतालिया अभिभाविका वनी । पीतरने माके काममे दखल देना पसद नही किया । वह अपने सैनिक खेलको और गम्भीरताके साथ खेलता रहा । अपने सहायकोकी मददसे एक युद्धपोत वनाकर उसने पेरेयास्लाव्ल सरोवरमे उतारा । थोडे ही दिनो वाद वह उसे लेकर ध्रुवकक्षीय अर्खगल्स्कमे गया, जहापर पश्चिमी युरोपके वडे-वडे जहाज आया करते थे । यहा पहलेपहल उसने उन जहाजोको देखा, जो कि महासमुद्रोको चीरते दुनियाके दूर-दूरके देशोम जाया करते थे । उसका जिज्ञासु हृदय उन्हे देखकर न जाने किन-किन कल्पनाओमे लीन हो गया । वहीपर एक पुराने स्काट जेनरल पेट्रिक गोर्डनसे उसने परिचय प्राप्त किया । गोर्डनने उसे अपने सामुद्रिक युद्धोकी वाते सुनाई । डच टिमरमानसे वह यही गणित और तोप चलानेका ज्ञान प्राप्त करने लगा । प्रतिभाशाली होनेके कारण थोडे ही दिनोमे वह अपने शिक्षककी भी गलतिया निकालने लगा । पीतरकी यह प्रथम तैयारी थी । वह क्रिमियासे गोलित्सिनकी असफलताओका वदला लेना चाहता था । रूसने आस्ट्रिया और पोलदके साथ हो तुर्कीसे लडनेके लिये सधि की थी, किन्तु उसने अभी उसमे पूरा मनोयोग नही दिया था । अजोफके किलेके वारेमे क्रिमियाके खानसे वातचीत चली, लेकिन उसने उसे देनेसे साफ इन्कार कर दिया । अजोफ किलेमे इस समय तुर्कीकी सेना रहती थी । उसपर विना अधिकार किये रूसी दोन द्वारा कालासागरमे नही पहुच सकते थे । पीतरने अव अपने खेलोको छोडकर वास्तविक युद्धमे उतरनेका निश्चय किया । १६९५ ई० के वसतमे तीस हजार सेना लेकर नावो द्वारा वह ओका नदीसे वोल्गा होकर जहा वोल्गा और दोन एक दूसरेके वहुत नजदीक होती है, (जहा पर १९५२ ई० मे वोल्गो-दोन नहर जारी की गई है) वहा नावोको कधोपर उठाकर दोन नदीमे पहुचाया गया । इसी समय पीतरने अपने एक पत्रमे लिखा था—"कोजुकोफमे हमे वडा आनन्द आया था (यही मास्कोके उपनगरमे पीतरने सैनिक प्रदर्शन किये थे), और अव हम खेलके लिये अजोफ जा रहे हैं ।" अभी पीतरके पास युद्धपोत नही थे इसलिये वह समुद्रकी ओरसे किलेको नही घेर सकता था । तुर्की सेनाको कुमक मिलनेमे कोई दिक्कत नही थी । उन्होने शरद् आरम्भ होते-होते रूसियोपर इतने जोरका प्रहार किया, कि उन्हे अजोफका मुहासिरा उठा लेना पडा ।

इस हारने पीतरके लिये वडी शिक्षाका काम दिया । उसने अनुभव किया, कि विना नौसेना के काम नही चल सकता, इसलिये सारे जाडोमे वह सैनिक पोतोके निर्माण करनेमे दिलोजानसे पिल पडा । वोरोनेज नदीके किनारे दोनके सगमसे नातिदूर वज, देवदारके जगलोके नजदीक रहनेसे वही पोतोका निर्माण किया जाने लगा । इस काममे पीतर स्वय अपने हाथसे आरे खीचने और वसूला चलानेमे

भी पीछे नही रहता था। जारकी इतनी तत्परता देखकर दूसरोमे क्यो न उत्साह होता ? जाडा खतम हो १६९६ ई० का वसत आया। इसी समय अजोफके पास रूसियोका एक बहुत बडा जहाजी बेडा देखकर तुर्कोको बहुत आश्चर्य और उससे भी अधिक परेशानी हुई। यह कहने की अवश्यकता नही, कि अभी वाष्प-इजनोका युग नही था। तुर्की सैनिक बेडेमे लडनेकी हिम्मत नही थी। पीतरने जल और स्थल दोनो मार्गोमे अजोफके किलेको घेर लिया। कान्स्तन्तिनोपोलमे कोई मदद नही मिली, इसलिये ग्रीष्म के अन्ततक तुर्कोने आत्मसमर्पण कर दिया। लेकिन पीतर जानता था, कि अजोफ ले लेनेसे ही काम नही चलेगा। कालासागरके तटपर तुर्कोके और भी कितने ही सैनिक अड्डे थे। अभी तक अधकचरा ज्ञान रखनेवाले युरोपीय लोगोमे पीतरने पश्चिमी युरोपकी बातें सीखी थी, इसलिये वह स्वय वहा जाकर सीखनेके लिये तैयार हो गया।

मा राजकाज सभाले हुई थी, इसलिये देशमे पीतरकी उतनी अवश्यकता नही थी। मुस्लिम तुर्कोके विरुद्ध पश्चिमी युरोपके राज्योसे घनिष्ठ सबध स्थापित करनेके उद्देश्यसे मास्कोने एक महादूत-मडल भेजा, जिसमे भेस बदलकर पीतर स्वय शामिल हो गया। वह वहासे अपने साथ विशेषज्ञो, इजीनियरो, तोपचियो आदिको लाना चाहता था। १६९७ ई० मे दूतमडल मास्कोसे चला था, जिसके साथ पीतर मिखाइलोफके नाममे एक साधारण जहाजी भी था। उसकी मशा युरोपकी सभी बातोको गभीरतासे सीखनेकी थी। पीतरने पीछे अपनी मुहरमे खुदवा रक्खा था—"मै गुरुओकी खोजमे रहने वाला विद्यार्थी हू।" औरगजेब और पीतरके अन्तरको यहा हम साफ देख सकते है। दूतमडलके पहले ही पीतरने कोइनिग्सवर्ग नगरमे पहुच तोप चलानेकी कला सीखी। वहासे फिर वह हालैण्डके सारडम नगरमे पहुचा, जो कि अपने पोत-निर्माणके कामके लिये बहुत प्रसिद्ध था। पीतर एक साधारण लोहारके घरमे बसकर मामूली बढईकी तरह जहाजी कारखानेमे काम करने लगा, लेकिन वह अधिक दिनोतक अपनेको छिपा नही सका। बहुतसे डच-व्यापारी रूस गये हुये थे, उनकी आखे साढे छ फुटके तगडे जवानको देखकर कैसे चूक सकती थी ? लोगोसे बचनेके लिये पीतर वहासे आम्स्टर्डम चला गया, और वहा एक सबसे बडे जहाजी कारखानेमे काम करने लगा। यह एक-दो दिनके दिखावेका काम नही था। पीतर चार महीनेतक आम्स्टर्डममे काम करता रहा, तबतक जबतक कि जिस जहाज के निर्माणमें वह स्वय भी काम कर रहा था, वह पानी मे नही उतार दिया गया। जहाजमे काम करनेके समयके बाद वह दूसरे कारखानो, मिस्त्रीखानो और म्युजियमोमें जाता, डच वैज्ञानिको और कलाकारो के साथ बातचीत करता। हालैण्डसे पीतर इगलैण्ड गया। वहा उसने वहाकी शासन-व्यवस्थाका अध्ययन किया। वह एक बार पार्ल्यामेंटके अधिवेशन को भी देखने गया। दो महीनेतक टेम्सतटपर डेप्टफर्डके कारखानेमे पोत-निर्माणकी कलाको व्यवहारिक तौरसे सीखता रहा।

समकालीन भारतमे क्या हम किसी ऐसे मुगल युवराज या शाहजादेको देख सकते थे ? पीतर अपने और अपने देशके बारेमें 'होनहार बिरवानके होत चीकने पात' की कहावतको सिद्ध कर रहा था।

इगलैण्डसे पीतर आस्ट्रियाके सम्राट्के साथ सैनिक सधिके बारेमे बातचीत करनेके लिये आस्ट्रिया गया। इस सारे पर्यटनसे महादूतमडलको मालूम हो गया, कि तुर्कोके विरुद्ध कोई बहुत बडा समझौता नही हो सकता। युरोपमे स्पेनके उत्तराधिकारको लेकर अलग ही विरोध शुरू हो गया था, जो कि अन्तमें तेरह साल (१७०१—१७१४ ई०) के युद्धके रूपमे परिणत हो गया। आस्ट्रियाके राजवशका सारा ध्यान स्पेनकी ओर था। वह तुर्कोके विरुद्ध रूसके साथ समझौता कैसे करता ? उलटे उसने तुरत तुर्कोके साथ सधि कर ली, जिसमे कि स्पेनकी ओर पूरा ध्यान दे सके। अपनी यात्रामे जहा पीतरने पश्चिमी देशोकी नई-नई प्रगतिको देखा और उनसे कितनी ही बाते सीखी, वहा उसके दिलमें यह देखकर सुई चुभ रही थी, कि स्वीडनने अब भी बाल्तिक-तटसे रूसको वचित कर रक्खा है। समुद्रका रास्ता रूसके लिये कहींसे नही था। पीतरकी दूरदर्शी आखें देख रही थी, कि कोई भी राष्ट्र बिना समुद्रके सहारे—बिना समुद्रपर विजय किये—अपनेको सुरक्षित और शक्तिशाली नही बना सकता। युरोपीय शक्तियोको तुर्कोके विरुद्ध कुछ करनेके लिये नही तैयार देख, पीतरने पहले स्वीडनसे बाल्तिक-तटको छीननेका निश्चय किया। तुर्कोकी अपेक्षा स्वीडन ही उस वक्त अधिक निर्बल शत्रु भी था। उसने झट तुर्की और क्रिमियाके खानसे सधि कर ली।

शायद पीतर अभी और कुछ समयतक विद्यार्थी बनकर पश्चिमी युरोपमे घूमता, लेकिन इसी समय स्त्रेल्त्सियो (गारद सैनिको) के विद्रोहकी खबर मिली। स्त्रेल्त्सी मास्कोमे गारदका ही काम नही करते थे, बल्कि वह अपना अधिक समय छोटे-छोटे व्यापारो और दस्तकारीके कामोमे भी लगाते थे। पीतरने राजधानीमे लौटकर उनसे माग की, कि तुम्हे अपना सारा समय सैनिक सेवामे देना होगा। इस विद्रोहसे फायदा उठानेके लिये राज्य-वचिता साधुनी सोफिया चुपके-चुपके स्त्रेल्त्सियोसे मिलकर षड्यत्र करने लगी। १६९८ ई०के ग्रीष्ममे तोरोपेत नगरकी छावनीमे रहनेवाले स्त्रेल्त्सियो की चार पल्टने बलवा कर मास्कोकी ओर चल पडी, लेकिन पीतरके जेनरल गोर्डनने राजधानीके पास उन्हे आसानीसे हरा दिया। यह खबर पीतरको वीनामे मिली। सुनते ही वह बहुत जल्दी मास्कोके लिये चल पडा। रास्तेमे वह पोलदके राजा अगस्तससे मिला। दोनोने मिलकर स्वीडनके विरुद्ध लडनेका निश्चय किया। कही लोग राजधानीमें उसके स्वागतके लिये बडी तैयारी न कर दे, इसलिये वह एक दिन यकायक पहुचकर महलमें भी न जा प्रेयोब्रजेस्कोय गावके अपने साधारणसे बगलेमे चला गया। खबर पाते ही दूसरे दिन सबेरे, बडे-बडे बायर, अमीर, व्यापारी और नागरिक स्वागत करने पहुचे। पीतरने उनके साथ बडे प्रेमसे मुलाकात की, लेकिन पुराने दस्तूरके मुताबिक उसने किसीको भी धरती पर मत्था टेककर प्रणाम करने नही दिया। इसी स्वागतके समय पीतरने कितने ही बायरोकी लम्बी दाढियोको कैंची ले अपने हाथसे कतर दिया। पीछे उसने राजादेश निकालकर लम्बी दाढी और ढीलमढाल रूसी चोगा पहननेका निषेध कर दिया। स्त्रेल्त्सी-विद्रोहके बारेमे खोज करनेपर पता लगा, कि इसके पीछे सोफियाका हाथ है। जगह-जगहपर फासीकी टिकटिया खडी करके उसने स्त्रेल्त्सियोके १९५ मरगनोको नवोदेविची भिक्षुणी मठके जगलोके सामने फासीपर लटकवा दिया—सोफिया इसी मठमें रहती थी। सब मिलाकर बारह सौ स्त्रेल्त्सियोको प्राणदड दिया गया। पीतरने मास्कोस्थित उनकी पल्टनको तोड दिया, सोफियाको षड्यन्त्र करनेके लिये इतना ही दड दिया गया, कि अब वह साध्वियोके घूघटको पहिनकर एकान्तवास करनेके लिये मजबूर की गई।

अब पीतरको तन्मयताके साथ स्वीडनसे निबटनेकी तैयारी करनी थी। किसानो, अर्धदासो तथा मुक्त आदमियोको भर्ती करके उसने एक नई सेना सगठित की। सैनिकोकी वर्दी उसने पश्चिमी युरोपकी नकलपर बनवाई और सबेरेसे रात होनेतक मास्कोके उपनगरमे यह नये रगरूट कवायद-परेडमे लगे रहते। तीन महीनेके भीतर बत्तीस हजार सेनाको शिक्षा दी गई—इसी बीच कान्स्तन्तिनोपोलमे दूत भेजकर पीतरने अगस्त १७०० ई० मे तुर्कीके साथ सधि की थी। इस सधिके अनुसार तुर्कीने अजोफपर रूसका अधिकार कबूल कर लिया। इसके बाद तुरत पीतरने अपनी सेनाको स्वीडन-अधिकृत नारवाके किलेपर प्रहार करनेका हुक्म दे दिया। बाल्तिक समुद्रमे पहुचनेके लिये नारवाका लेना आवश्यक था। पीतरका मुकाबिला एक नई सेनासे था। उसे रसद और हथियारोके प्रबधमें कितने ही दोषोका पता लगा। सिपाहियोको पेटभर खाना नही मिलता था, खाइयोमें सर्दीसे तकलीफ, इसलिये बीमारी फैली। खबर पाते ही स्वीडनके राजा चार्ल्सने सहायताके लिये प्रयाण किया। अन्तमें रूसियोकी हार हुई, उनके बहुत-से सैनिक तथा सारा तोपखाना स्वीडनके हाथमे पड गया। लेकिन, पीतरके लिये हरएक असफलता नई तैयारीका अवसर देती थी। उसने सारी शक्ति लगाकर बडी तेजीसे सेनाको फिरसे सगठित करना शुरू किया। तोपोके ढालनेके लिये उसने गिर्जोके बहुतसे विशाल घटोको गला डाला और एक सालके भीतरही तीन सौ तोपे तथा नारवामे गवाई सेनासे भी दुगनी सेना तैयार कर ली। पहले बायरोको जन्मत जेनरल बननेका अधिकार था, लेकिन अब पीतरने उनके लिये भी बाकायदा शिक्षा लेनेका नियम बना दिया। १७२१ ई० मे—औरगजेबकी मृत्युके छ साल पहले—रूसी सेना फिर लडाईके लिये तैयार थी। शेरेमेतोफके नेतृत्वमें एक रूसी सेनाने स्वीडोको दो बार हराकर बाल्तिक-तटके लिफलदिया प्रदेशपर अधिकार कर लिया। १७०३ ई०में रूसी सेनाने मरियतबुर्गको सर किया, अगले साल दोर्पत और नारवा उनके हाथमे थे। इस समय पीतर नेवा नदीके वाम तटपर इग्रियामे लडाईका सचालन कर रहा था। १७०२ ई०की शरद्मे नेवा नदीके उद्गम लदोगा-सरोवरके तटपर अवस्थित स्वीडोके अधिकृत नोटबोर्गपर अधिकार कर

लिया। पीतरने इस किलेका नाम बदलकर श्लुमेल्बुर्ग (कुजीनगर) रक्खा, क्योकि यह नेवा नदी होकर फिनलन्दकी खाडीमे पहुचनेकी कुजी थी। १७०३ ई०के वसतमे आगे बढकर समुद्र-सगमसे नाति-दूर नेवाके बाये किनारेपर अवस्थित स्वीड किले नेन्स्कान्सपर अधिकार कर इसी जगहपर पीतर और पाल किलेकी नीव रक्खी और कुछ लकडीके मकान बनवाये—यहीसे पीतरबुर्ग (आधुनिक लेनिन-ग्राद) आरम्भ हुआ, जो बोल्शेविक क्रातिके समयतक रूसकी राजधानी रहा। पीतरका एक बहुत बडा सकल्प पूरा हुआ—रूसकी सीमा समुद्र-वेलातक पहुच गई।

लेकिन, लडाईका मतलब केवल प्राणोकी ही क्षति नही, बल्कि अपार धनकी भी क्षति है, जिसके लिये किसानोका सबसे अधिक दोहन होना था। पीतरने नगरोमे दाढी रखना निषिद्ध कर दिया था, लेकिन जो दाढी-कर देनेको तैयार थे, वह उसे रख सकते थे—इस करकी रसीदके तौरपर एक ताबेका सिक्का मिलता था। ग्रामीणोको दाढी रखनेकी स्वतन्त्रता थी, लेकिन नगरमे आनेपर उन्हे भी दाढी-कर चुकाना पडता। दाढीको उस वक्त धर्मके साथ सबधित समझा जाता था, इसलिये पीतर के इस कामसे लोगोंके नाराज होनेका मौका था, लेकिन वस्तुत सबसे अधिक असतोष था आर्थिक कठिनाइयोके कारण। जगह-जगह छोटे-मोटे विद्रोह हुये। एक बडा विद्रोह ३० जुलाई १७०५ ई० को अस्त्राखानमे हुआ, जिसमे वोयवोद और कितने ही राजकर्मचारी मार डाले गये। फील्ड मार्शल शेरेमेतोफके नेतृत्वमें पीतरकी सुशिक्षित सेना जब गई, तो विद्रोहियोको क्या आशा हो सकती थी? मार्च १७०६ ई०मे तोपोकी मारके सामने अस्त्राखानको आत्म-समर्पण करना पडा, जिसपर आठ महीनेतक विद्रोहियोने अपना शासन स्थापित कर लिया था। अस्त्राखानके विद्रोहके समाप्त होने के तुरन्त ही बाद दोनमे एक विद्रोह उठ खडा हुआ। इससे तीन वर्ष पहले १७०४ ई० में बाशकिरोने भी विद्रोह किया था, जिसमे विद्रोहियोंके नेताओने क्रिमियाके खान या तुर्कोके खलीफाके अधीन अपना स्वतन्त्र राज्य कायम रखनेका इरादा किया था। पीतरने १७११ ई० तक अपनी शक्तिशाली सेनाके बलपर सभी जगह विद्रोहोको दबा दिया।

स्वीडनके साथ अभी अन्तिम निर्णय नही हो पाया था। उक्रइनका हेतमन (राजप्रमुख) इवान माजेपा पीतरसे असतुष्ट हो स्वीडनके राजा चार्ल्ससे साठ-गाठ कर रहा था, इसलिये भी स्वीडन की हिम्मत बढी थी। माजेपाने रूसके खिलाफ भडकाकर अपने लोगोको विद्रोह करनेके लिये तैयार करना चाहा, लेकिन वह उसमे सफल नही हुआ। चार्ल्स अप्रैल १७०९ ई०में सेना लेकर आया और उसने पोल्तावाके किलेको घेर लिया। पोल्तावाके लेनेपर स्वीडनके लिये मास्कोका रास्ता खुल जाता। पीतरको तुर्कोसे भी डर था, तो भी वह अपनी प्रधान-सेना लेकर पोलतावाकी ओर दौडा। २७ जून १७०९ ई० को पोलतावाके पास वोर्स्कला नदीके किनारे वह निर्णायक युद्ध हुआ, जिसने रूस के इतिहासको आगे बढानेमें भारी सहायता की। युद्धके दिनसे पहलेवाली शामको पीतरने रूसी सेनाके लिये जो आदेश दिया था, उसके कुछ अश निम्न प्रकार है—

"जवानो, वह घडी आ रही है, जो हमारे देशके भाग्यका फैसला करेगी, इसलिये यह मत सोचो, कि तुम पीतरके लिये लड रहे हो। तुम लड रहे हो उस राज्यके लिये, जो कि पीतरको सौपा गया है, तुम लड रहे हो अपने परिवारके लिये, अपनी जन्मभूमिके लिये। अजेय कहे जानेवाले दुश्मन की प्रसिद्धिमे हिम्मत न हारो, क्योकि यह प्रसिद्धि झूठी बात है। इस प्रसिद्धिको तुमने कई बार अपने विजयो द्वारा झूठा सिद्ध किया है। जहातक पीतरका सबध है, तुम यह गाठ बाध लो, कि उसे अपना प्राण प्रिय नही है।"

लडाई शुरू हुई। रूसियोका प्रहार इतना जबरदस्त था, कि स्वीडोमे भगदड मच गई। वह भारी सख्यामे खेत आये। कुछ थोडी-सी सेना ले चार्ल्स और माजेपा तुर्कोकी ओर भागे, बाकी सेनाने आत्म-समर्पण किया, जिसकी सख्या बीस हजार थी। उस समय स्वीडनकी सेना युरोपमे सबसे अच्छी मानी जाती थी। पीतरने उसे हराकर सारे युरोपमे रूसकी धाक जमा दी।

उत्तरमे समुद्रके रास्ते भागना सभव न देखकर चार्ल्स तुर्कोकी ओर भागा था। उसने तुर्कोको भडकाया, जिसपर तुर्कोने १७१० ई०मे रूसके विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया। पीतर तुरत चालीस हजार सेना ले दन्यूब (दुनाइ) नदीकी ओर चल पडा। करीब दो लाख तुर्क सेनाने आगे बढकर प्रुथ नदीके-

किनारे १७११ ई०मे पीतर और उसकी सेनाको घेर लिया। रूसी सेनाकी भीतरी हालत बहुत बुरी थी, लेकिन तुर्की सेनापतिको इसका पता नही था, इसलिये उसने समझौतेकी बात स्वीकार की। पीतर बेवकूफीभरी वीरताका पक्षपाती नही था। उसने अजोफको तुर्कोंके हाथमे दे अपनी सेनाको बचा लेनेमें सफलता पाई।

तुर्कोसे छुट्टी पाकर फिर उसने स्वीडनकी तरफ मुह फेरा और १७१४ ई०मे अबकी उसने हगो अन्तरीप (फिनलन्द)मे स्वीडनकी नौसेनापर भारी विजय प्राप्त की। इस नौसैनिक पराजयके बाद स्वीडनने रूससे समझौतेकी बातचीत शुरू की, लेकिन पीछे उसे तोड दिया, जिसपर १७२० ई० मे रूसको दूसरी नौसैनिक विजय प्राप्त करनी पडी। अब बाल्तिक-तट फिर रूसका हो गया। यही नही, कुछ ही वर्षोंके भीतर रूसकी नौसैनिक-शक्ति भी बहुत बढ गई। अन्तमे १७२१ ई०मे सधि करके स्वीडनने फिनलन्द-खाडीका तट और रीगा-खाडीकी तटभूमि, करेलियाका कुछ भाग—जिसमे विपुरी भी था—और दूसरे प्रदेश रूसको दे दिये।

पूर्वमें प्रसार—यद्यपि पीतरको स्वीडनके साथ बहुत सालोतक फसा रहना पडा, लेकिन उसका ध्यान अपने पूर्वी सीमातसे कभी नही हटा। इसके शासनमे १७१५ ई० और १७२० ई०के बीच सारी ऊपरी इर्तिश-उपत्यका रूसके हाथमे चली गई। इसी नदीके तटपर ओम्स्क और सेमीप्लातिन्स्क जैसे कितने ही किले बनाये गये। ऊपरी इर्तिशसे बुखारा और खीवाका वणिक्पथ जाता था। मध्य-एसियाकी ओर भी अपनी विजय-यात्राको बढानेके लिये पीतरने कास्पियन समुद्रको इस्तेमाल किया। १७१६ ई०मे राजुल बेकोविच-चेरकास्कीके नेतृत्वमे एक छोटी-सी सैनिक टुकडी ने खीवाके खानको गद्दीपर बैठनेके लिये मुबारकबादी देनेके बहाने पहुचना चाहा, लेकिन रेगिस्तानमे उसे घेरकर नष्टप्राय कर दिया गया, और इस प्रकार पीतर कास्पियन-तटसे आगे अपनी बाह फैलानेमे सफल नही हुआ। इधरसे असफल होकर १७२२ ई०मे पीतरने काकेशसके विरुद्ध स्वय एक अभियान का नेतृत्व किया। काकेशसके सामन्तो—विशेषकर गुर्जी, अर्मेनियाके छोटे-छोटे राजा, व्यापारी तथा ईसाई पादरी—मुस्लिम ईरान या तुर्कीकी जगह ईसाई रूसको अधिक पसद करते थे। ईरानको काकेशसमें हार खानी पडी और उसने १७२३ ई०की सधिके अनुसार कास्पियनके अपने बहुत-से तटभागको रूसियोको दे दिया, जिसमे पश्चिमी तटपर दरबेद, बाकू और पूर्वी तटपर अस्त्राबाद भी शामिल थे, लेकिन रूस इस भूमिको बहुत दिनोतक अपने हाथमें नही रख सका।

शासन-सुधार—पीतरके सैनिक सुधारो और उसके कारण मिली सफलताओंके बारेमे अभी हम देख चुके है। पीतरने व्यवस्थित सेनाको कायम किया, जिसमे बाकायदा रगरूट भर्ती किये जाते, वर्दी और हथियार दे उनको खूब कवायद-परेड कराई जाती। पश्चिमी युरोपमे तोपोको खीचने के लिये घोडागाडियोका इस्तेमाल जब हुआ था, उससे पचास वर्ष पहले ही पीतरका तोपखाना घोडो द्वारा खीचा जाता था। राजप्रबन्धमे भी पीतरने कई बडे-बडे परिवर्तन किये। १७०८ ई०मे उसने राज्यको आठ गुर्बनियो (सरकारो)में बाट दिया, गुर्बनियाका शासक एक गवर्नर होता था, जो कि सीधे केन्द्रीय सरकारसे सबध रखता था। पहले गुर्बनिया बडी-बडी बनाई गई, जिन्हे १७१९ ई०मे बाटकर पचासी प्रदेशोंके रूपमे परिणत कर दिया गया। प्रदेशोको फिर कितने ही जिलोमे विभक्त किया गया। प्रदेशो और जिलोंके शासक गवर्नर (राज्यपाल) और वोयवाद होते थे।

यह नही कहा जा सकता, कि पीतर नवीनताका अधभक्त था, लेकिन उसके कितने ही सुधारो से एक प्रभावशाली वर्ग असतुष्ट जरूर था। पीतरकी पहली बीबी योदोकिया लोपुखनासे उसका एक पुत्र राजकुमार अलेक्सी हुआ था। रूढिवादियोने अलेक्सीके ऊपर आशा लगा रक्खी थी, क्योकि वह पादरियो और अपने ननिहालके लोगोकी देखरेखमे पला था। अलेक्सी उतावला हो गया था, कि कब बाप मरे और गद्दी उसके हाथमे आये। पीतरने कई बार अपने बेटेको सावधान किया—"अपने देशके सम्मान और समृद्धिके बढानेमे जो भी बात सहायक हो, उसके साथ प्रेम करो। यदि मेरी सलाह नही मानोगे, तो मै तुम्हे अपना माननेसे इकार कर दूगा।" अलेक्सीने बापकी बात नही मानी, और विद्रोह करके आस्ट्रिया भाग गया। आस्ट्रिया भला पीतरका कोप-भाजन बननेके लिये उसके पुत्रको क्यो शरण देनेके लिए तैयार होता? पीतरने पुत्रको वहासे पकडवा मगवाया, खास अदालतमे अभि-

योग चलवाया। अदालतने अलेक्सीको मृत्युदड दिया, लेकिन उससे पहले ही वह जेलमे मर गया। अलेक्सीकी मौतने रूढिवादियोकी आशापर पानी फेर दिया।

शिक्षा और सस्कृति—पीतर शिक्षाके महत्त्वको अच्छी तरह समझता था। उस समयके भारतमे अभी प्रेसोकी छपाईका पता नही था, रूसमे भी अभी उनका प्रचार थोडा ही हुआ था। पहलेसे चले आते धार्मिक पुस्तकोके स्लावानिक अक्षरोके टाइप छापेकी दृष्टिसे कुछ दोषपूर्ण थे। पीतरने सुधार करके उनको वह रूप दिया, जो कि आज भी रूसीके लिये इस्तेमाल होता है। १७०८ ई०के वाद सिवा गिरजाकी प्रार्थना-पुस्तकोके सभी पुस्तके अब नये टाइपमे छपने लगी। शिक्षा-प्रचारके लिये विदेशी पुस्तकोका रूसीमे अनुवाद होने लगा। गणित, पोत-निर्माण, दुर्ग-निर्माण, वास्तु-विद्या, युद्ध-शास्त्र आदि विपयोपर पश्चिमी युरोपमे लिखे गये कितने ही अच्छे-अच्छे ग्रथोके रूसी अनुवाद छापे गये। रूसी इतिहासपर भी कितने ही ग्रथ प्रकाशित हुये। पहला रूसी अखवार "वेदोमोस्ती" मास्कोमे औरगजेवके मरनेके चार वर्ष पहले (१७०३ ई०) छपना शुरू हुआ, जो पीछे पीतरवुर्ग राजधानीसे निकलने लगा। अभी तक रूमी पचागमे ईसाई पचागका अनुसरण करते हुये सन् सृष्टि-सवत्सरसे गिना जाता था, और नया वर्ष पहली सितम्बरको आरम्भ होता था। १ जनवरी १७०० ई०को युरोपके कितने ही देशोमे स्वीकृत जूलियस कैसर द्वारा स्थापित जूलियन पचागको पीतरने मान लिया। लेकिन जूलियन पचागमे भी अधिक शुद्ध ग्रेगरी पचाग युरोपके कितने ही देशोमे प्रचलित था, जिसे वोल्शेविक क्रान्तिके वाद ही रूसने अपनाया। पीतरके शासनकालमे मास्को और पीतरवुर्गमें कितनी ही शिक्षण-सस्थाये स्थापित हुई। १७०२ ई०मे विदेशी अभिनेताओको निमत्रित करके मास्कोमे नये ढगसे रगमचकी भी स्थापना हुई, जिसमे "ओरेशेक विजय"के नाम का एक नाटक पीतरके विशेष आग्रहपर खेला गया था। सभी दिशाओमे सामाजिक परिवर्तन इस समय वडी तेज गतिसे हुआ, लेकिन इसमे सन्देह नही, कि यह परिवर्तन उच्चवर्गके ही भीतर हुआ।

पीतरबुर्ग निर्माण—स्वीडनपर लडाईमे विजय प्राप्तकर नेवाके दाहिने तटपर पीतरने "पीतर और पाल" नामक किलेकी स्थापना की थी। उस समय यहा आसपासमे वहुत घना जगल तथा जहा-तहा छोटे-छोटे गाव थे। इसी जगह पीतरने अपने नामसे नगर वसाना शुरू किया। पीतरने पहले अपने लिये ही जयाची द्वीपपर एक लकडीकी छोटी-सी झोपडी वनवाई, जिसके वाद दूसरे वायरो और व्यापारियोने पासमें घर बनाने शुरू किये।

पोल्तावाकी विजय (जून १७०९ ई०) के वाद पीतरने राजधानीको मास्कोसे पीतरवुर्ग लानेका निश्चय किया। हजारो किसान और शिल्पकार नगरके वनानेमे लगा दिये गये। दलदली जमीन भी वहुत थी, जिसके भीतर घुटनो तक डूबे काम करना पडता था। हजारो मजूर बीमारीसे मरे, उनका स्थान दूसरे हजारोने लिया। पीतरवुर्गको मास्कोकी तरह नही वनाया जा रहा था। यहा पुरानेको वढाना नही, वल्कि सारे नगरको आरम्भसे ही नया वनाना था, इसलिये इसकी सडके सीधी वनी। पहले हीसे योजना वनाकर नगर वनानेमें जो सुभीता होता है, वह पीतरवुर्गको प्राप्त हुआ। पीतरने पश्चिमी युरोपकी राजधानियो और मकानोको देखा था, इसलिये वह चाहता था, कि उसकी राजधानीमे ईंट और पत्थरके मकान बने, इसके लिये उसने दूसरे नगरोमे ईंट-पत्थरके मकानोका वनाना निषिद्ध करके वहासे राजो और मेमारोको वुलवा लिया। नगरको सुदर और कलापूर्ण बनानेके लिये उसने कितने ही विदेशी वास्तुशास्त्रियोको भी वुलवाया। जैसे-जैसे पीतरवुर्गका प्रताप वढता गया, वैसे ही वैसे मास्कोकी अवस्था गिरती गई। धनी व्यापारी और वायर नई राजधानीमें चले गये, सरकारी दफ्तर भी मास्कोसे हट गये। पद्रह-वीस वर्षोके भीतर ही एक छोटे-से गावसे वढकर पीतरवुर्ग सत्तर हजार लोगोका नगर वन गया।

साइबेरिया—पीतरसे पहले ही प्रशान्त-महासागरतक रूसकी सीमा जा लगी थी। युद्धके खर्चके लिये अपार धनकी अवश्यकता थी, जिसके लिये धनके सभी स्रोतोके पता लगानेकी कोशिश की गई। इसी प्रयत्नमे नई भौगोलिक खोजो और नये प्रदेशोपर अधिकार प्राप्त करनेका मौका मिला। १६९७-९८ ई०मे एक स्त्रेल्त्सी अफसर व्लादिमिर अत्लसोफके नेतृत्वमे एक छोटी टुकडी अनादिर नदीके तटपर अवस्थित अनादिरकी चौकीसे वारहसिंघोसे खीची जानेवाली वेपहियेकी गाडी

द्वारा कमचत्काके किनारे पहुची, और उसने वहाके लोगोसे मुख्यत समूरके रूपमे कर उगाहना शुरू किया। अत्लसोफ पहला आदमी था, जिसने कमचत्का प्रायद्वीपका पता लगाकर उसके बारेमे लिखा। कमचत्का-निवासी (कमचादल) अभी जनयुगमे रहते थे। वह कबीलेशाही समाजसे ऊपर नही उठे थे। उनके एक-एक जन (कबीले) मे कुछ सौ तम्बू होते थे। मछुवाही उनकी जीविका थी। जनोमे आपसमे बराबर लडाई होती रहती थी। उनके हथियार थे—धनुष-वाण। वह वाणोके फल चकमक-पत्थर या हड्डीसे बनाते थे। अत्लसोफने कमचादलोके बीचमे शासन दृढ करनेके लिये एक रूसी छावनी स्थापित की, जहापर कसाक और सैनिक रहा करते, जिनका काम जारके शासनको मजबूत रखनेके साथ लूटपाटकर अपने लिये धन बटोरना भी था। १७३१-३२ ई०मे कमचादलोने कई विद्रोह किये। इनके नेता वही थे, जो कि रूसमे रहकर बारूदी हथियारोका इस्तेमाल जान गये थे, लेकिन रुसियोने उन्हे आसानीसे दबा दिया। फिर धीरे-धीरे उनकी जन-व्यवस्था टूटने लगी।

चीनके साथ सबध—नेर्चिन्स्क की सधिके (सितम्बर १६८९ ई०) साथ चीनका रूसमे दौत्य-सबध स्थापित हुआ। उस सधिको प्रमाणबद्ध करने तथा व्यापारिक सबध सुधारनेके लिये मास्कोने १६९२ ई०मे अपने एक जर्मन सेवक येवर्ट यमब्राट इड्सको भेजा। वह अठारह महीनेमे चीचीहार नगरमे पहुचा। चीनी सीमातपर पहुचनेपर एक चीनी मदारिन (अफसर) आठ रक्षक सैनिको तथा तीन लोहेकी तोपोके साथ स्वागतके लिये आया। चीनी मदारिनने इड्सकी खूब पुरतकल्लुफ दावत की, फिर उसने भी मदारिनको युरोपीय ढगसे दावत दी। राजधानीमे भी उसका उसी तरह स्वागत किया गया। तीन दिनोतक उसकी जियाफत होती रही। इड्मने इसके बारेमे लिखा है—"मेरे लिये जो मेज रखी गई थी, वह प्राय वर्गाकार थी, जिसके ऊपर एकके ऊपर एक सत्तर तश्तरिया रखी गई थी, जो सभी चादीकी थी।" घोडीके दूधकी बनी शराब (कूमिस) को सोनेके प्यालेमे रख-कर दिया गया। अन्तमे १२ नवम्बर १६९२ ई०मे उसे दरबारमे सम्राट् खाङ-सीके दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने सम्राट्के सामने अपना राजकीय प्रमाणपत्र पेश किया। शायद उसे साष्टाग दडवत् (कौतू) करनी पडी, जिसके बारेमे एक अग्रेजने लिखा है—"राजदूत अपने आसनपर ले जाये गये, इसी समय जब सम्राट् अपने सिहासनसे उतर रहा था, यकायक चीनियोने अपने घुटनो-को मोड सिरको धरतीपर तीन बार टेका। हमे भी प्रतिहारोने वहा ले जाकर उसी तरह प्रणाम करने के लिये मजबूर किया।" इड्मने १९ फरवरी १६९४ ई०मे पेकिङ छोडा, जिसमे पहले फिर उमे सम्राट्से मिलनेका मौका मिला। सम्राट् खाङ-सीने १७१२-१७१६ ई०मे तू-ली-शिन्को दूत बनाकर तर्गुत कलमकोके खानके दरबारमे वोल्गा-तटपर भेजा। उस समय पीतर स्वीडनके साथ लडाई-मे लगा हुआ था, इसलिये वह वोल्गाके तटपर आये चीनी दूतको बुलाकर नही मिल सका। इस चीनी दूतमडलका यद्यपि बाहरी उद्देश्य था आयुका खानके स्वास्थ्यके बारेमे पुछार करना तथा आयुका-के भतीजे राजकुमार ओ-ला-पू-छू-योरको उसके पूर्व पदपर स्थापित करनेकी इच्छा प्रकट करना, लेकिन दूतको यह भी आज्ञा दी गई थी,कि वह मास्को राजधानीमे जाकर जारसे भी मिले। चीन लौटते समय जब तू-ली-शिन् रूसी सीमातपर पहुचा, तो रूसी अफसरने उसे सैनिक सम्मानके साथ सेलिगिन्स्की शहरमे पहुचा था, जहा वोयवोदने उमसे बातचीत की। तोबोल्स्कमे आनेपर साइबेरियाके राज्य-पाल राजुल गजारिन मिला, जिससे तू-ली-शिन्ने राजकाजके बारेमे बहुत देरतक बातचीत की। यहा पर तू-ली-शिन्को सूचित किया गया, कि जार अपनी सेनाके सचालन करनेमे लगा हुआ है, नही तो वह बडी प्रसन्नतासे चीनी राजदूतसे मिलता। आयुकासे मिलनेके बाद तू-ली-शिन्ने पेकिङमे लौट कर सम्राट्को एक रिपोर्ट दी, जिसमे लिखा था

"इस प्रकार उत्तर-पूर्वमे रूसी राज्य अल्पजन तथा बयाबानीसा इलाका है, यद्यपि अत्यन्त प्राचीन कालसे आजतक हमारे चीन-साम्राज्यके साथ उसका सबध नही रहा, और हमारे इतिहास-लेखकोने भी रुसियोका उल्लेख नही किया और न आजतक कभी एक भी चीनी आदमी वहा पहुचा, तो भी सभी दिशाओकी तरह वहा भी हमारे देवोपम सम्राट्की महिमा और महान् गुण प्रभाव डाले बिना नही रहे। दुनियाके सभी दसो हजार राज्य सम्राट्की हितकारी सरकारके सरक्षणमे है। रूस

केवल अब चीनके साथ खुला सबध स्थापित करने लगा है, लेकिन चालीस या पचास साल पहले भी, जब कि दोनो साम्राज्योकी सीमाये निश्चित नही हुई थी, सूचनाओ द्वारा हमारे साम्राज्यके बहुतसे अच्छे गुण वहा ज्ञात थे ।"

पीतरके प्रथम दूतमडलने यह भी तै किया, कि रूसी वणिक्-सार्थ थोडे समयके बाद बराबर जाया करे। लेकिन रूसी जबरदस्त पियक्कड थे, जिसके कारण अक्सर झगडे हो जाया करते था, जिससे सम्राट् खाङ-सीने सबध-विच्छेद करनेकी धमकी दी। इसपर १७१९ ई०में पीतरने इस्माइलोफके नेतृत्वमे एक विशेष दूतमडल भेजा। इस्माइलोफके साथ एक अग्रेज जान बेल भी था, जिसने उसके बारेमे बहुत सी ज्ञातव्य बाते लिखी है। इस दूतमडलको चीनी सीमाततक पहुचनेमे सोलह महीने लगे थे। सम्राट्के विशेष प्रतिनिधिने वहा उनका स्वागत किया। बेलने अपने विवरणमे लिखा है

"हमारे पथदर्शकने खेमोमे कुछ स्त्रियोको चलते देखकर दूत (इस्माइलोफ)से पूछा—यह कौन है और कहा जा रही है? उसे बतलाया गया, कि वह हमारी मडलीकी है, और हमारे साथ चीन जा रही है। इसपर चीनी प्रतिनिधिने कहा—पेकिङमे पहले हीसे काफी औरते है। अबतक कोई भी युरोपीय स्त्री चीन नही आई, इसलिये सम्राट्की विशेष आज्ञाके बिना मै उन्हे ले जानेकी जिम्मेदारी नही ले सकता। यदि आप जवाबकी प्रतीक्षा करे, तो इसके लिये हम एक सार्थ भेजनेके लिये तैयार है, लेकिन सदेशवाहक छ सप्ताहसे पहले नही लौट सकता। इसपर यही ठीक समझा गया, कि असबाब को ले आनेवाली गाडियोंके साथ स्त्रियोको सेलिगिन्स्की लौटा दिया जाये।"

जिस घरमें रूसी दूतमडलको ठहराया गया था, उसको दस बजे रातको सम्राट्की अपनी मुहर लगाकर बद कर दिया जाता था, जिसमे कोई आदमी भीतर-बाहर आ-जा न सके। राजदूतके कहने पर यह नियत्रण हटा दिया गया। इस्माइलोफने पहले साष्टाग प्रणिपात करनेमे इन्कार कर दिया, लेकिन पीछे उसने इस शर्तपर कबूल किया, कि चीनी दूत भी रूसी दरबारमे वहाकी प्रथाके अनुसार साष्टाग प्रणाम करेगा। बेलने रूसी दूतके दरबारमें जानेका वर्णन निम्न शब्दोमें किया है

"हमें प्राय पाव घटा प्रतीक्षा करनी पडी। पिछले दरवाजेसे सम्राट् शालमें प्रवेशकर सिंहासनपर बैठा। इस समय सभी लोग खडे हो गये। अब महाप्रतिहारने कुछ दूरपर खडे राजदूतको शालके भीतर आनेके लिये कहा, और उसे एक हाथमे पकडे तथा दूसरे हाथमे राजकीय प्रमाणपत्र थामे ले चला। सीढियोपर चढनेके बाद उसने पूर्वनिश्चयानुसार प्रमाणपत्रको वहा स्थित एक मेजपर रख दिया। सम्राट्ने राजदूतको पास आनेका निर्देश किया, और उसी वक्त प्रमाणपत्रको लिये अलोईके साथ वह सिहासनके पास गया। फिर घुटना टेकते हुये उसने पत्रको सम्राट्की ओर बढाया, जिसने अपने हाथसे उसे छू दिया। फिर परमभट्टारक जारके स्वास्थ्यके बारेमे पूछकर राजदूतसे कहा—परमभट्टारक जारके लिये मेरे हृदयमे इतना मित्रतापूर्ण और प्रेमका भाव है, कि मैने उनके पत्रको लेनेमे अपने साम्राज्य की प्रचलित प्रथाके पालन करनेका ख्याल नही किया।

"थोडे समयतक यह भेट होती रही। उस समय राजदूतके अनुचर शालके बाहर खडे रहे। पत्रके देनेपर हमने समझा, कि अब काम खतम हो गया। फिर महाप्रतिहारने राजदूतको लौटाकर अनुचरोको हुक्म दिया कि नौ बार मत्था टेककर सम्राट्के प्रति सम्मान प्रदर्शित करे। महाप्रतिहारने खडा होकर तारतार (मगोल) भाषामे "मोरगू" और "बोस" मे बोलते हुये आज्ञा दी। मोरगूका अर्थ है सिर झुकाना और बोसका खडा होना।"

बेलके लिखनेसे मालूम होता है, कि रूसी दूतमडलको यद्यपि बहुत-से दरबारी अपमानजनक शिष्टाचारोको पालन करनेके लिये मजबूर होना पडा, लेकिन उनका सत्कार-सम्मान इतनी अच्छी तरहसे हुआ, कि वह सबको भूल गये। इस्माइलोफके विदा हो जानेके बाद उसका सचिव देलाग रूसी-प्रतिनिधिके तौरपर पेकिङ (पेचिङ)मे रह गया, लेकिन उसकी स्थिति एक नजरबन्द जैसी थी। जिस वक्त देलाग पेकिङमे था, उसी समय मगोलोंके एक चीनाधीन कबीलेने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली, इसपर पेकिङमे किसी भी रूसी कारवाका आना निषिद्ध कर दिया गया। देलागके साथ असह्य दुर्व्यवहार हुआ, जैसा कि उसने स्वय लिखा है

"मुझे आदेश है, कि हमारे दोनो साम्राज्योके बीचमे अधिक घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये पूरा प्रयत्न करू, लेकिन मै उन्हे—प्रधान मत्रीको—वतला देना चाहता हू, कि इस अवसरपर चीनी सचिवालयने (मेरे साथ) जो बर्ताव किया, उससे मुझे वहुत आश्चर्य हुआ। (आपको) यह ख्याल दिलसे हटाना नही होगा। परमभट्टारक जारके स्वीडनके साथ हो रहे युद्धको सम्मानपूर्वक समाप्ति पर ही सब कुछ निर्भर करता। शायद जिस वक्त मै यह बाते कर रहा था, उसी समय सचमुच शाति-सधि की जा रही थी। उसके बाद इसमे कोई बाधा नही हो सकती, कि मेरे स्वामी (जार) धीरज खोकर कही अपने हथियारोको इस ओर न घुमा दे।"

लेकिन चीनी प्रधान-मत्री ऐसी धमकियोकी कोई पर्वाह नही करता था। अन्तमे देलागको चीन दरवारसे चले जानेकी छुट्टी मिली और सत्रह महीना रहनेके बाद एक कारवाके साथ वह चीनकी राजधानीसे रवाना हुआ। इस प्रकार पीतरके समय चीन-रूसका सबध अच्छा नही रहा। पीतरके मरनेपर यद्यपि वाहरी शक्तियोसे सघर्षने भयकर रूप धारण नही किया, लेकिन उसके बादके सैंतीस वर्षो (१७२५-६२ ई०) मे चीन मे छ प्रासादी क्रातिया हुई। पीतरके उत्तराधिकारियोमे अन्ना इवान-पुत्री, और पीतर III अयोग्य और विलासी थे। उनके समयमे दरबारियोके हाथमे राज-शक्ति चली गई थी। पीतर II और इवान VI गुडिया जार थे। पीतर I ने १७२२ ई० मे वनाये अपने विधानमे सम्राट्के हाथमे यह अधिकार दे दिया था, कि वह स्वय अपने उत्तराधिकारीको चुन सकता है। लेकिन वह अन्त तक उत्तराधिकारीके बारेमे किसी निश्चयपर नही पहुचा। वह मृत युव-राज अलेक्सीके पुत्रको उत्तराधिकारी नही वनाना चाहता था, अपनी रानी एकातेरिनाको भी राज देने मे आनाकानी कर रहा था, और अपनी लडकियो एलिजाबेत या अन्नाके बारे भी उसने कोई निश्चय नही कर पाया था। लेकिन उसके मरनेके बाद दरबारियोके एक प्रभावशाली समुदायने पीतरकी रानी एकातेरिनाको गद्दीपर बैठा दिया।

६. एकातेरिना I, पीतर-पत्नी (१७२५-२७)

अपने दो सालके शासनमे उसने किसी योग्यताका परिचय नही दिया। दरवारके एक प्रभाव-शाली सामन्त मेंशिकोफने एकातेरिनाको पीतर I के पौत्र तथा अलेक्सीके पुत्र पीतर II को अपना उत्तराधिकारी बनानेके लिये तैयार किया। युवराजसे अपनी लडकीका व्याह करके वह अपने प्रभावको वढाना चाहता था।

एकातेरिनाके समय १७२७ ई०मे एक रूसी दूतमडल सावा व्लादिस्लाव-पुत्रकी अधीनतामे पेकिङ्ग भेजा गया। इस दूतमडलका काम अवतक गये सभी दूतमडलोसे वडा ही लाभदायक साबित हुआ। सावाने २७ अगस्त १७२७ ई०को जिस सधिपत्रको स्वीकृत करानेमे सफलता पाई, वह सवा शताब्दियो (जून १८५८ ई०) तक मान्य रहा। इतनी देरतक रहनेवाली सधिया वहुत कम ही देखी जाती है। इसी समय रूस और चीनके बीचकी सीमारेखा पूर्वमे क्याख्तासे ऐगून नदीके मुहानेतक और पश्चिममे क्याख्तासे सुइयान-पर्वतमालाके एक डाडे शविनादावेगतक निर्धारित की गई। यह भी स्वीकार किया गया, कि हर तीसरे वर्ष रूसी कारवा पेचिङ आ सकते है, तथा यह भी कि पेचिङमे एक स्थायी रूसी दूतावास स्थापित किया जायगा, और रूसी अपने धर्मके अनुसार पूजा-पाठ कर सकेंगे। राजदूतके निवासमे रूसी और लातीनी भाषाओके जाननेवाले चार तरुण विद्यार्थी रह सकेगे, जिनका खर्च चीन बर्दाश्त करेगा, और शिक्षा समाप्त करनेके वाद वह लौटनेके लिये स्वतन्त्र रहेगे। इस दूत-मिशनके ऊपर चीन सरकारको प्रतिवर्ष हजार चादीके रूवल और दस मन चावल खर्च करना पडता था। रूसी सरकार उसपर सोलह हजार चादीके रूवल खर्च करती थी, जिसमेसे एक हजार रूवल अलवाजीन कसाकोकी पेचिङमे रहती तरुण सतानोकी शिक्षापर खर्च होता था। यद्यपि इस सधिके अनुसार रूसी हर साल अपने कारवाको भेज सकते थे, लेकिन वस्तुत १७२७ ई० और १७६२ ई०के बीचमें केवल छ कारवा गये। व्यापारके लिये कई तरहके निर्वंध थे, जिनके कारण निराबाध व्यापार नही हो पाता था। विना एक साल क्याख्तामे रहे कोई चीनी व्यापारी वहा

रूसियोंके साथ व्यापार नही कर सकता था, सरकार उन्हींको लाइसेंस देती थी, जो कि रूसी भाषा लिख-बोल सकते थे। व्यापार बदलेनमे होता था, किसी भी तरहके सिक्केका इस्तेमाल बिल्कुल वर्जित था। चीनी व्यापारी पहले क्याखता जाते और अपने पसदके मालको चुनते, फिर रूसी व्यापारी उसी मालके लिये मैमाचेन आते। अपनी सरकारी द्वारा नियुक्त कमिश्नर (आयुक्तक) चायके माध्यमसे हर एक चीजका दाम निश्चित करते। चीनी व्यापारी चायके बदलेमे ऊनी कपडे, चमडे, छाले जैसी चीजे लेते।

७. पीतर II, अलेक्सी-पुत्र (१७२७-३० ई०)

एकातेरिनाके मरनेके बाद मेंशिकोफने अपने ही महलमे पीतरको गद्दीपर बैठाया। उस समय वह बारह वर्षका लडका था। उसके नामपर मेंशिकोफ अब शासन करने लगा। धीरे-धीरे मेंशिकोफके प्रति लोगोमे बहुत असतोष पैदा हो गया और उसे पकडकर बेरियोजोफ (साइबेरिया) मे निर्वासित कर दिया गया। अब उसका स्थान दोलगोरकी राजुल-वशने लिया। उसने अपनी कन्यासे सम्राट्का व्याह करना चाहा। यह याद रखना चाहिये, कि पीतर ने अपने लिये "सम्राट्" (एम्पेरातोर) की पदवी धारण की थी, जिसका प्रयोग अन्तिम जारतक होता रहा, यद्यपि लोग अधिकतर जारकी उपाधि ही इस्तेमाल करते थे। व्याहकी तैयारी हो ही रही थी, इसी बीच पीतर II बीमार होकर मर गया। पीतरके साथ रोमनोफ वशकी पुरुष-सतानोका अन्त हो गया, इसके बाद रोमनोफ कुमारिया तथा उनके जर्मन पतियोंकी सताने रूसपर शासन करती रही। ये जर्मन जार पूरीतौरसे रूसियोमे मिल नही सके, उनके दरबारोमे जर्मनोका बाहुल्य था।

पीतर IIके समयकी एक उल्लेखनीय घटना है बेरिंगका भौगोलिक अभियान। १७वीं सदीके मध्यमे रूसियोने कामचत्का तकका पता लगाकर उसपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था, और सिमओन देजनिओफने चुकोत्स्क प्रायद्वीपका चक्कर लगाकर सिद्ध कर दिया था, कि एसिया और अमेरिकाके बीचमे एक पतली-सी खाडी है। लेकिन यह बात १८वीं सदीके आरम्भमें भूल गई। अपनी मृत्युसे जरा-सा पहले पीतरने एसिया और अमेरिकाके मिलन-स्थानके बारेमें अधिक खोज-पता लगानेके लिये एक अभियान भेजनेकी आज्ञा दी। इस अभियानका नेता रूसी नौसेनाका एक अफसर तथा डेनमार्क-निवासी वीटस बेरिंग नियुक्त किया गया। पहले अभियान (१७२८-३० ई०)मे बेरिंग (अपने नामसे प्रसिद्ध होनेवाली) खाडी तक गया, लेकिन उसने अमेरिकन तटभूमिकी पडताल नही की। दो साल बाद बेरिंग फ्योदोरोफ और ग्वोज्देफ दो रूसी सैनिक और भूगोलशास्त्रियोंके साथ गया। अबके उसने सिर्फ एसिया और अमेरिकाके तटोपरकी ही जाच-पडताल नही की, बल्कि वहाका पहला नक्शा तैयार किया। उसके बाद अमेरिका-तटके अलास्का प्रायद्वीपको रूसियोने १७९७ ई०मे अपना उपनिवेश बनाया, जिसे कि जारने १८६७ ई०मे अमेरिको के हाथमे बेच दिया।

८ अन्ना, इवान V-पुत्री (१७३०-४० ई०)

पीतर IIके मरनेके बाद कुछ समयतक निजी परिषद् (प्रिवी कौंसिल)ने शासनसूत्र अपने हाथमे लिया। इस परिषद्मे दो पुराने राजुल-वशो गोलित्सिन और दोल्गोरुकीका प्रभुत्व था। राजुल द० स० गोलित्सिन बहुत भारी जमींदार था, और परिषद्में उसकी चलती भी काफी थी। वह इगलैण्ड और स्वीडनकी नकलपर राज्य-व्यवस्था करनेका पक्षपाती था, जिसमे शासनमें जमींदारोका पलडा भारी होता। उसके प्रस्तावपर परिषद्ने पीतर I के भाई जार इवानकी पुत्री अन्ना को राजसिंहासन प्रदान किया। अन्नाका व्याह पीतरने एक जर्मन राजुल (कूरलडके ड्यूक)के साथ किया था। ड्यूकके मरनेके बाद बराबर वह वहीं रहती थी। परिषद्के सामन्तोने कई शर्ते रक्खीं, जिसके बारेमे अन्नाने कहा "मै सभी बातोको बिना चू-चिराके माननेका वचन देती हू।"

दरबारी चाहते भी नहीं थे, कि अन्ना राजकाजमें अधिक भाग ले, और वह भी अपने आनद-विलासमें समय काटना चाहती थी, जिसके लिये भारी परिमाणमे धन प्राप्त करना ही उसका

लक्ष्य था। पीतरबुर्गके हेमन्तप्रासादमे अपने चाटुकारोंसे घिरी वह अपना दिन बिताती थी। उसने अपने एक जर्मन दरबारी बीरेनको अपनी तरफसे राजकाज सभालनेका काम दे दिया था। बीरेन एक निर्बुद्धि और अशिक्षित जर्मन अमीर था। उसने सभी प्रभावशाली पदोपर जर्मनोको लाकर भरना शुरू किया। वही वैदेशिक विभागका सचालन करते थे, और वही रूसी सेनाके सेनानायक थे। बीरेन रूसियोको बडी तुच्छ दृष्टिसे देखता था। उसने कभी रूसी भाषा नही सीखी। लोगोसे पैसे ऐठकर जर्मनीमे वह अपने लिये भूमि खरीदता तथा अपनी बीबीके लिये मूल्यवान् कपडो और रत्नोको जमा करता। अन्नाके शासनके साथ रूसमें जर्मनोका जबरदस्त प्रवेश शुरू हुआ, जो कि अन्तिम जारके समय हदतक पहुच गया। रूसियोंके मनमे जर्मनोके इस बर्तावसे यदि विद्वेष होने लगा, तो इसमे आश्चर्य की कोई बात नही। अन्नाके शासनकालमे कालासागरके तटपर अधिकार करनेके लिये तुर्की और क्रिमियाके साथ लडाई (१७३५-३९ ई०) हुई। रूसने तुर्की सेनाको कई जगह हराया। १७३९ई० में तुर्कोंके साथ हुई सधिके अनुसार रूसको समुद्रतक द्नियेपर नदीके दोनो तट मिल गये। लेकिन लडाईपर जो खर्च करना पडा, उसके कारण देशके जनसाधारणकी आर्थिक स्थिति बहुत बुरी हो गई।

१७३७ ई०मे अन्नाके शासनकालमे चीन और रूसके साथ व्यापारिक सबध अच्छे हो गये थे, इसलिये कारवाके व्यापारकी इजारेदारी किसी व्यापारीको न देकर खुला व्यापार करनेका रास्ता खोल दिया गया। व्यापारियोको पेकिङ भी जानेकी जरूरत नही थी। रूसी व्यापारी क्याख्ता में आके ठहरते और चीनी मैमाचिनमें—दोनो ही स्थान सीमातपर पास-पास थे। चीनी सरकार ने चीनी व्यापारियोपर कुछ निर्बंध लगा रक्खे थे, जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं, और उसके कारण व्यापारमे कुछ अडचन होती थी।

९ इवान VI, अन्ना-पुत्र (१७४०-४१ ई०)

अन्नाकी कोई सतान नही थी, इसलिये उसकी भतीजी अन्ना ल्योपोल्द-पुत्रीके बेटे इवानको राजगद्दी दी गई। नये जारकी मा एक जर्मन ड्यूक (ब्रन्सविक)से ब्याही गई थी। १७४० ई०मे अभी तीन महीनेका बच्चा ही था, जबकि इवानको गद्दीपर बैठा दिया गया। जारको कुछ करना-धरना भी नही था, इसलिये उसके बच्चे होनेसे कुछ बनने-बिगडनेवाला नही था। उसकी मा राजमाता अभिभाविका घोषित की गई, लेकिन उसका शासन एक सालसे अधिक नही रहा। सभी जगह विदेशी जर्मनोको देख राजधानीमे देशी अमीरोंके दिलमे आग लग रही थी। सैनिक अफसरो और सिपाहियो में भी इसके लिये असतोष फैला हुआ था। फ्रासके राजदूतने भी षड्यत्रमे सहायता दी, और २५ नवम्बर १७४१ ई०को पीतर I की पुत्री एलिजाबेत यकायक अपने अनुचरो और गारदकी एक टुकडीके साथ महलमे घुस आई। गारदोने तुरन्त अन्ना ल्योपोल्द-पुत्री और उसके परिवारको पकड लिया और जर्मनोके साथ काफी दुर्व्यवहार करके एलिजाबेतको साम्राज्ञी घोषित कर दिया। शिशु सम्राट् इवानको श्लुशेलबर्गके किलेमें बद कर दिया गया, जहा उसे एकातेरिना IIके शासनकाल (१७६२-९६ ई०) मे मार डाला गया।

१०. एलिजाबेत, पीतर I-पुत्री (१७४१–६१ ई०)

एलिजाबेतके शासनकालमे रूसी सामन्तोका प्रभाव काफी बढा, और अमीरोंके फायदेके लिये कई नियम और विधान बनाये गये। अब केवल पुराने राजुलवशी ही किसानोकी बस्ती-वाली भूमिके मालिक हो सकते थे। वह अपने अर्ध-दासोको बिना अभियोगके साइबेरियामे निर्वासित कर सकते थे, जो आम तौरसे सेनामे भर्ती होकर जाते थे। एलिजाबेतको अपने आनद-मौजके सिवा किसी कामसे कोई वास्ता नही था। उसके यहा नाच, गाना और शराबकी मजलिसे लगातार होती रहती थी। एलिजाबेतने अपने भतीजे कार्ल पीतर उलरिचको अपना उत्तराधिकारी बनाया। कार्ल पीतर I की पुत्री अन्ना और उसके पति ड्युक होल्स्टाइनका पुत्र था। पीतर रूसमे फ्योदोर-पुत्र कहा जाता था। वह बहुत ही निर्बलबुद्धि तरुण था। अठारह-बीस वर्षकी उमरमे भी अभी वह खिलौनो-

मे खेला करता और उनमे ऐसे बाते करता मानो वह आदमी है। साथ ही अपने जर्मन होनेका उसे हदसे अधिक अभिमान था, और उसी परिमाणमे वह रूस और रूसियोंके साथ घृणा करता था। साम्राज्ञी एलिजावेतने उसका ब्याह एक जर्मन राजकुमारी सोफिया अनहाल्ट-जर्व्स्तके साथ कर दिया, जो कि रूसमे एकातेरिना अलेक्सी-पुत्रीके नाममे प्रसिद्ध हुई—बिना पिताके नामसे रूसमे किसी स्त्री-पुरुषको पुकारनेका रवाज नही है, इसलिये हरएकके साथ पितृनाम जोडना ही पडता है। एकातेरिना अपने पति जैसी नही थी। वह बडी योग्य और मेहनती स्त्री थी। उसने रूसी भाषा और रूसी रीति-रवाजोका अच्छी तरह अध्ययन किया। वह रूसी सामन्तो और अमीरोको हर तरहमे अपनी ओर खींचनेकी कोशिश करती थी।

११ पीतर III, फ्योदोर-पुत्र, पीतर I-नाती (१७६१-६२ ई०)

पीतरका शासन बहुत थोडे दिनोका था। वह अपने समयमे रूसी शासनको प्रुशियाके राजा फ्रेड्रिक (१७४०-८६ ई०) के नमूनेपर बनानेकी कोशिश करता रहा। फ्रेड्रिक बडा ही महत्त्वाकाक्षी शासक था, जिसके कारण उसके पडोसी बहुत चिन्तित रहते। फ्रास, आस्ट्रिया और सेक्सनीके साथ रूसने भी फ्रेड्रिकके विरुद्ध अपनी एक गुट बना ली थी। इगलैण्ड फ्रेड्रिकका पक्षपाती था। फ्रेड्रिकने पूर्वी पडोसीका बिना ख्याल किये ही, सेक्सनीके ऊपर आक्रमण किया इसपर उसी साल रूसी सेना प्रुशियाके भीतर घुस गई, जिस साल अग्रेजोने पलासीकी लडाई (१७५७ ई०) जीतकर हिन्दुस्तानमे अपना दृढ शासन स्थापित किया। फ्रेड्रिकको अपनी सेनापर बडा अभिमान था। वह रूसी सेनाको बिल्कुल तुच्छ दृष्टिसे देखता था, लेकिन पहली ही झडपमें उसे अपनी राय बदलनी पडी। उसने अपने सबमे योग्य सेनापतियोको भारी सेना देकर रूसियोंके विरुद्ध भेजा। अगस्त १७५७ ई० मे जर्मनोने पहला आक्रमण किया, और यह आक्रमण हिटलरके ब्लित्जक्रीगका प्रथम नमूना था। यकायक आक्रमण करनेके कारण रूसी पहले कुछ तितर-बितरसे हो गये। मालूम होने लगा, जर्मन विजयी होगे। इसी समय जगलोमे छिपी हुई रूसी सेना मैदानमें कूद पडी। यह ब्लित्जक्रीगका अच्छा जवाब था। रूसियोने जर्मन सेनापर पूर्ण विजय प्राप्त की। कोयनिग्सबर्गके महादुर्गने बिना प्रतिरोधके ही आत्म-समर्पण कर दिया। यदि रूसी सेनाने इस समय अवसरसे लाभ उठाया होता, यदि रूसके मित्रोने सुस्ती न दिखलाई होती, तो फ्रेड्रिकका सर्वनाश हुये बिना नही रहता। अपनी सेनाको फिरसे सगठित करके १७५९ ई० में फ्रेड्रिक ओडेर-पर-फ्राकफोर्तको खतरेमे डाले हुई रूसी सेनाके मुकाबिलेमे चला। सब प्रयत्न करके भी फ्रेड्रिकको बुरी तरहसे हारना पडा। जर्मन अपने हथियारो और झडोको छोडकर भाग गये। फ्रेड्रिक रूसियोंके हाथमे बदी होते बाल-बाल बचा। फ्रेड्रिक अत्यत निराश हुआ, जैसा कि उसने स्वय लिखा है "मैं अभागा हू, जो जीनेके लिये बचा हू, जिस समय मैं यह लिख रहा हू, हरएक आदमी भाग रहा है। इन आदमियोंके ऊपर मेरा कोई बस नही है।" लेकिन जिस वक्त फ्रेड्रिक इस तरहसे निराश था, उसी वक्त उसके पश्चिमी शत्रुओने उसे बचनेका अवसर दे दिया। १७६० ई० में एक छोटीसी रूसी सेनाने जर्मन राजधानी बर्लिनपर कूच किया। यद्यपि राजधानीमे छब्बीस बटालियन पैदल, छियालीस रिसाला स्क्वाड्रेन और एक सौ बीस भारी तोपे थी, लेकिन जर्मन सेनापतियोने नगरकी प्रतिरक्षा करना बेकार समझा। रातके वक्त वह अपनी सेना लेकर बाहर चले गये, और सबेरेके वक्त बर्लिनके नगराधिकारियोने रूसी सेनापतियोको मखमलके गद्देपर रखकर नगरकी कुजी भेंट कर दी। फ्रेड्रिककी दुरवस्था चरम सीमा तक पहुच गई थी। इसी वक्त दिसम्बर १७६१ ई० मे रूसी साम्राज्ञी एलिजावेत मर गई। उसके उत्तराधिकारी पीतर II ने प्रुशियाके साथ क्षणिक विराम-सधि करके फ्रेड्रिकको बचा लिया। इस युद्धमे अपनी विजयो द्वारा रूसने पश्चिमी युरोपको चकित कर दिया। रूसी सेनापति प अ रुम्यान्त्सेफ (१७२५-९६ ई०) के युद्धकौशलका इसमे बहुत भारी हाथ था।

पीतरके दो सालके राज्यमे रूसकी प्रगतिको लाभ नही हानि पहुची। फिर जर्मन सेनापतियो और अफसरोकी सब जगह भरमार हो गई। पीतरकी दिलचस्पी रूसकी अपेक्षा अपने होल्स्टाइन वशसे अधिक थी। वह होल्स्टाइनके लिये डेनमार्कसे लडनेकी तैयारी भी कर रहा था। लेकिन अपनी

महत्त्वाकाक्षाओके अनुसार उसमे योग्यता नही थी। उसकी पत्नी एकातेरिना अलेक्सी-पुत्री जानती थी, कि उसका नालायक पति सिंहासनको खोकर रहेगा, इसलिये रूसी दलके षड्यत्रमे वह स्वय शामिल हो गई। गारदके अफसर दो-भाई ओरलोफ षड्यत्रके मुखिया थे। २८ जून १७६२ ई० के बडे तडके ही उन्होने एकातेरिनाको उपनगरके एक प्रासादसे पीतरवुर्गमे लाकर साम्राज्ञी घोषित कर दिया। अगले दिन पीतरने क्रोन्स्तात्मे भाग जानेका व्यर्थ प्रयत्न किया, फिर सिहासनसे बाकायदा इस्तीफा दे दिया। ऐसे नालायक पतिको भी अधिक दिनोतक जीनेका अधिकार देना बुद्धिमानीकी बात नही थी, इसलिये थोडे ही दिनो बाद वह मार डाला गया।

१२ एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी (१७६२–९६ ई०)

एकातेरिना योग्य और सुशिक्षिता स्त्री थी। जिस वक्त वह गद्दीपर बैठी, उस वक्त राज्यकी अवस्था अस्तव्यस्त हो रही थी, राजकोष खाली था, सैनिकोको सात महीनेसे वेतन नही मिला था। मरम्मत न होनेसे, युद्धपोत और दुर्ग खराब हो रहे थे। जनतामे बहुत असतोष था, विशेषकर कारखानोमे काम करनेवाले उचास हजार मजूरो और जमीदारोके डेढ लाख अर्ध-दास कैदियोंसे जेल भरे हुये थे। एकातेरिनाने यद्यपि जमीदारोंके अधिकारोपर प्रहार नही किया, लेकिन तब भी अपने शासनके आरम्भमे उसने किसानो और जनसाधारणके बोझेको हलका करनेकी कोशिश की। उसे पश्चिमके नये विचारोवाले दार्शनिकोके ग्रथोके पढनेका बडा शौक था। फ्रेंच विचारक वोल्तेरके साथ उसका पत्र-व्यवहार था। उस समय वोल्तेर, मोन्तेस्को, दीदरो और दूसरे फ्रेंच विचारक अपनी सशक्त लेखनी द्वारा सामन्तवादी व्यवस्थापर प्रहार कर रहे थे, मिथ्या विश्वासोको हटाकर बुद्धिवादको आगे बढा रहे थे। एकातेरिना उनके इन विचारोसे अवगत थी। वह वोल्तेर, दीदरो और दूसरोसे पत्र-व्यवहार करके यह दिखलाना चाहती थी, कि जिस आदर्श शासन या नृपतिके बारेमे तुम प्रचार कर रहे हो, वैसी बुद्धिमती और नई रोशनीवाली शासिका मै हू। रूसके किसानोमे उस वक्त भूख और अज्ञानका अखड राज्य था, लेकिन एकातेरिना वोल्तेरको लिखती थी, कि रूसमे एक भी ऐसा किसान नही है, जो इच्छा होनेपर मुर्गी न खा सकता हो, बल्कि अब तो वह मुर्गीकी जगह टर्कीका खाना ज्यादा पसद करते है। एकातेरिना पाखडमे बहुत ही चतुर थी। वह राजकाजमे सीधे भाग लेती थी। वह स्वय कानूनो और राजादेशोका मसविदा बनाती थी। साहित्यमे उसकी दिलचस्पी थी और स्वय एक पत्रिका "सबका थोडा" निकालती थी। एकातेरिनाका शासन सामतो और अमीरोंके लिये रूसी इतिहासका सुनहला समय था।

जर्मनी (प्रुशिया) के साथ सात वर्ष (१७५६-६३ ई०) वाला युद्ध समाप्त होनेके बाद एकातेरिनाने राज्य सभाला था। यद्यपि बीचमे उसका नालायक पति आ घुसा था, लेकिन थोडे ही समयमे एकातेरिनाने रूसकी धाकको फिरसे जमा दिया। आस्ट्रिया और फ्रास रूसकी बढती हुई शक्तिको शकाकी दृष्टिसे देखते थे। फ्रेंच व्यापारी पूर्वी देशोके व्यापारपर एकाधिपत्य रखना चाहते थे, इसलिये वह नही चाहते थे, कि रूसियोकी शक्ति अधिक बढे। आजकलके अमेरिकाकी तरह उस समयका फ्रास रूसके चारो तरफ शत्रु-राज्योका घेरा डालना चाहता था। इसके लिये उसने तुर्की, पोलैण्ड, स्वीडन और आस्ट्रियाको अपने साथ मिलाकर एक जबरदस्त गुट बनाना चाहा। रूसने भी इसके विरुद्धमे प्रुशिया, इगलैड और दूसरे राज्योको मिलाकर एक गुट बनानेकी कोशिश की, लेकिन विरोधी स्वार्थोके कारण दोनो अपने उद्देश्यमे सफल नही हुये। आस्ट्रिया पश्चिमी उक्रइनकी उर्वर भूमिको चाहती थी, प्रुशिया पोलन्दकी निम्न-विस्तुला-उपत्यकापर हाथ साफ करना चाहती थी, और रूस अपने हाथसे छिने बेलोरूसी और उक्रइनी इलाकोको लौटाना चाहता था। इन स्वार्थो के साथ तीनोमेंसे कोई नही चाहता था, कि किसीकी शक्ति अधिक बढ जाये। शताब्दियोतक शक्तिशाली रहनेके बाद पोलन्द अब निर्बल हो गया था। वहाके अमीरो और सामन्तोने राजाके अधिकारको बहुत सीमित कर दिया था। उधर कैथलिक पोल ग्रीक-चर्चके अनुयायी उक्रइनो और बेलोरूसियोके ऊपर तरह-तरहके अत्याचार कर रहे थे। एकातेरिना कैसे चुप रह सकती थी? १७६३ ई० मे अगस्तस् IIIके मरनेपर एकातेरिनाके उम्मीदवार स्तानिस्लाउस पोनियातोव्स्कीको पोलन्दका राजा

चुना गया। रूस और प्रुशिया दोनोंने माग की, कि पोलन्दमें ग्रीक-विश्वासियों तथा प्रोटेसटेंटो (सुधार चर्च) को कैथलिकोंके बराबर अधिकार दिया जाय। इन्कार करनेपर रूसी सेना पोलन्दके भीतर भेज दी गई। पोलिश समद्को मजबूर होकर रूसकी मागको स्वीकार करना पडा। इसी समय एकातेरिना ने पोलन्दको करीब-करीब अपने सरक्षणमें ले लिया। रूसके बढे हुये प्रभावको देखकर आस्ट्रिया और प्रुशियाको चिंता हो गई। फ्रेड्रिकने समझा, कि रूस सारे पोलन्दको हडप लेगा, इसलिये उसने आस्ट्रिया, प्रुशिया और रूसके बीच पोलन्दके बट जानेकी एक योजना बनाई, जिसे तीनो राज्योने स्वीकार किया—प्रुशियाको पोलन्दका बाल्तिक-तट तथा पश्चिमी भाग मिला। इस प्रकार प्रुशियाका पूर्वी भाग, जो अभी तक अलग-अलग था, पश्चिमी भाग (ब्राडेनवर्ग) मे मिल गया। प्रुशियाने दन्जिग और थोर्नको लेना चाहा, लेकिन एकातेरिनाने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। आस्ट्रियाको उक्रइनी-गलिसिया मिली, और रूसको बेलोरूसियाका कुछ भाग। १७७३ ई०मे इस प्रकार पोलन्दका पहला बटवारा हुआ, जो कि बहुत कुछ प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८ ई०) तक कायम रहा।

प्रथम तुर्की युद्ध (१७६८-७४ ई०)—फ्रास नही चाहता था, कि रूसकी शक्ति और बढे, इसलिये उसने तुर्कीको भडकाकर लडाई छिडवा दी। १७६८ ई०मे सुल्तानने कान्स्तन्तिनोपोल-स्थित रूसी राजदूतसे माग की, कि अपनी सेना पोलन्दसे हटा लो। तुर्कीकी इस अनधिकार चेष्टाको रूस कैसे स्वीकार कर सकता था? इसपर रूसी दूतको पकडकर जेलमें बन्द कर दिया गया। युरोपके लोग समझते थे, कि रूस तुर्की और पोलन्द दोनोंसे एक ही समय नही लड सकता। क्रिमिया का खान अपनेको तुर्कीके खलीफाके अधीन समझता था। उसने पहल की और १७६९ ई० के बसन्त मे क्रिमियाके तारतारोने दक्षिणी रूसके सीमाती इलाकोमे लूट-मार मचाई। रूसकी सीमाके भीतर यह तारतारोकी अन्तिम लूट-मार थी। प्रसिद्ध सेनापति रुम्यान्त्सेफ—जिसने सप्तवर्षीय जर्मन-युद्धमे भारी यश कमाया था—एक बडी सेना लेकर दक्षिणकी ओर बढा। उसने अपने कई योग्य सहायक चुने थे, जिनमे अलेक्सान्द्र वासिली-पुत्र सुवारोफ भी था—सुवारोफ सभी कालके रूसी सेनापतियो का शिरोमणि माना जाता है। रुम्यान्त्सेफ सबसे पहले शत्रुकी सैनिक शक्तिको अधिकसे अधिक ध्वस्त करना चाहता था। १७७० ई० मे उसे पता लगा, कि लारगा नदीसे नातिदूर अस्सी हजार तुर्क-सेना छावनी डाले पडी है। रूसी सेनापतिके पास उस समय केवल तीस हजार सैनिक थे, लेकिन उसने आक्रमण कर दिया और तुर्क-सेनाको पूरी तौरसे हारना पडा। इसके दो सप्ताह बाद वह एक ओरसे अस्सी हजार तारतारो और दूसरी ओरसे तुर्कीके वजीरकी अधीनतामे डेढ लाख तुर्क सैनिकोंके बीचमे घिर गया। लेकिन इससे रुम्यान्त्सेफको घबराहट नही हुई। उसने यह कहते हुये पहले स्वय आक्रमण करनेका निश्चय किया "छोटी सेनासे बडी सेनाको हराना एक कला और कीर्तिकी बात है, और बडी सेनासे अधिक शक्तिशाली शत्रुको हरानेमे विशेष चातुरीकी आवश्यकता नही है।" तुर्की तोपखाने ने जबरदस्त गोलाबारी की और तुर्क सवारोने भारी सख्यामे रूसियोका प्रतिरोध किया। निर्णयकी जब आखिरी घडी आई, तो रूसी सेना घबडाने लगी, इसी समय रुम्यान्त्सेफ आ पहुचा और उसने चिल्लाकर कहा—"डटे रहो लडको" और वह स्वय युद्धके भीतर पिल पडा। तुर्कोंकी भारी हार हुई, और द्नियेस्तर तथा दन्यूबके बीचकी भूमि रूसियोंके लिये खाली हो गई। रूसी सेना अब दन्यूब महानदके वाम तटपर पहुच गई। इस विजयके लिये रुम्यान्त्सेफको "जा-दुनाइस्की" (दन्यूब-वाला) की उपाधि प्राप्त हुई। स्थलपर इस तरह सफलता प्राप्त करके रूसी नौसेनाने जलमे भी अपनी श्रेष्ठता दिखलाई और उसने सारे तुर्की बेडेको नष्ट कर दिया। १७७१ ई० में थोडे ही समयके भीतर रूसी सेनाने सारे क्रिमिया प्रायद्वीपपर अधिकार कर लिया। रूसी सेना दन्यूबके किनारेपर नही रुकी और उसने कई बार इस महानदको पार करके आक्रमण किया, जिसमें अलेक्सान्द्र सुवारोफने अपने सैनिक कौशलका बहुत अच्छा परिचय दिया। रूस अपनी विजययात्राको और भी जारी रखता, लेकिन एक तो युद्धके अपार व्ययका सवाल था, दूसरे इसी समय पुगाचेफके नेतृत्वमें रूसी किसानोंने जबर्दस्त विद्रोह कर दिया था। एकातेरिनाने १७७४ ई०मे जल्दी-जल्दी तुर्कीके साथ सधि कर ली। द्नियेपर और बुगके बीचका प्रदेश रूसको मिला और साथ ही कालासागरमे घुसनेकी केर्चकी खाडी भी। अब रूसी जहाज स्वच्छदतापूर्वक कालासागरमे जा सकते थे, तुर्कीने दरेदानियाल (दरदानेल्स)

और वासपोरसकी खाडियोको भी रूसी जहाजोके लिये खोल दिया । क्रिमियाके खानको तुर्कोंकी अधीनतासे स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया, और अब उसके ऊपर रूसका प्रभाव बढ चला ।

किसान-संघर्ष—रूसी अपने पूर्वजो (शको) के समयसे ही योद्धा-जाति है । सामन्ती अत्याचारोको रूसी किसान और अर्ध-दास आख मूदकर हर वक्त बर्दाश्त करनेके लिये तैयार नही रहते थे । १६वी से १८वी सदीके बीचमे केवल मध्य-एसियामे ही चालीसके करीब विद्रोह हुये । वोल्गा प्रदेशमे रूसी जमीदारो और अफसरोका अत्याचार बहुत बढा हुआ था । यह वह इलाका था, जहा-पर कि रूसियो और एसियाई जातियोके इलाके एक दूसरेके पडोसमे पडते थे । बाशकिरोकी भूमिपर रूसी व्यापारियो, कारखानेवालोकी खास तौरसे गृध्र-दृष्टि थी । कल्मक १७७० ई० के आसपास तक निम्न वोल्गाके दोनो तटोपर रहते थे, लेकिन १७७१ ई०मे शासकोके अत्याचारोसे परेशान तथा चीनके प्रलोभनके कारण वोल्गाके बाये तटवाले कल्मक अपने सारे तम्बुओ और पशुओको लेकर चीनकी ओर चले गये, जिसके बारेमे हम अभी कहनेवाले है—यह कल्मक चीन द्वारा पूर्वी तुर्किस्तानमे बसाये गये । वोल्गाके दाहिने तटपर अब भी कल्मक-मगोल रहते थे । किसानोका विद्रोह पहले-पहल यायिक (उराल) नदीके तटपर बसनेवाले रूसी कसाकोमे फैला । कसाक जिस वक्त भागकर जापरोजे और दोनकी भूमिमे बसे, उस वक्त उनमे उतनी सामाजिक विषमता नही थी, लेकिन अब उनके भीतर धनियो और गरीबोका भारी भेद हो गया था । सरकारी अफसर धनी कसाकोका पक्ष करते थे, और जरा भी विरोध करनेपर उन्हे बडी बुरी तरहसे दबा देते थे । १७७२ ई० मे यायित्स्क नगरमे कसाकोने विद्रोह करके जेनरल त्राउबेन्बर्ग और कितने ही कसाक आतमनो (सरदारो) को मार डाला । लेकिन सरकारी सेनाने आकर यायिकके कसाकोके विद्रोहको दबा दिया । बहुतसे कसाक मारे गये, और बहुतसे वहासे बच निकलनेमे भी सफल हुये । तुर्कोसे लडाई हो रही थी, इसी समय दोन और यायिकके कसाकोमे अफवाह उडी, कि जार पीतर II मरा नही है, बल्कि वह हमारे बीचमे छिपा हुआ है । १७७३ ई० के शरद्मे एमेल्यान पुगाचेफ नामक एक कसाकने विद्रोहका नेतृत्व अपने हाथमे लिया । वह उसी जिमोवेइस्क गावमे पैदा हुआ था, जिसे प्रथम किसान-वीर स्तेपान राजिनको पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।

पुगाचेफने सप्तवर्षीय युद्धमे भाग लिया था, तुर्कोके युद्धमे भी लडा था । बीमारीके कारण छुट्टी पाकर वह घर आया था, लेकिन उसने फिर लौटकर जाना पसद नही किया । वह दोन, वोल्गा और यायिककी उपत्यकाओमे घूमता रहा । वहा उसे कितने ही दुर्दशाग्रस्त भगोडे किसान तथा उरालके कारखानोके मजदूर मिले । अपने इस पर्यटनमे उसे लोगोसे घनिष्ठता प्राप्त करनेका मौका मिला और धीरे-धीरे उसका एक दल बन गया । अपनेको सम्राट् पीतर III कहते हुये वह सितम्बर १७७३ ई० मे यायिकके तटपर पहुचा । लोग उसके झडेके नीचे आने लगे । पहले वह अपने आदमियोको लेकर ओरेनबुर्गकी ओर गया । गेरिसनको अधिकारमे कर किलेपर अधिकार करनेमे उसे कोई कठिनाई नही हुई । १७७३ ई० के अक्तूबरमे पुगाचेफ ओरेनबुर्गके नगर-प्राकारके पास पहुचा, जहा एक मजबूत किला और काफी सैनिक रहते थे । पुगाचेफ छ महीने उसे घेरे रहा । इस विद्रोहने आसपासके लोगोमे उत्तेजना पैदा की । कजाक (एसियाई) घुमन्तू भी उसकी सेनामे आकर शामिल होने लगे, निम्न वोल्गा और कालासागरके बीचके घुमन्तू कल्मक मगोल भी पुगाचेफकी सेनामे भर्ती होने लगे । तारतार, बश्किर और मारी नौजवान भी यायिकके तटपर पुगाचेफके पास पहुचने लगे। यह विद्रोह हर जातिके केवल किसानो तक ही सीमित नही था, बल्कि इसमे उरालके धातु-कारखानेमे काम करनेवाले मजदूर और दूसरे भी शामिल थे । धीरे-धीरे विद्रोह एक किसान-युद्धके रूपमे परिणत हो गया । पुगाचेफकी सेनामें कल्मको, बश्किरो, तारतारो, कारखानोके मजदूरो और दूसरोकी अलग-अलग पल्टने सगठित थी । उनके पास हथियारोकी कमी थी । बहुत थोडोंके पास पलीतावाली बन्दूके या पिस्तौले थी, बाकी पुराने तरहके हथियारोसे सज्जित थे । कुछ तोपे पकडी गई थी, जिनका एक तोपखाना बना लिया गया था । उरालके लोहेके कारखानोके कारीगरोकी सहानुभूति होनेके कारण, कुछ नई बदूके भी विद्रोहियोको मिल रही थी । पुगाचेफ अपनी घोषणाओको सम्राट् पीतर III के नामसे निकालता था, किसानो और गरीबोके लिये जितना कुछ उसमे हो सकता था, उतना कर

रहा था और उससे भी अधिकका वचन देता था। १७७३ ई०के अन्तमे ओरेनवुर्गको मुक्त करानेके लिये जेनरल कारके नेतृत्वमें एक सरकारी सेना आई, जिसे पुगाचेफने हरा दिया, इसके कारण उसका प्रभाव और वढ गया। सारे रूसके अमीरो, जमीदारो और धनियोमे आतक छा गया। वोल्गासे सैकडो मील दूर रहनेवाले जमीदार भी हर वक्त भयके मारे कापने लगे। लेकिन मार्च १७७४ ई० में सरकारी सेनाने पुगाचेफको ओरेनवुर्गके पास हरा दिया। अभी भी उसने अपने सघर्षको नही छोडा। पहले वह वश्किरोके प्रदेशमे गया। फिर रूसी किसानो, वश्किरो तथा धातु-कारखानेके मजदूरोकी सेना सगठित कर वह कामा नदीकी ओर वढते कजानकी ओर चला, जो कि सारे वोल्गा प्रदेशका शासन-केन्द्र था। पुगाचेफ जुलाई १७७४ ई० मे कजान पहुचा। यहा भी उसे अन्तमें हारना पडा, और वह थोडेसे आदमियोके साथ वोल्गाके दक्षिण तटकी ओर भागा। सरकारी सेनाने पुगाचेफका पीछा करना शुरू किया। वोल्गाके दाहिने किनारेपर उसके पास अव थोडे हीसे आदमी रह गये थे, लेकिन जव वह घने वसे हुये इलाकेमे पहुचा, तो निजनी-नवोगोरदके इलाकेने हथियार उठा लिया। विना अधिक प्रतिरोधके एकके वाद एक नगरोने आत्मसमर्पण किया। परन्तु पुगाचेफकी यह सफलता क्षणिक सावित हुई। वाकायदा शिक्षाप्राप्त सरकारी सेनाके सामने किसानोका दल कैसे डटा रहता? पुगाचेफ पेजा, सरातोफ और कमिशिन होते अगस्तके अन्तमे जारित्सिन (आधुनिक स्तालिनग्राद) पहुचा, जहापर सरकारी सेनाने नगरसे नातिदूर पुगाचेफकी शक्तिको छिन्न-भिन्न कर दिया। तो भी वह अपने कुछ आदमियोंके साथ वोल्गा पार करनेमे सफल हुआ, लेकिन इसके वाद लोगोका उसकी सफलतापर विश्वास नही रह गया। अन्तमे कसाक ज्येष्ठकोने उसे पकडकर सरकारके हाथमे दे दिया। हाथ-पैर वाधकर एक लकडीके पिंजडेमे पुगाचेफको मास्को ले जा जनवरी १७७५ ई० मे फासी दे दी गई। पुगाचेफने भारी जोश और वडी-वडी आशाये रूसकी गरीव जनतामे पैदा कर दी थी, लेकिन उस समय वह विखरे और अशिक्षित किसानोको ही विद्रोहियोकी सेनामे शामिल कर सकता था। अभी कारखानेके मजदूरोकी पल्टन तैयार नही हुई थी, जो अपने सुदृढ सगठनोमे किसान-क्रान्तिको सफल वनाती।

जैसा कि पहले कहा गया, एकातेरिनाके शासनकालमे अमीरो और जमीदारोका वल और भी अधिक वढ गया। १७७५ ई० मे किसान-विद्रोहको दवानेके वाद एकातेरिनाने राज्यके प्रवन्धमे कितने ही नये सुधार किये। सारा राज्य पचास गुवर्नियो (प्रदेशो) मे वाट दिया गया—प्रत्येक गुवर्नियामे प्राय तीन लाखकी आवादी थी। हरेक गुवर्निया फिर कितने ही उयेज्दोमें वाटी गई, जिसमे प्राय तीस हजारकी आवादी थी। कभी-कभी दो-तीन गुवर्नियापर भी एक राज्यपाल नियुक्त होता, लेकिन अधिकतर प्रत्येक गुवर्नियाका एक राज्यपाल होता। इसके कहनेकी अवश्यकता नही, कि राज्यपाल या उयेज्दके शासक राजुलो (सामन्तो) और वायरो (अमीरो) मे से ही होते थे। १७८५ ई० मे नगरके शासनके लिये भी नई व्यवस्था कायम की गई, और उसका कार्य-भार नगरपालिकाके ऊपर दिया गया, जिसके सवसे वडे अधिकारी "गरोद्निची" को सरकार नियुक्त करती थी।

वैदेशिक नीति—एकातेरिनाका शासनकाल रूसके भारी प्रसारका काल था। १८वी शताब्दीकी अन्तिम चार दशाव्दिया रूसकी सीमाको अधिक वढाने और मजवूत करनेके लिये विशेप महत्त्व रखती है। एकातेरिनाके शासनकालमे ही तुर्की और स्वीडनके साथ दो-दो जवरदस्त युद्ध हुये। प्रथम तुर्की युद्धके समय १७३४ ई०मे क्रिमियाके ऊपर रूसका सरक्षण स्थापित हो गया था। कालासागरपर निरावाध अधिकार करनेके लिये क्रिमियाका रूसके हाथमें जाना आवश्यक था। क्रिमियाके खानोंमें आपसमे उत्तराधिकारके लिये झगडे होते ही रहते थे। रूसने उससे फायदा उठाया, सेना भेज शगिनगिराईको पहले खान घोपित किया, फिर १७८३ ई० में शगिनको अधिकारच्युत करके तोरिदाके नाम से क्रिमियाको एक गुवर्निया वना दिया। अव कालासागरके तटकी काली मिट्टीवाली उर्वर भूमि (नवोरोसिया) रूसियोके हाथमे थी, जिसके अच्छे-अच्छे इलाकोको अपने हाथमे करनेके लिये रूसी सामन्त गिद्धकी तरह टूट पडे। क्रिमिया प्रायद्वीपके भीतर भी उन्होने वैसा ही किया, और निवासी तारतार पहाडोकी ओर सिमटनेके लिये मजवूर हुये। जेनरल पोतेमकिन एकातेरिनाके कृपापात्रको क्रिमियाका महाराज्यपाल नियुक्त किया गया, जिसने अपना घर भरनेमें कोई कसर उठा

एक कारण था तुरगुन मगोलोंका १७ वीसदीमें रूसके भीतर वोलगाके किनारे चला जाना। कुछ समय तक तो वह शातिपूर्वक रहे, लेकिन उन्होंने देखा, कि रूस और तुर्कोंके चक्कीके दो पाटोंके भीतर उन्हे पिस जाना है। उधर तुल्शिशिनके दूतमडलने उन्हे लौटनेका भी बहुत प्रलोभन दिया। तुरगुन मगोल घुमन्तू थे, लेकिन अपनी पुरानी मगोल भूमिके साथ उनका बहुत स्नेह था। १७७१ ई०में रूसियों और तुर्कोंके बीचमें जो सघर्ष हुआ, उसमें तुरगुतोंने रूसका पक्ष लिया। इसी समय तुर्कोंके साथ लडते उन्हे अपनी शक्तिका भान हुआ, और वह समझने लगे, कि तुर्कों (कजाकों) के बीचसे चीरते-फाडते हम अपनी जन्मभूमिको लौट सकते है। ५ जनवरी १७७२ ई० को एक दिन यकायक सात लाख तुरगुन परिवारोंने पूर्वकी ओर प्रस्थान कर दिया। रूसियोंने पहले समझानेकी कोशिश की, फिर कुछ सेनाका भी उपयोग किया, लेकिन उस समय वह दक्षिणी शत्रुओंके साथ भी फसे हुये थे, इसलिये पूरी शक्ति नहीं लगा सकते थे। कजाक-तुर्कोंने अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वियोंको आसानीसे बढ निकलनेका मौका नहीं दिया। तो भी तुरगुन अपने लाखो ऊटों, घोडों, भेडों, तम्बुओं और दूसरे सामानके साथ बालबच्चों को लिये, पद-पदपर कजाकोंसे लडते आगेकी ओर ही बढते गये। आठ महीनेकी इतिहासकी इस अद्वितीय यात्राके बाद तुरगुन जब इली नदीके तटपर पहुचे, तो सात लाखकी जगह अब वह तीन लाख आदमी रह गये थे। इलीके तटपर चीनने उनका स्वागत किया, और उन्हे पशु, अन्न और पैसेसे मदद देकर पाससे ही अलनाई (सुवर्ण) की पहाडी भूमिमे बसा दिया। रूसने कुछ थोडे-से मगोलों को शरण दी थी, अब चीनने लाखोंकी सख्यामे चीनी प्रजाको अपने यहा जगह देकर उसका बदला लिया। रूसने भी अब चीनियोंको प्रलोभन देकर अपनी सीमाके भीतर रखना शुरू किया। इस प्रकार दोनो राज्योंके बीच शाति कैसे कायम रह सकती थी? चीन-सम्राट् काउ-चुङ (च्यानलुङ १७३५-९५ ई०) ने विरोध प्रदर्शित करते हुये लिखा था :

"परीक्षण करनेपर हमारे दोनो देशोंके समझौतोंके भीतर पता लगा, कि अगर सीमातपर किसी राज्यका चोर पकडा जाय, तो दोनो ओरके सयुक्त अधिकारियोंके सामने उसके बारेमें जाच-पडताल होनी चाहिये और अपराधी साबित होनेपर उसे मृत्युदड देना चाहिये। इसी विधानके अनुसार मैंने चौवालीसवें सवत्सरमें तुम्हारे यहाके ग्यारह घोडे चुरानेके कारण दो आदमियोंको मृत्युदड दिया गया। हमारे महान् साम्राज्यने सधिपत्र और विधानका ईमानदारीसे पालन करनेके लिये ऐसा किया, मित्रता कायम रखनेके लिये ही नहीं, बल्कि सत्यके प्रेमके लिये भी, जिसका कि हम बहुत सम्मान करते है। लेकिन, तुमने चोरोंको प्राणदड नहीं देकर मित्रता और सधिपत्रके विधान और शपथको भग किया। यद्यपि हमारे दोनो साम्राज्य एक दूसरेके सीमातपर हैं, तो भी हमारा (चीन) साम्राज्य अपनेको बडा भाई कह सकता है, क्योकि वह साम्राज्योंमे बडे भाईका स्थान रखता है। तुम्हारी प्रार्थना पर हमने दो चोरोंको दडित किया, लेकिन तुम वही बात हमारे महासाम्राज्यको सतुष्ट करनेके लिये करनेमें इन्कार करते हो। क्या तुम नहीं सोचते, कि आनेवाली सताने तुम पर हसेंगी?"

इन झगडोंको मिटानेके लिये एकातेरिनाने क्रोपोतोफको दूत बनाकर चीन भेजा। बात-चीत होनेके बाद १७२७ ई० के सधिपत्रमें और धारा जोडी गई, जिसके बाद फिर व्यापारिक सबध पहलेकी तरह स्थापित हो गया। यह उल्लेखनीय बात है, कि एकातेरिनाका मगोलियाके मगोलोंके साथका बर्ताव वहाके लामाओं और राजुलोंके लिये अधिक अनुकूल था, इसीलिये वहाके लोगोंमे मशहूर था, कि एकातेरिना श्वेततारा देवी (चगान-तारा-एखे) की अवतार है। एकातेरिनाके बाद जब रूसकी गद्दीपर जार बैठने लगे, तो उन्हे भी मगोल चगान खान (श्वेत राजा) कहने लगे।

शिक्षा और संस्कृति—केवल राजनीतिक दाव-पेचोंसे ही किसी भी राजशक्तिको एकताबद्ध और शक्तिशाली नहीं बनाया जा सकता, उसके लिये तो अधिक शक्तिशाली हथियारोंकी आवश्यकता होती है। अपने प्रतिद्वद्वियोंके मुकाबलेमें अधिक शक्तिशाली हथियारोंको ढूटते हुये आदमी बारूद-के हथियारो तक पहुचा, और उनमें भी एक दूसरेसे बाजी मार ले जानेके लिये उसने नये-नये आविष्कार किये, जिनके लिये आदमीको साइसकी ओर बढना पडा। जिसके साथ ही अब साइस तथा दूसरी विद्याओंकी प्रगति अनिवार्य हो गई। साइसके प्रसारके लिये पीतर I ने रूसी विज्ञान अकदमी (रूस्की अकदमी नाउक) कायम करनेके बारेमें सोचा था, जो १७२५ ई० मे ही उसके मरनेके

बाद स्थापित हुई। यह हम बतला चुके हैं, कि पीतरने पश्चिमी युरोपसे कितने ही विद्वानोको निमन्त्रित करके अपने यहा रक्खा था, जिनमे बरनूली और ल्योनहार्ड यूलर जैसे गणितज्ञ भी थे। रूसका पहला विज्ञानवेत्ता मिखाइल वासिली-पुत्र लोमोनोसोफ (१७११-६५ ई०) था। उसके रूपमें रूसकी प्रतिभा विद्याके वहुत-से क्षेत्रोमे प्रकट हुई। लोमोनोसोफ उत्तरी समुद्रतटके आरखगेल्स्क नगरसे नीतिदूर समुद्रतटके एक गाव देनिसोव्कामे एक खाते-पीते मछुयेके घरमे पैदा हुआ था। दस वर्षकी उमरमें वह अपने बापके साथ समुद्रमे मछली मारने जाया करता था, लेकिन लोमोनोसोफको जल्दी मालूम होने लगा, कि पढना अच्छी चीज है। आरखगेल्स्कमे कितने ही महीनों तक बहुत लम्बी रातें होती हैं। इन रातोमे वह अक्सर अक्षर, व्याकरण और गणित पढता था, क्योकि इस समय मछुवाही करनेके लिये जाना नही पडता था। पास हीके कस्बे खोल्मोगोरीमे एक स्कूल था, लेकिन मछुवेका लडका होनेके कारण उसे उसमे भर्ती करने से इन्कार कर दिया गया। लोमोनोसोफ विद्याके लिये इतना व्यग्र था, कि एक मछली ले जानेवाली नावपर उसने मास्कोकी ओर प्रयाण कर दिया। अपने किसान या मछुवेके लडके होनेको छिपाकर ही वह मास्कोकी स्लावानिक ग्रीक-लातिन-अकदमीमे प्रविष्ट हो सका। पाच वर्ष तक बडी कठिनाइयोके साथ उसने वहा अध्ययन किया। बीस साल के तगडे जवान विद्यार्थीसे उसके सहपाठी बायरो और धनी व्यापारियोंके लडके परिहास करते रहते थे। पढाई समाप्त करनेके बाद लोमोनोसोफको एक अवसर हाथ आया। सरकारकी ओरसे तीन विद्यार्थी उच्च-शिक्षाके लिये युरोप भेजे जानेवाले थे। लोमोनोसोफ असाधारण मेधावी विद्यार्थी था, और बायरोके लडकोमे से तीन मिल नही रहे थे, इसलिये उसे भी युरोप भेज दिया गया। उसने रसायन, धातुशास्त्र, खनिजशास्त्र और गणित अध्ययन करते हुये चार साल वहाके वैज्ञानिको और विद्वानो के सम्पर्कमें विताये। १७४५ ई० मे स्वदेश लौटनेपर उसे प्रोफेसर होनेके साथ रूसी विज्ञान अकदमीका पहला रूसी मेम्बर बननेका अवसर मिला। अब तकके बीस वर्षोंमे रूसी साइस अकदमीके सदस्य विदेशी विशेषकर जर्मन विद्वान् ही होते थे, जिनमेंसे कुछका ज्ञान बहुत ही उथला था। साइस के क्षेत्रमे लोमोनोसोफने कई नये आविष्कार किये, लेकिन अभी कोई गुणग्राहक नही था। लोमोनोसोफ के कितने ही आविष्कारो और वैज्ञानिक सिद्धान्तोकी पुष्टि १९वी सदीमे जाकर हुई। लोमोनोसोफने ही तापके यान्त्रिक सिद्धान्तको पहलेपहल बतलाया था। रसायनमे भी उसने जो नया सिद्धान्त निकाला था, उसका चालीस वर्ष बाद फ्रेंच रसायनवेत्ता लावाजियेने फिरसे पता लगाया, और आज वह सिद्धान्त उसीके नामसे विख्यात है। भूतत्त्वशास्त्रमे भी लोमोनोसोफने धातुओ और धुनोकी उत्पत्ति का अध्ययन किया, जिससे भूतात्त्विक खोजोमे बडी मदद मिली। वह पहला आदमी था, जिसने बतलाया, कि पत्थरका कोयला पथराये वृक्षो और वनस्पतियोका अवशेष है। युरोपमे वह पहला आदमी था, जिसने भौतिक रसायनकी व्याख्या करते हुये कई व्याख्यान दिये। ज्योतिषशास्त्र और नाविकशास्त्रके अध्ययनमे भी उसने बहुत समय लगाया। यगसे साठ साल पहले उसने पृथ्वीतलके कम्पनकी बातका पता लगाया। हर्शलसे तीस साल पहले उसने बतलाया, कि बुधके चारो तरफ वातावरण है। नान्सेनसे एक सौ पैंतीस वर्ष पहले उसने ध्रुवीय महासागरके बहनेकी दिशाकी सूचना दी। इस प्रकार हम देख सकते हैं, कि जिन बातोको हम पश्चिमी युरोप के वैज्ञानिकोकी मौलिक खोज मानते हैं, वह गलत है। युरोपियनोने भी विज्ञान की प्रगतिमे बहुत भाग लिया है, लेकिन यह केवल झूठा प्रचार है, कि युरोपीय दिमाग ही सभी बातोमे मौलिक होनेका ठेका लिये हुये है। रूसी दिमाग बहुत सी बातोमे उनसे आगे-आगे रहा। और तो और, परमाणु-विदरण का प्रायोगिक सिद्धान्त भी दो रूसी वैज्ञानिकोने पहलेपहल करके उन्हे छपवा भी दिया था, जिसके सहारे जर्मन और अमेरिकन विज्ञानवेत्ता आगे बढे। अपने साम्राज्यविस्तारके लिये जैसे युरोप हथियारोको चमकाने और लोगोमे फूट डालने की नीतिको इस्तेमाल करता रहा, वैसे ही अपनी दिमागी श्रेष्ठताका ढिंढोरा पीटकर भी उसने अपनी धाक जमानी चाही।

लोमोनोसोफ प्रयोगका बडा भारी पक्षपाती था। उसने तीन हजार प्रयोग करके रगीन काच बनानेकी पद्धतिका आविष्कार किया। लोमोनोसोफने ध्रुवीय सागरसे होकर पूर्वी एसियाको अभि-यान भेजनेके लिये नक्शा तैयार किया था। वह केवल शुष्क विज्ञानवेत्ता ही न था, बल्कि कवि और

साहित्यकार भी था। रूसी साहित्यको उसने धार्मिक भाषासे हटाकर जनभाषाकी ओर ले जानेकी कोशिश की। उसने वैज्ञानिक ढगपर एक अच्छा रूसी व्याकरण लिखा, जो कई पीढियों तक पढाया जाता था। उसकी प्रतिभाके बारेमे रूसके कालिदास अलेक्सान्द्र पुश्किनने लिखा था :

"अपने असाधारण बुद्धि-बलके साथ असाधारण इच्छाबल रखते हुये लोमोनोसोफने विद्याकी सभी शाखाओंका अवगाहन किया। उसमें ज्ञानकी असाधारण पिपासा थी। वह इतिहासकार, साहित्य-कार, यत्रशास्त्री, रसायनशास्त्री, धातुशास्त्री, चित्रकार और कवि था।"

लोमोनोसोफके अन्तिम वर्ष एकातेरिनाके शासनकालमें बीते। उसके कार्योंके रूपमें रूसी साहित्य, विज्ञानकी भव्य इमारतकी दृढ नीव पडी।

१८वीं सदीमें शिक्षाकी ओर शहरोंके मध्यवर्गके लोगोका ध्यान गया था। दूसरी शिक्षण-संस्थाओंमें जगह न मिलनेके कारण अध्यापकोंने अपने घरोंमें छात्रावास-सहित स्कूल खोल रक्खे थे। बायर और धनी लोग अपने लडकोंके पढानेके लिये विदेशी शिक्षक रखते थे। फ्रेंचकी महिमा बढती चली गई थी, और १८वीं सदीके मध्य तक अमीरोंके घरोमें रूसी नहीं फ्रेंच भाषा बोली जाती थी। हमारे आजके कितने ही हिन्दो-आग्लियन परिवारोकी तरह रूसी अमीर अपने भावोंको अपनी भाषामें मुश्किलसे प्रकट कर सकते थे। वह फ्रेंच बोलनेमें फ्रेंच लोगोका भी कान काटना चाहते थे। उनके यहा फ्रेंच अध्यापकोकी बडी माग थी, और फ्रासका कोई भी ऐरा-गैरा-नत्थूखैरा आकर रूसमें अमीरो के घरोमे अध्यापक बन जाता था। पुश्किनने अपने लघु उपन्यास "कप्तान कन्या" में इसका बडा परिहास किया है। लेकिन, इसका एक अच्छा पहलू भी था। प्रौढ फ्रेंच साहित्यसे रूसी साहित्यको आरम्भमे बडी प्रेरणा मिली। उन्हे पढकर रूसी लेखक मोलियेर, वोल्तेरकी नकल करना चाहते थे। पश्चिमी युरोपके साहित्यकी माग होनेसे उनके बहुतसे ग्रथोंके रूसीमे धडाधड अनुवाद होने लगे। लोमोनोसोफ-समकालीन सुमारोकोफ (१७१८-७७ ई०) रूसी भाषाका पहला ख्यातनामा लेखक है। उसने बहुत-से ग्रथ फ्रेंच शैलीपर लिखे, जिनमें उसके ऐतिहासिक दु खात नाटक, प्रेम-गीत और प्रहसन अधिक जनप्रिय हुये। अपने समयके मास्कोके बारेमें उसने लिखा था "यहाकी सभी सडकें अज्ञानकी ईटोंसे सात फुट ऊची चिनी गई है, जिनको तोडनेके लिये एक सौ मोलियरोकी अवश्यकता है।"

रूसी लेखकोंके मैदानमें आते ही फ्रेंच साहित्यका प्रभाव घटने लगा, यह सुमारोकोफके समयमें ही देखा जाने लगा। सुमारोकोफपर फ्रेंच क्लासिक और ग्रीक साहित्यका बडा प्रभाव था। वह रूसी साहित्यको भी उसी रगमे रगना चाहता था लेकिन उसके तरुण समसामयिक देनिस फोन-विजिन (१७८५-९२ ई०) ने साहित्यको रूसकी भूमि और रूसके जीवनमे लानेका प्रयत्न किया। १८वी सदीका अन्त होते-होते रूसको गवरील रोमन-पुत्र देर्झाविन (१७४३-१८१६ ई०) के रूपमें एक उच्च कोटिका कवि पानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने रूसी वातावरण और रूसी जीवनको अपनाकर अपनी कविताको जनताके समीप ला दिया। इसके बाद रूसी साहित्य युरोपका भिखारी नहीं रह गया। उसने अपने लेखक और साहित्यकार इतने उच्चकोटिके पैदा किये, जिनका लोहा सभी जगह माना जाने लगा। निकोलाई मिखाइल-पुत्र करमजिन (१७६५-१८२६ ई०) ने अपनी विदेश-यात्राओं द्वारा पश्चिमी युरोपके जीवन और संस्कृतिका चित्र खीचकर रूसी पाठकोंके सामने रखा। करमजिनकी "बेचारी लीजा" कथा एक समय बहुत प्रचलित थी, लेकिन करमजिनने पीछे अपना सारा समय रूसी इतिहास लिखनेमे दे दिया।

एकातेरिनाके शासनकालमें नाट्यकला और सगीतकी भी प्रगति हुई। १७५६ ई० में रानी एलिजाबेतके शासनकालमे "दु खान्त-सुखात अभिनयका रूसी तियात्र" के नामसे पीतरबुर्गमे पहली स्थायी नाट्यशालाका उद्घाटन हुआ। सुमारोकोफ उसका पहला सचालक नियुक्त हुआ, और वोल्कोफ तथा उसके साथी पहले अभिनेता। वोल्कोफ १७६२ ई०मे मर गया, जब कि रूसी नाट्यकलाकी प्रगतिका द्वार खुल चुका था। राजधानीके अभिनयोंको देखकर दीहातके अमीरोंने भी अपने यहा निजी रंग-शालायें खोली। हमारे यहा आज भी सूर, तुलसीके धार्मिक गीतोका ही सगीतमे प्राधान्य चला जा रहा है, लेकिन रूसमे १८वी सदीमे ही धर्मनिरपेक्ष सगीतका खूब प्रचार होने लगा था। एकातेरिनाके शासन-काल हीमें ओपेरा (पद्यनाटक) का भी प्रचार हो चला।

इसी कालमे चित्रकला और वास्तुकलाने भी रूसमे प्रगति की, जिसमे पश्चिमी कलाकारोकी सहायता लाभदायक सिद्ध हुई। रूसी वास्तुशास्त्री बाजेनोफने कई अच्छी-अच्छी इमारते बनाई। उसकी प्रतिभाकी ख्याति देशकी सीमासे बाहर पहुच गई और फ्रासके राजाने बहुत अधिक वेतन देकर उसे बुलाना चाहा, लेकिन बाजेनोफने अपनी प्रतिभाको अपनी जन्मभूमिकी सेवामे ही लगाना चाहा। उसकी बनाई हुई इमारतोमे प्स्कोफ-प्रासाद (आधुनिक लेनिन पुस्तकालय) मास्कोमे अब भी मौजूद है।

यान्त्रिक आविष्कारोमे भी लोमोनोसोफके दिखलाये रास्तेको रूसियोने आगे बढाया। इवान इवान-पुत्र पोल्जुनोफ (१७२६-६६ ई०) उरालकी किसी छावनीके एक सिपाहीका लडका था, जिसने "अग्नि-चालित इजन" का पहलेपहल आविष्कार किया। उस समय तक पानीकी शक्तिको इस्तेमाल करनेवाले कारखाने जहा-तहा बन चुके थे, लेकिन ऐसे कारखाने उन्ही जगहोपर बन सकते थे, जहा बहते पानीकी तेज धारा हो। पोल्जुनोफने वाष्प-चालित यन्त्रोके कारखानोको किसी भी स्थानपर स्थापित करनेके ख्यालसे अपने अग्नि-चालित इजनका आविष्कार किया, लेकिन उसे बर्नौल (अल्ताई पर्वत) मे अपने वाष्प-इजनको चलाकर अपना जीवन खतम कर देना पडा। जेम्स वाटको आज वाष्प-इजनका आविष्कारक कहा जाता है। उससे इक्कीस वर्ष पहले पोलजुनोफने दुनियाका प्रथम वाष्प-इजन तैयार किया था। आविष्कारकी प्रतिभा रूसमे मौजूद थी, लेकिन सामन्तशाही रूस ऐसी प्रतिभाओको प्रोत्साहन देनेके लिये तैयार नही था। १८वी सदीके दूसरे रूसी आविष्कारक इवान पीतर-पुत्र कुलिबिन (१७३५-१८१८ ई०) की भी उसी तरह उपेक्षा हुई, जैसी पोल्जुनोफकी। कुलिबिनने अपने बचपनमे ही एक मित्रके घरमे दीवार-घडी देखी, और कुछ ही दिनो बाद उसने लकडी की उसी तरहकी घडी बना दी। बापके मरनेपर वह दूकानके कामके साथ-साथ समय बचाकर घडिया बनाने लगा। उसने और उसके साथियोने पाच वर्ष लगाकर अडेके बराबरकी एक घडी बनाई, जिसका उस समय बहुत फैशन चल पडा था। कुलिबिनने अपनी घडी एकातेरिनाको भेट की। एकातेरिनाने उसे साइस अकदमीका यान्त्रिक नियुक्त किया। कुलबिनने नेवा नदीके लिये एक मेहराब-वाले लकडीके पुलका नक्शा तैयार किया, लेकिन उसके नमूनेको आखसे देखनेके बाद भी किसीने काममे लानेका ख्याल नही किया। कुलिबिन अन्तमे बडी गरीबीका जीवन बिताते हुये अपने नगर निजनी-नोवगोरद (आधुनिक गोर्की) मे मरा।

रूस प्रतिगामिताका गढ—एकातेरिनाके समय रूस जिस तरहका रूप ले रहा था, उसके बारे-मे हम बतला चुके। रूसमे फ्रेच साहित्य और विचारोका बडा मान था, लेकिन इसी समय १७८९ ई० मे फ्रेच क्राति हुई, जिसने बतला दिया कि सामन्तशाहीकी नीव बडी निर्बल है। फ्रेच क्रातिको देखकर युरोपके सभी मुकुटधारी कापने लगे थे। इसी समय रूसने एकातेरिनाके मुहसे कहल-वाया—"फ्रेच राजाका काम सभी राजाओका काम है।" उसने दृढतापूर्वक घोषित किया, कि मै कही भी चमारो (मजूरो) को राज्य-शासन करने नही दूगी। इसे सयोगकी ही बात कहिये, कि एकातेरिनाके स्थानपर रूसका सबसे शक्तिशाली शासक योसफ स्तालिन एक चमारका ही लडका था। सोलहवे लुईको जब फ्रासमे मृत्युदड दिया गया, तो सबसे पहले एकातेरिनाने फ्रेच गणराज्यमे सबध विच्छेद कर लिया, फ्रासमे रहनेवाले सभी रूसियोको बुला लिया, और क्रातिसे सहानुभूति रखनेवाले फ्रासीसियोको रूससे निर्वासित कर दिया। एकातेरिनाको "फ्रेच महामारी" का सबसे अधिक डर था, लेकिन उसके ही शासनकालमे फ्रेच क्रान्तिकी विचारधाराके पिताओ—वोल्तेर, दिदरो, रूसोकी पुस्तके प्राय सभी रूसी अमीरोके घरोमे पाई जाती थी, वह उन्हे मूल फ्रेचमे पढते थे। इन पुस्तकोका प्रभाव रूसियोकी विचारधारापर भी पड रहा था, और वह भी समता, भ्रातृभावके पक्षपाती होते जा रहे थे। ऐसे प्रगतिशील तरुणोमे अलेक्सान्द्र रादिश्चेफ पहला आदमी था। वह एक अमीर घराने में १७४९ ई० मे पैदा हुआ था। उसने जर्मनीके लाइप्जिक विश्वविद्यालयमे अध्ययन किया था। समानता और स्वतन्त्रताके विचारोसे भरे हुये रूसोके ग्रथोने उसपर बहुत प्रभाव डाला, और वह स्वेच्छाचारी शासनको बहुत घृणाकी दृष्टिसे देखने लगा। १७९० ई० मे उसने अपनी प्रथम पुस्तक "पीतरबुर्गसे मास्कोकी यात्रा" प्रकाशित की। पुस्तककी छ सौ पचास ही प्रतिया निजी तौरसे

छापी गई थी। एकातेरिनाने इस पुस्तकको देखकर कहा—"यह तो पुगाचेफसे भी भारी बदमाश है। इसके लिये दस फासीकी टिकटिया भी पर्याप्त नही होंगी"। उसने रादिश्चेफको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया। रादिश्चेफने अपनी पुस्तककी भूमिकामे लिखा था

"जब मैने अपने चारो ओर देखा, तो मानवताकी पीडासे मेरा हृदय फटने लगा।" जमीदारोके अत्याचारोंके बारेमे उसने लिखा था—"यह क्रूर पशु, कभी न अघानेवाली जोके, किसानोंके लिये वही छोडती है, जिसे वह लेना नही चाहती। जमीदार किसानोंके लिये विधान-निर्माता, न्यायाधीश है, जिसके कारण कोई अपने बचावके लिये एक शब्द भी नहीं कह सकता।" रादिश्चेफ समझता था, कि इन पशु-जोंक-जमीदारोका सीधा सबध जारके सिंहासनमे है, इसलिये अपनी यात्रामें उसने "स्वतन्त्रता" के नामसे जिस गीतको दिया था, उसमे "लोहेके सिंहासन" को नष्ट करनेके लिये जनताके भयकर बदलेकी बात लिखी थी। सामन्तघरमे पैदा हुआ रादिश्चेफ रूसका पहला क्रातिकारी, प्रजातत्र-पक्षपाती तथा प्रगतिशील विचारक था। अदालतने उसे मृत्युदड दिया, जिसे पीछे दस वर्ष साइबेरिया-निर्वासनके रूपमे परिणत कर दिया गया। एकातेरिनाने रादिश्चेफकी पुस्तककी होली जलवाई। एकातेरिनाके मरनेके बाद उसके उत्तराधिकारी पुत्र पावल I ने जब सार्वजनिक क्षमादान दिया, तो रादिश्चेफको भी साइबेरियासे लौटनेका मौका मिला, लेकिन उसका राजधानीमें आना निषिद्ध था, और अलेक्सान्द्र I (१८०१-२५ ई०) के समयमे ही उसके ऊपरसे यह निर्बंध हटाया गया। उसने स्वतन्त्रता और समानताके आधारपर राज्यशासनमे सुधार करनेकी योजना बनाई। सत्ताधारी उसे फिर साइबेरियामे निर्वासित करनेकी सोच रहे थे, इसपर रादिश्चेफने विष खाकर १८०२ ई० मे अपने जीवनका अन्त कर लिया। एकातेरिनाके समयके स्वतन्त्र विचारकोंमें निकोलाइ नोविकोफ भी था, जिसने नये विचारोंके प्रचारके लिये पुस्तककी दूकान खोली थी। उसने एक प्रहसन और व्यगभरी पत्रिका "त्रूतेन" तथा और भी पत्र निकाले। अपने व्यगोमे वह शासकोंकी अच्छी खबर लेता था, और किसानो और अर्ध-दासोकी पीडाको बडे सजीव रूपमे रखता था। उसकी पुस्तक "एक स्वामीका अपने गावके किसानोंके साथ पत्र-व्यवहार" मे बडे ही मार्मिक रूपमे किसानोकी विपदाका चित्रण किया गया था।

१३ पावल I, पीतर III-पुत्र (१७९६-१८०१ ई०)

पावलके शासनके रूपमे अब हम रूसके उस समयमे आ जाते है, जब कि भारतमे रही-सही सामन्तोंकी स्वतन्त्रता भी अग्रेज बनियोंकी ईस्ट इडिया कपनी छीन रही थी। एकातेरिना अपने पतिके मरवानेसे ही सतुष्ट नही थी, बल्कि उसकी महत्त्वाकाक्षाने अपने पुत्रके साथ भी सौहार्द स्थापित करने नही दिया। पावलको उसकी दादी एलिजाबेतने पाला था। वह समझता था, मेरी माने मेरे उचित अधिकारको छीन रखा है। एकातेरिना भी इसे समझती थी, इसीलिये वह पावलको राजकाजमें हाथ डालनेका मौका नही देती थी। पावल माकी ओरसे दी हुई अपनी जमीदारी गत्चिनामे अपना सारा समय सैनिक कार्योंमे बिताता था। उसने गत्चिनाको फ्रेड्रिक II के सैनिक नियमोंके अनुसार एक युद्ध-शिविर बना दिया था, जहापर सैनिकोको प्रुशियन सेनाकी वर्दी पहनाकर डडोंके हाथों कवायद-परेड कराई जाती थी। सिंहासनपर बैठते ही पावलने बापके कदमोपर चलते रूसी सेनाको प्रुशियन सेनाके रूपमे परिणत करना शुरू किया। उस समय राजधानी (पीतरबुर्ग) भी बहुत कुछ एक सैनिक शिविरकी तरह मालूम होती थी। राज्यके सभी विभागोंमे उसने कठोर सैनिक अनुशासनके बरते जानेकी माग की। फ्रेंच-क्रातिकी छाया अभी भी युरोपमे लुप्त नही हुई थी। उसके बारेमे वह अपनी मासे बिलकुल सहमत था। विदेशी आकर कही क्रातिकी महामारी न फैला दें, इसलिये उनके आनेमे उसने निषेध और रुकावट डाल दी। वह रूसी अमीरोको भी युरोपके विश्वविद्यालयोंमें पढनेके लिये जानेकी इजाजत नही देता था। बाहरसे हर तरहकी पुस्तकोका आना उसने बद कर दिया। उसने जमीदारोके साथ पहलेसे भी अधिक पक्षपात किया—अपने चार वर्षके शासनमें उसने तीन लाखसे अधिक किसानोको उनके मालिकोंका अर्ध-दास बना दिया। इसका परिणाम किसानोका विद्रोह छोड और क्या हो सकता था? ५० गुबर्नियोमेसे बत्तीसमे किसानोंके विद्रोह हुये, जिन्हें दबानेके

लिये पावलने अपनी सेनाका बडी क्रूरतापूर्वक उपयोग किया। उस समय अर्ध-दासोके विक्रयके विज्ञापन सरकारी समाचारपत्रमे बराबर निकला करते थे, जिसके कुछ उदाहरण है "विक्रीके लिये दो परिवार अर्ध-दास, जिनमेसे एक कोडे और जूते बनानेवाला तीस वर्षका विवाहित मर्द है, उसकी स्त्री धोबिन है, जो पशुओको चरा सकती है। आयु पच्चीस वर्ष। दूसरा परिवार एक गायक-वादक सत्रह वर्षके मर्दका है दाम-कामके लिये लिखो, १७-१ अरबत, आप्त १।"

जिस वक्त पावल गद्दीपर बैठा, उस वक्त १७९५ ई० वाली रूस-इगलैंडकी मैत्री-सन्धिके अनुसार रूस भी फ्रासके विरुद्ध लड रहा था। पावलने गद्दी सभालते ही अपने देशको विश्राम देनेका निश्चय किया, और अग्रेज राजदूतको सूचित कर दिया, कि हमारी माने सेना भेजनेके लिये कहा था, लेकिन उसे भेजा नही जा सकता। इगलैंडने पावलको प्रलोभन देकर लडाईमे रखना चाहा, और कार्सिका द्वीपपर अधिकार करनेके लिये कहा। मिस्र जाते वक्त नेपोलियनने माल्ता द्वीपपर अधिकार कर लिया था, जो कि भूमध्यसागरमे बडे सैनिक महत्वका स्थान था। पावल भी अपनी माकी तरह चाहता था, कि भूमध्यसागरमे पैर रखनेका कोई स्थान मिले। माल्ता-धार्मिक-सगठन माल्ताद्वीपका मालिक था, जिसका जारके दरबारके साथ विशेष सबध था। उसने पावलको सहायताके लिये बुलाया। उधर नेपोलियनने जब तुर्कोंके अधीन देश मिस्रपर आख गडाई, तो तुर्कोंने भी अपने पुराने शत्रु रूसके साथ फ्रासके खिलाफ सैनिक सधि कर ली। अगस्त १७९८ ई० मे कालासागर के रूसी जगी बेडेके सेनापति अदमिरल उशाकोफको हुक्म हुआ, और वह सोलह जहाजो, सात सौ बानवे तोपो और आठ हजार नौसैनिकोंके साथ तुर्की जगी बेडेकी मददके लिये फ्रासीसियोके खिलाफ चल पडा। छ सप्ताहमे उशाकोफने यूनिया (यवन) द्वीपोमेसे चार छोटे-छोटे द्वीपोपर अधिकार कर कोरफू द्वीपको लेनेके लिये प्रयाण किया। उस समय वहा छ सौ पचास तोपोके साथ तीन हजार फ्रेंच सैनिक रहते थे। मुकाबिला बहुत सख्त हुआ, लेकिन १८ फर्वरी १७९९ ई० को कोरफूकी फ्रेंच सेनाने आत्म-समर्पण कर दिया। कोरफूके जीतनेके बाद रूसी सेना दक्षिणी इतालीके तटपर उतरी। इतालियन जनता नेपोलियनके विदेशी शासनसे घृणा करती थी। रूसियोने उसकी सहायतामे नेपल्स और रोमपर अधिकार कर लिया। रूसी सामुद्रिक युद्धविद्याका मूलाचार्य उशाकोफ माना जाता है, और स्थलीय युद्धविद्याका सुवारोफ।

१७९९ ई० के आरम्भमे प्रजातत्री फ्रासके विरुद्ध रूस, इगलैंड, आस्ट्रिया, तुर्की तथा नेपल्स-राज्यकी एक गुट बनी। जनवरी १७९९ ई० मे नेपोलियनकी सेनाको हराकर नेपल्सवाल्लोने अपना गणराज्य घोषित किया। पावल नही चाहता था, कि नेपल्समे उसके मित्र राजाका इस प्रकार अन्त होकर उसकी जगह इतालीमे पेरिसका एक नया सस्करण स्थापित हो। पावलने नेपल्सके राजाकी मदद के लिये ग्यारह हजार सेना भेजकर हुक्म दिया, कि आस्ट्रियाकी मददके लिये पहिले भेजी गई बीस हजार सेनासे मिलकर आगे बढो। आस्ट्रियन सरकारकी मागपर पावलने सुवारोफको सेनापति नियुक्त किया। सुवारोफ आज सोवियत रूसका भी सबसे अधिक सम्माननीय योद्धा है, जिसने उसके नामसे वीरताका एक उच्च तमगा प्रचलित किया। वह १७३० ई० मे एक सैनिक अफसरके घर मास्कोमे पैदा हुआ था। बचपनमे उसका स्वास्थ्य बहुत खराब और शरीर बडा दुर्बल था, इसलिये पिताने उसे लडकपनमे सेनामे शामिल नही किया, लेकिन लडकेने बचपनसे ही सैनिक बातोमे दिलचस्पी लेनी शुरू की और बापके पासकी सभी सैनिक पुस्तकोको बडे ध्यानसे पढ डाला। बारह वर्षकी उमरमे उसे रेजिमेटमे नाम लिखानेका मौका मिला और सत्रह वर्षकी उमरमे कारपोरल (हवल्दार) के तौरपर उसने सैनिक जीवन आरम्भ किया। आगे तुर्की और पोलन्दके युद्धोमे उसने अपने युद्ध-कौशलका परिचय दिया, जिसके कारण उसे फील्ड-मार्शल बना दिया गया। वह गतानुगतिक नही, बल्कि "बेलीकपर चलने-वाला सिंह था।" उसने युद्धविद्यामे कई नई बाते निकाली, जिनको आज भी लाल सेना बडे आदरसे स्वीकार करती है। फ्रेड्रिक II भी एक नये सैनिक विज्ञान और सगठनका आविष्कारक माना जाता है, लेकिन उसका विचार था "सिपाही सिर्फ एक यत्र है, जिसे नियमोके अनुसार चालित होना चाहिये।" पावल फ्रेड्रिकके ही सैनिक आदर्शको मानता था, लेकिन सुवारोफ इससे बिल्कुल उलटा था। उसका कहना था "केशचूर्ण बारूदका चूर्ण नही है, झूठे ताल्

तोपें नहीं हैं, लम्बी चोटी तलवारें नहीं हैं। मैं जर्मन नहीं, बल्कि जन्मजात रूसी हूं।" भला पावल ऐसे आदमीको क्यों पसद करता ? १७९७ ई० में उसने फील्ड मार्शल सुवारोफको उसकी जमींदारीमें निर्वासित कर दिया। लेकिन जब अंग्रेज और आस्ट्रियन मित्रोंने जोर दिया, तो फिर उसने सुवारोफको बुलाकर १७९९ ई० में फ्रासके साथ लडनेवाली मित्रोंकी सेनाओंका प्रधान सेनापति बना दिया। सुवारोफने साढे तीन महीनेके भीतर श्रेष्ठ फ्रेंच सेनापतियोंकी सेनाओंको बुरी तरह से हरा, सारे उत्तरी इतालीसे फ्रासीसियोंको निकाल बाहर किया। आस्ट्रिया सारे इतालीको अपने हाथमें करनेकी घातमें था, इसलिये बहाना बनाकर सुवारोफको स्विट्जरलैण्ड भेज दिया गया। बडे भीषण पहाडी रास्तों और नदियोंको पार करते हुये सुवारोफ स्विट्जरलैंडकी ओर गया। एक जगह उसकी बीस हजार सेना साठ हजार फ्रासीसी सैनिकों द्वारा घेर ली गई। उस समय रूसियोंके पास पर्याप्त रसद, गोला-बारूद और तोप भी नहीं थी। इस स्थितिको देखकर उसने अपनी युद्ध-परिषद् में कहा—"हमें क्या करना होगा ? पीछे हटना अपमानकी बात है, मैं कभी नहीं पीछे हटा। आगे श्वाइजकी ओर बढ़ना, असम्भव, वहा ससेनाके पास साठ हजार सैनिक हैं, जब कि हमारे पास केवल बीस हजार हैं। साथ ही हमारे पास न रसद है, न गोला-बारूद और न तोपखाना। हमें किसी तरहसे भी मदद मिलनेकी आशा नहीं है। हमारे लिये बस एक ही आशा है, अपनी सेनाकी हिम्मत और आत्म-बलिदानकी भावना। हम रूसी हैं।" इसके बाद फ्रासीसियोंके प्रहारको रोकते हुये सुवारोफकी सेनाने ४ अक्तूबर १७९९ ई० की रातको आल्पके हिमाच्छादित शिखरोंको पार करनेके लिये पानिखेर डाडेका रास्ता लिया। पहाड बहुत ऊंचे और सीधे खडे थे। सिपाहियोंको कितनी ही जगह हाथों और पैरोंसे चिपक करके बर्फके ऊपर या सीधी खडी चट्टानोंपर सरकना पडा। एक खडी उतराईमें पकडनेके लिये न कोई पेड था, न चट्टान। सुवारोफके प्रोत्साहनके सामने रूसी सैनिकोंके लिये कोई भी बात असभव नहीं थी। वह अपनी बन्दूकें पकडे इस भीषण उतराईमें बर्फपर फिसल पडे। डाडा पार करनेके बाद अंत में सुवारोफकी सेनामें पद्रह हजार आदमी बच रहे। आस्ट्रियाने रूसके साथ वचनका पालन नहीं किया।

सुवारोफने इतालीमें जिस तरह चमत्कारपूर्ण विजय प्राप्त की, उससे इंगलैंड, आस्ट्रिया और रूसके बीच में ईर्ष्या और आशका पैदा होने लगी। आस्ट्रियावाले गुप-चुप फ्राससे सधि करनेके लिये बातचीत चलाने लगे। इसपर पावलने आस्ट्रियाको लिखा

"भविष्यमें तुम्हारी भलाईका ख्याल मैं छोड दूंगा, और केवल अपने और अपने मित्रोंके हितको देखूंगा।" उसने गुस्सामें हो सुवारोफको रूस लौटनेके लिये लिखा "तुम्हें राजाओंकी रक्षा करनी थी, अब तुम्हें रूसके योद्धाओं और अपने राजाके सम्मानकी रक्षा करनी है।"

सुवारोफ बडी कठिनाइयोंके साथ अपनी सेनाको रूस लौटा ले आया, और उसे रूसकी सारी सेनाका "गेनरलिस्सिमो" (महामहासेनापति) की उपाधि प्रदान की गई। लेकिन थोडे ही समय बाद फिर जारने सुवारोफको उपेक्षित कर दिया, राजधानीमें आनेपर लोग उसका राजसी स्वागत न करें इसके लिये उसका दरबारमें आना मना कर दिया। इसी तरह अपमानित और उपेक्षित रहते १८ मई १८०० ई० को यह महान् सेनापति मरा। लेकिन आजका रूस उसे जितना सम्मान प्रदान कर रहा है, उतनेकी सुवारोफने आशा भी न की होगी।

इसी बीच पावल और इंगलैंडके भी सबध बुरे हो गये, जब कि इंगलैंडने माल्तापर अधिकार कर लिया। नेपोलियनने इस सुअवसरसे फायदा उठाते हुये पावलके साथ समझौता करना चाहा, और माल्ताको फिरसे अधिकार करनेपर उसे रूसको देने तथा बदलेमें अपने सैनिकोंको लौटानेकी माग किये बिना सारे हथियारोंके साथ रूसी कैदियोंको मुक्त कर देनेका वचन दिया। दिसम्बर १८०० ई० में पावलके साथ नेपोलियनने निजी लिखा-पढी शुरू की, जिसका जवाब पावलने भी इंगलैंडके विरुद्ध जहर उगलते हुये दिया "इंगलैंड अपनी ईर्ष्या, धोखेबाजी और धनसे ही फ्रासका केवल प्रतिद्वद्वी नहीं, बल्कि हीन शत्रु होगा। धमकी, षड्यत्र और पैसोंसे इंगलैंडने सभी राज्योंको फ्रासके खिलाफ खडा कर दिया—उसके इस पापमें हम भी सम्मिलित हो गये।" अब फ्रासकी भी स्थिति बदल गई थी। नेपोलियनने फ्रेंच-क्रांतिका गला दबाते ९ नवम्बर १७९९ ई० की प्रतिक्राति द्वारा वहां

अपनी सैनिक तानाशाही स्थापित कर दी थी। रूस और फ्रासने चाहा, कि दोनो मिलकर भारतसे अग्रेजोके शासनको खतम कर दे। जनवरी १८०१ ई० मे पावलने दोन-कसाक सेनाको हुक्म दिया, कि वह ओरेनबुर्गसे वुखारा और खीवा होते सीधे सिंधु नदीकी ओर कूच करे। बिना तैयारी किये हुये इतने वडे अभियानका स्थलमार्गसे भेजना बुद्धिमत्ताकी वात नही थी, इसलिये पावलके मरते ही नये सम्राट् अलेक्सान्द्र I ने अभियानको रोक दिया। अपने अन्तिम जीवनमे पावलको काकेशस और ईरानके रास्ते भारत पहुचनेकी धुन सवार थी। १८ जनवरी १८२१ ई० को उसने गुरजी (जार्जिया) और रूसके स्वेच्छापूर्वक एकतावद्ध होनेकी घोषणा निकाली। अभी हिन्दुस्तानमे अग्रेजोकी जड अच्छी तरह नही जमी थी, इसलिये पावलकी गतिविधिसे अग्रेज वहुत चिंतित थे। पीतरवुर्गमे स्थित अग्रेज राजदूत भी उस षड्यत्रमे शामिल था, जिसमे पावलको अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा। ११ मार्च १८२१ ई० की रातको युवराज अलेकसान्द्रकी शहसे षड्यन्त्रियोने पावलके कक्षमे घुसकर उसे मार डाला।

साइबेरियाकी जातिया—यह हम वतला चुके है, कि कैसे येरमकने १६वी सदीमे सिविर राजधानीको लेते वहाके खानको खतम किया, और राजधानीके नामपर देशको सिवेरिया (साइवेरिया) नाम देते रूसकी सीमाको इर्तिश और तोवोल नदियोके तट तक पहुचा दिया। १७वी सदीमे येनीसेइ नदीके तटसे लेकर अखोत्स्क समुद्र तक सारा पूर्वी सिवेरिया भी रूसके हाथमे चला गया। इस विशाल भूभागमे भिन्न-भिन्न सामाजिक और आर्थिक विकासकी स्थितिकी कई जातिया रहती थी। येनिसेइसे पूर्व अखोत्स्क समुद्र तक इवेंकी (तुङ्-गुस) लोग रहते थे, जो कि पुराण-एसियाई जातिसे सवधित थे। उनके अपने वडे-वडे कवीले थे, जिनके अक्सर आपसमे खूनी झगडे हुआ करते थे। जाडोमे ये लोग सिवेरियाके ताइगामे शिकार करते और गर्मियोमे मछलीके मौसिममे नदियोके किनारे चले आते। गर्मियोमे उनके तम्बू भोजपत्रके छालसे ढके रहते, और जाडोमे वह चमडेके होते। वारहसिगा उनका पालतू पशु था, जिसपर वह अपने सामानको ढोया करते थे। अपने दक्षिणी पडोसियोसे उनको लोहा मिल जाता था। कोई-कोई कवीले हड्डियोके वने हुये कवचको भी इस्तेमाल करते। भडकीले रगवाले कपडे और चमकीले आभूपण उन्हे वहुत पसद थे। वह अपने सारे चेहरे पर गोदना गुदवाते थे। इवेंकी वडे लडाकू लोग थे। उनके ऊपर अपने ओझो-सयानोका वडा प्रभाव था। ये ओझा-सयाने देवताओको अपने सिरपर वुलाते, विशेप पोशाक पहिनकर तम्बूरिन वजाते खास नाच नाचते थे।

आमूर नदीके मुहानेपर भी प्राचीन पुराण-एसियाई जातिसे सवध रखनेवाली नीवखी (गिलियक) लोग रहते थे, जिनकी मुख्य जीविका मछुवाही थी।

उत्तर-पूर्वी सिवेरियामें ओदूल (यूकागिर), निमिलन (कोर्याक), लूओरावेतलन (चुकची), इतेल्मेन (कम्सूचदाल) जातिया अव भी वर्वर अवस्थामे रहती थी। उन्हे लोहेका पता नही था। उसकी जगह वह चकमक-पत्थर तथा हड्डियोके हथियारोका इस्तेमाल करती थी। उनके छुरे पत्थरके होते थे, और वाणोंके फल चकमकके। लोहेका परिचय उन्हे पहलेपहल रूसियोद्वारा मिला, इसीलिये अपनी जन-कथाओमें वह रूसियोको "लौह-पुरुप" कहने लगे।

ऊपरी येनिसेड उपत्यकामे प्राचीन कालसे येनिसेइ-किरगिज नामक एक तुर्की जाति रहती थी, जिन्हे चीनी लोग खकास कहते थे, और आज भी खकास ही कहा जाता है। किरगिज येनिसेइके मैदानोमें घुमन्तू-पशुपालोका जीवन विताते थे। अल्ताईके पहाडोमे भी कितनी ही पहाडी जातिया वसती थी, जिनमेंसे कुछ लोहधूनसे लोहा वनाकर कई तरहके लोहेके सामानको तैयार करती थी। अल्ताईके इन लोगोको ओइरोत-मगोलोने अपने भीतर हजम कर लिया, जिससे इस इलाकेका नाम ओइरोतिया पडा—आज यह ओइरोत-स्वायत्त-जिलेके नामसे सोवियत सघका एक भाग है।

एवेंकियोकी भूमिके मध्यमे लेना-उपत्यकाके पिछले हिस्सेमे तुर्की जातिके याकूत रहते थे। उनकी परपरासे मालूम होता है, कि एवेंकियोके साथ भारी सघर्पके वाद वैकाल-पार इलाकेके दक्षिणसे आकर वह लेना नदीके तटपर रहने लगे। १७वी सदीमें याकूत अपने पडोसियोकी अपेक्षा अधिक सभ्य थे। उनकी मुख्य जीविका पशुओ और घोडोका पालन थी। वह लकडीके झोपडोमे रहते थे, जिनको आग

जलाकर गरम किया जाता था। धातुका काम भी वह पुराने ढगसे जानते थे। उनके बनाये हुये लकडी की मुट्ठीवाले छुरे तथा कवच रूसी भी बहुत पसद करते थे। १७वी शताब्दीमे जन-व्यवस्था याकूतोमेसे उठने लगी, जब कि उनके सरदारोंके पास पशुओंके बडे-बडे रेवड और धन एकत्रित होने लगा। उनके पास साधारण चाकर और दास भी रहते थे। येनिसेइकी शाखा अगारा नदी, बैकाल सरोवर, और ऊपरी लेनाकी भूमियोमे बुर्यत मगोल लोग रहते थे। यद्यपि इनकी मुख्य आजीविका पशु-पालन था, लेकिन वह थोडी-थोडी खेती और बदलेनके रूपमे कुछ व्यापार भी कर लेते थे। शिकार भी करते थे, लेकिन वह जीविकाका मुख्य साधन नही था। याकूतोकी तरह बूर्यतोंके भी शासक उनके सरदार होते थे। आमूर नदीके किनारे दौर और दूसरी मचुरियावाली जातिया रहती थीं। १७वी सदी मे दौर उच्च सभ्यताके धनी हो चुके थे। वह गावोमे रहते, कई तरहके अनाजो और साग-भाजीकी खेती करते तथा फलदार बगीचे लगाते थे। पशुपालन तो वह करते ही थे, साथ ही उन्होने चीनसे मुर्गी पालना भी सीख लिया था। जगलमे समूरी जानवरोका शिकार भी उनके लिये बहुत लाभकी चीज थी। कृषि और समूरी छालके कारण समृद्ध इस इलाकेकी ओर चीनी सामन्तोका भी ध्यान गया था, और उन्होने वहा अपनी धाक जमा रक्खी थी। प्रतिवर्ष चीनी व्यापारी अपने मालको लाकर यहा मागे दामोमे बेच बदलेमे समूरी खाल और दूसरी चीजें सस्तेमे ले जाते थे। दौरोमे धनी लोग अब चीनी रेशम पहनते, चीनी बर्तनोका इस्तेमाल करते तथा मकान बनाकर चीनियोंकी तरह अपने गवाक्षोको कागजसे टाकते थे। उनकी पोशाक भी चीनियो जैसी थी। दौरोके पास कितने ही दुर्गबद्ध नगर थे। किस तरह रूसी कसाको और दूसरे साहस-यात्रियोने पूर्वी साइबेरियामे बढकर आमूरके मुहाने तकके सारे भूभागको जीता यह हम बतला चुके हैं।

येरमक (१५८१ ई०), खबारोफ (१६४९-५४ ई०) और पीछे मुरायेफ (१८४७— ई०) साइबेरियामे रूसके प्रसारके सबसे बडे वाहक थे। येरमक और खबारोफके कामोंके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं, और यह भी, कि किस तरह चीनके साथ होते सीमाती झगडोंके बारेमें दोनो राष्ट्रोने प्रयत्न करके समझौता किया।

पावल I १९वी सदीके पहले वर्षमे मरा। उस समयतक रूसके राज्यका विस्तार पूर्वी पोलैंडको लेते प्रशान्त महासागर और बेरिंगकी खाडीतक था। उत्तरमे वह ध्रुवीय महासागरसे लेकर दक्षिणमे मध्य-एसियाके सीमाततक ही नही, बल्कि कही-कही उसके भीतर भी घुसा हुआ था। काकेशस में गुरजी और उत्तरी आजुर्बाइजान उसके हाथमें थे। रूसी सेनाओंने रोम, आल्प्स और बर्लिन तककी विजय-यात्राये की थी। पावल हिन्दुस्तानसे अंग्रेजोको भगाकर अपना शासन कायम करना चाहता था। इस प्रकार १८वी सदीके अन्ततक रूस दुनियाका एक बहुत ही शक्तिशाली देश बन गया था, इसमे सदेह नही। अभी इगलैड उसके मुकाबिलेमे एक धनी बनियेसे अधिक हैसियत नही रखता था, लेकिन सारी १९वी सदीमे, जहा अंग्रेजोने नई वैज्ञानिक खोजोंसे लाभ उठाकर अपने देशको उद्योग-प्रधान बनाते हुये पूजीवादी शासनकी दृढ स्थापना की, वहा रूसी अभी सामन्तशाहीका मोह छोडने के लिये तैयार नही थे, जिसके कारण वह अंग्रेजोंके सामने पिछड गये—इस पिछडेपनको बडी तेजीके साथ सोवियतके समाजवादी शासनने दूर किया।

३. (१ जार-वंशवृक्ष)
(१५९८—१८०१ ई०)

(गदुनोफ) — बोरिस, इरिना
बोरिस — फ्योदोर
इवान — फ्योदोर
इरिना = फ्योदोर = ...
(रोमनोफ) — ....

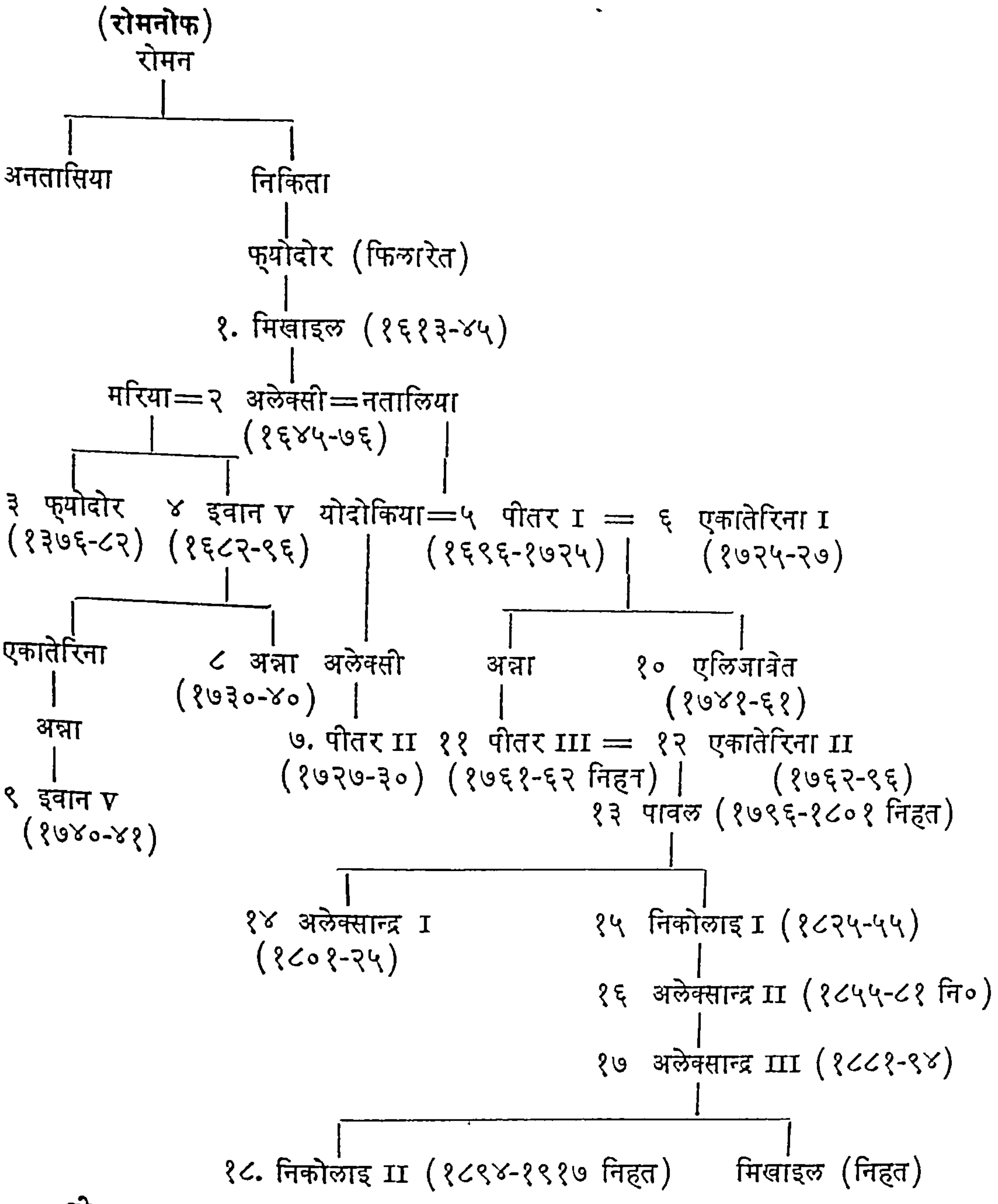

चीन-वंशावली : मिङ और छिङ—रूसके पूर्वकी ओर प्रसारके समय उसका मुकाविला चीनकी शक्तिसे होने लगा था। मगोल-वंश (१२०६-१३६८ ई०) के वादकी चीनी राजावली इस प्रकार है —

मिङ-वंश १३६८-१६४४ ई०—राजधानी नानकिङ (१३६८-१४०२ ई०), पेकिङ (१४०३-१६४४ ई०)

रूसी जार

१	ताइ-चू (चू-युवान-चाङ)	१३६८–९८ ई०
२	हुइ-ती	१३९८–१४०२ "
३	चेङ-चू	१४०२–२४ "
४	जे-चुङ	१४२४–२५ "
५	स्वान्-चुङ	१४२५–३५ "
६	यिङ-चुङ	१४३५–४९ "
७.	ताइ-चुङ	१४४९–५७ "
	यिङ-चुङ (पुन)	१४५७–६४ "

८	सियान्-चुङ	१४६४–८७ "	
९	स्याव-चुङ	१४८७–१५०५ "	
१०	वू-चुङ	१५०५–२१ "	
११	मू-चुङ	१५६६–७२ "	
१२	शेन्-चुङ	१५७२–१६२० "	मिखाइल (१६१३–४५)
१३	कुवाङ-चुङ	१६२० "	
१४	सी-चुङ	१६२०–२७ "	
१५	मू-चुङ	१६२७ "	

छिङ (म-चू)-वंश १५८३–१९११ ई०——राजधानी ल्याव-याङ (१६२१–४३ ई०), पचिङ (१६४४–१९१२ ई०)

१	ताइ-चू नुर-हा-चू	१५८३–१६२७ "	मिखाइल (१६१३-४५)
२	ताई-चुङ (ह्वाङ-ताई-ची)	१६२७–४४ "	
३.	शि-चू	१६४४–६१ "	अलेक्सान्द्र I (१६४५–७६)
४	शेङ-चू (खाङ-सी)	१६६१–१७२३ "	फ्योदोर (१६७६–८२)
५	शी-चुङ	१७२३–३५ "	पीतर I (१६९६–१७२५)
६	काउ-चुङ	१७३५–९५ "	एलिजावेत (१७४१–६१) एकातेरिना II (१७६२–९६)
७.	जेन्-चुङ	१७९५–१८२० "	पावल I (१७९६–१८०१) अलेक्सान्द्र I (१८०१–२५)
८	स्वान्-चुङ	१८२०–५० "	निकोलाइ I (१८२५–५५)
९.	वेन-चुङ	१८५०–६१ "	अलेक्सान्द्र II (१८५५–८१)
१०	मू-चुङ	१८६१–७५	अलेक्सान्द्र III (१८८१–९४)
११	ते-चुङ	१८७५–१९०८ "	निकोलाइ (१८९४–१९१७)
१२	पू-यी	१९०८–११ "	

स्रोत ग्रन्थ

1. History of U S.S.R. (Ed. A.M. Pankratova, Moscow 1947)
२ ओचेर्क को इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिबिरि १७वी-१८वी सदी (मास्को १९४६)
३ यज़ीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (म स विलिन्स्की आदि, मास्को १९१४)
४ यज़ीकोज्नानिये
५ इस्तोरिया अेकातेरिनी व्तरोय (२ तोम्, विल्वस्सोफ, बर्लिन १९००)
६ इस्तोरिया त्सार्त्वोवानिया पेत्रा वेलिकओ (५ जिल्द, ओस्त्रियालोफ्, पेतेरबुर्ग, १८१५-७१)
७ ओ देकब्रिस्ताख् पो सेमेइनीम् वोस्पोमिनानियाम् (स वोल्खोन्स्की)
८ इस्तोरिया सससर (४ जिल्द, व इरव्दोनिकम्)
९ क् वप्रोसु ओ खिस्तियान्स्त्वे ना रुशि दो व्लादिमिरा (न वोलोन्स्काया, १९१७)

अध्याय २

श्वेत-ओर्दू (२)

(१४२५-१७२८ ई०)

१. बुर्राक, बरका, कोइरियक-पुत्र (—१४२७ ई०)

श्वेत-ओर्दू (अक-युर्त) के बारेमें हम पहले कह चुके है। उसी ओर्दूके प्रतापी खान बुर्राकने अपने दक्षिणी पडोसियोकी नाकमे दम कर रक्खा था। वोराक खानकी मृत्यु ८३१ हि० (२२ X १४२७—११ IX १४२८ ई०) मे हुई। यही बुर्राक (वोर्राक) या बरका श्वेत-ओर्दूकी नई शाखाका सस्थापक था, जिसकी राजधानी सिर-दरियाके तटपर सिगनक थी। बुर्राक खानके दो बेटो गिराई और जानीवेगमेंसे गिराई बापके मरनेपर गद्दीपर बैठा। इस वशमे निम्न खान हुये—

१.	बुर्राक, वरका, कोइरियक-पुत्र	—१४२७ ई
२.	गिराई, बुर्राक-पुत्र	१४२७— "
३	बेरेदक, गिराई-पुत्र	—१५०९ "
४.	कासिम, जानीवेग-पुत्र	१५०९—१८ "
५	मीमाश, यादिक-पुत्र	१५१८— "
६	ताहिर, यादिक-पुत्र	
७	उजियाक अहमद, उज्बेक, जानीवेग-पुत्र	
८	अकनजर, कासिम-पुत्र	—१५८० "
९	शिगाई, यादिक-पुत्र	१५८०— "
१०.	तवक्कल, शिगाई-पुत्र	—१५९८ "
११.	इशिम, शिगाई-पुत्र	१५९८—१६३५ "
१२.	जहागीर, इशिम-पुत्र	१६३५—९८ "
१३.	तौफीक, तिअवका, जहागीर-पुत्र	१६९८—१७१८ "

२ गिराई, बुर्राक-पुत्र (१४२७—ई०)

१४९१ ई० मे अबुल्खैर शैबानीका किपचक भूमिमें प्रताप छाया हुआ था, जिसके डरके मारे गिराई और जानीवेग दोनो भाई किपचक छोड भागकर इस्सिकुल-काशगर (मुगोलिस्तान)के खान इस्सनबुगाके पास पहुचे। मुगोलिस्तानी खानने दोनो भाइयोको चू-उपत्यका और वशीकुजीमे चर-भूमि दी। जब तक १४६९ ई० मे अबुल्खैर मर नही गया, तब तक दोनो भाइयोको पश्चिम की ओर नजर डालनेकी हिम्मत नही हुई। अब उनके पास दो लाख व्यक्ति हो गये थे—इनके ओर्दूका नाम उज्बेक-कजाक पडा था। दोनो भाइयोने अपनी पितृभूमिके उद्धारका बीडा उठाया, लेकिन अबुल्खैरके पुत्र भी दबनेवाले नही थे, इसलिये जबर्दस्त सघर्ष शुरू हुआ। मुगोलिस्तानके खान महमूदने एक ओर बुर्राकके पुत्रोकी सहायता की, तो दूसरी ओर अबुल्खैरके पौत्र मुहम्मद शैबानीको भी तुर्किस्तान शहर देकर सहारा दिया। गिराई और जानीवेग इससे रुष्ट हो गये—"शैबानी हमारा शत्रु है, फिर खान क्यो उससे मेल कर रहा है?" अन्तमे दोनो भाइयोने मुगो-

लिस्तानी खान महमूदसे झगडा कर दो लडाइयोमें महमूदको बुरी तरह हराया, जिसका बदला महमूद के छोटे भाई अहमदने उज्बेक-कजाकोंको तीन बार हराकर लिया—इसी समय इनका नाम उज्बेक-कजाक पडा, जिसमे कजाक शब्द साधारण डाकूके लिये नही, बल्कि साहसियोंके लिये मध्य-एसियामे

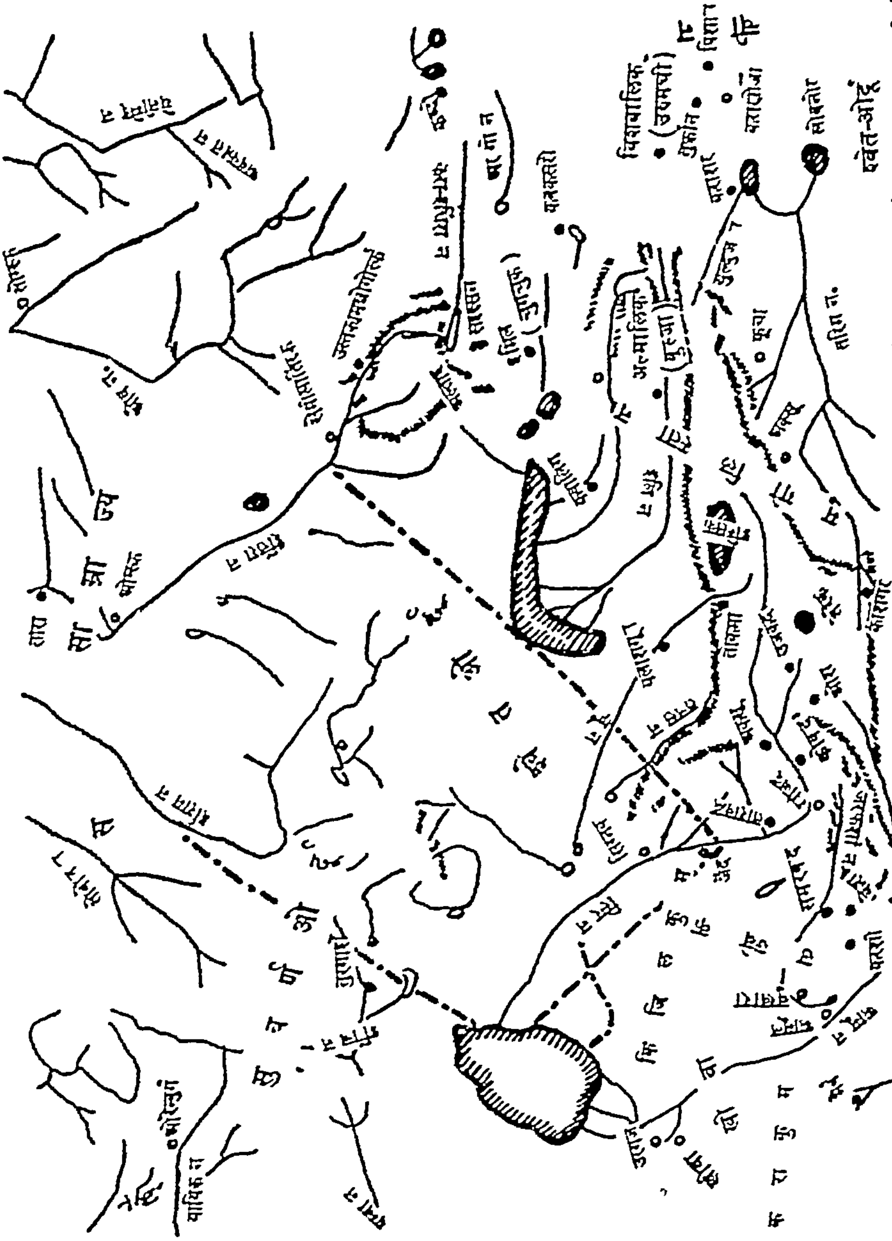

२४ (२।३।२) (१४२५-१५२८ ई०)

प्रयुक्त होता था—उज्बेक-कजाक (=श्वेत-ओर्दू) का अर्थ पहले "साहसी * उज्बेक खानके उलुस-वाले" लिया जाता होगा, पीछे कजाक विशेषण नही, बल्कि बुराकके पुत्रो गिराई और जानीवेगके अनुयायी श्वेत-ओर्दूका दूसरा नाम ही पड गया, जो आज भी प्रचलित है।

३. बेरेदक खान, गिराई-पुत्र (—१५०९ ई०)

गिराई और जानीवेग कब मरे, इसका ठीक पता नही है। उनके बाद गिराईका पुत्र बेरेदक उज्बेक-कजाकोंका खान हुआ। उज्बेक खानका पुराना उलुस अब शैबानी और कजाक दो प्रतिद्वंद्वी भागोंमे विभक्त था, जिनका द्वंद्व बेरेदकके समयमें भी जारी रहा। आगे चलकर मुहम्मद शैबानी

*तुर्की भाषामे "कजाक" बहादुर (वीर) को कहते हैं।

के किपचक-तुर्क उज्बेक कहे जाने लगे, और बुर्राक-वशके अनुयायी कजाक। बेरेदक उस समय सिगनकमें था, जब कि उज्बेक मुहम्मद शैवानीके पास नोगाई खान मूसाका दूत आया था, और उसने दश्तकिपचकका खान बननेके लिये निमत्रण दिया। मुहम्मद शैवानी वहा गया। मूसाने स्वागत भी किया, लेकिन अब उज्बेकोका वास्तविक नेता बेरेदक खान था, जिसे पसद नही था, कि मुहम्मद शैवानी किपचकका भी खान बने। बेरेदक सेना लेकर आया, लेकिन शैवानीने उसे मार भगाया। पीछे मूसाने अपने वचनको भग कर दिया और अमीरोके राजी न होनेका बहाना करके मुहम्मद शैवानीको खान बनने नही दिया। १४९४ ई० में मुहम्मद शैवानी और उसके भाई महमूदने सारे तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका) पर अधिकार कर लिया। शैवानीके हटते ही बेरेदक अपनी सेना लेकर साबरानपर चढ आया। अमीर मुहम्मद तरखनके कहनेपर नागरिकोने महमूद शैवानीको पकडकर बेरेदकके चचेरे भाई जानीबेग-पुत्रके हाथमे दे दिया, जिसने उसे सूजक भेज दिया, लेकिन वह भागकर अपने भाई मुहम्मद शैवानीके पास ओतरार पहुचनेमें सफल हुआ। बेरेदक साबरान शहरको नही ले सका था। इसी समय बेरेदकके कजाक मुगोलिस्तानके खानसे मिलकर ओतरारके विरुद्ध अपना सैनिक प्रदर्शन कर लौट आये। इसपर शाहीबेग कजाकोके ऊपर चढ दौडा। उस समय उनका डेरा अलाताग (बेर्नोये) के पास अलाताउके पहाडोमे था। आखिरमे दोनो पक्षोमे समझौता हो गया। बेरेदकने अपनी लडकी मुहम्मद शैवानीके पुत्र मुहम्मद तेमूर सुल्तानको प्रदान की। लेकिन घुमन्तुओका समझौता तोडनेके लिये ही हुआ करता था। ९१२ हि० (२४ V १५०६–१४ IV १५०७ ई) मे कजाकोने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण कर दिया। शैवानीने उनका जवाब दिया। दो साल बाद १५०९ ई० मे फिर कजाकोने प्रहार किया। इस समय बेरेदक किपचकोका नाममात्रका खान था, असली शक्ति उसके चचेरे भाई जानीबेग-पुत्र कासिमके हाथमे थी। कजाकोकी दो लाख सेना उसके पास थी। जाडोमे मुहम्मद शैवानी कुरुकमे ठहरा हुआ था। जाडोके अन्तमे यकायक कासिमके चढ आनेकी बात सुनकर उसने मुकाबिला करना चाहा, लेकिन बहुत हानि उठाकर उसे वहासे समरकन्द भागना पडा, जहासे भी खुरासानमे हटना पडा। इसी समय कासिमने कजाक तख्त लेकर बेरेदक खानको समरकन्द भगा दिया।

४. कासिम, जानीबेग-पुत्र (१५०९-१८ ई०)

अब खानकी गद्दी गिराईके वशसे निकलकर जानीबेगके खान्दानमें चली गई। किपचक-भूमि गिराई-जानीबेगके कजाकोके हाथमे थी। धीरे-धीरे दश्त-किपचककी जगह कजाकस्तानका प्रयोग होता जा रहा था। बेरेदकके शासनकालमे कासिमने अपनी प्रभुता बढा ली थी, लेकिन वह खानके पास यह कहकर नही रहता था—"यदि मैं सम्मान नही दिखाऊगा, तो खान नाराज होगा, और सम्मान दिखाना मेरी आत्माके विरुद्ध होगा।" उस समय बेरेदक सिगनक और मुगोलिस्तानके सीमातपर रहता था। खान हो जानेपर कासिम किपचकोका सबसे शक्तिशाली खान था। उसके पास दस लाख सेना थी। इतनी बडी सेना जू-छिके बाद किसी खानके पास नही रही। कासिमके नौ भाइयोमे सबसे अधिक प्रसिद्ध यादिक या उज्बेक सुल्तान था, जिसने मुगोलिस्तानके खान यूनसकी चौथी लडकी सुल्तान निगार खानम् (तेमूरी सुल्तान अबूसईदके लडके महमूद मिर्जाकी विधवा)से शादी की थी। यादिकके मरनेपर वह कासिमकी भी बीबी बनी। नोगाई शेखमिर्जासे लडाई करते वक्त ९३० हि० (१० XI १५२३–२८ X १५२४ ई०) बेटेने कासिमको मार डाला, और अपने बाप यादिकके स्थानको चचासे छीन लिया।

५ मीमाश, बिबाश, यादिक-पुत्र (१५१८—ई०)

मीमाशने मुगोलिस्तानके रशीद खानकी लडकी ब्याही थी। वह लडाईमे मारा गया।

६ ताहिर, यादिक-पुत्र

भाईके मरनेपर ताहिर गद्दीपर बैठा। ९२९ हि० (२० XI १५२२–११ X १५२३ ई०)

मे उसने स्वय अपने भाईकी विधवा सुल्तान निगार खानम्को ले जाकर उसके वापके पास पहुचा दिया। वाप अपनी बेटीको बहुत प्यार करता था, लेकिन बेटी घुमन्तू जीवनमे तग थी, इसलिये इजाजत लेकर वह अपने भाईके लडके सुल्तान सईदके पास चली गई। बुवाके मवबसे खान सईदने उठकर स्वागत करना चाहा, मगर ताहिरने चगताई खानका ख्याल करते हुये उसके सामने कोर्निश की। ताहिरकी बहिन रशीद खानसे ब्याही गई। ताहिरका मितारा गिर चुका था। पडोसी सुल्तानोंमे वरावर लडाई-झगडा रहता था। ताहिरने अपने भाई अबुल-कासिम सुल्तानको अपने हाथो मारा, जिसपर उसके उलुसके लोगोने साथ छोड दिया। वह अकेला पुत्रके साथ किर्गिज (बुरुत) लोगोमें चला गया। लडका भी वापसे तग आ गया, और ९३६ हि० (५ IX १५२९–२७ VII १५३० ई०) में वह भी साथ छोड गया। इमी हालतमे बडी दुर्गतिके साथ ताहिरकी मृत्यु हुई। कहा ९२४ हि० (१३ XI–४ VII १५१८ ई०) मे उसके पास दस लाख सेना थी और कहा ९४४ हि० (१० VI १५३७–१ V १५३६ ई०) मे उसके कजाकोका चिह्न नही रह गया। तीस हजार कजाकोने मुगोलिस्तानमें पहुचकर ताहिरके भाई वुइदशको खान वनाया, लेकिन अब कजाकोके कई खान थे।

७ उजियाक अहमद, उज्वेग, जानीवेक-पुत्र

किपचक कजाकोकी इस गडवडीमे जगह-जगह उनके कई खान वन गये थे, जिनमे ही यादिक या सैदिक-पुत्र उजियाक भी था। इसने अधिक दिनो तक शासन नही किया। उस समय दश्त-किपचकमें नोगाइयोकी शक्ति वढ गई थी। नोगाइयोंके अमीर सैदकसे लडते हुये उरुक मिर्जाके हाथो उजियाक मरा। उसका पुत्र वुलात (पुलाद, फौलाद) सुल्तान भी अपने पुत्रो सहित नोगाइयोंके हाथो मारा गया। उजियाक खान लघु-ओर्दूके प्रसिद्ध खान अबुल्खैरका पूर्वज था—यह अबुल्खैर शैवानी अबुल्-खैरसे अलग था। नोगाइयोने ९३२ हि० (१८ X १५२५—८ IX १५२६ ई०) मे बहुमत्यक कजाकोको मार भगाया। १५३३ ई० तक नोगाइयोकी शक्ति इतनी वढ गई, कि उन्होने ताश्कन्द पर अधिकार कर लिया। नोगाई अमीर यूसुफने १५३७ ई० मे अपने विजयोंके बारेमे रूरिकवशी जार वासिली-पुत्रके पास लिखकर भेजा था।

८ अकनजर, कासिम-पुत्र (—१५८० ई०)

प्रतापी कासिम खानके बेटे अकनजरने कजाकोंके रूठे भागको लौटानेकी कोशिश की। अपने विजयोंके कारण अकनजरका यश बहुत दूर-दूर तक फैला। कजाक और किर्गिज उमे अपना खान मानने में गौरव समझते थे। अकसू और मुगोलिस्तानके शासक अब्दुर रशीद खानके पुत्र अब्दुल लतीफ सुल्तान को इसने लडाईमे मारा। ताश्कन्दके राज्यपाल बाबा सुल्तान और शैवानी खान अब्दुल्लाके साथ इसकी प्रतिद्वद्विता थी। वावा सुल्तान शैवानी अब्दुल्लासे डरकर तलस नदीपार कजाकोमे चला गया। दूतने आकर यह खबर मुगोलिस्तानके खानको दी। जाच करनेपर मालूम हुआ, कि अकनजर खान जालिम सुल्तान, यादिक-पुत्र शिगाई सुल्तान आदिके साथ तरस नदीपर डेरा डाले हुये है। शिगाई-पुत्र ओन्दन सुल्तानने अब्दुल करीम सुल्तानकी विधवा पत्नीसे व्याह किया था, और बीवोकी वहिन को जालिम सुल्तानके लिये रख रक्खा था। वावा सुल्तानके भागकर कजाकोमे शरण लेनेकी बात भी गलत मालूम हुई, इसलिये गलत खबर देनेवाले गुप्तचरको मार डाला गया। मुगोलिस्तानका खान अपनी सेना ले तलसकी ओर वढा। इसकी खवर पाकर कजाकोने खानके स्वागतके लिये अपना दूत भेज आज्ञा शिरोधार्य करनेकी बात कही। सुलहनामा हुआ, जिसमे यह भी शर्त थी, कि वावाके एक लडकेको—जो अपने कुछ अनुचरोके साथ कजाकोमे भाग गया था—पकडकर जिंदा या शिर काटकर भेजा जाय। कजाकोंके दूतको खानने खिलत और इनाम दिया, तथा प्रसन्न होकर उन्हे तुर्किस्तान के चार शहर भी प्रदान किये। मुगोलिस्तानके खानकी उदारतासे तुर्किस्तानमे कजाकोंके पैर जम गये, और पीछे वह खानके राज्यमे भी लूटमार करने लगे। मुगोलिस्तानी ताश्कन्दका राज्यपाल

कजाकोको रोकनेमे असमर्थ रहा । उसने यस्सी (तुर्किस्तान) और सावरानके शहरोको भी उनके हाथमे जाने दिया। वावा अपने आदमियोके साथ समरकन्द चला गया। उसने खानके विरुद्ध लडने के लिये कजाकोको मिलानेके वास्ते जानकुली बेगको दूत बनाकर अपने ससुर जालिम सुल्तानके पास भेजा। कजाक इसके लिये तैयार नही थे, बल्कि उन्होने जानकुलीको भी मार डालना चाहा। किसी तरह हत्यारोके हाथसे बचकर उसने वावाको खबर दी, कि जालिम सुल्तानको तुम्हे मारनेके लिये नियुक्त किया गया है। यकायक जालिम और अकनजरके दो पुत्र काफी सेना ले वावाकी ओर दौडे। शरावखानी नदीके तटपर बाबासे उनकी भेट हुई। उसे अकनजरके पास चलनेके लिये कहा। वावा जानता ही था, उसके साथ क्या होनेवाला है, इसलिये उसने अपने सैनिकोको तलवार निकालकर उन्हे काट डालनेका हुक्म दिया। जमीनको उनके खूनसे लाल कर उसने अपने भाई बूजाखुरको अकनजरपर चढाई करनेके लिये कहा—यह १५८० ई० (अकवरके समय) की वात है। शायद इसी लडाईमे कई सुल्तानोके साथ अकनजर मारा गया। अकनजर नोगाइयोका दुश्मन था। नोगाइयोपर इस समय रूसियोका प्रहार हो रहा था, इसलिये अकनजर रूसियोसे मेल करना चाहता था।

९ शिगाई, सैदिक (यादिक)-पुत्र (१५८०—ई०)

अकनजरके वाद १५०३ ई० मे मारे गये सैदिकका पुत्र शिगाई गद्दीपर वैठा। यह अनुभवी और राजनीति-पटु खान था। इसने एक वार तलसमे वावाके ऊपर अचानक असफल आक्रमण किया। १५८१ ई० मे वावा सिर-दरियाके पास कराताउमे डेरा डाले हुये था। यही उससे मिलनेके लिये तवक्कलके साथ शिगाईका पुत्र आया। दोनोमे मित्रतापूर्ण वातचीत हुई। अब्दुल्ला शिगाईको खोजन्दका राज्यपाल वना तवक्कलको अपने साथ समरकन्द ले गया। तवक्कलने शैवानी खानके यहा निशानावाजीमे प्रसिद्धि पाई। खानके वागकी बगलमे वन्दूक चलानेका एक भारी खेल हो रहा था, जहा लम्बे खम्भोपर लटकती सोने-चादीकी चमकती गोलियोपर लोग निशाना लगा रहे थे। इस कठिन लक्ष्य-वेधको तवक्कलने करके दिखाया और इस प्रकार उसे अब्दुल्ला खानसे ज्यादा समीपता प्राप्त हुई। इसके वाद ही जनवरी १५८२ ई० मे अब्दुल्ला खानने वावा सुल्तानके विरुद्ध उलुगतागकी ओर अभियान किया। सिर दरियाके वाद अरिसको भी पार करनेपर सुना, कि वावा दश्तेकिपचककी ओर चला गया है। इसपर अब्दुल्ला अरिस-तटपर अवस्थित कराअसमन (करा-सामा) में कुछ सेना छोड बुगान-चोयान नदियोसे अर्सलनलिकतोईकान (तुर्किस्तान शहरके पास गाव) होते सरीसू पार हो अप्रैलमे उलुगताग पहुचा। वहा पता लगा, कि वावा मगीतो (नोगाइयो) मे शरणापन्न हुआ है। वावाका पीछा करनेके लिये एक सेना छोड अब्दुल्ला राजधानीकी ओर लौटा, लेकिन सावरानके मुहासिरेमे दो मासतक रुकना पडा। अब्दुल्ला (शैवानी खान) सावरान नदी पारकर शिकार खेलने गया था, जहा उसका पुत्र अब्दुल मोमिन सुल्तान खो गया, जिसे पहुचा कर शिगाईके छोटे भाई यानवहादुर सुल्तानने शैवानी खानसे वहुत इनाम पाया।

शिगाई खान अन्तर्वेदके प्रतापी शावानी खान अब्दुल्लाका पडोसी और प्रतिद्वद्वी था। उसने एक वार फिर किपचकमे शत्रुओके विरुद्ध अभियान किया। तवक्कलने अपने कजाकोके साथ शत्रुका पथप्रदर्शन किया, और वह केन्दरलिक नदी पार हो गये। यही जू-छि खानकी कब्र थी, जिसके पास ही उसके कुछ दूत दुश्मनके हाथोमें पडकर मारे गये। खवर पा वावा सुल्तान नोगाइयोमे भाग गया, और कुछ आदमियोको शिगाई खानने पकडकर लूटा। शिगाई खानकी सरगरमीको सुनकर अब्दुल्ला खान फिर उलुगतागकी ओर चला, और ईलाचिक (जिलाचिग) में शिगाईने आकर उससे मुलाकात की, इस प्रकार झगडा नही हुआ। सिविरके प्रसिद्ध खान कूचुमके भाई अहमद गिराइने "वुखारा" के अमीर गिराईकी लडकीको व्याहा था। उनके वुरे वर्तावके कारण नाराज हो शिगाईने आकर उसे इर्तिशके तटपर मार डाला। जगताई शाहजादी याशिम वेकिमसे उसे तुकाई या तवक्कल पुत्र पैदा हुआ था, जो वापके वाद कजाकोका खान वना।

१० तवक्कल, शिगाई-पुत्र (१५९८ ई०)

बावा सुल्तान और शैवानी अब्दुल्ला खानका झगडा इसके समयमे भी चलता रहा। तवक्कल अब्दुल्ला शैवानीके दरवारमे एक वार नाम कमा चुका था। वह शैवानी खानका समर्थक था। जब १५८२-८३ ई०मे अपने उलुगतागवाले प्रसिद्ध अभियानमे शैवानी खान लौट रहा था, उसी समय तवक्कल अककुरगानमे अपने पशुओकी देखभाल कर रहा था। उसने सुना कि बावाका भाई सुल्तान ताहिर अभी-अभी सुगकके डाडेसे पार हुआ है। तवक्कलने पीछा करके ताहिरको पकडकर अब्दुल्लाके हाथमे दे दिया। खानने उसे जरबफ्तकी खिलअत और इनाम दिया। कुछ ही दिनो वाद तवक्कलने बावा सुल्तान, जानमुहम्मद अतालीक, बावाके पुत्र लतीफ सुल्तान और दूसरोके शिर काटकर अब्दुल्लाके पास भेट किये। खानने बहुत भारी इनाम दे उसे समरकन्दके सबसे अच्छे इलाके आफरीकदका राज्यपाल बना दिया, जहा अब्दुल्ला स्वय बापके समय राज्यपाल था। तवक्कलके हाथमे बावाके पडनेके वारेमे कहा जाता है नोगाइयोमें जानेपर उसे विश्वासघातका डर लगने लगा, तब उसने भागकर तुरा (साइबेरिया)की ओर जाना चाहा। फिर आशा हुई, कि शायद अपने लोगोसे मदद मिले, इसलिये तुर्किस्तानकी ओर मुड पडा। रास्तेमें सिगनकमे ठहरकर उसने अपने दो कलमक सहायकोको पता लगानेके लिये भेजा। दोनो कलमक तवक्कलके हाथमे पड गये, और उन्होने तवक्कलको साथ ले तम्बूमे पडे बावाका शिर कटवानेमे सहायता की।

तवक्कल दो लाख कजाक-परिवारोका खान था। इस समय कलमक भी बहुत शक्तिशाली हो चुके थे। तवक्कलने अपने कजाकोको लेकर एक वार कलमकोके देशपर हमला किया। इसपर कलमक राजाने अपने सैनिकोको यह कहकर भेजा, कि तवक्कलका शिर लिये विना न लौटना। कलमकोकी भारी सेना देखकर तवक्कल ताश्कन्दकी ओर भागा, लेकिन कलमकोने पीछा करके उसके आधे आदमियोको बदी बना लिया। बाकी बचे ताश्कन्द पहुचे, जिसका राज्यपाल नौरोज अहमद बुर्राक खान था। तवक्कलने उसके पास दूत भेजकर कहलवाया—"मै तुम्हारे देशमे आया हू, तुम्हारी शरण लेना चाहता हू। हम दोनो छिङ्-गिस् खानके वशज है, अतएव एक दूसरेके सबधी है। दोनो मुसलमान होनेसे धर्म-भाई भी है। मेरी सहायता करो और आओ हम दोनो मिलकर कलमकोसे लडें।" बुर्राक खानने जवाब दिया—"अगर हमारे-तुम्हारे जैसे दस अमीर भी एक हो जायें, तो भी हम कलमकोका कुछ नही विगाड सकते। वह याजूजके ओर्दूकी तरह असख्य है।"

तवक्कलने अन्तमे भागकर अब्दुल्ला खान शैवानीकी शरण ली। १५८३ ई० मे अन्दिजान और फरगाना पर अब्दुल्लाने जो अभियान किया था, उसमे तवक्कल उसके साथ था। इसी समय तवक्कलको पता लगा, कि अब्दुल्लाके भाव उसके प्रति अच्छे नही है, इसलिये वह उसके हाथसे निकलकर दश्त-किपचकमे चला गया। १५८६ ई० मे अब्दुल्लाको दूसरी जगह फसा देखकर तवक्कलने तुर्किस्तान, ताश्कन्द ही नही समरकन्दको भी खतरेमे डाल दिया। अन्तर्वेदसे छोटी-सी सेना आई, जिससे शराबखाना (ताश्कन्द इलाकेमे) मे लडाई हुई। कजाकोके पास अच्छे हथियार नही थे, कवचकी जगह उनके पास चमडेके कोट थे, लेकिन वह बडे बहादुर थे, इसलिये अब्दुल्लाके उज्बेक बुरी तरहसे हारे। अब्दुल्लाके भाई उबैदुल्ला सुल्तानने समरकन्दमे पराजयकी खबर सुनी, तो वह सेना ले सिर नदी पार हो ताश्कन्द पहुचा। तवक्कल उस समय सैरामके पास डेरा डाले पडा था। भारी सेनाकी खबर पाकर वह किपचकभूमि की ओर लौटा, जहा कुछ समय तक उबैदुल्लाने उसका पीछा करनेका असफल प्रयत्न किया।

१५८८ ई० मे अब्दुल्ला खानके बहनोई, रुस्तम-पुत्र जानीबेग-पौत्र उज्बेकन ताश्कन्दके राज्यपाल रहते समय विद्रोह कर दिया। ताश्कन्द-शाहरुखिया-खोजदके लोगोने कजाक-सुल्तान जानअलीको अपना खान घोषित किया। विद्रोहमे अकनजरके पुत्रो मुगाताई और दीनमुहम्मदने भी भाग लिया।

इन लडाइयोसे मालूम होगा, कि शैवानियोके प्रतापी खान अब्दुल्लाको उत्तरके घुमन्तू कितना परेशान किये रहते थे। १५९४ ई० मे तवक्कलने जार फ्योदोर इवान-पुत्रके पास अपना दूत भेजकर निवेदन किया, कि मै अपने उलुसके साथ जारकी प्रजा वनना चाहता हू, मेरे भतीजे उराज मोहमेतको मुक्त कर दिया जाय। मार्च १५९५ ई० मे जारने तवक्कलके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया, और कुछ वारूदी हथियार भेजकर उससे कहा, कि वुखाराके खान अब्दुल्लाके साथ शाति रखो, सिविरखान कूचुमको अधीन वनाओ। भतीजेको हम मुक्त कर रहे है। उसकी जगह दरवारमे अपने पुत्रको भेजो।

लेकिन, तवक्कल भला अन्तर्वेदकी लूटसे अपनेको क्यो वचित होने देता? १५९७ ई० मे अब्दुल्ला और उसके पुत्र अब्दुल मोमिनके बीचके झगडेकी खबर उसे तुर्किस्तानमे मिली। तवक्कल खान—अब वही खान था—वहुत-से कजाक अमीरो और सैनिकोके साथ ताश्कन्दकी ओर वढा। अब्दुल्लाने तवक्कलको कोई महत्त्व नही दिया, और उसके मुकाविलेके लिये कुछ सुल्तानो, शाहजादो और पडोसी अमीरोको थोडी सेना देकर भेजा। ताश्कन्द और समरकन्दके बीच सख्त लडाई हुई, जिसमे अब्दुल्लाकी सेना हारी, वहुतसे सेनापति मारे गये, वाकी वुखारा भाग गये। अब्दुल्ला मुकाविलेके लिये वुखारासे समरकन्दकी ओर चला, लेकिन वीच हीमे वीमार होकर मर गया। अव तवक्कलकी वन आई। उसने भारी सेना ले तुर्किस्तानसे अन्तर्वेदमे घुसकर अकसी, अन्दिजान, ताश्कन्द, समरकन्द तया मियानकुल तकके प्रदेशपर अधिकार कर लिया। फिर अपने भाई इशिम सुल्तानको वीस हजार सेना दे समरकन्दमे छोड सत्तर-अस्सी हजार सेनाके साथ वुखारापर चढा। पीर मुहम्मद पद्रह हजार सैनिकोके साथ वुखाराकी रक्षापर नियुक्त था। उसने शहरके दरवाजोको वन्द कर लिया, और वीच-वीचमे निकल कर कजाकोके ऊपर ग्यारह दिनोतक वह छापा मारता रहा। वारहवे दिन सारी सेना शहरसे वाहर निकल आई। शाम तक भयकर युद्ध हुआ। कजाक हारकर तितर-वितर हो गये। धोखा देनेके लिये डेरोमे आग जली छोड तवक्कल रातको ही चला गया था। इस हारकी खवर समरकन्दमे इशिमको मिली। उसने अपने भाईके पास सदेश भेजा—"तुम्हे वहुत लज्जा आनी चाहिये, कि मुट्ठीभर वुखारियोने इतनी भारी सेनाको हरा दिया। अगर तुम यहा आये, तो हो सकता है, समरकन्दके लोग तुम्हारा स्वागत नही करे। खानको देश लौटना चाहिये, और मैं भी अपनी सेना लेकर उसके साथ मिलनेके लिये आ रहा हू।" तवक्कल अपने भाईके साथ लौटा। मियानकुल प्रदेशके उजुनसुकाल स्थानमे पीर मुहम्मद पीछा करते हुये सामने आया। एक महीने तक दोनोकी झडप होती रही, इसके वाद तवक्कल ने धावा वोल दिया। पीर मुहम्मदके सवधी सैयद मुहम्मद सुल्तान और दूसरा अफसर मुहम्मद वाकी अतालीक काम आये। तवक्कल भी लडाईमे घायल हुआ, और लौटते समय १५९८ ई० मे ताश्कन्दमे मर गया। उज्वेको और कजाकोके युद्धका कोई फैसला नही हुआ।

११ इशिम, शिगाई-पुत्र (१५९८–१६३५ ई०)

भाईके मरनेपर इशिमने कजाकोका नेतृत्व ग्रहण किया। उसने पहले वुखाराके विरुद्ध कोई भारी कदम उठाना नही चाहा। १६११ ई० मे वुखाराके अधिकारच्युत खान वली मुहम्मद और उसके भतीजे इमामकुल्लीके झगडेमे इशिम पाच हजार कजाकोके साथ शामिल हुआ। वली मुहम्मद मारा गया। इस सघर्षमे इशिमका भाई सैयदवी भी शामिल हुआ था। उरगज (ख्वारेज्म)से भागा अवुलगाजी १६२५ ई० मे इशिम खानके पास तुर्किस्तान शहरमे आकर तीन मास तक रहा। ताशकन्द का तुरसुन खान (अकनजर-पुत्र) जव तुर्किस्तानमे आया था, तो इशिमने अवुलगाजीका यह कहकर उससे परिचय कराया—"यह यादगार-खानके वशज अवुलगाजी हैं। इनसे पहले हमारे यहा ऐसे राजकुमारने शरण नही ली, यद्यपि दूसरे वहुत-से राजकुमारोने शरण ली थी।" तुरसुन खान अवुलगाजीको अपने साथ ताश्कन्द ले गया। दो साल वाद १६२७ ई० मे इशिमने तुरसुनको मार दिया, लेकिन अवुलगाजीको इमामकुल्ली खानके पास वुखारा जानेकी इजाजत दे दी। कजाको और वुखाराके खान इमामकुल्लीके वीच झगडा-लडाई चलती रही। कजाकोने दो वार १६२१ ई० में वुखारियोको हराया था। अकनजर खानके पुत्र तुरसुन मुहम्मदने वीचमे पडकर समझौता करवाया।

अब कजाकोंके भारी शत्रु पूर्वमें जुगारियाके कलमक (मगोल) थे, जिनके आक्रमण उनके ऊपर बराबर हो रहे थे। १६३५ ई० में इशिम खानने कलमक राजा बातुर खुङ-तैशीके साथ लडाई मोल लेकर कजाकोंके ऊपर आफतका पहाड ढा दिया। कजाक सेनाका सेनापति इशिम-पुत्र यमगीर (जहागीर) सुल्तान कलमकोंके हाथमें बंदी बना। इसीके आसपास इशिम मर गया।

१२ यमगीर, जहागीर, इशिम-पुत्र (१६३५-९८ ई०)

मित्रताका वादा करके जहागीर मुक्त हो गया, लेकिन कजाकोंका खान बननेके बाद उसने फिर जुगरों (कलमकों) से छेडखानी शुरू की। अन्तमें १६४३ ई० में पचास हजार सेना लेकर बातुर खुङ-तैशी उसके ऊपर पडा, और अलतन किर्गिजों और तोकमक कबीलोंको पकडकर अपने साथ ले गया। इस लडाईमें जुगरोंने कजाक सेनाका इतना सत्यानाश कर दिया, कि जहागीरके पास सिर्फ छ सौ आदमी रह गये। वह दो पहाडोंके बीच ताकमें छिपा हुआ था, जब कि कलमकोंने आक्रमण किया। जहागीरने पीछेसे कलमकोंपर आक्रमण किया। उसके बारूदी हथियारोंने कलमकोंके बीचमें गजब ढाया। दस हजार कलमक मारे गये। फिर जल्दी ही बीस हजार सेना जमा करके जहागीर यलानतुश पहुंचा। बातुरको असफल लौटना पडा। अगले साल १६४४ ई० में बातुरने फिर अपने आदमियोंको कजाकोंके साथ लडनेके लिये जमा किया, लेकिन जहागीरका मित्र खोसोत मगोल कबीलेके सरदार कुदेंलिंग ताईशी बीचमें पडा। इस प्रकार कलमकों और कजाकोंका युद्ध उस समय बच गया, और जहागीर तुर्किस्तान चला गया।

१३ तौफीक, तवका, तिअवका, जहागीर-पुत्र (१६९८-१७१८ ई०)

कजाक खानोंमें यह अत्यन्त प्रसिद्ध और जनप्रिय खान था। घुमन्तुओंके झगडोंको शांतिपूर्वक मिटानेमें इसने बडी सफलता पाई। कमजोर कबीलोंको वह सहानुभूतिसे अपनी ओर मिला लेता, शक्तिशाली कबीलोंको इज्जत करना सिखलाता। इसीने कजाकोंको तीन ओर्दुओंमें बाटा। एक तरह यह बटवारा बहुत प्राचीन समयसे चला आता था, जब कि इनके पूर्वज आगूज-तुर्क कहे जाते थे। निअवकाने उनकी जगहपर तीन विभाग किये, और महाओर्दूके लिये तिबोल, मध्यओर्दूके लिये कज्बेक और लघुओर्दूके लिये एतियकको केन्द्र बनाया। तौफीकके जीवनभर कजाक एकताबद्ध रहे। तुर्किस्तान शहर उसकी राजधानी थी।

१६९८ ई० में जुगर राजा छेवङ-अर्चनने कजाकोंके साथ हुये संघर्षोंके बारेमें चीन-सम्राट्के पास लिखा था—'दूसरे कलमक राजा गदनने तौफीकके पुत्रको पकडकर दलाई लामाके पास भेज दलाई लामाके बीचमें पडनेके लिये कहा, इस पर पुत्रको पाच सौ आदमियोंके साथ छोड दिया गया। उस (तौफीक-पुत्र)ने विश्वासघात करके मेरे आदमियोंको मार डाला, और सरदार, उसकी बीवी, उसके बच्चोंको एक सौ किबितका (परिवारों) के साथ छीन लिया। यह घटना हुलियान हान (संभवत कलमकोंका ग्रीष्म वासस्थान उलुगताग-पर्वतमाला)में हुई। तवकाने इसके बाद अपनी बहिनके साथ बापके पास जाते तोरगुत राजा आयुकापर रास्तेमें हमला किया। फिर हमारे देश से अपने देश लौटकर जाते एक रूसी करवाको लूटा।" यह सब दोष कलमकोंने तवका (तौफीक) और उसके कजाकों पर लगाया। कलमकोंके साथ लडाई लडकर कजाकोंने अपना भारी अनिष्ट किया। इसीके कारण वह अपनी पुरानी भूमिसे भागनेके लिये मजबूर हुये, और उनके कबीले भी छिन्न-भिन्न हो गये। अन्तिम दिनोंमें तवका खानका भी जोर कम हो गया। उसके सरदार अपने-अपने कबीलोंको ले स्वतन्त्र हो गये। कजाकोंके तीनों ओर्दू अपने स्वतन्त्र अमीरोंके शासनमें रहने लगे, जिनमें मध्य-ओर्दू बहुसंख्यक और अधिक शक्तिशाली था, यही अपनेको श्वेत-ओर्दूका असली उत्तराधिकारी मानता था। १७१८ ई० में कलमकोंके आक्रमणमें परेशान होकर तौफीक खान, खायेप खान और अब्दुलखैर खानने साइबेरियामें जार पीतर I के राज्यपाल राजुल गगारिनके सामने जाकर अपनेको रूसके अधीन कर दिया। तवका १७१८ ई० में मरा।

३ (२ श्वेत-ओर्दू-वशवृक्ष)
(१४२५-१७२८ ई०)

जू-छि

- १ बुराक (—१४२७)
  - २ गिराई (१४२७—)
    - ३ बेरेदक (—१५०९)
  - जानीबेग
    - ४ कासिम (१५०९-१८)
      - ८ अकनजर (—१५८०)
    - यादिक
      - ५ मीमाश (१५१८—)
      - ६ ताहिर
      - ९ शिगाई
        - १० तवक्कल (—१५९८)
        - ११ इशिम (१५९८-१६३५)
          - १२ जहांगीर (१६३५-९८)
            - १३ तौफीक (१६९८-१७१८)
    - ७ उजियाक
      - बोलियकइ
        - ऐचुवक
          - इरिश
            - अदिया
              - अबुल्खैर

स्रोत ग्रन्थ

१ तारीखे-रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर)
2. History of Mongol (H H. Howorth)

अध्याय ३

नोगाई

(१३००-१७२४ ई०)

१ नोगाई (–१२९९ ई०)

किपचक भूमिमें प्राचीन समयसे ही वहाके तुर्क कबीलोंको अपने सामन्तोंके नामपर नया नाम लेते देखा जाता है, इसलिये नोगाई नाम होनेका यह अर्थ नही, कि उनका आरम्भ जू-छि-प्रपौत्र तेवल-पुत्र तारतार-पुत्र नोगाईके समयसे होता है। ईसाकी आरम्भिक सदियोंमें हूणोंको हमने वल्काशसे कास्पियनके उत्तरी तट तक फैलते देखा, उनसे पहले यह भूमि शकोंकी थी। एक तरह मगोलायित जातिका इस भूभागमें निवास इसी समयसे आरभ होता है। तुर्कोंकी मारसे जब पूर्वके अवार भागे, तो इनमेंसे कितनोंने अवारका नाम कायम रक्खा और कितने ही अपनी बैल-गाडियोंपर घुमन्तू-जीवन वितानेके कारण कड या कड-ली कहे गये। अवारोंने ठप्पा प्राचीन हूणोंके इन वशजोपर अपने नामका नही लगाया, लेकिन अवारोंके प्रतिद्वद्वी और उत्तराधिकारी तुर्कोंने जब चीनकी सीमासे कास्पियनके उत्तर तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया, तबसे इन्हे तुर्क कहा जाने लगा—आज भी इस भूमिके उनके वशज कजाक तुर्कोंकी एक शाखा माने जाते है। मगोलोंके समयमे इन असख्य मगोलायित ओर्दुओंमेंसे एकका नाम खानजादा नोगाईके नामसे नोगाई पडा। उससे पहले नोगाई कहे जानेवाले कबीले वोल्गासे पश्चिममें द्नियेपरके पार तक दक्षिणी रूसमें पेचेनगाके नामसे चरवाहोंका जीवन विताते थे। पेचेनगा जू-छिके पुत्र तेवल या तारतारको जागीरमे दिये गये थे, जो पीछे उसके पुत्र नोगाईके हाथमे आये। नोगाई सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी खान वरकाके समय प्रधान-सेनापति था। उसने ईरानके हुलाकू-वशी खानोंको कई बार काकेशसकी भूमिमे हराया था, यह हम वतला आये है। इसने कान्स्तन्तिनोपलके सम्राट् मिखाइल पलियोलोगस् (१२००-६१ ई०) की लडकी यूफियोसिनेसे व्याह किया था। मिखाइलकी दूसरी लडकी मरिया हुलाकू खानसे व्याही थी। नोगाई बहुत प्रभावशाली मगोल राजकुमार था, यह भी हम बतला चुके है। दोनसे दन्यूब तककी भूमिका वह स्वामी था, और बुल-गारी (वोल्गा) का राजा भी उसके अधीन था। १२९९ ई० के आसपास सुवर्ण-ओर्दूके खान तोकताईने द्नियेपर पार हो ओर्जीसे जिस तरह बूढे नोगाईको घायल किया, और आखिरमे वह मर गया, यह बतला आये है। इसीके समयसे पुराने पेचेनगा नोगाई कहे जाने लगे। आगे चलकर इनके दो भाग हुये, जिनमे महानोगाई यायिक (उराल) और यम्बा नदियोंके बीचके प्रदेशके दक्षिणी भागमे रहते थे, ये पूरी तौरसे मुसलमान हो गये थे। इनका दूसरा भाग वाश्किरोंके सीमातपर रहता था, जो बहुत कुछ पुराने मगोलोंके धर्म और रीति-रवाजोंका पालन करते थे। इन्हींमें सिबेरियाके खान थे।

२ चुके, चुको, नोगाई-पुत्र (१३०० ई०)

नोगाईके मरनेपर उसके लडके चुकेको पकडनेके लिये तोकताई खानके आदमियोंने बहुत कोशिश की, मगर वह हाथ नही आया। पहले वह आस (उवान) में गया, फिर वहासे बुलारियामें अपने वहनोईके पास चला गया, किन्तु १३०० ई० के आसपास उसका शिर काटकर खानके पास भेज दिया गया।

३ बुरी, नोगाई-पुत्र (—१३०१ ई०)

यह इलखान (ईरानी) अवकाका दामाद था। इसने पिताकी हत्याका वदला लेना चाहा, लेकिन तोकताई खानको षड्यत्रका पता लग गया, और यह १३०१ ई० मे मारा गया।

४ कराकिजिक, चुके-पुत्र

नोगाईका खानदान एक-एक करके सुवर्ण-ओदूके खानोकी कोपाग्निमे भस्म हो रहा था, लेकिन राजकुमार नोगाईके प्रताप और दीर्घकालीन शासनके कारण उसके उलुसका समय-समयपर विखराव-जमाव होता रहता था, जिसके ही कारण नोगाई कवीलेका नाम इतने समय तक वना रहा।

अपने वाप और चचाके मारे जानेके वाद कराकिजिक अपने दो मत्रियो तथा तीन हजार अनुयायियोके साथ साइबेरियाके शमसमान देशके अवादुल स्थानमे गया, जहासे वह तोकताके राज्यमे जव-तव लूट-मार करता रहा। शमसमान लोगोने कराकिजिक और उसके अनुयायियोको वडे सम्मानके साथ रक्खा, और वह गुइउक या यायिक (उराल) नदीकी उपत्यकामे वस गये।

जब बा-तू-वंश निर्वंश हो गया, तो अमीरोंने लाकर शैवानी-वंशज खिजिर खानको सुवर्ण-ओर्दूका खान बनाया, जिसे हटाकर जेक्रियाने अपने पुत्र करा नोगाईको खान बना दिया।

५ करा नोगाई, जेक्रिया-पुत्र

करा नोगाईको करा तोगाई भी कहते हैं। इसके अधीन वोल्गाके पूर्वी इलाकेमें नोगाइयोंके कई कबीले थे। करा नोगाईके बाद फिर नोगाइयोंके खानोंका सूत्र विलुप्त हो जाता है, और तेमूर-लंगके समकालीन इदिकूके समयमें फिर हम उन्हें प्रभावशाली कबीलेके रूपमें देखते हैं।

§२ महानोगाई (१४३१ ई०)

१ नूरुद्दीन, इदिकू-पुत्र (१४३१ ई०)

इदिकूको मगुतोंका बेग कहा गया है, और मगुत नोगाई ही थे, इसमें संदेह नहीं। इदिकू तेमूर-लंगके प्रभावशाली अमीरोंमेंसे था। तोकतामिशके विरुद्ध तेमूरके अभियानमें यह उसका प्रधान-पथप्रदर्शक रहा। तोकतामिशकी हारके बाद इदिकू तेमूरसे छुट्टी लेकर अपने कबीलेमें चला गया। तेमूर कुतुलुक किपचक-खानोंकी गद्दी चाहता था, और इदिकू उसका चाणक्य था। १३९९ ई० में तेमूर कुतुलुकके मरनेपर किपचकके सिंहासनपर इदिकूने तेमूरके भाई सादीबेगको बैठाया। फिर १४०७ ई० में उसे हटाकर पुलादबेगको खान बनाया। १४३१ ई० में तोकतामिश-पुत्र कादिरबरदीसे जो संघर्ष हुआ, शायद उसीमें इदिकू मारा गया। इदिकूके मरनेपर उसके पुत्र गाजी नौरोज और मंसूरने रूसमें शरण ली, तथा उसके दूसरे पुत्र कैकुबाद और नूरुद्दीन तूरान (तुर्किस्तान) की ओर भाग गये।

इदिकूके समय तक पुराने नोगाइयोंकी परंपरा जारी रही, और आदिम राजकुमार नोगाई, और अन्तिम इदिकूके कालोंमें नोगाई कबीला शक्तिशाली और बहुसंख्यक रहा। पुराने कबीलेके पतनके बाद उसका अधिकांश भाग यायिक (उराल) और यम्बा नदियोंके बीचमें रहता था। इदिकू-पुत्र नूरुद्दीन उनका खान बना। यही महानोगाई कबीलेका संस्थापक था।

नूरुद्दीनको अपने पिताका उलुस बहुत क्षीण रूपमें मिला था, जिसके अस्तित्वको वह कायम भर रख सका।

२ ओकस, नूरुद्दीन-पुत्र (१४८७ ई०)

१५ वीं सदीके मध्यमें कजाक खानोंके भीतर नोगाइयोंका अब काफी असर बढ़ चुका था। उनके दोनों भाइयों मुहम्मद अमीन और अलीखानके झगड़ोंमें नोगाई अलीके समर्थक थे। लेकिन, अलीको रूसी पसंद नहीं करते थे। १४८७ ई० में रूसियोंने अली पर आक्रमण करके उसे पकड़ लिया। दो साल बाद १४८९ ई० में त्यूमनके शासक तजार ईवक, मिर्जा ओकास, या तत्पुत्र हसन, मूसा, और यमागुरचीने जारके पास अलीको छोड़ देनेके लिये चिट्ठी लिखी थी।

३ यमागुरची, ओकस-पुत्र (१४९९ ई०)

अब नोगाइयोंका प्रभाव यही था, कि वह कजाक खानोंके आपसी प्रतिद्वंद्वितामें किसी पक्षके सहायक होते रहें। यमागुरची और मूसाने कजाक खान अब्दुल लतीफके ऊपर उसके भाई मुहम्मद अमीनकी ओरसे हमला किया, लेकिन अब्दुल लतीफकी पीठपर रूसी थे, इसलिये उन्हें हारना पड़ा। शायद इसी समय यमागुरची मर गया। १५०५ ई० में हम कजाक खान मुहम्मद अमीनको चालीस हजार कजाकों और बीस हजार नोगाइयोंके साथ रूसी सीमातपर आक्रमण करते देखते हैं। इसी युद्धमें मुहम्मद अमीन खानका साला मूसा मारा गया।

१५१७ ई० से १५२६ ई० तक वोल्गापारके नोगाई यायिक (उराल) और कास्पियनके तट पर तीन भाइयोमे विभक्त थे, जिनमे (१) सिदियक खान सेरायच्चुक नगरका स्वामी था, यायिक-उपत्यका इसीके हाथमे थी, (२) हसन (गसन) को कामा-वोल्गा और यायिक नदीके बीचका इलाका मिला था, और (३) शेख ममाईको सिविरवाला भाग तथा पास-पडोसका इलाका।

४ शेख ममाई, मूसा-पुत्र (१५२६ ई०)

इसके बारेमे हमे ज्यादा मालूम नही।

५. युसुफ मिर्जा, मूसा-पुत्र

इसका पता भी इसके पुत्र अली मिर्जाके कारण लगता है।

६ अली मिर्जा, युसुफ-पुत्र (१५५१ ई०)

पासमे होनेके कारण नोगाई रूसके सीमातमे हर वक्त खतरा पैदा किये रहते थे, जिनके लिये रूसियोको अपने सीमातको किलाबद करनेकी बडी जरूरत पडती। अली मिर्जाने १५५१ ई० मे क्रिमियाके खान साहेब गिराईके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन खानने उसे हरा दिया। वोल्गा और दोन पार करके क्रिमियाके पास पहुचना, यही बतलाता है कि अभी सोलहवी सदीके मध्यमे वहा कोई ऐसी शक्ति नही पैदा हुई थी, जो कि अली मिर्जाके रास्तेमे रुकावट पैदा करती। अली मिर्जा कजानमे रहता था। उसके कबीलेने नाराज होकर उसे निकाल यादगारको गद्दीपर बैठानेके लिये बुलाया। मास्कोके जारने इसे पसद नही किया, और अक्तूबर १५५२ ई० मे उसने आक्रमण करके कजानको ले लिया।

७ इस्माईल मिर्जा, मूसा-पुत्र (१५६४ ई०)

इसीके समयमे १५५८ ई० मे अग्रेज व्यापारी जेन्किन्सन अस्त्राखान पहुचा था। वह लिखता है कि वोल्गाके बाये तटकी सारी भूमि—अस्त्राखानसे कास्पियन-तट होते तुर्कमानोकी भूमि तकका प्रदेश—मगुतो (नोगाइयो)का प्रदेश कहा जाता है। यहाके लोग मुसलमान है। १५५८ ई०मे जो भयकर गृहयुद्ध हुआ था, जिसके साथ ही अकाल-महामारीने आक्रमण किया, उससे उनके एक लाख आदमी मर गये। जेकिन्सन लिखता है—"इस तरहकी महामारी इस भूभागमे कभी नही देखी गई। नोगाइयोकी भूमि चरागाहोकी भूमि है। इस महामारीके बाद वह उजाड हो गई, जिससे रूसियोको सतोष हुआ, क्योकि उनके साथ उन्हे बहुत दिनोसे भयकर लडाइया लडनी पड रही थी। जब नोगाई कबीला अच्छी अवस्थामे था, उस समय वह कई भागोमे विभक्त था, जिन्हे होर्द (ओर्दू या उर्दू) कहते है। हरेक ओर्दूका अपना एक राजा होता है, जिसे मुर्जा (मिर्जा) कहा जाता है। सारा ओर्दू उसकी आज्ञा मानता है। इनके न घर है न नगर, बल्कि यह खुली जगहोमे रहते है। हरएक मिर्जा (राजा) अपने ओर्दू या लोगोको आसपास लिये हुये रहता है, जहा उनकी बीबिया, बच्चे और पशु भी रहते है। एक चरागाहकी घासके खतम हो जानेके बाद, वह दूसरी जगह चले जाते है। जब वह चलते है, तो ऊटोसे खीची जानेवाली गाडियोपर उनके घरकी तरहके तम्बू भी चलते है। इन्ही गाडियोमे उनके बीबी-बच्चे तथा सारी सम्पत्ति लदी रहती है। हरेक अमीरके पास दासियोके अतिरिक्त चार-पाच बीबिया होती है। नोगाई सिक्केका इस्तेमाल नही करते, बल्कि कपडो और दूसरी चीजे अपने पशुओ मे बदलते है। उन्हे युद्ध छोड और किसी विद्या और कलासे प्रेम नही और युद्धमे वह सिद्धहस्त है, अधिकतर पशुपालका जीवन बिताते है। उनके पास पशु-धन बहुत अधिक है—वस्तुत पशु ही उनकी सम्पत्ति है। वह मास अधिक खाते है, जो विशेषकर घोडेका होता है। घोडीका दूध पीते है, उसका मद्य (कूमिस) भी बनाते है। विद्रोह, चोरी, डकैती और हत्या इनके स्वभावमे है। न वह

अनाज खाते है और न रोटी, इसके लिये ईसाइयोका वह उपहास करते हुये कहते है—"तुम सरकडेकी फुन्गी खाते हो और वर्षाका पानी पीते हो, फिर क्यो न कमजोर रहोगे ? हम खूब मास खाते है, दूध पीते है, इसीलिये हम ताकतवर है ।" जेन्किन्सन जब पेरे-वोलोग (प्राग्-वोल्गा) मे पहुचा, तो वहा उसे एक नोगाई ओर्दू मिला । पेरे-वोलोग पीछे जारित्सिन और आजकल स्तालिनग्रादके नामसे पुकारा जाता है । यहीपर वोल्गा और दोनके बीचमे नावोको स्थल-मार्गसे पार कराया जाता था । आज वोल्गा-दोन-नहरके हो जानेसे उसकी कोई अवश्यकता नही है । पेरेवोलोगमे मिले नोगाई-ओर्दूके बारेमे जेन्किन्सनने लिखा है—"इसमे घरके आकारवाली गाडियोको करीब एक हजार ऊट खीच रहे थे । यह घर एक विचित्र तरहके तम्बू थे, और चलते समय दूरसे नगर जैसे मालूम होते थे ।" यह ओर्दू नोगाइयोके राजा (मिर्जा) इस्माईलका था, जो कि जेन्किन्सनके अनुसार "सभी नोगाइयोमे सबसे बडा राजा है । उसने बाकी सभीको मार डाला या भगा दिया, अपने भाइयो और बच्चो तकको भी नही छोडा । रूसके सम्राट्के साथ सुलह करके अब वह नोगाइयोपर शासन करता है, और रूसी भी नोगाइयोके साथ शाति पा रहे है ।" अस्त्राखानमे महामारी और अकालका क्या असर हुआ, इसके बारेमे जेन्किन्सन लिखता है—"वहा बहुत-से लोग भूखसे मर गये । सारे द्वीप (अस्त्राखान) मे मुर्दोका ढेर मिलता है, जो विना जलाये हुये जानवर जैसे मालूम होते है । देखकर बडी जुगुप्सा होती है । इन अस्त्राखानी नोगाइयोमेसे बहुतोको रूसियोने बेच डाला, और दूसरोको द्वीप (अस्त्राखान) से निर्वासित कर दिया । अगर मेरे पास एक हजार मुद्रा होती, तो मै सुदर-सुदर तारतार बच्चोको उनके माबापोसे खरीद सकता था । इगलैडमे जो रोटी छ पेन्समे मिलती है, उससे मै एक लडके या तरुणीको खरीद सकता था । लेकिन उस समय इस तरहके सौदेसे हमे अधिक अवश्यकता थी खाद्य पदार्थकी ।"

इस्माईलके समयमे नोगाइयोकी यह हालत थी । अस्त्राखानपर रूसियोने अपनी दृढ प्रभुता जमा ली थी । नोगाइयोको उनके सामने सिर झुकानेके लिये मजबूर होना पडा था । इस्माईल १५६३ ई० के अन्त या १५६४ ई०के आरम्भमे मरा, अर्थात् उसी समय, जब कि अतितरुण अकबरने भारतमे अपने राज्यको सभाला था ।

८ दीनमुहम्मद, इस्माईल-पुत्र (१५६४ ई०)

यह सिबिरके कुचुम खानका समकालीन था । इसने अपने पुत्र अलीकी शादी दीनमुहम्मदकी लडकीसे की थी । वोल्गा और दोनके पास अभी रूसियोकी बस्तिया नही आबाद हुई थी, और नोगाई कबीलेका ही यहापर निवास था । उनके पडोसमे क्रिमियाके तारतार थे । वह रूसी ईसाइयोको मुसलमान तारतारोंके ऊपर इस तरह हावी होते देखना नही पसद करते थे । दोनोने मेल करके अपनी सयुक्त सेना ले ७ मई १५८० ई०मे अस्त्राखानको घेर लिया, किन्तु चद दिनोके असफल मुहासिरेके अतिरिक्त उन्हे कुछ हाथ नही आया । इस समयतक उराल (यायिक) उपत्यकामे कसाक रूसी जैसे लडाकू लोग आ बसे थे, जिनका नोगाइयोसे झगडा होता रहता था । दोनके ऊपरी भागमे भी रूसी कसाक रहते थे । उन्होने पहुचकर अस्त्राखानपर अधिकार करके सीमाती इलाकोमे लूट-मार शुरू की । व्यापारियोको ही नही, जारके दूतमडलको भी उन्होने नही छोडा । इस प्रकार हम देखते है, कि इस समय निम्न-वोल्गाकी भूमि नोगाइयो, रूसी कसाको तथा इवान IV के सवारोंकी भूमि बनी हुई थी । इवानने एक बडी सेना जेनरल इवान मुरस्किनकी अधीनतामे भेजी, जिसने शत्रुओको हराकर अस्त्राखानको मुक्त किया । इन्ही दोन-कसाकोका एक नायक येरमक था, जिसने सिबिर विजय किया, और जिसके बारेमे हम पहले कह चुके है । मुरस्किन द्वारा भगाये हुये कसाकोका एक भागने कास्पियनके पश्चिमी-तटपर तेरेक नदीकी ओर जा वहा अपना उपनिवेश बसाया । एक और भागने कास्पियन-तटसे होते यायिक (उराल) नदीके मुहानेपर जाकर डेरा डाला । १५८० ई०मे इन कसाकोने अपने नदियोमे नोगाइयोकी राजधानी सरायचुकके बारेमे सुना, और वह उस पर चढ दौडे । शहरपर अधिकार कर

उन्होने मकानोमे आग लगा दी। जीते नोगाइयोपर ही उन्होने अत्याचार नही किया, बल्कि कब्रोमेसे उनके मुर्दोंको भी निकालकर बाहर फेक दिया।

९ उरुस, इस्माईल-पुत्र (१५८० ई०)

उरुसके पूर्वी सीमातपर सिबिरके खान कुचुमका राज्य था, और पश्चिममे क्रिमियाके खान मुहम्मद गिराई का। इसके सीमातपर रूसके अधीन प्रदेश थे, जिनमे कही-कही रूसियोकी भी बस्तिया बसती जा रही थी। उरुसने १५८३ ई०मे मुहम्मद गिराई और कुचुम खानकी शहसे कामा-तटके इलाके-मे लूट-मार मचाई, लेकिन, इन जगहोमे बसनेवाले रूसी हिम्मतवाले कसाक थे। उन्होने १५८४ ई० मे अपने लिये उराल्स्क नगर बसाया। नोगाइयोके आक्रमणका हर वक्त डर लगा रहता था, इसलिये उन्होने नगरके चारो ओर मिट्टीके धुस खडे कर दिये। पूर्वकी ओर रूसियोके विस्तारमे सबसे पहली और बडी बाधाके रूपमे नोगाई मौजूद थे।

१० अल्ता, उलिशाइन और यान अरसलन, उरुस-पुत्र (१६०१ ई०)

१६०१ ई०मे नोगाइयोके दो भाग हो गये थे, जिनमेसे एकका नाम उरुस था, और दूसरेका कस्साई (छोटा)। अल्ता और उलिशाइन दोनो भाई अपने चचा या मामा कस्साईके ऊपर आक्रमण करना चाहते थे। दोनो कबीलोंके आपसी सघर्षके मारे ओर्दूके दो भाग हो गये। १६०८ ई०में उरुस कबीलेने कस्साईके त्यूमन इलाकेमे घुसकर पिशमा-तटकी बस्तियोको लूटा, लेकिन अन्तमे उन्हे हारकर भागना पडा। १६१३ ई० मे अभी भी नोगाई इतने शक्तिशाली थे, कि उन्होने इश्तेराकके नेतृत्वमे सारे उक्रइनको ही नही लूटा, बल्कि ओका नदी पार हो उत्तरमे कलोम्ना, सेरपुकोफ और मास्कोके पास तकके गावोको भी नही छोडा। ये घुमन्तू कबीले स्थायी निवासी रूसियोके लिये उस समय भी बडे खतरेकी चीज थे, जब कि भारतमे जहागीरका राज्य था।

नोगाइयोमे एक तरहकी आनुवशिक बीमारी थी, जोकि इसी भूमिमे प्राचीनकालमे रहनेवाले शको (सिथियनो) मे भी पाई जाती थी—जिसका कारण सिरियाकी उरानिया देवीका मदिर लूटनेके लिये देवीका शाप समझा जाता था। ग्रीक लेखक हिप्पोक्रातने सिथियनोके बारेमे लिखा है—"सिथियनोके भीतर कुछ ऐसे लोग है, जो कि हिजडे होते है, और स्त्रियोके सभी काम करते है। इसी-लिये उन्हे इनारी (नारी-समान, स्त्रैण) कहा जाता है।" नोगाइयोमे इस बीमारीका पता आधुनिक कालमे वेइनेग्स नामक एक विद्वान्ने लगाया। कल्परोतने यह भी लिखा है—"यह एक तरहकी अचि-कित्स्य बीमारी है, जोकि किसी साधारण रोग या अधिक उमरके कारण होती है। उस समय मर्दोंके चमडेमे झुर्रिया पड जाती है, और उनकी जो चद बालोकी दाढी होती है, वह भी गिर जाती है। फिर आदमी बिलकुल स्त्रीका रूप ले लेता है। वह बिल्कुल स्त्रीका-सा मालूम होता है, और स्त्रियोंसे ही मेल-जोल रखता है।"

१८वी सदीके पूर्वार्धमें पहुचकर नोगाइयोकी शक्ति एक प्रभुताशाली कबीलेके तौरपर खतम हो जाती है, और पीछे इनका नाम भी लुप्त होने लगता है। बुखाराका आखिरी राजवश मगीत नोगा-इयोमेंसे ही था, लेकिन अब उनके लिये भी नोगाई शब्द अपरिचित-सा होता जा रहा था। अजोफ सागरके पास रहनेवाले नोगाई कसाई (कसबुलाद)के ओर्दूसे सबधित थे। कसाईको लघु ओर्दूका सस्थापक माना जाता था। कसाईके वशज अरसलनबेग, मुर्जाबेग, मूमाबेग, तोगानबेग, कसबुला, आदि लघु नोगाईके सरदार थे।

३ (३ नोगाई-वंशवृक्ष)

१३००-१७२४ ई०

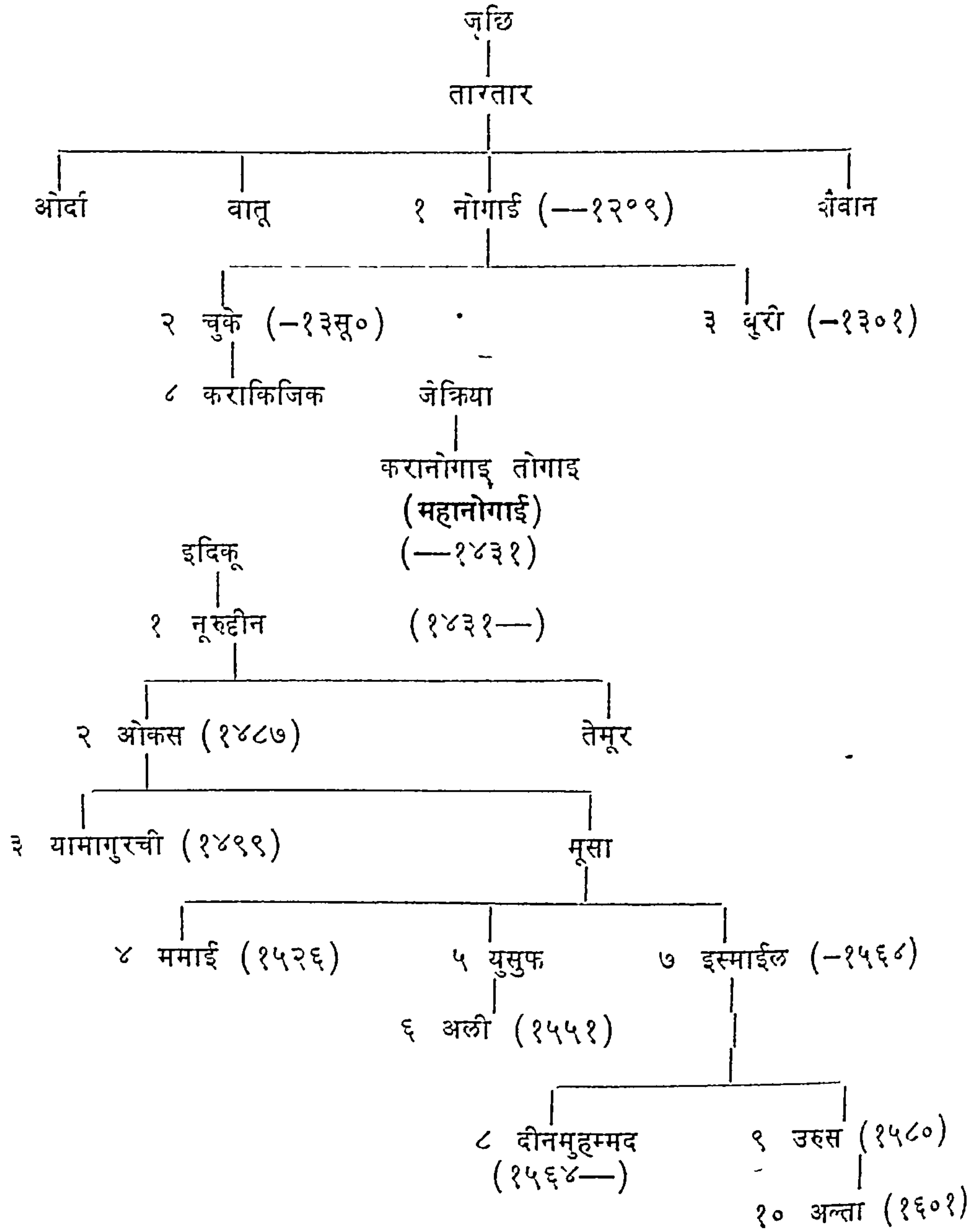

§ ३ कराकल्पक

कराकल्पक आजकल निम्न वक्षु-उपत्यका और अराल सागरके तटपर रहते हैं, जहापर उनका सोवियत स्वायत्त गणराज्य स्थापित है। यह भी नोगाई ओर्दूकी ही शाखा थे, इसलिये यहापर उनके इतिहासपर भी एक सरसरी नजर डालना आवश्यक है।

कराकल्पक अराल-समुद्रके पासके मैदानोमें तथा बुखारा और खीवाके सीमातक आकर बस गये। शायद यह महानोगाइयोंके मुर्जा उरुसके पुत्र अल्ताके साथ सबधित थे। इनके पडोसी इन्हें मदगू (चिप्टी नाकवाला) कहा करते थे। परपरा बतलाती है, कि जब अमीर तेमूर-लगने उनकी राजधानी बोल्गार नगरको नष्ट कर दिया, तो वह सिर-दरियाके मुहानेपर भाग आये। सूर्यकी धूपसे बचने या शोक प्रकट करनेके लिये इन्होंने काली टोपी पहिननी शुरू की, जिसके कारण करा-कल्पक (काली-टोपी) इनका नाम पड गया। एक दूसरी भी परपरा है, जिसे कराकल्पकोंके दूत मुरादशे

और दूसरोंने ओरेनबुर्गके रूसी वोयवोदके पास कही थी कराकल्पक लोग एक समय अस्त्राखान और कजानके बीच वोल्गाके पहाडी किनारोपर रहा करते थे। जब रूसियोंने कजान (१५५२ ई०) और अस्त्राखान (१५५६ ई९) के राज्योको खतम कर दिया, तो यह कबीला वहासे भाग आया। वह अपने को कराकिपचक कहा करते थे, और अपना उद्गम नोगाइयोके अल्ता-ओर्दूसे बतलाते थे, लेकिन पडोसियोने उन्हे काली टोपीके कारण कराकल्पक कहना शुरू किया। मगुत या मगित नामकी सार्थकता अब भी उनकी चिप्टी नाकसे है।

१७१५ ई०मे यात्री बेल वोलगाके किनारेपर आया था। वह समाराके बारेमे लिखते हुये कराकल्पकोका भी उल्लेख करता है समारा (वर्तमान कुइबिशियेफ) को एक खाई और बुर्जोसे किलाबद किया गया है, जिसमे थोडे-थोडे फासलेपर तोपोके रखनेके लिये लकडीके मीनार बने हुये है। यहा पूर्वके रेगिस्तानमे रहनेवाले कराकल्पको (काली टोपियो)के आक्रमणका डर रहता ह, इसीलिये यह सावधानी रखी गई।

कराकल्पकोके पहले दो भाग हुये—

(१) **ऊपरी कराकल्पक**—यह सिरके मुहानेसे ताशकन्द तक पाये जाते थे। जाडोमे इनके युर्ता (डेरे) किसी निश्चित जगहपर होते, लेकिन गर्मियोमे ये चरवाही करते घूमते-फिरते है। इनमे खानोकी उतनी नही चलती थी, जितनी कि खोजो (सत-महतो) की। इनमेंसे अधिकाश १८वी सदीके अन्तमे लडाकूपन छोडकर कुछ-कुछ खेती करने लगे। कजाक इन्हे बहुत सताया करते थे, इसलिये तुर्किस्तान शहर और ताशकन्दके पासवाले कराकल्पकोने जुगारियोके कलमकोकी अधीनता स्वीकार कर ली थी।

(२) **निचले कराकल्पक**—कराकल्पकोके कुछ कबीले अराल-समुद्रके तट तथा कुवान नदीके दक्षिणके प्रदेशमे रहते थे। १८वी सदीके आरम्भमे रूसियोके साथ इनका सम्पर्क हुआ। १७३२ ई०मे कजाकखान अबुल्खैरने अपने डेरेको सिरदरियाकी उपत्यकामे परिवर्तित कर दिया, और रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उसने अपनेको इस तरह मजबूत करके निम्न-सिर-उपत्यकापर भी दावा किया। रूसी प्रतिनिधि दिमित्री ग्लादिश्येफ समारासे चलकर १७४१ ई०के अप्रल मे अबुल्खैरके डेरेमे पहुचा था। उसी यात्रामे उसकी सिर और अदामतके बीचकी भूमिमे घूमनेवाले कराकल्पकोके मुखिया उबैदुल्ला, मुरादशेख, उरसनाक बातिर, तोकुम्बेतबी, उबिलाई सुल्तान और खोजा मरसेनसे मुलाकात हुई। उन्होने निम्न-कराकल्पक ओर्दूके तीस हजार परिवारोकी ओरसे सदाके लिये रूसकी अधीनता स्वीकार करते हुये कसम खाकर कुरानको चूमा। १७४२ ई० मे ओरेनबुर्गमे जाकर उन्होने अपनी शपथ दुहराई। कराकल्पक अब इतने विनम्र और आज्ञाकारी साबित हुये, कि ओरेनबुर्गसे ग्लादिश्येफको उन्हे ओरेनबुर्गके पडोसमे आकर बसनेके लिये समझानेको भेजा गया। ग्लादिश्येफको वहा काइपखान और उसके तीन पुत्र मिले, जिन्होने जारकी राजभक्तिकी शपथ ली। लेकिन इसका यह अर्थ नही कि अब वह अबुल्खैरके कजाकोकी अधीनतासे बिल्कुल मुक्त हो गये थे।

१७४३ ई०मे फिलात गोर्देयेफको दुभाषिया देलनोईके साथ ओरेनबुर्गसे कराकल्पकोके पास भेजा गया—गोर्देयेफ कराकल्पकोकी भाषा जानता था। देलनोईको रास्तेमे ही नवम्बरमे काइपखान और उरुजकुलके दूत मिले। उसने उन्हे पीतरबुर्ग भेजा, जहा दरबारमे उनकी बडी खातिर हुई और रानी एलिजाबेतने खुद दरबारमे उनसे मुलाकातकर अधीनता स्वीकारकी शपथ स्वीकार कर शत्रुओसे रक्षा करनेका वचन दिया। लौटती यात्रामे भी ग्लादिश्येफ उनके साथ था। अबुल्खैरने स्वय रूसकी अधीनता स्वीकार की थी, लेकिन वह यह नही पसद करता था, कि कराकल्पक सीधे रूसको अपना स्वामी माने। इसी बीचमे उसने अचानक हमला करके कितने ही कराकल्पकोको मार डाला, और उनके एक खान उरुजकुलको उसके बीबी-बच्चो के साथ पकड ले गया। इस तरह कजाक तबतक कराकल्पकोको सताते रहे, जबतक कि १७४८ ई० में अबुल्खैर मर नही गया। कजाकोकी इन लूटपाटोके कारण निम्न-सिर-उपत्यकामे कराकल्पकोकी बहुत सी बस्तिया उजड गई, जहा उन्होने

नहरे बनाकर अपने खेत आबाद किये थे। कराकल्पकोंके भागनेसे यह सारी बस्तियां उजड गईं, और नहरे भी बद हो गईं। १७४२ ई०मे ग्लादिश्येफने उजडे यागीकन्तकी कुछ पत्थरकी दीवारो और मीनारोको अच्छी हालतमे देखा था।

बातिरखान, काइप—बातिरखानका भी अबुल्खैरके वशसे सघर्ष होता रहा। बातिरके पुत्र काइपको खीवावालोने अपना खान बनाया था, जिसके बारेमे हम आगे कहनेवाले है। उसीके साथ बहुत भारी सख्यामें कराकल्पक भी खीवाके राज्यमे जा निम्न वक्षु-उपत्यकामे बसने लगे, और धीरे-धीरे वहा उन्हीकी अधिकता हो गई, जिसके कारण आज वहा कराकल्पक स्वायत्त गणराज्यकी स्थापना हो सकी।

१७५० ई०मे अबुल्खैरके पुत्र एरलीने कराकल्पकोपर आक्रमण किया, लेकिन वह अपने बहुतसे साथियोंके साथ मारा गया। अगले कितने ही वर्षोतक बातिर और उसके पुत्र काइपका कजाकोंके लघु-ओर्दूके खान मूरलीके साथ सघर्ष होता रहा, इसी कारण कराकल्पक काफी सख्यामें निम्न सिर-उपत्यका छोडकर ताशकन्दके पास कजाकोके महाओर्दूकी शरणमें चले गये। कजाकोंकी लूटमारके कारण १८वीं सदीके अन्ततक कराकल्पकोंने निम्न-सिरको बिल्कुल छोड दिया, और वह ऊपरकी ओर बढते हुये यानी दरियाके पास चले गये। वहा उन्होने अपने परिश्रमसे एक बडी नहर खोदी, जो पीछे सिर नदीकी एक शाखा बन आजकल यानी दरिया (नवीन नदी) के नामसे मशहूर है। कराकल्पकोंके हट जानेपर निम्न-सिर-उपत्यकामे कजाक आबाद हो गये।

हमने घुमन्तुओंके जीवनके ढगको देखा। मधु-मक्खियोंकी तरह वह सारे कबीलेके साथ एक स्थानसे दूसरे स्थानपर थोडे समयमे पहुच जाते, और कितनी ही बार अपने नामोको भी भुलाकर कोई दूसरे नाम ले लेते। कराकल्पकोंके बारेमे १९वीं सदीके मध्यमे वम्बेरीने लिखा था—

"वह वक्षुके परले तटपर गोरलानेके सामने और कुग्रादके पासतक रहते है। वहा पडोसमें बहुत जगल है। जगलोमे उनके पशुओके गोठ होते है। उनके पास बहुत थोडे से घोडे होते है, और भेड तो मुश्किलसे होती है। कराकल्पक तुर्किस्तानमें अपनी अत्यन्त सुदरी स्त्रियोंके लिये प्रसिद्ध है, लेकिन दूसरी ओर वह सबमे बडे मूर्ख भी कहे जाते है। उनके तम्बुओ (परिवारो) की सख्या दस हजार है। चालीस साल पहले उन्होने कून्ग्रतोंके खिलाफ विद्रोह किया था, जिसमे मुहम्मद रहीमखाने उन्हे दबा दिया। आठ साल बाद १८५५ ई०मे फिर उन्होने जरन्लिगके नेतृत्वमे बीस हजार सवारोके साथ विद्रोह किया, लेकिन कुतुलुक मुरादने उन्हे पूरी तौरसे हरा दिया।" कुइलवाइन १५५८-५९ ई० में खीवामे गया था। उसके समय पद्रह हजार कराकल्पक अर्द्ध-घुमन्तू जीवन बिताते हुये रहते थे। राज्यने उनके ऊपर सबसे ज्यादा कर लगा रक्खा था, अतएव बिचारे बहुत गरीब थे।

रूसियोंने जब वक्षुके मुहानेको ले लिया। उस समय कराकल्पकोंके विद्रोहकी अफवाह सुनकर कर्नेल इवानोफने उनके बी (सरदार) लोगोको बुलाया, जिनमे चिमबाई भी था। जब इवानोफने अपने लोगोंकी सख्या-सूची देनेके लिये कहा, तो वह डर गये। इसपर रूसी कसाकोंने घेरकर बहुतोंको गिरफ्तार कर लिया। इस बर्तावसे रूसियोंने कराकल्पकोंके मनमे बुरा भाव पैदा कर दिया, क्योंकि वह अपने बी लोगोको बहुत आदरकी दृष्टिसे देखते थे।"

स्रोत ग्रन्थ

1. History of Mongol I-III (H. H. Howorth)
2. Bambery

अध्याय ८

मुगोलिस्तानके खान

(१३२१-१५६५ ई०)

चगताई-वशसे किस तरह मुगोलिस्तानके खानोका अलग वश स्थापित हुआ, इसके बारेमे हम वतला चुके है। मुगोलिस्तान मुगलोका स्थान था, यह तो इसके नामसे ही पता लग जाता है, लेकिन वस्तुत जिस भूमिको मुगोलिस्तान कहा जाने लगा, वहा मुगल तो दालमे नमकके वरावर कुछ खान और अमीर परिवारोके रूपमे ही रह गये थे, जो भी वडी तेजीसे तुर्क वनते जा रहे थे। वाकी साधारण जनता तो तुर्क थी ही। पहिले इसी प्रदेशका नाम कराखिताई भी था, जो कि कराखिताई राजवश (११२५-१२१८ ई०)का सूचक था। यूनसखानके शासनके आरम्भ ८८९ हि० (३०I–२०XII १४८४ ई०) मे जव नगरो और खेतीको प्रोत्साहन दिया जाने लगा, तो वहा पुराने समयके कितने ही नगरो और वस्तियोके ध्वसावशेष मौजूद थे। ऊपरी मुगोलिस्तान पहाडी नदियो और झीलोका प्रदेश था। इसके मैदानी इलाकोमे वहुत अच्छी चरागाहे थी, और पहाडी इलाके जगलो और वृक्षोसे ढकी उपत्यकाये थी। पहाड वहुत ऊचे नही थे, इसलिये सर्दी अपनी चरम सीमा तक नही पहुचती थी, और आवोहवा वडी अच्छी थी। असली रेगिस्तान यहा वस्तुत थे ही नही, सिवाय उत्तर-पश्चिमी छोरके। इस भूमिमे नगर या गाव नही, वल्कि खुले मैदान (दश्त) थे। मुगोलिस्तान पहले किर्गिजो और वादमे कजाकोका देश वन गया, तो भी उनके ऊपर मुगोलिस्तानके खान काशगरसे शासन करते थे। १४ वी सदीके पूर्वार्धके एक इतिहास-लेखकने इस प्रदेशके वारेमे लिखा है—"जवसे इस प्रदेशको तातारो (मगोलो)की तलवारोने उजाड दिया, तवसे यहा वहुत कम वाशिदे रह गये। ध्वसावशेषो और करीव-करीव विलुप्त-सी वस्तियोके सिवा यहा कुछ नही दिखाई पडता। दूरसे आदमीको एक अच्छा वसा हुआ नगर दिखाई पडता है, जिसके चारो तरफ सुदर हरियाली छाई हुई है, लेकिन जव पास जाते है, तो वहा वाशिदे नही वल्कि पूरी तरहसे खाली मकान मिलते है। यहाके सारे ही वाशिदे घुमन्तू भेड़पाल और चरवाहे है, जिनको खेती या फसल उगानेमे कोई वास्ता नही।"*

कराखिताइयोने अपने समय इस भूमिमे वहुतसे नगर वसाये थे, जिन नगरोमेसे कुछ वालुका-भूमिमे अव भी हो, तो कोई आश्चर्य नही। महारेगिस्तानके पासमे वसे हुये नगरोको यदि मगोलोने उजाड दिया, तो कभी-कभी वालुका-वृष्टिसे भी उनका सर्वनाश हुआ। स्वेन्-चाङने भी एक वालुका-वृष्टि का वर्णन किया है, जिसके कारण हो-लो-लो-कि-या नगर वालूके नीचे दव गया। डाक्टर वेल्लोने मुगोलिस्तानकी भूमिमे वालुका-वृष्टि द्वारा एक नगरके ध्वस होनेका वर्णन निम्न प्रकार किया है "मजार हजरत वेगमके पासमे वालुका एक पूरा समुद्र है, जो कि उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पूर्वकी ओर वाकायदा लहरोमे आगे वढ रहा है। वालूके टीले अधिकतर दससे वीस फुट तक ऊचे है, लेकिन कुछ पूरे सौ फुटकी छोटी पहाडीसे दिखाई पडते है, कुछ तो और भी ऊचे है। वह एक ऐसे मैदानको ढाके हुये है, जहा नीचे जहा-तहा कठोर मिट्टी दिखाई पडती है। यह टीले दो या तीनके समूहमे एकके पीछे एक चले गये है। लहरे वैसी ही मालूम होती है, जैसे वालुकामय तटपर समुद्रके पानीके हट जानेपर मालूम होती है। दक्षिण-पूर्वकी ओर इन टीलोकी शकल चद्राकार तथा कुछ खाली ढलानकी तरह होती है।

---

*"मस्ल-उल्-अवसार" (शहावुद्दीन)।

रूसी यात्री प्रेजेवाल्स्कीने मुगोलिस्तानकी इसी भूमिको १९ वी सदीमें देखकर लिखा था "इन निर्जन और निष्ठुर पीली पहाड़ियोंको देखकर दर्शकके मनमें बड़ी उदासी पैदा होती है। वहां आकाश और बालू छोड़कर और कुछ नहीं दिखलाई पड़ता—एक भी वनस्पति, एक भी प्राणीका कहीं पता नहीं है। पीले रंग लिये हुये खाकी रंगके गिरगिट कहीं-कहीं दिखाई पड़ते हैं, जिनके चलनेका चिह्न बालूके ऊपर पड़ जाता है। इस निर्जन बालुका-समुद्रको देखकर दिल भारी हो जाता है, कहींसे कोई आवाज नहीं सुनाई देती . ।"

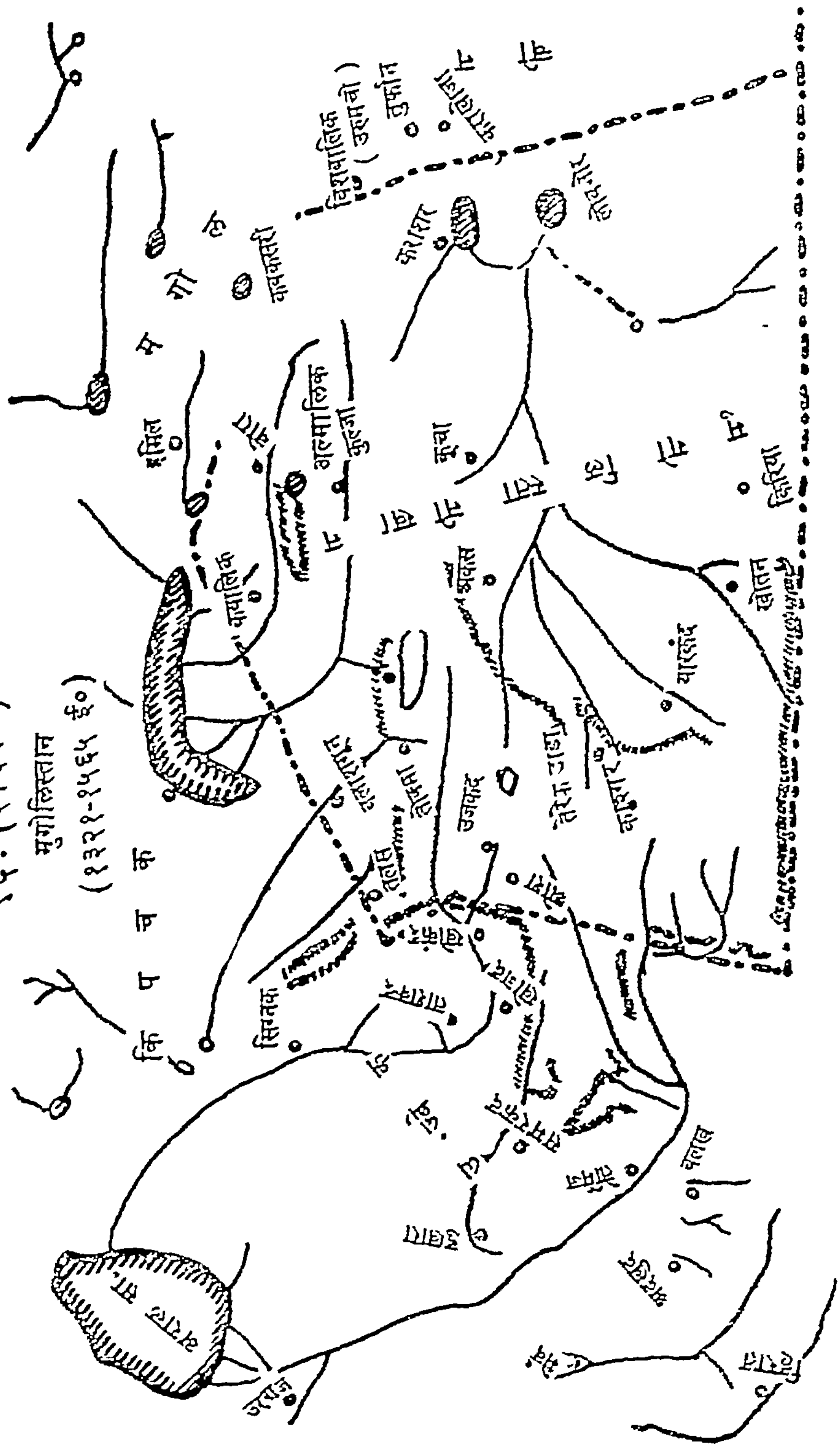

१६. (२।३।४) मुगोलिस्तान (१३२१-१५५४ ई०)

लेकिन, कभी इस निर्जन भूमिमे हरे-भरे नगर और गाव बसे थे। उन्हीके ध्वसावशेषोमे भारतीय सस्कृतिके चिह्न और भारतीय इतिहासपर प्रकाश डालनेवाली बहुत-सी महत्त्वपूर्ण सामग्री मिली है।

चगताई खानका राज्य बहुत विस्तृत था। १३२१ ई० मे जब तुर्क और मगोल प्रधानताके पक्षपातियोमे झगडा बहुत बढ गया, तो मगोल-दलने चगताई-वशके पूर्वोत्तरीय भागको अपने हाथमें कर लिया। मुगोलिस्तानका प्रथम खान तुगलक तेमूर था, जो कि सयुक्त चगताई राज्यके खान ईसान-बुगाका पुत्र था। मुगोलिस्तानके खानोकी नामावली निम्न प्रकार है --

१.	तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र	–१३६२ ई०
२	इलियास, तुगलक-पुत्र	१३६२-८९ ,,
३	खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र	१३८९-९९ ,,
४	शमाजहान, खिजिर-पुत्र	१३९९-१४०८ ,,
५	मुहम्मद, खिजिर-पुत्र	१४०८-१६ ,,
६	नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र	१४१६-१८ ,,
७	शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र	१४१८ ,,
८	वेइस, शेरअली-पुत्र	१४१८-२८ ,,
९	शातुक, शेरअली-पुत्र	१४२८-३४ ,,
१०	ईसानबुगा, वेइस-पुत्र	१४३४-६२ ,,
११	दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र	१४६२-६८ ,,
१२	यूनस, वेइस-पुत्र	१४६८-८७ ,,
१३	महमूद, यूनस-पुत्र	१४८७-१५०८ ,,
१४	मन्सूर, महमूद-पुत्र	१५०८ ,,
१५	सईद, अहमद-पुत्र	१५०८-३३ ,,
१६	रशीद, सईद-पुत्र	१५३३-५६ ,,
१७	अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र	१५९३ ,,
१८	महमूद	
१९	इस्माईल	

१ तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र (–१३६२ ई०)

चगताई-वशके इतिहासमे हम पढ चुके है, कि किस तरह मगोल सरदारोने अपनी प्रभुता और अलग अस्तित्व कायम रखनेके लिये कोशिश करके असफल होनेपर चगताई राज्यके एक भाग को अलग कर अपना अलग खान चुना। इस भागको मगलई-सूबे या मगोलिस्तान कहते थे—मगलाका अर्थ सेनाका हरावल भी है। इस भूभागमें कुल्जा, सप्तनद, इस्सिकुल, दक्षिणी सप्तनद तथा काशगरसे कूचा तक सारा पूर्वी तुर्किस्तान शामिल था। मुगोलिस्तानी-वशके सस्थापनमे सबसे अधिक हाथ अमीर पूलादचीका था। यद्यपि मगोल-अमगोलके साथ मुसलमान और अ-मुसलमानका सवाल भी उठाया गया था, लेकिन उनका पहला खान तुगलुक तेमूर भी अधिक दिनो तक अपनेको रोक नही सका, और अपनी प्रजा और अमीरोकी हमदर्दी प्राप्त करनेके लिये उसे मुसलमान बनना पडा। तुगलक तेमूरके जन्मके बारेमे कहा जाता है, कि उसकी मा अपने पतिके मरनेके बाद एमिल खोजा दुवा-पुत्रकी पत्नी बनी। वही तुगलक तेमूर पैदा हुआ। वहासे उसे लाया गया। दूसरी कहावतके अनुसार पुलादचीने उसे पहले खानके वशसे प्राप्त किया। ईसानबुगाकी प्रिया भार्या सातिलमिश थी, और दूसरी बीबीका नाम मनलिक था। मनलिकको गर्भिणी देखकर उसकी बडी सौतके दिलमे ईर्ष्या पैदा हुई। इसी समय ईसानबुगा मर गया, और मनलिक एमिलखोजाकी पत्नी बन गई। अमीर पुलादची दोगलतको अब एक खानकी जरूरत पडी। उसने मनलिक और उसके पुत्रको ढूढनेके लिये ताश तेमूरको कहा। ताशने कहा—"यह बडी लम्बी और कठिन यात्रा होगी, इसलिये यात्राकी अच्छी तरह तैयारी करनी पडेगी। मै प्रार्थना करूगा, कि हमे छ सौ बकरिया मिले, जिसमे कि पहले हम उनका दूध

पीते रहें, पीछे एक-एकको मारकर खाते अपनी यात्रा जारी रखें।" ताश तेमूर अभियानमें सफल हुआ और वह मनलिकके बच्चेको चुरा लाया। फिर वह अक्सू गया, जहाँपर अमीर पुलादचीने बच्चे तुगलक तेमूरको खान घोषित किया। तुगलक तेमूर केवल मगलाई-सूबेका ही नहीं, बल्कि चगताई राज्यके कुछ और भागोंका भी शासक था। कहते हैं, जब वह कल्मक (जुगारिया) देशमें लाया गया, तो उसकी उमर सोलह सालकी थी। अठारह वर्षकी उमरमें वह खान बनाया गया। जन्म उसका ७३० हि० (२५ X १३२९–१५ IX १३३०) में हुआ था। चौबीस वर्षकी उमरमें वह मुसलमान बना।

शेख जमालुद्दीन नामक एक सूफी-सन्त कतकमें रहता था। उसने जुमा (शुक्र) के दिन भविष्यद्-वाणी की थी—"मैं तुमसे छुट्टी लेता हूँ, दूसरी बार हम कयामतके दिन मिलेंगे।" उसने मस्जिदके मुअज्जनको भी साथ चलनेके लिये कहा। तीन फरसख जानेपर मुअज्जन किसी कामके लिये लौटा, और अजानके लिये मीनारपर चढ़कर उतरा, तो देखा मीनार चारों ओरसे छिप गया है, बालुका-वृष्टि हो रही थी, और इतने जोरकी कि सारा नगर उससे ढक गया। थोड़ी देरमें धरतीके ऊपर उठे मीनारका थोड़ा ही सा भाग ऊपर निकला था। मुअज्जन मीनारपरसे बालूपर कूदकर भाग निकला। शेख अक्सूके पटोसमें बाइबुलमें पहुँचा। खान तुगल्क तेमूरकी शिकार-पार्टी थी, जिसमें उसे जाना जरूरी था। न जानेके कारण उसे पकड़कर खानके पास ले गये। अनजान होनेसे उस ताजिकको सजा नहीं दी गई। उस समय खान अपने कुत्तोंको सूअरका मास खिला रहा था। वह शेखसे बोला—"क्या तू इस कुत्तेसे अच्छा है, या यह कुत्ता तुझसे अच्छा है?"

शेखने जवाब दिया—"अगर मेरे भीतर ईमान है, तो मैं इस कुत्तेसे बेहतर हूँ, यदि मेरेमें ईमान (इस्लाम) नहीं है, तो यह कुत्ता मुझसे बेहतर है।"

इस बातको सुनकर तुगलक बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने शेखको घोड़ेपर चढ़ाकर लौटाया। शेखकी यही करामात थी, जो कि उसके प्रभावमें आकर खानने इस्लामको स्वीकार किया।

मगोलोंके समयमें पहले ही इर्तिश-एमिलसे त्यान्‌शान तक और बरकुलसे फरगाना और बलकाश तकके प्रदेशको कुकचा-तेङ्गिज कहा जाता था। इस भूमिमें मगोलोंके आनेसे पहले अच्छी आबादी थी, लेकिन १४वीं सदीके उत्तरार्धमें बस्तीवासी और घुमन्तू सस्कृतियोंका द्वन्द्व चल रहा था। तुगलक तेमूरने इस्लामी सस्कृतिको स्वीकार कर मगोलोंकी घुमन्तू सस्कृतिको छोड़ दिया। लेकिन उससे दो शताब्दियों पहले यहाँके वासी मुसलमान नहीं, बल्कि बहुत कुछ बौद्ध और कुछ-कुछ नस्तोरी ईसाई थे। चगताईकी एक शाखाके उत्तराधिकारी तेमूरियोंका मुगोलिस्तानी खानोंके साथ बराबर झगड़ा रहता रहा। तेमूरी इन्हें चिढ़ानेके लिये जे-ते (प्रांतवासी) कहा करते थे।

१३६० ई० में तुगलक तेमूरका अपने तुर्क-अमीरोंके साथ अच्छा सबध था। तुगलक तेमूरने ७६२ हि० (११ XI १३६०—२ X १३६१ ई०) में अन्तर्वेदपर आक्रमण किया था। उसकी मृत्युके (७६४ हि० २१ X १३६२—११ IX १३६३ ई०) बाद ही उसके पुत्र इलियास खोजाकी सेना अन्तर्वेदसे हटाई गई। तुगल्क तेमूरकी कब्र अलमालिकसे अलिमतूसे आठ वेर्स्त (४/३ फरसख) और तरानचिन (तरानचिन्स्की) गाँव खारिनमजारसे एक वेर्स्त पर अब भी मौजूद है।

तुगल्क तेमूर मृत्युसे पहले ही पुलादची मर गया था। उसका स्थान उसके अल्पवयस्क पुत्र खुदादादने लिया।

२ इलियास खोजा, तुगलक-पुत्र (१३६२–८९ ई०)

समरकदका उपराज रहकर बापकी मृत्युपर कैसे मुगोलिस्तान भागकर इलियासने गद्दी सभाली, इसे हम बतला चुके हैं। अमीर पुलादचीका भाई कमरुद्दीन इसके समय सर्वेसर्वा था।

इलियास खोजाने मीराके युद्धमें तेमूरी-सेनापर विजय पाई। एक बार उसने समरकन्दको भी जा घेरा, लेकिन घोड़ोंकी महामारीके कारण उसे वहाँसे हटना पड़ा। अमीर पुलादचीके भाई अमीर कमरुद्दीनने शक्तिको अपने हाथमें रखनेके लिये एक दिन तुगलक तेमूरके अठारह पुत्रोंको मरवा

डाला। कमरुद्दीनका भतीजा अमीर खुदादाद अपने पिताके लगाये वशके साथ सहानुभूति रखता था। उसने तुगलकके एक पुत्र खिजिर (?) खोजाको काशगर-बदख्शाके पहाडोमे भेजकर छिपा दिया।

इलियासने चीनके विरुद्ध भी धर्मयुद्ध छेडा, और कराखोजा तथा तुरफानपर अधिकार कर वहाके लोगोको मुसलमान बननेके लिये मजबूर किया। इन युद्धोके समय इलियासको अनाजकी महिमा मालूम हुई, और उसने अपने भाई खिजिरसे पूछा—"क्या सेनाके लिये खाद्य-सामग्री जमा करनेके वास्ते मुगोलिस्तानमे खेती की जा सकती है ?"

तेमूर-लग ७७२ हि० (२६VII१३७०–१६VI१३७१ ई०) मे कोचकर तक चढ आया था, लेकिन उस समय वह मुगोलिस्तानमे और भीतर बढकर आक्रमण नही कर सका। १३७५ ई०के आरम्भमे वह सैरामसे प्रस्थानकर चारिनतक पहुचा। उस समय कमरुद्दीनका डेरा कोकतेपे पर्वतमे था। तेमूर-लगके साथ सीधे लडना उसने पसद नही किया, और बेरकेई गुरयानकी तरफ हटा, जिसके बीच मे तीन बडी-बडी नदिया पडती थी। इन्हीमेंसे एकके किनारे पीछा करके तेमूरने उसे हराया और आगे बढते बाइतकमे पहुचा। अपने तीन अमीरोको उसने इलीके तटपर दड दिया। तेमूर बाइतकमे ५३ दिन रहा। इस समय उसके पुत्र जहागीरने पहाडोमे पीछा करके कमरुद्दीन और मगोल सेनाको उगफेरमर (पूर्वी तुर्किस्तान)मे हराया। बाइतकसे तेमूर करा-कसमक (कस्तेक) डाडा होते हुये अतबाश पहुचा। वहासे अरपाकी द्रोणीमें जा कमरुद्दीनकी लडकीसे अपना ब्याह कर यासी (जासी) डाडेसे होकर उजगेन्दको लौट गया। ख्वारेज्मकी चढाईमे तेमूरको फसा जानकर कमरुद्दीनने १३७६ ई०मे उसपर चढाई की, और अतबाश पहुचा। कमरुद्दीनने रास्तेमे उसे जा घेरा, लेकिन सेकिज-इगाचेमे बडी बुरी तरहसे हारकर घायल हुआ। इस विजयके बाद तेमूर-लग अताकुर होते सिर-दरिया लौटा, जहासे वह समरकन्द चला गया। १३७७ ई०मे तेमूरने कमरुद्दीनके विरुद्ध फिर सेना भेजी, जिसने कुरातमे उसे हराया। तेमूर बडी सेनाके साथ स्वय सप्तनदमे पहुचा था। उसके हरावलने कमरुद्दीनको बुम्सकमे पाया। तेमूर कोचकर तक गया, जहासे ओईनोग होते उजगन्द लौटा।

१३८३ ई०मे तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढाई की। सप्तनदमे उसने अपनी कुछ सेना भेजी। उसकी सेना अताकुममे थी, जहा हरावल भी शत्रुको छिन्न-भिन्न करके लौट आया। अब दोनो सेनाओको लेकर तेमूर इस्सिककुल महासरोवर होते कोकतेपे पर्वतमे पहुचा, लेकिन कमरुद्दीनका वहा कोई पता नही था, इसलिये समरकन्द लौट गया।

३ खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र (१३८९–९८)

बापके मरनेके समय खिजिर खोजा बारह वर्षका था। कमरुद्दीनके शासनकालमे खुदादादने उसे काशगर और बदख्शाके बीचके पहाडोमे छिपा रक्खा। फिर बारह वर्षतक वह दक्षिण-पूर्वके सीमातपर लोब्नोर झीलके पास रहा। जिस तरह उसके बापको खोजकर लाया गया था, उसी तरह खिजिरको भी लोबनोरसे लाकर १३८९ ई०के आसपास खान बनाया गया। इलियास और खिजिर दोनो भाई थे। दोनोकी बाल्य-कथाये एक दूसरेसे इतनी मिला दी गई है, कि उनके बारेमे कुछ निश्चयपूर्वक कहना मुश्किल है। तो भी इतना मालूम होता है, कि इलियास शायद बहुत दिनो तक कमरुद्दीनके हाथो नही बच पाया। खिजिरसे मुगोलिस्तानकी चरागाहोमे खेती करनेके बारेमे सलाह लेनेसे पता लगता है, कि इलियास और खिजिर दोनो भाई उस समय साथ रहते थे।

जिस साल खिजिरने गद्दी सभाली, उसी साल तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढाई की। वह अल्कोशिदनासे बुरीबाश और त्यूपेलिक करक होते ओरनाक (ओजनाक या ओरतक) की ओर बढा। अतकानसूरीमे जब पहुचा, तो गर्मियोके दिनोमें अब भी वहा बर्फ मौजूद थी। ताउरा-अतलस और अईगिरके मैदान, उलागचारलिग होते आगे बढ चापरऐगिरमे उसने मुगोलिस्तानी सेनाको पूरी तौरसे हरा दिया। खिजिर खानने अगा-त्यूरीके नेतृत्वमे तेमूरके खिलाफ सेना भेजी। अगा-त्यूरी जब उरेगयारमे पहुचा, तो तेमूरने उसके विरुद्ध अपनी हरावल सेनाको भेज अपनी सेनाको कई टुकडियो मे करके भिन्न-भिन्न दिशाओमे उसे घेरनेके लिये भेज दिया। तेमूर-लग स्वय करागुचुर तरबगताई डाडेके पश्चिमी भागकी ओर चला। तेमूर-पुत्र उमरशेख दूसरी सेनाके साथ अगा-त्यूरीके पीछे कोबुक

डाडेकी ओर जा उसे हरानेमे सफल हुआ। अगा-त्यूरी भागकर ककमा-त्रुरूजीमे पहुचा। तेमूरने करागुचुरमे डेरा डालकर अपनी एक सेनाको इर्तिश-उपत्यकाकी ओर भेजा, और वदियोको वहासे समरकन्द भेज दिया। फिर वह एमिलगूचुरमे खानकी एक चरागाह सराय-ओर्दामे पहुचा। एमिल-गूचूरमे वह सरायओर्दामे ठहरा। एमिलसे तेमूरने अपनी सेनाको दक्षिणी मुगोलिस्तानपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया। सभी सेनाको आगे युल्दुजमे इकट्ठा होना था। युलदुजसे खिजिर खोजाके पीछे उसने उमरशेखके नेतृत्वमे एक सेना चालिश (करासर)मे भेजी। फिर पूर्वी तुर्किस्तान हो ८-९ अगस्त १३८९ ई०को युलदुज लौट ३० अगस्तको समरकन्द पहुचा। इस रास्तेसे कारवा दो महीनेमे गुजरता था।

१३९० ई०मे फिर तेमूरने मुगोलिस्तानपर आक्रमण किया। ताशकन्दसे वह कमरुद्दीनका पीछा करते इर्तिशतक पहुचा। उसकी सेना ताशकन्दसे इस्सिककुल (सरोवर), कोकतेपे (पर्वत) फिर पहाडी-दुर्ग अराजातू होते निश्चय ही वर्तमान अल्माअता नगरकी भूमिसे गुजरी। अलमालिक फिर इली नदी और काराताल होते, इचनीवुचनी, उकुर-कितचीके मैदानमेंसे जब तेमूर-लग इर्तिशके तटपर पहुचा, तो कमरुद्दीन वहासे उत्तरकी ओर भागकर त्यूलेस देशमे चला गया। इस देशमे समूरी छालवाले जानवर बहुत होते है। लौटते वक्त तेमूर अलतुन-क्युरगे और अरतक-कुल (बलखाश) सरोवरके रास्ते आया। कमरुद्दीन अपने अन्तिम जीवनमे लकवाकी बीमारीसे बेकार हो गया, और लोगोने उसे कुछ रखेलियो और थोडे दिनोका खाना देकर जगलमें छोड दिया।

तेमूर-लगको इन सारे अभियानोसे बहुत फायदा नही हुआ। उसके प्रतिद्वद्वी घुमन्तुओको अपने नगरो और गावोका मोह नही था, इसलिये वह तेमूरी-सेनाके सामने भागकर अपनी रक्षा कर लेते, और उसके हटते ही फिर एकत्रित हो तेमूरको परेशान करनेके लिये तैयार हो जाते। इसलिये तेमूरने अब मुगोलिस्तानके साथ अपनी नीति बदलनी चाही। इसकी खबर पाकर १३९७ ई०मे खिजिर खोजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र शमाजहानको दूत बनाकर तेमूरके दरबारमे भेजा। तेमूर-लगने उसके द्वारा उसकी बहिन तवक्कल आगासे व्याह किया। नई रानीके आनेपर तेमूरने उसका नाम किचिक खानिम (छोटी रानी) रक्खा।

खिजिर खानके समय मुगोलिस्तानके अधिकाश कबीले मुसलमान थे।

खिजिरखान १३९९ ई०मे मरा। उसके बाद उसके चार पुत्रो शमाजहान, मुहम्मद ओगलान, शेरअली और शाहजहानके बीचमे उत्तराधिकारके लिये सघर्ष शुरू हुआ। इस समय उमरशेखका पुत्र मिर्जा अस्कन्दर मुगोलिस्तानकी सीमापर अवस्थित फरगानाका राज्यपाल था। इस झगडेसे फायदा उठाकर मिर्जा अस्कन्दरने अक्सू शहरको घेर लिया, जो कि चीनके व्यापारका बहुत बडा केन्द्र था। कुछ समयके लिये व्यापारके रास्ते अस्कन्दरके हाथमे आ गये। खिजिरके मरनेपर (१३९९ ई०) मुगोलिस्तानका कुछ भाग तेमूरके राज्यमे सम्मिलित कर लिया गया, जिसमें इस्सिककुल सरोवर-वाला प्रदेश भी था। तेमूर-लगने क्षुद्र-एसिया (वर्तमान तुर्की)से लाकर काले तातारोको इस्सिककुलके किनारे बसाया।

४ शमाजहान, खिजिर-पुत्र (१३९९–१४०८ ई०)

भाइयोके सघर्षमे शमाजहानको सफलता मिली। यह तेमूरके जीवनका अन्तिम समय था। तेमूरके मरनेके साथ ही उसके लडकोमे जो झगडा पैदा हुआ, उससे फायदा उठा शमाजहानने १४०७ ई०मे चीनकी मदद लेकर अन्तर्वेदपर चढाई की, किन्तु १४०८ ई०मे उसका देहान्त हो गया।

५ मुहम्मद, खिजिर-पुत्र (१४०८–१६ ई०)

मुहम्मद इस्लामका बहुत पक्षपाती था। इसीके शासनकालमें अधिकाश मुगल-कबीले मुसलमान हो गये। इसने शाहरुखके पास दूत भेजा था। १४१६ ई०मे यह काशगरमें था। चादिरकुलके उत्तरकी ओरकी पहाडियोमे इसकी बनवाई एक रबात (पाथशाला)मे बडे-बडे पत्थर इस्तेमाल किये गये हैं। इतिहासकार हैदरका कहना है, कि ऐसे पत्थर कश्मीरके मदिरोमे मिलते है. रबातका फाटक

चालीस हाथ ऊचा है। फाटकके भीतर घुसकर दाहिनी ओर घूमनेपर साठ हाथ लम्बा एक रास्ता मिलता है। फिर चालीस हाथका एक गुम्बद है, जो वडा ही सुदर और सुडौल है। गुम्बदके चारो ओर चलनेका स्थान है, जिसके चारो तरफ और रास्तेमे भी कितने ही सुदर कमरे वने हुये हैं। पश्चिम ओर तीस हाथ ऊची एक मस्जिद है, जिसमे वीससे अधिक द्वार है। सारी इमारत पत्थरकी है। दरवाजोके ऊपर विशाल शिलाखड रखे हैं, जिन्हे कश्मीरके मदिरके देखनेसे पहले हैदर अद्भुत चीज समझता था।

डाक्टर लेडसेलने शायद हैदरलिखित इतिहास 'तारीखे-रशीदी' से उद्धृत डाक्टर बेलोका उद्धरण देते हुये लिखा है—असली बात यह है, कि महमूदखानने "ताश-रबाद" नामक एक प्राचीन हिंदू-मदिरको मस्जिद बना दिया, जो कि चादरकुलवाले डाडेके रास्तेपर काशगर राजधानीको किर्गिजोंसे बचानेके लिये बने दुर्गमें बना था। हैदर ('तारीखे-रशीदी' कार)का कहना है, कि वस्तुत महमूदखानने वडे-वडे पत्थरोकी यह रबात वनवाई।

यह रबात चादरकुलसे थोडी दूर अलमाती, वेरनीसे काशगरको नारिनसे होकर जानेवाले मुख्य रास्तेपर अवस्थित है, जिसे बहुतसे युरोपीय यात्रियोने देखा है। डाक्टर सीलेडने लिखा है—"यात्रीको भारी पत्थरोसे वनी हुई अडतालीस कदम लम्बी और छत्तीस कदम चौडी इमारतको देखकर आश्चर्य हुये बिना नही रहता। इसकी छत समतल है, जिसके बीचसे पच्चीस फुट ऊचा आधा नष्टसा गुम्बद उठा हुआ है। दरवाजा काफी ऊचा और मेहराबी है, जिसके द्वारा भीतर जाया जा सकता है। भीतर खिडकिया नही है। गुम्बदके नीचे एक कमरा या शाला है, जिसकी बगलमे नौ फुट ऊचाईवाली कोठरिया चारो दिशाओमे लातिनी (रोमन) सलेबकी शकलमे है। . .कोठरिया नीचे वर्गाकार और ऊपर गोल है। उनके भीतर पूरा अधेरा छाया रहता है, सिवाय उन कोठरियोके जिनकी छते गिर पडी है। इनके द्वार इतने नीचे है, कि आदमीको बहुत झुककर भीतर जाना पडता है। कोठरियोके भीतर किसी गवाक्ष या सोने-बैठनेकी जगह नही है। इस इमारतमे रसोईघर या चूल्हेका कही पता नही। इमारत पास-पडोसमे पाये जानेवाले पत्थरोकी वनी हुई है। वीचके हॉलमें पलस्तरका थोडा-थोडा चिह्न मिलता है, लेकिन किसी तरहकी सजावट नही है।" यह यात्री लिखता है, कि मध्य-एसियाके कारवा-सरायो या रबातोसे इस इमारतका कोई सादृश्य नही है। कोई-कोई इसे ईसाई-मठ बतलाते है, और कोई-कोई हिंदू (बौद्ध)-विहार। दोनो ही एक समय इस भूमिपर बहुत प्रभावशाली धर्म थे, इसलिये इसका बौद्ध-विहार या नेस्तोरीमठ होना आश्चर्यकी बात नही है। महमूदखानने ऐसी विचित्र इमारत स्वय वनाई हो, यह विश्वासकी बात नही जचती।

६ नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र (१४१६–१८ ई०)

१४१६ ई०मे खान बननेपर इसके पास चीन-सम्राट् और शाहरुखके दूत आये। इसका शासन-काल थोडा रहा, और १४१८ ई०के आरम्भमे शेरअलीके पुत्र वेइस ओगलानने इसे खतम करके गद्दी सभाल ली।

७ शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र (१४१० ई०)

शेर मुहम्मद शाहरुख मिर्जाका समकालीन था। इसका भतीजा वेइस विद्रोही बनकर कजाको (लुटेरो) का जीवन बिता स्वतत्र खान बन गया। वेइसके लूट-मारमे बहुतसे मगोल तरुण भी शामिल थे, जिनमे इतिहासकार हैदरका दादा मीर सैयदअली भी था। हैदरने वडे अभिमानके साथ लिखा है—"मै वेइसखानका नाती हू, और बापकी तरफ अमीर खुदादाद-पौत्र सैयद अहमद मिर्जा-पुत्र अमीर सैयदअली मेरा दादा था। अमीर खुदादादने अपने पुत्र सयद अहमदको काशगरका राज्यपाल बनाकर भेजा था। उस समय वहा खोजा शरीफकी बहुत चलती थी। उसने अधिकार छिन जानेमे नाराज होकर काशगरको उलुगबेगके हाथमे दे दिया। इसपर सैयद अहमद मिर्जाको अपने बेटे अमीर सैयदअलीके साथ काशगर छोडकर मुगोलिस्तानकी तरफ भागना पडा, जहा अहमद जल्दी ही मर गया।"

८ वेइस, शेरअली-पुत्र (१४१८–२८ ई०)

शेरमुहम्मदके समय यह अलग खान वन बैठा पर चैनसे रहनेका मौका नही मिला। १८२० ई० मे मुहम्मदखान-पुत्र शेरमुहम्मदसे इसका सघर्ष हुआ, और अन्तमें शेरमुहम्मदको समरकन्द भाग जाना पडा। जहा कुछ समय वदी रखकर उलुगवेगने उसे मुक्त कर दिया और १८२१ ई० मे वह मुगोलिस्तान लौटा। वेइसने अपनेको पक्का मुसलमान सावित करनेके लिये मुसलमानो के ऊपर आक्रमण करनेकी मनाही कर दी थी। लेकिन घुमन्तुओंके लिये लूट-मारका कोई रास्ता तो चाहिये, इसलिये उसने वौद्ध कलमकोंको अपनी जहादका शिकार वनाया। पर, कलमक भी वहुत तगडे थे। कई वार उन्होंने वेइसको हराया। मिंगलकके युद्धमें पकडकर उन्होंने उसे अपने राजा ईसन थैंसीके पास भेज दिया। उसने घोडेसे उतरकर थैंसीको सलाम नही किया, तो भी मगोलोंको छिङ्-गिस्के पवित्र वशका ख्याल था, इसलिये उन्होने वेइसको छोड दिया। दूसरा युद्ध उसका कवाका के पास मुगोलिस्तानमे हुआ, जिसमे मुश्किलसे जान वचाकर वह भाग पाया। एक और युद्ध उसने तुर्फानके पास ईसन थैंसीसे किया, जिसमे वेइस वदी हुआ, और उसने अपनी वहिन मखदूम खानिमको देकर छुट्टी पाई। वेइसने कलमकोंके साथ छोटे-वडे एकसठ युद्ध किये, जिसमें सिर्फ एकमें सफल हुआ। वेइस शरीरसे वहुत वलवान् था। हर साल वह तुर्फान, तरिम-उपत्यका, लोव और कातकके प्रदेशोंमें जगली ऊटोंके शिकारके लिये जाता। "खान स्वय गर्मियोंमे अपने दासोंकी मददसे घडोंमे पानी निकालकर जमीनकी सिंचाई करता।"

अमीर खुदादाद अव वानवे सालका हो गया था। वह हज करनेके लिये जाना चाहता था, लेकिन मौका नही पा रहा था। इसपर वूढेने उलुगवेगको वुलाया, लेकिन उलुगवेगको मगोलोंके हाथो वडी मुसीवत उठानी पडी। जव वह मुगोलिस्तानके प्रसिद्ध नगर चूमे पहुचा, तो अमीर खुदादाद सेना छोडकर मिर्जा उलुगवेगसे जा मिला। मुगोल हराकर तितर-वितर कर दिये गये। खुदादाद उलुगवेगके साथ समरकन्द पहुचा। तेमूरियोको छिङ्-गिस् खानके तूरा (यासाक)के जाननेकी वडी उत्सुकता थी। शायद उनको मालूम नही था, कि छिङ्-गिस्के आदेशो (यासाक)को चीनी और मगोल भाषाओंमे लिखकर पहिले हीसे सुरक्षित रखा गया है। उस समय समझा जाता था, कि छिङ्-गिस्का तूरा कुछ वडे-वूढोंने अपनी स्मृतियोंमे सुरक्षित रख छोडा है। अमीर खुदादाद छिङ्-गिस्के तूराका नही, वल्कि इस्लामका पक्षपाती था। उसने उलुगवेगसे कहा—"हमने कुख्यात छिङ्गिसी तूराको विल्कुल छोड शरीयतको स्वीकार किया है, लेकिन, यदि मिर्जा उलुगवेग तूराको पसद करते है, तो मै उन्हे ऐसे सिखलाऊगा, जिसमे कि वह शरीयतको छोडकर तूराको स्वीकार करे।" मिर्जा उलुगवेगने शायद अपनी वैज्ञानिक-वुद्धिसे वूढेको परख लिया हो, इसलिये उसने तूरा सीखनेका ख्याल छोड दिया।

उलुगवेग अपने इस आक्रमणमे चू, और चारिनके रास्ते गया था। खुदादाद जहा उसे आकर मिला, उसी स्थान पर मई १४२५ ई०मे शेरमुहम्मदकी हार हुई। उलुगकी सेनाने शेरमुहम्मदका पीछा इली नदीतक किया, यद्यपि स्वय उलुगवेग युलदुजमे रहा। वहासे लौटते वक्त रास्तेमें करगी स्थानमे उसने प्रसिद्ध कोक-ताश (नील-पाषाण)को पाया। तेमूर भी इस कोक-ताश (नीलपाषाण)को समरकन्द ले जानेकी वडी इच्छा रखता था, जिसको पूर्ण करनेका अवसर उसके पोतेको मिला।

शेरमुहम्मद वस्तुत वेइसका समकालीन खान था। मुगोलिस्तानका कुछ भाग इसके हाथमें था। उसके मरनेपर उसका राज्य भी वेइसके हाथमें चला गया। वेइस खानको १४२८ ई०मे इस्सिककुल्के तटपर शातुककी राहमे कत्ल कर दिया गया। उलुगवेग शातुकको खान वनाना चाहता था, इसलिये वेइसके विनाशमें उसकी भी सहमति थी। यह भी कहा जाता है कि वेइस घोडा कुदाते हुये स्वय गिर गया, और गलतीसे अपने ही आदमियोंके तीरका शिकार हुआ।

वेइसके जमानेमे काफिर (वौद्ध) मगोलो—चोरोस, खोशोत, तोरगोत और खाइत—का पूर्वसे मुगोलिस्तानपर आक्रमण शुरू हुआ। १३९९ ई०मे ओइरोत राजा उगेची खासागने मगोलोंके खान

एलवेकको मार डाला । उसके वाद ओइरोतोकी प्रधानता शुरु हुई । १४०८ ई०मे उन्होने उलजई-तिमूरको विशबालिकमे कआनकी गद्दीपर वैठाया । इसी समय मुगोलिस्तानके कुछ हिस्सेपर पूर्वी-मगोलोने अधिकार कर लिया । इन्ही ओइरोतोको मुसलमान लेखक कलमख(कलमक) कहते है । मुहम्मदखान उनसे लडनेके लिये तैयार हुआ, और उसका प्रतिद्वद्वी वेइस चीनी लेखकोके अनुसार पूर्वी तुर्किस्तानसे अपनी मुख्य सेना ले पश्चिममे सप्तनदमे इली-तटपर ईलीवालिक पहुचा ।

१५ वी सदीके यात्रियोके अनुसार मुगोलिस्तान उस समय मुख्यत घुमन्तुओका देश था, जो तम्बुओ मे रहते और घोडोके मास और कूमिसपर गुजारा करते । उनमेसे कुछ वौद्ध ओइरोतोकी तरफ थे, और कुछ मुसलमानोकी तरफ । इलीके तटपर ही वेइस खानको कई वार ओइरोतोके सरदार ईसन थैसीसे लडना पडा ।

९ शातुक, शेरअली-पुत्र (१४२८–३४ ई०)

शातुक समरकन्दमे रहता था, जहासे उलुगवेगने उसे वेइससे लडनेके लिये मुगोलिस्तान भेजा । मुगोलिस्तानमे शातुकके पक्षपाती अमीर कम थे, इसलिये वह काशगर गया, जहापर खुदादादके पौत्र कराकुल अहमद मिर्जाने उसे हराकर मार डाला । इसपर उलुगवेगने एक सेना भेजी, जो अहमद मिर्जाको पकडकर समरकन्द ले गई, जहा उसके दो टुकडे कर दिये गये ।

शातुकके मरनेके वाद मगोल अमीरोके दो दल हो गये थे, एक वेइसके वडे लडके यूनसको खान वनाना चाहता था, और दूसरा बेइसके दूसरे पुत्र एसेनबुकाको । दोनो ही अल्पवयस्क थे । एसेनवुकाकी पार्टी ज्यादा मजबूत थी, इसलिये वह गद्दीपर वैठा । यूनस अपने आदमियोके साथ उलुगवेगके दरवारमे चला गया, जिसने उसे ईरान भेज दिया । वावरके अनुसार यह घटना जून १४३४ ई०की है ।

१० एसेनबुगा, ईसनबुगा, बेइस-पुत्र (१४३४–६२ ई०)

एसेनवुगा अमीरोके हाथका खिलौना था । उसके प्रभावशाली अमीरोमे खुदादाद-पुत्र मीर मुहम्मदशाह (अतवाश) और मीर करिमवेर्दी थे । करिमवेर्दीने अपने लिये अलावुगमे एक दुर्ग वनवाया, जहासे वह उलुगवेगशासित फरगानामे लूट-मार किया करता था । तीसरा अमीर मीर हकबेर्दी वेकिचेक था, जिसने इस्सिककुल सरोवरके एक द्वीप कोइसुइमे अपना गढ वनाया था । कलमकोका भी उत्तर-पूर्वसे वरावर आक्रमण होता रहता था । एसेन एक वार स्वय तुर्किस्तान शहर और सैरामपर आक्रमण करने गया ।

मुगोलिस्तानी उधर अन्तर्वेदपर लूट-मार करने जाते, तो कलमक उन्हे लूटते-पाटते इस्सिक्कुलतक पहुचते—कुछ साल पीछे तो वह सिर नदीतक पहुचने लगे ।

ईसानवुगाके खान वननेके वाद यूनस तीस हजार परिवारोवाले ओर्दू और ईराजान तथा मीरकतुर्कमानके साथ उलुगवेगके पास पहुचा था । उलुगवेगने उसे अपने पिता शाहरुखके पास भेज दिया, जिसने यूनसके साथ पुत्रवत् व्यवहार किया । यूनस वारह सालका था, जव कि यज्द (ईरान)मे उसने मौलाना शरफुद्दीन यज्दीसे पढना शुरू किया । मौलानाके मरनेके समय वह चौवीस सालका था । फिर वह यज्द छोडकर यात्रापर निकला, और इराक, अरव, आजुर्वाइजान होकर शीराजमे रहने लगा । एकतीस सालकी उमर तक वह मुगोलिस्तानसे वाहर रहा ।

यूनसके चले जानेपर ईसनवुगा सारे मुगोलिस्तानका खान था । शासन मजबूत हो जानेपर अमीर सैयद अलीने काशगर आनेकी आज्ञा मागी । यह कह ही चुके है, कि काशगरको खोजा शरीफ काशगरीने उलुगवेगको दे दिया था, जिसकी ओरसे अमीर सुल्तान मलिक दुलादाई राज्यपाल नियुक्त हुआ, उसके वाद हाजी मुहम्मद शाइस्ता फिर पीर मुहम्मद वरलस राज्यपाल हुये । सैयद अलीने खानसे कहा—"मै देखना चाहता हू, कि क्या मै अपने परिवारके पुराने इलाकेपर फिरसे अधिकार स्थापित कर सकता हू, जिसमे कि चालीस वर्षसे हम वचित है । यदि मै सफल नही हुआ, तो आप मुझे धिक्कार सकते है ।" एसनवुकाने अपनी सहमति दे दी ।

इस समय मगलाई सूयाह (काशगरिया) का अधिकाश भाग दोगलतोंके हाथमे था, लेकिन अन्दिजान और काशगरपर समरकन्दके शासक उलुगवेगका अधिकार था। इस्सिक्कुलका पहाडी इलाका संघर्षोंका अखाडा बन गया था। बाकी इलाके दोगलत अमीरोंके हाथमे थे। अमीर सैयद अली अक्सूमे अपने भाइयोको भगा वहा अपने परिवारको रख सात हजार सेना लेकर काशगरके ऊपर चढा। पहली ही भिडन्तमे हाजी मुहम्मद शाइस्ता भाग निकला। मुगोलिस्तानियोने चगताइयो (उलुगवेगकी सेना) का पीछा किया, लेकिन अभी भी काशगरके किलेमे दुश्मन मौजूद था—शाइस्ताने वहा मोर्चाबदी कर रक्खी थी। अमीर सैयद अलीने नगरपर अधिकार पा आसपासके इलाकोंको उजाडना शुरू किया। उलुगवेगके पास समरकन्द गुहार गई, लेकिन वह ऐसी स्थितिमें नही था, कि सेनाकी मदद भेजना। अमीर सैयद अलीने जब तीसरे वर्ष काशगरपर चढाई की, तो लोगोने तग आकर खोजा शरीफसे कहा—"हमने लगातार तीन वर्षतक फसल गवा दी। अगर इस सालकी फसल भी हाथसे चली गई, तो देशमे भारी अकाल पडेगा।" लोगोने पीर मुहम्मद बरलसको पकडकर अमीर सैयद अलीके हाथमें दे दिया, जिसने उसे मारकर काशगरके भीतर प्रवेश किया, और चौबीस सालतक वहा राज्य किया। हैदरके अनुसार उसने कृषि और पशु-पालनके ऊपर बहुत ध्यान दिया। वह तीन पुत्र और दो लडकिया छोडकर मरा। इन्ही पुत्रोमेंसे एक "तारीखे-रशीदी" का लेखक मुहम्मद हैदर मिर्जा था।

ईसानवुगाकी तरुणाईके कारण अमीर उसका बहुत मान-सम्मान नही करते थे। उस समय तुर्फानके उइगुरोके अमीर तेमूरका बहुत मान था, जिससे दूसरे अमीर डाह करने लगे, और एक दिन खानके सामने ही उन्होंने पकडकर तेमूरकी चोटी काट डाली। अमीर सैयद अलीने जब यह खबर सुनी, तो उसने ईसानवुगा खानको अकवाससे ले आकर अक्सूका राज्यपाल बना दिया। चोटी काटनेसे यह मालूम होगा, कि अभी उइगुरोमे गैर-मुस्लिम (बौद्ध) भी थे। जान पडता है, मुस्लिमोंसे अलग करनेके लिये चुटियाका चिह्न समकालीन भारतमे ही नही, बल्कि मध्य-एसियामें भी था। चीनियोमे जबर्दस्ती मचूओने-चोटी रखवाई थी, किन्तु मगोल गृहस्थोकी चोटी तो मैंने अपनी आखो १९३५ ई० मे खैलरके पास देखी। जब उक्रइनके लोग तुर्की सुल्तानके अधीन थे, उस समय वहा भी चोटी ईसाइयो का और दाढी मुसलमानोका चिह्न था।

ईसानवुगाके समय अमीरोकी मनमानी चलती रही। दुगलत कबीलेके मीर करीमवर्दीने मुगोलिस्तानकी सीमातपर अल्लावुगाकी पहाडीपर अपने किले बनाये थे, जहासे वह फरगना अन्दिजानकी ओर मुसलमानोको लूटने जाता। दूसरा अमीर मीर हकवेर्दी वेगजिकने इस्सिक्कुलके टापू कुई-सुईमे किला बनाकर कलमखोंसे बचनेके लिये वहा अपने परिवारको रक्खा था। जारा और वारिनप कबीलोंके अमीर ईसान थैशीके पुत्र अमासाजी थैशीका साथ देते थे। ईसान थैशी कल्मक-भूमिका स्वामी था। कालूर्जी, बल्गार्जी और दूसरे कितने ही कबीले कजाक-खान अबुल्खैर (तुर्किस्तान) के साथ हो गये थे।

ईसानवुगाके अक्सूमे जम जानेपर धीरे-धीरे उसके अमीर भी उसके पास जमा होने लगे। खान भी उनके साथ अच्छा वर्ताव करता था। जब शक्ति मजबूत हो गई, तो ईसानवुगाने ८५५ हि० (१४५४ ई०) मे एक साथ ही आक्रमण करके सैराम, तुर्किस्तान शहर और ताशकन्दको लूट-मारकर बरबाद कर दिया। इस समय वाबरका दादा सुल्तान अबूसईद मिर्जा अन्तर्वेद (पश्चिमी तुर्किस्तान) का बादशाह था। अबूसईदने खानका पीछा किया, और उसे यगी—जिसे इतिहासकी पुस्तकोमे तराज कहा जाता है—में जा पकडा। मुगल बिना युद्ध किये ही भाग गये। अबूसईद अन्तर्वेद लौट गया, लेकिन जब वह खुरासानकी ओर गया, तो फिर मुगोलिस्तानियोने हमला कर दिया। ईसानवुगाके अन्दिजानमें पहुचनेकी बात सुनकर अबूसईदके सेनापति मिर्जा अली कूचुकने भीतरी किलेको मजबूत कर दिया था, लेकिन बाहरी किले पर ईसानवुगाका अधिकार हो गया। अन्तमे सुलह हुई। खान सारे अन्दिजान इलाकेपर अधिकार करके लौट गया। सुल्तान अबूसईदको बडी परेशानी थी। यदि वह मुगोलिस्तान पर चढाई करता, तो खान अपने देशके दूसरे छोरपर चला जाता, जहापर उसका पीछा करना समरकन्दकी सेनाके लिये बहुत मुश्किल था। जब अबूसईदकी सेना लौटती, तो खान उनकी पीठपर होता।

हर समय मुकाविलेके लिये सेना भेजना सम्भव नही था। अबूसईदकी जैसी परेशानी घुमन्तुओंके साथ उससे डेढ सहस्राब्दी पहलेके दूसरे राजाओके सामने भी आती रही।

मुगोलिस्तानमे फसे होनेके कारण अबूसईद इराकपर चढाई नही कर पाता था। अन्तमे अबूसईदको एक ही रास्ता दिखलाई पडा, कि यूनसको ईरानसे बुलाकर उसके भाईके खिलाफ भिडा दिया जाय। उसने ऐसा ही किया। इस समय दश्तेकिपचकपर अबुल्खैर खानका मजबूत शासन था। इस कजाक खानसे हारकर जू-छि-वशज जानीवेग खान और गिराई खान मुगोलिस्तानमे चले गये। अबुल्खैरके मरनेके वाद उसका उज्वेक-कजाक उलुस आपसी झगडोके कारण छिन्न-भिन्न हो गया, और उनमेसे अधिकाश जाकर गिराई और जानीवेग खानके ओर्दूमे मिल गये। अव इनकी सख्या दो लाख थी। इसी समय उनके ओर्दूको उज्वेक-कजाकका नाम दिया गया, यह कह आये है। कजाक-सुल्तान ८७० हि० (२४ VIII १४६५- १५ VII १४६६ ई०) से शासन करने लगे, और ९४० हि० (२३ VII १५३३–१३ VI १५३४ ई०) तक उज्वेकिस्तान (किपचक-भूमि)के अधिकाश हिस्सेपर उनका पूर्ण प्रभुत्व था। गिराई खानके वाद वेरेदक-पुत्र फिर जानीवेग खानके पुत्र कासिम खान हुआ। कासिम खानने सारे दश्ते-किपचकको जीत लिया, यह हम पहले वतला चुके है। हैदरके अनुसार उसकी सेना हजार-हजार (दस लाख) से ज्यादा थी, और जू-छि खान छोडकर इतना वडा खान उस भूमिमे और कोई नही हुआ। कासिमके वाद उसका पुत्र मिमेश खान फिर उसका पुत्र ताहिर खान हुये। ताहिरके समयसे कजाकोकी शक्ति कमजोर होने लगी। ताहिरके वाद उसका भाई बिरलस था, जिसके समय उसका उलुस वीस हजार कजाकोका रह गया था। ९४० हि० (१५३३-३४ ई०) मे बिरलसके मरनेपर कजाक बिल्कुल लुप्त हो गये। ईसानबुगाके समयसे रशीद खानके समय (१५३३-६५ ई०)तक कजाको और मुगलोके बीच अच्छा सवध रहा।

हैदरकी तरह मध्य-एसियाके किसी कबीलेके लुप्त होनेकी वातका अर्थ यही है, कि उनमे फिर नई गुटबदी हो गई।

अमासची थैची (थैशी) और उजतिमूर थैचीने १४५२ ई० और १४५५ ई० के बीच (दूसरी परपराके अनुसार १४३७ ई० मे) सिर-दरियाके तटपर उज्वेक-कजाकोको बुरी तरहसे हराया। इस प्रकार अल्ताईके पासवाले कल्मक अव सिर-दरियाके तटतक पहुचने लगे। १४५९ ई०के अन्तमें सुल्तान अबूसईदने हिरातमें कल्मक-दूतसे भेट की। मगोलोके आक्रमणका उत्तर देनेके लिये अबूसईदने मुगोलिस्तानपर चढाई कर उन्हे अशपारमे हराया।

१४५६ ई० मे अबूसईदने यूनसको मुगोलिस्तानमे लाकर वैठाया, किन्तु उसे हारकर फरगाना और सप्तनदकी सीमापर अवस्थित जीतीकेदमें भागना पडा, जिसे कि अबूसईदने यूनसको दिया था।

एसेनबुगा १४६२ ई०मे मरा।

११ दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र (१४६२–६८ ई०)

ईसानबुगाके मरनेके वाद सत्रह वर्षकी अवस्थामे उसका पुत्र दोस्तमुहम्मद अक्सूमे वापकी गद्दी पर वैठा। यह वडा ही सनकी-सा तरुण था। इसने यारकन्द और काशगरपर चढाई की, और काशगरको लूटकर अक्सू लौट गया। मुहम्मद हैदर मिर्जा (इतिहासकार) इससे नाराज होकर यूनस खानसे जा मिला। थोडे ही समय वाद दोस्तमुहम्मदने अपनी सौतेली मापर आशिक हो मुल्लोंसे व्याह करनेके अनुकूल फतवा मागा। इन्कार करनेपर सात मौलवियोको उसने मरवा डाला। आठवे मौलवी मुहम्मद अत्तारकी वारी आई। शरावमे मदहोश और हाथमे तलवार लिये हुये उसने मौलवीसे पूछा—"मै अपनी मासे व्याह करना चाहता हू। यह विहित है या नही?" अत्तार अपने समयके पूर्वी तुर्किस्तानका वहुत ही धार्मिक और अत्यन्त विद्वान दरवेश था, उसने खानसे कहा—"तुम्हारे जैसोंके लिये यह विहित है।" खानने तुरत व्याहकी तैयारी कर दी। हैदरके अनुसार स्वप्नमे उसके पिताने उसे फटकारते हुये कहा—"ओ अभागे, एक सौ वर्ष तक मुसलमान रहनेके वाद तू काफिर वनना चाहता है।" मगोलोमे सौतेली माको मा नही मानते थे, और उनमे ऐसा व्याह होता रहता था। शायद यही समझकर दोस्तमुहम्मदको सौतेली माके व्याहको शरीयतसे विहित करानेकी इच्छा हुई।

चिरागकुश (दीपबुझाव) सम्प्रदाय—दोस्तमुहम्मद खान (१४६१–६८ ई०) की लम्पटताके बारेमे सुनते वक्त यह भी याद रखना चाहिये, कि हैदरके अनुसार दोस्तमुहम्मदसे सौ वर्ष पीछे भी बदख्शामे एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसे 'चिरागकुश' कहते थे—"इस मतका बदख्शामे संस्थापक शाह राजीउद्दीन था। उसके अनुयायी जिस किसी अजनबीको पा उसे मार डालनेको मुक्तिका रास्ता मानते थे। कोहिस्तान (पामीर)के विधर्मियोमे राजी बड़ा ही पापी था। बदख्शाके अधिकांश लोग इसके ही अनुयायी है। उनके लिये अपने नजदीकी सबंधियोमे व्यभिचार करना वैध है, उसके लिये विवाह करनेकी भी कोई अवश्यकता नही। अगर कोई किसीके साथ योन-संबंध करना चाहता, तो बेटा या मा किसीसे भी प्रसग करना बिल्कुल वैध है। उनमे यह नियम है, कि एक दूसरेकी स्त्री और सम्पत्तिका उपभोग करे।" हैदरका यहा अभिप्राय शायद बदख्शाके इस्माइलियोसे है। इस्माइली शीयोका एक सम्प्रदाय है। ये लोग छठे इमाम जाफर सादिकके ज्येष्ठ पुत्र इस्माईलको वास्तविक उत्तराधिकारी तथा अन्तिम इमाम मानते है, जब कि दूसरे शीया इस्माईलके भाई मूसा तथा पाच और पीछेके दूसरे—कुल बारह इमामोको मानते है। इन्ही इस्माइलियोके गुरु आगा खा है। सोवियत शासनकी स्थापना (१९१८ ई०) से पहिले तक पामीरके इस इलाकेमे 'चिरागकुश' इस्माइलियोकी काफी सख्या थी—अफगानिस्तानके इलाकेमे शायद वह अब भी है।

चालीस सालकी उमरमे छ दिन बीमार रहकर ८७३ हि० (२२ VII १४६८–१२ VI १४६९ ई०) मे दोस्तमुहम्मद मर गया। उसके पुत्र सुल्तान ओगलानको पकडकर तुर्फान और चालिश (करासर) ले गये। इस समय यूनसको मौका मिला और उसने आकर अक्सूको ले लिया।

१२ यूनस, वेइस-पुत्र (१४६८–८७ ई०)

एसन (ईसन) बुगाके मरनेके बाद वस्तुत मुगोलिस्तानका राज्य दो भागोमे विभक्त हो गया था। ८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) तक अक्सू और पूर्ववाले प्रदेशमे एसनबुगाके पुत्र दोस्तमुहम्मदका शासन था, और पश्चिमी भाग पर यूनसका। दोस्तमुहम्मदके बाद केबेक-सुल्तान चार साल पीछे तक राज्य करता रहा, जिसके सिरको काटकर उसके ही आदमियोने यूनसके पास भेज दिया। इस प्रकार १४७२ ई०मे यूनस सारे राज्यका स्वामी बन गया।

यूनसका जन्म ८१८ या ८१९ हि० (१४१५ या १४१७ ई०) मे हुआ था, और जैसा कि पहले बतलाया, बचपनमे ही वह ईरान चला गया, जहा उसे शरफुद्दीन यज्दी जैसे प्रसिद्ध इतिहासलेखक और विद्वान्के पास शिक्षा प्राप्त करनेका अवसर मिला। उसे घुमन्तू-जीवन पसद नही था। दोस्त मुहम्मद खानके मरनेपर यूनसको मैदान खाली मिला। वह अक्सूपर अधिकार करके वही रहना चाहता था। शायद वह केबेक-सुल्तान ओगलानके साथ झगडा न करता, यदि उसे डर न होता, कि उसके ओर्दूके लोगोमेसे कितने ही केबेककी ओर चले जायेगे।

८ फर्वरी १४६० ई०मे तेमूरी सुल्तान अबूसईदके मरनेपर उसका राज्य अलग-अलग शाह-जादोमे बट गया—खुरासानका शासक सुल्तान हुसेन मिर्जा हुआ, समरकन्दका अहमद मिर्जा, हिसार-कुदुज-बदख्शाका सुल्तान महमूद और अन्दिजान-फरगानाका वली (राज्यपाल) बाबरका पिता उमर शेख मिर्जा। यूनसने मुगोलिस्तान लौटनेपर तीनोको अपना दामाद बनाया। अपनी लडकी मेहरे-निगार खानम अहमद मिर्जाको दी, कुतुलुग निगार उमरशेख मिर्जाको। इसी कुतुलुग निगार खानमसे बाबर पैदा हुआ। ताशकन्दका वली (राज्यपाल) शेख जमाल सुल्तान अहमद मिर्जा समर-कन्दके अधीन रहा।

यूनसको कलमकोसे झगडा उत्तराधिकारमे मिला था। १४७२ ई०मे कलमक-सेनापति अमा-साजी (उस्मानपुत्र) पैशीने मुगोलिस्तानमे आकर इली-तटपर यूनसको हराया, जिसपर यूनसकी सेना तुर्किस्तान प्रदेश (सिर-दरिया)की ओर भागी, और वही उसने जाडा बिताया। मगोल करातुकाई सिर-तटतक पहुचे। उस समय कजाक खान गिराई (कराई) और जानीबेगको भगाकर अबुल्-खैरका पुत्र बुरूज ओगलान तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका)का शासक था। वह यूनससे लडने गया था। उस समय उसे सिगारमे अनुपस्थित पा उसके ओर्दूके साठ हजार परिवारोको पकड लिया। डेरेमे कोई

नही था, इसलिये बिना विरोध ही्के बूरुज ओगलानने सबपर अधिकार कर लिया। जब यह खबर यूनसको मिली, तो वह सीग बजवाकर जल्दी-जल्दी लौटा, और जमी हुई सिर नदीके पार हो गया। बूरुजने जब आवाज सुनी, तो उसने भी जल्दीसे घोडेपर चढना चाहा, लेकिन उसकी नौकरानियोने उसके घोडे और साईस (अखताची) को पकडे रक्खा। कुछ ओरते अपने घोडोसे उतरकर आई, और उन्होने बूरुज ओगलानको पकड लिया। इसी समय यूनस खानने आकर अपनी नौकरानीको बूरुजका सिर काट लेनेका हुक्म दिया। उसने तुरत सिर काट लिया। बिना रानीकी मधुमक्खियोकी तरह बिना सरदारका उज्बेक-कजाक ओर्दू क्या कर सकता था ? बीस हजार घुमन्तुओमे बहुत कम जान बचाकर भाग पाये।

ताशकदका वली जमाल सुल्तान यूनसको सिर-उपत्यकामे नही देख सकता था। उसने आक्रमण करके यूनस खानको पकडकर सालभर बदी रक्खा, जिसपर सारा मुगोलिस्तानी उलुस शेख जमालके अधीन रहनेके लिये मजबूर हुआ। शेख जमालने यूनसकी बेगम और बाबरकी नानी ईसान दौलान बेगमको अपने एक अफसर ख्वाजा कलानको दे दिया। बेगमने बाहरसे स्वीकृति दे दी थी, लेकिन रातको पास आनेपर उसने ख्वाजा कलानको मार डाला। सालभर बाद अमीर करीमबेर्दी दोगलातके भतीजे अमीर अब्दुल कुद्दुजने शेख जमालको मारकर यूनस खानको मुक्त किया। अब ताशकन्द और शाहरुखिया भी बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके हाथमे थे। मुगोलिस्तानी अमीर फिर यूनसके पास लौट आये। उन्होने खानसे शिकायत की—"खानने हमेशा हमे कृषिवाले प्रदेशके नगरोमे बसानेकी कोशिश की, जिसे हम लोग घृणाकी दृष्टिसे देखते है।" खानने अफसोस प्रकट करते हुये कहा—"अबसे मै नगरो और खेतीवाले स्थानोमे रहनेका विचार छोड देता हू।"

इस वक्त कलमक अपने युर्त (ओर्दूवाले देश) को लौट गये थे, इसलिये यूनस खानको मुगोलिस्तानमे मुगलोके साथ रहनेकी हिम्मत हुई। इसके बाद कई सालो तक खानने घर या नगरमे रहनेका नाम नही लिया। काशगरके शासक मुहम्मद रेहर मिर्जाने यूनसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

अपने एक दामाद बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके साथ यूनसका विशेष स्नेह था। भाई अहमद मिर्जा (समरकन्दके सुल्तान) के आक्रमणका भय होनेपर उमरने यूनसको बुलाया। यूनसने फरगानाके सबसे बडे शहर अक्सीमे आकर डेरा डाला। अहमद मिर्जाने खानसे तीकासगरुरूके पुलपर लडाई की, जिसमे वह खानका बदी बना, लेकिन खानने अपने दामादको बहुतसी भेटे देकर छोड दिया। कुछ समय बाद फिर उसने चढाई की, और उमरशेखकी सहायताके लिये खान मर्गिलान पहुचा। इतिहासकार हैदरने मौलाना मुहम्मद काजीके मुहसे सुना था—"एक बार मै मर्गिलान गया। मैने सुन रक्खा था, कि यूनस खान मुगल है, और समझा था, कि वह दूसरे रेगिस्तानी तुर्कोकी तरह बिना दाढी-मूछका (मगोलायित) आदमी होगा। मैने उसको देखा, वह बडा ही खुबसूरता था। उसका चेहरा ताजिकोकी तरह दाढीसे भरा हुआ था। बातचीत और व्यहारमे वह बडा ही सस्कृत था, जैसे कि ताजिकोमे भी बहुत कम पाये जाते है।" मौलानाने सभी सुल्तानोको पत्र लिखा—"मैने यूनस खान और मुगलोको देखा। ऐसे बादशाहकी प्रजाको बदी बनाकर नही ले जाना चाहिये। वह इस्लामके अनुयायी है।" इसके बादसे मुगलोको अन्तर्वेद और खुरासानमे ले जाकर दासके तौरपर बेचना बद हो गया। इससे पहले मुगलोको भी दूसरे काफिरोकी तरह दास बनाकर बेच दिया जाता था। यह मालूम ही है, कि इस्लामी शरीयतके अनुसार मुसलमानको दास नही बनाया जा सकता।

अहमद मिर्जा और उमरशेख मिर्जा अर्थात् समरकन्द और फरगानाका झगडा बराबर ही चलता रहा, और उमरशेखकी मददके लिये यूनसको भी बराबर जाना पडता था। ऐसे ही एक समयमे यूनसके आनेपर उमरशेखने उसे ओश दे दिया। खानने वही जाडा बिताया। मुगोलिस्तानकी ओर लौटते समय उसने अपने दूसरे नाती इतिहासकार मुहम्मद-हैदर मिर्जाको ओश (ऊश) का शासक बना दिया। शेख जमालकी मृत्युके बाद ताशकन्दको उमरशेखने ले लिया। समरकन्द-शासक अहमद मिर्जा इसे बर्दाश्त नही कर सकता था। खान उमरशेख और अहमद मिर्जाकी सेनाये फिर लडनेके लिये सिर-उपत्यकामे पहुची, लेकिन हजरत नासिरुद्दीन उबैदुल्ला सूफी (नत)ने बीचमे पडकर

विवादग्रस्त ताशकन्दको खानके हाथमे देकर झगडा शात करा दिया। अभी यूनस ताशकन्दमे ही था, कि उसे लकवा मार गया। दो साल तक इस वीमारीमे पडे रहकर ७४ वर्ष की उमरमे ८९२ हि० (२८ XII १४८६–१८ XI १४८७ ई०)मे यूनस मर गया। चगताई खानोमे अधिकाश चालीस वर्षसे अधिक नही जी पाये, और उनमेसे कितने ही स्वाभाविक मौतसे नही मरे, लेकिन यूनस इसका अपवाद था। यूनसकी कब्र ताशकन्दमे ही पूरानवार शेख खावन्दि-तुहूरकी समाधिके पास है।

१३ महमूद, यूनस-पुत्र (१४८७–१५०८ ई०)

बापके मरनेपर ज्येष्ठ पुत्र महमूद * को मगोलोकी रीतिके अनुसार सफेद नम्देपर बैठा कधेपर उठा खान घोषित किया गया। लेकिन महमूदका अधिकार पूर्वी मुगोलिस्तानपर ही रहा। वह बापकी तरह ही सस्कृत और सुशिक्षित था। वह कविता भी करता था, जो वुरी नही होती थी। अन्तर्वेद लेनेकी उसकी वडी इच्छा थी, जिसमे कमजोर तेमूरी-सुल्तानोके मुकाविलेमे पहिले इसे सफलता भी मिली, लेकिन १५०० ई० मे जब उज्बेक खान मुहम्मद शैवानीने अन्तर्वेदको अपने पजेमे कर लिया, तो उसके लिये फिर मौका नही रह गया। १४८८ ई० मे कुछ सफलता मिली थी। उमरशेखने असलमे महमूदसे ताशकन्द छीननेके लिये सेना भेजी थी। खानने सफलता प्राप्त कर मिर्जाके सभी अनुयायियोको पकडकर मरवा डाला। इसी समयसे वावरके पिता और मामाका सघर्ष शुरू हुआ, जिससे मिर्जाकी शक्ति वहुत क्षीण हो गई, और अतमे वह विल्कुल हार गया। इसपर अहमद मिर्जा डेढ लाख सेना लेकर आया। अहमद मिर्जाके साथ कजाक अबुल्खैरका पौत्र और शाहबुदागका पुत्र शाहीवेग (मुहम्मद शैवानी) भी अपने तीन हजार आदमियोको लेकर गया था। हम पहले वतला चुके है, कि कैसे युद्धके समय शाहीवेग अपने तीन हजार आदमियो के साथ युद्धक्षेत्रसे निकल गया, और मिर्जाकी परताल (रसद) पर टूटकर उसे लूट लिया। इसके कारण अहमद मिर्जाकी सेना भागनेपर मजबूर हुई, लेकिन उसके सामने चिर नदी—जिसे ताशकन्दवाले पराक कहते है—थी, जिसमे वहुतसे सिपाही डूबकर मर गये और अहमद मिर्जा किसी तरह जान बचाकर समरकन्द पहुचा। इतिहासकार हैदरका पिता मुहम्मदहुसेन गूरगानसे महमूद खानका बडा प्रेम था। वह सदा एक ही डेरे या कमरेमे रहते थे। उनके घर वगल-वगलमे होते। वह अपने निजी घरेलू बातो को भी एक दूसरेसे नि सकोच कहते थे। महमूद खानने अपनी वहिन यूनस-पुत्री खूबनिगारसे महमूद हुसेनकी शादी कर दी थी। जब अहमद मिर्जा, उमरशेख मिर्जा और महमूद मिर्जा मर गये, तो उरातेपा भी महमूद खानके हाथमे चला गया, जिसे उसने अपने मित्र और वहनोई मुहम्मद हुसेनको दे दिया।

शाहीवेगने धोखा देकर ताशकन्द विजय करनेमे महमूद खानकी सहायता की थी। अब वह खानका सेवक था। उसकी सहायताके वदलेमे खानने तुर्किस्तान-शहरका इलाका उसे दे दिया, जिसे गिराई खान और जानीवेग दोनो भाई अपना समझते थे। इसके कारण खानसे उनका विगाड हो गया। उन्होने कहा—हमारे दुश्मन शाहीवेगको क्यो तुर्किस्तान दिया? इसके बाद उज्वेक-कजाको और महमूद खानमे लडाईकी नौबत आगई। दो वडी-वडी लडाइया हुई, और दोनोमे महमूद खानकी हार हुई। महमूद खानका वर्ताव अच्छा न देख यूनस खानके समयके कितने ही सेनापति उसे छोड गये। खानने पाच अमीरोको मरवाकर एक नीच कुलके आदमीको अपना सेनापति वनाया।

८९९ हि० (१२X१४९३–२IX १४९४ ई०)मे वावरके पिता उमरशेख मिर्जाकी मौत घरके नीचे दवकर हुई। अमीरोने उसके पुत्र जहीरुद्दीन मुहम्मद वावरको फरगानाके तख्तपर बैठाया। अन्दिजानपर कही मुगल हाथ न फेर दे, इसलिये अहमद मिर्जा अपनी सेनाके साथ आया, लेकिन मर्गिलानमे पहुचकर बीमार हो जानेसे उसे पीछे लौटना पडा, और उमरशेखकी मृत्युके चालीस दिन वाद वह भी चल बसा। सुल्तान महमूद मिर्जाने अब हिसार (ताजिकिस्तान)से आकर समरकन्दकी गद्दी सभाली। छ महीने बाद वह भी मर गया, फिर उसका पुत्र मिर्जा वैसुकर गद्दीपर बैठा। महमूद खानने इस स्थितिसे उत्साहित हो समरकन्दकी ओर हाथ वढाया, लेकिन हैदरके अनुसार नीच-कुलीन

*जन्म ८३८ हि० (१५ XI १४३४—५ VIII १४३५ ई०)

सेनापतियोके कारण कामयार्यीकी लडाईमे खानको हार खानी पडी । ताशकन्द लौटनेपर अमीरोने उसे समरकन्द और बुखारा लेनेमे शाहीबेग खानकी सहायता करनेकी सलाह दी, जिसमे वह आराममे ताशकन्दमे रहे । खानको उनकी राय पसद आई । इतिहासकार हैदरके पिता मुहम्मद हुसेनने बहुत रोका, लेकिन शाहीबेगको सहायता दी जाती रही । शाहीबेगके पास पचास हजार सेना हो गई, जिससे उसने समरकन्द और बुखारापर पूरी तौरसे अधिकार कर लिया । उसकी सफलता और लूटके लोभमे चारो ओरसे उज्बेक उसके झडेके नीचे आ गये थे ।

पिताके ताशकन्दमे रहनेपर यूनसका दूसरा पुत्र सुल्तान अहमद [जन्म ८७० हि० (२४ VIII १४६५–१५ VII १४६६ ई०] मुगोलिस्तानमे अपने मुगलो और पशुओकी चरवाही करता था । पहले दस सालके सघर्षमे उसने इरलातके अमीरोको दबाया । अहमद अपने भाई महमूदकी तरह ही सस्कृत नही था । बाबरके अनुसार वह सचमुच ही रेगिस्तानका पुत्र था—शरीरसे हट्टा-कट्टा और बडी हिम्मतवाला । वह मगोलो जैसी वेप-भूपा रखता था । अहमदने दो लडाइयोमे कलमक-थैची एमेनकी सेनाको हराया, जिससे कल्मकोपर इसका बहुत रोब था । वह इसे अलाची (बहादुर) कहते थे । अहमदने कजाकोको भी तीन बार हराया । सिर्फ काशगर और यारकन्दमे वह अपने मनसूबेमे सफल नही रहा । मुहम्मद शैबानी (शाहीबेग) ने जब अपने पहिले सरक्षक महमूद खानपर हाथ साफ करना चाहा, तो खानने अपने भाई अहमदको बुला भेजा । भाईका कहना मानकर इसने अपने पुत्र मन्सूरको मुगोलिस्तानमे रक्खा, और दूसरे दो पुत्रोसहित ताशकन्द आया । १५०३ ई० मे मुहम्मद शैबानीने अकसीकी लडाईमे दोनो भाइयोको हराया । अहमद अकेले मुगोलिस्तान भागा । शैबानीने महमूदसे ताशकन्द और सैराम छीन लिया । फिर दोनो भाइयोने अक्सू (पूर्वी तुर्किस्तान) मे इकट्ठा जाडा बिताया, जहा ही अहमद लकवाकी बीमारीसे मर गया । महमूदने अक्सू और पूर्वी मुगोलिस्तानको ले लिया । अक्सूमे अपने भाई खलील सुल्तानसे हारकर वह सप्तनदके किर्गिजोके पास पहुचा । शाहीबेगने महमूद खानपर विजय प्राप्त की, उसी समय अकसीमे दोनो खान-भाई बदी बने, और मुक्त कर देनेपर अहमद खान ९०९ हि० (२६ VI १५०३–१६ V १५०४ ई०) लकवासे मर गया ।

महमूद खानकी हालत अतमे बहुत बुरी हो गई । वह शाहीबेगके दरबारमे दयाकी भिक्षा मागनेके लिये मजबूर हुआ । शाहीबेग (शैबानी) ने जवाब दिया—"एक बार मैने तुमपर दया दिखला दी, अब दूसरी बार दया दिखलानेपर मेरी हकूमत खतरेमे पड जायेगी ।" उसने जरा भी दया न कर महमूद खान तथा उसके छोटे-बडे सभी बच्चोको खोजन्द नदीके किनारे ९१४ हि० (२ V १५०८–२३ III १५०९ ई०) मे मरवा डाला । अबतक अन्तर्वेद शैबानियोका हो चुका था, यह हमे मालूम है ।

१४ मन्सूर, महमूद-पुत्र (१५०८ ई०)

इसी समय किर्गिजोका नाम पहलेपहल मुगोलिस्तानमे सुनाई पडता है । शायद किर्गिज १०वी शताब्दीमे ही यहा पहुच गये थे । हैदर किर्गिजोको मगोलोसे विभिन्न नही समझता । मगोलिस्तानी मगोलो और किर्गिजोके झगडेका कारण वह उनका मुसलमान और काफिर होना बतलाता है । खलीलसे जल्दी ही उसका भाई सईद (जन्म १४९० ई०) आ मिला, जो कि अबतक बापके साथ अन्तर्वेदमे उज्बेकोका बदी था । सईदकी उमर उस समय तेरह-चौदह सालकी थी । दोनो भाई चार सालतक एक साथ रहे । इसी बीचमे चचासे झगडा हो उठा, और मन्सूर उनसे लडने मुगोलिस्तान गया । यही समय था, जब कि १५०८ ई०मे शैबानीके हुक्मसे महमूद खान और उसके बेटोको खोजन्द नदी (सिर-दरिया) के तटपर कत्ल किया गया । इसके पश्चात् चारनचलाक या चारिन (आधुनिक अलमाअताके पास) मे मन्सूरने अपने भाइयोको परास्त किया । खलील भागकर फरगाना चला गया, जहा उज्बेक शासक जानीबेगने उसे कत्ल करवा दिया । सईद कुछ महीनो नरिनके जगलोमे छिपा रहा, फिर उज्बेकोके हाथमे पडकर फरगानामे बद रहा, जहासे भागकर काबुलमे जा१५०८ ई०के अन्ततक बाबरका मेहमान रहा ।

पिताके मरनेपर अक्सूके खान चचा महमूद खानके साथ मन्सूरका झगडा था । मन्सूरने काशगरसे मुगोलिस्तान लेनेके लिये महमूद खानके खिलाफ जाकर अक्सूमे डेरा डाला । वहा मीर जब्बारबर्दीसे मन्सूरका झगडा हो गया । जब्बारने काशगरके हाकिम अबूबकरको बुला भेजा । मन्सूरको अक्सू छोड-कर भागना पडा । उसकी स्थिति बहुत बुरी हो गई । इसपर उसने अपने मामा जब्बारबर्दीसे शपथ-

पूर्वक क्षमा मागी। जब्बारने मन्सूरके साथ बड़ी उदारता दिखलाई, जिससे उसकी स्थिति अपने बाप सुल्तान अहमद खानसे भी बेहतर हो गई। इसी समय उसे खबर मिली, कि मुगोलिस्तान (सप्तनद) में सुल्तान महमूद, सुल्तान सईद और मुल्तान खलीलमें झगड़ा हो गया है। मन्सूरने मुगोलिस्तान पहुच अपने चचा महमूदसे भेट की। वही उसकी अपने छोटे भाइयों—सईदखा और खलील मुल्तान—से भी मुलाकात हुई। उसके बाद ही महमूदखान अन्तर्वेदकी ओर लौटा, जहा मुहम्मद शैवानीसे हारकर उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पड़ा। अब मन्सूरने अपने भाइयोंपर आक्रमण किया, जो कि मुगोलिस्तानमे मुगलो और किर्गिजोंके साथ रहते थे। चारुनचलाकमें लडाई हुई, जिसमें हारकर मन्सूरके दोनो भाई विलायत (अन्तर्वेद) भाग गये। वहाके वलीने मुल्तान खलीलको मरवा डाला, और सुल्तान सईद भागकर काबुलमे बाबरके पास पहुचा। मन्सूर मुगोलिस्तानमे हाथमे लगे किर्गिजो और मुगलोको अपने साथ चालिश (कराशर) और तुर्फान ले गया। पीछे उसने कल्मकोपर सफल आक्रमण किया।

इसी बीच काबुलसे लौटकर सुल्तान सईदने काशगरको जीत लिया। मन्सूरको भारी भय लगने लगा। लेकिन शायद सईदको अन्तर्वेदमे शैबानियोकी शक्तिको देखकर कुछ अकल आई। उसने समझौता करनेके लिये ९२२ हि० (५ II–२६ XII १५१६ ई०) मे अक्सू और कुसानके बीचमे मन्सूरसे भेट की, और खानकी अधीनता घोषित करते हुये उसके नामसे खुतबा पढे जानेका हुक्म दिया। इसके बाद बीस सालतक देशमे शाति रही। चीनमे कामिल (हामी) से लेकर अन्दिजान तक बिना रोक-टोक आदमी यात्रा कर सकते थे, रास्तेमे कोई कर नही लिया जाता था। यात्री हरेक रातको किसी घरमे मेहमान रह सकता था। यह बतलाते हुये इतिहासकार हैदर लिखता है—"अल्लाह दोनो धर्मात्मा भाइयोको स्वर्गोद्यान प्रदान करे।" मन्सूरके हाथमें पूर्वी तुर्किस्तानका पूर्वी भाग था, जिसकी सीमा चीनसे लगती थी। वह अपनेको इस्लामका गाजी साबित करना चाहता था। इसमे मुख्य कारण लूट-मारका प्रलोभन था, जिसके लिये मिङ सम्राट् शी-चुङ (१५२१-६६ ई०) की सेनाओंमे बराबर उसका धर्मयुद्ध होता रहा। मन्सूरने अरिग (मुगोलिस्तान) मे उज्बेक-कजाकोंके साथ जमकर लडाई की, जिसमे उसकी हार हुई।

काशगरी अबूबकरकी सेना अमीर वेलीकी अधीनतामे सप्तनद गई, जहा उसे कुछ सफलता हुई। आखिरमे मन्सूरने अपने बडे पुत्र शाह खानको खान बनाया और स्वय अल्लाकी भक्तिमें लग गया। हैदरके समय ९५१ हि० (१५४५ ई०) मे शाहखान तुरफान और चालिशपर शासन कर रहा था। इसी समय बाबरका बेटा हुमायू हिन्दुस्तानसे भागकर मारा-मारा फिर रहा था। शाहखानका चाल-चलन हैदरको पसद नही था। उसने लिखा है—"इतिहासकारका धर्म है, कि ठीक या बेठीक जो भी उसे मालूम हो, उसका उल्लेख करे।"

यद्यपि सईदने १५०८ ई० मे ही पूर्वी तुर्किस्तानके पश्चिमी हिस्सेका शासन सभाल लिया था, लेकिन उसने बहुत सालो तक मन्सूरको अपना प्रभु माना था। इतिहासकार हैदर सईदका सम-कालीन था। उसने "तारीखे-रशीदी" मे इसके बारेमें बहुतसी बाते लिखी हैं। रशीद खान, जिसके नाममे हैदरने अपने इतिहासको लिखा है, सईद खानका ही पुत्र था। सईद अहमद खानके आठ पुत्रोंमेंसे एक था। अपने भाई महमूद खानकी सहायताके लिये जिस वक्त अहमद खान जा रहा था, उस वक्त चौदह सालका सईद भी अपने बापके साथ था। अकसीकी लडाईमे एक तीरके लगनेसे उसकी जाघकी हड्डी टूट गई, और वह घायल हो अकसीके वली शेख बायजीदके जेलमे बन्द रहा। दूसरे साल शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) ने शेख बायजीद, सुल्तान अहमद तम्बालको उसके सारे भाइयोंके साथ मारकर फरगानाको ले लिया। शाहीबेग सईदको पुत्रवत् मान अपने साथ समर-कन्द ले गया। जिस वक्त शाहीबेग (मुहम्मद शैवानी) ख्वारेज्मपर आक्रमण करने गया था, उसी समय सईद निकल भागा और यतीकन्दमे अपने चचा महमूद खानके यहा जाकर कुछ दिन रहा। फिर वहासे अपने भाई खलील सुल्तानके पास गया, जो कि उस समय किर्गिजोंके ऊपर राज्यपाल था। चार सालतक वह अपने भाईके साथ वहा रहा। जब महमूद खान विलायत (अन्तर्वेद) गया, तब भी दोनो भाई किर्गिजोमे ही रहे। मन्सूर तुर्फान और चालिशसे सेना लेकर किर्गिजोंके ऊपर चढा, तो दोनो भाई अपने अनुयायियो (मुगलो-किर्गिजो) के साथ मिलकर उससे चारुनचलाकमे लडे,

और हार खा भागकर अकसी गये, जहा शाहीवेग (मुहम्मद शैवानी)के चचेरे भाई जानीवेगने सुल्तान खलीलको मरवा दिया। सुल्तान सईद कुछ समयतक अब लूट-मारका जीवन विताता रहा, फिर मुगोलिस्तान छोडनेपर मजबूर हो अन्दिजान होते वावर वादशाहके पास कावुल पहुचा। वावरने उसे वडे आदर और प्रेमसे रक्खा—छिङ्-गिस् खानकी औलाद और मुगोलिस्तानके खानका वेटा था, इसलिये मुगलोके नामपर वावला वावर क्यो न उसका सत्कार करता? सईद कावुलमे तीन सालतक वावरका मेहमान रहा। जव शाह इस्माईल (ईरान) ने मेर्वमे शाहीवेग (मुहम्मद शैवानी) को मार डाला, तो वावर कावुलसे कुदुज पहुचा। सईद भी इस वक्त वावरके साथ था। इसी समय इतिहासकार हैदरके पिता सैयद मुहम्मद मिर्जाने शैवानी जानीवेग सुल्तानको अन्दिजानसे भगाकर उसपर अधिकार कर लिया था। वावर वादशाहको इसकी खवर लगी, तो उसने सईद और कुछ मुगल अमीरोको अन्दिजान भेजा। सैयद मुहम्मद मिर्जाने जीते देशको उनके हाथमे दे दिया। सईदने खान मुहम्मद मिर्जाको "उलुस-वेगी" (कवीलोका सरदार) की उपाधि प्रदान की। लेकिन काशगरी मिर्जा अवूवकर भी अन्दिजानपर आख गडाये था। दोनोमे लडाई हुई। हैदरके अनुसार सईदने अपनी पन्द्रह सौ सेनामे अवूवकरकी वीस हजार सेनाको हरा दिया।

इस समय सप्तनदके उत्तरी भागमे कजाकोके खान कासिम [मृत्यु ९२४ हि० (१३I–४XII १५१८ ई०)] का राज्य था, जो जाडोमे करातालमे रहता था। कासिमने १५१० ई० के करीव मुहम्मद शैवानीको हराया, और १५१२ ई०मे तलस और सैरामपर अधिकार कर ताशकन्दके किलेको नष्ट कर दिया। हैदरके अनुसार उसके कजाकोकी सख्या दस लाख थी, लेकिन वावरके अनुसार तीन लाख। १५१३ ई० के वसन्तमे चू नदीके तटपर सईदने कासिम खानसे मुलाकात की। कासिमकी उमर उस समय तिरसठ सालकी थी। उसने सईदकी वडी खातिर की। सईद इस वक्त वावरकी सेवामे था।

वावरकी इन सफलताओको शैवानी उज्बेक देख नही सकते थे। उन्होने ताशकन्द और समरकन्दके सीमान्तपर भारी सेना जमा की। वावरने इसी समय (जून या जुलाई १५११ ई०) उन्हे हराकर थोडे दिनोके लिये समरकन्दके सिंहासनपर वैठनेमे सफलता पाई थी, लेकिन उसी सालके वसन्तके आरम्भमे उवैदुल्ला खानने वावरको हराकर उसे परिवारसहित हिसारकी ओर भगा दिया। अन्तर्वेद उज्वेकोका हो गया, तो भी अन्दिजानपर सईद खानका अधिकार वना रहा। शाह इस्माईलकी कुमकसे साठ हजार सेना लेकर जव वावरने समरकन्दपर चढाई की, उस समय सईद खान भी अन्दिजानसे उसकी मददके लिये आया था। ताशकन्दके पास शैवानी सूयुनजी (ख्वाजा) खानने सईदको हराकर अन्दिजानसे भागनेके लिये मजबूर किया। इसी समय इतिहासकार हैदर वावरसे छुट्टी ले सईद खानकी सेवामे चला गया, और वसन्तमे दश्तेकिपचक (किर्गिज-कजाक) के खान कासिमसे मिला, जिसके पास वावरके अनुसार तीन लाख सेना थी।

९२० हि० (२६ II १५१४–१७ I १५१५ ई०) मे उज्वेकोकी भारी सेनाने अन्दिजानपर आक्रमण किया। खानने भागकर काशगरियापर चढाई की, मिर्जा अवूवकर काशगरमे किलेवन्द हो गया। यगी-हिसारपर तीन मास घेरा डाल सईदने उसपर अधिकार कर लिया। मिर्जा अवूवकर दक्षिणकी ओर भागा। उसका पीछा करते सईद खानकी सेना तिव्वत (लदाख) के पहाडोके भीतरतक गई। इस प्रकार मई-जून १५१३ ई० (९२० हि०) मे सईद खान काशगर-प्रदेशका स्वामी था, और ९२२ हि० (१५१६ ई०) मे, जैसा कि पहिले कहा, उसने वडी दूरदर्शिता दिखलाते हुये मन्सूर खानको अपना प्रभु मान लिया।

शैवानियोसे अन्तर्वेद छीननेका मनसूवा सईदने वावरसे उधार लिया था, इसीलिये उनसे उसने छेडखानी जारी रक्खी। सप्तनदसे तोर्गुत डाडेसे होकर काशगरियामे सैतालीस सौ सेनाके साथ घुसकर अवूवकरको भगानेमे उसने पूरी तोरसे सफलता प्राप्त की। काशगर और यारकन्द को लेकर वहा पूरी तौरसे शाति-स्थापन कर १५१६ ई० मे उसने अक्सू और कुचईके वीच अरवात स्थानमे मन्सूरसे भेट की। जैसा कि पहिले कहा, दोनोमे पूर्ण मैत्री स्थापित हुई, सईद ने मन्सूरको अधिराज माना, लेकिन शासित प्रदेशोका वटवारा ना करना ही था। मन्सूरको तुर्फान, कराशर और पूर्वी तुर्किस्तानका सारा ऊपरी भाग मिला, दूसरे भाई एमिल खोजाको

तुर्फान और अक्सू, तीसरे भाई बाबा सुल्तानको बाई और कूची मिले। काशगर और दक्षिणी सप्तनद सईदके हाथमें रहे। हामी (चीन)से अन्दिजान (फरगाना) तकका वणिक्पथ मुक्त हो गया। अबूबकरसे लडते वक्त किर्गिज मुहम्मदने सईदकी बडी सहायता की थी, इसलिये उसे किर्गिजोंका सरदार बना दिया गया। १५१६ ई० के वसन्तमें फरगानामें उज्बेकोंसे लडनेकी तैयारी करनेके लिये सईद मुगोलिस्तान गया। उसने चातिर-कुलके तटपर अपने भाई बाबा अचकमें भेट की। अरपा-उपत्यकामें मन्सूरको छोडकर सारे भाई मिले, उन्होंने साथ ही शिकार खेला और जाडा बिताया। इसमें सईद अभियानकी बात भूल गया। इसी समय उसके अमीर मुहम्मदकी अधीनतामें किर्गिजोंने जाकर तुर्किस्तान-शहर, ताशकन्द और सैराममें लूटमार की, और शैबानी खानके सौतेले भाई तुर्किस्तान-शासक अब्दुल्लाको बन्दी बनाया। लेकिन मुहम्मदने उसे बहुत-सी भेट देकर छोड दिया, जिसके कारण उसका सईदसे मन-मुटाव हो गया। १५१७ ई० के वसन्तमें सईद अपनी सेना ले काशगरसे चला। एमिल खोजा भी अक्सूसे मारिग-अत्-आखुरी डाडेसे होते आगे बढा। दोनों सेनायें काफिर-यारिगमें मिल गई, जहाँसे सईद बेसकाउन-द्रोणी और एमिल खोजा चू-द्रोणीसे आगे बढा। किर्गिज मुहम्मद बेसकाउनके मुहानेके पास डेरा डाले पडा था। दोनों भाइयोंके आनेकी खबर पाकर वह तुर्किस्तानकी ओर भागा, और उसके घोडे, भेडे तथा सारी चीजे शत्रुओंने ले ली। सईदने किर्गिजों को बन्दी नहीं बनाया। वहाँसे वह हिसार लौट गया।

१५१७ ई०में मुहम्मद किर्गिजने तुर्किस्तान और फरगानापर आक्रमण करके मुसलमानोंको लूटा, जिसके लिये सईदने चढाई करके मुहम्मद किर्गिजको पकडकर जेलमें डाल दिया, जहाँ वह पन्द्रह सालतक पडा रहा। इसी साल सईद अपने पुत्र रशीदको लेकर मुगोलिस्तानमें गया। उसने किर्गिजोंको दबाकर सारे मुगोलिस्तनपर अधिकार कर लिया। पीछे सगितोंकी शक्तिके कारण उज्बेक-कजाक दश्तेकिपचकमें रहनेकी हिम्मत नहीं कर सकते थे, इसलिये वह दो लाखकी सख्यामें मुगोलिस्तानमें चले आये। उनके साथ लडना असभव समझकर रशीद सुल्तान—जिसे बापने मुगोलिस्तानमें छोड रक्खा था—अपने आदमियोंको ले काशगर भाग गया। १५१९ ई० (९२५ हि०) और १५२९-३० ई० (९३६ हि०)में दो बार सईदने बदख्शापर चढाई कर उसका आधा हिस्सा ले लिया।

१५२२ ई० मे मुसलमानोंपर आक्रमण करनेका कारण बतलाकर सईदने अपने बेटे रशीदके सेनापतित्वमें फिर किर्गिजोंपर आक्रमण करनेके लिये सेना भेजते समय जेलसे छोडकर मुहम्मद किर्गिजको भी उसके साथ कर दिया था। रशीदने कोचकरकी उपत्यकामें डेरा डाला। अधिकांश किर्गिजोंने मुहम्मदकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन उनमेंसे कुछ भाग गये। उस जाडेमें रशीद खान कोचकर हीमें रहा। इसके बाद वह हर साल कुछ समय कोचकर-उपत्यकामें बिताता था। १५२४ ई०में जब खान कोचकरमें था, उसी समय उसके पास उत्तरी सप्तनदके कजाकोंके खान कासिम-पुत्र ताहिरका आदमी आया। वह मुगोलिस्तानियोंके साथ मिलकर उज्बेकों और नोगाइयों (सगितों) से लडना चाहता था। उसने अपनी बहिन भी रशीद खानको प्रदान की। इसके बाद अधिकांश किर्गिज ताहिरके अधीन हो गये। १५२५ ई० मे खान इस्सिक्कुलके तटपर था, जब कि मुगोलिस्तानके सीमान्तपर कल्मकोंके चढ आनेकी खबर मिली। इससे पहले १५२२-२४ ई० मे रशीद कल्मकोंके ऊपर सफल अभियान कर चुका था, जिससे उसे गाजीकी उपाधि मिली थी। अपने परिवारको इस्सिक्कुलके किसी द्वीपमें छोडकर रशीद कल्मकोंके विरुद्ध चलकर दस दिनमें कबीकलर (कबिलककला) पहुँचा। इसी समय ताशकन्दके शैबानी खान सू-युन-चुकके मरनेकी खबर मिली। उज्बेकोंके साथ लडनेका यह अच्छा मौका था, इसलिये वह जल्दीसे लौटकर इस्सिक्कुल पहुँचा, और वहाँसे कोतुर-उलेनके रास्ते फरगाना गया, लेकिन उसे जल्दी ही असफल हो उलुक (मुगोलिस्तान) लौटना पडा, जहाँसे जल्दी ही काशगर गया।

अगले जाडोंमें ताहिरका डेरा कोचकरके पास था। आधे किर्गिज उसकी ओर थे। रशीद अनजानमें पडा था। १५२६ ई० के आरम्भमें रशीदने किर्गिजोंके साथ मेल किया, इसपर कितने ही कजाक मारे गये और कुनगेजतक सप्तनदसे हट गये। किर्गिजोंके डेरे कोचकर और जुमलके पास

पडे हुये थे। ताहिरसे बातचीत करनके लिये उसकी सौतेली मा (यूनस की पुत्री) को भेजा, जो कि काशगरमे सईदके पास रहती थी। सईद लौटकर अकसाई पहुचा था, जब कि कजाको और किर्गिजो के बीच समझौतेकी बातका उसे पता लगा। दोनो घुमन्तू जातियोके मिल जानेका खतरा सईदको साफ़ मालूम होने लगा, इसलिये वह वहासे बाबाचककी कूचीसेनाको भी ले अककुयाश होते अरिक्ष-लारके रास्ते चला। उसने सप्तनदसे किर्गिजोको भगाकर उनकी एक लाख भेडे पकड ली, जिससे उस स्थानका नाम कोई-चरीकी (भेडोवाला) पडा।

१५२७ ई०के वसन्तके आरम्भमे ताहिर अतवासपर चढ आया, और वहासे उसने किर्गिजोके साथ मिलकर मुगलोको मार भगाया। मुगलोके हट जानेपर अब सप्तनद कजाको ओर किर्गिजोके हाथमे चला गया, लेकिन दोनो जातियोकी मित्रता अधिक दिनोतक नही निभी। १५२६ ई० में ताहिरने अपने भाई अब्दुल कासिमको मार डाला, जिसपर कजाकोने उसका साथ छोड दिया। १५२९ ई० मे अभी ताहिरके पास बीस या तीस हजार कजाक थे। हैदरके अनुसार ताहिर अन्तमे बडी बुरी अवस्थामे मरा। उसके बाद उसका उत्तराधिकारी उसका भाई बुईदश हुआ।

(**तिब्बतपर जहाद**)—हैदर कलमका ही नही तलवारका भी धनी था। 'गाजी' बनने की उसकी बडी इच्छा थी, जिसके लिये उसने तिब्बतके भीतरतक आक्रमण किया। अपने इतिहासमे वह लिखता है ९३४ हि० (२७ IV १५२७–१७८ VIII १५२८ ई०)मे सईद खानने मुझे अपने बेटे रशीद सुल्तानके साथ बालूर (बदख्शा और कश्मीरके बीचमे काफिरोके देश काफिरिस्तान) पर आक्रमण करनेके लिये भेजा। यहा हमने सफलतापूर्वक 'धर्मयुद्ध' किया, और विजयी हो बहुत भारी लूटके मालके साथ लौटे। ..९३८ हि० (१५ VIII १५३१—५ VII १५३२ ई०) के अन्तमे खान सईदने तिब्बतके काफिरिस्तान (लदाख) के साथ 'धर्मयुद्ध' किया, और मुझे पहले ही सेना देकर भेजा। मैंने बहुतसे किलोको लेकर तिब्बत (लदाख) देशके अधिक भागको अपने अधिकारमे कर लिया था, जब कि खान हमारे पास पहुचा। दोनोकी सेनामे पाच हजार आदमी थे। यह सख्या इतनी अधिक थी, जिसे सारा तिब्बत मिलकर जाडोमे खिला-पिला नही सकता था। खानने चार हजार सेना और इस्कन्दर सुल्तानके साथ मुझे कश्मीर भेजा, और खुद बल्ती-बालूर और तिब्बत (लदाख)के बीचमे जाडा बिताया। (हैदरका यह बालूर गिलगितका इलाका है, और तिब्बतसे उसका मतलब लदाखसे है)। खान बल्तीमे 'धर्मयुद्ध' मे लगा रहा, फिर वसन्तमे वह तिब्बत (लदाख) लौटा। हैदरने कश्मीरमे पहुचकर वहाकी सेनाको हराया। कश्मीरके राजा मुहम्मदशाहने अपनी लडकी इस्कन्दर सुल्तानको ब्याह दी, और सईद खानके नामसे खुतबा और सिक्का चलाना मजूर किया। कश्मीरसे लूटकी भारी सम्पत्ति ले हैदर वसन्तमे तिब्बत (लदाख) मे खानके पास पहुचा।"

अबकी खानने हैदरको उर-साग (वू-चाङ) की ओर भेजा, अर्थात् हैदर अब मुख्य तिब्बतकी ओर चला। खान उसे इस तरफ रवाना करके काशगर लौट गया। हैदर तिब्बतकी ओर बढते हुए ऐसी जगहपर पहुचा, जहापर साम रुकनेका रोग होता है (अर्थात् अधिक ऊचाईके कारण हवाके क्षीण होनेसे सास अधिक फूलने लगती है)। शायद वह लदाखसे यारकन्दकी ओर जानेवाले बडे डाडोपर जा रहा था। इसी समय ९३९ हि० (३ VIII १५३२–२४ VI १५३३ ई०) मे ४५ सालकी उमरमे सईद खान मर गया और हैदरके अनुसार इस इस्लामके 'गाजी'को अल्लामियाने स्वर्गमे पहुचाया। हैदरके अनुसार सईदने अपने अभियानोसे राज्यकी सम्पत्ति बहुत बढाई। मुगल, उज्बेक और चगताई तीनो उलुसोमे उसके समान बाण चलानेवाला कोई नही था। वह एकके बाद एक सात-आठ तीर छोड सकता था और सभी लक्ष्यपर जाकर लगते थे। वह बडे ही सुन्दर नस्तालीक अक्षर लिखता था। उसकी तुर्की और फारसी लिखावटोमे कोई गलती निकाल नही सकता था। वह तुर्कीमे गद्य-पद्य दोनो लिखता था। हैदरने सिर्फ एक बार उसे फारसीमे कविता करते देखा था। वह सेहतारा और चारतारा अच्छी तरह बजा सकता था—चारतारापर उसका हाथ ज्यादा खुला हुआ था। वह बाण बनानेमे बडा चतुर था, और हड्डीकी दस्तकारीका भी अच्छा ज्ञान रखता था। वह बडा उदार था।

१६ रशीद, अब्दुर् रशीद, सईद पुत्र (१५३३–५६ ई०)

सईद जब अन्दिजानमें बन्दीखानेमें पड़ा था, उस समय रशीद माके गर्भमें सात मासका था। वह ९१५ हि० (२१ IV १५०९—१२ III १५१० ई०) में पैदा हुआ। बाबरके अनुसार उसका पूरा नाम अब्दुर्रशीद था। जिस समय खलील सुल्तानको शैबानी जानीबेगने अकसीमें मरवाया, उस समय खलील-पुत्र बाबा सुल्तान दूधपीता बच्चा था। सईद बाबाको अपने पुत्रसे भी ज्यादा मानता था, और ख्वाजा अलीबहादुरको उसने उसका अताबेग (अध्यापक-सरक्षक) बना दिया था। ख्वाजाका मुगोलिस्तानसे बहुत प्रेम था। उसने सईद खानसे प्रार्थना की, कि मुगोलिस्तान और किर्गिज प्रदेशको बाबा सुल्तानको दे दो, मैं स्वयं बाबाको अपने साथ ले वहाका सारा प्रबन्ध ठीक-ठाक करूगा। खान राजी हो गया। बाबा सुल्तानके ससुरने मना किया—"अगर बाबा सुल्तानने एक बार उस देशपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया, तो यहासे सभी मुगल मुगोलिस्तान चले जायेंगे, और खानको हानि पहुचेगी, इसलिये यही अच्छा है, कि बाबाकी जगह रशीदको मुगोलिस्तान भेजा जाय।" इतिहासकार हैदरका चचा बाबाका ससुर था, लेकिन वह रशीदका ज्यादा पक्षपाती था। सईद खानने अपने अधिकृत इलाकोका एक-तिहाई रशीद सुल्तानको देकर मुगोलिस्तान भेज दिया। ९४४ हि० (१० VI १५३७—१ V १५३८ ई०) में सुल्तानके मुगोलिस्तान पहुचनेपर मुहम्मद किर्गिजने सभी किर्गिजोंके साथ आकर सारे मुगोलिस्तानकी अधीनता न स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। उज्बेकोंने भी विरोध किया। उज्बेको और किर्गिजोके विरोधके मारे रशीदको काशगर लौटनेके लिये मजबूर होना पडा। अपने सम्मिलित शत्रुओंके साथ लडनेमें हानि देखकर रशीदको पीछे उज्बकोंके साथ समझौता करना पडा।

बाप (सईद खान) के मरनेके बाद रशीद मुगोलिस्तानका खान बना। सबसे पहले जो काम उसने किया, वह था अपने पिताके खैरखाहोका वध। २ अगस्त १५३३ (१० मुहर्रम ९४० हि०) को रशीद सुल्तानके आनेपर हैदरका चचा पिताकी मृत्युपर अफसोस प्रकट करने गया। आते ही रशीदने उसे तथा उसके मित्र अली सैयद दोनोको मरवा दिया, और हैदरके चचाकी जगहपर मिर्जा अली तगाईको नियुक्त कर यह हुक्म दे काशगर भेज दिया, कि हैदरके चचाके बच्चों और सबधियोको बिना कोई दया-माया दिखलाये बडी क्रूरतासे मारनेमें कोई कसर उठा न रखना। यह खबर सुनकर पूबसे मन्सूर खान भी रशीदके ऊपर चढ दौडा, लेकिन उसे खाली हाथ लौटना पडा। मन्सूरने रशीदको दबानेके लिये और भी प्रयत्न किये, पर उसे सफलता नही मिली। रशीदके अत्याचारोसे भयभीत हो उसके अमीरोने विद्रोह किया, किन्तु रशीदने उनका दमन कर दिया। उसने अपनी सौतेली माताओ, बुआओ और बहिनोको भी निर्वासित कर दिया, जिनमें उसके बापकी चहेती बीबी जैनब सुल्तान खानम् भी थीं। इधर जब उसने अपनोंसे इतना झगडा कर रखा था, उसी समय उत्तरमें उज्बेक-कजाक भी उसके दुश्मन थे, फिर अन्तर्वेदके उज्बेक-शैबानियोंसे मेल करनेके सिवा रशीदके लिये और कोई चारा नहीं था।

८७७ हि० (८ VI १४७२–२९ IV १४७३ ई०) में यूनस खानने करातुकाईमें उज्बेक-कजाकोंको हराया था। लेकिन उसके बाद मुगल उनसे बराबर हार रहे थे, केवल रशीद खानने एक बार उनको हराया। उस समय अन्तर्वेदके मगोलवशियोको चगताई कहा जाता था, और मुगोलिस्तानके चगेजवशियोको मोगल, लेकिन चगताई मोगलोंके प्रति घृणा प्रदर्शित करते हुए उन्हे जाना (सीमार्ना) कहते थे, और मोगल चगताइयोको करावाना। १६वीं सदीके मध्यमें लिखते हुए हैदरने कहा है—"वर्तमान कालमें बादशाहोको छोडकर कोई चगताई नही रह गया है। और ये बादशाह है बाबर बादशाहके पुत्र। चगताइयोका स्थान (अब) कुछ दूसरे सभ्य लोगोंने लिया है।" लेकिन रशीदका यह कहना गलत है। तेमूर-वशज बाबर माकी तरफसे अर्ध-मगोलोंसे सबध रखते भी बापकी ओरसे तुर्क था, मगोल या मोगल हरगिज नहीं। लेकिन भारतमे नवस्थापित बाबरका वश अपनेको मगोल (मुगल) कहनेके लिये तुला हुआ था, जिसका दुहराना

बाबर और हुमायू का कृपापात्र हैदर अपना फर्ज समझता था। हैदरके लिखनसे मालूम होता है, तुर्फान और काशगरके आसपासमे अब भी तीस हजार मुगल (मगोल) रहते थे, लेकिन मुगोलिस्तानको उज्बेको (कजाको) तथा किर्गिजोने ले लिया था। मगोल (मुगल) शब्दका कितना अनिश्चित प्रयोग उस समय हो रहा था, यह इसीसे मालूम होगा, कि हैदर किर्गिजोको भी मुगल-कबीलेमेंसे बतलाता है, जो कि "खाकानके साथ बराबर विद्रोह करते रहनेके कारण मुगलोसे अलग हो गये।" हैदरके समय सभी मुगल मुसलमान हो चुके थे, लेकिन किर्गिज अब भी काफिर (बौद्ध) थे। "इसीलिये उनका मुगलोसे झगडा रहता है।" साथ-साथ इस्लामके गाजीका यह भी कहना है—"जो मुगल मुसलमान नही हैं, उनका हमने अधिक नामोल्लेख नही किया है, क्योकि काफिर चाहे जमशेद और जोहाबके प्रतापको भी पा जाये, तो भी उसका जीवन याद रखने लायक नही होता।"*

९४४ हि० (१० VI १५३७–१ V १५३८ ई०)में रशीदने उज्बेक-कजाकोको करारी हार दी थी, जिसमे उनके खान ताहिरका भाई तुगुम और सैतीस सुल्तान मारे गये। कजाकोका उसने सप्तनदमे उच्छेद-सा कर दिया। अपने बापका अनुकरण करते हुये रशीदने भी अपने बेटे अब्दुल्लतीफ को सप्तनदमें बैठाया, और शैबानी-उज्बेकोसे मित्रता जारी रक्खी। ९५१ हि० (१५४४-१५४५ ई०) मे इस्सिक्कुलके तटपर ताशकन्दके खान नौरोज अहमद (बराक)से मुलाकात की। इसके कुछ समय ही बाद उज्बेक-कजाकोने फिर सप्तनदपर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। यह याद रखना चाहिये, कि अभीतक उज्बेक शब्द कजाक और शैबानी दोनोके लिए प्रयुक्त होता था, जो कि पीछे स्वय केवल अन्तर्वेदके शैबानी-अस्त्राखानी-मगीती खानोकी तुर्क प्रजाके लिये रूढ हो गया, और कजाक आधुनिक कजाकिस्तानमें रहनेवाले तुर्कोंको कहा जाने लगा। किर्गिज भी उस समयतक किर्गिज-कजाक कहे जाते थे, जो अन्तमे किर्गिजके नामसे मशहूर हुये।

रशीदका ज्येष्ठ पुत्र अब्दुल्लतीफ बापके जीवन हीमें कासिम खानके पुत्र अकनजरके साथ लडाई करते मारा गया। अकनजर किर्गिजो और कजाकोका खान था। अग्रेज यात्री जेन्किन्सनके अनुसार १५५८ ई०के आसपास कजाको और किर्गिजोने ताशकन्द और काशगरमें बडी लूट-मार की, और चीनसे पश्चिमी-एसियाकी ओर जानेवाले वणिक्पथको काट दिया।

रशीद मुगोलिस्तानी खानोमे अन्तिम शक्तिशाली खान था।

१७. अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र (–१५९३ ई०)

यह अकबरका समकालीन था और १५९३ ई०मे काशगरपर शासन करता था। अब्दुर्रशीदका तीसरा पुत्र अब्दुर्रहीम पिताकी आज्ञाके बिना ही तिब्बतमे जहाद करने गया, जहा वह मारा गया। कश्मीरपर कितने ही समयतक मुगोलिस्तानके खानोका अधिकार रहा, फिर १५८७ ई० के आसपास अकबरने कश्मीरको ले लिया।

१८ मुहम्मद खान (१६०३ ई०)

ईसाई साधु गोयेज आगरासे लाहौर, काबुल, बदख्शा होते १७०३ ई०मे यारकन्द पहुचा। उस वक्त मुहम्मद खान वहाका राजा था। गोयेज सालभर यारकन्दमे रहा। उस समय काशगर राज्यकी राजधानी यारकन्द थी। गोयेज सूचाव (चीन)मे अप्रैल १६०७ ई०में मर गया।

१९ इस्माईल खान

यारकन्दकी गद्दीपर पीछे इस्माईल बैठा।

बाबर और हैदरकी पलटनमें मुगल नामसे प्रसिद्ध तुर्क भी काफी सख्यामे आये थे। दिल्लीके पास-पडोस और रावलपिंडीके इलाकेमे इन मुगलोकी सख्या काफी थी। पश्चिमोत्तर प्रदेशके रास्तेपर भी वह जहा-तहा बस गये थे, इनमें चगताई (बाबरके अपने भाई-बधो)की सख्या २३५९३ थी, और बरलसोकी १२१७३।

*इसी जगह हैदरने अपने ग्रथके बारेमे लिखा है—"यह तारीखे-रशीदी ९५३ हि० के जुल्हेजा महीनेके अन्त (फरवरी १५४७ ई०) में कश्मीरके नगरमे लिखी गई, जब कि मुझ मुहम्मद गुरगान-पुत्र हैदर मिर्जाको कश्मीरके सिंहासनपर बैठे पाच वर्ष हो गये थे।"

३ (४ मुगोलिस्तानी खान-वृक्ष)
(१३२१–१५६५ ई०)

चगताई (१२२७-४२)
- मोतुगान
- येसेनदावा
  - बोरक (१२६६-७१)
    - दुवा (१२८२-१३०७)
      - कोनचोग् (१३०७-८)
      - येसेनवुगा (१३०९-१८)
        - १ तुगलक तेमूर (–१३६२)
          - २ इलियास (१३६२-८९)
          - ३ खिजिर (१३८९-९९)
            - ४ शमाजहान (१३९९-१४०८)
              - ६ नकशेजहान (१४१६-१८)
            - ५ मुहम्मद (१४०८-१६)
              - शेरअली
                - ८ वेइस (१४१८-२८)
                  - १० युसनवुगा (१४३४-६२)
                    - ११ दोस्तमुहम्मद (१४६२-६८)
                  - १२ यूनस (१४६८-८७)
                    - उमरशेख=कुतुलुग निगार
                      - वाबर
                        - हुमायू
                          - अकवर
                    - १३ महमूद (१४८७-१५०८)
                      - १४ मन्सूर (१६०८)
                    - अहमद
                      - १५ सईद (१५०८-३३)
                        - १६ रशीद (१५३३-५६)
                          - अव्दुल्लतीफ
                          - १७ अव्दुलकरीम (–१५९३–)
                - ९ शातुक (१४२८-३४)
              - ७ शेर मुहम्मद (१४१८)
      - तरमाशेरिन (१३२६-३४)

स्रोत-ग्रन्थ

१. तारीख रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत्, लन्दन १८८८)
२ „ (Tr. E. D Ross, London 1895)
३ ओचर्क इस्तोरिइ सेमिरेच्या (व व वर्तोल्द)

अध्याय ५

सिबिरखान

(१५००–१६५९ ई०)

येरमकके सिबिर नगरके ध्वस और पश्चिमी साइबेरियापर रूसके शासनके स्थापित होनेकी बात कहते हुये हमने सिबिरके खान कूचुमका जिक्र किया था। १७ वी सदीमें साइबेरियामे बसनेवाली जातियोके बारेमे भी हम बतला चुके है।

सिबिरके खान भी अपना सबध छिङ्-गिस्-पुत्र जू-छिके पुत्र शैबान खानसे जोडते है, जो कि बा-तू खानका भाई था। शैबानके बाद उसके पुत्र बा-तू खान, तत्पुत्र जूजीबुका, तत्पुत्र बादाकुल, तत्पुत्र मगू तेमूर, तत्पुत्र तुकाबेक, तत्पुत्र अलीओगलान, तत्पुत्र हाजी मुहम्मद खान, तत्पुत्र इलबक (या ईबक), तत्पुत्र मुर्तजा, तत्पुत्र कूचुमखानके पास पहुचकर हम येरमकके समकालमे आ जाते है। ७ नवम्बर १५८१ ई० मे कूचुमको ही हराकर येरमकने उसकी राजधानी सिबिरको दखल किया था। कूचुमके बाद उसके पुत्रो अली और इशिमने कुछ समय तक शासन किया। इशिमका पुत्र अबले गिराई और उसके बाद इशिमके भाई चुवाकके पुत्र दौलात गिराईने शासन किया। साइबेरिया जैसे सभ्यताके छोरपर बसे देशके बाकायदा इतिहास लिखनेकी सम्भावना नही हो सकती थी, इसलिये इन खानोके बारेमे बहुत बाते हमे मालूम नही है। वस्तुत कबीलेशाही-धर्ममे इतिहास द्वारा अमर होनेकी सभावना न देख शासकोका सामन्तशाही-धर्मकी तरफ झुकनेका एक कारण यह भी है, कि सामन्तशाही पुरोहित अपने इतिहास-ग्रथो या पुराणो द्वारा अपने यजमानोको अमर कर देनेकी क्षमता रखते थे। सिबिरतक इस्लाम पहुचा तो था, लेकिन अभी वहाके लोगोपर उसका गहरा प्रभाव नही पडा था। बा-तूके वशके खतम होनेपर सुवर्ण-ओर्दूके सिंहासनपर शैबानी-वशज खिजिरखा बैठा, जो कि मङ्-गू तेमूरका सबधी था। खिजिरखाका सिक्का ख्वारेज्ममें भी मिला है, जिससे जान पडता है, शायद ख्वारेज्मपर भी उसका अधिकार था। मङ्-गू तेमूरके छ पुत्रोमे किपचकका खान पुलाद या पोलाद-तेमूर है। इसने किपचक खान अजीजको १३६७ ई० के आसपास मार डाला। पोलादके दो पुत्रोमे अरबशाहके वशजोने ख्वारेज्मपर शासन किया, और इब्राहिमके वशजोने बुखारापर, यह हम बतला आये है। मेङ्-गू तेमूरके पौत्र हाजी मुहम्मद खानके पुत्र ईबकसे हम सिबिरके खानोपर पहुचते है।

१ इबक, हाजी मुहम्मद-पुत्र (१४९३ ई०)

ईबक या इलबक उस समय हुआ, जब कि जू-छि-उलुस विशृखलित-सा हो चुका था। साइबेरिया और बशकिरोके छोटे-छोटे राजा इसे अपना अधिराज मानते थे। पुराने पवाडोमे इसे कजानका जार उपक कहा गया है। इसने अपनी बहिनका व्याह साइबेरियाके शासक मारसे किया था, जिसे झगडा हो जानेके कारण पीछे इसने मार डाला। उसके बाद वह त्यूमेन (प० साइबेरिया) प्रदेशका राजा हुआ। ईबक १४९३ ई० के बाद किसी समय मरा।

२ मुर्त्तुजा, ईबक-पुत्र

इसके शासनकालमे उज्बेक-उलुसका अधिकाश भाग मुहम्मद शैबानी और इल्बर्सके नेतृत्वमे अन्तर्वेद और ख्वारेज्ममे चला गया। जिसका कारण था पूरबमे मगोल राजा अलतन खानके

नेतृत्वमे मगोलो द्वारा कल्मकोपर भारी प्रहार पडनेसे उनका पश्चिमकी ओर भागने हुए उज्बेकोंके ऊपर पडना। उन्हे कल्मकोकी वाढने डुवाना चाहा, और उधर तेमूरी साम्राज्यके नष्ट-भ्रष्ट होनेके कारण दक्षिणसे न्यौता आया। उज्बेक-उलुसमेंसे जो यहा रह गये, वह मुर्त्तुजाको अपना खान मानते रहे। मुर्त्तुजाने नोगाइयोपर वडा अत्याचार किया, जिसका वदला पीछे उन्होने उसके पुत्र कूचुमको मारकर लिया।

३ कूचुम, मुर्त्तुजा-पुत्र (१५५५–९५ ई०)

१५५६ ई० में सिवरके खान यादगारने रूमी जारके पास कर न भेजनेका यह कारण वतलाया था, कि शवानी राजकुमार हमारे देशमे लूट-मार कर रहा है। यह शैवानी राजकुमार कूचुम खान था, जो उस समय सिविरसे पश्चिमके त्यूमन प्रदेशका शासक था। १५६३ ई० के आसपास कूचुमने यादगारको हटाकर सिविर राजधानी दखल कर ली। १५६९ ई० मे रूसी उसे सिविरका जार (राजा) कहते थे, जिसे रूसी जारने एक सधि द्वारा अपने सरक्षणमें ले लिया था। सरक्षणकी एक शर्त यह थी, कि सिविर खान हर साल सेवलकी हजार छाले और स्क्वाइरलो (गिलहरी) की हजार छाले प्रतिवर्ष भेजा करेगा। इस सोनेके मुहर लगे सधि-पत्रको चाव्रुकोफ साइवेरिया ले गया। कूचुमकी एक वीवी कजानके किसी छोटे खानकी लडकी थी, जिसके साथ कितने ही रूसी और चुवाश गुलाम भी सिविर गये थे। उसकी दूसरी दो वीवियां मिर्जा दौलतवेगकी लडकिया थी। इस प्रकार सभ्यताके सीमान्तपर वसे होनेपर भी सिविर नगरीमे सभ्यताके सदेशवाहक स्त्री-पुरुष पहुच चुके थे। लेकिन कूचुमकी प्रजामे अभी वर्वर अवस्थामे रहनेवाली कितनी ही जातिया थीं। इर्तिश और तोवोलके कितने ही तारतार ओर्दू तथा वाराविनके तारतार भी इसे अपना खान मानते थे। इसीके समय त्यूमनमें रूसियोंके साथ मिला हुआ एक अर्ध-स्वतत्र राजा रहता था। इस तरह कूचुमका राज्य तूराके मुहानेसे अधिक पश्चिम नही था। तरखनके तारतार इसकी अन्तिम प्रजा थे। तोवोलके सवसे नजदीकवाले वश्किर और ओस्तियाक कवीले भी कूचुमके अधीन थे। कहते है, कूचुम पहला खान था, जिसने साइवेरियामें इस्लामका प्रवेश कराया, लेकिन अभी वह वहुत फैला नही था। उसने अपने पिता मुर्त्तुजाको लिखा, जिसपर उसने एक आखुन (वडे मुल्ला) और कई मुल्लाओंके साथ अपने पुत्र अहमद गिराईको कजानसे इस्लामके प्रचारके लिये कूचुमके पास भेजा। कूचुमने प्रजाको जवर्दस्ती मुसलमान वनानेकी कोशिश की, तो भी वह अभी तारतारोको पूरी तौरसे मुसलमान वनानेमे सफल नही हुआ था। इर्तिश-उपत्यकाके तारतार अव भी मूर्तिपूजक थे। रूसी यात्री मुलरने यालीनिश तारतारोंके एक सरदार (वी) ने कहा था अपनी जवानीसे ही हम अपने मा-वाप, अपनी प्रजा तथा पडोसियोंके साथ सदा मूर्तिपूजक रहे। तोव्रोलस्क और देमियान्स्कोयके वीचके निवासी लेवाउज्की ओर्दूके तारतार तथा तूरिन्स्कके पडोसवाले तारतार भी तवतक मूर्तिपूजक रहे, जवतक ओस्तियाकोंके साथमे उन्हे ईसाई नही वना लिया गया। वारविन्स्की कवीलेके वहुतसे लोग १८वीं सदीतक मूर्तिपूजक रहे, यद्यपि उनके इलाकेमे वहुत पहले कूचुमके समयमें ही मुसलमान पहुच चुके थे। एक दूसरे रूसी लेखक फिशरके अनुसार निजार-उपत्यकाके तूरिन्स्क तारतारोंके कितने ही परिवार १६३९ ई० तक मूर्तिपूजक रहे।

७ नवम्बर १५८१ ई० को येरमकने किस तरह कूचुमकी राजधानी सिविरपर अधिकार किया, यह हम वतला चुके है। १७ या १८ अगस्त १५८४ ई० को येरमक लडाईमें हारकर अपने कवचके भारी वोझके कारण नदीमे डूवकर मर गया, लेकिन उससे रूसी अधिकारको साइवेरियामे क्षति नही पहुची। येरमक और उसके साथियोंका स्थान दूसरे रूसी वरावर लेते रहे। येरमककी मृत्युके दो साल वाद १५९६ ई० के वसन्तमे वोयवोद वासिली वोरिस-पुत्र सूकिन और इवान म्यास्नोईके साथ तीन सौ रूसी सैनिक आये—उन्होने युगुरके पहाडो और ओव नदीके रास्ते चढाई की। १० जुलाई १५८६ ई० को सूकिन तारतारोंके एक पुराने किले चिंगीपर पहुचा, जो कि तुरा नदीके तटपर था। वहा उसने

त्यूमनके नामसे एक नगर बसाया, जो आजकल पश्चिमी साइबेरियाका एक जिला है। त्यूमन तुरा नदीके दक्षिण तटपर बसा उरालसे पूर्व रूसियोंकी प्रथम स्थायी बस्ती थी। रूसियोंने बहुत आसानीसे तुरा, पिशिमा, इसेत, तोदा और तबोलकी उपत्यकाओंके तारतारोंको अपना करद बना लिया और कुछ ही समय बाद सैदिक खानको भी अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। सैदिक कूचुमसे पहलेके सिबिर-खानोंका वंशज था।

कूचुम अब भी हाथमें नहीं आया था। वह भागकर नोगाइयोंके भीतर बराबिनके मैदानोंमें चला गया, जहाँसे १५९० ई०में उसने तोबोल्स्कके पासवाले इलाकेपर आक्रमण किया, और रूसी प्रजा बननेके कारण कौरदक और सालिन्स्कके तारतारोंको लूटा। इसपर तोबोल्स्कके नये वोयवोद राजुल (क्न्याज) कोल्जोफ-मोसाल्स्कीने कुछ रूसी और तारतार सैनिकोंके साथ अगले साल जुलाई १५९१ ई०में कूचुमके विरुद्ध अभियान किया, और वह चिलिक झीलके पास इशिमके तटपर कूचुमको हराकर उसकी दो बेगमों, एक पुत्र (अबूलखैर) और बहुतसी लूटी हुई सम्पत्तिको लेकर वह लौटा। १५९४ ई० में रूसियोंने तारानगरका निर्माण किया, जिसके लिये जारने राजुल अन्द्रेइ वासिली-पुत्र लेल्कोइको वोयवोद नियुक्त किया। वह मास्कोसे एक सौ पैंतालीस स्त्रेलत्सी, सौ कजान-तारतार, तीन सौ बाश्किर, पचास पोल और पचास पोलकसाक भरोंको साथ लेकर आया था। त्यूमनसे भी उसके साथ कितने ही लोग आये थे, जिनमें लियुवानी, चेरकासी, निर्वासित-कसाक, तथा कुछ साइबेरियाके तारतार थे। इस सेनामें अधिकांश सवार थे। उनके पास तोपखाना और काफी गोला-बारूद था। पहले नगरको तारा नदीके तटपर बसानेका ख्याल था, किन्तु पीछे विचार बदलकर उसे इर्तिशकी शाखा अगरकापर बसाया गया, पर नाम तारा ही रहा। रूसी अब कूचुमको दबानेके लिये उतारू थे। कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये कहा गया, और यह भी वचन दिया गया, कि छोटे पुत्रोंमेंसे एक तथा दो-तीन प्रमुख तारतारोंको जामिनके तौरपर मास्को भेज देनेपर बड़े लड़के अबुल्खैर तथा दूसरे सम्भ्रान्त बंदियोंको लौटा दिया जायगा। अबुल्खैरने भी जार फ्योदोरकी उदारताकी प्रशंसा करते हुये बापको चिट्ठी लिखी। कूचुमने जवाब दिया—"मैंने येरमकको सिबिर नहीं दिया, यद्यपि उसने उसे जीत लिया। मैं शांतिसे रहना चाहता हूँ, यदि इर्तिशके किनारेको सीमान्त मान लिया जाय।"

१५९५ ई० में फ्योदोर येलिज्की नया वोयवोद होकर आया। उसने तुरन्त कूचुम और उसके मित्र नोगाई खान अलीके ऊपर चढ़ाई करनी चाही। तोबोल्स्क और त्यूमनसे भी मदद आई, जिसमें पाँच तोपें भी थीं। पहले जाड़ों में ९० कसाक-सैनिक भेजे गये, जो अयालिन्स्कके अट्ठाईस तारतारोंके साथ लौटे। कूचुम इन कसाकोंको अपने रहनेकी जगह ऊपरी इर्तिशमें ले जाना चाहता था। इस समय वह ओबके जलप्रपातमें दो दिन आगे गाडिया-नगरमें डेरा डाले पड़ा था। फिर वोयवोदने नया अभियान भेजा, जो कूचुमके रहनेकी जगहको नष्ट करके तारा लौट गया। लेकिन कूचुम अभी दबा नहीं था। १५९६ ई० के वसन्तमें दोमोशेरोफके अधीन तेतालीस सैनिकोंका अभियान भेजा गया वह २९ मार्चको बरफानी जूतोंपर रवाना हुये। मामूली संघर्षके बाद रास्तेके चमगुल, लुगुई, लुबा, केलेमा, तुराश, बरमा (उलुकबरमा), किरकिपी आदि गाँवोंने अधीनता स्वीकार की। इसी समय नोगाई मिर्जा चिन, और कितनोंने भी अधीनता स्वीकार की, लेकिन कूचुम अब भी प्रतिरोधके लिये तैयार था। अगस्त १५९८ ई० में ३९७ रूसी सैनिकोंके साथ अन्द्रेइ वोयेकोफ कूचुमके विरुद्ध ओब नदीकी ओर चला। चारों ओर फसलें खड़े खेतोंके बीचमें कूचुम अपने परिवार तथा पाँचसौ अनुयायियोंके साथ छिपा हुआ था। २ सितम्बर को सूर्यास्तसे पहले रूसियोंने आक्रमण कर दिया। सारे दिन लड़ाई होती रही, जिसमें कूचुमका एक भाई, एक पुत्र, राजकुमार इलितन और पाँच-छ अमीर, दस मिर्जा और एक सौ पचास सैनिक मारे गये। शामके वक्त नदीकी ओर शत्रु भगे। उनमें एक सौसे ज्यादा नदीमें डूब गये, पचास बन्दी बने, और कुछ लोग नावों द्वारा भागनेमें सफल हुये। वोयकोफको बहुतसे लूटके माल के अतिरिक्त आठ बेगमें, पाँच कुमारियाँ और पाँच राजकुमार हाथ लगे। वोयकोफने तारा

लौटकर जार बोरिस गदुनोफको अपनी सफलताके बारेमे लिखा—"कूचुम खान दो आदमियोके साथ ओबके किनारे-किनारे चाता प्रदेशमे चला गया ।" वोयकोफने समझा-बुझाकर कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार करना चाहा । उसने इसके लिये मुल्ला तूल मेहमतको भेजा । उस वक्त ओब नदीके तटके एक जगलमें रूसियो द्वारा मारे गये अपने तारतारोंकी लाशोंके बीचमे अधा-बूढा कूचुम खान तीन बेटो और तीस अनुचरोके साथ एक पेडके नीचे बैठा था । मुल्लाने कहा—"अधीनता स्वीकार कर लो, फिर तुम मास्कोमें जाकर अपने परिवारके साथ आरामसे रह सकते हो । जार तुम्हारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव करेगा ।" बूढेका जवाब था—"जब मेरे दिन भले थे, मै समृद्ध और सबल था, तब मैं नही गया, तो क्या इस समय मै अपमानपूर्ण मृत्युके लिये वहा जाऊ ? मै अन्धा और बहरा हू, गरीब और बेचारा हू । मै अपनी सम्पत्तिके विनाशके लिये अफसोस नही करता, लेकिन मै अपने प्यारे पुत्र असमानकके लिये अफसोस करता हू, जिसे रूसी पकड ले गये । राज्यके विना भी मै उसके साथ सतोषमे रह सकता था, चाहे मेरी दूसरी बीबिया और बच्चे न भी होते । अब मै अपने बचे-खुचे परिवारको बुखारा भेज दूगा और स्वय नोगाइयोमे चला जाऊगा ।" कूचुमके पास उस समय न गरम कपडे थे, और न घोडे ही । उसने अपनी पुरानी प्रजा चातोसे कुछ चीजे भीखके तौरपर मागी । इसके बाद वह युद्धक्षेत्रमें पहुचा । फिर दो दिनतक मुर्दोंको दफनानेमे लगा रहा । इसके बाद एक घोडेपर चढकर वह रूसी इतिहासकार करमजिनके अनुसार "इतिहाससे विलुप्त हो गया ।"

कूचुम इर्तिशके रास्ते सइसान झील (नोर) की ओर जा कलमकोंके देशमे कुछ समय ठहरा, फिर उनके कितने ही घोडोको लूट कर इशिमके जिलेमे गया । कलमकोने पीछा करके इशिम नदीके पास करगालचेन झीलपर उसपर आक्रमण किया । उसके कितने ही अनुचर मारे गये, और कूचुम नोगाइयो (मगुतो) मे भाग गया । लेकिन, नोगाइयोको कूचुमके बाप मुर्त्तुजाके हाथो बहुत कष्ट उठाना पडा था, इसलिये उन्होंने बूढे कूचुमको मारकर उसका बदला लिया । कूचुमके परिवारके जो लोग रूसियोके हाथमे पडे थे, वह जनवरी १५९९ ई० मे मास्को पहुचे । खानके पुत्रो और पुत्रियोको अमीरो और धनी व्यापारियोके घरोमे रखकर जारने उनके लिये मामूली पेंशन निश्चित कर दी । महमेतकुल रूसी सेनामे शामिल हुआ, और १५९० ई० में रूसकी तरफ से स्वीडनके विरुद्ध लडा । १५९८ ई० में क्रिमियाके तारतारोंके विरुद्ध भी वह जार बोरिस गदुनोफके साथ गया था । कूचुमका पुत्र अबुल्खैर १५९१ ई० में ईसाई बनकर अन्द्रेई नामसे प्रसिद्ध हुआ, और कूचुमके पुत्र अलीका लडका अल्पअर्सलन पीछे कासिमोफका खान बना ।

४ अली, कूचुम-पुत्र (—१५९८ ई०)

१५९८ ई० की लडाईमे बापके साथ अली भी था । इस पराजयके बाद वह जहा-तहा घुमन्तू जीवन बिताता घूमता रहा । अभी रूसियोंके शासनके आरम्भिक दिन थे । अली अपने अनुयायियोको जमा करके वह इर्तिश, इशिम और तबोलकी उपत्यकाओमे लूट-मार करते यायिक नदी तथा कूफा तक धावा करने लगा । १६०३ ई० मे वह लगातार रूसियोंके साथ छेडखानी करता रहा । १६०६ ई० मे पहली बार उसके आदमी ताराके जिलेमे दिखलाई पडे, जहा उन्होंने रूसी बस्तियोको लूटा । रूसियोने पीछा करके अलीकी माको पकड लिया, जिसे वह त्यूमन ले गये । १६०७ ई० मे कूचुमके पुत्र असिम, इशिम और कचुवार कलमकोंके झडेके नीचे हो, त्यूमन जिलेपर आक्रमण कर वहासे रूसी बच्चो और ओरतोको पकड ले गये । फिर एक नोगाई मुर्जा कनाईके साथ दो सौ आदमियोको ले उन्होंने तोबोल्स्कके आसपास लूट-मार की । पीछा करके शमशीके जगलोंमे अलीकी स्त्री दो पुत्र, असिमकी दो बीबियो और दो लडकियो, तथा अलीकी एक बहिनको पकडकर रूसी त्यूमन ले गये । आखिरमे किबिरली झीलके पास दो दिनके युद्धमे जो बन्दी पकडे गये, उनमे अली भी था । उसे बन्दी बनाकर मास्को भेज दिया गया । वहा कुछ समय रहनेके बाद उसे यारोस्लाब्ल नगरमे नजरबन्द कर दिया गया, जहा १६३८ ई० के बाद वह किसी समय मरा ।

५ इशिम, कूचुम-पुत्र (—१६१६ ई०)

१६१६ ई० मे इशिम सलवर और कोशुर दो कलमक राजकुमारोके साथ ऊपरी इर्तिशमे सेमीप्लातिन्स्कमे रहता था। वहासे वह साइबेरियाके नगरोमे ऊफा तक लूट-मार करता था। अलीके पकडे जानेके बाद इसने अपनेको खान घोषित किया था। १६१८ ई० में कलमकोके साथ मिलकर इसने रूसियोपर आक्रमण किया, जिसमे इर्तिशके मैदानो और तोबोलके बीचमे उसे बहुत बुरी तरहसे हारना पडा। इस लडाईमे इसके बहुत-से आदमी काम आये। १६२० ई० मे इशिम कल्कम सेचक थैशीके साथ मिल कर शूचिये झीलकी ओर जा खबर लाया, कि पूर्वी मगोलोने कलमकोको बुरी तरह हराया है, और वह पश्चिमकी ओर भागे जा रहे है। इसके बाद इशिम तोरगुत राजा उरलुककी लडकीसे ब्याह करके अपने ससुरके साथ रहता रहा। उरलुक वोल्गा-कलमकोका प्रथम सरदार था। इस समय कलमक पश्चिमी साइबेरियाके स्तेपीमे रूसी सीमाके दक्षिणकी भूमिमें रह रहे थे। १६२२ ई० मे इशिम त्यूमनसे सात दिनके रास्तेपर तोबोल-तटपर अवस्थित खामा करागाईमे रहता था। इसके बाद वह ऊफा शहरके पास चला गया।

६. अबलइ गिराई, इशिम-पुत्र (१६३५—१६५० ई०)

अबलइ गिराई भी कलमकोके साथ मिलकर लूट-पाट करता था। कल्मक सरदार कोकशुल, उरलुक और बाइबेगिश इसके दोस्त थे, जिनकी सहायतासे इशिमने बराबिनके तारतारोको कल्मकोका करद बनाया। इस प्रकार सहायता करके अबलइ गिराईने कलमकोके थैशियो (राजाओ) तेलेगुत राजा ओबक, कुरचाकिश सैंची केशेसके साथ मित्रता बढाई। अबलइ अपनी लूट-मार जारी रक्खे रहा। १६३२ ई० मे वह इसेतके तटपर अलीबयेफ यूर्ति नामक गावमे था। १६३५ ई० मे इसेत-तट, वेर्ख्ने-निजिन्सकया और चूबाबोफामे था। इसी साल रूसियोने इसके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन कुछ कलमकोके मारे जानेके सिवा उसका कोई फल नही हुआ। १६३६ ई० मे ऊफासे अभियान भेजा गया। बहुतसे कलमक मारे गये। अबलइ ५४ कलमकोके साथ पकडकर ऊफा लाया गया, जहासे उसे मास्को भेज दिया गया। पीछे वहासे उसके चचेरे भाई दौलत गिराईको उसके मरनेकी खबर भेज दी गई।

७ दौलत गिराई, चुवाक-पुत्र (१६३७ ई०)

१६३७ ई० में तारामे बुखाराके बाईस व्यापारी आये, जिनके साथ दौलतका दूत भी था। १६४० ई० में कलमकोको साथ ले दौलतने तरखन्स्कोये ओस्त्रोग (राजकुमार द्वीप) को लूटा। इसपर १६४१ ई० मे रूसियोने दो सौ बहत्तर सैनिक भेजे, जिन्होने उनमेंसे बहुतोको मारा और कितनो को बदी बनाया। बदियोमे तोरगुत-सरदार उरलुकका एक भतीजा और एक भतीजी भी थी। १६४६, १६४८, १६४९, १६५१ और १६५५ ई० मे कूचुमवशी राजकुमारोकी लूटमारकी खबर लगती रही। १६५९ ई० मे बुगई, कुचुक, कचुवार और चूचेलेईने एक हजार आदमियोके साथ कितने ही कलमक थैशियोंसे मिलकर बहुत-सी रूसी बस्तियोको लूटा, और ३५८ पुरुषो और ३७५ स्त्रियोको बन्दी बनाकर ले गये। पीछे इन बदियोमेंसे बहुतोको जुगारियाके खुन थैशीके बीचमे पडनेपर छोड दिया। अब वस्तुत सिबिरके खानोकी प्रभुता खतम हो चुकी थी, और यायिक (उराल) नदीके पूरबवाले प्रदेशके स्वामी कलमक थे। उन्हीमे सिबिर खानके आदमी विलीन हो गये, और आगे इतिहासमे उनका नाम नहीं मिलता।

३ (५ सिबिरखान-वंशवृक्ष)
(१५००-१६५९ ई०)

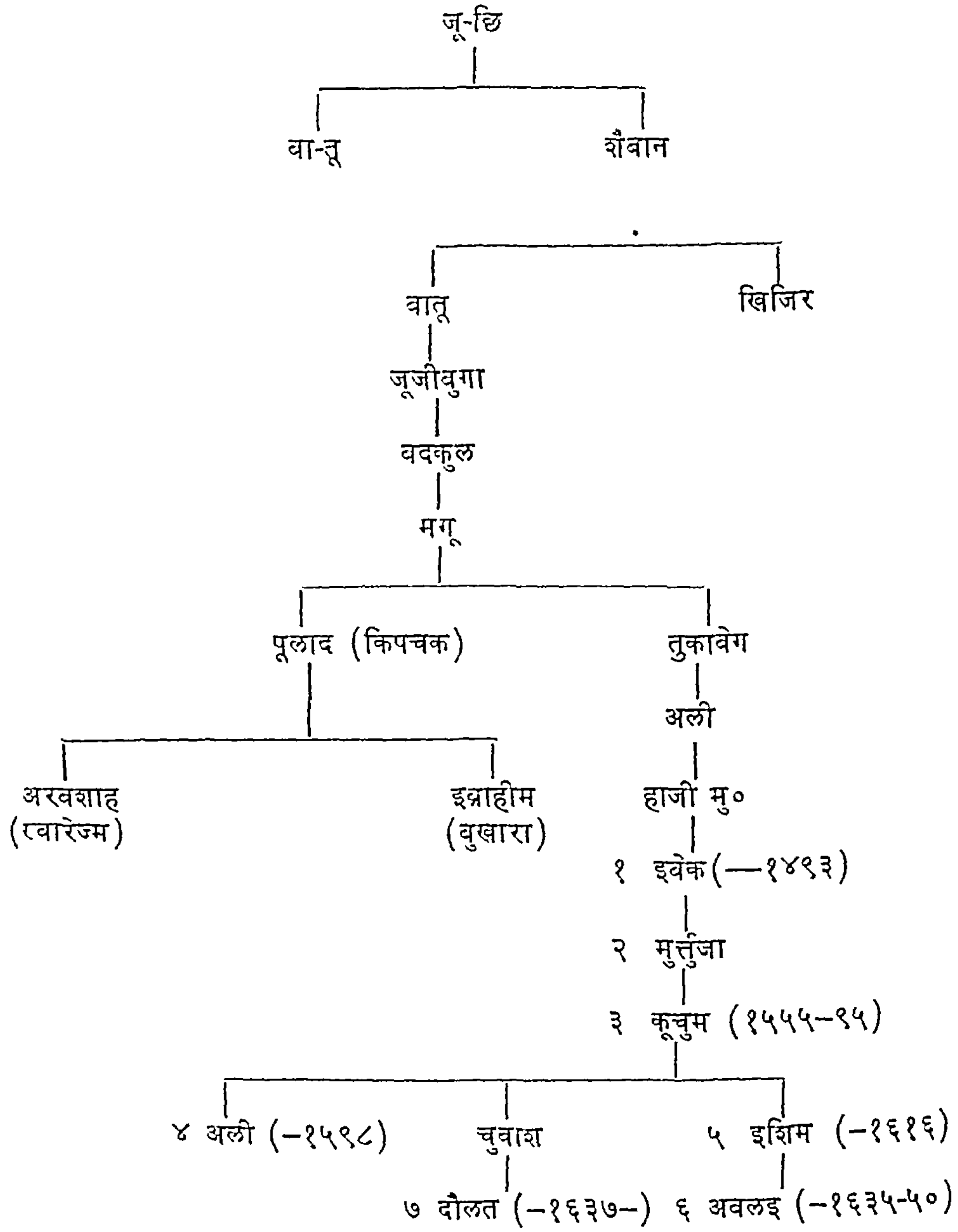

स्रोत ग्रन्थ

१ ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सि इ सिबिरि (मास्को १९४६)
२. History of Mongol (H. H. Howorth)

अध्याय ६

जुङ्गर-साम्राज्य

(१५८२–१७५७ ई०)

कल्मक-मंगोल—मगोलोकी एक शाखाका नाम कल्मक था। इनका मगोल नाम तोरगुत था, लेकिन मुसलमान और रूसी लेखक इन्हे अधिकतर कल्मकके नामसे पुकारते है। १६०० ई० (अर्थात् अकवरकी मृत्युसे पाच साल पूर्व) के पहले अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममे कल्मक नही थे। पूर्वी मगोलोके शक्तिशाली राजा अल्तन खानने जब १६२० ई० मे तोरगुतोको बुरी तरहसे हराया, तो वह अपने सरदारो खराखुला, दालय और मेरेगनके नेतृत्वमे पश्चिमकी ओर भागने लगे और फिर यम्वा नदी, उराल पर्वतमालासे पूर्व और अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममें छा गये। १६ वी सदी तक यह भूभाग उज्वेक-कजाको (शैवानी और कजाक) से नोगाइयोंके हाथमें चला गया था। वह इस भूमिमे अपना घुमन्तू-जीवन विताते थे। कल्मकोका उनसे सघर्ष होने लगा। कल्मक लगातार पश्चिमकी ओर वढते वश्किरोंके देशमे पहुचे। कल्मक राजा उरुसलन थैशीने वश्किरोंसे कर मागा—वश्किर अभी तक नोगाइयोंके अधीन थे, जिससे नोगाइयोसे झगडेकी नौवत आ गई। इस्माईल-पुत्र दीनेवेइका पुत्र कनाई उस वक्त नोगाइयोका राजा था। तोरगुत (कल्मक) सरदार उरलुक और उसके पुत्र दाइशिंगने नोगाई खानके विद्रोही सलतानियासे मिलकर १६३३ ई०में कनाईपर चढाई की। कनाई रूसके अधीन था, इसलिये जारकी सरकारने तोवोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी सेनापतियोको उसकी मदद करनेके लिये हुक्म दिया।

१६४३ ई०में रूसियोने आक्रमण करके उरलुक और उसके कुछ पुत्र-पौत्रोको भी मार डाला। इसके वाद उरलुक-पुत्र येलदेङ और लोब्जाङने यायिक पार कर वोल्गाके मैदानोमे प्रवेश किया, और नोगाइयोको किताई-किपचक, मैलवाश और येदिस्सन (एतिसन) के तीन भागोमे वाट दिया। साथ ही उन्होने उलाङतुमान (लाल ऊटवाले ओर्दू)के तुर्कमानोको भी उनकी भूमि येम्वाके दक्षिणी भागसे हटा दिया। अव वोल्गाके दोनो पारका इलाका नोगाइयोंके हाथसे निकलकर कल्मकोंके हाथमें चला गया। इस प्रकार नोगाई अपनी मूल-भूमिसे वचित हुये। करीव डेढ शताब्दियो तक कल्मक इस भूमिमे छाये जरूर रहे, लेकिन अन्तमें फिर कजाक आकर आवाद हो गये, जिसके ही कारण आज यह भूमि कजाकस्तानके नामसे मशहूर है। पश्चिमी मगोलोको तोरगुत या कल्मक कहा जाता था, जब कि पूर्वी मगोल खलखा नामसे प्रसिद्ध थे।

(१) कल्मकोके भीतर ओइरोद, कुरी, तुला, तुमेत, वरगुत, कुरतुतके कवीले थे, जो अगारा नदी और वैकाल सरोवरके पश्चिममें रहते थे। हो सकता है, पश्चिमी मगोलोका कोई मुख्य सरदार कल्मक रहा हो, जिसके नामपर कवीलेका यह नाम पडा।

(२) उरियानकुत मगोल कोस्सागोल (झील)के पास रहते थे।

(३) सुवाइत (सूनित) कवतेरून (कैरून) भी मगोलोका कवीला था।

तायनखान (१४७०-१५४४ ई०) के पुत्रोने आपसमे मगोलोका वटवारा किया था।

कल्मकोंके वाद ज्यादा शक्तिशाली खलखा मगोल थे। आज भी वाह्य-मगोलिया इन्हींकी है। खलखाके उन्चास झडे थे, अर्थात् ये उन्चास छोटे-छोटे कवीलोमे विभक्त था। इनके चार मुख्य भेद थे—(१) जस्सक्तुखानके पश्चिमी खलखा, (२) तूशीयेतूखानके उत्तरी खलखा, जो कि तुला और केरुलोन-उपत्यकाओमें रहते थे, (३) साइननोयनके मध्य खलखा, और (४) सेतजेनखानके पूर्वी खलखा।

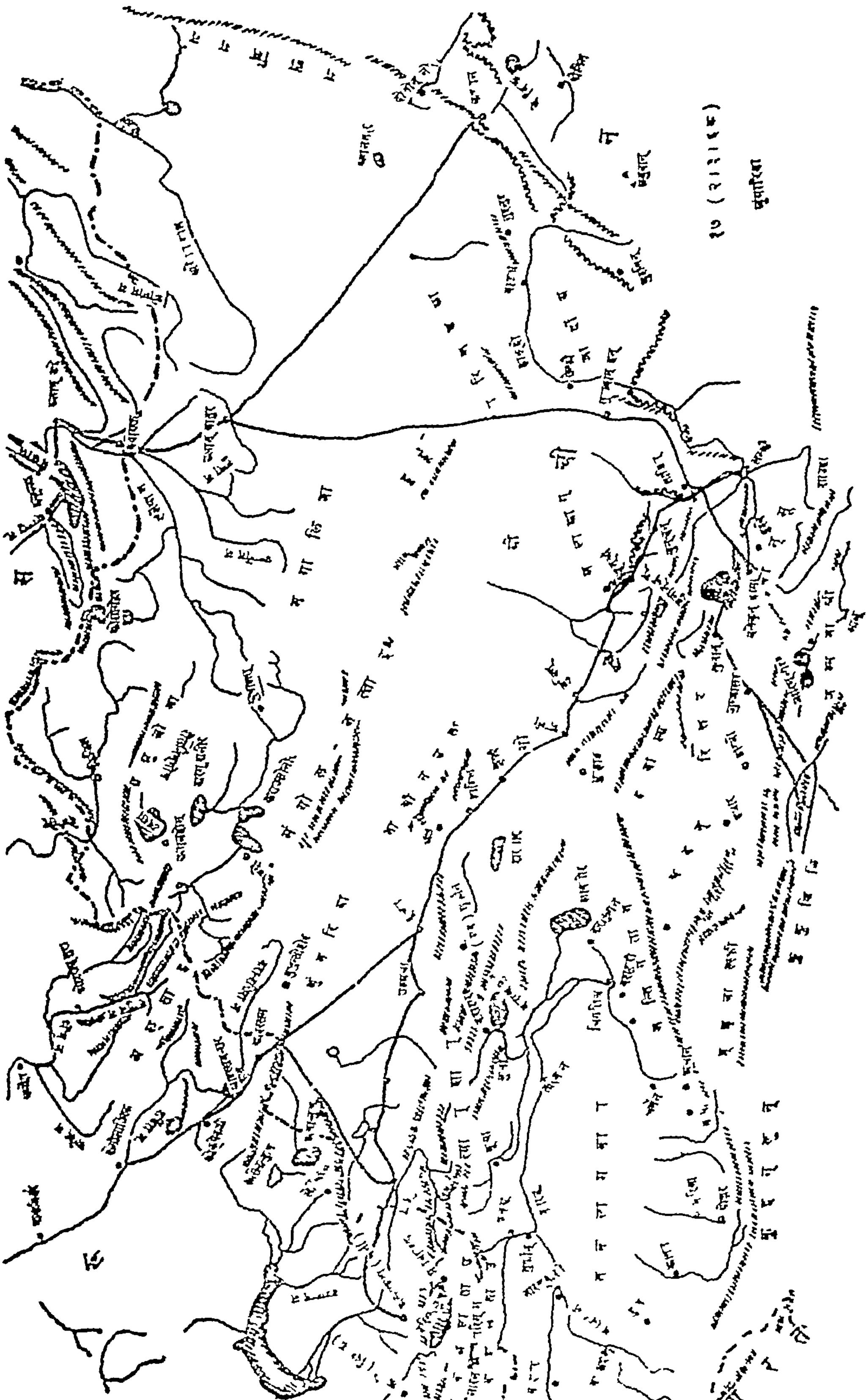

मंगोलराजावलि—चीनसे मंगोल-शासनके उठनेके बाद मंगोलोकी शक्ति तितर-बितर हो गई थी, जिसको एक बार फिर एकत्रित करके १८७० ई० में तायनखान सारे मंगोलियाका शासक बना। तायनखानका वंश-वृक्ष निम्न प्रकार है—

३. (६ क. मंगोलिया-वंशवृक्ष)
(१३३२-१६०३ ई०)

- छिङ्-गिस् (१२०६–२७)
  - तूलुइ
    - कुबिले (१२६०–९४)
      - छिङ्-गेम् (चिङ्-किन्)
        - धर्मपाल
          - बोयन्तू (१३११–२०)
            - युग-थेमूर
              - १ येगेन थेमूर (१३३३–६८–७०) अंतिम चीन-सम्राट
                - २ विलिकतू (१३७०–७८)
                - ३ उस्साखल (१३७८–८८)
                  - ४ एङ्के सोरिकतू (१३८८–९२)
                  - ५ एल्बेक (१३९२–१४००)
                    - ६ गुनथेमूर (१४००–३)
                    - ७ उल्जैथेमूर (१४०३–११)
                      - ८ देल्बेक (१४११–१५)
                  - खरगोत्सोक
                    - १० अदसै (१४३४–३९)
                      - ११ तैस्सोङ (१४३९–५२)
                        - १३ केतकू (१४५३)
                        - १४ मोलोन (१४५३–६३)
                      - १२ अकवर्शी (१४५२-५३)
                        - खर्गोतक्षोक
                          - बोलखो पजनोङ
                            - १६ तायन (१४७०–१५४८)
                              - बरसाबोल
                                - गुनविलिक
                                - अलतन (१५०७–८३)
                              - नोरोबोलोद
                                - १७ बोदी (१५४८–६७)
                                  - १८ कुतङ (१५४७–५७)
                                    - १९ सस्सकतू (१५५७–९२)
                                      - २० मेत्जेन (१५९२–१६०३)
                      - १५ मदगोल (१४६३–७०)

- उत्सुकेन
  - ⋮ ९ अदै (१४१५–३४)

तायनखान बहुत शक्तिशाली शासक था, लेकिन उसने बडी गलती यह की, कि राज्यको अपने ग्यारह पुत्रोमें बाट दिया। इसके ग्यारह पुत्र थे—(१) तोरोबोलोद, जिसका पुत्र बोदी तायनकी गद्दीपर बैठा, (२) उलुस बैशी, (३) बुर्सबोल, (४) अरसू, (५) अल्चिान, (६) वत्शिर, (७) अरा, (८) गेरेबोल, (९) गेरेसजा, (१०) बुशिगुन, (११) गेरेतू। इस विभाजनके बाद मगोल शक्ति फिर दुर्बल हो गई, और छिड्-गिस्के वशके दावेदार बहुतसे छोटे-छोटे खान हो गये।

अन्तर्-मंगोलिया—यह तायनखानके बडे पुत्रोंके हाथमें गई। अन्तर्-मगोलिया मचूरियाके पडोस में थी, इसलिये दोनोकी घनिष्ठता बढ़ी, और अन्तमे मगोलोकी मददसे मचू नूर-हाचू या (ताई-चू) ने १५८३ ई०में अपने मचू (छिड्)-वश (१५८३-१९१२ ई०)की स्थापना की, जिसके द्वारा मगोल सम्राटोंके स्थानपर स्थापित मिड्-वश (१३६८—१६४४ ई०)का उच्छेद हो गया। चीनके ऊपर अधिकार करके मचुओने कलके अपने सहायक मगोलोके ऊपर हाथ फेरा, और उन्हे अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। इस प्रकार अन्तर्-मगोलिया चीनका भाग बन गई।

बाह्य-मंगोलिया—इसे खलखा भी कहते है। यह तायनखानके छोटे लडकोंके हाथमे गई। १६८९ ई०में उनमें और उनके पश्चिमी पडोसी ओइरोद—कलमक—कबीलोंके बीचमें लडाई छिड गई। अन्तमे खलखा (बाह्य-मगोलियावालो)को ओइरोदोसे हारकर अपने कितने ही भूभागको गवाना पडा। कलमकोंके प्रहारसे मजबूर होनेपर खलखोने रूसकी अधीनता स्वीकार करके अपना बचाव करना चाहा, लेकिन इस समय मगोलियामें तिब्बतके दलाई लामाकी तरह एक बौद्ध संघराज—ह्-तुक्-तू—का बहुत प्रभाव था। उसने यह कहकर रूसकी अधीनता स्वीकार करनेसे मना कर दिया, कि वह बौद्ध देश नही है। इसपर खलखोने चीनकी सहायता चाही। इस समय मचू-सम्राट् खाड्-सी (शेड्-चू १६६१-१७२३ ई०) चीनकी गद्दीपर था। उसने खलखोकी मदद की, और ओइरोदो (ओलिओतो)को असानीसे दबा दिया। १६९१ ई०में खाड्-सीने दोलोन-नोर (दक्षिणी मगोलिया) में खलखोकी एक बड़ी परिषद् बुलाई, जहापर एकत्रित होकर बाह्य-मगोलियाके राजुलोने चीन की अधीनता स्वीकार करते हुये अभय वर प्राप्त किया। तबसे प्राय मचू-वशके अतिम समय (१९११ ई०) तक बाह्य-मगोलियाने चीनकी अधीनता स्वीकार कर रक्खी, और प्रतिवर्ष आठ सफेद घोडे, और एक सफेद ऊट—नौ श्वेत—करके रूपमें चीन सम्राट्के पास भेजे जाते रहे, और चीनका 'अम्बन' (महामात्य) बाह्य-मगोलियाकी राजधानी उरगा (ताहुरे, आधुनिक उलानबातुर) मे रहता रहा। उसके अतिरिक्त कोब्दो (पश्चिमी मगोलिया) और उलियस्सुतैमें सैनिक राज्यपाल रहते थे।

कलमक (जुगर), ओइरोद (ओलियोत) खलखा मगोलोके प्रतिद्वद्वी थे, इसे हमने अभी देखा। यद्यपि चीनकी सहायतासे खलखोकी रक्षा हो गई, और कलमकोने खलखोके हाथ बडी बुरी तरहसे हार खाई, लेकिन तो भी कलमकोकी शक्ति अपनी पश्चिमी और दक्षिणी पडोसियोंपर बढती ही गई। पूर्वकी तरफ बढावके रुक जानेपर वह अपने सरदारो खराखुल, ताले और मेरेगनके नेतृत्वमे छू-मिश, ओब और तोबोलकी उपत्यकाओमे रहने लगे। कलमक पशुपाल थे, इसलिये चरागाहोंके लिये उनका नोगाइयोंसे झगडा हो गया। नोगाइयोंके अधीनस्थ बाश्किरोंसे कर मागनेपर नोगाइयोंसे सघर्ष हुआ, यह हम बतला चुके है।

कल्मकोकी शक्तिका सस्थापक तूमेतवशी अल्तन खान (१५०७—८३ ई०) को माना जाता है। इसने १५५२ ई० मे ओइरोतोंके नेताके तौरपर कजाकोंके खान तवक्कल शिगाई-पुत्र तथा ताहिर खानके वशजोको लडकर भगा दिया। तवक्कल ताशकन्द पहुचा, जहाका खान नौरोज अहमद (मृत्यु १५५६ ई०) था। तवक्कलने मगोलोंके विरुद्ध उससे मिलकर लडनेकी बात की, तो उसने जवाब दिया हमारे जैसे दस खान भी कल्मकोका कुछ नही बिगाड सकते।

इस समय सप्तनद और उसके आसपासकी भूमिमें किर्गिज और कजाक दो घुमन्तू जातिया रहती थीं। ९९० हि० (१५८२ ई०) अर्थात् अकबरके समकालीन एक अज्ञात लेखकके अनुसार किर्गिज मगोलोंके वशके है, और उनके यहा कोई राजा नही होता—उसकी जगह उनके नेता बेक होते है, जो कि काफिर है। वह पहाडोमे रहते है। यदि कोई उनके ऊपर अभियान करता,

तो वह अपने परिवारको पहाडोमे छिपा देते, फिर शत्रुका मुकाबिला करते है। उनकी भूमि बहुत ठडी होनेसे सहायक होती है, जिसके कारण सफल विजेता भी उन्हे हाथमे नही रख सकता।

कजाक—काफिर किर्गिजोके पडोसी कजाक थे, जिनकी सख्या दो लाख परिवार थी। यह मुसलमान तथा केवल इमाम अबू-हनीफाके अनुयायी (हनफी) थे। इनके पास बहुतसे ऊट थे। यह अपने तम्बुओको गाडियोपर ले चलते थे। मुसलमान होनेकी वजहसे इनका सबध बुखारासे बहुत घनिष्ठ था। कजाकोके खान तवक्कलने १५९४ ई० मे जार फ्योदोरके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये अपने दूत मास्को भेजे। उस समय रूसी तवक्कलकको 'कजाको और कल्मकोका राजा' कहते थे, जिससे यह पता लगता है, कि १६वी सदीके अन्तमे उसने कल्मकोके विरुद्ध कोई सफलता प्राप्त की थी। अपनी मृत्युके समय तवक्कल तुर्किस्तान-शहर (निम्न सिर-उपत्यका) और काशगरका शासक था। ये दोनो नगर कजाकोके हाथमे प्राय १७२३ ई० तक रहे। १७ वी सदीमे कजाकोकी शक्ति बहुत मजबूत थी। उस वक्त वह सप्तनदपर भी अधिकार रखते थे, और उनका केन्द्र तुर्किस्तान और ताश्कन्दके नगर थे। उसी शताब्दीके अन्तमे ख्वारेज्म और वोल्गातट तक उनका प्रभुत्व फैला था। लेकिन इसी समय कजाकोके प्रतिद्वद्वी कल्मको (जुगरो)की शक्ति बढी। कल्मकोके राजा निम्न प्रकार थे—

जुंगर-(कल्मक) राजावलि—

१	खराखुल या कराकुल	—१६३४ ई०
२	बातुर थैंची, खराखुल-पुत्र	१६३४—५३ "
३	सेङ्-गे, बातुर-पुत्र	१६५३—७१ "
४	गल्दन, गन्दन, बातुर-पुत्र	१६७१—९७ "
५	छेवङ-रब्तन, सेङ्-गे-पुत्र	१६९७—१७२७ "
६	गल्दन, छेरिङ-छेवङ-पुत्र	१७२७—४५ "
७	छेवङ-दोर्जे, गल्दन छेरिङ-पुत्र	१७४५—५० "
८	दावा छेरिङ, सेङ्-गे-वशज	—१७५५ "
९	अमुरसना, बातुर-थैंची-वशज	१७५०—५७ "

१ खराखुल, कुतुगैतू अबूदा अबलई-पुत्र, ओनगोजो-पौत्र, अरखान चिङ-सेन-प्रपौत्र (—१६३४ ई०)

तायन खानके समय (१४७०—१५४४ ई०), कल्मको [१ करइत (केरगुदी), २ जुगर, ३ देरबेत, ४ खोरोत (चोरोस)] की भूमि त्यानशान-पर्वतमालाके उत्तर तथा बोग्दोउला-पर्वतके पडोसमें थी। सोलहवी सदीमे इनका केन्द्र कुल्जाके आसपास इलि-उपत्यकामे था। खराखुल (चोरोस) मगोलोके खान खराखुलने १६३४ ई०के आसपास (शाहजहाके समय) ओइरोतोको एकताबद्ध करके अपनी शक्तिको बढानेकी कोशिश की, लेकिन उसमे सफलता उसके पुत्र बातुर थैंची (तैंची, तैंसी, थैंशी) को हुई।

२ बातुर थैंची, खराखुल-पुत्र (१६३४—५३ ई०)

१६३४ ई० मे बातुर (बहादुर) ने अपने बापका राज्य पा खुन-थैंचीकी उपाधि धारण की। इसके समय ओइरोतो या जुगरो (वामदल) का राज्य दृढ हुआ। इसने १६४० ई०मे कूरिल्ताई (महापरिषद्) बुलाई, जिसमें रूसके राज्यमे रहनेवाले कल्मकोके भी प्रतिनिधि आये थे। यहा पर बातुरको खुन-थैंची (सारे कल्मकोका सरदार) बनाया गया। बातुर ऊपरी इर्तिश-उपत्यका तथा जाइसन सरोवरके पासकी भूमिमे चारण करता था। इसने तवक्कल खानके भाई और उत्तराधिकारी कजाकोके खान इशिमसे सफल लडाइया की। १६५३ ई०मे बातुरके मरनेके समय कल्मक एकताबद्ध हो चुके थे।

अल्ताईके उत्तरमें रहनेके कारण वातुरके कलमकोको उत्तरी एलिगोत (ओइरोत) भी कहा जाता था, और दाहिनेकी ओर प्रवास करनेके कारण जुगर—सेगोनगर—या वामपक्ष भी। वातुरने तोर्गुतोके राजा उर्लुककी लडकी व्याही थी, लेकिन पीछे उर्लुकसे झगडा हो गया, जिसके कारण भी तोर्गुत पश्चिमकी ओर प्रयाण करनेके लिये मजबूर हुये। करा-ईर्तिशकी उपत्यकामें वातुरके रूसी तथा खलखा पडोसी हुये। रूसी अवतक साइवेरियाके खानोकी शक्तिको छिप-भिन्न कर चुके थे। ताराके आसपासके वराविस्की तथा दूसरे तुर्की कवीलोपर वातुर थैंचीका दावा था। उसके आदमी १६०६ ई० मे कर उगाहनेके लिये इस इलाकेमे गये, तो रूसियोने विरोध किया, लेकिन वह उन्हे वहासे भगा नही सके। अगले साल कलमकोने कुचुमके पुत्रोको साथ ले तारासे पश्चिमकी ओर वढते हुए तोवोल्स्क, त्यूमन आदि जिलोपर भी हमला किया। तारा-उपत्यकाके निवासी ईर्तिशके मैदानोसे नमक लाकर सारे देशमे वेंचते थे। १६१० ई० मे कल्मकोने नमककी खानोको दखल कर लिया। इसपर तारतारो और दूसरे कवीलोने लडनेकी तैयारी की, लेकिन जव १६१३ ई० मे नमककी खानें उन्हे मिल गईं, तो झगडा खतम हो गया। १६१५ ई० में वातुर थैंची (खराखुल तैंची ?) के दूत तारा गये। और अगले साल थैंची, वातुर और कई दूसरे थैंचियोने तोवोल्स्कसे आये रूसी कसाकोके सामने जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली, लेकिन यह शपथ नाममात्रकी थी। कलमकोने छेड-छाड जारी रक्खी, और १६१८ ई०में ईर्तिश और तोवोलकी वीचकी भूमिमे सिविर खानके पुत्रोके साथ आये कलमकोको रूसियोने हराकर उनके सत्तर ऊट और एक वक्सी (भिक्षु)को पकड लिया, जिसे पचास घोडा देनेपर छोडा गया।

१६२० ई० मे वातुर तैंची (?) खराखुलने अल्तन खान खलखाकी राजधानीको दखल किया, जो कि उवसा सरोवरके ऊपर थी, लेकिन खलखोने जल्दी ही कलमकोके ऊपर आक्रमण करके उन्हे हरा दिया। कलमक तैंचीको अपने एक पुत्रके साथ ओवकी ओर भागनेके लिये मजवूर होना पडा। कल्मक तैंचीने चूमिश नदीके तटपर एक दुर्ग वनाया। उसके दूसरे जुगर-कल्मक ईर्तिश, तोवोल आदिकी उपत्यकाओमे चले गये। इसी समय देरवेत-मगोल भी भागकर साइवेरियामे गये।

धीरे-धीरे वातुरका राज्य वढा। किर्गिज और कजाक खास तौरसे अधीनता स्वीकार करने के लिये मजवूर हुये। कुछ कलमकोने किर्गिज और कजाक वंदियोको रूसियोंके पास भेजकर उनसे अपने वन्दी छुडाये। १६२३ ई०मे खलखोने फिर कलमकोको हराया। अवतक पिछले चालीस सालोंमें खलखोमे लामाओका जोर वहुत वढ गया था। इसके वाद उनका प्रभाव जागन नोमेन खान द्वारा कलमकोपर भी पडने लगा, और जुगर खान खराखुल, दरवेतोंके थैंची तालेई और तोर्गुतोके सरदार उर्लुकने अपने एक-एक वेटेको भिक्षु वनाया। इसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ, कि खलखो और कलमकोके वीच चला आता झगडा शात हो गया।

१६३४ ई० मे रूसियोको नमक न ले जाने देनेके लिये कलमकोने दो हजार सेना वैठा दी। रूसी डरके मारे नही गये, तो उन्होंने तारापर चढाई कर दी, लेकिन वहासे मार भगाये गये। १६३८ ई० मे रूसी कसाक यामिश सरोवरपर पहुचे, जहा कलमकोके साथ उनकी पचायत वैठी, जिसमे निम्न शर्तोंपर सुलह हुई—(१) हम रूसी वस्तियोंपर आक्रमण नही करेंगे, (२) शिकार और मछलीके लिये गये रूसियोंके साथ छेड-छाड नही करेंगे, (३) नमक ले जानेमें कोई रुकावट नही पैदा कर, उसके ढोनेके लिये अपने पशु भी देंगे। यह एकतरफा शर्तोंकी सुलह थी, जिसमे रूसियोका ही पलडा भारी था। लेकिन कल्मक घुमन्तू ऐसी शर्तोंको माननेके लिये क्यो तैयार होने लगे? सीमान्तपर उनकी लूट-मार वरावर जारी रही।

वातुर थैंचीका डेरा अपनी पुरानी जगह इली नदीके तटपर पडा था, जहासे उसने सन् १६३८ ई० मे त्यानशानके दक्षिणके नगरोपर आक्रमण किया। वातुरकी धर्मभक्तिसे प्रसन्न होकर १६३५ ई०में दलाई लामाने उसे खुद-थैंशी और एर्दन-वआतुरकी उपाधि प्रदान की। उसकी रूसियोसे भी दोस्ती थी। उसने अल्ताईके उत्तर ओव-ईर्तिशके वीचकी भूमिके अपने उपराज कुला थैंचीको हुक्म दिया, कि तारा (रूसी नगर)से पकड लाये परिवारोको लौटा दो। सौ परिवार—जिसमे रूसी भगोडे भी शामिल थे—हजार घोडोंके साथ रूसियोके पास लौटा दिये गये। अव रूसियो और वातुर थैंचीमे दूतोका

दानादान होने लगा। इस समय वातुर एक बौद्ध विहार बनवा रहा था। निश्चय ही विहार अबतक तम्बुओमे रहे होंगे, लेकिन तम्बुओ वाले विहारोसे तो कीर्ति स्थायी नही हो सकती थी, इसलिये तिब्बतके विहारोके अनुकरणपर वह एक भव्य इमारत खडी कर रहा था। उसने यह भी देखा, कि घुमन्तूगिरीसे जीविकाका स्थायी प्रबन्ध नही हो सकता, इसलिये वह चाहता था, कि कलमक खेती करे। कलमकोकी एक प्रधान बस्ती थी कुबकसरी। वातुर अपना अधिक समय दे अपने देशको सुन्दर तथा खेती द्वारा समृद्ध करनेमें लगा था। १६४० ई०मे नौ सौ रूवल (चादी)के रेशम और दूसरे कपडे मास्कोसे उसके लिये भेजे गये। थैंचीके कहनेके अनुसार वोयवोदको हुक्म मिला था, कि साइबेरियासे सूअर, मुर्गे और कुत्ते भी भेजे जाय। इससे मालूम होता है, कि बातुर अपने लोगोके आर्थिक ढाचेमे परिवर्तन करना चाहता था।

रूसियोके कारण बातुर थैंचीका बढाव उत्तर (साइबेरिया) मे नही हो सकता था, और पूर्वमे चीनके कारण भी आगे बढनेकी गुजाइश नही थी, इसलिये उसका ध्यान अपने पश्चिमके किर्गिज-कजाकोपर ही जाना स्वाभाविक था। १६४५ ई० मे उसने कजाकोके सबसे बडे खान इशिम खानको हराया, और उसका पुत्र यगिर सुल्तान कलमकोंके हाथमे पडा। लेकिन वह जल्दी ही उनके हाथसे निकल भागा और शक्ति सचय करके १६४३ ई० मे उसने वातुरको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। पर इस हारका कोई स्थायी प्रभाव नही पडा। इसी समय वातुरका प्रधान शिविर इमिल नदीके तटपर कुबकसरीमें था। यहीपर रूसी राजदूत इलिन उससे मिला। लौटते समय वातुरने पत्र देकर इलिनके साथ अपने दो दूत कर दिये। वातुरके पत्रमे लिखा था —

"परमभट्टारक महाराज (जार)को बगतिर खुङ थैंची अभिनन्दन करता हूँ। हम अच्छी तरह है, और जानना चाहते हैं कि आप कैसे है। आप महाराज, और मै खुङ थैंची अबतक शातिके साथ रहे हैं। आप मेरे पिता है और मै आपका पुत्र। दूरतम देशोके लोग हम दोनोके पारस्परिक अच्छे बर्ताव और सौहार्दको सुन चुके है। मेरे और आपके लोग साथमें व्यापार करते है, और एक दूसरेको नही लूटते, न एक दूसरेसे लडते है, बल्कि दोनोके बीचमे शाति है। लेकिन आपके लोगोने हमारी प्रजापर करसागलेनमे तोम नदीके तटपर आक्रमण किया, और उनमेंसे कुछको बन्दी बनाया। अगर महाराज, आपको यह बात मालम है, या आपकी आज्ञासे ऐसा किया गया, तो बिना मुक्ति-धन लिये बदियोको लौटा दो। अगर ऐसा नही हो, तो अपराधीको हमारे पास जुरमाना देनेके लिये मजबूर करो। आपके आदमी हमारे हरएक बदीके लिये चार सौ सबले (समूरी छाल) मागते है, चाहे वह दस सालका बच्चा ही क्यो न हो। यदि आप कृपा करके उन्हे बिना मुक्ति-धनके छोडनेको आज्ञा नही देंगे, तो हमारी मित्रता खतरेमे पड जायेगी। हम आपके पास २ पातरके छालें, ६ रुत्थी (धनुर्धरोके कामका मोटा चमडा), और दो घोडे भेज रहे है, जिनके बदलेमे हम एक कवच, एक बन्दूक, चार लडनेवाले मुर्गे, आठ लडने-वाली मुर्गिया चाहते है। यदि परमभट्टारक, आपको किसी चीजकी जरूरत हो, तो पत्रमे लिखें। हमारे दूतोको मास्को जानेकी इजाजत मिले, जिसमे वह अपने घोडोको साथ ले जा सके।" इस समय जुगारियामे अकाल पडा हुआ था, जिसके कारण बहुतसे कलमक बरेवास्तेपीमें साइस्सननोर (श्रेष्ठ सरोवर)मे मछली मारकर गुजारा कर रहे थे। इसके पहले इस सरोवरका नाम कीसलपू-नोर था।

शिकायतोका कुछ भी फल न देखकर १६४९ ई० मे खुङ थैंचीके प्रतिनिधि कुला थैंची-पुत्र सकिलने तोम्स्क जिलेपर आक्रमण करके सगर्स्का गावको उजाड दिया। अगले साल रूसियोने कप्तान बलपकोफको शिकायत करनेके लिये वातुरके पास कुबकसरीमे भेजा। उस समय वातुर वहा पत्थरोकी इमारतोवाले एक नगरके बनानेमे लगा हुआ था। बातचीत करनेपर मालूम हुआ, कि पहले रूसियोने आक्रमण किया था। बलपकोफके साथ फिर वातुरने अपने दूतोको भेजकर दो बढई, दो राजगीर, दो लोहार, दो बन्दूक बनानेवाले मिस्त्री, एक तोप, कुछ सोनेके आभूषण, बीस सुअरिया, पाच सूअर, पाच लडाई के मुर्गे, दस लडाईवाली मुर्गिया और एक घटा मागा था।

वातुर थैंची बिखरे कलमकोको एकताबद्ध करके कलमक साम्राज्यका सस्थापक तथा जबर्दस्त विजेता ही नही था, बल्कि उसकी जैसी प्रतिभा घुमन्तुओमे मुश्किलसे पाई जाती थी। अकालोंके

भयसे त्राण पाने और दूसरे अभावोंको हटानेके लिये उसने अपने लोगोंको स्थायी तौरसे वस जाने की प्रेरणा दी, जिसके लिये जुगारिया (कल्मक भूमि) मे जगह-जगह वौद्ध विहार वनवाये। वातुर थैंचीकी भारी मददसे कोकोनोरके खोसोतोके सरदार गूशी (गूश्री) खानने तिव्वतके छोटे-छोटे राजाओ को खतम करके सारे तिव्वतको एकतावद्ध कर १६४३ ई०मे पाचवे दलाई लामाको प्रदान करके लामा-राज्यकी स्थापना की। वातुर थैंची १६५३ ई०मे मरा।

३ सेङ-गे, वातुर-पुत्र (१६५३–७१ ई०)

वातुरका वडा लडका सेत्सेन खान या सेङगे इरशि ऊपरी ईलिश-उपत्यकामे चारण करता था। वह सेङगेका सलाहकार था। सेङगेका वापके साथ अच्छा सवध नही था। उसने कई वार पिताके रास्तेमें रुकावट डालनी चाही। पिताके मरनेके वाद यह कल्मकोका थैंची वना, तो भी सौतेले भाइयोंसे इसका झगडा वरावर चलता रहा, जिसमे ही वह १६७१ ई०मे मारा गया।

४ गल्दन, वातुर-पुत्र (१६७१–९७ ई०)

सेंगेके वाद उसका भाई गल्दन वोशोक्तू (वुश्तू) खान गद्दीपर वैठा। गल्दन पहले वौद्ध भिक्षु वन तिव्वतमे अध्ययनके लिये गया हुआ था। लौटकर देश आनेपर भाई सेङगे (सेत्सेन खान) से अनवन हो गई। दोनोमे लडाई हुई, और १६७६ ई० के अन्तमे सेत्सेनको ताल्की डाडे और सेइराम झीलके पास हारकर भागना पडा। गन्दनका कजाको और किर्गिजोंसे भी झगडा रहा।

तिव्वतमे लूट-मार करनेके कारण गन्दनने अपने चचा शूकेरको किजिलपू सइरसन (झील)के तटपर हराया। भिक्षुके तौरपर तिव्वतमे रहते समय इसका दलाई लामासे घनिष्ठ सवध था, इसलिये उसका प्रभाव कल्मकोपर वहुत जल्दी वढा—जुगर ही नही खोशोत आदि दूसरे कल्मक कवीलोने भी इसकी अधीनता स्वीकार की, और १६७६ ई०मे वापकी तरह इसने भी खुङ-थैंचीकी उपाधि धारण की। इसके समय त्यान्शानके दक्षिण (पूर्वी तुर्किस्तान)के शासक खोजा (पीर) थे, जिनमें आपसमे झगडा लगा हुआ था। काले पहाडियोंका नेता काशगरका खान इस्माईल था। उसने सफेद पहाडियोंके नेता अप्पक खोजाको देशसे भगा दिया था। अप्पक खोजा पहले कश्मीर गया। औरगजेवको अपने धर्म-वधुकी मदद करनेकी फुर्सत नही थी। फिर वह तिव्वतमे दलाई लामाके पास पहुचा। दलाई लामाने खोजाको काशगर और यारकन्द दिलानेमे मदद करनेके लिये गन्दनके पास लिखा। १६७८ ई०मे गन्दनने पूर्वी तुर्किस्तानको जीतकर अप्पकको अपना उपराज वना यारकन्दमे वैठा दिया, और काशगरके खानके परिवारको ले जाकर इली-उपत्यकाके मुसलमान नगर कुल्जामे वसा दिया। तवसे जवतक (१७५५ ई०मे) कि चीनियोका पूर्वी तुर्किस्तानपर अधिकार नही हो गया—अर्थात् ७७ वर्षोंके लिये—एक वार फिर पूर्वी तुर्किस्तानकी प्राचीन वौद्ध-भूमि कल्मक वौद्धोंके हाथमे जा जुगर-साम्राज्य-का अग वन गई। वहाके प्रवन्धका काम गन्दनने खोजाके हाथमें दे रक्खा था, जो प्रतिमास चार लाख तका कर भेजता था। इसी समय गन्दनने तुर्फान और खामिलको भी जीत लिया, और वुश्तू खान (वोधिसत्व राजा) की उपाधि धारण की, जिसे कि अवतक छिङ-गिसकी सन्तान ही धारण करती थी। गन्दनने चीन-सम्राट्के पास भेट भेजी, जिसके लिये सम्राट्ने प्रति-भेटके साथ-साथ राजमुद्रा प्रदान की। १६८२ ई०मे सम्राट् खाङ-सी गन्दन (गल्दन) के पास भारी भेट भेजते हुये उसके प्रतिद्वद्वी खलखा राजा तुशियेतूको भी भेंट भेजना नही भूला। १६८८ ई०में गन्दनने खलखोंके तुशियेतू खानपर चढाई की। खलखोमे भगदड मच गई, और तुशियेतूकी वीवी और वच्चे भी तीन सौ आदमियोंके साथ जान लेकर भागे। गन्दनको मालूम हुआ, कि उसके भाई सेङ-गेके मरवानेमे तुशीयेतूका भी हाथ था, इसीलिये उसने दलाई लामाके दूतसे कहा था—"यदि मै तुशियेतू खानसे सुलह कर लू, तो मेरे भाईके खूनका वदला कौन लेगा? मैंने निश्चय किया है, कि अपनी सारी सेनाको ले उसके साथ चार-पाच वर्पतक लडाई करू। मै खलखोंको नष्ट करना चाहता हू और तवतक सतोप नही लूगा, जवतक कि तुशियेतूके भाई चुपसुन तम्पा*को हथकडियो-वेडियोमे अपने पैरोमें पडा नही देखूगा।"

लेकिन अब गन्दन दूसरे झगडेमे फसा। उसका भतीजा सेङ-पुत्र छेवङ अर्वतन बापके सिंहासनका दावेदार था। उसने १६८९ ई०मे चचाको हराया। इस लडाईमे गन्दनके लोगोकी हालत इतनी बुरी हो गई, कि कुछने तो जीवन-रक्षाके लिये आदमीका मासतक खाया। लेकिन यह अवस्था देरतक नही रही। गन्दन यदि अपने पूर्वी पडोसी खलखोसे लोहा ले रहा था, तो साथही उसने रूसके साथ खूब मित्रता स्थापित की थी। रूसी व्यापारी बराबर उसके राज्य (जुगारिया) मे जाते रहते थे। १६८८ ई० मे गन्दनने दरखन (तरखन, राजकुमार) सइस्सनको दूत बना पत्र और भेटके साथ इर्कुत्स्क भेजा।

चीन चुपचाप यह कैसे देखता रहता, कि उसके अधीन खलखोंसे कल्मकोकी ताकत अधिक बढ जाये? इसीलिये वह बीचमे कूद पडा। रूसी अभी दूर थे, इसलिये वह अपने मित्र कल्मकोकी अधिक मदद नही कर सकते थे। चीन-सम्राट् खाङ सीने बडी सैनिक तैयारी की। पहले वह स्वय सेनाका सचालक बनकर आना चाहता था, लेकिन कहने-सुननेपर अपने बडे भाई ऊ-हो-चे-यू चिङ-वाङको प्रधान सेनापति बनाया। गन्दन भी कोई ऐसा-वैसा प्रतिद्वद्वी नही था। उसने चीनकी राजधानी पेकिङसे अस्सी योजन (लीग) पर जाकर लडाई छेडी। उसके पास चीनके बराबर सेना नही थी और न तोपे ही। पहले उसके हरावलको बहुत हानि उठानी पडी, लेकिन उसकी सेना दलदलके पीछे थी, जहा चीनी सेनाके लिये पहुचना बहुत कठिन था। लडाई रात तक होती रही, और किसी निर्णयपर पहुचे बिना ही दोनो सेनाये लौट गईं। चीनने इस शर्तपर समझौता किया, कि यदि गन्दन इस बातकी शपथ खाये, कि मै सम्राट् और उसके मित्रोकी भूमि-पर आक्रमण नही करूगा, तो वह अपनी सेनाके साथ लौट जा सकता है।

गन्दनकी शक्तिको कमजोर करनेके लिये चीनियोने उसके भतीजे अर्वतनको उसकाया। गन्दनका राज्य इस समय उत्तरमे केरुलोन नदीसे दक्षिणमे कोकोनोर सरोवरतक, और पूर्वमे खलखाकी सीमासे पश्चिममे किर्गिज-कजाकोकी सीमातक फैला हुआ था। चीनी इतिहासकारो के अनुसार—"वह (गन्दन) कजाकोको और तुर्कोंको प्रसन्न करनेके लिये अपनेको इस्लामका भक्त बताता था, और तूशियेतू खानके भाई *जेचुन तन्पाके प्रतिद्वद्वी दलाई लामाके पक्षका समर्थन करते हुये मगोलोके बीचमे झगडा पैदा किये हुये था।" गन्दनने मचू सम्राट्के भक्त कोरचिन मगोलोके सरदारके पास लिखा था—"हमारे लिये इससे बढकर अयुक्त बात क्या हो सकती है, कि जिनके ऊपर एक बार हमने शासन किया, आज उनके ही हम दास बने? हम मगोल है, (बौद्ध) धर्मके नीचे एकताबद्ध है, इसलिये आओ हम अपनी शक्तियोको मिलकर उस साम्राज्यको फिर प्राप्त कर ले, जो कि हमारा है, और हमे पूर्वजोसे उत्तराधिकारमे मिला है। मै अपने विजयके लाभ, यश और आनन्दमेंसे उनको अपना भागीदार बनाऊगा, जो कि विपद्मे भागीदार बननेके लिये तैयार है। लेकिन अगर कोई भी मगोल राजा—और मै समझता हू, कि ऐसे कोई नही है—ऐसे है, जो हमारे सबके एकसे दुश्मन मचुओका दास रहना चाहते है, तो सबसे पहले मेरे क्रोधके भाजन वही होगे, चीनको जीतनेसे पहले मै उनका सत्यानाश करके रहूगा।"

अप्रैल १६९६ ई०मे एक बहुत जबर्दस्त चीनी सेनाने गन्दनके विरुद्ध प्रस्थान किया। इस सेनाके साथ जेसुइत (ईसाई) साधु गेर्बिलोन भी था। सम्राट् खाङ-सी भी सेनाके साथ था। दरबारियोने सम्राट्को रास्तेसे लौटनेके लिये बहुत जोर दिया, लेकिन उसका उत्तर था—"मै यह बात बिल्कुल नही करूगा। क्या मैने अपने पूर्वजोके सामने शपथपूर्वक अपने अभिप्रायको प्रकट नही किया? क्या हरएक सिपाही यह नही जानता, कि प्रस्थान करनेसे मेरा क्या मतलब था? क्या मेरे पूर्वजोने खतरे और कठिनाइयोका मुकाबिला करके सिहासनको नही प्राप्त किया? शक्तिशाली वीरोकी सतान होकर खतरेके डरसे औरतकी तरह मै कैसे भाग सकता हू? ऐसा आचरण करके मै कौनसा मुह लेकर अपने पितरोसे भेट कर सकूगा?"

* जे-चुन् तन्-पा=भट्टारक शासन (धर) उगांके महालामाकी उपाधि थी।

आगे जानेपर पता लगा, कि गन्दन तुला नदीके तटपर था, जहासे वह केरुलोन नदीके किनारे-किनारे लौट गया। चीनी मुख्य-सेना सम्राट्के नेतृत्वमें केरुलोनके किनारे-किनारे पश्चिम की ओर बढती दोनो ओर मूइलह्तिन् तक गई। लेकिन, अब आदमियोंके लिये रसद और जानवरोंके लिय चारा मिलना मुश्किल हो गया, इसलिये चीनी सेनाको मुडकर तोइरिनके उपजाऊ इलाकेमे जाना पडा। गन्दनका पीछा करनेके लिये पाच-छ हजार सैनिक छोड दिये गये थे। चीनी सेनापति चे-ताइने गन्दनको बहुत मजबूत पाया, इसलिये कुछ गोलिया दागकर वह लौट पडा। गन्दनने उसका पीछा किया, और यह ख्याल नही किया, कि दूसरा सेनापति तेयेन्कू काफी सेना लेकर उसकी ताकमे है। तो भी बडा जबर्दस्त मुकाबिला किया। यदि तोपचियो और वन्दूकचियोंने गोले-गोलियोकी वर्षा न की होती, तो गन्दन पराजित न होता। अन्तमे कलमक पीछेकी तरफ भागे। तीस ली (८ मील) तक चीनी सैनिकोंने उनका पीछा किया। गन्दनकी रानी गोलीकी शिकार हुई। गन्दन अपनी लडकियो, एक लडके तथा कुछ अनुचरोंके साथ भागकर पश्चिमकी ओर चला। उसके सैनिकोंने चीनी जेनरलके पास आत्म-समर्पण किया। उसके बाद गन्दनके दूतने चीन-सम्राट्के पास पहुचकर कहा—"जल्दी ही मेरा स्वामी भी खल्खोकी तरह साम्राजी सिहासनके पास आ शातिपूर्वक अधीनता स्वीकार करेगा।" खाङ-सीने चिट्ठी लिखकर गन्दनको अस्सी दिनका अवकाश दिया। लेकिन चीनी दूतोंमेंसे केवल एक गन्दनके सामने जाने पाया। उस समय गन्दन खुली जगहमे पत्थरोके ढेरपर बैठा हुआ था। उसने पोची (दूत) को अपने पास आने नही दिया। सम्राट्की शुभेच्छाके लिये धन्यवाद दे अपनी इच्छा प्रकट करनेके लिये दूत भेजनेकी बात कही। कुछ क्षणोकी भेंटके बाद गन्दन घोडेपर चढकर चला गया। चीनी दूतने देरतक प्रतीक्षा की। वह कुछ सैनिक कार्रवाई करना चाहता था, किन्तु असफलतासे निराश और भतीजेके विद्रोहसे हताश हो गन्दनने ५ जून १६९७ ई० को आत्महत्या कर ली। कहते हैं, छ सप्ताह पहले वह सूर्योदयके समय बीमार पडा, और उसी रातको मर गया। यह खबर छ सप्ताह बाद चीन-दरबार को मिली।

गन्दनकी योग्यताके कायल उसके शत्रु भी थे। सम्राट् खाङ-सीने स्वय लिखा था—

"गन्दन एक बडा ही दुर्धर्ष शत्रु था। उसने समरकन्द, बुखारा, बुरुत (किर्गिज), उरगज, काशगर, मूइरमान (? सैराम), तुर्फान और खामिलको मुसलमानोंसे ले लिया, और बारह सौसे अधिक नगरोपर अधिकार किया, जो बतलाता है, कि उसकी बाह कितनी लम्बी थी। सातो झडोंके खलखोंने व्यर्थ ही अपने एक लाख जवानोंको जमा करके उसका विरोध किया। उन्हे तितर-बितर करनेके लिये गन्दनके वास्ते एक वर्ष पर्याप्त था।"

यदि अपने प्रतिद्वद्वियोकी तरह गन्दनके पास भी बारूदके शक्तिशाली हथियार होते, या उदीयमान मचू-शक्तिके यह आरम्भिक दिन न होते, तो कौन जानता है, उसने फिर छिङ-गिस्का अनुसरण करते हुये चीनके ऊपर मगोलोंकी विजय-ध्वजा न गाड़ी होती?

१६८१-८३ ई०मे गन्दन सैरामपर आक्रमण कर रहा था। १६८३, १६८४ और १६८५ ई० मे किर्गिजो और फरगानियोंके ऊपर उसने प्रहार किया। गन्दन प्रथम खुङ-यैची था, जिसने इलीकी उपत्यकामें चारण किया। जाडोंमे वह कभी-कभी इसिकके तटपर रहता था। तुर्क जातियोंमेंसे केवल बुरुत (किर्गिज) १८ वी सदीमे इस्सिक्कुलके पास विचरण करते थे। गन्दनके भतीजे छेवङ-रबतनने १६७८ ई० मे चचाका मगोलियामें अभियान करनेके लिये गया देखकर आक्रमण किया था।

५. छेवङ-रब्तन, सेङ-गे-पुत्र (१६९७–१७२७ ई०)

छेवङ आरगजेब्के शासनके अन्तिम दस सालोंके साथ-साथ और भी बीस वर्षतक मध्य-एसियाका शासक रहा। इसने अपने चचा और दादाकी सफलताओको अक्षुण्ण रखते हुये अपने राज्यमे एकता स्थापित की। चीनको अपने रास्तेमे बाधक देखकर थोडे ही समयमे छेवङ भी चचाकी तरह उसका शत्रु हो गया। तो भी पहले सत्रह सालोतक वह चीनके साथ शातिपूर्ण बर्ताव करता रहा। १७१४ ई०मे उसने चीन-अधिकृत हामीपर आक्रमण किया। चीनने आलक (अल्ताऊ) तकके इलाकेको उससे मागा, जिसे छेवङने देनेसे इन्कार कर दिया। चीनके जैसे बलिष्ठ शत्रुका विरोध करनेसे पहले

छेवङने जरूरी समझा, कि रूसियोको अपना प्रभु मान ले। इसी सबंधमें बात करनेके लिये कलमकोके पास इवान चेरेदोफ १७१९ ई०मे भेजा गया इससे पहले १७१७ ई०मे छोटी सी नदी खर्किरपर मूजार्तके पास रहते हुये छेवङने तोबोल्स्कके रूसी राज्यपाल वेल्यानोफके पास अपना दूत भेजा था। १७२२ ई० मे रूसी कप्तान उन्कोव्स्कीने इलीके दक्षिणी तटपर खुङ-थैचीके शिविरमे मुलाकात की। जिस स्थानपर मुलाकात हुई, वह चारिनसे कुछ वेर्स्तपर था। उन्कोव्स्की सितम्बर १७२३ ई०तक छेवङके दरबार मे उसके ओर्दूके साथ ल्यूप और जरगलानकी उपत्यकाओमे घूमता रहा, लेकिन इसका कोई अधिक फल नही हुआ, क्योकि १७२२ ई० मे मवू-सम्राट् खाङ-सीके मर जानेके कारण अब छेवङको चीनियोंसे उतना डर नही रह गया।

१७२३ ई० मे कलमकोने कजाकोपर भारी विजय प्राप्त करके सैराम, तुर्किस्तान-शहर और ताशकन्दको ले लिया। कप्तान उन्कोव्स्कीके अनुसार छेवङके पास एक लाख सैनिक थे। वह बहुत ही जनप्रिय था। वह बिना अपने सेनापतियो और सरदारोकी सम्मतिके कोई निर्णय नही करता था। खुङ थैचीका सौतेला भाई छेरिङ-दोण्डुब (दीर्घायु सिद्धार्थ) उसका एक बडा सरदार और सलाहकार था, जो कि लेप्सा और करातलाके तटपर चारण करता था। इस समय कितने ही कलमक भी खेती करने लगे थे। खरगोशके मुहानेके नजदीक सरतो (ताजिको) की कई बस्तिया थी। शातिकालमे चीनियोके साथ कलमक व्यापार करते थे, रूसियो, नगुतो (अम्दुओ), अन्तर्वेदियो और भारतीयोके साथ तो वह बराबर व्यापार करते रहते थे।

१७१५-१६ ई०के जाडोमे एक कारवाके साथ स्वीडन-निवासी रेनाड कलमकोके हाथमे पड गया। वह प्राय सत्रह साल (१७३३ ई० तक) उनके देशमे रहा। उसने उन्हे युरोपकी कितनी ही बातें सिखलाई, और उनके बारेमे भी जानकारी प्राप्त की। कलमक-भूमिकी स्थिति और विचार के बारेमे उसने लिखा है—(१) सप्तनदका (अलाताउ), तेकुशचिख नदी तथा बलखाशकी तटभूमि, (२) उत्तरमे इलीसे कोकताल और कोकतेरेकके बीच अलतिन-एमेल और कोइबिनके बीचकी भूमि, (३) उत्तरमे केगेनके किनारेसे और चारिनसे पूर्वमें केतनेन पहाडतक, (४) ऊपरी चिलिक-उपत्यका और उसकी पासकी भूमि, (५) त्यूपाके तटसे इस्सिक्कुलके दक्षिणी तट तक पश्चिमी छोरसे उत्तरमे कोइसू और अक्सूके बीच तक, (६) महाकेबिन-उपत्यका चूके सगम करातास तक।

चचाके साथ विरोधका कारण एक यह भी बतलाया जाता है, कि उसे पश्चिमी जुगारियामे अधिकार न देकर उसके भतीजेको नियुक्त किया गया था, तथा त्यान्शानके पासवाले नगरोमे भी उसे कुछ अधिकार-वचित किया गया। १६९६ ई० मे अर्वतन (रब्-तन)* के पाच सौ सैनिक तुर्फानमे थे। खामिल और आसपासका शासक उस समय अब्दुल्ला तरखनबेग था। १६९७ ई० मे अब्दुल्लाने चीनसम्राट्से यह कहकर मदद मागी, कि खुङ-थैची हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहता है। अर्वतनने उसके ऊपर दोषारोप किया, कि अब्दुल्ला कलमकोकी सीमाके भीतर घुसकर गन्दनके पुत्र छेर्तन पल्जोर † (सेप्तेन बल्जुर) तथा दूसरे जुगरोको भी पकड ले गया, और हमारे दूतोको रोके रक्खा। चीनने अब्दुल्लासे माग की, कि गन्दनके पुत्रको दिखलाओ और हमारे दूत तथा बदियोको तुर्फान लौटा दो। अब्दुल्लाने कैदियोको चीन भेज दिया, जिनमेंसे सत्तर आदमियोको वहा जेलमे डाल दिया गया।

रब्तन कैसे पसन्द करता कि चचाके समयसे उसके करद लोग चीनकी छत्रछायामे चले जाय ? बहुतसे छोटे-छोटे राजाओने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। अर्वतनने तत्सीलाको हराया, जिसमे उसे चेरेन सन्लुप (छेरिङ नम्डुब्) गन्दन-पुत्र, चोनसो हाई (गन्दन-पुत्री), गन्दनकी स्त्री कुलीन और गन्दनकी चिताभस्म भी मिली। चीन-सम्राट् देख रहा था, कि छेवङ फिर चचाकी तरह जुगरोको एकताबद्ध करनेमे सफल हो रहा है। उसने रब्तनको रोकना चाहा, और पहले रब्तन को विजयमे प्राप्त वस्तुओको अपने पास भेजनेके लिये लिखा। रब्तनका जवाब था:— "लडाई अब समाप्त हो गई, इसलिये घावोको भूल जाना चाहिये। हमे पराजितोपर दया करनी

---

* रब्-तन=प्रशासन (तिब्बती)

† महाशासन श्रीयोगी (तिब्बती)

चाहिये। उन्हे नष्ट करनेका ख्याल बर्बरोचित होगा, मानवताका यह प्रथम विधान है, जिसे कि एलियोतो (ओइरोतो)ने सदा पवित्र मानकर पाला है।" रब्तनने गन्दनके लडके और पत्नीको भेज दिया, लेकिन लडकीके बारेमे कहा—'ओइरोतोमे कायदा नही है, कि अपने शत्रुओकी लडकीमे बदला ले। और गन्दनकी चिताभस्ममे सम्राट्के विजयमे कोई वृद्धि नही होगी।' इसके बाद चीनमे कई दूत आते-जाते रहे। बहुत दबाव पडनेपर उसने गन्दनकी चिताभस्म और उसकी पुत्रीको चीन भेज दिया। सम्राट्ने भी अपने पुराने शत्रुकी संतानके साथ बडी उदारता दिखलाई, और दोनो बहिन-भाइयोको क्षमा कर दरबारमे उन्हे ऊचे पद दिये।

अपने पश्चिमी पडोसियो किर्गिज-कजाकोके साथ रब्तनने भयकर युद्ध जारी रखा। १६८८ ई० के अपने एक पत्रमे रब्तनने सम्राट् खाड्-सीको लिखा था, कि कैसे गन्दनने तवक्कल तुर्कके पुत्रको पकडकर दलाई लामाके पास भेज दिया था। लेकिन मैने उसके बापकी प्रार्थनापर पाच सौ आदमियोके साथ उसे लौटा दिया, और केवल पाच सौ कृतघ्नोको ही मारा। लेकिन ये कृतघ्न मेरे प्रदेश हुलीजन हानपर चढाई करके सौ परिवारोको पकड ले गये। मेरे ससुर आयुका खानने मेरी बीबीको मेरे साले सन्जिसत-चापूके साथ जब मेरे पास भेजा, तो तवक्कलने उन्हे पकड़नेकी कोशिश की। उसने रूससे लौटते वक्त हमारे कारवाको भी लूटना चाहा। रब्तनके पास कजाकोके खिलाफ कार्रवाई करनेके कई कारण हो सकते थे, लेकिन सबसे बडा कारण था चचाकी तरह उसकी राज्य-विस्तारकी अभिलाषा। उसने किर्गिज-कजाकोके मध्य-ओर्दूके बहुत बडे भागको अपने अधीन कर लिया, और इस्सिक्कुल-सरोवरके पास रहनेवाले बुरुतो (काले किर्गिजो) को भी जीत लिया।

उस समय तिब्बतका गद्दीधारी (छठा दलाई लामा) उसके चचा गन्दनका आदमी था। खोशोत ल्हचन खानने उसे मार भगाया और तिब्बतमे जुगरोके प्रभावको खतम कर दिया। ल्हचनकी सफलतामे अब तिब्बतमे चीनके प्रभावके जमनेकी संभावना हो गई। इसपर रब्तनने कोकोनोरके पासवाले खोशोत मगोलोसे मिलकर दो सेनाये भेजी, जिनमेसे एक सीनिङ्-फू शहर पर पड़ी, जहापर कि दलाई लामा नजरबन्द था, और दूसरी सेना पोतलाके विरुद्ध गई। पहली सेना को सफलता नही प्राप्त हुई, लेकिन दूसरीने जाकर ल्हासाको ले लिया। ल्हचन खानने पोतला-प्रासादमे शरण ली, लेकिन उसे पकडकर मार डाला गया। तिब्बतके बहुतसे नगर और गाव उजाड दिये गये, मदिर लूट लिये गये, स्वय दलाई लामाके महल (पोतला) मे बहुत सालोसे जमा होती सम्पत्तिको भी जुगरोने लूट लिया। कितने ही विरोधी लामा थैलोमे बन्द करके ऊटोपर लादकर जुगारिया भेज दिये गये। तिब्बतकी मददके लिये आती एक सेनाको एक दुर्गम डाडेपर जुगरोने मारकर भगा दिया। १७१७ ई० या १७२२ ई० मे जुगरोकी सेनाने तिब्बतमें आकर जो ध्वसलीला की थी, उसके चिह्नस्वरूप अब भी मध्य-तिब्बतमे बहुतसे उजडे हुये गावोकी दीवारे खडी मिलती है, जिनकी जुडाई और दूसरी स्थितिके देखनेसे पता लगता है, कि जुगरोके इस भयकर प्रवाहके बाद फिर तिब्बतकी वास्तुकला अपनी पूर्व-स्थितिमे नही पहुची। चचा गन्दनने जहा तिब्बतकी समृद्धि बढानेकी कोशिश की, वहा उसके भतीजे रब्तनने उसके नाशमे हाथ बटाया।

रब्तनकी यह कार्रवाई चीनको पसन्द नही थी। दो साल बाद चीनने उसे दड देनेके लिये सेना भेजी, लेकिन वह उसके हाथमे केवल तुर्फानको ही छीन पाई। इससे पहिले १७१७ ई० मे करासर नदीतक चीनी सेना पहुची थी, जहापर उसे कलमकोसे हारना पडा। १७१९ ई० मे एक दूसरी चीनी सेनाने साइसन सरोवर तक धावा मारा। सम्राट् खाड्-सीके शासनकालके अन्त (१७२३ ई०)तक चीन और जुगरोका सघर्ष जारी रहा। उसके उत्तराधिकारी युङ्-चेन (शी-चुङ् १७२३–३५ ई०) ने सीधे लडाईमे भाग लेनेकी जगह अपनी सेनाको हटाकर रेगिस्तानी कबीलोको आपसमे लडनेके लिये छोड़ दिया।

रब्तनके शासनके अधिक समयतक पूर्वी तुर्किस्तानपर उसका वैसा ही प्रभुत्व रहा। एक बार वहाके मुसल्मानोने विद्रोह किया, जिसपर बडी सख्यामे जुगर-सेना यारकन्द पहुची, जिसका साथ काले-पहाडी नेता खोजा दानियलने भी दिया। काशगरियोको नगरका द्वार खोलनेके लिये मजबूर होना पडा। लोगोके मनोनीत हाकिमबेगको कलमकोने भी अपना हाकिमबेग बनाया, और

वह् काशगरके खोजा अहमद तथा अपने सहयोगी दानियल खोजाको उनके परिवारोको बन्दी बनाकर इली ले गये । १७२० ई०मे रब्तनने दानियलको छ नगरोका शासक बनाकर भेजा । दानियलने अपने लिये एक लाख तका कर निश्चित किया, जब कि अप्पकके लिये हजार तका मिलना निश्चित था ।

रब्तन जुगर-वशका सबसे शक्तिशाली राजा था । उसकी प्रजा उसे बहुत पसन्द करती थी, क्योकि उसका वर्ताव उनके साथ बहुत अच्छा था। दलाई लामाने उसे "एर्देनी सूरिक्तू बआतुर खुङ्-थैशी" की उपाधि प्रदान की थी।

रूसी अठारहवी सदीके शुरूमे साइबेरियाके एक छोरसे दूसरे छोरतक पहुच गये थे। मध्य-एसियाके भी कितने ही खान उनकी अधीनता स्वीकार किये हुये थे, इसलिये इस देशके बारेमे उनको बहुत-सी झूठी-सच्ची खबरे मिली थी। किसीने उन्हे बतलाया था, कि पूर्वी तुर्किस्तानमे सोनकी खाने है । इसपर १७१४ ई०में साइबेरियाके रूसी राज्यपाल राजुल गगरिनने खुङ्-थैचीके पास इस प्रदेशको लेनेके लिये इर्तिशसे यारकन्दतक किला बनानेका प्रस्ताव किया । साथ ही तोबोल्स्कमे वहासे आई सोनेकी कुछ धूल भी भेजी । जारने इस कामके लिये इवान बुखोल्जको भेजा, जो २९३२ सेनाके साथ जुलाई १७१५ ई०मे तोबोल्स्कसे ताराके रास्ते रवाना हुआ, और इर्तिशसे साढे छ वेर्स्त (१ फर्सख) पर अवस्थित यामिशकी नमकवाली झीलपर पहुचा। इस झील तथा इर्तिशके बीचमे एक छोटी-सी मीठे जलकी झील प्रयाज्नोये ओजेरो थी, जिससे एक छोटी नदी प्रयाज्नुखा निकलकर इर्तिशमे गिरती थी। इसी नदीके मुहके पास कुछ ऊची भूमिपर रूसी यामीशेफका मिट्टीका छोटा-सा किला बनाने लगे । इसकी खबर पाकर, रब्तनके भाई छेरिङ् दोङ्बुब्ने आक्रमण किया, और रसदके कारवाको भी लूट लिया। रूसियोंके पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र थे, तो भी उन्हे बहुत हानि उठानी पडी। उनके पास जब सात सौ आदमी रह गये, तो वह किला तोडकर उत्तरकी ओर लौट गये। तारासे दो सौ सतहत्तर वेर्स्त (१३ फर्सख) पर ओब नदीके मुहानेपर उन्होने ओम्स्कया-क्रेपोस्त नामक किला बनाया। उसी साल १७१६ ई०में बुखोल्जको बुला मगाया गया, और पीतर I ने मरिगोरोफकी मातहत दूसरा अभियान यामीसेफको लेनेके लिये भेजा। पीतर I इस योजनामे विशेष तौरसे दिलचस्पी रखता था। १७१७ ई० मे स्तूपिनकी अधीनतामे दूसरा अभियान भेजा गया। उसने यामीशेफमे पहुचकर बाकायदा एक मजबूत किला तैयार किया। १७१८ ई० के वसन्तमे विलियनोफने रब्तनके पास पहुच-कर उसे पीतरका पत्र दिया । रब्तनने धमकी देते हुए किला तोड देनेके लिये कहा । किलेके तोडनेकी बात तो दूर रही, स्तूपिनने १६१८ ई०मे यामीशेफसे भी दो सौ अट्ठाईस वेर्स्त (३४ फर्सख) आगे इर्तिशपर एक नया किला सेमीप्लातिन्स्क (सप्तप्रासाद) बनाया। यह किला एक बौद्ध विहारके ध्वसपर बना, जिसकी नीव खोदते समय बहुतसे तिब्बती हस्तलेख मिले थे, जो युरोपमे जानेवाले सबसे पहले तिब्बती हस्तलेख थे ।

पीतरको गति मन्द मालूम हुई, इसलिये १७१९ ई०के आरम्भमे उसने इस कामकी देख-भालके लिये जेनरल लिखारेफको नियुक्त किया, जो भारी सख्यामे अफसरोको लेकर मई १७२० ई० में तोबोल्स्क पहुचा, फिर सेमीप्लातिन्स्क होते ४४० आदमियोके साथ नावोपर सैसन झीलकी ओर बढा। रूसियोकी इस गतिविधिसे कल्मकोको सदेह होना स्वाभाविक था। रब्तनके पुत्र और उत्तरा-धिकारी गन्दन छेरिङ्के नेतृत्वमे बीस हजार कल्मक प्रतिरोधके लिये जमा हुये। दोनो पक्षोकी सख्यामे बहुत अन्तर था, लेकिन रूसी आधुनिक हथियारोसे सज्जित थे। उनके पास बहुतसी छोटी-छोटी तोपे थी, जब कि कल्मकोके पास सिर्फ तलवार और तीर-धनुष थे। तीन दिनकी लडाईमे एक रूसी मरा और तीन घायल हुये, जब कि कल्मकोकी भारी क्षति हुई। अन्तमे दोनोमे समझौता हो गया। सेमीप्लातिन्स्कसे १८१ वेर्स्त (३० फर्सख) पर एक झीलके पास ऊची जगहपर लिखारेफने उस्तका-मेन्नेगोर्स्कया नामका किला बनाया । लेकिन, यारकन्द की सोनेकी भूमिमे पहुचनेका यह प्रयत्न यही खतम हो गया। पीतर I के बाद फिर किसीको उसके लिये दिलचस्पी नही हुई।

शासन-व्यवस्था—रूसी दूत उन्कोस्कीने १७२२ ई०मे कल्मकोकी शासन-व्यवस्थाको देखा था । उसने लिखा है, कि खुङ्-थैची (महाराजा) के बाद सबसे बडा दर्जा मडस्सनका था, जिस पदपर उस समय राजकुमार छेरिङ् दोण्डुब् था । इसके बाद एक परिषद् (सर्गा) थी, जिसके सदस्य

थे—मइस्मन, समुडुब वआतुर, शरातञ्जिन, सट-जी फुनछोक, सोदवो, वतुमसी, जिम्बिल, सनजक, वसुन, ववसीगिर तथा पारिपत्क नमिग्का तर्वन जाइक्तू और खुट्नैगीरा सचिव सोलमदकर्मा। इसके देखनेसे मालूम होगा, कि कल्मकोंके ऊपरी शासन-यंत्रमें बहुसंख्यक मुसलमान प्रजाका कोई आदमी नहीं था।

उपज—पिछले तीस वर्षोंमें जुंगारियामें खेतीमें बहुत प्रगति हुई थी। सदाके घुमन्तू ये मंगोल अपने एक हूण पूर्वजकी तरह अब खेतीकी महिमा अनुभव करने लगे थे। अकालोंने बतला दिया, कि ऐसे समयमें अधिक समयतक जमा रक्खे जा सकनेवाले अनाज ही अधिक सहायक होते हैं। उस समय भी यहाँ गेहूँ, जौ, चावल और बाजरा प्रधान फसलें थीं। फलोंमें सेव, लाल-सफेद अंगूर, खूबानी, तरबूजा-खरबूजा, बड़े कुम्हड़े आदि होते थे। अलमा-अता (सेवका बाप) के नामसे प्रसिद्ध आजका नगर इसी भूमिमें है, जहाँके सेव अच्छे होते थे। इली और चूकी उपत्यकायें बहुत पहलेसे ही कृषि और बागवानीमें प्रधानता रखती थीं, इसे हम शकोंके कालमें भी देख चुके हैं।

ग्राम्य पशुओंमें घोड़ा, ऊँट, बैल, बड़ी भेड़ें, बकरियाँ और खच्चर मुख्य थे, जो अभी भी कल्मकोंके सबसे बड़े धन थे, क्योंकि किसानी-जीवनकी अपेक्षा अभी भी वह पशुपालोंके जीवनसे अधिक प्रेम रखते थे।

दस्तकारियोंमें ऊनी कपड़े और चमड़ेका काम कल्मक जानते थे, जिसमें पिछले दो पीढ़ियोंके शासनमें बाहरके दस्तकारोंने आकर अधिक उन्नति कराई। कल्मकोंकी भूमिमें लोहा-ताँबा प्रचुर परिमाणमें मिलता था। यहाँकी ताँबे और सोनेकी खानोंमें तो नव-ताम्र-युगमें भी काम होता था, यह हम बतला आए हैं। अब लड़ाइयोंमें तोपों और बारूदी हथियारोंसे मालूम हो गया था, कि उनके तीर-धनुष आजकलके हथियारोंके सामने बेकार हैं, और कुछ सौ रूसी-कसाक बीस हजार कल्मक बहादुरोंको घास-मूलीकी तरह काटके रख सकते हैं, इसलिये वह लोहेकी उपजकी ओर भी विशेष ध्यान देने लगे थे। वस्तुतः कल्मक यदि मध्य-एसियामें साइबेरियासे तिब्बतऔर पामीरके पर्वतों, तथा आमू और कास्पियनतक पहुँचकर भी वहाँपर अपना एक स्थायी साम्राज्य नहीं स्थापित कर सके, तो उसका कारण यही था, कि वह उस तरहके हथियार नहीं तैयार कर सकते थे, जैसे कि रूसियों और चीनियोंके पास थे। उन्होंने अगर लोहेके बनानेकी ओर ध्यान भी दिया, तो वह भी कुटीर-शिल्पके तौरपर ही उपजको संगठित करके। कल्मक-होता साम्राज्य घुमन्तुओंका अन्तिम साम्राज्य था, जिसे और सब योग्यता रहनेपर भी निर्बल हथियारोंके कारण सफलता नहीं प्राप्त हुई। रब्तन और गल्दन दोनोंने अपने लोगोंको पशुपालन-युगसे कृषि-युगमें ला रखनेकी कोशिश की, लेकिन वह अपने समसामयिकोंकी तरह लौह-युगमें नहीं आ सके।

कहते हैं, उनकी जुंगर-सेनाने तिब्बतमें लामाओं और मठोंके साथ जो अत्याचार किये थे, उन्हींके कारण कितने ही लोग असंतुष्ट हो गये थे, और रब्तन उन्हींके षड्यंत्रका शिकार हो १७२७ ई०में मारा गया।

६. गल्दन (गन्दन) II छेरिङ, रब्तन-पुत्र (१७२७–४५ ई०)

रब्तनके बाद उसका पुत्र गल्दन (गन्दन) छेरिङ गद्दीपर बैठा। इसके समयमें भी कई रूसी राजदूत आये, जिनमें उगरिउमोफ उसके साथ-साथ १७३२-३३ ई०में जहाँ-तहाँ घूमता रहा। अप्रैल और मईमें छेरिङका ओर्दू निम्न इली उपत्यकामें कोजितेरमें था। मईके अन्तसे सारी गर्मियोंमें वह तेमिरत्सि, चेगेन, करकर और तेकेससें घूमता रहा। सितम्बरसे मार्चके अन्ततक सारे जाड़ोंमें वह इली तटपर रहा। छेरिङकी भी खल्खा-मंगोलोंसे लड़ाई जारी रही, लेकिन दलाई लामाने अपने दोनों धर्मानुयायियोंमें इस खून-खराबीको पसन्द नहीं किया, और १७३८ ई०में उनके बीचमें पड़नेसे लड़ाई बन्द हो गई। छेरिङने मंचू-सम्राट् चिन्-येन-लुङ (काउ-चुङ १७३५-९५ ई०) की अधीनता स्वीकार की, यह जुंगर-साम्राज्यके लिये अच्छा ही हुआ। १७४५ ई०में छेरिङके मरनेके साथ जुंगर-साम्राज्यकी समृद्धिका समय खतम हो गया।

७. बायन बीजिगन, अदसान खान, छेरिङ-पुत्र (१७४५ ई०)

बायन १७३३ ई०मे पैदा हुआ था, और अभी बारह ही सालका था, जब कि उसे बापकी गद्दी मिली। इस अवस्थामे भी वह भारी अत्याचारी, जिससे जनतामे अप्रिय हो गया, इसका कोई अर्थ नही है। हा, उसका चचा दोर्जे (दर्गा) लामा गद्दीका अभिलाषी था, लेकिन रखेलीका पुत्र होनेके कारण उसे वचित कर दिया गया था। दोर्जेको बुखारा और किर्गिजोके इलाकोमे बडी जागीर मिली थी। उसने सरदारोको मिलाकर षड्यत्र किया और बायनको पकडकर उसकी आखे निकलवा पूर्वी तुर्किस्तान (सिङक्याङ) के एक नगरमे कैद कर दिया। सभी सैसन (राजकुमार) तथा बहुतसे जुगर तथा लामा दोर्जेके साथ थे।

८. छेवङ दोर्जे, दरशा लामा, गन्दन छेरिङ-पुत्र (१७४५-५० ई०)

दोर्जे लामाके गद्दीपर बैठनेसे तिब्बतके दलाई लामा भी बहुत प्रसन्न थे। उन्होने इसे "एरदेनी लामा बातुर खुङ_थैची"की पदवी प्रदान की। दोर्जे लामाकी बातुरी (बहादुरी) थी अपने वशके सभी राजकुमारोको मारकर सिंहासनके सारे खतरोको खतम कर देना। वैसे जुगर राजवशमे बुढापेके लक्षण पहले हीसे दिखलाई पडने लगे थे, लेकिन दोर्जेने राज्यके सर्वनाशकी घडीको जल्दी लानेमे बहुत काम किया।

९ दावा छेरिङ, सेङ-गे-वंशज (१७५०-५५ ई०)

जुगर राजाओके नाम प्राय सभी तिब्बती भाषाके बौद्ध है। दावा छेरिङका अर्थ है, 'चन्द्र दीर्घायु'। इसे कहनेकी अवश्यकता नही, कि आजकलकी तरह उस समय भी खलखा, जुगर (कलमक) और दूसरे मगोल बौद्ध-धर्मको अपना जातीय धर्म मानने लगे थे, और तिब्बतके महन्तराज दलाई लामा का इनके ऊपर बहुत प्रभाव था।

दावा रब्तनके भाईका पोता था। अधिकाश जुगरोने दोर्जे लामाको नही माना था। रब्तनके वशको दोर्जेने मारकर खतम कर दिया था, लेकिन उसके भाई छेरिङ दोण्डुब्की सताने अभी मौजूद थी। दावाने तिब्बत आदिके अभियानोमें सेनाका सचालन किया था, इसलिये अपनेको गद्दीके योग्य समझता था। खोयेत कबीलेके सरदार अमुरसनाने भी दावाके पक्षका समर्थन किया, लेकिन दोर्जे लामा बहुत मजबूत था। उससे हारकर दावा और अमुरसानको कजाकोके भीतर भागना पडा, लेकिन जुगरोमे उनके समर्थक कम नही थे। जुगरो और कजाकोकी मददसे अचानक एक रातको दावाने हमला कर दिया। लडाईमे दोर्जे लामा मारा गया, और दावाने गद्दी सभाल ली। अमुरसना अपनी दूसरी ही योजनाये रखता था। वह गर्मियोमे इली-तटपर तम्बुओ और राजकीय झडेको गाडकर दरबार करता। दावा एक म्यानमे दो तलवारोको कैसे पसन्द करता? उसके आक्रमण करनेपर अमुरसना चीन भाग गया, और कुछ समयके लिये दावा सारी जुगारिया और पूर्वी तुर्किस्तानका भी खान हो गया। दावाने छेरिङ द्वारा नियुक्त काशगरके शासकको इली प्रदेशमे रहनेके लिये मजबूर किया, लेकिन वह बहाना बनाकर काशगर पहुच वहा लडाईकी तैयारी करने लगा। उधर काशगरी नेता यूसुफने काफिरोका जूवा उतार फेकनेके लिये लोगोको उस्काया—"इलाकेके नगरद्वारोपर बाजे बजे, और अपने देशकी स्वतत्रताको फिरसे प्राप्त करनेके निश्चयके लिये लोगोने शपथ खाई।" खोजा यूसुफ एक कट्टर मुसलमान था। उसने लोगोके सामने सुझाव रखा, कि नगरके पडोसमे डेरा डालकर पडे हुये तीन सौ कलमक व्यापारियोको मुसलमान बना लेना चाहिये। अगर वह इन्कार करे, तो उन्हे मार डालना चाहिये। उन्होने उनके साथ ऐसा ही किया, और कसाकान (पुलिस अफसर) के तौर पर काम करनेवाले जुगरोको खानके पास भेज दिया। यारकन्दमे कलमकोकी तरफसे नियुक्त शासक हाजीबेगने आखोमे आसू और सिरपर कुरान रखकर क्षमा मागी, और लोगोने उसे क्षमादान दे दिया। जब लोगोने उसे जुगरोके दूत और अनुचरोको मार डालनेकी बात कही, तो उसने जवाब दिया—"काफिरको सिर्फ युद्धमे मारा जा सकता है।" एक मजबूत पहरेमे कल्मकोको शहरसे बाहर

भेजकर उसने हुक्म दिया, कि तुम फिर इस देशमे न आना। खोजा यूसुफने अन्तर्वेदके नगरो—खोकन्द, बुखारा, समरकन्द आदि—से काशगरियाके स्वतत्र होनेकी खबर देते हुए सहायता मागी, अन्दिजानके किर्गिज सरदार किवत मिर्जासे भी मुसलमानोकी महायता करनेके लिये कहा।

दावामे हारकर भागा अमुरसना चीन-दरबारमे पहुचा था। उसने अपनेको सिहासनका वास्तविक अधिकारी प्रमाणित किया। सम्राट्ने उसे च्वाङ-चिन्-वाङ (प्रथम श्रेणीके राजकुमार)की उपाधि प्रदान कर लफ्टनेन्ट-जेनरल (उपमहासेनापति) नियुक्त किया। १७५५ ई०मे चीनी सेना लेकर अमुरसना प्रस्थान किया। सेनाको मुश्किलसे कही धनुप खीचनेकी अवश्यकता पडी होगी। सभी जगह लोग अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार थे। दावा अपने तीन सौ अनुचरोंके साथ मुजार्त डाडेसे होकर उश-तुर्फानकी ओर भागा, लेकिन शहरके हाकिम हाजिमबेगने उसे पकडकर चीनियोके हाथमे दे दिया, जिसके लिये हाजिमबेगको "वाङ" (राजकुमार) की उपाधि प्राप्त हुई।

१०. अमुरसना, बातुर-वगज (१७५५–५७)

दावाके गद्दीपर बैठनेके समय भी अमुरसना अपनेको कलमकोका राजा समझता था। १७३४ ई० मे वह कजाकोकी मददसे, एमिल और ऊपरी ईर्तिशकी भूमिको लेनेमें सफल हुआ था।

चीनी सेनाके साथ आकर अमुरसनाने समझा, कि जुगारियाको जीतकर चीनी उसे सारा अधिकार सौंप देंगे। लेकिन उसकी यह आशा सफल नही हुई। दावा और छेरिङको पकडकर पेकिंग भेज दिया गया था। अमुरसनाको पता लगा, कि उसके साथ भी मचू-सम्राट् मेरे ही जैसा वर्ताव कर रहा है। असलमे चीनने दावाको अपने हाथमे एक बडा हथियार बनाकर रख छोडा था, जिसमें कि अमुरसनाके जरा भी विरोध प्रकट करनेपर उसे इस्तेमाल किया जाय। लेकिन दावा बहुत दिनोतक नही जिया। हाथसे निकल गये पूर्वी तुर्किस्तानको अमुरसनाने फिरसे लेना चाहा और थोडेसे सघर्पके बाद उसके कितनेही भागोको फिर अपने हाथमे कर लिया। चीनी अमुरसनाको कठपुतली बनाकर रखना चाहते थे। इसका विरोध करते इलीमे पडी हुई छोटी-सी चीनी सेना और उसके जेनरलको अमुरसनाने मार डाला। इसपर चीनसे नई सेना आई। एकाध वार झडप हुई। अमुरसनाने देख लिया, कि उसके लिये चीनी सेनाका सामना करना आसान नही है। १७५७ ई०में—जिस सालमें अंग्रेजोने पलासीकी लडाई जीतकर भारतमें अपने राज्यकी दृढ नींव रक्खी—दो चीनी सेनाओंने आकर जुगर-साम्राज्यको खतम कर दिया। इनमेंसे एक उत्तरके रास्ते आई, और दूसरी दक्षिणके रास्ते। कलमकोमे उस वक्त आपसमे भारी फूट थी, तो भी अमुरसना हिम्मत करके इलीकी ओर बढा। लोगोंको बडी सख्यामे अपने झडेके नीचे आते देखकर उसे बहुत उत्साह मिला, लेकिन जब चीनकी अपार सेनाको देखा, तो उसके होश उड गये, और वह कजाकोकी ओर भागा। जेनरल चाउ-ह्रोइने कुछ सैनिकोको पीछा करनेके लिये छोड जुगारियापर चीनी शासनको व्यवस्थापित करना शुरू किया। दूसरा चीनी सेनापति फू-ते अमुरसनाका पीछा करते हुये कजाकोमे पहुचा। कजाकोने चीनकी अधीनता स्वीकार की। कजाक-खान अवले उसे पकडकर चीनको देना चाहता था, इसलिये अमुरसना वहासे लोचा (साबेरिया)की ओर भागा। एक वार चीन-सम्राट्को दरबारियोने कहा—"इली प्रान्तको बिल्कुल छोड दिया जाय। हमसे यह बहुत दूर है। वहा जाकर शासन करना आसान नही है, इसलिये जिसकी इच्छा हो वह उसे ले ले।" चीन-सम्राट्ने इस सलाहको नही माना, और चाउ-ह्रोइ तथा फू-तेको युद्ध जारी रखते शासनको दृढ करनेका हुक्म दिया। अमुरसना अन्तमें साइबेरियामे कुछ समयतक मारा-मारा फिरा, लेकिन इस आफतसे चेचकने उसे जल्दी ही (१७५७ ई०)में छुटकारा दे दिया। हम बतला आये हैं, कि अमुरसना और उसके अनुयायियोको साइबेरियामें शरण देनेके कारण रूस और चीनके सबधमे खिचाव पैदा हो गया था। जब रूसियोने कहा, कि अमुरसना मर गया, तो चीनने उसके शवको मागा, शव न होनेपर चिताभस्मको भेजनेके लिये कहा। रूसियोने चीनी अमात्यको अमुरसनाके चिताभस्मको दिखला दिया, किन्तु उसे अपमानपूर्वक बिखेरनेके लिये देनेसे इन्कार कर दिया—"हरएक जातिके अपने रीति-रवाज होते है, जिन्हे वह पवित्र मानती है। जिस अभागे व्यक्तिने हमारे पास शरण ली, वह तुम्हारा दुश्मन मर चुका है। हमने उसके शरीरा-

वशेपको दिखला दिया, इससे अधिक हम कुछ नही कर सकते।" रूसकी भूमिमें पहुचनेसे पहलेही अमुरसनाकी वीवी वीतेइ—जो गन्दन छेरिङ्की पुत्री भी थी—पतिसे आ मिली थी। पतिके मरनेके बाद उसे पीतरबुर्ग भेज दिया गया।

मचू सैनिकोने बडी निष्ठुरतापूर्वक कल्मकोका सहार किया। उनके अत्याचारोंके कारण इलीकी सुन्दर उपत्यका उजड गई, जहा चीनियोने अपने कैदियोके लिये कालापानी स्थापित किया। पाच लाखके करीब ओइरोत (कल्मक) चीनियोके हाथो मारे गये। उनका तहस-नहस करनेके बाद चीनी सेनाने आगे भी अपनी दिग्विजय जारी रक्खी। १७५६-५८ और १७६० ई०में चीनी सेना कजाकोके मध्य-आर्दूकी भूमिमे घुसी। अवलै खानने चीनियोके सामने अधीनता स्वीकार की। उसके बाद लघु-ओर्दूके सरदार नूरअलीने भी चीनियोको अपना प्रभु माना। बूरुत (किर्गिज) सरदारोने भी उनके सामने सिर झुकाया। १७६६ ई०मे चीनने अवलैको वाङ (राजा)की उपाधि दी। अब मध्य-एसियामे सब जगह चीनियोकी जय-दुदुभी बजने लगी। नूरअलीने भेटके साथ अपने दूतमडलको पेकिंग भेजा। खोकन्दके खान एदेनिया बीने भी १७५८ ई०में वही काम किया।

जुगर-साम्राज्यके विच्छिन्न होने और चीनियोद्वारा पाच लाख कल्मकोंके मारे जानेपर जनशून्य सप्तनद भूमिमे फिर कजाक और किर्गिज लौट आये, और कुछ समयतक वह चीनकी प्रजा बने रहे। पीछे सप्तनदका बहुत भाग रूसियोने ले लिया, और सिर्फ ऊपरी इली-उपत्यका चीनके भीतर बनी रही।

३ (६ ख जुंगर-वंशवृक्ष)
(१५८२-१७५७ ई०)

अवलै
|
१ खराखुल (–१६३४)
|
२ बातुर (१६३४–५३)
|
३ सेङ्-गे (१६५३-७१) | ४ गल्दन (१६७१-९७) | ...
|
५ छेवङ रब्तन (१६९७-१७२७)
|
६ गल्दन छेरिङ (१७२७-४५)
|
७ छेवङ दोर्जे (१७४५-५०) | ८ दावा छेरिङ (–१७५५) | ९ अमुरसना (१७५०-५७)

स्रोत ग्रन्थ

१ ओचेर्क इस्तोरिइ सेमिरेच्या (व व वर्तोल्द)
२ History of Mongol (H. H. Howorth)

अध्याय ७

वोल्गा-कल्मक

(१६१६–१७७१ ई०)

हम कह आये हैं कि कैसे १६२० ई०में कलमकोने खलखा मगोलोके हाथो भयकर हार खाई, और उन्हे पश्चिमकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। उन्हीका एक भाग नोगाइयोकी भूमि होते पश्चिमकी ओर बढा। इनके नेता उर्लुक (तोर्गुत राजा), और उसके पुत्र दै-शिङ्ने १६३३ ई०मे नोगाई-विद्रोही सल्तानियासे मिलकर कन्हाईपर चढाई की, जिसपर मास्कोने तोबोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी कमाडरोको कलमकोंके दबानेके लिये हुक्म दिया। इस प्रकार कलमकोको साइबेरियासे हटना पडा। यही उर्लुक वोलगा-कलमको या तोर्गुत-मगोलोका प्रथम शासक था। वोल्गाके कलमकोकी राजावली निम्न प्रकार है —

१ खुद यैची उर्लुक, सुलसेगा-पुत्र	१६१६–४३ ई०
२ दै-शिङ, उर्लुक-पुत्र	१६४३–५६ "
३ फुन्-छोग्, दै-शिङ-पुत्र	–१६७२ "
४ आयुका, फुन्-छोग्-पुत्र	१६७२–१७२४ "
५ छेरिङ-दोण्डुब्, आयुका-पुत्र	१७२४–३५ "
६ दोण्डुब् अम्बो, आयुका-पुत्र	१७३५–४१ "
७ दोण्डुब् यैची, छग्दोर-पुत्र	१७४१–६१ "
८ उबासा, दोण्डुब् यैची-पुत्र	१७६१–७१ "

१ खुड थैची उर्लुक (१६१६–४३) ई०

वोल्गा-कलमक राजवशका वास्तविक सस्थापक सुलमेगा उर्लुकका ज्येष्ठपुत्र खुड-यैशी (यैची) उर्लुक था। १५६२ ई०में अल्तन खानके भतीजेके लडके खुतकताई सेसेनने एर्चिश (इर्तिश) नदीके तट पर चार ओइरोत (कलमक) कबीलोको करारी हार दी, जिसके कारण तोर्गुतोकी शक्ति क्षीण हो गई, और जुगरो (कलमको) की ताकत बढने लगी। १६०६ ई०मे जुगरोका बडा सरदार बातुर बापसे अलग हो इर्तिशपर चला आया। यहापर उसका मुकाबिला तोर्गुतोंके साथ हुआ, जिसके कारण तोर्गुतोको पश्चिमकी ओर भागना पडा। पहले उन्होने कूचुम खानके बेटोंके साथ मिलकर साइबेरियामे अपनी जड जमानी चाही, लेकिन रूसियोने उनकी एक भी नही चलने दी। फिर कलमक अरब मुहम्मदके समय ख्वारेज्मके इलाकेकी ओर बढे, और उनका जब-तब ख्वारेज्मी उज्बेकोंके साथ झगडा होता रहा—इसके बारेमें हम पहले कह चुके हैं। १६३२ ई०में वह अपने यैची उर्लुककी अधीनतामें अस्त्राखानके आसपासमें रहते रूसी प्रतिनिधिका स्वागत करते रहे। १६३९ ई०में तोर्गुतोने मगिशल्कके तुर्कमानोको लूटा। १६४३ ई०मे उर्लुकके अधीन पचास हजार किबित्का (तम्बू, परिवार) थे। १६४३ ई०मे उर्लुकके खतरेको समझकर रूसियोने हमला किया, और वह लडाईमें मारा गया। उर्लुकके तीन पुत्र थे—दैशिङ, येल्दिङ और लोब्जङ। बापके मरनेपर भाइयोमें भी झगडा हो गया।

२ दै-शिङ, उर्लुक-पुत्र (१६४३–५६ ई०)

उर्लुकके मरनेके बाद उसके लोग पूरबकी ओर भागे, लेकिन कुछ ही समय बाद एल्देर और लोब्जाङ यायिक (उराल) नदी पार हो वोल्गाके मैदानोमें चले आये। उन्होने तीन

कबीलो—किताई-किपचक, मैंलेवाश और एतीसनको अपने आधीन किया, साथ ही उलान-तुमान (लाल ऊट कबीला) के तुर्कमानोने भी इनकी अधीनता स्वीकार की, जो कि उस समय येम्बाके दक्षिणमे रहते थे। अब नोगाइयोका अधिक भाग कल्मकोकी प्रजा था। १६५६ ई०मे ही दै-शिङ और उसके पुत्र फुन-छोगने जारको अपना प्रभु स्वीकार किया।

३ फुन-छोग्, दै-शिङ-पुत्र (–१६७२ ई०)

इसके वारेमे इतना ही मालूम है, कि १६७० ई०में अधिकाश वोल्गा-कल्मक इसके अधीन थे और वह ख्वारेज्मके भीतरतक लूट-मार किया करते थे।

४ आयुका थैची, फुन-छोग्-पुत्र (१६७२–१७२४ ई०)

वोल्गा-कल्मकोका यह सबसे अधिक शक्तिशाली राजा था। पीतर का समकालीन रहते हुये इतनी शक्ति सचय करना इसकी दूरदर्शिता और राजनीतिक चातुरीका परिचायक है।

१६७२ ई०मे यह प्रतापी तोर्गुत (कल्मक) राजा आयुका गद्दीपर बैठा। उसके समय लघु-ओर्दूके नोगाई तथा पहाडी चिरकासी क्रिमियाके खानके अधीन थे। आयुकाने उन्हे क्रिमिया-के अधिकारसे छीन लिया, साथ ही नोगाइयोके दूसरे दो ओर्दू कसाई और येदिसनको भी अपने यहा जामिन भजने के लिये मजबूर किया। आयुका जानता था, कि अपने पडोसी मुसलमान कबीलोकी शत्रुता मोल लेनेके साथ-साथ रूससे भी बिगाड करना अच्छा नही होगा, इसीलिये उसने २६ फर्वरी १६३९ ई०मे अस्त्राखानमे जाकर रूसियोको अधीनता स्वीकार करनेका वचन दिया। लेकिन तब भी उसका वर्ताव बहुत स्वतत्रतापूर्वक होता था। रूसी डरते थे, कि तोर्गुतोके अतिरिक्त, नोगाइयोके भिन्न-भिन्न ओर्दू भी लूट-मारमे आयुकाके साथ सम्मिलिति हो सकते हैं, इसलिये उन्होने अधिकतर साम और दानसे ही आयुकापर अकुश रखना चाहा। आयुकाने १६९३ ई०में रूसियोकी ओरसे जाकर बाश्किरोको जीता। आयुकाका डेरा अधिकतर कुवनस्तेपीके करातेपे स्थानमें रहा करता था। महानोगाईके थोडेसे लोगोको छोडकर बाकी सभी नोगाई आयुकाके अधीन थे, और उनमेंसे अधिकाशने यायिक और वोल्गाकी स्तेपियोको छोड कुवान और कुमामें डेरा डाला था—महानोगाई अब भी अस्त्राखानके आसपास रहा करते थे। १७२४ ई०मे आयुकाके मरनेके समयतक नोगाइयोकी यही हालत थी। नोगाइयोके तम्बू मुर्गियोके बडे टोकरेकी तरह होते थे, जिनमे नीचे गोल ढाचा होता, जिसे बीचमे धुआ निकलनेके लिये छेद छोडकर ऊटके बालोके नम्देसे छा दिया जाता। कच्चे चमडेके टुकडोको भी कभी-कभी नम्देकी जगह इस्तेमाल किया जाता था।

१६१३ ई०मे आयुकाने छग्दोरको अपना युवराज घोषित किया। १७२२ ई०मे जब पीतर I ईरानके विरुद्ध अभियान लेकर गया था, तो उसने अपने जहाजपर आयुका और उसकी पत्नीका सत्कार-सम्मान एक स्वतत्र राजाके तौरपर किया। १७२४ ई०मे मरनेके समय आयुका ८३ वर्षका था।

५ छेरिङ दोण्डुब्, आयुका-पुत्र (१७२४–३५ ई०, १७४१–६५ ई०)

आयुकाके बाद धर्मपाल-पुत्र छेरिङ गद्दीपर बैठा। यह बहुत ही कमजोर स्वभावका आदमी था। रूसियोकी कृपा प्राप्त करनेके लिये ईसाई बनकर इसने अपने लोगोकी सहानुभूति खो दी।

१७३५ ई०में यह मर गया।

६ दोण्डुब् अम्बो, आयुका-पुत्र (१७३५–४१ ई०) और ७ दोण्डुब् थैची छग्दोर-पुत्र (१७४१–६१ ई०)

इनके समय कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी।

८ उवासा, दोण्डुव् थैची-पुत्र (१७६१–७१ ई०

यह एक लाख कलमक-परिवारोंका राजा था। तुर्कोंके युद्धोंमें इसके नेतृत्वमें कलमक बडी बहादुरीके साथ रूसियोंकी ओरसे लडे थे, लेकिन उसके बदलेमें रूसियोंका बर्ताव रूखा देखकर इसने पचास वर्षसे चले आते "स्वदेश चलो"के आन्दोलनका समर्थन किया और वोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार तम्बुओंको छोडकर बाकी कलमक इसके नेतृत्वमें इली उपत्यकाकी ओर चले गये।

कलमकोंका भागना—१७०३ ई०में आयुका खान और जुगर थैची छेवङ्-रब्तनसे लडाई हुई। वर्तमान कजाकस्तानके पूर्वी भागके स्वामी जुगर थे, और पश्चिमी भागके तोर्गुत (वोल्गा-कलमक)। दोनोंकी सीमा मिलती थी, इसलिये इस तरहकी लडाई स्वाभाविक थी। वोल्गाके कलमक भी उसी तरहके कट्टर बौद्ध थे, जिस तरह उनके भाई जुगर। वह तिब्बत तथा ल्हासाको अपनी धर्म-भूमि समझकर तीर्थयात्राके लिये जाया करते थे। आयुकाका भाजा या भतीजा करा-कुचिन छेरिङ् अपनी माके साथ तीर्थयात्राके लिये तिब्बत गया हुआ था। लडाईके कारण देश लौटनेका रास्ता न मिलनेसे वह चीन चला गया। चीन-दरबारमें उसका बडा स्वागत हुआ। इस समय मंचुओंका सबसे अधिक प्रभावशाली सम्राट् खाङ्-सी (१६६१-१७२३ ई०)का शासन था। सम्राट्ने राजकुमार कराकुचिनको उसके अनुयायियोंके साथ शेन्शी प्रदेशके पश्चिमी सीमान्तपर बसा दिया। इसी बीचमें सम्राट्ने निश्चय किया, कि वोल्गाके तटपर भागे हुये मंगोलों (तोर्गुतों)को फिर देशमें बुलाया जाय। कराकुचिनसे बढकर इस कामके योग्य और कौन हो सकता था? नौ साल रहनेके बाद १७१२ ई०में सम्राट्के दूतके साथ वह वोल्गातटपर लौटा। उसने अपने लोगोंके सामने जन्मभूमिमें लौट चलनेका प्रस्ताव रक्खा। यद्यपि इसी समय वह लौटनेके लिये तैयार नहीं हुये, लेकिन यह आन्दोलन कलमकोंके भीतर चलता रहा। चीन इस काममें तिब्बतके लामाओंसे भी सहायता लेने लगा। अन्तमें वोल्गाके तोर्गुत ओर्दूका मुख्य लामा लोब्जाङ् जाजेर अरन्त शिम्बा जैसा योग्य व्यक्ति चीनको इस कामके लिये मिल गया। वह राजकुमार बम्बरका पुत्र था जिसका तोर्गुतोंपर उसका बहुत प्रभाव था। पन्द्रह भिक्षु और साथ ही एक टुल्कू (अवतारी) लामा (जिसके शरीरमें किसी बडे महापुरुषने अवतार धारण किया) के साथ उसने अपने आदमियोंमें बाह्य-धर्मियों (रूसियों) के देशसे स्वधर्मियोंके देश और अपने पूर्वजोंकी जन्मभूमिमें लौट चलनेके लिये प्रचार करना शुरू किया। इस समय आयुकाका पौत्र उबासा तोर्गुतोंका खान था। उसने १७६९-७० ई०के तुर्की-युद्धमें रूसकी ओरसे अपने तीस हजार आदमियोंके साथ भाग ले अपनी बहादुरीका परिचय दिया था, और तुर्कोंको कई जगहोंमें करारी हार दी थी। इन सफल-ताओंके कारण उबासाका आत्मविश्वास और बढ गया था, और वह हर बातमें रूसियोंकी नाजबरदारी करनेके लिये तैयार नहीं था। जब रूसियोंने दबानेकी कोशिश की, तो स्वदेश लौटनेकी बातको जोर मिलने लगा। उस समय अस्त्राखानमें रूसी राज्यपाल ख्रिस्तोफ किशिन्स्की था। उसको भनक लग गई, कि तोर्गुत चले जानेकी तैयारीमें है, लेकिन उसने उन्हें समझाने-बुझानेकी जगह कडे शब्दोंका इस्तेमाल किया—"तुम अपनेको समझते हो, कि हम बहुत भाग्यशाली होकर अपना काम-काज करेंगे, लेकिन तुमको समझ रखना चाहिये, कि तुम जंजीरमें बंधे भालूसे अधिक कुछ नहीं हो। जंजीर पकडकर तुम्हें जहां ले जाया जाये, वहीं जा सकते हो।" तोर्गुतोंको सचमुच ही एक घेरेमें डाल रक्खा गया था। उनके पूर्वमें यायिक नदीकी उपत्यकामें कितने ही रूसी किले थे, जिनमें कसाक सैनिक थे। पीतर I के बादके रूसी जारोंके जर्मन होनेका एक फल यह हुआ था, कि बहुत काफी संख्यामें जर्मनोंको लाकर वोल्गाके दाहिने तटपर बसा दिया गया था। यह जर्मन-उपनिवेश तोर्गुतोंके उत्तरमें पडते थे। पश्चिममें क्रिमियाके तारतारोंकी चोट भी कलमकोंको ही बर्दाश्त करनी पडी थी। पिछले सालोंमें कुछ अकाल भी पड गया था, इन सब कारणोंसे 'स्वदेश चलो' आन्दोलनको बडी मदद मिली। वोल्गाके दाहिने तटके देर्बेत कबीलेने इस योजनाको पसन्द नहीं किया, और प्रयाणके लिये जो दिन निश्चित हुआ था, उस दिन वोल्गाके न जमनेका बहाना करके उन्होंने साथ नहीं दिया। सारी तैयारी इधर हो रही थी, लेकिन ख्रिस्तोफ जैसे अयोग्य शासकके कारण रूसियोंने उन्हें रोकनेके लिये

कोई तैयारी नही की। कल्मकोके पास दो रूसी तोपें भी थी, जिनको वह पूर्वकी ओर जाते समय अपने कजाक विरोधियोके विरुद्ध इस्तेमाल कर सकते थे। यह मालूम ही है, कि १७५७ ई०के विजयके वाद त्यान्‌शान-सप्तनद चीनियोके हाथमे था, इसलिये तोर्गुतोको सीमान्ततक पहुचनेकी ही दिक्कत थी। आगेके लिये उन्हे वहुत-बहुत-से प्रलोभन दिये गये थे।

बडे लामाने ५ जनवरी १७७१ ई०को प्रयाणका दिन निश्चित किया था। उसी दिन उवासा सत्तर हजार परिवारोके साथ चल पडा। उस समय अधिकाश कल्मक वोल्गाके बायें तटके मैदानोमें जमा थे। सब उवासाके पीछे-पीछे चलने लगे, केवल वोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार परिवार रूसमें रह गये। यह पन्द्रह हजार परिवार १९४१ ई० तक सख्यामे कई लाख हो गये थे, और उनका एक स्वायत्त प्रजातत्र भी स्थापित हो गया था, लेकिन जर्मनोके प्रहारके कारण द्वितीय युद्धके समय इन्हे वोल्गातट छोडकर पूर्वमे अपने पूर्वजोकी भूमिमे जानेके लिये मजबूर होना पडा, जहासे वह फिर लौटकर नही आये। द्वितीय विश्वयुद्धने इस भूभागमे जो परिवर्तन किये, उनसे वोल्गाके जर्मन-उपनिवेश सारे रूसमें बिखर गया, और क्रिमियाके तारतार साइबेरियाकी ओर चले गये।

तोर्गुत (कल्मक) हल्की चीजे ही अपने साथ ले जा रहे थे। जब आगे यात्राकी कठिनाइया मालूम हुई, तो उन्होने रूसी तावेके सिक्कोको भी फेक दिया, जिन्हे वर्षों वाद पाया गया। तोर्गुतोको कजाकोकी भूमिमेंसे जाना था, जो उनके पुराने दुश्मन थे और जो हर जगह लूट-मार करनेकी कोशिश करते थे। कल्मकोने स्त्री-बच्चो और अपने पशुओको बीचमे रक्खा था। चारो ओर हथियारवन्द पुरुष प्रतिरक्षाके लिये तैयार होकर चलते थे। उवासा स्वय पन्द्रह हजार आदमियोके साथ यायिकके किनारे पहुचा, जिसमे कि रूसी कसाकोसे अपने लोगोकी रक्षा कर सके। आठ दिनमे तोर्गुत वोल्गासे यायिकके स्तेपीमे पहुचे। उस समय यायिकके कसाक (रूसी) कास्पियनमें मछली मारने गये हुये थे, इसलिये तोर्गुत असानीसे यायिक पार कर गये। फिर किर्गिजोकी भूमिमें वर्फपर चलना पडा। अभी नदी पार करके वहुत दूर नही गये थे, कि मित्रासोफकी अधीनतामे दो हजार कसाकोने उनका पीछा किया, और वह येकाजुखोरके एक हजार तम्बुओको लौटानेमे सफल हुये। आगे कल्मकोकी कठिनाइया और बढी। वर्फ पिघलनेके कारण कीचडमे घोडो, ऊटो, पशुओका चलना मुश्किल था, ऊपरसे घास-चारेकी कमीके कारण वह वहुत दुर्बल होने लगे। गरीव लोगोको पैदल चलना पडता था, जव कि धनी मगोल सवारियोपर चल रहे थे। इस विषमताने भी लोगोके हृदय में जलन पैदा की। लेकिन जैसे भी हो, अव तो उनके लिये आगे वढनेके सिवा और कोई रास्ता नही था। दो मासकी यात्राके वाद वह इर्गिच नदी पार हुये। अव उनकी यात्रा सवसे कठिन थी। वसन्तके कारण वर्फ पिघलनेसे सभी नदी-नाले भरे हुये थे, जिन्हे पार करनेके लिये उन्होने नरकटके मुट्ठोको वाधकर तैरते पुल तैयार किये थे। इर्गिच और तुरगाई नदियोके वीचमे तोर्गुतोके सवसे अधिक आदमी मरे। तुरगाई पार होकर उन्होने दोनो तोपोको छोड दिया। इसी समय रूसी सेनाके साथ जेनरल त्राउवेन्वर्ग ओर्स्कसे चला, किर्गिज-कजाक लघु-ओर्दूका खान नूरअली भी कल्मकोके पीछे पडा। वह तुरगाईसे आगे होकर उन्हें रोकना चाहते थे, लेकिन तोर्गुत दस दिन पहले ही आगे जा चुके थे। उन्होने दूत भेजकर कल्मकोको लौटनेके लिये कहा, लेकिन कल्मकोने आगे जानेका निश्चय नही छोडा। इशिम नदीके तटपर पहुचनेपर उनकी अवस्था कुछ वेहतर हुई, लेकिन यहापर किर्गिज-कजाकोसे दो वार सघर्ष हुआ। अब कगरवेइन, शर्रा-उसुनकी १५० वेर्स्त (२५ फर्सख) चौडी स्तेपी जैसी भयकर भूमि मिली, जिसमें वह तीन दिन चले। यहा पीले रगका दुस्स्वादु पानी मिला। प्याससे मजबूर होकर उन्होने उसे पिया, जिसके कारण वीमार होकर कई सौ आदमी मर गये। इस स्तेपीको पार करते ही नूर अली (लघु-ओर्दू) और अवलाई (मध्य-ओर्दू) के कजाकोने आक्रमण कर दिया। दो दिनतक भयकर लडाई हुई। इसके वाद तोर्गुत वलखासके किनारे पहुचे, जहा फिर कजाकोसे युद्ध हुये। आठ महीनेकी भयकर यात्राके वाद १७७१ ई०के मध्यमे इली नदीसे नातिदूर चरापेन स्थानमे वह चीनी सीमाके भीतर घुसे। एक रूसी इतिहासकारने लिखा है—"इस प्रकार आधुनिक

कालकी एक अत्यन्त असाधारण प्रवास-यात्रा समाप्त हुई, रूसी साम्राज्य एकाएक एक ऐसी योद्धा जातिसे वंचित हो गया, जिसका जीवन कास्पियन तटकी स्तेपीके बिल्कुल अनुकूल था, और जिसे घुमन्तू हजारो परिवारोंने अपने असंख्य पशुओंका चारण करके आबाद रखा था, लेकिन अब वह बहुत वर्षोंके लिये निर्जन हो गया।

चीनकी ओरसे उनके स्वागतकी भारी तैयारी की गई थी। एक सालके खाने-कपडेका इंतिजाम था। चीनने उन्हे इलीपर बसानेका प्रबन्ध किया था, जहा खेती और पशुचारणके लिये बहुतसी जमीन पडी हुई थी और जिसे १४ ही साल पहले उनके जुगर भाइयोंने खाली कर दिया था। खाने-कपडेके अतिरिक्त बहुतसी नकद चादी भी कल्मकोंको चीनने दी। चीन-सम्राट्ने इस यात्राके स्मारकके तौरपर तोर्गुतोंकी नई भूमिमे इली-तटपर चार भाषाओंमे अभिलेख लिखकर पत्थरपर खुदवाया, जिसके कुछ वाक्य है—"यदि वह अपनी इच्छाओंको सीमित रख सके, तो किसी को क्षुब्ध होनेकी अवश्यकता नही, किसीको डरनेकी अवश्यकता नही, यदि वह अपनेको ठीक समयपर रोक सकता है। ये भाव है, जिन्होंने कि मुझे इस काममे लगाया। आकाशके नीचे सभी जगहोंमे समुद्रसे पार दूरतम कोनोंमे ऐसे आदमी है, जो कि दास या प्रजाके नामपर आज्ञा पालन करते है। क्या मै यह मान लू, कि वह सब मेरे अधीन है, और वह मेरे करद है ? यह गलत बात होगी। मै अपने मनमे यही समझता हू, जो कि बिल्कुल सच है, कि तोर्गुत लोग बिना मेरी ओरसे दबाव डाले अपने आप अबमे मेरे कानूनोंके अधीन रहनेके लिये चले आये है। निसदेह दैवने उन्हे ऐसा करनेकी प्रेरणा दी। उन्होंने ऐसा करके दैवी आज्ञाका पालन किया। मेरे लिये यह ठीक नही होगा, यदि इस घटनाका एक प्रामाणिक रूपसे स्मारक तैयार न करू।"

वोल्गातटसे चले सत्तर हजार परिवारोंमेसे केवल पच्चीस हजार परिवार (तीन लाख व्यक्ति) इलीके तटपर पहुच पाये थे। इनमेसे कितने ही इली-उपत्यकामें बस गये, और कितने ही जाकर गोबीके पश्चिमी भागमे रहने लगे।

३ (७ वोल्गा-कल्मक-वंशवृक्ष)
(१६१६–१७७१ ई०)

मुलसेगा
|
१ उर्लुक (१६१६–४३)
|
२ दै-गिङ (१६४३–५६)
|
३ फुन्छोग् (–१६७२)
|
४ आयुका (१६७२–१७२४)

(आयुकाके पुत्र:)
- छग्दोर
  - ७ दोण्डुब् थैची (१७४१–६१)
    - ८ उबासा (१७६१–७१)
- ५ छेरिङ दोण्डुब् (१७२४–३५)
- ६ दोण्डुब अम्बो (१७३५–४१)

स्रोत ग्रन्थ

१ History of Mongol (H H. Howorth)

अध्याय ८

कजाक-ओर्दू

(१७१८–१८१२ ई०)

१८ वी सदीमे जिस तरह किपचको (जू-छि-उलुस) का एक भाग मध्य-ओर्दू, महाओर्दू और लघु-ओर्दूके रूपमे बट गया, इसके बारेमे हम कह चुके हैं। इन्ही तीनो ओर्दुओसे वर्तमान कजाक जातिका विकास हुआ ।

क. मध्य-ओर्दू (१७१८–१८१८ ई०

श्वेत-ओर्दू जू-छिके दूसरे पुत्र ओर्दाका उलुस था, इसे हम बतला आये हैं। सुवर्ण-ओर्दूके प्रभुत्व के समय श्वेत-ओर्दू उसके अधीन रहा, लेकिन बा-तू-वशके उच्छेदके बाद श्वेत-ओर्दूके खानोने प्रधानता प्राप्त की। इसी श्वेत-ओर्दूकी एक शाखा मध्य-ओर्दू था, जिससे इसके खान भी जू-छिके पुत्र ओर्दासे अपना सबध जोडते हैं। श्वेत-ओर्दूको विच्छिन्न करनेमे नोगाइयोका भी खास हाथ था, यह भी हम बतला चुके हैं। मध्य-ओर्दूका प्रथम खान पुलाद (बुलात) श्वेत-ओर्दूका सीधा उत्तराधिकारी था, जिसके वशके मुख्य खान निम्न प्रकार हुये—

१ पुलाद, बुलात, शेमीअका खान	१७१८–३४ ई०
२ अबुल मोहम्मद, पुलाद-पुत्र	१७३४–४८ ,,
३ अबलइ, शिगाईवशज	१७४८-८१ ,,
४ वली, अबलइ-पुत्र	१७८१–१८१८ ,,

१ पुलाद, बुलात, शेमीअका खान (१७१८–३४ ई०)

श्वेत-ओर्दूकी शक्तिको चूर्ण करनेमे काफी हाथ जुगर-कल्मकोका था। पुलादके समय इसका ओर्दू अपने चरम उत्कर्षपर पहुचा हुआ था । जुगरोने मध्य-ओर्दूके कजाकोको उनकी अपनी भूमिसे भगा दिया। कजाको (उज्बेक-कजाको) को केवल सप्तनद ही छोडकर नही भागना पडा, बल्कि १७२३ ई० में जुगरोने कजाक खानोकी पुरानी राजधानी तुर्किस्तान-शहरको भी दखल कर लिया, जहापर कि उनके कितने ही खानोकी समाधिया बनी थीं। जुगरोने ताशकन्द और सैरामको भी लेकर मध्य-ओर्दूको बहुत क्षीण हालतमे छोडा । उनमेंसे अधिकाश कजाक समरकन्दकी ओर भागे, महा-ओर्दू तथा मध्य-ओर्दूका कुछ भाग खोजन्दकी ओर और लघु-ओर्दू बुखारा और खीवाकी तरफ शरण लेने गया। अभागे भगोडोका अकाल और महामारीने पीछा किया । इस तरहकी भारी आफतने पडनेपर उज्बेक-कजाकोने कुछ समयके लिये अपने भीतरी वैरको भुला दिया, और एक बडी सभामे जमा होकर उन्होने अपनी पितृभूमिको काफिरोसे मुक्त करनेका निश्चय करते हुये लघु-ओर्दूके सरदार अबुल्खैरको अपना प्रधान सेनापति बनाया, और अपनी शपथको पक्का करनेके लिये हूणोंके समयसे चली आती प्रथाके अनुसार एक सफेद घोडेकी कुर्बानी की। कुछ लडाइयोमे सफलता जरूर मिली, लेकिन जुगर थैंची गन्दन छेरिङने उन्हे हराकर भयकर बदला लिया। कजाकोने अब पितृभूमिका ख्याल छोडकर भागनेमे ही कल्याण समझा। लघु-ओर्दूने पश्चिमकी ओर वोल्गा-कल्मको (तोर्गुतो) को भगाते जाकर येम्बा तथा यायिक (उराल) की उपत्यकाओमे विचरण करना शुरू किया। मध्य-ओर्दूने उत्तरकी ओर भागकर पहले ओरी और उई नदियोकी उपत्यकाओमे जा वहासे बाश्किरोको भारी

सख्यामे भगा दिया। पीछे वाश्किर उरालके कसाको (रूसियो)से मिलकर इनके वगलमे काटे वन गये । चारो ओरसे खतरा ही खतरा दिखलाई देनेपर मध्य-ओर्दूने रूसियोकी अधीनता स्वीकार करनेमे खैरियत समझी १७३२ ई०मे शेमीअकाने रानी अन्नाकी वफादारीकी शपथ ली, लेकिन कसाकोने इसे पसन्द नही किया, जिसके कारण मध्य-ओर्दूमे झगडा हो गया। वाश्किरोपर इन्होने असफल आक्रमण किया। जिस समय अपनी मूलभूमिको कसाक छोडकर भाग रहे थे, उस समय महा-ओर्दू अपनी पुरानी भूमिमे जुगरोकी अधीनता स्वीकार कर किसी तरह रह गया।

जिस समय शमीअका रूसकी अधीनता स्वीकार करके अपनी रक्षा करनेकी कोशिश कर रहा था, उस समय सारे कजाकोका सवसे वडा नेता तथा लघु-ओर्दूका खान अवुल्खैर भी रूसका खैरखाह था। मध्य-ओर्दूको रूसकी अधीनता स्वीकार करानेमे उसका काफी हाथ था। १७३४ ई०मे रूसी सीमान्त (ओरेनवुर्ग) के राज्यपाल किरिलोफको शेमिअकाको खानकी पदवी-दानके लिये नियुक्त किया गया था, लेकिन पदवी प्राप्त करनेसे पहले ही शेमीअका मर गया। इस पदवीके साथ जो पत्र रूसी रानीने भेजा था, उसमे लिखा था—"हमारी प्रजा शेमीअका खान और मध्य-ओर्दूके किर्गिज-कजाकोकी सेनाके मुखियोको।"

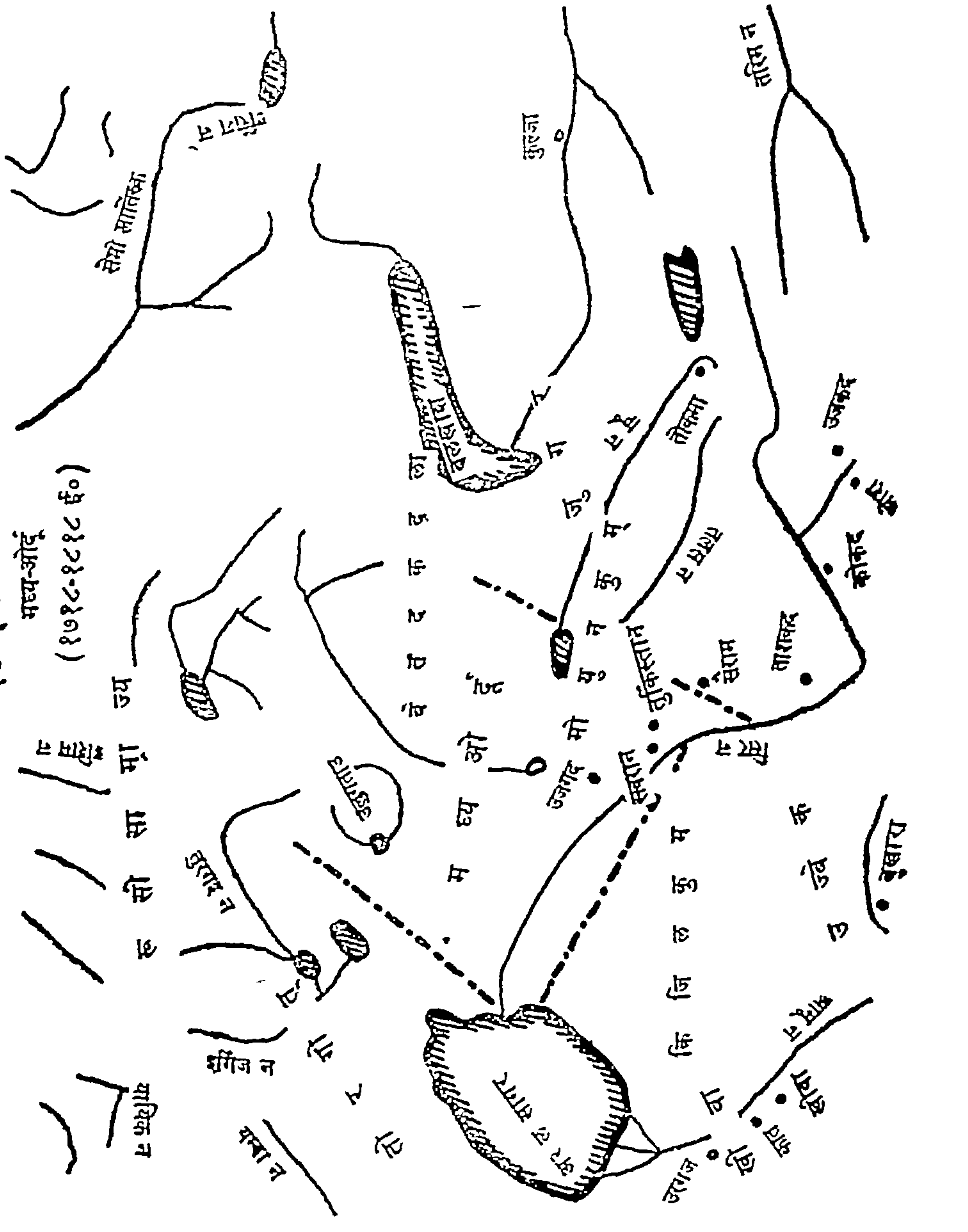

१८. (२।३।८क) मध्य-ओर्दू (१७१८-१८१८ ई०)

२. अबुल् मुहम्मद, पुलाद-पुत्र (१७३४–४८ ई०)

शेमीअका (पुलाद) खानके मरनेके बाद मध्य-ओर्दूके अबुल् मुहम्मद और उसके बाद अबलइ खान हुये। किसी-किसीके मतमें अबुल् मुहम्मद पुलाद खानका पुत्र था। इस समय किरिलोफ़की जगह तातिश्चेफ १७३० ई०में ओरेनबुर्गका राज्यपाल था। उसने अबुल् और अबलइ दोनोको ओरेनबुर्गमे बुलाया। स्वय न आकर उन्होने अगस्त १७३८ ई०मे सदेश भेजा, कि हम बहुत दूर इर्तिशके किनारे है, इसलिये अगले साल आकर राजभक्तिकी शपथ लेगे।

लेकिन यह भी बात उन्होने पूरी नही की। इसी बीचमे १७३९ ई०के आरम्भमें राजुल उरुसोफ ओरेनबुर्गका राज्यपाल होकर आया। मध्य-ओर्दूका अभीतक कोई पक्का खान नही चुना गया था, लेकिन अबुल् मुहम्मद उसका सबसे बडा प्रभावशाली नेता था। लघु-ओर्दूका खान अबुल्खैर दावा करता था, कि वह हमारे अधीन है। इसके कारण दोनोमे झगडा खडा हो गया। १७४० ई०में अबुल् मुहम्मद, अबलइ सुल्तान और दूसरे कितने ही सरदारो और साधारण कजाक मुखियोके साथ ओरेनबुर्ग पहुचा। राजुल उरुसोफने उसका उसी तरह सम्मान किया, जैसा कि अबुल्खैरके साथ किया था। उन्होने राजभक्तिका पत्र अर्पित किया, जिसे एक दुभाषियेने पढा। इसके बाद अबुल् मुहम्मद और अबलइने, एक जरदोजीके खडपर घुटने टेककर शपथ ली, कुरानको अपने माथेपर लगाया, और शपथपत्रकी मुहरको सिरसे छू कुरानको चूमा। पासके ही तम्बूमे मध्य-ओर्दूके १२८ अमीरोने उसी तरह जारके प्रति शपथ ली। रस्मकी समाप्ति होनेपर तोपे दागी गई, और अन्तमें भोज हुआ। वहाके सेनापतिने दूसरे दिन भेंट करते समय मध्य-ओर्दूके नेताओंसे कहा, कि अपने देशसे गुजरते समय रूसी कारवाकी रक्षा करना, और मूलरके कारवाकी जो वस्तुए महा-ओर्दूने लूट ली है, उन्हे लौटवानेका प्रयत्न करना। उसने कजाको ओर बोल्गा-कल्मकोंके साथ शाति स्थापन करनेकी कोशिश की। लेकिन यदि लूटके मालको लौटाना या लूट-मार बन्द करना हो सकता, तो वह कजाक ही क्यो होते? जिस समय यह कार्रवाई हो रही थी, उसी समय ओरेनबुर्गमें अबुल्खैरके दो पुत्र नूरअली और एरअली मौजूद थे, लेकिन उनको डर लगा, कि अबुल् मुहम्मद कही रूसियोंसे चुगली करके हमे कैद न करा दे, इसलिये वह जल्दी-जल्दी वहासे चले गये।

१७४१ ई० मे बाश्किर विद्रोहियोके नेता कराशक्काल (काली दाढी) ने भागकर कजाकोमें पनाह ली, और उसने मध्य-ओर्दूकी एक टोलीको लेकर जुगरोको लूटा। जुगर उनका पीछा करते आ रहे थे, कि रास्तेमे कजाकोके डेरोको पा उन्होने उन्हे लूट लिया। राजुल उरुसोफने जुगर- राजा और रूसके बीचमें हुई सुलहका हवाला देकर ऐसा न करनेके लिये कहा। इसपर जुगरो ने जवाब दिया—"हम नही जानते, कि कजाक रूसी प्रजा है।" अबुल् मुहम्मदने देशमें जुगरोंसे प्रतिरक्षार्थ एक मजबूत किला बनानेके लिये रूसियोको लिखा। उधर कजाकोका आक्रमण जुगारियाकी सीमान्तपर जारी रहा। १७४१ ई०में जुगर-राजा गल्दन छेरिङने मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूको दड देनेके लिये दो सेनायें भेजी, जिन्होने अबलइको बदी बनाकर अपने साथ ले जानेमें सफलता पाई। अबलइ रूसी प्रजा था, इसलिये उसे छुडानेके लिये रूससे १७४२ ई०में मेजर मूलरको जुगरोंके पास भेजा गया। मुहम्मदने भी दूतमडलके साथ अपने पुत्रको जामिनके तौरपर भेजा। रूसियोको यह बात पसन्द नही आई, कि हमारी प्रजा होते हुये कजाक कल्मकोसे सीधे बातचीत करे। कजाकोने जुगरोसे बहुत कहा, कि अब हम लूट-मार नही होने देगे, लेकिन जुगर कजाकोंके स्वभावसे अच्छी तरह परिचित थे, इसलिये वह जामिन रखनेपर जोर देते रहे। अबुल् मुहम्मदको अपने लोगोपर नियत्रण रखनेके लिये सावधान किया गया, और मामला उस समयके लिये सुधर गया।

अबुल् मुहम्मद यद्यपि अधिकाश कजाकोके लिये मध्य-ओर्दूका खान था, लेकिन उनकी भारी सख्या तुरसुनखान-पुत्र बुर्राकको अपना खान मानती थी, जिसने भी इसी समय रूसियोंके जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली थी। १७४३ ई०मे उसने अपना दूतमडलन भेज साधारण सदेशवाहक द्वारा पत्र और सुनहरी समूरी खाल भेजी, जिसे लौटानेपर उसने रूखासा जवाब दिया। उधर मेजर मूलरके प्रयत्नसे १७४२ ई०मे जुगरोने अबलेई सुल्तानको छोड दिया था।

१७४४ ई०में जुगरोने साइवेरियामे रूसी सीमाके पास शक्ति प्रदर्शन किया । अबुल्-मुहम्मद और उसके लोग तुर्किस्तानकी ओर खिसक गये, और उन्होने गन्दन छेरिङके साथ घनिष्ठ मित्रता करनी चाही—अबुल् मुहम्मदका लडका अब भी गन्दनके पास जामिनके तौरपर था । अबुल् मुहम्मदको आशा थी, कि इस तरह वह गन्दनसे मध्य-ओर्दूकी पुरानी राजधानी तुर्किस्तान-शहरको पा लेगा । लेकिन उसका प्रतिद्वद्वी बुर्राक सुल्तान भी अपने पुत्रको जुगरोके पास जामिन दे मध्य-ओर्दूको अपनी ओर करनेकी चेष्टा कर रहा था । इस्लाम और बौद्ध धर्मको लेकर कजाको और जुगरोका झगडा बहुत पुराना था, जिसके कारण यदि रूसियो और जगरो (कल्मको) मे लडाई छिडती, तो कजाक जरूर रूसियोकी ओर हो जाते । खैर, रूसी सीमान्तके पास प्रदर्शन करके ही जुगर लौट गये, और लडाई नही हो पाई । इस शातिसे लाभ उठाकर दो सालके बाद फिर मध्य-ओर्दू रूसी सीमान्तपर पहुचा, और अबुल् मुहम्मद तथा बुर्राक दोनोने पुन जार-भक्तिकी शपथ ली । १७४६ ई०मे जुगर आक्रमण करके कजाकोके बहुत-से घोडे छीन ले गये । यह वही साल था, जिस साल कि जुगर-राजा गन्दन छेरिङ मरा ।

१७४८ ई०मे बुर्राकने लघु-ओर्दूके खान अबुल्खैरको हराया । पीछे रूसी प्रजा करा-कल्पकोको लूटा । जिसके लिये रूसी दड देते, इसलिये डरके मारे पूर्वकी ओर बढ बुर्राकने ईकान, ओतरार और सिगनकपर अधिकार कर वहा डेरा डाला । अगले साल एक खोजाके साथ-रहते बुर्राक और उसके दो पुत्रोको जहर खिलाकर मार डाला गया । शायद अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीने पिताकी हत्याकी शिकायत जुगरोमे की । इस समय (१८वी सदीके मध्यमे) मध्य-ओर्दू के अधिकाश सुल्तानो और सरदारोने जुगरोके यहा अपने जामिन दे रक्खे, थे, इसीलिये जुगर मध्य-ओर्दूको अपनी प्रजा मानते थे । इसी समय अबुल् मुहम्मद तुर्किस्तानकी ओर गया, जहापर वह अपनी मृत्युके समयतक रहा ।

३ अबलइ, शिगाई-वशज (१७४८–८१ ई०)

अबुल् मुहम्मदके दक्षिणकी ओर, चले जानेपर मध्य-ओर्दूके कुछ सरदारोने मृत बुर्राकखान के भाई सुल्तान कूचुकको अपना खान चुना, लेकिन रूसियोने उसे स्वीकार नही किया । इस पर वह जुगरोकी ओर झुके । शिगाई खानके वशज अबलइकी दूसरी ही नीति थी । उसका कबीला अधिकतर रूसी सीमाके पास रहता था, इसलिये वह रूसियोका अधिक पक्षपाती था—खासकरके तबसे, जब कि मध्य-ओर्दूने १७५१ ई०मे उलुकतागमे जुगरोसे करारी हार खाई । १७५४ ई०मे उनके ऊपर जुगरोका इतना अधिक दबाव था, कि बहुत-से अमीरोने रूसियोसे आज्ञा मागी, कि हमारे बीबी-बच्चोको अपने यहा शरण दो, और सीमान्तपर जमीन दो, तो हम खेती करके अपने गाव बसा लेगे । इसपर कितने ही कजाकोको उइस्कके पास बस जानेकी इजाजत मिली, और उचित जामिन दे देनेपर कितनो हीको हटकर रूसी सीमान्त रेखाके पीछे आनेकी भी इजाजत मिल गई । लेकिन इसी समय जुगर-साम्राज्यको चीनियोने नष्ट कर दिया, जिसमे अबलइका भी काफी हाथ था । साम्राज्यके पतनमे अमुरसना और दावा छेरिङ (१७५०–५५ ई०) का झगडा मुख्य कारण था, इसे हम पहले बतला आये हैं । चीनियोकी सहायतासे अमुरसना खान बना था, लेकिन वह चीनियोके हाथकी गुडिया नही बनना चाहता था, इसलिये विद्रोही बना, और भारी चीनी सेना आनेपर उसने कजाकोमे भागकर शरण ली । अबलइ खानने घोडे और सरक्षक दिये, और गिरफ्तार करनेके लिये वचन देकर चीनी सेनापतियोके पता पूछनेपर बहाना कर दिया, कि अमुरसना रूसियोके पास भाग गया । इसपर नाराज हो चीनी जेनरल तलतगा कजाकोंके देशमे घुसा । फिर कजाकोने उसे भुलावेमे डाला । उधर मगोलो और मचू सैनिकोको अपने जेनरलका आचरण बुरा लगा, इसलिये उनमेंसे बहुतेरे साथ छोडकर चले गये, और जेनरलको पीछे हटना पडा । इन लडाइयोमें सबसे बहादुर चीनी सेनापति हो मारा गया, और वही हालत कटमक सेनानायको—नीमा, पयार, सीला और मगलिक आदिकी हुई, जो कि अमुरसनाके विरुद्ध हो चीनकी ओरसे लडे थे । इस हारकी खबर मिलनेपर चीनसे एक

नई सेना आई, जिसने कजाकोको हरा उनके बहुत-से मुखियोको पकडकर पेकिंग भेज दिया, जहा उन्हे प्राणदड दिया गया।

जुगरो जैसी अजेय शक्तिको इतनी आसानीसे खतम करते चीनियोको कोई दिक्कत नही मालूम हुई, यह देखकर अवलई रूसका पक्ष छोड चीनकी ओर झुका, और कुछ समय बाद उसने चीनी सम्राट् चियान-लुङ (काउ-चुङ १७३५—९५ ई) की अधीनता स्वीकार की। सम्राट्ने इतने प्रभावशाली खानको अपना सामन्त बनते देखकर उसे राजा (वाङ) की उपाधि भेजी। अगले साल १७५७ ई० मे जब उसे अपने ओर्दूके साथ चीनी प्रजा घोषित करनेकी आज्ञा आई, तो अवलइने टालमटोल कर दिया।

१७५८ ई०मे मध्य-ओर्दूके एक भागके कजाक रूसी सीमापर आक्रमण कर दोनो ओरके करद २२० तारतारोको पकड ले गये, और इनका दूसरा भाग पूर्वकी ओर बढकर जुगर उच्छेद-से खाली पडी भूमिको आबाद किया। अवलइ जहा एक ओर चीनियोको विश्वास दिलाता था, कि मै सम्राट् का करद सामन्त हू, वहा दूसरी ओर उसने रूसको भी विश्वास दे रक्खा था, कि मै यह सब कुछ ऊपरी मनसे कर रहा ह, समय आनेपर मै रूसकी ओरसे चीनके साथ लडूगा। रूसी रानीने वडी प्रशसा करते हुये उसके लिये एक बहुमूल्य समूरी छाल भेजी। मध्य-ओर्दूका अधिकाश अवलइको अपना खान मानता था। रूसी नही चाहते थे, कि अवलइका प्रभाव और शक्ति अधिक वढे। उन्होने तब भी कूटनीतिसे ही काम लेना चाहा, और कहा, कि लघु-ओर्दूके नूरअली खानकी तरह तुम भी अपने पुत्रको जारके दरबारमे जामिन भेजकर सम्मान प्राप्त करनेकी प्रार्थना भेजो। अबलइने इसे पसन्द नही किया।

१७६० ई० मे मध्य-ओर्दूके कजाकोने चीनकी प्रजा बुरूतो (जगली किर्गिजो) पर आक्रमण किया। चीनियोने इसपर विरोध प्रकट करते हुए अपनी सेना अबलइको दड देनेके लिये भेजी। तीन ही वर्ष पहले जुगरोकी क्या दशा हुई, यह कजाक देख चुके थे, इसलिये उन्होने तुरन्त चीनियोकी अधीनता स्वीकार कर ली, लेकिन साथ ही रूसको प्रसन्न रखनेके लिये भी कितने ही बाश्किर और बराविन तारतार बदियोको उनके पास लौटा दिया। रूसी चाहते थ कि अवलइका सबध चीनसे न हो। १७६२ ई० मे उन्होने हुक्म दिया, कि कजाक वडोमे भेट बाटनी है, सीमान्तके पास घोडोके लिये अस्तबल, गाडियोके रखनेके लिये गाडीखाने, चारो ओर प्राकार और दूकानसे घिरा एक छोटा महल खासकरके खानके लिये बनाना है। वह महल पेत्रोपावलोव्स्कके सामने बना भी दिया गया है। रानी एकातेरिना II की गद्दीके समय अवलइ, ऐचुवक और लघु-ओर्दूके नूरअलीने भी राजभक्तिकी शपथ ली, यद्यपि अवलइ अब भी चीनियोकी अधीनताको मानता था। इस प्रकार उसकी चाल दोरगी थी।

चीनी सेना जुगरोको हरानेके बाद पश्चिमकी ओर बढती गई। उसने खोकन्द और ताशकन्दपर आक्रमण किया। इसपर वहाके शासकोने अफगानिस्तानके अमीर अहमदसे इस्लामके नामपर मदद मागी। काशगर और यारकन्द आदिके लोगोने भी जाकर काबुलपतिके पास गुहार की। अहमदशाह अब्दाली भारतमे भारी विजय (१७५६ ई०) प्राप्त करके काफी नाम कमा चुका था, इसलिये वह उत्तरसे आई गुहारको ठुकरा कैसे सकता था? उसने काफी सेना अन्तर्वेद की ओर भेजी। ताशकन्द और खोकन्दके बीचमें चीनी सेनासे बातचीत चलती रही, फिर सारे मध्य-एसियामे जहाद (धर्मयुद्ध) की घोपणा कर दी गई। उधर चीनियोने अवलइको सनद देकर इलीपर बसनेकी इजाजत देते हुये, दुश्मनोसे रक्षाका भार अपने ऊपर ले लिया। अवलइने अपने ससुर सुल्तान अहमद, कुछ कजाक अमीरो और उनके लडकोको जामिन बनाकर चीनियोके हाथमे दिया, और इस प्रकार अवलइ मुसलमानोके जहादमे शामिल नही हुआ।

रूसियोने कोल्चवली नदीपर १७६४ ई०मे एक छोटासा किला सेमीप्लातिन्स्क बनाया था, जो कजाकोके साथ व्यापार करनेका केन्द्र था। अबुल्मोहम्मद-पुत्र अबुल्फैज, तथा तुर्किस्तानके पुलाद खानके भाई अबुल्फैजके कहनेपर ही रूसियोने यह किया था। अबुल्फैज मध्यओर्दूके सबमे अधिक शक्तिशाली कबीले नैमनका मुखिया था। जुगारियामे रहनेके कारण अब वह चीनियोपर अधिक

निर्भर करता था। रूसियोंने अवलइको सेमीप्लातिन्स्कमें व्यापार करनेकी आज्ञा दे दी। कजाकोंने खेती सीखनेकी इच्छा प्रकट की, तो समुचित जामिन लेकर दस खेनी सिखानेवालोंको भी रूसियोंने भेज दिया। इतिहासके आदिकालसे अवतक खेतीसे अछूते कजाक जुगरोंकी भाति अव खेतीके महत्त्वको समझने लगे।

अव हम उस समयमें पहुचते है, जव कि १७७० ई०मे वोल्गा-नटसे तोर्गुत (कल्मक) भगे थे। कल्मकोका रास्ता अपने पुराने दुश्मन कजाकोंकी भूमिके वीचमे था। रूसियोंने भी उन्हे भडका रखा था, इसलिये अवलइ और उसके आदमियोंने सुल्तान अवुल्फ़ैजकी तरह कल्मकोपर आक्रमण करके वहुत लूट-मार की, और उनमेंसे भारी सख्याको अपना वन्दी वनाया।

१७७५ ई०में अवुल्फ़ैज तथा मध्य-ओर्दूके और कितने ही सरदारोंने साइवेरियाकी सीमापर जाकर रुसी प्रजा होनेकी आज्ञा मागी—प्रजा होनेका मतलव था वार्पिक पेंशन और भेंट-इनाम-की प्राप्ति। रूसियोंने कहा—"तुम तो पहले हीसे हमारी प्रजा हो।"

अवलइ अपनी चालाकी-चतुराईके वलपर वहुत शक्तिशाली वन गया, और वरावर रूस और चीनके वीचमे अपने दावपेच चलाता रहा। तो भी चीनकी ओर उसका झुकाव अधिक था, वह चीनी भाषा वोल भी सकता था। अपनी शक्तिको १७७१ ई०के वाद उसने अपनेको देश खुल्लमखुल्ला खान (राजा) कहना शुरू किया। कहासे यह पदवी मिली, पूछनेपर वह वडे अभिमानके साथ जवाव देता—तोर्गुतोंपर विजय प्राप्त करनेसे अवुल्मुहम्मदके मरनेपर तुर्किस्तान और ताशकन्दके कजाकोंने मुझे अपना खान निर्वाचित किया। अपने पूर्वजोंकी भाति वह भी चाहता था, कि मैं भी कजाकोंके सवसे वडे सत खोजा अह्मदकी समाधिके पास रहू। रूसियोंने दवाव दिया, कि अपने पुत्रको जामिन भेजकर जारसे खानकी पदवी प्राप्त करो। इसपर १७७७ ई०मे उसने अपने पुत्र तोगुमको खान-पदवी प्राप्त करनेकी प्रार्थनाके साथ पीतरवुर्ग भेजा। दरवारमे उसका अच्छा स्वागत हुआ, और २२ अक्टूवर १७७८ ई०को कुछ और भेंटोंके साथ खानकी उपाधिका शासनपत्र ओरेनवुर्ग के राज्यपालके पास भेज दिया गया। अवलइको सूचित किया गया, कि उपाधि प्राप्त करनेके लिये त्रोइतस्क या साइवेरियाके किसी दूसरे रूसी नगरमे आओ। अवलइने ऐसा करनेमे इन्कार कर दिया। इसपर उसे उसके डेरेमे एक रूसी अफसरके सामने शपथ दी गई। लेकिन अवलइ चीनियोंको नाराज नही करना चाहता था, इसलिये, उसने रूसी रानीकी भेजी हुई भेंटको स्वीकार नही किया। चूकि रूसियोंने वुरुतो (जगली किर्गिजो)के विरुद्ध मदद देनेसे इन्कार कर दिया था, इसलिये अवलइने अपने पासके रूसी वदियोंको वही लौटा दिया, और उन तुर्कमानोंको भी, जिन्हे कि तोर्गुत अपने साथ ला महायात्रामें कजाकोंके देशमें छोड गये थे। इसपर रूसियोंने नाराज हो अवलइकी पेंशन वन्द कर दी, और कुछ कजाक सुल्तानोंको भी उसके विरुद्ध उकसाया, जिन्होंने उसे पकडकर रूस ले जानेका असफल प्रयत्न किया। अवलइ वुरुतोंके विरुद्ध सफल अभियान करके तुर्किस्तान-शहर लौटा। उसने अपने लडके हादिलके लिये तलस नदीके तटपर एक प्राकारवद्ध महल वनवाया। पास हीमे महाओर्दूके कजाकों—जो कि इस समय अवलइकी प्रजा थे—के कहनेपर एक शहर भी वसाया, जहा कराकल्पक किसान आकर आवाद हो गये। वन्दी वनाकर लाये वुरुतोंको वह मध्य-ओर्दूके देशके उत्तरमें ले गया, जहा वह पीछे यार्नी-किर्गिज (नये किर्गिज)के नामसे प्रसिद्ध हुये। १७८१ ई०में अवलइ रुसी सीमान्तकी ओर जा रहा था, इसी समय ७० वर्षकी उमरमे उसका देहान्त हो गया। उसकी कब्र तुर्किस्तान शहरमे वनाई गई। चीनमे खवर मिली, तो वहासे एक विशेप अफसर भेजा गया, जिसने परिवारको जमाकर राजसी ढगसे अवलइकी अन्त्येष्टि-क्रिया कराई।

४ वली, अवलइ-पुत्र (१७८१–१८१८ ई०)

अवलइके मरनेपर मध्य-ओर्दूको महा-ओर्दूवाले वुरी तौरसे हराकर भारी सख्यामे उनके पशुओ को छीन ले गये। मध्य-ओर्दूकी शक्ति अव विखरने लगी। उसके उत्तरी भागने अवलइ-पुत्र वलीको अपना खान चुना, और प्रार्थना करनेपर रूसने उसे स्वीकार भी कर लिया। १७८२ ई०में लेफ्टेनेन्ट-जेनरल याकोवने वडी धूमधूमसे पेत्रोपावलोव्स्कमें वलीको खान घोपित किया, लेकिन मध्य-ओर्दूके

सबसे प्रभावशाली कबीले नैमनने वलीको न मजूर कर अबुल्‌मुहम्मद-पुत्र अबुल्‌फज (मृत्यु १७८३ ई०) को अपना खान चुना, जिसे चीनने मजूर कर लिया। लेकिन नैमनोमें भी सब एकराय नही थे। अबुल्‌फैजका पुत्र बुपू और दामाद खान खोजा बुर्राक-पुत्र इससे सहमत नही हुये। नैमनोमे काफी सख्या खान खोजाकी पक्षपाती थी, जिसे स्वीकार करते हुये चीनियोने अपना शासनपत्र भेजा। वलीको छोडकर अबलइके सारे सबधी रूस नही, बल्कि चीनके पक्षपाती थे। वलीके एक भाई जिंगिसने १७८४ ई०मे सेना ले जाकर ताशकन्दमे एक विद्रोहको दबाया। उसके दूसरे भाई सुल्तान तीजकी बुरूतोंसे भारी दुश्मनी थी। बुरूत लडाकू चीनी सेनाको भी अनेक बार पराजित कर चुके थे। सुल्तान तीजको भी उन्होने एक बार हराकर पकड लिया, और उसने अपने कई गुलामोको देकर छुट्टी पाई। वलीका बडा भाई बेर्दी खोजा चीनी सीमान्तपर रहनेवाले मध्य-ओर्दूके कजाको का शासक था। इसे भी लडाकू बुरूतोसे पाला पडा था, और इसने उन्हे कई बार हराया। १७८५ ई०में ऐयागुज नदीके तटपर इसने बुरूतो (जगली किर्गिजो)के विरुद्ध अपनी सबसे बडी और अतिम विजय प्राप्त की। लेकिन उस समय वह चीनी सेनाके सहायकके तौरपर लड रहा था, जिससे उत्साहित हो अपनी छोटी सेनाके साथ जब वह यिदिस्से नदीके तटपर पहुचकर कुमक आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय बुरूतोने आक्रमण करके उसे पकड लिया। तीजको अब प्राणो की आशा क्या हो सकती थी? उसने एक रक्षरक्षीको मार डाला, जिसपर बाकी टूट पडे, और उन्होने उसे हाथ-पैर अलग-अलग काट, पेटको चीरकर उसीके भीतर हाथो-पैरोको डालके मारा। पीछे तीजके भाई अककियक और उसके पुत्रो लेपेस तथा चोकाने युद्धमे हराकर बुरूत सरदारके पुत्रको पकडा, और उसे घर ले जाकर बेर्दी खोजाकी स्त्रियोको दे दिया, जिन्होंने उसे पीट-पीटकर मार डाला।

१७८६ ई०मे रूसियोने अबुलखैर-पुत्र नूरअलीको लघु-ओर्दूका खान बनाया।

इस समय मध्य-ओर्दूके उत्तरी भागमे शाति छाई हुई थी। इनके पडोसी थे महा-ओर्दू, लघु-ओर्दूके कजाक, रूसी, ताश्कन्द-तुर्किस्तान राज्यके शातिप्रिय निवासी। दूसरे पडोसी लडाकू बाश्किर, त्रोइत्स्कके पासमें रहते थे। दूसरी ओर बुरूत भी चैनसे रहने देना नही चाहते थे। मध्य-ओर्दूकी स्थिति इस समय दूसरे दोनो ओर्दुओसे कुछ बेहतर थी। महा-ओर्दू और लघु-ओर्दूकी अपेक्षा वह अधिक सस्कृत और स्थायी जीवन बिता रहा था, तथा अपने खानो और सुल्तानोकी बात मानते थे। वलीने भी अपने पिताकी तरह शक्ति-सचय करनेमे सफलता प्राप्त की। अस्त्राखानसे तोर्गुतोद्वारा छीने गये तुर्कमानोको लौटानेसे इन्कार करके उसने रूसियोको नाराज कर लिया। रूस-पक्षपाती अमीरोका भी वह दमन करता था। १७८९ ई०मे महा-ओर्दूके एक सुल्तान तुगुमके साथ वलीके ओर्दूके भी कितने ही लोग रूसमे चले गये, और रूसियोने उन्हे उस्त-कामेन्नोगोर्स्कके किलेके पास जगह देकर बसा दिया। १७९३ ई०मे जेनरल स्त्रान्दमानने जबर्दस्ती तुर्कमानोको वलीके हाथसे छुडाया, जिसकी शिकायत कजाक खानने रूसी रानीके पास की। बापकी तरह यह भी दुरगी चाल चल रहा था। १७९५ ई० मे इसने एक पुत्रको चीनमे अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा था। प्रजाको इसने अपने जुल्मोसे इतना नाराज कर दिया था, कि १७९५ ई०मे मध्य-ओर्दूके दो सुल्तान, उन्नीस जेठे, ४३३०८ अनुचरो तथा ७९००० दूसरे कजाकोने रानी एकातेरिनाIIसे प्रार्थना की, कि हमे वलीके पजेसे छुडाकर रूसी प्रजा बना लो। खानने इसपर क्षमा मागी। १७९५ ई०मे बाश्किरोके पडोसी मध्य-ओर्दूके एक दलने चेलियाबिन्स्क और त्रेत्स्ने उरालस्कमे जाकर लूट-मार की।

१७९८ ई०में पावलके शासनकालमे कजाकोके आपसी झगडोके मिटानेके लिये पेत्रो-पालोव्स्कमे रूसियो और कजाकोकी एक सम्मिलित अदालत बैठी, लेकिन उसने अपना काम १८०६ ई०मे शुरू किया। वली १८१८ ई०मे मरा। अन्तिम वर्षोमे कजाकोमे उसकी चलती नही थी, और कितने ही अमीर उसकी आज्ञा माननेसे इन्कार करते थे। इसपर जार अलेक्सान्द्रI (१८०१-२५ ई०)ने बोराक-पुत्र बूकेइको मध्य-ओर्दूका द्वितीय खान १८१६ ई०मे नियुक्त किया। बूकेइ भी १८१८ ई०मे मर गया, जिसके साथ ओर्दूके खानोकी परम्परा खतम हो गई, और उनके कजाक सीधे रूसी प्रजा हो गये, जिनके शासनके लिये रूसियोने एक विशेष प्रबन्ध कर रक्खा था।

ख. लघु-ओर्दू (१७४४–१८१२ ई०)

तेअवका, तौफीक या तवक्कल खान (१६९८-१७१८ ई०)के बाद श्वेत-ओर्दू तीन भागोमें विभक्त हो गया था, जिनमे लघु-ओर्दूके अमीर थे—यादिक खानके भाई उजियक सुल्तानके वशज। तेअवकाने अदिया (आइतिक)को लघु-ओर्दूके शासनका भार सौंपा। इस प्रकार अदिया लघु-ओर्दूका प्रथम खान था। लघु-ओर्दूके खानोंके नाम निम्न प्रकार है —

१ अदिया, जानीवेग वशज, ईरिश-पुत्र	—१७१७ ई०
२ अवुल्खैर, अदिया-पुत्र	१७१७–४९ "
३ नूरअली, अवुल्खैर-पुत्र	१७४९–९० "
४ एरअली, अवुल्खैर-पुत्र	१७९०–९४ "
५ इशिम, नूरअली-पुत्र	१७९४–९७ "
६ एचुवक, अवुल्खैर-पुत्र	१७९७–१८०५ "
७ जन्ती उरा, एचुवक-पुत्र	१८०५–९ "
८ शेरगाजी, एचुवक-पुत्र	–१८१२ "

१ अदिया, एतीयक, इरिश-पुत्र (–१७१७ ई०)

श्वेत-ओर्दूके अन्तिम खान तेअवका (तौफीक)ने इसे लघु-ओर्दूका शासक वनाया था, लेकिन अदियाके समय अभी लघु-ओर्दू अपने स्वतत्र अस्तित्वको कायम नही कर पाया था। यह काम उसके पुत्र अवुल्खैरने किया।

२ अवुलखैर, अदिया-पुत्र (१७१७–४९ ई०)

१७१७ ई०में अवुल्खैर भी तौफीक और काइपके साथ जुगरोंके विरुद्ध सहायता मागनेके लिये रूस गया था। वापके मरनेपर काइपके साथ अबुलखैरकी प्रतिद्वद्विता शुरू हो गई। १७१७ ई०मे रूसियोसे भी उसका झगडा हो गया, उसने कजान प्रदेशमे नवोशेशिमन्स्कतक लूट-मारकरके वहुतसे वन्दी पकड लिये। जुगरोंने भी लघु-ओर्दूकी लूट-मारोंसे तग आकर १७२३ ई० में उन्हे तुर्किस्तान-ताश्कन्द-सैरामसे भगा दिया। तवतक अवुलखैरने तुर्किस्तान शहरमें रहते अपनी शक्ति भी वहुत वढा ली थी। आपसी झगडोंसे जुगरोको लाभ और अपने वशका नाश देखकर उमने एक महापरिषद् वुलाकर फैसला कराना चाहा, जिसने अवुल्खैरको अपना मुखिया चुनकर सफेद घोडेकी कुर्वानी दी। लघु-ओर्दूने उसके नेतृत्वमे कई वार जुगरोको छोटी-मोटी हार दी, लेकिन इससे उनके राजा छेवङ्‌ अर्पचन (रब्तन)का कुछ विगडनेवाला नही था। जव जुगरोंने जोरका प्रहार किया, तो लघु-ओर्दूको पश्चिमकी ओर भागना पडा, और उन्होंने यम्वा नदीको पार हो तोर्गुतो (वोल्गा-कल्मको)को भगाकर यायिक(उराल)तक की भूमिको ले लिया। अव तोर्गुत उनके विरोधी हो गये और वादमे उरालके कसाक भी दुश्मन वन गये। इन दोनोंके प्रहारसे इन्हे इतनी हानि उठानी पडी, कि १७२६ ई०मे इनके प्रतिनिधियोंने जाकर रूसमे सरक्षण पानेकी प्रार्थना की, लेकिन उसमे वह सफल नही हुये। यद्यपि ओर्दूका वहुमत तैयार नही था, तो भी अवुल्खैरने इसीमे खैरियत समझकर १७३० ई०मे ऊफाके वोयवोद वूर्तुलिनके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र भेजा। दूत जुलाई १७३० ई०को ऊफा पहुचे, जहासे उन्हे पीतरवुर्ग भेज दिया गया। दूतोंने दरवारमे कल्मको (तोर्गुतो) वाश्किरो और उरा-कसाकोंके साथ लडाई करनेका वचन दिया—हम रूसके शत्रुओंमे लडनेके लिये सदा तैयार है, और यदि खीवा, कराकल्पक तथा अरबी कबीलोको दवानेके लिये हमे सैनिक दिये जाय, तो हम उनपर अभियान कर सकते है। उन्होने अपने ओर्दूकी ओरसे रूसी प्रजा होनेको स्वीकार किया, पीतरवुर्गमें इसके लिये वडी खुशी मनाई गई, क्योकि विना एक गोली दागे रूसको इतने नये प्रजाजन मिल गये। वाश्किर जव-तव रूसियोके विरुद्ध विद्रोह कर देते थे।

खीवावालोने हाल हीमे रूसी राजदूत राजुल बेकोविच-चेरकास्कीको मार डाला था, उसको भी बदला लेनेका मौका मिल रहा था। रानी अन्नाने सहायता और सरक्षण देनेका वचन-पत्र दिया। दूत जब अपने देशको लौटे, तो कजाक भूमिका नक्शा बनानेके लिये दो इजीनियर अफसर भी साथ कर दिये गये। सारा ओर्दू विरोधके लिये खडा हो गया। फिर एक बडी परिषद् बुलाई गई, और किसी तरह झगडा शात हुआ। १७३२ ई०म लघु-ओर्दूके अबुलखैर और मध्य-ओर्दूके शेमीअका खान दोनोने राजभक्तिकी शपथ ली। अबुलखैरने दश्तकिपचकको छोड सिर-दरियाके मुहानेपर अपना डेरा डाला वहाके कराकल्पकोको भी अपने अधीन करके रूसकी प्रजा बनाया।

जनवरी १७३४ ई०में अबुल्खैरका पुत्र एरली सुल्तान और भी कितने ही कजाक-मुखियोके साथ पीतरबुर्ग गया। रानीने उसका स्वागत करके बहुत इनाम दिया। एरलीने अबुल्खैर-परिवारमे खानकी पदवी पानेकी प्रार्थना की, और यह भी कहा, कि ओरी और उराल नदियोके सगमपर रूसी किला बनाया जाय, अपने आसपाससे जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अबुलखैरको मिले, तथा सैनिक सहायताके लिय कल्मको और बाश्किरोकी तरह समूरी छालके रूपमे भेट दी जाय। शर्तें मानना आसान था, लेकिन कजाक-जैसे कबीलोके लिये उनका पालन करना बहुत मुश्किल था। एक और भी बात थी कजाकोमें मुखिया या खानकी उतनी चलती नही थी। लोग जनतत्रताके अत्यन्त पक्षपाती थे, इसलिये खान द्वारा स्वीकृत शर्त-को माननेके लिये मजबूर नही थे। प्रसिद्ध भौगोलिक किरिलोफको कुछ इजीनियरोके साथ किला बनाने तथा नक्शा तैयार करनेके लिये भूमापक बनाकर भेजा गया। तीन अफसर, कुछ मिस्त्री और नाविक नाव बनानेके लिये, एक खनिज इजीनियर, कुछ तोपची-अफसर, एक वनस्पतिशास्त्री, एक चित्रकार, एक डाक्टर, कजाकोकी भाषा सीखनेके लिये कुछ तरुण विद्यार्थी किरिलोफके नेतृत्वमे भेजे गये। कजान पहुचनेपर एक रेजिमेट पैदल सेना, कुछ तोपखाना भी साथ हुआ। ऊफामे कसाकोकी एक पैदल बटालियन साथ हो गई। तेवकेलेफ नामक एक बाश्किरको कर्नलका दर्जा दे दुभाषिया नियुक्त किया गया। ऊफाकी आमदनी इस अभियानके खर्चके लिये निश्चित कर दी गई। किरिलोफको आज्ञा दी गई थी, कि ओरीके मुहानेपर नगर बसाकर लोगोको वहा बसनेके लिये आकृष्ट करे, तथा अबुल्खैरको खान उपाधिका शासन-पत्र प्रदान करे। शेमीअका, महा-ओर्दूके दूसरे मुखियो और कराकल्पकोके मुखियोको किरिलोफसे मिलनेके लिये हुक्म दिया गया था। यह भी हुक्म था, कि मध्य-ओर्दू और महा-ओर्दूके मुखियोको राजभक्तिकी शपथ लेनेके लिये कहे, एरलीको अच्छे रक्षियोके साथ उसके बापके पास भेजे, कजाकोको भेट-रिश्वत या कडे हाथोसे शान्त रक्खे, नये नगरमें उनके अमीरोको घर और मस्जिद बनाने और आसपासमे उनके पशुओके चरनेकी इजाजत दे, उराल (यायिक) नदीको सीमा मानकर कजाकोको उसके पार होनेसे मना करे, झगडोको तै करनेके लिये रूसियो और कजाक-बडोकी सम्मिलिति अदालत स्थापित करके देशके रीति-रवाजके अनुसार फैसला कराये। किरिलोफ १७ जुलाई १७३४ ई०को पीतरबुर्गसे चला।

उसी साल अबुलखैरने अपने पुत्र एरलीको फिर भेजा। किरिलोफ आगेके कामके लिये नेता था। १५ अगस्त १७३५ ई०मे ओरी और उराल नदियोके सगमपर उसने कोरेनबुर्गकी नीव डाली। रूसके इस प्रकार लगातार आगे बढनेको देखकर इस भूमिके घुमन्तू कबीले कैसे सतुष्ट रह सकते थे? उनमेंसे कुछने विद्रोह भी किया, लेकिन तोपो और बन्दूकोके सामने उनका क्या बस चलता? दीवारोके तैयार हो जानेपर १७३६ ई०के वसन्तमे अबुलखैरको आनेके लिये निमत्रण दिया गया, और ताशकन्दके व्यापारियोको भी ओरेनबुर्गकी मडीमे व्यापार करनेकी सलाह दी गई। इस समय सबसे ज्यादा विद्रोही थे बाश्किर, जिनके विरुद्ध रूसियोको सेना भेजनी पडी, और नये किले भी बनाने पडे, जिनमे उराल नदीके तटपर गुर्लिन्स्क, ओजेर्नया, स्रेदनी, त्रेर्दस्कोइ और किरिलोफ थे। समारा नदीके ऊपर भी कुछ किले बनाये गये, लेकिन रूसियोको अपने हितके लिये इससे भी ज्यादा आवश्यक यह था, कि वोल्गा-कलमको, बाश्किरो और कजाकोंके आपसी झगडे बराबर बने रहे।

किरिलोफ अप्रैल १७३७ ई०मे मर गया। इसी समय रूसी व्यापारियोका एक कारवा ताशकन्द जानेवाला था, जिसके साथ कप्तान येल्तन गया, जो पीछे भारतपर आक्रमण करने-

वाले नादिरशाहका नौकर हो गया। रूसकी ओरसे येल्तनको अराल समुद्रमे नौसचालन तथा सिरके मुहानेपर कैदियोंके लिये नगर बसानेके बारेमे विवरण देनेके लिये भेजा गया था। किरिलोफके मरनेके बाद उसकी जगह तातीशेफ नियुक्त किया गया। बाश्किर विद्रोहियोंको दबानेके लिये अबुल्खैरको उनपर मनमानी करनेकी छूट दे दी गई थी। उसने बाश्किरोंमें विद्रोही और और अविद्रोही का फर्क किये बिना सबके ऊपर भारी अत्याचार किये। उसीके बाद वही काम कजाकोंने कल्मकोपर आक्रमण करके किया, और वह कल्मकोको ही नहीं, बल्कि रूसियोको भी बन्दी बनाकर ले गये। बन्दी बनाकर ले जानेका मतलब था अन्तर्वेदमें उन्हे दासोंके बाजारमे बेच डालना। इसके कारण रूसी नाराज हो गये, और अबुल्खैरको, नूरअलीको जामिन बनाकर हटनेका हुक्म दिया। डरके मारे अबुल्खैर नही आया। अगस्त १७३८ ई०मे वह आनेको राजी हुआ। उसके आनेपर रास्तेकी दोनो तरफ पाती बाधे सेना खडी थी। जब वह उस तम्बूमें आया, जिसमे रूसी रानी अन्नाका चित्र रखा हुआ था, तो नौ तोपे दागकर उसके लिये सलामी दी गई। तातीशेफको सम्बोधित करते हुये उसने कहा—"परम-भट्टारिका महारानी उसी तरह दूसरे राजाओमे श्रेष्ठ है, जैसे सूर्यका प्रकाश तारोमे। यद्यपि दूर होनेसे मै उन्हे नही देख सकता, लेकिन उनके हितकारी प्रतापको मै अपने दिलमें महसूस करता हू। उनके प्रकाशद्वारा रोशनी पाकर मै रानीकी अधीनता और एक राजभक्त प्रजाकी तरह अपनी आज्ञाकारिताको घोषित करता हू। मै अपने परिवार और अपने ओर्दूको परमभट्टारिकाके सरक्षणमे एक शक्तिशाली बाजके पखके नीचे जैसे रखता हू, और सदाके लिये अधीन रहनेकी प्रतिज्ञा करता हू। साथ ही महान् जेनरल मै तुम्हारी ओर भी अपनी मित्रताका हाथ फैलाता हू।" फिर अबुल्खैरने हाथमें कुरान लेकर वफादारीकी कसम खाई, और रूसी बदियोंको लौटानेका वादा किया। यही नही, उसने अपनी स्त्री पपाइको भी दरबारमे भेंट-स्वरूप भेजनेकी इच्छा प्रकट की। इस प्रकार अबुल्खैर जैसे शक्तिशाली घुमन्तू खानको अपने अधीन पाकर रूसियोको भारी प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी।

१७३९ ई०में तातीशेफकी जगह राजुल उरुसोफ वोयवोद होकर आया। आते ही उसने सुना, कि लघु-ओर्दूवालोने दो रूसी कारवानोको लूट लिया। १७४० ई०मे अबुल्खैरने अपने तीन हजार कजाकोंको वोल्गा-कल्मकोको लूटनेके लिये भेजा। इसी बीचमे कुछ समयके लिये अबुल्खैर खीवाका खान भी बन गया था, लेकिन नादिरशाहने उसे वहा टिकने नही दिया। इस समय उसकी पूर्वी सीमान्तपर जुगरोका प्रताप छाया हुआ था। अबुल्खैर उन्हे भी खुश रखना चाहता था। जुगर कजाकोंके बार-बारके आक्रमणने तग आ गये। उन्होने दो बडी-बडी सेनायें मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूके विरुद्ध भेजी, और अबुल्खैरसे जामिन भेजनेके लिये कहा।

रूसी राज्यपाल नेप्लुयेफने इसे उचित नही समझा, कि रूसी प्रजा होते हुये अबुल्खैर जुगरोंके पास जामिन भेजे। १७४२ ई०मे शपथ लेते वक्त अबुल्खैर और दूसरोने यह वचन दिया था, कि हम जुगरोंसे छेडछाड नही करेंगे। अबुल्खैरने अपने पुत्रके स्थानपर किसी दूसरेको रूसी राज्यपालके यहा जामिन रखना चाहा, लेकिन रूसियोंने इसे नही माना। इसपर उसने कजाकोको भडकाया, और १७४३ ई०मे दो हजार कजाक आकर नये बसे शहर ओरेनबुर्गको लूट वहाके निवासियोको पकड ले गये। इन कजाकोंका नेता अबुल्खैरका सबधी दरवेशअली सुल्तान था।

अभीतक अबुल्खैर पर्देकी आडमे शिकार खेल रहा था, लेकिन १७४४ ई०मे उसने नकाब उठा फेका। अब उसके आदमी खुलकर रूसी कारवाको लूटने लगे। अन्तमे २४ अप्रैल १७४४ ई०को रूसियोंने कल्मक राजा दोण्डुब् यैचीको बारूद और शीशाके साथ पत्र लिखकर हुक्म भेजा, कि तुम अपने आदमियोंको जमा करके कजाकोपर हमला करो, जो भी लूटमे हाथ आये, वह तुम्हारा होगा। लेकिन यह पत्र भेजा नही जा सका, क्योकि इसी समय जुगर-कल्मकोका साइबेरियापर आक्रमण होनेवाला था, जिसमें अबुल्खैरके कजाकोंकी सहायता आवश्यक थी। अब भी अबुल्खैरकी लूट-मार बन्द नही हुई। उसके आदमी फर्वरी १७४६ ई० और जनवरी १७४७ ई०में जमे हुये कास्पियनपरसे होकर वोल्गा-कल्मकोको लूटने गये। बहुत इधर-उधर करनेके बाद १७४८ ई०की गर्मियोमें अबुल्खैरने खोजा अहमदकी जगहपर अपने पुत्र ऐचुवक तथा कुछ दूसरे कजाक अमीरोंके लडकोंको जामिन देना स्वीकार किया, और यह भी वचन दिया, कि मै अपने पासके रूसी बदियोको लौटा दूगा, और मेरे

आदमी फिर साम्राज्यपर आक्रमण नही करेंगे । इधर वह रूससे इस तरहकी प्रतिज्ञाये कर रहा था, और उधर चुपचाप जुगरोके खुङ-थैंचीको अपनी लडकी देनेकी बात चला रहा था।

अपने स्थानपर लौटनेके बाद लोगोको जमाकर अबुल्खैरने कराकल्पकोपर चढाई की, लेकिन मध्य-ओर्दूके शक्तिशाली कबीले नैमनका एक अत्यन्त प्रभावशाली खान बुर्राक कराकल्पकोको अपनी प्रजा कहता था। अबुल्खैरकी रूसने जो आवभगत की थी, उससे भी बुर्राक जल-भुन गया था। दोनोकी लडाई हुई, जिसमे अबुल्खैरको हारकर भागना पडा । बुर्राक-पुत्र शिगाईने दौडकर उसे घोडेसे उतार भाला घुसेड दिया, इसी समय बुर्राक आ पहुचा, जिसने अपने हाथो अबुल्खैरको खतम किया । फिर वह कराकल्पकोको लूटने गया, लेकिन कराकल्पकोके रक्षक अब रूसी थे जिनके डरके मारे उसने तुर्किस्तान लौट इकान, सिगनक और ओतरारपर अधिकार किया । पर जैसा कि पहले कहा, अगले ही साल १७४९ ई०मे दो पुत्रो सहित उसे जहर देकर मार डाला गया—कहते हैं, इसमे जुगर खुङ-थैंशी छेवङ दोर्जेका भी हाथ था, जिसके पास अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीने बापकी निर्मम हत्याकी शिकायत की थी । अबुल्खैरकी कब्र उल्किया नदीकी शाखा कादिर नदीके पास अक्षाश ५०° ३० देशान्तर ८६°-०१० मे मौजूद है ।

३ नूरअली, अबुल्खैर-पुत्र (१७४९–९० ई०)

अबुल्खैरके मरनेके बाद राज्यपाल नेप्लुयेफके प्रयत्नसे अबुल्खैर-पुत्र नूर अलीको खान चुना गया। वह लघु-ओर्दू और मध्य-ओर्दू दोनोका खान बनना चाहता था, पर रूसियोने २६ फरवरी १७३९ ई० को शासनपत्र भेज उसे किर्गिज-कजाकोका खान बनाया। नूरअलीकी मा पपाईका प्रभाव कजाको और पीतरबुर्ग दोनोमे था । ओरेनबुर्गमें नूरअलीको बडे ठाट-बाटके साथ खान घोषित करनेकी रसम अदा हुई। उसे दरबारी खिलअत, टोपी और तलवार दी गई, फिर घुटने टेककर उसने राजभक्तिकी शपथ ली । ओर्दूमे लौटनेपर जुगर खुङ-थैंचीका दूत आ मिला, जिसने उसकी वागदत्ता बहिनको मागा। उसने यह भी कहा, कि खुङ-थैंची तुर्किस्तान शहरको तुम्हे देनेके लिये तैयार है, जहापर तुम्हारे बाप-दादोकी हड्डिया कब्रिममें गडी हुई है। लेकिन नूरअलीके सुल्तान और ओर्दूके मुखिया रूसियोको नाराज नही करना चाहते । रूसी जुगरोकी ताक़तको समझते थे, जिनके प्रभुत्वको महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दू मानता था, और दोनो मध्य-एसियाई उनके हाथोसे बाहर जानेकी शक्ति नही रखते थे । इसलिये उन्होने खुङ-थैंचीको नूरअलीका बहनोई बननेसे रोका । १७५० ई०मे बहिन मर गई, सदेह था, वह स्वाभाविक मौतसे नही मरी । अबुल्खैर और काइपमे प्रतिद्वद्विता चलती रही । काइप-पुत्र बातिर (बहादुर)को लघु-ओर्दूके एक भागने अपना खान चुना । फिर बातिर-पुत्र काइप II खीवाका शासक चुना गया । बातिरने खीवासे बुखारा जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेनेकी माग की, जिसे कुछ अशमें रूसियोने मजूर भी कर लिया, इसपर नूरअली नाराज हो गया । नूरअलीके भाई ऐचुवकने १७५० ई० के वसन्तमे शातिप्रिय कबीला अरालीपर आक्रमण किया, जो कि खीवाके खानके अधीन था । इसका बदला लेनेके लिये खीवा-खान काइपने खीवामें व्यापारके लिये गये नूरअलीके लोगो तथा उसके दूतको बन्दी बना लिया, और लूटे माल तथा बन्दी अरालियोको लौटा दिया। एचुवकके दूसरे भाई एरलीने कराकल्पकोपर हाथ मारा, लेकिन यहा मुकाबिला निर्बलोसे नही था, इसलिये एरलीके अधिकाश आदमी मारे गये, और स्वय एरली भी कितने ही महीनोतक कराकल्पकोका बन्दी रहा ।

नूरअली नही पसद करता था, कि खीवाके कारवासे बातिर छेड-छाड करे । १७५३ ई० मे उसने एक रूसी कारवाको खीवा जाते वक्त लुटवा लिया, ऐसी ही और भी कितनी ही मनमानिया की, जिसकी शिकायत करनेपर उसने जवाब दिया—"बातिर और उसके पुत्र काइपने जो अत्याचार किये, उन्हीके कारण ऐसा हुआ। वह रूसके इलाकेपर हमला करना चाहते है, यदि मुझे दस हजार सेना और तोपखाना मिले, तो मै चन्द दिनोमे उन्हे दबा सकता हू । रूसियोने इसे स्वीकार नही किया। खीवावालोके साथ झगडा होनेपर रूसियोने नूरअलीको खीवापर आक्रमण

करनेके लिये उकसाया। नूरअलीने अपने ओर्दूके मुखियोंको राय लेनेके लिये बुलाया, लेकिन दुआ देनेवाले खोजा (सैयद)के बीचमें पड जानेपर सीवा और लघु-ओर्दूका झगडा रुक गया।

१७५५ ई०में वाश्किरोंने रूसियोंके खिलाफ विद्रोह कर दिया। मुल्ला वातिर शाहने उन्हें काफिरों (रूसियों)के विरुद्ध भडकाया, और कजानके तारतारों तथा कजाक-ओर्दूमें भी जहाद करनेके लिये कहा। उनमेंसे कुछने रूसी वस्तियोंको लूटा-मारा। इसपर राज्यपाल तथा कमांडर नेप्लुइयेफने कजाकोंके शत्रुओं—दोन-कमाक, कलमक, मेश्केरियक, तेपियर आदि कबीलोंमें महायता ली। ओरेनवुर्गके अखुन (जिलेके अमीर शरियत या धर्माचार्य)ने फतवा दिया, कि रूसियोंके मार भगानेके वाद कजाकोंको वाश्किर खतम कर डालेंगे, इसलिये रूसके खिलाफ नहीं लडना चाहिये। रूसी राज्यपालने फतवाको कजाकोंमें वटवाया। रूसी दरवारकी सहमतिके साथ उसने कजाक खान और सुल्तानोंको वचन दिया, कि उनके वीचमें रहनेवाले सभी वाश्किर औरतों और वच्चोंको हम इस शर्तपर तुम्हारे हवाले कर देंगे कि तुम उनके पुरुषोंको सीमान्तसे वाहर भगा दो। इस समय विद्रोहके कारण वहुत भारी सख्यामें वाश्किर भागकर यायिक (उराल) नदीके पार चले गये थे। लोभी कजाक ऐसे मौकेसे फायदा उठाये विना कैसे रह सकते थे, उन्होंने इन सभी अभागे लोगोंको पकड लिया। वाश्किर मरदोंमें प्रतिरोध करनेकी शक्ति नहीं थी, उनमेंसे कितने ही मारे गये, और कितनों हीको कजाकोंने पकडकर रूसियोंके हाथमें दे दिया, और कुछ देश लौट वदला लेनेकी तैयारी करने लगे। रूसियोंने उन्हें भीतर-भीतर सहायता दी। फिर वाश्किर वडी सख्यामें यायिक पार हो कजाकोंके ऊपर पडे। रूसी दोनों जातियोंमें दुश्मनीकी आग भडकाकर चैनकी वशी वजाने लगे। वश्किरों और कजाकोंका झगडा अव ीढियोंके लिये जारी हो गया। अपनी सीमान्तकी रक्षाके लिये जारशाहीने क्या-क्या तरीके इस्तेमाल किये, इसका एक उदाहरण देखिये—अभी रूसी इतने साधन-सम्पन्न नहीं थे कि सीमान्तपर अपने वलपर शांति स्थापन कर सकते। नूरअलीने इसकी शिकायत जव रूसियोंके पास की, तो उन्होंने जवाव दिया—"वाश्किर भगोडोंको शरण देनेका यह फल है।" जव वाश्किरों और कजाकोंका खूनी सघर्ष काफी हो चुका, और दोनों जातियां खूव कमजोर हो गईं, तो नेप्लुइयेफने यायिक नदीको दोनोंके वीचमें सीमा निश्चित करके उसे पार करना निषिद्ध कर दिया। थोडे दिनोंके लिये झगडा रुक गया, लेकिन कवीलोंकी वदला लेनेकी प्रवृत्ति कितने दिनोंतक रुक सकती थी? फिर वह एक दूसरेके इलाकेमें घुसकर लूट-मार करने लगे, यदि सरदार रोकना चाहता, तो उसे काफिर रूसियोंका आदमी कहकर वदनाम करते। इसी वीचमें प्रुशिया (जर्मनी) के साथ रूसका सप्तवर्षीय युद्ध छिड गया, इसलिये रूसियोंका सारा ध्यान उधर खिंच गया।

१७५७ ई०में कलमक शासक दोण्डुव्-थैचीने नूरअली और क्रिमियाके खानसे कहा, कि आओ मिलकर रूसियोंके ऊपर हमला करें। लेकिन इसी समय चीनियोंने आक्रमण करके जुगर-साम्राज्यको खतम कर दिया, और विजयी चीनी सेनाके कारण रूसी सीमान्त खतरेमें पड गया। नूरअली रूसियोंकी शहरपर चीनियोंसे लडनेके लिये तैयार था, लेकिन चीनी सेना जुगरोंके प्रभावक्षेत्रसे आगे नहीं वढी।

१७५९ ई०में ओरेनवुर्गमें नया रूसी राज्यपाल था, जिसने नूरअलीके साथ उचित शिष्टाचार नहीं दिखलाया, जिसपर कजाकोंने फिर लूट-मार शुरू कर दी, और रूसी भी वदला लेने लगे। एर्चुवकने जुगारियामें चले चलनेका प्रस्ताव किया। इसकी भनक मिलनेपर रूसियोंने वार्षिक पेंशन और दूसरे माम-दानके हथियारोंसे कजाकोंको ठंडा कर दिया, और ओरेनवुर्गके हाकिमोंको हिदायत दी, कि कजाकोंके साथ वहुत अच्छी तरह वर्ताव किया जाय, उनमें उदारताके साथ भेंटें वांटी जायं, जाडोंमें उनके ढोरों और घोडोंके रहनेके लिये गोशालायें और अस्तवल वना दिये जायं। रूसी समझ रहे थे, कि ऐसा न करनेपर कजाक चीनियोंकी सीमान्तकी ओर चले जायेंगे, और लघु-ओर्दूका यह इलाका तथा मध्य-एसियाका वणिक्पथ निर्जन और उजाड हो जायेगा।

१७६२ ई० में एकातेरिना II जव गद्दीपर वैठी, तो उस समय नूरअली, एर्चुवक तथा मध्य-ओर्दूके अवलई खानने भेंटें भेजीं, लेकिन उसी समय नूरअलीने पेकिंगमें भी एक दूतमंडल भेजा, जिसका

वहा अच्छा स्वागत हुआ। इसपर फूलकर नूरअलीने रूसियोके साथ अपने लोगोकी छेडछाडको नही रोका। इसके बाद उसने वोल्गा-कल्मकोपर भी आक्रमण किये। उस समय जाडोमे उत्तरी कास्पियन समुद्र जम गया था, इसलिये बर्फपरसे होकर आक्रमण करनेमे उसको सुभीता था। रूसियोने यायिक नदीकी सीमा निश्चित की थी, लेकिन अब नूरअली उसके पश्चिममें जाडा बितानेकी माग करने लगा। जुगरोके ऊपर विजय प्राप्त करके चीनी सेनाको सामने खडी देखकर मध्य-एसियाके मुस्लिम राज्य अपने घरू झगडोको भूलकर थोडे समयके लिये एक हो गये। नूरअली भी उनके साथ था। १७६४ ई०मे नूरअलीने रानी एकतेरिनाको लिखा, कि मध्य-एसियाके मुसलमानोने मुझे निमन्त्रित किया है। साथ ही उसने रूसी इलाकेमे लूट-मार भी जारी रक्खी। १७६५, १७६६ और १७६७ई०मे इस तरहके कई हमले किये। इसके बाद १७७० ई० का वह समय आया, जब कि तोर्गुत-मगोल वोल्गाके तटको छोडकर पूर्वकी ओर भागने लगे। तोर्गुतोके भागनेमे जहा चीन-सम्राट् और दलाई लामाकी प्रेरणा काम कर रही थी, वहा कजाकोके बार-बारके आक्रमणसे भी वह तग आ गये थे। रूसियोने तोर्गुतोको रोकनेके लिये नूरअली और उसके कजाकोको कहा। काफिर तोर्गुतोकी लूट-मार मुसलमान कजाकोके लिये पुण्य-अर्जनकी बात थी। नूरअली, उसका भाई एचुवक, खीवा का भूतपूर्व और अब लघु-ओर्दूका एक खान काइप अपने आदमियोके साथ अभागे प्रवासियोपर टूट पडे। इन भयकर दुश्मनोने चीनी सीमान्ततक उनका पीछा किया। कभी-कभी कल्मकोने भी उन्हे हराया—सागिजके पास कजाकोको भारी हार खानी पडी, लेकिन मुगजर पहाड और इशिम नदी के तटपर कजाकोने अधिक सफलता पाई।

१७७३-७४ ई०मे पुगाचेफके नेतृत्वमे वोल्गाके किसानोने विद्रोह कर रक्खा था, यायिकके कसाक और वाश्किर भी उसके साथ थे। दोनो ही कजाकोके शत्रु थे, इसलिये वह विद्रोहमे शामिल नही हुये, हा, देशकी गडबडीसे लाभ उठाकर रूसी बस्तियोको लूटनेमे वह पीछे नही रहे, जिसके लिये १७७४ ई०मे रूसियोने भी इनकी खूब मरम्मत की। इसी समय नूरअलीके पुत्र पीरअलीको खीवा और सराइचुकके बीचके तुर्कमानोने अपना खान चुना, और उसने खीवा जानवाले कारवासे कर लेना शुरू किया। कजाकोने जो लूट-मार की थी, उसका बदला लेनेके लिये १७८४ ई०मे ३४६२ रूसी सैनिकोने यायिक पार हो असली लुटेरोको न पा दूसरे ४३ कजाकोको पकड लिया, जिसपर सिरिमके नेतृत्वमे कजाकोने भी जवाब दिया। अगले साल (१७८५ ई०) मे दो डिवीजन रूसी सेना यम्बाकी ओर बढी, जिसने २३० औरत बच्चोको पकड लिया, और कजाकोने मजबूर होकर उनके बदलेमे रूसी बदियोको लौटाया। कजाकोके साथके झगडेको मिटानेके लिये १६ आदमियोकी एक विशेष अदालत बैठाई गई, जिसमे ओरेनवुर्गका सेनापति, दो सरकारी, दो व्यापारी, दो किसान इस प्रकार सात रूसी और एक सुल्तान तथा छ मुखिया—सात कजाक, एक बाश्किर और एक मेशकेरी प्रतिनिधि थे। इस अदालतने शाति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। रूसियोने यह भी देखा, कि लडाकू कजाकोको केवल तलवारके बलपर नही दवाया जा सकता, इसलिये १७८५ ई०मे ओरेनवुर्ग और त्रोइत्स्कमे कजाकोके लिये मदरसा, मस्जिदे और कारवासराय बनानेका हुक्म दिया। रूसियोके सामने वही समस्या थी, जो कि हिन्दुस्तान छोडकर जानेतक पश्चिमोत्तर सीमान्तपर अग्रजोके सामने।

१७८५ ई०मे नये राज्यपाल वैरन इगेल्स्त्रोमने कजाकोको दबानेके लिय एक नया तरीका इस्तेमाल किया। उसने लघु-ओर्दूके तीन टुकडे—सेमीरोद्सक, वेउलिन और अलीमुल—करके उनपर अलग-अलग खान नियुक्त किये, और लघु-ओर्दूके खान पदको उठा देना चाहा। साथ ही कजाकोकी महापरिषद् बुलानेका अधिकार खानके हाथमे न रख सुल्तानो और जेठोके हाथमे दे दिया। लेकिन इस तरह महापरिषद् बुलानेपर अपमान समझकर कोई कजाक सुल्तान उसमे शामिल नही हुआ, तो भी परिषद् जमा हुई, और उसका सभापति डाकू नेता सिरिम बातिर बना, जो कि आनुवशिक कुलीनताका विरोधी था। उसने जोर देकर कहा—हमे खानकी जरूरत नही। कुल नही योग्यताको देखना चाहिये। रूसियोकी अधीनता स्वीकार करना ही हमारी भलाईका एकमात्र रास्ता है। उसने रूसियोसे माग की, कि अबुल्खैरके वशको खान-पदसे वचित कर दो। रूसियोने आशिक रूपसे उसकी बात मान भी ली। १७८६ ई०मे उसका अच्छा परिणाम भी दिखाई पडा, जब कि पहलेकी अपेक्षा अधिक पशु

सीमान्तके मेलोमें विकनेके लिये आये और १७८६ और १७८७ ई०मे पहलेकी अपेक्षा कम रूसी कजाकोंके वन्दी वने। कजाकोंने पहलेके रूसी वदियोंको भी भारी सख्यामे छोड दिया। १७८४ ई०में यायिक (उराल) नदीके पश्चिममें पैंतालीस हजार कजाक परिवारोंने आरामसे जाडा विताया। वातिर (सिरिम) ओरेनवुर्गके राज्यपालका वडा ही विश्वासपात्र आदमी हो गया। नूरअलीने उसे विश्वास-घाती वनानेकी वहुत कोशिश की, लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ। नूरअली इसपर ठडा पड गया। उसने रूसी वदियोंको लौटा दिया। अन्तमें रूसियोंने उसे परिवार-सहित ऊफामें और एचुवकको उराल्स्कमें भेज दिया।

नूरअलीके ज्येष्ठ पुत्र एरलीको १७८१ ई०में कराकल्पकोंने अपना खान वनाया था। वह उनके साथ निम्न सिर-उपत्यकामे रहता था। वह थोडी-सी सेना लेकर अपने पिताके दुश्मन सिरिम वातिरके ऊपर चढा। इसी समय लघु-ओर्दूके कुछ कवीलोंने भूतपूर्व खीवा-खान काइपको अपना खान वना लिया था, कुछने नूरअली या दूसरेके लिये राज्यपाल इगेल्स्त्रोमके पास आवेदनपत्र दिया था, लेकिन इगेल्स्त्रोम काइपके पक्षमे था, जिससे रानी एकातरिना सहमत नहीं हुई। वह चाहती थी, कि खानका पद उठा दिया जाय। मध्य-ओर्दूका आग्रह था, कि नूरअलीको फिर खान वना दिया जाय। वेउलिन कवीलेका मुखिया सिरिम वातिर दो सहायकोंके साथ ओर्दूके एक भागका नेता था। रूसियोंने इन्हे सरकारी पदाधिकारी-सा वनाकर नक्द और अनाजके रूपमे वेतन मुकर्रर कर दिया। कजाक-ओर्दूमे यह सव होते देख पीढियोंसे चले आते खान्दानी अमीर अधिकार-वचित होनेके कारण भीतर ही भीतर जले-भुने हुये थे। इसी समय तुर्कोंके साथ रूसियोंकी लडाई छिड गई, वुखाराने अपने खलीफा और धर्मभाइयोंका साथ दिया और कजाकोंको भी रूसियोंके खिलाफ भडकानेकी पूरी कोशिश की—"वहादुर योद्धा, वेग और मुखिया सरतइवेग, सिरिम वातिर, शुकुरअली वेग, सादिरवेग, वोर्राक वातिर, देदाने वातिर आदिको मालूम हो, कि हम ने तुर्कोंके वादशाह, और अल्लाके खलीफासे सुना है, कि सात ईसाई राज्योंके साथ काफिर रूमी तुर्कोंके विरुद्ध एक हो गये हैं। कजाकोंको चाहिये, कि उन्हे दड देनेके लिये सच्चे मुसलमानोंका साथ दे।" वुखारा सारे मध्य-एसियाकी काशी थी, जहाके मदरसोंमें पढनेके लिये कजाक-कवीलोंके तरुण भी आया करते थे। सिरिमने जवाव दिया, कि मै और मेरे लोग इस वातकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि कव वुखारा और दूसरे मध्य-एसियाई लोग रूसियोंपर आक्रमण करें, तो हम उनका साथ दे। कजाकोंके भीतर क्या हो रहा है, इसका पता रूसियोंको भी था। कजाकोंने फिर लूट-मार शुरू की। उन्होंने अपने जेठोंकी वात नहीं मानी। जेठोंका काम था ओरेनवुर्ग जाकर अपनी तनखा ले आना। रूसियोंकी परेशानीसे फायदा उठाकर कितने कजाकों और उनके सुल्तानोंने फिरसे खानके नियुक्त करनेके लिये कहा। १७९० ई० मे नूरअली ऊफामें रहते हुये मर गया, तवतक रूसी रानी खानके पदको फिरसे कायम करनेके पक्षमें हो चुकी थी।

४. एरली, अवुल्खैर-पुत्र (१७९०–९४ ई०)

जनवरी १७९० ई०में रानीके हुक्मसे नूरअलीके भाई एरलीको लघु-ओर्दूका खान वनाया गया। १७९१ ई० मे सिरिम वातिरने यम्वाके मुहानेपर सारे लघु-ओर्दूकी परिषद् वुलाई, जिसमें यह प्रस्ताव रक्खा, कि सभी कजाक एक होकर रूसियोंपर आक्रमण करें, लेकिन अवुल्खैरके वशजोंने अपने खान्दानके दुश्मन सिरिमकी वातको विफल करनेकी पूरी कोशिश की। ६ सितम्वरको उसी साल नूरअलीके पुत्र तुर्किस्तान-खान पीरअलीने रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये अर्जी दी। काइप-पुत्र अवुल्गाजीने उसे यह कहकर वहुत भडकाया, कि तुम्हे न चुनकर एरलीको खान वनाना अन्याय है। उसने कुरानके वाक्यको उद्धृत करते हुए यह भी समझानेकी कोशिश की, कि किसी मुसलमानका हिजरत कर ईसाईकी प्रजा होना धर्मविरुद्ध है, इसलिये हमे रूसी प्रदेश छोड देना चाहिये। वुखाराका खान मेरा दोस्त है, वहा हमें रहनेको जगह मिल जायगी। इस सवका परिणाम यही हुआ, कि कजाकोंने लूट-मार वढा दी। एरली खानने रूससे सेनाकी मदद चाही, लेकिन वह न मिली। जून १७९४ ई०में एरली मर गया।

५. इशिम, नूरअली-पुत्र (१७९४–९७ ई०)

लघु-ओर्दूके अधिकाश जेठे सहमत नही थे, तो भी रूसियोने इशिम सुल्तानको खान वनाया। सिरिम वातिरने एकाएक नवम्बर १७९७ ई०में क्रास्नोयार्स्कके दुर्गपर आक्रमण करके इशिमको मार डाला और उसकी सम्पत्ति लूट ली। सिरिमके अनुयायी कजाक वरावर ऐसा ही करने लगे, जिसका वदला यायिकके कसाकोने १७९७ ई० और १७९८ ई० मे आक्रमण करके उनके वहुतेरे आदमियोको मार हजारो घोडोको लूट कर लिया। कुछ ही समय वाद वाश्किरोने भी कजाकोको लूटना-मारना शुरू किया।

६ ऐचुवक, अबुल्खैर-पुत्र (१७९७–१८०५ ई०)

इशिमके मारे जानेके वाद लघु-ओर्दूके शासनका भार एक परिषद्के हाथमे दिया गया, जिसका प्रधान ऐचुवकको वनाया गया। इस परिषद्मे ओर्दूके प्रत्येक कवीलेके दो-दो प्रतिनिधि थे। इस समय वैरन इगेल्स्त्रोम फिर राज्यपाल होकर आया था। लघु-ओर्दूकी सरकारका केंद्र खोव्दा नदीपर रखना निश्चित हुआ। ओर्दू इस प्रवधसे सतुष्ट नही था। उन्होनें फिर अपने लिये खानकी माग की। रूसियो ने ऐचुवकका समर्थन किया, रूपयें-पैसोके वलपर ऐचुवक खान निर्वाचित हो गया और जार पावलनें भी स्वीकृतिकी मुहर लगा दी। ऐचुवक वूढा था। वह कजाकोको कावूमें नही रख सकता था। ओर्दूमे अव विखराव शुरू हुआ। उनमेंसे कुछ कवीले मध्य-ओर्दूमें मिल गये, कुछने सिर नदीके तटपर जा कराकल्पकोको दवाकर काइप-पुत्र अवुल्गाजीको अपना खान चुना। कुछने उस्तउर्तके अधिकाश भागपर अधिकार करके वहासे तुर्कमानोको भगा दिया। नूरअली-पुत्र वकेइ ऐचुवकके परिषद्का सभापति था। उसने गुर्जी-अस्त्राखानके महाराज्यपाल क्नोरिंगके पास प्रार्थनापत्र भेजा, कि हमें कल्मकोद्वारा परित्यक्त भूमि (यायिक-वोल्गाके वीचके इलाके रिन्पेस्की) मे रहनेकी इजाजत दी जाय। उनमे व्यवस्था कायम रखनेके लिये सौ कसाक नियुक्त कर ११ मार्च १८०१ ई०के उकाज (राजादेश) द्वारा सरकारने मजूरी दे दी। ये कजाक मुख्यत वाउलिन कवीलेके थे, जिनकी सख्या दस हजार थी। नई भूमिमे आकर वह खूव फलने-फूलने लगे, और सात-आठ सालके भीतर ही उनके पास पहलेसे दस गुना पशु हो गये, जब कि यायिक पारवाले उनके भाई फूट और भूखकी मारसे अपने वच्चोको रूसियोके हाथ वेच रहे थे।

१८०५ ई० मे वुढापेके कारण ऐचुवकने अपने पदको छोड दिया।

७ जन्ती उरा, ऐचुवक-पुत्र (१८०५–९ ई०)

नया खान थोडे ही समयतक रहा, जिसके वाद नूरअलीके एक पुत्रने उसे कत्ल कर दिया। दो सालतक लघु-ओर्दूका कोई खान नही वनाया गया। इसी समय १८१०ई०मे ओरेनवुर्ग प्रदेशके इलेत्स्क इलाकेमे—जहापर कि नमककी वडी अच्छी खाने थी—लाकर वहुत भारी सख्यामे रूसी वसा दिये गये। कजाकोंके वीचमे रूसियोकी वस्तियोको वसा-वसाकर जारशाही अपने शासनको दृढ करती थी, यह हम प्रशान्त महासागरतक फैली हुई रूसी वस्तियोसे जानते है। इस वातमें उनकी नीति, भारतमे अग्रेजोसे भिन्न थी। अग्रेज हिन्दुस्तानमे केवल अपने शासको, सैनिको और कुछ व्यापारियोको रखकर शासन और शोषण जारी रखना चाहते थे, जव कि रूसी अपने अधीन पूर्वी देशोमे भारी सख्यामें रूसी किसानो और मजदूरोको लाकर वसाते जाते थे।

८ शेरगाजी, ऐचुवक-पुत्र (१८१२–४४ ई०)

भाईकी जगहपर शेरगाजी लघु-ओर्दूका खान वना। इसी समय यायिक और वोल्गाके वीचमे वसे वुकेई-कवीलेका भी एक खान वुकेई था। १८२४ ई०में उसके मर जानेपर वुकेईके ज्येष्ठ पुत्र जहागीरको खान नियुक्त किया गया। शेरगाजीके ओर्दूके भी तीन टुकडे हो गये थे, जिनपर

तीन सुल्तान शासन करते थे। किर्गिज लोगोमें अपने राजवशके प्रति बहुत सम्मान था, और वह काली हड्डीवाले (साधारण जनता) सफेद हड्डी (पुराने राजवश) के जूयेको बडी खुशीसे उठानेके लिये तैयार थे।

अब कास्पियनके पूर्वी तटपर भी रूसने हाथ-पैर फैलाना शुरू किया था। १८३३ ई०मे वहा उन्होने नवोअलेक्सान्द्रोव्स्की, फिर मगुश्लक (मगिश्लक) किलोको बनाया। १८३५ ई०मे यायिक (उराल) और उई नदियोके बीचमें एक नई दुर्ग-पक्ति बनाई, और इसके बीचमे पडनेवाली भूमि ओरेनबुर्गके कसाकोंके इलाकेमें मिला दी गई। कुछ ही साल बाद मध्य-ओर्दूके प्रसिद्ध खान केनीसर कासिमोफने साइबेरियाके कजाकोमे भारी विद्रोह फैलाया, और लघु-ओर्दूके भी कुछ कजाक विद्रोहियोमे जा मिले। इस विद्रोहने छ सालतक रूसी सरकारको परेशान रक्खा। १८४४ ई०मे रूसी सेनाने कासिमोफका पीछा करके उसे बुरुतो (करा-किर्गिजो)मे भागनेके लिये मजबूर किया, जहा उनमे लडते हुये कासिमोफ मारा गया। इस विद्रोहके दबानेके प्रयत्नके फलस्वरूप तुरगाई नदीपर ओरेनबुर्ग-इर्गिजपर उरालके किले १८४७ ई०मे बने। अगले साल करावुलात-तटपर उसी नामका एक रूसी किला बनाया गया। रूसी सीमाके भीतर रहनेवाले कजाकोपर खोकन्दी और खीवावाले लूट-मार किया करते थे, जिसके प्रतिरोधके लिये रूसियोने १८४७ ई०मे ही निम्न-सिरपर अराल्स्क (भूतपूर्व राइम्स्क)का किला बनाया। इस प्रकार रूस कदम-कदम आगे बढता जा रहा था, फिर भला कजाकोके भीतर शाति कैसे कायम हो सकती थी? जबतक इजत कुतेबेरोफको भगा नहीं दिया गया, और प्रसिद्ध बातिर जान खोजा मारा नहीं गया, तबतक दश्त (स्तेपी)मे रूसियो और कजाकोका सघर्ष जारी रहा, फिर कजाक पूरीतौरसे रूसियोके सरक्षणमे आ गये।

१८६९ ई०मे ओरेनबुर्गके दश्तमे नया शासन-सुधार हुआ, जिसके अनुसार सारे लघु-ओर्दूको उराल्स्क और तुरगाई दो जिलोमे बाट दिया गया। हरएक जिलेमे एक रूसी सैनिक कमाडर रहता था, जिसके अधीन कजाकोद्वारा निर्वाचित कुछ औल-जेठे (डेरेके मुखिया) शासन-प्रबधमें सहायता देते थे। कजाकोमें इसका भारी असतोष था, कि उनके ऊपर रूसी कसाक शासन करनेके लिये नियुक्त किये गये है। खीवाके खान कजाकोके खान-वशके ही होते थे और उनका रूसियोंसे अच्छा सबध नही था। खीवाके खानने कजाकोंके असतोषसे फायदा उठाकर उन्हे भडकाया, जिसके कारण १८६९-७० ई०मे सारे दश्तमे विद्रोहकी आग भडक उठी, डाकके रास्ते बद हो गये। कजाकोने डाककी चौकियोको नष्ट कर दिया, मुसाफिरोमेंसे पकड़कर कुछको मार दिया और कुछको दास बनाकर बेंच दिया। इसके लिये रूसियोने घोर दमन किया, और कबीलोको जबर्दस्ती जहा-तहा भेज दिया। लेखक श्माइलर १८७३ ई०में तुर्किस्तानमे कजाक राजुल छिङ-गिस्के साथ रहा, जो कि बुकेइयेफ ओर्दूके अन्तिम खानका पुत्र था। पिताके मरनेपर जारने उसे राजुलकी रूसी उपाधि प्रदान की थी, लेकिन वह पक्का मुसलमान था, और हाल हीमे मक्कासे लौटकर आया था। समारा जिलेमे उसे जमींदारी मिली थी। श्माइलरके अनुसार वह बडा ही सस्कृत, भद्र पुरुष था। उसका अधिक समय फ्रेंच उपन्यासोंके पढनेमे लगता था। लघु-ओर्दू १९वी सदीके चतुर्थ पादतक पहुचते-पहुचते अपने स्वभावमें कितना परिवर्तन कर चुका था, इसका उदाहरण यह राजुल था। लेकिन यह परिवर्तन अमीरो और राजवशियोतक हीमे सीमित था, अभी साधारण कजाक-जनता बहुत-कुछ पुरानी दुनियामे रहनेकी कोशिश कर रही थी और बोल्शेविक क्रातिके बाद ही उसमे वास्तविक सामाजिक क्राति हुई।

ग महा-ओर्दू (१७४०–६० ई०)

मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दू रूसी सीमातके पास रहते थे, इसलिये उनका सबध बहुत पहले ही से रूसियोके साथ हो गया था, लेकिन महा-ओर्दू बहुत दूर रहता था, इसीलिये रूसियोके साथ सबध बहुत कम रहनेके कारण उनके इतिहासके बारेमें भी हमे बहुत अधिक मालूम नही है। महा-ओर्दूके कई कबीले थे, जो अपने अलग-अलग सुल्तान, बेग या खानके अधीन रहते थे। यह कहनेकी आवश्यकता नही, कि सारे कजाक-ओर्दुओकी तरह यहापर भी छिङ-गिस् खानके खूनसे सबध रखनेवाले ही शासकके तौरपर पसद किये जाते। महा-ओर्दू पहले जुगरोके अधीन था, पीछे उन्होने चीनियोकी

३. (८ कजाक लघु-ओर्दू-वंशवृक्ष)

(१७१८—१८१८ ई०) जानीवेग
- उजियक
  - वोल्यिकइ
    - ऐचुवक
      - इरिश
        - १ अदिया (–१७१७)
          - २ अबुलखैर (१७१७-४९)
            - ३ नूरअली (१७४९-९०)
              - ५ इशिम (१७९४-९७)
            - ४ एरली (१७९०-९४)
            - ६ ऐचुवक (१७९७-१८०५)
              - ७ जन्तिउरा (१८०५-९)
              - ८ शेरगाजी (१८१२)

अधीनता स्वीकार की। यद्यपि नाम महा-ओर्दू था, लेकिन सख्या और प्रभाव दोनोमे यह श्वेत-ओर्दूके मध्य और लघु-ओर्दूसे निर्बल था। तौफीक (तियाअवका) खानने श्वेत-ओर्दूको तीन हिस्सोमे बाटकर तिउलको महा-ओर्दूका शासक नियुक्त किया था। १७२३ ई०मे जब जुगरोने कजाकोकी भूमि और तुर्किस्तान शहरको ले महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दूके कितने ही कवीलोको अपने अधीन किया, तो वाकी वचा हुआ महाओर्दू और मध्य-ओर्दूका कुछ भाग खोजन्दकी ओर चला गया। पीछे कितने ही कजाक उत्तरकी ओर चले गये, लेकिन महा-ओर्दूवाले जुगरोकी प्रजा वनकर अपने पुराने देशमे वने रहे। महा-ओर्दूके निम्न खानोका पता है —

१	यलवर्स, इलवर्म	१७४० ई०
२	तिउल बी	१७४०–ई०
३	कुसियन बी	१७४२–ई०

१. एलबर्स (–१७४० ई०)

१७३८ ई०मे महा-ओर्दूके खान एल्वर्सने रूसियोसे उनकी प्रजा वनकर व्यापार करने की इजाजत मागी, जब कि मालूम हुआ, कि ओरी नदीपर किलावद नगर बन गया है, और मध्य तथा लघु-ओर्दूके लोग व्यापार करके बडे मौजमे रह रहे हैं। एलवर्स इस प्रकार ओरेनवुर्गके साथ व्यापार करनेके लाभको देखकर ही रूसी प्रजा वँननेके लिये तैयार हुआ। पीछे राजादेश तैयार हो ओरेनवुर्गके अभिलेख-गृहमे आकर यो ही पडा रहा। इसी समय जुगर-राजा गन्दनने महा-ओर्दूके प्रत्येक कजाकपर एक छाल कर लगाया। १७३९ ई०मे मूलरके नेतृत्वमे एक रूसी कारवा जा रहा था, जिसे महा-ओर्दूके कजाकोने लूटा। मूलरने ९ नवम्बर १७३९ ई०को ताशकन्द पहुचकर एलवर्ससे इसकी शिकायत की, और लूटे मालको लौटानेके लिये कहा। खानने जवाब दिया—"मैने दुर्घटनाकी खवर पहले ही सुनी थी, अल्लाका शुक्र करो, जो कि'जिन्दा बच गये। मैने गिरोहके नेता कोगिलदेसे माल लौटानेके लिये कहा है, और माल न लौटानेपर उसे दड देनेकी धमकी दी है। लेकिन मुझे मालके लौटनेकी बहुत कम आशा है।" उस समय ताशकन्दका शासक सईद सुल्तान था, लेकिन कजाक और उनका खान करीब-करीव स्थायी तौरसे ताशकन्दके इलाकेमे डेरा डाले ताशकन्दियोको मनमाना लूटा करते थे। मूलरके

कारवाके प्रस्थान करनेके चौथे अप्रैल १७४० ई०मे दिन सरत नागरिकोने एलवर्सको पकडकर मार डाला, जिसका वदला कजाकोने शहरको लूटकर लिया। एलवर्सके मरनेके वाद उसका साथी तिउल वी सारे ओर्दूका शासक वना।

२. तिउल वी (१७४०–ई०)

तिउल वीको शायद तौफीक खानने नियुक्त किया था। उसे अधिक दिनोतक शासन करनेका मौका नही मिला, और उसे भगाकर गन्दन कुसियन वी छेरिङ की ओरसे शासन करने लगा। १७३९ ई०में तिउल वीने रूसियोकी अधीनता स्वीकार करके अपने खोये अधिकारको प्राप्त करनेका असफल प्रयत्न किया।

३ कुसियन वी, कुसियक वी (–१७४२–ई०)

१७४२ ई०में कुसियन वी अव जुगरोके राज्यपालके तौरपर ताशकन्दपर शासन कर रहा था। इस समय यद्यपि कजाकोकी राजनीतिक प्रधानता नही थी, लेकिन शहरके चारो ओर जिस तरह वह डेरा डाले पडे थे, उससे जान पडता था, कि मानो नगरका मुहासिरा किये हुये है और किसी वक्त भी टूट पडनेके लिये तैयार है। तुर्किस्तान शहरकी भी हालत कुछ समयतक ऐसी ही रही, लेकिन जुगरोकी शक्ति इतनी मजवूत थी, कि वह उनके व्यापारमे कोई वाधा नही डालते थे। तुर्किस्तान और ताशकन्द नगरोके वीचके दीहाती इलाकेपर महा-ओर्दूके कजाकोका स्थायी अधिकार था। जुगरोके दवानेपर कजाक भागकर फरगानामे चले गये, जहा वह वहाके पुराने वाशिन्दोपर प्रभुत्व जमाने लगे, यद्यपि उन्हें वरावर जुगरोका भय वना रहता था। जुगरोके अतिम सघर्षके समय कजाकोने भी हाथ साफ किया और अमुरसनाके विद्रोह करनेपर ये भी उसके पक्षमे रहे। १७५६-५७ ई०में जुगर-राज्यके पतनके वाद कजाकोकी वन आई, और वह जुगरोकी छोडी हुई भूमि सप्तनदमे चले गये। चीनियोने १७५८ ई०में ताशकन्द लेकर जुगरोकी भूमिमे कजाकोके वसनेके लिये प्रोत्साहन दिया।

इस समयतक महा-ओर्दूके कई टुकडे हो चुके थे, इनमेंसे जो जुगारिया लौटे, उनमेंसे कुछ चीनकी प्रजा वने हुये थे, और कुछ चीनके विरोधी। दोनो पक्षोमे वरावर लडाई होती रहती थी, फिर इनके पडोसी वुरुत (करा-किर्गिज) भी इन्हें चैनसे रहने देना नही चाहते थे। १७७१ ई०में जव तोर्गुत वोल्गा छोडकर पूर्वकी ओर भाग रहे थे, उस समय अपने दूसरे कजाक भाइयोकी तरह इन्होने भी उन्हे खूव लूटा। एरली सुल्तानने तोर्गुत यँची उवासा (उपासक)को वहुत तग किया, और इनके कारण उसे अठारह दिनतक एक जगह डेरा डालके पडा रहना पडा। इसी वीच एरलीने कल्मकोके धन और सुदर स्त्रियोका लोभ देकर भारी सख्यामे जहादी जमाकर उन्हें चढाया। कजाकोकी शक्तिको देखकर उवासा डर गया। एरलीने उन्हे इली-उपत्यकामें चले जानेकी इजाजत दी। तोर्गुत जव निश्चित हो किसी जगह डेरा डाले हुये थे, उसी समय एरलीने आक्रमण करके भारी सख्यामें मगोलोकी निर्मम हत्या की, और कजाक वहुतसा लूटका माल और स्त्री-वच्चे पकड ले गये।

ताशकन्द इलाकेमे कुछ कजाक अव स्थायी तौरसे रहने लगे थे, ताशकन्द-शहर तो उनकी दयाका भिखारी था। वह पास-पडोसके लोगोको भी लूटते-उजाडते थे, जिसके कारण उनकी प्रजा न होनेपर भी वहाके लोग कर देनेके लिये मजवूर थे। १७६० ई०में लघु-ओर्दूद्वारा सिर नदीके मुहानेसे भगाया कराकल्पकोका एक समूह इनके साथ आ मिला। सालो अत्याचार वर्दाश्त करते-करते १७९८ ई०में ताशकन्दके नागरिक अपने शासक यूनस खोजाके अधीन उठ खडे हुये, और उन्होने कजाकोसे घोर वदला लिया—कजाकोके सामने उनके भाइयोका शिर काटकर मीनार (स्तूप) वनवाया। यूनस खानने उन्हें पूरी तौरसे दवाकर ताशकन्दकी क्षतिपूर्तिको भी भरनेके लिये मजवूर किया। हर सौ भेड पर एक भेड कर वसूलकर उन्हे सेनामें भर्ती होनेके लिये भी मजवूर किया। १८१४ ई०मे जव ताशकन्द खोकन्दके खानके हाथमें चला गया, तो ये कजाक भी खोकन्दकी प्रजा हो गये, लेकिन चिमकन्दके पास रहनेवाले कजाकोमेंसे कितनो हीने अपने घरो और वागोको छोड़कर चीनी सीमाके भीतर जाना पसद किया। कुछ अपने स्थायी निवासके जीवनको न पसदकर मध्य-ओर्दूके पास इतिश-तटपर चले

गये, और कुछ अकताग पहाडकी ओर। उनका एक भाग कितने ही समयतक सेमेरेक (सप्तनद), कुम्म्, और करातालके इलाकोमे स्वतत्र विचरता रह १८१९ ई०मे रूसके अधीन बना। इस समय उनका शासक मध्य-ओर्दूके खान अवलइका पुत्र सिउक था, जिसकी राजधानी अल्माअता थी, इसे रूसियोने वेर्नोय (श्रद्धा) नाम दिया था—जो बोल्शेविक क्रातिके बाद फिर अलमाअता बन आजकल कजाकिस्तान गणराज्यकी राजधानी तथा एक समृद्ध नगरी है। सिउक सुल्तान महा-ओर्दके सबसे बडे कबीले दोगलत (दूलत) का शासक था। रूसी उसे ३५० रूबल पेन्शन देते थे। रूसी अफसर वेनीउ-कोफने एक बार सुल्तानसे कहा—"मै नही समझता, तुम्हारे लोग तुम्हे अपना शासक पाकर खुश है?" इसपर बूढेने जवाब दिया—"ऐसा मत कहो, मै तो पादिशाह (जार)की आज्ञाके अनुसार अपने लोगोपर शासन करता हू, अल्ला जारकी रक्षा करे।"

रूसी अफसरने फिर कहा—"तुम बडे नम्र हो सुल्तान? हम सभी सम्राट् (जार)की इच्छाका अनुसरण करना चाहते है, और वेर्नोयेके हरएक आदमीको वैसा करना चाहिये, लेकिन सुल्तान तुम्हारा ओर्दू तुम्हारी बात मानता है, इसलिये उनका बादशाहका भक्त होना तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है।"

"मेरे लोगोको बादशाहका हुक्म मानना छोडकर और कुछ नही करना चाहिये। जिन्हे बादशाहने हमारे ऊपर नियुक्त किया है, वह उनकी आज्ञा मानते है। हम यहा दो हाथोकी तरह साथ-साथ रहते है—तुम रूसी लोग दाहिने हाथ हो, हम बाये, और राज्यपाल प्रिम्तोफ हमारा सिर है। यह बुरा होगा, यदि बाया हाथ दाहिनेकी आज्ञा नही माने, या दोनो ही सिरके कहेको न मानें।"

महा-ओर्दूके कुछ कजाक-परिवार रानी एकातेरिनाके उकाजे (राजादेश)के अनुसार अपने सुल्तान चुरिगेइके साथ चार हजार परिवारोको ले १७८९ ई०मे उस्तकामेनोगोर्स्कमे बस गये, और १७९३ ई०मे महा-ओर्दूके कितने ही कजाक अपने सुल्तान तुगुमके साथ साइबेरियाके सीमातपर जा बसे। कजाकोको अपनी ओर खीचनेके लिए चीनी नाममात्रका कर लगाते थे। भेडोपर प्रति-हजार एक और ढोरोपर प्रतिशत एक कर लेते थे। कजाक कितनी ही बार पेकिङ जाते, और उन्हे सम्राट्-की ओरसे बहुत-बहुत इनाम मिलते। रूसी भी उनको अपनी ओर खीचना चाहते थे। कजाक अब भी अपने अक्खडपनको छोडनेके लिये तैयार नही थे। सीमातपर कर मागनेपर एक चीनी अफसरको एक कजाकने कहा था—"घास और पानी अल्लाने बनाये है, और पशु उसीका दान है। हम उनकी चरवाही करते है, फिर हम क्यो किसीको कर दे?"

लेकिन कजाक बहुत दिनोतक अपना अक्खडपन नही चला सकते थे। रूसी गोले-गोलियोके सामने उन्हे सिर नवाना ही पडा। अबलइ-जैसे साहित्य और सस्कृतिके नेताओने रूसियोसे सीखकर अपनी कजाक जातिमे प्रकाश फैलानेकी कोशिश की, लेकिन उसमे सफलता १९१८ ई०के बाद ही हुई, जब कि बोल्शेविक क्रातिने उन्हे समानताका अधिकार दे नये भविष्यके निर्माणमे हाथ बटानेके लिये निमत्रित किया।

स्रोत ग्रन्थ

१. History of Mongol (H H. Howorth)
२ Medieval Researches from Eastern Asiatic Sources
(E Bretschneider, London 1888)

भाग ४

दक्षिणापथ

अध्याय १

जारशाहीका अन्तिम प्रसार

(१८०१-१९१७ ई०)

पावल I के शासनके बारेमें कहते हुये हम बतला चुके है, कि १८ वी सदीके अन्तमे रूस अब युरोपकी एक सबसे बडी शक्ति माना जाता था। पावलकी हत्याके बाद उसका लडका अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा।

१ अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र (१८०१-२५ ई०)

अलेक्सान्द्र अपनी दादी एकातेरिना II की देख-रेखमे युरोपीय शिक्षा-दीक्षामे पला था। एकातेरिनाने एक गणतत्री स्विस-विद्वान् लहार्पको अलेक्सान्द्रका अध्यापक नियुक्त किया था, जो उसके साथ गणतत्रताकी बातें किया करता था। उधर प्रशिया (जर्मनी) की सैनिक-कला उसके खूनमे थी। पीतर-वशके समाप्त होनेपर जर्मनीसे लाकर जो जार और उनकी सताने रूसी सिहासन पर बैठाये गये थे, वह अपने जर्मन होनेका अभिमान करते रूसियोको हीन दृष्टिसे देखते थे। अलेक्सान्द्रकी घनिष्ठता जेनरल अरक्चेयेफसे भी पहले ही स्थापित हो गई थी, जो कि किसानोकी अर्ध-दासताका जबर्दस्त पक्षपाती था। नये जारके बारेमे लोगोका कहना था—"वह आधा स्विटजर्लैंडका नागरिक और आधा प्रशियाका जमादार है।" लेकिन अरक्चेयेफ जैसे अर्ध-दासताके पक्षपाती चाहे कितना ही चीखें-चिल्लाये, १९ वी सदीके आरम्भके साथ रूसमें पूजीवादका प्रभाव और कारखानोका विस्तार जोरसे होने लगा, जिससे खेतीके अर्ध-दासोकी नही, बल्कि कारखानोंके मजदूरोकी अवश्यकता बढी। व्यापारने नदियो और समुद्रोके सस्ते जलपथोके महत्त्वको बतलाया, जिसके लिये कृत्रिम जलपथोके बनानेकी ओर ध्यान जाना जरूरी था। १८०३ ई०मे उत्तरी-एकातेरिना-नहर बनाकर कामा और उत्तरी द्वीना नदियोको मिला दिया गया। अब उत्तरी द्वीनासे नौकाये वोल्गामे आने-जाने लगी। १८०४ ई०मे ओगिन्स्की नहर बनाई गई, जिसने बाल्तिक और काला सागरको मिला दिया। अलेक्सान्द्रके शासनकालके प्रथम दस वर्षोंमे मारीइन्स्क और तिखविनकी नहर-प्रणाली बनकर तैयार हो गई, जिनके द्वारा रूसके भीतरी भागोका सबध बाल्तिक समुद्रसे हो गया। नहरोके साथ-साथ व्यापारके सुभीतेके लिये बकोकी भी स्थापना होने लगी। १७८६ ई०मे पीतरबुगमे राजकीय ऋण-बक स्थापित हुआ था। इससे सरकार और जमीदारोको फायदा था। १८०७ ई०में मास्कोमें व्यापारिक बककी स्थापना हुई। अब मास्को, आर्खागेल्स्क, तगनरोग और फ्योदोसिया (क्रिमिया) में कितने ही बक-केद्र स्थापित हो गये। मालकी माग अधिक होनेसे उद्योग-धन्धोको बढनेका मौका मिला। १८०४ ई०में चुकदरकी चीनीके सात कारखाने काम कर रहे थे, जब कि १८१२ ई०मे उनकी सख्या तीस हो गई। १८०८ ई० मे पहली सूती कताई मिल स्थापित हुई। १८१२ ई०में जितने कारखाने चल रहे थे, उनमेंसे बासठ प्रतिशत व्यापारियोके थे, और केवल सोलह प्रतिशत के स्वामी जमीदार थे। इस प्रकार अब औद्योगिक पूजीवाद रूसमें पैर बढाता जा रहा था।

शासन-सुधार—१८वी सदीके अन्तमे फ्रासीसी क्राति हो चुकी थी, जिसके प्रभावको दबानेके लिये जार पावलने बडी कोशिश की थी। उसके पुत्रको मालूम हो गया था, कि शासनमें बिना सुधार किये क्रातिको रोका नही जा सकता। जब अलेक्सान्द्र अभी युवराज ही था, तभी उसने

लाहार्पको एक पत्रमें लिखा था--"देशको स्वतंत्रता दूगा, और इस प्रकार मैं उसे पागलोंके हाथका खिलौना नहीं बनने दूगा।" गद्दीपर बैठते ही अलेक्सान्द्रने घोषित किया, कि मैं अपनी दादी एकातेरिना II के विधानों और उसके भावोंके अनुसार शासन करूंगा। उसने जो सुधार किये, उनके द्वारा दो सौमेंसे एक किसान अर्ध-दास-को फायदा हुआ। इन अर्ध-दासोंको मुक्ति पानेके लिये पाच हजार रूबल जमींदारको क्षति-पूर्ति देनी थी। भला इतना पैसा गरीब किसान कहांसे लाते?

अलेक्सान्द्रके सुधारोंमेंसे एक था १८०२ ई०में आठ मत्रालयोंकी स्थापना। इसके पहले एकातेरिनाके शासकीय विभाग काम कर रहे थे। शिक्षाकी ओर भी नये जारने कुछ ध्यान दिया। १९ वीं सदीके आरम्भमें मास्को और दोरपतमें दो विश्वविद्यालय मौजूद थे, १८०५ ई०में खरकोफ और कजानमें नये विश्वविद्यालय स्थापित हुये, और १८१९ ई०में पहलेसे मौजूद केन्द्रीय-शिक्षण-प्रतिष्ठानको फिरसे सगठित करके पेतरबुर्ग (लेनिनग्राद) विश्वविद्यालय स्थापित किया गया। इसी समय शिक्षा-मत्रालयकी स्थापना हुई। लेकिन साथ ही अलेक्सान्द्र शिक्षाके खतरेको भी समझता था, इसीलिये मुद्रणपर अकुश रखनेके लिये पुस्तकोंको छापनेसे पहिले उनके हस्तलेख सेसर को दिखला लेनेका नियम बनाया।

नेपोलियनसे युद्ध (१८०५-७ ई०)--अलेक्सान्द्र उस समय जार हुआ, जब कि १७९२-९३ ई०की फ्रेंच-क्रांति समाप्त हो गई थी, और उसके बाद नेपोलियनने मौकेसे फायदा उठाकर अपनी विजय-यात्रा शुरू कर दी थी। वाणिज्य और बाजारके सबधमें इगलैंड और फ्रासकी उस समय बडी प्रतिद्वद्विता थी, जिसका प्रभाव तत्कालीन भारतमें भी देखा जा सकता था। रूसका व्यापार अधिकतर इगलैंडके साथ था, इसलिये अलेक्सान्द्रने गद्दी सभालते ही इगलैंडसे मित्रताकी सधि कर ली, और बापके समयमें जो अग्रेजी जहाज रोक रक्खे गये थे, उन्हे मुक्त कर दिया। लेकिन नेपोलियनकी शक्ति उस वक्त बहुत जबर्दस्त थी। यदि बीचमें ब्रिटिश चैनलकी खाडी न होती, तो नेपोलियनके चगुलसे इगलैंड नहीं बच सकता था। इसपर भी १८०२ ई०में आमिनकी सधिद्वारा इगलैंडने नेपोलियनसे त्राण पानेकी कोशिश की। लेकिन यह मित्रता या युद्धविराम अधिक समयतक नहीं टिक सकेगा, यह इगलैंड भी जानता था, इसलिये उसने आस्ट्रिया, रूस और स्वीडनसे शत्रुके खिलाफ सैनिक मित्रताकी सधि कर ली। इगलैंडको भारत-जैसी धनकी खान और दुनियाका व्यापार मिला था, इसलिये चादीके भरोसे वह अपनी युद्ध लडनेके लिये दूसरोंको तैयार कर रहा था, जैसे कि, आजकलका अमेरिका। इगलैंड और रूसकी इस सधिका एक मतलब यह भी था, कि नेपोलियनको हराकर फ्रासके पुराने राजवश बूरबो को फिर गद्दीनशीन किया जाय, और सामन्तवादियोंके शासनको फिरसे स्थापित करके पूजीवादियोंकी सफलताको खतम किया जाय।

अगस्त १८०५ ई० में रूसी सेनापति कुतुजोफकी अधीनतामें एक बडी सेना युरोपमें नेपोलियनके विरुद्ध भेजी गई। उस समय नेपोलियन अपनी डेढ लाख सेनाके साथ इगलैंडपर आक्रमण करनेके लिये तैयार था। कुतुजोफ जिस वक्त जर्मनी (बवेरिया) के नगर ब्रौनौसे पहुचा, तो मालूम हुआ, कि आस्ट्रियाकी मुख्य सेनाने हथियार रख दिये है। नेपोलियनकी विशाल सेनाके पाचवें ही भागके बराबर कुतुजोफकी सेना थी, इसलिये लौटनेके सिवा उसके लिये और कोई चारा नहीं था। लौटनेमें भी जो कौशल रूसी सेनापतियोंने दिखाया, वह अद्वितीय था। रूसी सेनापति बग्रातियोनके पास छ हजार सेना थी, जिसे तीस हजार फ्रेंच सैनिकोंने शोनग्राबेनमें घेर रक्खा था। बग्रातियोनकी सेना बडी बहादुरीसे लडी और फ्रेंच-पक्ति तोडकर निकलनेमें सफल हुई। इस वीरताके उपलक्षमें उन सारे सैनिकोंको "पाचके प्रति एक"के अभिलेखके साथ बाहोपर फीता प्रदान किया गया। सबसे बडी लडाई आस्टर्लित्स (बोहीमिया) में २ दिसम्बर १८०६ ई० को हुई, जिसमें एक ओर नेपोलियनकी नब्बे हजार सेना थे, और दूसरी ओर रूस और आस्ट्रियाके छियासी हजार। सेनापति इस समय और स्थानको युद्धके लिये उचित नहीं समझते थे, लेकिन आस्ट्रियाके सम्राट् फ्रासिस I ने तुरत युद्ध आरम्भ करनेके लिये जोर दिया। २ दिसम्बर १८०५ ई० को सबेरे कुहरा पड रहा था, जब कि रूसी फौजोने फ्रेंच सेनाके दाहिने पक्षपर असफल आक्रमण किया। रूसी और आस्ट्रियन सेनाये दूर तक बिखरी हुई थीं, इसलिये नेपोलियनके प्रत्याक्रमणको वह बर्दाश्त नहीं कर सकी, तो भी रूसी

सैनिकोंने लडाईमे जो बहादुरी दिखाई थी, उसके बारेमे नेपोलियनने खुद कहा—"ऑस्टर्लिज (चेकोस्लावाकिया) मे रूसियोंने जैसा भारी पराक्रम दिखलाया, वैसा मेरे विरुद्ध दूसरे किसी युद्धमे नही दिखलाया गया ।"

१८०६ ई० के शरद्मे अलेक्सान्द्रने अपने मित्र प्रुशिया (जर्मनी) की सहायताके लिये सेना भेजी, लेकिन नेपोलियनने सेनामे आक्रमण करके प्रुशियन सेनाको तितर-बितर कर दिया । बर्लिनने बिना लडाईके ही अपनेको नेपोलियनके हाथमे समर्पित कर दिया, और १८०६-८ ई० मे दो वर्षो तक वह नेपोलियनके सैनिकोके हाथ मे रही । जनवरी १८०७ ई० मे नेपोलियन वरसावा (पोलद) मे दाखिल हुआ । रूसी-सेनाको भी उसने दो जगह जबर्दस्त हार दी, जिसमे १८०७ ई० के ग्रीष्ममे फ्रीड-लैंडकी लडाईमे रूसी सेनाका पचमाश नष्ट हो गया । जून १८०७ ई० मे जारके वास्ते इसके सिवा कोई चारा नही था, कि नेपोलियनकी विजय और उसके सम्राट् पदको तिलजितकी सधिद्वारा स्वीकार करे ।

नेपोलियन चाहता था, कि इगलैंड युरोपकी दूसरी शक्तियोसे सहायता न पा सके। इसके लिये उसने दूसरे देशोका इगलैंडके साथ व्यापार करना मना कर दिया । रूस तकने नेपोलियनकी निषेध-आज्ञाको मानते हुये इगलैंडको अपना अनाज भेजना बद कर दिया, लेकिन इससे इगलैंडको नही, बल्कि स्वय रूसके बडे जमीदारोको अनाजके न बिकने या सस्ता हो जानेमे भारी क्षति उठानी पड रही थी, जिससे रूसमे आर्थिक सकट पैदा हो गया । तो भी रूस नेपोलियनको नाराज करनेकी हिम्मत कैसे कर सकता था ?

इसी बीच (१८०८-९ ई०) रूस और स्वीडनमे लडाई छिड गई । नेपोलियन रूसकी शक्ति को अपने फायदेके लिये इस्तेमाल करना चाहता था । उसके कहनेपर रूसने इगलैंडके साथ अपना कूटनीतिक सबध तोड लिया था, और उसीके शह देनेपर रूसने स्वीडनके खिलाफ यह युद्ध घोषित किया । स्वीडनका यही कसूर था, कि उसने नेपोलियनकी आज्ञा न मानकर इगलैंडके साथ मित्रताका सबध कायम रक्खा । फरवरी १८०८ ई० मे रूसी सेनाने सीमात पार किया । उस समय फिनलन्द स्वीडनके हाथमे था । १८०८ ई०के अन्त तक फिनलन्दको लेकर रूसी सेना स्वीडनकी भूमिमे दाखिल हो गई । १६ मार्च १८०६ ई० को, जब कि स्वीडनके साथ घनघोर युद्ध हो रहा था, अलेक्सान्द्रने फिन्-ससद्को बोर्गा नगरमे बुलाकर वचन दिया, कि फिनलन्दके विधानको हम पूरी तौरसे मानेगे । इसी समय फिनलन्द रूसका एक प्रदेश घोषित हुआ, और तबसे बोल्शेविक-क्रांतिके समय (१९१७ ई०) तक वैसा ही रहा । ५ सितम्बर १८०९ ई० को सधि करके स्वीडनने फिनलन्दपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया । नेपोलियनके आदेशानुसार इगलैंडके घिरावेमे युरोपके दूसरे देशोने साथ देना स्वीकार किया ।

नेपोलियन जानता था, जब तक रूसको अपने हाथमे नही किया जाता, तब तक उसकी विजय अधूरी रहेगी । बीचके समयमे नेपोलियनने रूसके बारेमे बहुतसी जानकारी प्राप्त की, और आक्रमण करनेके लिये पोलन्दको आधार-भूमिके तौरपर तैयार करता रहा । इसपर जारने नेपोलियनसे माग की, कि पोल-राज्यको फिरसे जीवित करनेकी कोशिश न करे, और दरेदानियाल तथा कान्स्तन्तिनोपलपर रूसके अधिकार करनेके साथ सहमत हो । नेपोलियनने इसे स्वीकार नही किया । सुलहके लिये नेपोलियन और जारने आपसमे मुलाकात करके भी बातचीत की, लेकिन उसका कोई फल नही हुआ । नेपोलियनने मोल्दाविया और वलाचियाका रूसके हाथमे जाने देना स्वीकार किया । इसी बीच १८१० ई०मे उसने हालैंडको अपने राज्यमे मिला लिया, और रूसके विरोधकी कोई पर्वाह नही की । रूस समझने लगा, कि नेपोलियन मौकेकी ताकमे है, इसलिये उसने १८०६ ई०से चली आती तुर्कीकी छेडछाडको आगे बढाना चाहा । युरोपके युद्धक्षेत्रमे रूसियोंके हारकी बात सुनकर तुर्कीकी भी हिम्मत बढी, और उसने अपने छिने हुये कालासागर-तटवर्ती पश्चिमी काकेशस-प्रदेशको रूससे ले लेना चाहा । शाति और सुलहकी बात बेकार गई, क्योंकि तुर्की जानता था, कि इस समय रूसकी प्रधान सेना युरोपमे फसी हुई है । तब भी रूसी सेनाने नवम्बर १८०६ ई० मे दन्यूबकी ओर आक्रमण करके बेसराबिया, मोल्दाविया और वलाचियाके तुर्की प्रदेशोको ले लिया । रूसी प्रगतिको दन्यूब तटवर्ती तुर्की किलोने नही रोक पाया । ८ मई १८२२ ई०को बुखारेस्तकी सधिके अनुसार

तुर्कीने बेसराबियाके ऊपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और साथ ही खोतिन, बन्दर, अकर-मान और इस्माइल्के किलोंको भी उसके हवाले कर दिया। रूसने पोती और अखल्कल्लाकी तुर्कीको लौटा दिये। तुर्कोंसे इस तरह छुट्टी पाकर रूस अब नेपोलियनके आक्रमणका जवाब दे सकता था।

नेपोलियन रूसको विश्राम लेने देना नहीं चाहता था। वह रूसकी ओर अपनी सेना भेजकर मई १८१२ ई०में स्वयं भी ड्रेसडनसे नीमन नदीकी ओर चल पड़ा। २४ जून (पुराना १२ जून) १८१२ ई० को नेपोलियनने हिटलरकी तरह बिना युद्ध-घोषणाके ही रूसपर आक्रमण कर दिया। नेपोलियनके पास जहा पाच लाख सेना थे, वहा रूसकी कुल सेना एक लाख अस्सी हजार थी। हिटलरकी सेनाकी तरह नेपोलियनकी सेनामे जर्मन, इतालियन, स्वीस, क्रोवात, स्पेनिश आदि युरोपकी सभी जातियोंके सैनिक थे। इतनी बडी सेनाके साथ सामने होकर लड़ना बेवकूफी थी, इसलिये रूसी सेनाने कमसे कम संघर्ष करते हुये पीछे हटने को पसद किया। नेपोलियनकी सेना आगे बढती अगस्तमें स्मोलेन्स्क पहुची। उसकी तोपोने शहरपर तेरह घटे गोलाबारी की, सारा नगर जलने लगा। नेपोलियनके विरुद्ध रूसियो-ने उसी नीतिका पालन किया, जिसे एक सौ तीस वर्ष बाद उन्होने हिटलरी आक्रमणके समय किया। आक्रमणकी गतिको धीमी करनेके लिये कही-कही लडते रूसी पीछेकी ओर हटते गये, और साथ ही नेपोलियनको परित्यक्त भूमिमे खाने-पीने-रहनेकी कोई चीज न मिल सके, इसके लिये अपने घरोंमें अपने हाथसे आग लगाते गये। स्मोलेन्स्कके निवासी भी अपने घरो और सम्पत्तिमें अपने हाथों आग लगाकर वहासे चल दिये। उस समयके रूसमें प्रतिभाशाली पुरुषोंकी कदर बहुत कम होती थी, क्योंकि जार-वंश एक विदेशी वंश था, जो रूसियोंसे अधिक अपने जर्मन सबंधियोंको मानता था। सुवारोफकी उपेक्षाके बारेमे हम कह चुके हैं। कतुजोफकी प्रतिभाकी भी उतनी कदर नही की गई, लेकिन नेपोलि-यनके इस भयकर आक्रमणके समय जार अलेक्सान्द्रको मजबूर होकर ६७ वर्षके बूढे कतुजोफको सारी रूसी सेनाका महासेनापति नियुक्त करना पडा।

राजुलवंशी मिखाइल ईलारियोन-पुत्र कतुजोफ सुवारोफका योग्य शिष्य था। २९ वर्षकी उमरमें क्रिमियामे तुर्कोंके साथ लडते हुये उसकी एक आख जाती रही। वह सुशिक्षित था, बहुत-सी विदेशी भाषाओंको जानता था, और युद्ध-विद्यापर युरोपकी भिन्न-भिन्न भाषाओंमे जितनी पुस्तकें प्राप्य थी, उनका उसने गम्भीर अध्ययन किया था। १८१२ ई० मे महासेनापति नियुक्त करते हुये भी जार अलेक्सान्द्रने अपने एक दरबारीसे कहा था—"लोग उसकी नियुक्ति चाहते थे, इसलिये मैंने नियुक्त कर दिया, लेकिन व्यक्तिगत तौरसे मैंने उससे अपना हाथ धो लिया।" नेपोलियनकी सेनायें अब मास्कोकी ओर बढ रही थी। मास्को उस समय रूसकी राजधानी नही था, लेकिन उसका महत्व पीतरबुर्ग राजधानीसे भी अधिक था, क्योंकि वही व्यापारका सबसे बडा केंद्र था। कतुजोफको बग्रातियान जैसे दूसरे योग्य सेनापति मिले थे। बग्रातियोनने युद्धके बारेमें कहा था—"यह साधारण युद्ध नही बल्कि लोक-युद्ध है।" सचमुच ही सारी रूसी जनता उस वक्त अपने देशके लिये सब कुछकी बाजी लगाकर नेपोलियनके आदमियोंसे लड रही थी। रूसी ही नहीं, बल्कि बाश्किर, कल्मक, तातार आदि जातियोंके सैनिक भी साथ-साथ बहादुरी दिखला रहे थे। लडनेसे भी ज्यादा नेपोलियनकी कठिनाइया इसलिये बहुत बढ गई थी, कि रूसी रास्तेके गावो, नगरो या खडी फसलोंमेसे कोई चीज उसके लिये नही छोडते थे। २३ सितम्बर १८१२ ई० में नेपोलियनने रूसी सेनापतिके पास इस तरहके "बर्बरतापूर्ण और असाधारण" युद्धके तरीकेका विरोध करते हुये शांति करनेका प्रस्ताव किया। उसने जब इस बातपर जोर दिया, कि "लडाईमे युद्धके सर्वस्वीकृत नियमोंको पालन करना चाहिये," तो कतुजोफने जवाब दिया—"लोग तुम्हारे इस युद्धको तातार (मगोल) आक्रमण जैसा समझते हैं। इसीलिये वह प्रतिरोधके सभी तरीकोंको इस्तेमाल कर रहे हैं।" जार और दरबारी चाहते थे, कि नेपोलियनसे जमकर लडाई हो, लेकिन कतुजोफका कहना था, काल और देश (दूरी) की सहायतासे ही हम दुश्मनको हरा सकते हैं। यदि मास्को भी शत्रुके हाथमें चला जाय, तो उसके लिये भी हमें तैयार रहना चाहिये, क्योंकि हमे मास्को नही रूसकी रक्षा करनी है। नेपोलियनकी सेनाकी भारी क्षति हो रही थी। वह चाहता था, कि कतुजोफ लडनेके लिये तैयार हो, ताकि युद्धक्षेत्रमें रूसी सेनाकी रीढ तोड दी जाय, लेकिन कतुजोफ अपनी निश्चित की हुई जगहपर ही लडना चाहता

था। ५ सितम्बर (२३ अगस्त) की रातको सेवर्दिनो गावमे एक छोटीसी रूसी सेनाने डटकर लडाई करके उस युद्धका आरम्भ किया, जो कि ८ सितम्बर (२६ अगस्त) के प्रात काल मास्कोसे ९० किलोमीतरपर अवस्थित बोरोदिनो गावके ऐतिहासिक युद्धके रूपमें हुआ। युद्धक्षेत्रमे ११२ हजार रूसी सैनिक थे, जिनके अतिरिक्त सात हजार कसाक और दस हजार नागरिक सैनिक भी शामिल हुये थे। नेपोलियनके पास अब एक लाख तीस हजार सेना और ५८७ तोपे रह गई थी। युद्धमे बगरातियोन घायल होकर अन्तमे मर गया। वेहोश होनेसे पहले उसके मुहसे अन्तिम शब्द निकले थे—"हमारे आदमी कैसे है ?" उसने "डटे हुये है" जवाब सुनकर प्राण छोडा। पीतर इवान-पुत्र बगरातियोन एक गुर्जी-वशका सैनिक था, जिसे सुवारोफ्के चरणोमे बैठकर युद्धविद्या सीखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यद्यपि बोरोदिनो में रूसी नेपोलियनकी सेनाको हरा नही सके, लेकिन उसके सालो बाद अपने मृत्युसे जरा सा पहले नेपालियनने स्वीकार किया था—"मैने जितनी लडाइया लडी, उनमे सबसे भयकर लडाई वह थी, जो मास्कोके पास हुई। फासीसियोने अपनेको विजयके योग्य यदि साबित किया, तो रूसियोको भी अजेय होनेका अधिकार वही प्राप्त हुआ।" रूसी महान् कवि लेर्मन्तोफने बोरोदिनोके बारेमें लिखा था —

"उस दिन शत्रुने अच्छी तरह समझा
कि हम रूसी सिपाही कैसे लडते है—
भयकर हाथसे हाथ
घोडे और आदमी एक साथ लडते,
और तो भी तोपोकी गडगडाहट।
हमारी छातिया वैसे ही काप रही थी,
जैसे वहा धरती कापती थी।
फिर पहाडों और मैदानोमे अधकार छाया,
तो भी हमें अभी फिर लडना था।"

बोरोदिनोमें रूसी सेनामें पराजितकी तरह भगदड नही मची, बल्कि वह सुव्यवस्थित रीतिसे मोंजाइस्क होते मास्को पहुची। १४ सितम्बर १८१२ ई० को मास्कोके पास फिली गावमे कतुजोफने युद्धपरिषद् की। सेनापति लडनेके पक्षमे थे, लेकिन कतुजोफने यह घोषित करते हटनेका हुक्म दिया—"मास्कोका हाथसे जाना रूसका हाथसे जाना नही है।" १४ (२) सितम्बरके सवेरे रूसी सेना मास्को छोडकर बाहर जाने लगा। मास्कोके नागरिक भी जो कुछ साथ ले जा सकते थे, उसे लेकर पैदल या गाडियोपर नगरसे निकल पडे। रातको मास्कोमें आग लग गई। हवा तेज थी, जिसने लकडीके मकानोमें चिनगारी फेक-फेककर सारे नगरको जला दिया, जिससे फ्रेंच सैनिकोको खुलकर लूटनेका मौका नही मिला। आग छ दिनोतक जलती रहीं। मास्को नेपोलियनके हाथमें था। लेकिन जला-भुना आश्रयहीन मास्को जल्दी ही शुरू होनेवाले जाडेसे उसकी सेनाको कैसे बचा सकता था ? नेपोलियनने बहुत कोशिश की, बहुत बार जार अलेक्सान्द्रको सधि करनेके लिये लिखा, लेकिन जारने उसका जवाब भी देना पसद नही किया। जाडा भयकर रूप लेता जा रहा था, उसके कारण सैनिकोकी हालत खराब होती जा रही थी। नेपोलियनको अब कतुजोफके युद्ध कौशलका पता लगा, और उसने मास्को छोडनेका निश्चय कर लिया।

१८ (६) अक्तूबरके सवेरे सात बजे नेपोलियनने मास्कोसे हटना शुरू किया। उसने क्रेमलिनको बारूदसे उडा देनेका हुक्म दिया, लेकिन वर्षाके कारण कितने ही पलीते भीग गये थे, इसलिये क्रेमलिनका एक मीनार तथा दीवारका कुछ भाग ही नष्ट हो पाया। नेपोलियनको लौटते समय अब कतुजोफकी सेनाका मुकाबिला करना था, जो बीच-बीचमें फ्रेंच सेनापर भयकर प्रहार कर रही थी। रास्तेके नगर और गाव बिल्कुल उजाड थे। घोडोको मारकर खानेके सिवा नेपोलियनकी सेनाके लिये प्राण बचानेका कोई उपाय नही था। भुखमरीके साथ-साथ बीमारीने भी अपना आक्रमण कर दिया था। रास्तेपर पडी आदमियो और घोडोकी लाशे नेपोलियनके लौटनेका परिचय दे रही थीं।

सैनिकोंके अतिरिक्त रूसी गोरिल्लोंने नेपोलियनकी सेनाके नाकमें दम कर दिया था। सर्दी अब इतनी बढ़ गई थी, कि भूखे फ्रेंच सिपाही गाडियों, घरोंके सामानों या मकानोंमें आग लगाकर उनसे बचनेकी कोशिश करते थे। लेकिन यह केवल रूसी जाड़ा नहीं था, जिसने कि १८१२ ई० में शत्रुकी सेनाको नष्ट किया। उस सालका जाड़ा अपेक्षाकृत नरम था, १२ सेंटिग्रेड हिमबिन्दुसे नीचे तक ही चार-पांच दिन तापमान गया था। इससे कहीं अधिक सर्दी १७९५ ई० और १८०७ ई० में हुई थी, जिसको कि सहते हुये नेपोलियनकी सेनाने हालेंड आदिके युद्ध लड़े थे। दिसम्बरके अन्ततक जब वह बेरेजिना नदीको पार हुई, तो नेपोलियनकी महासेना अब तीस हजार रह गई थी। नेपोलियन अपनी सेनाको वहीं छोड़ जल्दी-जल्दी पेरिसकी ओर दौड़ा। अभी उसे अपने अन्तिम दिन देखने थे। १८१३ ई०की शरद्‌में लाइपजिकमें मित्र-शक्तियोंने नेपोलियनको हराया, फिर मित्र-सेनायें जार अलेक्सान्द्र I के नेतृत्वमें मार्च १८१४ ई० में पेरिसके भीतर दाखिल हुईं। क्रान्ति द्वारा अपसारित बूर्बो राजवंशको फिरसे फ्रांसमें प्रतिष्ठापित किया गया, नेपोलियनको एल्ब द्वीपमें निर्वासित कर दिया गया। आगेकी बातोंका फैसला करनेके लिये मई १८१५ ई० में वीना की कांग्रेस हुई, जिसमें पोलन्दके बहुत बड़े भागको "सदाके लिये" रूसके हाथमें दे दिया गया। अभी कांग्रेस चल ही रही थी, कि नेपोलियन एल्बसे भागकर पेरिस पहुंचा, और वह फिरसे अपनी खोई शक्तिको हाथमें करने लगा, लेकिन सौ दिन बीतते-बीतते अंग्रेज और जर्मन सेनाओंने वाटरलूके मैदानमें उसे अन्तिम तौरसे हराकर हेलेना द्वीपमें भेज दिया, जहां वह १८२१ ई० में मर गया। फ्रांसके सिंहासनपर अठारहवां लुई बैठाया गया। फ्रेंच-क्रांतिने मुकुट-धारियोंकी जो दुर्दशा की थी, उससे युरोपके सभी राजाओंमें आतंक छा गया था। जार अलेक्सान्द्रने फिर ऐसा मौका न देनेके लिये आस्ट्रिया और प्रशियाके राजाओंके साथ मिलकर १८१५ ई० में पवित्र-सन्धिके नामसे एक समझौता किया। नेपोलियनके हारनेके बाद अब युरोपमें सब जगह रूसी जारकी तूती बोल रही थी। कार्ल मार्क्सने पवित्र-सन्धिके बारेमें कहा था—"यह युरोपके सभी राज्योंपर जारकी प्रधानताका ही दूसरा नाम था।"

सुधार—यह बतला आये हैं, कि तरुणाईमें जारको लाहार्प जैसे प्रगतिशील विचारोंवाले अध्यापकके सम्पर्कमें आनेका मौका मिला था। इसके अतिरिक्त अपने शासनके आरम्भिक दिनोंमें जारपर स्पेरन्स्की जैसे एक प्रतिभाशाली व्यक्तिका भी प्रभाव पड़ा था। स्पेरन्स्की एक गांवके ईसाई पुरोहितका लड़का था। उसकी शिक्षा पीतरबुर्गकी एक धार्मिक पाठशालामें हुई थी। अपनी असाधारण प्रतिभाके कारण वह एक मामूली क्लर्कसे बढ़ते-बढ़ते राज्यसचिव हो गया। तिल्जितकी सन्धिके बाद स्पेरन्स्की जारका प्रधान सलाहकार था। रूसकी शक्तिको दृढ़ करनेके लिये उसने यह जरूरी समझा, कि शासनमें सुधार किया जाय। १८०९ ई०में स्पेरन्स्कीने "राज्य-विधानोंका संहितीकरण" के नामसे एक सुधार मसौदा तैयार किया। इन सुधार द्वारा वह चाहता था कि सामन्तशाही राजतंत्रकी जगह बूर्ज्वा राजतंत्र स्थापित हो, तथा "विज्ञान, व्यापार और उद्योग" की रक्षा की जाय। उसने कहा—"दुनियाके इतिहासमें ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिलता, कि नव-शिक्षित और व्यापारप्रधान जाति अधिक दिनोंतक दासतामें रहे।" स्पेरन्स्कीने सुझाव पेश किया था, कि सभी सम्पत्ति रखनेवाले लोगोंकी एक राज्यदूमा (संसद्) बुलाई जाय, जिसके लिये हरएक वोलोस्त (पर्गना) के सम्पत्तिवाले चुनकर एक वोलोस्त-दूमा बनायें, फिर वोलोस्त-दूमाओंके सदस्य ओकुग (जिले) की दूमाके सदस्योंका चुनाव करें, फिर ओकुग-दूमाओंके सदस्य गुबर्निया (प्रदेश) की दूमाओंका निर्वाचन करें, और गुबर्नियाकी दूमायें राज्य-दूमाके सदस्योंको निर्वाचित करें। इस प्रकार चार जगहोंसे होकर चुनाव किया जाय। बिना राज्यदूमा और राज्यपरिषद्‌की स्वीकृतिके कोई विधान पास न किया जाय। शासन-प्रबंध मंत्रियोंके हाथमें रहे, जो दूमाके सामने जवाबदेह हों। इसमें शक नहीं, आजसे सवा सौ वर्ष पहलेके लिये स्पेरन्स्कीका कानूनी मसौदा प्रगतिशील था। लेकिन सत्ताधारी जमींदार इसे क्यों पसंद करने लगे? वह स्पेरन्स्कीको "बदमाश", "क्रांतिकारी" और "क्रासनेल" कहकर बदनाम करने। उनके विरोधके कारण मजबूर हो अलेक्सान्द्रने मसौदेको अस्वीकार कर दिया, और उसकी जगह अपने नियुक्त किये सदस्योंकी एक राज्य-परिषद् १८१० ई०में स्थापित की। राज्यपरिषद् का काम जारको केवल सलाह देना भर था। यह राज्यपरिषद् १८१० ई० से १९०६ ई० तक बनी रही।

मन्त्रियोकी सख्या अबसे आठकी जगह ग्यारह कर दी गई थी——पुलिस, सचार और राज्य-नियत्रण के तीन और मत्रालय स्थापित किये गये। राजुलो और जमीदारोने प्रसिद्ध इतिहासकार तथा भारी जमीदार न० म० करमजिनके नेतृत्वमे माग की, कि स्पेरन्स्कीसे इस्तीफा लिया जाय। करमजिनने इन सुधारोकी जगह "पचास अच्छे राज्यपालो" को नियुक्त करनेकी सलाह दी। स्पेरन्स्कीके प्रयत्नके असफल होनेपर तुर्की और नेपोलियनके बडे युद्धोके भीतरसे रूसको गुजरना पडा।

नेपोलियनके पतनके बाद जार समझता था—युरोपके भाग्य और व्यवस्थाकी जिम्मेवारी मेरे ऊपर है। देशके भीतर अरक्चेयेफकी सलाहको मानकर जार सारा काम करता था। लोग अरक्चेयेफको कितनी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, यह पुश्किनकी निम्न कवितासे मालूम होगा —

वह सारे रूसको अपनी एडीके नीचे पीस रहा है,
ढाचेपर बैठा वह चक्का चलाना जानता है।
जारका राज्यपाल और मुद्राधर स्वामी,
उसका मित्र और बिल्कुल जमुआ भाई,
बदला लेनेके लिये, घृणाके लिये भरा,
मस्तिष्कहीन, हृदयहीन और बिल्कुल सम्मानहीन,
कौन है यह "सच्चा अनतिशियोक्तिपूर्ण, वीर" ?
एक सिपाही, नही वह तो उसे छू भी नही गया।

उसने सैनिक बस्तिया बसाई थी। किसानोको जबर्दस्ती इन बस्तियोमे रहकर जन्मजात सिपाहीका काम करना पडता था। रूसके पश्चिमी सीमातपर १८२० ई०के आसपास ३७५ हजार सैनिक किसानोकी बस्तिया बसी थी। किसान इस जबर्दस्तीको बर्दाश्त नही करते थे, जिसके कारण कितने ही विद्रोह हुये। अरक्चेयेफने इन विद्रोहोको बडी निष्ठुरतापूर्वक दबाया। अलेक्सान्द्र I को जब इन बस्तियोको अनावश्यक कहकर रोकनेके लिये कहा गया, तो उसने जवाब दिया——"हर हालतमें सैनिक बस्तिया मौजूद रहेगी, चाहे इसके लिये हमे पीतरबुर्गसे चूदवा तकके सारे रास्ते (७० किलोमीतर ५० मीलसे ऊपर) लाशोसे भी ढाक देना पडे।"

काकेशस-विजय——१८०१ ई०मे पूर्वी गुर्जीको रूसने ले लिया था। इसके बाद जारको सारे काकेशस-प्रदेशपर हाथ साफ करनेका ख्याल आया। इस काममें एक गुर्जी (जार्जियन) अमीर राजुल त्सित्सियानोफ जारका भारी सहायक था। १८०२ ई०मे अलेक्सान्द्रने उसे उधरकी सेनाका मुख्य-सेनापति नियुक्त किया। उसने काकेशसके छोटे-छोटे राजाओको जीतकर रूसमे मिलाना शुरू किया। १८०४ ई०मे त्सित्सियानोफने येरेवान (अरमनी)के राज्यपर चढाई की। दो महीनेतक येरेवानके दुर्गको घेर रखनेके बाद उसे असफल लौटना पडा। १८०५ ई० के अन्तमे उसने बाकूके खानके विरुद्ध अभियान किया। बाकूका महत्त्व इसलिये भी ज्यादा था, कि उसे आधार बनाकर ईरानके विरुद्ध सैनिक कार्रवाई की जा सकती थी। खानसे उसने किलेकी चाभी मागी, लेकिन खानने धोखेसे मारकर गुर्जी राजुलका सिर ईरानके युवराजके पास भेज दिया। पर बाकू बच नही सका, और १८०६ ई० की शरद्मे वह रूसका अग बन गया। इसके बाद उसी समय पडोसी कूबाके खानको भी रूसियोने जीता। रूसियोने इन जीते हुये छोटे-छोटे राज्योका दो प्रदेश—एलिजाबेतापोल और बाकू—बना दिया। जारके रास्तेमे ईरान और तुर्की बाधा दे रहे थे, रुपये-पैसे दे इगलैड और फ्रास उनकी पीठ ठोक रहे थे। ईरानने रूसके विरुद्ध १८०५ ई०मे युद्ध-घोषणा की, और तुर्कीने १८०६ ई० के अन्तमें। यह युद्ध कई सालो तक चलते रहे। ईरानी और तुर्की सेनाने कई बार करारी हारे खाई। ईरानने अतमे दागिस्तान और गुर्जीको रूसके हाथमे देना स्वीकार किया, और कास्पियन समुद्रमे सैनिक जहाज न रखनेका भी वचन दिया। तुर्कीके साथकी लडाई मई १८१२ ई० मे बुखारेस्तकी सधिके साथ समाप्त हुई, इसे हम बतला आये है। तुर्कीने पश्चिमी गुर्जीपरसे अपने दावेको हटा लिया, जो रूसकी कुतैसी गुबर्निया बन गई। ईरानके साथका युद्ध १८१३ ई०में खतम हुआ, जिसमें इगलैडने भी तत्परता दिखलाई, क्योंकि वह चाहता था, कि रूस इधरसे मुक्त होकर दोनोके दुश्मन

नेपोलियनके खिलाफ अपनी सारी शक्ति लगाये। १८१३ ई० की गुलिस्तान-सधि के अनुसार आजकल-के रूसी आजुर्वाइजानको ईरानने सदाके लिये जारके हाथमें दे दिया।

वोल्गाके लोग—वोल्गाके वाश्किर, चुवाश, मोर्दवी, तारतार आदि जातिया लडाकू स्वभाव-की थीं, इसलिये उन्होंने आसानीसे रूसी जूयेको अपने कधेपर नही रक्खा। रूसियोंने उनके भीतर अपने शासनको दृढ करनेके लिये कई तरीके इस्तेमाल किये। इन इलाकोंकी उर्वर भूमिको रूसी जमींदार अपने हाथमे करके उनपर अपना रोब कायम करते, कही-कही रूसी किसानोंको भी ले जाकर उनके भीतर बसाते, जो कि किसानीके साथ-साथ सैनिकका भी काम देते। इसके अतिरिक्त ईसाई पादरियों-को जबर्दस्ती ईसाई बनानेकी भी छूट थी। नये बने ईसाइयोंको काफी प्रलोभन भी दिया जाता था। कितनी ही जगहोपर प्रत्येक नवईसाईको एक सलेब, एक रूबल और एक सफेद कमीज दी जाती थी। तारतारो और दूसरोके सरदारो और सुल्तानोंको ईसाई-धर्म न स्वीकार करनेपर कितनी ही बार अपने असामियोंसे वचित कर दिया जाता था। इनके अतिरिक्त निम्न-वोल्गाके किनारे ले जाकर जर्मन किसानोंको बसा दिया गया। रूसी जार ऊपरसे रूसी थे, नही तो उनकी सारी मनोवृत्ति जर्मन थी, इसीलिये जर्मन शिक्षितो, सैनिकों और दरबारियोंके प्रति ही नही, बल्कि साधारण जर्मनोंके प्रति भी उनका विशेष पक्षपात था। १८ वी सदीके उत्तरार्धमे वोल्गाके दोनो किनारोपर सरातोफमे और दक्षिण तक जगह-जगह जर्मन प्रवासियोंके गाव बसने लगे थे। १७६३ ई०में एकातेरिना II ने विशेष राजघोषणा निकालकर बाहरसे रूसमे लोगोंको आनेका निमत्रण दिया था, जिसके अनुसार बीस हजारसे अधिक विदेशी—अधिकाश जर्मन आकर वोल्गाके किनारे बस गये। इन प्रवासियोंको प्रति परिवार तीस देसियातिन (अस्सी एकड) जमीन तथा कुछ नकद ऋण भी दिया जाता था। कजाकों और कल्मक घुमन्तुओंको रोकनेके लिये उक्रे-इनसे लाकर बहुतसे कसाकोंको वोल्गाके पूर्वमे बसा दिया गया था। इस प्रकार हम देख रहे है, कि वोल्गा और उसके पूर्वकी एसियाई जातियोंपर अपने शासनको मजबूत करनेके लिये जारशाहीने रूसी ही नही, युरोपके दूसरे देशोंके साधारण लोगोंको भी लाकर बसाना जरूरी समझा। इसपर भी वाश्किर, तारतार, चुवाश आदि जातिया हथियार रखनेके लिये जल्दी तैयार नही हुईं।

साइबेरियाके लोगोंको जमींदारी या अर्ध-दासता प्रथा क्या है, इसका पता नही था। उनके पडोसी कजाक और दूसरी जातिया मौका पाकर उनके आदमियोंको पकडकर दास बनाकर बेंच देती थी। रूसियोंने उनके भीतर भी पहुचकर अपने शोषणके नये तरीकेको जारी किया। १८१२ ई० से स्पेरेन्स्की जारके मनसे उतर गया था, लेकिन १८१९ ई०मे जारने उसे साइबेरियाका महाराज्यपाल बनाकर भेजा। स्पेरन्स्कीने वहा जाकर कुछ सुधार किये, लेकिन इसी समय साइबेरियाके लोगोंको जबर्दस्ती ईसाई बनानेका काम भी आरम्भ हुआ, जिसमें मिशनरियोंने लोभ, धमकी हर तरहमे काम लिया।

भौगोलिक अभियान—नेपोलियनके युद्धोंमें सम्मिलित होकर रूस और बातोंमें भी दूसरे देशोंसे क्यों पीछे रहने लगा? अब उसने भी अपने भौगोलिक अभियान भेजने शुरू किये। १८०३-६ ई० में आदम क्रूजेन्स्तने जहाज द्वारा पृथिवी-प्रदक्षिणा की। उस समय रूस अपने समूरी छालोंका व्यापार चीनके साथ स्थलमार्गसे क्याखता होकर करता था। क्रूजेन्स्तने सोचा, जलमार्गसे इसे और सस्तेमें किया जा सकता है, इसके लिये १८०३ ई०के ग्रीष्ममें उसने एक सामुद्रिक अभियानकी योजना बनाई और वह अतलान्तिक समुद्र पार हो दक्षिणी अमेरिकाका चक्कर काटते प्रशान्त महासागरमें पहुचा। फिर काम्चका और जापानके तटसे वह एसिया और अफ्रीकाके बाहर-बाहर होते अतला-न्तिकमें लौटा। इस अभियानने सखालिन, काम्चत्का, कूरिल और एलूतियान द्वीपोके किनारोंकी खोज-पडताल की, और उत्तरी अमेरिकाके उत्तर-पश्चिमी किनारेको भी देखा-भाला। अपनी पुस्तकमें क्रूजेन्स्तने इस यात्रा का वर्णन किया। १८०९-११ ई० में एक दूसरे अभियानने हेदेनस्त्रोमके नेतृत्वमें ध्रुवीय समुद्र के बीचमें नवसिबेरीय द्वीपोंकी जाच-पडताल की। १८१० ई० में इसी अभियानके एक सदस्य सनिकोफने इन द्वीपोंके सबसे उत्तरवाले द्वीपका पता लगाया, और यह भी दावा किया, कि वहा स्थलमार्ग है, जिसे सोवियतकालीन अभियानोंने गलत बतलाया। १८१५-१८ ई० में "रूरिक"

जहाजने काम्चत्का, चुकोतस्क और वेरिंग जलडमरूमध्यके वारेमे विशेष खोज-पडताल की। १८२१-२४ ई०में प्रसिद्ध रूसी नाविक लित्केने कम्चत्का और चुकोत्स्कका पहला नक्शा वनाया। १८२०-२४ ई०मे रेंगलके नेतृत्वमे एक अभियान गया, जिसने साइवेरियाके उत्तरी तटकी लेनासे वेरिंग जलडमरूमध्य तक जाच-पडताल की।

दिसम्वरी-विद्रोह (१८२६ ई०)—नेपोलियनकी पराजयके वाद जारका प्रभुत्व और प्रभाव वहुत वढ गया। जारने यद्यपि फ्रेच-क्रातिके रूपमे ऊपर आनेवाली नई शक्तियोको दवानेकी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले रक्खी थी, लेकिन वह विचारोको कैसे रोक सकता था ? अव रूसमे कल-कारखाने भी खुलने लगे थे। १८०४ ई० मे जहा रूस मे २४२७ कारखाने और ९५००० मजदूर थे, वहा १८२५ ई० मे ५२६१ कारखाने और २११ हजार मजदूर हो गये थे। पुराने हस्तशिल्प और कुटीरशिल्पकी जगह अव कारखानोकी चीजे वाजारोमे आ रही थी। उधर १८ वी सदीके मध्यसे ही रूसी कुलीन घरानोमें फ्रेंच भाषा और साहित्यका जोर हो चला था, और फ्रेंच साहित्यके साथ फ्रेंच-क्रातिके विचार देनेवाले साहित्यिकोकी कृतियोका भी प्रचार हो रहा था। जार साधारण रूसी जनताका ही देवता नही था, वल्कि उसके सामने राजुलो और अमीरोंको भी घुटने टेककर दडवत् करनी पडती थी। शिक्षित अमीर तरुण जव फ्रेच प्रगतिशील साहित्यके प्रकाशमें देखते, तो उन्हें यह असह्य मालूम होता। उनमेसे कितने ही पश्चिमके देशोको घूमने जाते, और वहाके जीवनके सम्पर्कमे आते, जिससे उन्हे रूसकी पुरानी जारशाही वुरी लगती। फ्रेच-क्रातिने फ्रासमे ही एक नये भावको पैदा नही किया, वल्कि उससे वल्कान, इताली और स्पेन सव जगह जातीय स्वतत्रताकी लहर फैली। दिसम्वरी विद्रोहियोके नेता पेस्तेलने लिखा था—"युरोपके एक छोरसे दूसरे छोरतक वही एक वात घटित हो रही है, पोर्तगालसे रूसतक सभी देशोमें—जिसके अपवाद इगलैंड या तुर्की भी नही है। सुधारकी शक्तिया, कालकी मागें चारो ओर आदमीके दिमागको उत्तेजित कर रही है।" चूकि शिक्षाका प्रसार अभी अमीरो और कुलीनोमे ही था, इसलिये नये विचारोके वाहक भी वही थे। इन्ही क्रातिकारी कुलीनोने रूसमें परिवर्तन लानेके लिये गुप्त राजनीतिक समितिया सगठित की। ऐसी पहली समिति १८१६ ई० में स्थापित की गई, जिसका नाम था "पितृभूमिके सच्चे और भक्त पुत्रोकी सभा", अथवा "मुक्ति-सघ"। कर्नल अलेक्सान्द्र मुरावयोफ इस समितिका सस्थापक था। इसके वीस और सदस्य थे। इसका उद्देश्य था—किसानो को अर्ध-दासतासे मुक्त करना और रूसमें वैधानिक राजतत्रकी स्थापना। इसके जल्दी ही दो दल हो गये, जिनमे एक दल नरम था और दूसरा गरम। गरम दलवालोका नेता कर्नल पावल इवान-पुत्र पेस्तेल (१७९३–१८२६ ई०) था। दो साल वाद (१८१८-२१ ई०) "समृद्धि-सघ" के नामसे एक और सभा स्थापित हुई, जिसकी कितनी ही शाखायें जगह-जगह खोली गई। इनमे सवसे अधिक क्रातिकारी दक्षिणी शाखा थी, जिसे कर्नल पेस्तेलने उक्रइनके तुलचिन नगरमे सगठित किया था। समृद्धि-सघने पेस्तेलके प्रभावमे आकर अपनेको गणराज्यके पक्षमे घोषित किया। मास्कोमे जनवरी १८२१ ई० मे सघका सम्मेलन हुआ, जिसमे नरमदली सदस्योने डरकर सघको वद कर देनेकी घोषणा की, लेकिन पेस्तेलने इसे नही स्वीकार किया और उसने "दक्षिणी सम्मिलनी" (१८२१-२५ ई०) के नामसे एक नया सगठन स्थापित किया, जिसमे पेस्तेल, दाविदोफ आदि कई प्रमुख व्यक्ति शामिल थे। पेस्तेल सुशिक्षित तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति था। समकालीन महाकवि पुश्किनने उसके वारेमे लिखा था—"पेस्तेल पूरे अर्थोमें चतुर पुरुष है। जहा तक मै जानता हू, वह सवसे मौलिक विचारोका आदमी है।" पेस्तेल १८१२ ई०में नेपोलियनकी सेनासे लडते वोरोदिनोके युद्ध-क्षेत्रमें घायल हुआ था। १८१३-१५ ई०के विदेशी अभियाने में भी पेस्तेल रूसी सेनाके साथ था। वोल्तेर, दिदेरो, रूसो जैसे वहुत से युरोपीय विचारकोके ग्रथोका उसने गम्भीर अध्ययन किया था। पेस्तेलने रूसके वैधानिक सुधारका एक प्रोग्राम "रुस्कया प्रा दा" (रूसी सत्य अधिकार) के नामसे वनाया था, जिसके अनुसार सशस्त्र क्राति द्वारा रूसका एक अखड गणराज्य कायम करना था। उसका प्रस्ताव था राजवशके सभी आदमियोको मार डाला जाय, इसके वाद एक कामचालू सरकार घोषित की जाय। शासनके लिये उसने तीन उच्च सस्थाओका निर्माण होना आवश्यक समझा था विधान-सस्था—नरोदनये वेचे (लोकसभा), प्रशासन-सस्था—देर्झाव्नया दुमा

(राज्यदूमा) और निरीक्षक संस्था—वेर्खोव्नी सबोर (उच्चतम सभा)। वोटका अधिकार सम्पत्ति और शिक्षा दोनोंपर निर्भर है। सभी नागरिकोंको समान अधिकार और समान स्वतंत्रताको देते हुये समाजके भीतरके विभाजनको बंद किया जाये। "रुस्कया प्राव्दा" ने घोषित किया था, कि जमींदारोंको बिना क्षति-पूर्तिके दिये किसानों और उनकी जमीनको मुक्त कर दिया जाय। पेस्तेलने जो बात १८२० ई० में घोषित की थी, वहा तक अभी १९५५ ई० के भारतीय भूमिसुधारक भी जानेके लिये तैयार नहीं है।

१८२२ ई० में पीतरबुर्गमें भी एक क्रांतिकारी संस्था "उत्तरी सम्मिलनी" स्थापित की गई, जो कि १८२५ ई० तक मौजूद रही। इस सम्मिलनीका मुखिया निकिता मुरावयोफ (१७९८-१८२३ ई०) था, जो कि जारकी गारदका एक अफसर था। १८१२ ई० में तरुण मुरावयोफ घरसे भागकर सेनामें भर्ती हो रूसी सेनाके साथ दूसरे देशोंमें लड़ाई लड़ता रहा। इसने नेपोलियनके खिलाफ लड़ाइयोंमें भाग लिया था। पेरिसमें रहते उसने निर्वाचन होते देखा। वहीं उसने क्रांतिकारी पुस्तकोंका भी एक संग्रह किया। देश लौटनेपर वह क्रांतिके संगठनमें जुट गया। "उत्तरी सम्मिलनी" के सदस्योंमें कवि कोन्द्राती फ्योदोर-पुत्र रिलेयेफ (१७९५-१८२६ ई०) भी था। १८२३ ई०में "उत्तर तारा" नामसे एक पत्रिका निकाली, जिसने उसने जारके कृपापात्र अरक्चेयेफके अत्याचारोंकी खूब खबर ली। जल्दी ही वह और उसका पत्र जनप्रिय हो गया। १८२३ ई० में वह "उत्तरी सम्मिलनी"में शामिल हो १४ दिसम्बर १८२५ ई० के विद्रोहकी तैयारीमें पूरी तौरसे जुट पड़ा। वह कहता था—"मैं कवि नहीं, बल्कि एक नागरिक हूं।"

नवम्बर १८२५ ई० में जार अलेक्सान्द्र I एकाएक तगन्रकमें मर गया। इस प्रकार दिसम्बरी विद्रोहकी तैयारी हो जानेपर भी वह अलेक्सान्द्रके समय नहीं हो सका। अलेक्सान्द्रका कोई पुत्र नहीं था, इसलिये उसके भाई कन्स्तन्तिनको सिंहासन मिलना चाहिये था, लेकिन उसने अलेक्सान्द्रके जीवन-काल ही में अपने अधिकारको त्याग दिया था, इसलिये जारके तीसरे भाई निकोलाइ I को गद्दी मिली।

चीनसे संपर्क—अलेक्सान्द्रको यूरोपका ही नहीं बल्कि पूर्वमें प्रशान्त महासागर तक फैले अपने साम्राज्यका भी ख्याल था। उसने गोलोंकिनके नेतृत्वमें १८०५ ई०में एक बड़ा दूतमंडल पेकिङ् भेजा। सीमानापर चीनियों ने बहाना बनाकर देर तक दूतमंडलको रोके रक्खा। आगे बढ़नेके पहले रूसी राजदूतसे मांग पेश की, कि चीन-सम्राट्के चित्रके सामने साष्टांग दंडवत् (कोतो) करो। राजदूतने यह कहकर इसे माननेसे इन्कार कर दिया, कि हाल हीमें अंग्रेज राजदूतको कोतो (साष्टांग दंडवत्) करनेसे मुक्त कर दिया गया है। इस बहानेसे उन्होंने रूसी दूतमंडलको आगे बढ़ने नहीं दिया और उसे वहींसे लौट जाना पड़ा। अगले साल १८०६ ई० में क्रुजेन्स्तर्नकी जवीननामें दो रूसी जहाजोंने कान्तन पहुंच अपने मालको वहां उतारा। इसकी खबर पाकर राजधानीसे हुक्म आया, कि रूसियोंको स्थलमार्गसे ही व्यापार करनेका अधिकार है, उन्हें सामुद्रिक मार्गसे व्यापार नहीं करने दिया जा सकता, इसलिये उनके जहाजोंको रोक लिया जाये। लेकिन पेकिङ्की आज्ञाके आनेसे पहले ही रूसी जहाज वहांसे विदा हो चुके थे।

रूसके एसियाके विस्तारमें येरमक (१५७९-८४) और खबारोफ (१६५८) दो प्रमुख व्यक्तियोंके बारेमें हम बतला चुके हैं। १९ वी सदीमें रूसके प्रभावको साइबेरियामें दृढ़ करनेका काम मुरावियफने किया।

२ निकोलाइ I, पावल I-पुत्र (१८२५–५५ ई०)

एक लेखकने "रूसी जारशाहीकी वैदेशिक नीति" पर लिखते हुये १८९० ई० में इस जारके बारेमें कहा था—"एक क्षुद्र मिथ्याभिमानी आदमी था, जिसका दृष्टिक्षेत्र एक जमादार (कम्पनीके अफसर) से अधिक दूर तक नहीं जाता था। वह ऐसा आदमी था, जो कि क्रूरताको शक्ति, हठधर्मीको मनोबल समझता था। सबसे अधिक जो चीज उसको पसंद थी, वह था शक्तिका प्रदर्शन।" निकोलाइ रूसियाके सैनिकवादका सभी जारोंसे अधिक पक्षपाती था। इसकी बीबी चार्लोतका बाप

प्रुशियाका राजा फ्रेड्रिक विल्हेल्म III था, जिसका भी उसे और उसकी वीर्वाको बहुत अभिमान था। सिपाहियोंको निष्ठुरतापूर्वक कवायद-परेड कराके कठपुतली बना देनेको वह सैनिक विज्ञानका बहुत भारी कौशल मानता था। उस क्रूर, मदबुद्धि और अभिमानी आदमीने कभी पुस्तक नहीं पढी। उसने अरक्चेयेफकी शासन-व्यवस्थाको पूरी तौरसे कायम रक्खा। लेकिन, निकोलाइके लिये सर मुडाते ही ओले पडे। उसे बापके समयसे भीतर ही भीतर पकती क्रांतिका मुकाबिला करना पडा। वह इसके बारेमे कहता था—"षड्यन्त्रियो और षड्यन्त्री नेताओ के विरुद्ध (मेरा) युद्ध अत्यन्त क्रूर और निर्दयतापूर्ण होगा। मै उसके लिये कोई बात उठा नही रखूगा। मेरा कर्तव्य है, कि रूस और युरोपको इसके बारेमे शिक्षा दू।"

उसने क्रांतिकारियोको निर्मम होकर शिक्षा दी भी, जिसमे उसे इस बातका सुभीता था, कि क्रांतिकारी अभी नौसिखिये थे, अभी वह दृढतापूर्वक अपने कामपर डटे नही थे। क्रांतिकारियोने २६ (१४) दिसम्बरको विद्रोह करनेका दिन निश्चित कर रक्खा था, जिस दिन कि नये जारके प्रति शपथ लेनी थी। उस दिन (२६ दिसम्बर १८२५) सबेरे दिसम्बरी अफसरो द्वारा सचालित रेजिमेंट सीनेटके मैदानमे एकत्रित हुई, तीन हजारसे ऊपर विद्रोही सैनिक और नौसैनिक पीतर I के स्मारकके चारो ओर जमा हुये, लेकिन वह निष्क्रिय रहे, क्योकि अभी विद्रोहके बारेमे क्रांतिके नेता अनिश्चित-से मालूम होते थे। अन्तिम क्षणमे क्रांतिका अधिनायक सेर्गेइ त्रूबेत्स्की मैदानमे नही आया और विद्रोही बिना नेताके रह गये, जिसके कारण उनका सगठित बल खतम हो गया। निकोलाइ I कायर तो था ही, पहले वह हिचकिचाता रहा, लेकिन जब उसको विद्रोहियोकी अवस्थाका पता लगा, तो अपने विश्वास-पात्र सैनिको और तोपचियोको बारह बजे मैदानमे भेजा। तमाशा देखनेके लिये कितने ही मजदूर, कारीगर और नगरके गरीब मैदानमे जमा हो गये थे। उस समय रूसका सबसे बडा गिर्जा ईसाइकी मबोर बन रहा था। मजदूरोमे भी इतना जोश आ गया था, कि उन्होने जारके सैनिकोको अपने पास पडे लकडीके कुदो और ढेलोसे मारा। लेकिन मालूम हो गया, विद्रोही आक्रमण करनेके लिये तैयार नही है। किसी भी विद्रोहमे आक्रमणकी नीति सबसे लाभदायक होती है, क्योकि उसमे थोडेसे भी आदमी बहुसख्यक शत्रुको घबराहटमे डाल सकते है। जारके हुक्मपर सवारोने आक्रमण किया। विद्रोही सैनिकोने गोलियोकी वर्षा करके उन्हे भगा दिया। गोलियोके अतिरिक्त समझा-बुझाकर भी शात करनेकी कोशिश की गई। आखिर किसी भी निरकुश शासनकी आधारशिला सैनिक अफसर है। जब उनमे विद्रोहकी भावना पैदा हो गई, तो भविष्यके लिये क्या विश्वास किया जा सकता है? ईसाई सघराजने समझानेकी कोशिश की, लेकिन विद्रोही सैनिक उसकी बातको माननेके लिये तैयार नही थे। फिर पीतरबुर्गके महाराज्यपाल मिलोरदोविचने जाकर समझानेका प्रयत्न किया, जिसमे उसे विद्रोही अफसर कखोव्स्कीने मरणासन्न घायल कर दिया। जारको आता देख उसके ऊपर भी सैनिकोने बन्दूक दागी। जार बहुत घबरा गया और उसको डर लगा, कि देर करनेमें शायद नगरके गरीब भी इस झगडेमे शामिल होकर लूट-मार करने लगे, इसलिये उसने तोप छोडनेकी आज्ञा दी। सीनेट मैदान, नेवा नदीके बाध और सडकोमे चारो ओर लाशे बिछ गई। नेवा बर्फ बनी हुई थी। रातके वक्त बर्फमे छेद करके बहुतसे हत और आहत लोगोको उसके भीतर डालकर समुद्रकी ओर बहा दिया गया। विद्रोही नेताओको पकड लिया गया।

इस प्रकार पीतरबुर्गमे दिसम्बर की क्रांतिको दबा दिया गया। उक्रइनमे चेर्निगोफकी रेजिमेंटने भी १० जनवरी १८२६ ई० (पुराने पचागके अनुसार २९ दिसम्बर १८२५ ई०) को विद्रोह किया, लेकिन उसे भी दबा दिया गया। पेस्तेल्को किसी विश्वासघातीने पकडा दिया था। सेर्गेइ मुराव्योफ-अपोस्तोल्ने वहा विद्रोहका नेतृत्व किया, लेकिन चेर्निगोफने भी आक्रमण न करनेकी गलती की, जिससे वह जारशाहीको बहुत नुकसान नही पहुचा सके। "सयुक्त स्लाव सम्मिलनी" के कुछ दृढ सदस्य चाहते थे, कि एक विद्रोही रेजिमेंट भेजकर कियेफ पर अधिकार कर लिया जाय। इसमे सुभीता भी था, क्योकि कियेफमे छावनीकी पल्टनमे विद्रोहसे सहानुभूति रखनेवाले काफी आदमी थे, लेकिन यहा भी नेताओने ढिलमिल्यकीनीका प्रमाण दिया। निकोलाइ I ने विद्रोहको दबाकर विद्रोहियोके प्रति क्रूरतापूर्वक बदला लेनेका काम शुरू किया।

२५ (१३) जुलाई १८२६ ई०में पाच विद्रोही नेताओं—पेस्तेल, कवि रिलेयेफ, काखोवस्की, मुराव्योफ-अपोस्तोल और बेस्तुजेफ-र्‍यूमिनको फासी दे दी गई। फासी देते वक्त रिलेयेफ, कखोवस्की और मुराव्योफ-अपोस्तोलके गलेकी रस्सी टूट गई, जिसपर उन्हे दुबारा फासी दी गई। बहुतसे विद्रोहियोको कडी-कडी सजाये दी गई, और कितनोको साइबेरियामे आजीवन कालापानीका दड देकर भेज दिया गया। सिपाहियोको कितनी यातनाये दी गई, इसका उदाहरण अनोइर्चेको था, जिसे अदालतने बारह हजार बेंत लगानेकी सजा दी और बेंत खाते-खाते वह मर गया।

दिसम्बरका विद्रोह उच्चवर्ग—अमीरो—का विद्रोह था, उसमे साधारण जनताको शामिल करनेकी कोशिश नही की गई, और न ऐसा कोई तरीका इख्तियार किया गया, जिससे जनसाधारण उस ओर खिंचता- भारतमे १८५७ ई०के विद्रोहमें भी कुछ ऐसाही हुआ था। इसीलिये विद्रोहके दबने देर नही हुई। लेनिनने उसके बारेमें लिखा था—"क्रातिकारियोका घेरा बहुत छोटा था। जनसाधारणसे उनका कोई सबध नही था। लेकिन उनका काम व्यर्थ नही गया। दिसम्बरियोंकी असफलतासे पीछे रूसके क्रातिकारियोने शिक्षा ली। उसने प्रगतिशील मस्तिष्कोमे गर्मी पैदा की, जिसने हर क्षेत्रमें क्रातिके लिये जगह तैयार की।"

निकोलाइ I को राजकाज सभालते ही जिस तरहके खतरेका मुकाबिला करना पडा। वह दिलोदिमागसे कमजोर आदमी था। इसके कारण उसको हर जगह प्राणोका भय मालूम होने लगा। उसने पुलिस-राज्य कायम करते हुये "तृतीय भाग" के नामसे एक राजनीतिक गुप्त पुलिसका सगठन किया। जैसे ही किसी सैनिक या असैनिक अफसर अथवा सरकारी नौकरपर सदेह होता, उसे नौकरीसे निकाल बाहर किया जाता। उसे शिक्षण-सस्थाओंसे भी भय था, क्योंकि सभी विद्रोही नेता नवशिक्षित थे। इसीलिये शिक्षण-सस्थाओपर भी पुलिसकी निगाह रहने लगी।

पूजीवादी विकास—चाहे इगलैंड और फ्राससे पीछे ही क्यों न हो, किन्तु पूजीवादी उत्पादनके साधनो—कल-कारखानो—के विस्तारको किये विना रूस सैनिक तौरसे कैसे सबल रह सकता था? पूजीवादी नफेको देखकर कितने ही रूसी इस तरफ झुके। इनमे काफी सख्या उनकी थी, जिन्होंने छोटे-छोटे व्यापारो या दस्तकारियो द्वारा पैसा जमा किया था। पूजी कम रहनेके कारण अपने कारखानेको बढाने और पूजी जमा करनेके लिये काम भी वह मजूरोके भीषण शोषण द्वारा करना चाहते थे। निकोल्स्कया फैक्ट्रीका स्वामी मोरोजोफ पहिले अर्धदास किसान था, जिसने १८२० ई० में जमींदारको क्षति-पूर्ति देकर मुक्ति प्राप्त की थी। फिर वह पशुपाल (चरवाहा), बादमें कोचमैन (कोचवान), फिर मिल्मजदूर और दर्जीका काम करता रहा। बादमे उसने दूकान खोली और अन्तमें अपनी फैक्ट्री स्थापित की। १९ वी शताब्दीके और भी कितने ही रूसी पूजीपतियोका यही इतिहास था। १९ वी शताब्दी के पूर्वार्धमें पूजीवादी ढगके धातु-उद्योगका आरम्भ हुआ। यद्यपि उसकी प्रगति मद रही। उक्रइनमे भी लोह-चून मिली, और वहा भी लोहा बनानेका काम शुरू हुआ था, पर मुख्य लौहकेद्र एसिया सीमापर उराल रहा, जहापर मजदूर बहुत सस्ते मिलते थे। १८३० ई०के बाद साइबेरियाकी सोनेकी खानोमे—पहले पूर्वी साइबेरिया, येनिसेइ-उपत्यका और फिर प्रसिद्ध लेनाके सुवर्ण-क्षेत्रमे—काम शुरू हुआ। १८१५ ई०में रूसकी ४१८९ फैक्ट्रियो और मिलोमें १७३ हजार मजदूर काम कर रहे थे, जब कि १८५८ ई०में क्रमश उनकी सख्या १२२५९ और ५५९ हजार हो गई। १८८० ई०के बाद ही वाष्पचालित मशीनोंका उपयोग होने लगा, जिन्हें रूसी उद्योगपति इगलैंड और दूसरे देशोंसे मगाते थे। १८३५ ई० में इस कामके लिये जितनी मशीने मगाई गई थी, पचीस साल बाद १८६० ई०में वह उनसे पच्चीस गुना अधिक मगाई जाने लगी। अभी तक किसानोकी अर्धदासता बद करनेका प्रयत्न आदर्शवादी भावुकतासे प्रेरित होकर किया जाता था, लेकिन अब अर्धदासताका सबसे बडा शत्रु औद्योगिक पूजीवाद आ गया था, जिसको गैरजिम्मेवार अर्धदास मजूरो की नही, बल्कि मजूरीके लिये अपनेको बेचनेवाले कुशल कारीगरोकी जरूरत थी। इसलिये अर्धदासताके विरुद्ध कानून पास करनेसे बहुत पहले ही अर्धदास किसान कारखानोमें भाग-भागकर मजदूर बनते जा रहे थे।

यातायातका सुभीता पूजीवादके लिये सबसे आवश्यक चीज है, क्योंकि तभी माल एक जगहसे दूसरी जगह सस्तेमें भेजा जा सकता है। अग्रेज नही, बल्कि एक रूसीने सबसे पहले रेल-इजन बनाया

था, लेकिन सामन्तशाही रूसमे उसकी कदर नही हुई। इगलैडने पहले उससे फायदा उठाया। उसने १८२५ ई० मे अपनी पहली रेल बनाई, जिसके बीस वर्ष बाद कलकत्तासे पश्चिमकी ओर रेलकी पटरिया ही नही बिछी, बल्कि १८४५ ई० मे भारतमें रेलोके कामके लिये ईस्ट इडिया रेलवे कम्पनीकी स्थापना की गई, और १५ अगस्त १८५४ ई० में हवडा और हुगलीके बीच रेलका यातायात शुरू हो गया। रूसमें पीतरबुर्ग और जार्स्कोयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) के बीच पहली रेलवे लाइन १८३७ ई० मे बनी, जिसके लिये सारा सामान इगलैड से आया था। सबसे पहली महत्त्वपूर्ण रेलवे लाइन पीतरबुर्ग और मास्कोकी थी, जो नौ वर्षमे बनकर १८५१ ई० मे यात्राके लिये खोल दी गई। तब भी रूसमे रेलोंके प्रसारकी गति बहुत मद ही रही। १८५५ ई० में रूसी रेले फ्रासकी रेलवे लाइनो का पचमाश और जर्मन रेलोका षष्ठाश ही थी। अब भापके इजन और भापसे चलनेवाले जहाजो के महत्त्वको उपेक्षित नही किया जा सकता था, इसलिये रूसमे वाष्पचालित जहाजो के बनानेके कारखाने भी स्थापित हुये। सैनिक हथियार और शक्ति तो लोहेके ऊपर निर्भर करती है, इसलिये उसके उत्पादनकी तरफ जारशाहीका ध्यान जाना जरूरी था। १८ वी शताब्दीके अन्तमे रूस और इगलैड दोनों ही अस्सी लाख पूद (१पूद=३६ पौड=१८ सेर) लोहा पैदा करते थे, लेकिन १९वी सदीके पूर्वार्धमें जब कि रूसने अपनी लोहेकी उपजको दुगुना ही कर पाया था, इगलैडमे १८५९ ई०में कच्चे लोहेकी उपज तीस गुना (२३४० लाख पूद) हो गई थी।

निकोलाइ I के शासनकालमे विद्रोहोकी कमी नही रही। पोलोने रूसी शासनके विरुद्ध १८३०-३१ ई०में विद्रोह किया था। वहासे विद्रोहकी लहर बेलोरूसिया, उक्रइन और लिथुवानियामे फैली। उक्रइनमें इस विद्रोहने किसानोके विद्रोहका रूप लिया। १८२६-३४ ई०में १४५ विद्रोह हुये थे, जब कि १८४५-५४ ई०मे उनकी सख्या ३४८ हो गई। जारशाही अत्याचारोके मारे कभी-कभी सारे किसान अपने गावको छोडकर भाग जाते थे।

ईरान (१८२६-२८ ई०) और तुर्की-युद्ध (१८२७-२९ ई०)—रूसके खिलाफ ईरान और तुर्कीको उकसाना इगलैड और फ्रासकी नीति हो गई थी, और उधर जारशाही भी अपने राज्य-विस्तारके लिये इन देशो की ओर हाथ बढा रही थी, इसलिये युद्ध होना स्वाभाविक ही था। १८२६ ई० की गर्मियोमें रूसके काकेशसमें बढावको देखकर ईराननें लडाई शुरू कर दी। ईरानी सेनाने आजुर्बाइजानको लेकर दागिस्तान और चेचनपर धावा किया, लेकिन १८२७ ई० के बसतमे रूसी सेनाने ईरानियोको हरा दिया। १८२८ ई० के जाडोंतक ईरानको नखचेवान और येरिवानके इलाकोसे भी हाथ धोकर सधि करनी पडी। इसी समय रूस पश्चिमी काकेशसके लिये तुर्कीसे भी लड रहा था। निकोलाइ I तो कान्स्तन्तिनोपल और दरेदानियलपर भी अपना झडा गाडना चाहता था। यद्यपि रूसके आक्रमणोका वह फल नही हुआ, जो कि निकोलाइ चाहता था, तब भी १८२९ ई०की सधिके अनुसार कालासागरके सारे काकेशस-तटको रूसने ले लिया, और केवल बातू अब तुर्कीके पास रह गया।

शामिलका विद्रोह—काकेशसमे यद्यपि ईरान और तुर्कीको रूसियोंने दबा दिया, लेकिन वहाके वीर पहाडियोंने आसानीसे जारके शासनको नही स्वीकार किया। इमाम काजी मुल्लाने १८३२ ई०मे ईसाइयोके खिलाफ मुरीदवादके नामसे मशहूर एक सम्प्रदाय स्थापित किया। आरम्भमें यह एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसने काफिरोके शासनके स्थापित होनेपर राजनीतिक रूप ले लिया। काजी मुल्लाने स्वय अपने अनुयायियोको लेकर रूसी सेनापर जहा-तहा आक्रमण किया। उसके मरनेपर उसका चेला शामिल नेता हुआ, जिसने १८३४ से १८५९ ई०के पच्चीस वर्षोंमे काकेशसमें जारशाही अफसरोको नाको चने चबवाये। शामिल बडा ही बहादुर और चतुर नेता था। उसने मुरीदोका सगठन बहुत मजबूत किया। काकेशसकी दुर्गम पहाडियोसे लाभ उठाकर वह रूसियोंके ऊपर आक्रमण करता रहा। पाच वर्षके सघर्षके बाद अगस्त १८३९ ई० में दागिस्तानके अपने केंद्रको छोडकर उसने चेचनके दुर्गम पहाडियोका आश्रय लिया। काकेशसके बेग और खान पहले ही जारशाही-के गुलाम बन चुके थे, इसलिये शामिलने उनके खिलाफ भी लडाई जारी रखते साधारण पहाडियोको अपनी ओर खीचा। १८५९ ई० मे दागिस्तानके गूनिब किलेमें शामिलने अन्तिम बार रूसियोका मुका-

विला किया। २५ अगस्त १८५९ ई०को रूसी सेनापतिने खबर भेजी—"गूनिव हाथमें आ गया, शामिल वदी कर लिया गया।" शामिलको पकडकर पीतरवुर्ग भेज दिया गया, जहासे उसे ले जाकर कलुगामें वसा दिया गया। पीछे वह हजके लिये मदीना जा वही मरा। काकेशसके मुस्लिम-प्रधान इलाकोंमे जारशाहीको चैनसे शासन करनेका मौका नहीं मिल सकता था, इसलिये एक ओर जहा जारशाही अत्याचारके कारण वाशिंदे अपना गाव और देश छोडकर भागते जाते थे, या उन्हे खास-खास जगहो से हटाया जाता था, तो दूसरी ओर रूसी किसानो और कसाकोंको ले जाकर उत्तरी काकेशसमें वसाया जाता था।

मध्य-एसियाकी रियासतें—आगे हम वतलायेंगे, कि कैसे १८ वीं शताव्दीके अन्तमें पश्चिमी मध्य-एसियामे खीवा, वुखारा और खोकन्दकी तीन रियासतें कायम हो गईं। इन्ही तीनो रियासतोंकी भूमि-पर आगे चलकर उज्वेक, ताजिक, किर्गिज और तुर्कमान गणराज्य वने। तुर्कमानोकी भूमिको नादिर-शाहके समयमे ही ईरानके अधीन माना जाता था। तुर्कमान घुमन्तू समय-समयपर वुखारा, अफगानि-स्तान और ईरानके भीतर भी जाकर लूट-मार किया करते थे। ये तीनो रियासते भी आपसमे लडती रहती थीं। १९ वी शताव्दीके आरम्भमे खोकन्दका खान ज्यादा शक्तिशाली हो गया था, जव कि उसने ताशकन्द जैसे एक वडे ही महत्त्वपूर्ण व्यापारिक और सैनिक केंद्रको अपने हाथमें कर लिया। ताशकन्दको ले लेनेके वाद कजाको और किर्गिजोकी वहुतसी भूमिको भी खोकन्दने ले लिया। खोकन्दियोंने इस भूमिमें जहा वहुतसे सैनिक महत्त्वके किले वनवाये, वहा लोगोको पक्का मुसलमान वना अपनी ओर खीचनेके लिये भिन्न-भिन्न जगहोंपर कितने ही मदरसे भी स्थापित किये। अकमेचेत (श्वेत-मस्जिद), औलियाअता विशेषकर इसी समय महत्त्वपूर्ण नगर वने। १९ वी सदीके दूसरे पादमे पहुचते-पहुचते खोकन्द मध्य-एसियाका सवसे वडा राज्य हो गया। वह पश्चिमी चीन और पामीरसे निम्न सिर-दरिया तक फैला हुआ था।

खीवाने भी खोकन्दकी तरह कजाको, तुर्कमानो और कराकल्पकोंकी भूमिपर अधिकार करके १९ वी सदीके आरम्भमें अपनी सीमाका काफी विस्तार कर लिया था। खोकन्द और खीवाके वीचमे वुखाराका खान था, जिसके हाथमें पहले तुर्किस्तान (निम्न और मध्य सिर-उपत्यका) था, लेकिन खोकन्दने उसे छीन लिया। वुखाराके नीचे रहनेवाले तुर्कमानोमेंसे कितनोंको खीवाने ले लिया था। इस प्रकार वुखारा उतना शक्तिशाली नही था, तो भी शताब्दियोसे वुखारा इस्लामिक सस्कृतिका केंद्र चला आया था, और वहाकी दस्तकारी और शिल्पकी वडी धाक थी, जिसके द्वारा उसे व्यापारमे काफी नफा रहता था। इन रियासतोंके खान (राजा) और वडे अमीर अधिकतर उज्वेक थे, उनके वाद मुल्लाओं और खोजों (सतों) का प्रभाव ज्यादा था।

कजाकोंके वारेमें लिखते हुये हम वतला चुके है, कि १९वी सदीके पूर्वार्धमें उनके लघु, मध्य और महा-ओर्दूके नामसे तीन ओर्दू थे। १८वी सदीके पूर्वार्धमें ही लघु और मध्य-ओर्दूने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी, और १८२० ई० के आसपास रूसी प्रवासी भी इनकी भूमिमे जगह-जगह वसने लगे थे। १८३५-३७ ई०में ओरेनवुर्गके महाराज्यपाल व० अ० पेरोव्स्कीने ओर्स्क और त्रोयत्स्कके वीचमें किलोंकी पक्ति वना करके जगल और चरागाहकी दस हजार वर्ग किलोमीतर वडी अच्छी भूमि कजाकोंसे छीन ली, जिसके वाद कजाकोंने विद्रोह किया, इसे हम पहले वतला चुके है।

१८४५ ई० में दश्तेकजाकके गर्भमे जारशाहीने नई किलावदिया तैयार कीं। कजाक लोग सुल्तान केनेसरी कासिमोफके नेतृत्वमे रूसी वस्तियोंपर आक्रमण करते आगे-पीछे हटते जा रहे थे। कासिमोफका पीछा करते रूसी सेना इली नदीकी ओर वढी। अव रूसियोंको उनका रास्ता अल्ताई और त्यान्‌शानमें चीनी सीमाके पास ले जा रहा था। सवसे पहले रूसियोका ध्यान खीवाकी ओर गया। यह मालूम ही है, कि खीवा (ख्वारेज्म) वहुत पुराने समयसे रूसके व्या-पारकी एक मुख्य शृखला थी। खीवामें भी १९ वी सदीके पूर्वार्धमें वडी अव्यवस्था थी, जिससे रूसियोंको आगे वढनेका वहाना और सुभीता मिल गया। महाराज्यपाल पेरोव्स्कीने एक छोटीसी सेनाको लेकर १८३९ ई०की शरद्‌में ओरेनवुर्गसे खीवाके विरुद्ध अभियान किया। इस सेनामें कसाक, वाशकिर और कितने ही कजाक सवार भी थे। पन्द्रह हजार ऊटोपर सेनाके लिये रसद चल रही थी। पहला

अभियान सफल नही हुआ। वर्फानी तूफान और सख्त सर्दीने वहुतसे घोडो और ऊटोको मार डाला, जिसपर पेरोव्स्कीको पीछे हटना पडा। इस असफलताके बाद पेरोव्स्कीने अपने इरादेको छोडा नही, बल्कि दश्तेकिर्गिजकी तरफसे बढनेका निश्चय किया। भूमिके बारेमें पता लगाया, पानीके लिये क्ये तैयार किये, जगह-जगह किले बनाये। इस तरह रास्तेको सुरक्षित करनेकी कोशिश की। सिर-दरियाके ऊपर अराल्स्काका किला बनाकर वहा (अराल समुद्रके तटपर) रूसी किसानोकी बस्तिया बसा दी गई। यही नही, बल्कि वाष्पचालित अग्निबोट भी अराल समुद्र और सिर-दरियाके भीतर चलने लगे। इस तरह ओरेनबुर्ग और अराल समुद्रके बीचके रास्तेको यातायातके लिये सुरक्षित कर दिया गया। इतनी तैयारीके बाद १८५३ ई०के वसतमें पेरोव्स्की एक बडी सेनाके साथ सिर-दरियाके द्वारा ऊपरकी ओर बढा, और खोकन्दकी राज्यसीमाके भीतर जाकर उसने अकमेचित किलेको घेर लिया। रूसियोके सामने खोकन्दी कितने दिनो तक ठहरते ? अकमेचित पेरोव्स्कीके हाथमे आई। उसने सिर-दरियाके ऊपर पाच नये किले बनवाये। रूसियोने पिशपेक, तोकमक आदि कितने ही नगरोको ले लिया। ये किले किर्गिजिस्तानकी चूइस्क-उपत्यकोमे थी, जिनके शासक यद्यपि खोकन्दी थे, लेकिन निवासी किर्गिज थे। इसी समय किर्गिजोका पश्चिमके नये स्वामियोसे वास्ता पडा। तो भी वह १८७० ई०से पहले पूरी तौरसे रूसियोके अधीन नही हो पाये थे। उधर साइबेरियाकी तरफ बढते हुये १८५४ ई०में रूसी वेर्नोयेके किलेको बनानेमे सफल हुये, जहापर पीछे वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) नगर की स्थापना हुई।

इतना कर लेनेके बाद १८५४ ई०में अब फिर पेरोव्स्की खीवाके खिलाफ चला। खानको सधि के सिवा और कोई रास्ता नही दिखलाई पडा, और उसने रूसियोके पास अपना दूत भेजकर 'जारकी अधीनता स्वीकार कर खीवामे व्यापार करनेकी रियायतें प्रदान की। निकोलाइ I के शासनके अन्तिम वर्षोंतक कजाक और किर्गिजके दश्त (स्तेपी) पूर्णतया रूसियोके हाथमे हो गये, और सिर-दरियासे लेकर अल्ताइके उत्तरमे सेमीप्लातिन्स्क तक जगह-जगह रूसी किले बना दिये गये। खीवाका खान अब रूसके अधीन था तथा खोकन्द और बुखाराके खान अब खीवाका अनुसरण करनेके लिये प्रतीक्षा कर रहे थे।

निकोलाइ I के शासनकाल ही मे फर्वरी १८४८ ई०में पेरिसमे क्राति हुई। यद्यपि यह प्रथम क्राति जितनी सबल नही थी, लेकिन इसने जारके दिमागमे खलबली जरूर पैदा कर दी। निकोलाइ उस समय नाचमें था, जब कि उसे इसकी खबर मिली। वह गुस्सेमे पागल होकर अपने दरबारियोसे बोल उठा—"भद्र पुरुपो, अपने-अपने घोडोको कस लो, पेरिसमे क्राति हो गई है।" पेरिसकी इस क्रातिके समय ही वीना-आस्ट्रियामें भी क्राति हो गई। दूसरी जगहोपर भी उसका प्रभाव पड रहा था। निकोलाइने इतालीके राष्ट्रीय स्वतत्रता-आन्दोलनको दबानेके लिये साठ लाख रूबल दिये। लेकिन निकोलाइको क्या पता था, कि उसी समय एक ऐसी सबल ज्वाला तैयार की जा रही है, जिसका शिकार सबसे पहले रूस और उसका पोता निकोलाइ II होनेवाला है ? पेरिसकी इसी क्रातिके समय मार्क्स अपने क्रातिकारी कार्यक्षेत्रमे प्रविष्ट हो चुके थे। उन्होने उस सिद्धान्त और उस सैनिक कौशलका भी पता लगा लिया था, जिसके द्वारा विश्वमे सहस्राब्दियोसे चला आता मुट्ठीभर धनियोका राज्य खतम होकर उनकी जगह सर्वहारोके नेतृत्वमे बहुजनका शासन स्थापित होनेवाला था। कार्ल मार्क्सने पेरिसकी इस द्वितीय क्रातिके एक साल पहले १८४७ ई० मे प्रथम कम्युनिस्ट पार्टीको कम्युनिस्ट लीगके नाम से सगठित किया था। उसीके लिये मार्क्स और उनके साथी एगल्सने "कम्युनिस्ट पार्टीकी घोपणा" तैयार करके १८४८ ई० मे प्रकाशित की थी। निकोलाइको दुनियाके सबसे अधिक शक्तिशाली क्रातिके हथियार इस "घोपणाके" बाबत पता नही था। वह नही समझता था, कि उसके दरबारी घोडोको कितना ही कसे, वह घोपणाके पथको रोक नही सकेंगे। पेरिसकी द्वितीय क्रातिके बाद लायोस कोसुतके नेतृत्वमें मगयार (हुगरी) की जनताने आस्ट्रियाके सामन्ती शासनके विरुद्ध विद्रोह किया। निकोलाइने एक लाख चालीस हजार सेना लेकर अपने सेनापति पस्केविचको उसे दबानेके लिये भेजा, और १८४९ ई०मे विद्रोही मगयारोकी तेईस हजार सेनाने आत्म-समर्पण किया। रूस अब सिद्ध कर रहा था, कि प्रुशिया हो या आस्ट्रिया, फ्रास हो या इताली, सभी जगह क्रातिको दबानेका सबसे जबर्दस्त

साधन निरंकुश जारशाही है, इसीलिये तो नही क्रांतिने सबसे पहले रूसके जारको ही खतम किया?

निकोलाइको अपने शासनके अन्तिम कालमें क्रिमियाका युद्ध (१८५३-५६ ई०) देखना पडा। इस युद्धके लिये भी फ्रांस और इंगलैंडने तुर्की सुल्तानको उकसाया था, लेकिन उसके आरम्भ करनेका मौका निकोलाइने दिया। फिलस्तीन उस समय तुर्कोंके हाथमें था, जिसके कारण ईसाइयोंके योरोशिलम आदि तीर्थस्थान भी सुल्तानके अधीन थे। १८५३ ई०में एक विशेष दूतमंडल कान्स्तन्तिनोपल भेजकर निकोलाइने सुल्तानसे माग की, कि फिलस्तीनके बेतलहेमके मदिरकी कुंजी रखनेका अधिकार रूसी चर्चको दिया जाय, लेकिन फ्रांस और तुर्कोंके बीच जो सधि हुई थी, उसके अनुसार यह अधिकार कैथलिक चर्चको मिला था। सुल्तान जानता था, कि इस बातमें फ्रांस और इंगलैंड हमारे समर्थक होंगे, इसलिये उसने रूसकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। दोनो देशोका दौत्य सबध तोड दिया गया, और जून १८५३ ई०में अस्सी हजार रूसी सेना तुर्कोंकी ओर अभियान करते मोल्दाविया और वलाचियामें दाखिल हुई। समझौतेकी कोशिश की गई, लेकिन उसमें सफलता नही हुई। तुर्की सेनाने कालासागरके पूर्वी और पश्चिमी तटोपरसे होकर आक्रमण शुरू किया। सबसे पहला जबर्दस्त संघर्ष कालासागरके दक्षिणी किनारेपर अवस्थित सीनोपमें हुआ। नवम्बर १८५३ ई०में रूसी नौसेनापति नखिमोफने एकाएक वहा आक्रमण करके तुर्कोंके जगी बेडेको नष्ट कर दिया। अब इंगलैंड-फ्रांस और अधिक पर्देकी आडमें शिकार नही कर सकते थे, इसलिये वह सीधे मैदानमें कूद पडे। प्रुशिया और आस्ट्रियाने भी गाढेके समय रूसका पक्ष छोड दिया। रूसको इंगलैंड और फ्रांसके मजबूत जगी बेडेका मुकाबिला करना था, जो उसकी अपेक्षा कही अधिक सबल था। १ अप्रैल १८५४ ई० को फ्रांस और इंगलैंडके जगी बेडेने अदेस्सा नगरपर बम वर्षा की। यही नही, उन्होने उससे बहुत दूर उत्तर श्वेत-सागरके किनारेके रूसी नगर सोलोवेत्स्कपर जहा गोलाबारी की, वहा प्रशान्त महासागरके कामचत्का प्रायद्वीपमें पेत्रोपावलोव्स्क नगरको भी तोपोका निशाना बनाया। सबसे अधिक सघर्ष हुआ कालासागरमें। सितम्बर १८५४ ई०के आरम्भमें अंग्रेज और फ्रेंच नौसैनिक सेवस्तापोलको पीछेसे लेनेके लिये समुद्र-तटपर उतरे। सेवस्तापोलने बडा जबर्दस्त मुकाबिला किया। यद्यपि अन्तमें जीत उन्हींकी हुई, लेकिन एक अंग्रेज कमांडरने इस विजयके बारेमें कहा था—"यदि इस तरहकी एक और विजय प्राप्त हुई, तो इंगलैंडके पास कोई सेना नही रह जायेगी।" सेवस्तापोलने ग्यारह महीनेतक बडा जबर्दस्त प्रतिरोध किया था। इसी समय फर्वरी १८५५ ई०में निकोलाइ I मर गया। सेवस्तापोलके प्रतिरोधमें भाग लेनेवाले रूसी अफसरोंमें महान् साहित्यकार लेव ताल्स्तवा (ताल्स्ताय) भी था, जिसने "सेवस्तापोलकी कथायें" को लिखकर इस समयकी रूसियोंकी वीरताका बडा सुदर चित्र खीचा है। इसी समय दाशा सेवस्तापोल्स्कयाने दुनियामें पहिली बार युद्धके घायलोंमें नर्सका काम किया था। अंग्रेज इसका श्रेय फ्लोरेन्स नाइटिंगलको देते है। इसी प्रतिरोधमें अदमिरल नखीमोफ मारा गया। ३४९ दिन तक भारी मुकाबिला करनेके बाद सेवस्तापोलकी सभी चीजोको नष्ट करने तथा अपने सभी पोतोंको डुबाते रूसियोंने सिर्फ खडहरोको शत्रुओंके हाथमें जाने दिया।

निकोलाइके मरनेके बाद १८५६ ई०मे पेरिसमें सधि हुई। अंग्रेज और फ्रेंच विजयी हुये थे, लेकिन वहाके शासक भली प्रकार जानते थे, कि हमारे विरुद्ध होनेवाली जबर्दस्त क्रांतियोंमें जार ही हमारा सबसे बडा सहायक होता आया है, इसलिये वह कब पसद करते, कि जारशाही रूसको अधिक निर्बल कर दिया जाय? तो भी रूसको कालासागरमें अपने जगी बेडे या तट-भूमिपर किले रखनेके अधिकारसे वंचित कर दिया गया। तुर्की साम्राज्यकी रक्षाकी जिम्मेवारी ले ली गई, और रूस और तुर्कोंकी पुरानी सीमायें कायम रक्खी गई। सर्विया, मोल्दाविया और वलाचियाको युरोपियन शक्तियोंके सरक्षणमें दे दिया गया। दर्रेदानियल और कालासागरमें सभीको व्यापार करनेका समानाधिकार मिला। क्रिमियाके युद्धमें असफल होकर रूसने युरोपकी राजनीतिमें कायम की हुई अपनी प्रधानताको खो दिया, और अब उसका स्थान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें वह नही रह गया, जो कि १८१५ ई०से १८५३ ई० तक था।

साइबेरिया में प्रसार—साइबेरियामें रूसी शक्तिके प्रधान प्रसारक और सस्थापक येर्मक और खबारोफके बारेमें हम पहले कह चुके है। मुराबेफ तीसरा और अन्तिम पुरुष था, जिसने साइबे-

रियामे जारशाहीकी शक्तिको बढाने और मजबूत करनेमे काम किया। ६ सितम्बर १८४७ ई० को जार निकोलाइ तुलाकी ओर गया हुआ था, जहा उसने तरुण मुरावेफको साइबेरियाका राज्यपाल नियुक्त किया। इसके बादके कितने ही वर्षोका साइबेरियाका इतिहास मुरावेफके कामोका लेखा है। इस समय रूसी नौसेना-मत्रालय अखोत्स्क समुद्रके दक्षिणी छोरपर तुगरकी खाडीमें एक नया बदरगाह बनाना चाहता था। मुरावेफने उसे ठीक नही समझा और उसने सुझाव रक्खा, कि ऐसे बन्दरकी स्थापनाके लिये नेवेल्स्कीके नेतृत्वमे अमूरकी खोज-पडताल की जानी चाहिये। १८४९ ई० में इसपर विचार करनेके लिये जारने एक समिति नियुक्त की, लेकिन इससे पहले ही छ हथियारबद नौसैनिक, एक तोपके साथ एक नावपर आमूरकी जाच-पडतालके लिये चल पडे थे, जिन्होने आमूरके मुहानेसे २५ वर्स्त (४ फर्सख) पर जारके नामसे निकोलायेव्स्क नामका एक बन्दरगाह स्थापित किया, और ६ अगस्त १८४९ ई०को पडोसके गिलियक लोगोके सामने रूसी झडा गाडकर एक पौड-वाली तोपका गोला दागा। नेवेल्स्कीने जल्दी-जल्दी स्वय पहुचकर इस बातकी सूचना मुरावेफको दी। मुरावेफने तुरत इसकी खबर राजधानीमें भेजी। जब इस कामके लिये नियुक्त समितिके सामने यह बात आई, तो उसने बिना आज्ञाके ऐसा करनेका बहुत विरोध किया, और नेवेल्स्कीको कठोर दड देनेपर जोर देते तुरत वहासे हट आनेकी सिफारिश की, लेकिन मुरावेफने इसका विरोध किया। जब यह बात जारके पास निर्णयके लिये पहुची, तो उसने समितिकी बात माननेसे इन्कार कर दिया, और कहा—"जब एक बार रूसी झडा गाड दिया गया, तो फिर उसे नीचे नही उतारा जा सकता।" युद्ध-मत्रालय पसद नही करता था, कि सुदूर-पूर्व साइबेरियामें बडी सेना रक्खी जाय। इस समस्याका हल मुरावेफने आसानीसे कर दिया। उसने नेर्चिन्स्कके रूसी किसानोको कसाक सैनिकोके रूपमे परिणत कर दिया, और इस प्रकार पूर्वी साइबेरियाके लिये एक सुसगठित सेना मिल गई। यदि साइबेरियामे जगह-जगह रूसियोकी बस्तिया कायम न हुई होती, तो मुरावेफको यह सुभीता न मिलता।

नेवेल्स्कीको दड क्यो मिलने लगा? वह फिर सुदूर-पूर्वमे अपना काम करने लगा। १८५२ ई० में प्रशान्त महासागरके भीतर सखालिन द्वीपकी उसने जाच-पडताल की, और सखालिनके देकास्त्री और किजी नामके द्वीपोको अपनी जिम्मेवारीपर दखल कर लिया। ये दोनो द्वीप तारतारी खाडीके लिये बडे सैनिक महत्त्वके थे। नेवेल्स्कीने पोयारकोफ या खबारोफकी नीतिको छोडकर देशवासियोको अपने अच्छे बर्तावसे जीतनेकी कोशिश की, जिसमे उसे बहुत सफलता मिली।

२२ अप्रैल १८५३ ई०को एक सम्मेलन हुआ, जिसमें मुरावेफने प्रस्ताव किया, कि आमूरके बारेमे चीनसे फैसला कर डालना चाहिये। अभी यह बात विचाराधीन ही थी, और इसमे मुरावेफके विरोधी कितने ही प्रभावशाली व्यक्ति थे, लेकिन इसी बीचमे रूस और तुर्कीके बीच १८५३ ई०में क्रिमियाका युद्ध छिड गया, जिससे सरकारका सारा ध्यान उधर हो गया, और मुरावेफको पूर्वमें खुल खेलनेका मौका मिल गया। तुर्कीके साथके युद्धमें युरोपमें रूसको बडी बुरी तरहसे हारना पडा, लेकिन इसी समय प्रशान्त महासागरके तटपर उसे भारी विजय प्राप्त हुई। इस सफलताकी खबर सुन-कर निकोलाइ इतना प्रसन्न हुआ, कि ११ जून १८५४ ई०को उसने आदेश दिया, कि सुदूर-पूर्वके सीमातके सवालोके बारेमे मुरावेफ सीधे पेकिङ्ग सरकारसे बातचीत कर इन्हे हल करे। इस अधिकारको प्राप्त करके मुरावेफने अब फिर सुदूर-पूर्वमें अपने कामको नये जोशसे आरम्भ किया, जिसका ही परि-णाम था, आमूरका प्रथम प्रसिद्ध अभियान। नावोके बेडेको लेकर आगे बढनेसे पहले मुरावेफने पेकिङ्ग-को इस बातकी सूचना दे दी थी, और उसने कारण बतलाते हुये कहा था, कि युरोपके युद्धके कारण प्रशान्त महासागरकी अपनी अधिकृत-भूमिकी रक्षाके लिये हमे ऐसा करना आवश्यक पड रहा है। १४ मई १८५४ ई० को मुरावेफ आठ सौ सैनिकोकी एक बटालियन, कुछ कसाक सैनिक, एक पहाडी तोपखाना, पचहत्तर नावोके बेडेके साथ नौसैनिक जहाज "अरगून" के साथ रवाना हुआ। अट्ठाइसवें दिन मुरावेफ चीनियोके दुर्गबद्ध नगर ऐगुनमे पहुचा। यहा उसने स्थानीय चीनी अधिकारियोसे यह पता लगानेके लिये अपने आदमी भेजे कि उनके पास पेकिङ्गसे कोई हुक्म आया है, या नही। वहा कोई हुक्म नही आया था, और न स्थानीय चीनी अधिकारीके पास इतनी शक्ति थी, कि मुरावेफको रोकता। मुरावेफ बिना किसी विरोधके आमूर नदीमे आगे बढता प्रशान्त महासागरमे पहुचा, फिर काम्स्चत्काके

पेत्रोपावलोव्स्कमें पहुचकर फ्रेंच और अग्रेजी नौसनासे सुरक्षित रखनेके लिये उसकी किलाबदी शुरू की। मुरावेफको इसमें सफलता हुई, और शत्रुओंको असफल लौट जाना पडा।

सास्कृतिक और साहित्यिक प्रगति—निकोलाइ जैसे अयोग्य और अल्पपठित अल्प-सस्कृत शासकके समय रूसको वडी-वडी प्रतिभाओंके पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी समय हेर्जन (१८१२-७० ई०), वेलिन्स्की (१८११-४८ ई०) जैसे विचारक, लोवाचेव्स्की (१७९३-१८५६ ई०) जैसे विज्ञानवेत्ता और रिलेयेफ, पुश्किन, ग्रिवोयदेफ, लेर्मन्तोफ (१८१४-४१), वेनेवितिनोफ, कोल्तसोफ, वेलिन्स्की, वरातिन्स्की जैसे प्रतिभाशाली कवि और साहित्यकार पैदा हुये, जिन्होंने उस पृष्ठभूमिको तैयार किया, जिसने रूसको बौद्धिक क्षेत्रमें महान् वनाया। यदि निकोलाइ क्रातिको फूटी आखो भी नही देखना चाहता था, तो उससे क्या, रूसकी इन प्रतिभाओंने क्रातिके मार्गको साफ करनेका काम शुरू किया। जहा रूसी शिक्षामत्री उवारोफ (१८३३-४९ ई०) इस बातका दावा कर रहा था, कि रूसी लोग स्वाभाविक तौरसे धार्मिक है, वह सदासे जारके भक्त रहते आये है और किसानोंकी अर्धदासताको वह विल्कुल प्राकृतिक मानते है, वहा अलेक्सान्द्र इवान-पुत्र हेर्जन दूसरे ही विचारोंका प्रचार कर रहा था।

हेर्जन (१८१२–७० ई०)—हेर्जनने दिसम्बरी वीरोंकी कुर्वानीका प्रभाव अपने ऊपर स्वीकार करते हुये लिखा था—"पेस्तेल और उसके सहयोगियोंकी हत्याने अन्तमें अपनी वचपनकी नींदसे मेरी आत्माको जगा दिया।" हेर्जन १८१२ ई०में एक धनी रूसी जमींदारके घर पैदा हुआ था। उसके वापने एक जर्मन स्त्रीसे शादी की थी, लेकिन शादी वैधानिक नही हुई थी, इसलिये हेर्जनको वापका कुल-नाम कोवलेफ नही प्राप्त हुआ और उसे एक साधारण-सा नाम हेर्जन (हेर्ज, जर्मनमे हृदय) मिला। हेर्जन मस्तिष्कके साथ वडा ही सहृदय पुरुप था। हेर्जनके पिताके पास फ्रेंच और जर्मन पुस्तकोंका वहुत अच्छा सग्रह था। उसने अपने फ्रेंच अध्यापकसे फ्रेंच क्राति और गणराज्यके प्रति सम्मान करना सीखा। रिलेयेफकी कविता "ध्यान" से वह उसी वक्त प्रभावित हुआ था। वही रिलेयेफ जव फासीपर लटका दिया गया, तो हेर्जनके ऊपर उसकी सदाके लिये अमिट छाप पड गई। हेर्जन अपने क्रातिकारी विचारोंको लेकर ज्यादा दिनोतक निकोलाइके राज्यमे नही रह सकता था। १८४७ ई०में वह देशसे वाहर गया, और क्रातिकारी फ्रास और इतालीको अपनी आखो देखा। १८४८ ई०की क्रातिके समय हेर्जन पेरिसमें था। पश्चिमी युरोपमे क्रातिकी असफलताको देखकर हेर्जन निराश हुआ, और उसे आशा वधी, कि शायद रूसी किसान क्रातिको सफल वनायें। इस प्रकार उसने किसानोंके समाजवादका स्वप्न देखना शुरू किया। हेर्जन कार्ल मार्क्सका समकालीन था। मार्क्सकी तरह ही उसे भी अपनी जन्मभूमिसे भागकर मारा-मारा फिरना पडा, और अन्तमे उन्हींकी तरह उसने लदनमे अपना डेरा डाला। १८५३ ई० मे उसने वहा "स्वतत्र रूसी प्रेस" की स्थापना की, जिससे अपनी क्रातिकारी पत्रिका "पोल्यार्नया ज्वेज्दा' (ध्रुवतारा) का प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिकाके मुख्य मुखपृष्ठपर दिसम्बरी शहीदोंकी तस्वीर रहती थी। १८५७ ई०से १८६७ ई०तक हेर्जनने "कोलोकोल" (कलकल) के नामसे एक और भी प्रसिद्ध पत्रिका प्रकाशित की। हेर्जनके विचारोंने रूसी तरुणोंकी समकालीन पीढीपर वहुत प्रभाव डाला, और उसी प्रभावमे आकर वोल्शेविकोसे पहलेके क्रातिकारियोंने किसानोंमे क्रातिका सदेश पहुचानेके लिये भगीरथ प्रयत्न किये।

व ग वेलिन्स्की (१८११–४८ ई०)—वेलिन्स्की हेर्जनका समकालीन था। वह साहित्य-समालोचकके तौरपर लोगोंमें नया भाव पैदा करनेमें सफल हुआ। उसकी आलोचनाओंने रूसी साहित्यमें यथार्थवादकी स्थापना की। उस समय जारशाही सेंसरके कारण कोई भी स्वतत्रतापूर्वक कुछ लिख नहीं सकता था। वेलिन्स्कीने अपने मित्र प्रसिद्ध लेखक गोगलको लिखा था—"रूसकी मुक्ति उपदेश या प्रार्थनासे नही हो सकती, वल्कि वह अर्धदासताके उच्छेद तथा लोगोंमें मानवसम्मानके प्रति जागृति और सद्भाव स्थापित करनेसे हो सकती है। वेलिन्स्की अपनी लेखनीसे क्रातिका प्रसार कर रहा था, लेकिन उसके रास्तेमें सभी जगह रुकावटें थीं। उसने अपनी इस विवशताको दिखलाते हुये लिखा था—"प्रकृतिने मुझे कुत्तेकी तरह भूकने, सियारकी तरह हुआ-हुआ करनेके लिये मजवूर किया है। कभी-कभी परिस्थितिया विल्लीकी तरह म्याउ-म्याउ करने और लोमडीकी तरह पूछ हिलानेके

लिये भी मजबूर करती है।" लेकिन वह भविष्यके लिये बडा आशावादी था। उसने मरनेसे थोडा ही पहले लिखा था--"मुझे अपने उन पौत्रों और प्रपौत्रोंपर ईर्ष्या होती है, जो कि १९४० ई०में रूसको शिक्षित दुनियाका मुखिया बनते, विज्ञान और कलाके सिद्धातोंको स्थापित करते, और ज्ञानवान् मानव-जातिसे सम्मानकी भेंट पाते देखेगे।" वेलिन्स्कीका भविष्य-कथन सच निकला, इसमे क्या सदेह है? जारकी सरकार उसे जेलमें बद करने ही जा रही थी, कि ३७ वर्ष की अवस्थामे १८४८ ई०मे विसारियोन ग्रेगोरी-पुत्र वेलिन्स्की तपेदिकके हाथो मारा गया।

वैज्ञानिक—वासिली व्लादिमिर-पुत्र पेत्रोफ (१७६२-१८३४ ई०) प्रसिद्ध रूसी भौतिक शास्त्री था, जिसने दुनियामें सबसे पहले (१८०२-३ ई०मे) आधुनिक विद्युत्-रसायनके आधारभूत एलेक्ट्रोलीसिसका आविष्कार किया। उसने डेवीसे कितने ही वर्ष पहले वोल्ताइक आर्क (प्रदीप) का आविष्कार किया। १८३२ ई०मे पीतरबुर्गमे दुनियाका सबसे पहला तार शीलिंगने स्थापित करके सचार-मत्रालय और हेमन्त-प्रासादके बीचमें सदेश भेजकर दिखलाया, लेकिन सामन्तशाही रूसने इन आविष्कारोको आगे बढनेका मौका नही दिया। १८३८ ई०मे याकोबी (१८०१-७४ ई०)ने बिजली बनानेका पहला इजन तैयार किया, और उसकी बिजलीकी नावने नेवाके ऊपर यात्रियोको ढोया। यह आविष्कार इगलैंडमे आधी शताब्दी बादमे हुआ, और दुनियाने याकोबीको भूलकर अग्रेजको इसका आविष्कारक माना। आविष्कार और खोजके क्षेत्रमें रूसी प्रतिभायें इस प्रकार अपने चमत्कारको दिखानेके लिये तैयार थीं, लेकिन वहा अभी उनको सहारा देनेवाले नही थे।

साहित्यकार—निकोलाइके कालमें रूसी साहित्य-गगनमे बडे-बडे नक्षत्र उदित हुये, लेकिन उनमेंसे अधिकाश अकालमे ही कालकवलित हुये, जैसे—

रिलेयेफ (कवि)—जारने १८२६ ई०मे फासी दिलवा दी।
पुश्किन (कवि)--१८३७ ई० में ३८ वर्षकी आयुमे द्वद्व-युद्धमे मारा गया।
ग्रिबोयेदोफ (कवि)—तेहरानमे हत्यारेके हाथो मारा गया।
लेर्मन्तोफ (कवि)--द्वद्व-युद्धमे २७ वर्षकी उम्रमे १८४१ ई० मे मारा गया।
वेनेवितिनोफ (कवि)—२२ वर्षकी उम्रमें मारा गया।
कोल्त्सोफ (कवि)--३३ वर्षकी उम्रमे अपने परिवार द्वारा मारा गया।
वेलिन्स्की—३५ वर्षकी उम्रमे १८४८ ई०मे भूख और गरीबीकी बलि चढा।

अलेक्सान्द्र पुश्किन (१७९९-१८३७ ई०)—पुश्किन रूसी साहित्यका कालिदास है। वह "प्रतिभाशाली रूसका सबसे बडा कवि और विश्व-साहित्यका प्रतिभाशाली साहित्यकार रूसी यथार्थ-वादका सस्थापक, रूसी साहित्यिक भाषाका निर्माता, रूसी जनताका गर्व और कीर्ति" कहा जाता है। यद्यपि वह उच्चकुलमे पैदा हुआ था, किन्तु गोर्कीके अनुसार "उसके लिये कुलीन वर्गके हितसे ऊपर सारे राष्ट्रका हित था, और उसका व्यक्तिगत अनुभव कुलीनोके अनुभवसे (कहीं) विस्तृत और गम्भीर था।" पुश्किन (अलेक्सान्द्र सरगेइ-पुत्र) १७९९ ई०में मास्कोमे एक सामन्तवशमें पैदा हुआ था, जिसकी आर्थिक अवस्था उतनी अच्छी नही थी। कुलीन वर्गके लिये स्थापित जार्स्कोयसेलोके विशेष स्कूलमें वह भरती हुआ और १८१५ ई०मे जब कि वह अभी सोलह वर्ष ही का था, उसने परतन्त्रता और दासताके प्रति अपनी घृणा प्रकट की थी। १८१७ ई०मे अठारह वर्षकी अवस्थामें उसने स्कूलकी पढाई समाप्त की। जिस वर्गमें पैदा हुआ था, उसके अत्याचारोंसे वह कितना क्षुब्ध था, यह उसकी निम्न पक्तियोंसे मालूम होगा—

ओ दुष्कर्मी, स्वेच्छाचारी, सुन मेरी घृणाको
जो कि तेरे, राजदड और तेरे सिंहासनके प्रति है।
तेरे बच्चोकी मौत, तेरे अपने काले भाग्यको देख
मै पत्थर जैसे कडे हृदयकी तरह हर्षित होता हू।

अपने उग्र विचारोके लिये रूसी साहित्यके कालिदासको पहले दक्षिण (काकेशस) मे निर्वासित किया गया, फिर किशिनेफ और अदेस्सामे निर्वासित करके रक्खा गया। अदेस्सासे उसे अपने पिताकी जमीदारी मिखाइलोव्स्कयो गावमे भेज दिया गया और उसके बापको पुत्रपर निगाह रखनेके लिये हुक्म

दिया गया। यहींपर पुश्किनने अपना महान् काव्य 'यूगेनी-ओनेगिन" लिखा, और "बोरिस गदुनोफ" दु:खान्त नाटकको भी यहीं उसने रचा। कई सालोंतक जारने "बोरिस गदुनोफ" को निषिद्ध कर दिया था। पुश्किन दिसम्बरी क्रांतिकारियोंके साथ बडी सहानुभूति रखता था। दिसम्बरियोंको फांसीपर चढानेके थोडे ही समय बाद जार निकोलाइ Iने पुश्किनको बुलाकर पूछा—"यदि तुम १४ दिसम्बरको पीतरबुर्गमे होते, तो क्या करते ?" पुश्किनने साफ जवाब दिया—"मैं भी विद्रोहियोंमें शामिल हुआ होता।" इसके बादमे जारने पुश्किनकी रचनाओंके सेंसर करनेका भार अपने ऊपर लिया। जहांतक रूसी जाति का सबंध था, पुश्किन निराशावादी नहीं था, लेकिन अपने लिये उसे प्राणोंका जरा भी मोह नहीं था। उसके ऊपर अत्याचार करनेवालोंमें जार निकोलाइ I वैसे बहुत अल्प-पठित था, लेकिन तब भी शायद वह महान् कविकी अमरताको जानता था, और इसीलिये वह उसके खूनसे अपने हाथको रंगना नहीं चाहता था, लेकिन और तरहसे उसने और उसके दरबारियोंने पुश्किनके जीवनको दूभर कर दिया था। पुश्किन अडतीस वर्षका था, जब कि अपमान करनेका बदला लेनेके लिये उसने एक सरकारी अफसरको द्वंद्वयुद्धके लिये ललकारा और घायल होकर १८३७ ई०में मरा। पुश्किनकी प्रतिभा सर्वतोमुखीन थी। उसके काव्य और नाटक उतने ही सम्मान और दिलचस्पीके साथ पढे जाते हैं, जैसे कालिदासके। उसके नाटक आज भी रंगमंचपर बहुत जनप्रिय हैं। उसने कहानियां और लघुउपन्यास भी लिखे हैं, जिनमें भाषा और भावोंकी प्रौढता, व्यंग, रसाप्लावन अद्वितीय है। उसके समयमें अभी फ्रांसीसी भाषा और साहित्यको रूसी लोग उसी दास-मनोवृत्तिसे अपनाये हुये थे, जैसे हमारे देशके नौकरशाह लोग। "कप्तानकी कन्या" में पुश्किनने उनकी खूब खबर ली है। वह अपनी रूसी जातिका परम भक्त था, लेकिन उस जातिको अपना जौहर पूरी तौरसे दिखानेमें जो बाधायें थीं, उनको साफ-साफ कहनेमे बाज नहीं आता था। साथ ही वह वर्ण और देशके भेदोंको माननेवाला नहीं था। भारतसे गये सिगानों (रोमनियों) पर उसकी मधुर कविता इसका प्रमाण है।

मिखाइल, यूरी-पुत्र लेर्मन्तोफ (१८१४–४१ ई०) पुश्किनका तरुण समकालीन और महान कवि था, जिसने भी द्वंद्व-युद्धमें सत्ताईस वर्षकी उमरमें अपने जीवनको समाप्त किया। अपनी प्रभावशाली कविता "एक कविकी मृत्यु" में पुश्किनकी प्रशंसा और उसके हत्या करनेवाले वर्गकी घृणाको बडे कठोर शब्दोंमें प्रकट करनेके लिये उसे काकेशसमें निर्वासित कर दिया गया। पुश्किनके बाद रूसी कवियोंमें लेर्मन्तोफका दर्जा है। निकोलाइ I ने उसकी मृत्युकी खबर सुन बहुत खुश होकर कहा—"कुत्ता, कुत्तेकी मौत मरा।"

निकोलाइके समयका दूसरा महान् अमर साहित्यकार निकोलाइ वासिली-पुत्र गोगल (१८०९-५२ ई०) है। उसके उपन्यास "इन्स्पेक्टर-जेनरल", "मृत आत्मायें" आदि विश्व-साहित्यके रत्न माने जाते हैं। "मृत आत्मायें" को पढकर हेर्जनके अनुसार सारा रूस कांप उठा। गोगल महान् कलाकार है। उसकी जैसी सशक्त लेखनी बहुत कम देखनेमें आती है। यह महान् साहित्यकार भी तेतालीस वर्षकी उमरमे मर गया।

इस समयके महान् कलाकारोंमें क० फ० ब्रूलोफ, अ० अ० इवानोफ अद्वितीय हैं। इवानोफने अपनी महान् कलाकृति "ईसाका लोगोंमें प्रकट होना" को अपने जीवनके तीस वर्ष लगाकर बनाया। यथार्थवादके साथ आदर्शवाद या अध्यात्मवादका कितना सुन्दर सम्मिश्रण हो सकता है, इसका यह सुन्दर नमूना है। इस चित्रको बनानेके लिये इवानोफने कई साल ईसाकी जन्मभूमि फिलस्तीनमें बिताये।

अभी तक रूसका संगीत लम्बी नाकवालों और गंदे ग्रामीणोंकी कलाके रूपमें विभक्त था। उच्च वर्गके लोग पश्चिमी सगीतको संगीत मानते थे, और समझते थे, कि रूसकी भूमिने संगीतके लिये कोई देन नहीं छोडी है। इसी समय प्रतिभाशाली संगीतकार (उस्ताद) म० ई० ग्लिन्का (१८०९–५७ ई०) पैदा हुआ, जिसने पश्चिमी संगीतका पारंगत आचार्य होते भी रूसी जनसंगीतको अपनाया, और घोषित किया, कि हमारी राष्ट्रीय संगीत-कला किसीसे कम नहीं है। ग्लिन्का पहिले ही से प्रसिद्ध संगीतकार हो चुका था, इसलिये उसे तुच्छ नहीं कहा जा सकता था, लेकिन उसकी कलाको तुच्छ करनेके लिये सम्भ्रान्त वर्गने कोई कसुर नहीं उठा रक्खी। उसे "गाड़ीवानोंके गीत" का रचनेवाला कहते थे।

ग्लिन्काने इसकी पर्वाह नही की। "इवान सुसानिन" जैसे देशके लिये मरनेवाले वीरको चुनकर उसने अपने ओपेरा (पद्यनाटक) को रचा, जिसने जल्दी ही लोगोको अपनी तरफ खीच लिया। जिस तरह काव्य और साहित्यका पिता पुश्किन माना जाता है, वही स्थान सगीत और रगमचमे ग्लिन्काका है। मास्कोका वल्शोइ तियात्र (महानाट्यशाला) यद्यपि १७८० ई०मे स्थापित हुआ था, जव उसे पेत्रोफका तियात्र कहते थे। १८०५ ई०मे नाट्यशाला आगसे नष्ट हो गई, और बीस साल वाद (१८२५ ई०) मे उसे फिरसे वनाया गया। इसके वाद फिर एक बार आगसे नष्ट होनेपर १८५३ ई० मे उसका पुनर्निर्माण हुआ, जव कि "इवान सुसानिन"के निर्माता ग्लिन्काके मरनेमे चार सालकी देर थी। १८२४ ई० हीमे मास्कोमे "माली तियात्र" (लघु नाट्यशाला) की स्थापना हुई, और वडी जल्दी ही उसकी ख्याति चारो ओर फैल गई। पुश्किन, लेर्मन्तोफ, गोगल, इवानोफ और ग्लिन्का जैसी प्रतिभाओको पैदा करनेवाला १९ वी सदीका पूर्वार्ध रूसकी कला और साहित्यका सुवर्ण-युग था, इसमें सदेह नही।

१६. अलेक्सान्द्र I, निकोलाइ I-पुत्र (१८५५–८१ ई०)

अलेक्सान्द्र जव अभी युवराज ही था, तभी उसने किसानोंकी अर्धदासताको कायम रखकर अमीरोके हितको अक्षुण्ण करनेकी प्रतिज्ञा की थी, लेकिन अव रूस १९वी सदीके मध्यको पार कर चुका था। औद्योगिक पूजीवाद वडे जोरसे अपने प्रभावको वढा रहा था, इसलिये सामन्तवादका अक्षुण्ण रहना सम्भव नही था। उसे मजवूर होकर किसानोकी अर्धदासताको खतम करते १८५६ ई० मे कहना पडा—"भूमिके स्वामित्वकी वर्तमान प्रथा बिना बदले नही रह सकती। यह वेहतर है, कि किसानी अर्धदासताको नीचेसे अपने आप खतम होने देनेकी जगह ऊपर (सरकारी ओर) से खतम कर दिया जाय।" अलेक्सान्द्रने यद्यपि "१९ फर्वरीके (१८६१ ई०) कानून" द्वारा अर्धदासता प्रथाको खतम किया, लेकिन जमीदारोके हितोका पूरी तौरसे ध्यान रखते। किसानोको पीढियोसे अपने जोते खेतोके लिये भारी रकम देनी पडी। किसानोको जो जमीन मिली थी, उसका मूल्य पैसठ करोड रूबल होता था, लेकिन उसके लिये उनसे नब्बे करोड दिलानेका निश्चय किया गया। यह रकम सरकारने देना स्वीकार किया, जिसे वह उन्चास सालकी किस्तोमे किसानोसे ले लेनेवाली थी। १९०५ ई०तक इस मदमें किसानोसे दो अरब रूबल लिये गये। १९ फर्वरी १८६१ ई०के भूमिसुधारके कानूनने बहुत महगे ढगसे एक करोड किसानोको जमीदारोकी दासतासे मुक्त किया। किसानी अर्धदासताका खतम करना रूसमे पूजीवादी व्यवस्थाके विजयकी घोषणा थी। लेकिन यह सुधार रूसके अधीन दूसरी जातिवाले प्रदेशोमें नही स्वीकार किया गया। कल्मकोके प्रदेशमें पुरानी अर्धदासता प्रथा १८९२ ई० तक रही, और मध्य-एसियामे तो वह वोल्शेविक-क्रातिसे पहले खतम ही नही हुई।

इतनी बडी रकमको क्षतिपूर्तिमे चुपचाप किसान कैसे दे सकते थे? इसके लिये किसानोका सघर्प होना ही था। किसानोके पक्षको लेकर इसी समय एक खास आन्दोलन शुरू हो गया। चेर्नीशेव्स्कीने "सव्रेमेन्निक" (समकालीन)के नामसे एक पत्रिका निकाली, जो किसानोके पक्षका वहुत जोरदार ढगसे समर्थन करती थी। रूसी सिपाही किसानोमेंसे ही आते थे, इसीलिये चेर्नीशेव्स्कीके मित्र और सहकारी न० व० शेलगुनोफने "सिपाहियोंको" नामसे एक घोषणा लिखी थी। घोषणा छप नही पाई थी, कि उससे पहिले ही वह तृतीय विभाग (खुफिया विभाग) के हाथमे पड गई। लेकिन रूसी जनताको आगे वढनेसे रोका नही जा सका। १८६२ ई०के वसतमे "तरुण रूस"के नामसे एक घोषणा मास्कोके क्रातिकारी विद्यार्थी जाइच्नेव्स्कीने प्रकाशित कर हथियार लेकर उठ खडे हो शासक-वर्गको नष्ट करनेका आह्वान किया। चेर्नीशेव्स्की इस कालके जन-आन्दोलनका सवसे वडा नेता था। उसकी कलममें अद्भुत ताकत थी। जारशाहीने उसे पकडकर दो साल तक पीतरवुर्गके पीतर-पावल-दुर्गमे वद रक्खा, फिर चौदह वर्षके लिये साइवेरिया-निर्वासन (कालापानी) का दड देनेसे पहले १९ मई १८६४ ई० को सार्वजनिक तौरपर उसे नागरिक मृत्युका दड दिया। फासी देनेवालोने उसे पीतरवुर्गके मित्निन्स्काया चौरस्ते पर ले जाकर फासीवाले आदमीकी तरह उसे घुटने टिकवाया, और उसकी गर्दनपर एक तलवार रक्खी। जिस समय फासीकी टिकटीपर इस रसमको अदा करनेके वाद उसे ले जाया जा रहा था, उसी समय भीडमेंसे एक लड़कीने उस पर कुछ फूल फेंके, जिनके लिये उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

चेर्नीशेव्स्कीको नेचिन्स्कके जेलखानेमें रक्खा गया, जहा उसके दंडकालको आधा कर दिया गया, लेकिन कैदकी अवधि पूरा होनेके साथ ही अलेक्सान्द्र II ने उसे फिर सुदूर साइबेरियाके कस्बे विल्युइन्स्कमें बन्दी कर दिया। १८८३ ई०में वहासे लाकर उसे अस्त्राखानमें रखा गया, और गिरफ्तारीके सत्ताइस वर्ष बाद १८८९ ई०मे उसे अपने जन्मनगर सरातोफमें रहनेकी इजाजत मिली। अब वह साठ वर्षका हो चुका था। जेलमें उनका स्वास्थ्य बिल्कुल खराब हो गया था। अक्तूबर १८८९ ई०में सरातोफमें उसने अपने प्राण छोडे। चेर्नीशेव्स्कीकी तपस्या व्यर्थ गई, इसे कौन कह सकता है? आज उसका सम्मान रूसके घर-घरमें है, और सारे सोवियत सघके स्कूली विद्यार्थी पढते है—"न० ग० चेर्नीशेव्स्की महान् रूसी देशभक्त था, जिसने अपने सारे जीवनको अपने देश और जनताके लिये कुर्बान किया।" अभी चेर्नीशेव्स्की जब तरुण ही था, तभी उसने लिखा था—"अपने देशके अनन्त, और सनातन यशके लिये तथा मानवताकी भलाईके लिये काम करनेमे बढकर और कौन-सी बडी और सुन्दर बात हो सकती है?"

चेर्नीशेव्स्की महान् जनतंत्रतावादी और महान् विद्वान् ही नहीं था, बल्कि वैज्ञानिक ज्ञानका वह अदम्य प्रचारक था। उसके अर्थशास्त्र सबधी ग्रथोके बारेमें मार्क्स और एगेल्सने लिखा था—"वह वस्तुत रूसके लिये सम्मानकी चीज है।"

तुर्की-युद्ध (१८७७-७८ ई०)—क्रिमियाके युद्धमें हारकर रूसने युरोपमें अपने प्रभावको खो दिया था, इसे हम बतला चुके है, लेकिन रूसने अपने प्रभावको विशेषकर कालासागर और भूमध्य-सागर तटपर बढानेकी कोशिश बराबर जारी रखी। अब रूसके हाथमें एक और हथियार आ गया था—बल्कानके लोग पिछली चार शताब्दियोंमें तुर्की-सुल्तानके स्वेच्छाचारी शासनके नीचे कराह रहे थे। उनमें जातीय स्वतत्रता की लहर फैली हुई थी, और वह नही चाहते थे, कि एसियाई मुस्लिम सुल्तान उनको जैसी युरोपीय जातियोंको अपना दास बनाकर रक्खे। इगलैड और फ्रास रूसके विरुद्ध तुर्कीकी पीठ ठोकना अपने हितके लिये आवश्यक समझते थे, इसलिये बल्कानकी जातियोमें नवजागरणमें वह कैसे सहायक हो सकते थे? सयोगसे बल्कानकी यह अधिकाश जातिया रूसियोंकी भाति स्लाव थी, इसलिए वह अपने स्लाव-भाइयोकी ओर आशाभरी दृष्टिसे देखती थीं। रूस भी उनका समर्थन कर रहा था। १८७५ ई० में बोसनिया और हेर्जेगोविना (आधुनिक युगोस्लाविया) मे लोगोंने सुल्तानके खिलाफ आन्दोलन शुरु कर दिया। अगले साल बुल्गारियोंने विद्रोह कर दिया। तुर्कोंने बडी कठोरता-पूर्वक विद्रोहका दमन किया, कही-कही तो उसने गावके गाव निर्जन बना दिये। तुर्की अपनी पुरानी सधिके कारण समझता था, कि रूस लडाईके मैदानमें नही कूदेगा, लेकिन रूसने सर्बिया (बोसेनिया), हेर्जेगोविनाके निवासियो और मोन्तेनिग्रोको तुर्कीके विरुद्ध युद्ध घोषित करनेके समय १८६७ ई०के ग्रीष्ममें सहायता देना शुरू किया। रूसमें सब जगह तुर्कीके खिलाफ आन्दोलन ही नही किया जाने लगा, बल्कि एक रूसी जेनरल चेर्न्यायेफ सर्बियन सेनाका सचालन करने लगा। रूसकी सहायता होनेपर भी अक्तूबर १८७६ ई०में सर्बियन सेनाकी हार हुई। मोन्तेनिग्रोके लोगोने तब भी अपने सघर्षको अकेले जारी रक्खा। अग्रेजोकी शहके कारण तुर्कीके सुल्तानने स्लाव विद्रोहियोके साथ किसी तरहका समझौता करनेमे इन्कार कर दिया। आस्ट्रियाने तटस्थताकी नीतिको स्वीकार किया था। अन्तमें १८७७ ई०के वसतमें रूसने तुर्कीके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की। रूस अब भी क्रिमियाके युद्धके समयके हथियारो और सैनिक विज्ञानसे लड रहा था, जब कि जर्मन कल-कारखानोंमे नये तरहके हथियार तुर्कों-को मिल रहे थे। तो भी अपनी बहादुरीके कारण १८७७ ई० के ग्रीष्ममें रूसी सेना दन्यूब पार करनेमें सफल हुई। मुकाबिला कठिन था, लेकिन जब रूसी सेनाका कान्स्तन्तिनोपलमे पहुचना निश्चितसा मालूम होने लगा, तो अग्रेज अपने नौसैनिक बेडेको मारमोरा समुद्रमे लाकर युद्ध घोषित करनेकी धमकी देने लगे। आस्ट्रिया और जर्मनीने भी रूसके खिलाफ रुख लिया। बल्कानमें युद्ध जारी रखते हुये रूसी सेनाने काकेशसमे भी तुर्कोंके खिलाफ लडाई जारी की थी, जहापर तुर्कोंको बुरी तरहसे हराकर रूसियोंने अर्दहान और कर्सके किलोको ले लिया। अन्तमे फर्वरी १८७८ ई०में सानस्तेफानो (कान्स्तन्तिनोपलके नजदीक) की सधिके अनुसार लडाई बद हुई, और दन्यूबका मुहाना रूसको मिला, बल्कानमें बुल्गारियाकी एक रियासत कायम की गई, तुर्कोंको सर्बिया, मोन्तेनिग्रो और रूमानिया:

की स्वतन्त्रता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पडा। काकेशसमे अर्दहान, कर्स, वायजिद और वातूम के नगर रूसको मिले, साथ ही तुर्कीने एकतीस करोड रूवल रूसको क्षतिपूर्ति देना स्वीकार किया। इस प्रकार रूसने अपने खोये हुये प्रभावको फिर सान्स्तेफानो-सधिके अनुसार प्राप्त किया। आस्ट्रिया और इगलैड इस सधिको पसद नहीं करते थे, इसलिये १८७१ ई०मे बर्लिन-काग्रेसमे उन्होने रूसकी जीती हुई जगहोमेंसे कितनोको छोडनेके लिये मजबूर किया। बुलगारियाके दक्षिणी भागको तुर्कीके हाथमे लौटा देना पडा, और उत्तरी भागको भी सुल्तानके अधीन एक रियासतका रूप दिया गया।

राजनीतिक आन्दोलन—चेर्नीशेव्स्कीके किसान-आदोलनके बारेमे पहले बतलाया जा चुका है। रूसमें मार्क्सवादके आनेसे पहले जिस राजनीतिक आन्दोलनने गरीब जनताके भीतर काम किया था, वह नरोद्निक (जनवादी) आन्दोलन था, जो कि इसी समय शुरू हुआ था। यह दल किसान और मजदूर दोनोमें काम करता था, लेकिन वह मजदूरोको उतना महत्त्व नही देता था। उसकी सबसे कमजोर बात यह थी, कि वह मार्क्सवादका विरोधी था। हमारे यहाके कितने ही वामपक्षियोकी तरह नरोद्निक जोर देकर कहते थे, कि (१) रूसके लिये पूजीवाद एक आकस्मिक घटना है, इसका यहा विकास नही होगा, इसलिये सर्वहारा यहा न बढ सकते न विकसित हो सकते है। (२) नरोद्निक मजूर-वर्गको क्रातिका सबसे अग्रणी वर्ग नही मानते थे। वह विश्वास करते थे, कि विना सर्वहाराकी सहायतासे ही समाजवाद स्थापित हो सकता है। वह मानते थे, कि बुद्धिजीवियोके नेतृत्वमें किसान ही क्रातिकारी शक्ति है, और किसानोका पचायती जीवन ही समाजवादका अकुर तथा नीव होगा। नरोद्निक नहीं मानते थे कि किसानोकी बिखरी शक्ति सेना और पुलिस द्वारा सुरक्षित और मजबूत शासन-यत्रको नही उखाड़ फेक सकती। नरोद्निक तरुण-तरुणी बडी कुर्बानीके साथ गावमे किसान बनकर रहते अपने विचारोंका प्रचार करते थे। उन्होने बहुत कोशिश की, कि किसानोको भडकाकर जमीदारोके खिलाफ खडा किया जाय, लेकिन वह उसमे सफल नही हुये। १८७४ ई० मे बहुतसे नरोद्निक किसानो-में पहुचे थे, लेकिन १८७६ ई० तक वह भारी सख्यामे पकड लिये गये, और बचे हुओने "जेम्ला-इ-वोल्या" (भूमि और स्वतन्त्रता) के नामसे एक गुप्त सगठन किया। इसके सस्थापक ग० व० प्लेखानोफ और उसके साथी थे। मार्क्सवादके विरुद्ध "जेम्ला-इ-वोल्या" सगठनने आगे चलकर बकुनिन (१८१४–७६ ई०) के अराजकतावादको अपनाया, जिसकी माग थी—सब तरहकी सरकारको तुरत बद कर दो। नरोद्निकोने वैयक्तिक हत्यापर भी बहुत जोर दिया, और रूसी जनतापर जुल्मके पहाड ढानेवाले जारको उन्होने अपना लक्ष्य बनाया। लेकिन यह काम नरोद्निकोके असफल होनेपर "नरोद्नया वोल्या" (जनता सकल्प) पार्टीने किया। वस्तुत जारके खूनी अत्याचारोने अब क्रातिकारियोके दिलमे भय नही रहने दिया था। "नरोद्नया वोल्या" ने जार अलेक्सान्द्र II की हत्याके लिये कई बार प्रयत्न किये। फर्वरी १८८० ई०में हेमन्त प्रासादमे स्तेपान खलतुरिन नामक एक मजदूर-क्रातिकारीने बम रक्खा, लेकिन उससे जारको कोई चोट नही पहुची, और अब वह ज्यादा सावधान रहने लगा। हेमन्त प्रासादको भी खतरेका स्थान समझकर वह वहा अधिक नहीं रहता था। अन्तमे १ मार्च १८८१ ई०को "नरोद्-नया वोल्या"के सदस्योने अलेक्सान्द्र II की हत्या करनेमें सफलता पाई, और इसी हत्यामे शामिल होनेके सदेहपर लेनिनके भाईको भी फासीपर चढना पडा।

मध्य-एसियामें प्रसार—निकोलाइ I के समयमे किस तरह अराल समुद्रसे अल्ताई तकके प्रदेशको रूस साम्राज्यमे मिला लिया गया, इसे हम बतला चुके है। खीवाके खानने जारको अपना प्रभु मान लिया था, लेकिन खोकन्द और बुखारा अभी जारशाही जूयेके नीचे नही आये थे। १८६५ ई०में जेनरल चेर्न्यायेफने खोकन्दके खानको हराया, और १८६५ ई०मे ताशकन्द जैसे मध्य-एसियाके आर्थिक केंद्रको अपने हाथमे ले लिया। इसके बाद महाराज्यपाल काफमानने १८६८ ई०में बुखाराके विरुद्ध अभियान किया, और जारकी सेनाने अमीरको हराकर समरकन्दको ले लिया। इस पराजयके बाद अमीर बुखारा अब जारका एक सामन्त भर रह गया। १८७३ ई०के वसतमे रूसी सेनाको फिर खीवा के खानके विरुद्ध जाना पडा, लेकिन खानने बिना लडाईके ही जारके अधीन होना स्वीकार कर लिया। अमीरो और खानोके ऐशोआराममे जारशाही उसी तरह कोई दखल नहीं देना चाहती थी, जैसे भारतके राजा और नवाबोके मौज-मेलेमे अग्रेज बाधा नही डालते थे। लेकिन वहाकी जनता चुपचाप रूसियोके

शासन और शोपणको वर्दाश्त करनेके लिये तैयार नही थी—रूसी मध्य-एसियाको कच्चे मालकी खान मानते थे। १८७५-७६ ई०मे खोकन्दके मुल्लोने रूसके विरुद्ध जहाद घोषित की, जिसे क्रूरतापूर्वक दवा देनेमे रूसियोको देर नही लगी, और साथ ही उन्होने खोकन्दके खानको खतम करके फर्गानाके नामसे उसे रूसका एक प्रदेश वना दिया। अलेक्सान्द्र II के शासनके अन्तिम कालमें तुर्कमानोपर भी रूसने अपना हाथ फैलाना शुरू किया। १८८० ई०में जेनरल स्कोवेलेफने तेक्के तुर्कमानोको अपने अधीन किया, और अगले साल उसने ग्योकतेपेपर अधिकार करके अस्काबादको ले लिया। १८८४ ई० में अलेक्सान्द्र III के शासनकालमे मेर्वको भी लेकर सारे तुर्कमानोमे रूसियोका शासन स्थापित हो गया, और १८८५ ई०मे अफगानिस्तानके किले कुश्कको लेकर रूसने मध्य-एसियाके अपने सीमातको पूरा कर दिया। इस विजयके वाद अव मध्य-एसियामें रूसी डाक्टर, शिक्षक, विज्ञानवेत्ता और वडी सख्यामें मजदूर भी जाने लगे, जिनका प्रभाव मध्य-एसियाके लोगोपर पडने लगा।

साइबेरिया और चीन—आमूर-उपत्यकामें किस तरह मुरावेफने रूसी सीमाका विस्तार अपने प्रथम अभियान द्वारा किया, इसे हम वतला चुके हैं। निकोलाइ I मर चुका था, लेकिन मुरावेफने अगले जारके शासनकालमें भी अपने कामको जारी रक्खा। पहले अभियानसे भी वडे पैमानेपर अगस्त १८५६ ई०मे एक दूसरा अभियान आमूर नदीके साथ-साथ नीचेकी ओर भेजा गया, जिसमे स्त्री-पुरुप सव मिलाकर आठ हजार आदमी थे। अभियानको तीन भागो मे विभक्त करके अलग-अलग स्थानोमे प्रयाण करने का प्रवध किया गया था। चीनी समझने लगे कि अव रूसी निम्न आमूरको सदाके लिये अपने हाथमे कर लेना चाहते हैं, इसलिये उन्होने ऐगुनमें आनेपर विरोध प्रकट किया। ९ सितम्वर को मरुस्कमे एक सम्मेलन किया गया। मुरावेफ वीमार होनेसे शामिल नही हो सका, और उसने अद्मिरल प्वोइकोको अपने स्थानपर भेजा। रूसियोका इसी वातपर वरावर जोर था, कि युरोपीय शत्रुओंसे प्रतिरक्षा करनेके लिये हमें आमूरके मुहानेकी अवश्यकता है, जिन स्थानोको हमने लिया है, अव वह रूसकी सम्पत्ति है, और आमूरके वायें तटपर हमे रूसी वस्तिया वसानी है, जिसमे नदीका रास्ता सुरक्षित रहे। रूसी विदेश-विभागने चीनसे वातचीत करनेमे कुछ नरमीसे काम लेना चाहा था, यह वात मुरावेफको पसद नही आई, और उसने स्वय पीतरवुर्ग जाकर चीनके साथ नये सधिके वारेमे वातचीत करनेके लिये अपनेको राजप्रतिनिधि नियुक्त करवाया। मई १८६५ ई० के मध्यमें कोर्साकोफके नेतृत्वमे तीसरा अभियान रवाना हुआ। रूसी जहाजोके आमूरमें आने-जानेपर चीनी कोई रुकावट डालना नही चाहते थे, लेकिन आमूरके वायें तटपर रूसी वस्तियोका वसाना वह पसद नही करते थे। उन्हे यह देखकर भी वहुत वुरा लगा, कि चीन-अधिकृत नगर ऐगुनके सामने दूसरे तटपर जेया नदीके सगमपर पाच सौ रूसी डेरा डाले पडे हैं। तीसरे अभियानने भी विना किसी रुकावटके अपनी यात्रा समाप्त की।

१८५७ ई० में नये अधिकार प्राप्त कर मुरावेफ फिर साइवेरिया लौट एक और वडे अभियानकी तैयारी करने लगा। अवकी वार वह चाहता था, कि जगह-जगहपर रूसी वस्तिया वसा दी जाय, इसलिये वह अपने साथ अधिकसे अधिक प्रवासियोको ले आया था। आदमियोकी कमीको पूरा करनेके लिये उसने जेलोमे एक हजार कैदियोको मुक्त कर दिया, और वह नई वस्तियोमें जाकर खेती करनेके लिये तैयार कर दिये गये। उनमेसे जिनके पास वीवियां थी, उन्हे उन्होने अपने साथ ले लिया। जिनके पास वीवियां नही थी, उन्हे मुरावेफने शादी कर लेनेके लिये कहा। एक प्रसिद्ध क्रातिकारी प्रत्यक्षदर्शी राजुल क्रोपत्किन ने इसके वारेमें अपने सस्मरणोमें लिखा है—"मुरावेफने कठोर कैदमें पडी सभी कैदी स्त्रियोको—जिनकी सख्या करीव एक सौ थी—मुक्त करके पुरुप चुननेके लिये कहा। समय वीता जा रहा था, और नदीका पानी कम होता जा रहा था, वेडेको जल्दी प्रस्थान करना था, इसलिये मुरावेफने उन्हे जोडे-जोडे तटपर खडा होनेके लिये कहा, और फिर यह कहते हुये आशीर्वाद दिया—'वच्चो, मै तुम्हारा व्याह कराता हू, एक दूसरेके साथ मेहरवानीसे वर्ताव करना। पुरुपो, तुम अपनी वीवियोंसे वुरा वर्ताव नही करना। जाओ आनन्दमे रहो।"

फ्रास और इगलैड इस समय रूसके मुख्य प्रतिद्वद्वी थे। वह पेचिड (पेकिङ) मे रूसके खिलाफ अपनी कार्रवाई निरावाध रूपसे करते जा रहे थे, इसलिये रूसको वहा अपने राजदूतके रखनेकी

अवश्यकता थी। जारने अद्‌मिरल पुतियातिनको चीन दरबारमे अपना दूत बनाकर भेजा। अंग्रेजोंकी तरह रूसियोंकी भी धारणा थी, कि पूर्वी लोग तडक-भडक से अधिक प्रभावित किये जा सकते है। मुराबेफने चीनियो पर प्रभाव डालनेके लिये रूसी राजदूतके आनेपर क्याखतामे भारी स्वागतकी तैयारी की, नगरमें दीपमाला जलाई गई, रूसी सेनाने कवायद-परेड की। लेकिन चीनियोपर इसका कोई प्रभाव नही पडा। पेकिड्से हुक्म आनेका बहाना करके चीनियोने राजदूतको आगे बढनेसे रोके रक्खा। पुतियातिनने इसपर आमूर द्वारा ऐगुन पहुच और वहासे पेकिड जानेकी इजाजत मागी, लेकिन वहा भी चीनियोने रास्ता नहीं दिया। पुतियातिन जबर्दस्ती जाना चाहता था, लेकिन मास्कोकी आज्ञा बिना ऐसा करना मुराबेफको पसद नही था। इसपर पुतियातिनने समुद्रके रास्ते पेकिड जानेका निश्चय किया। आमूरके द्वारा २४ जलाई १८५७ ई० को वह उसके मुहानेपर पेइ होमे पहुचा। वहा भी पेकिद जानेके लिये चीनी अधिकारियोसे बहुत माथापच्ची की, लेकिन कोई फायदा नही हुआ। वहासे फिर वह शाघाई पहुचा, और ब्रिटिश और फ्रेच नौसेनासे मिलकर उन्हें पेइ-होके मुहानेपर घेरा डालनेका परामर्श दिया। चीन अभी फ्रास और इगलेडको अपने विरुद्ध करके उनकी तोपोकी मार खा चुका था, इसलिये वह रूसको भी अपना दुश्मन नही बनाना चाहता था।

११ मई १८५७ को मुराबेफ अपने मामूली अभियानोके दौरानमें ऐगुनमे ठहरा। वहा उसने चीनी सेनापति राजकुमार शानसे भेट करके अपनी माग रक्खी। चीनियोने कुछ आनाकानी करनेके बाद उसे मजूर किया। छ दिनके भीतर ही बातचीत खतम हो गई, और १६ मई १८५८ ई०को ऐगुन-सधिपर हस्ताक्षर भी हो गया। इस सधि द्वारा चीनने आमूरके वाम तटपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और उसुरीके सगम तक दक्षिण तट चीनका माना गया। उसुरीके सगमसे आगे समुद्र तककी भूमिकी सीमाका निर्णय आगेके लिये छोड रक्खा गया। दोनोने नदी द्वारा स्वतत्रतापूर्वक व्यापार और यात्रा करनेके अधिकारको भी मजूर किया। मुराबेफने कृपा दिखलाते हुये यह मजूर किया, कि रूसी तटके ऊपर जेयाके पासमे रहनेवाले मचू चीनकी प्रजा रहेगे। इस बडी सेवाके लिये जार अलेक्सान्द्र II ने मुराबेफको "काउन्ट (ग्राफ) आमूर्स्की" की उपाधि प्रदान की। मुराबेफने रास्ता साफ कर दिया, इसलिये पुतियातिनको जून १८५८ ई०में तियान्त्सिनकी शाति-मित्रता-व्यापार नौचालन-सधि करनेमे कोई रुकावट नही हुई। लेकिन पुतियातिनको ऐगुन-सधिका पता नही था। तियान्त्सिनकी सधिने चीनके खुले बन्दरगाहोमे रूसको व्यापार करनेकी इजाजत दी, और दूसरे राज्योने जहा अपने वाणिज्य-दूत स्थापित किये है, वहा रूसियोको भी वैसा करनेकी स्वीकृति दे दी। यदि कोई रूसी आदमी चीनमे रहते कोई अपराध करे, तो उसे सबसे समीपवाले रूसी वाणिज्य-दूतके पास या सीमातके बाहर भेजनेकी बात मानी गई। इस सधिने रूसी ईसाई-मिशनरियो और उनके चीनी अनुयायियोके लिये भी रक्षाका विशेष अधिकार प्रदान किया। सधिपत्र रूसी, मचूरी और चीनी तीन भाषाओमे लिखा गया था और माना गया था, कि यदि किसी वाक्यके बारेमें विवाद हो, तो मचूरी भाषाका अभिलेख सर्वोपरि प्रमाण माना जायगा।

चीनको नोचनेके लिये इस समय पश्चिमी युरोपके राज्य गिद्धकी तरह चिमटे हुये थे, वह हर तरहसे उसे दबाना चाहते थे। २६ जून १८६० ई०मे एक बहाना करके उन्होने अपनी सेनायें भेज दी, जो लडती हुई पेकिड्तक पहुच गई और वहाके कला और सौन्दर्यके सुन्दर सग्रहालय युवान-मिङ-युवानके प्रासादको लूट लिया। मालूम हो रहा था, पश्चिमी शक्तिया चीनसे मचू-वशको खतम करके छोडेगी, लेकिन निरकुश राजतत्रको कायम रखना जारशाहीने अपना कर्त्तव्य मान लिया था। इसी समय रूसी दूत इग्नतियेफ मचू-वशका सरक्षक बनकर पेकिड पहुचा, जिसने पश्चिमी राज्यो और मचू-वशके बीचमे सधि करा दी। इग्नतियेफने पश्चिमी सेनाओके पेकिड जानेमे पहले ही फ्रेंच दूतसे तियान्त्सिनमे सुन लिया था, कि पश्चिमी शक्तिया पेकिड्में बराबरके लिये अपनी सेना नही रखना चाहती। उसने चीनके महामत्री कुङ्कोसे यह बात छिपाकर बतलाया, कि मै कोशिश करूगा, कि अग्रेज और फ्रेंच सेनायें पेकिङ छोडकर चली जाये, लेकिन शर्त यह है, कि चीन ऐगुन-सधिको स्वीकार करे, और उसुरी-सगमसे समुद्र तकके भागको रूसको दे दे। पेकिड्को शत्रु-सेनाओसे मुक्त कराने-के लिये चीन सब कुछ करनेको तैयार था। २४ अक्तूबरको इगलैडके साथ और २५ को फ्रासके

साथ सधि करानेमें इग्नेतियेफने तत्परता दिखलाई। ५ नवम्बरको पश्चिमी सेनायें पेकिङ छोडकर चली गई। अब अपने इनामके रूपमे इग्नतियेफने १४ नवम्बरको हस्ताक्षरित होनेवाली चीन-रूस-सधिको करवाया, जिसके द्वारा प्रशान्त महासागरके तट तकका एक बहुत भारी भूभाग चीनके हाथसे निकल आया।

येर्मक और खबारोफके साइबेरियामे उठाये हुये कामको इस प्रकार मुरावेफने पूरा किया। यही तीनो साइबेरियाके लिये जारशाही क्लाइव, हेस्टिंग्स और वेल्जली थे।

१७ अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र (१८८१–९४ ई०)

बापकी हत्याके बाद अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा। उसके समयमें घोर अत्याचारके मारे लोग कराहने लगे। अलेक्सान्द्रको हर वक्त मौतका डर लगा रहता था, इसलिये वह पीतरबुर्ग छोडकर गाचिनामें रहता, जिससे उसके समसामयिक उसे "गाचिनाका बदी" कहा करते थे। शिक्षित लोग सबसे अधिक जारके निरकुश शासनके प्रति घृणा रखते थे, इसलिये सार्वजनिक शिक्षाका वह सबसे बडा विरोधी था। तोबोलके राज्यपालने जब उसे सूचित किया, कि साइबेरियामें बहुत कम शिक्षित लोग हैं, तो उसने जवाबमें कहा—"इसके लिये हमें भगवान्को धन्यवाद देना चाहिये।" उसका कहना था—"गाडीवानो, कोचवानो, नौकरो, धोबियो, छोटे दूकानदारो आदिके बच्चोको सिवाय विशेष प्रतिभाकी अवस्थाके उस स्थितिसे ऊचे उठनेके लिये प्रोत्साहित नही करना चाहिये, जिस स्थितिमें कि वह पैदा हुये।" अभी तक रूसी विश्वविद्यालयोको अपने कुलपति (रेक्तर) और प्रोफेसर निर्वाचित करनेका अधिकार था, लेकिन १८८४ ई०में नया कानून बनाकर जारने उनसे यह अधिकार छीन लिया। अच्छे-अच्छे प्रोफेसर निकाल दिये गये, और स्त्रियोके लिये उच्च-शिक्षा एक तरहसे वर्जित कर दी गई।

रूस-भिन्न जातियोका शोषण और कठोर शासन और बढता गया। अलेक्सान्द्र III ने यहूदियोंको भूमि खरीदने और गावमे बसनेका निषेध कर दिया। १८८७ ई०में माध्यमिक और उच्च-शिक्षण सस्थाओमें यहूदी विद्यार्थियोके लिये उसने सख्या निश्चित कर दी। उदमूर्त जैसी कितनी ही जातियोको ईसाई बनानेके लिये मिश्नरियोको प्रोत्साहन दिया गया। जो उदमूर्त अपने बाप-दादोके धर्मको छोडना नही चाहते थे, उन्हे देवताओके सामने नर-बलि करनेका अपराध लगाकर कठोर दड दिया जाता था।

जारशाहीका ध्यान अब मध्य-एसियाकी ओर विशेष तौरसे गया था। वहासे कपासकी गाठें रूसके कारखानोंमें भेजी जाती थी। पहले वह ऊटोपर लदकर आती थी, अब उसके लिये रेलके बनानेकी आवश्यकता पडी। १८८० ई०के बाद समरकन्दको रेलद्वारा कास्पियन-तटसे मिला दिया गया। कास्पियनके दूसरे तटपर रूससे मिलानेवाली रेल इससे पहले ही तैयार हो गई थी। लेकिन रूस जिस तरह मध्य-एसियामें बढ रहा था, उसे अग्रेज नही पसद करते थे। रूस अब अफगानिस्तानका पडोसी था। हमे मालूम है, कि अग्रेज सरकार रूसका ही डर बतलाकर भारतके वार्षिक बजटका बहुत भारी भाग पश्चिमोत्तर सीमातकी सैनिक तैयारीपर खर्च करती थी। १८८५-८६ ई० में निश्चित मालूम हो रहा था, कि रूस और इगलैडमें लडाई छिड जायेगी, लेकिन १८८७ ई०में रूस और ईरानकी सीमा, और १८९५ ई० में रूस और अफगानिस्तानकी सीमाको ठीक कर देनेसे युद्धकी सम्भावना कम हो गई।

जिस वक्त इगलैडके साथ रूसके सबध बिगड रहे थे, उसी समय फ्रासके साथ उसके सबध अच्छे हो रहे थे, जिसके कारण फ्रासीसी पूजी बहुत भारी परिमाणमें रूसमें लग रही थी, और फ्रासीसी सरकारने जारशाहीकी बात मानकर रूसी क्रातिकारियोके ऊपर अपने यहा देख-रेख रखनेका वचन दिया। जर्मनी बिस्मार्कके नेतृत्वमें बहुत एकताबद्ध और शक्तिशाली हो चुकी थी। १८७० ई०में एक बार विजयिनी जर्मन सेना पेरिसमें पहुच चुकी थी, इसलिये फ्रास रूसके साथ घनिष्टता स्थापित करना चाहता था। १८९१-९३ ई० मे फ्रास और रूसके बीच कई सधिया हुई, और जर्मनीके आक्रमण करनेपर आठ लाख सेना भेजनेका रूसने वचन दिया था।

प्रथम मजदूर आन्दोलन—यद्यपि वकुनिन-जैसे बुद्धिजीवी क्रातिकारी मार्क्सकी अपेक्षा स्वाप्निक (उटोपियन) समाजवादकी तरफ अधिक आकृष्ट हुये थे, लेकिन रूसके मजदूरोमें मार्क्सके विचार पहले ही पहुच चुके थे, जैसा कि मार्च १८७० ई०में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय (इन्टर्नेशनल) महापरिषद्में प्रवासी रूसी क्रातिकारियोंके कार्ल मार्क्सको रूसका प्रतिनिधि बनानेसे मालूम होता है। मार्क्सने उनकी वातको स्वीकार करते हुये जवावमें लिखा था—"रूसमे जारशाहीका विनाश सिर्फ रूसी जनताके लिये ही आवश्यक नही है, वल्कि युरोपीय सर्वहाराकी मुक्ति भी उसीपर निर्भर करती है।" हम देख चुके है, कि युरोपकी जन-क्रातियोंको दवानेके लिये रूसी जार हमेशा खुलकर अपनी सेना और पैसा देनेके लिये तैयार थे। १८७१ई०मे फ्रासपर जर्मनीके विजय होनेके वाद पेरिसके कमकरोने "पेरिस कमून"के नामसे विश्वमे प्रथम कम्युनिस्ट सरकार कायम की, रूसी कमकरोने उसके साथ अपनी सम्मति और सहानुभूति दिखलाई। १८७८ ई०में पेरिस कमूनके वार्षिकोत्सवके समय अदेसाके मजदूरोने अपनी सद्भावनाके सदेश भेजे। १८७० ई०के वाद नरोद्निकोंके कार्यक्रमके असफल होनेपर क्रातिका स्रोत वही सूख नही गया, वल्कि अव मजदूरोंने क्रातिके झडेको अपने हाथमे लिया। मई १८७० ई० में पीतरवुर्गकी नेवा कपडा मिलमे मजदूरोकी पहिली सवसे वडी हडताल हुई, जिसको तोडने और मजदूरोको दवानेमें जारशाहीको काफी दिक्कत उठानी पडी। यह पेरिस-कमूनकी स्थापनाके एक साल पहिलेकी घटना है। १८७५ ई० मे उक्रइनमें कारखानेके डेढ हजार मजदूरोने हडताल की। १८७७ ई०मे अदेस्साके रेलवे मजदूरोंने साढे तीन सप्ताह तक अपनी हडतालको चलाया। मजदूरोकी माग थी—जुरमानोका कम करना, वच्चोंसे कम घटे काम लेना। इस तरह हम देखते है, कि १८७० ई० के वाद रूसके मजदूरोमें सामूहिक वर्गचेतना प्रारम्भ हो गई थी। सवसे पहला मजदूर वासिली गेरासिमोफ था, जिसे सिपाहियो और मजदूरोंमे क्रातिकारी प्रचारके अपराधमे नौ वर्षकी सजा हुई, और वह साइवेरिया (याकुतस्क) में १८९२ ई०में मरा। उस समयका दूसरा मजदूर क्रातिकारी प्योत्र अलेक्सियेफ था। वह स्मोलेन्स्कके एक किसान घरमे पैदा हुआ था, पीछे नरोद्निक दलका सदस्य वना। प्योत्र अपनी शिक्षा और अनुभवसे समझ गया, कि नरोद्निक कार्यक्रमसे सफल क्राति नही हो सकती, इसलिये वह समाजवादी वन कारखानोके मजदूरोमे प्रचार करता रहा। मास्कोके मजदूर उसे वहुत प्यार करते थे, और अपने असाधारण स्नेहको दिखलानेके लिये उसे पित्रुस्का कहकर पुकारते थे। प्योत्रको साइवेरिया (याकुतिया) में दस सालकी कालेपानीकी सजा हुई। १० मार्च १८७७ ई०मे अदालतमे भाषण देते हुये उसने कहा था—"मजवूत नसोंवाले लाखो मजदूरोके हाथ उठेंगे, और सैनिकोकी सगीनोसे सरक्षित स्वेच्छाचारिताका जूआ चूर्ण-विचूर्ण हो जायेगा।" लेनिनने इसे "रूसी मजदूर क्रातिकारीकी महान् भविष्यद्वाणी" कहा था। प्योत्र १९८१ ई०में साइवेरियामें डाकुओंके हाथो मारा गया।

प्रथम क्रातिकारी मजदूर सगठन १८७५ ई०में अदेस्सामे "दक्षिणी रूसी मजदूर सघ" के नामसे युगेनी जास्लाव्स्की द्वारा स्थापित हुआ। इस सघने मार्क्सके प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय नियमोंको अपनाया था। इस सघके डेढ-दो-सौ धातु-कमकर सदस्य वने थे। इसकी कई शाखाये खुली, और करीव साल भर तक जीवित रहकर जारशाही अत्याचारोने इसे छिन्न-भिन्न कर दिया। जास्लाव्स्कीको दस सालकी सजा दी गई, और वह थोडे दिनों वाद जेल हीमे मर गया।

दक्षिणके मजदूरोंके सगठनको देखकर पुलिसके हाथों वहासे भागकर एक मिस्त्री (फिटर) विक्तर अवनोर्स्की उत्तरकी ओर आया, और उसने उस समयके एक प्रसिद्ध क्रातिकारी स्तेपान खलतुरिनके साथ मिलकर १८७८ ई०में पीतरवुर्गमे "रूसी मजदूरोका उत्तरी सघ" स्थापित किया। इस सघने हडतालोके सचालनका काम भी अपने हाथमें लिया। वह अपना गुप्त प्रेस खोलकर मजदूर क्रातिकारी पत्रिका "रवोचया जार्या" (कमकरोकी उषा) का प्रथम अक निकालने जा रहा था, इसी समय पुलिसने आकर प्रेसको छीन लिया, और पत्रिका निकल नही सकी। १८८० ई०मे पुलिसने उत्तरी सघको छिन्न-भिन्न कर दिया। विक्तर अवनोर्स्कीको दस सालकी सजा हुई, स्तेपान खलतुरिन इधरसे निराश होकर नरोद्निकोंके आतकवादमें भाग लेने लगा, और १८८२ ई०में अलेक्सान्द्र II को मारनेके प्रयत्न करनेमें उसे फासीपर चढ़ा दिया गया।

शिक्षा और संस्कृति—जार शिक्षा और विज्ञानके प्रचारसे कितने डरते थे, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। लेकिन सरकारके सैनिक और असैनिक विशाल यंत्र को चलानेके लिये शिक्षितोंकी अवश्यकता थी, पर वह उसका कमसे कम प्रचार चाहते थे। लेकिन कालबली के सामने जारोंकी क्या चलती ? अब पूँजीवादी युग आरम्भ हो चुका था, जिसके लिये शिक्षाके अधिक व्यापक रूपमें फैलनेकी अवश्यकता थी। किसानोंकी अर्धदासताके उच्छेदके बाद गाँवोंमें भी शिक्षाकी माँग हुई, और ऐसे ही ग्राम-स्कूलोंके संगठनमें विशेष भाग लेनेवाला लेनिनका पिता इलिया निकोलाइ-पुत्र उलियानोफ (१८३१-८६ ई०) था, जिसने सिंबिर्स्ककी गुबर्निया (प्रदेश) में बहुत काम किया। अब १८६० ई०के बाद लड़कियोंके भी स्कूल कायम होने लगे, और पीतरबुर्गमें एक महिला विद्यालय और मेडिकल स्कूल (१८७० ई० के बाद ही) खोला गया।

रूसी सामन्तशाहीकी तरफसे यद्यपि विज्ञान-प्रचारके लिये वैसा कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता था, जैसा कि पश्चिमी युरोपमें देखा जाता था, लेकिन रूसी जातिके पास प्रतिभा मौजूद थी, इसलिये वह ऊपर आनेके लिये प्रयत्न किये बिना नहीं रह सकती थी। विश्वविख्यात रसायनशास्त्रवेत्ता दिमित्रि इवान-पुत्र मेन्देलेयेफ (१८३४-१९०७ ई०) इसी समय अपनी खोजों द्वारा दुनियाकी विद्वन्मंडलीको चकित कर रहा था। उसकी बनाई "रासायनिक तत्त्वोंकी युगक्रमिक पद्धति" को सारे संसारने स्वीकार किया। लेकिन अलेक्सान्द्र III ने इस विश्वविख्यात विज्ञानवेत्ताको उसके स्वतंत्र विचारोंके लिये पीतरबुर्ग विश्वविद्यालयसे निकाल दिया। इस कालके दूसरे विज्ञानवेत्ता शरीरशास्त्री इवान मिखाइल-पुत्र सेचेनोफ और वनस्पतिशास्त्रवेत्ता क० अ० तिमिरियाजोफ (१८४३-१९२० ई०) थे। तिमिरियाजोफकी खोजोंका सम्मान सारी दुनियाने उसके जीवनमें ही किया। लेकिन यह दोनों विज्ञानवेत्ता जारके कोपभाजन हुये। तिमिरियाजोफका यह सौभाग्य था, कि उसने बोल्शेविक-क्रान्तिको अपनी आँखोंके सामने सफल होते देखा, और कम्युनिस्ट सरकार और रूसी जनताके महान् सम्मानको प्राप्त किया।

साहित्य—इस कालके प्रगतिशील पत्रकारों और समालोचकोंमें दिमित्रि इवान-पुत्र पिसारोफ (१८४०-६८ ई०)का विशेष स्थान है। यह २८ ही वर्षकी उमरमें मर गया, लेकिन इतने ही कालमें उसने स्वेच्छाचारी शासकोंके दिलको दहला दिया। उन्होंने उसे पीतर-पावल-दुर्ग (लेनिनग्राद) में १८६२-६६ ई० में बंद रक्खा। जेलमें रहते हुये भी पिसारोफकी कलम बंद नहीं हुई।

कवि नेक्रासोफ और समालोचक सल्तिकोफ-श्चेद्रिनके सम्पादकत्वमें "अतेचेस्तवेन्नीये जापिस्की" (मातृभूमिकी टिप्पणियाँ) एक प्रभावशाली जनतंत्रवादी पत्रिका निकलती थी, जिसका बहुत प्रचार था, विशेषकर नरोद्निक क्रांतिकारियोंमें। उसके बाद इस पत्रिकाका सम्पादक न० क० मिखाइलोव्स्की हुआ, जो क्रांतिका पक्षपाती होते हुये भी अपने अवैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रतिगामी दार्शनिक विचारोंके कारण लेनिनकी कड़ी समालोचनाका पात्र हुआ।

अब रूसके साहित्यकारोंने गोगल और पुश्किनकी कलमको इतना आगे बढ़ाया, कि प्रसिद्ध विचारक एंगल्सको लिखना पड़ा—"रूसी भाषा कितनी सुंदर है, इसमें भयंकर भद्देपन को छोड़कर जर्मन भाषाके सभी गुण मौजूद हैं।" इसी कालमें इवान सेर्गेइ-पुत्र तुर्गेनेफ (१८१८-८३ ई०) जैसा रूसका महान् लेखक पैदा हुआ। "एक शिकारीके पत्र" में उसने जमींदारोंके नीचे कराहते अर्धदास किसानोंके जीवनका चित्र खींचा था। "अमीरोंका घोंसला", "रुदिन", "सन्ध्याको", "पिता और पुत्र" उपन्यासोंमें उसने १८४० और १८६० ई०के आसपासके रूसके सामाजिक जीवनका स्पष्ट चित्र उपस्थित किया है। अपने "धुआँ", "बंजर भूमि" में भी उसने उसी तरहसे अपनी लेखनीका चमत्कार दिखलाया है। तुर्गेनेफ किसानोंकी मुक्ति चाहता था, और अर्धदासताके उच्छेदको अवश्यम्भावी बनानेमें उसकी लेखनीने भी काम किया था। इसी समयका महान् साहित्यिक सूर्य फ० म० दोस्तोयेवेस्की (१८२१-८१ ई०) था, जिसका उपन्यास "गरीब लोग" १८४० ई०के बाद निकला और जल्दी ही प्रसिद्ध हो गया। उसके दूसरे कथाग्रंथ 'मृतक गृह के संस्मरण", "अपराध और दंड", "मूर्ख", "करमाजोफ भाई" जैसी रूसी साहित्यकी अमर कृतियाँ इसी समय लिखी गईं। लेव लेव तालस्ताय (तोल्स्ताय १८२८-१९१० ई०) जैसी प्रतिभा इसी समय प्रकट हुई। उसके ग्रंथ १८५० ई०

के बाद ही प्रकाशित होने लगे। अपने "युद्ध और शांति", "अन्ना करेनिना" जैसे ग्रंथोंमे रूसी जीवनका उसने अनुपम चित्र खीचा है। "युद्ध और शांति" मे १८१२ ई०मे रूसियोके वीरतापूर्ण संघर्षका बडा सजीव वर्णन है।

चित्रकला, नाट्यकला और संगीतकलामें भी इस कालमे चित्रकार ई० न० कराम्स्की (१८३७–८७ ई०), व० ग० पेरोफ (१८३३–८२ ई०), अद्भुत चित्रकार इलिया एफिम-पुत्र रेपिन (१८४४–१९३० ई०) हुये। संगीतकारोमें म० अ० बलाकिरेफ (१८३६–१९१० ई०), व० व० स्तासोफ (१८२४–१९०६ ई०), अ० प० वोरोदिन (१८३३–८७ ई०) जैसे संगीतकार, और म० न० येर्मोलोवा, और ग० न० फेदोतोवा जैसी अभिनेत्रिया, और प० म० सदोव्स्की जैसे प्रतिभाशाली अभिनेता पैदा हुये।

मार्क्सवादका प्रचारारंभ—मार्क्सके महान् ग्रथ "पूंजी" के प्रथम जिल्दका रूसी अनुवाद १८७२ ई० में प्रकाशित हुआ। उस समय अभी मजदूरोमे वर्गचेतनाका आरम्भ ही हुआ था। पहला मार्क्सवादी संगठन "मजदूरोकी मुक्ति" (श्रमिकमुक्ति) की स्थापना जनेवा (स्वीजर्लैंड) में १८८३ ई० मे प्लेखानोफने की, जिसमें कितने ही रूसी क्रातिकारी शामिल हुये थे। जार्ज वलेन्तिन-पुत्र प्लेखानोफ (१८५६–१९१८ ई०) पहले नरोद्निक क्रातिकारी था, पीछे प्रथम मार्क्सवादी महालेखक हुआ। जारशाही अत्याचारोने उसे देशसे बाहर जानेके लिये मजबूर किया, जहा उसने मार्क्सके ग्रंथोको पढकर उसके सिद्धातोको स्वीकार किया। १८८३ ई०मे उसने "समाजवाद और राजनीतिक संघर्ष" पुस्तक प्रकाशित की। दो साल बाद "हमारे मतभेद" को प्रकाशित किया। प्लेखानोफने अपनी लेखनी द्वारा अच्छी तरह साफ कर दिया, कि नरोद्निकवादसे कुछ होने-जानेवाला नही है। रूसमे पूंजीवाद आकस्मिक घटना नही है। रूसके विकासके लिये पूंजीवादी मार्ग छोड दूसरा रास्ता नही है, और पूंजीवादके विकासके साथ-साथ क्रातिकारी सर्वहारा वर्गको भी विकसित होनेसे रोका नही जा सकता। "मजदूर मुक्ति" संगठनने रूसमे समाजवादी विचारोको फैलानेका काम किया। इसीने मार्क्स और एंगेल्सके "कम्युनिस्ट घोषणा", "श्रम-वेतन" और "पूंजी" आदि ग्रंथोको प्रकाशित किया, जिनसे एक पीढीके रूसी क्रातिकारियोंको शिक्षा मिली। मजदूरोमे भी अब इन विचारोका प्रचार होने लगा। पूंजीवादके लिये समय-समयपर मालकी खपत कम हो जाने, मालकी उपज बढ जानेके कारण चीजोका दाम घट जानेसे समय-समयपर आर्थिक संकटका आना स्वाभाविक है। आर्थिक संकटके समय पूंजीपति अपने कारखानोको बंद करके लाखो मजदूरोको बाटका भिखारी बना देते है। नफा उठानेके समय वह दोनो हाथोसे लूटते है, लेकिन अब वह उनके लिये पैसा कमानेवाले मजदूरोको भूखा मारनेसे बाज नही आते। पर मजदूर चुपचाप कैसे भूखे मरना बर्दाश्त कर सकते है? १८८० ई० के बाद जो आर्थिक संकट आया, उसमें और मिलोकी तरह मोरोजोफ मिलने भी १८८२ ई० में अपने आठ हजार मजदूरोका वेतन घटाना शुरू किया, और १८८४ ई० तक मिलमालिकोने एकके बाद एक पाच बार मजूरी घटाई। इसके साथ-साथ मजदूरोको जरा-जरा-सी बातपर जुरमाना करना अथवा उन्हे कामसे निकाल देना मामूली बात थी। इस समय मजदूरोमे "उत्तरी संघ" द्वारा क्रातिकारी विचारोका प्रचार हो चला था। ७ जनवरी १८८५ ई०को सात बजे सवेरे ही पहले निश्चित संकेतके अनुसार चिल्लाकर कहा गया—"आज छुट्टी है, काम बंद करो, गैस रोक दो, स्त्रियो, बाहर चली जाओ।" उसी समय सारी मिल बंद हो गई। मजदूरोने उत्तेजित किये जानेपर मिलकी कितनी ही चीजोको तोड-फोड दिया, मनेजरके मकानको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इसपर जारशाही पुलिस और सेनाने धावा बोल दिया। वह वोल्कोफ आदि बहुतसे हडताली मजदूरोको पकडकर सीधे जारके सामने ले गये। अलेक्सान्द्र III ने पूछा—"क्या मैं सबके लिये हू, या तुम सब मेरे लिये हो?" मजदूरोने जवाब दिया—"हरएक आदमी तुम्हारे लिये है।" लोगोने कसाकोसे वोल्कोफको छुडानेकी कोशिश की, बहुत भारी प्रदर्शन किया। इसके बाद मजदूरोके संगठनको दबाने और उनकी हिम्मत तोडनेके लिये जारने पूरी कोशिश की। इस समयके हडताली नेताओंमें एक मजदूर प० अ० मोइसेयको भी था, जिसे जारशाही अदालतने छोड दिया था, लेकिन जार अलेक्सान्द्र III ने अपनी विशेष आज्ञासे उसे कालापानीका दंड दिया। मोइसेयकोने १९१७ ई०को वोल्शेविक क्रातिमे भाग लिया, गृहयुद्ध-कालमे लाल सैनिक

वनकर लडा, और १९२३ ई० मे मरा। १८९१ ई० में पीतरवुर्गमें मार्क्सवादियोंने मई-दिवसके वहानेसे प्रथम गुप्त क्रांतिकारी बैठक बुलाई। इसमे एक वुनकर मजदूर अफनासेयेफने उपस्थित मजदूरोंसे पुकारकर कहा—"साथियो, हम जरूर सीखेंगे, जरूर सगठित होंगे, और अपनेको एक मजबूत पार्टीके रूपमे सघवद्ध करेंगे।" लेनिनने पीतरवुर्गके मजदूरोंके इस पहले प्रयासके वारेमें लिखा था—"१८९१ ई०का साल शेलगुनोफकी श्मशानयात्राके प्रदर्शनमें पीतरवुर्गके मजदूरोंके भाग लेनेके लिये विशेष तौरसे उल्लेखनीय है, और वह पीतरवुर्गमें मई-दिवस मनानेके समय दिये गये राजनीतिक व्याख्यानोंके लिये भी विशेष तौरसे उल्लेखनीय है।" न० व० शेलगुनोफ सारे जीवनभर मजदूरों और गरीवोंकी स्वतत्रताके लिये काम करता रहा। मरनेके समय मजदूरोंने उसे अभिनन्दन-पत्र भेंट किया था।

अलेक्सान्द्र III के शासनकालमे पूजीवादी उद्योगका विस्तार वहुत हुआ, रेलोंका भी प्रसार वढा। लेकिन जारशाही कालमे रूसमे विदेशी पूजी सवसे अधिक लगी हुई थी, जिसमे भी फ्रेंच और वेल्जियन पूजीपतियोंका भाग अधिक था। किसानोंकी अर्धदासता खतम हो गई थी, लेकिन अव भी उनका शोपण कम नही हो रहा था।

१८. निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र (१८९४–१९१७ ई०)

रूसका यह अन्तिम जार वहुत कमजोर दिमागका, किंतु वडा ही घमडी और क्रूर था। प्रगतिशील विचारोंके प्रति घृणा उसने अपने वाप-दादोंके खूनसे पाई थी। १८९६ ई०में सिंहासनारोहणके समय मास्कोमें एक महामेलेका प्रवध किया गया था, जिसमें लाखों आदमी आये, किंतु सरकारकी ओरसे व्यवस्थाका कोई प्रवध नहीं किया गया, जिससे हजारों नर नारी और वच्चे पैरोंके नीचे दवकर मर गये। उस घटनाके दूसरे दिन सवेरे निकोलाइ II अपनी स्त्री और विदेशी अतिथियोंके साथ घटना-स्थलपर आया। लाशोंको हटा लिया गया था और खूनके दागोंपर वालू डाला जा रहा था। इतनी वडी दुर्घटना हो जानेके वाद भी उस शामको निकोलाइ अपनी वीवी अलेक्सन्द्राके साथ मस्त होकर नाचता रहा, मानो कुछ हुआ ही नही। इसपर यदि रूसी जनता निकोलाइको "खूनी" की उपाधि दे, तो क्या आश्चर्य ?

मध्य-एसियापर रूसके पूजीवादी विस्तारका खास तौरसे वडा प्रभाव पड रहा था, क्योंकि रूसी कपडामिलोंके लिये कपास वहींसे आती थी। खोकन्दके राज्यको अव फरगाना-उपत्यकाके नामसे कपासकी उपजका केंद्र वना दिया गया था। धनी खेत-मालिक अपने असामियोंसे खेती करवाकर नफा उडाते थे, और साधारण जनता भूखों मरती थी। ऊपरसे १८९० ई०के करीव सरकारी कर तिगुना वढ गया था। इन अत्याचारोंको वर्दाश्त करते-करते लोग तग आ गये, और मई १८९० ई० मे अन्दिजान नगरमें वलवा हो गया। इसके लिये ईशान (सत, मुल्ला) मुहम्मद अली जैसा एक प्रभावशाली धार्मिक नेता अगुवा वना था। फरगानासे वाहर भी भीतर ही भीतर आन्दोलन और सगठन किया गया था। हथियारोंका भी सग्रह हुआ था, जिसमे अग्रेजी वन्दूकोंको अफगान व्यापारियोंने विद्रोहियोंके पास पहुचाया था। १८ मई १८९८ ई० की रातको दो हजार हथियारवद उज्वेक और किर्गिज अन्दिजानकी छावनीपर चढ आये, और उन्होंने नगरपर अधिकार करना चाहा। "ग़जवा" (जहाद) की घोपणा पहिले हीसे हो गई थी, इसलिये मध्य-एसियाकी मुस्लिम जनता जारशाहीकी विरोधी तथा विद्रोहियोंकी पक्षपाती थी। लेकिन रूसकी सैनिक शक्तिके सामने ये थोडे-से लोग क्या कर सकते थे? मुहम्मद अली और उसके उन्नीस साथी फासीपर चढा दिये गये, ३४८ उज्वेकोंको लम्बी-लम्बी सजायें हुईं। जारशाही पुलिसने लोगोंपर गजव ढाया, तीन उज्वेक गावोंको उजाडकर वहा रूसियोंको लाकर वसा दिया, दूसरे गावोंपर भारी सामूहिक कर लगाये।

लेनिन—रूसकी इस राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमिमें व्लादिमिर इलिया-पुत्र उलियानोफका जन्म २२(१०) अप्रैल १८७० ई०को सिम्विर्स्क (उलियानोव्स्क) नगरमे एक स्कूल-शिक्षकके घरमें हुआ। व्लादिमिर उलियानोफ लेनिनके नामसे सव समयके विश्वका महान् पुरुष स्वीकृत किया गया है। इलिया उलियानोफ प्रगतिशील विचारोंका वुद्धिजीवी पुरुष था।

उसके सभी बच्चोने क्रातिमे भाग लिया। लेनिनके सबसे बडे भाई अलेक्सान्द्रको जार अलेक्सान्द्र III को १८८७ ई०मे मारनेके प्रयत्नका सगठन करनेके लिये फासीपर चढा दिया गया। अपने प्रिय भाईकी हत्याका प्रभाव लेनिनके ऊपर सदाके लिये पडना ही चाहिये था, किन्तु उसकी पैनी बुद्धिने बतला दिया, कि नरोद्‌निकोंका आतकवाद सफल क्रातिका रास्ता नही है। बिना साधारण जनताके सहयोग और सहानुभूतिके मुट्ठी भर "वीर" दुनियाको नही बदल सकते। "नही, हम उस पथको नही लेगे, वह जानेका रास्ता नही है—" लेनिनने अपने १७ वर्षके भाई वोलोद्या उलियानोफके फासी-पर चढनेकी खबर सुनकर कहा था। १७ वर्षकी उमरमे लेनिन कजानके विश्वविद्यालयमे दाखिल हुआ, लेकिन विद्यार्थियोके राजनीतिक प्रदर्शनमें भाग लेनेके कारण उसे पकडकर एक गावमे निर्वासित कर दिया गया। पकडते वक्त पुलिस अफसरने लेनिनसे कहा था—"जवान, तुम क्यो विद्रोह कर रहे हो ? देख नही रहे हो, तुम्हारे सामने एक दीवार खडी है ?" व्लादिमिरने जवाब दिया—"दीवार, हा वह खडी है, लेकिन सडी हुई दीवार है, जरा-सा धक्का दो और यह गिर पडेगी।" अभी वह व्लादिमिर उलियानोफ ही था, पीछे अपने अन्तर्धान जीवनमें उसे लेनिनका छद्‌म नाम स्वीकार करना पडा। विश्वविद्यालयकी शिक्षासे यद्यपि लेनिन उस समय वचित हो गया, लेकिन उसने अपने अध्ययनको जारी रक्खा, और जब उसे फिर गाव लौट आनेका मौका मिला, तो उसने मार्क्स और एगेल्सके ग्रथोका बहुत गम्भीर अध्ययन किया। समारा जानेपर वहा उसने मार्क्सवादियोका प्रथम अध्ययन-चक्र सगठित किया। १८९३ ई०की शरद्‌में वह पीतरबुर्ग गया, जहाके मार्क्सवादियोने जल्दी ही उसे अपना नेता मान लिया। १८९४ ई०मे लेनिनने कई व्याख्यान तैयार करके पढे, जो पीछे "जनताके मित्र कौन है और वह कैसे समाजवादी जनतात्रिकोसे लडते है ?" के नामसे प्रकाशित हुये। इसे कहनेकी अवश्यकता नही, कि इसमें लेनिनने नरोद्‌निकोकी खबर ली थी। इस आरम्भिक पुस्तकमे ही लेनिनने भविष्यद्‌वाणी की थी—"जनतात्रिक तत्त्वोका मुखिया बनकर विद्रोह करके रूसी मजदूर स्वेच्छाचारिताका अन्त करेगे और विजयी कम्युनिस्ट रूसी सर्वहाराको क्रातिके लिये खुले क्रातिकारी सघर्ष के सरल पथपर ले जायेगे।"

नरोद्‌निकोसे सघर्ष करते हुये पीतरबुर्गके मार्क्सवादियोने "मजदूर वर्गकी मुक्तिके लिये सघर्ष का सघ" के नामसे एक सगठन स्थापित किया था। लेनिन इस सघका जल्दी ही नेता हो गया, जिसने उस समय मार्क्सवादी कातिकारी विचारोके प्रचारके लिये बहुत काम किया और प्रचारक्षेत्रको बढाया। उसके कार्यमे बाबुश्किन, शेल्गुनोफ और दूसरे कर्मी साथ दे रहे थे। १८९५ ई०की शरद्‌से पीतरबुर्गके "सघर्ष सघ"ने मजदूरोको सगठित कर हडतालोका नेतृत्व करना शुरू किया। १८९६ ई० मे राजधानीके तीस हजार जुलाहोने जारके सिहासनारोहणके महोत्सवके समय लेनिनद्वारा तैयार की हुई मागोके लिये हडताल कर दी। मजदूरोके दबावके कारण जारशाही सरकारको कामके घटोको कम करनेका वचन देना पडा। रूसके मजदूरोको अब क्रातिका क्रियात्मक पाठ मिलने लगा, वह अपनी शक्ति अनुभव करने लगे। इससे पहले ही दिसम्बर १८९५ ई०मे लेनिनको गिरफ्तार करके जेलमे बद कर दिया गया था। लेकिन जेलकी दीवारे लेनिनके प्रभाव और नेतृत्वको रोक नही सकती थी। १८९७ ई०में सरकारने लेनिनको तीन वर्षका कालापानी देकर पूर्वी साइबेरियामे (१८९७ ई०से १९०० ई०तक) येनिसेई गुबर्निया (प्रदेश) के मिनुसिन्स्की उयेज्द (जिले) के शुशेन्स्कोये गाव मे बद कर दिया। इसी समय १८९९ ई०मे उसने अपने महान् ग्रथ "रूसमे पूजीवादका विकास" को लिखकर समाप्त किया। जब लेनिन साइबेरियामे बद था, उसी समय मार्च १८९८ ई० में "रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी"की प्रथम काग्रेस मिन्स्क नगरमे हुई, जिसमे "रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी"की स्थापना घोषित की गई। सरकारने जल्दी ही पार्टीकी केद्रीय समितिके लोगो और कार्यमें भाग लेनेवालोको पकड़ लिया, तो भी वह क्रातिकारी आन्दोलनको बद नही कर सकी। मार्क्सवादी विचारोकी मजदूरो पर गहरी छाप पडती जा रही थी, और वह रूसी साम्राज्यके भिन्न-भिन्न प्रदेशोमे भी फैलने लगे। २० वी सदीके अन्ततक काकेशसको भी इनकी हवा लगी, जहा किसानोके विद्रोह अक्सर हुआ करते थे। इसी समय योसेफ विसारियोनोविच जुग-श्विली मार्क्सवादी क्रातिके प्रभावमे आया, जो कि २१ (९) दिसम्बर १८७९ ई०मे गुर्जीके एक

छोटे-से कस्बे गोरीके एक जूते बनानेवालेके घरमें पैदा हुआ था। तरुण योसेफ "होनहार बिरवानके होत चीकने पात" के अनुसार संघर्षमें भाग लेनेके लिये छटपटाने लगा। स्वयं अशिक्षित होते हुये भी योसेफके माता-पिताने उसे शिक्षा देनेकी कोशिश की, और चाहा कि वह ईसाई-धर्मका पुरोहित बनकर सम्मानका जीवन बिताये। लेकिन ईसाई-धर्मकी पाठशालाके वातावरणमें भी मार्क्सवादने घुसकर उसे अनीश्वरवादी बना दिया। १८९८ ई०में ही योसेफ तिफलिसके समाजवादी जनतान्त्रिक संगठनमें सम्मिलित हो गया था, और इसी समय उसे लेनिनकी प्रथम पुस्तक पढ़नेका अवसर मिला। योसेफ जुगेदिवलीने अपने क्रांतिकारी जीवनमें स्तालिनका छद्म नाम स्वीकार किया था, जो कि उसके गुरु-की तरह ही उसका भी नाम बन गया।

संस्कृति, साहित्य और विज्ञान—१९ वीं सदीके अन्त और २० वीं सदीके आरम्भतक रूसी प्रतिभाका लोहा दुनियामें सर्वत्र माना जाने लगा, यद्यपि अंग्रेजोंके गुलाम भारतको रूस देशका तब तक पता नहीं लगा, जब तक कि १९१७ ई०की बोल्शेविक क्रांतिकी खबर बिजलीकी तरह दुनियामें दौड़ने नहीं लगी। इसी कालमें इलिया मेचनिकोफ (१८४५–१९१६ ई०) जैसा महान् प्राणिशास्त्री, इवान पीतर-पुत्र पावलोफ (१८४९–१९३६ ई०) जैसा अद्वितीय शरीरमनोविज्ञानशास्त्री हुये। बिजलीके प्रथम आर्क-लैम्पका आविष्कारक प० य० याब्लोचकोफ (१८४७–९४ ई०) भी इसी समय हुआ, जिसके बिजलीके लैम्पकी कदर देशमें नहीं हुई, तो वह पेरिस चला गया, जहां १८७६ ई०में उसने अपने आविष्कारको पेटेंट कराया, और पेरिसमें पहलेपहल उसकी बिजली-बत्ती जलाई गई। बाहरके लोग अभी भी नहीं जानते, कि बिजली-बत्तीका आविष्कारक अमेरिकन नहीं, एक रूसी था। एडिसनने बिजली-बत्तीके आविष्कारक होनेका दावा किया, लेकिन उससे पहले एक दूसरे रूसी आविष्कारक लादिगिनने उस तरह की बिजली बत्ती तैयार कर दी थी, इसलिये अमेरिकन अदालतने एडिसनके दावेको मंजूर नहीं किया। हां, लादिगिनके आविष्कारकी कदर उसकी मातृभूमिमें नहीं हुई और उसका विकास अमेरिकनोंने किया। अलेक्सान्द्र स्तेपान-पुत्र पापोफ (१८५९–१९०५ ई०) ने १८९५ ई०में बेतारके तारका आविष्कार किया। बेतारके तारको इतालियन मार्कोनिका आविष्कार बतलाया जाता है, लेकिन उससे पहले रूसी पापोफ और भारतीय जगदीशचन्द्र बोस उसका आविष्कार कर चुके थे। इन दोनों देशोंकी सरकारोंकी जड़ता और पक्षपातके कारण उन्हें आगे बढ़नेका मौका नहीं मिला। पापोफने १८९५ ई०में युद्धमंत्रीके पास अपने प्रयोगोंके लिये एक हजार रूबल अनुदान करनेके लिये प्रार्थना की थी, जिसका जवाब मिला था—"मैं इस तरहके ख्याली पुलावके लिये पैसा देनेकी इजाजत नहीं दे सकता।"

साहित्य और कला—इस कालके साहित्य-गगनके महान् नक्षत्र हैं—अन्तोन पावल-पुत्र चेखोफ (१८६०–१९०४ ई०), और अ० म० गोर्की (१८६८–१९३६ ई०)। इन दोनों महान् लेखकोंकी कितनी ही कृतियोंसे भारतीय पाठक भी परिचित हैं। इन दोनों ही को जारशाहीका कोपभाजन बनना पड़ा था। चेखोफ ४४ वर्षकी उमरमें तपेदिकसे मर गया, गोर्कीने नवीन रूसको अपने सामने फलते-फूलते देखा, और उसके निर्माणमें भाग लिया।

इस कालके चित्रकारोंमें रूसी ऐतिहासिक चित्रकलाका सर्वश्रेष्ठ आचार्य व० ई० सुरकोफ (१८४८–१९१६ ई०), छवि-चित्रकलाका महान् निर्माता व० अ० सेरोफ (१८६५–१९११ ई०), प्रकृतिचित्रणका जादूगर ई० ई० लेवितन (१८६१–१९०० ई०) हुये। संगीतके अद्भुत कलाकार प्योत्र इलिया-पुत्र चेकोव्स्की (१८४०-९३ ई०) का समय भी यही है।

२० वीं सदीके आरम्भ होते-होते सामन्तवादी जमींदारों और उनके स्वार्थोंकी रक्षाकी कोशिश करते हुये भी रूस पूंजीवादी युगमें पूरी तौरसे प्रविष्ट हो गया। लेकिन उद्योगीकरणमें पश्चिमी युरोपके पूंजीपतियोंका सबसे बड़ा हाथ था, फ्रांसीसी और जर्मन बैंक इसमें खास तौरसे भाग ले रहे थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें पश्चिमी युरोपीय पूंजीपतियोंका एक अरब सुवर्ण रूबल रूसके उद्योग-धंधोंमें लगा हुआ था। यह सब किसी पुण्यके लिये नहीं किया जा रहा था, इसे कहनेकी जरूरत नहीं। १८९५ ई०से १९०४ ई० तक अपने इस व्यवसायसे विदेशी पूंजीपतियोंने तिरासी करोड़ सुवर्ण

रूबल नफा कमाया, जो कि उतने समयमे लगाई गई पूजीसे कही अधिक था। जारकी सरकारपर १९०३ ई०में तीन अरब सुवर्ण रूबलका विदेशी कर्ज था, जिसपर तेरह करोड रूबल प्रतिवर्ष सूद देना पडता था। रूसी सामन्त और जमीदार अपने पुराने स्वत्वोंको अक्षुण्ण रखनेमें इतने मस्त थे कि उन्हें अपनी पूजीको इकट्ठा करके उद्योग-धधोमे लगानेकी उतनी फिक्र नही थी, जितनी कि पेरिस और दूसरी युरोपकी विलासपुरियोमे गरीबके गाढकी कमाईको उडानेमे।

लेकिन अब इस पुराने रूसको बदलनेके लिये एक ठोस क्रातिकारी शक्ति पैदा हो गई थी। १९०० ई०के दिसम्बरमे "इस्क्रा" (चिनगारी) के नामसे लेनिनने अपना पत्र निकाला, जिसके सम्पादनमे प्लेखानोफ और दूसरे समाजवादी जनतान्त्रिक भी सहायता करते थे। बाहर छपकर वह रूसमे गुप्त रीतिसे भेजा जाता था। अपने मुखपृष्ठपर छपे सूत्र "चिनगारी ज्वाला जलायेगी" के अनुसार सचमुच ही रूसमे ज्वाला जलानेमें उसने बहुत काम किया। पीतरबुर्गके एक जुलाहे पाठक ने इसके बारेमे लिखा था—"जब तुम इस पत्रको पढते हो, तो तुम्हे मालूम होता है कि जारशाही सेना और पुलिस हम कमकरों और हमारे बुद्धिजीवी नेताओसे क्यो इतना डरते है? पुराने समयमे प्रत्येक हडताल एक बडी घटना थी, किन्तु अब हरएक आदमी जानता है कि केवल हडताले कुछ नही है, हमे इनके लिये लडते हुये मुक्ति भी प्राप्त करनी है।" १९०० ई० और १९०१ ई०मे भी प्रथम राजनीतिक प्रदर्शन होने लगे, जिनके द्वारा समाजवादी क्रातिकारियोके बढते हुए प्रभावका पता लगने लगा। १९०० ई०के मई-दिवसमे खरकोफके मजदूरो और विद्यार्थियोने लाल झडेके साथ सडकोपर जलूस निकाला था, जिसमे वह नारा लगा रहे थे—"स्वेच्छाचारकी क्षय"। १९०१ ई० का मई-दिवस सारे देशमें हडतालो और प्रदर्शनोके साथ मनाया गया। १९०२ और १९०३ ई०मे और भी राजनीतिक हडताले और प्रदर्शन हुये। १९०२ ई०मे किसानोके भी कई आन्दोलन हुये और उनके पथप्रदर्शनके लिये लेनिनने "गावके गरीबोसे" नामकी एक छोटी किन्तु बहुत ही प्रभावशाली पुस्तक लिखी। इस तरह क्रातिकी शक्तिया बढ रही थी, लेकिन दूसरी तरफ इन शक्तियोमें कमजोरी पैदा करने के लिये नरमदली क्रातिकारी फूट भी पैदा करने लगे थे। गरमदल के क्रातिकारी प्रोग्रामको लेनिन और उनके समर्थक मानते थे, जिनका समाजवादी जनतान्त्रिक पार्टीमे बहुमत था। इसीलिये लेनिन और उसके अनुयायी बोल्शेविक (बहुमतीय) कहे जाने लगे। नरमदली अल्पमतमे होनेके कारण मेन्शेविक (अल्पमतीय) कहे जाने लगे। १९०३ ई०की जुलाई और अगस्तमें ब्रुसेल्स और पीछे लन्दनमे पार्टीकी जो द्वितीय काग्रेस हुई थी, उसी समय उसके यह दो टुकडे हो गये। अपनी सूझ, तत्परता और त्यागसे बोल्शेविक मजदूरो और दूसरी शोषित जनतामें अपने प्रभावको बढाते गये, जब कि मेन्शेविक बुद्धिजीवियोमें अपनी कलाबाजी दिखानेतक ही अपने कामकी इतिश्री समझते थे।

रूस-जापान-युद्ध (१९०४ ई०)—रूसका प्रसार जिस तरह प्रशान्त महासागर तक हुआ, इसे हम बतला आये है। अभी तक उसका प्रतिद्वद्वी चीन था, जिसकी निर्बल और भ्रष्टाचारपूर्ण सरकार रूसके सामने बराबर दबती रही, अब पूर्वी एसियामें जापान-जैसी एक बडी शक्ति पैदा हो गई थी। १८९४-९५ ई० में जापानने चीनको हराकर अपनी शक्तिका परिचय दिया था, और क्षतिपूर्तिकी बहुत भारी रकम तथा कोरिया, पोर्ट आर्थर, ल्याउतुङ-प्रायद्वीपके साथ मचूरियाके सारे दक्षिणी समुद्रतटपर अपने अधिकारको चीनसे मनवाया था। "कटकेनैव कटकम्" की नीतिको अपनाते हुये चीन चाहता था, कि जापानको रूससे भिडा दिया जाय। १८९६ ई०मे जारके वित्तमत्रीने चीनी पूर्वी रेल बनवानेके लिये चीनके साथ एक सधि की। इससे पहले साइबेरियाकी रेलवे बन चुकी थी। इस रेलको बनाकर जारशाही रूस मचूरिया और कोरियापर हाथ साफ करना चाहता था। १८९८ ई० मे ल्याउतुङ प्रायद्वीप और उसके पार्ट आर्थर बन्दरगाहको भी रूसने ठीकेपर ले लिया, और उसने जल्दी-जल्दी हर्बिनसे पोर्टआर्थर तक रेल बनानेका काम शुरू कर दिया। इस समय गिद्धकी तरह पश्चिमी युरोपकी शक्तिया चीनमे बन्दरबांट कर रही थी। जर्मन कैसरने क्याउ चाउके बन्दगाहको दखल कर लिया। इगलैडने हागकागको तो आधी शताब्दी पहले ही ले लिया था, अब उसने वेई-हाइ वेइ बन्दर-गाहपर भी अधिकार कर लिया। फ्रास क्यो पीछे रहने लगा? उसने भी अपने हिन्दचीन अधिकृत प्रदेशकी सीमाको चीनके भीतर बढाया। सयुक्त राष्ट्र अमरीकाने सबके लिये "खुला दरवाजा"

माग करके पूजीपति घडियालोको चीनमे खुल खेलनेकी माग रक्खी। पश्चिमी शक्तियोकी इस लूटके कारण चीनी जनतामे बहुत असतोष हुआ, और १९०० ई० में बक्सरका भयकर विद्रोह हो गया, जिसके दबानेमें पश्चिमी शक्तिय.के साथ रूसने भी भाग लिया। निकोलाइ II की सरकारने कोरियाकी सीमात नदी यालू-उपत्यकाके जगलोकी लकडीका ठेका एक रूसी कम्पनीको दिलवाया, जिसक. अर्थ केवल यही था, कि उसके द्वारा रूसी सेनाको आसानीसे कोरियामें पहुचाया जा सके। पोर्टआर्थरको भी रूसी नौसैनिक अड्डेके रूपमे परिणत कर दिया गया। जापान यह सब देखते हुये चुप नही रह सकता था और न रूसके प्रतिद्वद्वी अग्रेज ही मौकेसे चूकनेवाले थे। दूसरोंको लडाकर अपना उल्लू सीधा करना अग्रेजोकी पुरानी नीति थी। उन्होने १९०२ ई० में रूसके विरुद्ध जापानसे सैनिक-सधि की, जिससे जापानको बहुत बल मिला।

रूसमें अब भी सामन्ती मनोवृत्ति काम कर रही थी, उद्योग-धन्धोको पश्चिमके पूजीपतियोंके सहारे खडा किया गया था, जो इस बातका पूरा ध्यान रखते थे, कि औद्योगिक वस्तुओके लिये रूस हमसे स्वतत्र न होने पाये। और तो और, सैनिक हथियारोंमें भी रूस परमुखापेक्षी था। शासक वर्गकी अदूरदर्शिता और अयोग्यताके कारण किसी क्षेत्रमें भी प्रतिभाये आगे नही बढने पाती थी। रूसी सेनापतियो और युद्ध-सचालकोको चुस्ती किसे कहते है, यह मालूम ही नही था। सुवारोफ, कतुजोफके समयसे सैनिक प्रतिभाओकी उपेक्षा करके खुशामदी ऐरे-गैरे नत्थूखैरे सामन्त-पुत्रो और जारके कृपापात्रोको आगे बढाया जाता था। रूस अभी युद्धके लिये तैयार नही है, यह जापानियोको पता था। सारे मचूरियामें उसके गुप्तचर फैले हुये थे, जिनसे जापानियोको सारे भेद मालूम थे। इसी समय २६ जनवरी १९०४ ई०की रातको बिना युद्ध घोषित किये जापानी ध्वसक पोतोने अधेरेमें छिपकर पोर्टआर्थरपर आक्रमण कर दिया। इस समय मुख्य सेनापति अद्मिरल स्तार्ककी जयन्ती मनाते हुये रूसी नौसैनिक अफसर नाचमे मस्त थे। जापानियोने रूसके सर्वश्रेष्ठ तीन युद्धपोतोको डुबा दिया, और २७ के सवेरे बम-वर्षा करके उन्होने चार और युद्धपोतोको नुकसान पहुचाया। आरम्भ रूसियोके लिये बहुत बुरी तरह हुआ, और उसके बाद जारशाही सेना हारपर हार खाती गई। अपने हथियारो और वीरताकी अपेक्षा ईसाकी मूर्तियोपर मुख्य सेनापति जेनरल कुरोपात्किनका अधिक विश्वास था। उसने गाडियोमें भर-भरकर युद्ध-क्षेत्रमें ले जा इन मूर्तियोको बटवाया। रूसी नौसैनिको और सैनिकोंने लडनेमें अपनी आनुवशिक बहादुरीको दिखलाया, लेकिन हथियारोके अभाव और सेनापतियोंकी अयोग्यताके कारण वह जापानियोके खिलाफ पासा नही पलट सकें। फर्वरी १९०४ ई० में रूसी ध्वसक "स्तेरेगुश्चीने" चार जापानी ध्वसको और क्रूजरोका मुकाबिला किया, जिसमेंसे एकको उसने डुबा दिया। आत्मसमर्पण करनेके लिये कहनेपर रूसी नौसैनिकोने साफ इन्कार कर दिया। और जब उन्होंने देखा, कि हमारा जहाज जापानियोके हाथमें जाना चाहता है, तो गोलेकी वर्षाके भीतर दो अज्ञात नौसैनिकोने नीचे जाकर पानी आनेके रास्तेको खोल दिया, और इस प्रकार अपने जहाजके साथ समुद्रतलमे बैठकर उन्होने अपनी वीरताका परिचय दिया। पोर्टआर्थरने कुछ समय तक जापानी घिरावेमे रहते हुये प्रतिरोध किया, लेकिन उसे अन्तमें आत्मसमर्पण करना पडा।

१९०५ ई०में जारशाही रूसने जापानके हाथो बुरी तौरसे हार खाई, लेकिन रूसकी सैनिक पराजयने क्रातिके आरम्भ करानेका काम दिया।

१९०५ ई० की क्राति---रूस जापान युद्धके कारण रूसकी आर्थिक अवस्था बहुत ही बिगड गई। खर्चकी सीमा नही थी। बडे-बडे सूदपर विदेशसे कर्ज लेना पडा, जिसके लिये कर बढाना जरूरी था, इस प्रकार जीवनोपयोगी सभी चीजोका दाम बढ गया। उधर भारी सख्यामे किसानोकी सेनामें भरती करनेके कारण खेतीको भी बहुत नुकसान पहुचा। कारखानोमें पूजीपतियोने मजूरी कम करनी चाही, जिसका परिणाम हुआ हडतालें। नवम्बर और दिसम्बर १९०४ ई०में ही पीतरबुर्ग, मास्को और दूसरे नगरोंमें बोल्शेविकोने सडकोमे जलूस सगठित किये, जिनका नारा था "स्वेच्छाचारिताका क्षय, युद्ध बद करो।" लोगोंके असतोषको शात करनेके लिये १२ दिसम्बर १९०४ ई०को घोषणा निकालकर जारने कुछ हलके-से अधिकारोको देनेका वचन दिया।

३ जनवरी १९०५ ई० को पुतिलोफ (आधुनिक किरोफ) कारखानेमें चार मजदूरोको निकाल दिया गया, जिसका परिणाम हुआ अगले ही दिन बारह हजार मजदूरोकी हडताल। पीतरबुर्गके दूसरे कारखानोंके मजदूरोने भी उनकी सहानुभूतिमे हडताल की और ८ जनवरीको डेढ लाख मजदूरोने काम छोडकर उसे सार्वजनिक हडतालका रूप दे दिया। इतनी बडी सख्यामें उत्तेजित और बेकार मजदूर कोई और बडा कदम न उठा लें, इसके लिये ईसाई पादरी गपोनने सलाह दी, कि मजदूरोकी ओरसे जारके पास आवेदन-पत्र भेजा जाय। अभी भी जारके प्रति लोगोकी सद्भावना बनी हुई थी, और वह इसके लिये तैयार हो गये। उधर गपोनने इसकी सूचना खुफिया पुलिसको दे दी थी, और जारशाहीने खुलकर गोली चलानेकी तैयारी कर रक्खी थी। आवेदन-पत्रके कुछ वाक्य थे—"हम पीतरबुर्गके मजदूर, हमारी बीबिया, हमारे बच्चे और हमारे असहाय बूढे मा-बाप, हे प्रभु, तेरे पास सहायता और रक्षा पानेके लिये आये हैं। हम गरीबीसे पीडित, अत्याचारके मारे असह्य मेहनत के बोझसे दबे जा रहे हैं। हमें अपमान सहना पडता है। हमारे साथ मानवोचित वर्ताव नही होता। हमारा धैर्य टूट रहा है, हम गरीबीके दलदलमें और नीचे डूबते जा रहे हैं। हम अधिकार और ज्ञानसे वचित हैं। स्वेच्छाचारिता और क्रूरताने हमारा गला घोट रक्खा है। हमारा धैर्य खतम हो रहा है। वह भयकर घडी आ गई है, जब कि इस असह्य पीडाको और अधिक सहनेकी जगह मरना हमारे लिये अच्छा है।" इसमें कुछ आर्थिक और राजनीतिक मागोके साथ सविधान सभाके बुलानेके लिये माग की गई थी। बोल्शेविकोने बहुत समझाया, कि जारके पास प्रार्थनापत्र देनेसे स्वतत्रता नही मिल सकती, लेकिन अब भी बहुत-से मजदूर कह रहे थे—"हम तजर्बा करके देखेगे। जार हमारी उचित मागोको अस्वीकार नही करेगा।"

२२ (९) जनवरी १९०५ ई० रविवारका दिन था, जब कि एक लाख चालीस हजार मजदूर जारके चित्र, झडे और ईसाई मूर्तिया लिये प्रार्थनाके गीत गाते हेमन्त प्रासादकी ओर चले। जारकी सरकारको मजदूरोका स्वागत गोलियो और सगीनोसे करना था। हेमन्त प्रासादकी सडकोपर जगह-जगह पलटन तैनात थी, लेकिन तो भी बहुत-से मजदूर प्रासादके मैदानमें पहुचनेमे सफल हुये। निहत्थी जनता पर गोलियोकी वर्षा होने लगी, एक हजार मजदूर मारे गये, दो हजार से अधिक घायल हुये। बोल्शेविकोने यद्यपि पहले मना करनेकी कोशिश की, लेकिन न माननेपर उन्होने मजदूरोका साथ नही छोडा, और वह भी साथमें जाकर गोलीके शिकार हुये। मजदूरोने ९ जनवरीके दिनको "खूनी-रविवार" का नाम दिया, उनके हृदयसे आवाज निकलने लगी—"हमारा कोई जार नही है।" उन्होने अपने घरोमें टागे हुये जारके चित्रोको फाडकर फेंक दिया, और उसके बाद जबतक बोल्शेविक क्राति नही हुई, "खूनी रविवार" मजदूरोके लिये शहीदोका स्मारक पर्व-दिन बन गया। बोल्शेविकोने पुस्तिकायें निकालकर कहा—"हथियार, साथियो।" इसपर मजदूर बन्दूककी दूकानो और मिस्त्री-खानोपर टूट पडे, वहासे उन्होने हथियार लेकर अपनेको हथियारबद किया। उसी ९ जनवरीके अपराह्न में पीतरबुर्गके एक मुहल्ले वासिलियेव्स्की द्वीपमे लोगोने लडनेके लिये सडकपर बाडे खडी की। चारो ओर "स्वेच्छाचारिताकी क्षय" की आवाज गूजने लगी। सडकोपर कई जगह पुलिसके साथ जनताकी मुठभेड हुई। इस दिन जो पाठ रूसके मजदूरवर्गको पढाया गया, उसके बारेमे लेनिनने लिखा था—"अपने महीनो और वर्षोंके दरिद्र, दुखी और उदास जीवनमे जिसे नही सीख सकते थे, वैसी क्रातिकी शिक्षा सर्वहाराोने एक दिनमें पाई।" "खूनी रविवार" जारशाहीके लिये जलियानवाला बाग सिद्ध हुआ। हडतालका जोर और बढा। जनवरी ११ (२४) १९०५ ई०को मास्कोमें भी हडताल हुई, और इसके बाद पोलन्द, फिनलन्द, उक्रइन, काकेशस और साइबेरिया सभी जगह हडतालोका तूफान आ गया।

१९०५ ई०के ग्रीष्ममें सर्वहाराोका क्रातिकारी सघर्ष चारो ओर फैल गया। प्रथम मईके महोत्सव में दो लाख बीस हजार मजदूरोने पीतरबुर्गमे काम छोड दिया। मजदूरोंके सघर्षने किसानोपर भी प्रभाव डाला और गावोमे आन्दोलन बढ चला। रूसके केन्द्रीय इलाको, गुर्जी और बाल्तिक प्रदेशोमे एक ही साथ किसानोने जबर्दस्त आन्दोलन शुरू किया। फर्वरी १९०५ ई०मे कितनी ही जगहोपर किसानोने जमीदारोके खुदकाश्त खेतोको छीनना शुरू किया, और उस सालके वसततक रूसको

देहातमें सर्वत्र किसान-संघर्ष शुरू हो गया। किसानोंने जमीदारोंके महलों और मकानोंको नष्ट कर दिया, उनके खेतों और चरागाहोंपर अधिकार करके मनमाना जोतना शुरू किया। इतने व्यापक पैमानेपर हो रहे विद्रोहको दबाना जारशाहीके लिये आसान काम नहीं था, पर अभी सेनामें उतना असंतोष नहीं था।

अब उसमें भी लक्षण दिखलाई देने लगे। १९०५ ई०में ही, जब कि अभी जापानसे लड़ाई चल रही थी, कालासागरके नौसैनिक बेड़ेमें असंतोष फैल गया, और १४ (२७) जून १९०५ ई०को युद्धपोत "पोतेम्किन" के नौसैनिकोंने विद्रोह कर दिया, जिसका तुरन्तका कारण था, सड़े-गले कीड़े पड़े हुये अवपके मांसको सिपाहियोंमें परोसना। नौसैनिकोंने उसे खानेसे इन्कार कर दिया। कमांडरने मुखियोंको गोली मारनेका हुक्म दिया, जिसके विरोधमें सारे जहाजके सिपाहियोंने विद्रोह कर दिया। यद्यपि बड़े नौसैनिक अफसरोंने विद्रोही नेता वकुलिन्चुकको मार दिया, लेकिन तुरन्त मत्युशेंको नामक दूसरे नाविकने नेतृत्वको संभाला। नाविकोंने बहुतसे अफसरोंको मारकर युद्ध-पोतको अपने हाथमें कर लिया। लाल झंडा उड़ाते हुये जब वह अदेस्स। शहरके सामने पहुंचे, तो वहांके मजदूरोंमें बिजली दौड़ गई, लेकिन नरमदली समाजवादी मेन्शेविकोंने उलटा समझा-बुझाकर लोगोंको रोका। "पोतम्किन" कितने ही दिनोंतक लाल झंडा उड़ाते हुये कालासागरमें इधरसे उधर घूमता रहा, लेकिन जब तटके किसी नगरसे सहायता नहीं मिली, और उधर गोला-बारूद भी कम होने लगा, तो रूमानियाके तटपर जाकर नाविकोंने आत्मसमर्पण कर दिया। रूमानियन सरकारने पीछे १९०६ ई० में क्रांतिकारियोंको जारकी सरकारके हाथमें दे दिया, जिसने उनमेंसे बहुतोंको फांसीपर चढ़ाया और बहुतोंको कालापानीकी सजा दी। यह पहली बार था, जब कि एक विशाल युद्धपोतके सारे सैनिकोंने जारके खिलाफ खुल्लमखुल्ला विद्रोह किया। इतिहासमें हम दूसरे तरहके विद्रोह देख चुके हैं। प्रभुवर्गमें ही किसी एक व्यक्ति या दलके विरुद्धने दूसरे दलका हथियार उठाना पहले भी देखा गया था, लेकिन यह विद्रोह बिल्कुल नये तरहका था, जिसमें दरिद्र और निरीह वर्ग सहस्राब्दियोंसे शासक दलके खिलाफ खुल्लमखुल्ला उठ खड़ा हुआ, मानो जिन ईंटोंसे प्रासाद बना था, वही अब प्रासाद को ढानेके लिये हिलने-डुलने लगीं।

जापानसे संधि—जारशाही सेनापतियोंकी अयोग्यता और रूसके पिछड़ेपनके कारण जापान हारपर हार दे रहा था। इसी बीच "खूनी रविवार" और मजदूरों, किसानों तथा नौसैनिकोंके विद्रोहों ने ऐसी हालत पैदा कर दी, कि जारशाहीके लिये और अधिक दिनतक जापानके साथ लड़नेका मतलब था घरमें ही तख्ता उलट जाना। चूशिमाकी खाड़ीमें रूसी जंगी बेड़ेका जब जापानियोंने संहार कर दिया, तो विदेशी पूंजीवादियोंको भी भय लगने लगा, कि कहीं पेरिसकी आवृत्ति बड़े पैमानेपर रूसमें न होने लगे, इसीलिये उन्होंने जारकी सरकारपर युद्ध बंद करके जापानके साथ सुलह कर लेनेके लिये जोर देना शुरू किया, और यह भी कि जारको भीतरी शांति बनानेके लिये कुछ वैधानिक सुधार देकर लोगोंको अपनी तरफ खींचना चाहिये। उधर जापानकी भी भीतरी हालत अच्छी नहीं थी, क्योंकि युद्धमें अपार धन और जनका संहार हो रहा था, जिससे वहांके लोगोंमें भी असंतोष फैलनेका डर था। जापानके कहनेपर संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके राष्ट्रपति थ्योडोर रूजवेल्टने बीचमें पड़ना स्वीकार किया। जारशाही युद्धपरिषद्ने ६ जून (२४ मई) १९०५ ई०को जारकी अध्यक्षतामें बहुमतसे शांतिके पक्षमें फैसला किया, क्योंकि "हमारे लिये विजयसे भी अधिक महत्त्वकी चीज है घरेलू शांति हम असाधारण स्थितिमें आज पड़े हुये हैं। हमें रूसके भीतर शांतिको पुनः स्थापित करना है।" जारशाही ने सुलह करना स्वीकार किया। जापानकी शर्तें बहुत कड़ी थीं, लेकिन रूजवेल्टने भी दबाव डाला, और अन्तमें ५ सितम्बर (२३ अगस्त) १९०५ ई०को पोर्टस्मिथकी संधिपर हस्ताक्षर हुये। रूसने कोरियामें जापानके सैनिक, राजनीतिक तथा आर्थिक हितों और अधिकारोंको स्वीकार किया। पोर्ट-आर्थर और दलनीके अपने ठेकेवाले प्रदेशको उसने जापानके हाथमें सौंप दिया, सखालिन द्वीपका दक्षिणार्ध और पासके द्वीपोंको भी जापानके हाथमें दे दिया, एवं पूर्वी चीनी रेलको केवल व्यापारिक दृष्टिसे चलाना स्वीकार किया।

जापानने जारशाही गर्वको चूर-चूर कर दिया। इस युद्धमें रूसके चार लाख आदमी हत, आहत

या बदी हुये और तीन अरब रूबल धनका नाश हुआ। रूसी जनतापर इसका बुरा प्रभाव पडना ही चाहिये था, लेकिन जारशाही अब पूरबके झगडेसे छुट्टी पाकर क्रांतिको कुचलनेमें समर्थ थी, तो भी संधिपर हस्ताक्षर होनेके सत्ताईस दिन बाद २ अक्तूबर (१९ सितम्बर) १९०५ ई०में मास्कोके प्रेसकर्मियोने आम हडताल कर दी, जिनका साथ वहांके रोटी बनानेवालो, तम्बाकू-मजदूरो तथा दूसरे कमकरोने दिया। पुलिस और कसाक सैनिकोने उनके प्रदर्शनोको बलपूर्वक छिन्न-भिन्न करना चाहा, इसपर मजदूरोने भी पुलिसके ऊपर तमंचे चलाये। छ दिन बाद २५ सितम्बर (पुराना पचांग) को मास्को की एक सडकपर मजदूरो और जारके कसाकोमे बाकायदा लडाई हुई। दो मजदूर मारे गये, आठ घायल हुये और १९२ गिरफ्तार हुये। ७ अक्तूबरको मास्को-कजान्स्कया रेलवेके मजदूरोने हडताल कर दी, जिनका साथ ८ अक्तूबरको दूसरी रेलोके मजदूरोने भी दिया। ११ अक्तूबरको रेलवे हडतालने सारे राष्ट्रमे आम हडतालका रूप लिया, जिसमे स्कूलके अध्यापक, आफिसोके कर्मचारी, कानूनपेशा लोग, इंजीनियर और विद्यार्थी भी सम्मिलित हुये। उन्होने संविधान-सभाके बुलानेकी मांग की। जारने बहुत चाहा, कि गोलियोकी वर्षासे विद्रोहको दबा दिया जाय, लेकिन वह उसमें आसानीसे सफल कैसे हो सकता था? अक्तूबर महीनेकी इन हडतालोने सरकारी शासन-यंत्रको अकर्मण्य बना दिया था।

इसी समय विद्रोहियोने अपने संगठन, संघर्ष और शासनको चलानेके लिये एक नये यंत्रका आविष्कार किया, जिसने १९०५-६ ई०की क्रांतिमें ही बहुत काम नही किया, बल्कि १९१७ ई०की बोल्शेविक-क्रांतिकी सफलतामें भी उसका बहुत बडा हाथ था। यह संगठन था मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियत। सोवियत शब्दका वही अर्थ है, जो हमारे यहां पंचायतका, लेकिन शासन और सैनिक अधिकारोके भी हाथमें लेनेसे सोवियतको मामूली पंचायत नही कहा जा सकता। १३ (२६) अक्तूबरको, जब कि हडताल चल रही थी, पीतर्बुर्गके कमकरोने अपने कारखानोमे सभायें की, और हडतालका नेतृत्व करनेके लिये मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियतके लिये अपने आदमी चुने। यद्यपि इसका आरम्भ हडतालकी संयुक्त समितिके रूपमें हुआ था, लेकिन क्रांतिने जल्दी ही उसे शक्तिको संभालनेके लिये मजबूर किया। पीतरबुर्गके मजदूरोकी देखादेखी रूसके सभी बडे-बडे नगरोमे मजदूर प्रतिनिधि सोवियतें १९०५ ई० के अक्तूबरसे दिसम्बर तक कायम होती रही। मास्को सोवियत बोल्शेविको के प्रभावमें थी, इसलिये वह हथियारबंद विद्रोहकी तैयारीका संगठन बन गई। काकेशस, लतविया और त्वेर एवं मास्को गुबर्निया जैसे कितने ही केंद्रीय रूसके इलाकोमें सैनिक प्रतिनिधि भी सोवियतके सदस्य बने।

रूसके भिन्न-भिन्न जगहोमें क्रांति और विद्रोहकी जो लहर फैली हुई थी, उसका प्रभाव वोल्गा-प्रदेश तथा दूसरे इलाकोकी एसियाई जातियोंपर भी पडे बिना नही रहा। वोल्गासे अल्ताइ और अफगानिस्तानतक जारकी हुकूमत मुसलमानोके ऊपर थी। वहां अभी राजनीतिक जागृति इतनी नही हुई थी, कि वहांके लोग धर्म और साम्प्रदायिकतासे ऊपर उठते। वोल्गा-प्रदेश और बाशकिरियामे राष्ट्रीयतावादी मध्यमवर्गने मुस्लिम लीग कायम की। लीगने धीरे-धीरे मध्य-एसिया और काकेशस के मुसलमानोको भी प्रभावित करना शुरू किया। साम्प्रदायिकतापर निर्भर आन्दोलन और संगठनका नेतृत्व मुल्लोके हाथमे जाना जरूरी था, और मुल्ला रूसियोके खिलाफ जहाद करनेका ही तरीका पसंद कर सकते थे, लेकिन बहुतसे एसियाई इलाकोमे रूसी उनके पडोसी किसान और मजदूर बनकर बस गये थे, जो विशाल दृष्टिपूर्वक संचलित राष्ट्रीय आन्दोलनमे एसियाई जातियोके स्वतंत्रताके युद्धमे सहायक बन सकते थे। लेकिन अभी यह काम बारह साल बाद होनेवाला था। १९०५ ई०के अन्तमें तातार मध्यमवर्गीय राजनीतिक नेताओने कजानमे प्रथम मुस्लिम कांग्रेस बुलाई, जिसने हमारे यहां के पुराने कांग्रेसियो की तरह जारसे भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, कि मुसलमानोको भी वही अधिकार मिलने चाहिये, जो कि बादशाहकी रूसी प्रजाको प्राप्य है। १९०५ ई०में चुवाशोमे भी राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू हुआ, लेकिन वह शुद्ध किसान आन्दोलन था, जो चाहता था, कि किसानोको धरती और मुक्ति मिले। चुवाश और मारी लोगोके भीतर हो रहे किसान आन्दोलनको अखिल रूसी किसान संघके सदस्योने संचालित किया था। किसानोने जमीदारोसे जमीन छीनने और अपनी भाषामे स्कूलोके खोलनेकी मांग की। साइबेरियाके बुरियत मंगोल भी जारशाही अफसरोके अत्याचारसे तंग आ गये थे, उन्होने

साइबेरीय जातियोंकी लीग स्थापित की। १९०५ ई० ही में याकूतोंमें भी जागृति हुई, और उन्होंने याकूत लीग कायम की, जिसे जारशाहीने जल्दी ही दबा दिया।

दिसम्बरका विद्रोह—रूसी कमकर समझने लगे थे, कि केवल राजनीतिक हड़तालोंसे काम नहीं चल सकता। अक्तूबरकी हड़तालोंके बाद सबसे पहले हथियारबंद विद्रोह करनेवाले थे क्रोन्स्तात् नौसैनिक अड्डेके नाविक और तोपची। २६ और २७ अक्तूबर (पुराना पचांग) के दो दिन और दो रातोंतक रूसका यह मशहूर नौसैनिक अड्डा विद्रोहियोंके हाथोंमें रहा, लेकिन अभी उनका भीतर-बाहरका संगठन इतना मजबूत नहीं था, इसलिये २८ अक्तूबरको जारशाही सेनाने उसे दबा दिया। दो सौ विद्रोहियों तथा उनके नेताओंको फौजी अदालतद्वारा कड़े दंड दिये गये।

इस समय रूस-अधिकृत पोलन्दमें फौजी कानून घोषित किया गया था। उसके उठा लेने तथा क्रोन्स्तातके नाविकोंको मुक्त करानेके लिये १४(१) नवम्बर १९०५ ई०को पीतरबुर्गकी मजदूर-प्रतिनिधि—सोवियतने एक आम हड़ताल घोषित की। जारकी सरकारको मजबूर होकर उनकी मांगोंको स्वीकार करना पड़ा, पोलन्दसे मार्शल-ला (फौजी कानून) उठा दिया गया, और क्रोन्स्तातके नाविकों पर फौजी अदालतमें कोर्ट मार्शल द्वारा फांसीका दंड दिलानेकी जगह साधारण सैनिक अदालतमें मुकदमा चलाया गया, जिसने ८३ विद्रोहियोंको छोड़ दिया, १२३ को जेलकी और केवल नौ को कालापानीकी सजा दी। इसमें शक नहीं, पीतरबुर्गके कमकरोंकी हड़तालने क्रोन्स्तातके बहुतसे विद्रोहियोंके प्राणोंकी रक्षा की। क्रांतिकी इस दूसरी लहरने कालासागरके नौसैनिकोंको प्रभावित किया। २७ (१४) नवम्बरको क्रूजर "ओचाकोफ" के नाविकोंने विद्रोह किया। "पोतेम्किन" के नाविकोंकी जो गति हुई थी, उससे ये नाविक हताश नहीं हुये थे। २८ (१५) नवम्बरको दूसरे सैनिक पोतों और सेवस्तापोलके दुर्गमें काम करनेवाले सैनिकों और कमकरोंने ओचाकोफके विद्रोहियोंका साथ दिया। "पोतेम्किन" का नाम "पतेल्डेमोन" रखकर जारशाहीने उसे सुरक्षित समझा था, लेकिन पोतेम्किनके ऊपर फिर लाल झंडा फहराने लगा। अभी भी दूसरे युद्धपोत और सैनिक जारशाहीके भक्त थे। २८(१५) नवम्बरको ही तट और जहाजकी तोपोंने "ओचाकोफ" पर गोलाबारी शुरू की, जिससे उसमें आग लग गई। नाविकोंने समुद्रमें कूदकर बचनेकी कोशिश की, लेकिन उन्हें मशीनगनोंकी गोलियोंसे भून दिया गया। विद्रोहियोंका नेता लफटेनेंट स्मिथ और दूसरे नेताओंको कोर्टमार्शल करके गोलीसे उड़ा दिया गया। इस प्रकार कालासागरका विद्रोह दबा दिया गया।

नवम्बर और दिसम्बरके महीनोंमें अबकी किसानोंके विद्रोहने और भी जोर पकड़ा। युरोपीय रूसके एक तिहाईसे अधिक इलाकोंमें किसान जमींदारोंको भगाकर उनसे खेतोंको छीन रहे थे, उनके मकानों और महलोंको लूटते बरबाद कर रहे थे।

क्रांतिकी प्रगतिको लेनिन अपने निर्वासित स्थान (जेनेवा)से गम्भीरतापूर्वक बराबर देख रहे थे। नवम्बर (१९०५ ई०)में क्रांतिकारी संघर्षका नेतृत्व करनेके लिये उन्होंने रूसमें आना जरूरी समझा। दिसम्बर १९०५ ई०में फिनलैंडमें तम्मेरफोर्स नगरमें बोल्शेविकोंका एक सम्मेलन हुआ। यहींपर स्तालिनको लेनिनको देखनेका सर्वप्रथम सौभाग्य प्राप्त हुआ। लेनिनके सुझावपर सम्मेलनने सदस्योंको अपने-अपने इलाकेमें विद्रोह-संचालन करनेका आदेश दिया। लेकिन दिसम्बरके आरम्भ तक जारशाहीने अपनी शक्तिको पहलेसे अधिक दृढ़ कर लिया था। मंचूरियाके युद्धक्षेत्रसे कितनी ही सेनायें लौटकर युरोपीय रूसमें पहुंच गई थीं। अबकी मास्कोका नम्बर पहला था। वहांकी सोवियतके नेता बोल्शेविक थे। उन्होंने हथियारबंद विद्रोहकी तैयारी बड़े जोर-शोरसे शुरू की। उनके प्रयत्नसे मास्कोकी छावनीमें भी विद्रोहकी लहर फैल गई, जिसमें रस्तोफ रेजिमेंट पहिले रही। १५ (२) दिसम्बरको सिपाहियोंने अपने अफसरोंको गिरफ्तार कर लिया, और रेजिमेंटके कामके संचालनके लिये सिपाहियोंकी एक समिति निर्वाचित की। लेकिन मास्कोकी दूसरी रेजिमेंटोंने उनका अनुसरण नहीं किया, इसलिये १७ (४) दिसम्बरको इन सैनिकोंको दबा दिया गया। अगले दिन मास्कोके बोल्शेविकोंने एक सम्मेलनमें मास्को सोवियतपर जोर दिया, कि वह हथियारबंद विद्रोहको बढ़ानेके लिये आम हड़ताल घोषित करे। २० (७) दिसम्बरके सबेरे आम हड़ताल शुरू हुई। बन्दूकें-पिस्तौल पर्याप्त नहीं थे, इसलिए मजदूरोंने अपने मिस्त्रीखानोंमें कामचलाऊ हथियार बनाये। दो हजार मजदूर—जिनमें करीब आधे

बोल्शेविक थे——लडनेवाले दलमे शामिल हुये। सडकोमे प्रदर्शन हुये, और मजदूर मुहल्लोमे पुलिसके साथ मुठभेड हुई। सारी अस्त्राखानी रेजिमेट अपने पूरे सामानके साथ विद्रोहियोकी मददके लिये तैयार हो गई, लेकिन जारभक्त कसाकोने उन्हे घेरकर अपनी वारकोमे लौटनेके लिये मजवूर किया। दूसरी कितनी ही सदिग्ध रेजिमेटोको भी अपनी वारकोमें ही रखा गया। सचमुच मास्को-स्थित उस समयके पन्द्रह हजार सिपाहियोमे तेरह सौ नव्वे ही ऐसे थे, जिनपर जारशाही विश्वास कर सकती थी। मास्कोके महाराज्यपालने राजधानीमे सेना भेजनेके लिये सदेशपर सदेश भेजे थे। लेकिन क्रातिकारी इस स्थितिसे पूरा फायदा नही उठा सके । २२ (९) दिसम्बरको सरकारी सेनाका पल्ला भारी हो गया, और उन्होने जगह-जगह आक्रमण करके विद्रोहियोको दवाना शुरू किया। स्थितिको प्रतिकूल देखकर मास्कोकी पार्टी कमीटी और मजदूर-प्रतिनिधि सोवियतने ३१ (१८) दिसम्बरकी रातको विद्रोहको वद करनेका निश्चय किया। सब जगह विद्रोहियोने लडाई बद कर दी। क्रातिकारियोको मौतसे कैसे बचाया जाय, इसका भार उख्तोम्स्की नामक इजन-ड्राइवरने अपने ऊपर लिया, और ट्रेनमे क्रातिकारियोको बैठाकर वह मशीनगनो और राइफलोकी गोलियोकी वर्षाके बीचसे ट्रेनको वडे वेगसे भगा ले गया। इस प्रकार उसने कितने ही क्रातिकारियोको फासी पानेसे बचा लिया। जारकी सेनाने मजदूरो और उनके परिवारके ऊपर भयकर अत्याचार किये, सैकडोको विना मुकदमा चलाये ही गोलियोसे ठडा कर दिया ।

मास्कोके वाहर दूसरे कितने ही शहरोमे भी हथियारवद विद्रोह हुये। दक्षिणमे गोरलोवकामें विद्रोहियोने जारके राज्यको खतम करके मजदूर-प्रतिनिधियो का शासन आरम्भ कर दिया। मजदूरोके पास अपने हाथकी बनाई तलवारो, छुरो तथा थोडेसे तमचोके सिवा और हथियार नही थे, तो भी चार हजार क्रातिकारियोने जारके कसाकोके साथ पाच घटे तक वडी वहादुरीसे लडाई की, जिसमे उनके तीन सौ आदमी काम आये। दोनेत्स-उपत्यकामे सभी जगह पुलिस और सेनाके साथ विद्रोहियोकी लडाई हुई। लुगान्स्कमें सशस्त्र विद्रोह और हडतालका नेतृत्व क० ई० वोरोशिलोफने किया। १९०५ ई० के ग्रीष्ममे वोरोशिलोफको गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन दिसम्बरमे हजारो मजदूरोने जाकर "अपने लाल जेनरल" को जेलसे छुडा लिया। वोरोशिलोफकी सगठन शक्ति और सैनिक सूझ-बूझको देखकर एक सभामे एक मजदूरने कहा——"हम तुम्हें अपना लाल जेनरल नियुक्त करते है।" जिसका जवाव वोरोशिलोफने हसते हुये दिया——"तुम वहुत दूरकी वातकर रहे हो, मुझे सैनिक विद्याका कुछ भी पता नही है।" उस समय सचमुच ही किसको पता था, कि वोल्शेविक-क्रातिके समय वह अपनी सैनिक प्रतिभाका सुन्दर परिचय देगा, और अन्तमें रूस-जैसी दुनिया की एक शक्तिशाली सेनाका फील्ड-मार्शल और आज सोवियत सघ का राष्ट्रपति वनेगा ।"

इसी प्रकार नवोरोसिस्कमे भी मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियतने शासन अपने हाथमे सभाल लिया। कालासागर-तटवर्ती नगर सोचीमे भी यही वात हुई। साइवेरियाके क्रास्नोयार्स्क और चीता नगरोकी सेना विद्रोही मजदूरोसे मिल गई और यहा सिपाहियोके भी प्रतिनिधियोने मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियतोमें शामिल होकर विद्रोहका सचालन किया।

१९०५ ई०का विद्रोह खूनी हाथोसे दवा दिया गया। प्लेखानोफ अव नरमदली समाजवादी हो गया था। उसका कहना था—"उन्हे हथियार उठाना नही चाहिये था।" जिसका जवाव लेनिनने दिया—'इसके विरुद्ध हमें सारी शक्तिके साथ और दृढतापूर्वक आक्रमणात्मक रूपमें हथियार उठाना चाहिये था।" दिसम्वरकी क्रातिके असफल होनेके कारण थे—किसानोसे मदद नही मिलना, सेनाके भी अधिक भागका जारशाहीके साथ होना, विद्रोहियोका अच्छी तरह सगठित न होना और एक साथ उठनेकी जगह विद्रोह का भिन्न-भिन्न जगहोमे भिन्न-भिन्न समयोमे आरम्भ होना। विद्रोहियोके पास काफी हथियार नही थे, उन्होने आक्रमण करनेकी जगह प्रतिरोध करना पसद किया, तो भी इस क्रातिको असफल नहीं कहा जा सकता, क्योकि क्रातिकारियोने जो भूले इस समय की थी, अपनेमें जो कमिया पाई थी, उन्हे हटानेमे सफल होकर ही वह १९१७ ई०की क्रातिमे विजयी हुये। इसीलिये इस क्रातिको १९१७ ई० की क्रातिका रिहर्सल कहा जाना विलकुल ठीक है।

शासन-सुधार——जारशाहीने क्रातिको दवा दिया, लेकिन वह जानती थी, कि लोगोको सतुष्ट

करने या धोखेमें रखनेके लिये कुछ सुधार देना भी जरूरी है। ११ सितम्बर १९०५ ई०को इसीलिये राज्यदूमा (ससद)के चुनावकी घोषणा की गई। लेकिन यह पहिले ही निश्चय कर लिया गया, कि निर्वाचनमें राजभक्तोंका ही पलडा भारी रहे, इसीलिये जहा जमीदारोंको दो हजार मतदाताओं पर एक प्रतिनिधि और नगरोंके सम्पत्तिवालोंको सात हजार वोटरोंपर एक प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार दिया गया था, वहा तीस हजार किसान और नब्बे हजार मजदूर वोटरोंपर एक प्रतिनिधि भेजनेका नियम बनाया गया था। निर्वाचन भी सीधा नही था। प्रत्येक गावके वोटर वोलोस्त (जिले) के लिये निर्वाचक चुनते। ये निर्वाचक हरएक जिलेसे दो प्रतिनिधियोंको कमिश्नरीके लिये चुनते। कमिश्नरियोंके चुने हुये निर्वाचक गुवर्नियों (प्रदेशों)के लिये निर्वाचक चुनते, और गुवर्नियोंके यह निर्वाचक दूमा (ससद) के लिये प्रतिनिधि चुनते। वोट भी गुप्त नही देने थे। जारकी सरकारने इस प्रकार समझ लिया था, कि हम ऐसे आदमियोंको ही ससदमे आने देंगे, जो कि हमारी हामें हा मिलाये। मार्च और अप्रैल १९०६ ई०मे राज्यदूमाके लिये निर्वाचन हुये। उस समय पुलिसके अत्याचारोंसे सब जगह त्राहि-त्राहि मची हुई थी। बोल्शेविकोंने निर्वाचनके बायकाट करनेका निश्चय किया था। इसी समय १९०६ अप्रैलमें स्टाकहोममे समाजवादी जनतात्रिकोंकी काग्रेस हुई। जारशाही अत्याचारोंसे सबक सीखकर बोल्शेविक और मेन्शेविक दोनों इस काग्रेसमे सम्मिलित हुये, और समाजवादी जनतात्रिक पार्टीके भीतर अलग अलग दो गुटोंको रखते हुये भी वह एक हो गये।

नवनिर्वाचित दूमाके उद्घाटनसे तीन दिन पहले अप्रैल १९०६ ई०के अन्तमे जारशाहीने "आधारिक राज्यविधान" प्रकाशित किये, जिसके द्वारा "सभी रूसोंके सम्राट्में सर्वोच्च परमस्वतत्र राज्यशक्ति निहित है" को घोषित किया गया। साथ ही दूमापर अकुश रखनेके लिये एक राज्य परिषद् बनाई गई, जिसकी स्वीकृतिके बिना कोई भी कानून दूमा द्वारा पास होकर जारके पास भेजा नही जा सकता था। परिषद्में आधे सरकारी उच्च अधिकारी थे, जिनकी नियुक्ति जार करता, बाकी आधेमे स्थानीय बोर्डों (जेम्स्त्वों), अमीरों, पादरियों और विश्वविद्यालयोंके प्रतिनिधि लिये जानेवाले थे।

इतने छद-बदके बाद निर्वाचित दूमा भी पूरी तौरसे जारशाहीके अनुकूल सिद्ध नही हुई। उसके ५२४ सदस्योंमे २०४ किसान थे, जोकि वैसे किसान नही थे, जिन्हें जारका रूलाहकार प्रधानमत्री काउट वित्ते चाहता था। समाजवादी जनतात्रिक समूहके अठारह प्रतिनिधि दूमामें पहुँचे थे। वैधानिक जनतात्रिक या नरमदलियोंकी सख्या १७९ थी।

यद्यपि विद्रोहका वेग दब गया था, लेकिन वह बिल्कुल खतम नही हुआ था। १९०६ ई०में मईसे अगस्ततक देशके आधे भागमे किसानोंके आन्दोलन और बलवे चलते रहे। दूमा जनताके हितके लिये नही बनाई गई थी, इसलिये वह लोगोंको शात करनेमें कैसे समर्थ होती? जब भूमि-सबधी समस्याके बारेमे किसान-प्रतिनिधियोंने अपने अनुकूल प्रस्ताव पास करना चाहा, तो घबड़ाकर सरकारने ८ जुलाई १९०६ ई०को दूमाको खतम कर दिया।

उसी साल दूसरी दूमाका निर्वाचन हुआ। प्रथम दूमाका बोल्शेविकोंने बायकाट किया था, लेकिन प्रथम दूमाके तजर्बेसे उन्हे पता लग गया, कि दूमाको अपने विचारोंके प्रचारके लिये एक अच्छा प्रभावशाली भाषणमच बनाया जा सकता है, इसीलिये लेनिनके परामर्शके अनुसार बोल्शेविकोंने अबके निर्वाचनमें भाग लेनेका निश्चय किया। वामपक्षी दलने भी भाग लिया, जिसके कारण द्वितीय दूमा जारशाहीके लिये प्रथमसे भी अधिक कडवी साबित हुई। नरमदली सवैधानिक जनतात्रिक पहलेकी अपेक्षा आधे ही (१७९ ९८) आ पाये। किसान गुट तथा नरम समाजवादी क्रान्तिकारी जहा पहली दूमामे ९४ थे, वहा अब उनकी सख्या बढकर १५७ हो गई। समाजवादी जनतात्रिक अब अठारहकी जगह पैंसठ थे। यद्यपि द्वितीय दूमामें प्रगतिशील विचारोंका प्रतिनिधित्व ज्यादा था, लेकिन अब क्रातिका वेग उतारपर था, इसलिये वह जनताके किसी भी हितको करनेमें असमर्थ थी, ३ जून १९०७ ई०को प्रतिगामी जारके पिट्ठुओंने कानूनके दिखावेको भी छोडकर चारो ओर अत्याचार करना शुरू किया। उसी साल १५९ मजदूर सभाओंको भग कर दिया गया, १९०८ ई०में नौ और १९०९ ई०मे छानबे मजदूर-सगठन निषिद्ध कर दिये गये। द्वितीय दूमाको

खतम कर देनेके बाद भी निकोलाइ II अपनेमे इतनी शक्ति नही पाता था, कि दूमाके बिना ही शासनको जारी रखे, इसीलिये वह तृतीय दूमाके निर्वाचन करनेकी घोपणा करनेके लिये मजबूर हुआ। अबकी बार जारशाहीने चुनावके नियम और भी अनुकूल बनाये जमीदार २३० वोटरोपर एक, बूर्ज्वा (पूजीवादी) हजारपर एक, किसान साठ हजारपर एक और मजदूर सवा लाखपर एक प्रतिनिधि भेज सकते थे। रूसी प्रजाको जहा दूमामें अपना प्रतिनिधि भेजनेका इस प्रकार अधिकार प्राप्त था, वहा मध्य-एसियाके लोगोको एक भी प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार नही दिया गया था—युरोपीय रूसके जहा ४०३ थे, वहा सीमाती इलाकोके ३९ ही लिये जानेवाले थे, जिनमे बारह रूसी-पोलन्दके प्रतिनिधि थे। इस नियमके अनुसार जो निर्वाचन हुआ, उसमें २०२ अथवा ४६ प्रतिशत सदस्य जमीदारोके थे। वामपक्षी दलोको केवल ७ प्रतिशत जगहे मिली थी, लेकिन जारशाही तो दूमाको केवल दिखावेकी चीज रखना चाहती थी। वह दूसरी तरहसे भी विरोधी शक्तियोको कुचलनेके लिये तैयार थी। विद्रोही किसानोकी शक्तिको सर्वथा नष्ट कर देनेके लिये उसने यह तरीका निकाला था—गावकी पचायती सत्ताका नष्ट कर देना, देहातमे भूमिपर सामूहिक अधिकार रखनेकी जगह किसानोको वैयक्तिक तौरसे खेतोपर अधिकार देना, एव किसानोको विद्रोही गावो और इलाकोसे ले जाकर दूसरी जगह बसाना। इसकी वजहसे वह कुछ समयके लिये किसानोकी शक्तिको तोडनेमे सफल हुई। गावकी जमीनपर सामूहिक अधिकार होनेपर धनी और गरीब किसानोके बीच भारी भेद नही कायम किया जा सकता था, लेकिन अब गावोमे कुलक (धनी किसान) पैदा होने लगे।

जारशाही समझने लगी थी, कि लेनिनके रूपमें उसे एक बडे शत्रुसे मुकाबला पडा है। १९०७ ई०के जाडोमे सरकारने लेनिनकी गिरफ्तारीका हुक्म निकाला। लेनिन फिनलन्दमें गुप्त रीतिसे रहते थे। पार्टीकी सलाहपर लेनिनको देश छोड जाना पडा। गुप्त रीतिसे जिस जहाज द्वारा उन्हे बाहर जाना था, उसे पकडनेके लिये पुलिसकी आख बचाकर फिनलन्दकी बर्फ जमी खाडीके ऊपरसे चलना पडा। एक जगह कमजोर बर्फके कारण लेनिन मौतसे बाल-बाल बचे। आखिर वह जहाज द्वारा देश छोडकर प्राय दस सालके लिये विदेशमें जीवन बिताने चले गये। क्रातिके असफल होनेका एक प्रभाव यह हुआ, कि क्रातिके साथ सहानुभूति रखनेवाले बुद्धिजीवियोमें निराशा और उसीके कारण विचारोमे गडबडी पैदा हो गई। लेकिन तब भी बोल्शेविकोने अपनी पार्टीको नष्ट होनेसे बचानेके लिये पूरी कोशिश की। जनवरी १९१२ ई०मे बोल्शेविकोने स्वतत्र बोल्शेविक पार्टी स्थापित करनेके लिये प्राहा (चेकोस्लोवाकिया) मे अपना सम्मेलन किया, जिसका बहुत भारी ऐतिहासिक महत्त्व है, क्योकि इसीके निर्णय द्वारा स्थापित बोल्शेविक पार्टीने पाच वर्ष बाद रूसमे सफल क्राति की। इस वक्त जो केन्द्रीय समिति नियुक्ति की गई थी, उसमे लेनिन, स्तालिन और य० म० स्वेर्द्लोफ मुख्य थे। इसी समयसे पार्टीके पुराने नाम "रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजदूर पार्टी"के साथ-साथ ब्रेकेटमे "बोल्शेविक" भी लिखा जाने लगा। इसी सम्मेलनके समय मे बोल्शेविक नेताओने दृढतापूर्वक कार्य आरम्भ किया। इन नेताओमे लेनिन सर्वोपरि थे। उनके सहायकोमे याकोव मिखाइल-पुत्र स्वेर्द्लोफ भी एक प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता था, जिसने कजान और उरालमें बहुत काम किया और पीछे साइबेरियामे निर्वासित कर दिया गया था। सोवियत शासनकी स्थापनाके बाद यही रूसका प्रथम राष्ट्रपति हुआ। मिखाइल वासिली-पुत्र फ्रुजे दूसरा जबर्दस्त बोल्शेविक क्रातिकारी था, जिसने बोल्शेविक क्रातिके समय अपनी सैनिक सूझ और संगठनका बहुत अच्छा परिचय दिया। आज मध्य एसियाके किर्गिजिस्तान गणराज्यकी राजधानी फ्रुजेके नामपर मशहूर है। सेर्गेई मीरन-पुत्र किरोफ १८ वर्षकी उमरमे बोल्शेविक पार्टीमे शामिल हुआ, और १९०५ ई०की क्रातिमें उसने जबर्दस्त भाग लिया। क्रातिके सफल होनेके बाद उसने बहुत-से जवाबदेह पदोको सभाला, और द्वितीय पचवार्षिक योजनाके समय दुश्मनकी गोलीका शिकार हुआ। स्तालिनकी जन्मभूमि गुर्जीका ग्रिगोरी कान्स्तन्तिनो पुत्र ओर्जोनीकिद्जे १९०३ ई०में बोल्शेविक पार्टीमे शामिल हुआ। १९०५ ई० की क्रातिमें इसने बडी तत्परतासे भाग लिया। जब क्रातिके असफल होनेपर गिरफ्तारिया होने लगी, तो वह विदेशमें भाग जानेमे सफल हुआ। १९०९ ई०मे वह ईरानमें था, और वहाकी क्रातिमें भी

सुधार किये गये, जिन्हे विफल करनेके लिये पहला प्रहार था, आस्ट्रियाका बोसनिया और हेर्जेगोविनाको अपने राज्यमें मिलानेकी घोषणा। तरुण तुर्कोंके प्रयत्नोंसे तुर्की शक्तिशाली बन जाय, इसे रूस भी पसद नही करता था, क्योंकि तब तो दरेदानियालके लिये उसकी आशाओंपर सदाके लिये पानी फिर जाता। रूसकी शह पा १९०९ ई०मे अफ्रीकाके तुर्कोंके दो प्रदेशों—सेरेनेडका और त्रिपोलितानियाको इतालीने अपने अधिकारमें कर लिया। रूसने फ्रास और इगलैण्डके अरबीभाषी अफ्रीकी प्रदेशोंपर हाथ साफ करनेका भी समर्थन किया। इतनेसे भी तरुण तुर्कोंकी शक्तिको कमजोर न होते देख तुर्कोंसे लडनेके लिये रूसके नेतृत्वमे बल्कान-लीगकी स्थापना हुई। इन परिस्थितियोंमें तरुण तुर्कोंके लिये जर्मन साम्राज्यवादकी ओर मुह करनेके सिवा और कोई रास्ता नही रह गया। यह भी याद रखनेकी बात है, कि जिस वक्त पूर्वी युरोपमें यह घटनायें घट रही थीं, उसी समय १९११ ई० में चीनकी महाक्रांति हुई—चीनी सामन्तवादी शासकोंने पश्चिमी युरोपके साम्राज्यवादियोंकी नोच-खसोटसे देशको बचानेमें असफल होकर अपनेको अयोग्य साबित कर दिया था, इसलिये वहाके मध्यमवर्गने राष्ट्रीय मुक्तिके लिये पुराने शासकोंको हटाना जरूरी समझा। भला इतनी बडी बातको पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तिया कैसे सह सकती थीं? उन्होंने चीनका वित्तीय बायकाट कर क्रातिको निर्बल बना प्रति-क्रातिकारी राष्ट्रपति युवान-शि-काईको क्रातिका गला घोटनेमे सहायता दी—इस काममे इगलैण्ड, फ्रास, रूस, जर्मनी और युक्त राष्ट्र अमेरिकाके साथ जापान भी शामिल था।

आपसमे कही मेल और कही बिगाडके साथ ऐसी घटनाये हो ही रही थीं। दुनियाके सबसे बडे साम्राज्यवादी देश इगलैण्ड और फ्रास देख रहे थे, कि अन्तमें हमें जर्मनीसे निबटना है, जिसके लिये रूसका हमारे साथ रहना आवश्यक है। १९११ ई०मे इन तीनों शक्तियोंके मुख्य सेना-सचालकों-का सम्मेलन हुआ, जिसमे फ्रासके प्रतिनिधिने कहा—"रूसी सेनाओंका लक्ष्य यही होना चाहिये, कि जर्मनी अपनी सेनाके सबसे बडे भागको पूर्वी मोर्चेमे फसा रखनेके लिये मजबूर हो।" इसके लिये रूसी सेनाको उसी समय जर्मनीपर आक्रमण कर देना चाहिये, जिस वक्त कि इगलैण्ड और फ्रासकी सेनाये पश्चिममे आक्रमण शुरू करें। इतनेसे भी सतुष्ट न होकर १९१२ ई०मे तीनों शक्तियोंके सेना-सचालकोंका जो सम्मेलन हुआ, उसमें फ्रासने माग की, कि आठ लाखसे कम रूसी सैनिक आस्ट्रिया और जर्मनीके सीमान्तपर नही होने चाहिये, और पश्चिममे स्थिति चाहे जैसी भी हो, सेना-चालनके सोलहवें दिन, रूसको आस्ट्रिया और जर्मनीपर आक्रमण कर देना चाहिये। इसके लिये सैनिक रेलोंको बहुत भारी परिमाणमें बढानेकी अवश्यकता थी, जिसके लिये जारशाहीको कर्जा और सामग्री देनेके वास्ते पश्चिमी राष्ट्र तैयार थे। स्तालिनके शब्दोंमें—"जारशाही रूस पश्चिमी साम्राज्यवादके लिये अपरिमित सरक्षित शक्ति थी, यही नही, कि वहा विदेशी पूजी लगानेका स्वतत्र अवसर मिला था, जिसके कारण रूसके आधारिक उद्योग-धधों तथा राष्ट्रीय अर्थनीतिपर साम्राज्यवादियोंका नियत्रण हो गया था—उदाहरणार्थ कोयला, तेल और धातुके उद्योग—बल्कि यह भी कि रूस अपने लाखों सैनिकों द्वारा पश्चिमी साम्राज्यवादियोंकी मदद कर सकता था।"

औद्योगिक प्रगति—यद्यपि रूसी सामन्त अपने पुराने ढाचेको बनाये रखना चाहते थे, लेकिन बिल्कुल उल्टी गगा तो बहाई नही जा सकती। उद्योग-धधोंको बढाये बिना सैनिक तौरसे जारशाही मजबूत कैसे हो सकती थी? जापानसे हारकर उसने देख लिया था, कि कमसे कम सैनिक उद्योग-धधोंको आगे बढाना अनिवार्य है। इससे पूजीपतियोंको सबसे अधिक लाभ था—सेनाके ठेके बहती गगामें हाथ धोना था, नफा नही लूट थी, जिसे हरएक उच्च अधिकारी अपनोंमें बाटना चाहता था। १९०५-१३ ई० के बीच ढाई अरब रूबलका सैनिक ठेका दिया गया, और दो सालके भीतर साढे तीन हजार किलोमीतर रेलवे लाइनों तथा इजनों और डब्बोंके बनानेका ठेका भी पूजीपतियोंको मिला। इस तरह बडे-बडे नफेके साथ बडे-बडे ठेके मिले, जिन्हे कार्यरूपमे परिणत करनेके लिये इजारादारीवाले बडे पूजीपति सगठनोंकी अवश्यकता हुई, जिसके फलस्वरूप १९००-१० ई० के बीच पूजीपतियोंकी कुछ सेंडीकेटोंने खान और धातु-उद्योग अपने हाथमें कर लिये। बारहसे पद्रह बडे-बडे धातु-कारखानोंने मिलकर प्रोदमेतके नामसे अपनी सेंडीकेट कायम की, जिसने देशके सम्पूर्ण धातु-उद्योगका दो-तिहाई अपने हाथमें कर लिया। १९०६ ई०में प्रोदुगोल नामसे सगठित

सेडीकेटने दोनेत्स-उपत्यकाकी साठ सैंकडा कोयलेकी खानोको अपने हाथमे कर लिया। १९०८ई० में स्थापित प्रोद्रूद सेडीकेटके हाथमे दक्षिणी रूसकी खनिज धूनोका अस्सी सैंकडा था। इसी तरह कपडेके कारखानोवालोकी एक सेडीकेट १९०८ ई०मे मास्कोमे कायम हुई, जिसके हाथमे सैंतालीस कपडा मिलें थी। इन सेडीकेटोने उद्योग-धधोके अधिक भागको अपने हाथमें ले आपसी प्रतियोगिताको इतना कम कर दिया, कि वह चीजोके दामको मनमाना रख सकती थी। जिस समय सेंडीकेटे प्रबल रूप धारण कर रही थी, और नफेके कारण उनके द्वारा उद्योग-धधेको बढावा मिल रहा था, उसी समय बकोकी शक्तिका बढना स्वाभाविक था, जिन्होने बहुतसे औद्योगिक कारखानोको अपने हाथमे कर लिया। सेडीकेटोने अपने मत्स्य-न्यायसे जिस तरह छोटी कपनियोंके अस्तित्वको खतरेमे डाल दिया, उसी तरह अब छोटे बकोको निगलकर बडे बैंकोने अपनी प्रधानता स्थापित की और दिवालिया बननेके डरसे छोटे-छोटे बक बडे-बडे बकोके पेटमें चले गये। १९०८ ई०मे पीतरबुर्ग-अजोफ-ओरेल और दक्षिणी बकोने मिलकर सयुक्त बकका रूप लिया। १९१० ई०में उत्तरी बक रूसी-चीनी और रूसी-एसियाई बकोसे मिलकर एक हो गया। अब सात बडे बकोके पास रूसकी बकमें लगी अधिकाश पूजी चली आई। लेकिन सेंडीकेटो और महाबकोका शक्तिशाली होना केवल रूसी पूजीपतियोके लाभकी ही बात नही थी, इनकी पूजीका बहुत अधिक भाग विदेशियोका था। १९१४ ई०मे रूसके अठारह प्रधान बकोमें ३३५५ लाख रूबलकी पूजी लगी हुई थी, जिसमें ४२ प्रतिशत (१८५५ लाख रूबल) विदेशी पूजी थी। विदेशी पूजीमे भी फ्रासकी २१ ९ प्रतिशत, जर्मनीकी १७ प्रतिशत, और अग्रेजोकी ३ प्रतिशत थी। इगलैण्ड और फ्रास दोनोकी सम्मिलित पूजी विदेशी पूजीमे सबसे अधिक थी। पूजीके अनुसार ही रूसमे उनका प्रभाव भी-होना आवश्यक था।

१९०५-७ ई०की क्रातिके देशमे असफल हो जानेपर घरके भीतर जारशाहीके लिये कोई भयकर खतरा नही था। पूँजीके विस्तार और उद्योग-धधोके प्रसारद्वारा पूजीपतियोकी पाचो घीमें थी, चाहे उसके कारण प्रथम विश्वयुद्धके पहले रूसका राष्ट्रीय ऋण ८८ अरब रूबल हो गया था, जिसमे सबसे अधिक वह फ्रासका कर्जदार था। अभी भी बिजली, इजीनियरी, तर्बाइन-निर्माण, मशीन-टूल-निर्माण, भारी इजीनियरी, मोटर-उद्योग और भारी रसायन-उद्योग जैसे आधारभूत उद्योगोका रूसमे अभाव था, और इन चीजोके लिये उसे पश्चिमका मुह देखना पडता था। तेल-उद्योग अवश्य आगे बढा था, लेकिन उसपर भी विदेशी पूजीका नियन्त्रण था। रूस बडी तेजीसे प्रथम विश्वयुद्धकी ओर बढता चला जा रहा था। रूसके राजनीतिक आकाशमें इस समय कोई राजनीतिक परिवर्तनके लिये बडी घटना घटनेकी सभावना नही थी, चारो ओर राजनीतिक अकर्मण्यता और उदासी छाई हुई थी। इसी समय चार ४ अप्रैल १९१२ ई० में लेनाकी सोनेकी खानोके मजदूरोपर गोलिया चलाई गई, जिसके बारेमे स्तालिनने "ज्वेज्दा" (तारा) नामक बोल्शेविक पत्रमें १९१२ ई० में लिखा था—"लेना-गोलीकाडने मौन रूपी बर्फको तोड दिया, और जनताके आन्दोलनकी नदी फिरसे बहने लगी।"

लेनाकी सोनेकी खाने एक कपनीके हाथमे थी, जिसकी स्थापना १९०८ ई०मे हुई थी, और जिसमे तीन-चौथाई पूजी अग्रेजोकी थी। कपनीको इस खानसे प्रतिवर्ष सत्तर लाख रूबलका फायदा होता था, और साइबेरियाके ध्रुवीय कक्षाके भीतर दूरके इस भूभागके मजदूरोका बहुत क्रूरतापूर्वक शोषण होता था। यह सोनेकी खाने रेलसे डेढ हजार मील (१७०० किलोमीतर) दूर अवस्थित थीं। ध्रुवीय कक्षाके भीतर होनेके कारण यहाकी नदिया सालके अधिक भागमे बर्फ बनी रहती, जिससे याता-यात थोडे-से महीनोके लिये खुलता, जब कि लेना नदी मुक्त-प्रवाह होती। मजदूर एक मर्तबे वहा जा अत्याचारोके मारे यदि भागना चाहते, तो आसानीसे भाग नही सकते थे। उनसे दससे साढे ग्यारह घटा रोज काम लिया जाता। लेना सुवर्ण-क्षेत्र कपनीकी तानाशाहीके मारे उनका नाको दम था। कपनीका मैनेजर बेलोजेरोफ लेनाका बिना मुकुटका राजा माना जाता था। अत्याचारोंसे तग आकर फर्वरी १९१२ ई०के अन्तमें खानके एक भागमे हडताल हो गई। इसकी खबरसे प्रोत्साहित हो १ मार्च तक और कितने ही भागोमे हडताल फैल गई, और सारे सुवर्ण-क्षेत्रमे आम हडताल सगठित कर ली गई। केंद्रीय हडताल कमेटीने कपनीके प्रबध-विभागसे बातचीत शुरू

की। कपनीके स्थानीय इजीनियर तुल्चिन्स्कीने वडी अच्छी तरह वातचीत करके मेन्शेविक प्रतिनिधियोको हडताल उठा लेनेपर राजी किया, लेकिन हडताल कमेटीके वोल्शेविक विचार रखनेवाले सदस्योने हडतालके पक्षमे प्रचार जारी रखना चाहा। इसपर तै हुआ, कि हडतालके वारेमें गुप्त मतदान द्वारा कमकरोसे राय ली जाय। २५ मार्चके सवेरे दो वडे-वडे पीपे हरएक क्षेत्रमें रख दिये गये, जिनमेंसे एकपर लिखा था—"कामपर लौट जायेंगे", और दूसरेपर "कामपर नही लौटेंगे।" मजदूरोको एक-एक ककड अपने मतको प्रकट करनेके लिये पीपोमें डालना था। जल्दी ही "काम पर नही लौटेंगे" वाला पीपा पत्थरोसे भर गया, जव कि दूसरे पीपेमें केवल सत्रह पत्थर मिले। इसपर २७ मार्चको छ हजार कमकरोने आम हडताल कर दी।

१७ (४) अप्रैलको हडताली प्रदर्शन करते हुये जव नदेज्दिन्स्क सुवर्ण-क्षेत्रके पास पहुचे, तो सेनाने रास्ता रोक दिया। इजीनियर तुल्चिन्स्कीने कमकरोको विखर जानेके लिये कहा, जिसपर कुछ लोग रुक गये, लेकिन दूसरे एक छोटे रास्तेसे आगे वढे। इसी समय धडाधड गोलिया चलने लगी। दो सौ पचास कमकर निहत हुये और दो सौ सत्तर आहत। यहा भी "खूनी रविवार" की तरह जारशाही अत्याचारने मजदूरोमें भारी विद्रोहकी भावना पैदा कर दी, और सचमुच ही लेनाके गोलीकाडने अकर्मण्यताके वर्फको तोड दिया।

लेनाके गोलीकाडकी खवर सारे देशमें फैल गई। वोल्शेविकोने फिर अपनी तत्परता दिखलानी शुरू की। इसी समय वोल्शेविकोंने अपने दैनिक "प्राव्दा" (अविकार, सत्य) के निकालनेकी तैयारी की। "प्राव्दा" रूसी मजदूरोका पत्र था। उसमें उन्हीकी भाषामें सरल लेख होते थे। यह कुछ मध्यमवर्गके शिक्षितोके लिये पराई भाषामे कठिन शब्दोके साथ अपनी मार्क्सवादकी पडिताई दिखलानेके लिये नही निकाला गया था। १९१२ ई०के जनवरीमें "प्राव्दा" के लिये चन्दा होने लगा, जिसमें रूसके सभी भागोके मजदूरोंने पैसा भेजे। चदेमें इतनी सफलता हुई, कि लेनिनने उसके वारेमे लिखा—"प्राव्दाका निर्माण रूसी कमकरोकी एकता, वर्गचेतना और शक्तिका सवसे वडा प्रमाण है।" "प्राव्दा"का प्रथम अक स्तालिनके सम्पादकत्वमें ५ मई (२२ अप्रैल) १९१२ ई० को निकला, इसीलिये आज भी रूसमें ५ मईको कमकर-प्रेस-दिवस मनाया जाता है।

चतुर्थ दूमाका चुनाव—१९१२ ई० में तृतीय राज्यदूमाका कार्यकाल समाप्त होनेपर उसे तोड दिया गया, और चतुर्थ दूमाके निर्वाचनका निश्चय हुआ। कई सालोसे स्तोल्पिनके हाथमे रूसी राज्यकी वागडोर थी। वह अपने अत्याचारोके कारण लोगोकी भारी घृणाका पात्र था। १९११ ई०मे उसकी हत्या हो जानेपर फिर सभी जगह पुलिस अत्यचार होने लगा। दूमाका निर्वाचन ऐसे ही वातावरणमे हो रहा था। वोल्शेविकोने दूमाके भाषणमचके फायदेको अच्छी तरह समझ लिया था, इसलिये उन्होने निर्वाचनका वायकाट नही किया। लेनिन उस समय पेरिसमें रहते रूसके भीतर राजनीतिक कार्यका सचालन कर रहे थे। उनको और नजदीक आनेकी जरूरत महसूस हुई, इसलिये १९१२ ई०के ग्रीष्ममे पेरिस छोडकर वह पोलन्दके नगर क्राकोमे चले आये। निर्वाचनके वाद १९१२ ई०के अन्तमें चतुर्थ राज्यदूमाकी पहली वैठक हुई। इसमें प्रतिगामियोंकी सख्या और वल अधिक था—४१० सदस्योमें १७० दक्षिणपथी थे, अक्तूवरियोकी सख्या सौ थी, जो दक्षिणपथके अनुयायी थे। कादेतोकी सख्या पचास थी, इनमें और अक्तूवरियोमे इतना ही अन्तर था, कि कादेत वामपक्षकी वातोको इस्तेमाल करते थे, यद्यपि दूमाके भीतर उनका गठजोडा अक्तूवरियोंसे था। निम्न मध्यमवर्गके सदस्योमे दस त्रुदोविकी और सात मेन्शेविक थे। मेन्शेविकोने वोल्शेविकोके साथ दूमाके भीतर एकता रखनेका प्रयत्न किया, लेकिन वोल्शेविक छ थे, इसलिये अपने एकके वहुमतका फायदा उठाकर मेन्शेविक वोल्शेविकोको दूमामें वोलनेसे रोका करते थे, इसपर वोल्शेविक अलग हो गये। ४१० सदस्योंमें ६ की सख्या नगण्य है, लेकिन वोल्शेविक जनताके हितोके पक्षपाती तथा जारशाही क्रूरताको नगा करनेके लिये वहा पहुचे थे, इसलिये उनके भाषणोका असर लोगोंपर वहुत पडता था। अपने प्रचारका यहा वहुत अच्छा अवसर था, और क्राति पहलेके वर्षोंमें लेनिनके दलने इसका खूव फायदा उठाते जनताके भीतर जारशाहीके विरुद्ध भारी घृणा पैदा करनेमे सफलता पाई। वोल्शेविक अपनी

जातिको केवल रूसियोके ही लाभके लिये नही चाहते थे, बल्कि उनका लक्ष्य था रूसके भीतर रहनेवाले सभी लोगोको शोषण और उत्पीडनसे मुक्त करना। ऐसी हालतमे अ-रूसी जातियोके वारेमे अपने रुखको स्पष्ट कर देना बहुत जरूरी था, इसीलिये १९१३ ई० में दो महत्त्वपूर्ण कृतिया प्रकाशित हुईं—लेनिनका "राष्ट्रीय प्रश्नपर समालोचनात्मक टिप्पणिया" और स्तालिनका "मार्क्सवाद और राष्ट्रीय प्रश्न"। इन दो ग्रथोने सारी जनताके सामने साफ कर दिया, कि साम्यवादी रूसमें "सभी जातियोको आत्मनिर्णयका पूरा अधिकार होगा, और वह अपनी इच्छानुसार चाहे तो रूसी सघसे बाहर भी जा सकेगी।"

विश्व-युद्धकी तैयारी—आनेवाले विश्व-युद्धमे रूसको अपनी ओर शामिल करनेके लिये पश्चिमी युरोपके दोनो गुटोने किस तरह कोशिश की, इसके बारेमे हम बतला चुके हैं। युद्ध कैसर विलियम (विल्हेल्म)की सनकके कारण नही हुआ, बल्कि उसका ठोस कारण परस्पर-विरोधी साम्राज्यवादी आर्थिक स्वार्थ थे। जर्मन साम्राज्यवादने तुर्कीकी ओर बढना चाहा। जर्मन बकने रेलो द्वारा जर्मनीको तुर्कीसे मिलाना चाहा। जर्मन सैनिक अफसर तुर्की सेनाको सगठित और शिक्षित करके उसे रूस और इगलैण्डके विरुद्ध तैयार कर रहे थे। जर्मनीके पास नाममात्रके थोडेसे उपनिवेश (अफ्रीकामें) थे। जर्मनीकी सामरिक शक्तिसे भयभीत इगलैण्ड नही चाहता था, कि उसके उपनिवेशोके बीचमें जर्मनीको कही भी पैर रखनेको मिले। वह चाहता था, कि जर्मनीकी नौसेना और व्यापारिक बेडेको नष्ट कर जर्मन उपनिवेशको अपने हाथमे कर ले। तुर्कीको मसोपोतामिया (इराक) और फिलस्तीनसे वचित करके मिस्रपर अधिकार करनेके लिये भी वह उतारू था। फ्रास जर्मनीकी सैनिक शक्तिको दबाकर अलसस्-लोरेन प्रदेशको जर्मनीसे छीनकर राइन नदीके बायें तटपर अधिकार करना चाहता था, और तुर्की-साम्राज्यकी बदरबाटमें इगलैण्डका सहभागी भी होना चाहता था। जारशाही रूसकी योजना थी बासफोरस और दरेदानियालपर अधिकार, तुर्कीके भीतरकी अर्मेनियापर हाथ साफ करना, तथा आस्ट्रिया-हगरी साम्राज्यको छिन्न-भिन्न करते हुये बल्कान प्रायद्वीपपर अपने प्रभावको स्थापित करना। जापान भी चीनमें अपनी मनमानी करनेके लिये एक ऐसे बडे मौकेकी खोजमे था। लेकिन विश्वयुद्धका पहले एक छोटे-से युद्धमे रिहर्सल हुआ, यह था बल्कान-युद्ध।

बल्कान-युद्ध (१९१२-१३ ई०)—बोस्निया और हर्जेगोविनामे आगे बढकर आस्ट्रियाने रूसको बहुत क्रुद्ध कर दिया था। जारशाही सर्विया, बुल्गारिया, मोन्तेनिग्रो और ग्रीसको बल्कान-सघके रूपमे एकताबद्ध करके उन्हे तुर्कीके विरुद्ध तैयार करना चाहती थी। फ्रास भी इसमे उसका पृष्ठपोषक था, क्योकि पश्चिमी देशोके सामने सबसे बडी समस्या थी जनबल या सिपाहियो-की सख्या। वह समझता था, कि इस प्रकार बल्कानकी दस लाख सगीने हमे आसानीसे मिल जायेंगी। जर्मनी और आस्ट्रिया तुर्कीकी पीठपर थे। प्रथम बल्कान-युद्ध १९१२ ई०के शरद्में आरम्भ हुआ। १९११ ई०से ही इतालीके साथ तुर्कीकी लडाई छिडी हुई थी, इसलिये बल्कान-सघ उसीको आगे बढाते हुये युद्धमे कूदा। तुर्क नये हथियारोसे सुसज्जित नवसगठित पूर्वी युरोपके सिपाहियोके सामने जल्दी ही परास्त हो गये, लेकिन फिर विजेताओमें आपसमे झगडा खडा हो गया, जिसके कारण अगले साल १९१३ ई०के ग्रीष्ममे दूसरा बल्कान-युद्ध विजेताओके भीतर हो गया। बुल्गारियाने सर्वियापर आक्रमण कर दिया, जिससे नाराज होकर दूसरे बल्कान राज्य बुल्गारियाके विरुद्ध हो गये। फलत बुल्गारियाकी हार हुई, और उसे अगस्त १९१३ ई० में बुखारेस्त-सधिपर हस्ताक्षर करनेके लिये मजबूर होना पडा। इस सधिके अनुसार बुल्गारियाके अपने कितने इलाके पडोसियोको देने पडे, और अद्रियानोपोल बुल्गारियाके हाथसे निकलकर फिरसे तुर्कीके हाथमे चला गया। इसी युद्धमे सर्वियाने अल्बानियापर अधिकार कर लिया, लेकिन जब आस्ट्रियाने मैदानमे आनेकी धमकी दी, तो उसे छोडना पडा।

इन युद्धोने बल्कानके स्लावोको तुर्कीकी अधीनतासे मुक्ति प्रदान की, लेकिन अब युरोपकी बडी शक्तिया उनपर प्रभाव डालनेके लिये कशमकश कर रही थीं। बर्लिन-बगदाद रेल्वेके लिये जर्मन और फ्रेंच दोनो पूजी लगा रहे थे, और इन विरोधी स्वार्थोके सघर्षने बल्कानको सचमुच ही

वारूदका ढेर बना दिया था, जिसमें एक चिनगारी पड जानेसे भीषण विस्फोटक हो जानेका भय था। सभी युरोपीय शक्तियां हथियार बढानेपर आंख मूदकर खर्च कर रही थी। जारशाहीने १९१४ ई०में साढे सत्तानवे करोड स्वर्ण रूबल सेनाके लिये रक्खा था। १९०७ ई० से १९१३ ई० तक उसने इस मदमे चार अरब रूबल खर्च किये। इगलैण्ड भी अपनी शक्तिको इसी तरह बढानेमें लगा हुआ था। अपने नौसैनिक बलको बढानेके लिये १९०६ ई०में उसने प्रकाड ड्रेडनाट युद्धपोत बनाया, जिसका अनुकरण करते जर्मनी और फ्रासने भी अपने-अपने ड्रेडनाट बनाने शुरू किये। फ्रासीसी पूजीकी मददसे जारशाहीने भी नौसैनिक निर्माणके लिये बहुत बडा प्रोग्राम रक्खा, लेकिन उसकी मद गतिके कारण अभी एक भी युद्धपोत तैयार नहीं हुआ था, जब कि १९१४ ई०का विश्वयुद्ध छिड गया। प्रोफेसर न० ई० जूकोव्स्की पहला आदमी था, जिसने विमान-विद्याका आविष्कार किया, लेकिन जारशाहीने उससे लाभ नहीं उठाया। प० न० नेस्तोरोफने पहिली बार कलैया मारकर अपने हवाई जहाजको उडाया, लेकिन जारशाही इसके महत्त्वको नहीं समझ पाई। यही नहीं, वैसा करनेमें एक छोटे-से पुर्जेके खो जानेके लिये नेस्तोरोफको "अनुशासनहीनता" के लिये जुरमानेका दड दिया गया।

जैसे-जैसे युद्ध-घोषणाके दिन नजदीक आ रहे थे, वैसे ही वैसे रूसके भीतर जनतामे असतोष भी फैलता जा रहा था। १९१४ ई० के आरम्भमे सर्वहारोके क्रातिकारी सघर्ष जगह-जगह होने लगे। ९ जनवरीको "खूनी रविवार"के वार्षिकोत्सवको ढाई लाख मजदूरोने हडताल करके मनाया। १९१४ ई० के पूर्वार्धमे पद्रह लाख मजदूरोने हडताल की। १९१४ ई० के ग्रीष्ममे बाकूके तेल क्षेत्रमें भी एक बडी राजनीतिक हडताल हुई, जिसे तोडनेकी जारशाहीने बहुत कोशिश की। बोल्शेविकोंके अपील करनेपर बाकूके हडतालियोंकी सहानुभूतिमे पीतरबुर्गके नब्बे हजार कमकरोने काम छोड दिया, और ११ जुलाई को तो राजधानीके दो लाख मजदूरोने हडताल करके अपनी सभाओंमें नारा लगाया—"बाकूके साथियो, हम तुम्हारे साथ है।" "बाकूके कमकरोकी विजय हमारी विजय है।"

प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४–१८ ई०)—बल्कानका बारूदका ढेर तैयार ही था। एक ओर जर्मनी और आस्ट्रिया, दूसरी ओर इगलैण्ड, फ्रास और रूस नखसे शिखतक हथियारोंसे लैस होकर खडे थे। सेराजिवामे आस्ट्रियाके युवराजकी हत्याने बारूदमे चिनगारी डालनेका काम किया, और जुलाई १९१४ ई० में जर्मनीके भडकनेपर महायुद्ध छिड गया। इस युद्धके दो दलोंमें एक था चतुर्दलीय पक्ष, जिसमे जर्मनी, आस्ट्रिया-हगरी, बुल्गारिया और तुर्की शामिल थे, दूसरा त्रिदलीय पक्ष, जिसमें इगलैण्ड, फ्रास और रूसके साथ सर्बिया और बेल्जियम भी सम्मिलित थे। १९१४ ई० में ही जापान भी त्रिदलीय गुटमे शामिल हो गया, इताली १९१५ ई०में युद्धमे कूदा, और अन्तमें १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिकाने भी शामिल हो इसे विश्वयुद्ध बना दिया। प्रथम विश्वयुद्धमें छोटे-बडे तैंतीस देश शामिल हुये, ७४० लाख सैनिक युद्धके लिये चालित किये गये, जिनमें तीन करोड प्राणोंकी हानि हुई—इनमे लाखो भारतीय भी थे। पैसेके रूपमें इसमें तीन अरब रूबल धन स्वाहा हुआ।

त्रिदलीय गुटमे पहले ही निश्चय हो गया था, कि युद्ध छिडते ही रूसको पूर्वमे आस्ट्रिया और जर्मनीपर आक्रमण करना होगा। युद्धके आरम्भ होते ही युरोपमें तीन मोर्चे बन गये। पश्चिमी मोर्चा उत्तर समुद्रमे स्वीजलैण्ड तक फैला हुआ था, जिसपर इगलैण्ड और फ्रासकी सेनायें जर्मन सेनाओंका मुकाबिला कर रही थीं। पूर्वी मोर्चा वस्तुत रूसी मोर्चा था, जो बाल्तिक समुद्रसे रूमानिया तक फैला हुआ था। इनके अतिरिक्त एक बल्कान-मोर्चा था, जो दन्यूब नदीके किनारे-किनारे चला गया था। रूसी मोर्चा उत्तर-पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी दो भागोंमें विभक्त था। उत्तर-पश्चिमी मोर्चा बाल्तिक समुद्रसे बुग नदीके निम्न भागतक चला गया था, और दक्षिणी-पश्चिमी मोर्चा रूस-आस्ट्रियाके सीमातको लेते रूमानिया तक फैला हुआ था। इन्ही दोनों मोर्चोंमें रूसको आक्रमण करना था। बल्कान-मोर्चेपर आस्ट्रियाकी सेनाका मुकाबिला सर्बियाकी सेनाको करना था। जर्मनीने अपने सुभीतेको देखकर फ्रासकी राजधानी पेरिसकी ओर जल्दी बढनेके लिये बेल्जियमकी तटस्थता भग कर दी, और इसके कारण फ्रास और इगलैण्डकी सेनाके लिये मुकाबिला बहुत जबर्दस्त हो गया।

रूसी सेनाने जर्मन सेनाओंको पश्चिमकी ओर बढनेसे रोकनेके लिये उसके पूर्वी सीमांतपर आक्रमण किया। पश्चिममें प्रगति जारी रखते हुये जर्मनोंने इसी समय जेनेरल समसानोफकी रूसी सेनाको मसूरी झीलों—दलदली भूमिमें घेर लिया। लाखों रूसी मारे गये। समसानोफने लज्जाके मारे आत्म-हत्या कर ली। जारशाहीके लिये यह कोई अच्छा सगुन नही था। समसानोफकी सेनाको हरानेके बाद जर्मनोंने रेतेनकाम्फकी अधीनतामें लडती रूसी सेनापर आक्रमण किया, और वह भी एक लाख दस हजार आदमियोंको खोकर पीछे हटी। रूसियोंने इतनी भारी क्षति उठाई, लेकिन इसके लिये जर्मनीको अपनी सेनाका काफी भाग पूर्वकी ओर भेजना पडा, जिसके कारण पेरिस बच गई। पश्चिमी साम्राज्यवादियोंकी मनोकामना पूरी हुई, रूसने सारी चोटें अपने ऊपर लेकर फ्रासको पराजित होनेसे बचा दिया।

उत्तर-पश्चिमी मोर्चेपर रूसी सेनाके असफल आक्रमण करते समय ही अगस्त १९१४ ई० में चार रूसी अक्षोहिणियोंने दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर आस्ट्रियाके विरुद्ध आक्रमण किया। यहा सफलता मिली, और शत्रुओंको हराकर उन्होंने ल्वोफ और गोलिचपर अधिकार कर लिया, करीब-करीब सारी गलिसिया रूसी सेनाके हाथमें आ गई, लेकिन सितम्बरके अन्तमें जर्मन सेनायें आ धमकी, जिससे दिसम्बर १९१४ ई० के मध्य तक रूसी सेनाओंकी प्रगति रुक गई। अब दोनों ही पक्ष एक दूसरेको ढकेलनेमें असमर्थ थे। लेकिन १९१४ ई०के शरद्‌में काकेशसका एक नया मोर्चा तैयार हो गया था। दो जर्मन युद्धपोत "गोयेबेन" और "ब्रेस्ला" भूमध्यसागरसे कालासागरमें घुस आये। तुर्क जर्मनीके पक्षमें थे, इसलिये उन्हे दरेदानियाल पार होनेमें कोई अडचन नही हुई। तुर्कोंने रूसके विरुद्ध जर्मनीसे सधि की थी, इसलिये उसने रूसके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। "गोयेबेन" और "ब्रेस्ला"ने अदेस्सा और फ्योदोसियापर बमवर्षा की, तुर्क सेनाने भी अपना प्रभुत्व दिखलाना चाहा, लेकिन दिसम्बर १९१४ ई०मे सरिकामिशके युद्धक्षेत्रमे उसे रूसियोंने बुरी तरह हराया। दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर कितने ही समय तक दोनों पक्षोंकी प्रगति रुके रहनेके बाद १९१५ ई०के अप्रैलके अन्त और मईके आरम्भमें एक जर्मन सेना गोर्लिच और तरनोफके बीच रूसी मोर्चे-का भेदन करनेमें सफल हुई, जिसके कारण रूसी सेना जल्दीसे पीछे हटनेके लिये मजबूर हुई। अब सारे रूसी मोर्चेपर जर्मन छा गये। आस्ट्रियन सेनाने पर्जेमिसल और ल्वोफको ले लिया, जुलाईमें एक जर्मन सेनाने इवानगोरदके किलेपर अधिकार किया, जुलाईके अन्तमें वारसा (वरसावा) और ब्रेस्त-लितोव्स्क जर्मनोंके हाथमे चले गये, फिर आगे बढते हुए उन्होंने ग्रोद्नो और विल्नोसपर अधिकार किया। १९१५ ई०के शरद्‌में इस प्रकार पोलन्द, लिथु-वानिया और बाल्तिक प्रदेशोंके कितने ही भाग जर्मन और आस्ट्रियन सेनाके हाथमे चले गये। १९१५ ई० के मईसे अक्तूबरके छ महीनेमें डेढ लाख रूसी सैनिक मारे गये, और दस लाख आहत या बदी हुये। इस प्रकार १९१४-१५ ई०मे पूर्वी मोर्चेपर रूसी सेनाकी भारी हार हुई। रूसके लिये अब कोई आशा नही थी। लोगोंमे युद्धके भीषण सहार, पराजय तथा जारशाही शासनके अत्याचारोंके विरुद्ध भारी असतोषकी आग भडक उठी। बोल्शेविक पहलेसे ही युद्धके विरोधी थे। जिस वक्त युद्ध छिडा, उस वक्त लेनिन आस्ट्रियामें थे। आस्ट्रियनोंने लेनिनको पकडकर अपने देश से निकाल दिया, और वह स्वीजर्लैंड चले गये। बोल्शेविक इस युद्धको अनुचित युद्ध कहते थे, क्योंकि वह परतत्र देशोंकी मुक्ति या स्वतत्र देशोंकी प्रतिरक्षाके लिये नही लडा जा रहा था, बल्कि उसका उद्देश्य था विदेशी राज्यों और जातियोंको जीतकर गुलाम बनाना।

रूसमे चारो ओर आर्थिक अव्यवस्था फैली हुई थी। उसकी पिछडी हुई आर्थिक-व्यवस्था तथा उद्योग-धधोंकी निर्बलताके कारण जर्मनोंसे हारनेके सिवा रूसकी सेनाओंके लिये और कोई रास्ता नही था। युद्धके कारण कोयलेका अभाव-सा हो गया, जिससे फैक्टरियों और मिलोंने कामको कम कर दिया। १९१६ ई०में धौंकू भट्ठोंने लोहा तैयार करना बन्द कर दिया—फौलादके कारखाने देशके लिये आवश्यक धातुका आधा ही पैदा करते थे। रेलें युद्ध कालीन यातायातको ठीकसे कायम नही रख सकी। सेनायें ऐसी अस्त-व्यस्त अवस्थामें पीछे हटी, जिसके कारण बहुतमे इजन और गाडिया दुश्मनोंके हाथोंमें जानेसे नही बचाई जा सकी। सैनिकोंके सेनामें भर्ती होनेके कारण

कृपिकी उपज भी पहलेसे बहुत कम हो गई, वयस्क पुरुपोंमेंसे ४७ प्रतिशत (१४० लाख) सेनामें भर्ती किये गये थे। खेतीके लिये उपयोगी घोडोंमें पचास लाखकी कमी हो गई थी, फिर कृपिकी उपज क्यो न कम होती? १९१६ ई०मे १९०९ ई०की अपेक्षा पचासी प्रतिशत ही खेत बोये गये। लडाईके लिये सामान खरीदनेके वास्ते इगलैण्ड, फ्रास और युक्त राष्ट्र अमेरिकाको ७७६९० लाख रूवल देना था, यह चोट सबसे भयकर थी। युद्धक्षेत्रमे घोर पराजय और देशके भीतर आर्थिक प्रलय दोनोने मिलकर रूसी शासको और पूंजीपतियोका होश बिगाड दिया। रूसी सैनिकोंके खूनकी गिनती न करके जारशाहीके मित्र अपने कर्जोको जल्दी उगाहना चाहते थे। इगलैण्डका तीन अरब रूवल कर्जा हो गया था, जिसके बदलेमे उसने जारशाही सरकारसे उसकी सरक्षित सुवर्ण-निधिको लदन भेजनेके लिये माग की, और साथ ही वह इसपर जोर दे रहा था, कि रूस और भी ताजी सेनायें युद्धक्षेत्रमें भेजे। १९१६ ई०में फ्रासने अपने प्रतिनिधि भेज चार लाख रूसी सेना फ्रासके भीतर लडनेके लिये मागी। यदि क्राति न हो गई होती, तो जारशाही रूस फ्रासकी मागको ठुकरा नही सकता था।

इस तरहकी आर्थिक अराजकता और सकटको बर्दाश्त करना जनताकी शक्तिके बाहर था। जनताके सबसे जागरूक भाग मजदूरोंने अपने मनोभावको १९१५ ई०के बसतसे ही जगह-जगह हडताल करके प्रकट करना शुरू कर दिया था। ९ जनवरी १९१६ ई०का "खूनी रविवार" उन्होंने एक बडी राजनीतिक हडतालके रूपमे मनाया। अक्तूबर १९१६ ई०मे ऐसी हडताल और प्रदर्शन बडे जोरदार होने लगे, और कमकरोंने नारा लगाना शुरू किया—"युद्ध बन्द करो", "स्वेच्छाचारिता की क्षय।"

सेनाका मनोभाव कैसा था, इसका पता सिपाहियोके अपने घरोमे भेजे पत्रों द्वारा मिलता था। एक सिपाहीने लिखा था—"आजके सिपाही वह सिपाही नही है, जो कि जापानी-युद्धके समय थे। दासताभरी आज्ञाकारिताके बाहरी परदेके भीतर उनके दिलोमे भारी गुस्सेकी आग धधक रही है, एक छोटी-सी दियासलाई जलाने भरकी देर है, और वह भडक उठेगी।" और दियासलाई जलानेका काम बोल्शेविक बडी तत्परतासे कर रहे थे। उनमेंसे कितने ही सेनामे काम कर रहे थे। म० व० फ्रुजे जैसा युद्धकौशल पटु क्रातिकारी १९१५ ई०मे जेलसे भाग निकला था। उसने मिन्स्क नगरमें एक बोल्शेविक सगठन कायम करके पश्चिमी मोर्चेके सिपाहियोके साथ घनिष्ठ सबध स्थापित किया। अ० अ० ज्दानोफ सेनाके लिये चालित किया गया था। वहा जाकर उसने सेनामें बोल्शेविक प्रचार शुरू किया। व० व० विवविशियेफ और स० म० किरोफ काकेशस और समारामें विद्रोह फैला रहे थे। ल० म० कगानोविच पहले कियेफ और बादमे एकातेरिनोस्लावमे मजदूरो और सैनिकोके बीचमे प्रचार कर रहा था। इस प्रकार मालूम होगा, कि बोल्शेविक इस स्थितिसे फायदा उठानेके लिये तैयार थे।

मध्य-एसियामें युद्धका प्रभाव—युद्धके कारण जो आर्थिक कठिनाइया युरोपीय रूसमे पैदा हुई थी मध्य-एसिया उसके प्रभावसे मुक्त कैसे रह सकता था? चीजोके दाम महगे हो गये थे, करके भारसे लोग वैसे ही दबे हुये थे, और अब युद्धके कारण उसे और बढा दिया गया था। रूसी पूंजीपतियोंको कपासकी जरूरत थी, इसलिये मध्य-एसियाकी कृपि-भूमिमे कही-कही आधेसे ज्यादाको कपासके खेतोमें परिणत कर दिया गया था, जिसके कारण पर्याप्त अनाज पैदा नही हो सकता था, और देशमे अन्नका अकाल फैला हुआ था। रूसी सरकार और उसके गोरे अफसर किर्गिज और कजाक घुमन्तुओंको उनकी चरागाहोंसे वचित करके वहा रूसी किसानोको बसा रहे थे। १९१५ ई०में पैंतालीस लाख एकड बढिया जमीन कजाको और किर्गिजोंसे छीनकर रूसी जमीदारो, सरकारी अफसरो और कुलको (धनी किसानो) को दे दी गई। युद्धके लिये रिसालोंके वास्ते घोडों और खानेके लिये पशुओंको छीन-छीनकर मध्य-एसिया और कजाकस्तानके चरवाहोकी अवस्थाको और भी बुरा बना दिया गया। लोग पहलेहीसे "त्राहि मा, त्राहि मा" कर रहे थे। इसपर जून १९१६ ई०में राजाज्ञा निकली, कि १९ से ४३ वर्षके उमरवाले पुरुषोंको फौजमे भर्ती होना पडेगा, और उन्हे युद्धक्षेत्रमे खाइया खोदने तथा दूसरे कामोंमें लगाया जायेगा। रूसके कानूनके अनुसार रूस-भिन्न जातियोंसे सैनिक सेवा नही ली जा सकती थी। भला जारशाही द्वारा शोषित और

त्पीडित उज्बेक, कजाक, किर्गिज, तुर्कमान क्यो सैनिक सेवा करनेके लिये तैयार होते ? सो भी ऐसे समयमे, जब कि खेतमे फसल काटनेके लिये तैयार थी। उज्बेक और कजाक विद्रोह करनेमे पहले थे। ताशकन्द और समरकन्द जिलेके गावो और कस्वोमे उज्बेकोने सरकारी कचहरियों और दफ्तरोपर आक्रमण किया, और सैनिक भरतीकी सूचीको जला दिया। जुलाई १९१६ ई० के मध्यमे विद्रोह सारे फरगानामे फैल गया। समरकन्द जिलेमे जीजकके पास जारशाही सेनाके साथ बाकायदा लडाई हुई, जिसमें रूसी सेनाने तोपोका इस्तेमाल किया। विद्रोहियोने वेर्नो (आधुनिक अल्माअता) और ताशकन्दके बीचके यातायातको काट दिया, और अपने विरुद्ध भेजी गई हथियारोकी ट्रेन लूट ली। इन हथियारोसे हथियारबन्द होकर किसान रूसी सेनासे लडनेके लिये तैयार हो गये, और अक्तूबरसे पहले जारशाही उनके विद्रोहको दबा नही सकी। तुरगाई (आधुनिक अकत्यूबिन्स्क) जिलेके कजाकोका विद्रोह सितम्बर १९१६ ई० मे शुरू हुआ। उसके दबानेमे जारशाहीको काफी कठिनाई उठानी पडी। इस विद्रोहका नेता अमनगेल्दी ईमानोफ था। जब जिलेके कजाकोने सेनामे भरती होनेसे इन्कार कर दिया, तो रूसी राज्यपालने स्वय जाकर उन्हे समझाना चाहा, इसपर अमनगेल्दीने उससे पूछ दिया—"इजाजत दीजिये सरकार, एक प्रश्न पूछनेकी। अपने अज्ञानके कारण हमे समझमे नही आता, कि इस युद्धमे शामिल हो हम किसकी प्रतिरक्षा करेगे ?" राज्यपालने अमनगेल्दीको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया, लेकिन वह वहासे अन्तर्धान हो गया, और थोडे ही समयमे उसने काफी सख्यामे विद्रोहियोको सगठित कर जारशाही सेनाका मुकाबला पहलेपहल किजिलकुल (लाल सरोवर) मे किया। लडाई सारे दिन होती रही, सेनाको पीछे हटना पडा। अक्तूबर १९१६ ई०के अन्तमे अमनगेल्दी और उसके साथियोने तुरगई नगरको घेर लिया, लेकिन वह उसके ऊपर अधिकार नही कर सके। वहासे हटकर अमनगेल्दीने बतबकरा गावमे किलेबन्दी करके उसे अपना केंद्र बनाया। वहा उसने हथियारोंके बनानेके लिये एक मिस्त्रीखाना स्थापित किया, जिसमे कारीगर रात-दिन लगकर तलवार और दूसरे हथियार बनाने लगे। उसने कजाकोको बन्दूक चलाना और फौजी कवायद सिखाना भी शुरू किया। फर्वरी १९१७ ई०के मध्यमे एक काफी बडी सेना अमनगेल्दीके विरुद्ध भेजी गई, जिसने बतबकरापर अधिकार कर लिया, लेकिन विद्रोहियोको उनके बाप-दादोका दश्त (निर्जन भूमि) शरण देनेके लिये तैयार था। बोल्शेविक-क्रातिके अब आठ ही महीने रह गये थे। उतने दिनो तक किसी तरह लडते और आत्मरक्षा करते अमनगेल्दी और उसके आदमियोने बिताया। बोल्शेविक-क्रातिके समय अमनगेल्दी बोल्शेविकोमे शामिल हो गया, और बोल्शेविक पार्टीका सदस्य बन क्रातिके लिये लडते हुये उसने वीरगति प्राप्त की।

तुर्कमानोमे भी सघर्ष देरतक रहा। तुर्कमान प्राय सारे घुमन्तू थे, इसलिये अपने विरुद्ध भेजी सेनासे आसानीसे बचते हुये वह तुर्कमानिस्तानकी विस्तृत तथा बहुत कुछ निर्जन और रेगिस्तानी भूमिमें घूमते रहे, और कही-कही विद्रोही ईरानकी सीमाके भीतर भी चले गये। जारशाही सैनिकोने जहा भी मौका मिला, तुर्कमानोके डेरोको जला दिया, उनकी सम्पत्ति और पशुओको छीन लिया। इस अत्याचारके कारण कितने ही इलाकोमे जनसख्या आधी रह गई। महाराज्यपाल कुरोपत्किनने ३४७ विद्रोहियोपर मुकदमा चला ५१ को फासी दिलवा दी। जारशाहीने इस तरह अपने अन्तिम दिनोमे मध्य-एशियाके लोगोपर भीषण अत्याचार किये। जहा दक्षिणवाले अपने परिवारो और पशुओको लेकर ईरान और अफगानिस्तानमे भागनेके लिये मजबूर हुये, वहा कितने ही हजार किर्गिज और कजाक चीनी तुर्किस्तानके भीतर भाग गये। सोवियत शासनके स्थापित होनेके बाद उनमेंसे अधिकाश फिर अपनी जन्मभूमिमे लौट आये।

फर्वरी-क्रान्ति—अन्तिम दिनोमें जारशाही शासन सचमुच ही जिन्दा सडी लाश था। ऊपरसे नीचेतक सारे शासक आकठ भ्रष्टाचार और अत्याचारमें मग्न थे। मिथ्या विश्वासकी यह हालत थी, कि एक ढोगी बदमाश ग्रेगोरी रस्पुतिन जारका गुरु बन गया। रस्पुतिन साइबेरियाका एक किसान तथा भूतपूर्व घोडाचोर था। ईसाई साधु बनकर मठोमे इधर-उधर घूमते उसने देख लिया, कि लोगोकी अधश्रद्धासे बहुत फायदा उठाया जा सकता है, इसीलिये वह निकालन महात्मा बन गया।

देहातसे उसकी प्रसिद्धि जल्दी ही राजधानीमें पहुची। जारिना सतो और सिद्धोकी बडी भक्तिन थी। उसके इकलौते पुत्रको डाक्टरोने असाध्य रोगी बतला दिया था, इसलिये वह किसी सतकी करामातसे अपने पुत्रकी रक्षा कराना चाहती थी। रस्पुतिनके किसी गणने जारिनाके पास उसकी लम्बी-चौडी तारीफ की। जारिनाने उसे राजमहलमें बुला लिया, और घोडाचोरने ऐसा जादू चलाया, कि जारिना इस ढोगीको दूसरा ईसा मसीह समझने लगी। घरके काममें ही नही, वल्कि राजके कारवारमे भी रस्पुतिनकी राय ली जाती। उसकी कृपाके बलपर कितने ही लोग बडे-बडे दर्जोपर पहुचे। इस निरक्षरप्राय ढोगीके कहनेपर जार मत्रियो तकको नियुक्त और वर्खास्त करता था, जैसा अभी हाल ही में पजावके एक मुख्यमत्रीके यहा देखा गया। जिस वक्त युद्धक्षेत्रमें रूसी सेनायें हारपर हार खा रही थीं, उस समय जार-परिवार रस्पुतिनकी भविष्यद्-वाणियोका तिनकेका सहारा ले रहा था। उसके हदसे ज्यादा बढे हुये प्रभावको देखकर जारवशी महाराजुल तथा उच्चकुलीन लोग भी रस्पुतिनको खतरेकी चीज समझने लगे। उनके ख्यालमें सारी बुराइयो और विपदाओका कारण वही बदमाश था। उसके विरुद्ध पड्यत्र करके जारके अपने सबधियो तथा दूसरोने १७ दिसम्बर १९१६ ई०को रस्पुतिनको मार डाला, और उसे वर्फ जमी हुई नेवा नदीमे छेद करके बहती धारामे डाल दिया। लेकिन जारशाहीके राजनीतिक और सैनिक ढाचोको निर्वल करनेका कारण रस्पुतिन नही था, और न उसकी वजहसे मजदूरो और किसानोमें देशव्यापी असतोप फैला था। पिछडा हुआ रूस एक आधुनिक महायुद्धके भारको उठाने योग्य नही था। बहुसख्यक सैनिक विना बन्दूकोके थे। वह कैसे लडते? रेलोका यातायात बन्द-सा हो गया था, कारखानोको कच्चा माल और ईंधन नही मिलता था। आहार मिलना मुश्किल हो गया था, फिर लोग क्यो न विद्रोह करनेके लिये तैयार होते, और उस अवस्थामे, जब कि सुसगठित क्रातिकारी व्यापक रूपसे उनमे प्रचार करते मुक्तिका रास्ता दिखला रहे थे? ९ जनवरी १९१७ ई० को "खूनी रविवार"का पर्व-दिन पडा। उस दिन राजधानी पेत्रोग्रादमें युद्धके विरुद्ध भारी प्रदर्शन हुआ। मास्को, बाकू, निजनी-नवोगोरद तथा दूसरे नगरोमें भी लोगोने अपने विरोधी भावोको "खूनी रविवार"के विशाल जलूसोद्वारा प्रकट किया। मास्कोमें लाल झडा लेकर "युद्ध बन्द करो" का नारा लगाते हजारो कमकर सडकोपर निकल पडे, जिन्हे सवार-पुलिसने जबर्दस्ती तितर-बितर कर दिया। कितने ही नगरोमें हडताले हुईं। मेन्शेविक और समाजवादी क्रातिकारी शासनमे परिवर्तन करना चाहते थे, लेकिन इस समय युद्धके पक्षमे होना वह अपना राष्ट्रीय कर्त्तव्य मानते थे। १४ फर्वरी १९१७ ई० को दूमाके उद्घाटनके दिन बोल्शेविकोकी प्रेरणासे भारी सख्यामे मजदूर सडकोमे "स्वेच्छाचारिताकी क्षय", "युद्ध बन्द करो" के नारे लगाते निकल आये। फर्वरीके उत्तरार्धमे पेत्रोग्रादमे क्रातिकारी आन्दोलन बडी तेजीसे बढा। १८ फर्वरीको पुतिलोफके कारखानेमें तीस हजार मजदूरोने हडताल कर दी, और २३ फर्वरीके सवेरे जब उन्होने अपना जलूस निकाला, तो दूसरे कारखानोके भी बहुतसे मजदूर शामिल हो गये।

पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक पार्टीकी कमीटीने लोगोसे कहा, कि ८ मार्च (२३ फर्वरी)को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूरिनोका दिवस राजनीतिक हडताल और प्रदर्शनोके साथ मनाना चाहिये। उस दिन ९०००० स्त्री-पुरुषोंने काम छोड दिया। अगले दिन ९ मार्च (२४ फर्वरी) को दो लाख मजदूरोने हडताल कर दी, और नगरके सभी भागोमे क्रातिकारी सभाये होने लगी। पुलिसने सावधानी करते हुये नेवा नदीके सभी पुलोपर अधिकार कर रक्खा, लेकिन नेवा उस वक्त वर्फ बनी हुई थी, इसलिये मजदूरोको शहरमे आनेके लिये पुलोकी अवश्यकता नही थी। १० मार्च (२५ फर्वरी) को राजनीतिक हडतालने सार्वजनिक हडतालका रूप ले लिया। पेत्रोग्रादके सेनापतिको जारने हुक्म भेजा—"मै तुम्हे हुक्म देता हू, कि कलसे पहले ही राजधानीकी दुर्व्यवस्थाका अन्त कर दो।" इसपर पुलिसने प्रदर्शनकारियोंको छातोपर रखी मशीनगनोकी गोलियोंमे भूनना शुरू किया। सडको और चौरस्तोमे नगरके केन्द्रीय भागके सभी जगहोमे सैनिक बैठे हुये थे। मजदूरो और बोल्शेविकोंको पकड-पकडकर अधाधुन्ध जेलोमे बन्द किया जा रहा था। पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक कमीटीके सदस्य जेलोमे बन्द कर दिये गये थे। इस समय मोलोतोफके

नेतृत्वमे केन्द्रीय कमीटीका ब्यूरो विद्रोहका सचालन कर रहा था। यहा यह याद रखना चाहिये, कि अभी तक रूसमे पुराना पचाग चल रहा था, जिसकी तारीख तेरह दिन बाद पडती थी——२३ फर्वरी वस्तुत ८ मार्च थी। प्रथम क्राति मार्चमे हुई थी, लेकिन पुराने पचागके अनुसार उसे फर्वरी-क्राति कहा जाता है। इसी तरह आठ मास बाद होनेवाली बोल्शेविक-क्राति वस्तुत. नवम्बरमे हुई थी, लेकिन पुराने पचागके अनुसार अक्तूबरमें होनेसे उसे तबसे आजतक अक्तूबर-क्राति कहा जाता है।

२७ फर्वरी (१२ मार्च)को पेत्रोग्रादमे सेनापर क्रातिका प्रभाव पडने लगा, सैनिक समझने लगे, कि उनका हित जारशाहीके साथ रहनेमे नही, बल्कि विद्रोहियोका साथ देनेमें है। इसी दिन दो रेजीमेटोने वीबोर्ग मुहल्लेमे कमकरोका साथ दिया। मजदूरोने एक हथियारखानेपर अधिकार करके वहासे चालीस हजार बन्दूके और दूसरे हथियार लेकर अपनेको हथियारबन्द किया। उन्होने जेलोसे राजनीतिक बदियोको छुडा लिया। इसी दिन जेनरल खबारोफने राजधानीमे मार्शल-ला घोषित कर दिया। लेकिन जब सेनामे ही विद्रोह फैल रहा हो, तो मार्शल-ला क्या कर सकता था ? उस समय जार नगरसे बाहर डेरा डाले हुये थ, और जारिना राजधानीमे बैठी अपने पतिके पास बराबर आशापूर्ण सदेश भेज रही थी। उसने अपने एक पत्रमें लिखा——"यह गुण्डोका आन्दोलन है। तरुण लडके-लडकिया चारो ओर चिल्लाते फिर रहे है, कि रोटी नही है—यह केवल लोगोको भडकानेके लिये।" जारने युद्धक्षेत्रपर हुक्म भेजकर सेनाको पेत्रोग्राद भेजनेके लिए कहा। एक सेना भरी हुई ट्रेन जेनरल इवानोफके नेतृत्वमे मुश्किलसे जार्स्कोयेसेलो (पेत्रोग्रादके पास जारग्राम) मे पहुची भी, किंतु सैनिकोने क्रातिकारी सिपाहियोसे मेल-मिलाप बढाकर अपने जेनरलको पकडवाना चाहा। जारने अब जार्स्कोयेसेलोको भी अरक्षित देखकर पेत्रोगादके लिये ट्रेनपर प्रस्थान किया, लेकिन वहा भी उसे खतरा मालूम हुआ, और ट्रेनको प्स्कोफकी ओर मोड दिया गया। सभी जगह सेना क्रातिकी ओर हो रही थी।

१९०५ ई०की क्रातिमें हम देख चुके है, कि किस तरह अपने आप मजदूरोने सगठित रूपसे जारशाहीका मुकाबिला करनेके लिये कमकर-प्रतिनिधि-सोवियते सगठित की। अब इस क्रातिमे भी उस तजर्बेसे फायदा उठाकर मजदूर सिपाही प्रतिनिधियोकी सोवियतें कायम हुई, जिनमें सबसे पहले कायम हुई थी पेत्रोग्राद सोवियत। २७ फर्वरी (१२ मार्च) को क्रातिकी विजय हुई। हथियारबन्द मजदूरो और सैनिकोने राजनीतिक बदियोको जेलोसे छुडा लिया। इस प्रकार हम देखते है, कि जारशाही शासनयत्रका स्थान लेनेके लिये सोवियतका पहला तजर्बा तुरन्त काममें आया। अभी सडकोमे गोलिया चल रही थी, इस वक्त भी करखानोके मजदूर सोवियतके लिये अपने सदस्य निर्वाचित कर रहे थे। फर्वरी १९१७ ई० की सोवियतें केवल मजदूरो ही नही, बल्कि सैनिकोके प्रतिनिधियो द्वारा भी सगठित की गई थी। २७ फर्वरी (१२ मार्च) तक निर्वाचन हो गया था,। उसी शामको पेत्रोग्राद सोवियतकी प्रथम बैठक हुई। पेत्रोग्रादमे क्रातिके सफल होनेकी खबर मिलते ही सारे देशमें क्राति फैल गई। २७ फर्वरी (१२ मार्च) को ही मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीके सगठनोने वहाके मजदूरो और सैनिकोसे पेत्रोग्रादकी क्रातिका समर्थन करनेकी अपील की। अगले दिन बडे-बडे कारखानोके मजदूर हडताल करके सडकोपर निकल आये, और वहीपर मास्को छावनीके सैनिक उनमें आ मिले। १ मार्च (१४ मार्च)को मजदूरोने बोल्शेविक बदियोको मुक्त किया, जिनमे प्रसिद्ध क्रातिकारी तथा पीछे गृहमत्री फ० ई० जेजिन्स्की भी था। निजनी-नवोग्राद (आधुनिक गोर्की) में भी क्रातिकी विजय हुई। २ (१५) मार्च को तुलाके हथियारके कारखानोके मजदूरोने विद्रोह कर दिया, और वहाके जारशाही अफसरोको पकडकर अपनी सोवियत (पचायत) स्थापित की। यद्यपि क्राति सफल हुई थी मजदूरो और सिपाहियोकी कुर्बानी और बलपर, लेकिन उससे प्रथम लाभ उठानेवाले थे अवसरवादी समाजवादी-क्रातिकारी और मेन्शेविक। १ मार्चकी रातको उन्होने बोल्शेविकोसे बिना पूछे ही दूमाके प्रतिनिधि सदस्योंके साथ समझौता करके सरकार बनानेके लिये समझौता कर लिया। २ मार्चके सबेरे राजुक ल्वोफके नेतृत्वमे अस्थायी सरकार घोषित कर दी गई। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि अस्थायी सरकारके सभी सदस्य

पुरानी व्यवस्थाके समर्थक थे। ल्वाफ बहुत बड़ा जमींदार था। मिल्यूकोफको विदेश-मंत्री बनाया गया। गुचकोफ अक्तूबरी दलका नेता तथा मिलमालिक और बैंकर था, जिसे युद्ध-उद्योग-समितिका युद्ध-मंत्री बनाया गया था। प्रगतिशील पार्टीका सदस्य तथा कपड़ामिलका मालिक कोनोवलोफ व्यापार उद्योग-मंत्री बनाया गया, और चीनी कारखानोंका मालिक करोड़पति तेरेस्चेंको वित्त-मंत्री नियुक्त किया गया। ग्यारह मंत्रियोंमें केवल एक जनसमाजवादी दल (पीछे समाजवादी क्रान्तिकारी दल) का सदस्य वकील केरेन्स्की था, जिसे न्याय-मंत्री बनाकर टरका दिया

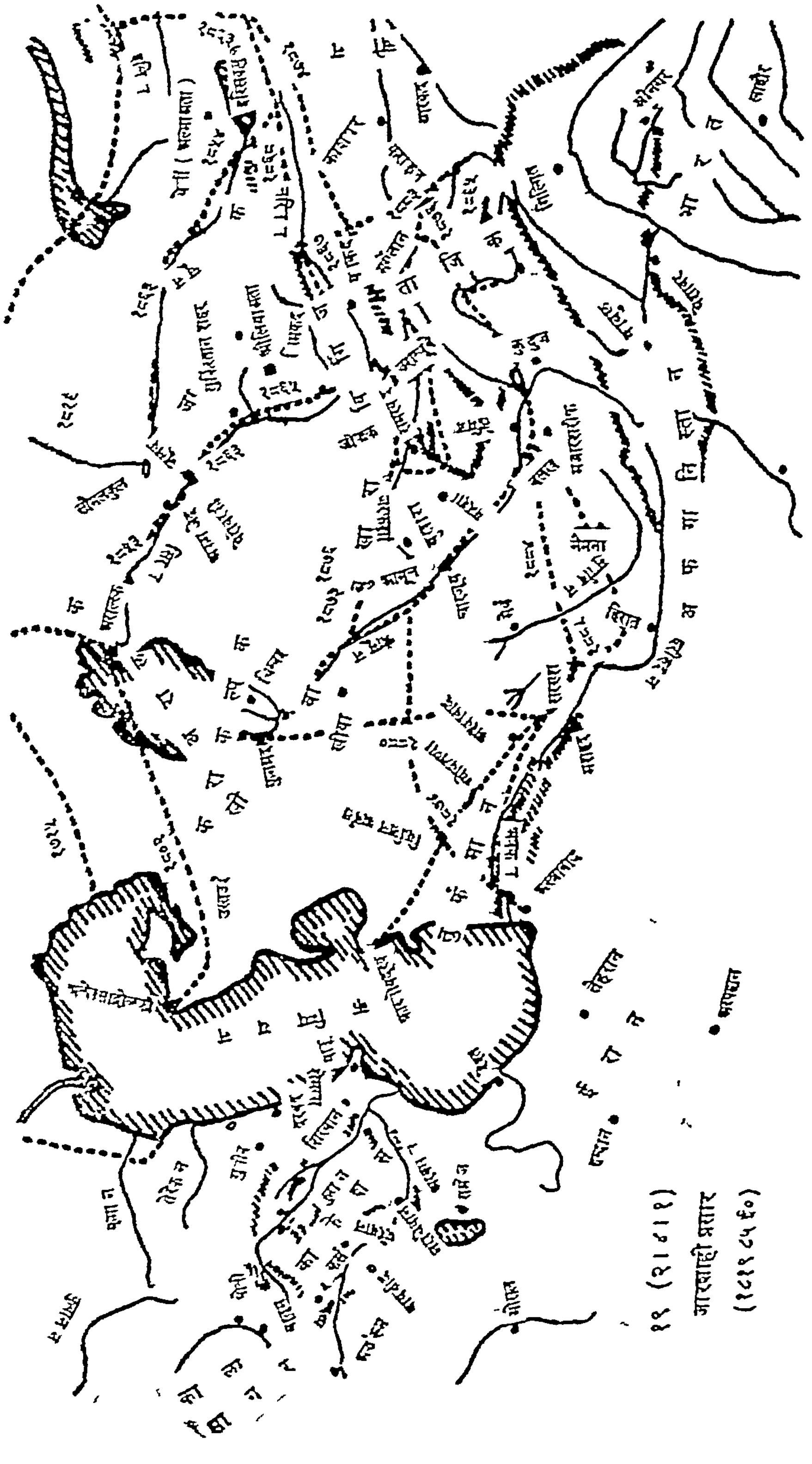

गया। इस मंत्रिमंडलके बारेमें लेनिनने अपने एक पत्रमें लिखा था—"हितकारी व्यक्तियोंका समूह नहीं है यह सरकार। यह रूसमें राजनीतिक शक्ति हथियानेमें सफलता पानेवाले एक नये वर्गके प्रतिनिधि हैं। यह पूंजीपति जमींदारों और पूंजीवादियों (बूर्ज्वा वर्ग) के प्रतिनिधि हैं, जो कि लम्बे अर्सेसे हमारे देशका आर्थिक तौरसे शासन कर रहे थे।"

अस्थायी सरकारका पहला प्रयत्न यह हुआ, कि राजमुकुटकी रक्षा कैसे की जाय? जार पहले ही अधिकार वंचित होकर प्स्कोफमें बैठा हुआ था। गुचकोफ और शुलगिनने अस्थायी सरकारके नामसे वहां पहुंचकर जारपर जोर दिया, कि वह अपने पुत्र अलेक्सीके पक्षमें सिंहासन त्याग दे। लेकिन जारने अपने भाई मिखाइलके पक्षमें सिंहासन-त्याग करना स्वीकार किया। पेत्रोग्राद लौटनेपर दूमा सदस्य गुचकोफने मजदूरोंके सामने भाषण देते हुये निकोलाइ II के सिंहासन-त्यागको घोषित करते हुये अन्तमें "सम्राट् मिखाइल जिंदाबाद" के साथ अपने व्याख्यानको समाप्त किया। इसपर मजदूरोंने तुरन्त गुचकोफके गिरफ्तार करनेकी मांग पेश की। अस्थायी सरकारने बहुत जल्दी देख लिया, कि राजवंशकी रक्षा नहीं की जा सकती, और उसने एक प्रतिनिधिमंडल भेजकर मिखाइल रोमानोफसे सिंहासन त्यागकर सारी शक्ति अस्थायी सरकारके हाथमें दे देनेकी प्रार्थना की। ३ मार्च को मिखाइल रोमानोफने भी सिंहासनसे इस्तीफा देनेके पत्रपर हस्ताक्षर किया, और लोगोंको अस्थायी सरकारकी आज्ञा माननेके लिये कहा।

इस प्रकार रूसका अंतिम राजवंश खतम हो गया, लेकिन क्रांतिसे फायदा उठाकर प्रजाके नामसे जिस गुटने शासन अपने हाथमें लिया, वह साधारण जनताके हितोंकी पक्षपाती नहीं, बल्कि उसने पश्चिमी युरोपकी तरह सम्पत्तिशाली पूंजीवादी वर्गके लिये शासनयंत्रको अपने हाथमें संभाला था। लेकिन हिन्दीकी पुरानी कहावत क्या झूठी हो सकती है—"जो शालिग्रामको भूनकर खा गया, उसे बैंगन भूनकर खाते कितनी देर लगेगी?" जिन कारणोंने जारशाही जैसे शक्तिशाली शासन-यंत्रको उखाड़कर फेंक दिया, वह अब भी मौजूद थे।

स्रोत ग्रन्थ

१ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्रुवेर आदि मास्को १९१०)
२. पो गरामि पुस्तिन्याम् स्रेद्नेइ आजिइ (न. म. फेदोरोव्स्की, मास्को १९३७ ई०)
३ पुतेशेस्त्विये व् जापद्नीइ किताइ (ग. ये और म ये ग्रूझिमाइलो, पेतेरबुर्ग १९०१)
४. इस्तोरिया दिप्लोमातिइ (३ जिल्द, व प पोतेम्किन्, लेनिनग्राद १९४५)
५ यर्जीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (स ग विलिन्स्की आदि मास्को १९१४)
६ इस्तोरिया रोस्सिइ (२९ स सोलोवियेफ्, पेतेरबुर्ग, १८७९-८५)
७ तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (३ जिल्द १८८०)
८. History of U S. S R. (A. M. Pankratova)
९ Heart of Asia (E D Ross)
१० Manuel historique de politique etrengere (E Boureois, Paris 1927)
११ La rivalite anglo-russe on xix siecle on Asie (A M F Roure, Paris 1908)
१२ Europe and China (G F Hundson London 1931)
१३ Russo-Chinese Diplomacy (Ken Shen-Feigh, Shanghai 1928)
१४ Histoire de Russie (N Brian-Channov Paris 1929)

अध्याय २

खोकन्दके खान

(१७४७–१८७६ ई०)

अस्त्राखानियोंके शासनके निर्बल होनेपर उत्तरके कजाकोंने नोच-खसोट शुरू कर दी। इससे पहले जुगर-कल्मक अपने प्रभुत्वको बढाते चले आये थे। १७४० ई०तक ताशकन्द और तुर्किस्तान शहरके इलाकोंपर कजाकोंका पूरा अधिकार हो गया था, और पलासीके युद्धके समय (१७५७ ई०) चीनने जब जुगरोंकी शक्तिको खतम कर दिया, उसी समय अन्तर्वेदमें शक्तियोंका फिर बटवारा हुआ—मगितोंने बुखारा और अन्तर्वेदकी भूमिको अपने हाथमे किया, फरगाना और ताशकन्दपर एक नये वशकी स्थापना हुई। इस इलाकेके नगरोमे प्रभावशाली खोजा (सैयद) शासन कर रहे थे, जिन्होंने केंद्रके निर्बल होनेपर अपनेको स्वतत्र शासक बना लिया। फरगानाका शासक यादगार खोजा भी ऐसा ही था, जिसकी लडकीसे शाहरुख बेकने शादी की, जिसके वशमे निम्न खान हुये थे—

१.	शाहरुख बेक, यादगार खोजा-दामाद	१७४७ ई०
२	रहीम बेक, शाहरुख-पुत्र	
३	अब्दुलकरीम बेक, शाहरुख-पुत्र	
४.	एर्दनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र	—१७७० "
५	नरबुले, नरबुते, अब्दुलकरीम-दौहित्र	१७७०-१८०० "
६	आलम खान, नरबुले-पुत्र	१८००-९ "
७	उमर, नरबुले-पुत्र	१८०९-२२ "
८	मुहम्मद अली, मदली, उमर-पुत्र	१८२२-४२ "
९.	शेरअली, हाजिबी-पुत्र	१८४२ "
१०.	मुराद, आलिम-पुत्र	१८४२ "
११	खुदायार, शेरअली-पुत्र	१८४२-५७ "
१२	मुल्ला, शेरअली-पुत्र	१८५७-५९ "
१३	शाहमुराद, सरिसक-पुत्र	१८५९ "
	खुदायार (पुन)	१८५९ "
१४	सैयद सुल्तान, मुल्ला-पुत्र	१८५९-६५ "
	खुदायार (पुन)	१८६५-७५ "

१. शाहरुख बेक, यादगार खोजा-दामाद (१७४७ ई०)

जैसा कि कहा, अस्त्राखानियोंकी निर्बलतासे फायदा उठाकर इसने अपना वश स्थापित किया। वोल्गाके पास रहनेवाले तुर्कोंके किसी कबीलेका यह एक अमीर किंतु राजवशी नहीं था। १८ वीं सदीके आरभमें यह वोल्गा-तटसे फरगाना पहुचा, और खुर्रमसरायके शासक यादगार खोजाने इसे अपनी लड़की दे दी। वह अपने अनुयायियोंके साथ खोकन्दसे बारह मील पश्चिम, गूरगान (कूरकान) स्थानमें बस गया। शायद शाहरुख मगीती था और खोकन्दमें प्रधानता रखनेवाली शाखासे सबध रखता था। शाहरुखने समुरको मारकर उसके राज्यको हाथमें कर उसे आगे बढ़ाया। चाहे वह छिंद-गिन् वशका न भी रहा हो, लेकिन अपनी धाक जमानेके

लिये छिङ-गिस्के खूनका दावा करना फायदेकी बात थी, जैसा कि उससे एक सौ वर्ष पहले बाबर और उसके वशजोने भारतमें किया था।

२. रहीम बेक, शाहरुख-पुत्र

बापके मरनेपर बेटा उत्तराधिकारी हुआ, लेकिन अभी राज्य छोटा होनेसे वह खान न होकर बेक (अमीर) ही रहा।

३. अब्दुलकरीम बेक, शाहरुख-पुत्र

रहीम बेकके मरनेपर उसका भाई अब्दुलकरीम गद्दीपर बैठा, जिसके समयसे खोकन्दका प्रताप बढने लगा। इसीने वर्तमान खोकन्द नगरको आबाद करके उसे अपनी राजधानी बनाई।

४. एर्दनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र (–१७७० ई०)

नही कहा जा सकता, एर्दनी बेक अब्दुल-करीमका पुत्र था या भाई। इसने फरगानाके सभी बेकोको अपने अधीन किया। १७५८ ई०में ताशकन्द चीनके हाथमे चला गया था। चीनी जेनरल चाउ-ह्वो-येइ ने खोजी जानका पीछा करते अपनी एक सैनिक टुकडीको बुरुतो (करा किर्गिजो) को दबानेके लिये भी भेजा। एर्दनी बेकने मास और शराबसे उनका सत्कार किया, और लौटते वक्त उनके साथ गया। उसने अपने एक अफसरको सम्राट् च्यान्-लुङ (काउ-चुङ १७३७–१७९५ ई०) के दरबारमे अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा। अन्दिजानके शासक तुकतू मुहम्मद, मरगिलानके इलास पिङलीने भी बाज और दूसरी भेटोके साथ चीन-दरबारमें अपने दूत भेजे। १७६० ई०में तोकतू मुहम्मद स्वय पेकिङमे उपस्थित हुआ। एर्दनीने ओश (अर्जीबी) के इलाकेपर आक्रमण किया, लेकिन चीनी जेनरलके हुक्मपर उसे लौट जाना पडा। १७६३ ई० में बुरुतोकी भूमिपर चीनियोने दूसरी बार आक्रमण किया। इस तरह १७७० ई० मे जब एर्दनी मरा, उस समय चीनका प्रभाव मध्य-एसियामें जोरोंपर था और उसकी इच्छाके विरुद्ध स्थानीय शासकोंको मनमानी करनेकी हिम्मत नही थी।

५. नरबुते, नरबुले, अब्दुलकरीम-दौहित्र (१७७०-१८०० ई०)

अब्दुलकरीम बेककी लडकी अर्थात् एर्दनी बेककी बहिनको बाबर-वशज अब्दुर्रहीम बेकने शादी की थी, जिससे नरबुते बी पैदा हुआ। इस प्रकार वह बाबरके प्रतापी वशका उत्तराधिकारी होनेका भी दावा कर सकता था, यद्यपि इस समय भारतमें इस वशकी भी दशा बहुत बुरी थी। नरबुतेके गद्दीपर बैठनेसे पहले सुलेमान बेक और शाहरुख बेक बारी-बारीसे कुछ महीनो तक खोकन्दकी गद्दीपर बैठ चुके थे। नरबुलेका बाप अब्दुर्रहीम बातिर (बहादुर) उज्बेकोके मिग-कबीलेका और इसफाराके इलाकेका शासक था। दूसरी परम्परा यह भी है, कि यह यामच बी (बाबर)का वशज था। इसफारा लेनेके लिये एर्दनीने अब्दुर्रहमान (अब्दुर्रहीम) को धोखा देकर मार डाला, लेकिन उसके पुत्र नरबुतेको बच्चा समझकर छोड दिया। एर्दनीके उत्तराधिकारियोके भी विच्छिन्न या भाग जानेपर खोकन्दियोने नरबुतेको लाकर गद्दीपर बैठाया। यह बुखाराके अमीर शाह-मुरादका समकालीन था, और शायद उसकी अधीनता भी स्वीकार करता था। नरबुतेके पास पचास हजार सेना थी। चीन-सम्राट्ने उसे "पुत्र" की उपाधि प्रदान की थी। हर दूसरे साल घोडो, समूरी खालो आदिकी भेट लेकर खोकन्दका दूत चीन जाता था, और बदलेमें लाखो रुपयोकी बहुमूल्य चीजे इनाम मिलती थी। उस समय चीनी सीमातसे आगे सवारीके लिये सदूकनुमा घोडागाडी चढनेको मिलती, जिसमें दो घोडे जुतते। खाना-पीना सारा सामान इसी गाडीमे रक्खा जाता। जगह-जगह मुसाफिरोके लिये पडाव बने हुये थे, जहा पाच सौ चीनी सैनिक रहते थे, यात्री इन्ही पडावोमे रातको ठहरते। रास्ता ऐसे इलाकोसे जाता था, जहा आबादी बहुत कम थी। चीनकी सीमासे एक मासके करीब पेकिङ था। चीनी दरबारके अपने कायदे थे। दूतको काउ-ताउ

(दडवत्) करनी पडती, फिर प्रतिहार चीनी-तुर्कीमे कुछ बोलता, जिसका अर्थ था "सम्राट् श्रीमुख से पूछ रहे हैं, कि मेरा पुत्र नरबुते स्वस्थ और प्रसन्न तो है?" दूत फिर दडवत् करता, और पहलेसे सिखलायें हुये वाक्योमे उत्तर देता—"नरबुतेको इसके सिवा और कोई इच्छा नही है, कि परमभट्टारककी आज्ञाका पालन करें।" भेंट-मुजरेके बाद सम्राट्ने दस लाख मूल्यका इनाम उसे दिया, जिसे घोडागाडियों में रख दिया गया। अफगान राजदूतने नरबुतेके बारेमें लिखा था—"नरबुतेने अपने लिये एक बडा ही सुन्दर महल बनाया है, जिसकी दीवारें चमकीली प्रोसलीन (चीनी मिट्टी) से ढकी हैं। वह दस हजार सिपाहियोंके साथ शुक्रवारकी नमाज पढता है।" उसके भोजनमें चावल भी सम्मिलित था। अफगान दूत मासूम खोजाके अनुसार नरबुतेने खोजन्द छोड़ सारे फरगानाको जीत लिया था, अन्दिजान, नमगान, ओश आदिके नगर उसके हाथमे थे। खोजन्दके शासक फाजिल बी और तत्पुत्र तथा उरातिप्पाके राज्यपाल खुदायारसे उसका झगडा रहता था। उसने अमीर बुखारासे मिलकर उरा-तिप्पापर अधिकार करना चाहा, लेकिन खुदायारने बुरी तरहसे हराकर भगा दिया। १७९९ ई०में नरबुतेने ताशकन्दके शासक यूनस खोजापर आक्रमण किया। कजाकोंके खान एलबर्सके मारे जानेके बाद १७४० ई०में ताशकन्द जुगर कल्मकोंके हाथमे चला गया था, जिनकी ओरसे कुसियक बी १७४९ ई० तक शासन करता रहा। जुगर साम्राज्यको नष्ट करके १७५० ई० में चीनियोंने ताशकन्दपर अधिकार कर लिया। कुछ दिनो छोटे छोटे अमीर जहा तहा राज्य करते रहे, फिर खलीफा अबूबकरके वशज यूनस खोजाने ताशकन्दको अपने हाथमे कर लिया, और इसने आसपासके इलाकेको दबाकर १७९८ ई०में महाओर्दूके कजाकोंको भारी दड दिया। इसी यूनससे १७९७ ई०में नरबुतेकी पहली भिडत हुई। १८०० ई० में नरबुतेको यूनसने पकडकर मार डाला।

६ आलम खान, नरबुते-पुत्र (१८००-९ ई०)

नरबुतेके मारे जानेके बाद उसके बडे बेटे आलमने अपने भाई रुस्तम बेक और दूसरे सबधियोंको मारकर गद्दी सभाली। खोकन्दके खानोंमें पहलेपहल इसीने खानकी पदवी धारण की, और अपने नामका खुतबा तथा सिक्का चलाया। यूनस खोजा कजाकोंके साथ खोकन्दपर चढा, खुदायार-पुत्र बेक मुराद भी उसका सहायक था। सिर-दरियाके आर-पारसे दोनो सेनाओंने गोलाबारी की, किन्तु अन्तमें यूनसको खाली हाथ लौट जाना पडा। १८०३ या १८०५ ई०मे आलम खानने ताशकन्दको एक बार सर किया, लेकिन अन्तिम विजय उसके भाई उमर खानके हाथो हुई, जिसने यूनसके पुत्रको वहासे भगा दिया। आलमने कजाकोंको हराकर बुखारासे उरातिप्पाको छीननेकी पहली बार असफल कोशिश की, दूसरी बार उसे सफलता मिली। तो भी खुदायारके भतीजे खानने उरातिप्पको फिर लौटा लिया।

चीनियोंके पूर्वी तुर्किस्तानके अल्ती शहरपर विजय प्राप्त करनेपर वहाका शासक खोजा सेरिसक बुखारा भाग गया। उसे काश्गर न लौटने देनेके लिये चीनने खोकन्दको हिदायत दे रक्खी थी, जिसके लिये खोकन्दको कुछ वार्षिक रुपये भी मिलते थे, जिसे लानेके लिये हर दूसरे-तीसरे साल चीनमें खोकन्दसे दूत जाता था। एक बार चीनने कारणवश रुपया नही दिया, जिसपर आलमने खोकन्दसे काश्गरकी ओर जानेवाले बुखाराके कारवाको रोक दिया। इसकी खबर मिलने-पर चीनने पेंशनकी बाकी रकमको भी देकर फिर खोकन्दको राजी कर लिया। आलम खान बडा ही स्वेच्छाचारी और दुराचारी था। अपनी प्रजाकी लडकिया उसके मारे सुरक्षित नही थी। निरपराध लोगोंको भी मरवा डालनेका उसे व्यसन हो गया था। एक बार उसने अपने भाई उमरबेक और मामा तुगाईके सचालनमें भारी सेना देकर हुक्म दिया—कजाकोंके देशको जाकर बरबाद कर दो। हुक्मको न पूरा करना खानके क्रोधका भाजन होना था। मौसिम प्रतिकूल था, लेकिन तो भी खानके हुक्मको पूरा किया गया। कजाकोंने अधीनता स्वीकार की, और उमरने भाईको सूचना दी, कि मैंने कुछ कजाकोंको मार डाला और बाकियोंने अधीनता स्वीकार कर ली। ऐसी दया दिखलानेके लिये आलम खानने उसे गाली देकर फिर बड़ी क्रूरतासे नरसहार करनेके लिये लौटा दिया। उमरने

जाकर देखा, कि उसके पास दस हजार सेना है, जो इतने बडे कामके लिये पर्याप्त होगी, इसमें सदेह था। उसने तुगाई तथा दूसरे अफसरोसे सलाह ली। सबने कहा, कि हमारे घोडे लौटकर ताशकन्द जानेकी शक्ति नही रखते, ऊपरसे मौसिम भी बहुत खराब है, साथ ही कजाक मुसलमान और निरपराध है, उनका कत्ल-आम करना ठीक नही है, रेगिस्तानमे बिखरे हुये कजाकोको पकड पाना भी सभव नहीं है। उमरने पूछा--"फिर क्या करना चाहिये?" इसपर मामाने जवाब दिया—"उमरबेकको खान बनना होगा। हम आलम खान-जैसे अत्याचारीकी आज्ञा नही मान सकते।" वही उसने उमरके लिये राजभक्तिकी शपथ ली। सेनाने खोकन्दके भीतर पहुचकर उमरको खान घोषित किया। आलमके साथ तीन सौ आदमी रह गये थे। उसने अपने अनुयायियोमें खूब इनाम बाटे, और अपने खजाने, हरम, अन्त पुर, पुत्र शाहरुखके साथ ताशकन्दसे खोकन्दके लिये प्रस्थान किया। रास्तेमें एक किलेमें घिर गया, और आत्मसमर्पण करनेसे भी इन्कार कर दिया। रातको वहीं मुकाम रहा। सवेरे उठकर देखा, तो उसके तीन सौ अनुयायी भी साथ छोडकर खोकन्द चले गये थे। आखोमे आसू भरकर आलमने अपने पुत्रको हजार तिला (पाच सौ गिन्नी) दे अमीर हैदरके पास बुखारा भेज दिया। अपनी बेगमो तथा खजानोको गावके एक मुखियाके हाथमें सौंप बीस सवारो तथा अपने दीवानबेगी (वजीर) के साथ दर्राकोह चला गया। इस दर्रा (पहाडी डाडे) से खोकन्द नगर दिखलाई पडता था। दीवानबेगीने खानको खोजन्द चलनेकी सलाह दी, जहापर चार हजार खोकन्दी सैनिक रहते थे। लेकिन आलम खान अब भी अपनी राजधानीमे जानेका हठ कर रहा था। इसपर उसके और भी साथी हट गये और सिर्फ तीन आदमियोके साथ वह चला। शत्रु सैनिकोने उसका पीछा किया, और खानका घोडा दलदलमे फस गया। उसने दीवानबेगीसे घोडा मागा, किन्तु उसने उसे न दे स्वय दौडाते शहरका रास्ता लिया। उमरके सिपाहियोमेंसे किसीने खानकी पीठमें गोली माकर रातमें दफना दिया। यह १२२४ हि० (१६ II १८०९–७ I १८१० ई०) की बात है। पहले उमरने दीवानबेगी मुहम्मद जहूरका स्वागत किया, पीछे उससे सारा धन छीन लिया। जहूरका अन्तिम समय भक्ति-पूजामें बीता।

मध्य-एसियाके शासकोमे एक बडी कमजोरी यह थी, कि वह शेखो-खोजोंके बडे भक्त होते थे, उनकी दिव्य शक्तिपर बहुत विश्वास करते थे, लेकिन आलम इसे नही मानता था। खोकन्दमे एक बहुत बडा शेख रहता था, जिसके बहुत से मुरीद (चेले) थे, और जिसकी दिव्य शक्तिकी बडी प्रसिद्धि थी। आलमने एक बार उस शेखको बुलाया, और तालाबके किनारे रस्सी तानकर कहा—"ओ शेख, कयामतके दिन निश्चय ही तुम अपने चेलोको पुलेसिरात (स्वर्ग और नर्कके बीचकी पतली दीवार) को पार कराओगे, मैं चाहता हू, कि इस रस्सीसे जरा तुम इस तालाबको पार हो जाओ।" शेखने बहुत कहा, कि कुरानमें दिव्य शक्ति दिखलाना मना है। आखिर शेखको जबर्दस्ती रस्सीपर चढाया गया। गिरना तो था ही, इसपर लोगोने डडे मार-मारकर उस ढोंगीके प्राण ले लिये। उसने बहुत-से दरवेशो और साधुओको पकडकर ऊटवानी करनेके लिये मजबूर किया था। आलम खानके जारी किये हुये सिक्के चादी मिले हुये कासेके थे।

७ उमर खान, नरबुते-पुत्र (१८०९–२२ ई०)

आलम खानने अपने बेटे शाहरुखको बुखारा भेजा था, लेकिन वह वहा न जाकर ताशकन्द चला गया। पहले वहाके कुशबेगी (सेनापति) ने खानजादेका स्वागत किया, लेकिन आलम खानके मरनेकी खबर पाकर उसने उसे खोकन्द रवाना कर दिया, और चचाके पास पहुचनेसे पहले ही वह रास्तेमे मार डाला गया। उमर कमजोर दिलो-दिमागका आदमी था। शासन वस्तुत मामा मुहम्मद रजाबेक तुगाईके हाथमें था। उमरके शासनकालमें खोकन्द एक बहुत बडा व्यापार-केन्द्र बन गया। इसीके समय उरातिप्पा भी खोकन्दके हाथमे चला आया। यही नहीं, तुर्किस्तान-शहरको भी उसने छीन लिया और वहाके अन्तिम कजाक खान तोगाईने बुखाराम भागकर शरण ली, और वही मारा गया। मुहम्मद रजब कराजा बुखारामें भागकर ठहरा हुआ था। आलम खानके बाद वह खोकन्द लौटा। उस समय मामा मुहम्मद रजाबेक और उसके मित्र सेनापति कितकी कराकल्पक

में वैमनस्य हो उठा। एक दिन महलमें भोजनके लिये निमंत्रित मुहम्मद रजाको पकडकर जेल में डालकर मार डाला गया। इसपर कितकीको भी बोटी-बोटी करके मरवाकर उसकी सपत्ति जब्त कर ली। मुहम्मद रजब कराजा अब खोकन्दका राज्यपाल तथा दरबारमे बहुत प्रभावशाली अमीर बन गया।

उमरने अपने दूत भेजकर रूसियोको खोकन्दमें अपने कारवा भेजनेके लिये कहा, और यह भी वचन दिया, कि यदि हमारी ओरके आधे रास्तेमें कारवाको लूटा गया, तो मै व्यापारियोंकी क्षतिपूर्ति दूगा। इसपर कारवा आने-जाने लगा। किजिलजारमे एक खोकन्दी दूतका रूसी सैनिकसे झगडा हो गया, जिसे रूसी सिपाहीने मार डाला। रूसियोने एक हजार तिला (पाच हजार गिन्नी) जुरमानाके रूपमे दूतके मारे जानेके लिये दिया। १८१३-१४ ई० में कर्नल नजारोफने खोकन्दकी यात्रा की, और रूसी सीमातपर खोकन्दी दूतके मारे जानेके लिये अफसोस करते हुये बहुत समझाया। नजारोफ रक्षक सैनिकों और बीस हजार रूबलके मालके साथ गया था। उसे महलके बगीचेमे ठहराया गया, आदमियो के लिये सफेद रोटी, चावल, चाय, खरबूजा आदि खानकी ओरसे मुफ्त दिया जाता था, और जानवरोको घास-चारा भी। बारह दिनकी प्रतीक्षाके बाद नजारोफसे खानने मुलाकात की। नजारोफ घोडेपर सवार था, लेकिन उसके कसाक पैदल थे। महलके पास जाकर नजारोफ घोडेसे उतर गया। रूसियोको देखनेके लिये सडको और मकानोकी छतोपर तमाशबीनोकी भीड थी। खान दर्शन देनेके लिये झरोखेपर बैठा था। नजारोफसे कहा गया, कि जैसे अपने बादशाहको सलाम करते हो, वैसे ही यहा भी करो। इसपर नजारोफने अपने सिरको नगा कर दिया, और सिरपर जारके पत्रको रखकर खानको प्रदान किया। खानकी ओरसे रूसी दूतको एक भोज दिया गया, जिसमे गुलाबी रगका चावल और घोडेका मास भी सम्मिलित था। नजारोफने घोडेके मासको धर्म-विरुद्ध कहकर नही खाया। उसके साथी कसाकोको खलअत और इनाम देकर लौटा दिया गया, लेकिन नजारोफको रोककर उससे माग की गई—या तो हमारे दूतकी मौतका हरजाना दो, या मुसलमान बनो, नही तो तुम्हे फासीपर चढाया जायगा। यह धमकी वस्तुत दिखावटी थी। नजारोफके साथ खानका बरताव बहुत अच्छा था, कितने ही भोजोमे निमन्त्रित कर उसकी नाच-गानेसे खातिर की जाती थी। सिर्फ यही खयाल रक्खा जाता था, कि वह भागने न पाये। खान उसे अपने साथ शिकारमें मरगिलान ले गया, जहापर काफिर होनेके कारण नजारोफको मुसलमानोने पत्थर भी मारा। कुछ समय बाद खानने नजारोफको छोड दिया, क्योकि रूसका व्यापार बडे नफे की चीज थी। उमर १८२२ ई० में अपनी मौत मरा, या शायद भाई मुहम्मद अलीने उसे मार डाला। उसके सिक्कोपर, "सैयद मुहम्मद उमर सुल्तान" और "मुहम्मद खान सैयद उमर" अकित रहता है।

८ मुहम्मदअली, मदली खान, उमर-पुत्र (१८२२–४२ ई०)

उमरके उत्तराधिकारी मदलीके बारेमे नही कहा जा सकता, कि वह उसका भाई था या बेटा। इसने अपने कई सबधियोको देशसे निकाल दिया, जिसमें उसके एक भाई महमूद सुल्ताननें शहरसब्ज (किश) जाकर वहाकी राजकुमारीसे शादी की, पीछे बुखाराके अमीर नसरुल्लाका कृपापात्र बन खोजन्द और कुरमीतानका राज्यपाल भी रहा। शायद महमूदको शरण देनेके लिये बुखारासे मदलीका १८२५ ई० मे झगडा हो गया, और उसी समय जीजकको बुखारियोंने ले लिया। १८२६ ई० में काश्गर-राजवशके जहागीर खोजाने चीनियोंके विरुद्ध असफल विद्रोह कर दिया, फिर किर्गिजोंमे भी झगडा कर लिया और अन्तमें भागकर मदलीके हाथमें पडा। मदलीने उसे कुछ दिनोतक नजरबन्द-सा रक्खा, फिर वह भागकर किर्गिजोमें चला गया। जहागीरने उन्हे चीनपर आक्रमण करनेके लिये राजी किया। चीनी काफिरोका जूआ मुसलमानो के ऊपर रहे, इसे पूर्वी-तुर्किस्तानके अमीर, जहागीर खोजा और खुद मदली कैसे पसद करते? मदलीने मुसलमानोके साथ बुरे बरताव करनेका बहाना लेकर एकाएक आक्रमण करके बहुतसे चीनियोंको मार डाला। जहागीर खोजा काशगरपर चढा और मदली खानने सारे चीनी-तुर्किस्तानको

दबा लिया। मदली गाजीका झडा अब यारकन्द, अक्सू और खोतनपर फहराने लगा। जहागीर खोजा इसे क्यो पसद करने लगा? लेकिन इसी बीच चीनी सेना आ गई, मदली भाग गया, और जहागीर खोजा पकडकर पेकिङ्ग भेजा गया, जहा उसे फासी मिली। चीनियोंने मदलीसे सुलह करके उसे यह अधिकार दिया, कि उसका प्रतिनिधि काशगरके मुसलमानोंके धर्मकी देख-भाल और चीनको वहाके शासनमे सहायता करेगा।

१८२८-२९ ई० में इतिहासकार मिर्जा शम्स खोकन्दमे था, जब कि जहागीर खोजाका भाई यूसुफ खोजा भी वहीपर रहता था। यूसुफ खोजाके मागनेपर मदलीने शाही खलअत और पच्चीस हजार आदमी देकर उसे काशगरके लिये रवाना किया। वह खुद भी ओश तक साथ-साथ गया। ओशसे बीस दिनके रास्तेपर चीनी सीमातकी फौजी चौकी थी, जिसमें एक सौ पचास सैनिक रहते थे। लेकिन खोजाको भी विकट आदमियोसे मुकाबिला पडा था। चीनियोको निष्ठुर शत्रुओसे दयाकी आशा कहा हो सकती थी? उन्होने बढियासे बढिया कपडे पहन, खूब शराब पी और इसके बाद बारूदकी मेगजीनमे आग लगा दी। खोजन्दियोंने पीछे वहा पचास साठ जली हुई लाशे पाई। केवल पद्रह जीते बदी मिले, जिन्हे खोजाने मदलीके पास भेज दिया। पद्रह वर्स्त (२½ फर्सख) और आगे बढनेपर पाच सौ चीनी सैनिकोकी छावनी मिली, जिसके पास ही ७८०० सेना पडी थी। उनके साथ लडाई हुई, जिसमे खोकन्दी जीते। चीनी सैनिकोंमेंसे एक-एक या तो मारे गये, या उन्होने आत्महत्या कर ली। अब यूसुफ खोजा मूसी और लियागरके रास्ते काशगरसे दस वर्स्त (१¾ फर्सख) पर पहुचा। वहापर उस समय काले और सफेद खोजोका झगडा चल रहा था। सफेद खोजे यूसुफके पक्षपाती थे और काले चीनियोंके। सफेद खोजोने शहरसे निकलकर गाजियोका विजयीके तौरपर स्वागत करके बाजे-गाजेसे शहरके भीतर प्रवेश कराया। इस समय काले खोजोका नेता इसहाक बेक अपने तेरह सौ साथियोंके साथ गुलबागके किलेमे था। यूसुफ स्वय एक सौ पचास वर्स्त (८¾ फर्सख) आगे बढकर यगीहिसार पहुचा, फिर वहासे यारकन्द जा अपने पुत्र मिर्जा शम्सको शासक बना काशगर भी छोडकर लौट गया। राजधानी काशगर छोडनेके चार महीने बाद खबर आई, कि लाखो चीनी सेना फैजाबाद पहुच गई है। इसपर मिर्जा शम्स अपने बहुमूल्य खजानेको साठ सदूकोमें बन्द करके भागना चाहा, लेकिन काले खोजोने उसे लूट लिया, खोकन्दी चीनी-बाढके सामने बडी तेजीसे भागने लगे। उनके साथ उनके पक्षपाती सफेद खोजा भी भगे, जिनकी सख्या पचाससे साठ हजार तक बतलाई जाती है— स्त्री-पुरुष-बच्चे सभी पैदल, घोडो और गदहोपर सवार होकर खोकन्दकी ओर भाग रहे थे। उस समय मौसिम बहुत ठडा था, त्यान्शानके पहाडोमें बर्फ और सर्दीके मारे उनमेंसे बहुत तो रास्तेमें मर गये। पाच महीने बाद यूसुफ भी खोकन्दमें मर गया। पूर्वी-तुर्किस्तानसे भागे मुसलमान शरणार्थियोके लिये मदली खानने शेत्रीखाना नगर बसाया, तथा खोकन्दके नीचे सिर-दरियापर भी उनके बसनेका प्रबन्ध किर दिया।

खोकन्द बहुत दिनो तक चीनको नाराज नही रख सकता था। रूस अभी उसकी सीमासे बहुत दूर था, इसलिये उसकी अधीनता स्वीकार करके चीनको टरकाया नही जा सकता था। १८३१ ई० में खोकन्द और चीनके बीच सधि हुई, जिसके अनुसार "खोकन्दको अक्सू, ओश, तुर्फान, काशगर, यगी हिसार, यारकन्द और खोतनमें आयात किये जानेवाले सभी विदेशी मालपर कर पानेका अधिकार मिला, और कर उगाहनेके लिये इन सभी नगरोमें अकसक्काल (शब्दार्थ श्वेत दाढी, अफसर) रखने तथा मुसलमानोकी रक्षा करनेका दायित्व मिला। इसके बदलेमें खोकन्दको चीनकी ओरसे यह सेवा करनी थी, कि खोजा राज्यको छोडने न पाये, और यदि कोई छोडना चाहे, तो उसे दड दे।" इससे मालूम होगा, कि १९ वी शताब्दीके पूर्वार्धके समाप्त होने समय काशगरपर खोकन्दियोका काफी प्रभाव था।

उत्तरके कजाक विशेषकर महा-ओर्दूवाले अधिक सख्यामे इसी समय खोकन्दके भीतर भागे। इसपर सीमाके लिये रूसियोंके साथ खोकन्दका झगडा हो गया।

रूसियोसे झगडा—आपसी झगडेको बातचीतसे तै करनेके लिये १८२७ या १८२८ ई०में ओरेनबुर्गसे रूसी दूत भेजे गये, जो अपने साथ खानके लिये भेटके तौरपर कितने ही बड़े-बड़े

दर्पण, एक भारी घड़ी, कुछ बदूकें और पिस्तौल ले आये थे। बातचीतके बाद निश्चय हुआ, कि कोक्सू नदी सीमा रहे, जिसके उत्तरकी भूमि रूसियोंकी और दक्षिणकी खोकन्दकी। सीमाकी पहिचानके लिये वहा चिह्न खडे किये गये, लेकिन रूसियोंने इस समझौतेको देरतक नही माना, और अपनी सीमामे दक्षिणमें भी किले बनाये। इसके विरोधमें खानने एक हाथी तथा कुछ चीनी गुलामोंकी भेंटके साथ अपना दूत सीधे राजधानी पीतरबुर्गमें भेजा।

यह ऐसा समय था, जिस वक्त अग्रेजो और रूसियोंके सबध अच्छे नही थे, और मध्य-एसियामें अपने प्रभाव को बढानेके लिये अग्रेज हर तरहकी कोशिश कर रहे थे। इसके लिये उन्होंने कर्नल स्टुअर्टको बुखारा भेजा और कप्तान कोनोली खीवाके खानके पास पहुचा। कोनोलीको हुक्म दिया गया था, कि खीवासे वह खोकन्द जाये और दोनों राज्योंके रास्तेकी जाच-पड़ताल करे। कोनोली अल्तून-कला, अकमस्जिद, अचकियान हो छ सप्ताहके बाद खोकन्द पहुचा। रूसकी जबर्दस्तीसे मदली जला-भुना बैठा था, इसलिये उसे अपनी तरफ करना कोनोलीके लिये मुश्किल नही हुआ। कोनोली बहुत मूल्यवान् बन्दूकें और दूसरे हथियार कश्मीरी दुशाले तथा कीमती भेंटे, खान और प्रभावशाली दरबारियोंमें बाटी। अपने दबदबेको दिखलानेके लिये वह अस्सी नौकरोंके साथ यात्रा कर रहा था, और उसके पास बहुत भारी परिमाणमें असबाब था। जिस-जिस इलाकेसे वह गुजरा, वहाके मुखियों और सरकारी अफसरोंको उसने दिल खोलकर इनाम और भेंटे दीं। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि यह सारा "परमुडे फलाहार" भारतके मत्थे हो रहा था। कोनोलीकी इस मुक्तहस्तताके कारण खोकन्दमें उसके बहुतसे समर्थक हो गये थे। लौटते वक्त अमीरने उसे मार्ग-पत्र दिया। लेकिन जीजक मे बुखाराका अमीर कोनोलीसे बडे रूखे तौरसे पेश आया, जिससे उसे पता लग गया होगा, कि खीवा और खोकन्दकी सफलताके बाद आगे उसे कैसे दिन देखने पडेंगे।

१८३९ ई०में रूसियों और चीनियोंके दबावके कारण मदलीने बुखाराके प्रभुत्वको स्वीकार कर लिया था, लेकिन कोनोलीकी चाटुकारितासे उसका दिमाग आसमानपर पहुच गया और उसने बुखारासे झगडा कर लिया। कोनोलीने दोनो खानोंमें थोडे दिनोंके लिये समझौता करानेमें सफलता पाई। अग्रेज रूसके प्रभावको आगे बढनेसे रोकनेके लिये यही चाहते थे, कि खीवा-बुखारा-खोकन्द मेलसे रहे। कोनोलीको खोकन्दके मित्रोंने बुखारा जानेसे मना किया, लेकिन हिंदुस्तानके मालिकोंका हुक्म था, इसलिये वह बुखारा गया, और वहा कर्नल स्टुअर्टके साथ कैसे उसे अपने प्राणोंको खोना पडा, यह आगे बतलायेंगे।

अपनी तरुणाईके जमानेमें मदली सैनिक-जीवनको अधिक पसद करता था। उसने कोहिस्तानकी ओर अपनी सीमाको बढाया—करातगिन जीता, कूल्याब, दरवाज और शुगनानने उसकी अधीनता स्वीकार की। लेकिन १८४० ई०के करीब उसके स्वभावमें भारी परिवर्तन हुआ। अब वह मदिरा और मदिरेक्षणाके सेवनमें दिन-रात डूबा रहने लगा, जिसके कारण शासन-केंद्र कमजोर हो चला। ताशकन्दके कुशबेगी-लश्कर काजी कलिया, महासेनापति ईसा खोजा आदिने खानके खिलाफ षड्यत्र शुरू किया और चाहा, कि उसको हटाकर आलम-पुत्र शेरअली, या नरबुतेके भाई हाजी बी पुत्र, मुराद बीको गद्दीपर बैठायें। शेरअली बहुत समयसे भागकर किपचक-कजाकोंमें रहता था, और मुरादबी खीवामें, जहा अल्ला कुल्लीखाने उसे अपनी लडकी व्याह दी थी। षड्यत्रकारियोंने मदलीके विरुद्ध बुखाराके अमीर नसरुल्लाको बुलाया। दूसरी बारके निमत्रणपर अप्रैल १८४२ ई० में वह अठारह हजार सेना ले खोकन्दसे पद्रह-सोलह मीलपर पहुचा। डरके मारे मदलीने अपने पुत्र मोहम्मद अमीन और कुशबेगी लश्कर (सेनापति) काजी कलियनको भेजकर अधीनता स्वीकार करते हुये नसरुल्लाके नामसे खुतबा और सिक्का चलाना मजूर किया। नसरुल्लाने मदलीके पुत्र और काजी कलियानको लौटाकर कुशबेगीसे एकातमें पूछा, तो मालूम हुवा, कि खोकन्दके लोग आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार है। इसपर नसरुल्लाके पास जानेका क्या परिणाम होता, यह मदलीको मालूम था, इसलिये उसने बहुमूल्य वस्तुओ और खजानेको सौ गाडियोंपर लदवाकर हजार आदमियोंके साथ नमगानका रास्ता लिया। राजधानीके बडों द्वारा निमत्रित हो नसरुल्ला बडे सज-धजके साथ खोकन्द नगरमें प्रविष्ट हुआ और नागरिकोंमें भय सचार तथा अपने सैनिकोंको सतुष्ट करनेके लिये नगरको चार घटे लूटनेकी

आज्ञा दी। मुल्लोंकी किताब तक भी लुटे बिना नही रही, बच्चो और स्त्रियोंपर अमानुषिक अत्याचार हुये। सोना-चादी छोडकर बाकी लुटे मालको दूसरे दिन खोकन्दके नागरिकोंमे बेच दिया गया।

उधर मदलीकी गाडियोको लेकर उसके अनुयायी चम्पत हो गये, और उसके पास सिर्फ तीन सेवक रह गये। मा, बीबियो, बेटो और भाईके साथ आत्म-समर्पण करनेके लिये वह आ रहा था, इसी समय रास्तेमें पकड लिया गया। चालीस गाडियोंपर उसके हरम (अन्तःपुर) को सवार कर बुखारा रवाना कर नसरुल्ला अब मदलीके मरवानेकी सोच रहा था। इतना सब हो जानेके बाद कुशबेगी, काजीकला और एरन्दिचकी आखे खुली और उन्होने खोकन्द-वशके किसी राजकुमारको अपने हाथकी कठपुतली बना अमीर नियुक्त करनेके लिये नसरुल्लासे कहा। इसपर बुखाराके काजीकलाने विरोध करते हुये कहा—"मदलीने अपनी सास या नानी (उमर खानकी विधवा) को शरीयतके विरुद्ध व्याहा, इसलिये इस काफिरको उसके परिवारके साथ मृत्युदड मिलना चाहिये।" नसरुल्लाने मदली, उसकी मा, भाई तथा ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद अमीनको परिषद्के सामने उपस्थित करके कत्ल करवाया। खोकन्दी अमीर और प्रभावशाली मुखिया षड्यन्त्र करनेके लिये न रह जाये, इसलिये परिवार सहित उनमेसे ढाई सौ आदमियोको पकडकर बुखारा भेज दिया गया। खोकन्दके सारे राज्यमें नसरुल्लाके विजयकी घोषणा की गई। अमीर-बुखाराने छ सौ सैनिकोके साथ समरकन्दके राज्यपाल इब्राहीम दादखाको अपनी ओरसे खोकन्दका उपराज नियुक्त किया।

९ शेरअली, हाजी बी-पुत्र (१८४२ ई०)

बुखारियोकी विजय देरतक नही रही। तीन ही महीने बाद खोकन्दियोंने विद्रोह कर दिया, और शेरअलीको तख्तपर बैठानेके लिये किपचक-कजाकोको बुलाया, जिन्होने बुखारी-सैनिकोको मार डाला। इब्राहीम जान लेकर भागा, जिसपर नाराज होकर नसरुल्लाने उसे मरवा दिया। अब शेरअली खोकन्दकी गद्दीपर बैठा। नसरुल्ला फिर बीस हजार सेनाके साथ खोकन्दपर चढा। नसरुल्लाके हाथमें पडे खोकन्दियोमें मुसलमानकुल चूलाक (लुज) नामक एक व्यक्ति नसरुल्लाका विश्वासपात्र बन गया था। उसे खोकन्दके सैनिकोको समझानेके लिये भेजा गया, लेकिन वहा उसने उन्हे भडकाना शुरू किया और बुखारी अमीरोके नामसे जाली चिट्ठी भेजी, जिसे पढकर नसरुल्ला अपने अमीरोसे नाराज हो गया। इसी समय खीवावालोने बुखारापर चढाई की। नसरुल्लाको खबर मिली, कि वह हमारे बहुत-से आदमियोको पकड ले गये। इसपर नसरुल्ला दूसरे जामिनोको भी छोडकर बुखारा लौट गया।

शेरअलीने मदलीकी लाशको निकलवाकर उसे बडे सम्मानके साथ दफनाया, मुल्लोंने शवक्रिया कराई। शेरअलीको किपचक-कजाकोकी सहायतासे तख्त मिला था। इससे पहले खोकन्दमें सर्त (फारसी-भाषी, ताजिक) बडा प्रभाव रखते थे। अब वहा किपचकोंकी तूती बोलने लगी। उनका नेता यूसुफ मिगबाशी खोकन्दका हाकिम (राज्यपाल) बना और मुसलमानकुल चूलाक अन्दिजानका। किपचको और सर्तोका झगडा उठ खडा हुआ। सर्तोका मुखिया शादी था, जिसपर खानका विश्वास था। उसने यूसुफ मिगबाशीको मरवाकर उसके अनुयायियोको खतम करनेका हुक्म दिलवाया। फिर मुसलमानकुलको खोकन्द आनेके लिये सदेश भेजा। मुसलमानकुलने यूसुफ मिगबाशीके आदमियोको अपने पास जमा किया। शादीने कुछ हत्यारे भेजकर अन्दिजानमे चूलाकका काम खतम कराना चाहा, लेकिन चूलाक बहुत चालाक निकला। उसने शादीके आदमियोको पकडकर मरवा दिया। इसके बाद किपचको (तुर्कों) और सर्तोका खुला युद्ध हुआ। सर्तोको हार खानी पडी। शादी मारा गया और उसका पृष्ठपोषक शेरअली खान किपचकोके हाथमे बन्दी बना। लेकिन किपचकोंको तख्तके लिये दूसरा आदमी न मिला, इसलिये उन्होने शेरअलीको ही खान रहने दिया। यूसुफ मिगबाशी और शादीके पदको भी मुसलमानकुलने अपने हाथमे रक्खा। चारो ओर किपचकोकी तूती बोलने लगी। सर्तोके दो नेता रहमतुल्ला और मुहम्मद करीमने शहरसब्ज जा आलम खाके पुत्र मुरादको तख्तके लिये तैयार किया। बुखाराने भी सेनाकी सहायता दी। १८४५ ई० मे जब मुसलमानकुल सेना-सहित किर्गिजोमे कर उगाहने गया हुआ था, उसी समय सर्तोने चढाई कर दी और उन्हे खोकन्द

शहरपर अधिकार करनेमें बहुत दिक्कत नही हुई। मुरादने अपनेको बुखाराके उपराज घोषित किया।

१० मुराद, आलम-पुत्र (१८४२ ई०)

मुरादका शासन भी दृढ नही हो पाया, क्योंकि अमीर नसरुल्लाके अत्याचारोंके कारण खोकन्दी उससे बहुत घृणा करते थे। इसीलिये मुसलमानकुलने फिर बडी आसानीसे खोकन्दपर अधिकार कर लिया। मुराद शायद मारा गया या भाग गया।

शेरअलीके पाच पुत्र थे, जिनमे सिरम्सक किपचक-खान तोस्तानजरकी पुत्री जारकिनका बेटा बाईस सालका था। उसका दूसरा पुत्र खुदायार मर्गिलानका बेक तथा मुसलमानकुलका दामाद था। मुसलमानकुल सिरम्सकको पसद नही करता था और उसे खुदायारकी मुहरसे पत्र भेज बुलाकर मरवा डाला। फिर अपने सोलह सालके दामादको खोकन्दकी गद्दीपर बैठाया। इसे कहनेकी अवश्यक्ता नही, कि राज्यकी सारी शक्ति चूलाकके हाथमें थी। इसी समय किपचक-दलके भीतर भी झगडा उठ खडा हुआ। खासकर ताशकन्दका राज्यपाल नूर मुहम्मद मुसलमान कुलसे ईर्ष्या करने लगा था। चूलाकके विरुद्ध १८५१ ई०में किया गया पहला षड्यन्त्र विफल रहा। इसी समय खजानेसे भारी रकम गायब हो गई। खजाचीने उसे अपने मित्रो और नूर मुहम्मदमें भी बाटा था। जब मिंगबाशी (वजीर) मुसलमानकुलने जवाब तलब किया, तो अपराधी अफसरोंने तलवार निकाल ली, फिर वह ताशकन्द भाग गये। मिंगबाशीने ताशकन्दके राज्यपाल नूर मुहम्मदको-उन्हें समर्पण करने तथा खुद आनेके लिये लिखा। उसके इन्कार करनेपर मुसलमानकुल चालीस हजार सेना ले ताशकन्दके ऊपर चढा, लेकिन मर्गिलानके बेकके विश्वासघात करनेसे उसे सफलता नही मिली। जून १८५२ ई० में उसने तीस हजार सेनाके साथ फिर चढाई की। उधर नूर मुहम्मदने भी पूरी तैयारी कर रक्खी थी, और आसपास के नगरोंमें अपने हाकिम नियुक्त कर दिये थे। इसलिये मिंगबाशी मुसलमानकुलको नूर मुहम्मद नही, बल्कि औरोंसे भी लोहा लेना था। ताशकदपर जल्दी अधिकार न होते देख कुछ सेना वहा छोड मिंगबाशी, ने तुर्किस्तानपर सेना भेजी, और स्वय कुछ सेनाके साथ चिरची नदीके उद्गमके पास बने नियाजबेग किलेको सर करने गया। उसकी मनशा थी, कि नियाजबेगको लेकर ताशकन्दकी ओर पानी लाने-वाली नहरको तोड दिया जाय। नहर तोडनेमें सफल हो उसने ताशकन्दके उत्तर चिमकन्तके किलेको जाकर भी दखल कर लिया। इसी बीच ताशकन्दियोंने छापा मारकर नियाजबेगमें छोडी सेनाको हरा नहरको फिर जारी कर दिया। वह ताशकन्दियोंसे भिडनेके लिये लौट पडा, लेकिन युद्धके आरम्भमें ही खुदायारखा उसका साथ छोड दुश्मनोंमें जा मिला। खानके इस तरह हट जानेपर सेनामे भगदड मच गई। उनमेंसे कितने ही मारे गये, कितने ही चिरचिक नदीमें डूब मरे। मुसल-मानकुल बडी मुश्किलसे भागकर कराकिर्गिजोंमे पहुचा—उसकी मा कराकिर्गिजोंकी लडकी थी।

इस समय खोकन्दमें तीन राजनीतिक दल थे, जो शक्ति हथियानेके लिये दूसरेसे मिलकर या अलग हो बराबर प्रयत्न करते रहते थे। किपचकोंमे मुसलमानकुल और नूर मुहम्मदकी दो पार्टिया थी, तीसरी पार्टी थी सर्तोकी। उक्त घटनाके दो महीने बाद सर्तोंने किपचकोंके विरुद्ध एक सफल षड्यन्त्र किया। उतेनबी और दूसरे कितने ही किपचक नेता मारे गये, और उनका स्थान सर्तोंने लिया। खानने अपने भाई मुल्लाबेकको नूर मुहम्मदकी जगह ताशकन्दका हाकिम (राज्यपाल) नियुक्त किया। खुदायारने किपचकोंको बहुत नाराज कर लिया था, इसलिये उसे हमेशा उनसे डर लगा रहता था। उसने अपने राज्यमें अक्मस्जिद (पेरोव्स्की बन्दर)से खोकन्द और काश्गरको अलग करने-वाले पहाडोंतक सभी जगह किपचकोंको कत्लआम करनेका हुक्म दे दिया। किपचिक जहा भी, बाजारों, सडकों, गावों या मैदानोंमें मिले, मारे गये। १८५३ ई०में बीस हजार किपचिकोंको इस तरह तलवारके घाट उतारा गया। खुदायारकी मा स्वय किपचकानी थी, लेकिन उससे क्या? अपने किपचक मुख्य-सेनापति सफर बीको और भी सासत देकर मरवाया—पहले उसके हाथ-पैर तोड डाले गये, फिर उसके सरपर सीसेका इतना भारी भार रक्खा गया, कि आखें अपने गोलकसे बाहर निकल आई। फिर उसके शरीरपर रुई लपेटी गई, और ऊपरसे कडकडाता हुआ तेल डाला गया। अन्तमें उसकी बोटी-बोटी

काट गई। इसके बाद मुसलमानकुल भी गिरफ्तार करके खोकन्द लाया गया। एक खुली जगहमें सिरपर लबी टोपी पहिना उसे जजीरोमें जकड-बन्द करके लकड़ीके ऊचे चबूतरेपर रक्खा गया। तीन दिन तक उसी जगह रखकर उसके सामने छ सौ किपचक जबह किये गये, फिर उसे फासी दे दी गई। खोकन्दको दो बार बुखारियोसे बचानेवाले इस नीतिकुशल प्रसिद्ध उज्बेकके जीवनका इस प्रकार अन्त हुआ।

किपचको (उज्बेको) को इस तरह दबा देनेके बाद अब सर्तों और उसके नेता कासिम तथा मिर्जा अहमदका बोलबाला हुआ। उनका मल्लाबेकसे झगडा हो गया। इसपर उससे ताशकन्दकी राज्यपालता छीन ली गई, और उसका पद मिर्जा अहमदको मिला। मल्ला भागकर बुखारा चला गया।

१८५७ ई० में नये राज्यपाल मिर्जा अहमदने चिमकन्द और औलियाआताके कजाकोंको अपना दुश्मन बना लिया, लेकिन पीछे अपनी कमजोरी देखकर उसने उनकी मागोको पूरा करके सुलह कर ली। उधर मल्लाने भी खोकन्दमें लौटकर किपचको (कजाकों) और कराकिर्गिजोको मिलाकर अपनी पार्टी बनाई। उज्बेक-नेता आलमकुल उसका सहायक था।

१२. मल्ला खान, शेरअली-पुत्र (१८५७–५९ ई०)

विद्रोहियोने आक्रमण किया। समचीके युद्धमें हारकर खुदायार बुखारा भाग गया और उसकी जगह मल्ला खान घोपित किया गया।

रूसी अभियान—१८१४ ई०मे खोकन्दियोने जब तुर्किस्तान शहरको जीता, तबसे वह इस इलाकेके कजाकोसे कर मागने लगे। लेकिन निम्न सिर-दरियाके कजाक अपनेको रूसकी प्रजा कहते थे, इसलिये रूसने खोकन्दियोका विरोध किया। खोकन्दियोने अपनेको मजबूत करनेके लिये तुर्किस्तान-शहरसे नीचे यानी कुर्गान, जूलेक, कूनिशकुर्गान, ताशकुर्गान, चिमकुर्गान आदि कई स्थानोमे अपने गढ बनाये, जिनमेंसे सबसे महत्त्वका था अकमस्जिदका गढ, जिसे खोकन्दियोने १८१७ ई०में पहलेपहल सिरनदीके बाये तटपर बनाया था, लेकिन अगले ही साल उसे दाहिने तटपर परिवर्तित कर दिया। अकमस्जिदमे खोकन्दियोका बेक (बडा हाकिम) रहता था, जिसके अधीन निम्न-सिरके दूसरे किले भी थे। बेक स्वय ताशकन्दके उपराजके अधीन माना जाता था। गढोंको बना मजबूत हो खोकन्दियोंने कजाकोपर भारी कर लगाये। प्रति किबित्का (तम्बू या परिवार) सालाना चार भेडे, जिसका तिहाई कर उगाहनेवाले (जकातची) को देना पडता। इसके अतिरिक्त लकडी-कोयले-भुसपर भी प्रति किबित्का चौबीस बोरा कोयला, चार बैल सखसौल (फरास ईंधन), हजार पूला नरकट देना पडता था। प्रत्येक किबित्काका एक आदमी अपने खर्चपर बेगार करनेके लिये जाता था। ये बेगारू खोकन्दियोंके बगीचोमे काम करते, किलेकी मरम्मत या भीतरके अस्तबलोकी सफाई आदि करनेके लिये सालमे एक बार जाते। लडनेके समय हरएक हट्टे-कट्टे कजाकको अपने घोडे और हथियारके साथ सिपाही बनना पडता था। खोकन्दी कजाकोपर सचमुच ही बहुत पाशविक अत्याचार करते थे—बिना कलीम (भेंट) दिये वह कजाक औलों (गावो) से औरते ले जाते, और शरीयतके विरुद्ध उनकी बेइज्जती करते।

निम्न सिर-दरियापर खोकन्दियोंके बहुत सैनिक नही थे, लेकिन तब भी उनकी धाक जमी हुई थी। अकमस्जिदमे सबसे बडा किला था, जहापर पचास सिपाही रहते थे। उनके अतिरिक्त वहा सौ बुखारी और खोकन्दी व्यापारी बसे हुये थे। कूनिशकुर्गानके गढमें पचीस सिपाही, खोशकुर्गानमें चार, जूलेक (१८५३ ई०) में चालीस, और यानीकुर्गानकी आयताकार चार-पाच फुट ऊची दीवारोंके भीतर दो या तीन खोकन्दी सैनिक रहते थे।

अपनी प्रजा कजाकोके साथ ऐसा बरताव होते रूसी देख नही सकते थे। इसलिये १८४६ ई० मे कप्तान शूल्जको सिरके मुहानेकी पडतालकर वहा किला बनानेके लिये भेजा गया। अराल्स्क के नामसे मशहूर राइम्स्क किलेकी नीव अगले साल पडी। १८५० ई० में कजाकोंका मन बिगडते देख खोकन्दियोने उन पर आक्रमण कर दिया, और पहली बार वह उनके छब्बीस हजार तथा दूसरी बार तीस हजार पशु और १८५१ ई० में पचहत्तर हजार पशु छीन ले गये। इसपर अराल्स्कके

रूसी कमाडरने कोशकुर्गानपर अधिकार कर लिया। रूसी आगे बढनेके लिये निश्चय कर चुके थे। अराल समुद्रमें गिरनेवाली सिर नदी हमारे यहा की गगा जैसी बडी नदी है। उसकी धाराको सैनिक यातायातके लिये इस्तेमाल किया जा सकता था। इसके लिये स्वीडनमें बने दो स्टीमरोको पुर्जे-पुर्जे अलग करके अराल समुद्रमे पहुचा जोडकर मई १८५२ ई०मे तैयार कर लिया गया। उसी सालकी गर्मियोंमें कर्नल ब्लारम्बेर्गने अकमस्जिद तक सिर दरियाकी सर्वे की, और वहासे फौजी चौकी हटानेके लिये खोकन्दियोको कहा। कर्नलके साथ चार सौ सैनिक और दो नौपौंडी तोपें अकमस्जिद आईं। टोकनेपर कर्नलने जवाब दिया, कि हम रूसी तटपर चल रहे है, और तुम सिर नदीके दाहिने किनारेपर अपने किलेको नही रख सकते। किलेके पास पहुचनेपर खोकन्दियोने कर्नलसे चार दिनकी मोहलत मागी। उन्हे आशा थी, कि इसी बीच कुमक आ जायेगी, लेकिन वह नहीं आई। दिन पूरा होनेपर रूसियोने ग्रेनेड (हथ-बम) फेंके। खोकन्दियोने बन्दूकों और दीवारोपर लगी तोपोंसे जवाब दिया। रूसियोने उनकी तोपे जल्दी ही चुप कर दी, लकडी-का फाटक तोड दिया, लेकिन किलेकी दीवार मजबूत साबित हुई। रूसियोंने भीतर पहुचकर आग लगा दी। इस लड़ाईमें पद्रह रूसी मारे गये और पचहत्तर घायल हुये। लौटते समय उन्होंने कूनिशकुर्गान, चिमकुर्गान और कोशकुर्गानकी चौकियोको भी नष्ट कर दिया।

१८५३ ई०में रूसियोका अभियान और भी बडी सेनाके साथ हुआ, जिसमे २१३८ सैनिक, २४४२ घोडे, २०३८ ऊट, और २२८० बैल, बारह तोपें और एक चलता-फिरता लकडीका पुल था। अरालस्कके किलेको छोडनेसे पहले ही रास्तेके चारेकी रक्षाके लिये अबकी गर्मियोमें कजाकोको वहा डेरा न डालनेका हुक्म दे दिया गया था। यात्रा बहुत रक्षित तौरसे होने लगी, मदद करनेके लिये स्टीमर "पेरोव्स्की" नदीमें साथ-साथ चल रहा था। कराउजियक होते २ जुलाईको रूसी सैनिक अकमस्जिद पहुचे। इस बीचमें खोकन्दियोने किलेको काफी मजबूत कर लिया था। उसके चारो तरफ गहरी खाई खोद दी थी, महीने भरकी रसदके साथ तीन सौ खोकन्दी सैनिक वहा तैनात थे। दीवारोपर उन्होने तीन तोपें भी लगा रक्खी थीं। लेकिन रूसी सेना और तोपोंके सामने वह कितने दिन तक ठहरते? खोकदियोंने आत्मसमर्पण करनेके लिये पद्रह दिनकी मुहलत चाही। इसी बीच तीन दिनके बाद एक सैनिक टुकडी और आगे ताशकन्दकी ओर भेजी गई। जूलेकके सैनिक भाग गये और रूसी वहाके किलेको ध्वस्त कर बीस तोपो और बहुत-से गोला-बारूदके साथ अकमस्जिद लौट गये। अकमस्जिदवालोंको आनाकानी करते देख बारूदकी सुरगसे दीवारके एक भागको उडा दिया गया, किलेदार मुहम्मदअली अपने ढाई सौ आदमियोंके साथ मारा गया। रूसियोके हाथमें घोडेकी पूछोवाले दो झडे, दो भालेवाले झडे, दो कासेकी तोपें, ६६ छोटी और अधिकतर टूटी-फूटी तोपें, १५० तलवारें और दो कवच हाथ आये। रूसियोंने कजालाक ऊपरी धारपर पहला किला, कर्मकचीपर दूसरा, कूनिशकुर्गानमें तीसरा किला बनाया, और अकमस्जिदका नाम बदलकर पेरोव्स्की कर दिया।

रूसके इस खतरनाक अभियानके समय खोकन्दियोमें घोर गृहयुद्ध चल रहा था। १८५३ ई० के शरद्में मवदान खोजाके नेतृत्वमें ७००० सेना ताशकन्दसे अकमस्जिदकी ओर भेजी गई, जिनके मुकाबिलेके लिये दो तोपें ले २७५ रूसी सैनिक गये, जो बडी बुरी तौरसे पिटे और बानवे ऊटोंपर घायलोंको लिये रातको १९३ लाशें पीछे छोड भाग आये। जाडा आनेपर फिर अभियान शुरू हुआ। १८ दिसबरको १२-१३ हजार सैनिको और सत्रह पीतलकी तोपोंके साथ खोकन्दियोंने आकर पेरोव्स्कीके सामने मुकाबिला किया। नवीन और प्राचीन हथियारोका मुकाबिला क्या? दो हजार खोकन्दी मारे गये, जब कि रूसी अठारह हत और उन्चास आहत हुये।

अब तैयारी करना और आगे बढना जारशाही रूसका हर सालका काम हो गया। बडे परिश्रमके साथ १८५८ ई०में फिर रूसियोंके विरुद्ध खोकन्दियोने भी तैयारी की। तुर्किस्तानमे तोप ढालनेवाले कारीगर लाये गये। ताशकन्दके बेकने लोगोंके घरोंसे सारे पीतलके बर्तन ले लिये। उधर रूसी जेनरल पेरोव्स्कीने अकमस्जिदके किलेको और मजबूत किया, और कमजोर अतएव बेकार समझकर किला नम्बर दोको छोड़ दिया। इसी समय उनपर बुखारावालोने आक्रमण

कर दिया था, इसलिये खोकन्दी नहीं आये। उन्होंने खीवाको भी अपनी ओर मिलानेकी कोशिश की, लेकिन काफिरोंकी चपतपर चपत खाकर भी मध्य-एसियाके खानोंको होश नहीं आया था, कि वह एक हो जायें।

यह मालूम ही है, कि मल्ला खानके गद्दी सभालते समय खुदायार खान भागकर बुखारा चला गया था। अमीर नसरुल्लाने पहले उसे समरकन्दमें फिर जीजकमें रक्खा। खुदायारको अपना खर्च चलानेके लिये माके भेजे पैसेसे व्यापार करना पडता था। दो सालके शासनके बाद उज्बेक (किपचक) अमीरोंने मल्ला खानको मार डाला। बडा प्रभावशाली अमीर आलमकुल अन्दिजानका बेग नियुक्त हुआ था। उसकी अनुपस्थितिका फायदा उठाकर षड्यत्रियोंने महलमें घुसकर मल्ला खानको सोतेमे मार डाला—षड्यत्रियोंका नेता शादमान खोजा था।

१३ शाह मुराद, सरिन्सक-पुत्र (१८५९ ई०)

खुदायारको भगा षड्यत्रियोंने पद्रह सालके लडके शाह मुरादको गद्दीपर बिठाया। निहत मल्ला खानका यह भतीजा था। मल्लाखान का पुत्र सैयद सुल्तान भागकर अन्दिजानके स्वामी आलमकुलकी शरणमें गया, और ऊपरसे शाहमुरादकी भक्तिका दिखावा किया। खोकन्दके भीतर पार्टियोंका सघर्ष चल रहा ही था। तुर्किस्तानके बेग खनायत शाहने खुदायार खाको जीजकसे बुलाया। ताशकन्द उसके हाथमें चला गया। शाहमुराद सेनाके साथ आया, लेकिन एकतीस दिनके मुहासिरेके बाद खाली हाथ लौट रहा था, इसी बीच आलमकुलने अन्दिजानसे आकर चार षड्यत्रियोंको मरवा डाला। खुदायार फिर गद्दीपर बिठाया गया, और आलमकुल उसका अभिभावक बना। खुदायारने भागती हुई सेनाका पीछा करके पहले खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) और फिर खोकन्द ले लिया। आलमकुल मर्गिलानके पीछेके पहाडोंमें भाग गया। खुदायारने शाहमुरादको मार डाला।

खुदायार पुन (१८५९ ई०)

इस समय खोकन्दमे दो दलोंमें खूनी सघर्ष चल रहा था। सर्त और नगरनिवासी खुदायार के समर्थक थे और किपचक (उज्बेक और कराकल्पक) आलमकुलके दोनो दलोंमें सेना ही नही, बल्कि नागरिक भी मौका पाते एक दूसरेके ऊपर टूट पडते। उज्बेक दल अपने तीन उम्मीदवारों—शाहरुख, सादिक बेग और हाजीबेगमे बटा हुआ था। आलमकुलने तीनोंको पकड-कर ओश नगरमे कत्ल करवा डाला, जहा ही तख्त-सुलेमान पहाडकी बगलमे तीनो की कब्रें हैं। इसके बाद आलमकुलने सुल्तान सईदको खान घोषित किया। मर्गिलान और अन्दिजानपर नये खानका अधिकार रहा। खुदायारकी सेना वहा दो बार हारी, इसपर खुदायारने बुखाराके अमीर मुजफ्फर खासे मदद मागी। मुजफ्फरके आनेपर आलमकुल कराकुल्जाकी पहाडियोंमें हट गया। इसी बीच खुदायारसे मुजफ्फरका झगडा हो गया। आलमकुलको खुश करनेके लिये सोना मढी छडी, एक टोपी, एक सुनहला कमरबन्द और एक बहुत ही सुन्दर हस्तलिखित कुरान भेजकर वह बुखारा लौट गया। बुखाराके पीठपर न रहनेपर खुदायार कमजोर हो गया। आलमकुलने आकर खोकन्दपर आसानीसे अधिकार कर लिया और खुदायार फिर अन्तर्वेदकी ओर भागा।

१४. सैयद सुल्तान, मल्ला-पुत्र (१८५९-६५ ई०)

यह नाम का ही खान था, सारी ताकत आलमकुलके हाथमें थी। अपने विरोधियोंपर आलमकुलने खूब हाथ साफ किया, और चार हजार आदमियोंको मरवा डाला। लोगोंमें असतोष पैदा होना ही था, अब उनकी नजर जीजकमे बैठे खुदायारपर थी।

रूसियोसे छेडछाड—१८५९ ई० में ओरेनबुर्गके राज्यपालकी रायमें पेरोव्स्कीका किला सुरक्षित नहीं था, इसलिये रूसियोंने जूलेक किलेपर अधिकार करके दो साल बाद १८५१ ई० में वहा एक मजबूत किला बनाया। उन्होंने यानीकुर्गानके किलेको भी ध्वस्त कर दिया। निम्न सिर-दरियाके कजाक रूसी प्रजा थे, किन्तु मध्य सिरके कजाक खोकन्दियोंके हाथमे थे। रूसियोंने आगे

वढते खोकन्दियोके तोकमक, पिशपेक आदि किलोपर अधिकार कर लिया। अव उन्होंने खोकन्दकी भूमिपर दो तरफसे प्रहारकी योजना वनाई। एक सेना औलियाआता या तलसपर उत्तरकी ओरसे चढी और दूसरी पश्चिमसे तुर्किस्तान शहर (यस्सी) पर। इसी समय पो न्दमें विद्रोह हो गया और पश्चिमी युरोपमें युद्धकी आशका वढ गई थी, इसलिये खोकन्दपर चढाईकी योजना १८६४ ई० में स्थगित कर दी गई। तो भी करातोउ और वोरोलदाईताउकी पहाडियोंके खोकन्दी किले एकके वाद एक रूसी लेते गये। तुर्किस्तान शहर-और औलियाआताके रास्तेपर अवस्थित चिमकन्दके किलेको खोकन्दी मजवूत करने लगे, जिसकी खवर पाकर निम्न-सिरका रूसी कमाडर जेनरल चेर्नेयेफ सितम्वर १८६४ ई०में रवाना हुआ। चन्द दिनोंके मुहासिरेके वाद चिमकन्दपर उसने अधिकार कर लिया। दस हजार युद्धवदी और वहुत सा लूटका माल हाथ आया। चिमकन्दके हाथमें आ जानेपर अकमस्जिदसे वेर्नोये (अल्माआता) का रास्ता साफ हो गया, और खोकन्दका एक वहुत महत्त्वपूर्ण इलाका—चू-उपत्यका—खानके हाथसे निकल गया।

खोकन्दी चुप कैसे रह सकते थे? ९ मई १८६५ ई० को ताशकन्दके पास जेनरल चेर्नेयेफकी सेनासे लडते हुए आलमकुल घायल हुआ। डाक्टर असदुल्ला उसकी चिकित्सा कर रहा था। डाक्टर आलमकुलकी पोशाकको एकके वाद एक उतरवा रहा था, जिसमे कि मरणासन्न आहत पुरुपको कुछ स्वच्छ हवा मिले। उधर उतारे कपडोको उज्वेक लेकर चम्पत हो रहे थे। अलीकुलको विल्कुल नगा देख दूसरा कपडा न होनेसे डाक्टरने अपनी खलअतसे उसे ढाक दिया।

ताशकन्द प्राचीनकालसे ही भारी व्यापारिक महत्त्वका नगर था। यहीपर वुखारा, खीवा, खोकन्द और रूसके कारवा-पथ मिलते थे। अव वह अधिक देर तक रूसियोंके हाथसे वाहर नही रह सकता था। रोज-रोजके खूनी सघर्प और अशातिसे परेशान हो वहाके वनी व्यापारियोने रूसके दृढ शासनको ही पसद किया। अगस्त १८६५ ई० में शहरके रईसो और मुल्लाओने चादीकी तश्तरीमें नमक-रोटीकी भेंट जेनरल चेर्नियेफके सामने रखकर अभिनन्दनपत्र देते हुये अपनेको जारकी प्रजा घोपित किया—"तुम एक समुद्रको दो समुद्रमें नही विभक्त कर सकते, और न एक राज्यके भीतर दूसरा राज्य ही वना सकते।" रूसियोंने तुर्किस्तानका एक नया प्रदेश (गुवर्निया) वना दिया, जिसका शासन-केंद्र ताशकन्द वना।

खुदायार खान पुन (१८६५-७५ ई०)

अभी भी खोकन्दका कितना ही भाग रूसियोंके हाथमे नही था। खुदायार ताकमे था। ताशकन्दमे रूसियोंके जम जानेपर उसने वुखारी सेना ले खोजन्दको जीतते खोकन्द पहुचकर अपनी गद्दी सभाल ली। वुखारियोने अपनी सेवाओंके वदलेमें १८६५ ई० मे खोजन्दको अपने अधिकारमें कर लिया। यही नही, वुखारी अमीर मुजफ्फरने रूसियोंको हुक्म दिया, कि खोकन्दी इलाकेसे हट जाओ, नहीं तो हम जहाद घोपित करेंगे। और भी आगे वढते हुये मुजफ्फरने वुखारामें रूसी व्यापारियोंकी सम्पत्ति जब्त कर ली, जिसके वदले रूसियोने ओरेनवुर्गमें वुखारी व्यापारियोके साथ भी वैसा ही किया, और मुजफ्फरके दूतको ओरेनवुर्गमें रोककर उसे पीतरवुर्ग नही जाने दिया। सीमाके झगडोंके निर्णयके लिये मुजफ्फर खानके वुलानेपर जो रूसी अफसर स्त्रूवे तथा कितने ही इजीनियर आये थे, उन्हे अमीर-वुखाराने गिरफ्तार कर लिया। इस अपमानको रूसी कैसे वर्दाश्त करते? मुजफ्फरकी गोशमालीके लिये ११ फर्वरी १८६६ ई०को दो हजार सेना ले जेनरल चेर्नियेफ सिर पार हो सीधे समरकन्दकी ओर वढा। रेगिस्तानके रास्ते सात मजिलें पारकर वह जीजक पहुच गया, लेकिन वुखारियोंके सैनिक सख्यावलको देखकर उसने लौट जाना ही पसद किया। वुखारी इसे अपनी विजय समझकर रूसियोका पीछा करते हुए सिर दरिया पार कर गये। इसपर मेजर जेनरल रोमानोव्स्कीने आक्रमण कर ८ अप्रैलको वुखारियोंको हरा खोजन्दकी ओर भगा दिया। अव सिरपर रूसी स्टीमर सेना और रसद ढो रहे थे। मुजफ्फरने सारे अन्तर्वेदमें रूसियोंके विरुद्ध जहाद घोपित करके धार्मिक जोश पैदा कर दिया था, इसलिये गाजियोंकी कमी नहीं थी। वह चालीस हजार सेना ले ताशकन्दपर आक्रमण करने गया, जव कि वहा रूसियोंकी सख्या

३६०० थी। खोजन्दसे उत्तर-पश्चिम कुछ ही मीलोपर सिर-तटपर इरजारमे २२ मईको भयकर युद्ध हुआ। आधुनिक हथियारोंसे लैस रूसियोने बुखारियोंको घास-मूलीकी तरह काट डाला, और अमीर मुजफ्फर एक हजार सरबाजो (सैनिको) के साथ प्राण लेकर भागा। उसके डेरेमें "चूल्हेपर रक्खे खानेसे भाप निकल रही थी, और हुक्का पीनेके लिये तैयार था।" अमीरका डेरा, उसकी कितनी ही तोपे, बहुत भारी परिमाणमें गोलाबारूद और रसद रूसियोके हाथ आई। खुदायारने मनमे घृणा रखते हुये भी विजयके लिये रूसियोको बधाई दी।

बुखाराकी यह जबर्दस्त हार थी, और मध्य-एसियाकी उस समय बुखारा ही सबसे बडी शक्ति थी। रूस जैसे जबर्दस्त साम्राज्य के सिरपर पहुच जानेपर भी खुदायारकी अकल ठिकाने नही हुई। वह अपनी प्रजापर अत्याचार करता, मनमाना कर लगाता, या ऐसे ही उनकी सम्पत्तिको जब्त कर लेता। घुमन्तू कजाको और किपचकोके ऊपर उसने पहलेपहल खास कर लगाये। इस समयकी अवस्थाका वर्णन एक मध्य-एसियाई लेखकने निम्न शब्दोमें किया था—

'सडकोकी मरम्मत, राजमहलोंके निर्माण, खानके बागोके जोतने-खोदने और नहरोकी सफाईके लिये सारे देशसे आदमियोको पकडकर जबर्दस्ती काममे लगाया जा रहा है। मजूरी क्या उन्हे खाना भी नही दिया जाता। साथ ही यदि गावके आधे लोगोको कामपर लगाया गया है, तो दूसरे आधे से दो तका (बारह आना) जबर्दस्ती कर उगाहा जा रहा है। कामसे भागने या इन्कार करनेपर कोडोसे खबर ली जाती है। कभी-कभी कोडोसे मार-मारकर लोगोके प्राण ले लिये जाते है, और कितनोको प्राण रहते ही कामकी जगहमें ही दबा दिया जाता है। ऐसी बेगार पहले खानोके समय मे भी ली जाती थी, लेकिन उन्हे खाना तो मिल जाता था। पहले खानको बिना कर दिये लोग घास, नरकट और ईंधनकी लकडी जमा कर सकते थे, लेकिन अब उसमेंसे आधी खानको देनी पडती है, जिसे सरकार निश्चित दामपर बेच देती है। इसके साथ ही ईंधन या सरकडेकी गाडी जब शहरके फाटकपर पहुचती है, तो आधा तका वहा और फिर एक तका बाजारमे महसूल देना पडता है। पहले झाडियोंकी लकडी (लीच) कर-मुक्त थी, लेकिन अब खानने प्रत्येक पर चार चेका (दो पैसा) चुगी देनेके लिये मजबूर किया है। चुगीवाले जोकोके तालाबके पास रहते है। पशुओके बेचनेपर साधारण जकात (शुल्क) के अतिरिक्त खानके लिये प्रति ढोर एक तका, प्रति भेड आधा तका, प्रति ऊट दो तका और प्रति घोडा-गदहा एक तका महसूल देना पडता है—उस समय खोकन्दी सिक्का सोनेका तिला, जिसमें साठ चादीका तका होता और तकेमें चौवालीस चेका या ताबेके पैसे होते। आयात मालपर मूल्यका चालीसवा भाग जकात और ऊपरसे बीसवा भाग और खानके लिये अमीनियाना देना पडता था। निर्यातके मालोमें रेशम और रूईपर प्रति ऊट दस तका देना पडता। बाजारमे बिकनेवाली स्त्री-पुरुषोकी पोशाक, तोशक, रेशमी कपडो तथा दूसरी मूल्यवान् चीजोपर एक तका एक थान, और कम कीमती मालपर आठवेंसे चौथाई तका कर देना पडता। दूकानोंकी हिफाजतके लिये पहरा देनेके लिये रातको सिपाही आते। उनके खर्चके लिये भी हर दूकानको हर चौथे महीने दोसे दस तका देना पडता। बाजारोंमें बिकनेवाले अनाजपर प्रति चारयक (दो मन दस सेर) पर चार चेका देन पडता। सब्जी, खरबूजा और अनाजपर प्रति बोझ एकसे तीन तका तक कर है, जिसे तेकजाई (बाजारमे बेचनेका हक) कहा जाता है। इनके अतिरिक्त खराज और तनाब (भूकर) अलग है। दूध, खट्टी मलाई आदिपर प्रति प्याला दो चेका कर है। बत्तक या तालकी चिडियोंमें हर जोडेमें एक खानका होता, और पालतू मुर्गे-मुर्गियोमें प्रत्येकपर दो चेका, दस अडेपर एक चेका देना पडता।

भारतीय सिरकीवालोने शताब्दियो पहले भारतकी पश्चिमी सीमासे बाहर अपना घुमन्तू-जीवन बिताना शुरू किया, और धीरे-धीरे पश्चिमकी ओर मध्य-एसिया ही नही, युरोप तक फैल गये। इन्हे अग्रेजीमें जिप्सी, रूसीमें सिगान और उनकी अपनी भाषामें रोमनी या रोम कहा जाता है। विद्वानोने निश्चित किया है, कि रोम वस्तुत हमारे डोम शब्दका ही अपभ्रश है। रोमनी लोगोकी भाषाको देखनेसे इसमें सदेह नही रह जाता, कि वह भारतीय है। ईरान और मध्य-एसियामे

रोमनी लोगोको लोली या ल्यूली कहते हैं। बहुत पुराने समयसे यह भारतके मदारियोंकी तरह वन्दर, भालू और बकरे लिये नगरो और गावोंमे तमाशा दिखलाते अपनी जीविका करते थे। "खुदायारने इन गरीबोंको भी चैनसे नहीं रहने दिया। उसने उनके ऊपर भी अपने कारिन्दे नियुक्त किये, जिन्होंने उनके जानवरोकी सख्या बढाकर बतलाई। हर बाजारके दिन और बडे शहरोंमे सप्ताहमें तीन बार लोली अपने पालतू भालुओ, भेडियो, बन्दरो, बकरियो, लोमडियो और सूअरोंके साथ बाजार होकर निकलते, और प्रत्येक दूकानको चार चेका उन्हे देना पडता। खानके विदूषक भी बाजारमें फिरते, और उन्हे भी दूकानदारोको पैसा देना पडता। यह पैसा खानके रसोईखानेके खर्चके लिये जाता। मजिस्दका इमाम नियुक्त करते वक्त उसे खानको दस तका देना पडता, सूफी (मुअज्जिन) को पाच तका। यदि खानको मालूम हो जाय, कि किसी परिवारमें दावत, शादी या खतना है, तो वह अपने गायकोको भेज देता। गृहपतिको उनमेसे हरएकको एक चोगा, और दोम पाच तिला (अशर्फी) तक खानके लिये देना पडत । प्रति बसत खोकन्द शहरसे बाहर दरवेश-खानाका भारी मेला लगा करता। उस समय हर एक पेशेवालेको खानके सामने अपनी क्षमता के अनुसार नजर भेंट करनी पडती, जो सौसे हजार तिला तक होती। अगर इसमे जरा भी गफलत होती, तो पच लोग पीटे जाते। अगर कोई आदमी किसी दूसरे आदमीसे जमीन या बगीचा लेना चाहता, तो खान उसे उसको मूल कीमतपर ही वेचनेके लिये मजबूर करता, और इसका जरा भी ध्यान नही रखता, कि नये मालिकने उसमे मेहनत और खाद-पानीसे कितनी तरक्की की है। खान अपने लिये सभी चीजें सस्तेमें लेना चाहता है। राज्यसे बाहर अगर कोई जाना चाहता, तो दो तकाके साथ आवेदनपत्र देना पडता। यह पत्र फिर महरम (एक अफसर) के सामने रक्खा जाता, जो उसके लिये एक तका लेता। जानेवालेकी जान इतनेसे ही नही बचती, उसे सडककी हर मजिलपर अलग कर देना पडता। घास, ईंधनके कर, प्रतिपशु प्रतिमास बारह चेका है। चराईका ठेका खानने सिदीक कुश्चीको बीस हजार तिला सलानापर दे रक्खा है। खराज या फसलके महसूलके रूपमें दो लाख चारयक (एक चारयक=दो मन दस सेर) अनाज मिलता, जिसे बेंच दिया जाता। इसके प्रबधके लिये हर किलेमे विशेष अफसर नियुक्त है। शरिकाना जिलेसे नौ हजार चारयक अनाज मिलता है, बालीकिर्चीसे एक लाख, सोखसे चौदह हजार, मेरकेन्दसे बारह हजार चारयक। बगीचों और मेवाके बागोंके करको तनाब कहते हैं, जिससे साठ हजार तिला आता। बालीकिर्ची और चिल महरमके बीचमें सिर नदीपर चुगी कर लगता। विवाहकी लिखाई-पढाईपर भी कर था, जो कि आधा तिला तक होता है। वरासत (उत्तराधिकार) पर सम्पत्तिका चालीसवा हिस्सा मृत्यु-करके रूपमें खान लेता है। नमक बनानेके लिये करसे खानको बीस हजार तिला प्राप्त होता। देहाती लोगों और घुमन्तू कबीलोपर अलग जकातका कर लगा, जिसका ठेका ग्यारह हजार तिलापर चेर्चीबाशीको दिया गया। व्यापारियोंसे जकात उगाहनेवाला मेहतर पैंतीस हजार तिला, खानकी कारवासरायों और हजार दूकानोका ठेकेदार ईसाइया तीस हजार तिला देता है। कपास-कर और दलाली-करसे दस हजार तिला राजकोपमें जाता। तेलके कोल्हू, अनाजमडी, रेशम बाजार, घासहट्टा, दूधहाटसे प्रति वर्ष पाच हजार तिला, व्याह और मुल्ला आदिकी नियुक्तिसे भी पाच हजार तिला प्रति वर्ष मिलता है।"

लेकिन डडेके सामने खानकी अकल ठीक रहती, इसलिये रूसियोंको व्यापार करनेमे कोई बाधा नही दी जाती थी। इतने भारी करके बोझसे कराहते लोग कब तक चुपचाप रहते ? १८७१ ई० में लोगोंने विद्रोह कर दिया, लेकिन उसे जल्द ही दबा दिया गया। काले किर्गिजोपर प्रति परिवार एककी जगह तीन भेंडें तथा पहाड़पर जोते उनके खेतोपर खानने नया कर लगाना चाहा। किर्गिजोंने कर देनेसे इन्कार कर दिया और खानके तहसीलदारोंको पीट भी दिया। सेनाके आनेपर वह पहाडोंपर भाग गये। इसी समय मुसलमानकुलका बेटा तथा खानका साला आफताबचा अब्दुर्रहमान हाजी मक्काकी हज करके खलीफाके नगर कान्स्तन्तिनोपल (कसतुन्तुनिया) होते लौटा था। वह स्वय भी किर्गिज था, लेकिन खानका सबधी होनेके कारण दूसरे वर्गसे सबध रखता था। खानने उसे सेना देकर किर्गिजोको दबानेके लिये भेजा। उसने किर्गिजोंसे कहा—अपनी

तकलीफको कहनेके लिये खानके पास अपने पचास प्रतिनिधि भेजो, हम उन्हे विना नुकसान पहुचाये जामिनके तौरपर रखेगे। लेकिन वहा आनेपर खुदायारने वडी क्रूरताके साथ किर्गिज प्रतिनिधियोको मरवा डाला। आफतावचाको इसके लिये वडी शर्म आई और वह किर्गिजोकी भूमि छोडकर खोकन्द लौट गया। किर्गिजोने वदला लेनेके लिये हथियार उठाया और उजकन्द तथा सुक्को ले लिया—सुकमें एक छोटा-सा किला था, जिसमें खानका खजाना रहता था। पहाडी इलाकोमें सफल होते ही मैदानी इलाकेमें जानेपर किर्गिज आक्रमणमें असफल रहे, उनके बहुत-से आदमी खानके हाथमें बदी बने, जिनमेंसे पाच सौको खोकन्दकी बाजारोमें फासीपर चढा दिया गया। किर्गिजोने मदलीखानके पुत्र मुजफ्फरको अपना खान बनाया था। खुदायारने उसकी जिदा खाल खिचवा ली। लेकिन विद्रोहियोकी शक्ति वढती गई, और उसकी क्षीण। इसपर खानने रूसियोसे मदद चाही, लेकिन वह इस नरराक्षसको क्यो मदद देने लगे? लोगोकी भी सहानुभूति विद्रोहियोके साथ थी। खुदायारको अपने बेटे तथा अन्दिजानके बेक (राज्यपाल) नासिरुद्दीनपर भी सदेह हुआ। चारो तरफसे आशाकी एक भी झलक न देखकर खुदायारने खजाने और परिवारको लेकर अपने पदको छोड दिया। विद्रोहियोने बहुत जल्दी ही ओश, अन्दिजान, सूजक, उचकुर्गान और बालिकचीको अपने हाथमें कर लिया। बालिकचीके वेगने विरोध करना चाहा, इसपर मुहके रास्ते डडा घुसेडकर उसे जमीनमें गाड दिया गया। खानके बहुतसे सिपाही विद्रोहियोकी ओर मिल गये और उनके कमाडर तथा खानके साले आफतावचाने नमगानके पास तुराकुर्गानके किलेमे अपनेको बद कर आगे कोई भी कार्रवाई करनेसे इन्कार कर दिया। १८७३ ई० के जाडोमे विद्रोहियोकी शक्ति कुछ निर्वल हुई, और कुछ शहर फिर खुदायारको मिल गये, लेकिन १८७४ ई० के वसतमें खुदायार पुत्र अमीनको आगे करके विद्रोहियोने फिर बगावतका झडा उठाया। अमीनकी बहुत अधिक बात करनेके स्वभावने परदा फाश कर दिया। उसके चचा वातिरखान तुरा सोलह और षड्यन्त्रियोके साथ राजमहलमें बुलाये गये, जहासे वह फिर नही लौटे। तरुण खानजादेको निगरानीमें रक्खा गया। मेहतर मुल्ला कामिलने सूचना देकर सावधान नही किया था, इसलिये खुदायारने उसे जहर देकर मरवाया। इसके बाद फिर दूसरा षड्यन्त्र खुदायारके चचा फाजिलवेगके पौत्र अब्दुल करीम बेकको खान बनानेके लिये किया गया। रूसियोने अब्दुल करीमको पकडकर ताशकन्दमें और उसके मुख्य सलाहकार अब्दुल करीमको चिमकन्दमें रख दिया। खानको अब हरएक आदमीपर सदेह होने लगा। उसे आखोके सामने मौत नाचती दिखाई पडती थी, इसलिये वह काफी समय तक महलसे वाहर नही निकला। हवशी गुलाम नसीम तोगा खानका बडा ही विश्वासपात्र सेवक था, जो हर वक्त महलके द्वारकी रक्षा करता। उसे भी अपने बीबी-बच्चोको भीतर न आने देनेका हुक्म था। जब शका और सदेहका इतना बाजार गर्म हो, तो हर जगह गुप्तचरोका जाल बिछना स्वाभाविक था।

रूसी खोकन्दकी सारी हालत बडे गौरसे देख रहे थे। १८७५ ई०मे तुर्किस्तान-प्रदेशका शासक जेनरल काफमान था। उसने खोकन्द होते रूसी सैनिक टुकडीको काश्गर भेजनेके लिये सहमति लेनेके वास्ते अब्दुल करीमको खोकन्द भेज दिया। इधर आफतावचा भी अपने पिता मुसलमान-कुलकी हत्याका बदला लेना चाहता था, इसलिये खुदायारके खिलाफ नये विद्रोहका अगुवा बना। सारी सेना उसकी तरफ हो गई। खुदायारके भाई और पुत्र भी उससे आ मिले। खान अपनी वेगमो और दस लाख गिन्नी खजाना लेकर ताशकन्द भागा। रूसियोने उसे बडी खुशीसे आश्रय दे नजरबन्द कर दिया। फिर थोडे समय बाद उसे ओरेनबुर्गमें रहनेके लिये भेज दिया।

१५ नासिरुद्दीन, खुदायार-पुत्र (१८७५ ई०)

खुदायारके भाग जानेपर विद्रोहियोने उसके पुत्र नासिरुद्दीनको खान घोषित किया। अब्दुर्रहमान आफतावचा मुखिया था—आफतावचाका अर्थ है हाथ धोनेके आफतावा या गडवेका उठानेवाला। मुल्ला ईसा औलिया और हाकिम नजर परमाचीने जेनरल काफमानके पास अनुनय-विनयके पत्र भेजे, और खुदायारकी गलतियोको दुरुस्त करनेका वचन देते हुये काफमानकी ओर मित्रताका हाथ

बढाया। काफमानने इस शर्तपर बात स्वीकार की, कि नासिरुद्दीन बापकी की हुई सधियोको स्वीकार करे, रूसी प्रजाके नुकसानोकी क्षतिपूर्ति दे। नये खानसे रूसी बहुत आशा करतेथे, क्योकि वह रूसियोकी चाल-ढालको पसद करता और रूसी जातीय पेय वोद्का (शराब) का बहुत प्रेमी था।

लेकिन खान अकेला क्या करता ? खोकन्दी मुसलमान काफिर रूसियोंके विरुद्ध जहाद करनेकी तैयारी कर चुके थे। उन्होने राजधानीमें घोषणा की, कि सभी रूसी मुसलमान हो जाय, नही तो इसका नतीजा उनके लिये बुरा होगा। लेकिन यह कब होनेवाला था ? अन्तमें विद्रोह उठ खडा हुआ। ताशकन्द और खोजन्दके बीचके तीन और खोजन्द तथा समरकन्दके बीचके कई रूसियोके डाक-स्टेशन लूटकर जला दिये गये। डाकमास्टर और मेल ढोनेवाले मारे या बन्दी बनाये गये। यात्रियोकी भी वही दशा हुई। कुछ समय तक खोजन्दके लिये भी भारी खतरा पैदा हो गया।

रूसियोंके लिये इससे सुनहला मौका और कब मिल सकता था ? काफमानने भारी तैयारी की, और जेनरल गलवाचेफके नेतृत्वमें एक सेना भेजी, जिसने विद्रोहियोंको हराकर कुरामा जिलेको उनसे मुक्त कर लिया। ३१ अगस्तको वह खोजन्द पहुचा। विद्रोही वहासे हट चुके थे। रूसी सीमात और खोकन्दके बीचमें महरमका बडा किला था, जहा विद्रोहियोसे मुकाबला हुआ। एक घटासे कम हीमें किला सर हो गया। ग्यारह सौ गाजियोंकी लाशें वही गाडी गईं। इस इलाके को भी रूसके तुर्किस्तान-प्रदेशमें मिला लिया गया। ७ सितबरको रूसी सेनाने खोकन्दकी ओर कूच किया। नासिरुद्दीनने मुल्ला ईसा औलियाको भेजकर क्षमा मागनी चाही। रूसियोने उसे पकडकर अपनी विजययात्रा जारी रखी। सर्वत्र रूसी सेनापतिके सामने लोग रोटी-नमक पेश करते अधीनता स्वीकार करते जा रहे थे। खानने अब एक दूसरा दूतमडल भेजा, जिसके साथ भेटके अतिरिक्त डाक-स्टेशनोंमें पकडे बदी भी थे। उन्होंने बतलाया कि हमारे सिरको मुडा दिया गया, लेकिन और तरहसे कोई बुरा बर्ताव नही किया गया। रूसी स्त्रियों और बच्चोको खानके अन्त पुरमें रखा गया था। बिना प्रतिरोध किये ही अन्तमें खोकन्दने रूसियोके हाथमे आत्मसमर्पण किया। खान स्वय जेनरल काफमानसे मिलने के लिये आया। जेनरल काफमान अपने स्टाफके साथ कुछ दूर तक जाकर खानके साथ अपने डेरेमें लौट आया। रूसियोंने कुछ समयके लिये वहा डेरा डाल दिया। लोगोंपर धाक जमानेके लिये नगरमें बराबर रूसी सेनाका प्रदर्शन होता रहा। जेनरलने दूसरे स्थानोको भी आत्म-समर्पण करनेके लिये घोषणा निकाली। आफताबचाने मर्गिलानमें काफी सेना जमा कर रक्खी थी। यह सुनकर १७ सितम्बरको काफमान मर्गिलान पहुचा। आफताबचा किपचको (उज्बेकों) के साथ वहासे खिसक गया और मर्गिलानने अधीनता स्वीकार की। आफताबचाका पीछा करते स्कोबेलेफ ओश तक गया—अन्दिजान, बलिकची, सरीखाना और ओशने उसके हाथमें आत्म-समर्पण किया, विद्रोहियोंके तीन नेताओमेंसे एक खालिक नजरने भी प्रतिरोधको बेकार समझकर आत्मसमर्पण कर दिया। नासिरुद्दीनको सधि करनेके लिये काफमानने मर्गिलान बुलाया। समझौतेके अनुसार सिर नदीसे उत्तरका इलाका नमगान रूसियोंके हाथमें चला गया, साथ ही नासिरुद्दीनने छ सालमें तीस लाख रूबल (चार लाख दस हजार पौड) हरजाना देना स्वीकार किया। और लोगोको क्षमादान कर दिया गया, लेकिन विद्रोहियोंके जबर्दस्त नेताओं—ईसा औलिया, जुल्फेकार बी और मुहम्मदखान तुरा—को साइबेरियामें निर्वासित कर दिया गया।

लौटते समय नमगानकी नई बनी रूसी प्रजाने जेनरल काफमानके स्वागतार्थ एक बडा तम्बू गाडकर एक सौ बीस गाडी रसद और चालीस हजार रोटियोकी भेंट पेश की। नदीसे तम्बू तक जेनरलके चलनेके लिये रेशमी पावडे बिछाये गये, और उसके ऊपर चादीके सिक्के बरसाये गये।

लेकिन यह अधीनता स्थायी नही रही। थोडे दिनो बाद फिर विद्रोह हो गया और आठ तोपोंके साथ चौदह हजार आदमी विद्रोह दबानेके लिये अन्दिजान भेजे गये, जहा साठ-सत्तर हजार आदमियोंको आफताबचाने जमा कर रक्खा था। किर्गिजोंने भी पूलादबेकको खान घोषित कर अपने पद्रह हजार योद्धा जमा किये थे। रूसियोंको जबर्दस्ती नगरपर अधिकार करना पडा, और उनकी गोलाबारीमें बाजार और बहुत से मकानोमें आग लग गई। शत्रुओकी सख्या अधिक होनेके कारण रूसी रास्तेके

गावोको जलाते नमगान लौटे। शत्रु उनका पीछा कर रहे थे। यद्यपि असफल होकर ही जनरल त्रोत्स्कीको लौटना पडा था, लेकिन फिर भी जारशाहीने उसे सम्मानित किया।

खान नासिरुद्दीनने रूसियोकी कडी शर्तोंको मानकर अपनी प्रजाको जल्दी ही असतुष्ट कर दिया और उसे उनके क्रोधके मारे भागना पडा। पूलादके समर्थक तथा उरातिप्पाके भूतपूर्व बेकने राजधानी (खोकन्द) पर अधिकार कर लिया। खोकन्दियोका पलडा भारी होते देख नमगानवालोने भी रूसियोके खिलाफ विद्रोहका झडा उठाया, और उसपर भी किपचको (उज्बेको) क अधिकार हो गया। इस विद्रोहको दबानेके लिये जेनरल स्कोबेलेफने बडी निष्ठुरताका परिचय देते अधाधुध तोपोसे गोलाबारी की। खोकन्द राज्यमे इस वक्त चारो ओर अराजकता फैली हुई थी, लेकिन रूसके विरुद्ध सभी एक थे। इस्लामके नामपर वह सर्वस्व-त्यागके लिये बेकरार थे। रूसी सेनाके खूनी अत्याचारोसे उनकी हिम्मत नही टूटी थी। सिर और नरिन नदियोके बीचमें उस समय लडाकू किपचक रहा करते थे। स्कोबेलेफको हुक्म हुआ, कि इस इलाकेको उजाड दे। जनवरी १८७६ ई०में उसने प्रस्थान किया। जाडेके कारण किपचक घुमन्तू इस समय अपने हेमन्त निवासोमे जमा थे। सिरके उत्तरी तटसे बढते हुये रूसियोंने किपचकोंकी मुख्य बस्ती पैताको नष्ट किया, और हराकर उन्हे भागनेके लिये मजबूर किया। आगे सरखावा तक हर चीजको जलाते बरबाद करते रूसी बढे। शत्रुको भयकर हत्या और हानि पहुचाकर अन्दिजान सर किया गया। दूसरी विजय थी अस्साकीकी, जहा शहरेखान और मर्गिलानके लोगोंने अधीनता स्वीकार की। अन्तमें पहली फर्वरीको आफताबचाने भी बिना शर्तके आत्म-समर्पण कर दिया। उसके साथ बातिर त्यूरा, इसफन्दियार और दूसरे सरदार भी थे।

रूसमें विलयन—खोकन्दवाले पूलादबेकसे उकता गये थे। उन्होने खोजन्दसे नासिरुद्दीनको बुला भेजा था। लेकिन पूलादके समर्थकोने उसपर आक्रमण कर दिया, और बडी मुश्किलसे नासिरुद्दीन जान बचाकर महरम भाग सका। फिर प्रहार करनेपर पूलादबेकने भागकर उच-कुर्गानके पास अलई पहाडमे जाकर शरण ली, उसके बहुत-से आदमी पकडे गये और नासिरुद्दीन अभियानमें सफल हो खोकन्द लौटा। लेकिन रूसी देख चुके थे, कि कैसे खान और मुल्ला आसानीसे लोगोमें जहादका प्रचारकर विद्रोह खडा कर सकते है, इसलिये अब और खानको कायम रखना वह अच्छा नही समझते थे। जेनरल स्कोबेलेफको हुक्म हुआ और उसने २० फर्वरी १८७६ ई०को खोकन्दपर अधिकार कर लिया। नासिरुद्दीन, आफताबचा और दूसरे नेता बन्दी बनाकर ताशकन्द भेज दिये गये। जारने अपने सिहासनारोहणके वार्षिकोत्सवके समय २ मार्च १८७६ ई० को एक उकाज़े (राजादेश) निकाला, जिसके अनुसार खोकन्दके राज्यको फरगानाके प्रदेशके नामसे रूसी साम्राज्यमें मिला लिया गया। पूलादबेक भागा-भागा फिरता रहा। उसे भी किर्गिजोने पकडकर दे दिया और बारह रूसी सिपाहियोकी हत्याके अपराधमें उसे मर्गिलानमे फासीपर चढा दिया गया। इस प्रकार बाबरकी प्रिय जन्मभूमि फरगाना जारके राज्यकी अग बन गई, और वहाकी प्रजा प्राय आधी शताब्दीके लिये निरीह बना दी गई।

४ (२ खोकन्द खान-वशवृक्ष)
(१७४७–१८७६ ई०)

यादगार खोजा
- १ शाहरुख=कन्या (१७४७)
  - २ रहीमवेक
    - ४ एर्दनी वेक (–१७७०)
  - ३ अव्दुलकरीम
    - कन्या = ५ नरवुते
      - ६ आलम खान
        - १० मुराद (१८४२)
      - ७ उमर (१७७०–१८००)
        - ८ मदली (१८२२–४२)

वावर
- अव्दुर्रहीम
  - ५ नरवुते
  - हाजीवी
    - ९ शेरअली
      - ११ खुदायार (१८४२–५७—१८६५–७५)
        - १५ नासिरुद्दीन (१८७५)
      - १२ मल्ला (१८५७–५८)
        - १४ सुल्तान (१८५९–६५)
      - सरिंसक
        - १३ शाहमुराद (१८५९)

स्रोत ग्रन्थ

१ इस्तोरिया सममर (अ म ४ जिल्द, व इ रवृदोनिकस्)
२ History of U S S R (Ed A M Pankratova, Moscow 1947)
३ Heart of Asia (E D Ross)
४ History of Mongol (H H Howorth)
५ ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिविर (मास्को १९४६)
६ इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
७ इस्तोरिया रोस्सिइ (स सोलोवियेफ्, पेतेरवर्ग १८७९–८५)
८ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्वेर आदि, मास्को १९१०, पृ० २४९–५८)

अध्याय ३

बुखाराके अमीर

(१७४७–१९२० ई०)

अस्त्राखानी-वशका स्थान किस तरह अतालीकवशी मगीतोने लिया, इसका वर्णन हम पहले* कर चुके है। खुदायार अतालीकके पुत्र मुहम्मद रहीम और दानियाल बी थे। रहीम बी अस्त्राखानी अमीर सैयद अब्दुलफैजका दामाद था। सैयद अब्दुलफैजकी लडकी शम्सबान् आइम दानियाल बीके लडके शाह मुराद (अमीर मासूम बेगीखान) की बीबी थी, जिससे सैयद अमीर हैदर पैदा हुआ था। यद्यपि अब्दुर्रहीम बीके समयसे ही राज्यशासन नये खानदान (मगीत-वश) के हाथमे चला गया था, लेकिन अमीर हैदरके समय तक अस्त्राखानी-वशके खानको खतम नही किया गया। मगीती-वश बुखाराका अन्तिम राजवश था, जिसका उच्छेद बोल्शेविक-क्रातिकी सफलताके बाद १९२० ई० में हुआ।

राजावली—इस वशमे निम्न अमीर हुये—

१	मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालीक खुदायार-पौत्र	१७४७	ई०
२	दानियाल बी, खुदायार-पुत्र	–१७७०	"
३	शाहमुराद, अमीर मासूम, दानियाल-पुत्र	१७७०-९९	"
४	हैदर, शाहमुराद-पुत्र	१७९९-१८२६	"
५	हुसैन, हैदर-पुत्र	१८२६	"
६	उमर, हैदर-पुत्र	१८२६	"
७	नसरुल्ला, हैदर-पुत्र	१८२६-६०	"
८	मुजफ्फरुद्दीन, नसरुल्ला-पुत्र	१८६०-६७	"
९	अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र	—१८९४	"
१०	मीर आलम, अहद-पुत्र	—१९२०	"

१ मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालिक खुदायार-पौत्र (१७४७ ई०)

मगीत-कबीलेको छिङ-गि[खानने मगोलियाके उत्तर-पूर्वसे लाकर वक्षुके मुहाने और बुखारासे एक सौ चालीस मील दक्षिण-पूर्व करशीमे बसा दिया था। मूलत यह चाहे मगोलोंके बधु-बाधव रहे हो, लेकिन आगे तुर्कोंमे मिलकर ये उज्बेकोके मुखिया बन गये। अस्त्राखानियोकी प्रभुताके समय ये उनके बडे भक्त थे। अब्दुर्रहीम उज्बेकोके मगीत-कबीलेका मुखिया था। इसके दादा खुदायारने अतालीक (मुख्य परामर्शक) होकर अपनी शक्तिको बहुत बढा लिया था, लेकिन प्रभुताको पूरी तौरसे अपने हाथमे करनेमें उसके पोते मुहम्मद रहीमबीने ही सफलता पाई। इसने अपने चचा दानियालको समरकन्दका शासक बनाया। अस्त्राखानियोकी कमजोरीके कारण शहरसब्ज, हिसार (ताजिकिस्तान) और ताशकद बुखारियोके हाथसे निकल गये थे। अपने पक्षको मजबूत करनेके लिये रहीमको अफगान अहमदशाह अब्दालीसे मदद लेनेकी जरूरत पडी, जो दिल्ली तककी लूट-मार करके काफी प्रसिद्ध हो चुका था। इस मददके बदले उसे वक्षुके दक्षिणके

* यही जिल्द २।५।१३

भूभागको गिल्जइयो (अफगानो) के हाथमें देना पडा। अब्दुर्रहीमने अस्त्राखानी खानको मारकर ही सतोष नही किया, बल्कि उसके तरुण पुत्र तथा अपने दामाद अब्दुल मोमिनको एक महफिलमें दावत करके मनोरजनके लिये कुएके गहरे जलको देखते वक्त ढकेलकर मार दिया। अब्दुर्रहीम बुढापेमें ईरानी गुलाम तथा अपने वजीर दौलत बीके हाथमे खेलता रहा, जो अपने दु शासनके लिये बदनाम था। रहीम इस वक्त बहुत विचित्र स्वभावका हो गया था। एक दिन वह दर्वेश बन ससारकी असारतापर व्याख्यान देता, और दूसरे दिन मौज-मेलेमें अपनेको भुलाना चाहता। इसी तरहके जीवनमे वह बीमार होकर मर गया। उसके कोई पुत्र नही, बल्कि दो लडकिया थी। मरते समय उसने अपने चचा दानियाल बीको अपना उत्तराधिकारी बनाया।

२ दानियाल बी खुदायार-पुत्र (–१७७० ई०)

रहीमके मरनेपर उसकी इच्छानुसार वजीर दौलतबीने दानियालको सिंहासन सभालने के लिये बुलाया। दानियालने स्वय खान न बन अतालीक ही रहना चाहा, और गद्दीपर उसने अस्त्राखानी अबुल्‌गाजीको खान बनाकर बैठाया। दौलत बी अब भी राजकाज चलानेमें सर्वेसर्वा था। यही समय है, जब कि बुखाराके बाजारोमें कलियान (हुक्के) और तम्बाकूका प्रचार बढा, साथ ही काफिर-रबातमें रडीखाने खुले। दानियालका ज्येष्ठ पुत्र शाहमुराद इनके लिये बहुत अफसोस करता था, क्योकि वह कट्टर इस्लामका प्रचार करना चाहता था। उसने शाह सफर नामक एक सूफीके यहा जाकर शिक्षा लेनी चाही। शेखने उसे फटकारते हुये कहा—"अत्याचारीका पुत्र कैसे भले काम कर सकता है ?" फिर परीक्षा लेनेके लिये उसने कहा—"जाकर पल्लेदारी करते बोझ ढो।" मुराद गदे कपडे पहिनकर तुरन्त बाजारमे चला गया, और अपने गुरुकी आज्ञाके अनुसार कितने ही महीनो तक पल्लेदारी करता रहा। बापके टोकनेपर मुरादने जवाब दिया—"इल्म और धर्मकी खान बुखारा आज अन्याय और दुराचारमें कितना डूबा हुआ है ? जहा तुम्हारे पुत्र व्यसनमे पडे हुये है, जब कि दौलत कुशबेगी जैसा एक दास देशका स्वामी बन बैठा है।" यह कहते हुये मुरादने कहा, कि मै तो दर्वेश (साधु) बनूगा। एक साल तक हम्माली (पल्लेदारी) करनेके बाद शेख सफरने मुरादको अपना मुरीद (चेला) बनाया। अब वह अपना सारा समय आलिमो और दर्वेशोंकी सेवामें बिताने लगा। लेकिन-साथ ही खोकन्दके दूतकी स्वागतकी तैयारीके लिये उसने कुशबेगीको बुला चुपचाप जल्लादोको भेजकर उसका काम तमाम किया, और उसकी धन-सम्पत्तिको जब्त कर लिया। अब मुरादकी चलने लगी। उसने एक काजीको हुक्का पीनेके अपराधमें चाल सुधारनेके लिये साल भरका समय देकर उसे मरवा डाला। उसके डरके मारे भाइयोने भी अपनी चाल बदली। बुरे साथियोको मारनेमें उसने जरा भी आनाकानी नही की, और रडीखानेको भी जल्दी ही बन्द करवा दिया। बुखारा फिर "स्वर्ग" बन गया। दानियाल बीने शाह मुरादके आगे बढनेमें कोई रुकावट नही पैदा की, और बेटा भी अपने बापकी बडी इज्जत करता था। मृत्युके समय दानियालने शाह मुरादसे प्रतिज्ञा करवाई—"भाइयोको न मारना न निर्वासित करना, मेरी विधवाओको व्याह करनेके लिये मजबूर न करना, ख्वाजासरा खोजा सादिकके साथ अच्छा बर्ताव करना, भाइयो-बहनोको काफी धन देना। और मुझे शाह नक्शबदकी कब्रके पास दफन करना।"

दानियालका शासन इस प्रकार बहुत कुछ उसके बेटे शाह मुरादका शासन था। उसने उरगज (खीवा), खोकन्द और मेर्वके शासकोंके साथ मित्रता रक्खी। सिक्का और खुतबा उसने अपना नही चलाया। दानियालके मरनेके बाद भी अभी तख्तपर अबुलगाजी अस्त्राखानी ही रहा, यद्यपि शाह मुरादको यह पसद नही था।

३ शाह मुराद, अमीर मासूम बेगीखान, दानियाल-पुत्र (१७७०-९९ ई०)

शाह मुराद बडा ही ढोगी था। वह अपनेको सत सूफी प्रकट करना चाहता था। बापके मरनेपर वह बुखाराके लोगोंसे पिताके दुष्कर्मो तथा कसूरोंके लिये क्षमा मागता फिरता रहा। बापकी

वरासतमे मिली सम्पत्तिको उसने स्वय न लेकर खैरातके कामोमे दे दिया। पहलेसे ही वह अपने पल्लेदारीके जीवन तथा दूसरे विचित्र कामोके कारण कट्टर मुसलमानोमें सर्वप्रिय हो चुका था, लेकिन उसका अपना भाई तस्तामिश उससे सख्त घृणा करता था, और चाहता था कि किसी तरह गद्दी अपने हाथमे ले ले। उसने शाह मुरादकी हत्याके लिये फरीदून नामक एक आदमी को नियुक्त किया। फरीदूनने शयनकक्षमे जाकर तलवार चलाई, जिससे मुहसे कानतक घाव लग गई, लेकिन इसी समय जागकर शाह मुरादने हत्यारेकी दाढी पकड ली, पर वह किसी तरह जान छुडाकर भागनेमें सफल हुआ। सवेरे उसी तरह घावपर पट्टी बाधे शाह मुराद दरवारमें आया। फरीदूनको मृत्युदड हुआ, भाईको उसके कसूरके लिये देशनिकाला मिला। बापको दिये हुये वचनपर ख्याल करके मुरादने उसको और कोई कठोर दड नही दिया। जब उसके दूसरे भाई सुल्तान मुराद—जो कि कर्मिनियाका हाकिम था—ने विद्रोह किया, तो उसे भी बन्दी बनाकर बुखारामें रख दिया।

मेर्व इस समय ईरानी काजार-वशके सस्थापक बहराम अली खाके हाथमें था, जिसने १७८१ ई०में इस महत्त्वपूर्ण प्राचीन नगरको लेकर उसे अपनी राजधानी बना पुराने मेर्वके ध्वसावशेषपर एक किला बनाया। बहराम स्वय भी तुर्कमान था, इसलिये तुर्कमानोपर सत्ता जमानेमें उसे बहुत कठिनाई नही हुई। शीया होनेसे धर्मांध शाह मुराद मेर्वपर काजार-शासनको फूटी आखो नही देख सकता था। उसके लिये यह धर्मयुद्धका अच्छा मौका था। दानियाल बीके मरनेपर बहराम अलीने अपनी भक्ति दिखाते हुये यद्यपि कुरान-पाठ करके दान-खैरात दी थी, लेकिन इसका सुन्नी दर्वेश शाह मुरादपर कोई असर नही हुआ। १७८५ ई०में शाह मुराद छ हजार सवारो के साथ मेर्वकी ओर चला। छापा मारकर पहले ही हल्लेमें उसने बहराम अलीको मार डाला। लेकिन उसकी राजधानी आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार नही थी। बहराम अलीने सुल्तान सजर सल्जूकी द्वारा बनवाये मुर्गाब नदीके बाध—जोकि मेर्वसे तीस मील ऊपर था—की सुरक्षाके लिये उसपर बने किलेको तोड दिया। बाधका हाकिम अपनी स्त्रीके लिये बहराम अलीके पुत्र मुहम्मद खानसे नाराज था। इसी कारण उसने किलाबन्द महलको शाह मुरादको अर्पित कर दिया। शाह मुरादने बन्दको तोडकर दुनियामे अत्यन्त उर्वर मेर्वकी हरितावली और नहरोको खराब करके बरबाद कर दिया। इससे भयकर अकाल पडा, जिसके कारण मर्ववाले आत्मसमर्पणके लिये मजबूर हुये। अधिकाश निवासियो—तेरह हजार परिवार—को गुलाम बनाकर शाह मुराद बुखारा ले गया। इसके बाद उसने खुरासानपर धावा करके लूटमार मचाई। शीया ईरानियोको मारना या गुलाम बनाना सुन्नी धर्मांध शाह मुरादके लिये पुण्यार्जनका सबसे अच्छा उपाय था। तारीफ यह कि इसपर भी इस समय क्रूरकर्मा शासकको अमीर मासूम (निष्पाप शासक) कहा जाता था। अपने सुन्नी धर्म-भाइयोकी दृष्टिमें वह ऐसी खून-खराबी और लाखो आदमियोको गुलाम बनाकर कोई पाप नही कर रहा था। उसके सालाना हमलोके कारण खुरासानके गाव और नगर उजड गये। ईरानी गुलामोकी अधिकताके कारण बुखाराकी बाजारोमें गुलामोका दाम गिर गया।

मेर्व शहरको बहरामअलीके पुत्र मुहम्मद करीम खाने बड़ी बहादुरीसे बचाया था। उसके बाद उसके भाई मुहम्मद कुल्ली खाने भी शाह मुरादसे मेर्वकी रक्षा की थी। बाधके सरक्षकने एक वेश्याके प्रेममें अधे धोखा दिया। हुसेन खा मेर्वका राज्यपाल था, उसने जबर्दस्ती उसकी वेश्याको पकड मगवाया था।

अफगानिस्तानके अहमद शाह अब्दालीसे शाह मुरादके बापका अच्छा सबध था। सुन्नी होनेसे वह शाह मुरादकी सहायता करनेके लिये कुछ करना पुण्यकी बात समझता था। इस समय अहमदशाह अब्दालीका पुत्र तेमूरशाह काबुलकी गद्दीपर था। उसने लश्करीशाहके साथ एक सेना शाह मुरादकी सहायताके लिये भेजी। लश्करीशाहका पुत्र खजर खा मेर्वके राज्यपालकी बहिनके प्रेममें फस गया। हुसेन खाने उसे पकडकर घायल किया, और वह उसी घावसे मर गया। फिर उसने अपनी बहिनको भी मरवा दिया। लश्करीशाह दो हजार परिवारोंके साथ अपनी सेना ले हिरात लौट गया। हुसेनने दूत भेजकर बुखारासे शाति-भिक्षा मागी, और बादमें स्वय बुखारा गया। उसे चहारबागमें बडी अच्छी तरह ठहराया गया। उसके बाद उसका भाई मुहम्मद करीम खा भी मशहदसे शाह मुरादके

दरबारमें गया। करीम खाके परिवार तथा मेर्वसे लाये सत्रह हजार परिवारोमेंसे बहुतोको हुसेन खा, लौटा ले जानेमे सफल हुआ। अन्तमे मेर्वके तीन हजार सुन्नी और दो हजार शीया-परिवार बुखारामें रह गये। शाह मुरादकी उस चोटके बाद मेर्व तब तक नही सभल सका, जब तक कि बोल्शेविक-क्रातिने उसे एक आधुनिक ढगके उद्योगप्रधान नगरमें परिणत नही कर दिया।

१७५१-५२ ई०से ही वक्ष् (आमू-दरिया) के दक्षिणवाले इलाकेके स्वामी अफगान बन गये—यह वही इलाका है, जहा बलख, कुदुज जैसे महत्त्वपूर्ण नगर है, और जिसे पहले वाह्लीक, फिर दक्षिण तुखारदेश कहा जाता था और १८ वी सदीसे आजतक जहा के रहनेवाले अधिकतर उज्बेक है। शाह मुरादके बापने अपनी निर्बलताके कारण इस इलाकेको अफगानोके हाथमें दिया, लेकिन शाह मुरादको यह पसद नही था। अहमदशाह अब्दालीका पुत्र शाह तेमूर १७८६ ई०में सिधके अभियानमें फसा हुआ था। इसी समय उज्बेक सरदारोने लोगोंको भडकाकर बलख और अक्सी में विद्रोह कर दिया। शाह मुरादने भी सहायताके लिये सेना भेजी और इस इलाकेसे अफगान हाकिमोको मार भगाया गया। तेमूर अब्दालीने शाह मुरादको सख्त पत्र लिखकर कहा—"बाहरसे नम्रता दिखलाते हुये तुम इस तरह आक्रमण करते हो? मेर्वमे हमसे यह कहकर सहायता ली, कि हम शीयोको सच्चे धर्ममें लायेंगे, और कहा था, कि मेर्वके शीयोको असली मुसलमान बनानेकी जिम्मेवारी हम ले लेंगे और इस प्रकार हिन्दुस्तानको हिन्दुओं, यहूदियो, ईसाइयो और दूसरे काफिरोसे मुक्त करनेके लिये अफगान स्वतत्र रहेगे। लेकिन, तुमने शहरसब्ज, खोजन्दके सुन्नियोको तग किया। अब हम तुर्किस्तानके लिये कूच करनेका निश्चय कर चुके है। हिम्मत हो, तो तुम मैदानमें आओ।

तेमूरशाह अब्दाली १७८९ ई०में एक लाख सेनाके साथ काबुलसे रवाना हुआ। हिन्दूकुश पार हो पहले उसने कुदुजपर अधिकार किया। फिर अर्क्सी गया। शाह मुराद भी तीस हजार सैनाके साथ किलिफम वक्षु पार हुआ। लेकिन तेमूरशाहकी सेनाके सामने अपनी शक्तिको निर्बल देखकर उसने नम्रताकी नीतिसे काम लेना चाहा। मुल्ला बीचमें पडे और उन्होने कहा, कि दो सुन्नी बादशाहोको आपसमे लडकर अपनी शक्तिको बरबाद नही करना चाहिये। शाह मुरादने अपने पुत्रको तेमूरके डेरेमें भेजा और किसी तरह तेमूरशाहकी मृत्यु तकके लिये शाति स्थापित हो गई।

१७९६ ई०में तुर्कमान सरदार आगा मुहम्मदने मशहदको नादिरशाहके पौत्र अधे शाहरुख से छीन लिया। काजार-वशका—जिसने ईरानपर २० वी सदीके प्रथमपाद तक शासन किया—वास्तविक सस्थापक आगा मुहम्मद था। यह हिजडा था। मशहदसे वञ्चित हो जानेपर शाहरुखका बड़ा बेटा नादिर काबुल-दरबारमें गया और उसने अपने भाइयो तथा सरदारोको मदद मागनेके लिये बुखारा भेजा। अबुलफैजने अस्त्राखानीकी लडकीके सबध और रहीमपर दिखलाई अपनी दया, तथा सुन्नी धर्मके नामपर सेना मागी। उसने शाह मुरादसे यह भी कहा, कि सफलता प्राप्त करनेपर हम बुखाराके अमीरके नामका खुतबा पढवायेंगे। १२ मार्च तक प्रतीक्षा करके कोई सफलता न देखकर वह हिरातकी ओर लौटे। नदीमें धोखेसे डुबानेके लिये पुरानी नावपर चढाया गया था, लेकिन राजकुमार किसी तरह नदी तैरकर चारजूइ पहुच गये। असफल होनेपर ख्वारेज्मके एल्वर्स खानके पौत्र तूरा कजाकको नादिरके दामादके मारनेका बदला लेनेके लिये भेजा गया। तुरा कजाक चारजूइके हाकिमके घर ठहरा। बात खुल गई, तो उसने बहुत गिडगिडाकर कहा, कि हम सुन्नी है, और तुम्हारे मेहमान है। लेकिन उनको क्षमा न करके तुरा कजाकने नादिरशाही राजकुमारोंको मार डाला।

अबुलगाजीके जीवन भर उसीके नामका खुतबा और सिक्का बुखारामें जारी रहा। शाह मुरादने खानकी गद्दीपर बैठ अपनेको केवल "नवाब" या "वली-निअम" ही बनाकर रक्खा। शाह मुराद बडे ही नाटकीय ढगसे अपने त्याग और तपस्याको दिखलाता था। दरबारमे कितने ही बकरीके छाले रक्खे रहते थे, वह उन्हींमेंसे किसीपर बैठ जाता और अपनेको दूसरोंसे बडा नही समझता था। छोटे-से-छोटे कामोको भी वह अपने हाथसे करनेमें नही हिचकिचाता था। उसके रसोईघरमें एक लकडीका कटोरा, एक लोहे की कड़ाही और कुछ मिट्टीके बर्तन थे। वह स्वय बाजारसे चीजें खरीद लाता और अपने हाथसे खाना पकाता। मेहमानोका हाथ धुलानेके लिये स्वय पानी डालता

और उनके जूठे कटोरोमे खाता। एक वहुत सस्ते गदहेपर विना चारजामाके ही वैठकर बुखाराके वाजारोंमें चलता। वह अपनेको फकीर कहता था। अपने खर्चके लिये राजकोपसे प्रतिदिन एक तका लेता। अपने वावर्ची, चाकर और मुल्लाके लिये भी एक-एक तका देता। वीवी शाही खानदान की थी, इसलिये उसे प्रतिदिन तीन तका दे, ऊपरसे शिक्षा देता—"खातून थोडेसे सतोप करो, जिसमे कि अल्ला तुमपर सतुष्ट हो।" लेकिन जव खातूनको पुत्र पैदा हुआ, तो खुश होकर मा-वेटेके लिये पाच तिला (अशर्फी) प्रतिदिन देने लगा। दूसरे दो पुत्रोके पैदा होनेपर उतना ही और देता रहा। इस प्रकार अपने परिवारको यद्यपि उसने सुखपूर्वक रक्खा, लेकिन स्वय एक विल्कुल विना सजाई छोटी-सी कोठरीमें रहता, जहापर हर वर्गके आदमी उसके पास हर हमय जा सकते थे। फकीरोकी तरह उसकी पोशाक वडी मोटी-झोटी होती। न्यायालयमें उसने चालीस मुल्ला रक्खे थे, जिनका अध्यक्ष स्वय था। डाका डालनेके अपराधके लिये मृत्युदड, चोरीके लिये हाथ काटना, शराबीको खुलेआम कोडे लगाना, तमाकू पीनेके लिये भी कडी सजा होती थी। लोगोको नमाजमे भेजनेके लिये पुलिस डडा लिये तैयार रहती। विद्यार्थियोको राजकोषसे खर्च मिलता, जिससे बुखारा-के मदरसोमें एक समय तीस हजार विद्यार्थी रहते थे। विदेशी मालपर छोडकर और किसी तरहका शुल्क नही था। गैर-मुस्लिमोसे इस्लामी शरीयतके अनुसार जजिया ली जाती थी, और सिपाही शीयोको लूटकर जो माल लाते, उसका पचमाश शाही खजानेमें देते।

उज्वेक उसे सचमुच ही अल्लाका वली मानते। जब वह जहादियोकी सेना लेकर खुरासानपर लूटके लिये जाते, तो भारी रसदके सामानको कई मँजिल पीछे छोड देते, हरावलमें केवल सवार-सैनिक होते। गाजियोकी सेना इलाकेमे छा जाती, और लूटमार तथा लोगोको वदी वनानेका काम शुरू कर देती। हरएक जहादी (धर्मयोद्धा) को अपने और अपने घोडेके लिये सात दिनका आहार साथ ले जाना पडता। अभ्यासके साथ शाह मुरादके मुजाहिद (धर्मयोद्धा) इतने अभ्यस्त हो गये थे, कि वे-रोक-टोक एकाएक किसी किले, प्राकारवद्ध गाव, नगर या काफिलेपर टूट पडते। वदी वनाये हुये आदमियोंके लिये मुक्ति-धन मागते, जिसके न मिलनेपर उन्हे दास बनाकर वेच देते। शाह मुराद ईरानियोके विरुद्ध धर्म-युद्धोमें स्वय अपने आदमियोके आगे-आगे रहता। फकीरोकी पोशाक पहने एक छोटे-से टट्टूपर वैठा वह गाजियोका सचालन करता। उसके अनुशासन वडे कडे थे। नमाज, रोजा आदि धार्मिक कर्त्तव्योकी वडी कडाईसे पालन कराता। सभी इस्लामी देशोमें "रईस शरीयत" (धर्माधिकारी) पदको उठे वहुत दिन हो गये थे, लेकिन शाह मुरादने वुखारामे फिरसे इस पदकी स्थापना की। चोरो और वेश्याओको वह सीधे जल्लादके हाथमे दे देता, लेकिन इन सारी धार्मिक कडाइयोका परिणाम बुखारावालोके लिये उलटा ही पडा।

चिन्नरनके सरदार मएश खानने शाह मुरादके वहनोई तथा जीजकके हाकिम ईशान मखदूम-पुत्र ईशान नकीवके नाम चिट्ठी देकर दूत भेजा। दूतने अपने कामका इस प्रकार वर्णन लिखा है—"मुझे, ईशान नकीवके सामने पेश किया गया। वह एक वडे ही सुदर तम्वूके दूसरे छोरपर वैठा था। अभी हमे वैठे देर नही हुई थी, कि एक अफसर तम्बूमें आया और उसने ईशान नकीवको कहा, कि वेगीजान (शाह मुराद) की इच्छा है, कि आप अपने मेहमानके साथ आवे। हम खडे हो गये और अपने-अपने घोड़ेपर चढकर ईशान नकीवके साथ चले। कुछ दूर जानेके वाद हमें एक वासका तम्बू मिला, जिसकी शकल-सूरत और फटी हालतको देखकर मैने समझा, कि किसी वावर्ची या भिस्तीका तम्बू होगा। एक वूढ़ा आदमी धूपसे वचनेके लिये उसीकी छायामें घासपर वैठा हुआ था। सव घोडेसे उतर पडे और हरे तथा अत्यन्त गदे कपडे पहने हुये वूढे आदमीकी तरफ बढे। उसके पास जाकर खडे हो सबने अपने दोनो हाथोको छातीपर रखकर आदरके साथ सलाम किया। उसने हरएक आदमीको सलामका जवाव दिया, और अपने सामने वैठनेके लिये कहा। वह ईशान नकीवके लिये वहुत मेहरवानी दिखलाता मालूम होता था, और उसे अपनी वातचीतमें उतखुर सूफीके नामसे सबोधित करता था। मैंने अपना पत्र ईशान नकीवके हाथमें दिया। उसने उसे हरे कपडेवाले वूढेके हाथमे थमा दिया, जिसके वारेमे अव मुझे पता लगा, कि वह वेगीजान (शाह मुराद) है। उसने चिट्ठीको खोलकर पढा और फिर अपनी जेवमे डाल लिया।

. हमारी बातचीत होने लगी। इसी बीच बहुत-से दरबारी अमीर आये और मै उनके असाधारण भडकीले, तथा मूल्यवान् हथियारो तथा पोशाकको देखता रहा। उनके आनेके थोडी देर बाद उनका सरदार (शाह मुराद) एक गहरे ध्यानमें डूब गया और जब तक कि शामके नमाजकी घोपणा नही हुई, तब तक वह उसी ध्यानमें लीन रहा। दूसरे दिन विदाईकी बात होते समय उसका रसोइया कमजोर आखोवाला एक नाटा आदमी तम्बूके भीतर आया। बेगीजानने कहा—"क्यो नही तुम खानेका प्रबध करते हो? जल्दी ही नमाजका समय होनेवाला है।" नाटा रसोइया तुरन्त एक बडा काला बर्तन लाया और पत्थरोंको रखकर चूल्हा बना उसने चार-पाच तरहके अनाज और थोडासा सूखा मास डालकर उसे चूल्हेपर चढा बर्तनको पानीसे गले तक भरकर, आग जला उसे पकनेके लिये रख दिया। फिर वह तश्तरिया ठीक करने लगा। यह लकडीकी तश्तरिया वैसी ही थी, जैसी कि अत्यन्त गरीब लोग इस्तेमाल करते है। उसने तीन तश्तरी रखकर पकी हुई चीजको उसमें उडेल दिया। बेगीजान रसोइयेकी ओर नजर लगाये हुये था। उसकी नजर के सकेतसे रसोइया जानता था, कि कितना कमबेसी तश्तरीमें डालना चाहिये। जब सब ठीक हो गया। उसने एक गदे कपडेको लेकर फैला दिया, फिर उसके ऊपर एक पुरानी जौकी रोटीका टुकडा रख दिया, अल्ला ही जानता होगा, कि हिजरीके कौनसे सनमें उसे पकाया गया था। बेगीजान ने रोटीको पानीके प्यालेमें भिगोया। पहली तश्तरी उज्बेकोंके शासक (शाह मुराद) को दी गई, दूसरी तश्तरी मेरे और ईशान नकीबके बीचमें रक्खी गई, और तीसरीको रसोइया ले अपने स्वामीके सामने खानेके लिये बैठ गया। मै पहले ही खा चुका था, इसलिये अपने सामने रखी चीजको सिर्फ चख भर लिया। बडी ही दुस्स्वादु थी, गोस्त तो करीब-करीब सडा हुआ था, लेकिन तो भी भीतर आये बहुत-से अमीरोने हमारे छोडे हुये खानेको खाकर खतम कर दिया, उनके देखनेसे मालूम होता था, कि वह भोजन उन्हे बहुत पसद आया, लेकिन शायद वह अपने पवित्र नेताको प्रसन्न करनेके लिये ही ऐसा कर रहे थे।

४ हैदर, शाह मुराद-पुत्र (१७९९–१८२६ ई०)

अब हम उस समयमें आ गये, जब कि अग्रेज कपनीका शासन भारतमें दृढ़ता पूर्वक स्थापित हो चुका था और १९ वी सदीका आरम्भ होनेवाला था। शाह मुरादने रहीम खानकी विधवा तथा अस्त्राखानी अबुलफैजकी लडकी शैम्सबानू आयमसे व्याह किया था। इसीसे शाह मुरादका सबसे बडा बेटा हैदर तुरा (कुमार हैदर) पैदा हुआ। मुरादके मरनेपर तख्तके लिये उमर बी, फाजिल बी, महमूद बीके बीच झगडा हुआ, लेकिन नागरिक अपने औलिया फकीर बादशाहके अधभक्त थे, वह क्यों चाहने लगे, कि तख्तसे औलियाके बेटेको वचित करके चचा शासन करे। बुखारावाले उमरके लोगोपर टूट पडे। उमर किसी तरह जान लेकर भागा, लेकिन लोगोने उसके घरको लूट लिया, बीबी-बच्चोको कपडा छीन नगा करके छोड दिया। शाह मुरादकी लाश तीन दिनसे महलमें पडी हुई थी। हैदर बडी तडक-भडकवाले अनुचरोके साथ गद्दीपर बैठा। पीछे बच्चों सहित उमर बी और फाजिल बी भी पकडकर मार डाले गये। महमूद बी भागकर खोकन्द चला गया। अभी सिंहासनपर बैठे देर नही हुई थी, कि भाई मुहम्मद हुसेनपर भी षड्यत्रमें शामिल होनेका सदेह हुआ। इसपर समरकन्द छीनकर ईरानी दौलतकुश बेगीको वहाका हाकिम बना, भाईको पेंशन दे नजरबन्द कर दिया। इसके बाद हैदरकी निगाह मेर्वके हाकिम हाजी मुहम्मद खा तथा उसके सबधी करीम खा और बहरामअली खापर पडी, और इन बारह राजकुमारोको पकडकर भेड-बकरियो की तरह मरवा डाला। उनकी बीबियो और बच्चोको भेंटके रूपमें लोगोमें बाट दिया। किस कसूरपर उन्हे यह दड मिला, इसे कोई नही जानता। हैदरकी हत्याओंसे डरकर उसका भाई नासिरुद्दीन परिवार-सहित मेर्वसे मशहद भाग गया।

अब हैदरने अपनी दिग्विजयोको शुरू किया। १८०४ ई०तक उरातिप्पा, खोजन्द और ताशकन्दको उसने ले लिया। इसी साल हैदरने अपना दूत रूसी जारके पास पीतरबुर्ग भेजा, जो मास्को, अस्त्राखान, खीवा और उरगजके रास्ते लौटा। खीवाके खान इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें आकर

लूट-मार की, जिसपर नियाज बीके नेतृत्वमें तीस हजार बुखारी-सेनाने जाकर इल्तजारको हराया, और वक्षु पार हो जान बचानेके प्रयत्नमे डूबकर इल्तजारने अपने प्राण खोये। लूटके मालमें खीवावालोका वहुत-सा खजाना बुखारियोंके हाथमे आया, जिसके साथ एक तुर्क (घोडेकी पूछ वाला) झडा भी था। सेना बदियोके साथ लूटका माल लिये बुखारा लौटी। हैदरने हथियार छीनकर बदियोको छोड दिया और अफसरोको खलअत भी दी। इल्बर्सकी जगहपर उसके भाई कुतलीमुराद बेकको ईनककी पदवी देकर हैदरने खीवाका हाकिम नियुक्त किया, लेकिन वहा पहुचनेसे पहले ही उसके छोटे भाईको लोग खान बना चुके थे।

हैदरने यद्यपि आरम्भमें अपने सबधियो, और जिससे भी खतरेका डर मालूम हुआ, उसे बुरी तरहसे मारा और बरबाद किया, किन्तु पीछेके जीवनमे वह नरम स्वभावका, उदार, न्यायप्रिय आदमी बन गया। उसकी भी इस्लाम-भक्ति बापकी तरह धर्मान्धता तक पहुच गई थी। यद्यपि बापके इतना नही, तो भी वह सादगीसे रहता था। उसके कपडे सीधे-सादे तथा प्राय सफेद रगके होते थे। रोटी और सब्जी यही उसका भोजन था। अपने खर्चके लिये वह यहूदियोंपर लगाये करको इस्तेमाल करता था। उसका दरबार किसी दर्वेश या मुल्लाका दरबार था। वह मेम्बरपर खडा हो व्याख्यान देना बहुत पसद करता था। वह लम्बा और सुन्दर था, उसका रग कुछ पीला लिये हुये अधिक गोरा था। मुहपर भरी हुई दाढी थी। अपनेको सदाचारी दिखलानेका बहुत शौक था और इस्लामी शरीयतके अनुसार चारसे अधिक बीबिया नही रखता था। हा, यदि दूसरी कोई सुन्दरीको बीबी बनाना चाहता, तो एकको घर और पेंशन दे तलाक दे देता था। दासियोकी सख्यापर शरीयतने कोई प्रतिबध नही रक्खा है, इसलिये हर महीने कोई न कोई सुन्दरी दासी उसके हरममें दाखिल होती रहती। अपनी दासियोकी कन्याओको वह मुल्लाओ या सैनिकोको प्रदान करता।

शासन-प्रबध—बुखाराका राज्य उस समय सात तुमानोमें बटा हुआ था। हरएक तुमानका हाकिम नकीम और उसका सहायक वजीर होता, जिन्हे अमीर नियुक्त करता। हर तूमानमें बहुत-से गाव होते, जिनके लिये ग्रामकी जनता अपना अक्सक्काल (श्वेत दाढी) नामक ग्रामपति निर्वाचित करती। अक्सक्काल एक मर्तबे निर्वाचित होकर, यदि किसी अपराधके कारण हटाया न जाय, तो जिन्दगीभर अपने पदपर रहता, बल्कि अक्सर उसका पद पैतृक हो जाता। अक्सक्कालका काम था—आपसी झगडे तै करना, कर उगाहना और राज्यके लिये सिपाही देना। गावमें हर ब्याहमें कुछ भेट और भोजमें उसे निमत्रण मिलता, साथ ही फसलके अनाजमें भी उसका हिस्सा बधा था। जमीनपर कर दहयक (दशाश), गल्लेपर चालीसवा हिस्सा, और सौदेपर भी चालीसवा हिस्सा देना पडता। नायब नकीमके सहायक होते, जो अधिकतर मुल्ला थे। गावोके शासनमें उनका भी अधिकार था। धनी और प्रभावशाली उज्बेकोको बेग या बाय कहा जाता। बुखाराके पास चालीस हजार सेना थी, जिसे आवश्यकता पडनेपर नये रगरूटोका भर्ती करके बढाया जा सकता था। सैनिकोके पास भाला, ढाल-तरवारके अतिरिक्त थोडी सख्यामें पलीतेवाली बन्दूकें भी थी।

वैदेशिक सबध—१८२० ई०में रूसका एक दूतमडल बुखारा आया। इसका नेता नेगरी था, जिसके साथ बोरोन मेयेदोर्फ भी था। १८१६ ई० और १८२० ई०मे बुखाराके दूत दो बार जारके दरबारमें जा चुके थे, उसीके जवाबमें यह रूसी दूतमडल आया था। दूतमडलके साथ कुछ कसाक सैनिक भी थे। कई सौ ऊटोपर रसद और सामान ले दूतमडलने १०० अक्तूबर १८२० ई० को ओरेनबुर्ग छोडा। दश्त-कजाक (दश्ते किप्चक) पार हो अगतमामें पहुचा। बुखाराकी सीमापर उसका बडा स्वागत हुआ। बस्तियोमें उन्होने बुखारियोंके बीचमें सफेद पगडीवाले रूसी गुलामोको भी अपनी आखो देखा। दूतमडल २० दिसम्बरको बुखारा नगरमें दाखिल हुआ। वह अमीरकी भेंटके लिये अपने साथ समूरी छाल, चीनी बर्तन, बढिया काचके बर्तन, घडिया और बन्दूकें लाये थे। शहरके एक दरवाजेसे सैनिक ढगसे दाखिल हो महलके पास पहुच रूसी घोड़ोंसे उतर पडे। वहा करीब चार सौ सैनिक बन्दूक लिये दो पातियोंमे खडे थे, जिनके बीचसे

दूतमडल आगे वडा। एक महलके आगनमें तीन-चार सौ सफेद पगडीवाले वुखारी स्वागतके लिये खडे थे। अन्तमें वह दरवार-हाल में पहुचे। खान वहा एक सुनहली किनारेवाली लाल गद्दीपर वैठा था। उसकी वाईं ओर उसके दो पुत्र थे, जिनमें वडा पद्रह सालका था, दाहिनी ओर कुशवेगी (प्रवानसेनापति) था। रूसियोंने अपना प्रमाणपत्र पेश किया। इसके वाद अमीरने कसाक सैनिकोंको देखना चाहा। जव कसाक हालमें लाये गये, तो अमीर हैदर वच्चोंकी तरह खिलखिलाकर हसा।

वुखारामें यहूदी काफी सख्यामें रहते थे, लेकिन वह सिर्फ तीन महल्लोंमे ही वस सकते थे। अविकतर उनमें दस्तकार, रगरेज और कुछ रेशमके व्यापारी थे। उनसे जजियाके रूपमें प्रतिवर्ष अस्सी हजार स्वल वसूल किया जाता। नगरके भीतर कोई यहूदी न घोडेपर चढकर निकल सकता था, न रेशमी पोशाक पहन सकता था। अपना परिचय देनेके लिये एक खास तरहकी चौडी टोपी काले मेमनेके चमडेकी पट्टी लगाकर उन्हें पहिननी पडती। वह अपने लिये नया मदिर नही वनवा सकते थे। वुखारा और रूसका व्यापार पुराने जमानेसे चला आता था। पहले इसके लिये एक वहुत भारी मेला मकरियेफमें लगता था, जिसे १८१८ ई०मे निज्नीनवोगोरद (आवुनिक गोर्की) में वदल दिया गया। ओरेनवुर्ग और त्रोइत्स्कमें वुखारी व्यापारके लिये जाते, जिन्हे रास्तेमे कजाक अक्सर लूट लिया करते थे। रूसियोने अपनी यात्राका जो वर्णन लिख छोडा है, उससे मालूम होता है, कि वहा चारो तरफ लूट-खसूटका वाजार गर्म था, और कोई अपनी सम्पत्तिका दिखावा करनेसे डरता था। शौकीनी, और विलासिताके जीवनका भी आकर्पण काफी था, यद्यपि वाहरमे अपनेको वडा सदाचारी दिखलाया जाता। खान अपने निजी जीवनमें किसी तरहकी पावन्दी नही रखता था। उसको डर था, कि कही कोई विप न दे दे, इसलिये उसके खानेको पहले वावर्ची चखता, फिर कुशवेगी भी चखकर उसे ढाककर अपनी मुहर लगा देता। शहर छोडते समय वह पुत्रको भी छोड जाता। रूसियोंके कथनानुसार हैदरके हरममें दो प्रकारकी स्त्रिया थी, जिनमें चार व्याही थी—हिसारी, समरकन्दखोजाकी पुत्री, अफगानके शाहजमाकी पुत्री ।

हैदरका पुत्र नसरुल्ला करशीमें रहता था। १८२६ ई० में वह वेटेके पास गया, जहासे लौटते समय वीमार हो वुखारामें पहुच ६ अक्तूवर १८२६ ई० को मर गया।

इन दो पीढियोंमें लाठीके जोरसे लोगोंको जो सदाचारी वनानेका प्रयत्न किया गया था, उसका परिणाम अव अप्राकृतिक व्यभिचारके रूपमें वहुत वुरी तौरसे फैला। शराव और तम्वाकू वर्जित कर दिये गये थे, लेकिन उनका स्थान अव अफीम और भगने ले लिया था।

५ हुसेन, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

पिताके मरनेपर हुसेन वुखारामे था, इसलिये वह झट गद्दीपर वैठ गया, लेकिन तीन मास वाद ही वह मर गया। फिर उसके भाई मीर उमरने गद्दी सभाली।

६ उमर, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

मीर उमरने गद्दी सभाली, लेकिन नसरुल्ला ताकमें था। उसने २४ अप्रैल १८२७ ई० को आकर वुखारा ले लिया।

७ नसरुल्ला, हैदर-पुत्र (१८२६-६० ई०)

अपने शासनके आरम्भिक कालमें नसरुल्ला नेक और न्यायप्रिय था। उसे "अमीरुल् मोमिनीन" (मुसलमानोंका अमीर), "हजरत" और "इस्लामके खलीफा (तुर्कीके सुल्तान) का वनुर्वर" कहा जाता। लेकिन पाच-छ वर्षसे अविक वह इस जीवनको नही विता सका। इसी समय १८३२ ई०के आस पास तत्रेजमें पैदा हुआ अव्दुसमद खा नामक ईरानी वुखारा दरवारमें पहुचा। उसने जेनरल कोर्ट (एक अग्रेज अफसर) के नीचे रहकर कुछ पश्चिमी सैनिक-विद्या सीखी थी। मुहम्मदअली

मिर्जाने उसे कुछ समय किरमानशाहका हाकिम बनाया था, जहा किसी कसूरमे उसके कान काटे गये। फिर भारत और पेशावरमे कितने ही समय रहकर वह कावुलके अमीर दोस्त मुहम्मद खाकी सेवामे रहा। तव अग्रेजोके प्रति भारी घृणा लेकर वह वुखारा पहुचा। कुशवेगी हाकिमवेग अब्दुस्समदसे वहुत प्रसन्न हुआ, और उसे अपना नायब बना सेनाको फिरसे सगठित करनेके काममें लगा दिया। अब्दुस्समद वुखारामें अग्रेजोकी कोई वात चलने नही देता था।

उबेज्क कहावतके अनुसार "राजा उस युगका दर्पण होता है" मान लिया जाय, तो नसरुल्लाके रूपमें बुखारा दुराचार और अत्याचारमे अपनी पराकाष्ठामें पहुचा था। नसरुल्ला हैदरका पुत्र था, लेकिन अपनी कुटिल नीतिमें अपने दूसरे भाइयोसे कही आगे वढा हुआ था। कुशवेगी (सेनापति) हाकिम वीं और ससुर आयाज तोपची वाशी (तोपखानाका जेनरल अयाज) उसके पक्षमें थे। जव हैदरके मरनेपर बडा भाई हुसेनखा गद्दीपर वैठा, तो नसरुल्लाने अपनी वडी गर्मा-गर्म वफादारी दिखलाई, लेकिन साथ ही करशीसे वह आगेके लिये तैयारी भी करता रहा, जिसमें उसका प्रधान-सहायक मीर अमीन वेग दादखा था। तीन ही महीनेके शासनके वाद भाई मर गया—कहा जाता है कुशवेगीन उसे जहर दे दिया। करशीके प्रधान काजीने नसरुल्लाके पक्षमें अपना फैसला दे समरकन्दके काजीको भी वैसा ही करनेके लिये कहा, लेकिन इसी वीच दूसरे भाई उमरखाने वुखारापर अधिकारकर समरकद को किसी हालतमे भी न देनेके लिये हुक्म दिया। लेकिन नसरुल्लाके आनेपर दरवाजा खोल दिया गया, क्योकि समरकन्दके मुल्ला उसके पक्षमे थे। कोकताश (नील-पाषाण) के ऊपर तेमूरके जमानेसे ही गद्दी देनेकी रसम पूरी की जाती थी। वही नसरुल्लाके सिरपर ताज रक्खा गया। कत्ताकुर्गान, करमीना आदि नगरोंने उसका शासन स्वीकार किया, फिर वुखाराको उसने घेर लिया। घेरावेके कारण लोगोकी हालत वुरी हो गई। आध सेर मास चादीके सात तकेमे विकने लगा। वाहरसे कोई खानेकी चीज आने नही पाती थी। उन्हे लोग लाशोके साथ जनाजेमें छिपाकर लाते। नहरके पानीमे भी असह्य सडाद आने लगी थी। भीतरसे कुशवेगी और ससुर अयाज नसरुल्लाके पक्षमें थे ही। उनको वहाना मिल गया। वडी तोपको दागकर फोड दिया गया था। नसरुल्लाने २२ मार्च १८२६ ई० को दो तरफसे शहरपर आक्रमण कर दिया। चारो ओर विश्वासघात देखकर उमर जान लेकर भाग गया, लेकिन उसके तीन भाइयों और वहुत-से अनुयायियोको पकडकर नसरुल्लाने मरवा डाला। अपनेको काफी मजवूत कर लेनेपर अपने सहायक कुशवेगीको पहले करशी और फिर समरकन्दमे निर्वासित कर दिया। अपने ससुर तोपची वाशीको वुलाकर सुन्दर घोडेपर सवार कर समरकन्दका हाकिम वनाकर भेजा, लेकिन तुरन्त ही वुखारा लौटनेका हुक्म देकर उसे जेलमें कुशवेगीके साथ वन्द कर दिया। फिर जिनके विश्वासघातके वलपर उसे गद्दी मिली थी, उन दोनोको उसने १८४० ई०मे कत्ल करवा दिया। सैनिक अफसरोमेंसे भी उसने चुन-चुनकर बिना मुकदमा किये कितनोको मरवाया और कितनोको निर्वासित कर दिया। अन्तमे मुल्लोके ऊपर पडा और उन्हे हर तरहसे दवाकर शरीयतकी जगह अपने हुक्मको सर्वोपरि वनाया।

कुशबेगी तोपची वाशीको १८४० ई०के वसतमे मरवानेके वाद अव नसरुल्लाके सामने कोई वाधा देनेवाला नही रह गया। तुर्कमान रहीमवर्दी माजूमको हथियार वनाकर वह अपना काम लेता था। किसी समकालीन लेखकने उसके शासनके वारेमे लिखा है—"नमाज पढनेके लिये लोगोको डडोसे पीटा जाता, सिपाही जवह किये जाते या जान वचाकर भागनेके लिये मजवूर होते।"

लेकिन कुशवेगी और तोपची वाशीके मरनेसे पहले ही १८३९ ई०में माजूम तुर्कमानका समय वीत चुका था। अव सभी पदोको अमीरने अपने हाथमे रखना चाहा। वजीरके लिये कोई चाहिये, तो वह अपने प्रिय छोकरोमेंसे किसीको तीन-चार सालके लिये वैठा देता, उसके वाद फिर किसी दूसरेको लाता—हटाते वक्त उनके सारे धनको छीन लेता।

ऐसे अत्याचारी, क्रूर और पतित आदमीको सव जगहसे भय होना जरूरी था। इसके लिये उसने नगर, वाजारो, मदरसो, मस्जिदो, हम्मामोको अपने गुप्तचरोंसे भर रक्खा था।

पिशागरमें किलेको न ढानेसे नाराज होकर वह खोजन्दके खान वेगलर वेकके विरुद्ध

चढा। तीन सौ सरवाजो और नायव समदकी ढाली कुछ तोपोंके साथ जा अगस्त १८४० ई० में खोकन्दियोको हराया। १८४१ ई०की शरद्में खोकन्दियोकी लूट-मारका वदला लेनेके लिये वह फिर हजार सरवाजो (सिपाहियो), ग्यारह तोपो और दो मारतोलोके साथ गया। २१ सितम्वर को याम, और २७ को जमीनपर अधिकारकर वह उरातिप्पाको लूटते ८ अक्तूवरको खोजन्द नगरमें दाखिल हुआ। खोकन्दके खानने मजवूर होकर सुलह की और भारी हर्जानेके साथ खोजन्द तकका प्रदेश नसरुल्लाको देकर नसरुल्लासे सुलह की, साथ ही अधीनता स्वीकार करते उसके नामका खुतवा और सिक्का चलाया। नसरुल्ला खोकन्दके खानके भाई तथा प्रतिद्वद्वी सुल्तान महमूदको खोजन्दका हाकिम वनाकर वुखारा लौट गया। लेकिन उसके लौटते ही सुल्तान महमूदने अपने भाईसे मेल कर लिया। जव इसकी खवर नसरुल्लाको लगी, तो वह फिर दड देनेके लिये आया, और २ अप्रैल १८४२ ई०को खोजन्दको हाथमें करके राजधानी खोकन्दको भी आसानीसे सर कर लिया। खोकन्दी खान मदली दस दिन वाद मर्गिलानमें पकडा गया, और अपनी खास माके साथ व्यभिचार करनेका अपराध लगाकर उसे, उसके भाई, स्त्री तथा दो पुत्रोंके साथ मरवा डाला गया—मदलीकी गर्भिणी स्त्रीके भी प्राणोको नही छोडा गया।

अग्रेजोकी चालें—१७ वी सदीमें पीतर I के समयसे ही रूसने वुखाराके साथ अपना सवध स्थापित किया था, और तवसे जव-तव दूतमडल आते-जाते रहे। १८३४ ई०में डाक्टर देमेसोन मुल्ला वनकर वुखारा गया। १८३५ ई०में वित्कोविच कजाकका भेष वनाकर पहुचा। १८ वी सदीमे ही पहला अग्रेज कप्तान वार्निस वुखारा गया। ओरेनवुर्ग वुखारी व्यापारियोंके लिये एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक नगर था, जिसके जरिये १९ वी सदीके पूर्वार्धसे रूस और वुखारामें व्यापार होने लगा था। उस समय खीवावालोसे रूसका सवध जितना विगडा हुआ था, उतना वुखारियोंसे नही। १८३४ ई०मे ओरेनवुर्गके राज्यपालने अमीर नसरुल्लाके पास पत्र लिखकर शिकायत की, कि खीवावाले रूसियोंके साथ वुरा वर्ताव करते है, और उन्होने कितने ही रूसियोको दास वना रक्खा है, खीवावाले रूसी प्रजा कजाकोपर लूटमार करते है, इसीलिये जारने हुक्म दिया है, कि जवतक खीवावाले रूसी प्रजाको नही छोडते, तवतक खीवाके व्यापारियोको रोक रक्खा जाय। १८३६ ई०में ही कुर्वान वेक अशुरवेक अमीर-वुखाराका वकील वनकर ओर्स्क होते पीतरवुर्ग पहुचा।

वुखारामे अपनी कार्रवाई शुरू करनेसे पहले कितने ही सालोसे ईरानी दरवारमे अग्रेज और रूसी अपने दाव-पेंच चला रहे थे। अग्रेजी राजदूतने वुखारासे सवध पैदा करनेके लिये १८३८ ई०में कर्नल स्टोडर्टको भेजा। इसी समय वुखाराके दूतमडलने वीस आदमियोंके साथ एक हाथी, कश्मीरी शाल और कुछ रूसी वन्दियोंको छुडाकर साथ लिये ओर्स्क होते हुये पीतरवुर्ग पहुच जारके दरवारमे कहा—"मेरे स्वामी रूसियोंके साथ मित्रतापूर्ण सवध स्थापित करना चाहते हैं। अग्रेजोने वुखारामें अपने एजेट भेजकर व्यापार करनेकी कोशिश की है। रनजीतसिंहके खतरेसे परेशान हो कावुलके अमीरने भी हमारे मालिकसे सधि करनेका प्रस्ताव किया है।"

इस प्रकार उसने जारकी मित्रता और सदिच्छा प्राप्त करनेकी कोशिश करते हुये सोना तथा दूसरे मूल्यवान् धातुओका पता लगानेके लिये अपने यहा एक इजीनियर अफसरको भेजनेके लिये प्रार्थना की। वुखाराके राजदूतको लौटते वक्त जारकी ओरसे वहुत-सी भेंट मिली। अप्रैल १८३९ ई०में अमीरके वुलावेके अनुसार धातु-इजीनियर कप्तान कोवालेव्स्की और कप्तान हेर्नगियोस, एक दुभाषिया, एक मुख्य खनक, चार कसाक सैनिको तथा कुछ और आदमियोंके साथ वुखाराकी ओर रवाना हुये। उनको यह भी भार दिया गया था, कि अमीरसे वुखारामें एक रूसी कोसल रखनेके लिये वातचीत करे। यद्यपि अभी पजावपर रणजीतसिंहका अधिकार था, लेकिन सिंध अग्रेजोंके हाथमे था, जहासे वह कावुलमें अपने प्रभावको वढानेकी कोशिश कर रहे थे। रूस भी वहा अपने प्रभावको वढाना चाहता था। इस प्रकार अफगानिस्तानमें दोनो साम्राज्योंकी जोरकी प्रतिद्वद्विता चल रही थी। दिसम्वर १८३७ ई० मे वित्कोविच कावुल पहुचा। अग्रेजोंके मनमें सदेह वैठ गया, कि अमीर दोस्त मुहम्मदको रूसियोंने अपनी ओर मिला लिया है। अग्रेजोने दोस्त मुहम्मदके विरुद्ध उसके प्रतिद्वद्वी शाह शुजाकी पीठ ठोकी, और रणजीतसिंहको भी

काबुल तक चढ दौडनेके लिये उभाडा। इतनेसे भी सतुष्ट न हो काबुलसे रूसियोके प्रभावको बिल्कुल खतम करनेके लिये १८३९ ई०के बसतमें अग्रेजी सेना अफगानिस्तानकी सीमामें दाखिल हुई, और ७ अगस्तको काबुलमे पहुचकर शाह शुजाको गद्दीपर बैठानेमें सफल हुई। दोस्त मुहम्मद अपने परिवार तथा तीन सौ पचास परिचारकोके साथ भागकर बुखारामे नसरुल्लाके पास चला गया। नसरुल्लाने पहले उसका बडा स्वागत किया, लेकिन जब उस पतितने दोस्त मुहम्मदके सुन्दर पुत्र सुल्तान जानको अपनी कामुकताका शिकार बनाया, तो मनमुटाव हो गया। अब नसरुल्ला अग्रेजोंसे मेल करना चाहता था, और शाह शुजासे भी मिलकर उसके भाई तथा अपने मेहमान दोस्त मुहम्मदको खतम करना चाहता था। इसपर दोस्त मुहम्मदकी ओरसे ईरानके शाहने धमकी दी, जिसके डरके मारे नसरुल्लाने दोस्त मुहम्मदको मक्का जानेकी इजाजत दे दी, साथ ही चुपके-चुपके मल्लाहोको भी हुक्म दे दिया, कि वक्षुमें नावको डुबा देना। इसकी खबर पहले ही लग गई, इसलिये स्त्री-भेसमें दोस्त मुहम्मद पहले शहरसब्ज फिर खुल्म और अन्तमें काबुल लौट गया।

कर्नल स्टोडर्ट हिरातके हाकिमके परिचय-पत्रके साथ रमजानके आरम्भ होनेसे दो दिन पहले बुखारा पहुचा। अफगानोसे अच्छा सबध न होनेके कारण पत्रने सदेहको और बढानेका काम किया। कर्नलको पैदल जाकर रेगिस्तान नामक मैदानमे अमीरसे भेट करनेके लिये कहा गया, लेकिन उसने घोडेपर चढकर जानेकी जिद्द की। बुखारामें मुसलमान छोडकर कोई घोडेपर चढकर निकल नही सकता था, फिर इस ईसाईको कैसे वैसे करने दिया जाता? और रेगिस्तानके मैदानमे तो सिर्फ अमीर ही घोडेकी सवारी कर सकता था। कर्नल घोडेपर चढकर वहा पहुचा और अमीरके आनेपर भी उसने घोडेपर चढे ही सैनिक सलाम दिया। अमीरने इसे अपना अपमान समझा। उसे महलमे बुलाया गया। प्रतिहारने "अर्ज बदेगान" (सेवकोका निवेदन) जब कहा, तो कर्नलने इसका भी विरोध करते कहा "परमभट्टारक" सिर्फ भगवान्के लिये कहा जाता है। "आपका अत्यन्त नम्र सेवक" कहनेपर भी उसने आपत्ति की। दरबारी प्रथाके अनुसार दो आदमियोको बगलमें सहारा देकर चलनेसे भी इन्कार कर दिया। जब हथियारकी पडताल करनेकी रसम अदा करनेके लिये दरबारी अफसर आये, तो उन्हे भी कर्नलने मुक्का मारकर गिरा दिया। चुपचाप अर्ज करनेकी जगह स्टोडर्टने बडे ऊचे स्वरसे फारसी भाषामे भगवान्के लिये प्रार्थना करनी शुरू की। अमीर उस समय अपने तख्तपर बैठा इस ढीठ विदेशीके प्रति अपार घृणासे जलता-भुनता दाढीपर हाथ फेर रहा था। अमीरने प्रमाणपत्र मागा, तो उसने अग्रेज राजदूत जान मेकनेलका पत्र दिया, जिसमें रूसियोके भीतर न आने देनेपर ईस्ट इडिया कपनीकी ओरसे सहायतार्थ धन देनेका वचन दिया गया था। अमीरने उत्तरमे कहा—"बहुत खूब, मै जानता हू, तुम लोग मुझे अपना गुलाम बनाना चाहते हो। बहुत अच्छा, मै तुम्हारी खिदमत करूगा," और उठकर चला गया

इसके दो दिन बाद कर्नलको वजीरके घरमें बुलवा कुछ आदमियोने पकडकर उसके हाथ-पैर बाध दिये, फिर वजीरने उसकी गर्दनपर तलवार रखकर कहा—"अभागे भेदिया, काफिर कुत्ते, तू अपने अग्रेज-स्वामियोकी ओरसे आकर बुखाराको भी उसी तरह खरीदना चाहता है, जैसे कि काबुलको खरीदा? लेकिन यहा तुम सफल नही हो सकते। मै तुझे मार डालूगा।' इसके बाद वजीरके आदमी अमीरके समूरी चोगेके साथ लाशकी तरह स्टोडर्टको लिये शहरकी सुनसान सडकोमेंसे गुजरे, और उन्होने एक अघेरे घरमें उसे ले जाकर बन्द कर दिया। नौकर साथमें रोशनी लिये थे। उनकी आखें भर खुली थी। "यदि ऐसा ही करना था, तो मुझे बुखारा न आने देना चाहिये था, अब मुझे जाने दो" —कर्नलने मीरशब (कोतवाल) से जब यह कहा, तो उसने इतना ही जवाब दिया, कि मै अमीरसे कहूगा। कर्नलके सारे कागजोको लेकर उसके सामने जला दिया गया। उसके घोडेको भी बेंच दिया गया। इसके बाद उसे स्याहचाह (अधकूप) नामक एक उन्नीस फुट गहरे गदे गड्ढेमें रस्सीके सहारे डाल दिया गया। इसी कुएमें दो चोर और एक हत्यारा भी बन्द थे। कुएमें छिपकलिया, खटमल, पिस्सू भरे हुये थे। उसमें स्टोअर्ट दो महीने रहा। खानेके लिये रस्सीसे रोटिया लटका दी जाती थी। इसके बाद उसे निकालकर कहा गया, कि अगर जान

वचाना चाहता है, तो मुसलमान हो जा। अक्खड कर्नलने अपने सारे गर्व और अभिमानको ताकपर रखकर भारी भीडके सामने कलमा पढा और एक चौरस्तेपर ले जाकर उसका खतना किया गया।

रूसियोंने कर्नलको मुक्त करानेकी वडी कोशिश की। अफगानिस्तानमे जव अग्रेजोकी सफलता हुई, तो कर्नलने हिम्मत करके इस्लामको छोड दिया, और अमीरसे भी कहा, कि तुम्हे अपनी भलाईके लिये मुझे अपने पास रखना चाहिये, जैसा कि रणजीतसिहने कितने ही अग्रेजोको अपने पास रक्खा है। अमीरकी ओरसे कर्नलको कहा गया, कि रूसी दूतमडलके साथ तुम पीतरवुर्ग चले जाओ, लेकिन उस वेवकूफने जानेसे इन्कार करते हुए कहा कि हमारी सरकारका हुक्म है, कि मै वुखारासे न जाऊ। इससे सदेह और वढ गया। इसी समय कर्नलने कुछ पत्र लिखकर खुरासानियों, कुर्दों, ईरानियो और यहूदियोंके हाथ भेजे। इसके वाद फिर उसे वन्दीखानेमें वन्द कर दिया गया। तुर्कीके सुल्तान, खीवाके खान और जारने भी उसे छोडनेके लिये अमीरको वहुत लिखा। एक अग्रेज लेखकने कर्नल स्टोडर्टके वारेमे लिखा है—"वह अपनी शिक्षा और स्वभावसे किसी भी दौत्यकार्यके लिये विल्कुल अयोग्य था। उसके रूखे और ढिठाई भरे हुये व्यवहारने अमीरको वहुत ही अपमानित और कुपित कर दिया।" स्टोडर्टको दुवारा जेलमें वन्द करके उसे वहुत-वहुत यातनाये दी जाने लगी। १८४० ई०में कप्तान आर्थर कोनोली खीवा और खोकन्द होते वुखारा पहुचा। उसने वुखाराके अमीरको रूसके विरुद्ध हो अग्रेजोके साथ मैत्री करनेके लिये उभाडा। नसरुल्लाने कोनोलीको भी पकडकर उसकी सारी सम्पत्ति जव्त कर ली, और वन्दी वना स्टोडर्टके पास भेज दिया। इसी वीचमें नसरुल्लाको अपनी ओर करनेके लिये १८५० ई०में रूसने मेजर वतानियेफको व्यापार-मैत्री सधिके लिये भेजा। इससे पहले १८२० ई० में प्रथम रूसी दूत रेगनी गया था, और अग्रेज वार्नेसके जवावमें १८३४ ई०में विल्कोविच पहुचा था। मेजर वतानियेफ का अमीरकी ओरसे वडा गर्मागर्म स्वागत हुआ। जारने वहुमूल्य भेंट भेजी थी, उसने भी प्रभाव डाला, लेकिन सधिकी वात करनेपर अमीरने टाल-मटोल कर दिया। इस प्रकार १८४१ ई०में वतानियेफको खाली हाथ लौटना पडा।

प्रथम अफगान-युद्धके समय जनवरी १८४२ ई०में १६५०० अग्रेजी सेना कावुल पहुची थी, जिनमें अधिकाश हिन्दुस्तानी थे। लेकिन कावुलमें अफगानोंने उन्हें घेरकर खतम कर दिया और सिर्फ उनका एक आदमी किसी तरह जान वचाकर खवर देनेके लिये जलालावाद पहुच सका। अग्रेजोंकी इस जवरदस्त हारसे नसरुल्लाकी हिम्मत वढी। उसके हुक्मसे १७ जून १८४२ ई०को स्टोडर्ट और कोनोलीको कैदखानेसे निकालकर वाहर लाया गया। स्टोडर्ट प्राण वचानेके लिये मुसलमान वन चुका था, लेकिन उसकी गर्दन पहले काटी गई, फिर कोनोलीको मुसलमान वन प्राण वचानेके लिये कहा गया, लेकिन उसने इन्कार कर दिया और उसे भी मार डाला गया। इसके वाद सात और अग्रेज कत्ल किये गये, लेकिन इनका वदला अग्रेज कभी न ले सके।

१८४४ ई० मे दोनो अग्रेज वन्दियोका हाल जाननेके लिये डाक्टर वोल्फ वडी कोशिशके वाद वुखारा गया। तव तक दोनो अग्रेज मारे जा चुके थे। वोल्फको भी लौटनेमें वडी मुश्किलका सामना करना पडा। उसने एक चिट्ठीमें लिखा था—"वदनाम नायव अब्दुस्समद खाके वगीचेमें उसके लुटेरे डाकुओंसे घिरा तथा मजवूर होकर छ हजार तिला देनेके लिये आपको यह नोट लिख रहा हू।"

पामीरसे लगे हुये पहाडोमें केश (शहरसब्ज) का एक छोटा-सा राज्य वहुत दिनोंसे अपनी स्वतत्रताको कायम रक्खे हुये था—यह वही शहरसब्ज था, जहा तेमूर लग पैदा हुआ। जव कभी भी वुखारावाले शहरसब्जपर आक्रमण करते, तो वहावाले वहादुरीसे लडते साथ-साथ वधोंको तोड-कर आसपासकी भूमिको जलमग्न कर देते। वुखाराके पडोसी राज्य खोकन्दका शासक वावरकी वेटीकी सतानोंमेंसे था। खोकन्दी खान मदलीको नसरुल्लाने किस तरह मरवाया, इसके वारेमें हम अभी कह चुके है। नसरुल्लाका सवसे वडा सलाहकार अब्दुस्समद था।

नसरुल्लाका सवध खीवासे भी वहुत वुरा था। जव रूसी जेनरल पेरोव्स्कीने खीवापर अभियान किया, तो नसरुल्लाने भी उसपर हमला वोल दिया। अपने राज्यकी सीमाको वढ़ानेके लिये

नसरुल्लाने बहुत हाथ-पैर मारे, लेकिन बलख, अन्दखूय और मेमनाकी छोटी-छोटी रियासतों-पर कितनी ही बार आक्रमण करनेके बाद वह सफल हुआ और मरते वक्त ही १८२६ ई०में उसे खबर मिली, कि शहरसब्जपर बुखारियोंका अधिकार हो गया। उसने उसी समय वहाके अमीर तथा अपने सालेको स्त्री-बच्चों सहित अपने सामने कत्ल कर देनेको हुक्म दिया।

नसरुल्ला इन्सानियतसे गिरा हुआ निरा पशु था, तो भी उसकी धाक बुखारामें इतनी थी, कि जब वह अपने महलसे निकलता, तो पासमें कोई शरीर-रक्षक नही होता। बाजारोमे हफ्तेमें दो-तीन बार दर्वेशका कपडा पहने, केवल एक नौकरके साथ उसे घूमते देखा जा सकता था। उसने वनियोको कह रक्खा था, कि ऐसे समय कोई उसके लिये सम्मान प्रदर्शित न करे, और उसे एक साधारण आदमी-सा जाने। इसीलिये कोई उसके लिये रास्तेसे हटता भी नही था। वह एक दूकानसे दूसरी दूकानमें जा अनाज या दूसरे सौदेके भावके बारेमें पूछता और जहा-तहा कोई चीज भी खरीदता।

८ सैयद मुजफ्फरुद्दीन, नसरुल्ला-पुत्र (१८६० ई०)

मुजफ्फरुद्दीनकी जवानी करशीमें बीती थी। अपने बापसे वह अधिकतर अलग ही रहा। वह एक ईरानी दासीका पुत्र था। उसे चौदह सालकी उम्रमें ही नसरुल्लाने करशीका हाकिम और अपना युवराज बना दिया। अडतीस सालकी उमरमें मुजफ्फर अमीर हुआ। बापके सारे दुर्गुण इसमें भी मौजूद थे। उसने पहले मुल्लोंको हाथमें करनेका प्रयत्न किया।

नसरुल्लाके मरते समय यद्यपि शहरसब्ज सर हो गया था, लेकिन इस दुर्गम पहाडी इलाकेके लोग अब भी बगावत किये हुये थे, इसलिये मुजफ्फरका ध्यान उधर जाना जरूरी था। उसके बाद उसने खोकन्दपर चढाई की, जहाका खान इस समय मदलीका पौत्र खुदायार था, और जिसकी सारी शिक्षा-दीक्षा नसरुल्लाके दरबारमें हुई थी। रूसने १८५३ ई०में अकमस्जिद (सफेद मस्जिद) पर, तथा ग्यारह साल बाद तुर्किस्तान और चिमकन्दपर भी अधिकार कर लिया। १८६४ ई०में ताशकन्दमें असफल होनेपर उसका बढाव रुका। खुदायारने चाहा, कि तुर्किस्तान शहरको भी लौटा ले, लेकिन उसमें विफल होकर उसे राजधानी लौटना पडा। किपचकोने वहा उसके छोटे भाई मुल्लाखाको गद्दीपर बैठा दिया था, इसपर अमीर खुदायार मदद लेने मुजफ्फरके पास आया। मुल्लाको कत्ल करवा मुजफ्फरने खोकन्दमें जा खुदायारको स्वय तख्तपर बिठाया। किपचक (उज्बेक) अब भी फरगानामें विरोध करते रहे, और उन्होने खुदायारके आधे राज्यको छीन भी लिया, लेकिन, रूसियोंने इसी समय उनके नेताको ताशकन्दमें मार डाला, जिसके कारण मुजफ्फरको १८६५ ई०में अपने आक्रमणके वक्त बहुत सुभीता हुआ। चेर्नियेफ ताशकन्दको ले चुका था, खोकन्द भी उसकी दयापर था। मुजफ्फर जहादके नामपर सारे मध्य-एसियाको शत्रु बनाकर एक करना चाहता था। खोकन्द, बुखारा और खीवाको राजनीतिक तौरसे एकताबद्ध करनेका यह अच्छा मौका था, क्योकि तीनो ही राज्य अपनेको रूसी राहुके मुखमें देख रहे थे। मुजफ्फर समझता था, कि धर्मान्ध मुल्ला मध्य-एसियाकी सबसे बडी शक्ति हैं। वह रूसके सबसे जबर्दस्त शत्रु भी थे, इसलिये मुजफ्फरने उनके ही हाथोंमें खेलना पसद किया। तीनो राज्योके शहरो और बाजारोमे जहादका धुआधार प्रचार हो रहा था। इससे मुजफ्फरको एक भारी सेना तैयार करने में देर न हुई। उसके बलपर मुजफ्फरने अभियान करके समरकन्दसे उत्तर-पूर्व तथा रूसी तुर्किस्तानकी राजधानी ताशकन्दसे सिर्फ सौ मीलपर अवस्थित खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) को दखल कर जेनरल चेर्नेयेफको ताशकन्द खाली करनेके लिये अल्टीमेटम दे दिया।

रूससे युद्ध—चेर्नेयेफ चौदह पैदल कपनी, छ कसाक स्क्वाड्रेन और सोलह तोपोंके साथ समरकन्द से साठ मीलपर अवस्थित जीजकके किलेपर चढ आया। प्रतिरोध जबर्दस्त हुआ और रसदकी भी कमी थी, इसलिये उसे लौटनेके लिये मजबूर होना पडा। इस सफलतासे प्रोत्साहित हो चालीस हजार सेना ले मुजफ्फर ताशकन्दपर चढा। चेर्नेयेफने रूसी सरकारके हुक्मके बिना ही ताशकन्दको

ले लिया था, इसलिये उसे हटा युद्ध वन्द करनेका हुक्म देकर जेनरल रोमानोव्स्कीको भेजा गया, लेकिन सैनिक परिस्थितिने उसे भी सरकारी हुक्मके विरुद्ध जानेके लिये मजबूर किया। ताशकन्दसे सिर्फ तीनी मजिलपर वुखारी सेना रह गई थी, और सत्तर हजार आवादीका नगर रूसियोको फूठी आखों भी नही देखना चाहता था। रोमानोव्स्की चौदह पैदल कपनी, पाच कसाक स्क्वाड्रेन और वीस तोपोंके साथ सिर नदीके वाये तटसे होते आगे वढा। जैसा कि पहले वतला चुके है, जीजक और खोजन्दके वीच इर्जइमें २० मई १८६६ ई०को मध्य-एसियाकी पलासीकी लडाई हुई, और ३६०० रूसियोंने वुखारियोंकी पाच हजार पैदल, ३५०० सवार और दो तोपोवाली सेनाको वुरी तरहसे हराया। हारी हुई सेना अस्त-व्यस्त होकर भगी। आठ दिनके मुहासिरेके वाद ६ जूनको खोजन्द भी रूसियोंके हाथमें चला गया। रूसी अल्टीमेटमकी पर्वाह न करके मुजफ्फरने युद्धकी तैयारी जारी रक्खी, जिससे रूसियोको फिर आगे वढनेके लिये मजवूर होना पडा। अक्तूवर तक वह उरातिप्पा और जीजक ले जरफ्शा-उपत्यकाके ऊपरी भागके स्वामी वन गये। १८६७ ई०के वसतमें यानीकुर्गानपर भी रूसियोका अधिकार हो गया, जिसे लौटानेके लिये ४५ हजार वुखारी सेनाने दो वार कोशिश की। इस प्रकार १८६७ ई० के मध्य तक सिर और जरफ्शाकी उपत्यकायें जारके साम्राज्यमें चली गईं। ओरेनवुर्ग शासन-केंद्र वहुत दूर पडता था, इसलिये २३(११) जुलाई १८६७ ई०के उकाज़े (राजादेश) के अनुसार तुर्किस्तानका एक अलग प्रदेश वना दिया गया, और ताशकन्दको तुर्किस्तानके महाराज्यपालकी राजधानी वननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। तुर्किस्तान-सूवा (गुवर्निया)में सिर-दरिया, सप्तनद (सेमीरेचिन्स्क अर्थात् इस्सिकुल और वरकाशकी द्रोणिया) तथा जरफ्शाके इलाके थे। जेनरल काफमान प्रथम महाराज्यपाल नियुक्त हुआ। वुखारा अव भी जव-तव रूसी सीमात-चौकियोंसे छेडछाड करता था। काफमानने मुजफ्फरके सामने सुलहके लिये निम्न शर्त्तें पेश की—मौजूदा सीमातको स्वीकार किया जाय, व्यापारमें रूमी और वुखारी प्रजाके समान अधिकार हों, युद्धके हरजानास्वरूप सवा लाख तिला (पाच लाख रूवल या तिरपन हजार गिन्नी) रूसको मिले। मुजफ्फरने इसके जवावमें खीवाकी ओरसे अपनी सेनाको वुलाकर जीजकपर आक्रमण करनेके लिये तैयारी की। रूसी अव समरकन्द लेनेके लिये तैयार हो गये। ३६०० सेनाके साथ १७ मई १८६८ ई०को उन्होने खीवा और वुखाराकी चालीस हजार सम्मिलित सेनापर धावा वोल दिया, और उथली नदी पार हो समरकन्दसे पन्द्रह मीलपर जरफ्शाके वायें किनारेकी ऊचाईपर एकत्रित शत्रु-सेनापर आक्रमण कर दिया। वुखारियोंकी भीषण पराजय हुई। अगले ही दिन समरकन्दने आत्मसमर्पण कर दिया, और नगरके सर्तो (ताजिको) ने विजेताओंका खूव स्वागत किया—आखिर उज्वेकोके जूयेको वह प्रसन्नतापूर्वक नही ढो रहे थे। यहूदियोंने रूसियोका और भी अधिक विश्वास प्राप्त किया, और उन्होंने सर्तोंसे सजग रहनेकी सलाह दी। जेनरल काफमानने अपने घायलोंको नगरके वीचमें अवस्थित किलेमें साठ-वासठ गारदके साथ छोड शत्रुका पीछा किया। रूसियोंके कुछ ही दूर जानेपर शहरसब्जवाले वीस हजार सैनिक चुपकेसे भीतर घुस गये, उन्होने किलेको घेर लिया। एक सौ नवासी रूमी प्रतिरक्षक हताहत हुये और किला भारी विपद्में पड गया। काफमान शत्रुको फिर फरारी हार दे चुका था, जव कि उसे समरकन्दकी खवर मिली, और उसने लौटकर वडी वुरी तरहसे नागरिकोंके साथ वदला लिया। एक अग्रेज लेखकके अनुसार—"जैसे गिलेस्पीने वेल्लोरके विद्रोहियोंके साथ वदला लिया था। उनके चूतडों और जाघोपर कोडे लगवाये, हजारोंको वडी निष्ठुरताके साथ मरवाया। सर्तोंके विश्वासघातका वदला आत्मसमर्पणके वाद सेना द्वारा नगरको लगातार तीन दिन तक लुटवाकर लिया।"

मुजफ्फरका सारा अभिमान अव चूर-चूर हो चुका था। उसने रूसी जेनरलसे तख्त छोडकर मक्का जानेकी इजाजत मागी, लेकिन रूसी उसे अपनी गुडिया वनाकर वुखाराकी गद्दीपर रखना चाहते थे। आखिर वह रूसी लोहेको देख चुका था, और अपने जीवन भर फिर सिर उठानेकी हिम्मत नही रखता था। दूसरा अमीर उसकी जगहपर शायद फिर नया तजर्वा करना चाहता। रूसियोंने उसीको अमीर स्वीकृत किया, समरकन्दको तुर्किस्तानमें मिला वहांपर

उपराज्यपाल बनाकर अब्रामोफको भेजा। मुजफ्फरके बाद १७ सालके युवराज अब्दुल् अहदने बापसे बगावत करके करकीके किलेपर अधिकार कर लिया, लेकिन जनरल अब्रामोफने विद्रोहको आसानीसे दबा दिया। यही नही, उसने मगीत-राजवशके मूल-स्थान करशीको भी ले लिया और करकीपर गोलाबारी की। युवराज बुखारा राज्यकी मध्य पहाडियोंमे भागा, जहासे भी उसे समरकन्दके पश्चिमी छोरपर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। विद्रोहोंमे सफलताकी तो आशा नही थी, ऊपरसे प्रजाको सारी आफत सहनी पड रही थी, इसलिये कोई आश्चर्य नही, यदि एक किसानने अहदको पकडवा दिया। मुजफ्फरके पास लाये जानेपर उसने उसके सिरको काटकर महलके दरवाजेपर लटकानेका हुक्म दिया। इस विद्रोहके समय अब्रामोफने पीढियोसे स्वतत्रताकी लडाई लडनेके अभ्यस्त शहरसब्जवालोंको भी अपने अधीन कर लिया। मुजफ्फर अब परम जारभक्त था। हिन्दुस्तानमें रहते अग्रेज इसके लिये अफसोस कर रहे थे, कि मुजफ्फरने अपने पूर्वजोके भव्य दायभागको इतना जल्दी खो दिया। लेकिन मुजफ्फरने दस-दस पद्रह-पद्रह गुनी अधिक सेनाके साथ भी लडकर देख लिया था, कि आधुनिक हथियारोके सामने उसके जहादियोकी भीड टिक नही सकती। जरफ्शाकी ऊपरी उपत्यका और ऐतिहासिक नगर समरकन्द रूसियोके हाथमें होनेसे बुखारा उनकी दयापर निर्भर करता था। रूसी जरफशाके पानीसे किसी समय भी वचित कर बिना एक गोली खर्च किये ही बुखारियोको मरनेके लिये मजबूर कर सकते थे। अपने जीवनभर मुजफ्फरको मौज करनेमे कोई बाधा नही थी, और हमारे रियासती राजाओकी तरह वह अपनी प्रजाके साथ चाहे जो भी कर सकता था।

९ अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र (–१८९४ ई०)

मुजफ्फरके उत्तराधिकारी अहदने भी अपने बापका पदानुसरण किया। शरीरमें वह लबा हट्टा-कट्टा और बहुत सुन्दर था। हर साल वह काकेशसके गर्म चश्मोमे विहारके लिये जाता और अक्सर जाडे भी उसके क्रिमियामें बीतते थे, अर्थात् उसके जीवनका ढग और विलास-प्रेम वैसा ही था, जैसा कि हमारे यहा पिछली पीढीके राजा-नवाबोका।

१० मीर आलम, अहद-पुत्र (–१९२० ई०)

युवराजकी अवस्थामे इसे शिक्षाके लिये पीतरबुर्ग भेजा गया, जहा रहते अपनी शिक्षा-दीक्षासे वह बिल्कुल युरोपीय बन चुका था, लेकिन दुराचारमे वह अपने परदादा नसरुल्लाका भी कान काटता था। जबतक जारशाही मजबूत रही, तबतक वह उसका अनन्य भक्त बना रहा, और अपना काम केवल विलासमय जीवन बिताना समझता था, लेकिन बोल्शेविक-क्रातिके समय सब जगह अशाति मची देख एक बार फिर उसने बुखारामें अपनी तानाशाही शुरू की। शासन-सुधार चाहनेवाले अपने यहा के सुधारवादी जदीदो (नवीनतावादियो) के खूनसे इसने अपने हाथोको खूब रगा, लेकिन जैसा कि हम आगे देखेगे, क्रातिके सामने इसे देश छोडकर अफगानिस्तान भागना पडा। मुजफ्फरुद्दीनके समयसे बुखारा एक देशी रियासतके रूपमे चला आया था। क्रातिने उसे मिटाकर मध्य-एसियाकी जातियोको उनकी सीमाओके अनुसार उज्बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, कजाकस्तान, किर्गिजिस्तान और ताजिकिस्तानके गणराज्योमे परिणत कर दिया।

शासन-प्रबध—बुखारा समुद्रतलसे १२०० फुट ऊपर मेर्वसे १४० मीलपर अवस्थित है। १९ वी सदीके चतुर्थ पाद हीमें रेल द्वारा इसका सबध हो गया था, यह हम आगे बतलायेंगे। बुखारा मुसलमानोके आनेसे पहले ही एक प्रसिद्ध सास्कृतिक नगर बन चुका था। सामानी बादशाहोके जमानेमे इसकी बहुत तरक्की हुई। इसकी जामा मस्जिदका २१० फुट ऊचा मीनार (मीनारकला) बहुत प्रसिद्ध है, जिसकी गोलाई नीचे छत्तीस फुट है।

बुखाराके शासकोमें सूबा (प्रदेश) के अधिकारीको बेक कहा जाता था, जिसके नीचे जिलेके अफसर होते थे, जिन्हे अमलाकदार कहते थे। किसानोसे दशाश (दहयक) कर लिया जाता था, जिसे मिल्की-खराज कहते थे। कितने ही गाव मस्जिदो और मदरसोकी देवोत्तर-सम्पत्ति (वक्फ)

थे। फसल तैयार होनेपर अमीरके अफसर खेतोंमें जाकर भूकरके लिये हरएक खेतका अलग-अलग कूत करते थे। बुखाराका काजी (न्यायाधीश) काजीकला था, जिसके दो नायब होते थे। अदालतकी मुहर मुफ्तीके हाथमें होती थी। धार्मिक बातोंका अधिकारी रईस था।

४. (३. बुखारा अमीर-वंशवृक्ष)
(१७४७–१९२० ई०)

खुदायार अतालीक
- १. मु० रहीम (१७४७)
- २. दानियालबी (–१७७०) = शम्शबानू आइम (अब्दुल हफीज (अस्त्राखानी) की पुत्री)
  - ३ शाहमुराद (१७७०–९९)
    - ४ हैदर (१७९९–१८२६)
      - ५ हुसैन (१८२६)
      - ६. उमर (१८२६)
      - ७ नसरुल्ला (१८२६–६०)
        - ८. मुजफ्फरुद्दीन (१८६०–६७)
          - ९ अ अहद (–१८९४)
            - १०. मीर आलम (१८९४–१९२०)

स्रोत ग्रन्थ

१ पो स्रेद्नेइ आज़िइ (ल ये द्मित्रियेफ-कव्काज्स्की, पेतेरबुर्ग १८९४)
२ ना ग्रानित्साख् स्रेद्नेइ आज़िइ (द न लोगोफेत्, पेतेरबुर्ग १९०९)
३ इस्कुस्स्त्वो स्रेद्नेइ आज़िइ (व व वेइमार्न, मास्को, १९४०)
४ रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (म य मस्सोन्, ताशकन्द १९२६)
५ आज़ियात्स्काया रोस्सिया (अ कूबेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७७–२२६, २९३–९९)
६ History of U S S R (Moscow 1947)
७ Heart of Asia (E D Ross, London 1899)
८ History of Mongol (3 Vols H H Howorth, London 1876–88)
९ History of Bokhara (A Vambery, London 1873)

अध्याय ४

छोटे-छोटे राज्य

१ उरातिप्पा और जीजक

उरातिप्पा—अस्त्राखानी-वंशकी समाप्तिपर बुखारामें बहुत-सी छोटी-बडी रियासतें अस्तित्वमें आईं, जिनमें उरातिप्पा भी था, जो समरकन्द, खोजन्द और खोकन्दके रास्तोंके सगम तथा जीजक, समरकन्द और ताशकन्दके रास्तेपर था। उज्बेकोंके उज कबीलेके लोग जीजकमें अपने डेरे डाला करते थे। फजल बी नामक उज-सरदारने १८ वी सदीमें उसपर अधिकार कर लिया। खोकन्दके नरबुते और बुखाराके रहीम बीने बहुत कोशिश की, लेकिन फजल बीने उन्हें सफल नही होने दिया, और शत्रुओके सिरोको काटकर उनका मीनार चुनवाया।

फजल बीके बाद उसका लडका खुदायार बी स्वामी हुआ, वह १७९४ ई०में एक लाख परिवारोंका शासक था। बुखाराके अमीर शाह मुरादने जब उसकी ओर कदम बढाया, तो खुदायार बीने उसे बुखाराके फाटकों तक खदेडा। वह दिन भर सोता और रातको जाग कर काम करता। शरीरसे पूरा देव था, और एक पूरी भेड अकेले ही खा जाता था, तब भी कहता कि भूख अभी पूरी तरह नही गई। उसका भाला इतना भारी था, कि किसी दूसरेके लिये उठाना भी मुश्किल था। लडाईमें बडा बहादुर होनेसे घुमन्तू-कबीलोका वह आदर्श नेता था।

बाबा बेक, बेकमुराद—खुदायार बीके मरनेपर उसका भाई बाबा उरातिप्पापर और बेटा बेकमुराद खोजन्दपर शासन करने लगे। उमरखान खोकन्दीकी मददसे बाबाने अपने भतीजेको खोजन्दसे भगा पीछे उसे मरवा डाला। बापका बदला लेते हुये बाबाबेकके लडकेने समरकन्दमें मुरादको मार डाला और कुछ समयके लिये उरातिप्पा बुखारामे रहा। फिर खोकन्दके अमीर आलम खाने कुछ समय तक उसपर अधिकार रक्खा, लेकिन जल्दी ही खुदायार बेकके भान्जे तथा प्रसिद्ध खोजा हिरातके वशज खोजा महमूद खाने खोकन्दी हाकिमको भगा उरातिप्पाको बुखाराके नामसे अपने हाथमें कर लिया। १८१२ ई०में खोजा महमूद उरातिप्पाका शासक था। उमर खाने आक्रमण करके महमूदको पकड़ लिया, लेकिन तीन महीने बाद उसने फिर भागकर अपने सघर्षको जारी रक्खा। इसी समय जीजक बुखारामें और उरातिप्पा खोकन्दमें शामिल कर लिये गये, और इस प्रकार उरातिप्पाकी स्वतत्र सत्ता खतम हो गई। महमूदका पुत्र तुराबेक यिरुबाकी खोकन्द-दरबारके अमीरोमेंसे था। जिस समय उरातिप्पाने अपनी स्वतत्रता खोई, उस समय यहाके उज कबीलेके बहुत-से लोग दक्षिणकी पहाडी काफिरनिहा-उपत्यकामें जाकर बस गये।

२. शहरसब्ज

किश या शहरसब्ज तेमूर लगकी जन्मभूमि थी। बुखारासे जानेपर रास्तेमें दुर्लंघ्य रेगिस्तान पडता था, और समरकन्दसे दुर्गम पहाडी, इस प्रकार उसे प्रकृतिने प्रतिरक्षाके सुन्दर साधन दे रक्खे थे। १८ वी सदीमें मगीत रहीम बी (१७४७ ई०) ने शहरसब्जपर अधिकार किया, लेकिन पाच ही साल तकके लिये। भारी लडाकू कैरोसली उज्बेक-कबीलेके डेरे इस इलाकेमें रहा करते थे। उनके सरदारने रहीम बीसे शहरसब्जको मुक्त करा लिया।

(१) **दानियाल अतालीक (१८११-३६ ई०)**—शहरसब्जके शासकोमें यह बड़ा शक्तिशाली था। इसने अमीर हैदर और उसके पुत्र नसरुल्लाके सारे प्रयत्नोको निष्फल कर दिया।

दानियालने "वलीनिअम" की पदवी धारण की थी। उसके दो पुत्रोंमें खोजाकुल शहरसब्जमें और बाबा दादखाह् किताबमें शासन करते थे।

(२) खोजाकुल (१८३६-४६ ई०)—बापके मरनेपर दोनों भाई आपसमें झगड पडे, जिससे अमीर नसरुल्लाने फायदा उठाकर आक्रमण कर दिया। लेकिन नसरुल्लाके पहुचनेसे पहले ही खोजाकुलने अपने भाईको मार भगाया, इसलिये बुखारी सेनासे लडनेके लिये वह स्वतत्र था। उसने नसरुल्लाकी सेनाको बुरी तरहसे हराया। नसरुल्लाने अजेय शहरसब्जकी भूमिपर हथियारसे विजय पानेकी आशा नही देखी। इसके बाद वह सालमे दो बार वहाकी भूमिको तबाह करने लगा। सुलह क्षणिक ही हो पाती थी। अपनी मृत्युके समय (१८४६ ई०) तक खोजाकुल बुखारियोसे लडता रहा। उसने अपने भाई इस्कन्दरको किताब देकर सतुष्ट करना चाहा था।

(३) अशुर बेक (१८४६ ई०)—खोजाकुलके पुत्र अशुरबेकको बापकी गद्दीपर अधिक दिनोंतक बैठनेका अवसर नही मिला, और चचाने भतीजेको खदेडकर गद्दी सभाल ली।

(४) इस्कन्दर (१८४६-५६ ई०)—इस्कन्दर "वली-निअम" की उपाधि धारण कर, दस साल तक बराबर नसरुल्लासे लडता रहा, लेकिन अन्तमें घिरावा डाल तथा खेतों और गावोंको बरबाद करके भूखा मारकर नसरुल्लाने शहरसब्जको सर किया। इस्कन्दरने किताबमें जाकर अपना प्रतिरोध जारी रक्खा, और अन्तमे अनुकूल शर्तोंके साथ बुखाराकी अधीनता स्वीकार कर वह बुखारा चला गया, जहा कराकुलकी सारी आमदनी उसे जागीरमें मिली। इस्कन्दरकी बहिन केनिंगेज आइम अपने सौंदर्यके लिये बहुत मशहूर थी। वह ब्याही हुई थी। उसपर नसरुल्लाकी नजर पड़ गई। उसने पतिको चारजूइ भेज आइमको अपने हरममें डाल लिया और शहरसब्जके मुख्य-मुख्य खानदानोको ले जाकर चारजूइ, करशी आदिमें बसा दिया। नसरुल्लाने मरनेसे पहले इस्कन्दर और उसकी बहिनके खूनसे अपने हाथको रगा। एक प्रत्यक्षदर्शीने इस घटनाके बारेमें लिखा है—

"इस्कन्दर और उसका भाई चुमचू खान रोज एक बार अमीरको सलाम करने जाते थे। उनके जानेके बाद अमीरने मुझे उन्हे बुला लानेके लिये कहा। लाकर उन्हे अलग कमरोंमें बैठाया गया। उन्होंने कहा—'बुखारामे किसीको पता नही, कल क्या होनेवाला है। आज तुम जिन्दा हो और कल तुम्हारा सिर कटा दिखाई पडे।' कुछ प्रतीक्षाके बाद एक बादाचा आया, जिसमें इस्कन्दर और वहा आनेवाली स्त्रीका गर्दन काट लेनेका हुकुमनामा लिखा हुआ था। बादाचा बादामके आकारकी एक मुहर हुआ करती थी। मृत्युदडका हुक्म देते समय अमीर इसी मुहरका इस्तेमाल करता था। दूसरे कामोके लिये इस्तेमाल होनेवाली मुहर बडी होती थी। जैसे ही हमने हुकुमनामा पाया, तुरन्त इस्कन्दरको वधस्थानपर लानेको कहा। अमीरके किलेमें एक कूयें जैसी गहरी तथा तख्तोंसे ढकी जगह है। काटनेके बाद लाश इसी कुएमें फेक दी जाती है। वहा बहुत-सी लाशें पडी थीं। वधिक हमारी प्रतीक्षामें था। हमारे आते ही उसने तुरन्त इस्कन्दरको जमीनपर पटक दिया। इस्कन्दरके दाढी नही थी। वधिकने अपनी अगुलियोंको उसके नथुनोंमें डाल सिरको पकडे गलेको काट दिया। इसके बाद लोग एक औरतको लाये। जैसे ही उसने इस्कन्दरके मृत शरीरको देखा, वह अमीरको बुरा-भला कहते रोने लगी। तब हमें मालूम हुआ, कि वह इस्कन्दरकी बहिन तथा अमीरकी बीबी आइम केनिंगेज है। वह केनिंगेज-परिवारकी लडकी थी, इसीलिये सभी उसे "मेरी केनिंगेज चाद" कहते थे। जल्लादने उसके हाथोंको बाध दिया, फिर पिस्तौलसे सिरके पीछेसे गोली चलाई—हमारे लोगोंमें स्त्रियोंका गला नही काटते, बल्कि उन्हे गोली मार देते है। एक ही गोलीमें वह उसे नही मार सका। वह गिरकर कुछ देर तक छटपटाती रही। वधिकने उसके स्तनों और पीठपर बारह बार ठोंकर लगाई, तब वह मरी।"

(५) बाबा बेक—केनिंगेज-परिवारका यह सरदार अमीरकी अरदलीमे था। नसरुल्लाके मरते समय वह शहरसब्ज लौटा। छ महीने बाद अमीर मुजफ्फर शहरसब्ज आया।

उसी समय उसने बाबा बेक से उसकी बहिन मागी, जो कि पहले ही उसके बापकी कामुकताको तृप्त कर चुकी थी। मुजफ्फरके ऐसी माग करनेपर बडा हल्ला मचा, और उसने बुखारा लौटकर बहुत बडे-बडे आदमियोको जेलमें डाल दिया। लेकिन लोगोने उन्हे बन्दीखानेसे मुक्त करके बाबा बेकको शहरसब्जका और जरा बेकको किताबका शासक नियुक्त किया। बुखाराके अफसर वहासे मार भगाये गये। मुजफ्फरने चढाई की, किंतु खोकन्दके झगडेके कारण मुहासिरा उठा लेना पडा। पीछे बाबा बेकने वार्षिक भेंट और सैनिक सहायता देकर मुजफ्फरकी अधीनता स्वीकार की, पर राज्यके भीतरी मामलोमें वह स्वतत्र था।

१८६६ ई०में रूसियो द्वारा मुजफ्फरके हराये जानेपर बुखारामें दो दल हो गये। मुजफ्फरका पुत्र केत्तात्युरा विरोधी और मुजफ्फरका भतीजा सईद खान समर्थक था। समर्थकोका मुखिया जुरा बेक था, जो अमीरके रूसियोपर चढाई करके हारनेके बाद शहरसब्ज भाग गया। रूसियोने समरकन्दको लेकर अमीरसे बदला लिया। जब अमीर दुबारा रूसियोका विरोधी बना, तो उसकी सहायतार्थ शहरसब्जके बेकोने तीस हजार सेना लेकर समरकन्दपर चढाई की। इससे पहले वह जेनरल कॉफमानसे अलग समझौता करनेकी बातचीत कर रहे थे, लेकिन जब जेनरलने उन्हे मुलाकातके लिये बुलाया, तो उनके मनमें सदेह होने लगा, और मुजफ्फरकी ओर होकर लडनेके लिये तैयार हो गये। अमीरने विवादास्पद नगर चिरागचीको देनेका वचन दिया था, इसलिये भी शहरसब्जवाले उसके पक्षमे हुए। रूसी सैनिकोको समरकन्दके किलेके भीतर घेरकर शहरसब्जवालोने बडी विपदमे डाल दिया था, लेकिन इसी समय जुरा बेकको कॉफमानके आनेकी झूठी खबर लगी, और उसके एक अफसरने अपने आदमियोको हटा लिया। इसी सहायता देनेके लिये अमीर मुजफ्फरने जुरा बेकको "दादखाह"की उपाधि तथा दस हजार तका इनाम दिया था।

१८७० ई०में जेनरल अब्रामोफ इस्कन्दरकुलके खिलाफ चढा था। उस वक्त कर उगाहनेके लिये गये राजुल उरुसोफको कुछ विद्रोहियोने मार भगाया। ये आदमी जुरा बेकके पक्षपाती हैदरखोजाके अनुयायी बतलाये जाते थे। जुरा बेकको हैदरको समर्पण करनेका हुक्म हुआ, लेकिन उसने कहा कि हैदर कही दूसरी जगह है। इसपर जेनरल कॉफमानने शहरसब्जको खतम करनेका निश्चय कर लिया। जेनरल अब्रामोफने किताबको आक्रमण करके ले लिया, फिर शहरसब्जको आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर किया। बेक भागकर खोकन्द चला गया। रूसियोने शहरसब्जके इलाकेको अमीर-बुखाराके हाथमें दे दिया। विश्वासघाती कहकर खोकन्दके खानने शहरसब्जवाले बेकोको रूसियोके हाथमें दे दिया। कुछ समयतक वह ताशकन्दमें नजरबद रहे, फिर बुखारासे दो हजार रूबल पेंशन मिलने लगी। जुरा बेक इसके बाद रूसियोका बहुत जबर्दस्त पक्षपाती हो गया और वह उसे बहादुर, ईमानदार और निष्कपट कह कर तारीफ करते थे।

३ कोहिस्तान

समरकन्दसे पूर्वका पहाडी इलाका अर्थात् जरफशाकी ऊपरी उपत्यका कोहिस्तानके नामसे प्रसिद्ध थी। १८७० ई०मे वहा फाराब, मागियान, कश्तुत, फान, यग्नान, माचा और फलगरके छोटे-छोटे सात शासक (बेक) थे। ये पहाडी बेक (ठाकुर) कुछ गावोके शासक थे, और बुखाराको थोडा-सा कर दे अपने लोगोके ऊपर मनमाना शासन करते थे।

उरगुत—उरगुतका बेक खानदानी राजा था। मागियान, कश्तुत और फाराबके बेक अपनेको इसके अधीन मानते थे। १९वी शताब्दीके आरभमें अमीर हैदर उरगुतको जीतकर उसके बेक युल्दाश परमाचीको बदी बना बुखारा ले आया। बाकी तीनो बेकोने बुखाराकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन कुछ समय बाद युल्दाशके पुत्र कत्ता बेकने उरगुतको फिर अपने हाथमें कर लिया, और दूसरे बेकोसे नाराज होकर उसने अपने भाई सुल्तान बेकको मागियान और कश्तुतका शासक बनाया। अब बुखारासे झगडा छिड गया। पहाडियोने समरकन्दको खतरा पैदा कर दिया। लेकिन अमीर-बुखाराके सामने तलवार उठाकर खडे रहनेमें बहुत दिनो

तक लाभ नही था, इसलिय उरगुतका वेक नसरुल्लाखानको अपनी वेटी दे वुखाराके सरदारके तौरपर उरगुतोका शासक बना रहा। कत्ता वेकके मरनेके वाद उसके पुत्र आदिल परमाची उरगुतपर और उसका भाई अलायार दादखाह मागियानपर शासन करने लगे। मरनेसे थोडे ही समय पहले अमीर नसरुल्लाने उन्हें बुखारा बुलाकर सपरिवार चारजूयमें निर्वासित कर दिया। रूसियोके समरकन्द ले लेनेपर अमीर द्वारा नियुक्त अफसर उरगुत छोडकर भाग गया। इसपर चारजूयमें निर्वासित कुमारोमेंसे एक हुसेन वेकने खोकन्द होते वहा पहुचकर उरगुतको ले लिया। रूसियोने जब वहासे भगाया, तो वह स्वय मागियानमें और अपने छोटे भाई शादीको कश्तुत और चचेरे भाई सईदको फारावपर नियुक्त करके शासन करने लगा। इन छोटी-छोटी पहाडी रियासतोका वुखारी कर उगाहनेवालोसे वरावर लडाई-झगडा होता रहता था। १९वी सदीके आरभमें ही फलगरके वेक अव्दुश्शकूर दादखाहने सारे पहाडी इलाकेको अपने अधीन कर कितने ही दुर्गम पहाडी स्थानोको सुगम वनानेके लिये रास्ते और पुल वनवाये। अमीर हैदर (१७९९-१८२६ ई०) के समय इन इलाकोमें वुखाराने अपने वेक नियुक्त किये और किले वनवाये। यही हालत नसरुल्लाके शासनके अन्ततक रही।

समरकन्दके रूसियोके हाथमें जानेपर वहासे वुखारी वेक (हाकिम) भाग गया। उसी समय वेक अव्दुल गफ्फारने उरातिप्पाके पूर्व उर्मितानको ले अपनेको फलगरका वेक घोषित किया, लेकिन माचाके लोगोने शासक मुजफ्फरशाहकी अधीनता स्वीकार की, जिसने अपने भतीजे रहीमखानको अपनी ओरसे शासक नियुक्त किया। रहीमखानने फलगरसे अव्दुल गफ्फारको मार भगाया और उसकी सहायताके लिये आये कश्तुतके शादीवेकको भी हराया। इसने यग्नान और फानको भी जीत हिसारपर चढाई की। रास्तेमें सेना विगड गई, और उसने रहीमको भगाकर पाचा खोजाको अपना नेता वनाया। ये पहाडी लोग वहुत पिछडे हुये थे, लेकिन फलगर-वाले अपनेको माचावालोंसे अधिक सस्कृत समझते थे। उन्होने फिर अव्दुल गफ्फारको अपने यहा वुलाया, किन्तु उसने हार खाकर समरकन्दमे जा रूसियोकी अधीनता स्वीकार की। इस अशातिसे लाभ उठा मई १८७० ई०मे जेनरल अव्रामोफ एक छोटी-सी सेना ले पहाड़ोंके भीतर घुमा। १२ मईको उसने उर्मितान ले लिया, २१ को वरसामिनार भी उसके हाथमें चला गया। यह दोनो जगहे फलगरके वेकके अधीन थी। माचाका वेक पाचा खोजा वहुत जनप्रिय था। वह धमकीके पत्र लिखता रहा। अव्रामोफने माचाकी ओर वढकर २८ मईको आवुर्दनको ले लिया। पाचा खोजा भाग निकला। रूसियोने फलगरके किलेको तोड दिया, जिसे कि वुखारियोने पहाडी लोगोको दवा रखनेके लिये वनाया था। अव्रामोफ आगे वढते-वढते अलई पर्वतमालाकी उस हिमानीके पास पहुचा, जो कि जरफशा (प्राचीन सोग्द) नदीका उद्गम है। लौटकर उसने फान नदीपर अवस्थित मर्वदा, फिर यग्नान-उपत्यकाको जीतते इस्कन्दरकुल (महासरोवर) तक गया। वहासे पश्चिमी कोहिस्तानकी ओर घूमकर उसने दस हजार फुट ऊंचे कश्तुतके डाडेको पार किया, जिसके पश्चिमी पहाडियोमें एक जवर्दस्त सघर्ष हुआ। कश्तुतको अपने हाथमें करके अव्रामोफ पजकन्द होते समरकन्द लौट गया।

शहरसव्जकी विजयके वाद रूसियोकी एक टुकडी कश्क-उपत्यकासे हो फाराव और मागियान-पर पडी। इन दोनो इलाकोके वेक रूसके विद्रोहियोके साथ हो गये थे। रूसियोने यहाके दोनो किलोको तोड दिया और वहाके वेको—सईद और शादीवेक—ने आत्मसमर्पण किया। मागियानका वेक हुसेन कुछ महीनेतक हाथ नही आया। रूसियोने फाराव और मागियानको उरगुत जिलेमें मिला लिया। कितने ही समयतक वाकी पहाडी लोग रूसियोके साथ विद्रोही वने रहे, लेकिन कब तक इतनी वडी शक्तिका मुकावला करते?

४ हिसारके इलाके

आजकल यह पहाड़ी इलाका ताजिकिस्तान गणराज्यका एक वडा भाग है। ऊपरी जरफशा-उपत्यकाकी तरह यहापर भी उस समय कितने ही छोटे-छोटे राजा थे, जैसे —

(१) करातगिन—वक्षु नदीकी मुख्य पहाडी शाखा सुरखाव करातगिनके इलाकेसे वहती है। यहाके शासक अपनेको ऐतिहासिक ग्रीक सम्राट् अलिकसुन्दरका वशज वतलाते थे। कोई आश्चर्यकी वात नही है, यदि ग्रीक या शक-शासनके पतनके वाद वहाके कुछ राजकुमारोने इन दुर्गम पहाडियोमे शरण लेकर अपने लिये स्थान वनाया हो। लेकिन यह सावित करना मुश्किल है, कि सचमुच ही ये छोटे-छोटे शाह और वेक यूनानी सम्राटोके वशज थे। दरवाजवालोने कुछ समयतक करातगिनको जीतकर उसे अपने हाथमे रक्खा, लेकिन जल्दी ही वह फिर स्वतत्र हो गया। १८३९ ई०में खोकन्दने करातगिनको जीतकर अपने अधीन कर लिया।

(२) दरवाज—करातगिनसे दक्षिणमें यह छोटा पहाडी राज्य था, जिसके शासक भी अपनेको सिकन्दरवशी कहते थे—यह उज्वेक नही ताजिक थे। खोकन्दके मदली खानने १८३९ ई०में करातगिनके साथ इसे भी अपने अधीन वना लिया था।

(३) कुल्याव, (४) शगनान—यह भी दो छोटी-छोटी पहाडी रियासतें थी, जो कि पीछे तवतक खोकन्दका अग वनकर रही, जवतक खोकन्दको रूसियोने हजम नही कर लिया।

(५) हिसार—करातगिन, दरवाज और शगनानकी पहाडी रियासतोके पश्चिममें हिसार और कुल्यावके इलाके है, जिनमें उज्वेकोके कवीले ककुरत और कतगन रहते थे। उन्होंने इन इलाकोको अपने हाथमे करके वहुत-से पुराने वाशिदो—ताजिको—को भगा दिया था। वुखारावाले उस समय हिसारके इलाकेको उज्वेकिस्तान कहते थे। जान पडता है, १८वी सदीके मध्यमें हिसारका इलाका वुखाराके हाथसे निकल गया था।

हिसार और कुल्यावके पडोसमें कई और छोटे-छोटे उज्वेक राजा थे, जिनमें कुरगानका अल्लाबर्दी जौज १८वी सदीके अन्तमे पडोसियोके लिये काल वन गया था। उसने हिसारको घेरा था, जव कि वेक अल्लायार और करशीके राजुलने उसे मारकर हिसार और कुरगानपर अधिकार कर लिया। तव भी प्राचीन वशका शासक सईद हिसारका वेक, यदि कामके लिये नही तो नामके लिये, माना जाता था। बुखाराके अमीरने सईद वेककी लडकीसे व्याह किया था, और इस प्रकार वह अमीरका कृपापात्र था। कुरगानको हिसारमें मिला लिया गया था। इज्ज-तुल्लाके समय हिसारमें सईद वेक और कुरगानमें अल्लायार वेकका शासन था। पडोसी कवादियान इलाकेके वेक थे दोस्त मुहम्मद और मुराद अली। इन छोटी-छोटी रियासतोको हिसारने हजम कर लिया। १९वी सदीके उत्तरार्धमे कुल्याव हिसारका शासक कतगन अमीर सरीखान था, जिसके डरके मारे करातगिनके शासकको १८६९ ई०मे खोकन्दकी शरण लेनी पडी थी, लेकिन इसी समय वुखाराने उसे अपने अधीन कर लिया। १८७२ ई०मे हिसारमे सात जिले थे, जिनके अपने-अपने वेक थे, कुल्यावमें भी दो जिले थे। ये सभी वेक वुखारा द्वारा नियुक्त होते थे। इन जिलोंके नाम थे—शेरावाद, बाइसून, देहनौ, युर्ची, हिसार (कुर्गानत्यूवे, कवादियान), वल्जुवान और कूल्याव। इनके अतिरिक्त दरवन्द, सरेजूय और फैजावादपर अमीरका शासन स्थानीय वेको द्वारा नही वल्कि सीधे वुखारासे होता था।

५ तुखारिस्तान

प्राग्-मुस्लिम तुर्कोंके शासनकाल तथा स्वेन्-चाड्की यात्राके समय पहाडोसे उतरकर पश्चिमी-भिमुख वहनेवाली पहाडोतक फैली वक्षुके दोनो तटकी समतल-सी मैदानी भूमिको तुखार या तुखार कहा जाता था। पीछे यह उज्वेकोकी भूमि हो आजतक है। यहाके निवासी अधिकतर उज्वेक है। वक्षुके उत्तरवाला तुखारिस्तान अव सोवियत उज्वेकिस्तानका अग है, पर दक्षिणी तुखारिस्तान उज्वेक होते हुये भी कावुलके शासनमें है। १८वी सदीके मध्यमें ही, जव कि अफगानोका सितारा ऊचा होने लगा था, दक्षिण तुखारिस्तानमे कितनी ही छोटी-छोटी रियासतें थी —

(१) खुल्म—१७५१-५२ ई०में अफगानोने दक्षिणी वक्षु-उपत्यकाको वुखारासे छीन लिया।

१७८६ ई०में अमीर शाहमुरादने उसे लौटानेकी बहुत कोशिश की, किन्तु सफल नही हो सका। पीछे यहापर खिलिच अलीने अपनी प्रभुता जमाई।

खिलिच अली (—१८१७ ई०)—खुल्म बलखसे उत्तर-पूर्वमें है। यहाके उज-कबीलेका सरदार खिलिच अली धीरे-धीरे बहुत शक्तिशाली हो गया, और उसने अपने पड़ोसी इलाको ऐवक, गोरी, माजूर, दर्रागूजको अपने अधीन कर लिया, तथा कुरगानतेप्पाके उज्बेक सरदार अल्लावर्दी तौजको हजरत इमामसे मार भगाया। कुन्दुजका उज्बेक सरदार खिलिच अलीका ससुर था, जिससे उसने मित्रता स्थापित की। काबुलमें भी उसका प्रभाव बढा और वहासे उसे "अतालीक"की उपाधि मिली। बलखके अफगान राज्यपाल हुकूमतखान-पुत्र सरदार नजीबुल्ला खानपर भी उसका काफी रोब था। तालिकान छोडकर बाकी सभी जगहोपर अफगान राज्यपाल नही, बल्कि खिलिच अलीकी तूती बोल रही थी। यहाके तीस हजार रुपयाके करमेंसे एक तिहाई काबुल जाता, बाकी पुराने नौकरो, मुल्लो और शासकोंके खर्चमें आता। खिलिच अपने प्रभावको बढा लेनेके बाद अफगानोका भक्त रहा। उसके पास बारह हजार सवार सैनिक थे; जिनमेंसे दो हजारका वेतन वह खुद देता, बाकीको उनकी सेवाओंके लिये भूमि और जागीर मिली हुई थी। कुन्दुजवाले भी उसे पाच सौ सैनिक दिया करते थे। सेनाका खर्च करनेके बाद उसकी आमदनी उन्नीस हजार गिन्नीके बराबर थी। खिलिच अलीके ज्येष्ठ पुत्रको नौ हजार गिन्नी वार्षिक वृत्ति मिलती। उसे काबुलसे "बलखका वली" (बलख-राज्यपाल)की उपाधि मिली हुई थी। खिलिच अलीका रहन-सहन बहुत सीधा-सादा था। वह १८१७ ई० के करीब मरा। इसके बाद उसके पुत्रोमें झगडा हो गया, जिसमें कुन्दुजके मुराद बीने आगमें घी डालनेका काम किया। खिलिचके दो पुत्रोमें एकको खुल्म और दूसरेको ऐवक मिला। बलख भी ऐवकवालेके हाथमें था, लेकिन अब दोनो भाई कुन्दुजके अधीन अमीरमात्र रह गये थे।

(२) कुन्दुज (क) मुराद बी (१८१२–४० ई०)—उज्बेकोंके कतगन कबीलेका कुन्दुज प्रधान नगर था। चिङ-गिस खानके समयमें भी नगरका यही नाम था। १८वी सदीके अन्तमें कतगन-अमीर खोकन्द बेक शक्तिशाली होकर बहुत कुछ स्वतत्र हो गया और उसने अपने पूर्वी इलाके बदख्शाको लूटमारकर उजाड दिया। उसके बाद उसका पुत्र मुराद बी उत्तराधिकारी बना। अपने समयमें यह मध्य-एसियाके बहुत शक्तिशाली शासकोमें था। इतिहासकार इज्जतुल्लाके समय यह कुन्दुजपर शासन करता था। खिलिचके जिन्दा रहनेतक यह अपनी शक्तिको बहुत आगे नही बढा सका, लेकिन इसके बाद बडी तेजीसे अपने राज्यको बढाया। अग्रेज यात्री मूरक्राफ्टने अपनी यात्राके प्रबन्धके लिये कुछ आदमी भेजे थे, जिनपर वहावालोने गुप्तचर होनेका सदेह किया—"अग्रेज एसियाके किसी भागमें इसके सिवा और किसी मतलबसे प्रवेश नही करते, कि अन्तमें वह वहाके स्वामी बन जाय।" पीछे मूरक्राफ्ट स्वय वहा गया। उस समय मुराद बी खुल्म, कुन्दुज, तालिकान, अन्दराब, बदख्शा और हजरत-इमामका स्वामी था। मूरक्राफ्टने ऐवकसे आगे पहाडोंके भीतर बहुत-से कस्बे उजडे देखे थे, जिसका कारण मुराद बी था। वहाके निवासियोको वह गुलाम बनाकर ले गया था। मुराद बीका वजीर आत्माराम दीवानबेगी मूलत पेशावरका निवासी था। आमतौरसे हिन्दुओको वहा बहुत नीची निगाहसे देखा जाता था, लेकिन आत्मारामने अपनी योग्यतासे मुराद बीका कृपापात्र बनकर ऐसे ऊचे पदको प्राप्त किया। उसके पास बहुत सम्पत्ति और चार सौके करीब दास-दासी थे।

मुराद बी बडा ही कर्मठ आदमी था। वह स्वय अपनी सेनाका सचालन करता और बलख तथा हजाराके शीयोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हे दास बनाकर बेंच देता था। चित्रालका मेहतर भी डरके मारे मुराद बीको करके रूपमे गुलाम देता। हिन्दूकुशकी पहाडियोमें सियापोश काफिर आज भी कुछ मुसलमान न बन अपने बाप-दादोंके धर्मको मानते चले आ रहे हैं। मुराद बीने १८३० ई०में दास-दासी बनाकर बेचनेके ख्यालसे उनपर आक्रमण किया, लेकिन उसे सफलता नही मिली, काफिरोने उसे आगे बढनेसे रोक दिया। इसी समय बर्फानी आधी आई, जिससे फायदा उठाकर सियापोशोने आक्रमण कर दिया, और बीके चार हजार सवार काम

आये। मुराद बीके कोपका भारी शिकार बदख्शाकी सुन्दर भूमि हुई, जहाके अधिकाश लोगोको पकडकर वह कुन्दुज ले गया, और वहाके सिकन्दर-वशी शासनको राज्यसे वचित कर दिया। १८२३ ई०में किला-अफगानमें मीरयार बेग खानने मुराद बीके दस हजार सवारोंसे नौ हजार सेनाके साथ मुकाबिला किया, लेकिन उसे हार खानी पडी। १८२९ ई०में यहाके बाशिन्दोको भी उसने कुन्दुज भेज दिया। वूड अपने यात्रा-ग्रथ (१८३८ ई०)में लिखता है—"इस प्रकार इस अस्वास्थ्यकर दलदली भूमिमे १८३० ई०से लेकर आज (१८३८ ई०) तक उज्वेकोने करीव-करीव पच्चीस हजार परिवार या प्राय एक लाख विदेशियोको लाकर बसा दिया है, इसमें सन्देह है, कि १८३८ ई०में उनमेंसे छ हजार परिवार भी जिन्दा है। इन पिछले आठ वर्षोंमें उनमेंसे बहुतेरे मर गये। कहावत है—'अगर तुम मरना चाहते हो, तो कुन्दुज जाओ।' हमारे वहा पहुचनेसे बारह महीने पहले कुल्याबके निवासी बहुत भारी सख्यामें अपने पहाडी इलाकेसे लाकर हजरत इमाममें बसाये गये। डाक्टर लार्ड और मै उस भूमिसे गुजरे, जहापर कि उनके घर थे, जिनमेंसे कुछ अब भी खडे थे, लेकिन चारो ओर नीरवता छाई हुई थी, और चारो ओर फैली बहुसख्यक कब्रें उनके बहुसख्यक निवासियोकी आपबीती बतला रही थी।" वक्षुके उत्तर कुल्यावसे लेकर दक्षिणमें सिगान (हिन्दूकुशके दो डाडोके परे तथा बामियानसे तीस मील भीतर) तक और बखान भी मुराद बीका था। मुराद बी १८४० ई०के आसपास मरा।

(ख) **मुहम्मद अमीन, खिलिच-पुत्र, खुल्म (१८४०-४५ ई०)**—मुराद बीके बाद उसका स्थान खिलिच अलीके पुत्र मुहम्मद अमीनने लिया, जिसको "मीरवली"की उपाधि मिली थी। वह १८४५ ई०में शासन कर रहा था। उसका पुत्र गजअलीबेग बदख्शाका शासक था। कुन्दुजमें मुराद बीका पुत्र मीर रुस्तम खान शासन करता था, किन्तु वह मुहम्मद मीरवलीके अधीन था। मीरवली बुखारा और काबुल दोनोको खुश रखता था। उसने अन्दखुदको भी अपने अधीन कर लिया था। १८४५ ई०में ऐबकमें उज्बेकोका कगली कबीला रहता था। मीरवलीका शासन सरीपुल, अन्दखुद, कुल्याव और बखानसे हिन्दूकुश और बलखतक फैला हुआ था। खिलिच अलीके समय ही तुखारिस्तानमें काबुलका नाममात्रका प्रभाव था, लेकिन अफगानोकी आखे इस ओर लगी हुई थी, जिसमे उन्हे १८५० ई०में जाकर सफलता प्राप्त हुई। काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने बुखाराके अमीर नसरुल्लाके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। मीरवलीको दोस्त मुहम्मदने राह देनेके लिये कहा, लेकिन मीरवलीके इजाजत देने या न देनेकी कोई बात नही थी। दोस्त मुहम्मदका पुत्र अकबर खान निर्वासित होकर खुलममे रहता था, जहासे वह मीरवलीकी एक दासीपर मुग्ध होकर उसे काबुल भगा ले गया। दासी किसी तरह भागकर खुल्म पहुच गई। काबुलसे भागकर आनेपर मीरवलीने उसे देनेसे इनकार कर दिया। इस प्रकार दोस्त मुहम्मदके लिये आक्रमण करनेका अच्छा बहाना मिल गया। १८४५ ई०मे अफगानोने चढ़ाई की, लेकिन लडाईमें तुरन्त सफलता नही मिली, जिसमे सबसे बडी बाधा हिन्दुकोह (हिन्दूकुश)की दुर्गम पहाडिया थी। १८५० ई०मे अफगानोने हिन्दूकुश पार करके बलखको जीत लिया। १८५९ ई०में कुन्दुजको भी लेकर वह दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके अपनी आजकी सीमाको स्थापित करनेमें सफल हुये—अफगान अपने इस इलाकेको तुखारिस्तान नही तुर्किस्तान कहते है।

दोस्त मुहम्मदके बाद उसके पुत्र अफजलखाने—जो बलखका राज्यपाल था—१८५४ ई०मे अपने भाई शेरअलीके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। १८६४ ई०में फिर उसे अपने पदपर बहाल कर दिया गया। अफजलके पुत्रने बुखारा भागकर अमीरकी लडकीसे व्याह किया। फिर वह अपने ससुरकी सहायता तथा दूसरोकी मददसे विद्रोह करके १८६६ ई०में शेरअलीको हटा खुद काबुलकी गद्दीपर बैठा। शेरअलीका तब भी कन्दहार और हिरातपर अधिकार रहा। शेरअलीने फिर १८६८ ई०में तैयारी करके मुकाबिला किया, और अन्तमें सिहासन पानेमें सफल हुआ। अफ़जल-पुत्र अमीर अब्दुर्रहमान मशहद भागा, जहासे मार्च १८७० ई०मे तादाकन्दमें रूसियोके पास गया। उन्होने उसे पचीस हजार रूवल वार्पिक पेशन दे समरकन्दमें रख दिया।

अफगानिस्तान ब्रिटिश और जारशाही साम्राज्यके बीचमें था। उसपर दोनो महाशक्तिया अपना प्रभाव डालनेकी कोशिश करती थीं, इसलिये रूसियोका अब्दुर्रहमानको समरकन्दमें या अंग्रेजोका अमीर याकूबको लाकर मसूरी (१८८३ ई०)मे रखना कोई व्यर्थका सिर-दर्द नही था। अफगानोने दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके बदख्शामे फिर एक स्थानीय शासकको नियुक्त किया।

(३) **बदख्शा**—१३वीं सदीमें प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो बदख्शाके रास्ते चीन गया था। उस समय वहाका शासक अपनेको ग्रीक-सम्राट् अलिकसुन्दरका वंशज बतलाता था। बाबरके समय भी उनके बारेमें यही ख्याति थी। कोई आश्चर्य नही, यदि ग्रीक-बाख्तरी साम्राज्यके नष्ट होनेपर कोई राजकुमार वहा जाकर शासक बना हो, या कोई कुषाणवंशी राजकुमार जाकर रहने लगा हो, जिसके उत्तराधिकारी ग्रीको और शकोमे भेद करना भूल गये हो। उज्बेकोने बदख्शाको जीतकर बुखाराके अधीन कर लिया था। बुखाराके शासनके निर्बल होनेपर १८वीं सदीमे बदख्शा स्वतंत्र हो गया। अंग्रेज यात्री मूरक्राफ्ट १८३२ ई०में इधरसे गुजरा था, उस समय तत्कालीन राजवंशको स्थापित हुये सौ साल हो चुके थे।

सुल्तानशाह बदख्शाके राजवंशका संस्थापक था, जिसकी राजधानी फैजाबादको भी उसीने बसाया था।

(क) **सुल्तानशाह** (१७६५ ई०)—जिस साल चीनने वहाके शासक खान खोजासे काश्गरको जीता, उस समय बदख्शाका शासक सुल्तानशाह था। खान खोजाने भागकर चालीस हजार आदमियो के साथ बदख्शामें शरण ली थी। उसके धन और बेगमोंके लोभसे सुल्तान शाहने उसपर आक्रमण कर दिया। खान खोजाने हार खाते समय शाप दिया, कि बदख्शा तीन बार निर्जन बनेगा, और वहा एक कुत्ता भी जिन्दा नही रह जायगा। कुछ साल बाद १७६५ ई०मे अफगान अमीर अहमदने बदख्शा जीत लिया, जिसमें सुल्तानशाह मारा गया। उस समय बदख्शामें पैगम्बर मुहम्मदका कुर्ता बडी पवित्रताकी चीज समझा जाता था, जिसे अफगान फैजाबादसे काबुल ले गये।

(ख) **मीर मुहम्मद शाह** (१७६५–१८१२ ई०)—सुल्तानकी जगहपर उसके पुत्र मीर मुहम्मदको बैठाया गया। १८१२ ई०में जब इज्जतुल्ला इधरसे गुजरा, तो यही बदख्शाका शासक था।

(ग) **मीर यारबेक खान** (१८२३ ई०)—मुराद बीने इसे १८२३ ई०में किला-अफगानमें हराया, और १८२९ ई०मे बदख्शा बिलकुल मुराद बीके हाथमे चला गया। वह यहाके बाशिन्दोंको कुन्दुज ले गया। मीरयार बेकका भाई मीर मुहम्मद रजाबेक तालिकानमे भाग गया।

(घ) **जहादारशाह** (१८५९–६१ ई०)—अफगानोने बदख्शापर अधिकार करके १८५९ ई० में पुराने वंशके जहादारशाहको फिर अपनी ओरसे गद्दीपर बैठाया। चित्रालके मेहतरने इक्कीस दास-दासियोको भेजकर अपनी लडकीका व्याह जहादारके लडकेके साथ किया। १८६१ ई०मे इसे गद्दीसे हटा दिया गया।

(ङ) **महमूदशाह** (१८६१ ई०)—जहादार अमीर शेरअलीके प्रतिद्वंद्वीका पक्षपाती था, इसीलिये उसे हटाकर उसके भतीजे महमूदशाहको गद्दीपर बैठाया गया। इस समय बदख्शा कई इलाकोमे बटा हुआ था, जिनमें फैजाबाद और गर्म सीधे महमूदशाहके शासनमें थे, और दराइम, शहरसब्ज (दक्षिणी), गुम्बज, फराखर, किश्म, रूस्तक, इशकासिन, वखान, जेवक, मिनूजान, राग, दौग और आसियाबीमें खानदानी अमीर महमूदशाहकी अधीनतामें शासन करते थे।

तुखारिस्तानके पश्चिमी भागमें कई और छोटे-छोटे राज्य थे, जो अन्तमे अफगानिस्तानके हाथमें चले गये थे।

(४) **मेमना**—नादिरशाहकी मृत्युके बाद वहाके राज्यपाल हाजीखानने अपनेको स्वतंत्र घोषित कर दिया। उसके बाद उसका छोटा लडका अहमद १७९८ से १८०९ई० तक शासन करता रहा। फिर उसका चचेरा भाई अलायार खा १८१० से १८२६ ई०तक मेमनाका स्वामी रहा। इसके बाद मिजराब खान गद्दीपर बैठा, जिसे उसकी एक बीबीने जहर दे दिया। उसके पुत्रोंमें उत्तराधिकारके लिये झगडे शुरू हो गये, जिनका फैसला हिरातके अफगान-राज्यपाल यारमुहम्मदने किया—बनियो और किसानोका शासक उकमेत और किलेकी सेनाका कमांडर शेरखाको

बनाया गया। शेर खा १८५३ ई०तक शासक रहा। उकमेत खानको उसके भाई मिर्जा याकूबने किलेकी दीवारसे गिराकर मार दिया, जिसके बाद उकमेतका पुत्र हुसेन खा गद्दीपर बैठा, किन्तु सारी शक्ति उसके चचा याकूबके हाथमें थी। याकूब जुरमानाकी जगह आदमियोको बुखारामे गुलाम बना बेचनेके लिये भेज देता था। हुसेन खा कावुलका नही, वल्कि बुखाराका पक्षपाती था। उसने लम्बे केशोवाली अफगानोकी तीन सौ खोपडियोसे अपने किलेके दरवाजेको सजाया था, और १८६३ ई०में कावुलपर चढाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन इसके बाद ही उसके सरक्षक अमीर-बुखाराको भी रूसियोकी अधीनता स्वीकार करनी पडी।

(५) अन्दखुद (अन्दखोइ)—यह बुखारा और हिरातके बीचमे खुरासानका एक भाग है जो देरतक अफगानिस्तानके हाथमे रहा। यहा अहमदशाह अब्दालीके पुत्र तेमूरशाहके नामका खुतबा और सिक्का चलता रहा। तेमूरशाहकी ओरसे अफशार कबीलेका सरदार रहमतुल्ला यहाका शासन करता था। बुखाराके अमीर शाह मुरादसे लडते वक्त वह मारा गया। इसके बाद इल्दुज खान शासक था। १८४० ई०में अन्दखुदको बुखाराने ले लिया। यहाके बाशिन्दे मुख्यत तुर्कमान हैं। अन्दखुदको वास्तविक नर्क कहा जाता था—यहाका पानी खारा और कडुवा है, रेगिस्तानमे बालू तपती है, और जहरीली मक्खिया और बिच्छू यहा बहुत मिलते थे। लेकिन अब तो वह कलका नर्क सोवियत तुर्कमानिस्तानका भाग बनकर वास्तविक स्वर्ग बननेके रास्तेमें है।

(६) शाबिरगान—१८१२ ई०मे यहा इरज खान फिर रुस्तम खान शासक रहा। १८५३ ई० मे इसे अफगानोने ले लिया, और तबसे अफगानिस्तानमे है।

(७) सरीपुल—महमूद खान यहाका शासक था, लेकिन कावुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने १८५३ ई०में जब शाबिरगानको लिया, उसी समयसे सरीपुल भी काबुलके हाथमे चला गया।

१९वी शताब्दीके उत्तरार्धमे एक अग्रेज लेखकने अफगानी तुर्किस्तानके बारेमें लिखा था—"इन उज्बेक रियासतोका अधिकाश, चाहे नामके लिये ही हो, अब अफगानोकी प्रजा है, लेकिन अभी हाल हीमें अफगानोने इन्हे जीता है, और वह अफगानी जूयेको खुशीसे उठानेके लिये तैयार नही है। यह अग्रेजोके लिये कहातक बुद्धिमानीकी बात है, जो कि वह आजतक इन रियासतोको अफगानिस्तान-का अभिन्न अग माननेपर जोर दे रहे है। अग्रेजोका ऐसा करना राजनीतिक बात हो सकती है, लेकिन नृवश और इतिहासकी वह बात नही है। इसे असदिग्ध रूपसे कहा जा सकता है, कि नसल और इतिहास दोनोकी दृष्टिसे यहाके सबसे अधिक निवासी कावुल नही बुखारासे सबध रखते है।"

अग्रेजोके बलपर अफगानोने इस शुद्ध उज्बेक इलाकेको अपने हाथमें बनाये रक्खा। पहले तो अमीरो-अमीरोका सवाल था, लेकिन अब वक्षु नदीके उत्तरमें मध्य-एसियाके बहुत शक्तिशाली, तथा विद्या और उद्योग-धधेमे आगे बढी उज्बेक जातिका अपना गणराज्य है। वक्षुके दक्षिण तटके उज्बेक परले पार तेर्मिज नगरीको रातको हजारों बिजलीके चिरागोसे जगमगाते और दिनको कारखानोकी चिमनियोसे धुआ उगलते देखकर ठढी आह लेकर कहते है—"कबतक हम अपने उत्तरी भाइयोसे अलग रक्खे जायगे ?"

स्रोत-ग्रन्थ

१ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ कूबेर आदि, १९१० ई० पृष्ठ २३६–४८)
२ इस्तोरिया सससर (अ म र दोनिकन् ४ जिल्द)
३ तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (३ जिल्द, १८८०)
४ ओत्चेत् ओ कोमेन्दिरोव्के व् तुर्केस्ताने (व व वेर्तोल्द, "इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी, जिल्द १ पृष्ठ १–२२)
५ La rivalite anglo-russie on XIX siecle en Asie (A M F Rouire, Paris 1908)
६ History of Mongol (H. H. Howorth, London (1876-88)

अध्याय ५

खीवाके खान (१७००—१८८१ ई०)

खीवा अर्थात् प्राचीन ख्वारेज्ममें किस तरह उज्वेकोंके खान शासन करन लगे, इसके वारेमें हम पहले वतला चुके हैं। १८वीं सदीके आरम्भमें पहला उज्वेक-वश खतम हो गया, लेकिन मध्य-एसियामें अब भी चिङ्-गिम् खानवाले राजकुमारोंकी वडी माग थी, इसलिये उन्हे ढूढ-ढूढकर लाकर खान वनाया जाता था। ऐसे ही वाहरसे लाये हुये खानोंने प्राय सौ सालोंके लिये खीवाको अपने हाथमे रखा, जिसके वाद अन्तिम ककुरत-वशने शासन किया।

§१ वाहरी वश (१७००—१८०४ ई०)

अधिकारच्युत वशके राजकुमार अव भी ढूढनेसे मिल जाते, लेकिन अन्तिम खानोंके अत्याचारोंसे तग आकर खीवाके प्रभावशाली आदमियोंने उन्हे लेना पसद नही किया, और वुखाराके राजवश एव कजाको और कलमकोंमें दूत भेजकर किसी राजकुमारको ढूढना चाहा। इस समय पुराने राजवशके कितने ही लोग अरालके एक द्वीपमें रहते थे। पहला खान अरक वनाया गया, जो कराकल्पकके खानोंसे सवध रखता था।

१ अरक, एवरक, अवरग खान

वादशाह औरगजेवका ही नाम इस खानका भी था, और शायद यह औरगजेवका अन्तिम समकालीन था। लेकिन यह या इसके वशने वहुत दिनोतक शासन नही किया और लोगोंने इसके वाद शेरगाजीको खान वनाया।

२ शेरगाजी (—१७१३ ई०)

खीवाका खान वननेसे पहले शेरगाजी वुखारामे रहता था, वहीसे इसे लाया गया। १७१३ ई०में तुर्कमान सरदार खोजा नफस अस्त्राखान गया था। वहा वह राजुल समानोफसे मिला। समानोफ गेलानका निवासी था, लेकिन पीछे रूसमें ईसाई वनकर वस गया था। खोजाने उसे समझाया, कि तुर्कमानोंको मिलाकर निम्न-वक्षुके जिलोको रूसियोंको ले लेना चाहिये, वहा वहुत सोना है। उसने यह भी वतलाया, कि उज्वेक-शासकोंने रूसियोंके भयसे ही वाध वाधकर वक्षुको कास्पियनसे हटा अराल समुद्रमें डाल दिया, उसे फिर कास्पियनमें डाला जा सकता है, उसके वाद आसानीसे वोल्गाके जहाज कास्पियन होकर वक्षुके भीतर जा सकेंगे। खोजाकी यह वात यद्यपि अव २०वी शताब्दीके उत्तरार्द्धमें सच्ची होने जा रही है, लेकिन उस समय उसने इसे रूसियोंको लोभमें डालनेके लिये कहा था। इसी समय राजुल गागरिनसे पीतर I को पता लगा, कि यारकन्दके पास सोनेकी खानें हैं। पीतरको अपने युद्धोके लिये सोनेकी वडी अवश्यकता थी। ऐसे समय कितने ही शासक कीमियागरोंके जालमें पडते देखे गये हैं, इसलिये यदि सोनेकी खानोंकी ओर पीतर असाधारण रूपसे आकृष्ट हुआ हो, तो कोई आश्चर्यकी वात नही। खोजाको अपने साथ ले राजुल समानोफ राजधानी पीतरवुर्ग गया। उस समय गारद-कप्तान तथा मुसलमानसे ईसाई वना राजुल वेकोविच चेर्कास्की सम्राट्का वहुत प्रिय दरवारी था। उसने दोनोंको जारसे मिलाया। पीतरवुर्गमें रहते खीवाके दूत अशुरवेक (१७१३—१५ ई०)

ने उनकी बातका समर्थन करते हुये कहा, कि रूसियोको वक्षुके कास्पियनमे गिरनेके पुराने स्थान (शायद क्रास्नोवोद्स्क)को दस हजार सैनिकोके रखने लायक वनाना चाहिये । यदि रूसी वक्षुको उसकी पुरानी धारमें डालना चाहेगे, तो हमारा खान (शेरगाजी) विरोध नही करेगा । अशुर-बेक बहुत-सा भेंट-उपहार पाकर १७१५ ई०में अपने खानके पास लौटा, लेकिन अरग और शेरगाजीके सिंहासनारोहणके समय हुई गडवडीके कारण वह अस्त्राखानमें रुक गया । इसी समय पीतरने अशुरबेकको भारत जा वहासे तोता और चीता लानेके लिये कहा । राजुल वेकोविच चेर्कास्की (चेरकास-राजकुमार) ने ईरानके शाह हुसेनके शासनकी गडबडियोके समय रूसमे शरण ली थी । उसक मरनेपर उसके पुत्र अलक्सान्द्रने ईसाई वन राजुल वोरिस अलक्सान्द्र-पुत्र गालितजिनकी लडकीसे व्याह किया, और पीतरका गारद-अफसर वना । इसी अलक्सान्द्रके नतत्वम पीतरने खीवाके लिये एक अभियान भेजा । उसके जिम्मे काम दिया गया था—–वक्षुकी पुरानी धाराकी सर्वे करना, ख्वारेज्मके खानसे रूसकी अधीनता स्वीकार कराना, और उपयुक्त स्थानोपर किले वनवाना । यह सब काम कर लेने पर बुखारा के अमीरसे बातचीत करना, फिर लेफ्टिनेंट कोजिनको भेजकर स्थलमार्गसे भारत जानेके रास्ते-का पता लगाना, और एक दूसरे आदमीको यारकन्दक सोनेकी खानोके वारेमें जाननेके लिये भेजना ।

पीतरने उज्वेक-खानो और दिल्लीके वादशाहके लिये चिट्ठिया दी थी । १७१६ ई०की गर्मियोमें राजुल बकोविच चार हजार आदमियोके साथ रवाना हुआ । उसने कास्पियन तटपर करागन, अलक्सन्द्रोवयेस्क और क्रास्नोवोद्स्कके किले वनाये, जिनमें अन्तिम उसी जगह वनाया गया, जहापर पहले वक्षु कास्पियनमे गिरती थी । इन किलोमें सैनिकोको रखकर बेकोविचने खीवाके खानको अपने आनेकी खवर देनेके लिये किरियक (ग्रीक) वोरानिनको भेजा । वोरानिन अस्त्राखानम वसे ग्रीकोमेंसे था । राजुल स्वय वोल्गाके तटपर लौट आया । कजानसे पाच सौ स्वीड युद्धवदियोको भर्ती करके मेजर फ्राकेनवर्गको उनका अफसर वना वेकोविचने फिर वोल्गातटसे १ जुलाई १७१७ ई०को प्रस्थान किया । अवकी उसने ग्रेवेन्स्कके रूसी कसाको और नोगाइयोके इलाकेमें होते स्थलमार्गसे यात्रा की । वेकोविचके साथ अस्त्राखानके रहनेवाले तीन सौ तारतार, कितने ही और वुखारी कारीगर आदि भी थे । गुरियेफमें पहुचनेपर उरालके पद्रह सौ कसाक आ मिले । दो दिन वाद यम्वा नदीके तटपर पहुच वेडोका पुल वना उसे पार किया । वेकोविचने भारतका रास्ता ढूढनेके लिये मिर्जा तौकेल्फको भेजा, लेकिन उसे ईरानियोने अस्त्रावादमे रोक लिया, जहासे पीछे उसे अस्त्राखान भेज दिया गया । यद्यपि उस समय अस्त्राखान, वाकू, वुखारा, समरकन्द आदिमें काफी सख्यामे भारतीय व्यापारी रहते थ, जिनसे भारतका रास्ता आसानीसे मालूम हो सकता था, लेकिन पीतर सैनिक दृष्टिसे भी सुभीतेका कोई रास्ता ढूढना चाहता था ।

यहा वेकोविचको कलमक थैची आयुका और पहले भेजे दूत वोरानिनने वतलाया, कि खीवावाले अभियानका विरोध करेंगे । यम्वा तटसे दो दिन चलनेके बाद वह वगचतोक और पाच दिन और चलकर इरकित्श-गिरि (उस्तउर्त या चिक) पहुचा । उस्तउर्तकी ऊची अधि-त्यकाको पार करक वह अराल समुद्रके तटपर गया । अब वह ऐसी भूमिमे थे, जहा इतने आदमियोके लिये पानी मिलना आसान नही था । इसके लिये उन्हे जगह-जगह नये कुए खोदने पडे, और कितने ही पुराने कुओकी मरम्मत करनी पडी । इस प्रकार पानीका प्रबन्ध करके वह सात सप्ताहतक चलते गये । जब खीवा चार दिन रह गया, तो खानके दूत घोडों, चोगो आदिकी भेट ले वकोविचके पास आये । यद्यपि उन्होने एक ओर वाहर से इस तरह शिष्टा-चार दिखलाया, दूसरी ओर खीवाके घुडसवार वेकोविचके ऊपर आक्रमण करते रहे । वेकोविचके आदमियोने भी अपने वारूदी हथियारोसे मुकाविला किया, जिसपर लोग अपने कस्वो और गावोको छोडकर खीवाकी ओर भागने लगे । खानने शत्रुकी शक्तिका अदाजा लगा चाल चलते हुये कहा—“गलतीके लिये हम क्षमा मागते हुये आपका स्वागत करते

हैं, लेकिन आपकी सेनासे लोग भयभीत है। सेनाको वहीं रखकर आप मामूली आदमियोंके साथ पधारिये।" इसपर पाच सौ आदमियोंको साथ ले बेकोविच खीवा शहरमें पहुचा। खानने पीछे छोडे सैनिकोंके नाम बेकोविचसे जबर्दस्ती या जाली चिट्ठी लिखवाई, जिसमें कहा गया था कि अपने हथियारोंको खानके अफसरको दे दो और एक नगरमें जाकर डेरा डालो। रूसियोंको क्या पता था? उन्होंने चिट्ठीको सच्ची मानकर हथियार दे दिये, और भिन्न-भिन्न जगहोंमे जाकर डेरा डाला। इसी समय खीवावालोंने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया। जो मारे जानेसे वचे उन्हे उन्होने दास बना लिया। कुछ रूसी सैनिक और तोपखानेके आदमी डरके मारे खानकी सेनामें भी भर्ती हो गये। बेकोविचको लाल कपडा पहनाकर खानके तम्बूके सामने ला उसे सिज्दा करनेके लिये हुक्म दिया गया। इन्कार करनेपर पहले उसके पैर काट डाले गये, फिर बडी क्रूरतासे उसके प्राण लिये गये। उसकी खालमें भूसा भरकर बुखाराके खानके पास भेज दिया गया, लेकिन उसने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, और खीवाके दूतको यह कहकर भगा दिया, कि तुम मनुष्यका खून पीनेवाले नरभक्षक हो। राजुल समानोफ और दूसरे प्रमुख व्यक्तियोंके सिरोको काटकर खीवाके दरवाजेपर भालेसे लटका दिया गया, जो बहुत सालो तक वैसे ही लटकते रहे। तुर्कमानोने उस समय उज्वेकोंसे खरीदे दो रूसी गुलामोंको हेन्बे नामक एक युरोपीय सरदारको बेचना चाहा। कहते हैं, बेकोविचके बच्चे और बीबी बोल्गामें डूब मरे थे, जिसके कारण भी उसका दिमाग ठीकसे काम नही कर रहा था, और वह इतनी बडी गलती कर बैठा।

पीतरने फिर भी मध्य-एसियाको छोडा नहीं। उसने तुर्की-फारसी जाननेवाले अपने एक इतालियन नौकर फ्लोरियो बेनेवेनीको भेजा, जो ईरानके रास्ते नवम्बर १७२१ ई०में बुखारा पहुचकर वहा चार साल रहा। अबुल्फैज मुहम्मद खाने बेनेवेनीकी बहुत खातिर की थी।

शेरगाजीको पहिले कितने ही उज्वेक बुखाराके तख्तपर बैठाना चाहते थे, लेकिन उसमें सफल न हो वह जब खीवाकी गद्दीपर बैठा, तो उसके आदमी बुखारामें लूटमार करने लगे। इसपर बुखारियोंने खीवाके पुराने वश अरालियोंका पक्ष लेना चाहा। उन्होंने १७०७ ई०में अबुलगाजीके वशज तेमूर सुल्तानको शेरगाजीका प्रतिद्वद्वी खडा किया—वह मूसाखानका पुत्र था, जो बापके मरनेपर बुखारामे रहता था। तेमूरका बडा भाई बलखका राज्यपाल था। बडे भाईको अरालियोंने अपना खान चुना था। बुखारियोंकी मददसे तेमूर सुल्तानने दो बार खीवापर आक्रमण किया। शेरगाजीको बुखारा और तेमूरसे ही मुकाबिला नही करना था, बल्कि उसे रूसियोंसे भी बहुत भय था। उसने पीतरको प्रसन्न करनेके लिए रूसी बदियोंको छोड दिया और बेनेवेनीको खीवा आनेके लिये बहुत आग्रह किया। इस समय बुखारामें बडी अराजकता फैली हुई थी। वहाके खान अबुल्फैजके खिलाफ यह भी इल्जाम लगाया जाता था, कि उसने एक काफिर (बेनेवेनी) को अपने पास रख रक्खा है। पीतरने ईरानपर जो सफल अभियान किया था, उसकी खबर पा उज्वेकोका दिमाग कुछ ठढा हुआ, लेकिन शेरगाजीकी परेशानी कम नही हुई। १६ मार्च १७२५ ई० को बेनेवेनीने अपनी सरकारके पास पत्र लिखा था, कि बुखाराकी हालत बहुत डावाडोल है, सारे रास्ते लुटेरोंके हाथमें है। बलखके पुराने शासकने तेमूरके भाईसे उस इलाकेको छीनकर उसे मार डाला। शेरगाजीके लिये दो साल बहुत मुसीबतके थे। तेमूर सुल्तान और उसके सहायक अरालियो और कराकल्पकियोंने दो बार खीवापर चढाई की। रजीम खानके समरकन्दसे आकर बुखारापर चढाई करनेकी खबर आई, जिससे लोगोमे बडी घबराहट मच गई। जिस समय बुखाराकी यह हालत थी, उसी समय बेनेवेनीने मशहदका रास्ता लेना चाहा। तब खीवाका पल्ला भारी हो गया था। १० फर्वरी १७२५ ई०को बेनेवेनी चुपकेसे निकल पडा और किसी तरह तुर्कमानोंके खतरेसे बचते खीवा पहुचा। लोग कहीं गुप्तचर न समझ लें, इसलिये उसने युरोपीय छोड एसियाई पोशाक पहिन दाढी रख ली थी। खीवा-खानने उसके साथ अच्छा बर्ताव किया, और गुलाम रूसियोंके छोड देनेका वचन दिया। बेनेवेनीके खीवा पहुचनेसे पहले ही तेमूर सुल्तान खीवापर आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहा था, इसलिये भी शेरगाजी बहुत परेशान था। पीतरका दूत खीवाके राजदूत सुभानकुल्लीको ले वहासे अगस्तमें रवाना हुआ,

और रूसकी सीमामें सुरक्षित पहुच गया। इस समय ख्वारेज्म मध्य-एसियामें गुलामोका सबसे बडा बाजार था। वहा दस हजार रूसी और ईरानी गुलाम खेतो और नहरोपर काम करते थे। रूसी तो ईसाई होनेके कारण काफिर थे ही, ईरानियोको शीया होनेकी वजहसे मुल्लोने काफिर होनेका फतवा दे दिया था, इसलिये उनके बेचने-खरीदनेमे कोई रुकावट नही थी। खीवाकी बाजारोसे इन अभागे गुलामोको कजाक, तुर्कमान और कलमक खरीद ले जाते थे। १७२८ ई०मे रूसी और ईरानी गुलामोने शेरगाजीको मारकर तेमूर सुल्तानको खान बनानेकी योजना बनाई थी, लेकिन पहिले ही भडाफोड हो गया। बहुतसे षड्यन्त्रकारी मार डाले गये, और अरालके खानको दो दिन बाद आकर खाली हाथ लौटना पडा।

१७३१ ई०में रूसकी शासिका रानी अन्ना (१७३०-४० ई०) थी। उसने कर्नल एर्दवेर्गको दूत बनाकर खीवा भेजा, लेकिन रास्तेमे ही डाकू उसपर टूट पडे, और सब माल गवाकर उसे पीछे लौटनेके लिये मजबूर होना पडा।

३ इलबर्स (—१७४० ई०)

शेरगाजीके तुरन्त ही या कुछ साल बाद इलवर्स खीवाका खान बना। यह कजाकोके खानवशका था। १७३९ ई०मे दिल्लीकी सडकोपर खूनकी नदिया वहा नादिरशाह जब लौटा, तो बुखाराके अमीर अबुल्फैजने उसे स्वागतका न्यौता दिया। उसने इलवर्सको भी इसकी खबर दी, जिसपर उसने जवाब दिया—"एक पापी आत्माको जबर्दस्ती तुम स्वर्गमें नही प्रविष्ट करा सकते।" नादिर जिस वक्त भारतमें लूटमार करनेके लिये गया था, उसी समय मैदान खाली पाकर इलबर्सने खुरासानको लूटा। भारतसे लौटनेपर चारबेकरसे नादिरने इलवर्सको अपने पास आनेके लिये सदेश भेजा, लेकिन जाकर नादिरके सामने कोर्निश करनेकी जगह इलबर्सके तीन हजार यामूद चारजूयपर चढ़ आये, जिन्हे नादिरके हाथो पिटना पडा। अबुल्फैजने बीचमें पडकर क्षमादान दिलानेका प्रयत्न किया, और इसके लिये अपने तीन दूत इलवर्सके पास भेजे। इलवर्सने दो दूतोको मरवा दिया और तीसरेको नाक-कान काटकर लौटाया। नादिर भला खीवाके खानकी इस गुस्ताखीको कैसे सह सकता था? उसने अपनी सेनाको दो भागोमें बाटकर खीवापर चढाई की। एक सेना वक्षुके बायें तटसे बढी, और दूसरी दाहिनेसे। साथमें बहुतसी नावोका बेडा भी चल रहा था। नादिरकी सेना जल्दी ही हजारास्प पहुच गई। इलवर्स भी तैयार था। नादिरने हजारास्पसे आगे बढकर एक सेनाको खानकाह जानेका हुक्म दिया—इलवर्स उस समय खानकाहमें था। नादिरने आत्म-समर्पण करनेके लिये तीन दिनकी मुहलत दी। इसपर इलबर्स गर्दनमें तलवार और रस्सी बाधे नादिरके सामने आया, जिसने उसे माफ कर दिया। लेकिन इलबर्सने किसी खोजा (सैयद)का सिर कटवा लिया था। खोजाके पुत्रोने खूनका बदला लेनेकी माग की, जिसपर नादिरके हुक्मसे इलवर्स और उसके बीस अफसर मारे गये। खीवा छोड ख्वारेज्मके बाकी शहरोने नादिरके सामने आत्म-समर्पण किया। इस सघर्षके समय इलवर्सने लघु-ओर्दूके प्रसिद्ध खान अबुल्खैरसे सहायता मागी थी, और उसने आकर खीवापर अधिकार कर लिया था। इसी समय अबुल्खैरके बुलानेपर रूसी सैनिक इजीनियर ग्लादिशेफ, मुराविन और नजिमोर सिर-दरियाके मुहानेपर रूसी किला बनाने आये थे। वह दश्ते-कजाककी सर्वे कर चुके थे। खानको उसके डेरेमें न पा वह भी खीवा गये। अबुल्खैरने कुछ सुल्तानोंके साथ मुराविनको नादिरके पास भेजा, जिसने उनका अच्छा स्वागत किया। उसने अबुल्खैरको बुला भेजा, लेकिन वह नादिरपर क्यो विश्वास करने लगा? नादिरकी कृपासे खीवाको हाथमे रखनेकी जगह अबुल्खैरने देश लौट जाना ही अच्छा समझा। खीवाके नागरिकोने चार दिनतक नादिरके आक्रमणको विफल करनेकी कोशिश की, लेकिन अन्तमें आत्म-समर्पण करना पड़ा। नादिरने चार हजार तरुण उज्बेकोको अपनी सेनामे भर्ती करके खुरासान, और बारह हजार रूसी तथा ईरानी गुलामोको मुक्त करके अपने घर भेज दिया। उन्हीके बसनेके लिये नादिरने अबीवर्दके पास एक नया शहर बसाया।

४ ताहिरखान (१७४०–४१ ई०)

इलवर्सके मारे जानेके वाद वुखारा-खानके सववी ताहिरको खीवाका खान वना नादिर चारजूयकी ओर लौट पडा। ताहिर वहुत समयतक राज्य नही कर पाया। अगस्त १७४१ ई०में नादिर कास्पियनके पश्चिमी तटवर्ती दागिस्तानमें लडाईमें फसा था। इसी समय उज्वेक अरालियोने अवुल्खैरके पुत्र नूरअलीको वुलाया, जिसने खीवा पहुचकर ताहिरको मार डाला। थोडी देरके लिये नूरअलीने शासन सभाला, लेकिन जव नादिरशाहके फिर आनेकी खवर मिली, तो वह कजाकोंमें भाग गया। नादिरकी सेना नसरल्ला मिर्जाके नेतृत्वमें मेर्व पहुची। विद्रोही नेता एर्तुक ईनकने वहा जाकर क्षमा मागी, नादिरने उसे माफ कर दिया।

५ अवुल् मुहम्मद, इलबर्स-पुत्र (१७४१ ई०)

इलवर्सका पुत्र अवुल् मुहम्मद नादिरकी शरणमें था। नादिरने उसीको खीवाका खान और एर्तुकको उसका वजीर वनाया। एर्तुकको वहुत जल्दी उज्वेक और यामूद विद्रोहियोने मार डाला और खान अवुल् मुहम्मद भी खीवासे लुप्त हो गया।

६. अवुलगाजी II (१७४५ ई०)

विद्रोहियोने अव अवुलगाजीको अपना खान वनाया। इस समय उज्वेकोंके साथ-साथ तुर्कमान यामूद कवीलेका भी खीवा-राज्यमें वहुत जोर था। उधर ईरान नही चाहता था, कि खीवावाले उसके हाथसे निकल जाय। विद्रोह होते ही रहते थे। ईरानी जेनरल अलीकुलीने १७४५ ई०में ख्वारेज्मपर आक्रमणकर उरगजके पास यामूदोको हराकर वलखानकी पहाडियोकी ओर भगा दिया, और नये खानको नियुक्त करके ईरानका रास्ता लिया।

७ काइप, वातिर-पुत्र (१७५० ई०)

वातिर शायद कराकल्पकोका खान था। १७५० ई०मे इरवेक नामक एक दूतने रूसमें जाकर कहा था, कि खीवा जानेवाले कारवाको वातिरके राज्यके भीतरसे आना चाहिये, नूरअलीके राज्यके भीतरसे आना सुरक्षित नही है। इसी समय कजाक अरालियोपर आक्रमण करके उनके वहुतसे आदमी और पशु पकड ले गये। ये नूरअलीके आदमी थे, इसलिये खीवामें नूरअलीके प्रजाजनोको पकडकर उन्हे लूटका माल लौटानेके लिये मजवूर किया गया। वातिरका पुत्र काइप खीवामें आनेसे पहले लघु-ओर्दूके एक कवीलेका खान रह चुका था। काइपने नूरअलीके राज्यसे ओरेनवुर्ग जानेके रास्तेको वद कर दिया—रूसियोंके व्यापारका केंद्र होनेके कारण ओरेनवुर्गसे व्यापारियोको वहुत फायदा था। काइपके हुक्मका वदला लेनेके लिये १७५३ई०में नूरअलीने खीवाके कारवाको लूटा और रूससे कहा, कि यदि तोपखानेके साथ दस हजार सेना मिले, तो रूसके लिये हम खीवाको जीत सकते है। लेकिन रूसियोने उसे माननेसे इन्कार ही नही कर दिया, वल्कि हुक्म दिया, कि लूटे मालको उसके मालिकोको लौटा दो। रूस इस तरह खीवासे निरवाध व्यापार होने देना चाहता था, लेकिन मध्य-एसियाके शासको और अमीरोंके लिये लूट तो एक वैध आय थी। १७५४ ई०में काइपने खीवामें आये एक रूसी कारवाको रोक लिया, और साल भर वाद उसे छोडा। काइपके दूतने रूसमें जाकर कहा, कि उज्वेक हमारे खानको पसद नही करते, इसलिये उसकी मददके लिये रूसको हाथ वढाना चाहिये। रूसने इन्कार कर दिया,। नूरअली और उसके पुत्र एरलीके पकडे जानेपर मुक्ति-धन देकर छुडानेका वचन देते हुये सेना एकत्रित की। सेनाको आशीर्वाद देनेके वक्त खोजाने ऐसा करनेसे मना कर दिया।

काइप विद्वान् और साथ ही अत्यन्त क्रूर आदमी था। उसकी क्रूरताके कारण लोगोंने विद्रोह करके उसे लघु-ओर्दूके कजाकोमें भागनेके लिए मजवूर किया, जिनके ही भीतर रहते

१७७० ई०में वोल्गा तटके तोरगूत मगोलोके प्रस्थानके समय उसने उनपर आक्रमण करके "गाजी" (धर्मयोद्धा)का नाम पाया। पीछे १७८६ ई०में लघु-ओर्दूके एक कबीलेने उसे अपना खान भी चुना। काइपने अमीर-बुखारा अबुल्फैज खाकी लडकी ब्याही थी। उसकी मृत्यु १७९१ ई० के आसपास हुई।

८ अबुलगाजी III (--१७५५ ई०)

खीवामे अब वास्तविक शक्ति ईनको (प्रधान-मन्त्रियो)के हाथमें थी। उज्वेकोमे ककुरत (कुनगरद) कबीलेका प्रभाव छिङ्-गिस् (चिंगिस) खानके समयसे ही बहुत था, यह हम पहले बतला आये है। मूलत यह मगोल कबीला था, जो पीछे तुर्क बन गया। ककुरतोके बी (बेग या अमीर) वशानुवश क्रमसे ईनक (वजीर) तथा हजारास्पके राज्यपाल होते आये थे। १८वी सदीमे बुखारा और खीवा दोनोमे हालके नेपाल और पिछली सदी तकके जापानकी तरह दो राजा हुआ करते थे। खानको बस अच्छा-अच्छा खाना और सुनहला जामा पहनकर मौज करनेकी छुट्टी थी। उसके दरबारमें सलाम करनेके लिये प्रति दिन ईनक और बडे-बडे दरबारी जाते थे। राज्यका सारा काम ईनकके हाथमें था। प्रत्येक शुक्रवारको दरबारी महलमे जाते, जहा खानके पास ईनक बैठता। जब नमाजका वक्त आता, तो ईनक खानको उठनेमे सहारा देता, उसे मस्जिद ले जाता, और नमाजके बाद लौटा लाता। खीवाके खान इसी तरहके गुडिया खान थे, जिनका काम था ईनकोके हाथमे नाचना। इसी गुडिया-खानकी जगह लेनेके लिये कजाको या कराकल्पकोमेंसे किसी छिङ-गिस्-वशीको लाया जाता, और जबतक पसद आता, रखकर उसे निर्वासितकर किसी दूसरेको खान बनाया जाता। इशमद बी सबसे पुराने ईनकोमेंसे था। पता लगता है, कि उसके बाद उसका पुत्र मुहम्मद अमीन १७५५ ई०मे ईनक बन सत्रह साल-तक शासन करता रहा। इसके शासनकालमे खीवाकी समृद्धि बढी। उस समय खीवाका अपना कोई सिक्का नही था, ईरान और बुखाराके सिक्के ही वहा भी चलते थे। शुक्रवारकी नमाजके खुतबेमें गुडिया-खानका नाम लिया जाता था। मुहम्मद अमीनकी मुहरपर खुदा हुआ था—"अल्लाह और पैगम्बरकी मेहरबानी, खानका एक दास, जिसपर वह विश्वास कर सकता है।" जिस तरह खीवामे ईनकोकी चलती थी, उसी तरह बुखारामे इसी समय अतालीकोकी चल रही थी। बुखाराका अतालीक दानियाल बी ईनक मुहम्मद अमीनका गहरा दोस्त था, जिसने हाथसे निकल गये अधिकारको पानेमें अमीनकी मदद की थी। मुहम्मद अमीनके बाद उसका पुत्र एवज ईनक बना। यह बडा ही समझदार और सादगीसे रहनेवाला आदमी था। इसके समय यामूदो (तुर्कमानो), मगिशलको (तुर्कमानो) और कजाकोने विद्रोह किया, जिसमे उसके अपने सबवी तथा अरालके ककुरतोके नेता तुरासूफीने भी विद्रोहियोका साथ दिया।

अक्तूबर १७९३ ई०में रूसी डाक्टर मेजर ब्लाकेन्नागेल् खीवा पहुचा। गुप्तचर समझकर उसे शहरके नजदीक एक घरमे नजरबन्द करके मारना चाहते थे, किन्तु ईनकके भाई, बुढापेके कारण अधे फाजिल बीको डाक्टरकी दवासे फायदा हुआ, जिससे उसका मान बढ गया। डाक्टरने बहुत समझाया, कि खीवावालोको मगिशलकमें जा रूसियोके साथ व्यापार करनेसे बहुत फायदा होगा, लेकिन आम एसियाइयोकी तरह खीवावाले भी यूरोपियोपर विश्वास नही करते थे। डाक्टरके लिखे-अनुसार उस समय खीवाके राज्यमे एक लाखसे अधिक आदमी नही थे, जिनमें उज्बेक ४१ प्रतिशत, सर्त (फारसीभाषी) १५ प्रतिशत, कराकल्पक १० प्रतिशत, यामूद ५ या ६ प्रतिशत थे। बाकी १८ या १९ प्रतिशत दास थ। खीवाकी सेनामें बारह या पद्रह हजार सिपाही थे, जिनमेंसे दो हजारके पास ही बन्दूकें थी, बाकी तलवार, भाला, तीर, कमानवाले थे। यामूद और करा-कल्पक सबसे अच्छे सिपाही माने जाते थे, जिनके बाद उज्बेकोका नम्बर आता था। उस समय काइपका पुत्र अबुलगाजी खान था, जो एकातमें रक्खा जाता, और साल भरमें तीन बार ही प्रजाके सामने आने पाता था।

१८०४ ई०मे ईनक एवज मर गया। भाइयो और दूसरे अमीरोने कुथमुराद बेकको ईनक

वनाया, लेकिन उसने अपने भाई इल्तजारके लिये पदको लेनेसे इन्कार कर दिया। इल्तजारने छ महीनेतक ईनकके तौरपर काम किया। वह रोज खान (कजाक)के पास मुजरा करने जाता। एक रात उसने अपने भाई कुतुलुक मुरादको वुलाकर कहा—"तैमूर लग, नादिरशाह और वुखारा-अमीर मुहम्मद रहीम कौनसे छिङ-गिस्-वशके खानोके पुत्र थे, उन्होने अपन भाग्यको अपने आप वनाया। अल्लाहकी मेहरवानी है, कि मेरे पास निर्णय करनेकी शक्ति, साहस और सिपाही है। कवतक मैं इस गुडियाको सम्हाले वैठा रहूगा? मैं स्वय खान वनना चाहता हू। इसके वारेमे तुम्हारी क्या सलाह है? मै कजाक खानको कुछ पैसा देकर उसे उसके घर भेज दूगा, और फिर यामूदोसे पिंड छुडाऊगा।" भाईने उसकी वातका समर्थन करते हुये फातेहा पढा। दूसरे दिन इल्तिजारने गुडिया-खानको किलेसे निकालकर कजाकोमे भेज दिया और फिर अपने गद्दीपर वैठने हुये ककुरत राजवशकी स्थापना की।

§२ ककुरत-वश (१८०४-८१ ई०)

इस वशमें निम्न खान हुये—

१.	इल्तजार, ईरज-पुत्र, एवज-पुत्र	१८०४-६ ई०
२	मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र	१८०६-२५ "
३	अल्लाकुल, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८२५-४२ "
४	रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र	१८४२-४५ "
५	मुहम्मद अमीन, अल्लाकुल-पुत्र	१८४५-५५ "
६.	अव्दुल्ला, इवादुल्ला-पुत्र	१८५५ "
७	कुतुलुक मुराद, इवादुल्ला-पुत्र	१८५५ "
८	सैयद मुहम्मद, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८५५-६५ "
	(मुहम्मद फना, तुरासूफी-भतीजा)	१८६५ "
९	सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र	१८६५ "

१ इल्तजार, इराज-पुत्र, एवज-पुत्र (१८०४-६ ई०)

जानेवाले खानसे इल्तजारने कहा था—मै दूसरे खानको वुला रहा हू। उसने अपनी सेना वढा दस हजार उज्वेकोको कवचवद्ध किया, फिर मौलवियो, दूसरे धार्मिक नेताओ, अतालीको, ईनकोको वुलाकर कहा, कि दूसरे कजाक-खानके वुलानेकी जरूरत नही। उइगुर अतालीक वेक फुलाद सहमत नही हुआ, वाकी सवने फातेहा पढकर दुआ मागी। इल्तजार उस समय चुप रहा। वडे दरवारियो, आलिमो और कवीलोंके अकसक्कालो (ज्येष्ठो)में उसने खलअत और इनाम वाटे, उसके नामसे खुतवा पढा गया। यामूदोको छोड उज्वेको, कराकल्पको और तुर्कमानोने नये खानको वधाई दी। इल्तजार जानता था, कि अन्तमें मेरे भाग्यका फैसला तलवार द्वारा होगा, इसलिये उसने अपना सारा ध्यान सेनाको वढाने और मजवूत करनेमें लगाया। तैयारी हो जानेपर वह सरकश यामूदोके ऊपर पडा, जो कि उस समय अस्त्रावाद (ईरान) और गूरगानके इलाकोमें रहते थे। उसने उनसे माग की—लूटपाटके जीवनको छोड दो, ऊट-भेड-फसलपर कर दो, नहीं तो हमारे राज्यमे निकल जाओ। उज्वकोको लूटनेवाली यामूदोकी एक टोलीके मुखियाको नाकमें रस्सी डालकर वाजारमें घुमाया गया, लेकिन यामूद घुमन्तुओका लूटना तो पीढियोंसे व्यवसाय था, उसे वह भला कैसे छोडते? इल्तजार भी निश्चय कर चुका था। उसने एक वार आक्रमण करके पाच सौ यामूदोको मारा, पाच सौको कैदी वनाया, वाकी प्राण लेकर रेगिस्तानमे भाग गये। अराल द्वीपवाले भी लूट-मारमे तग कर रहे थे, इसलिये इल्तजार उनके नेता तुरासूफीके ऊपर पड़ा, पर उसे असफल होकर ही खीवा लौटना पडा। उसने वुखारामे लूट-मार करके धन जमा करना चाहा, लेकिन वेक पुलादने इसे वुद्धिमानीकी वात नही कही। इसपर वह पुलादसे नाराज हो गया, और दरवार छोडते समय उसे मरवा दिया। पुलादके

परिवार तथा कबीले (उइगुर)ने विद्रोह किया, इसपर इल्तजारने उइगुर-उज्बेकोका भीषण हत्याकाड किया । जो कत्ल होनेसे बचे, वे भाग गये, बाकियोने 'भेडिये द्वारा जबर्दस्ती लादी शाति'के सामने सिर नवाया । इल्तजारने अपने राज्यकी सीमाको बढानेकी कोशिश की । उस समय उरगजमे एक बडा पुराना खानदानी सैयद अल्लेखोजा रहता था । इल्तजारने बिना बापकी मर्जीके उसकी लडकी ब्याह ली । इसपर खोजाने बुखारा भाग गये यामूदोको लूटका प्रलोभन देकर बुलाया, और उरगजमें उन्हे रहनेके लिये जमीन दी । अब खान लोगोपर पहलेसे भी ज्यादा खुलकर अत्याचार करने लगा । बाहर अब भी इल्तजारके अभियान चलते रहे । १८०५ ई०में वह बुखाराके ऊपर चढा । उस समय अमीर-बुखाराका दूत अब्दुल करीम जारके दरबारमे जाते हुये उरगज आया था । उसे जल्दी ही करशी पहुचकर राज्यपाल बननेका प्रलोभन दे तैयारी करनेके लिये कहा । महीने बाद इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें घुसकर लूट-मार की, और वहासे पचास हजार भेडे तथा हजारो ऊट लूट लाया । अमीर-बुखाराने तैयारी करके मुहम्मद नियाज बीको तीस हजार सेना देकर रवाना किया । इधर इल्तजार भी तेक्के, यामूद, सलार, चन्दोर, अमीरअली, बूजेजी, ककुरत, ककली, मगित आदि तुर्कमान और उज्बेक कबीलोके बारह हजार जवानोको लिये वक्षुके किनारे-किनारे चला । उसने बुखाराकी पहली टुकडीपर अकस्मात आक्रमण कर बुखारी दादखाहके पुत्रको खतमकर पाच सौ आदमियोको मारा या पकड लिया । बदी रस्सीमे बधे इल्तजारके तम्बूपर लाये गये । खीवाकी सेनाने बुखारियोके लौटनेके रास्तेको भी काट दिया था, अत बुखारियोके लिये लडने-मरनेके सिवा कोई रास्ता नही था । वह खूब लडे । खीवावाले हार गये । उनके बहुतसे आदमी भागते वक्त नदीमे डूब गये । इल्तजारने नावमें बैठकर भागना चाहा । उसके बहुतसे साथी भी प्राण बचानेके लिये उसी नावपर सवार हो गये, और बोझके मारे नाव डूब गई—बहुतसे आदमियो-के साथ इल्तजार भी वक्षुमें डूब मरा । उसके भाई हसनमुराद और जानमुराद भी डूब मरे । मुहम्मद रहीम बुखारियोके हाथमे बन्दी बना और सिर्फ कुतुलुक मुराद बच बचकर खीवा पहुचा । यह घटना १८०६ ई०की है ।

२. मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र (१८०६—२५ ई०)

बुखारामे उस समय अमीर हैदरका शासन था । खीवावालोंसे निर्दयतापूर्वक व्यवहार करके खूनी झगडेको और बढाना उसने पसद नही किया, और बदियोको क्षमा करके उन्हे खलअत और इनाम दे मुक्त कर दिया । इस दयाके लिये कुतुलुक मुरादने अपने भावोको प्रकट करते हुये कहा—"मैं अमीर हैदरका कुत्ता, दास हू, उसका हुक्म माननेके लिये तैयार हू ।" कुतुलुक मुरादको ईनककी पदवी देकर अमीर हैदरने खीवाका राज्यपाल नियुक्त किया था, लेकिन उसके आनेसे पहले ही ख्वारेज्मियोने उसके छोटे भाई मुहम्मद रहीमको खान बना दिया था । कुतुलुकने भी उसे स्वीकार किया, और बुखाराके अमीरके पास लिखकर अपनी मजबूरी प्रकट की । अरालियोने इसी समय उज्बेकोको लूटा-मारा । नये खानके चचा मुहम्मद रजाबेकने उइगुरोके विद्रोहके समय उनका साथ दिया था । उसने अब भी विद्रोह करना चाहा, लेकिन उसे हारना पडा । कजाकोके कई साल लूट-मार करनेका जवाब खानकी ओरसे था, जाडोमें रजाबेकका चेकली, तुर्त-कारा (शेरगाजी), चूमेके, जलैर (बुल्की-सुल्तान)के कजाकोको लूटने जाना । कजाकोने मजबूर होकर सौ भेडोपर एक भेड खानको देना मजूर किया । शेरगाजी स्वय १८१९ ई०मे खीवा-दरबारमे आया, और वही मरा । उसके बाद रहीमखानने अपने बेटेको उसके स्थानपर नियुक्त किया, जिसे कजाकोने भी मान लिया । अगले साल तुर्तकारा और ओई कजाकोके ऊपर भी वैसी ही बीती । जाडोमे सरकश ककुरतोके अरालद्वीपपर बर्फके ऊपरसे चढाई की, लेकिन आक्रमण उतना सफल नही रहा, तो भी खीवाके एक शरणार्थी और उसके पुत्रने तुरासूफी मुरादके सिरको काटकर बोरेसे ला खानके सामने पेश किया । मुहम्मद रहीमने खुश होकर बाप-बेटको नौकर रख लिया । जब अराली ककुरतोको अपने नेताके मारे जानेकी खबर लगी, तो

उन्होने खीवाके सुल्तानकी अधीनता स्वीकार की । तुरामुरादके परिवार और खजानेको ले खानने खीवा लौटकर मुरादकी लडकीसे व्याह किया। पुराने खानके वशसे व्याह करनेके कारण अब वशका सम्मान बढ गया । रहीमने इल्तजारकी सैयद-पुत्री विधवाको भी व्याहा। अब्दुल्करीमने अब्दुर्रहीमको क्रूरतामें शैतान लिखा है। उसने गर्भिणी अराली स्त्रियोका पेट चीर गर्भके बच्चोको टुकडे-टुकडे करके अपनी पशुताका परिचय दिया था । रहीमने अपने विरोधियोको एक-एक करके मार डाला, या उन्हे देशसे बाहर निर्वासित कर दिया । उसके कठोर शासनके कारण यह फायदा जरूर हुआ, कि अब लूट-मार बन्द हो गई, और व्यापारी कारवासे कबीलोने मनमाना कर लेना छोड दिया । उसने कर की दर निश्चित कर दी, और कर उगाहनेके कस्टम (आयातकर) घर बनवाये । अपनी टकसाल स्थापित करके उसने खीवामें चादी-सोनेके सिक्के ढलवाये ।

ईरान शीया था । मध्य-एसियाके सुन्नी मुसलमान शीयोको काफिरसे भी बदतर समझ उनके ऊपर लूट-मार करना पुण्य कार्य समझते थे । १८१३ ई०में खीवावालोने खुरासानपर आक्रमण किया, लेकिन ईरानी सेनाने भी मुकाबिला किया, और चार दिनकी झडपके बाद दोनो सेनायें पीछे हटी। लौटते समय रहीम खान गोकलान तुर्कमानोके ऊपर पडा, और उनमेंसे बहुतेरे बदी बनाये । फिर तेक्के तुर्कमानोके ऊपर धावा बोल उनके जीते हुये खेतोको छीनकर दक्षिणके नगे पहाडोमें खदेड दिया । इनमेंसे कुछ पीछे जाकर नहरके किनारेवाले इलाकेमें बस गये । रहीमने मगिशलकके इलाकेमें डेरा रखनेवाले चन्दोर तुर्कमानोको भी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। रहीमने तलवारके बलपर शाति स्थापित की। इससे खीवा और रूसके बीच कारवाका आना-जाना सुगम हो गया, और पूर्व तथा पश्चिमम व्यापार खूब बढा । रहीमको बिना लडे चैन नही आता था। १८२० ई०में उसने बुखारापर चढाई की, और जाकर चारजूयको एक महीनेतक घेरे रक्खा । इसी बीच उसके सैनिक पडोसमें घुमक्कडी करनेवाले तेक्के तुर्कमानोको भी लूटते रहे । खीवावालोके पास रूसके साथ सबध होनेके कारण तोप भी थी, जिसने मदद अवश्य की, किन्तु बिना फैसलेके ही दोनो सेनाओको लौट जाना पडा । रहीमका समकालीन अमीर हैदर भी बहुत मजबूत शासक था । अगले साल वह खुद सेनाके साथ आया। खीवाके नावोके बेडेको उसकी तोपोने रोक लिया। नदीमें पानी कम था, इसलिये दूर हटकर निकल भागनेका मौका नही मिला । रहीम खानके भाई कुतुलुक मुरादको हैदरने हराया। उसकी बहुतसी नावें नष्ट हो गयी, और खीवा-सेना पराजित हो पीछे लौटी । लेकिन १८२२ ई०में फिर कुतुलुक मुरादने बुखाराके राज्यमें कराकुलतक लूट-मार की। मरते वक्त कुतुलुकने मुसलमान भाइयोपर वार करनेके लिये अमीर-बुखारासे क्षमा मागी—"सचमुच गाजीके लिये यह शोभा नही देता था।"

१९वी सदीके आरम्भमें काकेशसमें जारका शासन स्थापित हो चुका था, और अब पश्चिमी तटसे ही सतुष्ट न हो वह कास्पियनके पूर्वी तटपर भी अधिकार करनेके लिये व्यग्र था। उधर रहीम खानने पूर्वी तटपर रहनेवाले तुर्कमानोको बुरी तरहसे दबा रक्खा था, इसलिये रूस उससे फायदा उठाना चाहता था। १८१९ ई०में गुर्जी (जार्जिया)के राज्यपालने पूर्वी कास्पियनके तटपर रहनेवाले तुर्कमानो तथा खीवासे भी सबध स्थापित करनेके लिये मुराबेफको दूत बनाकर भेजा । मुराबेफ १९ सितम्बरको क्रास्नोवोद्स्कमें जहाजसे उतरा, और ६ अक्तूबरको खीवाके पास पहुचा । उस समय खान शिकारमें गया हुआ था । उसके आदमियोने मुराबेफको गुप्तचर समझ नजरबन्द कर खानने मुराबेफको मेहतर (वित्त-मत्री) आगा यूसुफके घरमें ठहरा दिया । फिर किसी तरह मुराबेफ खानके दरबारमें उपस्थित होनेमें सफल हुआ । मुराबेफने खानके बारेमें लिखा था—"वह अपने सफेद रगमे उज्बेकोसे अधिक रूसी-सा मालूम होता था ।" मुराबेफने राज्यपालका सदेश देते हुए कहा—"मगिशलककी जगह क्रास्नोवोद्स्क द्वारा व्यापार-सबध स्थापित करनेपर तीसकी जगह सत्रह दिनमें ही कारवा समुद्रतक पहुचने लगेंगे। लेकिन क्रास्नोवोद्स्कका इलाका उस वक्त ईरानी काजार-वशके हाथमें था, जब कि मगिशलक

खीवाका था, इसलिये खान कारवा-पथको कैसे वदल सकता था ? मुराविफके लिखनेसे पता लगता है, कि उस समय खीवामें एक शासन-परिषद् थी, जिसका अध्यक्ष मेहतर यूसुफ आगा था। यूसुफ सर्त अर्थात् फारसी-भाषी ताजिक व्यापारीवर्गका प्रतिनिधि था। द्वितीय वजीर कुशवेगी उज्वेक, तीसरा खोजेश मेहरम खानके गुलामका पुत्र था, जो कस्टमका उच्चाधिकारी भी था। परिषद्के सबसे अधिक प्रभावशाली सदस्य थे—खानका भाई कुतुलुक मुराद और काजी (धर्माधिकारी)। परिषद्में चार प्रधान उज्वेक कबीलोके सरदार भी सम्मिलित थे।

यह बतला आये है, कि खीवा उस वक्त गुलामोका वहुत भारी बाजार था, जिसमें रूसी गुलामोकी कीमत ज्यादा थी, लेकिन रूसी औरतोकी अपेक्षा ईरानी औरतें ज्यादा महगी विकती थी।

मुहम्मद रहीम १२४१ हि०* मे मरा।

३. अल्लाकुल, रहीम-पुत्र (१८२५-४२ ई०)

रहीमके मरनेपर उसका वडा बेटा गद्दीपर बैठा। इसने वापके जमा किये हुये खजानेको बरबाद करना शुरू किया। १८३२ ई०में मेर्वपर चढाई करके तेक्का तुर्कमानोपर कर लगाया, जिसके लिये खीवासे रेगिस्तान (कराकुम)के बीचसे मेर्व जाते रास्तेपर हर पडावपर कुआ खोदना पडा। सरख्शके सलोरोपर भी जबर्दस्ती कर लगाया। कर उगाहनेके लिये दोनो जगह कस्टम-गृह बनवाये। सरख्शसे लौटते समय अलमान्सके साथ वारनेस वहा आया था। उसने लिखा है—"नगरसे चद मीलपर लूटके मालको गिना गया—एक सौ पद्रह आदमी, दो सौ ऊट और उतन ही ढोर थे। उन्होने पहले ही लूटके मालको वाट लिया था, लेकिन पाचवा हिस्सा उरगजके खानको भी दिया।" उस समय किजिलवासो (ईरानी शीयो)के ऊपर लूट करना धर्मयुद्ध माना जाता था, जसा कि स्पेनवाले मेक्सिको और पेरूमें अपने हाथोको खूनसे रगनको समझते थ, वह भी अपने लूटके मालका पाचवा हिस्सा स्पेनके राजाके पास भजते थे। इस प्रकार उससे कुछ ही शताब्दियो पहले स्पेनके युरोपीय भी उसी सिद्धातको मानते थे, जिसे १९वी सदीके आरम्भमे खीवाके सुन्नी मुसलमान।

वापके समयसे ही लूटपाटके वन्द होनेके कारण ख्वारेज्ममें व्यापार चमक उठा था, और बुखारा उरगज-मगिशलकके वीच स्थलसे, फिर अस्त्राखानतक समुद्र-मार्गसे वरावर व्यापारिक कारवा आते-जाते रहते थे। अराल समुद्रके पूर्वी तटसे एक नया व्यापारमार्ग खोलनेके लिये रहीम खानके समय १८२० ई०में रूसियोने इस इलाकेकी सर्वे की। फिर पाच सौ सिपाहियो और दो तोपोंके साथ एक रूसी कारवा चला। खीवावाले क्यो पसद करते, कि उत्तरका मार्ग खुल जाय, जिससे उरगज और मगिशलकका समृद्ध वणिक्पथ उजड जाय। उनकी शहपर तुर्कमानोंने रूसी काफिलेपर प्रहार किया, लेकिन उन्हे हारकर भागना पडा। तो भी काफिलेको अपने सौदेको जलाकर खाली हाथ पीछे लौटना पडा।

पहली वार असफल होनेके बाद अब अल्लाकुलके शासनकालमे १८३५ ई०में रूसियोने मगिशलकके वन्दरगाहके पास अपना किला बना खीवावालोको डराना चाहा, लेकिन खानने उसकी परवाह नही की। इसी समय १२० रूसी इलाकेकी जाच-पडताल कर रहे थे, जिन्हे पकडकर खीवावालोने बुखाराके बाजारमें वेच दिया। इसपर १८३६ ई०मे जार निकोलाइ I के हुक्मसे ओरेनवुर्ग और अस्त्राखानमें खीवावाले व्यापारियोको पकड लिया गया। उसी साल अगस्तमे निज्नीनवोगोरदके मेलेसे लौटते खीवाके छियालीस व्यापारियोको भी जेलमे डाल दिया गया। यह स्मरण रहना चाहिये, कि वोल्शेविक-क्रातिसे पहलेतक निज्नीनवोगोरदका मेला दुनियाका सबसे बडा व्यापारिक मेला था। हमारे सोनपुर मेलेका नम्बर उसके बाद आता था। ओरेनवुर्गके रूसी राज्यपाल जेनरल पेरोव्स्कीने खानको कडे शब्दोमें लिखा—"तुम्हारी कार्रवाई बुरी है। बुरे बीजका बुरा फल पैदा होता है। तुम्हे चाहिये, कि रूसी बदियोको लौटा दो, और कजाकोंके भीतर दखल देने और लूट-मारको वन्द करो। ऐसा करनेसे रूसियोंके साथ

*१६ VIII १८२५–७VII १८२६ ई०

तुम्हारा-जैसा व्यवहार होगा, वैसी ही सुविधायें खीवावालोको रूसमे मिलेगी।" लिखा-पढी चलती रही, और दो सालमें सौ रूसी वदी लौटाये गये, लेकिन दूसरी ओर १८३९ ई०में ही खीवावाले दो सौ रूसी मछुओको कास्पियनसे पकड ले गये।

असफल रूसी अभियान (१८३९ ई०)—खीवाके खानकी गुस्ताखियोको शक्तिशाली रूस भला कवतक वर्दाश्त करता ? और यह तो वह समय था, जव कि युरोपमे भी रूसकी धाक जमी हुई थी। जेनरल पेरोव्स्कीने २६ नवम्वर १८३९ ई०के जाडोमें छ हजार पैदल सेनाके साथ दस हजार ऊटोके ऊपर रसद ले ओरेनवुर्गसे प्रस्थान किया, लेकिन रास्तेमे उसे हिमविन्दुसे ४० डिग्री नीचेकी सर्दीका सामना करना पडा—नीचे वर्फकी ऊची ढेर थी, ऊपरसे भयकर हवा चलने लगी। हजारो सिपाहियोने हिम-आहत हो अपनी अगुलियो, पैरो और हाथोको गवाया, वहुतसे सर्दीमें मर गये। इस स्थितिका मुकाविला करते हुये जैसे-तैसे रूसी खीवाकी सीमा पर अकवुलाकमे पहुचे। खीवाका कुशवेगी (प्रधान-सेनापति) भी रूसियोंके मुकाविलेके लिये तैयार था। वर्फ आठ फुट मोटी थी। कजाकोने घोडोके झुडको दौडाकर वर्फमें रास्ता वनाया, जिसके दोनो तरफ वर्फकी दीवार खडी थी। सव कोशिश करनेपर भी आगे वढना सर्वनाशके मुहमें पडना समझ पेरोव्स्की लौट गया।

रूसियोको मध्य-एसियाकी ओर—अर्थात् भारतके सीमातके पास—पहुचनेकी कोशिश करते देख अग्रेज कैसे चुप रह सकते थे ? मेजर टाड अग्रेजोके लिये अफगानिस्तान और वुखारामें अपना जाल विछा रहा था। उसने हेरातसे काजी मुहम्मद हसनको दूत वनाकर वुखाराके अमीरके पास भेजा। अमीरने मिलकर काजीको वहुत फटकारा, कि वह इस्लामकी भूमिमें काफिरोको घुसाना चाहता है। इसपर काजीने कहा—"अपने हथियारो, अनाज, सोना, खून और अपनी वुद्धिके साथ मुहम्मद शाहके हथियारोंसे ध्वस्त होते प्राचीरकी रक्षा करने अग्रेज आये। उन्होने काफिरोंसे सच्चे मुसलमानोकी रक्षा की।" और फिर अमीर वुखारासे पूछा— "काफिर कौन हैं ? ईरानी किजिलवास हैं, जिनकी कि आपने रक्षा की, या अग्रेज जिन्होने कि सच्चे मोमिनोकी रक्षा की ? वहुत समय नही वीतेगा, कि रूसके आक्रमणको रोकनेके लिये भी उनकी सहायताकी अवश्यकता होगी।" काजीने रूसका भय दिखलाकर वुखाराके अमीरको प्रभावित किया, और सफलताकी सूचना देत जरीके रेशमी थैलेके भीतर मेजर टाडके पास अपना पत्र भेजा।

वुखारामें सफलताकी आशा देखकर टाडने कप्तान एवटको खीवाके सुल्तानके पास भेजा। उसके हुक्मके मुताविक एवटने खानको रूसी कैदियोके छोड देने तथा स्वय अस्त्राखानमें जा वहा पकडे गये खीवाके व्यापारियोको छुडानेकी कोशिश की। एवट १८४० ई०के वसतमे चला था, जव कि अभी-अभी जेनरल पेरोव्स्कीका अभियान भयकर आफतमे पडनेके वाद नष्टप्राय होकर लौटा था। उस समय खान एक काले तम्वूमें वैठा था, जव कि एवट उससे मिलने गया। एवटने जूता निकाल परदा उठाकर भीतर प्रवेश किया, फिर अपने हाथोको अदवसे छातीपर रखकर "सलाम् अलेकुम्" कहकर वातचीत की। खानने उसके साथ वडा अच्छा वर्ताव किया। उसके आनेकी खवर सुनकर स्वागत करनेके लिये पहले ही सैनिक भेजे थे। नगरके वाहर वजीरके एक महलमें एवटको टिकाया गया था। एवटने पहलेसे खीवामे वन्दी अग्रेज गुप्तचर कर्नल स्टोडर्टको छोड देनेपर जोर दिया। एवटने यह भी कहा, कि खीवा यदि अग्रेजोंसे मदद पाना चाहता है, तो रूसी वदियोको छोडना जरूरी है। स्टोडर्ट वुखाराके अमीरके वदीखानेमें था। खीवा-खानने उसे छोडनेके लिये अपना दूत वुखारा भेजा। कास्पियन और ओरेनवुर्गकी ओरसे जिस तरह रूसका फौलादी पजा मध्य-एसियाकी ओर वढता आ रहा था, और जिस तरह हिन्दुस्तानमे मुस्लिम वादशाहतको खतम करके अग्रेजोने अपना राज्य कायम किया था, उसे देखते हुये मध्य-एसियाके शासकोकी नीद हराम हो गई थी। अग्रेजो और रूसियोको वह एक तरफ आग और दूसरी तरफ खड्ड-सा देखते थे, इसलिये किमी निश्चय पर पहुचना उनके लिये आसान नही था। तो भी रूसका खतरा विलकुल सामने था—पेरोव्स्की यद्यपि इस साल सफल नहीं हुआ था, लेकिन एक वारकी असफलतामे खीवावाले कैसे अपनेको सुरक्षित समझ लेते ? इसीलिये अल्लाकुल

समझा-बुझाकर कर्नल स्टोडर्टको छोड देनेके लिये बुखाराके अमीरको तैयार करना चाहता था। एवटने अपनी एक मुलाकातमे फारसी अक्षरोमे लिखे एक नक्शेको अल्लाकुलके सामने रखकर वतलाया, कि इगलैडका स्वार्थ इसीमे है कि मध्य-एसिया रूसके हाथमे न जाय। हम मध्य-एसियाके राज्योको स्वतत्र और तटस्थ देखना चाहते है, और रूसके मनसूबेको असफल करनेमें सहायता देनेके लिये तैयार है। लेकिन खान रूसकी शक्तिको ज्यादा अच्छी तरह जानता था, इसलिये उससे बहुत भयभीत था। उसने चादीकी तरह सफेद चमकत तीन पौडके एक तोपके गोलेको दिखलाकर एवटको वतलाना चाहा, कि रूसी बहुत जबर्दस्त शक्ति रखने है। एवटने साफ देखा कि जवतक रूसी तोपका यह सफेद गोला खानके तम्बूमे रहेगा, तबतक उसे कुछ भी साहस नही होगा, और मुझे अपने काममे सफलता नही मिलेगी।

एवटके काममें सबसे बाधक मेहतर था, जो रूसी वदियोके छोड देनेपर जोर देनेके कारण एवटको रूसियोका गुप्तचर समझता था। एवटके बहुत कहनेपर मेहतरने कहा—अगर हमारे भाग्यमें यही लिखा होगा, तो फिर क्या चारा? इसपर एवटने कहा—तो इसका अर्थ है खीवाको रूसियोके हाथमे दे देना। मेहतरने गुस्सेमे आकर कहा—"आह! अगर हम काफिरोसे लडते मारे गये, तो सीधे स्वर्गमें जायगे।" इसपर एवटने जवाव दिया—"और तुम्हारी औरते? तुम्हारी बीबिया और लडकिया रूसी सिपाहियोकी गोदमें जाकर किस तरहके स्वर्गको प्राप्त करेंगी?" ईरानसे आये हुये दूतने जब ईरानी गुलामोको छोडनेके लिए कहा, तो अल्लाकुलने जवाब दिया—"मुहम्मदशाहको कहो, कि अभी वह वच्चा है, अभी उसे दाढी भी नही आई है। वह क्यो नही पहले रूसियोको ईरानसे निकालता?" दरअसल खीवा ऐसी परिस्थितिमें था, कि उसके लिये इस समय कुछ भी निश्चय करना वहुत मुश्किल मालूम होता था। प्रस्थान करते वक्त एवटने खानसे कहा था—बडी सावधानीसे काम करनेकी जरूरत है। खानने जवाब दिया—"यह वहुत मुश्किल है। दुनिया भरमे मेरे राज्यको छोडकर रूसियोको कोई दूसरा युद्धक्षेत्र नही मिलता।"

एबट सुरक्षित तौरसे कास्पियनके तटपर गुयेदिकके वन्दरगाहमे पहुचा, लेकिन जले-भुने वजीरने ऐसी चाल चली, कि वन्दरगाहपर एवटको जहाज नही मिला। फिर वह वहासे चार दिनके रास्तेपर दक्षिणमे अवस्थित रूसियोकी फौजी चौकी दाशकलाकी ओर रवाना हुआ। चौकीपर पहुचनेमे दस घटेका रास्ता रह गया था, जब कि उज्बेकोने उसे लूट लिया। एवटकी दो अगुलिया टूटी, और सिर भी फूटा। फिर उन्होने उसे ले जाकर घुमन्तुओंके डेरेमें रखकर वहुत बुरा बर्ताव किया। टाडने अखुन्द-जादा नामक अफगानको भेजा, जिसने एवटको छुडाकर रूसकी ओर रवाना किया। हेरातमे टाडके पास एबटके मरनेकी खबर पहुची। जिसपर उसने लेफ्टिनेंट शेक्सपियरको खीवाके साथ फिर वातचीत करनेके लिये भेजा। लेकिन खानने उसकी वातोपर अविश्वास प्रकट करते हुये कहा—"यह क्या वात है, जो हमारेसे इतनी दूर रहनेवाला तुम्हारा देश हमारे देशके साथ मित्रता करनेके लिये इतना उतावला है?" शेक्सपियरने जवाव दिया—"हमारे पास भारत-जैसा एक विशाल उद्यान है, कही कोई उसपर टूट न पडे, इसलिये हम अपने बगीचेके चारो ओर दीवारे खडी करना चाहते है, और वे दीवारें है—खीवा, बुखारा, हिरात और काबुल।" याकूब मेहतरने काफिर कहकर जब ताना मारा, तो उसका जवाब शेक्सपियरने दिया—"हममेंसे कौन काफिर है? तुम, जो कि कभी न बुझनेवाली ईर्ष्याके कारण रोज गुलामोको सासत देते हो, वापसे लडकियोको, पतिसे पत्नीको जबर्दस्ती छीनकर अपनी वाजारोमें सबसे अधिक दाम देनेवालोके हाथ वेंच देते हो। या हम जो कहते है—ये अभागे लोग मुक्त कर दिये जाय। इन्हें इनके देश और परिवारमें भेजनेकी कोशिश करते है।"

शेक्सपियर कुछ सफलताके साथ विदा हुआ। ४२० रूसी वदियोको मुक्त करा पुराने उरगजसे रवाना हो वहा समुद्र तटपर पहुचा, फिर वहामे नाव पकडकर अस्त्राखान, आगे राजधानी पीतरबुर्ग-में गया। जारने उसकी सेवाओके लिये वहुत सम्मान करते, उसे रूसी 'सर'की उपाधि प्रदान की।

जुलाई १८४० ई०मे अल्लाकुल्लीने समझ लिया, कि रूसियोके साथ झगडा मोल लेना अच्छा नही है। उसने घोषणा करके रूसी दासोंके व्यापारको वद कर दिया, और रूसके राज्यमें लूटपाट मचानेकी मनाही कर दी। लेकिन इसी समय ईरानी गुलामोको छोडनेके लिये जोर देनेसे झगडा

बढनेकी सम्भावना देख ईरानी शाहने अग्रेज कप्तान कोनोलीको खीवा भेजा। खानने ईरानी गुलामोको छोडनेसे इन्कार कर दिया। कोनोली खीवामें चार महीना रहा। इसी समय हिरातके राज्यपाल यार मुहम्मदने मेजर टाडके षड्यत्रोंसे परेशान होकर उसे हिरातसे निकाल दिया, और खीवाको भी लिखा, कि अग्रेज गुप्तचरको अपने पास न रक्खें। किन्तु खानने यार मुहम्मदकी बात न मान कोनोलीको खलअत दी, और उससे कहा—खीवाको अपना देश समझिये और इस महलको अपना घर। लेकिन याकूव मेहतरने कोनोलीको पसद नही किया। धीरे-धीरे उसने खानपर प्रभाव डाला, और अन्तमें कोनोलीको उसने कहा—"तुम हमारे रास्तेमे बाधक हो। अगर तुम यहासे विदा हो जाओ, तो मुझे इसके लिये दु ख नही होगा।" खीवामे असफल हो कोनोली खोकन्दपर अग्रेजोका डोरा डालने गया, जहासे बुखारा जानेपर उसने अपने प्राण गवाये, यह हम बतला चुके है।

रूस भी मध्य-एसियाके खानको हर तरहसे अपनी ओर करनेकी कोशिश करता रहा। १८४० ई०में लेफ्टिनेंट आइतोफ मध्य-एसियाकी यात्रासे पीतरबुर्ग लौटा, फिर कप्तान निकिफोरोफ १८४२ ई०मे खीवा भजा गया, जिसने रूस और खीवाके बीच पहली सधि करवानेमें सफलता पाई। अभी वह खीवा हीमें था, जब कि अल्लाकुल मर गया।

४ रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र (१८४२-४५ ई०)

रहीमकुलके गद्दीपर बैठते ही जमशेदियोने विद्रोह कर दिया। जमशेदी ईरानी कबीला था, जो मुरगाबनदीके बायें तटपर रहते थे। उनमेंसे दस हजारको जबर्दस्ती ले जाकर ख्वारेज्मके इलाकेमें वक्षुतटपर किलिजबेके पास बसा दिया गया था। जमशेदियोंके विद्रोहसे प्रोत्साहित होकर मेर्वके पास डेरा रखनेवाले सारिक तुर्कमान भी बिगड उठे। रहीम खानने अपने छोटे भाई मुहम्मद अमीनको पद्रह हजार सेनाके साथ तुर्कमानोको दबानेके लिए भेजा, लेकिन रेगिस्तानमें उसको बहुत क्षति उठानी पडी। उधर अमीर-बुखाराने हजारास्पका मुहासिरा कर रक्खा था। खानके भाईने अमीरकी सेनापर टूटकर उसे हराके सधि की। तीन साल शासन करनेके बाद रहीमकुल मर गया।

५ अमीन, अल्लाकुल-पुत्र (१८४५-५५ ई०)

रहीमके मरनेके बाद उसका भाई गद्दीपर बैठा, जो कि वाम्बेरीके अनुसार आधुनिक कालके ख्वारेज्मके खानोंमें सबसे बडा था। अमीनने तख्तपर बैठते ही सारिकोको सर करनेके लिये अभियान किया, लेकिन वह छ चढाइयोंके बाद काबूमें आये। मेर्वके किले तथा पासके योलोतेन किलेको भी उसने ले लिया। उसके लौटनेपर सारिकोने खान द्वारा नियुक्त राज्यपाल और छावनीकी सेनाको मार डाला। लडाई फिर शुरू हो गई। अबकी बार सारिकोंके पुराने दुश्मन जमशेदी और उनका नेता पीर मुहम्मद भी अमीनके साथ थे। विजय करनेके बाद अमीनने बडी तडक-भडकके साथ खीवामें प्रवेश किया। उसने तेक्कोंके विद्रोहको भी दबानेमें सफलता पाई। निम्न सिर-उपत्यकामें कजाक डेरा डाले रहते थे, वह खोकन्दकी प्रजा थे। उनके लिये खोकन्दमे खीवाका झगडा हो गया। १८४६ ई०म खीवाने सीमातपर खोजा नियाज बी किला बनवाया। लेकिन कजाकोको खोकन्दका खान ही नही बल्कि रूसी भी अपनी प्रजा मानते थे, इसलिये दश्ते-कजाक पूरी तौरसे अपने हाथमें करनेके लिये १८४७ ई०में रूसियोंन दश्तमें कितने ही किले बनाये। इसी साल अराल समुद्रपर राइम्स्क या अरालस्क नामक रूसी किला बना। खीवावाले कजाकोंको दबाना चाहते थे। उनके दो हजार सैनिकोने आक्रमण करके हजारसे अधिक कजाक-परिवारोको पकड लिया, जिसके लिये रूसियोने आक्रमणकर कजाकोको छुडा खीवा-वालोंको दड दिया। १८४८ ई०मे इस इलाकेमें कई बार लूट-मार होती रही। निम्न-सिरमें अब खोकन्द, खीवा और रूस तीनोका झगडा चल रहा था। १८५३ ई०में जेनरल पेरोव्स्कीने आक्रमण करके निम्न-सिरपर बनाये गये खोकन्दियोंके किलोको तोड दिया।

दक्षिणमें तुर्कमान-भूमि अभी भी खीवाके लिये काटा बनी हुई थी। १८५५ ई०में अमीनने सरख्सके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन उधर ईरानी शाह भी निर्बल नही था। मशहदके राज्यपाल फरीदून मिर्जाने हमला किया। हारकर अमीन लौट रहा था, इसी समय धोखेसे पकड लिया गया। उसके साथके दो सौ ख्वारेज्मियोंमेंसे कितने ही मारे गये और कितने ही भग गये। खानको वहीं काट

दिया गया, और उसके तथा २६९ दूसरे मुडोको शाहके पास तेहरान भेज दिया गया। इन सिरोके ऊपर पहले एक रौजा बनाया गया, लेकिन इमामजादाकी सतान होनेसे वहा पूजा चल निकली, जिसके डरके मारे ईरानियोने उसे तोड दिया। हम देख चुके है, कि अमीन और उसका वश सैयद-जादियोकी सतान था।

६ अबदुल्ला, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

ईरानियोके सामने भागकर लौटी सेनाने खाली गद्दीपर कुतुलुक मुरादके पौत्र तथा इबादुल्लाके पुत्र अब्दुल्लाको बैठाया। गद्दीके लिये आपसमे झगडा हो गया। इस गडबडीसे फायदा उठा पद्रह हजार यामूद तुर्कमानोने आक्रमण कर दिया। खान मुकाबिलेके लिये सेना लेकर गया। किजिलतेकेरमे लडाई हुई। खीवावाले बुरी तरहसे पिटे और उनका खान अबदुल्ला मारा गया।

७ कुतुलुक मुराद, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

मृत खानकी जगहपर उसका १८ वर्षका भाई २० जिल्हिजा १२७१ हि० (३ सितम्बर १८५५ ई०)को गद्दीपर बैठाया गया, जो हालके युद्धमें घायल हुआ था। यामूदोका विद्रोह चल रहा था। सारे राज्यमे अशाति फैली हुई थी। इसी समय उत्तरके कराकल्पकोने यारलिक तुराको अपना खान बनाकर विद्रोह कर दिया। कुतुलुकने सारे तुर्कमानोको मार डालनेका हुक्म दिया, लेकिन यामूदोका समर्थक नियाज बी मौजूद था, जिसने मुजरा करनेका बहाना करके महलमें जा खान और उसके सात वजीरोको मार डाला। मेहतरने किलेकी दीवारसे खबर दी, जिसपर तुर्कमानोका भी कत्लेआम शुरू हुआ, और बहुत कम तुर्कमान उज्बेकोकी तलवारसे बच पाये। खीवाकी सडकोपर इतनी लाशें पडी थी, कि उन्हें हटानेमें छ दिन लगे।

अमीन खानके बाद बहुत जल्दी-जल्दी दो खान हो गये। इस सारे समयमे खीवा राज्यमे विद्रोह और अशाति फैली हुई थी। यामूद, तुर्कमानोका सबसे शक्तिशाली कबीला था, जो खीवाके खान-वशके साथ सर्वस्वकी बाजी लगाकर लड रहा था। १८५५-५६ ई०में उत्तरके कराकल्पकोने भी विद्रोह कर दिया था। यामूदोने दक्षिणमे और कराकल्पकोने उत्तरमें खानके विरुद्ध बगावत करके उसकी स्थितिको बहुत खतरनाक बना दिया था। लेकिन, १२ दिसम्बर १८५५ ई० (८ रवि १२७२ हि०)को खीवावाले कराकल्पकोको हराकर बहुतसे लूटके मालके साथ राजधानी लौटे, जिसमे बहुतसे स्त्री-बच्चे भी थे।

८ सैयद मुहम्मद, रहीम-पुत्र (१८५५-६५ई०)

कुतुलुकके मरनेपर रहीमखानके बडे पुत्र सैयद महमूदको गद्दी दी गई, लेकिन अशात खीवाके इस तीसरे खानको भी अफीमची होनेके कारण गद्दीसे हटना पडा, और उसके छोटे भाई सैयद मुहम्मदने तीस वर्षकी अवस्थामें गद्दी सम्हाली। यामूद तुर्कमानो और कराकल्पकोके विद्रोह अब भी चल रहे थे। कराकल्पक यारलिकके साथ कुहना-उरगज (प्राचीन उरगज)पर चढ़े। मुहम्मद खानने उन्हें हरा-कर उनके उम्मीदवार यारलिकको मार डाला। अब कराकल्पकोका एक कबीला बुखाराकी प्रजा बन गया। गृहयुद्धने भयकर रूप लिया था—गाव उजाड दिये गये, कस्बो और नगरोका सत्यानाश हो गया। एक ओर यामूद और उज्बेक आपसमें कट-मर रहे थे, दूसरी ओर मुरगाबसे बढते जमशेदियोने किल्सूसे फितनियेक तकके इलाकेको लूटा। लूटके मालके साथ वह दो हजार ईरानी गुलामोको भी छुडाकर ले गये। सीमाती किलेके राज्यपाल खोजा नियाजकी जगह उसका पुत्र इरजान बनाया गया था। वह १८५६ ई०में अपनी छावनीके ४० सिपाहियोके साथ खीवा गया। कजाकोने अफसरोको मार भगाया, और भयकर अत्याचार करते हुये खीवाकी बहुत-सी सम्पत्ति लूट ली। कजाकोने खीवाके भीतर ही लूटसे सतोष नही किया, बल्कि उन्होने रूसी सीमातके भीतर भी गडबडी मचाई। निम्न-सिर-उपत्यका-में खोकन्दी अपने किलोके लिये दावा कर रहे थे, और पिछले दस सालोमें उन्होंने आक्रमण करके उनपर दो बार अधिकार भी कर लिया था। पिछली बार अकमस्जिदके राज्यपालने भारी सन्यामें

पशु देकर खीवियोको विदा किया। तीनो शक्तियोका सघर्ष निम्न-सिर भूमिके लिये चल रहा था। अब निम्न-सिरके खोकन्दी इलाकेपर रूसियोका दृढ अधिकार हो गया। खोकन्दियोने अपने किलोको लौटानेके लिये कहा। इन्कार करनेपर उन्होने सैनिक टुकडी भेजी, लेकिन वहा ईंधन-पानी आदिकी बडी कठिनाई थी, इसलिये किलोको तोड-फोडकर खोकदी सेना लौट गई।

खीवा राज्यमे भारी गडबडी मची हुई थी, जिसके कारण वहा अकाल पड गया फिर १८५७ ई०में हैजा भी फैल गया। इसी साल खानने अपने राज्यारोहणकी खबर देते, जार निकोलाइ I की मृत्युके लिये शोक-प्रकाशन करने तथा जार अलेक्सान्द्रके गद्दीपर बैठनेके समय बधाई देने के लिये शेखुल-इस्लाम फाजिल खोजाको दूत बना पीतरबुर्ग भेजा।

मई १८५८ ई०मे जेनरल इग्नातियेफने भी एक दूतमडल खीवा भेजा, जो ईलक येम्बा और अराल तटसे ऐबुगिरकी खाडी, उर्गा अन्तरीप तथा करालियोकी पुरानी राजधानी कुग्रद होते फिर नावमे दस मील प्रति दिनकी चालसे चलते खीवाकी राजधानीकी ओर बढा। गावो और शहरके लोग रूसियोके आनेकी खबर सुनकर बडे भयभीत थे। रूसियोने देखा, कि वक्षु नदीके दोनो तरफके गाव और शहर उजडे पडे है। कराकल्पकोके औलो (डेरो)में सिर्फ बूढे-बच्चे रह गये हैं, बाकियोको पकडकर खीवा या ईरानी सीमापर ले जाकर बेंच डाला गया था। कराकल्पकोसे किपचको और खोजे-इली कबीलोकी हालत बेहतर नही थी। रूसी दूतमडल जब नवीन उरगजमें पहुचा, जो कि खीवाका दूसरा सबसे बडा शहर था, तो एक वजीरने आकर स्वागत किया। दूतमडलको शहरसे बाहर एक बागमे ठहराया गया। पहले मेहतरने स्वागत किया, राजमहलमें मेहतरके लिये अपना एक खास निवास स्थान था। रूसी खानके पास पहुचाये गये। खान एक ऊची गद्दी पर बैठा था। उसके सामने छुरा और पिस्तौल रक्खा था और पीछेकी ओर राजकीय झडा फहरा रहा था। प्रधान-सेनापति (कुश-बेगी), वित्तमत्री (मेहतर) और दीवानबेगी (प्रधान वजीर) खानके सामने बैठे हुये थे, और महा-प्रतिहार द्वारपर खडा था।

रूसी दूतमडलने खीवाकी हालतका अच्छी तरह अध्ययन किया, और समझा-बुझाकर खानको अपनी ओर करनेकी कोशिश की।

उस समय खीवाके अपने सिक्के चल रहे थे। दो तरहके सोनेके सिक्के (तिला) थे, जिनमें मे एकका मूल्य अग्रेजी गिन्नीसे थोडा कम और दूसरा उससे आधा था। चादीके सिक्केको 'तगा' कहा जाता था, जो अठन्नीके बराबर था। उसमे आधेसे कमका चादीका सिक्का 'शाही' था। ताबेके सिक्केको पूल या करापुल कहते थे, जो एक तकेमे अडतालीस होता था।

रूसी मिशनके खीवासे विदा होते ही कराकल्पको और कुग्रदोने तुर्कमान-सरदार अतामुरादके साथ मेल कर कुतुलुक मुरादको उसके कितने ही आदमियोके साथ मार डाला।

मुहम्मद खानके समयमे ही १८६३ ई०में पर्यटक वाम्बेरी कितने ही हाजियोंके साथ खीवा पहुचा था। उस समय चन्दोर तुर्कमान खुला विद्रोह किये हुये थे। उसने खीवाको बहुत सुदर नगर पाया। शहरके दरवाजेपर जय घोष करते तथा हाजियोके दामनको चूमते, सूखे मेवे और रोटीकी भेंटके साथ लोगोने स्वागत किया। लेकिन कारवासरायमें टिकानेके बाद बडे रूखेपनसे उनकी तलाशी ली गई। समझते थे, कि ये फिरगियो (अग्रेजो) या उरुसो (रूसियो)के जनसीज (गुप्तचर)है। वाम्बेरी यद्यपि एसियाई पोशाकमें हाजी बना हुआ था, लेकिन उसकी युरोपीय शकल-सूरत छिप नही सकती थी। तत्कालीन खानका दूत शुकरुल्ला बी कान्स्तन्तिनोपलमें इस्लामके खलीफाके दरबारमे हो आया था। वाम्बेरी उससे मिला। तुर्की भाषापर अधि-कार होनेके कारण वाम्बेरीको इस्ताम्बूलके आफन्दी (मुल्ला) बन जानेमे सफलता मिली। उसने बतलाया, कि अपने पीर (गुरु)के हुक्मसे मैं बुखारा-शरीफकी तीर्थयात्राके लिये जा रहा हू। शुकरुल्ला बीने विश्वास करके उसका स्वागत किया। उसने कान्स्तन्तिनोपलके अपने परिचितोंके बारेमे पूछा, जिसका जवाब वाम्बेरीने सतोषजनक दिया। दूसरे दिन खानके बुलानेपर शुकरुल्ला बी वाम्बेरीको साथ लिये दरबारमें गया। वाम्बेरीने वहा सब उमर और सब तरहके बहुतसे आदमियोकी भीड देखी, जो कि खानके सामने अपना आवेदनपत्र

देनेके लिये आये थे। भीड़ ने जब सुना, कि एक बडा दर्वेश (साधु) हमारे खानको दुआ देने आया है, तो उसने वाम्बेरीके लिये रास्ता दे दिया। मेहतरसे बातचीत करनेसे पहले उसने फातेहा पढा। वहाके दरबारी श्रोताओने 'आमीन' कहकर अपनी दाढियोपर हाथ फेरा। फिर वाम्बेरीने सुल्तानकी मुहर लगे अपने छपे हुये पासपोर्टको पेश किया। मेहतरने इस्लामके खलीफाके प्रति सम्मान दिखलाते हुये मुहरको चूमकर अपने सिरसे लगाया, और उठकर उसे खानके हाथमे दिया। लौटकर फिर वह दर्वेशको दरबार हालमे ले गया। खान ऊची मखमलकी गद्दीपर रेशमी मसनदके सहारे बैठा था। उसके हाथमे एक छोटा-सा सोनेका राजचिन्ह था। वाम्बेरीने उसकी शकलको बिलकुल निस्तेज और सब तरहसे एक बर्बर अत्याचारी खूसट-जैसी बतलाया है। दर्वेशने सलाम करनेके लिये अपना हाथ उठाया, जिसका जवाब वैसा ही करके खान और उसके दरबारियोने भी दिया। इसके बाद दर्वेशने कुरानके एक छोटे सूरा (अध्याय)का पाठ किया, और 'अल्लाहुम्मा रब्बेना' कहते अन्तमे जोर-की आवाजमें आमीन कहते हुये पाठको समाप्त किया। इसपर चारो ओर 'आमीन' कह-कर लोग अपनी-अपनी दाढियोपर हाथ फेरने लगे। अमीन खान अपनी दाढीपर हाथ फेर ही रहा था, कि प्रत्येक दरबारीने 'कबूल बोलगुय' (तुम्हारी दुआ स्वीकृत हो)की आवाज लगाई। खानने वाम्बेरीसे यात्राके कुशल-मगलके बारेमें पूछा। दर्वेशने अपना नाम जमाल बतलाया। हजरत जमालको देखकर सब लोग अपनेको कृतकृत्य समझ रहे थे। खानने उसके साथ मुसाफा (हाथ मिलाने)के द्वारा अपनेको धन्य-धन्य समझा। दर्वेशके लिये लोगोने एक सौ सत्तर साल जीनेकी कामना प्रकट की। वाम्बेरीने खानसे खीवाके सुन्नी सतोकी दरगाहोकी जियारत करके जल्दी बुखारा शरीफ जानेकी इजाजत मागी। खानने पैसा देना चाहा, तो दर्वेशने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, किन्तु तीर्थयात्राके लिये सफेद गदहा लेना स्वीकार किया। रास्तेमें भीडके स्वागत-घोषके साथ वाम्बेरी अपने डेरेपर लौटा। उसने अपनी यात्रामें साथी दर्वेशके बारेमें लिखा है—"उनमेंसे हरएकने सेर-सेर भर चावल, दुम्बेकी पूछकी आध सेर चर्बीके अतिरिक्त रोटिया, मूली, गाजर चट किये और पद्रहसे बीस बडे-बडे शोरवाके प्यालोको गलेके नीचे उतारा। प्यालोमें हरी चाय डाली जा रही थी।" वाम्बेरीके पास जिज्ञा-सुओकी भीड लगी रहती थी। लोग इस्लामकी राजधानी इस्ताम्बुल (कान्स्तन्तिनोपल)के सतोके बारेमें जानना चाहते थे। कभी-कभी लोग बीमारीसे छूटनेके लिये झाडफूक करानेके लिये भी आते थे। वाम्बेरीने अपनी आखो देखा—खानसे इनाम पानेके लिये बहादुर लोग कटे हुये सिरोको बोरोमें भरे ले आते थे, जो कभी-कभी आलुओकी तरह रास्तेमे गिर पडते थे। हरएक आदमीको मुडोकी सख्याके अनुसार इनाम मिलता था। खीवा छोडनेसे पहले एक बार फिर वाम्बेरीने जाकर खानको आशीर्वाद दिया।

(मुहम्मद फना, तूरासूफी-भतीजा, १८६५ ई०)

मुहम्मद खानको मारकर विद्रोहियोने मृत तूरासूफीके भतीजे मुहम्मद फनाको गद्दीपर बैठाया। लेकिन अरालियोकी यह सफलता देरतक नही चली। फनाको रूसियोका समर्थन प्राप्त होनेपर भी साल भर हीमे मार डाला गया, और अरालियोको खीवाकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पडा। फनाने ख्वारेज्मका खान बनकर अपना सिक्का चलाया था।

९ सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र (१८६५ ई०)

गद्दीपर बैठते समय सैयद मुहम्मद बीस सालका तरुण था। उसे शासनसे भी ज्यादा बाघके शिकारका शौक था। पैतृक सिहासनके साथ-साथ उसे लूटमारसे बाजार गर्मवाला राज्य मिला था, और ऊपरसे रूस-जैसी शक्ति सिरपर पहुच गई थी। १८६७ ई०मे कॉफमान तुर्किस्तानका राज्यपाल बनकर आया। उसने आते ही अपनी नियुक्तिकी सूचना देते हुये खानको लिखा—सिर-दरियाके पार लुटेरे हमारी भूमिमें बडी गडबडी मचा रहे हैं, इनलिये उनके विरुद्ध हम

अपनी सेना भेजनेका अधिकार रखते हैं। खानने जवाब दिया—सिर-दरियाके दोनो तट हमारे हैं। लेकिन जबानी दावेको कौन मानता है? उधर रूसी-प्रजा घुमन्तू कजाक जाडोमें बहुत भारी मत्स्यामें सिरके दक्षिणमें तथा कुवान और यानी-दरियामें अपने डेरे डालते थे। खानकी पर्वाह न करके रूसी सैनिक सिर पार हो डाकुओको दड देने लगे। एक ओर इधर सिरसे दक्षिणकी ओर उन्होने पैर बढाना शुरू किया, और दूसरी ओर कास्पियनके पूर्व तटपर भी रूसी अपने प्रभावको बढाते जा रहे थे। नवम्बर १८६९ ई०में एक रूसी सैनिक टुकडी क्रास्नोवोदस्कमें उतरकर वहा किला बनाने लगी। उसके बाद उन्होने दूसरा किला चिकिस्लरमें बनाया। इसी समय वोल्गाकी उपत्यका और उरालभूमिमें दोनकसाको, कल्मको तथा कजाकोंके विद्रोह और उनका घोर दमन हो रहा था। भयके मारे लोग अपने गावोको छोडकर भाग रहे थे, जिसके कारण १८७० ई०की गर्मियोतक कोई व्यापारी कारवा नही गया। रूसी सेना जब दड देने आई, तो पता लगा कि इस विद्रोहमें खीवाके खानका हाथ था। क्रास्नोवोदस्क किला बनानेके विरुद्ध खानने कुओमें मुर्दे कुत्तोको फेककर पानीको विषैला बनाना चाहा था। खीवावाले जानते थे, कि उनकी इस कार्रवाईका जवाब रूसी किस तरह देंगे, इसलिये राजधानी खीवाकी किलाबन्दी कर प्राकारपर बीस तोपें लगा दी गई। खीवाने तलदिक धाराको रोककर वक्षुके प्रवाहको कई धाराओमें बदल दिया, जिसमे कि उथली हो जानेके कारण रूसी जहाज अराल समुद्रसे वक्षु दरियाके भीतर होकर आगे न बढ़ सकें।

१८७० ई०में जेनरल कॉफमानने कडा पत्र लिखकर धमकी दी, कि अगर बात ठीक-ठाक नही की गई, तो हम कडी काररवाई करनेके लिये मजबूर है। खीवाके कुशबेगी (प्रधान-सेनापति) और दीवानबेगी (वजीर)ने उत्तरमें लिखा—"जहा भी उसकी प्रजा ह, वहा रूसी सम्राट्का शासन, इसलिये यानी-दरिया अकचाक् झीलतक—जहापर कि रूसी कजाक घूमत हैं—सम्राट्का है, साथ ही बुकान पहाड, और किजिलकुमसे इकिबई तकके यानी-दरियाके ऊपरका सारा रास्ता बुखाराके साथ की गई सधिके अनुसार सदासे रूसका माना गया है।" लेकिन इस जवाबसे रूसी क्यो सतुष्ट होनेवाले थे? उन्हें तो आगे बढना था, जिसके लिये खीवावाले अपने लूटपाटकी आदतसे मौका देनेको तैयार थे। दश्त (स्तेपी)के विद्रोहको दबानेके लिये रूसियोने उस्तउर्तमें अपनी सेना भेजी, और तुर्किस्तानके बडे अभियानके लिये सैनिक तैयारी होने लगी। खीवाने रूसियोको कडा देखकर बुखाराको साथ मिलानेके लिये दूत भेजा, जिसे अमीर-बुखाराने रूसियोके इशारेपर जेलमें डाल दिया। खीवाके आदमियोको भी अमीर-बुखाराने बहुत समझाया, कि रूसी बदियोको छोड दो, लूट-मार बद करो और जेनरल कॉफमानके साथ बातचीत करनेके लिये अपने प्रतिनिधि ताशकन्द भे ो। लेकिन, तरुण खान और दरबारी अपनी अकडमे थे। उन्होने अमीर-बुखाराकी सीख नही मानी।

रूसी अभियान (१८७२ ई०)—१८७२ ई०के बसतमें कर्नल मर्कोजोफके नेतृत्वमें एक मजबूत सैनिक टुकडी कास्पियनमें गिरनेवाली वक्षुकी पुरानी धार—उज्वोइ—की जाच-पडताल करनेके लिये क्रास्नोवोदस्क बदरगाहमे रवाना हुई। वह आगे बढते हुए बल्खान पर्वतके तीन सौ वेर्स्त पूर्वमें अवस्थित ओर्तकू चश्मेपर पहुची। फिर वहासे दक्षिणकी ओर मुह करके उशामला इलाकेके सर्कस-तुर्कमानोको दड देते किजिल-अर्वत किलेपर पहुची। तुर्कमान घुमन्तुओने आक्रमण किया, लेकिन इसमे रूसी सेनाको कोई भारी नुकसान नही हुआ। इतनी जाच-पडतालके बाद रूसी पीछे लौट गये। जिस वक्त रूसी सेना कास्पियन तटसे जाकर कराकुम रेगिस्तानके एक भागपर खोज-पडताल कर रही थी, इसी समय वक्षु और सिर-दरियाके बीचवाले महान् रेगिस्तान—किजिलकुम—की भी जाच-पडताल करनेके लिये एक रूसी सेना तुर्किस्तान-शहरसे भेजी गई थी, जिसने मिंगबुलाक और बुकान पर्वतोकी सर्वे की। दोनो तरफसे रूसियोकी इस कार्रवाईको देखकर सैयद मुहम्मद घबडा उठा। उसने महाराज्यपाल काफमानकी उपेक्षा करते अपना एक दूत ओरेनबुर्गके महाराज्यपाल और दूसरा तिफलिसके महाराज्यपालके पास भेजा, साथ ही महाराजुल मिखाइलको भी लिखा—"कई रूसी अभियान मेरे देशपर चढ़ाई कर रहे है। मेरे पास ग्यारह रूसी बदी हैं, जिन्हें मैं

भेजनेके लिये तैयार है। यदि यह काररवाई रोकी न गई, तो मैं न वंदियोंको भेजूंगा, न लूट-मार बंद होगी। अगर ये वंदी तुम्हारे लिये मेरे विरुद्ध युद्ध करनेका बहानामात्र हैं, और तुम अपने राज्यको बढानेपर तुले हुए हो, तो अल्लाहकी जो मर्जी होगी, वही होगा।" खीवाके दूतोंको बंद करके रूसी राज्यपालोंने कहा, कि हम कोई चिट्ठी नहीं लेंगे, जबतक कि रूसी वंदी नहीं छोड़े जाते, और दूतको ताशकन्दके महाराज्यपालके पास नहीं भेजा जाता। रूसियोंसे इस प्रकार निराश होनेके बाद खीवाके खानने अंग्रेजोंकी ओर हाथ बढाया और अपने एक प्रतिनिधिको भारतके उप-राज नार्थबुकके पास भेजकर रूसके विरुद्ध सैनिक सहायता मांगी। लेकिन अंग्रेज क्या भांग खाये हुए थे, कि खीवाकी रक्षाके लिये एक महायुद्ध सिरपर लाते। उपराज (वाइसराय)का जवाब था—"रूसके साथ शांति करो, उनकी मांगोंको पूरा करो, और उन्हें नाराज होनेका मौका मत दो।"

यद्यपि इस प्रकार खीवाका कोई धनी-धोरी नहीं था, और केवल अपने बलपर वह रूसियोंका मुकाबिला नहीं कर सकता था, लेकिन खीवा (ख्वारेज्म) इतिहासके आरम्भिक कालसे ही अपने पडोसके दो महान् रेगिस्तानों किजिलकुम और कराकुम, तथा निर्जन अधित्यका उस्तउर्त एवं उत्तर-के जनशून्य दश्त-किपचकके कारण बडे-बडे विजेताओंके मनोरथको अनेक बार भंग करता आया था। अभी भी रूसके लिये अभियान भेजनेमें सबसे कठिनाई इन्हीं रेगिस्तानों और निर्जन भूमियोंके कारण थी। वस्तुतः ख्वारेज्म एक विशाल रेगिस्तानसे घिरी हुई हरितावली है। ताशकन्द-से ६०० मील, ओरेनबुर्गसे ९३० मील और क्रास्नोवोद्स्कमे ५०० मीलकी यात्रा तै करके खीवा कैसे पहुंचा जाय, रूसियोंके लिये यह सबसे बडी कठिनाई थी। यद्यपि अरालमें रूसियोंने अपने जहाज तैरा दिये थे, लेकिन उनका बेडा काफी शक्तिशाली नहीं था, और वक्षुकी धार भी उथली थी, जिसमें जहाज नहीं चलाया जा सकता था। लेकिन खीवाको दंड देना आवश्यक था। रूसियोंने तीन सेना-स्तम्भ भेजनेका निश्चय किया—(१) प्रधान स्तम्भ तुर्किस्तान शहरसे जेनरल कॉफमानके संचालनमें अपने साथ ३४२० पैदल, ११५० सवार, ६७७ तोपची, बीस तोपें, दो हलकी तोपें, आठ राकेट लिये भेजा गया। इसके दो विभाग थे, जिनमेंसे एक विभागका संचालक जनरल गोलोवात्शोफ जीजकसे चला, और दूसरा विभाग कर्नल गोलोफके नेतृत्वमें कजालिन्स्कसे रवाना हुआ। रसद ढोनेके लिये आठ हजार ऊंट—ऊंटके मालिकों कजाकोंको एक ऊंटके मरनेपर पचास रूबल देना तै हुआ था, चार स्टीमर भी और इसी सेनाकी सहायता करनेके लिये लकडीके बेडोंके साथ वक्षुके ऊपरकी ओर बढ रहे थे।

(२) दूसरा सेना-स्तम्भ कसाक जेनरल आतमन वेरेफ्किनके अधीन ओरेनबुर्ग रवाना हुआ, जो यम्बा पहुंचकर अराल समुद्रके पश्चिमी तटपर गया। इस स्तम्भमें ३४६१ सैनिक, १७९९ घोडे, और सात तोपें थीं।

(३) तृतीय सेना-स्तम्भके तीन विभाग थे, जिसमेंसे एक विभागको कर्नल लोमाकिनके नेतृत्व में मंगिशलकमें बीशअक्ति, इल्तेइजे, तबिनम्रू होते अइबुगिरकी खाडीमें पहुंच ओरेनबुर्गवाले स्तम्भसे मिलना था। बाकी दो विभागोंके दो हजार सैनिक कर्नल मार्कोजोफके संचालनमें क्रास्नो-वोद्स्क और चिकिस्लरसे रवाना हुए थे।

कजालिन्स्कवाला स्तम्भ पहले रवाना हुआ, जो बारह दिनमें यानी-दरियापर अवस्थित इर्किबइमें पहुंचा। रास्तेमें इसके कुछ ऊंटोंको नुकसान हुआ। वहांपर यह सेना व्लागोवेश्चेन्स्क किलेको बना फिर तीन दिन चलकर किजिलकाकमें पहुंची। मौसम खराब हो गया, दोपहरको सूर्यने बरफ-को गला दिया, जिससे ऊंटोंके लिये चलना मुश्किल हो गया। इस वनस्पतिहीन निर्जन भूमिमें ईंधन-का कहीं पता नहीं था। इस मुसीबतमें दो दिन और दक्षिणकी ओर बढनेपर सेना बुकन्दकी पहाडियों-में जा, आगे युसकुदुक कोकपताश, कोपकन्ताश और मिंगबुलाक होते तम्दी जा पहुंची।

जीजकसे चला प्रधान सेनाग उचमा, फरिश, सिन्ताब, तिमुरकबुक, बल्तासऊदिर चश्मा हो बुखारा सीमापर कराताउ पर्वतश्रेणीकी ओरसे नूरताउ पहाडीके उत्तरमें प्रदक्षिणा करते आगे बढा। सर्दी बहुत तेज थी, जिससे इस सेनाके भी कितने ही ऊंट रास्तेमें मर गये। पानीकी कमीके कारण तेमूरबेकसे जीजकवाली सेनाको दो भागोंमें बांटकर आगे बढनेके लिये हुक्म हुआ, इनमेंसे एक भाग विशचगन, यानीकसगन और किदेरीके चश्मोंसे होते आगे बढा, और दूसरे भागने कोशबैगी,

वैमनतती, मस्ची और अरिस्तन्वेल कुदुकका रास्ता लिया। १२ अप्रैलको कुदुकमें दोनो सेनायें मिल गयी। खानने घवडाकर इक्कीस रूसी गुलामोके साथ पत्र लिखकर कजाला भेजा, लेकिन अव तो 'चिडिया चुग गई खेत' वाली वात थी। इतने खर्च और परिश्रमके साथ भेजा गया महाभियान वातो-वातोंसे कैसे लौट सकता था? रूसी गुलामोंसे पता लगा, कि उनसे वगीचेमें काम लिया जाता और ईरानी गुलामो-जैसा वर्ताव किया जाता था। खानेके लिये उन्हे फल-चावल और कभी-कभी गोश्त और चर्वी भी मिल जाती थी। मिंगवुलाक और गूरखानासे अच्छा और छोटा समझ मेनाने खलता और उच्उचकका रास्ता पकडा। लेकिन आगे अरिस्तान-वेलकुदुकमें एक पखवारा रुकना पडा। यहीं रूसियोंने ईस्टरके त्योहारको मनाया। किजिलकुमके कजाकोंने ८०० नये ऊट दिये, फिर रवाना होकर ६ मईको सेना खलता पहुची। यही कजालासे आनेवाली सेना भी मिल गई। रास्तेमे टूटे-फूटे वुखारी किलोकी मरम्मत करके उसका नाम सत-जार्ज किला रक्खा गया।

खलता और आमूके वीच ८० मीलका फासला था, लेकिन रास्ता अच्छा नही था। १२० मील-तक फैली हुई हवाके झोकेपर इवरसे उवर चलनेवाली वालू मवसे कडी समस्या थी, और पानी भी केवल आदमक्रिलगन (मनुष्यमार) कूओका था, जो खलतासे २४ मीलपर थे। चारो ओर रेगिस्तान-ही-रेगिस्तान था, जिसमें कही वनस्पतिका नाम नही था—लाल रग-जैसी वालू थी, जिसके कारण इस रेगिस्तानका नाम किजिलकुम (लाल वालू) पडा। रास्तेमें एकाध ही सो भी वुरे कुए थ, जिनसे सेना और उसके पशुओका काम नही चल सकता था। पौने सात घटेके कूचके वाद प्रत्येकको आमू-दरियाके ऊपर उच्उचकमें भेजनेका निश्चय किया गया। लेकिन वालूमें चलना भारी परिश्रमका काम था। ऊपरसे असह्य धूप पड रही थी, इसलिये हरावल सेना १३ मीलसे आगे नही वढ सकी, और उसके लिये आदमक्रिलगनसे मीठा पानी भेजना पडा। एक रूसी लेखकके अनुसार "अवस्था वहुत भयकर हो गई। आगे वढना असम्भव मालूम होता था, और पीछे लौटना भारी शरमकी वात होती। आदमक्रिलगनमें पानी थोडा था, और मशकोमें भरकर साथ लाया पानी खतम हो चुका था।" अन्तमें सुरक्षाकी एकमात्र आशा वह चिथडाधारी किर्गिज दिखलाई पडा जो कि ईकिवइसे कजालाकी वाहिनीके साथ हो लिया था, और जिसके महत्त्व और गुणका पता जनरल निकोलस और कर्नल ग्रेश्चेर्नने पहलेपहल लगाया। किर्गिजने वतलाया, कि रास्तेसे कुछ ही मील दाहिने अल्तीकुदुकके कुए है। जेनरल कॉफमानने अपनी जेवी पानीकी कुप्पी देकर कहा, कि यदि इसमें पानी भर लाओ, तो तुम्हे सौ रूवल इनाम दिया जायगा। किर्गिजने वैसा कर दिखलाया, और सेनाकी एक टुकडी अल्तीकुदुक भेजी गई। कुओकी सख्या कम थी, वह वहुत गहरे नही थे, लेकिन उनमे काफी पानी था। पानी निकालकर घोडो और ऊटोको पिलाया गया, सेनाने भी प्यास वुझाई, फिर कई दिनोतक यहा डेरा डाल दिया गया, और छोटी-छोटी टुकडियोमें दो की जगह ग्यारह दिनमें कॉफमानकी वाहिनी २३ मईको वक्षु (आमू-दरिया)के तटपर पहुची। यात्राकी भीषणताका पता इसीसे लगेगा, कि दस हजार ऊटोमें सिर्फ वारह सौ वच रहे। खलतासे आगे सारे रास्तेमें रसदकी चीजें, अफसरोके असवाव, और गोलावारूदका सामान विखरा हुआ था। कई जगहोपर युद्ध-सामग्रीको इस आशासे वालूके नीचे दवा दिया गया था, कि अव-श्यकता पडनेपर सैनिकोको लानेके लिये भेज दिया जायगा। कुछ सप्ताह वाद एक रूसी अफसर इस रास्ते गुजरा, जिसने इसके वारेमें लिखा था—"सारे रास्ते भर ऊटो और घोडोकी ककाल तथा सडते हुए शरीर फैले थे। दुर्गन्धसे नाक फटी जाती थी। पडे हुये सामानोके देखनेसे मालूम होता था कि कोई वाजार लगी हुई है।"

खीवावालोंने भी लडनेकी तैयारी की थी, और जवर्दस्ती लोगोकी भर्ती करके सैनिकोकी सख्या वढाई थी। इन सेनाका एक भाग कुग्रादकी ओर उर्गा खाडीके पास यानीकलामें गया, जिसका काम था, उस्तउर्तसे आनेवाली रूसी सेनाका प्रतिरोध करना। छ-सात हजार सैनिक अरालके पूर्वी तटसे आनेवाली सेनाके मुकाविलेके लिये दौकरामे थे। खीवावालोंने इन्ही दो जगहोंसे खतरेकी सम्भावना समझी थी। जेनरल कॉफमानके आ जानेकी खवर पा ३५०० तुर्कमानो और कजाकोको उच्उचकमें भेजा गया, जिनमेंसे पद्रह सौका कमाडर दीवानवेगी मुहम्मद नियाज था, और दो हजारका

दीवानवेगी मुहम्मद वुराद। यह सेनाये उच्उचकसे पूर्वमें सरदावाकुल(झील)के परे जाकर जम गयी, लेकिन पहली ही झडपमे थोडेसे गोले-गोलियोकी बौछारसे इनके पैर उखड़ गये। शूरखानसे वक्षुके दाहिने तटसे रूसी सेना चली, और चौथे दिन अककामिश पहुची। वक्षुपार शेखआरिक किलापर थोडेसे गोलोके छोडनेकी जरूरत पडी, और शत्रु वहासे भी भाग गया। नदी उथली थी, केवल छाती भर पानी था। कितने लोग पैदल ही नदीमे घुसकर पार हो गये, और कुछने दुश्मनसे पकडी नावोसे या साथ लाये वेडेको वाधकर परले पार जा खीवावालोके डेरेपर अधिकार कर लिया। वहा उन्हे चावल और नमक भर मिल पाया। रूसियोके केवल दो घोडे मारे गये, जिन्हे भूखे सिपाहियोने तुरन्त पकाकर खा लिया।

२८ मईको शूरखानाके आदमियोके एक प्रतिनिधि-मडलने रूसी सेनापतिसे मिलकर तुर्कमानो और खीवावालोंके अत्याचारकी शिकायत की। व्यवस्था कायम करनेके लिये कसाक सैनिकोकी एक टुकड़ी भेजी गई, जो वहा चार दिनतक रही। रूसियोने अभयदानकी घोषणा करके निवासियोमे ऐसा विश्वास पैदा कर दिया, कि लोग सेनाके खानेके लिए ढोर, अगूर आदि फल, तथा जानवरोंके लिये चारा लाने लगे।

आगे शेखआरिकमे थोडीसी झडप हुई। यहीपर खानका पत्र मिला, जिसमे कहा गया था, कि मै जेनरलकी आज्ञा-पालन करनेके लिए तैयार हू। लेकिन जेनरल कॉफमानने कहा, कि अव वात खीवामे ही होगी। ५ जूनको फिर सेना आगे रवाना हुई, और शेखआरिकसे चन्द घटा चलनेपर हजारास्प पहुच गई। यहा भी कुछ गोले छोडने पडे, और खीवावाले सैनिक भाग खडे हुये। खीवाका यह सबसे मजबूत किला था। इतिहास वतलाता है, कि हजारास्प (सहस्राश्व) ने कितने ही विश्वविजयी शत्रुओंके दात खट्टे कर कितनी ही वार ख्वारेज्मको वचाया था। लेकिन अव हम वारूदके युगमें आ गये थे, जव कि हजारास्प अपनी करामातको तीर-धनुषके युग हीमें दिखला सकता था। खीवाके छोटेसे राज्यके हाथमे शक्तिशाली आधुनिक हथियार नही थे, इसलिये वह रूसियोका कैसे मुकाविला करता? हजारास्पके किलेके तीन तरफ पानीसे भरी गहरी खाई थी, और एक तरफ तीन फैदम (३×६=१८ फुट) मोटी दीवार। यहा अवश्य कडा प्रतिरोध किया जा सकता था, लेकिन नागरिकोने सर्वनाशके डरसे किलेको समर्पण कर दिया। रूसियोने वहा कासे-पीतलकी चार अच्छी तोपें, कुछ गाडिया, गोला-वारूदके एक वडे ढेरके साथ हजार पूद (४०० मन) गेहू, ६०० पूद (२७२ मन) चावल और घोडोंके लिये ८०० पूद (३२० मन) वाजरा पाया।*

६ जूनको जेनरल कॉफमानको खवर मिली, कि ओरेनवुर्गकी वाहिनी भी आ गई। अगले दिन अमीर-बुखाराने कॉफमानके पास ववाई भेजी। ९ जूनको फिर सेना कूचकर अगले दिन यगीआरिक झीलके तटपर पहुच गई।

कर्नल मार्कोजोफको वुगदैली और ऐदिनके रास्ते उज्वोइ (कास्पियनकी ओर जानेवाली वक्षुकी सूखी धार)मे होते तोपियातान, इगदी, ओर्ताकुया, ददुरसे आनेपर जामुकशिरका ध्वस्त किला मिला, जो कि खीवासे चालीस मील पश्चिम है। यहा पहुचकर मार्कोजोफको तुर्किस्तानसे आनेवाले सेना-स्तम्भकी प्रतीक्षा करनी थी। कर्नल मार्कोजोफकी सेना करीव आधे रास्तेपर इगदी-तक सुरक्षित पहुची, और तेक्के-तुर्कमानोको हराकर उसे वहुतसा लूटका सामान मिला। लेकिन इगदी और ओर्ताकुयाके वीचमे भयकर वालुकाराशिसे मुकाविला पडा। इस दुर्गम रास्तेसे गुजरकर सवसे पहले पहुच खीवा जीतनेकी जल्दी थी, जिसका श्रेय काकेशसकी सेनाको मिला, जो कि कास्पियनके पूर्वी किनारेकी वन्दरगाहोंसे रवाना हुई थी। लेकिन वीचकी रेगिस्तानी भूमिकी भयकर धूप और जलके अभावने सेनाके वढावको रोक दिया। ओर्ताकुयामे आगेके रेगिस्तानकी भीषणताको जानकर सेनाको क्रास्नोवोद्स्क लौटनेके लिये मजबूर होना पडा। उस समय सैनिक भारी सख्यामें वीमार होकर ऊटोपर ढोये जा रहे थे, और उधर तेक्के-तुर्कमानोंने हमला शुरू कर दिया। सारे सैनिक किसी-न-किसी वीमारीमे फसे थे, जिनमें साठ तो लूसे मर गये। सेना

* २॥ पूद=१ मन

बिना हथियारके समुद्र तटपर लौटी। ऊटोको तुर्कमान लूट ले गये, और रसदका बोझा हलका करनेके लिये रेगिस्तानमे फेंक दिया गया था। काकेशसकी सेनाकी क्या दशा हुई थी, यह इसीसे मालूम होगा, कि एक स्टाफ-अफसरने अपने सारे चादीके प्लेटोंके सेटको फेक दिया था। कुछ तोपोको बालूके नीचे गाड दिया गया। बन्दूकोमेंसे कितनी ही पीछे कजाको और तुर्कमानोने लौटाई। यद्यपि यह अभियान असफल रहा, लेकिन बुखाराकी सेनापर अपनी धाक जमाकर इसने उसे खीवाकी मददके लिये जानेसे रोक दिया।

कास्पियन तटसे कर्नल लोमाकिनने उस्तउर्तके रास्ते कूच किया। यह सेना कास्पियन तटपर अवस्थित किंद्रेली किलेसे तीन भागमें बटकर आगे-पीछे २७, २८ और २९ अप्रैलको रवाना हुई। धूप और पानीकी इसे और भी तकलीफ हुई। इसका रास्ता कौनदी, सेनेकसे, विश्अक्ति, कमिस्ती, करस्त्चिक, सइकुयु, बुस्साग, कराकिन, किनिर, अल्पइमास, अकमेचेत, इल्तेइजी, बाइलियर, किजिलअगिर, बैंचगिर, मेन्दली, अलान, इलिवइ (ऐबुगिर खाडीके दक्षिण-पश्चिम)से था। बिशअक्तिमे कजाकोको आक्रमण करके पिटना पडा। अलानके पास सेना रोजुल बेकोविचके बनवाये किलेके ध्वसावशेषके पाससे गुजरी। जेनरल बेरेतिकिन ओरेनबुर्गसे अपनी सेना लेकर आ रहा था। उससे बातचीत करके ऐबुगिरसे आगे बढ कुग्राद पहुची, और चन्द घटो बाद ओरेनबुर्गकी सेना आ मिली। इस सेनाको उस्तउर्तकी चार सौ मील लम्बी रेगिस्तानी अधित्यकाको रसद-पानीकी कमीके साथ पार करना पडा, लेकिन उन्तीस दिनोमें उसने यह यात्रा पूरी कर ली।

ओरेनबुर्गकी वाहिनी ११ अप्रैलको वहासे रवाना हुई थी। ओरेनबुर्गसे अराल-समुद्र तकका रास्ता अब रूसियोकी भूमिमे होनेके कारण सुपरिचित था, इसलिए इस सेनाको अपनी यात्रा पूरी करनेमें कम तकलीफ हुई। पहले यह पूर्वकी ओर बढ़ती बरसुककी वालुकाराशितक गई, फिर वहासे मुडकर अरालके पश्चिम उर्गाकी खाडीपर पहुची। जेनरल वेरेव्किनने घोषणा निकाल दी थी, कि कराकल्पक और तुर्कमान घुमन्तू अपने-अपने डेरो और घरोमें रहे, तथा सेनाके साथ केवल रूसी कसाक शरणार्थी ही चलें। कबीलोके कितने ही सरदार रूसी सेनाके साथ आ मिले थे, जिन्होने यात्रामें बडी सहायता की। जेनरल वेरेव्किनकी सेना ऐबुगिर पार हो यानीकलाको सर और ध्वस्तकर कुग्रादमें पहुची। यहा खीवावालोकी काफी सेना थी, लेकिन रूसियोंके आते ही वह भाग खडी हुई, और शहरपर निर्विरोध अधिकार हो गया। शहरके प्राकार और घर पहले हीके सघर्पमें ध्वस्त हो चुके थे। रूसी जेनरलने खानके प्रासाद और जेसाउल मामितके घरको तुडवा दिया। शहरमे सिर्फ एक हजार पूद (४०० मन) चावल और ज्वारकी रोटिया मिली। लोग पहले ही भाग गये थे, लेकिन रूसियोंके अच्छे बर्तावकी खबर पाकर वह जल्दी ही लौट आये।

यहीपर जेनरलको रूसी बेडेके बारेमें बुरी खबर मिली। २९ अप्रैलको बेडेने सिरके मुहानेको छोड दो दिन बाद तकमकअता द्वीपके आगे ऐबुगी खाडीमे पहुच लगर डाला। कुछ दिन ठहरनेके बाद ९ मईको वह उलकुम-दरियाकी पश्चिमी शाखा किचकिन-दरियामें घुसा, और अककला नामक एक छोटेसे किलेके सामने आया। जहाजी तोपोने बमवर्षा करके किलेके भीतर रहनेवाली सेनाको भगा दिया। फिर बेडा उलकुन-दरियामें होकर ऊपरकी ओर चला। कुग्राद नगर ५० वेर्स्त (८७ फर्मख) के करीब था, किन्तु नदीमें पर्याप्त पानी नहीं था, इसलिए वहीं लगर डालना पडा। कुछ आदमी जहाजोंसे उतरकर आसपासकी भूमिके बारेमे पता लगानेके लिये भेजे गये, जिन्हे दुश्मनोने धोखेसे पकडकर मार दिया। इनकी लाशें पीछे कुग्रादमे दफनाई गयीं। अब फिर बेडा आगे चला। कुग्रादसे ३० वेर्स्त पहले ही नोजेइलीमें खीवाके चार-पाच हजार सैनिकोंके साथ मामूली झडप हुई। आगे मगितसे पहले यामूद तुर्कमानोंसे लडाई हुई। रूसी शहरपर अधिकार करके शत्रुओको पीछा करते ही रहे। एक टुकडी किताई (करागोसकी नहर)की ओर बढी, और दूसरीने कर्नल स्कोबेलेफके नेतृत्वमें किप्चिज-नियाजर्वाकी ओर पीछा किया। आगे बढनेपर गुरलान आया। यही खानकी मुख्य

सेना थी, जिसपर खीवावालोकी सारी आशाये केद्रित थी। लेकिन इस सेनाने भी रूसियोका नाममात्र ही प्रतिरोध किया। खानने जेनरल वेरेव्किनके पास चिट्ठी भेजकर तीन-चार दिनकी विराम-सधिकी बात करते हुये कहा, कि हमने जेनरल कॉफमानके पास भी इसके बारेमे निवेदन किया है। लेकिन जेनरलने अपने बढावको जारी रक्खा। कात और काशकुपिरके रास्ते वह आगे बढा। वहा कितनी ही बार दुश्मनसे झडप करते बहुत-सी नहरोको पार करना पडा। रूसियोने चौबीस घटेके भीतर किलिज नियाजवी नहरपर १८९ फुटका बेडेवाला पुल तैयार किया। ७ जूनको खीवा तीन मीलसे भी कम रह गया था। वहा खानके बागमें जेनरल बेरेव्किनने डेरा डाला। किलेसे तोपें दगने लगी। एक फटे गोलेसे जेनरलके सिरमे भारी चोट आई। रूसी तोपखानेने भी जवाब दिया। नागरिकोका प्रतिनिधिमडल रूसी सेनापतिसे मिलने आया। उसने बतलाया, कि खान भाग गया है, नगरमे बडी बदअमनी फैली हुई है। बेरेव्किनने तुरन्त गोलाबारी बन्द कर दी, तथा दूतमडलको कहा, कि जेनरल कॉफमान ही शाति दे सकते है, उन्हीके पास जाओ। साथ ही यह भी धमकी दी, कि किलेकी तोपोको बन्द करो, नही तो दो घटेके भीतर हम नगरपर गोलाबारी करने लगेंगे। दूसरे नागरिक-मडलने आकर कहा, कि तुर्कमान सैनिक हमारी बात माननेके लिये तैयार नही है। दस बजे राततक गोलबारी होती रही। उधर कॉफमानका पत्र आया, कि हम खीवासे सिर्फ १६ वेर्स्त (२·७ फर्सख) पर यगीआरिकपर है, पूर्वद्वारसे तीन मीलपर अवस्थित पुलपर आकर मिलो।

जेनरल कॉफमानने ६ जूनको ही ओरेनबुर्गकी सेनाके आनेकी खबर सुन ली थी। यगीआरिकमे उसके पास खानका चचेरा भाई ईनक इरताश अली खानका पत्र लेकर आया, जिसमे कहा गया था, कि मै जारकी प्रजा हू, यामूद मेरे हाथमें नही है, कल मै स्वय सेवामें आ रहा हू।

शहरमे सचमुच ही अराजकता फैली हुई थी। प्रतिरोध और समर्पणके लिये तैयार लोगोके दो दल हो गये थे, जिनके बीच भीषण सघर्ष हो रहा था। ईनकके लौटकर आनेसे पहले ही खान राजधानी छोडकर भाग गया था। दीवानबेगी मतमुराद प्रतिरोध-पार्टीका अगुवा था। खानका भाई अताजान तिमूर, जो सात महीनेसे बदीखानेमे पडा था, अब खान बनाया गया था। उसका चचा सैयद अमीरुल्उमरा सयुक्त शासकके तौरपर काम कर रहा था। दोनो चचा-भतीजे समर्पण-पक्षपातियोके मुखिया थे। अगले दिन सवेरे ईनक इर्तसली और दूसरे अमीरोने जेनरल कॉफमानके पास जाकर अधीनता स्वीकार की।

जेनरल बेरेव्किनने अपनी सेनाके एक बडे भागको तुर्किस्तानी सेनासे मिल जानेके लिये भेजा, बाकियोंके ऊपर किलेसे गोलाबारी होने लगी। रूसियोने भी तोपोको छोडकर उसका जवाब दिया। वह खीवाके उत्तरी दरवाजे शाहवादको तोडकर नगरके भीतर घुस गये। कर्नल स्कोबेलेफ सडकसे महलकी ओर चला। उधर जेनरल कॉफमानने हजारास्प दरवाजेपर पहुचकर विजयीके तौरपर नगरमे प्रवेश किया। उस समय नगरमे झडे-पताके फहरा रहे थे, बाजे बज रहे थे। खानके अन्त पुर (हरम) और सम्पत्तिकी रक्षाके लिये रूसियोने गारद नियुक्त कर दिया और सैनिकोने नगर-प्राकारपर अधिकार कर लिया। जेनरलके हुक्मपर लोगोंके हथियार छीने जाने लग। नगरके बडे मैदानमें रूसी सेनाने जमा होकर सम्राट्के लिये दुआ और धन्यवादकी रसम अदा की। कॉफमान खानके दरबार-हालमें पहुचा, जहा नागरिकोंके कितने ही प्रतिनिधि बधाई देनेके लिये आये। सैयद मुहम्मद खान भागकर यामूदोमे चला गया था, इसलिये रूसी जेनरलने अताजान त्युराको अस्थायी खान बनाया। उसने सैयद मुहम्मदके पास सदेश भेजा, कि मै तुम्हे खान पदपर पुन स्थापित करनेके लिये तैयार हू, इसपर चन्द घटो बाद खान आ मौजूद हुआ।

खान जडाऊ जीन लगे घोडेपर चढकर अपने महलके बगीचेतक आ जेनरल कॉफमानके तम्बूकी ओर जानेवाले रास्तेके छोरपर उतर पडा। फिर अपनी टोपी उतार पासमें पहुचकर उसने कॉफमानके सामने घुटने टेक दिये। कॉफमान उस वक्त एक कुर्सीपर बैठा रहा। उसने अपने पराजित शत्रुके साथ वीरोचित बर्ताव नही किया। खान घुटना टेके कालीनपर बैठ गया। वह तीन वर्षका

तरुण था। उसका चेहरा असुन्दर नहीं था। चौडे चेहरेपर मगोलायित आखें कुछ तिर्छी थी, लेकिन नाक तोते-जैसी थी। वड मुखपर छोटी पतलीसी काली दाढी-मूछ थी। कदमें वह छ फुटका लम्बा-तगडा जवान था। उसके सीधे-सादे-जीवनका वुखाराके अमीरसे मुकाविला करनेपर आश्चर्य होता था। उसका सवसे वडा शौक था--सुन्दर तुर्कमान घोडोसे अपने अस्तवलको भरे रखना, और कभी-कभी नई वीवी लाना। एक सौ रखेलियोंके अतिरिक्त इस्लामी शरीयतके अनुसार उसकी चार वीविया राज्यकी चारो जातियोकी थी। खानके राज्यकी आमदनी उस समय नव्वे हजार रुवल (पैंतालीस लाख पौंड) थी। किजिलकुमके घुमन्तुओको छोडकर उसके राज्यमें पाच लाख आदमी वसते थे। उसे पढने-लिखनेका भी शौक था, और उसके पुस्तकालयमें तीन सौ जिल्द हस्तलिखित ग्रथोके थे, जिनमेंसे अधिक इतिहासपर, सो भी फारसीसे तुर्कीमें अनुवादित थे।

जेनरल कॉफमानने खानकी सहायताके लिये एक शासन-परिषद् कायम कर दी, जिसमें तीन रूसी (लेफ्टिनेंट-कर्नल इवानोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल पोशारोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल खोरोशिन) और तीन खीवावाले सदस्य (दीवानवेगी मतनियाज, ईनक इर्तसअली और मेहतर अब्दुल्ला वी) थे। मतनियाज इनमें सबसे योग्य था। इस परिषद्का अध्यक्ष नामके लिये खान था, नहीं तो असली अध्यक्ष कर्नल इवानोफ था। इस्लामी शरीयत और स्थानीय राज्यपालोकी नियुक्तिका अधिकार खानको दिया गया था। रूस-विरोधी मतमुराद और रहमतुल्लाको वदी बनाकर पहले कजाला, फिर रूस भेज दिया गया। अताजान रूसी सेनामें शामिल हो गया।

रूमियोने खीवापर विजय प्राप्त करके वहाके तीस हजार गुलामोको मुक्त कर दिया। उन्हे पाच-छ सौके दलमें क्रास्नोवोदस्क भेजकर वहासे जहाजोपर ईरान भेज दिया जाता। पहले जो दो दल भेजे गये थे, उनमेंसे एकपर तुर्कमानोने प्रहार करके कितनो हीको मारा और कितनोको पकडकर फिर गुलाम वना लिया। रूसियोके खीवा छोडनेपर मुक्त होकर वहा रहते सैकडो गुलाम मार डाले गये।

अन्तमें खीवाने सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर किया, जिसमें खानने अपनेको जारका वफादार सेवक रहनेका वचन दिया और यह भी स्वीकार किया, कि मै किसी भी दूसरी विदेशी-शक्तिसे व्यापार आदिकी सधि नहीं करुगा, न रूसियोकी स्वीकृति या जानकारीके विना कोई सैनिक अभियान सगठित करूगा।

राज्यकी सीमा निर्धारित हुई थी--अराल समुद्रतक वक्षुकी सबसे पश्चिमी धारा। अरालके तटसे होते उर्गा अन्तरीप तथा उस्तउर्तके उत्तरी छोरतक--वक्षुकी पुरानी धारासे दाहिने तटकी सारी भूमि रूसको मिली, जिसके कुछ भागको इच्छा होनेपर रूस वुखाराको दे सकता था। वक्षुमें नौसचालनका अधिकार सिर्फ रूसको था, व्यापार और कारखाना वनानेकी भी उसे पूरी स्वतत्रता थी। रूससे भागे हुये अपराधीको लौटा देना खीवाने स्वीकार किया। दासता-प्रथा वन्द कर दी गई। हरजानेमें वाईस लाख रुवल (दो लाख चौहत्तर हजार पौंड) देना तै हुआ, जिसमें पहले दो सालोतक लाख-लाख रूवल, फिर १८८१ ई०तक क्रमश वढाते हुये दो लाख सालाना अदा करना था।

खीवाके साथ जो सधि हुई थी, उसे पीतरवुर्गमें प्रकाशित होनेसे पहले ही जेनरल कॉफमानने "तुर्किस्तान गजेत" मे प्रकाशित कर दिया था। इससे मालूम होगा, कि रूसके दूर-दूरके महाराज्यपालोको कितने विशेष अधिकार प्राप्त थे।

इस प्रकार १८७२ ई०में खीवाकी स्वतत्रता समाप्त हुई। खीवाके राज्यमें सर्त, उज्वेक, कराकल्पक और तुर्कमान चार जातिया रहती थी, जिनमेंसे सर्त (फारसीभाषी) अधिकतर व्यापारजीवी थे, और सैनिक तौरसे उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं था। वाकी तीन जातिया लडाकू और वहुत कुछ घुमन्तू थी। वही उज्वेक यहा भी थे, जो कि वुखारा और खोकन्दके राज्योमें रहते थे। कराकल्पक निम्न-वक्षु-उपत्यकामें अराल समुद्रतक फैले हुये थे। वोल्शेविक-क्रातिके वाद जव जातियोके अनुसार राजनीतिक इकाइया वनने लगी, तो सभी उज्वेकोकी भूमिको मिलाकर उज्वेकिस्तान गणराज्य वना दिया गया, जिसकी राजधानी ताशकन्द हुई। कराकल्पकोकी सख्या

थोडी थी, लेकिन उन्हे भी उज्बेकिस्तान गणराज्यमें कराकल्पकियाके नामसे अपना स्वायत्त गणराज्य बनानेका मौका मिला। ईरानकी सीमातक तुर्कमान—यामूद, तेक्के आदि—कबीले रहते थे, जिन्होंने पीछे अपना तुर्कमानिस्तान गणराज्य स्थापित किया, लेकिन खीवाके सर होनेके बाद ही तुर्कमानोंने रूसकी अधीनता स्वीकार नही की।

४. (५. ख खीवा कुकरत वंशवृक्ष)
(१८०४-६५ ई०)

- इश्मद बी
  - ईराज
    - १ इल्तजार (१८०४-६)
      - २ मु० रहीम (१८०६-२५)
        - ३ अल्लाकुल (१८२५-४२)
          - ४ रहीमकुल (१८४२-४५)
          - ५ मु० अमीन (१८४५-५५)
        - ८ सैं० मुहम्मद (१८५५-६५)
          - ९ मु० रहीम (१८६५)
      - कुतुलुक मुराद ईनक
        - इबादुल्ला
          - ६ अब्दुल्ला (१८५५)
          - ७ कुतु० मुराद (१८५५)

स्रोत-ग्रंथ

१ ओत्चेत ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्केस्ताने (व. व. व वर्तोल्द, "ज० रोस्० अकद० इस्त० मतेरि० कुल्तुरी" जिल्द २, पृष्ठ २०)
२ History of Mongol (3 vols, H H Howorth, London 1876-88)
३ Heart of Asia (E D Ross, London 1899)
४ La rivalite anglo-russie an xix siecle en Asie (A M F Rouire, Paris 1908)

अध्याय ६

तुर्कमान

१ तुर्कमान-भूमि

१८७३ ई०में खीवाने जारकी अधीनता स्वीकार कर ली, इससे चार साल पहले १८६९ ई०में कास्पियनके पूर्वी तटपर क्रास्नोवोद्स्कका प्रसिद्ध वन्दर स्थापित हुआ था। जारशाहीने क्रास्नोवोदस्कसे मगिशलक प्रायद्वीपतक वीच-वीचमें रूसियोकी वस्तिया और किलेवदिया कायम कर दी थी। खीवाके पतनके वाद मध्य-एसियामें रूसी साम्राज्यकी सीमा वक्षुकी धाराके साथ-साथ थी। लेकिन कास्पियन और वक्षुके वीचकी भूमिपर अभी भी रूसियोका अधिकार नही हुआ था। वहा अधिकतर घूमन्तू-जीवन वितानेवाले तुर्कमान रहते थे। यह भूमि एक त्रिकोणकी शकलमें है, जिसके सिरेपर खीवा है, और दो भुजाओमें एक कास्पियन तट और दूसरी वक्षुकी धारा। इस त्रिकोणका आधार वलखसे दक्षिण-पश्चिमसे लेकर कास्पियनके कोनेतक चला गया है। यह सारी भूमि दो लाख चालीस हजार वर्गमील होनेके कारण वहुत विशाल है, लेकिन इसके उत्तरी भागकी सबसे अधिक धरती कराकुमका रेगिस्तान है। यद्यपि इस भूमिको विलकुल वालूकी भूमि नही कह सकते, क्योकि कही-कहीपर इसकी वज्र-जैसी भूमिपर घोडोकी टाप पडनेपर जोरकी आवाज सुनाई देती है, हा दूसरी जगहोपर केवल वालू-ही-वालू है, जिसका कराकुम या कालावालू नाम रगकी समानताकी वजहसे पडा। वसतमे वर्पा होनेपर इस भूमिमें जगह-जगह हरियाली, लम्बी घास तथा तरह-तरहके फूल दिखाई पडते है। इस भूमिको इस अवस्थामें केवल पानीके अभावने पहुचाया है। यदि पानी होता, तो यहा की चरागाहोमें असख्य भेडें और दूसरे जानवर पल सकते थे। यह रेगिस्तान किसी समय मध्य-एसियाके विशाल समुद्रके भीतर था। उस समय आसपासके पहाडोसे निकलनेवाली नदिया इस महासागरमें गिरती थी, लेकिन अव वह हमारी पुरानी सरस्वतीकी तरह सूखे वालूमें विलीन हो जाती हैं। मुर्गाव और ताजन्दकी नदिया अफगानिस्तानके पहाडोसे निकलकर उत्तरकी ओर वहते कराकुमके रेगिस्तानमे गायव हो जाती हैं। कितनी ही और भी छोटी-छोटी नदिया इसी तरह अपने अस्तित्वको खोती हैं। पुराने समयमें इस मरुभूमिके पश्चिमी भागको वक्षुकी धारा सिंचित करती थी, जव कि वह कास्पियनकी मिखाइलोव्स्की खाडीमें गिरती थी। हम जानते है, चिङ्गिस् के हमलेके समय १३वी सदीमें वक्षुकी एक शाखा कास्पियनमें गिरने लगी। वसतके थोडेसे समयको छोडकर यह सारी भूमि प्राय वनस्पतिहीन हो जाती है, और केवल थोडेसे कटीले वृक्ष, ऊटोके खाने लायक कुछ छोटी-छोटी झाडिया और फरास (झाऊ)के कितने ही वृक्ष जहा-तहा दिखलाई पडते है। जगली जानवरोमें यहा क्याग (जगली गदहे), कई तरहके हरिन, जिनमें कुछ भेडोंके वरावर छोटे-छोटे मिलते है।

रेगिस्तानमें कारवाके रास्तोपर जहा-तहा कुयें है, या यो कहिये कि कुओके जलके सुभीतेके कारण उधरसे कारवा पथ जाता है। ऐसे ही पानीके स्थानोपर कितने ही पक्षी उडते और चहचहाते मिलते हैं, नही तो चारो ओर असह्य नीरवता छाई रहती है। वालूके न उडते समय आकाश शुद्ध रहता है, और दूरका क्षितिज नजदीक दिखलाई पडता है। गर्मीमे मृगतृष्णाकी हिलती हुई लहरें पथिकको मृत्युकी ओर आह्वान करती है। कराकुममें दिसम्वर और जनवरीमें सख्त सर्दी पडती है, जव कि तापमान हिमविन्दुसे ५०° से० नीचे चला जाता है। गर्मी भी वहा हद

दर्जेकी होती है—लू आदमियोकी जान ले लेती है, और बालूके अधडमे पडनेपर सास लेना मुश्किल हो जाता है। इस मरुभूमिमे मनुष्यके लिये बहुत प्राचीन कालसे जीवनका रास्ता रुका हुआ है। यदि इससे कोई फायदा था, तो यही, कि ख्वारेज्म बहुत दिनोतक बाहरी शत्रुओके आक्रमणसे बचा रहा। लेकिन जान पडता है, अब कराकुममें विराजती मृत्युकी नीरवता अधिक दिनोतक नही रह सकेगी। खीवाके पास वक्षुसे उज्बोई होते कास्पियनमें मिलनेवाली नहरके बनानेमें आधुनिकतम यत्रोका उपयोग किया जा रहा है, और कुछ ही वर्षोमे वक्षुका बहुतसा पानी कराकुमके एक बहुत बडे भागको सरसब्ज बनानेमे सफल होगा। लेकिन सोवियत रूस इतने हीसे सतुष्ट नही है, बल्कि जैसा कि पहले हम बतला चुके हैं, वह चार सौ फुट ऊचे बाधको बना कर ओब और येनिसेइके अधिकाश पानीको ध्रुवीयमहासागरमें जानेसे रोककर कजाकस्तान और कास्पियन तटतक फैले एक समुद्रके रूपमें बदलना चाहता है। बलकाश, और अराल समुद्रको अपने गर्भमें लेते यह महासमुद्र कास्पियनतक जब फैल जायगा, तो मध्य-एसियाके विशाल रेगिस्तानो-का पता भी नही रहेगा। इस योजना से पहले ही सोवियत कालमें कराकुमके कुछ भागोको अच्छी चरागाहोमें बदल दिया गया। जाडेके महीनोमे तापमानका हिमविन्दुसे दर्जनो डिग्री नीचे जाना इसमें सहायक हुआ। कराकुमके रेगिस्तानमें जहा-तहा उगनेवाले वनस्पति और घासें बतलाती हैं, कि धरतीके नीचे वहा पानी भी है। लेकिन पानी अधिकतर बहुत खारा है, जिसे पशु और प्राणी पी नही सकते। रूसी वैज्ञानिकोने इस खारे पानीको मीठे पानीमे बदलनेके लिये जगह-जगह कूओपर सीमेंट किये हुये बडे-बडे तालाब बनाये, और जाडोमें बर्फ जमा कर मीठे पानीको नमकसे अलग करके पशुओ और प्राणियोके लिये जमीनदोज तालाब स्थापित किये, इस प्रकार वहा लाखो पशु पलने लगे।

लेकिन, तुर्कमानोकी भूमिका कुछ दक्षिणी भाग ऐसा भी है, जहा रेगिस्तान नही है। कास्पियनके दक्षिण-पूर्वमे गूरगान और अतरक नदियो द्वारा सिंचित भूमि है, जो यद्यपि समुद्रके पास दलदली है, लेकिन ऊपरकी ओर बडी सुन्दर उपत्यकाये हैं। एक पश्चिमी यात्रीने इस भूमिमे चलते हुये लिखा था—"*हमारा मार्ग हरे-भरे खेतो और सुन्दर स्वाभाविक चरागाहोके भीतरसे था, जिनकी* पहाडियोमें बडे कोमल रगके बाज (ओक)के किसलय शोभा दे रहे थे। जहा-तहा हरा मखमली फर्शसा बिछा मालूम होता था।" कराकुमकी नीरव और निर्जीव भूमिके अतिरिक्त ऐसी भूमि भी थी, जिसमें तुर्कमान घूमा करते थे। ईरान और तुर्कमानिस्तानकी सीमापर कोपेकदाग पर्वतमाला है, जिससे निकलनेवाली नदियोने किजिल अरवतसे लेकर गियाउर-तककी एक सौ सत्तासी मील लम्बी और पद्रहसे पचीस मील चौडी भूमिको बहुत ही उर्वर बना दिया है। इस प्रदेशको अक्कलकी हरितावल (ओसी) कहा जाता है। जहासे मुर्गाव पहाडोको छोडकर रेगिस्तान ओर बढती है, वहीपर मेर्वकी प्रसिद्ध हरितावल है, जिसे दुनियाकी अत्यन्त उर्वर भूमियोमे माना जाता है। ऐतिहासिक कालमे मेर्वके महत्त्वको हम देख चुके हैं। बुखाराके अमीर मुरादकी सेनाने १७८४ ई०में जब आक्रमण करके मेर्वके इलाकेको बरबाद कर दिया, तबसे इस उजडी भूमिके स्वामी तुर्कमान हो गये। मेर्व-हरितावल ईरानकी उत्तरी सीमासे बहुत थोडी ही दूरपर है, दोनोके बीचमे एक छोटी-सी पर्वतशृखला है, जिसको पार करनेमें कभी किसी आक्रमणकारीको रुकावट नही हुई। इस पहाडकी चढाई इतनी धीरे-धीरे है, कि आदमीको ऊपर पहुचनेमें वह नही-सी मालूम होती।

२ तुर्कमान कबीले

पीछे हम बतला चुके है, कि तुर्कमानोके मूल पुरुष गूज या आगुज बहुत पुराने समयमे अल्ताईकी तरफसे अराल और कास्पियन समुद्रकी ओर आये थे। सल्जूकियोके नेतृत्वमें इनका प्रभाव बहुत बढा और ये उत्तरी ईरान तथा मेर्वसे कास्पियनतक फैल गये। १९वीं सदीके आरम्भमे भी इनमेंसे अधिकाश अभी घुमन्तू ही थे। करा और येल्री इन्ही तुर्कमानोके पूर्वज थे, जिन्होने सुल्तान सजरको ११५३ ई०में अन्दखूय और मेमनामें हराकर बन्दी बनाया

था। पिछली शताब्दियोमें इनके कुछ कबीले मगिशलक प्रायद्वीपमें घूमा करते थे। अपने घुमन्तू और लडाकू जीवनके कारण ये बाहरी प्रभावसे बहुत कम प्रभावित हुये। कभी इन्होने ईरानी शाहोंकी अधीनता स्वीकार की, और कभी खीवाके खानोकी। शाह अब्बास (१५८५-१६२६ ई०) ने इन्हे कोपेतदागकी उर्वर उपत्यकासे भगाकर वहा पद्रह हजार लडाकू कुर्दोंको ला बसाया, जिसमें कि वह तुर्कमानोंको घुसने न दें। लेकिन तुर्कमान अपने स्वभावसे लाचार थे। नादिरशाह खूनसे स्वय तुर्कमान था। २०वी सदीके आरम्भतक चले आये ईरानके काजार राजवशका सस्थापक आगा मुहम्मद (१७९६ ई०) स्वय तुर्कमान था। उसने सभ्यताके महत्त्वको समझकर तुर्कमानोको भी उस रास्ते ले जाना चाहा, लेकिन उसमें सफल नही हुआ। उसके उत्तराधिकारी फतेहअलीने १८१३ ई०मे जब उन्हे दबाना चाहा, तो तुर्कमानोने रूसकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन नेपोलियनके आक्रमणसे रूसको कहा होश था, कि इस अधीनता-स्वीकृतिसे लाभ उठाता। १८३१ ई०में अग्रेज यात्री बार्नेस मध्य-एसियामें गया था। उसने अपनी पुस्तक "बुखाराकी यात्रायें"में तुर्कमानोका जिक्र किया है। बार्नेसके समय सबसे अधिक सख्या उनमें तेक्के कबीलेकी थी, यद्यपि अभी तुर्कमानोमें उसको प्रधानता नही मिली थी। अपने इतिहासके आरम्भमें तेक्के लोग कास्पियनके पूर्वी तटपर मगिशलक प्रायद्वीपमें रहते थे। १७१८ ई०में जब कल्मक-मगोलोका इनपर बार-बार आक्रमण हुआ, तो तेक्कोने किजिल अरवतसे यामुदो और कोपेतदाग-की उर्वर उपत्यकावाली अक्कल हरितावलीसे कुर्दों और येलियोको भगाकर वहा अपना अधिकार जमाया। तेक्केका अर्थ तुर्कमानी भाषामें है पहाडी बकरी, जो कि सिद्धहस्त पहाडी घुडसवार होनेके कारण इनके लिये उपयुक्त नाम था। खीवाके खानको यह मानते थे और प्रत्येक ग्राम (तम्बुओंका झुड) सालमे एक ऊट कर देता था। नादिरशाहने भी इन्हे अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया था। जबतक इनकी सख्या बहुत बडी नही थी, तबतक ये किजिल अरवत और अक्कलमे रहते रहे। सख्या बढनेपर १८३० ई०में इनके दस हजार परिवार पूर्वकी ओर जा ताजन्द-उपत्यकामें बस गये, और वहापर अपने सरदारके नामसे उन्होने अराज खानकला बनाया। बार्नेसके समय (१८३१ ई०में) तेक्कोंके चालीस हजार परिवार (तम्बू) थे। इस समय ऊपरी मध्य-वक्षुपर सारिकोंके बीस हजार तम्बू थे, जो कि मेर्वपर हाल हीमें अधिकार करनेवाले खीवियोंसे लड रहे थे। सख्यामें उन्हींके बराबर यामूद कबीला खीवा और अस्त्राबादके बीच चरवाही जीवन बिताता था। गोखलान तुर्कमानोकी एक शाखा थी, जो कि अतरक और गुरगानके बीच ईरानी प्रजा होकर रहती थी। सलोर कबीला भी लडनेमें बहुत बहादुर था, किन्तु उसकी सख्या अपेक्षाकृत अधिक नही थी। सलोर सरख्शके नजदीक ऊपरी ताजन्द-उपत्यकामें रहते थे। इनकी बार-बारके लूट-मारसे तग आकर ईरानी शाह फतहअलीके पुत्र अब्बास मिर्जाने भारी सेनाके साथ १८३२ ई०में इनपर आक्रमण किया। बहुत खून-खराबीके बाद सरख्शपर ईरानियोने अधिकार कर लिया, और मारे जानेसे बचे हुये सलोर भागकर मेर्वके दक्षिण योलेतानकी हरितावली में बस गये।

ताजन्दके ऊपरी भागमें बसे हुये तेक्के उत्तरी-ईरानमे बराबर लूट-मार किया करते थे ईरान बराबर प्रतिरोध करता था, लेकिन कास्पियनसे हिरातके पासतक फैली अपनी सारी उत्तरी सीमाको तुर्कमानोंसे सुरक्षित रखना सम्भव नही हुआ। १८४८ ई०में खुरासानके ईरानी राज्यपाल आसफुद्दौलाने तेक्कोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हे बरबाद कर दिया, किन्तु घुमन्तुओंका इतनी जल्दी सर्वनाश नही किया जा सकता। बचे-खुचे तेक्कोने अपने भाई-बन्दोंके पास अक्कलकी हरितावली-में शरण लेनी चाही, लेकिन वहा पहले हीसे जनसख्या अधिक थी, इसलिये जगह न मिली और फिर वह आसफुद्दौलाकी शरणमें गये, जिसने उन्हे सरख्शके उजडे हुये इलाकेमें रहनेकी इजाजत दी। यह इलाका तेरह साल पहले सलोरोंके हाथमें निकलकर वीरान हो गया था। अब तेक्के खीवाके इलाकेमें लूट-मार करने लगे, इसलिये खीवाके खान मुहम्मद अमीनने सरख्शको जीत वहा राज्यपाल नियुक्त-कर छावनी बैठा दी। लेकिन खानके हटते ही तेक्कोने उन्हें तलवारके घाट उतार दिया। खानने फिर लौटकर चढाई की, लेकिन एक टेकरीपर तुर्कमानोने घेरकर उसका काम तमाम करके

उसके मुडको काटकर ईरानी शाहके पास भेज दिया, केवल धड ले जाकर खीवामें दफनाया गया। तेक्कोने अब ईरानके भीतर भी लूट-मार शुरू की। जिस खुरासान-राज्यपालने इन्हे इस भूमिमे बसाया था, उसीने सरख्शको जलाकर तेक्कोको उत्तरमें मेर्वकी ओर भगा दिया। १७८४ ई०के पहलेसे मेर्वमे सारिक कबीला रहता आया था। अब सारिको और तेक्कोका खूनी सघर्ष चला। सारिकोने अपने पक्षको कमजोर देखकर खुरासानके ईरानी राज्यपालको बुलाया, जो अठारह बटालियन पैदल और सात हजार सवार सेनाके साथ आया। तेक्कोने अन्तमें ईरानकी अधीनता स्वीकार करके राज्यपालको बहुत मूल्यवान् भेटें दी। फिर वह अपने शत्रु सारिकोके ऊपर टूट पडे, और उन्हे मेर्वकी हरितावलीसे निकालकर ऊपरी मुर्गाब-उपत्यकामे योलेतान और पजदेहकी ओर खदेड दिया, जहासे जाकर उन्होने ईरानके हुक्मसे हरीरूद नदीके बायें तटपर जराबादसे सलोरोको बेदखल किया।

कई शताब्दियो बाद मुर्गाबकी उर्वर उपत्यकाके स्वामी अब सारिक थे। उनकी शक्ति इतनी अधिक थी, कि इन्होने खीवाकी सेनाको हरा दिया। तेक्कोने खेतीके फायदेको भी समझकर उसके प्रचार-की कोशिश की, लेकिन सिंचाई यहाकी सबसे बडी समस्या थी। इसके लिये पुराने समयमे बडे-बडे बाध बना जल-निधिया स्थापित की गई थी, जो कि लडाइयोमें बनती-बिगडती रही। मेर्वके स्वामी बनकर तेक्कोने मेर्व नगरसे पचीस मील ऊपर एक ऊबड-खाबड-सा बाध बना पचीस मील लम्बी नहर खोदी, जिसके सहारे अडतालीस हजार परिवार खेती करने लगे। बाध और नहरकी मरम्मतके लिये हर पचीस परिवार एक आदमी देता। १८८० ई०मे अग्रेज यात्री ओडोनोवेन इधरसे गुजरा था। उसने इस बाधके बारेमें लिखा था—"नदी-तटके दोनो तरफ बीस गजतक बडे-बडे नरकटोकी घनी पक्ति है। पानीकी धाराके लिये मुश्किलसे दस फुट चौडी जगह छोडी गई है। इस सकरे मार्गसे पानी जोरसे आवाज करता बहता है। पचास गजतक यह पानीका रास्ता चला जाता है। इस दूरीमें भी नरकटोके बाधको और समेटकर पानीको रोकनेकी कोशिश की गई है।"* लेकिन कृषि-जीवनके लिये जैसी शातिकी अवश्यकता थी, अभी वह तेक्कोमे नही आ पाई थी। दक्षिणमें सारा खुरासान उनके शिकारकी जगह बना हुआ था, फिर वह क्यो लूट-मारसे हाथ खीचते? वह मशहदसे साढे चार सौ मील दक्षिणतक धावा मारते। उनसे प्रतिरोध करनेके लिये १८६० ई०मे ईरानने नवीन सरख्शमे एक किला बनाया, फिर अगले साल ईरानी मुख्य-सेनापतिने बारह हजार पैदल, दस हजार घुडसवार सेना तथा तेतीस तोपोके साथ चढाई की। तेक्कोने सुलह करनी चाही, लेकिन इन लडाकुओकी सुलहकी बातपर कौन विश्वास करता? तेक्के भी जानपर खेलकर लडे, और सारी ईरानी पैदल-सेना मारी या उनके हाथमें बदी बनी, केवल सवार अपने कायर सेनापतिके साथ भागनेमे सफल हुये। इस लडाईमे इतने अधिक ईरानी गुलाम तेक्कोके हाथ आये, कि मध्य-एसियाके बाजारोमे गुलामोकी कीमत एक गिन्नी कम हो गई। तेक्कोको अपने अधीन बनानेका ईरानका यह अन्तिम प्रयास था। अपनी इस सफलताके बाद तेक्के अक्खल और मेर्वमे जम गये, जहासे वह बराबर ईरानमे लूट-मार किया करते। मेर्व हरितावलके पूर्वी भागमे तेक्कोकी तोकतामिश-शाखा रहती और पश्चिममे ओतामिश पूर्वी छोरपर बेक रहते। इन शाखाओके अतिरिक्त उनके कुछ और भी छोटे-छोटे विभाग थे।

३ तेक्कोका शासन

तेक्के घुमन्तू कबीलेशाही अवस्थामे थे, इसलिये उनका शासन जन-सत्ताको छोड और हो ही क्या सकता था? अग्रेज यात्री वोल्फने × इनके बारेमें लिखा है—"इन लुटेरे कबीलोमे रहनेके बाद मैं इस निश्चयपर पहुचा हू, कि भीडकी इतनी बुरी स्वेच्छा-चारिता कही नही हो सकती। इससे बढकर बुरी बात क्या हो सकती है, कि अपने पागलपनके ही कारण यह अशिक्षित और असभ्य भीड अपनी शान दिखलाती है।" लेकिन वोल्फका यह

* मेर्वकी कहानी। × बुखारा

एकतरफा फैसला था। राजकाजकी बातोपर निर्णय करनेके लिये सारी जनताकी सभामें वह बहस करते। इन्ही सभाओमें वह अपना खान चुनते, जो कि शासनका उच्च पदाधिकारी होता। लेकिन जबतक जनता उसे स्वीकार करती, तभीतक वह खान रहता। इस पदके लिये कोई आकर्पण नही था, क्योकि खानको शिष्टाचार और सम्मान पानेके अतिरिक्त कोई लाभ या अधिकार नही था। उसके पास चालीस जिगित (बहादुर) रहते, जो सरकारी आज्ञाको पालन करवाते, लेकिन खजाना खानके हाथमें नही था। कोई विशेप काम आनेपर कबीला इख्तियार नामक एक विशेप प्रतिनिधि चुनता। सम्मतिदाता कबीलेके सारे लोग होते। १८८१ ई०मे ओडोनोवेनके मेर्वमे जानेपर उसे वहा एक 'इख्तियार' मिला था, जिसे तेहरानमे शाहके पास सुलहकी बातचीतके लिये भेजा गया था। ओडोनोवेनके अनुसार पिछले कुछ समयसे तेक्के अब एक साधारण राज्यपद्धतिकी ओर बढ रहे थे, जिसमे जनतन्त्रताका स्थान खानदानी राजतन्त्र लेने जा रहा था। यह परिवर्तन नूरवर्दी खानके समयसे होने लगा, जो कि खीवा, ईरान और सारिकोके युद्धोकी विजयोंमें नेता रहा—सफल नेता राजा बन जाता है। उसने अपने पुत्र मखदूम कुलीको अवकलके तेक्कोका मुखिया बनाया, और वह स्वय मेर्वका खान रहा। उसे इतना आगे बढनेमें रूसकी ओरसे पैदा हुये खतरेने भी सहायता की। अगर इतना भय न होता, तो शायद घुमन्तू इतनी एकतन्त्रताके लिये भी तैयार न होते। तेक्के खीवामें रूसकी प्रभुता स्थापित होते देख चुके थे, उन्हे अपने भविष्यके लिये डर मालूम होने लगा था।

सभी तुर्कमानोकी तरह तेक्के सुन्नी मुसलमान थे, लेकिन वह धर्ममे कट्टर नही थे, और न मुल्लोकी पर्वाह करते थे। वोल्फके समय (१८४३ ई०में) खलीफा अब्दुर्रहमान नामक मुल्लाकी बडी इज्जत थी। अपनी बहादुरी और बुद्धिके लिये प्रसिद्ध आदमियोके हाथमे सैनिक जिम्मेवारी दी जाती थी। वह ऐसे आदमीको अपना सरदार (सेनापति) बनाते, जिसे कि आक्रमण की जानेवाली धरतीका सूक्ष्म ज्ञान होता। इस लूटमे उन्हे जहा माल हाथ आता, वहा बहुतसे नर-नारी भी मिलते। यदि मुक्ति-धन चुकानेके लिये कोई तैयार होता, तो तुर्कमान अपने बंदियोको छोड देते, नहीं तो खीवा या बुखाराके बाजारोमे उन्हें गुलाम बनाकर बेच देते। तुर्कमान बहादुर होनेके लिये तीन बातोकी अवश्यकता थी—अच्छा घोडा, हथियार और मृत्युसे निर्भयता। कहावत मशहूर थी—"जिसने अपनी तलवारकी मुट्ठीपर हाथ रख दिया, उसे और किसी तर्ककी अवश्यकता नही।" और "घोडेकी पीठपर सवार तेक्का न बापको समझता, न माको।" युद्धका निश्चय हो जानेपर स्वाभाविक नेता अपने किबित्का (तम्बू)के सामने झडा गाडता, और अल्ला और रसूलके नामपर भले मुसलमानोको शीया काफिरोके ऊपर हमला करनेके लिये बुलाता। थोडे ही समयमें उनके तम्बूके चारो ओर सैकडो योद्धा जमा हो जाते, जो अपने सरदारके हुक्मपर आगमें कूदनेके लिये तैयार रहते। निश्चित दिनपर अनुचर सुशिक्षित घोडेपर सवार हो रसद लिये सरदारके पास पहुचते। यदि अभियान खुरासानकी ओर करना होता, तो कोपेतदाग पर्वत श्रेणीके तीन डाडोमेंसे किसी एकसे पार होते। पहाड पार करके दूसरी ओरके पर्वतसानुपर चन्द सवारोकी रक्षामे रसदको छोड, गाजी (धर्मयोद्धा) सारे दिन आगेकी तैयारीमें लगे रहते। दूर उपत्यकामे ईरानके शात गाव बसे हुये हैं शाम नजदीक आ रही ह। दरख्तोके बीच सफेद घरोंसे चूल्हेका धुआ निकलकर आकाशमे मडरा रहा है। बूढे गप कर रहे हैं, तरुणिया चरागाहोंसे अपने पशुओको ला रही हैं। यह समय है, तेक्कोंके शिकारका। चन्द मिनटोमें ही गावकी गलियोमे तुर्कमान छा जाते। वे अपने धनुप-बाणो और तलवारोंको आख मूदकर दाहिने-बाये चलाते, कितनोको मारते और सारे गावको भयभीत कर देते। फिर बचे-खुचे लोगो, उनके ढोरो और कीमती चीजोको इकट्ठा करके जितनी जल्दी आये थे, उतनी ही जल्दी अन्तर्धान हो जाते। यदि पीछा किये जानेका डर होता, तो बिना लगामको रोके सौ-सवा-सौ मीलतक भागते चला जाना उनके लिये साधारणसी बात थी। लडके और बच्चे ज्यादा कीमती समझे जाते, जिन्हे सवार चारजामोसे बाधकर दूसरे घोडोपर लाद लेते। ये घोडे तुर्कमान सवारके घोडेसे बधे होते, इसलिये पीछे-पीछे भगते जाते। दौड सकनेवाले आदमियोको कभी-कभी जजीरोमे बाधकर घोडोंके साथ भगाया जाता। यदि वह थककर

न चल पाते, तो तुर्कमानकी तलवार उनके दु खोका अन्त करनेके लिये तैयार थी । कारवापर जब आक्रमण करना होता, तो वह किसी रेगिस्तानी कुयेंके आसपास छिपे रहते, और जब कारवा विश्राम करने लगता, तो चारो ओरसे उसके ऊपर टूट पडते । यदि तुर्कमान अपनी सख्या पर्याप्त नही देखते, तो यात्रामे पीछे रह गये ऊटोपर हमला करते । तुर्कमानोकी सफलताकी कुजी थी, उनके तेज और मजबूत घोडे, तथा यकायक फुर्तीसे आक्रमण ।

कितनी ही वार अपने दासो और दासियोको बेचनेके लिये तेक्के स्वय खीवा और बुखारा जाते । लेकिन इसकी उन्हे इतनी जरूरत नही थी, क्योकि गुलामोके सौदागर उनकी बस्तियोमें आकर गुलामोको थोक दरपर खरीद ले जाते । रूसियोने जबतक मध्य-एसियामे अपना प्रभुत्व नही जमाया, तबतक वहा गुलामोकी यह लूट और बेच ऐन इस्लामी शरीयतके अनुसार मानी जाती थी । पीतर I को इतालियन यात्री फ्लोरियो ब्रेनेवेनीने सूचित किया था, कि बुखारामे तीन हजार रूसी गुलाम है, और उतने ही खीवामे भी । अग्रेज-यात्री वोल्फके अनुसार बुखारामें दो लाख ईरानी गुलाम थे, और उसी समय गये मेजर एवटके अनुसार खीवामें सात लाख थे, जिनमे बच्चो और तरुण लडकियोका मूल्य सयानोसे दुगुना था ।

तेक्के अपने घोडेका महत्त्व सरदारसे भी बढकर मानते थे । उनके घोडे बहुत समयसे अच्छी जातिके माने जाते थे । कहा जाता है, तेमूर लगने पाच हजार अरब घोडोको लाकर तेक्के घोडो-की नसलको बढिया बनाया था । शाह नासिरुद्दीनने पिछली शताब्दीमे पाच सौ अरब घोडे तेक्कोके पास भेजे । लेकिन जान पडता है, तुर्कमान घोडोके लिए अरबी प्रभावकी अवश्यकता नही थी, और न वह अपने रूप और ढाचेमें अरब घोडो-जैसे होते है । वह कदमें बडे, लबे पैर, सकरी छाती, और लम्बे सिरवाले होते है । प्रशिक्षित तथा खास चारेपर रक्खे तुर्कमान घोडे एक दिनमें साठ मीलका रास्ता तै करते, इस तरहकी यात्रा वह बहुत दिनोतक जारी रख सकते थे । तेक्के-सवारो-को भी इतना अभ्यास था, कि वह चौवीस घटा घोडेकी पीठपर बिता सकते थे । तेक्कोके घोडोका चारजामा वही था, जो कि चीनी दीवारके उत्तरके मगोल घुमन्तुओमे पाया जाता है । तुर्कमान अपने घोडोसे इतना प्यार करते, कि वह अपने पीनेके पानी, या जौकी आखिरी रोटीको भी घोडेको दिये बिना नही खाते । उनके हाथोमे चाबुक केवल शोभाके लिए रहता, नही तो घोडोके लिये लगामका इशारा काफी था । सोवियत शासनने तुर्कमान घोडोकी इस बढिया नसलको सुरक्षित रखते हुये उसको बहुत बढाया, और अश्कावादसे मास्कोतककी दौड करके देख लिया, कि उनकी प्रसिद्धि झूठ नही है । तेक्कोके ईरानमें जा लोगोको लूटकर गुलाम बनानेका बडा ही सजीव चित्रण मध्य-एसियाके महान् उपन्यासकार सदरुद्दीन एलीने अपने ग्रथ 'गुलामानमे' किया है ।*

१९वी सदीके उत्तरार्धमें तुर्कमानोमें बस्तीवासी भी काफी हो गये । बस्तीवासियोको 'चरवा' और घुमन्तुओको 'चोमरी' कहा जाता था । चोमरी तीन दिनसे अधिक शायद ही कभी एक जगह रहते । उनका धन केवल पशु थे । चोमरी-तुर्कमान सालके कुछ भागमे 'कला' (दुर्ग)मे एक स्थान पर रहते, लेकिन इस किलेका साधारण किलेसे कोई सबध नही । एक खुली जगहमें तुर्क-मानोके तम्बू खडे होते, जिसके चारो तरफ कच्ची मिट्टीकी दीवार होती, जिसमे खतरेके देखनेके लिए सतरीके वास्ते मीनार बने होते । 'चरवा'के अपने औल (ग्राम) होते, जिनकी चारो ओर गाव-वालोके खेत और बाग रहते । वहा जौ, ज्वार और चावलकी खेती ही ज्यादा थी । फलोमे अगूर, सेब और सबसे अधिक तरबूज होते । तुर्कमानोके 'कला'मे सिर्फ एक दरवाजा होता । पश्चिमके किजिल अरबतसे पूर्वमे अश्काबादतकके औलोमे प्रसिद्ध 'कला' ग्योक-तेप्पेकी उपत्यकाके सबसे चौडे भागमे अश्काबाद था, जिसमे आठ औल सम्मिलित थे ।

४ पोशाक और रूपरेखा

तुर्कमान शरीरमें मझोले कदके होते । उनका रग गेहुआ तथा गालकी हड्डी मगोलायितोकी तरह उभडी हुई होती । आखे भी उसी तरह बादामी, नाक चौडी—जो मिरे-

*"जो दास थे" (राहुल)

पर उठी, होंठ मोटा, मूछ-दाढी नाममात्र, कान बहुत बडे—इस प्रकार पता लगेगा कि तुर्कमानोंने शताब्दियोंसे मध्य-एसियामें रहके भी अपने मगोलायित-खूनको बहुत कुछ शुद्ध रक्खा। ईरानकी लूटी हुई गुलाम स्त्रियोंको अपने पास रखनेकी जगह वह बेंच देना ही ज्यादा पसद करते थे। लेकिन तो भी पिछली शताब्दियोंके यात्रियोंका कहना था, कि तुर्कमान स्त्रियोंकी रूपरेखा मगोलायित कम होती है। उनके बाल छोटे, मोटे और रूखे होते हैं। तरुणाईमें वह लम्बी और सुगठित दीख पडती है। मोजेरने लिखा था—"मध्य-एसियामें तेक्के ही ऐसी स्त्री है, जो कि जानती है कि कैसे चलना चाहिये। जब कोई तेक्के-लडकी पानी भरनेके लिये अपने कधेपर पानीका कूजा लिये कुयेंपर जा रही हो, तो उससे सुन्दर दृश्य देखनेको नही मिलेगा।" तरुणाईमें इनके गाल गुलाबी होते हैं, लेकिन मध्यवयके शुरू होते ही मुहपर झुर्रिया पड जाती है।

तुर्कमान पुरुषोंके सिरपर एक बहुत ऊची और देखनेमे भारी काली भेडके खालकी टोपी (कल्पक) होती है। टोपीके नीचे आधा सिर ढका होता है। देखनेसे तो मालूम होता है, कि कल्पक पाच सेरसे कमकी न होगी, लेकिन वह बहुत हलकी होती है। लाल रगका पायजामा और ऊपरसे एडी-तक लटका हुआ काले रगका जब्बा (चोगा) तुर्कमानोंकी पोशाक है। गर्मियोंमें वह सूती कपडेका व्यवहार करते और जाडोमे ऊटके ऊनके बने हुये कपडोंका। पैर जूते और मोजेमे ढका रहता। औरतोंकी पोशाक लम्बे-चौडे घाघरेकी होती, जिसका रग लाल या नीला और कपडा कभी-कभी रेशमका भी होता। उनकी छातीपर चादीके सिक्को या दूसरी चीजोंका हमेल पडा रहता। व्याहता स्त्रिया जूडा बाधती, कुमारियोंके बाल कधेपर लटकते रहते। मुह ढाकनेके लिये बरजक वह बहुत कम इस्तेमाल करती। तुर्कमानिया अपरिचित आदमीसे भी बातचीत करती। उनके हाथका बनाया कालीन बहुत प्रसिद्ध था। बहु-विवाह यद्यपि विहितथा, लेकिन व्यवहारमें बहुत थोडे ही आदमी अनेक बीबिया रखते। तुर्कमान वैसे लुटेरे थे, लेकिन अपने पूर्वजोंके वक्तसे चले आते अतिथि-सेवाधर्मको वह बहुत मानते थे। कोई भी परदेशी तेक्केके बुर्ज भरे किबित्कामें पहुचने-पर तन्दूरी रोटी, मट्ठा, चाय, हुक्का, पनीर, मट्ठेमें पके चावलमें भागीदार बन जाता। स्वागतके बाद फिर वह शतरज और बासुरीसे मनोरजन कर सकता। तेक्के डाकू थे, लेकिन चोर नही। वह गाली देना नही जानते थे, उनके यहा सबसे बडी गाली थी 'कायर' कहना।

५ रूससे युद्ध

खीवाको रूस दबा चुका था, लेकिन तुर्कमान घुमन्तू अपनी शानमें मस्त थे। १८७३ ई०में जब रूमी सेनायें खीवामे आईं, तो यामूद-तुर्कमानोंने रूसियोंका जबर्दस्त मुकाबिला किया था, इसे हम देख आये हैं। कॉफमानने यामूदोंको पाठ पढाना चाहा, और इसके लिये सारी दक्षिणी मरुभूमिमे सर्वनाशका युद्ध छेड दिया, क्रूरतामें जारशाही घुमन्तुओंको भी मात करने लगी। ईरानी राज्यपालने १८६९ ई०में अतरक नदीकी उपत्यकामें रहनेवाले गोखलान-तुर्कमानोंको दबाना चाहा। कास्पियन समुद्रमे नावों और जहाजोंको लूटनेवाले गोखलानोंको रूसी नौसेनाने दबा दिया। खीवा-विजयके बाद १८७६ ई०में कास्पियनका पूर्वी तट काकेशसके महाराज्यपालके अधीन रहा, जिसकी सेना यहा रक्षाका काम करती थी। तेक्कोंने अपनी उत्तर-पूर्वी सीमातमें इस प्रकार रूसियोंकी जबर्दस्त दीवार देखी। यही हालत पूर्व दिशामें भी थी। खीवा और बुखाराने सधि करके रूसकी बातको मान अपने यहा दासताको निषिद्ध कर दिया था, इसलिये तेक्कोंके लाये गुलामोंके बेचनेके लिये अब मध्य-एसियाके बाजार बन्द हो गये थे। उन्होंने रूसियोंसे भी छेडखानी जारी रक्खी। १८७५ ई०मे एक रूसी-कारवा क्रास्नोवोद्स्कसे खीवाकी ओर जा रहा था, जिसे उन्होंने बीचमें लूट लिया। इसी तरह १८७७ ई०में अतरकके उत्तरमें भी एक कारवाको लूटा। रूसी इसका बडी कठोरतासे जवाब देने लगे। तेक्कोंको मालूम होने लगा, कि अब हमारी भी वही हालत होनेवाली है, जो कि खीवाकी चार साल पहले हुई। १८७७ ई०मे उन्होंने ईरानकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन अब रूस उसकी इजाजत नही दे सकता था। तुर्कमानोंकी लूटमारके कारण इधर तुर्कमान-मरुभूमिसे खीवा-बुखाराका

व्यापार बन्द हो गया, और सुरक्षित समझकर ओरेनबुर्गके बहुत फेरवाले रास्तेसे कारवा जाने लगे। पीतरके समयसे ही रूसियोके दिमागमें समाया था, कि वक्षुको कास्पियनमे मिलाकर वोल्गा-उपत्यकासे जलमार्ग द्वारा व्यापार करे, लेकिन यह काम जारशाही नही कर सकी।

खीवाके विजयके बादके तीन-चार वर्षोंमे तेक्कोने अपनी लूट-मारसे रूसियोको वहानेका रास्ता दे दिया, और १८७७ ई०में जेनरल लोमाकिनको हुक्म हुआ, कि तेक्कोके किले किजिल अरबतपर अधिकार कर लो। किजिलअरवत कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्क बन्दरगाहसे दो सौ मील पूर्व था। जेनरल लोमाकिन १२ अप्रैलको नौ कपनी पैदल, दो स्क्वाड्रेन कसाक और आठ तोपे लेकर रवाना हुआ। भला आधुनिक हथियारोके सामने तेक्के कैसे डटते? वह पहली ही मुठभेडमें भाग गये। इसके बाद अक्कर-उपत्यकाके प्रत्येक औल (गाव)के प्रतिनिधि रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये आये, लेकिन लोमाकिन इससे पहले ही डरकर पीछे हट गया था। इसी बीच तुर्कीसे सका युद्ध (१८७७—७८ ई०) छिड गया, जिसके कारण तुर्कमानोके साथ युद्धको स्थगित करना पडा। १८७८ ई०मे तुर्कीके युद्धके खतम होते ही फिर जारशाहीने तेक्कोकी ओर ध्यान दिया। १८७८ ई०में एक रूसी सेना अतरक नदीके मुहानेके पास अवस्थित चिकिस्ल्यरसे चली। वेन्देसेन डाडेसे कोपेतदाग पर्वतश्रेणीको पारकर ९ सितम्बरको उसने दगिल-तेप्पेपर आक्रमण किया। वहा पद्रह हजार तेक्के योद्धा अपने पाच हजार स्त्री-बच्चोके साथ मिट्टीकी दीवारसे घिरे स्थानमें लडनेके लिये तैयार थे। तोपके सामने यह मिट्टीकी दीवारें क्या बचाव करती? वह प्राण बचाकर भाग निकले। रूसी सवार उन्हे पीछे पडकर घेरने लगे। चारो ओरसे उन्हे मौत-ही-मौत दिखलाई पड रही थी। अपने स्त्री-बच्चोको दुश्मनके हाथमे पडते देख "मरता क्या न करता" पर उतर आये, और उन्होने शैतानकी तरह लडाई लडी। लोमाकिनका मनोरथ भग हुआ, साढे चार सौ रूसी हताहत हुये, और बाकी सेनाको लेकर उसे चिकिस्ल्यर लौट जाना पडा। इस विजयकी खबरसे सारे मध्य-एसियामे आशाकी किरण दौड पडी। अब और भी लूट-मार होने लगी। १८८० ई०मे तीन हजार तुर्कमानोने वक्षु-तटपर बुखाराकी भूमिमे अवस्थित चारजूय-किलेके पासतकके कितने ही गावोको लूटा। मध्य-एसियासे जारका रोब उठते देखकर जेनरल स्कोवेलेफने पीतरबुर्ग लिखा था—"यदि हम अपनी पिछले पाच सालकी स्थितिपर विचार करते है, तो सामने भयकर खतरा दिखलाई दिये विना नही रहता, क्योकि वह साम्राज्यकी आर्थिक और राजनीतिक स्थितिको अस्त-व्यस्त कर सकता है। अग्रेजोने एसियाइयोको विश्वास दिलाना चाहा है, कि उन्होने कान्स्तन्तिनोपलके सामने रूसियोको रोक दिया, और उन्हे वल्कान प्रायद्वीप छोडनेके लिये मजबूर किया। वर्लिनकी सधि जो हमारे अनुकूल नही हुई, उसकी भी खबर उन्होने सारे एसियामें फैलाई है।"

जनवरी १८८० ई०मे जार अलेक्सान्द्र II ने पीतरबुर्गमें युद्ध-परिषद्की। सबसे कठिन समस्या थी यातायातकी। और देरतक रुका नही जा सकता था, इसलिए उसी साल तेक्को (तुर्कमानो)के विरुद्ध अभियान भेजा गया। बारह हजार ऊट रसद ढोनेके लिये रक्खे गये, जिनमे हजारो रास्तेमें मर गये। रेगिस्तानमे रसद पहुचाना बहुत मुश्किल था, इसीलिये ग्योक-तेप्पेका मुहासिरा हटाना पडा था, लेकिन अब रेलोके प्रचारसे यातायातकी समस्या उतनी मुश्किल नही थी, यद्यपि उसपर खर्च बहुत पडता था। रूसियोने रेलवे लाइन बनानेके लिये एक खास बटालियन सगठित की, और १८८० ई०के अन्ततक कास्पियनके पूर्व उजुनअदासे मुल्लाकारीतक तेरह मीलकी रेलकी सडक बना दी। काकेशसके सेनानायकके अधीन जेनरल स्कोवेलेफ अभियानका मुख्य-सचालक था। दगिल-तेप्पेके तजर्वेसे मालूम हो चुका था, कि तुर्कमानोंके नमदेके तम्बुओपर आग जल्दी असर नही करती। इसके लिये स्कोवेलेफने पेट्रोल भरे गोले तैयार किये। क्रास्नोवोद्स्कमें यद्यपि पासमे समुद्र लहरें मार रहा था, लेकिन उसके खारे समुद्रपर पशु-प्राणी गुजारा नही कर सकते थे। इसके लिये वहापर एक बहुत बडा कारखाना बनाया गया, जिसका काम था पानीको भाप बना फिर जलके रूपमें परिणत करके प्रतिदिन साढे सात लाख गैलनके मीठा पानी देना। स्कोवेलेफ

मई १८८० ई०में ही क्रास्नोवोद्स्क पहुचकर तैयारी करने लगा। काकेशससे वारह हजार सेना और सौ तोपे आयी। सितम्बर १८८० ई०के आरम्भतक तैयारी प्राय पूरी हो गई।

रूसियोने १८ दिसम्बरको वामिर, एगमनवातिर (समुस्कं) पर अधिकार किया। पता लगा, कि शत्रुका मुख्य जमाव दगिल-तेप्पेमें है। दगिल-तेप्पा प्राय एक वर्गमीलमें फैली आयताकार भूमि थी, जिसके चारो ओर अठारह फुट मोटी और दस फुट ऊची दीवार थी, जो वाहरसे दस फुट होते हुये भी भीतरसे पद्रह फुट ऊची थी। दीवारके वाहर चार फुट गहरी खाई थी। तेप्पेके पश्चिमोत्तरमे गोल टीला था, जिसे तुर्की भापामे "दगिल-तेप्पा" कहते हैं, उसीके कारण इस स्थान-का यह नाम पडा। इसी गोल टीलेपर ईरानियोसे पकडी पुराने ढगकी एक तोप रखी हुई थी। तीस हजार तेक्के योद्धा अपनी स्वतत्रताके लिये प्राण देनेको तैयार थे। पानीका यहा कोई दुख नही था, क्योकि पाससे एक नदी वहती थी। रूसी पानीकी धारको चाहत, तो वदल सकते थे, लेकिन तव उन्हे इतनी भारी सख्यामे शिकार एक जगह नही मिलता। एक सप्ताहतक आगे वढना रोककर २४ दिसम्बरको रूसियोने जाच-पडताल भर की। १८८१ ई०के नववर्पके दिन यगीकलापर भीपण आक्रमण शुरू हुआ। कला एक पहाडीकी जडमें था। आठ हजार रूसी सैनिक तीन स्तम्भोमें विभक्त हो वावन तोपो और ग्यारह मशीनगनोको लिये आगे वढे। दक्षिणवाले स्तम्भने पीछे और सामने दो ओरसे भयकर गोलावारी की, जिससे तेक्के यगीकला छोड दगिल-तेप्पेकी सेनामें जाकर मिलनेके लिये मजबूर हुये। उन्होने रातको फिर यगीकलाको लेनेका प्रयत्न किया, लेकिन रूसी तोपोने उन्हे मार भगाया। ३ जनवरीको रूसियोन अपने कैम्पको यगमनवातिरसे यगीकलामें परिवर्तित कर दिया। अगले दिन शत्रुओके सामने आठ सौ गजपर रूसियोकी पक्ति खडी थी। रूसियोके घिरावेको तोडनेके लिये मेर्वसे पाच हजार और तुर्कमान आये, जिन्होने रूसियोकी पक्तिपर छापा मारा। पागलकी तरह वह रूसी सनिकोपर पडे और गोलियोसे जलते-भुनते भी कितनोने एक हाथसे रूसी सैनिकोकी वन्दूकोको पकडा और दूसरे हाथसे अपनी तेज तलवारो द्वारा शत्रुओकी गर्दनें काटी। सारी भूमि लोगोके मुडो और कटे हुये अगोसे ढक गई। चारो तरफ "अल्लाह"की आवाज या रूसियोका "उरा" सुनाई पडता था। रूसियोके दाहिने पक्षपर तीन सौ तेक्के वहादुरोकी लाशे पडी थी। लेकिन, आधुनिक हथियारोके सामने अल्ला या यह वीरता क्या कर सकती थी?

४ जनवरी १८८१ ई०को दूसरी पक्ति तैयार की गई, जिसमें छव्वीस सौ सैनिक थे। सध्या-के ममय तेक्कोने छापा मारा तथा वाहरी खाइयोपर अधिकार कर लिया, और तोपचियोको काट-कर चार पहाडी तोपे, और रेजिमेटके तीन झडे भी अपने साथ ले गये। लेकिन, तुरन्त ही यगीकलासे कुमक आ गई, और तोप छोड वाकी चीजोपर फिर रूसियोने अधिकार कर लिया। झडप इसी तरह चलती रही। १० जनवरीको रूसी सेना तेक्कोकी वाहरी चौकियोपर अधिकार करनेमें मफल हुई। लेकिन आध घटे वाद ही तेक्कोने जवर्दस्त प्रत्याक्रमण किया। तोपचियोकी एक कपनीके टुकडे-टुकडे करके वह दो तोपोको खाइयोकी ओर खीच ले गये। रूसियोने भी नई कुमक पाकर उनके आक्रमणको निष्फल कर दिया। रातके अधेरेमें तेक्के रूसियोपर आक्रमण करते। १६ जनवरीकी रातको उन्होने अपना अन्तिम जवर्दस्त आक्रमण किया, जिसे रूसियोने वेकार कर दिया। १६ जनवरीको अपनी किलावन्दीके पूर्वी छोर-पर चौवीस गजके पासतक तेक्के ढकेल दिये गये। २० जनवरीसे उनका किला तोडा जाने लगा। किलेके भीतर नमदेके किवितकोपर पेट्रोलके गोले फेंके जा रहे थे। इन्ही तम्बुओमें सात हजार वच्चे और स्त्रिया थीं। तव भी वहादुर तेक्के तीन सप्ताहतक डटकर लडते रहे। अन्तिम आक्रमणके दिन जेनरल स्कोवेलेफने अपने मैनिकोको आदेश देते हुये कहा था—"हमें एक वडे ही वहादुर और भारी आत्ममम्मानवाले लोगोसे मुकाविला करना पड रहा है।" अतिम प्रहारके समय रूसियोने औरतो और वच्चोको हटानेके लिये कहा। तेक्कोने समझा, ये हमारी स्त्रियो और वच्चोको अपने लिये लेना चाहते है, इसलिये उनका जवाव था—"अगर तुम हमारी स्त्रियो और वच्चोको लेना चाहते हो, तो हमारी लाशोपरसे होकर ही उन्हें पा सकते हो।" २४ जनवरीके ७ वजे

सवेरे किलेपर चारो तरफसे टूट पडनेके लिये रूसियोके चार सेना-स्तम्भ वनाये गये। सकेत पाते ही एक भारी धडाका हुआ, और तीन सौ फुटकी दीवार गिर गई। अब तेक्कोको पता लग गया, कि प्रतिरोध करना असम्भव है। दूसरे ही क्षण सेना-स्तम्भ भी उनपर टूट पडे और जरा ही देरमे भागते हुए घोडोके टापोकी धूल दिखलाई पडने लगी, जिनके पीछे-पीछे कुछ दूसरे भी शरणार्थी जा रहे थे। रूसियोकी आठ हजार सेनामेंसे वारह सौ मारे गये, लेकिन दगिल-तेप्पेपर जार-शाही झडा गड गया। रूसी सवारोने दस मीलतक तेक्कोका पीछा किया। तीस हजार तेक्कोमेंसे दस हजार काम आये। बच्चो और स्त्रियोपर रूसियोने हाथ नही छोडा। रूसी जेनरल जिन तेक्कोको वहादुर और भारी आत्मसम्मानी जाति मानता था, उन्हीके वारेमे एक पेंशन प्राप्त आई० सी० एस० अग्रेज एफ० एच० स्क्रीन लिखता है—"अलावके पास बैठके राजनीति वघारनेवाले लोग ग्योक-तेप्पेकी खून-खरावी और ओम्दुर्मानके घायल शत्रुओके कत्लको सभ्यताके खिलाफ कहेगे, लेकिन एसियाइयोके स्वभावका यदि थोडा भी परिचय हो, तो उन्हे मानना पडेगा, कि एसियाई वर्वरता और धर्मान्धताकी शक्तियोके ऊपर प्रहारका सबसे अच्छा उपाय क्रूरताकी नीति है।"

ग्योक-तेप्पामे मध्य-एसियाकी स्वतत्रताकी अन्तिम लडाई लडी गई। उसकी विजयके साथ मध्य-एसियापर जारशाहीका अखड शासन और शोषण स्थापित हुआ, जिसका अन्त वोल्शेविक-क्रातिके साथ हुआ, और उसके वाद तेक्के और दूसरे तुर्कमान अपने स्वतत्र तुर्कमानिस्तान गणराज्यके स्वामी वनकर एक आधुनिक सुसस्कृत जातिके रूपमे अपने समाज और देशका नव-निर्माण करते हुये आगे वढने लगे।

तुर्कमानोके सघर्षके वाद ईरानके शाहकी आखे खुली, और उसने रूसियोको हटानेकी कोशिश की, जिसका परिणाम हुआ अतरक नदीके वाये तट और मेर्वसे हाथ धोना।

६ अग्रेजोसे तनातनी

ग्योक-तेप्पेकी लडाईके वाद रूसियोको फिर हथियार इस्तेमाल करनेकी जरूरत नही पडी। दिसम्बर १८८ई०मे उन्होने एक सैनिक प्रदर्शन किया। ३१ जनवरी १८८४ ई०को मेर्वकी भिन्न-भिन्न वस्तियोके एक सौ चौवीस प्रतिनिधियोने अपने चार कवीलोके चार सरदारोकी प्रधानतामें एकत्रित हो महाराज्यपाल कमारोफके सामने जारके प्रति भक्तिकी शपथ ली। एक अफगान साहसीने तुर्कमानोमे विद्रोह फैलाना चाहा, जिसे ३ मार्चको रूसियोने दवा दिया। अगली मईमे काकेशसके महाराज्यपालने जीते हुये इलाकेका निरीक्षण किया। फिर थोडे ही दिनो वाद मेर्वसे ३६ मील दक्षिण योलतन-उपत्यकाके पचास हजार सारिकोने अधीनता स्वीकर की और उसके वाद गियाउर और सरख्शके वीचके कवीले भी रूसी-प्रजा वन गये। रूसकी दक्षिणी सीमा इस तरह आगे वढ अफगानिस्तानसे मिल गई। हिरातमे अग्रेजोने अफगानोको एक मजवूत किला वनानेमें मदद दी थी। वह कैसे रूसके इस वढावको पसद करते? एक अग्रेजी लेखकने रूस और इगलैण्डके इस समयके सघर्पके वारेमें लिखा है*—

"भारतीय प्रायद्वीपकी ऐसी भौगोलिक स्थिति है, कि कोई भी युरोपीय शक्ति तवतक इसपर अधिकार नही कर सकती, जवतक वह समुद्रपर प्रभुत्व न रखे। हमारी प्रतिष्ठाके लिये यह जरूरी है, कि हम ऐसे साम्राज्यपर अधिकार रक्खें, जो दुनियाके लिये आश्चर्य और ईर्ष्याकी चीज है। उसपर अधिकार करके हम नफा भी खूव उठा रहे है, हमारे कारखानोके लिये वहा वाजार है, और हमारे मध्यवर्गकी वेकार शक्तिके लिये वहा काम रक्खा है।

"इगलैण्डने रूसके कान्स्तन्तिनोपलके रास्तेको रोका। १८८४ ई०मे दुनियाकी कुजी दरे-दानियालको तुर्कोके हाथोमे रखनेके लिये इगलैण्डने रूसके खिलाफ तलवार उठाई और उसके एक-चौथाई शताव्दी वाद, जव कि रूसियोके हाथमें यह भव्य शिकार जाने ही वाला था, जारकी विजयिनी सेनाको इगलैण्डने पीछे हटा दिया। मानवता (?) का हरएक मित्र 'इगलैण्ड और रूस'की दो शक्तियोके वीचमे विरोधकी भारी खाईको देखकर अफसोस किये विना नही रहेगा।

*"जार और इगलैण्ड मित्र या शत्रु"

यदि दोनों एक हो जाय, तो वह एसियाको सभ्यता और दुनियाको शांति प्रदान कर सकते हैं।

"एसियाके लोग कास्पियनसे चीनतक, और साइबेरियासे ईरान तथा अफगानिस्तानकी सीमा-तक उससे कहीं अधिक सुख और स्वतंत्रताको भोग रहे है, जितना कि भारतीय राज्यके किसी भागके लोग। लेकिन वहा (रूसी एसियामें) अब भी २०वी सदीके आरम्भमें, भारी रक्षात्मक आयकर, अग्रेजी व्यापारकी रक्षाके लिये वाणिज्य-दूतोकी नियुक्ति, तथा युरोपियनोंके आने-जानेके ऊपर भारी रुकावट मौजूद है। सिवाय मशीनोके बलपर हम सदा भारतके स्वामी नही रह सकते है, उसीपर हमारा सिंहासन खडा है। हमारा राज्य यहा (भारतमें) कभी गहरी जड नही जमा सकता। मशीनोंके बिना हमारे पूर्वगामियोंकी तरह हमारा भी शासन खतम हुये बिना नही रहेगा। लेकिन मध्य-एसिया उतना घना नहीं बसा है, और वहाके लोगोका जीवनतल 'भारत'की अपेक्षा अधिक ऊचा है।

"हमें विश्वास है, कि यदि 'हमारे इगलैण्ड और रूस'—एसियाकी दोनो महाशक्तियों—के बीच खुले दिलसे कोई समझौता हो जाय, तो इससे सभ्यताको आगे बढनेमे सहायता मिलेगी।"

इन उद्धरणोंसे मालूम होगा, कि अग्रेज रूसियोके दक्षिणी बढावको पसद नही करते थे, लेकिन साथ ही वह जानते थे, कि दोनोंके संघर्षके कारण एसियामे कही युरोपियनोका शासन खतम न हो जाय, इसीलिये सीमाके निश्चित करनेके लिये दोनोकी ओरसे जुलाई १८८४ ई०मे एक सयुक्त कमीशन नियुक्त हुआ। रूसियोने पचदेहके मारिकोके रूसी-अधीनता स्वीकार करनेका हवाला दे माग पेश की, कि तुर्क जातिकी सीमा हमारी सीमा है, और अफगान-बस्तियोंसे अग्रेजोका प्रभावक्षेत्र माना जाय। लेकिन अग्रेज इसे माननेके लिये तैयार नही थे। अपने दावेको मजबूत करनेके लिए अग्रेजोंके शहपर इसी बीच अफगानोने आक्रमण करके बालामुर्गाव और पचदेह दोनो वादियो (उपत्यकाओ)को दखल कर लिया। इसके जवाबमें जेनरल कमारोफने पुले-खातून, जुल्फिकार डाडा और अक-रवातपर रूसी अड्डा गाड दिया, और फर्वरी १८८५ ई०मे पचदेह-वादीके छोरपर पुले-कश्तीको भी ले लिया। इगलैंडमे इसपर बडा गुस्सा प्रकट किया जाने लगा, और हिरातके किलेको मजबूत करनेके लिये अग्रेज इजीनियर भेजे गये, अफगानिस्तानमें हथियार और गोला-बारूद बडे परिमाणमें भेजा जाने लगा, और भारतके पश्चिमोत्तर सीमातपर जेनरल राबर्टकी अधीनतामे भारी सेना जमा की गई। पार्लयामेंटने एक करोड दस लाख पौंड सैनिक तैयारीके लिए मजूर किये। उधर रूसने भी एक भारी नौ-सेना जमा की, और चाहा कि भूमध्यसागरके अग्रेजी-व्यापार-मार्गको नष्ट कर दे। लेकिन दोनो साम्राज्योको यह समझनेमे देर नही लगी, कि आपसकी लडाईसे उनमे भारी क्षति उठानी पडेगी। अग्रेजोने अफगानिस्तानको रोका, और अप्रैल १८८६ ई०में दोनो देशोंके प्रतिनिधि पीतरबुर्गमे जमा हुए। रूसियोको हरीरूदका दाहिना किनारा जुल्फिकार दर्रेतक और पचदेहसे दक्षिण वागी-उपत्यका, जिसमें पचदेह हरितावली भी शामिल थी, मिली। इस प्रकार रूसी सीमा हिरातसे ५३ मीलपर पहुच गई, जिसके और हिरातके बीचमे कोई प्राकृतिक बाधा नही थी। लेकिन दूसरी तरफ रूसको अमीर-बुखाराके हाथमे वक्षुके बायें तटपर अवस्थित ख्वाजासालेके दक्षिणके सुन्दर चरागाहोको अफगानिस्तानको दिलवाना पडा। सयुक्त कमीशनने जितनी सफलतापूर्वक अपना काम किया था, उससे उत्साहित होकर १८९५ ई०में दूसरा सीमांत-कमीशन नियुक्त किया गया, जिसने पामीरमें अग्रेजी और रूसी प्रभावक्षेत्रोकी सीमा निर्धारित की। यह सीमा विक्टोरिया (जोर कुल) झीलके दक्षिणी किनारेसे शुरू होकर सरिकोल पर्वतमालाके मेरुदण्डपर होते चीनी सीमाततक पहुच मारिकोल पर्वतमालाकी एक ऊबड-खाबड और दुर्गम बाहीसे ६ मीलपर सनातन हिमवाले प्रदेशमे जाती है, जहापर कि कई पर्वतश्रेणिया आकर मिलती हैं। "इसी निर्जन एकात स्थानमें समुद्र तटसे बीस हजार फुटके ऊपर मनुष्योकी पहुचसे बिल्कुल बाहर तीन साम्राज्य—भारत (अग्रेजी), चीन और रूस मिलते हैं।"

२५ नवम्बर १८०० ई०मे जनरल कोपरकिनने अस्काबादमें अग्रेज यात्रियोके सामने भाषण करते हुए कहा था—"भीतरी उत्पात-झगडेकी सभावनाको खतम करनेके लिए हमने देशियोको बिना हथियारकर उन्हें शांतिपूर्ण जीवन स्वीकार करनेके लिए मजबूर करनेमें कोई

कसर नही उठा रक्खी है। ...अब एक अकेला यात्री भी कास्पियन तटसे साइबेरियाके सीमाततक, बिना जरा भी भयके यात्रा कर सकता है। (यहाका) व्यापारीवर्ग सरकारका सबसे बडा समर्थक है, जिसके बाद कृपक है। ...विरोध अब मुल्लाओके षड्यंत्र हीका रह गया है।"

७ रेल-निर्माण

तेक्कोके साथ युद्ध करनेके लिए तेरह मीलकी रेलवे लाइन बनकर कास्पियन तटसे रेलोका जाल शुरू हुआ। रेल-निर्माणके लिए खास तौरमे सगठित बटालियनने १८८३ ई०के अततक उसे कास्पियनसे १३५ मीलपर किजिल अरबततक बना दिया। मेर्वके ऊपर अधिकार हो जानेपर रेल बनानेमे और भी उत्साह हुआ, और अप्रैल १८८५ ई०के उकाजे (राजादेश) द्वारा रेलको आगे बढानेकी स्वीकृति दी गई। ३० जूनको काम शुरू हुआ। इस रेलवे लाइनके बनानेमे बाईस हजार तेक्के मजदूर काम करते रहे, और चौदह महीनेके भीतर रेल किजिल अरबतसे ३५२ मील मेर्वतक पहुच गई। मेर्वसे चारजूयकी लाइनपर काम अगस्त १८८६ ई०मे आरभ हुआ। इस लाइनको साठ मील रेगिस्तानमेसे जाना था। चार मासमे यह एक सौ एकतालीस मील लबी रेल भी तैयार हो गई। कास्पियन तटसे वक्षुके बाये किनारेपर अवस्थित चारजूय-तक अब ६६४ मील लबी रेल बनकर तैयार हो गई। वक्षु हमारी गगाकी तरह एक बडी नदी है, जिसका पाट चारज्यमे सवा मीलका है। नदीमे थोडा ही हटकर दोनो किनारोपर रेगिस्तान है, जो कि कराकुम और किजिलकुमके महान् रेगिस्तानके भाग है। आमू (वक्षु)पर पुल बनानेके लिए लकडियोके ३३३० बेडे रूससे लाये गये। पहला पाया जून १८८७ ई०मे बैठाया गया और काम इतनी तत्परतासे हुआ, कि छ महीनेके बाद जनवरी १८८८ ई०में वक्षुका पुल यातायातके लिये खोल दिया गया। यह पुल ४६००गज लबा था, जिससे २२७० गज चौडी जल-धारा बहती थी। सितबर १८८७ ई०मे वक्षु तटसे २१६ मीलपर अवस्थित समरकदतककी लाइन-पर काम शुरू हो गया, जिसे २८ मीलका रेगिस्तान पार करके कराकुलमे जरपशा-सिंचित उपत्यका मे पहुचना था। अतमे मई १८८८ ई०मे कास्पियनसे समरकदतक ८७९ मीलकी रेल तैयार हो गई। इस रेलवे लाइनपर प्रति मील औसत खर्च ६१४४ पौड (अस्सी हजार रुपया) आया था, जब कि हिंदुस्तानमे अग्रेजी कपनियोने रेलोपर प्रति मील अठारहसे बीस हजार पौंड खर्च किये। १८९५ ई०में समरकन्द और ताशकदके बीच रेल बननी शुरू हुई। उसके बाद अदिजान (फरगाना)की लाइन भी तैयार की गई। मेर्वसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्क तक १९२ मीलकी रेल बनी। कुश्कसे हिरात, गीरिश्क, कधार और चमन होते मध्य-एसियाकी रेलोको क्वेटामे पाकिस्तानी रेलोसे आसानीसे मिलाया जा सकता था, इस रास्ते कुश्क और चमनके बीच सिर्फ ६५० मीलकी लाइन बनानी थी। इस सारे रास्तेमे कोई दुर्लंघ्य बाधा नही है सिर्फ सुम्बान (चश्मेसब्ज) डाडेको पार करते लाइनको समुद्र तलसे ३४०० फुट ऊपर उठना पडता। चश्मेसब्जके डाडेस तीस मीलपर ही सब्जवार है।

८ अश्काबाद

कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्कसे ३२२.२५ मीलपर अवस्थित अश्काबादको रूसियोने अपना शासन-केंद्र बनाया, जिसकी स्थापना १८८३ ई०मे अकाल हरितावलीके सबसे चौडे तथा कोपेतदाग पर्वतमालाके सानुपर है। १८९९ ई०मे इसकी जनसंख्या सोलह हजार थी, जिसमे दस हजार सैनिक थे। अश्काबादसे नातिदूर कोपेतदागके पहाडोमे २६०० फुटकी ऊचाईपर फीरोजा और ३००० फुटकी ऊचाईपर खैराबाद मसूरी-शिमला-जैसे ठडे पहाडी नगर है, जहापर रूसी अफसर अपनी गर्मिया बिताया करते थे। अश्काबादका अर्थ आसुओकी नगरी या इश्काबादसे प्रेमनगरी भी हो सकता है।

९ मेर्व

यद्यपि यह ऐतिहासिक नगरी, ध्वसावशेषके रूपमें ही सही, मौजूद थी, लेकिन इसके पहले ही इश्कावादको शासन-केंद्र बनाया जा चुका था, इसलिये मेर्व एक छोटा-सा कस्बा ही रह गया, और उसे बोल्शेविक-क्रांतिके बाद ही आगे बढनेका मौका मिला।

स्रोत-ग्रन्थ

१ ओचेर्क इस्तोरिइ तुर्कमान्स्कओ नरोदा (व. व. बर्तोल्द, १९२८)
२ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्वेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७२-७७)
३. तुर्कमानिया इ येये कुरोर्त् नया बगात्स्वा (व अ अलेक्सन्द्रोफ, मास्को, १९१०)
४. Heart of Asia (E. D Ross, London 1899)
५ History of Mongol (H. H. Howorth, London, 1876-88)
६. La rivalite anglo-russie en xxi siecle en Asie (A. M. F Rouire, Paris, 1908)

भाग ५

बोल्शेविक-क्रांति

अध्याय १

रूसमें क्रांति

१. लेनिन रूसमे (१९१७ई०)

यद्यपि जार अब तख्तसे उतार दिया गया था, और लोग बडी-बडी आशा कर रहे थे, लेकिन फर्वरी-क्रातिके परिणामस्वरूप जिन लोगोके हाथमे शासन गया, वह अब पुराने स्वार्थोंको उसी तरह सुरक्षित रखना चाहते थे, जिस तरह जारशाही करती आ रही थी। औद्योगिक पूजीवादकी स्थापनाके बाद भी रूसमें अभीतक सामन्तशाही स्वार्थोके हाथमे ही सैनिक और असैनिक शक्ति थी। फर्वरी-क्रातिने पूजीपतियो और मध्यवर्गको ऊपर आनेका मौका दिया, जो पश्चिमी युरोपकी तरह शुद्ध पूजीका शासन मजबूत करना चाहते थे। लडाईने लोगोकी जैसी आर्थिक अवस्था कर डाली थी, और किसानो और मजदूरोके सघर्षोने जो भावनाये पैदा कर दी थी, उनके लिये अस्थायी सरकारने कुछ नही किया। लेनिनके अनुसार अस्थायी सरकार "रूसके लोगोको न शाति दे सकी, न रोटी, न पूर्ण स्वतत्रता", बल्कि जारशाहीके हट जानेसे पश्चिमी दोस्त कही कोई दूसरा अर्थ न लगाने लगे, इसलिये अस्थायी सरकारने युद्धको पहले हीकी तरह सरगर्मीके साथ चालू रखनेका विश्वास दिलाया। यही नही, बल्कि उसीके लिये छ अरब रूबलके 'स्वतत्रता-ऋण'के उठानेका प्रयत्न किया। भूमि अब भी जमीदारोके हाथमे अछूती रही, पूजीपतियोके हाथसे कारखानोको जरा भी इधर-उधर करनेकी कोशिश नही की गई। कुर्स मोगिलेफ और पेर्मकी गुर्बनियो (प्रदेशो)में किसानोने कुछ करना चाहा, तो मार्चमें उनके ऊपर सेना भेजी गई। जारशाही अफसर और पुराना शासन-यत्र वैसा ही अक्षुण्ण रक्खा गया, जिस तरह भारतसे अग्रेजोके जानेके बाद हिन्दुस्तानमे। बडे-बडे जमीदार और पक्के राजभक्त अब भी सर्वेसर्वा थे, समाजवादी क्रातिकारी दलका वकील करेन्स्की न्यायमत्री बना था। उसने जारशाही समयके सरकारी वकीलोको अपनी जगहपर कायम रक्खा। और तो और, पुरानी उपाधियो—राजा, कौण्ट, बारोन आदि—को भी जैसे-का-तैसा ही बनाये रक्खा। नई सरकारने जारके परिवारको सुरक्षित रखनेके लिये उसे इगलैड भेजनेकी कोशिश की, लेकिन जबर्दस्त विरोध देख वैसा नही कर पायी। फर्वरी-क्रातिके बाद जो मूर्तिया सामने आईं और उन्होने जो रवैया अख्तियार किया, उसने बतला दिया, कि इनसे साधारण जनता-का कोई हित नही हो सकता।

लेनिनको जैसे ही फर्वरी-क्रातिकी खबर मिली, वैसे ही वह रूस पहुचनेके लिये बेकरार हो गये। लेकिन उनका नाम मित्रशक्तियोके खुफिया-विभागकी काली-सूचीमे दर्ज था। अग्रेज अपने प्रदेशमे होकर जानेकी आज्ञा देनेके लिये तैयार नही थे। सोवियतोकी मागसे मजबूर होकर अस्थायी सरकारके वैदेशिक विभागने सभी निर्वासित रूसियोको देश लौटनेके लिये मित्रशक्तियोको लिखा, लेकिन साथ ही यह भी कह दिया, कि अन्तर्राष्ट्रीयता-वादियोको न आने दिया जाय। इस प्रकार लेनिनका लौटनेका रास्ता बन्द था। वह लौटनेका कोई उपाय सोच रहे थे। उनको यह भी ख्याल आया, कि स्वीडनका पासपोर्ट लेकर जर्मनी-के रास्ते जाय, लेकिन उन्हे स्वीडिश भाषाका एक शब्द भी मालूम नही था। तब उन्होने गूगा बननेकी भी सोची। सब देखकर अन्तमे उन्हे यह साफ मालूम होने लगा, कि जर्मनीके रास्तेसे ही लौटा जा सकता है। रूसी निर्वासितो—विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी समाजवादियो

—के रूसमे लौटनेमे जर्मन अपना नुकसान नही समझते थे। इसीलिये स्वीजरलैडके समाजवादी प्लातेनके वहुत लिखा-पढी करनेपर जर्मनीने इस शर्तपर अपने देशके भीतरसे लेनिनको जानेकी आज्ञा दी, कि वह उसी खास ट्रेनमे जाय, जिससे दूसरे निर्वासित रूसी जायगे। वह न रास्तेमे उतरें, और न किसीसे वातचीत करें। लेनिनको तो रूसमे पहुचनेसे मतलव था, उन्होने इस शर्तको स्वीकार कर लिया और मुहरवन्द ट्रेनपर वैठ गये। जब फिनलैड और रूसकी सीमापर उनकी ट्रेन पहुची, तो वोल्शेविक नेताओने उन्हे देशकी परिस्थिति समझाई। पेत्रोग्रादके पास वेलोअस्त्रोफ स्टेशनपर १६ (३) अप्रैल १९१७ ई०को उन्हे उनके साथियोने देशकी परिस्थिति समझाई। जव वह पेत्रोग्रादके फिनलैड रेलवे स्टेशनपर पहुचे, तो हजारो फौजी सिपाही अपने प्रिय नेताके स्वागतके लिये पातीसे खडे सलामी दे रहे थे, सैकडो लाल झडे फहरा रहे थे। पताकोपर वडे-वडे अक्षरोमे "स्वागत लेनिन" लिखा था। एक हथियारवन्द गाडीपर खडे होकर लेनिनने एक छोटा-सा भाषण दिया, जिसको समाप्त करते हुये "समाजवादी क्राति जिन्दावाद"का नारा लगाया। १७ (४) अप्रैलको वोल्शेविकोकी एक वैठकमे लेनिनने अपने प्रसिद्ध निवन्ध "वर्तमान क्रातिमे सर्वहारोके सामने काम" को रक्खा, जिसमे लेनिनने वतलाया, कि यह सक्रातिकी अवस्था है, जिसके द्वारा शक्ति पूजीवादियोके हाथमे चली गई है। अव शक्तिको सर्वहारो और गरीव किसानोके हाथमें करते क्रातिकी दूसरी सीढीको पार करना है। लेनिनने यह भी कहा, कि लडाईसे हमे अपना हाथ एकदम हटा लेना चाहिये। इसे उनके सहयोगियोमेंसे भी कितनोने पसन्द नही किया। उनका कहना था—तव तो जर्मन वेधडक सारे रूसको दखल कर लेंगे और हम जारशाहीके फदेसे निकलकर जर्मनशाहीके हाथमें चले जायगे। लेकिन लेनिन अपने निश्चयपर दृढ थे—"अव जब कि रूसमे भाषण और लेखनकी पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त है, तो हमारा सबसे पहला काम है, शासनको कमकरो और गरीव किसानोके हाथमे लानेकी कोशिश करना। अस्थायी सरकारको हमे कोई मदद नही करनी चाहिये। यह पूजीवादियोकी सरकार साम्राज्यवादी छोड और हो ही क्या सकती है? . सोवियतोको भी कमकरो और किसानोके हाथमे होना चाहिये। जमीदारोकी जमीदारीको छीनकर किसानोको दे देना चाहिये। अलग-अलग वैकोका मिलाकर एक राष्ट्रीय वैंक वना देना चाहिये। यद्यपि समाजवादकी स्थापना तुरन्त नही हो सकती, लेकिन राष्ट्रकी उपज और उसके वितरणके साधनोको सोवियतो (पचायतो)के हाथमे होना चाहिये। जनतात्रिक समाजवादी (वोल्शेविक) पार्टीका नाम कम्युनिस्ट (साम्यवादी) कर देना चाहिये, जिससे मालूम हो कि हम पैरिसकम्यून (साम्यवादी समाज)के नमूनेपर साम्यवादी राष्ट्रकी स्थापना करना चाहते है।" लेनिनके यह विचार रूसके तत्कालीन राजनीतिज्ञोके ऊपर बमकी तरह पडे। वोल्शेविक नेता भी घवडा उठे—"यह शेखचिल्लीका महल है। वास्तविकतासे इसका कोई सवध नही है। लेनिन दस सालतक रूसको नही देख पाये, इसीलिये वह इस तरहकी ऊल-जलूल वाते करते है।"

लेकिन लेनिनकी वाते ऊल-जलूल नही थी, और न वह रूसी जनताकी नब्ज पहचाननेमे गलती कर सकते थे। उन्हे जितना ही अधिक जनतासे मिलनेका मौका मिल रहा था, उतना ही वह उन्हे अच्छी तरह समझानेमें सफल हो रहे थे। उस समय वोल्शेविक पार्टीका केन्द्र क्शेन्स्की भवनमे था, जिसकी सामनेकी सडकपर लेनिन रोज व्याख्यान देते थे। तीन महीनेतक लगातार उनकी कलम और जवान चलती रही। कुछ ही समयमें लेनिन अपनी वातोको मनवानेमें समर्थ हुये। पेत्रोग्रादके कमकर तो पहले हीसे उनपर अद्भुत विश्वास रखते थे, अब वोल्शेविक पार्टीके नेता भी उनसे सहमत हुये। वह देख रहे थे, कि अस्थायी सरकारके जोर देनेपर भी सैनिक मैदान छोडकर भागते जा रहे है, जर्मन फौजे आगे बढती आ रही है। ऐसी अवस्थामे अच्छी शर्तोपर जर्मनीसे सुलह कर लेना ही अच्छा है। अप्रैलमे वोल्शेविक पार्टीकी सातवी अखिल रूसी काग्रेस हुई, जिसमें भी एक प्रस्ताव पास करके माग की गई, कि जमीदारोंसे जमीन छीनकर किसान-कमेटियोके हाथमें दे दी

जानी चाहिये। इसी कान्फ्रेंसमे स्तालिनने जातियोकी समस्यापर प्रकाश डालते हुए कहा था, कि सभी जातियोको आत्म-निर्णयका अधिकार मिलना चाहिये, यदि वह रूससे अलग होना चाहे, तो उसके लिये भी उन्हे स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये। ३ और ४ मई (२० और २१ अप्रैल)को अस्थायी सरकारकी साम्राज्यवादी नीतिके विरुद्ध पेत्रोग्रादमे एक लाख आदमियोने प्रदर्शन किया। इसके विरुद्ध पूजीवादियोने सैनिक अफसरो, विद्यार्थियो, दूकानदारोका जलूस निकाला, जिसका नारा था "अस्थायी सरकारमे विश्वास"। पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्रके कमाडर जेनरल कोर्निलोफने हुक्म दिया था, कि मजदूरोके प्रदर्शन पर सेना गोली चलाये, लेकिन सिपाहियोने वैसा करनेसे साफ इन्कार कर दिया।

२ करेन्स्की सरकार

१५ (२) मईको अस्थायी सरकारमे कुछ परिवर्तन हुआ, और अब मन्त्रिमडलमे मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियोकी प्रधानता थी। समाजवादी क्रातिकारी नेता करेन्स्की अब युद्धमन्त्री था। उसने जर्मनीके खिलाफ युद्धको और भी जोरसे चलानेका प्रयत्न किया, लेकिन रूसी जनता इसके लिये तैयार नही थी, प्राचीनपथी अत्याचारी जारशाही गुलामोकी बातोमे पडकर वह और लडनेके लिये सन्नद्ध नही थे। बोल्शेविक इस वक्त वही कर रहे थे, जिसे रूसी जनता चाहती थी। अबतक बोल्शेविकोका प्रभाव पेत्रोग्रादके मजदूर-सगठनोमें बहुत बढ गया था। इसका परिणाम यह हुआ, कि मजदूरोने सोवियतोके नये चुनावमे मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारी प्रतिनिधियोको हटाकर बोल्शेविकोको निर्वाचित किया। सोवियतोमे ही नही, मजदूर सभाओमें भी, विशेषकर फैक्ट्री कमेटियोमे, बोल्शेविकोकी प्रधानता हो गई। १२ जून (३० मई) को पेत्रोग्रादमे फैक्ट्री कमेटियोकी पहली काग्रेस हुई, जिसके तीन चौथाई प्रतिनिधियोने बोल्शेविको-के पक्षमे अपनी राय दी। गावो और शहरोसे लेनिन और बोल्शेविक पत्रिका 'प्रावदा'के पास हजारो पत्र आते रहते थे। सिपाहियोने अपने एक पत्रमे लिखा था—"साथी, मित्र लेनिन, याद रक्खो, कि हममेसे एक-एक आदमी जहा है, वहा तुम्हारा अनुगमन करनेके लिये तैयार है। तुम्हारे विचार ठीक किसानो और मजदूरोके सकल्पको प्रकट करते है। सोवियतोकी प्रथम अखिल रूसी काग्रेस जून १७ मे हुई, जिसके हजार प्रतिनिधियोमे एक सौ पाच ही बोल्शेविक थे, लेकिन अब वह इतने प्रभावित हो गये थे, कि उन्होने बोल्शेविकोकी नीतिका समर्थन किया। जिस समय काग्रेस हो रही थी, इसी समय बोल्शेविक पेत्रोग्रादके मजदूरो और सैनिकोके एक भारी प्रदर्शनकी तैयारी कर रहे थे। इसके नारे थे—"सभी शक्ति सोवियतोको", "पूजीवादी दसो मन्त्री मुर्दाबाद", "रोटी, शाति और स्वतन्त्रता"। मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियोको भय लगा, कि इससे बोल्शेविको-का प्रभाव और भी बढ जायगा, इसलिये उन्होने तीन दिनतक सभी तरहके प्रदर्शनोको बद रखने-का प्रस्ताव पास कराया, साथ ही पेत्रोग्राद सोवियतकी कार्यकारिणी समितिने १ जुलाई (१८ जून) को एक साधारण प्रदर्शन करनेका प्रस्ताव पास किया, जिसके द्वारा वह "अस्थायी सरकारमे विश्वास"का नारा लगवाना चाहते थे। बोल्शेविकोने प्रदर्शन करना मजूर किया, लेकिन उसमे उन्होने अपने नारे लगवाये। उस दिनके प्रदर्शनमे चार लाखसे अधिक कमकरोने भाग लिया। मेन्शेविक और समाजवादी-क्रातिकारी जो चाहते थे, वह नही हुआ और प्रदर्शनने अस्थायी सरकारमे अविश्वासके जलूसका रूप ले लिया।

अप्रैल १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिका भी युद्धमे शामिल हो गया था, लेकिन तबतक इगलैड और अमेरिकाकी हालत बुरी हो गई थी। यदि पूर्वी मोर्चेपर रूसी भी प्रतिरोध बन्द कर देते, तो वह कुछ नही कर सकते थे। इसीलिये वह करेन्स्कीपर जोर दे रहे थे। जुलाईमे मन्त्रिमडलमे परिवर्तन होकर करेन्स्की प्रधान-मन्त्री बन गया। करेन्स्कीने जोर देकर आक्रमण करवाया, लेकिन रूसी सेनाको तार्नोपोलमे बुरी तरहमे हारकर जल्दी ही हटनेके लिये मजबूर होना पडा। दस दिनके आक्रमणमे साठ हजार रूसी हताहत हुये। लेकिन इससे क्या ? रूसी पूजीवादी अपने पश्चिमी भाई-बन्दोके दामनको पकडे रहना चाहते थे। अभीतक अस्थायी

मन्त्रिमडलका काम बहुत कुछ मेल-जोलके साथ चल रहा था, लेकिन अब प्रधान-सेनापति कोर्निलोफ और प्रधान-मन्त्री करेन्स्कीमे झगडा हो गया। सितम्बरके आरम्भमें कोर्निलोफ कई दूसरे सेनापतियो-की सहायतासे करेन्स्कीको अल्टीमेटम दे सेना ले पेत्रोग्रादपर कब्जा करनेके लिये चल भी पडा। करेन्स्की जनतामे डरता था, लेकिन अब उसकी मदद लिये विना कोई चारा नही था। कोर्नि-लोफसे मुकाविला करनेके लिये सबसे आगे ये बोल्शेविक। करेन्स्कीने अपना नया मन्त्रिमडल बनाया, इसमे भी नरमदली ही अधिक थे, जिनमे जेनरल वेर्खोव्स्की और एडमिरल वेर्देव्स्की भी थे। यह दोनो समाजवादी नही थे, तो भी उन्होने अपने साथी मन्त्रियोसे कहा, कि सेना और नही लड सकती, इसलिए लडाई बन्द कर देनी चाहिये और सैनिकोको युद्धक्षेत्रसे हटा लेना चाहिये। लेकिन मित्रशक्तियोके पिट्ठू करेन्स्की और उसके साथियोने उनकी बात नही मानी।

युद्धसे प्रति दिन चार करोड रूबलका खर्च देशके मत्थे पड रहा था। यह पैसा कहासे आये? सरकारने अन्धाधुन्ध कागजके नोट छापकर उसे पूरा करना चाहा, जिसका परिणाम हुआ सभी चीजोके दामका अप्रत्याशित रूपसे बढना--मुद्रास्फीति। लोग अपने वेतनसे जीविका नही चला सकते थे। साथ ही कारखानोके लिये कच्चा माल और ईंधन तथा मजदूरोंके लिये रोटी मिलनी मुश्किल हो गई। रेल और यातायातके दूसरे साधन भी ठप हो गये। मिले और कारखाने बेकार हो गये। मईमे १०८ कारखाने जिनमें ८७०० मजदूर काम कर रहे थे, जूनमें १२५ कारखाने (३८४५५ आदमी), जुलाईमे २०६ कारखाने जिनमे ४७७५४ मजदूर काम करते थे, बन्द हो गये। इस प्रकार मईमें जहा कारखानोके बद होनेसे ८७०० मजदूर बेकार थे, वहा जूनमे ३८४५५ और जुलाईमे ४७७५४ मजदूर बेकार हो गये। इस बेकारीने अस्थायी सरकारके विरुद्ध लोगोके भावोको और भडका दिया। इसीलिये कोई आश्चर्य नही, यदि १७ (४) जुलाईको पाच लाख मजदूरोने अस्थायी सरकारके विरुद्ध जब-र्दस्त प्रदर्शन किया। मेन्शेविक और समाजवादी क्रातिकारी देख रहे थे, कि वह लोगोपर अपने प्रभावको खोते जा रहे है, और अधिक समयतक वह शासनको अपने हाथमें नही रख सकेगे। इसलिये उन्होने गोलीसे लोगोकी हिम्मत तोडनेकी कोशिश की। १७ (४) जुलाईको युद्धक्षेत्रसे लौटाकर मगाये गये सैनिक अफसरो और कसाकोने प्रदर्शनकारियोपर गोलिया चलाई, अगले दिन भी वह गोलिया चलाते रहे। उन्होने बोल्शेविक पत्रिका 'प्रवदा'के कार्यालयपर आक्रमण करके उसे तोड-फोड दिया। वह लेनिनको पकडनेके लिये उनकी जगहपर भी पहुचे, लेकिन तबतक लेनिनको वहासे हटा दिया गया था। वह पेत्रोग्रादसे दूर एक जगलमें झोपडीके भीतर रहते थे। बोल्शेविक पार्टी अब आधी गैरकानूनी हो चुकी थी। करेन्स्कीकी सरकार लेनिनपर 'देशद्रोह'का अपराध लगा रही थी। रूइकोफ, कामेनेफ और त्रोत्स्की-जैसे ढिलमिलयकीन क्रातिकारियोने जोर दिया, कि लेनिनको आकर अदालतमे अपनी पैरवी करनी चाहिये, लेकिन बोल्शेविकोने इसका विरोध करते हुये कहा—"वह लेनिनको पकडकर जेल नही ले जायगे, बल्कि रास्तेमे ही मार डालेंगे।" इस दूर-दर्शिताका समर्थन इतिहासने किया। बोल्शेविक-क्राति लेनिनके विना बहुत निर्बल हो जाती, उस महान् प्रतिभाके प्राणोकी रक्षा उस समय इसी दूरदर्शितासे हो सकी। ८ अगस्त (२६ जुलाई)को बोल्शेविक पार्टीकी छठी काग्रेस पेत्रोग्रादमें शुरू हुई। पुलिसके डरके मारे काग्रेस गुप्त रीतिसे हो रही थी, तब भी लेनिनका उसमें आना खतरेसे खाली नहीं था, इसलिये वह नहीं आ सके। इसी काग्रेसने स्तालिनके प्रस्तावको स्वीकार करते हुये बोल्शेविकोके आर्थिक प्रोग्रामका समर्थन किया—जमींदारोंकी जमीदारियोको जब्त किया जाय, सभी भूमिको राष्ट्रीय, सभी बैको और बडे-बडे उद्योग-धधोको राष्ट्रीय बना दिया जाय, और उत्पादन और वितरणपर कमकरोका अकुश हो। इसी काग्रेसने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारीका काम किया।

२५ (१३) अगस्त १९१७ ई०को राज्यपरिषद्की बैठक मास्कोमे बुलाते हुये करेन्स्कीने चाहा कि उनके द्वारा सैनिक अधिनायकत्व कायम करके अपने शासनको मजबूत कर दिया

जाय। बोल्शेविक भी कच्चे गुइये नही थे। मास्को बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिने उसी दिन चार लाख मजदूरोका प्रदर्शन सगठित किया, सभी जगह मजदूरोने हड़ताल कर दी। राज्यपरिषद्को बिजलीकी रोशनी विना अपनी बैठक करनी पडी। अगले दिन जेनरल कोर्निलोफ मास्कोमे आया। वहाके पूजीपतियोने उसका सरकारी तौरसे स्वागत करनेका प्रबन्ध किया, लेकिन राज्यपरिषद्वालोने खतरेको समझ लिया, इसलिये सैनिक अधिनायकत्वकी घोषणा करनेकी उन्हे हिम्मत नही हुई, और कोर्निलोफको खाली ही हाथ लौट जाना पडा।

रूसकी इस स्थितिको देखकर मित्रशक्तिया घबरा रही थी। वह कभी करेन्स्कीकी पीठ ठोकती, और कभी प्रधान-सेनापति कोर्निलोफकी। उन्होने कोर्निलोफको पाच अरब रूबल कर्ज देनेका वचन इस शर्त पर दिया, कि रूसमे एक मजबूत सरकार कायम हो जाय। लेकिन मजबूत सरकार कायम करना कोर्निलोफके बसकी बात नही थी। कोर्निलोफने जब पेत्रोग्रादको हाथसे बाहर जाते देखा, तो १ सितम्बर (१९ अगस्त)को उसने रीगाको जर्मनोके हाथमें समर्पण कर दिया, जिसमे कि उनकी सेनाये सीधे पेत्रोग्राद पहुच जाय। करेन्स्कीसे कोर्निलोफने यह भी माग की, कि सारी सैनिक और असैनिक शक्ति हमारे हाथमे दे दो, फिर हम पेत्रोग्रादके कमकरोको ठीक कर लेंगे। करेन्स्कीको अब जनताके गुस्सेका भी ख्याल करके और अपने लिये उपस्थित डरकी वजहसे भी कोर्निलोफको प्रधान-सेनापतिके पदसे हटाना पडा, लेकिन कोर्निलोफने आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया और ७ सितम्बर (२५ अगस्त)को उसने पेत्रोग्रादके विरुद्ध एक सेना जेनरल क्रीमोफकी अधीनतामे भेजी। अब घबराये हुये करेन्स्की और उसके सहयोगियोको बोल्शेविकोके सामने सहायताके लिये हाथ पसारनेके सिवा कोई रास्ता नही रह गया। बोल्शेविकोने इस वक्त अपनी सूझ और सगठनका परिचय दिया, जिसके कारण कोर्निलोफकी बुरी हार हुई। जेनरल क्रीमोफने आत्म-हत्या कर ली। कोर्निलोफ, देनिकिन और कितने ही दूसरे जेनरल गिरफ्तार कर लिये गये, लेकिन करेन्स्की बोल्शेविकोसे और भी ज्यादा डरता था, इसलिये इन देशद्रोही जेनरलोके भाग जानेमे कोई दिक्कत नही हुई। कोर्निलोफके पराजयके बाद बोल्शेविकोका लोहा शत्रु, मित्र और उदासीन सभी मानने लगे। मजदूरो और गरीबोमे उनका प्रभाव बहुत बढ गया। सोवियतोके सगठन उनके हाथमें आने लगे। १३ सितम्बर (३१ अगस्त)को पेत्रोग्रादके कमकरो और सैनिकोके प्रतिनिधियोकी सोवियतने बहुमतके साथ बोल्शेविक प्रस्तावको पास किया। १८ (५) सितम्बरको मास्कोकी सोवियतने भी वैसा ही किया। इस प्रकार राजनीतिक राजधानी पेत्रोग्राद और औद्योगिक राजधानी मास्को दोनोकी सोवियते बोल्शेविकोके हाथमे आ गई। सितम्बर-अक्तूबरके बीचमे सदस्योकी सख्या और प्रभाव दोनोमे लेनिनकी पार्टी दिन-दूनी रात-चौगुनी जनताके विश्वासको पाती गई। अप्रैल १९१७ ई०मे जहा उसके सदस्योकी सख्या अस्सी हजार थी, वहा अगस्तके अन्तमे वह ढाई लाख और अक्तूबरके मध्यमे चार लाख हो गई। कही भी हडताल करा देना या बडे-बडे प्रदर्शन निकाल देना उनके बाये हाथका खेल था। देशमे जो क्राति मची हुई थी, उसमे सैनिक भी शामिल थे। वह अपने गावोमे सबधियोको उसके बारेमे चिटठी लिखते, जिससे किसानोने जमीदारीके खेतोको छीनना शुरू कर दिया। करेन्स्कीकी सरकारने जमीदारोकी रक्षाके लिए अपने कमजोर हाथोको बढाते हुये किसान-समितियोके सदस्योको गिरफ्तार करनेकी कोशिश की, लेकिन उसके पास इतनी शक्ति कहा थी?

विद्रोहकी तैयारिया—सितम्बरमे लेनिन हेलसिकी (फिनलैंड)मे छिपकर रहे थे, जहासे वह बराबर बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिके पास अपने सुझाव भेजा करते थे। २५ (१२) और २७ (१४) सितम्बरको लेनिनने केन्द्रीय समितिको दो बडे ही महत्वपूर्ण पत्र भेजे थे—"बोल्शेविकोको अवश्य अधिकार हाथमे लेना चाहिये" और "मार्क्सवाद और विद्रोह"। पहले पत्रमें लेनिनने बतलाया था, कि पेत्रोग्राद और मास्कोकी सोवियतोमे अपना बहुमत

स्थापित हो जानेपर बोल्शेविकोंके लिये अधिकार हाथमे लेना मुश्किल नही है। "पार्टीके कर्तव्यको अच्छी तरह साफ कर देना चाहिये। पेत्रोग्राद और मास्कोमे सशस्त्र विद्रोह, अधिकारको हाथमें लेना, और सरकारको निकाल बाहर करना—यह काम आजका हमारा प्रोग्राम होना चाहिये।" लेकिन अभी भी बोल्शेविक नेताओमे कुछ ऐसे लोग थे, जो इतने बडे कदमको उठानेमे भारी खतरा समझते थे। लेकिन खतरा लिये विना क्या कभी कोई बडा काम किया जा सकता है? केन्द्रीय समितिने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारिया बडी तेजीसे शुरू कर दी। पेत्रोग्राद-सोवियतकी एक क्रातिकारी सैनिक समिति स्थापित की गई, जो विद्रोहका सचालन-केन्द्र थी। पेत्रोग्रादमें उस समय बारह हजार हथियारबन्द लाल गारद मौजूद थे। निश्चय हुआ, कि उनकी सहायताके लिये हेलसिकीसे बाल्तिक नौसैनिक बेडेके नाविकोंको भी बुलाया जाय। सिर्फ पेत्रोग्राद हीमे नही, दूसरी जगहोपर भी विद्रोहकी तैयारिया करना जरूरी समझा गया। दोनेत्स-उपत्यकामें वोरोशिलोफ, खार्कोफमे अत्योंम सेर्गेयफ, वोल्गा-प्रदेशमे कुइविशियेफ, उरालमें ज्दानोफ, पोलेसिये इलाकेमे कगानोविच, इवानोवो-वोज्नेसेन्स्कमे म० व० फ्रुन्जे, उत्तरी काकेशसमें स० म० किरोफ सशस्त्र विद्रोहके सचालक-नियुक्त हुये।

जिस समय इस तरह जबर्दस्त तैयारी की जा रही थी, उसी समय त्रोत्स्की और कुछ दूसरे ढिलमिलयकीन बोल्शेविक-नेताओंने अस्थायी सरकारको यह जाननेका मौका दे दिया, कि ७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) १९१७ ई०को—जिस दिन कि सोवियतोकी दूसरी काग्रेस शुरू होनेवाली थी—विद्रोह शुरू होनेवाला है। करेन्स्की सरकारने उसे दबा देनेका निश्चय किया। बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिका केन्द्र स्मोल्नी प्रतिष्ठान था। प्रतिक्रातिके सचालकोंने योजना बनाई, कि स्मोल्नीपर अधिकार करके बोल्शेविक नेताओको पकड लिया जाय।

३. राजधानीपर अधिकार

६ नवम्बर (२४ अक्तूबर)को एक खुली मोटर लारीपर सरकारपक्षी कादेतोंकी टुकडी 'रबोची-पुत' (कमकरपथ)की नई कापीको जब्त करनेके लिये उसके आफिसमें पहुची—'प्रावदा' इस समय इसी नामसे निकल रही थी। खबर लगते ही क्रातिकारी सैनिक एक सशस्त्र कारमे वहा पहुच गये, और उन्होंने कादेतोंको भागनेके लिये मजबूर किया। 'रबोची-पुतमे' उस दिन "हमे क्या चाहिये"के हेडिंगसे स्तालिनका एक लेख छपा था, जिसमें कहा गया था—"अब वह समय आ गया है, जब कि और देरी करना क्रातिके लिये खतरनाक होगा। जमीदारो और पूजीपतियोकी वर्तमान सरकारकी जगह हमें मजदूरो और किसानोकी सरकारको अवश्य कायम करना है।" अगले दिन सोवियतोंकी काग्रेसके उद्घाटनके शुरु होते ही कार्रवाई करनेका निश्चय करके क्रातिकारी सैनिकोंको तुरन्त विद्रोह करनेकी हिदायत दी गई। ६ नवम्बर (२४ अक्तूबर)के सबेरे क्रातिकारी सैनिक समितिने अपनी सैनिक टुकडियोको कार्रवाईकी तैयारीके लिये आज्ञा दे दी, और यह भी, कि राजधानीकी ओर आनेवाली हरएक सैनिक टुकडीपर निगाह रक्खी जाय। उसने बाल्तिक नौसैनिक बेडेके युद्धपोतो और नौसैनिकोंको मददके लिये बुलानेका भी निश्चय कर लिया, और हेलसिकीसे बाल्तिक नौसैनिक बेडेकी सोवियतोकी केन्द्रीय समितियोको पुराने सकेतके अनुसार तार दे दिया—"नियमावली भेजो", जिसका अर्थ था विद्रोह आरम्भ हो गया, पोतो और आदमियोंको भेजो। ६ नवम्बरको ही एक और भी जबर्दस्त सैनिक शक्ति क्रातिकी सहायताके लिये राजधानीके भीतर प्रविष्ट हुई, जब कि लेनिन मजदूरके भेसमें चेहरा बाधे, एक साथीके साथ स्मोल्नीमे पहुचे। स्मोल्नीकी रक्षाके लिये पूरा इन्तिजाम कर लिया गया था, क्योकि वही क्रातिका प्रधान सचालनमडल, क्रातिके दिमागका केन्द्र था।

उसी दिन पीतर-और-पालके किलेके हथियारखानेने हथियार लेकर कितने ही सैनिक बोल्शे-

विकोकी तरफ चले आये थे। आधी रातसे थोडी देर बाद केन्द्रीय टेलीफोन-आफिस, राज्यबैंक, बडा डाकखाना, सभी रेलवे-स्टेशन और मुख्य सरकारी कार्यालय बोल्शेविक क्रांतिकारियोके हाथमें थे। क्रांतिकारी सैनिक समितिने आज्ञा दी, कि सैनिकपोत (क्रूजर) आरोरा नेवामे ऊपरकी ओर बढकर हेमन्त-प्रासादके पास जाये। आरोराके कमाडरने यह कहकर हुक्म माननेसे इन्कार किया, कि नेवा नदीमें पानी पर्याप्त नही है। इसपर नौसैनिकोने थाह लिया, तो पानी काफी गहरा देखा। उन्होंने कमाडरको गिरफ्तार कर लिया और वह युद्धपोतको अस्थायी सरकारके अतिम शरण-स्थान जारके भव्य महल हेमन्त-प्रासादके पास ले गये। आरोराकी तोपें अब उस प्रासादकी ओर मुह किये तैयार थी। विद्रोह पहलेसे बनाई हुई सूक्ष्म योजनाके अनुसार चल रहा था। ७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)के ९ बजे सबेरे विद्रोही पलटनोने हेमन्त प्रासादकी ओर जानेवाले सभी रास्तोपर अधिकार कर लिया। अस्थायी सरकारका मत्रि-मडल उस वक्त प्रासादमे अपनी बैठक कर रहा था। अब साफ मालूम हो गया, कि अस्थायी सरकारकी मददके लिये एक भी सैनिक टुकडी नही है। करेन्स्कीको कसाकोने सहायता देनेका वचन दिया, किन्तु वह रेडक्रासकी नर्सका भेस बना उसी दिन सबेरे युक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी झडेवाली एक मोटरपर बैठकर राजधानीसे भाग गया।

७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)के १० बजे क्रांतिकारी सैनिक समितिने अस्थायी सरकारके उलट देनेकी घोषणा की। यह घोषणा लेनिनने तैयार की थी, जिसमें लिखा था—

"अस्थायी सरकार उलट दी गई। राज्यशक्ति पेत्रोग्रादके कमकर-सैनिक-प्रतिनिधियोकी सोवियत और क्रांतिकारी सैनिक समितिके हाथमे चली गई। वही पेत्रोग्रादके सर्वहारो और सैनिकोकी मुखिया है।

"जनताके इस सघर्षके उद्देश्य निम्न है—तुरन्त ही जनतान्त्रिक-सधिका प्रस्ताव रखना, जमीदारीको खतम करना, उत्पादनपर कमकरोका अकुश स्थापित करना और सोवियत सरकारका निर्माण करना।

"मजदूरो, सिपाहियो और किसानोकी क्रांति जिन्दाबाद।"

उसी दिन पेत्रोग्राद सोवियतकी एक खास बैठक हुई, जिसमे लेनिन भी उपस्थित थे। लोगोने बडी गर्मागर्म तालिया बजाकर अपने नेताका स्वागत किया। लेनिनने इस बैठकमे भाषण देते हुए कहा—"साथियो! बोल्शेविक जिसकी अवश्यकताके बारेमे बराबर कहते थे, वह मजदूरो और किसानोकी क्रांति हो गई। अबसे रूसके इतिहासमे एक नया अध्याय शुरू हो रहा है। यह क्रांति, तीसरी रूसी क्रांति, अन्तमे समाजवादके विजयकी ओर ले जायगी।"

पेत्रोग्राद सोवियतने प्रस्ताव पासकर क्रांतिका स्वागत किया। इस समयतक हेमन्त प्रासाद छोडकर सारा पेत्रोग्राद-नगर बोल्शेविकोके हाथमे था। आज ही सोवियतोकी काग्रेस शुरू होनेवाली थी, लेकिन उसके शुरू होनेसे पहले ही हेमन्त-प्रासाद पर अधिकार करनेके लिए लेनिनने हुक्म दिया था। अस्थायी सरकारको तुरत आत्मसमर्पण करनेके लिए अल्टीमेटम दिया गया, लेकिन उसने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। इसपर ९ बजे शामको हेमन्त-प्रासादपर आक्रमण शुरू कर दिया गया। पूर्व सकेतके अनुसार पीतर-और-पाल किलेसे एक तोप दागी गई। आरोराने कुछ गोले चलाये। इसके बाद बोल्शेविकोके नेतृत्वमे नौसैनिको और सैनिकोने जारोके हेमन्त-प्रासादपर हल्ला बोल दिया। अस्थायी सरकारको बाहरसे मदद मिलनेकी आशा थी, लेकिन वह कहा आनेवाली थी?

सोवियतोकी द्वितीय काग्रेस स्मोल्नीमे उस दिन (७ नवम्बर) पौने ११ बजे रातको शुरू हुई। हेमन्त-प्रासादके ऊपर इस वक्त भी हमला हो रहा था। काग्रेसमें भाग लेनेवाले कितने ही प्रतिनिधि सघर्षमे भाग लेकर यहा आये थे। काग्रेस शुरू होते समय मेन्शेविको, दक्षिणपक्षी समजवादी क्रांतिकारियो और कुछ दूसरे प्रतिनिधियोने कहा, कि सैनिक और बिना पार्टीवाले प्रतिनिधि कामेम छोडकर चले चले, लेकिन उनका साथ देनेवाले मुट्ठीभर आदमी थे। उनके हाल छोडनेके समय रोष प्रकट करते हुए प्रतिनिधियोने चिल्लाकर कहा—'कोर्निलोफी', 'भगोडे'। बारहवी सेनाके एक प्रतिनिधिने उठकर

कहा—"हमें अधिकार अपने हाथमें लेना है। जाने दो इन्हें। सेना उनके साथ नहीं है।"

रातके २ बजकर १० मिनटपर हेमन्त प्रासादको वोल्शेविकोंने दखल कर लिया और अस्थायी सरकारके मन्त्रियोंको गिरफ्तार करके पीतर-और-पालके किलेमें वंद कर दिया।

आधी रातके वाद (अव ८ नवम्बरकी तारीख हो गई थी) ५ वजे सोवियतोंकी कांग्रेसने घोषित किया, कि सारी शक्ति सोवियतोंके हाथमें आ गई। तेरह दिन पीछे होनेके कारण पुराने रूसी पंचागके अनुसार उस दिन २५ अक्तूवरका महीना था, इसलिए इसे अक्तूवर-क्राति कहते हैं। ८ नवम्बरकी शामको ८ वजकर ४० मिनटपर कांग्रेसकी दूसरी बैठक हुई, जिसमें लेनिनने शांति-घोषणा, भूमि-घोषणा पढ़ी। शांतिकी घोषणामें कहा गया था—युद्धमें पडी सभी जनता और उनकी सरकारें न्यायोचित जनतान्त्रिक सुलहनामा करें, न किसीकी जमीन छीनी जाय, न किसीसे हरजाना मांगा जाय, और सभी उत्पीडित जातियोंको आत्म-निर्णयका अधिकार मिले। भूमिकी घोषणा द्वारा किसानोंको पंद्रह करोड हेक्तर (प्राय चालीस करोड एकड) जमीन दी गई और पचास करोड सुवर्ण-रूवल वार्षिक मालगुजारीसे मुक्त कर दिया गया। इस घोषणाने किसानोंको वतलाया, "गांवोंमें अव कोई जमींदार नहीं रह गया"। उसी दिन ढाई वजे सवेरे कांग्रेसने प्रथम सोवियत सरकार जन-कमीसरोंकी परिषदके कायम होनेकी सूचना दी, जिसके अध्यक्ष व्लादिमिर इलिच (उलियानोफ) लेनिन वनाये गये और जातियोंके जनकमीसर (मन्त्री) का पद योसेफ विसारियोन-पुत्र स्तालिन हुए। सोवियतमें दूसरे विश्वयुद्धके कुछ समय वादतक भी मन्त्रियोंको जनकमीसर कहा जाता था। पहली सोवियत सरकारके सभी सदस्य वोल्शेविक थे, दूसरोंको अभी उतना साहस भी नहीं था, कि उसमें शामिल हों, लेकिन पीछे वामपक्षी समाजवादी क्रांतिकारी भी मन्त्रिमंडलमें सम्मिलित हुए। ९ नवम्बर (२७ अक्तूवर) को ५ वजे सवेरे कांग्रेसकी बैठक समाप्त हुई, और लोगोंने "क्रांति चिरजीव", "समाजवाद चिरजीव"के गगनभेदी नारे लगाये।

करेन्स्कीने हेमन्त-प्रासादसे भागकर कसाक-जेनरल क्रास्नोफसे मिलकर फिर अधिकार प्राप्त करनेकी कोशिश की। क्रास्नोफने १० नवम्वर (२८ अक्तूवर) को पेत्रोग्रादके नजदीक जार्स्कोयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) पर अधिकार कर लिया, लेकिन राजधानीके कमकर भला यह क्यों होने देने लगे। वह वडी तादादमें क्रांतिकारी सैनिकोंके साथ लडनेके लिए गये। जिस समय क्रांतिकारी उधर फंसे हुए थे, उसी समय १० नवम्वरकी रातको क्रांति-विरोधियोंने तख्ता उलटनेके लिए षड्यंत्र किया। लेकिन उन्हें सफलता नहीं हुई। १३ नवम्वरको क्रास्नोफके कसाकोंको पुलकोवोके पास क्रांतिकारियोंने वुरी तरहसे हराया, और उससे भी ज्यादा वह कसाक सैनिकोंको समझानेमें सफल हुए, कि क्रांतिका विरोध करना अपने हितोंका विरोध करना है। कसाकोंने अपने जेनरलकी आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया। गत्चिनामें सोवियत नौसैनिकोंके प्रतिनिधिने कसाकोंसे मिलकर उन्हें कहा, कि अगर तुम सोवियतोंसे लडना वंद कर दो, तो तुम्हें घर जानेकी छुट्टी मिल जायगी।

पेत्रोग्रादके विद्रोहकी खवर सुनकर ७ नवम्वरको ही मास्कोकी वोल्शेविक पार्टीकी कमेटीने भी विद्रोह आरम्भ कर दिया। उसी रातको क्रेमलिनके विद्रोही सैनिकोंको विद्रोह कर देनेकी आज्ञा देनेकी जगह वहांकी क्रांतिकारी सैनिक समितिके नेताओंने क्रांति-विरोधी सैनिक हेडक्वार्टरसे समझौता करनेकी वातचीत शुरू की। ८ नवम्वरकी शामको मास्कोकी वोल्शेविक पार्टीकी कमेटीने समझौतेकी वातचीत वंद करनेकी मांग की। इस सुस्तीके कारण क्रांति-विरोधियोंको मौका मिल गया और उन्होंने ९ नवम्वरको मास्को नदीके ऊपरके सभी पुलोंको अपने अधिकारमें कर लिया। इसके वाद क्रेमलिनको भी उन्होंने घेर लिया। देरी करना गलती थी। क्रांतिकारी शक्तियां मास्कोमें भी सगठित और सशक्त थीं। १३ नवम्वरको मास्कोके वडे डाकखाने, केन्द्रीय तारघर और रेल्वे स्टेशनोंपर क्रांतिकारियोंका अधिकार हो गया। दो दिन वाद उन्होंने क्रेमलिनपर गोलावारी शुरू की। १५ नवम्वरको ९ वजे शामको ६ दिनकी लडाईके वाद क्रांति-विरोधियोंने हार खाकर आत्मसमर्पण किया और उसी दिन सारी शक्ति मास्को सोवियतकी क्रांतिकारी सैनिक समितिके हाथमें चली आई।

मास्को और पेत्रोग्रादमे बोल्शेविक सरकारके स्थापित हो जानेपर अब और जगहोमे भी क्रातिका वेग जोरसे फैला। क्राति-विरोधी हजार कोशिश करते रह गये, लेकिन वह बोल्शेविकोकी बाढ रोक न सके। फर्वरी-क्रातिकी तरह पुराने शासनयत्रके बलपर बोल्शेविक शासन नही कर सकते थे, इसलिए उन्होने सबसे पहले उस यत्रमें परिवर्तन किया। पुराने शासन-सबधी बडे-बडे अफसरोका स्थान सोवियतो और उनके द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियोने लिया, और शासनयत्रके भीतर रहकर षड्यत्र करनेका मौका पुराने स्वार्थोके लिए नही रह गया। १२ नवम्बरको सोवियत सरकारने घोषित करके मजदूरोके लिए आठ घटेका कामका दिन निश्चित कर दिया। २७ दिसम्बरको सभी निजी बैकोको राष्ट्रीय बनाकर उन्हे राजयबैकमे मिला देनेकी सरकारी घोषणा निकली।

सशस्त्र विद्रोहके समय स्मोल्नी पार्टीका तथा सैनिक-असैनिक शासनका केन्द्र रही। अब मत्रालयोको अपने-अपने कामको और सुव्यवस्थित रीतिसे करनेके लिए पुराने कार्यालयोमे परिवर्तित कर दिया गया। २८ नवम्बरको जनकमीसर परिषद् (मत्रिमडल)ने आज्ञा दी, कि सभी मत्रालय अपनी-अपनी इमारतोमे चले जाय और मत्री केवल शामके वक्त स्मोल्नीमे एकत्रित हो।

१५ नवम्बर १९१७ ई०को वह महत्त्वपूर्ण घोषणा की गई, जिसके द्वारा जारके राज्यमें रहनेवाली सभी जातियोको बिना किसी भेदभावके समानाधिकार दिया गया —

(१) रूसमे रहनेवाली सभी जातिया समानता और पूर्ण प्रभुत्व रखती है, (२) रूसकी जातियोको स्वतत्रतापूर्वक आत्मनिर्णय तथा अलग होकर अपना स्वतत्र राज्य कायम करनेका अधिकार है, (३) किसी जाति या जातीय धर्मके विशेषाधिकार या हस्तक्षेपको उठा दिया जाता है, (४) रूसकी भूमिमें रहनेवाली अल्पसख्यक जातियो और वशिक समूहोको स्वतत्र विकासका अधिकार है।

इस घोषणाने जारशाही साम्राज्यकी सभी जातियोको एक सूत्रमे बाध दिया, उनके भीतर फूट पैदा करनेके सारे प्रयत्न सदाके लिये निकम्मे हो गये।

४ दास जातियोकी मुक्ति

मध्य-एसियामे क्रातिके बारेमें आगे हम कहनेवाले है। यहा इतना जान लेना चाहिये, कि जिस समय पेत्रोग्रादमें सशस्त्र विद्रोहकी सफलता और उसके बादके विरोधोको हटानेके लिये सघर्ष हो रहा था, उस समय ताशकन्दके बोल्शेविक भी चुप नही थे। हमें मालूम ही है, कि जारशाही मध्य-एसियाका शासनकेन्द्र ताशकन्द था। १० नवम्बर १९१७ ई०को बोल्शेविकोको दबानेके लिये कसाक और कादेतोने ताशकन्द सोवियतको घेरकर वहाकी क्रातिकारी समितिके सदस्योको पकड लिया। इसकी सूचना कारखानेके भोपूको बजाकर दी गई, इसपर तीन हजार हथियारबन्द रूसी और उज्बेक मजदूरोने बोल्शेविक बदियोको छुडानेके लिये युद्ध छेड दिया। कसाक और कादेत ताशकन्दके किलेमें जमा थे, जहासे नगरपर प्रहार करनेके लिये वह हथियारबन्द मोटरें भेजते थे। क्रातिकारी कमकरोने रास्तेको रोकनेके लिये जगह-जगह बाडें खडी कर दी थी। चार दिनतक लडाई होती रही। खबर मिलनेपर आसपासके गावोके उज्बेक और किर्गिज मजदूर भी मदद करनेके लिये आ गये। जबर्दस्त सघर्षके बाद १३ नवम्बरको राजशक्ति सोवियतोके हाथमे चली गई, क्रातिकारी समितिके सदस्य जेलसे निकाल लिये गये, और उसी दिन तुर्किस्तानकी सोवियत सरकार ताशकन्दमें स्थापित हुई। सोवियत शक्तिको मध्य-एसियासे खतम करनेके लिये पूजीवादके पक्षपाती, राष्ट्रीयतावादी मध्य-एसियाई तथा रूसी क्राति-विरोधी एक हो गये। अग्रेजोने भी उन्हे मदद पहुचाई। राष्ट्रीयतावादियोने नवम्बर १९१७ ई०में खोकन्दमें अपनी सरकार कायम की। उनका नाम रक्खा "खोकन्द स्वशासन"। इसीने मध्य-एसियामें गृहयुद्ध आरम्भ किया। फर्वरी १९१८ ई०मे खोकन्दकी सरकारको तुर्किस्तानके लाल गारदने खतम कर दिया। लाल गारदमे जहा नगरके रेलवे और कारखानोके रूसी मजदूर थे, वहा बहुत-से उज्बेक, किर्गिज, कजाक और तुर्कमान कारीगर और किसान भी थे।

बोल्शेविक-क्रातिने जारशाही रूसके भीतर ही अपने प्रभावको नही दिखलाया, बल्कि सुदूर वाह्य मगोलियाके लोगोको भी समाजवादके पथपर आरूढ किया। जारशाही सेनाके भगोडे जेनरलोने वहापर अड्डा जमाकर क्रातिका विरोध करनेका मनसूवा वाधा था, लेकिन उन्हे उसमे विफल होना पडा।

दूसरे पूजीवादी और सामन्तशाही सरकारोकी तरह जारशाहीके भी शासनका स्रोत नीचे नही ऊपर था। जार सर्वेसर्वा था। वह अपनी ओरसे महाराज्यपाल और राज्यपाल नियुक्त करता, जो अपने प्रदेशके छोटे ज़ार होते। इसकी जगह वोल्शेविक-क्रातिने शासनयत्रके ढाचेको सोवियतोपर आधारित किया। सोवियतका अर्थ वही है, जो हमारे यहा पचायतका, यदि अन्तर है, तो यही कि सोवियत प्रभुत्व-सम्पन्न पचायत है। ग्रामोके शासनका काम ग्राम-सोवियतोने लिया, और जिलोके शासनका काम वयस्क मताधिकार द्वारा निर्वाचित जिलाकी सोवियतोने, इसी तरह प्रदेशोके शासनका काम वहाकी सोवियतोने। अपने कामोको सफलतापूर्वक करनेके लिये, तथा जनताको क्रियात्मकरूपसे यह दिखलानेके लिये, कि सरकार उनकी है, अब जारशाही गुर्वनियोका अनुकरण नही किया जा सकता था। उसकी जगह क्रातिके दो साल ही बाद १९२० ई०के आरम्भमें रूसका विभाजन जातियोके अनुसार हुआ, और १९२०-२२ ई०के बीचमें इस तरहके कितने ही स्वायत्त सोवियत समाजवादी गणराज्य कायम किये गये, जिनके सघको रूसी सोवियत सयुक्त समाजवादी गणराज्य कहा जाने लगा। इन स्वायत्त गणराज्योमें बाश्किर भी था, जिसकी स्थापना मार्च १९१९ ई०मे हुई थी। रूसी जमीदारो और कुलकोने जारशाहीके जमानेमे बाश्किर-किसानोसे जो जमीन छीन ली थी, अब उसके मालिक बाश्किर किसान हो गये। अभीतक बाश्किर अधिकतर घुमन्तू थे, लेकिन अपना खेत मिल जानेपर अब वह अपने गाव बसाने लगे। उनमें शिक्षाका प्रचार भी बढने लगा। बोल्शेविकोने अच्छी तरह समझ लिया, कि सोवियत शासनकी मजबूतीके लिये यह जरूरी है, कि लोग लिखना-पढना जानें। तभी वह बोल्शेविकोके उद्देश्यको समझ पायेगे, और मुल्लो तथा क्रातिविरोधी सत्ताधारियोके हाथमे नही खेलेंगे। इसीलिये उन्होने मातृभाषाको शिक्षाका माध्यम स्वीकार करके उसीमें लोगोको जल्दी-से-जल्दी शिक्षित बनानेका प्रयत्न किया। अपनी भाषाको सीखनेकी अवश्यकता नही थी, उसके लिये जरूरत थी लिपिकी। सोवियत रूसके भीतरकी अधिकाश भाषायें अभी न अपनी लिपि रखती थी, न लिखित साहित्य। ऐसी भाषाओको रोमन लिपिमें पहले लिखा जाने लगा, पीछे (१९४१ ई० में) लोगोने रूसी लिपि अपना ली। शिक्षाकी वृद्धि कितनी जल्दी हुई, इसके लिये इतना ही कहना काफी है, कि प्राय पचीस लाखकी आबादीवाले बाश्किर गणराज्यमें १९२४ ई०में ही दो हजार स्कूल खुल चुके थे।

१९२० ई०के वसन्तमें बाश्किरोके पडोसमें तारतारोका स्वायत्त सोवियत गणराज्य कायम हुआ। अक्तूबर १९२० ई०में कजाकस्तानकी सोवियतोकी प्रथम काग्रेसमे किर्गिज स्वायत्त गणराज्यकी स्थापनाकी घोषणा हुई। इस प्रकार सोवियत रूस सोवियत गणराज्यो-के सघका रूप धारण करने लगा। पहले रूसके अतिरिक्त उक्रइन-जैसे गणराज्य कायम हुये थे। दिसम्बर १९२० ई०में उक्रइन सोवियत समाजवादी गणराज्य और रूसी सोवियत सयुक्त समाजवादी गणराज्यने आपसमें एक सैनिक और आर्थिक मित्रताकी सधि की। इसी तरहकी सधि बेलोरूसिया, आजुर्बाइजान, अमनिया और गुर्जीके गणराज्योमें भी हुई। तबतक निम्न की सात स्वतत्र सोवियत गणराज्य बन चुके थे —

(१) रूसी सोवियत सयुक्त समाजवादी गणराज्य, (२) उक्रइनी सोवियत समाजवादी गणराज्य, (३) बेलोरूसी सोवियत समाजवादी गणराज्य, (४) आजुर्बाइजान सोवियत समाजवादी गणराज्य, (५) अर्मनियन सोवियत समाजवादी गणराज्य, (६) गुर्जी सोवियत समाजवादी गणराज्य, और (७) तुर्किस्तान सो० स० ग०। इस प्रकार सात गणराज्य और कितने ही स्वायत्त गणराज्य, पाच वर्ष बादतक चलते आये। ३० दिसम्बर १९२२ ई०को सोवियतोकी प्रथम

काग्रेस हुई, जिसने निश्चय किया, कि अबसे सारे बहुजातिक राज्यका नाम सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ रखकर उसे एक केन्द्रीय राष्ट्रका रूप दिया जाय। सभी जातियोकी समानताको अक्षुण्ण रखनेके लिये यह विधान स्वीकार किया गया, कि सोवियत ससद्के "प्रतिनिधि-सदन"में जहा सख्याके अनुसार प्रतिनिधि भेजे जाय, वहा "जातिक सदन"मे सभी स्वतत्र गणराज्योको उनकी सख्याका कोई भी ख्याल किये विना वरावर सख्यामे प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार है।

इस प्रकार सफल क्राति और सफल सोवियत शासनकी स्थापनाके वाद २१ जनवरी १९२४ ई०को लेनिनका देहान्त हुआ।

स्रोत-ग्रन्थ

१ History of Civil War in U S. S R. (2 vols., G F Alexandrov and others, Moscow 1946)
२. History of U. S S R. (Ed A M. Pankratova, Moscow 1947)
३ La Revolution russie (4 vols , Cloude Anet, Paris 1918-20)
४ La reign de Raspoutine (Rodzianko, Paris 1928)
५ La revolution russie (Al Ular, Paris 1905)
६ इस्तोरिया सससर (अ म रव्दोनिकस्, ४ जिल्द)

अध्याय २

उज्बेकिस्तानमें क्रांति

१ उज्बेक जाति

उज्बेक गणराज्यका क्षेत्रफल १८८००० वर्गमील, तथा आबादी बासठ लाखसे ऊपर है। उज्बेक जाति तुर्कोंकी ही एक शाखा है। सुवर्ण-ओर्दूके मगोल खान उज्बेकके नामपर तुर्कोंके बहुत से कबीलोंने यह नाम धारण किया। उज्बेक कबीलोंमें कितने ही कजाकोंमें भी मिलते हैं, इसलिए उज्बेको और कजाकोका पहले एक होना सिद्ध है। उज्बेकोंके सबसे बडे चार विभाग हैं—(१) उइगुर-नैमन, (२) कगली-किपचक, (३) कियात-कुग्राद, (४) नोकुस-मगित। और छोटे-छोटे विभाग मिलकर उज्बेक कबीलोंकी सख्या ९७ होती है, जिनके नाम निम्न प्रकार है —

उज्बेक कबीले—

१. मगुत (मगित)(करशी-बुखारा, जुक मगुत, जुकअकरा)
२. मिग
३ युज
४. किर्क
५. उग
६. उगाचित
७. जठैर
८ सगाय (समरकन्द और करशीके रास्तेपर)
९. कुग्राद (करशी और शहरसब्जमे)
१० येलचिन
११. अरगन
१२. नैमन
१३. किपचक (कत्ताकुर्गान और समरकन्दके बीच)
१४. चीचक
१५ यअबरत
१६. कल्पक
१७. कर्नू
१८. बग्लम
१९. बमठक
२०. मैमारचिम
२१. कतगन
२२. कलेची
२३. कुनेगज
२४. बतरेक
२५. उजोय
२६. कवात
२७. खिताई (बुखारा और करमीनाम)
२८ कगली
२९. उज
३०. चपलेनी
३१. चपची
३२. उतार्ची
३३. उपुलेची
३४. जूलून
३५. जिद (आमू-दरियापर)
३६. जुयुत
३७. चिलजूयन
३८. बुडमौत
३९. उएमौत
४०. अरलत
४१. किरेइत
४२. उगुत
४३. कगित
४४. खलेउअत
४५. मसद
४६ मेरकत
४७. बेर्कूत
४८. कुरालस
४९. उगलान
५०. करी
५१. अरबत (करशी और बुखारामें)

५२. उलेची
५३. जूलेगन
५४. किशलिक
५५. गेदोई
५६ तुर्कमान (आमू-दरिया)
५७. दुर्मेन
५८. ताविन
५९. तामा
६०. रिनदान
६१. मूमिन
६२. उइशुन
६३. वेरोई
६४ हाफिज
६५ किनगिज
६६. उइरुची
६७. जुइरेत
६८ वजाची
६९ सिहतियान
७० वेताग (बुखारा)
७१. यागरिनी
७२. शुल्दुर
७३ तुमाई
७४. तलेउ
७५. किरदार
७६ किरकिन
७७. उलगान
७८. गुरलेत
७९. इगलान
८०. चिलकेस
८१. उइगुर
८२ अगिर
८३ यावू
(बुखारा और मियानकुलमें)
८४. नरगिल
८५. यूजक
८६ कहेत
८७. नचार
८८ कूजालिक
८९ वूजन
९०. शीरिन
९१. वखरिन
९२. तूमे
९३. नीकुज
९४ मुगुल
९५. कयान
९६. तारतार

किमी-किसीके अनुसार उज्वेकोके पाच विभागोमे निम्न कवीले हैं —

I उइगुर चौदह—

१ उरुस
२ कराकुरसक
३. चुल्लिक
४. उयान
५. कुल्दौली
६. मिल्तेक
७. कुरतुगी
८ गाले
९. तुपकारा
१०. कारा
११. करावुरा
१२. नोगाई
१३. विलकेलिक
१४. दुमतनिक

II ओमली नौ —

१ अखताना
२ कारा
३ चुरान
४ तुर्कमान
५ कुउक
६. विसवाला
७. कराकल्पक
८. कचाई
९. हजवेचा

III. कुश्तमगली नौ —

१ कुलअत्री
२. वरमक
३ कुजहुर
४. कुल
५. चुवुरगान
६ कराकल्पक-कुश्तमगली
७. मफरवीज
८ दिलवेरी

९. चचकली

IV. यकतमगली सात —

१. तर्तगू
२. अगामइली
३. इशिक्ली
४. किजिनजिली
५. उयुगली
६. बूकजली
७. कैंगली

V. किर पाच —

१. जुजिली
२. कूमउली
३. तिर्म
४. वलिकली
५. कूवा

इतिहासकार वाम्बेरीने उज्वेकोंके वर्त्तास कबीलोको मुख्य माना है, जो कि निम्न प्रकार है —

१ अकवेत
२. अचमइली
३ अलचिन
४. अज
५. इशकिली
६ उइगुर
७. उशुन
८ कनर्ली
९ कराकुरसक
१० कजिगली
११. किपचक
१२. कुग्राद कोयेत
१३ कूलन
१४ केत्तेकेमेर
१५ केनेगुज
१६. खिताई
१७ जगताई
१८ जेलेर
१९. ताज
२०. इशकिली
२१. तिकिश
२२. दुर्मेन
२३. नैमन
२४. नोक्स
२५. नोगाई
२६. वागुर्लू
२७ वलगली
२८ विरकुलक
२९. मगित (ओगुत)
३०. मिग
३१ मितन
३२. सायत

इन कबीलोंके नामोको देखनेसे मालूम होगा, कि इनमें उशुन-जैसे शक कबीले, कुग्राद-जैसे मगोल, किपचक-जैसे पुराने तुर्क, खिताई-जैसे चीनी, वर्मक-जैसे खुरासानी कबीलो और जातियोका भी नाम है। इसीलिये तुर्की जनकी प्रधानता रहते भी उज्बेक जातिमे बहुतसी दूसरी जातियोका सम्मिश्रण है। उनकी भाषामे व्याकरणका ढाचा तुर्की होते भी शब्दकोष और मुहावरे अधिकतर ईरानी (फार्मी) है।

उज्बेक जातिका निर्माण—उज्बेको, तुर्कमानो तथा किर्गिजो का ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ —

काल	सिर-उपत्यका	सोग्द	तुखार	ख्वारेजम
ई० पू० १०००००		मस्तेर	मुस्तेर	
" ५००००		मदलेन		
" ८०००	फिनो-द्रविड	फिनो	फिनो-द्रविड	फिनो-द्रविड
" ३५००	"	"	"	"
" ३००० नवपाषाण	शक-आर्य-द्रविड	शकार्य-द्र०	शकार्य-द्र०	शकार्य-द्र०
" २५००	शक	आर्य	आर्य	आर्य
ई० पू० १५०० पित्तल	शक	सोग्दी	ईरानी	ईरानी
" ७००	शक	सोग्दी	ईरा०	शक

ई०पू०	५५०		शक	सोग्दी	ईरा०	शक
,,	३२६		शक	सोग्दी	ईरा०	शक
,,	२०६		शक	सोग्दी	ईरा०	शक
,,	१३०		हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
,,	१००		हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
ईसवी	१००	कुपाण	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०-शक	शक
,,	४२५	हेफ्ता	हूण-कगली	सो०-शक	ईरा०-शक	हेफ्ताल-कग
,,	५५७	तुर्क	तुर्क-कगली	सो०-तुर्क	ईरा०-शक	सो०-तुर्क
,,	६७३	अरब	तुर्क	सो०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	सो०-तुर्क
,,	८९२	सामानी	तुर्क	ईरानी-तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क
,,	१२२०	मगोल	तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क
,,	१५००		तुर्क (उज्वेक)	उज्वेक-ईरा०	ईरा०-उज्वेक	उज्वेक-ईरा०
,,	१७४७		उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
,,	१८६५		उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
,,	१९१७		उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०

२ उज्बेकभूमि

वर्तमान उज्वेकिस्तान खोकन्द, खीवा (ख्वारेज्म), और बुखारा रियासतोकी भाग सम्मिलित है, जिनमे बुखाराका तो करीब-करीब सारा ही भाग उज्वेकिस्तानमे है। उज्वेकोकी वर्तमान राजधानी ताशकन्द बिलकुल एक छोरपर कजाकोकी भूमिके पास पडती है, लेकिन रूसियोंके आनेसे पहले ही वह प्रसिद्ध नगर उज्वेकोकी भूमिके साथ सबद्ध था। तुर्किस्तानकी राजधानी बननेपर जहा वहा रूसी काफी सख्यामें आये, वहा एसियाइयोमे सबसे अधिक उज्वेकोकी आबादी थी, इसलिये वह पहले तुर्किस्तान गणराज्य, फिर उज्वेकिस्तान और ताजकिस्तानके सम्मिलित उज्वेक गणराज्य और अन्तमे उज्वेकिस्तानकी राजधानी रह गया। मध्य-एसियाके समरकन्द और बुखारा-जैसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर भी उज्वेकिस्तानमें ही पडते हैं।

३ क्रातिकी लपट

रूसमे फर्वरी-क्राति होनेपर भी उस समय बूर्ज्वा रूसी शासकोने मध्य-एसियाकी जातियो—उज्वेको, कजाको, किर्गिजो, ताजिको, तुर्कमानो—के ऊपर होते आये जारशाही शासनमे कोई परिवर्तन करनेकी अवश्यकता नही समझी। अप्रैल १९१७ ई०मे शचेप्किनकी अध्यक्षतामे एक तुर्किस्तान समिति बनाकर भेजी गई, जिसको तुर्किस्तानके सूबेके शासनका पूरा अधिकार दे दिया गया था। जब पेत्रोग्रादमे अस्थायी सरकारमे थोडा और परिवर्तन हुआ, और वैधानिक जनतात्रिकोकी जगहपर मेन्शेविकोकी प्रधानता हुई, तब तुर्किस्तान कमेटीमें नाममात्रका ही परिवर्तन किया गया। यह कमेटी पुराने जारशाही अफसरो और सफेद क्राति-विरोधियोके प्रभावको कम करना नही चाहती थी। क्रातिका एक फल यह हुआ, कि मार्च १९१७ ई०से मध्य-एसियाइयोमें शूरा-इस्लामिया और शूरा-उलेमा जैसे धार्मिक या अर्धधार्मिक राजनीतिक सगठन अस्तित्वमें आये। उज्वेक राष्ट्रीयतावादी मध्यवर्गने शूरा-इस्लामिया नामकी पार्टी स्थापित की थी, और मुल्लाओने हमारे यहाकी जमायतुल-उलमाकी तरह उलमाओ (धर्माचार्यो) की एक पार्टी खडी की थी, जिसके पोषक बडे-बडे जमीदार और दूसरे सामन्त थे। दोनो सस्थाओने अस्थायी सरकारके प्रति अपनी भक्ति कई बार प्रकट की थी।

तुर्किस्तान-कमेटी क्रातिके और युद्धके कारण उठ खडी हुई समस्याओमेंसे किसीको भी हल करनेमे समर्थ नही हुई। एसियाई जातियोंके ऊपर पहलेकी तरह ही शासन और अत्याचार होता रहा। किसानोकी अवस्था वैसी ही रही। कारखानेके मजदूरोकी ओर भी ध्यान नही दिया

गया। १९१७ ई०के सितम्बरमें तुर्किस्तानके मजदूरोंको अब भी बारह घंटे काम करना पड़ता था, जब कि रूसमें वह आठ घंटेका कर दिया गया था। तुर्किस्तान-कमेटीको आगे बढ़नेकी कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि इस इलाकेमें १९१७ ई०के अन्ततक बोल्शेविकोंके अपने स्वतंत्र संगठन नहीं थे। ताशकन्द, समरकन्द, पेरोव्स्की (क्जिल ओर्दा), नवीन-बुखारा आदिमें जो बोल्शेविकोंके भिन्न-भिन्न गिरोह थे, वह रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टीसे सम्बद्ध थे। इस पार्टीकी द्वितीय स्थानीय कांग्रेस २१-२७ जूनको ताशकन्दमें हुई थी, जिसमें मेन्शेविकोंकी प्रधानता थी, जिसके कारण कांग्रेसने अस्थायी सरकारमें अपना विश्वास प्रकट किया। ताशकन्दमें बोल्शेविकोंका अपना कोई पत्र नहीं था, इसलिये समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टीके अखबार "रबोचेये देलो" (मजदूरोंका कार्य) पत्रमें ही उन्हें भी अपने विचारोंको प्रकट करना पड़ता था, जिन्हें मेन्शेविक कितनी ही बार छापनेसे इन्कार कर देते थे। बोल्शेविक-नेता स्वेर्दलोफने ओरेनबुर्गके बोल्शेविकों द्वारा तुर्किस्तानके बोल्शेविकोंके पास कभी-कभी संबंध स्थापित करनेकी कोशिश की, लेकिन उसमें बहुत सफलता नहीं हुई। लेकिन जब मध्य-एसियाके लोगोंको मालूम हुआ, कि रूसमें बोल्शेविक क्या कर रहे हैं, तो वहाँके लोगोंमें भी बोल्शेविकोंका प्रभाव जल्दीसे बढ़ने लगा। ई० प० बाबुश्किनके नेतृत्वमें खोकन्दमें बोल्शेविकोंकी एक मजबूत जमात कायम हो गई—बाबुश्किन १९०३ ई०में ही बोल्शेविक था, और खोकन्दके मजदूर-सैनिक प्रतिनिधियोंकी सोवियतका उस समय अध्यक्ष था। समरकन्दमें समाजवादी जनतांत्रिकोंके भीतर रहते हुये बोल्शेविक बड़ी तत्परतासे काम करने लगे। अक्तूबर (बोल्शेविक) क्रांतिके समय नवीन बुखारामें पोल्तरोत्स्कीके नेतृत्वमें एक बोल्शेविक गिरोह काम करने लगा था। पोल्तरोत्स्की १९१८ ई०में समाजवादी क्रांतिकारियोंके हाथ मारा गया, जिनका मुखिया करेन्स्की था।

ताशकन्दके बोल्शेविकोंका नेता अ० पेर्शिन रेलवे मजदूर, और न० शूमिलोफ कारखानेमें मिस्त्री था। शूमिलोफ १९१८ ई०में ताशकन्द सोवियतका अध्यक्ष बनाया गया।

इस प्रकार हम देख रहे हैं, कि तुर्किस्तानके बोल्शेविक अधिकतर रूसी थे, लेकिन उनको वहाँके मुसलमान मजदूरोंके "इत्तिफाक" (लीग)का सहयोग प्राप्त था। स्कोबेलेफमें मार्च १९१७ ई०में फरगानाके मुसलमानोंका प्रथम मजदूर संगठन स्थापित हुआ था—मध्य-एसियाई लोगोंको रूसी मुसलमान कहा करते थे। फरगानाके बाद इस तरहके संगठन ताशकन्द, समरकन्द, खोकन्द, नमंगान, कत्ताकुर्गान, खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) तथा दूसरे नगरोंमें भी स्थापित हुये। १९१६ ई०में जारशाहीने बहुतसे एसियाइयोंको मजदूर-सेनामें भर्ती करके युद्धपंक्तिके पीछे काम करनेके लिये भेजा था। यही मजदूर जब लौटकर तुर्किस्तान आये, तो रूसमें बोल्शेविकोंका काम देखे होनेके कारण उन्होंने यहाँ भी "मजदूर-इत्तिफाक" (मजदूर लीग)को संगठित करनेकी घोषणा करते हुये अपने उद्देश्यके बारेमें कहा—"तातार (मंगोलायित) और सर्त (ताजिक) गरीब किसानों और मजदूरोंका एक परिवार बनाना है, जो कि पूँजीवादके खिलाफके संघर्षमें मजदूरवर्गका समर्थन करेगा और सच्चे जनतांत्रिक सिद्धान्तोंके आधारपर नये समाजके निर्माणमें सहायता करेगा।" इस उद्देश्यसे ही मालूम हो जायगा, कि मध्य-एसियाके देहकान (किसान) और मजदूर रूसमें रहते वक्त बोल्शेविक पार्टी और वहाँके मजदूरोंके सम्पर्कमें आकर कितने प्रभावित हुये थे। आरम्भमें इत्तिफाकी दलवाले मेन्शेविकोंके जबर्दस्त प्रभावमें रहे, लेकिन जल्दी ही उन्हें मालूम हो गया, कि मेन्शेविकों और जारशाही साम्राज्यवादियोंमें बहुत अन्तर नहीं है, इसलिये वह बोल्शेविकोंके नजदीक आने लगे। स्थानीय सरकारी संस्थाओं और संविधान-सभाके चुनावोंके समय उन्होंने बोल्शेविकोंसे मिलकर अपने उम्मीदवार खड़े किये। शूरा-इस्लामिया और उलमाके साथ इत्तिफाकियोंका संघर्ष दिन-पर-दिन बढ़ता गया। मुल्ला और मुस्लिम साम्प्रदायिक नेताओंने हर तरहसे लोगोंको यह समझानेकी कोशिश की, कि मुसलमान-मुसलमानमें कोई अन्तर नहीं, सभी मुसलमानोंको एक हो जाना चाहिये। लेकिन मध्य-एसियाके मजदूर-किसानोंको यह समझनेमें देर नहीं लगी, कि उनकी भलाई इस्लामके नारा लगानेवालोंके साथ रहनेमें नहीं, बल्कि बोल्शेविकोंका साथ देनेमें है। सितम्बर १९१७ ई०में मजदूरी बढ़ाने और आठ घंटा काम करनेकी माँगके लिये

ताशकन्द, समरकन्द, नमगान, अन्दिजान, कत्ताकुर्गान और नवीन-बुखाराके मजदूरोने हडताले की। देहातमे किसानोने भी जमीदारोके विरुद्ध सघर्ष छेड दिया।

रूसमे फर्वरी-क्रातिके होनेके बाद तुर्किस्तान-प्रदेशमे उतना भी परिवर्तन नही किया गया, जितना कि रूसके पासवाले इलाकोमे। सेना और शासनमे अब भी यहा जारशाही जमानेके ही अफसर थे। जब करेन्स्की प्रधान-मत्री हो गया, तो एस्-एर् (समाजवादी क्रातिकारी) दल अपनेको सरकारी दल समझने लगा, और उसकी यहा प्रधानता हो गई। लेकिन इससे पहिले १९१६ ई०मे जो विद्रोह मध्य-एसियाके लोगोने किया था, यद्यपि उसे दबा दिया गया था, तो भी उसके प्रभावमे लोगोके हृदयोमें शासनके प्रति विद्वेषका भाव अब भी कम नही हुआ था। बल्कि अब उसने एक नया रूप लिया था, जिसमें उज्बेक मध्यवर्गने अपने पुराने खोये हुये राज्य खोकन्दके नामपर "खोकन्द स्वायत्तता"की माग पेश की। अभीतक बुखाराका अमीर अपनी जगहपर बना हुआ था। जारशाही अफसरो और पूजीपतियोने भी स्वायत्ततावादियोके पक्षका समर्थन करना आरम्भ कर दिया, और जब रूसमे बोल्शेविक-क्राति हो गई, तो उन्होने खुल्लमखुल्ला उनका साथ देना शुरू किया। यद्यपि स्वायत्ततावादियोने अपना काम ताशकन्दमे शुरू किया था, लेकिन वहा उनको उतनी सफलता नही हुई, इसलिये उन्होने खोकन्दको अपना केन्द्र बनाया।

४ बोल्शेविक-प्रभाव-वृद्धि

ताशकन्दमे पहले मेन्शेविको और एस्-एर्-दलका ही जोर रहा। ताशकन्द एसियाका सबसे बडा औद्योगिक केन्द्र था। वहाके कारखानोमे रूसी मजदूर बडी सख्यामे काम करते थे। इनके ऊपर पहले नरमदली समाजवादियोका प्रभाव होना स्वाभाविक था, क्योकि रूसी मजदूरोको एसियाई मजदूरोकी अपेक्षा ज्यादा रियायते मिली हुई थी, लेकिन धीरे-धीरे मजदूरोकी आखे खुलने लगी, जब कि उन्होने देखा कि यह दक्षिणपक्षी दल उनका हित-साधन नही कर सकता। वामपक्षकी ओर झुकाव देखकर एस्-एर् (समाजवादी क्रातिकारी) दलमे फूट पड गई। वामपक्षी उनसे अलग हो गये, जो कितने ही समयतक बोल्शेविकोके साथ मिलकर काम करते रहे। जून (१९१८ ई०)के अन्तमे बोल्शेविकोकी पहली काग्रेस हुई, जिसमे चालीस-पचास प्रतिनिधि शामिल हुये थे, लेकिन जब १९-२९ दिसम्बर (१-१० जनवरी) १९१९ ई०को द्वितीय काग्रेस हुई, तो उसमे एक सौ अस्सी प्रतिनिधि थे। इस समयतक अग्रेजोकी मददसे वर्तमान तुर्कमानिस्तानपर क्राति-विरोधी रूसियोकी प्रभुता कायम हो गई थी, इसलिये वहाके प्रतिनिधि इस काग्रेसमे शामिल नही हो सके, लेकिन सप्तनदके प्रतिनिधि आये थे। इस काग्रेसके प्रधानमडलमें जूराबयेफ, वेदीलोफ जैसे स्थानीय (एसियाई) बोल्शेविक भी निर्वाचित हुये थे, जिससे मालूम होगा, कि मध्य-एसियामे रूसी बोल्शेविक कहातक अपनेको एसियाइयोके साथ एकताबद्ध करनेमे सफल हो चुके थे। नरम समाजवादियो और बोल्शेविकोके बीच किसका साथ देना चाहिये, इसका निर्णय करनेमे एसियाई कमकरोको दिक्कत नही हुई, जिसका पता काग्रेसमे एसियाई बोल्शेविकोकी सख्याकी वृद्धिसे मालूम है।

ताशकन्द—पहली काग्रेसतक बोल्शेविक पार्टीके २६१ सदस्य थे, जिनमे २८ स्थानीय (प्राय उज्बेक) थे। इनके अतिरिक्त पुराने ताशकदमे भी १२५ व्यक्ति पार्टीके साथ थे। दूसरी पार्टीके समयतक बोल्शेविक पार्टीमे २००० सदस्य हो गये थे, जिनमे ९०० स्थानीय, ७०० रूसी और ४०० विदेशी कमकर थे। विदेशियोमे लत्वियन, उक्रइनी, ईरानी, तारतार और किर्गिज जातियोके भी लोग थे। १२ अक्तूबर १९१८ ई०मे सारे ताशकद नगरकी पार्टी-कान्फ्रेंस हुई।

समरकद—१९१७ ई०के सितबरके अतमे यहा बोल्शेविककी पहली जिला-कान्फ्रेंस हुई थी। अक्तूबरके मध्यतक समरकन्द जिलेमे अटठाइस शाखाये और पैंतीस सौ सदस्य थे।

खोकद—१९१७ ई०के अक्तूबरमे यहा बोल्शेविकोकी तीस-पैंतीस जमातें थी। पहली काग्रेसतक सदस्योकी सख्या दो सौ हो गई और रूसियोसे बाहरके कमकरोमें भी काम होने लगा था। १९१८ ई०के अततक पार्टीके सदस्योकी सख्या ७५० थी। आगे हम देखेंगे, कि मध्य-एसियाके

पूंजीवादियोंकी सगठित शक्तिका मुकाबला सबसे ज्यादा खोकन्दके बोल्शेविकोको करना पडा था। यहाके ७५० सदस्योमे २५० स्थानीय लोगोंमें से थे।

खोजन्द (लेनिनाबाद)—सिर नदीके तटपर अवस्थित इस ऐतिहासिक नगरमे भी बोल्शेविको और नरम-दलियोका सघर्ष रहा। १९१८ ई०के अप्रैलतक यहा बोल्शेविकोका सगठन हो गया था, और उनकी प्रथम काग्रेसमे यहासे बीस प्रतिनिधि शामिल हुए थे। खोजन्दमें पार्टी-मेम्बरोकी सख्या २४६ थी, और इलाकेके दूसरी जगहोमे भी बोल्शेविक थे, जिनमेसे २१६ खोजन्द नगरमें, पचीस खोजन्द रेल स्टेशनमें, छत्तीस द्रागोमिरोफ स्टेशनमे, तीस कोपीमें, अस्सी पर्लीविकामें, ८०० सरी-दुगानमे, ३१२ उरालके जिले (बोलोस्त)में, पैंतीस चपकुल जिलेमे, पच्चीस बोकल बेदर्गनमें, साठ इनफान इलाकेमे थे। १९१८ ई०के जून और दिसबरके छ महीनोमे बडी तेजीसे बोल्शेविकोकी शक्ति और सख्या बढी। उन्होने तबतक अपनी लाल सेना भी सगठित कर ली। पीछे प्रतिगामी हो गया शेख एरगस, एक समय बोल्शेविकोके साथ था।

अन्दिजान—फरगानाका मशहूर औद्योगिक केंद्र होनेके कारण यह बोल्शेविकोका भी गढ था। दूसरी काग्रेसके समय (१९१८ ई०के अत)तक यहा दो सौ पार्टी-मेम्बर थे। लेकिन यहापर जनतान्त्रिक सगठन औरोंकी अपेक्षा बहुत पीछे हुआ था और १९१८ ई०के अतमें ही नगर-दूमाकी स्थापना हुई।

फरगाना—फरगाना-उपत्यका रूसी कारखानोके लिये कपास पैदा करती थी। इसके कारण वहा अन्दिजान, फरगाना तथा दूसरे शहरोमें छोटे-छोटे कारखाने खुल गये थें, जिनमें रूसी मजदूर भी काम करते थे। १९२८ ई०की जुलाईमे अर्थात् रूसमें बोल्शेविकोके राज्य सभालनेके नौ महीने बाद यहा पार्टीका सगठन हुआ और इस सालके अततक २३७ पार्टी-सदस्य हो गये।

नमगान—यहा १९१७ ई०के दिसबरमे सात पार्टी-सदस्य थे। अप्रैल १९१८ ई०मे १८० और द्वितीय काग्रेसके समय सदस्योकी सख्या छ सौ थी, जिनमे दो तिहाई स्थानीय और केवल दो सौ रूसी थे।

किजिलकिया—१९१८ ई०की फर्बरीमें सात सदस्योको लेकर बोल्शेविकोका यहा काम शुरू हुआ, लेकिन दिसबरतक उनकी सख्या ४५१ हो गई।

मर्गेलान—यहा १९१८ ई०के अगस्तमें पार्टीकी टुकडी स्थापित हो गई, और द्वितीय काग्रेस के समयतक बोल्शेविकोकी सख्या १७० पहुच चुकी थी।

कत्ताकुर्गान—१९१८ ई०के अतमें द्वितीय काग्रेसके समय यहा सदस्योकी सख्या करीब तीन सौतक पहुच गई थी, और यहाके तीन प्रतिनिधि द्वितीय काग्रेसमे शामिल हुए थे।

जीजक—यहा १२६ सदस्य १९१८ ई०के अततक हो गए थे।

चारजय—आमू-दरियाके बायें तटपर अवस्थित इस महत्त्वपूर्ण स्थानमें १९१८ ई०के दिसबरमें बोल्शेविकोका सगठन हो चुका था और द्वितीय तुर्किस्तान पार्टी काग्रेस जब ताशकन्दमें हुई, तो यहाके बोल्शेविक सदस्योकी सख्या सौतक पहुच चुकी थी। लेकिन इस इलाकेमें अग्रेजोकी मददसे क्रान्ति-विरोधियोका बल बढ गया, इसलिये यहाके बोल्शेविकोको उनका सख्त सामना करना पडा।

इन आकडोसे मालूम होगा, कि मध्य-एसियामे बोल्शेविकोका प्रभाव कितनी जल्दी बढा। इस समय तुर्किस्तान-प्रदेशकी आर्थिक स्थिति बडी खतरनाक हो गई, तेल और कोयला मिलना मुश्किल हो गया, रेलका यातायात बिगड गया था। कपासका उद्योग मध्य-एसियाकी आयका सबसे बडा साधन था और उसको कोई पूछनेवाला नही था। ऊपरसे अन्नका अकाल पडा हुआ था। साथ ही क्रान्तिके कारण सघर्ष बहुत उग्र हो रहा था। मेन्शेविको और दक्षिणपथी एस्-एर् इन कठिनाइयोके लिये कोई रास्ता निकालनेमें असमर्थ थे। ऊपरसे काशगर, ईरान, अफगानिस्तान आदिके रास्ते क्राति-विरोधी शक्तियोंको अग्रेज पूरी तौरसे मदद दे रहे थे।

५ खोकन्द स्वायत्ततावादियोका अन्त

प्रथम विश्व-युद्धके समय एसियाकी बहुतसी पिछडी जातियोंमें राजनीतिक स्वतत्रताके भाव

जगे। मध्य-एसियामे तो १९१६ ई०मे उसने खूनी विद्रोहका रूप लिया था। इसी समय भारतमे प्रथम विश्वयुद्धके बाद देशकी परतन्त्रताको और भी कडा करनेके लिये अग्रेज रोलेट-कानून बनाने जा रहे थे। अग्रेज मध्य-एसियामे 'खोकन्द स्वायत्तता'को सहायता देनेके लिये पूरी कोशिश कर रहे थे। जारशाहीके उच्छेद, क्रातिकारियोकी निर्बलता और अग्रेजोकी शहसे मध्य-एसियाके मध्यवर्ग-ने इस आदोलनको खडा करके नवबर १९१७ ई०मे खोकन्दमे अपनी सरकार भी कायम कर ली, जो तीन महीने बाद (फर्वरी १९१८ ई०)तक शासन करती रही। जिस समय ताशकन्दमें ग्यारह दिन (११ जनवरी १९१९ ई०)तक बोल्शेविकोकी पार्टी काग्रेस होती रही, उसी समय खोकन्दके क्राति-विरोधी अपने शासनको कायम करके आगेके लिये बडे-बडे स्वप्न देख रहे थे। लेकिन खोकन्दके इस आदोलनमे खोकन्दसे बाहर सारे तुर्किस्तानके मध्यमवर्गकी सहानुभूति रहने भी उनसे सहायता उतनी नही मिल सकी। नवबर १९१७ ई०मे बोल्शेविक-क्राति रूसमे सफल हो चुकी थी, इसलिए मध्य-एसियामें कारबार करनेवाले रूसी पूजीपति बदहवास हो गये थे। अन्दिजानका सबसे बडा रूसी पूजीपति खोकन्द-स्वायत्तताका सबसे जबर्दस्त समर्थक था, और वहाका एक बडा रूसी वकील नेन्सबेर्ग उसमें खास तौरसे भाग ले रहा था। लेकिन सभी जगहके क्राति-विरोधी बूर्ज्वाजीके भीतर एकता नही थी, नमगानवाले खोकन्दियोके साथ नही हुये। खोकन्दके इस आन्दोलनमे सबसे बडा हाथ फरगानाकी बूर्ज्वाजीका था, जिन्हे ताशकन्दके देशी और रूसी बूर्ज्वाजीसे भी पूरी सहायता मिली। ताशकन्द तो वस्तुत इस आन्दोलनका उद्गम स्थान ही था, और पहले वही उसका केन्द्र भी रहा। लेकिन सबसे पिछले खानकी राजधानी खोकन्द थी, इसलिये वहा सामन्तशाही तत्त्वोकी अब भी कमी नही थी। खोकन्दके नामपर राष्ट्रीय भावनाके जगानेमे आसानी थी, इससे भी लाभ उठानेके लिये इसी नगरको प्रतिगामियोने अपना अड्डा बनाया।

खोकन्द स्वायत्तताका आन्दोलन समरकन्दके मध्यवर्गमे भी बढा, और वहा उन्होने 'इत्तिफाक' के नामसे अपना सगठन मजबूत किया। किर्गिज-मध्यवर्गने भी इस आन्दोलनमे अपने लाभकी आशा देखी, और वह भी इसमे क्रियात्मक रूपसे भाग लेनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। यही नही, वर्तमान तुर्क-मानिस्तानमे कास्पियन तटतक खोकन्दकी 'स्वायत्तता'की गूज सुनाई देने लगी। सब होते हुए भी इस आन्दोलनका केन्द्र ताशकन्द या समरकन्द न होकर खोकन्द रहा। खोकन्द फर-गानाका सबसे बडा नगर होनेके कारण आर्थिक केन्द्र भी था, लेकिन वह औद्योगिक केन्द्र नही था। कमकरोकी कमजोरीके कारण खोकन्द क्राति-विरोधी स्वायत्ततावादी इसे अपना केन्द्र बना सके। यहापर जहा मिले और फैक्टरिया बहुत ही कम थी, वहा सैनिक महत्त्वका स्थान न होनेसे रूसी सैनिकोकी सख्या कुछ दर्जनोसे अधिक नही थी, जो भी घर लौटनेमे सफल न होनेके कारण खोकन्दके किलेमें रह गये थे। प्रतिगामियोने इस्लाम धर्मकी भी आड लेकर जहादका प्रचार शुरू कर दिया था। यद्यपि इससे उनके पृष्ठपोषक रूसियोको खतरा था, लेकिन तब भी वह इस समय बोल्शेविकोके खिलाफ उनकी सहायता करनेके लिये तैयार थे। स्वायत्तता-वादियोका नेता मुस्तफा चोकायेफ था। लेकिन जैसा कि ऊपरकी बातोसे मालूम होगा, असली सूत्रधार रूसी पूजीपति और अफसर थे, जिनमे पीछे मेन्शेविक और दक्षिणपन्थी समाजवादी क्रातिकारी भी शामिल हो गये। खोकन्द स्वायत्तता-विधानके निर्माणमे नेसबेर्ग-जैसे कितने ही रूसी वकीलोका मुख्य हाथ था। कजखोफ स्वायत्ततावादियोकी सेनाका मुख्य शिक्षक था। करेन्स्कीकी पार्टी (समाजवादी क्रातिकारी)का खोकन्दके आन्दोलनमे खास हाथ था। ताश-कन्दके शिक्षकोके सघने भी प्रस्ताव द्वारा १० (२३) दिसम्बर १९१७ ई०के अपने सम्मेलनमे स्वायत्तताका समर्थन किया था। खोकन्दकी स्वायत्ततावादी सरकारने गाववालोको अपने हाथमे करनेके लिये शिक्षितो और मुल्लोको तैनात किया था। मदरसो, मस्जिदो, चायखानो, बाजारोमे जहा देखो तहा 'स्वायत्तता'का घनघोर प्रचार हो रहा था, उसी तरह जैसे कि इसके साल-डेढ साल बाद भारतमे असहयोग आन्दोलन देशके कोने-कोनेमें। लेकिन जहा हमारी राष्ट्रीयताको अग्रेजोकी सडी-गली व्यवस्थासे भिडना था, वहा मध्य-एसियामे वहाके नब्बे प्रतिशत लोगोके

हितोंके जबर्दस्त समर्थक बोल्शेविकोंके साथ संघर्ष जारी हुआ था। इसलिये मध्य-एसियाके मुल्ला और शिक्षित बहुत दिनोंतक लोगोंको धोखेमें नहीं रख सकते थे। वह प्रचारके साधनके तौरपर लोगोंकी भुखमरीका उदाहरण दे रहे थे, लेकिन उसके कारण बोल्शेविक नहीं थे। वह बोल्शेविकोंके अत्याचारोंकी मनगढन्त बातें सुनाते थे, लेकिन मध्य-एसियामें जो थोडे-से बोल्शेविक देखे जाते थे, वह गरीबोंके सबसे गहरे मित्र छोड और कुछ नहीं थे। यह भी कहा जाता था, कि बोल्शेविक काफिर इस्लाम और अल्लाहको यहांसे उखाड फेंकना चाहते हैं, लेकिन इस झूठको वह तभीतक लोगोंमें फैला सकते थे, जबतक कि रक्त-बीजकी तरह बढकर बोल्शेविक अपने उद्देश्योंके प्रचारके लिये सब जगह फैल नहीं गये। बोल्शेविक भी दूसरे रूसियोंकी तरह साम्राज्यवादी हैं, इस प्रचारको वहांके लोग अपनी आंखों देखकर झूठा समझ सकते थे, जब कि स्वायत्ततावादी नेताओंको जारशाहीके बडे-बडे अफसरों और पूंजीपतियोंके साथ घुलते-मिलते देख रहे थे।

ओरेनबुर्गमें आतमन दूतोफके विद्रोहके कारण उधरसे रूसका मध्य-एसियाके साथ संबंध कट गया था, और इधर कास्पियनके पूर्वी तटमें अंग्रेजी षड्यंत्रने कुछ समयके लिये सफलता प्राप्त की थी। ताशकन्दपर बोल्शेविकोंका अधिकार हो जानेसे उनका विरोधी दूतोफ ओरेनबुर्गसे अनाज आने देनेके लिये कैसे तैयार हो सकता? सारे झूठे प्रचारके होनेपर भी मध्य-एसियाके कमकर-किसान बोल्शेविकोंके कामको देख रहे थे। उन्होंने किसानोंको अपनी जोती जमीन देकर अपनी तरफ कर लिया था। मजदूरोंमें काले-गोरे दोनोंको मिलाकर कल-कारखानोंके प्रबन्धमें भागीदार बना दिया था। धीरे-धीरे स्वायत्ततावादियों और बोल्शेविकोंके कामोंकी तुलना करनेसे इस्लाम और जातीय स्वतंत्रताके नाम पर होते हुये प्रचारका प्रभाव घटने लगा, और समझदारोंको यह समझनेमें दिक्कत नहीं हुई, कि खोकन्दके स्वायत्ततावादकी आडमें बडे-बडे रूसी स्वामी, पूंजीपति और पुराने शासक शिकार खेल रहे हैं।

फर्वरीतक फरगानामें भी वर्ग-संघर्ष उग्र रूप ले चुका था और खोकन्दमें अब क्रांति-विरोधियोंका प्रभाव बहुत घट चुका था। उनका शासन केवल पुराने नगरमें रह गया था। नये शहरमें बोल्शेविकोंने सोवियत-शासन स्थापित कर दिया था। किलेमें जो १६ रूसी सैनिक रह गये थे, वह भी बोल्शेविकोंके साथ हो गये थे। खोकन्द सोवियतका अध्यक्ष बाबुश्किन था। क्रांति-विरोधियों (जिनमें सफेद रूसी भी थे)ने पहरेदारको मारकर बाबुश्किनके घरपर आक्रमण किया। उसके बीबी-बच्चे भी साथ थे, लेकिन बाबुश्किन पिस्तौलसे लडता रहा। क्रांतिविरोधियोंने योजना बनाई कि पहले किलेको हाथमें किया जाय, फिर टेलीफोनके स्टेशनको, और अन्तमें सोवियत-अध्यक्ष बाबुश्किनको। लेकिन इसी समय फरगानाके पूर्वी भागमें बोल्शेविकोंने सफलता पाई। उन्होंने अन्दिजानको लेकर सारे फरगानापर बोल्शेविक-शासन स्थापित कर लिया।

खोकन्दके पुराने नगरमें सजोनोफ और निकोलायेको खोकन्द स्वायत्त-सरकारके साथ बात-चीत करने गये। १२ फर्वरीके सवेरे दिन बहुत अच्छा था। बोल्शेविकोंका संगठन मजबूत था। १३ फर्वरीको सवेरे स्कोबेलेफ और अन्दिजानसे १२० आदमियोंकी सहायता आ गई। स्वा-यत्ततावादियोंने बोल्शेविकोंकी बढी हुई शक्तिको देखकर अपनी योजनाको आगे बढानेकी हिम्मत नहीं की, बल्कि लडनेकी जगह सुलहकी बातचीत करनेको ही ठीक समझा। १७ फर्वरी (२ मार्च)को दोनों ओरके प्रतिनिधि बात करनेके लिये जमा हुये, जिसमें सोवियतके सत्ताइस और स्वायत्तियोंके चौबीस प्रतिनिधि थे। लेकिन स्वायत्ती अपनी इच्छासे कैसे अपना खातमा कर देते? इसपर बोल्शेविकोंने उन्हें अल्टीमेटम दे दिया। समझौतेमें सबसे बाधक एर्गास और तानीशेफ थे। समझौता होते न देखकर उस दिन १० बजकर ३० मिनटको बैठककी कार्रवाई रोक दी गई, और तानीशेफके पाससे उत्तरके आनेकी प्रतीक्षा की जाने लगी। अगले दिन तानीशेफने अपनी सहमति दे दी, लेकिन एर्गास मुल्लाओंके बलपर कूद रहा था। जिस समय समझौतेके लिए बातचीत हो रही थी, उसी समय खोकन्दकी सभी

मस्जिदोमे मुल्ला जहादपर व्याख्यान दे रहे थे। समझौता न होनेपर अव शक्ति मुल्लोके हाथमे चली गई थी, जो कि किसी तरहके सुधारको माननेके लिये तैयार नही थे। उनके लिये सुधारवादी उज्वेक भी काफिर थे, इसलिये उनके एक भागको मुल्लोने गिरफ्तार कर लिया, और दूसरा भाग भागनेके लिये मजबूर हुआ। खोकन्दके सेठोमेसे कुछ तटस्थ हो गये और कुछने एर्गस तथा मुल्लोका पक्ष लिया। जहातक देहकानो (किसानो)का सवध था, वह समूहरूपेण सोवियत-सरकारके पक्षपाती हो गये थे। इस प्रकार एर्गसको भारी जनसख्याका वल प्राप्त नही हो सका। खोकन्दमे मजदूरोकी भी स्थिति डावाडोल रही, उनकी सभा (इत्तिफाक) एक वार मुल्लोके प्रचारके प्रभावमे इतनी आ गई थी, कि उसने सोवियतके विरुद्ध प्रस्ताव पास करके अपनेको स्वायत्तियोके पक्षमे घोषित किया, लेकिन जव एर्गस और मुल्लोकी सरकारका मजा चखा, तो उनकी आखे खुली। उन्होने "मुसलमान कमकर सघ" नामक वोल्शेविक-पक्षपाती सघ बनाया, फिर 'इत्तिफाक' भी सोवियत शासनका समर्थक वन गया। व्यापारियोमे जरूर काफी भाग ऐसा था, जो मुल्लोकी तरफ था।

खोकन्दकी ऐसी स्थिति थी, जव कि वोल्शेविकोने स्वायत्ततावादियोको खतम करनेका निश्चय किया। अवतक ताशकन्दसे भी उन्हे सहायता मिलने लगी थी। सोवियत कमाडरने १९ फर्वरी (४ मार्च) १९१८ ई०के १० वजकर १५ मिनटपर एर्गसको अल्टीमेटम दिया। दिनके १ बजे अल्टीमेटमका समय वीतनेवाला था। पौन वजे एर्गसका जवाव मिला। उसने सोवियत-कमाडरकी माग पूरा करनेसे इन्कार कर दिया। १ वजेसे वीचमे कभी-कभी रुककर शामके अधेरेतक तोपे पुराने नगरपर गोला-वर्षा करती रही। २० फर्वरीको सवेरे लाल सैनिकोने पुराने नगरपर धावा वोल दिया। एर्गस अपने आदमियोको लेकर पहली ही झडपमे भाग खडा हुआ, इसलिये नगरपर अधिकार करनेमे अधिक प्रतिरोधका सामना नही करना पडा। एर्गसके भाग जानेपर अव पुराने खोकन्दके प्रतिनिधि सुलह करनेके लिये आये। सुलह-सम्मेलन २१-२२ फर्वरी (८-९ मार्च) १९१८ ई०को रूसी-एसियाई वैकके मकानमे हुआ। सुलहकी शर्तोके अनुसार हथियारोको सोवियत कमाडरके हाथमे दे देना पडा, खोकन्दमे स्वायत्ती सरकार तोडकर प्रादेशिक सोवियत जनकमीसर मडलके शासनको स्वीकार किया गया। इस प्रकार खोकन्दपर किसानो-मजदूरोका राज्य स्थापित हुआ। एर्गसने यद्यपि यहा असफलता पाई, लेकिन आगे वासमची (डाकुओ) वन अपनी निष्ठुर खून-खरावियो द्वारा उसने तथा मध्य-एसियाके और भी कितने ही अधिकारच्युत धनियो और अमीरोने वोल्शेविकोको हटाकर अपनी तानाशाही स्थापित करनेका असफल प्रयत्न किया।

खोकन्द स्वायत्तीय आन्दोलन और सरकारके जीवनका चिट्ठा पुराने रूसी पचागकी तारीखो (जो कि तेरह दिन पहले पडती थी)के अनुसार निम्न प्रकार है —

दिसम्वर	६-७,	१८१८ ई०	फरगाना जिलेकी सोवियतोकी काग्रेस
,,	९-११,	,,	मुसलमानोकी काग्रेस
,,	११,	,,	खोकन्द स्वायत्तताका आरम्भ
,,	२१-२४,	,,	खोकन्दमे अखिल तुर्किस्तान समाजवादी क्रातिकारी काग्रेस
दिसम्वर	२७,	१९१८ ई०	ताशकन्दमे वोल्शेविकोका प्रदर्शन
फर्वरी	१२,	१९१९ ई०	खोकन्द दुर्ग वोल्शेविकोके हाथमे और खोकन्दमे सैनिक क्राति-समितिका सगठन
,,	१३,	,,	स्कोवेलेफ और अन्दिजानसे खोकन्दमे कुमक आई, खोकन्द स्वायत्ती सरकारसे प्रथम वातचीत
,,	१४,	,,	स्वायत्ती सरकारसे द्वितीय वातचीत
,,	१४-१६,	,,	एर्गसका किलेपर आक्रमण करनेका प्रयत्न
,,	१५,	,,	स्कोवेलेफ नगरकी दूमाका खोकन्दके शाति-

	सम्मेलनोंमें एक प्रतिनिधि भेजनेका निश्चय
फर्वरी १७, ,,	जाति-सम्मेलनका उद्घाटन
,, १८, ,,	मुल्लोका स्वायत्ती सरकारको अपने हाथमें ले लेना
,, १९, ,,	ताशकन्दसे खोकन्दमें सेना आनेपर सोवियत कमांडरने अल्टिमेटम भेजा, पुराने नगरपर गोला-बारी शुरू
,, २०, ,,	एर्गश खोकन्द छोडकर भागा
,, २२, ,,	सुलहनामेपर हस्ताक्षर

६ समरकन्द-विजय

खोकन्द स्वायत्तियोंपर विजय प्राप्त करना मध्य-एसियामें साम्यवादकी जबर्दस्त विजय थी। उनके बाद यह निश्चय-सा हो गया, कि नगरोंसे बोल्शेविकोंको हटाना बहुत मुश्किल है। १९१८ ई०में बोल्शेविकोंका शासन सिर्फ नगरोंपर था। नगरोंके आसपासके कुछ किसान भी उनके प्रभावमें आये थे। खासकर सिर-दरियाके आसपासवाले इलाके, फरगाना जिला और समरकन्दके जिलेके किसानोंपर बोल्शेविकोंका प्रभाव बढता जा रहा था, लेकिन उधर मुल्लाओंका सगठन "शूरा-इस्लामिया" (इस्लामी लीग) भी काफिरोंके विरुद्ध धुआंधार प्रचार करके मुस्लिम-जनसाधारण-को रुसियोंके, खासकर बोल्शेविकोंके, विरुद्ध खूब भडका रहा था। दिसम्बर १९१७ ई०के अन्त और जनवरी १९१८ ई०के शुरूमें समरकन्दमें क्रांतिकारियोंने विरोधियोंको दबा दिया। वहां बोल्शेविकोंका सगठन भी हो गया और रेव-कम (रेव्यूल्यूशनरी कमेटी, क्रांति-समिति)ने बोल्शेविक सेनाके सगठनका भी सूत्रपात कर दिया। लेकिन इसी समय कजाकोंने समरकन्दको खतरेमें डाल दिया। मध्य-एसियाकी जातियोंमें कजाक सबसे ज्यादा लडाकू और अभी भी बहुत कुछ घुमन्तू जीवन बिताते थे। साइबेरियामें क्रांति-विरोधियोंने अपने पक्षको मजबूत किया था, और इन कजाकोंका उनसे सीधा सबंध था। समरकन्दके आसपासको घेरनेवाले कजाकोंके साथ बात करनेके लिये बोल्शेविकोंने अपना प्रतिनिधि-मडल भेजा। किजिल-तेपमें दोनों ओरके प्रतिनिधियोंने बातचीत की। फिर क्रांति-सरकारके नामसे अल्टीमेटम दिया गया, जिस पर कुछ अफसरों और प्रतिगामी कजाकोंको छोड सबके हथियार ले लिये गये।

अक्तूबर-क्रांतिके तुरन्त ही बाद समरकन्द-जैसे मध्य-एसियाके महत्त्वपूर्ण नगरमें क्रांतिकी रक्षार्थ सेना तैयार करनेमें कैसे ढिलाई की जा सकती थी? इस सेनामें रूसी और एसियाई दोनों ही जातियोंके आदमी थे। जारकी सेनामें काम किये हुये सिपाहियोंके अतिरिक्त काफी सख्यामें नये आदमी भर्ती हुये। इस प्रकार जनवरी १९१८ ई०में लाल सेनाका प्रथम सगठन यहां हो चुका था। समरकन्दकी रूसी गैरिसनके सिपाही पहलेसे सैनिक शिक्षा पाये हुये थे, नये क्रांति सिपाहियोंने भी सैनिक-शिक्षा तेजीसे ली। साथ ही पुराने सिपाहियोंमें राज-नीतिक चेतना लानेके लिये पूरी कोशिश की गई। कजाक कत्ताकुर्गान शहरपर अधिकार किये हुये थे। अभी भी उनसे खतरा दूर नहीं हुआ था। प्रदेश (क्राइ)की सरकारने पोल्तरा-स्कीको उनसे बात करनेके लिये नियुक्त किया। कजाकोंके भी प्रतिनिधि आये। समरकन्दमें दोनोंकी बातचीत होते समय क्रांतिकारी कमेटीने उनसे हथियार रखनेकी माग की, लेकिन कोई निश्चय नहीं हो सका। फिर बोल्शेविक-प्रतिनिधि सीधे कजाक सैनिकोंसे बात करनेके लिये समरकन्दसे दस वर्स्त (/ ३ फरसख)पर अवस्थित जूमा रेलवे स्टेशनपर गये, लेकिन कजाक किसी बातको सुननेके लिये तैयार नहीं थे। वह समरकन्दपर आक्रमण करनेके लिये उतारू थे। समरकन्दमें भी कमकरोंने बडी तेजीसे सैनिक तैयारी की। मजदूरोंने अपने परिवारको छोड-कर बन्दूक उठाई और कजाकोंको जीजव स्टेशनमें ही रोकनेका प्रयत्न किया। बोल्शेविक पार्टी-का एक भाग सेनाके लिये सारी तैयारीपर नियुक्त हुआ। बहुतसे पार्टी-मेम्बर किलेसे

रक्षामे लगे और कितने ही युद्धक्षेत्रमे गये। एसियाई और युरोपीय दोनो ही मजदूर और बोल्शेविक-कर्मी एक-दूसरेसे मिलकर कजाकोसे समरकन्दको बचानेके लिये बडी तत्परतासे काम कर रहे थे। कजाक अपनेको करेन्स्की की अस्थायी सरकारका सैनिक बतलाते थे, जब कि वह सरकार रूसमे खतम हो चुकी थी। सारा प्रयत्न करनेपर भी कजाक सफल हुये। वह मुक्तिदाताके तौरपर समरकन्द शहरमे दाखिल हुये। रूसी और एसियाई बूर्ज्वाजीने उनका भारी स्वागत किया, बढिया शराब पिलाई, भोज और उत्सव मनाया। क्रांतिकारियोमेसे जो भी हाथ आये, उन्हे कजाकोने बडी निष्ठुरतासे मारा। लेकिन अधिकाश बोल्शेविक अन्तर्धान हो चुके थे। उनका सगठन भी नष्ट न हो, अन्तर्हित हो गया था। इस समय कमजोर दिलवाले अपने आप पार्टीमे अलग हो गये, लेकिन पक्के बोल्शेविक और मजबूतीके साथ अपने सगठनको चलाते रहे। बोल्शेविकोकी कार्य-तत्परता, कुर्बानी और बर्तावने एसियाई गरीबो और मजदूरोके दिलमे और भी उनके प्रति विश्वास पैदा कर दिया।

लेकिन, समरकन्द थोडे ही दिनोके लिये बोल्शेविकोके हाथसे गया। ताशकन्दमें बोल्शेविक शासन मजबूत हो गया था। खोकन्दमे भी शत्रुओको दबा दिया गया था। अब समरकन्दको फिरसे लेनेके लिये उन्होने तैयारी शुरू की। ताशकन्दने भी सेना भेजी, समरकन्दके मजदूरोने भी बहुतसे सैनिक दिये। समरकन्दके पुराने सैनिकोमेंसे बहुतसे उनके साथ थे, और कुछ ओरेनबुर्गमे क्रांतिविरोधियोसे लडकर अभी लौटे थे। बोल्शेविकोके सब मिलाकर तीन हजार पैदल और सवार दोनो ही तरहके सैनिक कजाकोके मुकाबिलेके लिये तैयार थे, लेकिन इनके पास एक ही मैदानी तोप थी। उधर क्रांति-विरोधियोके पास २७०० सैनिक थे, जिनमे ईरान और खीवाके युद्धक्षेत्रसे आये हुए भी कितने ही थे। उनके पास दो मैदानी तोपें और दो दूसरी तोपे थी। यह बतला चुके हैं, कि ओरेनबुर्गमे आतमन दूतोफ साइबेरियाके क्रांति-विरोधी जेनरलोके साथ था, और उसका प्रभाव खीवा होते कास्पियनके पूर्वी तट तथा ईरानकी सीमातक पहुच रहा था। बुखाराका अमीर यद्यपि अभी सीधे तौरसे बोल्शेविकोके विरुद्ध होनेकी हिम्मत नही रखता था, लेकिन उसके अफसर वहाके पूजीपति क्रांति-विरोधियोकी हर तरहसे सहायता कर रहे थे। युद्धके दो दिन पहलेतक कजाकोके साथ उनकी बराबर बैठके होती रही। अन्तिम आक्रमणके पहले जीजक स्टेशनके पास एक बहुत बडी सभा हुई, जिसमें एसियाई मजदूर बडी सख्यामे शामिल हुये थे। तुर्किस्तान गणराज्य सोवियत जनकमीसर-परिषद्के अध्यक्ष कोलेसोफने अपने भाषणमे गणराज्यकी सारी स्थितिपर प्रकाश डाला। इसी सभाके बाद योजना बनाई गई। फिर क्रांतिकी सेना दक्षिणवाले रास्तेसे रेलवेके साथ-साथ लाइनसे दाहिने और बाये होते आगे बढी। रोस्तोव्त्सेवो स्टेशनोमे पहुचनेपर गोलाबारी शुरू हुई। कजाक समरकन्दकी ओर पीछे हटे। बोल्शेविक आगे बढते गये। अन्तमे सोवियतकी क्रांति-विरोधियोंपर विजय हुई, और लाल सेनाके हाथमे बहुतसा गोला-बारूद और दूसरे हथियार आये। पेरफिल्येफ लाल सेनाका कमाडर था। दूसरे अफसर थे—फेदोर कोलेसोफ, पोल्तरात्स्की, फ्रोलोफ, पोनोमारेफ, पेन्दो, दूनायेफ, मिखाइलोफ, पेस्पेलोफ, एसाउलेको, बेर्ग, शुस्तोफ, बारकुस, ओर्लोफ, इसायेफ आदि। क्रांति-विरोधियोंकी तरफ थे—कजाची, कर्नल जायित्सेफ, स्लिको, सिवको, स्तेपानोफ, गिंजबुर्ग, सियानोफ, तोकारेफ, गोरेलोफ, गपेयेफ आदि जारशाहीके पुराने सैनिक अफसर तथा दूसरे।

जनवरी १९१८ ई०के आरम्भमे हुई समरकन्दकी इस विजयने फरगाना, समरकन्द और ताशकन्दके बीचकी भूमिको बोल्शेविकोका एक दृढ केन्द्र बना दिया।

लेकिन, अभी भी बोल्शेविक निश्चित नही बैठ सकते थे, क्योकि अफगानिस्तान और ईरानके रूसी सीमान्तपर अंग्रेजोका षड्यन्त्र बडे जोरसे चल रहा था, और चर्चिल सारी शक्ति लगाकर रूससे बोल्शेविकोको उखाड फेकनेके लिये तैयार था।

७ बुखारा-अमीर भगा (१९२०ई०)

मध्य-एसियामे रूसका शासन स्थापित हो जानेके बाद भी बुखाराके अमीरका शासन हमारे यहाकी बडी रियासतोके ढगपर हो रहा था। मध्य-एसियाके लोग भी तुर्क है, और

तुर्कीके लोग भी। मध्य-एसियाके तुर्क सुन्नी होनेसे तुर्कीके खलीफाको अपना सबसे बडा धर्माचार्य मानते हैं। इस प्रकार भाषा और धर्मके घनिष्ठ सबधके कारण मध्य-एसियाके शिक्षितोका तुर्कीके साथ घनिष्ठता होनी स्वाभाविक थी। इसीलिये जिस तरहके आन्दोलन तुर्कीमे होते, उसका कोई-न-कोई रूप मध्य-एसियामे उठ खडा होता। तुर्कीमे नवीन-तुर्क दलने सुधारके लिये बहुत जद्दो-जहद की, और वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें उसने इतनी सफलता पाई, कि तुर्कीके सुल्तानको अनवर पाशा और दूसरे नवीन तुर्क-नेताओको शासनमें साझीदार बनानेके लिये मजबूर होना पडा। नवीन-तुर्क पुराने जमानेकी कितनी ही बातोको हटाकर तुर्कीको सामन्तशाहीसे पूजी-वादी समाजमें लाना चाहते थे। इन्ही नवीन-तुर्कोंकी नकलपर मध्य-एसियामे 'जदीद' (नवीन) आन्दोलन शुरू हुआ, जिसका केन्द्र बुखारा था। रूसी इलाकेमे अक्तूबर-क्रांतिके बाद खोकन्दी स्वायत्तियोने शक्तिको अपने हाथमे लेना चाहा, लेकिन जदीदोने इतना जोर नही दिखलाया। जदीद मुल्लाशाहीके भी खिलाफ थे, इसलिये मुल्ला उन्हे फूटी आखो देखना नही चाहते थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भसे ही जदीदवादका प्रचार बुखारामें होने लगा था। १९१७ ई०के मार्च-अप्रैलमे जदीदोका नारा 'हुर्रियत' (स्वतत्रता) बडे जोरोपर था। फर्वरी-क्रांति द्वारा जारके सिहासनसे हटा दिये जानेके बाद बुखाराका अमीर आलमखान भी डर गया, और उसने एक बार तुर्कीके सुल्तानका अनुगमन करते हुये जदीदोकी बहुतसी मागे मान ली। लोगोको मालूम होने लगा, कि यहापर भी अब जदीदोका शासन स्थापित होगा। लेकिन सालभर बीतते-बीतते अमीरको फिर इतनी हिम्मत हो गई, कि मार्च १९१८ ई०से उसने जदीदोका कत्लेआम शुरू कर दिया। चारो ओर मुल्लोका जोर था। बडे-बडे पगडवाले मुल्ला जदीदोके खूनकी नदी बहते देखकर दाढी फटफडाते कह रहे थे—"देखा न शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)की ताकत!" बुखारामे सैकडो आदमी बुरी तरहसे पकड-धकडकर तलवारके घाट उतारे जा रहे थे, खूनसे भरी खाइयोके पास सैंमो मुर्दे दम तोड रहे थे।

जदीदोके प्रभावके जमानेमे नसरुल्ला कुशबेगीने जदीदोके साथ सहानुभूति दिखलाई थी, जिसके लिये उसे अपने बीवी-बच्चो और सबधियोके साथ बुखारासे निर्वासित करके करमीनामें नजरबन्द कर दिया गया, और उसकी जगहपर मिर्जा उरगज महामत्री बनाया गया। जदीदोने पुराने ढगके मकतबोकी जगहपर लडकोंके पढनेके लिये नये ढगके स्कूल स्थापित करना चाहा। मुफ्ती हाजी अकरामने उनके कामका समर्थन किया था, इसलिये उसे भी गुजारमें निर्वासित कर दिया गया। बुखारा-शरीफका रईस अब्दुस्समद खा जदीद होनेके कारण पदच्युत कर दिया गया। इसी तरह मिर्जा शहबाई और हाजी दादखाह-जैसे प्रभावशाली दरबारी जदीद होनेके इल्जाममें निर्वासित करके कबादियान भेज दिये गये। जिस तरह खोकन्दमें मुल्लोने अन्तमें सारी शक्ति अपने हाथमें ले ली थी, वही बात अब १९२० ई०मे बुखारामे दुहराई जा रही थी। चारो तरफ जहाद (धर्मयुद्ध)का नारा घोषित हो रहा था। मुल्लोने फतवा दे रखा था, कि जदीदोका खून हलाल और उनकी जोरू हलाल।

लेकिन अमीर और मुल्लोंकी यह धीगा-धीगी छ महीने भी नही चल पाई। २० अगस्त १९२० ई०को बुखाराकी हालत परेशान देखी जाने लगी। बुखाराके आर्क (किले)से अमीरका सामान घोडा-गाडियोपर ढोया जा रहा था, और उधर बोल्शेविक तोपें समय-समयपर भूमिको कपाते हुये गुम्-गुमकी आवाज कर रही थी। अमीर आर्क छोडकर सितारामुखासा नामक बागमे ठहरा हुआ था, जहापर उसकी बेगमे और उसकी कामुकताके शिकार छोकरे गाडियोपर चढा-चढा करके भेजे जा रहे थे। बोल्शेविक केवल तोपके गोले ही नही छोड रहे थे, बल्कि उनके कागजी गोले और भी शक्तिशाली रूपमे लोगोंके बीचमे फेके जा रहे थे, जिनकी आखिरी पक्तियो—"बुखाराके मेहनतकश जिन्दाबाद, बोल्शेविक पार्टी जिन्दाबाद, सोवियत-सरकार जिन्दाबाद, अमीर और उसकी सरकार नेस्तबाद" को पढ-सुनकर बुखाराके गरीब बडे उत्साहके साथ नये दिनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, और उधर जनाब आली अमीर-बुखारा मीर आलम खान भागनेकी फिकरमें परेशान थे।

३०-३१ अगस्त और १ सितम्बर (१९२० ई०)के सोमवार, मगल और बुधके तीन दिनोमे सारा बुखारा उलट-पलट गया। नगरमे आग लगी हुई थी। आर्क (किले)के अन्दर हर जगह, खासकर अमीरके गद्दीधर और रनिवासमे, आगकी ज्वालाये लपलपा रही थी।

अमीरके लिये अब सुरक्षित जगह अपने देशके भीतर नही रह गई थी। जब उसकी प्रजामे सबसे अधिक सख्या रखनेवाले गरीब किसान और मजदूर बोल्शेविकोंके फेरमे पड गये थे, तो उसे कैसे त्राण मिल सकता था ? उसे अब अफगानिस्तानके भीतर ही जान बचानेकी जगह दिखलाई पडने लगी। लेकिन, वह उज्बेकोके मैदानी इलाकोमे गुजरना खतरेकी बात समझता था, इसलिये उसने पहाडी रास्ता लिया। बाइसूनमे जाकर उसने डेरा डाला। मुल्लोके धुआधार जहादी व्याख्यानोसे, और उससे भी अधिक लूटके लोभसे पूर्वी बुखारावाले हिसार, कुल्याब, बलजुवान, दरवाज और करातगिनके इलाकोसे बहुतसे गाजी आये थे, लेकिन आधुनिक हथियारोसे सुसज्जित और सुशिक्षित बोल्शेविकोंके सामने भला यह शिवजीकी पलटन क्या कर सकती थी ? अमीरको बाइसूनसे भी भागकर दुशाम्बा जाना पडा। वहापर एक ही यूरोपीय ढगकी इमारत 'दोस्तरखाना' थी, जिसे अमीरने अपना महल बनाया। जब लुटेरोकी पलटन उसके आसपास आकर जमा होने लगी, तो अमीरको विश्वास हो गया, कि अब बुखारा तो गया, दुशाम्बा (आधुनिक स्तालिनाबाद) राजधानीमें ही शायद मै मगीतोके शासनको मजबूत करनेमे सफल होऊ। लेकिन फर्वरी १९२१ ई०में फिर अमीरका पैर कापने लगा। पासके खजानेको कही गाजीके नामसे इकट्ठा हुये यह डाकू न छीन लें, यह भी उसका डर था। इसलिये निराश हो कुल्याब होता वह कुछ समय बाद पज (वक्षुकी ऊपरी शाखा)के किनारे पहुच दरकदके घाटसे वक्षु पार हो अफगानिस्तान चला गया। जाते-जाते वह डाकुओ (बासमचियो)के सरदारोको अपना प्रतिनिधि बनाकर छोड गया, जिन्होने १९२१ से १९२६ ई० तकके पाच वर्षोंतक पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान)में बहुत लूट-पाट मचाई, गरीबोके खूनसे हाथ रगा, लेकिन अन्तमे उन्हे सोवियत-शासनने खतम कर दिया। बोल्शेविक क्रातिके बाद सारा रूसी मध्य-एसिया तुर्किस्तान गणराज्यके नामसे सगठित हुआ था। इसके बाद उज्बेकिस्तानका गणराज्य स्थापित हुआ, जिससे १९२४ ई०मे ताजिकिस्तान पहले स्वायत्त गणराज्य फिर पाच साल बाद १९२९ ई०में स्वतत्र गणराज्य होकर अलग हो गया।

स्रोत-ग्रन्थ

१ स्पिसोक् नरोद्नोस्तेइ तुर्केस्तान्स्कओ क्राया (इ इ जारुबिन्, लेनिनग्राद १९२५)
२. रेवोल्युत्सिया व् स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
३ "वोस्तोको वेदेनिया" (१९४५/३, पृष्ठ ५९-७९, लेनिनग्राद)
४. नसेलेनिये समरस्कन्द्स्कोइ ओब्लास्ति (इ इ जारुबिन्, लेनिनग्राद, १९२६)
५ दाखुन्दा (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल साकृत्यायन, प्रयाग, १९४८)
६. जो दास थे (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल साकृत्यायन, प्रयाग, १९४९)
७ बुखारा (सस्मरण, सदरुद्दीन ऐनी, अनुवादक स बोरोदिन्, मास्को, १९५२)

अध्याय ३

कजाकस्तानमें क्रांति

१ कजाक-जाति

इतिहासके आरम्भसे वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमे किस तरह मानव जातियोका आगमन, निस्सरण और सम्मिश्रण होता रहा, इसे हम जगह-जगह कह चुके है। आज जो विशाल भूमि कजाकस्तान गणराज्यके नामसे प्रसिद्ध है, वह भौगोलिक तौरसे इतिहासकी दृष्टिसे साइ-बेरिया, किपचकभूमि, अल्ताई और सप्तनदके भिन्न-भिन्न भागोमे विभक्त रही। मध्य-पाषाण-युग (ई० पू० ८०००)से पहलेकी पुरापाषाणयुगीन मुस्तेर आदि जातियोमे से कौन इस भूमिमे रही, इसके बारेमे हमारे पास पुरातात्विक प्रमाण नही है। तुलनात्मक नृवंश-तत्त्व और भाषा-तत्त्वके अध्ययनसे हम यह कह सकते है, कि मध्य-पाषाणयुगमें दश्तकिपचकमे फिनो-द्रविड थे और वही जाति सप्तनदमे भी थी, अर्थात् तुर्किस्तान शहर और जम्बुल जिलेके इलाकोमे किसी समय वही फिनो-द्रविड जाति रहती थी, जिसके अवशेष भारतमे द्रविड तथा सोवियतमें कौमी स्वायत्त गणराज्य, और एस्तोनिया तथा फिनलैंडके लोगोके रूपमे अब भी मौजूद है। लेकिन उससे हजार वर्ष बाद नव-पाषाण-युगमे हम यहा विशेषकर अराल और निम्न-सिर-दरियाकी उपत्यकाओमे आर्य घुमन्तुओके आनेका पता पाते है। २५०० ई० पू०मे फिर किपचक-भूमि और अल्ताईमें उनका स्थान उन्हीके भाई-बन्द शक लेते है। सारे पित्तल-युग और लौह-युगमें घुमन्तू पशुपाल और कुछ थोडेसे खानोमे काम करनेवाले शक, किपचक, सप्तनद और अल्ताईके निवासी थे। हम देख चुके है, कि ई० पू० ५वी शताब्दीमें भी, जब कि दुनियाके बहुतसे भागोमें लोहेका प्रचार हो चुका था, अभी ये शक पीतलके हथियारोका ही इस्तेमाल करते थे। ई० पू० ४थी सदीमे कजाकस्तान (उस समय शक-भूमि)के पूर्वी भाग अर्थात अल्ताई-प्रदेशके पडोसी हूण थे, जो ई० पू० २री शताब्दीमे शक-भूमिके ऊपर टूट पडे, और उन्होने शकोकी प्रभुता वहासे खतम कर दी। उस समयसे शक-आर्य शरीराकृतिका स्थान मगोलायित आकृतिने लेना शुरू किया। जो शक इस भूमिमें रह गये, वह मगोलायितोमे मिल गये। ईसाकी ५वी सदीके पूर्वार्ध-में किपचक-सप्तनद-अल्ताईकी भूमिमे रहनेवाले हूण-वंशज मगोलायित अपनी सामान ढोने-वाली गाडियोके कारण कगली कहे जाते—ईसामान शताब्दीके आरम्भमे पश्चिमसे आनेवाले घुमन्तू सिरकी वालोको पूर्वी उत्तरप्रदेशमे कगडा कहा जाता था। ६ठी सदीके उत्तरार्धमे फिर तुर्कोका प्रभुत्व स्थापित होनेके बाद इस भूमिके निवासी तुर्क नामसे प्रसिद्ध होने लगे। तबसे मध्य-एसियाके और भागोकी तरह आज भी तुर्क जाति यहा रहती है, जो भाषाके थोडे भेदके कारण कही कजाक, कही किर्गिज, कही उज्बेक और कही तुर्कमानके नामसे पुकारी जाती है। यदि हम आजकी कजाक जातिके ऐतिहासिक विकासको देखते है, तो हमे उनके भीतर निम्न क्रमसे जातियोके स्तर मिलते है —

कजाक जातिका निर्माण —

काल	किपचकभूमि	सप्तनद	अल्ताई
ई० पू० ८००० (मध्य-पाषाण)	फिनो-द्रविड (अराल-सिर)	फिनो-द्रविड (जम्बुल)	
,, ३५००	,,	,,	.
,, ३००० (नवपाषाण)	शकार्य	,,	...

"	२५००	शक	शक	शक
"	१५०० (ताम्र-युग)	श०	श०	श०
"	७००	श०	श०	श०
"	५५०	श०	श०	श०
"	३२६	श०	श०	श०-हूण
"	२०६	श०	श०	श०-हूण
"	१३०	हूण	हूण-श०	हूण
"	१००	हूण	हूण-श०	हूण
ईसवी	१००	हूण	हूण-श०	हूण
"	४२५	कगली	कगली	कगली
"	५५७	तुर्क	तुर्क	तुर्क
"	६७३	तुर्क	तुर्क	तु०-किर्गिज
"	८९२	तुर्क	तुर्क	किर्गिज
"	१२२०	तुर्क	तुर्क	किर्०-मगोल
"	१५००	तु० (कजाक)	तु० (कजाक-किर्०)	किर्०-मगोल
"	१७५७	कजाक	कज-किर्०-मगोल	किर्०-मगोल
"	१८६५	कजाक	कज०-रूस	कज०-रूस
"	१९१७	कज०-रूस	कज०	कज०-रूस

कजाक

अक्तूबर-क्रांतितक कजाक लोग अब भी बहुत कुछ घुमन्तू पशुपाल थे। हम यह देख चुके है, कि इन घुमन्तू जातियोका पशुपाल-अवस्थामे रहना उनके सामन्ती समाजके विकसित होनेमे बाधक नही था। इस प्रकार वर्गके तौरपर कजाकोके मुखिया और शासक सामन्ती जीवन व्यतीत करते सामन्ती सस्कृतिसे भी परिचित थे। घुमन्तू जातियोमे दूसरी घुमन्तू जातियोका हजम होना बहुत आसान है, और अपने सरदारो या वीरोके नाम स्वीकार करनेके कारण उनके प्राचीन नामोका पता लगाना भी मुश्किल है। कजाकोके बारेमें हम देख चुके है, कि पहले इन्हे उज्बेक या उज्बेक-कजाक कहा जाता था। सुवर्ण-ओर्दूका नाम एक शक्तिशाली उज्बेक खान (१३१३-४० ई०)के अधीन होनेके कारण पडा। कजाकका शब्दार्थ चाहे अरबी भाषामें डाकू हो, लेकिन यहापर तुर्कोंने इसका इस्तेमाल साहसी लोगोके लिये किया। किर्गिज-कजाक और उज्बेक-कजाक नामके अन्तके कजाक और किर्गिज नाम अब रह गये, जो अपनी-अपनी जातिके परिचायक है। कजाक कबीलोके नामोके देखनेसे हमे पता लगता है, कि पुराने कौन-कौन-से कबीले या जातिया आकर इस भूमिमें मिश्रित हो एक जातिके रूपमें परिवर्तित हुई। कबीलोके ये नाम कजाको और उज्बेको मे बहुत-कुछ एक-से मिलते है, जिससे इस बातकी पुष्टि होती है, कि मूलत कजाक और उज्बेक एक ही कबीलेके अग थे। दोनो जातियोके कुछ कबीले है —

कजाक	उज्बेक	आनका काल
कुग्राद (सुवर्ण-ओर्दू)	कुग्राद	मगोल-काल
किपचक (मध्य-ओर्दू)	किपचक	तुर्क-काल
किताई (लघु-ओर्दू)	खिताई	
नैमान (मध्य-ओर्दू)	नैमान	मगोल-काल
उजुन (मध्य-ओर्दू)	ओशुन	शक-काल
उसिउन (सुवर्ण-ओर्दू)	"	
तजलर (लघु-ओर्दू)	ताज	
तरी-उइगुर (मध्य-ओर्दू)	उइगुर	मगोल-काल

कजीगली (मध्य-ओर्दू)	कजीगली	मगोल-काल
जलैर (सुवर्ण-ओर्दू)	जलैर	
कगली (सुवर्ण-ओर्दू)	इचकिली	
अलचिन (लघु-ओर्दू)	अलचिन	

इतिहासमें इन कवीलोमेंसे कितनोका हमे पता लगता है। कगली (ककली, कग) वहुत पुराना नाम है, जो यहा आये हूणोके पुराने वशजोको दिया गया। नैमन किसी समय र्इतिशसे मगोलियाकी पुरानी राजधानी कराकोरमतक—अर्थात् पीछेकी उत्तरी जुगारियामें वसते थे, जहासे मगोल-विजेताओंके ओर्दूका भाग वनकर यह मध्य-एसियामे आये।

जलैर वैकाल-प्रदेश तथा दौरियाके वीचमे किसी समय रहते थे, जहासे ये मगोलोके साथी वने।

उइगुर लोगोका केन्द्र भी किसी समय विशवालिग था। एक वार तुर्कोंके स्थानमे इन्होने अपनी प्रभुता स्थापित की थी, फिर मगोलोंके अनुयायी हो उनकी विजयोमे शामिल हो गये।

कुकुर्द या कुग्राद मगोलोका एक वहुत प्रतिष्ठित कवीला था, जो किसी समय दोलेनोर सरोवर, निम्न केरलोन तथा अर्गुनकी उपत्यकाओंमे रहता था।

अलचिन पहले खिगन पर्वतमालाके वासी थे।

कजाक कवीलोको आजके कजाकस्तानके भिन्न-भिन्न भागोमे हम निम्न प्रकार वितरित देखते है—

(१) **महा-ओर्दू**—इसके उइसुन और सीखिम कवीले ताशकन्दके जिलेमे मिलते है। औलि-याअता (जम्वुल) में इसके जानी, तेमिर, चीमिर और वोतपाई (खित्तन) कवीले रहते है। तुर्किस्तान-शहरके पास और चू-उपत्यकामे सिरगिली, उस्ती, ओतकची, जलैर, चपराच कवीले वसते हैं। कगली ताशकन्दके पासमे रहते है।

(२) **मध्य-ओर्दू**—इस ओर्दूका किपचक कवीला ताशकदके पास रहता है। कुग्राद भी वहीं वसते है। इनके अतिरिक्त ताशकन्दके आसपास मध्य-ओर्दूके अल्तीअता, कोकतुनगुलू अल्तीअता, कोकतुनचुई, अर्गुन, नैमन भी वसते है।

२ १९१६ ई० का विद्रोह
(जारशाहीसे)

जारशाहीके प्रसारके वारेमें लिखते वक्त हम यह वतला चुके हैं, कि किस तरह अपने शासनको दृढ करनेके लिये साइवेरिया और दूसरी जगहोंपर रूसी किसानो और व्यापारियोकी औपनिवेशिक वस्तिया वसानेकी कोशिश की गई। कजाकस्तानकी भूमिमे ये वस्तिया अधिकतर उसके उत्तर तथा उत्तर-पूर्वमें है। लेकिन, आगे चलकर वह ओरेनवुर्गसे सिर-दरियाके किनारे ताश-कन्द, और फिर सप्तनद तथा अल्ताई होते साइवेरियाके ओम्स्क आदि नगरोतक चली गई। पीछे ओरेनवुर्गसे अराल समुद्रके तटतक और फिर ताशकन्द होते वेर्नीतक रेल वन गई। तुर्किस्तानको साइवेरियासे मिलानेवाली रेलवे लाइन वोल्शेविक-क्रांतिके वाद वनी, लेकिन इससे पहले भी ओरेनवुर्ग, अराल्स्क, अरिस, चिमकन्द, वेर्नी (अल्माअता), वुर्ल्युन्त्युवे, आयागुज, सेमीप्लातिन्स्क, वर्नौल, नवोसिविर्स्कके आधुनिक रेल-मार्गपर जहा-तहा रूसियोकी वस्तिया वस चुकी थीं। जार-शाहीने पूरी कोशिश की, कि गोरोंके साथ विशेष रियायत करके उन्हे किर्गिजोंसे अलग रक्खा जाय। भारतमे अग्रेजोंके लिये ऐसा करनेमे सुभीता था, क्योंकि यहापर अग्रेज किसान और मजदूर आकर वसने नहीं पाते थे, और भारतीयोंके लिये सभी अग्रेज साहेव (स्वामी) थे, लेकिन कजाकभूमिके लोग साहेव-रूसियोको ही अपने पास नहीं, वल्कि लाखोंकी सख्यामें रूसी मजिकों (गरीव किसानों) को भी देखते थे। उपनिवेशोमें आकर वसे रूसियोंकी हालत कुछ वेहतर जरूर थी, और मूजिक या मजदूरकी शकलमें आये रूसी भी कुलक (धनी किसान) वननेमें

सफल हो जाते थे, इसलिये भी वह स्थानीय कजाकोंके साथ भाईचारा स्थापित नही कर सके। घुमन्तू पशुपाल कजाकोंको कृषि-भूमिकी उतनी अवश्यकता नही थी जितनी कि गोचर-भूमिकी, इसलिए वह अपनी भूमिके साथ उतनी घनिष्ठताका भाव नही रख सकते थे, जितना कि किसान। जारशाही सरकारकी बराबर कोशिश रहती थी, कि खेतीके लिये उपयुक्त भूमि कजाकोंसे छीनकर रूसियोंको दे दी जाय। ९ नवम्बर १९०६ ई०को इसके बारेमें वल्कि भूमि-सबधी एक नया कानून बनाकर कजाकोंको उनकी भूमिसे वंचित करनेका भारी उपक्रम किया गया। कजाकोंकी जमीनपर रूसी कुलकोंके पनपनेकी यही कथा है।

कजाकोंकी सांस्कृतिक अवस्था बडी हीन थी। उनमे निरक्षरताका अखंड राज्य था, और केवल उनके बाय (सामन्त) और मुल्ला पढ-लिख सकते थे। स्त्रियोंकी अवस्था तो इस्लाम-की रुकावटोंके कारण और बुरी थी। कजाक अपने पूर्वजोंके स्वतत्रता-सघर्षको बहुत-कुछ भूल चुके थे। अगर उनमे कोई सघर्ष होता था, तो आपसी कबीलोंका, जिसको जाग्रत रखनेके लिये जारशाही शासक पूरी कोशिश करते थे। एक प्रकारसे कजाक गहरी नींदमे सोये थे, या किस्मत-की बदनसीबी समझकर निष्क्रिय-से हो गये थे। इसी समय १९०६ ई०का अन्यायपूर्ण भूमि-सबधी कानून जारी हुआ, और उधर १९०५-६ ई०की रूसी-क्रांतिकी प्रतिध्वनि कजाकस्तानके रूसी मूजिकों द्वारा कजाकोंमें भी पहुंची। यहा आकर बसे रूसी सरकारी अफसरों, व्यापारियों या कुलकोंको उस क्रांतिसे कोई सहानुभूति नही थी, लेकिन तो भी उसकी चर्चा तो होनी ही थी, इसलिये रूसकी सुनी-सुनाई खबरोंने कजाकोंमे फिर कुछ चेतना पैदा की। ऊपरसे जारशाहीकी न तृप्त होनेवाली लालचने थप्पड लगाकर उन्हे जगानेकी कोशिश की। १९१३ ई०मे सप्तनदके राज्यपाल फोलबौमने लिखा था---रूसी सरकारके प्रति कजाक गरीबोंमें शत्रुताके भाव देखे जाते हैं।

प्रथम विश्वयुद्धमे कजाकोंके ऊपर और भी सकट पैदा हुआ। उनसे बडी भारी सख्यामे घोडे, ऊट ले लिये गये, फौजोंके खानेके लिये बकरी, भेंड और दूसरे जानवरोंका मास लाखों टन भेजा जाने लगा। अनाज भी ढो-ढो कर सेनाके खानेके लिये भेजा गया। जीवनोपयोगी सभी चीजों-का अभाव तो होना ही था, ऊपरसे जारशाही अफसरों, देशी-विदेशी व्यापारियों और जमींदारोंने चीजोंके दाम को मनमानी और सट्टेबाजीसे बहुत चढा दिया, जिसके कारण कजाक जन-साधारणकी अवस्था दुस्सह हो गई। फिर २५ जून १९१६ ई०को जार निकोलाइ II का उकाज़ (राजादेश) निकला, जिसके अनुसार १९ से ४३ वर्षके पुरुषोंको जबर्दस्ती भर्ती करके युद्ध-पक्तियोंके पीछे काम करनेके लिये भेजा जाने लगा। कितने ही वर्षोंसे भीतर-ही-भीतर सुलगती हुई असंतोषकी आग १९१६ ई०के विद्रोहके रूपमे भडक उठी, और सप्तनद तथा तुरगाईके जिलोंमें सब जगह बगावत फैल गई। ३ अगस्तको पहलेपहल वेर्नी (आधुनिक अलमाअता) के उयेज़्द (जिले)के किजिल बुरकोव्स्की मडलमे विद्रोह शुरू हुआ, और १० अगस्ततक वह सारे इलाकेमे फैल गया। १९१६ ई०के सितम्बरके उत्तरार्धमें तुरगाई ओब्लास्त (तहसील)मे विद्रोह शुरू हुआ। इस विद्रोहका नेता एक गरीब मा-बापका लडका अमनगेल्दी इमानोफ था, जिसने अपनी वीरता और सूझ-बूझसे विद्रोहियोंका इतना अच्छा नेतृत्व किया, कि जारशाही सरकार वर्षों-तक उससे परेशान रही और केवल अपने खातमेके साथ ही उसे उससे छुट्टी मिली, यह पहिले बतला चुके है। १९१६ ई०के अक्तूबरमे हजारों विद्रोही जन्ये जारशाहीसे लोहा ले रहे थे, जिनमे कभी-कभी पन्द्रह हजारतक आदमी शामिल थे। उनको दबानेके लिये जेनरल लावरे-न्तेफके अधीन सैनिक अभियान भेजा गया लेकिन विद्रोह दबनेकी जगह, उस सालके नवम्बर महीनेतक सभी कजाकोंमे फैल गया, तुरगाई ओब्लास्तके पचास हजार आदमी उनमें शामिल थे। यह विद्रोह गरीबोंके विद्रोहका रूप ले चुका था, जिसके कारण कजाक धनियों और सामन्तोंको, उससे डर लगा और वह जारशाहीको विद्रोह दबानेमे पूरी तौरमे मदद करने लगे। बाइतुरसुनोफ, दुलातोफ आदि ऊपरी वर्गके कजाक-नेताओंने उस समय रूसी सरकारके प्रति अपनी क्रियात्मक राजभक्ति दिखलानेमे कोई कसर उठा नही रक्खी। नवम्बरके उत्तरार्धमें रूसी सेनाओंके प्रहारके कारण अमनगेल्दी इमानोफको तुरगाईसे भागकर बतपक-कराके इलाकेमे जाना पडा।

पडी, और खुली लडाईकी जगह उसने छापामारी स्वीकार की । १९१७ ई०की जनवरीमें इमानोफने फिर तुरगाईमे आकर विद्रोहको भडकाया। जेनरल लावरेन्त्येफने फर्वरी १९१७ ई०मे वतपक-करापर चढाई करके इमानोफकी शक्तिको खतम करनेका निश्चय किया, और २४ फर्वरीको उसने इमानोफके प्रतिरोध-केन्द्र वतपक-करापर अधिकार कर लिया। इमानोफ अपने बहुतसे सहकारियोंके साथ दश्त (स्तेपी)की ओर भाग गया। विद्रोहको दमन करनेमें जारशाहीने वडी क्रूरताका परिचय दिया। सप्तनदके निवासियोंमेंसे एक-चौथाई--तीन लाख स्त्री-पुरुष---भागकर चीनके इलाकेमें चले गये, कितने ही गाव-के-गाव उजड गये। १९१६ ई०के विद्रोहको यद्यपि जारशाहीने दबा दिया, किन्तु उसमे कजाकोको जो शिक्षा मिली थी, उनके मनमें जारशाहीके विरुद्ध जो घृणा पैदा हुई थी, उसने वोल्शेविक-क्रातिको मदद पहुचाई। अपने सघर्षमें उन्होंने निम्न श्रेणियोंके रूसियोको उतना क्रूर नही पाया था । उनका नेता इमानोफ जल्दी ही समझ गया, कि अब सभी गरीबों और कमकरोंकी भलाई वोल्शेविक-क्रातिमें ही है । वह अन्तमे वोल्शेविक पार्टीमें शामिल हो क्रातिके लिये लडा। आज अमनगेल्दी इमानोफ कजाकस्तानका सबसे बडा यशस्वी वीर है।

फर्वरी-क्रातिके हो जानेके वाद १९१७ ई०की मईके अन्तमें भी तुरगाईमे अभी पूरी तरहसे शाति स्थापित नहीं हुई थी । अस्थायी सरकारने तुरगाई ओब्लास्तके लिये अलीखान वुकेइखानोफकी सहायतासे बहुत-से कजाक-विद्रोहियोंको गिरफ्तार किया, जिनमें इमानोफ भी था । अक्तूवर-क्राति सिरपर आई, जिसने सप्तनदमें भी रूसियोंको क्रातिकारी और क्राति-विरोधी दो दलोंमें विभक्त कर दिया। उधर वोल्शेविक सरकारने जातियोंके आत्म-निर्णयका अधिकार देकर कजाकोंके हृदयमें अपने प्रति विश्वास और भक्ति भर दी, जिसके लिये १९१६ ई०के विद्रोही अब क्रातिके सिपाही वन गये । इसी समय दूतोफके नेतृत्वमें ऊपरी वर्गके कजाकोने ओरेनवुर्गमे अपनी सरकार कायम करके लोगोकी आखोंमें धूल झोककर अपनी ओर करना चाहा, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नही हुई। नवम्बर १९१७ ई०से मार्च १९१८ ई०तक क्राति और प्रतिक्रातिका सघर्ष होकर अन्तमे सारा कजाकस्तान जारशाहीके अवशेषोंसे मुक्त हो गया ।

कजाकस्तान उस समय जारशाही नीतिके कारण एसियाई और यूरोपीय दो प्रकारकी जमातोंमें बटा हुआ था, इसलिये क्रातिके लिये सघर्ष भी दोनो जमातोंमें अपने-अपने तौरसे हुआ। सप्तनदके क्रातिके रूसी नेताओंमे से एक ग० फेदेरोफ भी था। उसने वहाके वारेमें लिखते हुये बतलाया है, कि फर्वरी-क्रातिके होनेतक वेर्नी (आधुनिक अलमाअता) में सिर्फ एक तरुण सगठन था, जिसके सदस्य रूसी सरकारी अफसरो और व्यापारियों-पूजीपतियोंके लडके-लडकिया होते थे, और जिनका नेतृत्व जारभक्त अध्यापकोंके हाथमे था। फर्वरीके वाद अलमाअताके स्कूलके विद्यार्थियोंने "नौजवान विद्यार्थी सघ"के नामसे एक सगठन कायम किया । लेकिन, फर्वरी-क्रातिके पक्षपाती जारको हटा कर भी जारशाहीकी हरएक वातको कायम रखना चाहते थे, इसलिये इस विद्यार्थी सघका काम था वनभोज, नाच-गान और पान-गोष्ठियो द्वारा मनोरजन करना---आखिर, उसके सदस्योंमेंसे ९९ फीसदी अफसरो, सेठो और कुलकोंकी सताने ही तो थी।

३ क्राति-सघर्ष

अक्तूवर-क्रातिके होते समय यहापर क्राति-विरोधियोंका वोलवाला था। वह हर तरहसे कोशिश करते, कि यहा सोवियतका प्रभाव स्थापित न होने पावे। लेकिन अब समाजवादकी वातें अलमाअतामें भी पहुचने लगी थीं। मार्च-अप्रैल (१९१८ ई०) तक तरुणोने अपने कितने ही अध्ययनचक्र तथा दूसरे सगठन कायम कर लिये। अब गृहयुद्ध साफ दिखलाई पड रहा था, इसलिये कमकरों और तरुणोंके जवर्दस्त सगठनकी जरूरत पडी। फेदेरोफने लिखा है---एक दिन मै अपने एक साथीसे मिला। उसने इर्कुत्स्कके छपे एक समाचारपत्रको दिया। मैंने उसे पढकर देखा, कि साइबेरियाके तरुण क्रातिके लिये कितना काम कर रहे हैं। इसके वाद हमने इर्कुत्स्कके नमूनेपर तरुणोंका सगठन करना शुरू किया । इस प्रकार तरुण-विद्यार्थी समाजवादी-

संघ अस्तित्वमें आया। फेदेरोफ और उसके साथियोंने जब अपने संगठनको मजबूत करते प्रचार करना शुरू किया, तो उनके एक सहकारी अध्यापकने कहा—"हम बोल्शेविकोंके साथ काम नहीं करना चाहते। लेकिन अब प्रवाहको रोका नहीं जा सकता था।" लाल सेनाकी सफलताओंकी खबरें भी क्रांति-पक्षियोंमें उत्साह और क्रांति-विरोधियोंमें निराशा पैदा कर रही थी। फेदेरोफने एक दिन अपने क्लासमें कहा—क्रांति-विरोधी पथ सेठोंके हितका पथ है, हमको क्रांतिका पथ लेना चाहिये। इसपर अल्माअताके एक रूसी सेठके पुत्रने उसे मार डालनेकी धमकी दी। संघर्ष और ज्यादा बढ़ता गया। फेदेरोफ-जैसोंको गुप्त गुटोंका संगठन करना पड़ा। जनवरी १९१९ ई०तक अभी सप्तनदमें क्रांति-विरोधियोंका ही पल्ला भारी था, लेकिन जब ताशकन्दपर कमकरोंकी विजय हो गई, तो अल्माअतामें भी उसका प्रभाव बढ़ा, और वहां बोल्शेविक विद्यार्थी संघ स्थापित हुआ, जिसका निर्वाचन करनेके लिये २५ जनवरी १९१९ ई०को सौ सदस्य एकत्रित हुये।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि अक्तूबर १९१७ ई०तक अल्माअतामें कोई राजनीतिक पार्टी नहीं थी। मार्क्सवादी साहित्यका वहां मिलना भी मुश्किल था, और कुछ तरुण गुपचुप केवल क्रांतिके बारेमें विचार-विनिमय भर कर लिया करते थे। कजाकों और रूसियोंको इस तरह अलग-अलग रक्खा गया था कि वह एक-दूसरेके साथ अभी विचारों द्वारा भी सहयोग नहीं कर पाते थे। लेकिन, ताशकन्दमें लालझंडा गड़ जानेपर सप्तनदमें भी क्रांतिके लिये रास्ता साफ था। जून १९१९ ई०में पार्टीके संबंधमें लोगोंको शिक्षा देनेके स्तेलमाशेस्की लिये आया। इससे पहले वह लाल सेनामें राजनीतिक प्रचारका काम कर चुका था। फेदेरोफ १९१९ ई०में साइबेरियाके क्रांति-विरोधियोंके साथ लड़नेके लिये युद्धक्षेत्रमें चला गया था, लेकिन जब वह नवम्बर १९१९ ई०में वहांसे लौटा, तो उस समयतक सप्तनदके क्रांतिकारियोंने बहुत बड़ा संगठन खड़ा कर दिया था, और किसानों और मजदूरोंमेंसे तीन सौसे अधिक तरुण क्रांतिके प्रचारमें पूरा भाग ले रहे थे। इस संगठनका नाम "लाल समाजवादी तरुण-संघ" था। इसके प्रचारक अब रूसी गांवों और कजाक औलोंमें भी पहुंच चुके थे। इस समयतक कराकोल, पिशपेक (आधुनिक फ्रुंजे) और जारकेन्द आदि नगरोंमें भी संगठन हो चुका था। "यूनी कम्युनिस्त' (युवक कम्युनिस्ट) पत्र भी निकलने लगा था, जिससे और जगहोंमें क्रांतिके लिये क्या हो रहा है, इसकी खबरें मिलने लगीं, और अल्माअता तथा सप्तनदके तरुण समझने लगे थे, हम अकेले नहीं हैं, क्रांति सब जगह सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है। इसके कारण लोगोंमें उत्साह बढ़ना जरूरी था। दिसम्बर १९१९ ई०में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें रूसी और कजाक दोनों जातियोंके तरुण रायन (जिले)के भिन्न-भिन्न भागोंसे आकर शामिल हुये। इसीमें ताशकन्दमें होनेवाली तुर्किस्तान-प्रदेश-तरुण-कम्युनिस्ट कांग्रेसके लिये प्रतिनिधि चुने गये। प्रदेश कमेटीके अब्दुर्रहमानोफ, जीय-कुलोफ जैसे कजाक तरुण भी मेम्बर चुने गये। कजाकों और रूसियोंके बीचमें खड़ी की गई दीवार ढह गई थी, इसलिये दोनों एक होकर काम करने लगे। यमसोफ, खुदायेफ, वेन्युकोफ, यार मुहम्मदोफ, इसायेफ-जैसे तरुण कजाक आगे बढ़े। उस समय लेनिनग्राद और मास्कोमें गृहयुद्धके कारण खाद्यका अकाल पड़ा हुआ था, जिसमें सहायता देनेके लिये तरुणोंने अन्न जमा करना शुरू किया। पिशपेककी तरुण कम्युनिस्ट कमेटीने अपने कार्यालयकी छतको अन्नसे भर दिया था।

अप्रैल १९२० ई०के अन्तमें प्रथम सप्तनद तरुण कम्युनिस्ट कांग्रेस हुई, जिसमें अल्माअता, पिशपेक, फ्रुंजे, जारकेन्द और कराकुलके प्रतिनिधि शामिल हुये। इन प्रतिनिधियोंमें दस कजाक थे। एक सालके भीतर ही दूसरी कांग्रेस हुई, जिसमें सभी तहसीलों तथा बहुतसे औलोंके भी एक सौ पचास तरुण शामिल हुये।

अल्माअताके अतिरिक्त कजाक भूमिमें किजिलओर्दा (भूतपूर्व पेरोव्स्की), कजालिन, तुर्किस्तान शहर, औलियाअता आदिमें क्रांतिके पक्षपातियोंने सबसे पहले अपने संगठन मजबूत किये। १९१८ ई०में ताशकन्दमें जो कांग्रेस हुई थी, उसमें किजिलओर्दाके तीन प्रतिनिधि शामिल हुये थे। १९१८ ई०में यहांके अधिकांश पार्टी-मेम्बर बन्दूकें लेकर युद्धक्षेत्रमें क्रांति-विरोधियोंसे लड़ने चले

गये थे। १९१८ ई०के अन्ततक किजिलओर्दाकी पार्टीमे चार सौ मेम्बर थे, जिनमें दो सौ रूसी और दो सौ कजाक थे। राजनीतिक जागृतिके साथ-साथ कजाकोमे पढनेके लिये ज्यादा उत्साह होना स्वाभाविक था, जिसके लिये कजाक भाषामें पुस्तके और पत्र छापे जाने लगे।

कजालिनमें बोल्शेविकोका पहला सगठन जून १९१८ ई०में हुआ। यहाके लोगोको भी क्राति-विरोधियोके साथ लडकर अपनी निष्ठाका परिचय देना पडा।

तुर्किस्तान शहरमें नगरकी कम्युनिस्ट पार्टीका सगठन पहलेपहल अप्रैल १९१८ ई०में हुआ, और औलियाअतामे वह उसी सालके अगस्तमें। औलियाअताकी पार्टीमें सालके अन्ततक एक हजार कजाक मेम्बर थे। वामपक्षी क्रातिकारी समाजवादी पहले पार्टीके साथ सहयोग देते रहे, लेकिन पीछे उन्होने विरोध शुरू कर दिया, और इस प्रकार वह क्रातिसे भी दूर हो गये।

अल्माअताके बारेमे हम पहले कह चुके हैं। तरुणोके सगठनके बाद जनवरी १९१८ ई०में वहा पार्टीका सगठन हुआ। अगस्तमे कराकुल, जुलाईमे जारकेन्दमें भी सगठन हुये।

४ सोवियत-शासनकी स्थापना

१९१८ ई०मे मध्य-एसियामें सोवियतका शासन स्थापित हो चुका था, और उसी सालके अप्रैल-मे ताशकन्दमे प्रदेश-सोवियतोका सम्मेलन हुआ। इसीमें तुर्किस्तान स्वायत्त सोवियत गणराज्य-का निर्माण हुआ, जिसमे अल्माअता, औलियाअता (जम्बुल), दक्षिण-कजाकस्तान, और किजिल-ओर्दाके जिलोको मिलाकर कजाक-सोवियत-समाजवादी-गणराज्यकी स्थापना हुई, और कजाक भाषाको गणराज्यकी मुख्य भाषाके तौरपर स्वीकार किया गया। वसन्त १९१८ ई०से १९१९ ई०की समाप्तितक कजाकस्तानमें भीषण गृहयुद्ध होता रहा। क्राति-विरोधी रूसी और कजाक दोनो ही तरुण सोवियत सरकारको उखाड फेंकनेके लिये हर तरहकी कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनका सघर्ष जितना ही सख्त होता गया, उतना ही रूसी सर्वहारोका कजाक सर्वहारोंसे भ्रातृभाव दृढ होता गया, और रूसी क्रातिकारियोने अपने आचरणसे दिखला दिया, कि सर्वहाराके राज्यमे काले-गोरेका कोई भेद नही है। गृहयुद्धके समय १९१८ ई०की जुलाईके आरम्भमें कई भागोको क्राति-विरोधियोने छीन लिया था, तो भी अल्माअता, जम्बुल, दक्षिण-कजाकस्तान, किजिलओर्दा, अक्त्युबिन्स्कके जिले सोवियत शासनमे रहे। १९१९ ई०में क्राति-विरोधी जेनरल कोलचकसे आखिरी लडाई हुई, जिसमे कजाकस्तानके क्रातिकारियोने पूरी तौरसे भाग लिया। कोलचकके हारनेके बाद ४ अप्रैल १९१९ ई०को कजाकस्तानकी सोवियतोकी काग्रेस हुई, जिसमें किर्गिजोंके बारेमे भी विचार करके किर्गिज क्रातिकारी कमेटी सगठित की गई। अभीतक किर्गिज और कजाक दोनो एक ही गणराज्यमे थे, बल्कि यह कहना चाहिये, कि मध्य-एसिया-की सभी जातिया अभी एक तुर्किस्तान स्वायत्त गणराज्यमे मानी जाती थी। लेकिन आगे जातियोंके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार किर्गिजोको भी अपने स्वतत्र गणराज्यके कायम करनेका अवसर मिला। बोल्शेविक-क्रातिने सोवियत सघके क्षेत्रफलमें दूसरे नबरके सबसे बडे गणराज्य कजाकस्तानको स्थापित किया। अनेक पचवर्षीय योजनाओने कजाकोके आर्थिक और सास्कृतिक तलको बहुत ऊचा कर दिया। इर्तिश नदीके जलको ध्रुवीय समुद्रसे हटाकर दक्षिणकी ओर मोडनेकी जो विशाल योजना बनाई जा रही है, उसके कारण तो मनुष्य अपनी महान शक्तिका उपयोग करके इस भूमिको एक-दूसरा ही रूप देने जा रहा है।

स्रोत-ग्रथ

१ History of Civil War in U S S R (2 vols , G F Alexandrov and others, Moscow 1946)

२ History of U S S R (Ed A M Pankratova, Moscow 1947)

३ ग्रेन्युल्लिया न् श्वेद्नेड आज़िइ (ताशकन्द, १९२९)

४ द्वादस्मत् लेत् कजाकस्ताना (लेनिनग्राद १९४०, पृष्ठ ७–१५)

अध्याय ४

किर्गिजिस्तानमें क्रांति

१. किर्गिज

किर्गिजिस्तान मध्य-एसियाके सबसे ऊचे पहाडो त्यानशान्का देश है। यहीपर सात हजार मीतरसे भी अधिक ऊचे लेनिन्स्क और खानतिगरीके सनातन हिमाच्छादित पर्वतशिखर है। इसकी कितनी ही हिमानिया ८० किलोमीतर (६० मीलसे ऊपर) लम्बी है, और मध्य-एसियाकी सबसे बडी नदिया सिर-दरिया, आमू-दरिया (वक्षु), चू, तलस और जरफशा यहीसे निकलती है। हमारे यहाके हिमालयके सबसे अधिक सुन्दर दृश्य यहा देखे जा सकते है। प्राकृतिक सौदर्यके अतिरिक्त किर्गिजिस्तान (किर्गिजिया)मे कोयला, पेट्रोल, रागा, सुरमा, सोना, चादी आदि धातुओकी बडी-बडी खानें है। चू-उपत्यका, फरगाना, तलस-उपत्यका और इस्सिक्कुलकी द्रोणी-जैसी खेती और बागबानीके लिये बहुत ही उर्वर भूमि यहापर मौजूद है। प्रकृतिने इतना समृद्ध इस भूमिको बनाया था, लेकिन यहाके निवासी किर्गिज बोल्शेविक-क्रातिसे पहले मध्य-एसियाकी सबसे पिछडी हुई जातियोमेंसे थे, और घुमन्तू तथा अर्ध-घुमन्तू रहते अपने भेड-बकरियो तथा घोडो-ऊटोको लिये जगह-जगह चराते फिरना ही उनकी जीविकाका साधन रखते थे। जारशाही शासन यद्यपि १९वी शताब्दीके उत्तरार्धके शुरू हीमे स्थापित हो गया था, लेकिन उसने यहाके लोगोको चूसना छोड और कोई काम नही किया।

किर्गिज साइबेरियासे मध्य-एसियामें सबसे पीछे आनेवाली जातियोमेसे है। घुमन्तू होनेकी वजहसे उनके लिये पूर्वमे इर्तिश और पश्चिममे वोल्गाको भी अपनी विचरणभूमि बनाना कोई मुश्किल नही था। लेकिन मूलत यह अल्ताईके उत्तर-पूर्वके रहनेवाले थे, जहापर उनके भाई-बन्द खकाश अब भी रहते है। अलाताउ १७१६-१९ ई०में ओब और इर्तिशके बीचकी भूमिके रूसके हाथमे चले जानेके समय इनको अपनी मूलभूमिसे हटना पडा, नही तो पन्द्रह सौ मीलतक साइबेरियाकी दक्षिणी सीमा किर्गिजोकी भूमिसे मिलती थी। घुमन्तू किर्गिज लूट-मार किया करते थे, जिसके कारण रूसी बस्तियोको खतरा रहता था, इसलिये रूसियोने इन्हे तितर-बितर करना आवश्यक समझा। किर्गिजोकी परम्पराके अनुसार इनके किसी पौराणिक खान अलशने इन्हे तीन ओर्दुओमे बाटा था, जिनमें महा-ओर्दू बल्काश महामगोवरके आसपास सप्तनद और चीनी तुर्किस्तानमें घूमा करता था, मध्यओर्दू अरालके उत्तर-पूर्वी तटपर और लघु-ओर्दू तोबोल नदी और अरालके बीचमे पशुचारण करता था। रानी अन्ना (१७३०-४० ई०)के शासनकालमे मध्य-, लघु-ओर्दूका महा-ओर्दूके साथ-झगडा हुआ। बाकी दोनो ओर्दुओने महा-ओर्दूसे अपनी रक्षाके लिये १७३२ ई०में रूससे अधीनताके लिये प्रार्थना की। इससे बढकर जारशाहीके लिये और अवसर क्या मिलता? ओरेनबुर्गका व्यापारिक नगर इस वक्ततक स्थापित हो चुका था। मध्य और लघु-ओर्दके हाथमे आ जानेपर साम्राज्यके बढानेमें बडी सहायता मिली, और इसके बाद मध्य-एसिया और ईरानकी सीमातक पहुचना रूसके लिये आसान हो गया। १८२२ ई०के राजादेशके अनुसार किर्गिज लघु-ओर्दूको ओरेनबुर्गकी सरकारमे डाल दिया गया, और मध्य-ओर्दू या पश्चिमी किर्गिजोकी भूमिको पश्चिमी साइबेरियाके प्रदेशमे। किर्गिजोको रूसका बल मिलनेसे, अब वह बुखारा, खीवा या खोकन्दकी पर्वाह नही करते थे, और उनके कारवाको लूटा करते थे। यही नही, वह रूसी कारवाको भी लूटनेसे बाज नही आते थे। इसके लिये रूसको कई

सैनिक गढ़िया बनानी पड़ी। किर्गिज रूसियोंको लूटते तो दक्षिणवाले खान उनकी सहायता करते और खानोंमे झगडा होनेपर वह रूसकी शरण लेते। वह रूसी नर-नारियोंको भी गुलाम बना कर मध्य-एसियाके बाजारोमे बेच दिया करते थे।

किर्गिज जातिका निर्माण—किर्गिजोका ऐतिहासिक विकास—निम्न प्रकार हुआ

काल		स्वानशान	पामीर
ई०पू०	२५००	शक	आर्य
"	१५००	शक	सोग्दी
"	७००	शक	सोग्दी
"	५५०	शक	सोग्दी
"	२०६	शक	सोग्दी
"	१३०	शक-हूण	सोग्दी
ईसवी	१००	हूण-शक	सोग्दी
"	५५७ तुर्क	तुर्क	सोग्दी
"	६७३ अरब	तुर्क	ताजिक
"	८९२	तुर्क	"
"	१२२०	तुर्क	"
"	१५००	किर्गिज	"
"	१७४७	किर्गिज	किर्गिज-ताजिक
"	१८६५	किर्गिज-रूसी	किर्गिज-ताजिक
"	१९१७	किर्गिज	किर्गिज-ईरा०
"	१९४७	किर्गिज	

२ १९१६ ई०का विद्रोह

वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमे कई जगह बिखरे हुये किर्गिज कजाकोमें मिल गये, बाकी भी बोल्शेविक-क्रांतिके बाद कितने ही दिनोतक कजाकोमें सम्मिलित थे। जब पता लगा, कि किर्गिजोंकी संस्कृतिमे कुछ अपनी विशेषताए है, इस पर जातियोके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार उनका गणराज्य बना। १९१६ ई०मे कजाकोमे भी जबर्दस्त विद्रोह हुआ था, लेकिन किर्गिजोका विद्रोह उनसे भी बढा हुआ था, जिसके कारण पहले जहा जारशाहीको बहुत क्षति उठानी पडी, वहा बादमें किर्गिजोको भी जारशाहीके भयंकर अत्याचारोका सामना करना पडा।

विद्रोहके कारण—एसियामें अपने राज्यका विस्तार अंग्रेजो और रूसियो दोनोंने किया, लेकिन दोनोके ढगमें अन्तर था। अंग्रेज हिन्दुस्तानसे बहुत दूरके वासी थे, वह अपनी जन्मभूमिसे समुद्रके रास्ते ही सबध स्थापित रख सकते थे। पर, एसियामे रूसकी भूमि मिली हुई है। रूसी झडेके आगे बढनेके साथ-साथ जहा रूसी सैनिक-असैनिक अफसर, व्यापारी और जमींदार आगे बढकर अच्छे-अच्छे पदो और भूमिपर अधिकार करते थे, वहा रूसी किसान और मजदूर भी अपने-अपने गाव बसानेमे लग जाते थे। यह रूसी गाव आत्मरक्षाके लिये रूसकी सेनाका एक अंग बने हुये थे। रूसी अफसर अपने किसानो-मजदूरोका सब तरहसे विशेष ख्याल रखते थे, और स्थानीय लोगोकी उपयुक्त जमीनको किसी-न-किसी बहाने छीनकर रूसियोको दे देते थे। १८७४ ई०मे पहिले पहिल सप्तनद और पामकी भूमि (पिशपेक, औलियाअता, चिमकेन्द आदि जिलो)में रूसियोके गाव बसने शुरू हुये, जो तेजीके साथ आगे बढते स्थानीय लोगोकी पैतृक-भूमियोपर हाथ साफ करते रहे। वर्तमान शताब्दीमें १९१५ ई०तक १८ लाख एकड (७१२०८९ हेक्तर) भूमि केवल पिशपेकके जिलेमें किर्गिजोके हाथसे छिन गई। उसी साल किर्गिजोवाले फरगानाके इलाकेमें ८०००० हेक्तर जमीन छीनकर रूसी किसानोको दे दी गई। पर इतनेमे भी सतोष नही हुआ, और

९ जुलाई (२५ जून) १९१६ ई०को (प्रथम विश्वयुद्धके समय) जारने जलेपर नमक छिडकते हुए एक राजादेश निकाला, जिसके अनुसार किर्गिजो और दूसरी एसियाई जातियोको जबर्दस्ती सैनिक सेनाके पीछे काम करनेके लिये भर्ती किया जाने लगा। किर्गिजोने कौन-सा सुख जारशाही शासनमें पाया था, कि वह सेनाके पीछे कुलीका काम करनेके लिये अपनी जन्मभूमि छोड दूर देशमे जाते? उन्हे यह भी क्या विश्वास था, कि वहा जाकर कुलीका काम करना पडेगा या सिपाही बनकर मरना पडेगा। इस राजादेशके निकलनेपर मध्य-एसियाकी सभी जातियोमे तहलका मच गया। किर्गिज सबसे ज्यादा शोषित, थे क्योकि ये सबसे पिछडे हुये घुमन्तू पशुपाल थे, लेकिन जारने इनके मनापो (सरदारो)को अपने हाथमें कर रक्खा था। धनी मनाप जारशाही-का विरोध करके पहले देख चुके थे, कि इससे वह रूसके जूयेको हटा नही सकते। इस समय सारा तुर्किस्तान एक रूसी प्रदेश था, जिसमे त्यानशान्के पहाडो—सप्तनदसे ताशकन्द लेते अराल समुद्र तकके इलाके भी सम्मिलित थे। तुर्किस्तानका महाराज्यपाल करोपत्किन था और सेना अध्यक्ष फोलबौम बेर्नी (अलमाअता)का सैनिक सेनापति था।

राजादेश निकलते ही लोगोने उसके प्रतिरोधके बारेमें सोचना शुरू किया। ११ (२४) जुलाईको जारकेन्तके किर्गिजो और कजाकोने इसके प्रतिरोधके लिये अपनी सभाये की। किर्गिजो-कजाकोंके भीतर दुगान (चीनी मुसलमान) भी रहते थे, जो अधिकतर धनी बनिये और महाजन थे। किर्गिजो-कजाकोमे अशातिके लक्षणको देखकर सबसे पहले २६ (१३) जुलाईको उन्होंने चीनी इलाकेकी ओर भागना शुरू किया। ५ अगस्त (३० जुलाई)को पिशपेक जिलेके किर्गिजो-ने विरोध-प्रदर्शन किया।

६ (१९) अगस्तको पिशपेक जिलेके अतेकिन इलाकेमें किर्गिजोने पहले पहल सशस्त्र विद्रोह आरम्भ किया। उसी दिन बतबयेफ इलाकेके किर्गिजोने भी विद्रोह कर दिया।

७ (२०) अगस्तको तोकमकके किर्गिजोने हथियार उठाया, उसी दिन सगीबागिसेफ इलाके-वालोने भी विद्रोहका झडा फहरा दिया।

९ (२२) अगस्तको कराकेचिन, जम्वल्, उरमान जोजिन, पोचकर, आबेलदिनके इलाकोमे विद्रोह फैल गया।

१० (२३) अगस्तको पिशपेक जिलेके बेलोवद्स्क इलाकेके किर्गिज विद्रोही हुये। उसी दिन जमानसरतोफ, तलेउबेर्दिन, बाकिन, तलदीबुलाकके इलाकोमें बगावत हो गई, और औलिया-अताके करालतिन इलाकेके किर्गिज भी विद्रोहमे शामिल हो गये।

११ (२४) अगस्तको प्रझेवाल्स्क जिलेके मारिन्स्क गावके दुगान (चीनी, मुसलमान) भी विद्रोहमे शामिल हुये।

१२ (२५) अगस्तको प्रझेवाल्स्कके जेलखानेमे बदियोपर रूसियोने गोली चलाई, जिसमें उनसठ किर्गिज मारे गये और बहुतसे घायल हुये।

१३ (२६) अगस्तको तोकमकमे किर्गिजोपर रूसी सेनाने प्रहार किया, उसी दिन बेलोवद्स्कमे भी विद्रोहियोको सैनिकोने दबानेका प्रयत्न किया, और १३८ किर्गिज मारे गये।

१४ (२७) अगस्तको किर्गिजोने तोकमकको घेर लिया।

२२ अगस्त (४ सितम्बर) को रूसियोने तोकमकमे किर्गिजोपर प्रहार करके उन्हे तितर-बितर कर दिया।

१६ (२९) अक्तूबरतक रूसी विद्रोहपर काबू पा सके।

इस विद्रोहमे किर्गिजोके मनाप (धनी) अधिकतर जारशाहीके साथ रहे और सबसे ज्यादा आगे किर्गिज जनसाधारण थे। कितना भीषण जनसहार हुआ, यह इसीसे मालूम होगा, कि विद्रोहसे पहले जहा ६२३४० किर्गिज रहते थे, उसी जगह जनवरी १९१७ ई०में उनकी सख्या २०३६५ रह गई, अर्थात् ४१९७५ आदमी मारे गये, कितने ही जगहोंपर ६६% किर्गिज मारे गये। इस अत्याचारके मारे यदि बहुत भारी सख्यामे किर्गिज भागकर चीनी इलाकेमें चले गये, तो इसमे आश्चर्य क्या? कुरोपत्किनने इस मौकेसे फायदा उठाते हुये चाहा था, कि किर्गिजोकी छोडी भूमिमें

रूसियोंको वसा दिया जाय। लेकिन, किर्गिजोंके विद्रोहको दवाते देर नही हुई, कि जारशाही ही खतम हो गई। यद्यपि उसका स्थान लेनेवाली पूजीपतियोकी करेन्स्की-सरकारने पुरानी नीतिको जारी रखना चाहा, लेकिन उसे भी सात महीनेके भीतर ही खतम हो जाना पडा।

जैसा कि अभी वतलाया, उस समय किर्गिज कजाकोसे अलग नही समझे जाते थे, और सप्तनद तथा सिर-उपत्यकाके कजाकोकी तरह किर्गिज भी तुर्किस्तान-प्रदेशके माने जाते थे। इसलिये विद्रोहके वाद जो घटनाये घटीं और स्थितियोमें जिस तरह परिवर्तन हुआ, वह वही था, जो कजाकस्तान-उज्वेकिस्तानमें हुआ। जव वोल्शेविक-क्रातिने किर्गिज भूमिमें कदम रक्खा, उस समय वहाके किर्गिज धनी पहले हीसे धनी रूसियोंके समर्थक हो चुके थे।

किर्गिज शिक्षा और सस्कृतिमे वहुत पिछडे हुये थे, जिसके कारण राजनीतिक तौरसे भी उनका पिछडा होना स्वाभाविक था। इनकी भूमिमे ओश, उज्गेंद, पिशपेक, प्रभेवाल्स्क जैसे कुछ नगर थे, लेकिन वहापर भी किर्गिजोकी अपेक्षा दूसरोकी सख्या या प्रभाव अधिक था। ताशकन्दमें वोल्शेविकोंके आ जानेके वाद किर्गिज भूमिके कस्वोमे भी क्राति फैलने लगी। यहाके रूसियोमें अधिकतर मेन्शेविक और एस्.एर्. (समाजवादी क्रातिकारी) ही जारशाहीके विरोधी थे, और वह पुराने आर्थिक ढाचेमें नाममात्रका परिवर्तन करना चाहते थे, तथा एसियाइयोंको समानताका अधिकार देनेके पक्षपाती नही थे। ओशमें दिसम्वर १९१७ ई०में दो सौसे अधिक एस् एर् के सदस्य थे, जव कि वोल्शेविकोको अगुलियोंपर गिना जा सकता था। पिशपेक (आधुनिक किर्गिज-राजधानी फुजे) में मार्च १९१८ ई०में अव भी एस् एर्.का प्रभाव था। लेकिन जव वोल्शेविकोंके उद्देश्यका पता लगा, तो गरीव किर्गिजोंने वडी तेजीके साथ आगे वढ-कर उनका साथ देना शुरू किया। वह देखते थे, कि वोल्शेविक दिलसे और व्यवहारसे भी समानताके पक्षपाती है, सचमुच वह गरीवोंके राज्यको कायम करना चाहते है। क्राति सफल हुई। आगे १९२६ ई०में किर्गिजोकी भूमिका अलग स्वायत्त गणराज्य कायम हुआ, जिसे १९३६ ई०में स्वतंत्र गणराज्यके तौरपर सोवियत सघका अग वननेका मौका मिला।

किर्गिजिस्तानका क्षेत्रफल ७८००० वर्गमील तथा जनसख्या इस वक्त पन्द्रह लाखसे ऊपर है। आज वह मध्य-एसियाकी सवसे पिछडी जाति नही है, वल्कि रूसियोकी तरह आगे वढ़ी हुई जाति है।

स्रोत-ग्रथ

१ रेवोल्युत्सिया व्स्रेद्नेइ आज़िइ (ताशकन्द १९२९)
२ किर्गिजिया (व वित्कोविच, १९३८)
३ वोस्तानिये १९१६ गदा व् किर्गिजिस्ताने (ल व लेस्नोइ, मास्को १९३७)
४ किर्गिजिया (त्रुदी पेर्वोइ कान्फ्रेन्त्सिइ, लेनिनग्राद १९३४)
५. तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (जिल्द १, पृष्ठ ३३८-५१)
६. तेमिर (उपन्यास, तो तुगेल्वाइ सिदिकवेकोफ् अनु० व. रोझ्देस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)
७ History of civil war in U S S. R. (2 vol. G. F. Alexandrov and others, Moscow 1946)

\

अध्याय ५

ताजिकिस्तानमें क्रांति

१. सोग्दियोके वंशज

हम देख चुके है, कि किसी समय सिर-दरियासे वक्षु-दरियातक, पामीरसे कास्पियन तटतक सोग्द और ख्वारेज्मकी ईरानी जातिया वसती थी, जिनके समयमें यहाका सामाजिक और सास्कृतिक विकास बहुत हुआ। ईसाकी पाचवी सदीतक यद्यपि शक और हेफ्ताल-जैसी जातिया वाहरसे आकर इस भूमिमें वसती गई, किन्तु वह हिन्दी-यूरोपीय जातिकी होनेकी वजहसे इनके भीतर आसानीसे घुल-मिल गई और पुरानी सास्कृतिक परम्पराके आगे चलते रहनेमें वाधक नही हुई। छठी शताब्दीमें तुर्क मगोलायित भाषा और मुखमुद्रा लिये यहा आये, जिन्होने भी यद्यपि मुखमुद्रामें कुछ परिवर्तन किया, लेकिन सास्कृतिक तौरसे वहुत भेद नही पैदा किया। ७वी सदीका अन्त होते-होते अरव इस भूमिमें छा गये, और कुछ ही समयमे यहाके सभी लोग मुसलमान हो गये। लेकिन पुराने सोग्दियोने अपने सघर्षको जारी रक्खा, इसका परिणाम यह हुआ, कि अरब-शासको और उनके अनुचर खुरासानी मुसलमानो ने सोग्दी वीरो और उनकी भाषाको दुर्गम पहाडोमें शरण लेनेके लिये मजबूर किया। १९वी सदीसे वहुत पहले ही पुराने अन्तर्वेदकी भाषा तुर्की हो गई, केवल शहरो और कुछ गावोके रहनेवाले सर्त या ताजिक ईरानी भाषा वोलते थे, लेकिन यह ईरानी भाषा सोग्दी नही, वल्कि खुरासानी मुसलमानोके साथ आई उनकी फारसी थी। पहाडोमें भाग गये सोग्दियोंके पीछे एकके वाद एक दूसरे भी फारसीभाषी शरणार्थी आते रहे, जिनके कारण धीरे-धीरे सोग्दी भाषाका स्थान वहा भी फारसीकी स्थानीय वोली ताजिकी लेती गई। आज तो पुरानी सोग्दी भाषाकी बोली गलचा या यग्नावी केवल जरफ्शाकी एक शाखा यग्नाव नदीके किनारेके कुछ थोडेसे गावोमें रह गई है। वहापर भी ताजिकी भाषा कितनी घुस गई है, यह १९३४ई०के वहाके गावोके आकडोंसे मालूम होगा—

ग्राम	यग्नावी	ताजिक
नवावाद	१५१८	६३४
यग्नाव	६४०	१७७०
दोनो गावोमे	२१५८	२४०४

इस प्रकार पुराने सोग्दियोकी भाषा और उनके प्राचीन समाजके कुछ अवशेष वर्तमान ताजिकिस्तान गणराज्यमें जरफ्शा नदीकी शाखा यग्नाव और वरजावके किनारेके कुछ गावोमें अव मौजूद है। सोवियत शासनके स्थापित होनेके वाद इन प्राचीन सास्कृतिक अवशेषोके जाच-पडतालकी काफी कोशिश की गई। रूसी वैज्ञानिकोने वहापर प्राचीन सघवादी पारिवारिक जीवनके चिह्न पाये। कितने ही गावोमें कई परिवारोंके रहने लायक एक-एक घर उन्हे मिले, जिनकी वडी-वडी शालायें केवल यग्नावियोमे ही मिलती। कोकतेपा, जूमान, गराव, आवेसफेद-जैसे कितने ही गावोको उन्होने देखा। देहवुलन्द ऊपरी यग्नावमे सामूहिक परिवारोका आलाखाना और मेहमानखाना इस वातका प्रमाण था।

यग्नाबी भाषा—यग्नावी भाषाको कोई-कोई ईरानी और भारतीय आर्यभाषा-वशोंसे अलग वतलाते है, लेकिन यह वात सही नही मालूम होती। वस्तुत सोग्दीकी पुत्री यग्नावी ताजिकी और फारसीसे कितनी ही वातोमें अन्तर रखते भी ईरानी-भाषावशकी ही है। सोवियतके भाषा-शास्त्रियोने यग्नावी भाषाके वहुतसे नमूने कहानियो आदिके रूपमे जमा किये है। वाइस वर्षीय इब्राहिम मफर

द्वारा कही गई एक जनकथाका कुछ अश हम यहापर देते है। गावके 'मेहमानखाने' (सामूहिक घर) मे जमा हो ऐसी कहानियोंके कहनेका यग्नावियोंमे वहुत रवाज है* —

इकम्पिरओइ । ईकल् ज़ूतश् ओइ । के ई मेत् कलि व अवोफ—"अने दाँदो-त् विसियार पैदागर खोइ। यक् तग अवारिश्त् सत् तगा अकुन अउर्।" के कल् यक् तगा अनोस् अनीज अतेर अशौ इयो-कइ इ मूसफे दे तीरक् अस्त् खरे वोरा ई वुज चि खरे दुम् वस्तगी। कल् ऑस्ताक् अशौ वीत पक्क अकुन् वूज अनोस् अवोउ वूज अउर कोये अखश् । तिक् अमोन अतेर अशौ मूसफे दे अवियोर अवोव ये वाँवो वीत जाम् कुन्। अख् अगोर अवोव अने वीत-म् ई वुज ओइ वुज् नख। खरे अवोव् इगुम् चक् दॉर मन सोउम वूज कोवाँम्। कल् अवोव वाँवो दर वाँउ खरे लॉइ खस्चे। मूसफेद अतेर। कल खरे गूश दुम्-श पक्क अकुन् अवार ई कोये अखश् गूश दुम्-श अउर लोइ नुत् अनीदोन् के अवोव ए वाँवों वाँऊ खरे लोइ अखश् ।

(एक वुढिया थी। उसका एक दुष्ट लडका था। एक दिन उसने अपने दुष्ट लडकेको कहा—"तेरा वाप वहुत पैदा करनेवाला था। एक तगा ले जाता और अभी सौ तगा ले आता।" फिर दुष्ट लडका एक तगा लेकर वाहर गया। एक जगह एक गदहेके ऊपर सवार एक श्वेतकेश (वूढे) को आते देखा, गदहेकी दुममें एक वकरी वधी हुई थी। दुष्ट लडका आहिस्तेसे गया, और रस्सीको काटकर वकरीको ले गया। 'पीछे वूढेको आकर कहा —"हे वावा, रस्सी समेट लो।" उसने देखकर कहा—'मेरी रस्सीमें वकरी थी, किन्तु वकरी नहीं है।" दुष्ट लडकेने कहा—"जल्दी जाओ वावा··· ।" वूढा चला गया। दुष्ट लडकेने गदहेके दुम और कानको काट लिये। फिर आकर उसने वूढेसे कहा—"हे वावा, चलो, गदहा कीचडमे फस रहा है।" वूढा चला गया।)

इस भाषाको देखनेसे मालूम होगा, कि फारसी समझनेवालेके लिये भी इसका समझना मुश्किल है। एकके लिये यहा ई और थीके लिये आई शब्दका प्रयोग हुआ है। दिनके लिये मेत्का शब्द पुरानी सोग्दीमें 'मुद' था, जिसका फारसीमे कही पता नही । इसी प्रकार गदहेकी पूछके लिये दुमे-खरकी जगह खरे-दुम (खर-पुच्छ) आया है। हिन्दीकी समीपता देखनेके लिये यग्नावी भाषाके गरीव ताजिक "करके" (करके) रोद्-के (रोकर) शब्दोको भी देखें।†

वुखारा और खोकन्दके पिछले इतिहासके वारेमे लिखते हुये हम वतला चुके हैं, कि ताजिकिस्तानका पहाडी प्रदेश कभी अलग-अलग छोटे-छोटे सामन्तोके स्वतत्र राज्योमे वटा रहता और कभी उसे खोकन्दके मदली खान-जैसे वाहरी शासकोके अधीन वनना पडता। यह पहाडी इलाका अपनी खनिज और दूसरी सम्पत्तियोको रखते हुये भी उस समय वहुत गरीव था। यहाके लोग सुन्नी मुसलमान थे, इसलिये उनके लडके-लडकियोको गुलाम वनाकर वेंचा नही जा सकता था। तो भी अपने सौंदर्यके लिये प्रसिद्ध यहाकी लडकियोकी अमीर और उसके सामन्तो-के हरमोमे वडी माग थी। यहाके पुरुष मजदूरी करनेके लिये वुखारा, समरकन्द, खोकन्द आदि शहरोमें चले जाते। पुरुष जव वर्षोके वास्ते रोटीके लिये धक्का खाने चले जाते, तो उनकी स्त्रिया वेचारी घर और खेतीको सभाले वाट जोहा करती । इस समयकी अवस्थाका वर्णन वहुतसे लोकगीतोंमें पाया जाता है। एक लोकगीतमें कहा गया है :—

> वुलवुल वागमें रोती हुई आई,
> गुलावकी सूखी डालीपर जाकर वैठी।
> वुलवुल अपने मुहसे वोली—
> "यह वियोगका घाव कितनोंके दिलपर है।"

× × ×

---

*"श्रुदि ताजिकिस्तान्स्कोइ वाग", इस्तोरिया-यज़ीक लितेरातुरा (अकदमी नाउक सससर १९४० मस्क्वा)

† मिननी हीं वातोमे फारसी या ताजिकीमे विलक्षण है, यह उसके गाउ (गाय) कुतर (कुत्ता) और आर्ता (आटा) शब्द भी वतलाते है।

जगत्के कर्ता ते ी विचित्र महिमा,
तेरे बन्दे सोये और तू खुद जागा ।
अमृत-भोजन दुनियाके सामने फेंककर,
चुगने और जानेका तू तमाशा देखता,

× × ×

अपने सफेदेके लिये अपनी हरनीको खोया,
लोगोंके द्वारपर अपनेको फेका ।
लोग कहते कि तू दीवाना हुआ,
दीवाना हू, क्योकि मैंने अपनी प्रियाको खोया ।

× × ×

हे पथिक, किसीके साथ मैं नही हसी,
न केश धोया न कुर्ता पहना ।
बहुतेरे कारवा आये, पूछनेपर
उन्होने कहा— "मैंने न देखा न जाना।"

इसी अवस्थामे ताजिकिस्तानके पहाडी लोग अमीर-बुखाराके पूर्वी इलाके (पूर्वी बुखारा) मे रह रहे थे, जब कि बोल्शेविक-क्राति हुई।

ताजिकिस्तान भाषाके तौरपर पुराने सोग्दियोंकी विस्तृत भूमिका अवशेषमात्र है, जिसके दक्षिणी सीमात वक्षु नदी और उत्तरी टेढा-मेढा होता सिर-दरियाके उत्तरतक पहुच गया है। आजकल इसका क्षेत्रफल पचपन हजार वर्गमील और जन- सख्या पन्द्रह लाख है। ताजिक भाषा-भाषियोकी बस्तिया वैसे वक्षुसे बहुत दक्षिण काबुल नगरके पासतक चली आई है, लेकिन अभी अफगानिस्तानमे रहनेवाले ताजिक उतने सौभाग्यशाली नही है, जितने कि क्रातिकी अग्निमे तपकर निकले उत्तरी ताजिक । मध्य-एसियाकी और किसी जातिको क्रातिके समय नरपिशाच बासमचियो की निष्ठुरताका उतना शिकार नही होना पडा, जितना कि कश्मीरके उत्तरी-पूर्वी सीमान्तके पासके इन पहाडियोको ।

ताजिक जातिका निर्माण—ताजिकोका ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ.—

काल			पामीर	सिर-उपत्यका
ई० पू०	४०००	(मध्य-पाषाण)		फिनो-द्रविड
"	३५००			शकार्य-द्रविड
"	३०००	(नव-पाषाण)		"
"	२५००		आर्य	शक
"	१५००	(पित्तल-युग)	ईरानी	श०
"	७००		ईरा०	श०
"	५५०		ईरा०	श०
"	३२६		ईरा०	श०
"	२०६		ईरा०	श०
"	१३०		ईरा०	हूण-श०
"	१००		ईरा०	हू०-श०
ईसवी	१००	(कुषाण)	ईरा०	हू०-श०
"	४२५	(हेपताल)	ईरा०	हूण-कगली
"	५५७	(तुर्क	ईरा०	कगली-तुर्क
"	६७३	(अरब)	ईरा०	तुर्क
"	८९२	(सामानी)	ईरा०	तुर्क
"	१२२०	(मगोल)	ईरा०	तुर्क

ईसवी	१५००	ईरा०	तुर्क (उज्बेक)
"	१७४७	तुर्क-ईरा०	तुर्क-उज्०
"	१८६५	ईरा०तुर्क	उज्०-ईरा०
"	१९१७	ईरा०-तुर्क	उज्०-ईरा०
"	१९४७	ताजिक	

२ वासमची-उत्पीडन

खोकन्दके स्वायत्तियोंके हार खानेके बाद वासमचियो (जहादी डाकुओ)ने जोर पकडा। १९१९ ई०के वसन्तमे ओश नगर और पामीरके बीचका रास्ता सफेद रूसियो और वासमचियोके हाथमे था, जिनका मुखिया मुखानोफ और एरगेशताम थे। पीछे कर्नल तिमोफियेफ नामक एक शाही अफसरने यहा नेतृत्व करना शुरू किया। बुखारा की कमजोरियो को देखकर अब यहाके पहाडी सामन्त स्वय बादशाह बननेका स्वप्न देखने लगे। जब १९२१ ई०के फर्वरीमें आलम खान (बुखारा-अमीर) दुशाम्बे होकर अफगानिस्तानकी ओर भाग गया, तो यहाके कुछ लोगोने अफगानिस्तानके अमीरको भी राज्य सभालनेके लिये लिखा, लेकिन ताजिकिस्तानके पहाडोके लिये काबुलको न उतना प्रलोभन हो सकता था, न उसमे उतनी शक्ति ही थी। हा, मीर आलम खान ताजिकिस्तानमें लूट-मार मचानेवाले वासमचियोंसे पैसा पाता और उसके बदलेमें कुछ हथियार जरूर भेज देता था। जब-तब अंग्रेजोने भी हथियारसे मदद की, लेकिन उस वक्त असहयोग का आन्दोलन सारे भारतमे चल रहा था, जिससे अंग्रेजोका दिमाग बहुत परेशान था, और वह वासमचियोको खुलकर मदद देनेके लिये तैयार नही हो सकते थे।

(१) अनवर पाशा—अमीरके जानेके बाद एक तरफ वासमची भिन्न-भिन्न गिरोहोमें बटे लूट-मार मचा रहे थे, दूसरी तरफ क्रातिकारियोने भी गरीबोको सगठित करनेका काम शुरू किया। लेकिन, बुखारा अभी पूरी तौरसे बोल्शेविकोके हाथमे नही आया था। उनकी ओरसे जो आदमी शासनका भार देकर भेजे गये थे, वह उच्चवर्गके होनेसे अपने पुराने स्वार्थोंको छोडनेके लिये तैयार नही थे, इसीलिये उन्होने क्रातिके साथ विश्वासघात किया। वासमचियोमें जिस तरहके पत्र-व्यवहार हो रहे थे, उनसे उस समयकी स्थितिका कुछ पता लगेगा। एक पत्रमे मुल्लोने लिखा था—

अमीरुल्-मोमिनीन् हिफजहुल्लाह तआला

वह महाविजयी

रक्षक प्रभु सम्माननीय मीर-बी-बादशाह, लश्करबाशीको दुआ और सलामके उपायनके बाद मालूम हो, कि हम आपके दुआ-वाचक परमभक्त आलिम (पडित) लोगोने सुल्तानाबादमें पुण्य ईद पर्वके समय इकट्ठा हो आपसमें मत्रणा की। कुछ लोगोके बारेमें हमने सुना, कि वह जनाबअली (अमीर-बुखारा) और श्रीमान्के विरोधी और बागी है। श्रीमान उनके बारेमें हमें सूचित करें। जो कोई अनवरका अनुयायी है, उसे कुरान और हदीस (स्मृति)के अनुसार काफिर सिद्ध कर सभी यहा एकत्र हुये हम आलिम-फाजिल शरीअतके अनुसार कत्ल करा देंगे। जो लकै (किर्गिज) ताजिक या कर्लुक अनवरका अनुसरण करते है, उनके बारेमें सूचित कीजिये। उनको भी शरीअतके अनुसार हम आलिम-फाजिल लोग एकत्र हो कत्ल करायेंगे। हम लोग शरीअतके अनुसार काम करेंगे। यह सब (काम) हम लोगोके सिरपर है, यदि वह श्रीमानको उचित जान पडे। आगे आप स्वय भली भाति जानते है। अस्सलाम् व अलैकुम्।

पत्र भेजनेवालों की मुहर और हस्ताक्षर

मुल्ला अहमद सलीमी मुदर्रिस मुल्ला अली महमदी मुदर्रिस

खलीफा मुल्ला अल अजर मखदूम
मुल्ला तुगाय मुरादी मुदर्रिस
मुल्ला अस्मतुल्ला मखदूम
मुल्ला अब्दुर्रहमान मखदूम
मखदूम महमदी तुकसाबा

इस पत्रसे मालूम है, कि उस समय अनवरपाशा इन पहाडोमें अपनी भाग्य-परीक्षाके लिये आया हुआ था। प्रथम विश्व-युद्धके बाद जर्मनोके पक्षपाती अनवरका प्रभाव तुर्कीमे उड गया, जब कि मुस्तफा कमाल नवीन तुर्कीका नेता हुआ। इसके कारण अनवरको तुर्की छोडकर भागना पडा। कुछ समयतक वह बुखारामे रहा, फिर वहासे भी भागकर इन पहाडोमे आ गया। अनवर नवीन तुर्कीका नेता था, जिससे बुखाराके जदीदोको भी प्रेरणा मिली थी। लेकिन बुखाराके मुल्ले जदीदोके खूनके प्यासे थे, इसीलिये वहा अनवर और उसके अनुयायी कुछ नही कर सकते थे।

इन पहाडोके सभी लोग क्राति-विरोधी मुल्लोकी तरह अन्धे नही थे, वह अनवरकी योग्यता और प्रभावसे पूरा फायदा उठाना चाहते थे। इसीलिये अनवरको यहापर काफी समर्थन प्राप्त हुआ। लेकिन तो भी महत्त्वाकाक्षी बासमची तथा दूसरे सरदार अनवरकी सैनिक योग्यताको अपने मतलबके लिये इस्तेमाल करना चाहते थे, इसलिये स्वनिर्वाचित 'अमीर-लश्कर-इस्लाम, नायब-अमीर-बुखारा व दामाद खलीफा-मुसलमीन अनवर" को सफलता प्राप्त करनेका मौका नही मिला और अगस्त १९२२ ई०मे बल्जुवान इलाकेके एक गावमें ४२ वर्षकी उम्रमें वह मरा। और चगन गावमे दफनाया गया।

(२) ईशान सुल्तान*--ताजिकिस्तानमे क्रातिका एक और जबर्दस्त विरोधी ईशान सुल्तान था। ईशान मध्य एसियामें पीर या गुरुको कहते है, जिनका कई शताब्दियोसे वहापर जबर्दस्त प्रभाव रहा है। १९वी सदीमे दरवाज कला-खुम्बके शाहोका बहुत प्रभाव था। यह अपने खानदानको सिकन्दर और दूसरे पुराने राजाओसे मिलाते थे। सीधे-सादे पहाडी लोगोमे राजवशके होनेसे इनका बहुत मान था। इन्हीके इलाकेमे १८वी सदीके अन्तमें सागिद दश्तसे डेढ मीलपर अवस्थित सैदान गावमें सैयद-वशमें एक आदमी पैदा हुआ, जो कि आगे ईशान औलिया (मृत्यु १८६७ ई०)के नामसे प्रसिद्ध हुआ। ईशान औलिया या मिर्जा रहीम पहले कन्दहारमें जाकर किसी पीर ईशान आखुनसाहेबकी सेवामे रहा, जहा उसने ईशानोके सभी हथकडे सीखे। फिर लौटकर कुछ दिनो वह अपने गाव सैदानमे रहा, फिर सफेदारान और बादमे दराजमें रहने लगा। उसकी ख्याति दिन-पर-दिन बढती गई और बहुतसे लोग उसके मुरीद हो गये। ईशानके लिये अमीरो और सामन्तोकी तरह बीबी-बच्चोके रखनेमें कोई दिक्कत नही थी। ईशान औलियाकी कई बीबिया थी, जिनसे उसके सात पुत्र हुये। उनमें शेख मिर्जाको दरवाजके शाह याकूब खाने अपनी लडकी दी थी। ईशान औलियाको कई गाव विर्त-वधानमे मिले थे। औलियाके मरने (१८६७ ई०)के बाद उसके सातो पुत्र भी ईशानगिरीसे धन और सम्पत्ति जमा करने लगे। उनमे ईशान शेख अपने समयमें इन पहाडोमें बडा ही सम्पत्तिमान तथा प्रभावशाली आदमी था। उसके मुरीदो (चेलो)की सख्या बहुत थी, और बहुतसे गाव भी उसे मिले थे। चिहकाका, सैदानके अतिरिक्त ईशान शेखकी हवेलिया सफेदारान, याइकपस्ते, याजगद और दरा-जूमे भी थी। इसीका लडका ईशान सुल्तान था, जो पूर्वी बुखाराका सबसे बडा धनी सामन्त था। इसका जन्म याहकपस्तेमें हुआ था, जहा दस सालकी उमरतक रहा। इसके बाद याजगन्द चला गया। जिस वक्त १९१७-१८ ई०मे क्रातिकी लहर पहाडोमे पहुची, उस समय ईशान ४५ वर्षका बहुत तजुर्बेकार और शक्तिशाली आदमी था। बापके बाकी भाइयोमे सबसे बडा होनेसे उसका प्रभाव सबसे ज्यादा था। उसकी जागीरमे याजगन्द, याहकपस्त, यानकुर्गान आदि बहुतसे गाव थे। अमीर-बुखाराकी तरफसे वह अपने इलाकेका 'हाकिम' (सरकारी अफसर) था। ईशान सुल्तानकी धनसे भी ज्यादा धार्मिक प्रभुता थी। आसपासके इलाकोके लोग उसकी

*"गुदि ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजि (९), इस्तोरिया-यजीक-लितेरा तुरा" (अकदमी, नाउक १९४०, पृष्ठ ३-२७)

आज्ञाको खुदाकी आज्ञा मानते थे। भूमिका मालिक और बहुत बड़ा जमींदार होनेकी वजहसे प्रजाको भी कष्ट हुये बिना नहीं रहता था। याहकपस्तेके एक किसान परिवारको इसने बुरी तौरसे सताया था। जब वह लोग दुशाम्बेमें फरियाद करने लगे, तो काजी मुल्ला कामिलको इतनी हिम्मत कहां थी, कि प्रभावशाली ईशान सुल्तानके विरुद्ध फैसला देता। वहांसे बुखारा दाद-फरियाद करने गया, तो वहांपर भी वही हालत हुई। फिर रूसियोंके पास ताशकन्द-तक पहुंचा, लेकिन कहीं सुनवाई नहीं हुई। ईशान सुल्तानकी जागीरदारीमें लोगोंसे बेगारमें काम लिया जाता था। उसके लंगरखानेमें भक्तों और मुरीदोंके खानेके लिये दरवाजा खुला था, बराबर सत्संग और ज्ञान-ध्यान चलता रहता था। ईशानकी कई स्त्रियां थीं, जिनमेंसे एक याजगन्दमें, दूसरी याहकपस्तेमें, तीसरी हिसारमें, बाकी और जगहोंपर रहती थीं, लेकिन सन्तानोंमें उसे सिर्फ एक लड़की थी।

जब बोल्शेविकोंने फरगाना और ताशकन्दमें सफलता पाई, और क्रांतिकी लपट पूर्वी बुखाराके पहाड़ोंमें भी पहुंचने लगी, तो ईशान सुल्तानको अपनी जागीर और धनके लिये डर पैदा हो गया। १९२१ ई०के जाड़ोंमें बुखारा-अमीर सैयद आलम खां जब भागकर दुशाम्बे आया, तो उसने यहांके पहाड़ी सामन्तोंको संगठित करनेका प्रयत्न किया, और ईशान सुल्तानको 'सुदूर' (अध्यक्ष) की पदवी प्रदान की। २१ फर्वरी १९२१ ई०को जब अमीर दुशाम्बेसे अफगानिस्तान भागा, तो ईशान सुल्तान बोल्शेविकोंसे लड़नेकी तैयारी करनेके लिये याजगन्द चला आया। दुशाम्बे (आधुनिक स्तालिनाबाद) में ईशानको कुछ हथियार मिले। तबिलदरा और चिहलदराके इलाकोंमें काजी कुर्गान, नियाज तुकसाबा, अकबर तुकसाबा, सैयद अली उराक आदि स्थानीय अफसरोंको इकट्ठा करके उसने 'गजा" (धर्मयुद्ध) करनेका निश्चय किया। अपने मुरीदोंमेंसे उसने पचासको हथियारबन्द 'गाजी' बनाया। दुशाम्बा और गरमपर अधिकार हो जानेके बाद मेर्कुलोफकी अधीनतामें ओरेनबुर्गसे सवार-सेना आ गई, जिसके कारण बोल्शेविकोंका पलड़ा इन पहाड़ोंमें भारी हो गया। लेकिन सुरखाबकी उपत्यका और गरम उस समय बासमची-सरदार फुजैल मखदूम और लायकपसंदके हाथमें थे, और पीतर दर्रेसे बखियातक को ईशान सुल्ताननने अपने हाथमें किया था। लाल सेनाने ईशान सुल्तानको तबील दर्रासे भागनेके लिये मजबूर किया, तो वह सागिरदश्त चला गया। जब फुजैल मखदूम हारकर अफगानिस्तान भाग गया, तो ईशान सुल्ताननने बोल्शेविकोंके साथ सुलह करनेमें ही अपनी भलाई समझी। इसपर वह इस्लामके गाजियोंमें बदनाम हो गया, जैसा कि अपनेको अनवरका उत्तराधिकारी बतलानेवाले एक तुर्की अफसर सामी पाशाके १९ नवम्बर १९२२ ई०के निम्न पत्रसे मालूम होगा—

"ईशान सुल्तान खोजा सूबा दरवाजके हाकिम और अस्कर बागी सेनानायकका विश्वासघात

"अफगानिस्तानकी भूमिमें विराजमान जनाबआली अमीर बुखाराशरीफ सैयद अमीर आलमकी सेवामें अभिवादनके बाद मालूम हो, कि ईशान सुल्ताननने दरवाजपर अपना अधिकार जमानेके लिये सेना जमा की और इलाकेको जुवान, आवसू अधिकृतकर चक्कानीनिला और कुलाबदर्राको दबाकर तरह-तरहके झगड़े फसाद और अत्याचार किये। जनाबआलीकी ओरसे नियुक्त नायब और राजप्रतिनिधि दिवंगत शहीद अनवरपाशाके सैनिक और नागरिक शासनके खतम करनेके लिये ईशान सुल्ताननने इस्लामके मुजाहिदोंके भीतर उक्त सेनापतिके सामने फूट डाल दी, जिसके परिणामस्वरूप मुजाहिदोंकी छ हजार सेना बापूसुन इलाकेसे घबड़ाकर भागी और दुश्मनसे लड़नेकी जगह परस्पर हत्याकांड मचाया, जिसमें सैकड़ों मुसलमान कुर्बान हुये। ईशानकी मददसे फरगानावालोंने उसके प्रतिद्वंद्वियोंको कत्ल किया, जिससे देशवासियोंको भारी क्षोभ हुआ। बुखारावालों और दूसरे कबीलोंके आपसी झगड़ेसे फायदा उठा (ईशानने) उजबेकों और ताजिकोंको

एक दूसरेसे लडा अपने विश्वासघातका परिचय दिया, साथ ही इस्लामके मुजाहिदोंसे तीन सौ बन्दुको और दो सौ मशीनगनें देकर रूसियोके साथ सुलह की, जिसके कि कागज-पत्र हमारे हाथ लगे।

"फरगानियो और किर्गिजोमें झगड़ा डालकर इस्लामी मुजाहिदोकी शक्तिको निर्बल करनेकी मशासे उसने रूसियोके साथ मेल किया। इस तरह इस्लामी उद्देश्यको हानि पहुंचाने और लोगोके युद्ध करनेके उत्साहको दबानेके लिये वहाके प्रबन्धालयोको खतम कर दिया, और इस तरह निराशा फैल गई। अल्लाके रास्तेमें लड़नेवाले मुहम्मद अकबर तुकसाबाको (ईशानन) अपने घरमें ले जा दस्तरखानपर बैठाकर उसे कत्ल करवा दिया, उसके मालको ले बाल-बच्चोको नंगा कर बाटका भिखारी बना दिया। इसके अतिरिक्त (उसने) कितने ही मातबर सेनानायकोको कत्ल कराया। फिर फरगानावाले शेरमहम्मद (शेरमत) बेकोको खबर दे तुर्की और करातगिनके स्वामी फुजैलुद्दीन मखदूमको पराजित करनेका निश्चय किया। हमारे ऊपर भी उसने आक्रमण किया, लेकिन हमने सैनिक तरीकेके अनुसार उसके हमलेका मुकाबिला किया और ईशान सुल्तानकी फौजको भागना पडा। पहले हमने शेरमहम्मदको रोकनेके लिये चहलदरकि रास्तेको खराब किया था। ईशानने खराब रास्तेको फिरसे तैयारकर शेरमहम्मदकी फौजको रास्ता दिया और हमारी फौजको न जाने देनेके लिये रास्तेको खराब कर दिया। फिर अपने भाई ईशान सुलेमानको हमारे मुकाबिलेके लिये भेजा, इस प्रकार शेरमुहम्मदको दरवाजके रास्ते निकल जाने दिया। इसके अतिरिक्त दरवाजवाले गैरतशाह बी दादखाह, दिलावरशाह बी लश्करबाशी और कितने ही दूसरोको कत्ल करवाया। हमारी फौजोका पीछा करते हुये ईशान सुलेमान तवीलदर्रा और सगीरदश्तमें बन्दूकवाले सैनिकोको जमाकर शेरमुहम्मदकी सेनासे मिलकर हमारे ऊपर हमला किया। जब हम दरवाजमें थे, उसी समय दर्रासे होकर उसने कूलाबवाले महम्मद अशुरबेक बी दादखाह लश्करबाशीको कत्ल कराया। अब हमारी फौजको आगेसे घेरकर दरवाजेमें भूखे मार आत्म-समर्पण करने या अफगानिस्तान भागनेके लिये मजबूर करना चाहता है। उसकी इस तरहकी योजनायें और पत्र हमारे हाथमें आये हैं, ...इसलिये उसके इन कामो, अपराधों और विश्वासघातोंके लिये शरीयत और सैनिक कानूनके अनुसार उसे मृत्युदंड देनेका निश्चय किया गया है....।

२८ माह रबीउल अव्वल सन् १३४१ (२१ नवबर १९२२ ई०)

मुहर सेनापति मुसलमान जन-सेना सामीपाशा"

लेकिन ईशान सुल्तान अनवरपाशाका बहुत कदरदान दोस्त था। अगस्तको अनवरपाशा जब मारा गया, तो इसका ईशानको बहुत भारी दुख हुआ। अनवरके सहायक सामीपाशा (खाजा सलीम बी) का भी वह बहुत सहायक रहा। सामीपाशा १९२२ ई०के शरदमें सीमान्तपर गया, तो कलाखुमके पास उसे दरवाजके बासमची नेताओ दिलावरशाह और हैरतशाहने पकड लिया। पता लगते ही ईशान सुल्तान स्वय वहा गया और सामीपाशाको छुडाकर अपने साथ याजगन्द ले आया। ईशानने और भी घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये याजगन्दकी एक ७-८ वर्षकी लडकीसे सामीपाशाका व्याह करवाया—लडकी पहले ही किसी दूसरेको दी जा चुकी थी। लडकीके बापने इसका विरोध किया, तो उसे गिरफ्तार करवा लिया।

बोल्शेविकोके साथ प्रतिरोधको बेकार तथा बासमची सरदारोंके आपसके विश्वासघातोंके कारण जब ईशान सुल्तानका विचार बदलने लगा, तो फुजैल और सामीपाशाने अफगानिस्तान भागनेसे थोडा पहले ईशानको मारनेका निश्चय किया, जैसा कि उपर्युक्त पत्रसे मालूम होगा। फिर सामीपाशाने ईशान सुल्तानको गिरफ्तार कर लिया और फुजैलके आदमियोने उनके भाई ईशान सुलेमानको भी पकड लिया। यही नही सामीके आदमियोने याजगन्दमे ईशानोके घरोको ध्वस्त कर दिया, वहाकी सभी कीमती चीजें तथा स्त्रियोको लूट लिया और ईशानके तीसरे भाई

शाह रहमतुल्लाको भी पकड लिया। इसके बाद वासमची सरदारो मामीपाशा, फुजैल और दानियाल ने तवील दर्राके सभी अफसरों, मुल्लो, काजियो, मुफ्तियोको जमा करके शरीयतके अनुसार अभियोग लगाया कि ये ईशान लाल वोल्शेविकोंसे मिले हैं, इन्होंने एक वासमची सरदार अकवरको मारा। इसपर उन्हे मृत्युकी सजा हुई, और दोनों भाइयोको १९२२ ई०की शरदमें मौतके घाट उतारा गया।

(३) फजैल मकसूम—वासमचियोंके सरदार फुजैल मकसूमने १९२३ ई०में उत्तरी ताजिकिस्तानके पहाड़ोमें लूट-पाट करते अपना दृढ शासन स्थापित कर लिया था। गरमका इलाका अच्छे समयमें भी जीविकाके लिये स्वावलम्वी नही था। वहाके वहुतसे लोग नेपालियोकी तरह फरगानामें जाकर मजदूरी किया करते थे। वासमचियोंके उपद्रवके कारण अव वह रोजी कमाने वाहर नही जा सकते थे, इसलिए सारे इलाकेमें भुखमरी फैली हुई थी, जिससे गरीवोमें वोल्शेविकोका प्रभाव वढ रहा था। इसी साल लाल सेनाने वहा पहुचकर फुजैलको वुरी तरहसे हराया, जिसके वाद फुजैल फिर नही सभल सका। मजार गावमें एक वार फिर उसने मुकाविला करनेकी कोशिश की, लेकिन उसका घोडा मारा गया, फिर दूसरा घोडा लेकर वह सीधे अपने गाव मोतीनान गया, और सव तरफसे निराश होकर नकद और मालको ले उसने अपने हाथसे घरमें आग लगा दी, फिर चोपचाकके रास्ते वखेया इलाकेमें होते पज (वक्षु) नदीके किनारे पहुचा। रक्षियोने पकडना चाहा, लेकिन वह अपने दो-तीन आदमियोंके साथ नदी पार हो अफगानिस्तान निकल जानेमें सफल हुआ।

वोल्शेविकोने कुछ ही महीनोमें करातेगिन, दरवाज और वखेयासे वासमचियोका उच्छेद कर दिया। १८ जुलाई १९२३ ई०को गरम वोल्शेविकोंके हाथमें आ गया, ११ अगस्तको कला-खुम्व (दरवाज) पर भी अधिकार हो गया, इस प्रकार ताजिकिस्तानपर क्रातिकी विजय हुई। लेकिन अभी भी ताजिक जन निश्चित नहीं हो पाये।

(४) इब्राहीम गल्लू—वासमचियोंके सरदार पुराने डाकू इब्राहीम गल्लूने वहुत सालोंतक ताजिकिस्तानके पहाडोमें लूट-पाट मचाकर लोगोंको तग किया, लेकिन अन्तमें जून १९२६ ई० में उसे भागकर अमीरकी तरह अफगानिस्तानमें शरण लेनेके लिये मजवूर होना पडा। उस समयतक वह "मुल्ला मुहम्मद इब्राहीमवेक, दीवानवेगी, तोपचीवाशी, लश्करवाशी, चक्कवे, तुकसावा-पुत्र"की वडी-वडी उपाधियोंसे विभूषित तथा अमीर-बुखाराका नायव था।

३ ताजिकिस्तान गणराज्य

पूर्वी वुखारा या ताजिकिस्तान पहले तुर्किस्तान गणराज्यका अग था। १९२४ ई०में वह स्वायत्त गणराज्य वना और १९२९ ई०में सघ गणराज्य वनकर सोवियत सघके स्वतत्र गणराज्योंमें से एक हो गया।

स्रोत-ग्रथ

१. History of civil war in U S.S.R. (2 vols , G.F. Alexandrov and others, Moscow 1946)
२ रेवोल्युत्सिया व् स्रेदनेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
३ मुदी ताजिकिस्तान्स्कोइ वाजी इस्तोरिया यजीक–लितेरातुरा (लेनिनग्राद १९४९)
४. सोवियत्स्कया एत्नोग्रफ़िया (लेनिनग्राद १९३६/६, पृ० १११)
५. दाखुन्दा (उपन्यास, स० ऐनी, अनु० राहुल, प्रयाग १९४८)
६. गुलामान (उपन्यास, स० ऐनी, अनुवाद "जो दास थे" राहुल, प्रयाग १९४९)

अध्याय ६

तुर्कमानिस्तानमें क्रांति

१. तुर्कमान कबीले

तुर्कमान कबीलोने किस तरह अपनी स्वतंत्रता कायम रखनेके लिये रूसियोंसे अंतिम लडाई लडी, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। तुर्कमानोके मुख्य-मुख्य कबीले थे :—

१	चौदार	उस्त-उर्तमें
२	यामूद	चौदारोके दक्षिण कास्पियन और निम्न वक्षुके बीचमें
३.	गोकलान	ईरानकी सीमापर
४.	तेक्के	सबसे अधिक शक्तिशाली मुर्गाब-उपत्यका और पासके रेगिस्तानोमें
५.	सरिक	मेर्वमें
६	सलार	मशहदके पूर्व बुखाराके रास्तेमें
७	एरसारी	
८	करदाखली	बुखारा-राज्यकी सीमापर वक्षुके किनारे

आठ सौ वर्ष पहले महमूद काश्गरीने और इतिहासकार रशीदुद्दीनने भी तुर्कमान कबीलोंके बारेमें लिखा है। उनके कथनानुसार पौराणिक आगूज खानके छ लडके थे, जिनमेंसे प्रत्येकके चार-चार लडकोके अनुसार तुर्कमानोके चौबीस कबीले बने। इन दोनो लेखकोंके अनुसार वह कबीले निम्न प्रकार हैं —

	महमूद काश्गरी	रशीदुद्दीन
१	कीनिक	कीनिन
२	काईइग	काईई
३	वायोन्दुर	वायोन्दुर
४	ईवे	ईइवे
५	सल्गुर	सल्गुर
६	अफशर	अवशा
७	वेकतिली	केवदिली
८	व्युकद्युज	व्युकद्युज
९	वयात	वयात
१०.	याजगिर	याजिर
११.	येएम्युर	येइम्युर
१२	करायुल्युक	कराएवली
१३	इगदेर	ईइगदेर
१४.	यूरेकी, यूरेकिर	यूरेकिर
१५.	तूतिरगा	दूदुरगा

१६ उला-इओन्दलुग	उला-इओन्तली
१७ त्युकेर	द्युकेर
१८ पेचेनेत	बीजने
१९ जूवाल्दर	जावुल्दुर
२० जेवनी	चेवनी
२१ जारुकलुग	•
	याचिर ली
	कारिक
	कार्किन
	तमगी

दोनो सूचियोका एक-दूसरेसे न मिलना, यही बतलाता है, कि कितने ही पुराने तुर्कमान कबीलोने नये नाम धारण किये और कुछ दूसरे तुर्कोंमें विलीन हो गये ।

तुर्की भापाए उराल-अल्ताई भापा-जातिसे सबध रखती है, जिसके भेद है --

१ तुंगुस--जिसमें मचू भापा भी सम्मिलित है।

२ समोयद--उत्तरी साइवेरियावालोकी भापा ।

३ फिन्नी--फिन (सूओमी) तथा मगयार (हुगरी) भापा।

४ मगोल--इसमें खल्खा, कल्मक और बुरयत मगोलोकी भापाए सम्मिलित है ।

५. तुर्की--इसकी एक शाखा (क) चगताई, जिसकी शाखायें उइगुर, तुर्कमान, उज्वेक, कजानकी तारतारी भापाए है, (ख) शुद्ध तारतार-भापा, जिसमें किर्गिज, वाश्किर और कराकल्पक भापाए है, (ग) शुद्ध तुर्क-भापा, जिसमें ईरानी और उस्मानी तुर्कोंकी भापायें सम्मिलित हैं। भापाकी दृष्टिसे तुर्कमानी भापा पश्चिमी तुर्की अर्थात् तुर्की और आजुर्वाइजानकी भापाके समीप है।

तुर्कमान जाति-निर्माण--तुर्कमानोका एतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ --

काल	ख्वारेज्म	मेर्व	कास्पियन-तट
ई०पू० ५००००			मदलेन
,, ४००० (मध्य-पापाण)	फिनो-द्रविड		फिनो-द्रविड
,, ३५००	द्र०		द्रविड
,, ३००० (नव-पापाण)	आर्य-द्र०	आर्य-द्र०	आर्य-द्र०
,, २५००	आर्य	आर्य	आर्य
,, १५००	ईरानी	ईरानी	ईरानी
,, ७००	शक	ईरानी	ईरानी
,, ५५०	शक	ईरानी	शक
,, ३२६	शक	ईरानी	शक
,, २०६	शक	ईरानी	शक
,, १३०	शक	ईरानी-शक	शक
ईसवी १०० कुपाण	शक	ईरा०-श०	शक
,, ४२५ हेफ्ताल	ईरानी-हूण	ईरा०-श०	श०-कग
,, ५५७ तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०	ईरा० तुर्क
,, ६७३ अरब	ईरा०-तु०	ईरा०	तुर्क
,, ८९२	तु०-ईरा०	ईरा०-तुर्क	तुर्क
,, १२२० मगोल	तु०-ईरा०	ईरा०-तु०	तुर्क
,, १५००	तुर्क	तुर्क	तुर्क

ईसवी १७००	तु०-उज्बेक	तुर्कमान	तुर्कमान
" १७४७	उज्बे०-तुर्क	तुर्कमान	तुर्कमान

तुर्कमान

२ लालसेना-निर्माण

करेन्स्कीकी अस्थायी सरकारको रूसी गरीबो और मजदूर-किसानोके बलपर निकाल फेंकना आसान था, क्योकि रूसमें क्रांति-विरोधियोके साथ लोहा लेनेवालोकी सख्या और शक्ति कम नही थी, लेकिन मध्य-एसिया और उसमें भी तुर्कमानिया बहुत पिछडा देश था, जहाके लोगोमे शिक्षा एक प्रकारसे नही-सी थी। जो साक्षर और शिक्षित भी थे, वह मुल्लोके मक्तबोमें पढे और उन्हीके प्रभावमें थे, इसलिए अपने द्वेष और असतोपको वह गैर-मुस्लिमोको काफिर कहकर ही निकालना जानते थे। तुर्कमानोमे साम्यवादका सदेश और आन्दोलन पहलेसे बिलकुल ही नही था। क्रातिके बाद वह पहिले मध्य-एसियामें रहनेवाले रूसी मजदूरोमें फैला, जिसके बाद एसियाई लोगोमे भी घर बनाने लगा। करेन्स्कीकी सरकारको हराकर जब बोल्शेविकोने शासन-सूत्र अपने हाथमे लिया, तो मध्य-एसियामें भी उन्हे पुराने शासकोका स्थान ग्रहण करनेमें पहले अधिक कठिनाईका सामना नही करना पडा, तो भी बोल्शेविक आनेवाले खतरेको समझते थे। ताशकन्दमें अक्तूबर-क्रातिसे महीना भर पहले (सितम्बर १९१७ई०में)ही रेलवे मजदूरोने अपनेको हथियारबन्द कर लाल-गारदका सगठन कर लिया। लेकिन सैनिक के तौरपर उनका सगठन अक्तूबर-क्रातिके सघर्षके समय ही हुआ, जब कि ताशकन्दके बहुतसे मजदूर लाल-गारदमें भर्ती हो गये। लालगारदके सैनिक ओरेनबुर्गके मोर्चेपर सफेद-जेनरल दूतोफकी सेनासे भी लडने गये थे, जिसने लडाक् कजाकोको भी अपने साथ मिला लिया था।

ताशकन्दका अनुकरण करते हुये मध्य-एसियाके दूसरे शहरोमे भी लाल-गारदका सगठन हुआ। उस समय तुर्कमानियाको पारे-कास्पियान (जाकास्पिइ) कहा करते थे। पारेकास्पियाके नगरोमे लाल-गारदका पूरी तौरसे सगठन फर्वरी १९१८ ई०में शुरू हुआ, जब कि सोवियत शासनको उखाड फेंकनेके लिये उत्तरसे कजाक और दक्षिणमें ईरानसे अंग्रेजोके भाडेके सैनिक सफेद-रूसियोके मददके लिये आ पहुचे। चारजूय, तथा दूसरे पारे-कास्पियाके नगरो और स्टेशनोके मजदूर लाल-गारदमे धडाधड भर्ती होने लगे, और वह फर्वरीके अन्त (मार्चके मध्य) तक काफी शक्तिशाली हो गये। गारदने क्राति-विरोधी कजाकोको दबानेमें बडा काम किया। जब विदेशी शक्तियोका जोर भी इस प्रदेशमें देखा जाने लगा, तो ताशकन्द और दूसरे नगरो से भी लाल-गारदके सगठनकर्ता भेज गये। त० कज्लोफके अनुसार पारेकास्पियामें २० (७) दिसम्बर १९१७ ई०को बोल्शेविक पार्टीके सदस्योको सम्मिलित करके लाल-गारदकी स्थापना हुई। गारदमे यूरोपीय मजदूरोके अतिरिक्त उज्बेक, तुर्कमान, कजाक आदि स्थानीय (एसियाई) जातियोके भी मजदूर सम्मिलित थे। जनवरी १९१८ ई०मे जब मुल्लोने शासन हाथमें लेनेका प्रयत्न किया, तो उस समय ताशकन्दके एक लाल-गारदमे केवल उज्बेक स्वयसेवक सैनिक दो सौ थे। तुर्कमानियाम अवेज वेर्दी कुलियेफ-जैसे बोल्शेविकोने लाल-गारदके सगठनको आग बढाया, और दिसम्बर १९१७ ई०तक उसमें १७५ सवार तैयार हो गये। ६ दिसम्बर (२३ नवम्बर) १९१८ ई०तक तुर्कमानियाके हर नगर, हर बडे स्टेशनपर लाल-गारदके सगठन थे। इनका काम था तुर्कमान मजदूरवर्गको हथियारबन्द कर क्राति-विरोधियोसे लोहा लेना और पूजीवादियोसे मजदूरोके हितोकी रक्षा करना। पहलेपहल उन्हे ईरानसे आये क्राति-विरोधी सैनिको और खीवाकी ओरसे आये कजाकोंसे मुकाबिला करना पडा। लाल-गारद दूतोफके कजाकोंके मनोरथको भी विफल करनेमें सफल हुआ।

१९१८ई०के अन्तमें मध्य-एसियामें बोल्शेविकोकी अवस्था बहुत खतरनाक हो गई थी। रूससे यातायातका सवध टूट गया था। उस समय पारे-कास्पियामें (समाजवादी क्रातिकारी) दलका जोर था और बोल्शेविक निर्वल थे। क्राति-विरोधियोके नेता जारशाहीके पुराने सैनिक और असैनिक अफसर थे। खोकन्दके स्वायत्तियोके खतम कर देनेपर वहा बासमचियो (जहादी डाकुओ)का जोर बढा, जिसके कारण बोल्शेविक उनको दवानेमें लग पड़े, और महीनो कहीसे कोई सहायता नही मिली। यहाके कम्युनिस्तोंमें अभी न उतना तजर्बा था, न अनुशासन और उनमे निम्न-मध्यमवर्गके अराजकतावादी भाव ज्यादा दिखाई पड़ते थे। लेकिन तो भी उच्च आदर्शके प्रति प्रेम और सर्वस्व-त्यागका भाव उनमें काम कर रहा था, जिसके बलपर शत्रुके कितने ही शक्तिशाली होनेपर भी वह लडनेके लिये तैयार थे। १९१८ ई०के अन्तमें मास्कोसे रेडियोग्राम आया, कि सारी पूजीवादी दुनिया—फ्रास, इगलैंड, अमेरिका आदि—ने सफेद (क्राति-विरोधी)-रूसियोकी सेनाको सक्रियरूपसे मदद देनेका निश्चय कर लिया है। वह और हथियार ही नही देगे, बल्कि अपनी सेना भी भेजेंगे। इस बेतारके तारने जहा अवस्थाकी भीषणताको स्पष्ट करके सामने रख दिया, वहा यह भी बतला दिया, कि पूरी तौरसे अनुशासनकी पावदी करते हुये हथियारवन्द होकर लडना ही एकमात्र रास्ता रह गया है। उस समय बोल्शेविकोकी काग्रेस हो रही थी, जिसने निश्चय किया, कि सफेद-गारदोंसे हमें ऊपरका अनुशासन मानते हुये लडना है। अन्नका अभाव था, कारखाने वन्द थे। खैर इसका एक फायदा यह भी था, कि मजदूरोको काम नही करना था। रेलवे लाइनें भी बेकार पडी थीं।

३. केर्की-काड (१९१९ ई०)

मध्य-एसिया पहुचनेके यातायातके बडे रास्तोंमें एक स्थल-मार्ग ओरेनबुर्गसे होकर था, और दूसरा बाकूसे जहाज द्वारा कास्पियन पारकर वर्तमान तुर्कमानिस्तान होकर। ओरेनबुर्गको दुतोफने लेकर उधरका रास्ता वन्द कर दिया था, और कास्पियनके पूर्वी और पश्चिमी दोनो तटोंपर अग्रेज आ गये थे। इस प्रकार मध्य-एसियाके बोल्शेविक केन्द्रसे बिलकुल अलग-अलग अपनी लडाई लड रहे थे। उनका मुकाबिला भी केवल सफेद (क्राति-विरोधी) रूसियो और स्थानीय उच्च और मध्यवर्गसे ही नही था, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय पूजीपतियोंकी दुनिया भी उनकी शक्तिकी परीक्षा कर रही थी। बोल्शेविकोका सबसे ज्यादा बल था—स्थानीय गरीब और मजदूर जनता, जिसके हितोंके लिये वह सब तरहकी कुर्बानिया दे रहे थे। १९१९ ई०के वसन्तके आनेतक अब अमीर-बुखारा भी ज्यादा हिम्मतके साथ क्राति-विरोधियोंकी सहायता करने लगा था। कास्पियनके पूर्वी तटसे आगे बढते हुये सफेद-रूसियोंने आमू-दरियाके किनारे तथा बुखारासे नातिदूर चारजूयके महत्त्वपूर्ण स्टेशनको अपने हाथमें कर लिया था। लेकिन उनकी हिम्मत नहीं हुई, कि आमू (वक्षु) दरिया पारकर सीधे बोल्शेविकोपर प्रहार करें। बुखारा राज्यके भीतर बुखारा नगरसे कुछ ही मीलपर कगानका रेलवे-जकशन जारशाहीने अपने हाथमें कर रक्खा था, जो अब बोल्शेविकोंके हाथमें था। सफेद रूसियोंने सीधे बुखाराकी ओर बढनेकी जगह पहले केर्कीको लेनेका निश्चय किया था, जिसके बाद वह बुखाराके अमीरसे मिलकर तुर्किस्तान-प्रदेशसे बोल्शेविकोको खतम करना चाहते थे। मेर्व (बैराम अली)में कुछ उच्च अमरीकी अधिकारियोंने सफेद रूसियोंने मिलकर योजना बनाई। १९१९ ई०की मईके मध्यतक उन्होने अलग-अलग टोलियोंको बनाकर उनके लिये काम निश्चित किया। ऐरापेतोफ एक टोलीका कमाडर नियुक्त किया गया, जिसे केर्कीपर अधिकार करनेका काम दिया गया। वह खर्कोफसे आकर बाकूमें सेनाके साथ शिक्षकका काम करता रहा। इससे पहले वह जारकी सेनामें अफसर रह चुका था, लेकिन इससे पहले कभी उसने सैनिक अभियानमें नेतृत्व नही किया था।

२८-२९ अप्रैलको कप्तान ऐरापेतोफने अपनी सैनिक टुकडी सगठित की। पैसेकी कमी थी। पैसे होंके लिये तो क्राति-विरोधियोंको सिपाही मिल रहे थे। यदि केर्कीपर अधिकार

कर ले, तो अमीर-बुखारा तीस हजार रूबल देनेके लिये तैयार है, कहकर उसने लोभ-लालच दिखला पैंसठ आदमियोको इकट्ठा किया, जिनमें चार रूसी, तीन ईरानी और कुछ आर्मेनियन भी थे। अग्रेजोके दिये हुये हथियारोकी कमी नहीं थी। उनके साथ दो सौ बन्दूकें, काफी गोली-बारूद भी थी, इनके अतिरिक्त कुछ मशीनगनें भी थी, लेकिन तोप नही थी।

सैनिक टुकडीने सगठित हो जानेके बाद बैराम अलीसे कूच किया। पहले वह ताशके-परी फिर तख्तबाजार पहुचे। मेर्वसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्कतक आई रूसी रेलवे लाइन पकडकर वह पहले दक्षिणकी ओर चले। तख्तबाजारसे ८ (२१) मईको, वह उत्तर-पूर्वकी तरफ केर्कीकी ओर बढने लगे। रास्ता रेगिस्तानका था। यदि ऐरापेतोफके सनिकोको रास्तेके बारेम अच्छी तरह मालूम होता, तो शायद उनमेंसे कितनोकी हिम्मत टूट जाती, लेकिन एक बार जब रेगिस्तानमें पड गये, तो पीछे हटनेका सवाल कहा था? ऐरापेतोफने उन्हे बतलाया था, कि तख्तबाजारसे केर्की दूर नही, सिर्फ तीन दिनका रास्ता है। वह नौ दिन बाद १४ (२७) मईको रेगिस्तानी रास्ता खतमकर केर्कीसे चार फर्सखपर एक बागमें ठहरे। कुछ ही समय बाद अमीर-बुखाराका अफसर नूरुद्दीन निराखुर और नासिरुद्दीन कराउलबेगी मिलने आये। केर्कीके बेग (राज्यपाल)ने सौ हथियारबन्द स्थानीय तुर्कमान ऐरापेतोफकी सेनाके लिये भेजे, और जल्दी ही सैनिक कार्रवाई करनेके लिये जोर दिया। रेगिस्तानके रास्तेसे आकर थके-मादे पडे ऐरापेतोफके आदमी अभी उसके लिये तैयार नही थे। इसपर बुखारी अफसरोकी सलाहसे ऐरापेतोफ अपने सैनिकोको लिये केर्कीसे चालीस फर्सख दूर किजिलअयाकमे चला गया। यहा डेढ़ सौ तुर्कमान सवार और आ मिले, इस प्रकार ऐरापेतोफकी सारी सेना अब तीन सौ पैंतालीस थी। केर्कीका बेग बराबर ऐरापेतोफसे लिखा-पढ़ी कर रहा था। कपासका बहुत बडा व्यापारी मलिक-कपामेंस समसोन क्राति-विरोधियोकी सहायता कर रहा था। फर्वरी (१९१७)ई० क्रातिके समय वह नगरके आर्थिक कमीशनका अध्यक्ष था, लेकिन अक्तूबरकी क्रातिके बाद वह बोल्शेविकोके साथ सहानुभूति पैदा करके अपनेको सोवियत सगठनका सदस्य बनानेमें सफल हुआ। उसने एक पत्र केर्कीके बेगके पत्रके साथ ऐरापेतोफके पास भेजा। पत्र पकडा गया, फिर समसोन भी गिरफ्तार कर लिया गया।

केर्की अफगान-सीमाके नातिदूर वक्षु नदीके तटपर व्यापारिक और राजनीतिक महत्त्वका स्थान था, जहा १८८९ ई०में जारशाहीने एक किला बनाया था। इसके व्यापारिक महत्त्वका पता इसीसे लग जायगा, कि १९१० ई०मे यहा बाइस लाख रूबलका व्यापार हुआ था। बुखाराके पासके कगान जक्शनसे करशीको एक रेलवे लाइन लाई गई थी। यह कपासकी बहुत बडी मडी तो थी ही, साथ ही अफगानिस्तानके साथके आयात और निर्यात का भी यह बहुत बडा द्वार था। यहापर दो कपास ओटनेकी मिलें भी थी। अक्तूबर-क्राति द्वारा जब ताशकन्दपर सोवियत-शासन कायम हो गया, तो यहाके गैरिसनके सिपाहियोने भी लाल झडा फहराया। मजूर और निम्नमध्यम-वर्गके लोग सोवियत-शासनके पक्षमे थे। ऐरापेतोफके आक्रमणसे पहले यहा बोल्शेविक पार्टीके सौ मेम्बर बन चुके थे।

१२ (२५) मईको केर्कीकी सोवियतको खबर मिली, कि सफेद-गारदके तीन हजार सैनिक आठ तोपो और सोलह मशीनगनोके साथ आ गये है। अगले दिन यह भी पता लगा, कि सफेद-गारदका कुछ भाग किजिलअयाकमें पहुच गया है। इसी दिन शामको सोवियतकी एक खास बैठक हुई, जिसमें प्रतिरक्षाके लिये तैयारी करनेका निश्चय किया गया। इसके लिये एक परिषद् (कलेगियो) बनाई गई, जिसका अध्यक्ष नस्तेरोफ और सदस्योमें शीरियानेत्स (सोवियत-अध्यक्ष), बबायेफ, वासिलेव्स्की और बर्जानोफ थे। बर्जानोफ युद्धके विशेषज्ञके तौरपर लिया गया। १३ (२६) मईके १० बजे अमीरके पास रहनेवाले सोवियतके रेजीडेंटके पास केर्कीसे शीरियानेत्स, नेस्तेरोफ, और लादोगोने खबर भेजी, कि अश्कावादियोकी पलटन यहासे अट्ठाईस वेर्स्तपर आ पहुची है। हो सकता है, हम आपके साथ यह अन्तिम वार्तालाप कर रहे हैं। जो हो सके, मदद हमारे पास भेजें। आज ही शामको युद्ध शुरू होनेकी सभावना है। बेग और

उसके अफसर उनके साथ है। उनकी सेनामें ७५० सैनिक, आठ तोपो और सोलह मशीनगनोंके साथ शामिल हैं। एक अग्रेज कर्नल सेनाका कमाडर है। इसे कहनेकी अवश्यकता नही, कि हम विशेष सहायताकी अवश्यकता है। यदि सहायता न पहुची, तो हम बच नही सकते, तो भी हम अतिम समयतक लडेंगे।

उस समय केर्किके गैरिसन (छावनी)में किलेके एक सौ पचास सैनिक—सौ सवार थे। इनके अतिरिक्त नगरमें भी करीब अस्सी लाल स्वयसेवक थे। समासोनोफ स्टेशनमें भी रेलरक्षक पचहत्तर हथियारबन्द सैनिक थे। इस प्रकार सब मिलाकर तीन सौसे कुछ ऊपर आदमी उनके पास थे।

१५ (२८) मईको सफेद-गारदकी ओरसे सोवियतको अल्टिमेटम मिला, जो जेनरल देनिकिनकी सेनाकी ओरसे भेजा गया था भाईको। खून वहानेसे परहेज करनेके लिये हम चाहते हैं, कि तुम केर्कीको समर्पण कर दो। अल्टिमेटमके बाद दो घटेतक हम प्रतीक्षा करेंगे। जिसके बाद किलेपर गोलाबारी शुरू हो जायगी। अल्टिमेटमपर निम्न अफसरोंके हस्ताक्षर थे :—

अग्रेजी सेनाका कमाडर कर्नल लोमकार्ट,
फ्रेंच सैनिक मिशनका अध्यक्ष कर्नल वाल्तेर,
रूसी सेनाका सचालक मेजर-जेनरल युदेनिच,
तुर्कमानी सेनाका सचालक कर्नल गर-सरदार।

अल्टिमेटमके हस्ताक्षरो और सफेद गारदकी सेनाकी बढा-चढाकर बतलाई सख्याको देखकर केर्कीकी सोवियतको भारी डर लगता ही था, लेकिन चाहे कुछ भी हो, बोल्शेविक किलेको क्राति-विरोधियोके हाथमे देनेके लिये तैयार नही थे। परिषद्ने हर तरहसे नगरकी रक्षा करनेका निश्चय किया, और अल्टिमेटमका जवाब देते हुये कहा—"आत्मसमर्पणकी जगह निष्कलुष रूप-से मृत्यु प्राप्त करना बेहतर है।" परिषद्ने शिनिकोफ और श्वास्कीके द्वारा पत्र भेजा। सवेरे दूकानें अभी बन्द ही थीं, तभी सोवियतके प्रतिनिधि नगरसे बाहर हो गये। उन्होने ऐरापेतोफसे कारवासरायमें मिलने जाते ढाई सौ हथियारबन्द तुर्कमानोको देखा। किसीने बात करते हुये बतलाया, कि सेना-सचालक लोमकर्ट है। आदमीने प्रतिनिधियोसे बात करते ऐरापेतोफको बतलाया, कि केर्की घिर गई है, बुखारासे तारका सबध कट गया है, केर्की और करशीके बीचकी रेलवे लाइन भी काट दी गई है। तेरमिजके ऊपर पाच सौ सैनिक भेजे जा चुके है। हमारी भारी सेनामें अग्रेज, तुर्कमानी, रूसी आदि बहुत-सी जातियोके लोग है। जब बातें हो रही थीं, उसी समय किसी आदमीने आकर ऐरापेतोफसे कहा, कि अग्रेज तोपखाना-अफसर सिगरेट माग रहा है। ऐरा-पेतोफने प्रतिनिधियोंसे बतलाया, कि सिगरेटका मतलब है सिपाही। इस प्रकार उसने प्रतिनिधियो-पर बहुत रोब डालना चाहा। उसने और बात करनेके लिये अपनी ओरसे स्तेपानोफ, उराल्स्की और मूजातिचको शीनिकोफके साथ भेजा, लेकिन श्वास्कीको जामिनके तौरपर अपने पास रख लिया। शीनिकोफने आकर बतलाया, कि सब झोंपडी हैं, कही तोप-ताप नही हैं। हा, अमीर-बुखाराके आदमी उनके साथ है। युद्ध-समितिने श्वास्कीको लौटाने तकके लिए ऐरा-पेतोफके दो प्रतिनिधियोको रख लिया, फिर अल्टीमेटमका उत्तर दिया—"हम अमर प्रोलेतारियोके पुत्र, तुम्हे सूचित करते हैं, कि सोवियत रूस और तुर्किस्तानके राज्यके सिवा हम किसी राज्य-को स्वीकार नही करते। हम सिर्फ सोवियतकी शक्तिको स्वीकार करते, उसीकी आज्ञा मानते, और उसके लिये हम अपने खूनकी अतिम बूदतक देनेके लिये तैयार हैं।

केर्कीके बेगकी बहुत-सी कार्रवाइया पकडी गई थीं, इसलिये १६ (२९) मईकी शामको नवा छ बजे युद्ध-परिषद्ने उसे अल्टीमेटम दे दिये, कि अश्काबादके विद्रोहियोको तुमने मदद दी है, और शहरके नमी भाग तथा किलेको उनके हाथमें देनेकी कोशिश करते १५ (२८) मईकी शामको मीर आन्नुर कादिरकुलोफको पत्र देकर भेजा। दो घटेका समय देकर वर्जानोफ-ने तोप चलानेका हुक्म दिया। किलेकी तोपें आग बरसाने लगी। पुराने नगरपर सत्रह गोले छोडे गये। इसपर बुखारा राज्यपालने अपने प्रतिनिधि भेजे। तुरन्त दो तोपो, दो मशीनगनो

और तीन सौ रूसी बन्दूकोंको देना स्वीकार किया। फिर भी बेगके किलेपर चार और गोले छोडे गये, जिसपर उसने अपनी दो तोपो, दो सौ बन्दूकोको भी बोल्शेविकोके हाथमे दिया। वाकी हथियारोके बारेमें उसने कहा, कि लोगोने डरके मारे आमू-दरियामे फेंक दिया है।

अव स्वयसेवकोकी बडी तेजीसे भर्ती होने लगी। बेगको स्वतत्र रखना खतरेकी वात समझ उसे और उसके आदमियोको गिरफ्तार करनेका निश्चय किया गया। अमीरके बहुतसे अफसर, तथा बडे-बडे व्यापारी अपने धन और परिवारको नगरमे ही छोड गावोकी ओर भागे, जिससे आसपासके तुर्कमानोको लूटका प्रलोभन हुआ। उन्होने लूटके लिये अपने दल सगठित करने शुरू किये, जिसमे सबसे पहले चाकिर, तराजा और खोजा हैरान गावोके लोग शामिल हुये। उन्होने १९ मई (१ जून)को लूट-मार शुरू कर दी। रूसी इसे क्यो वर्दाश्त करने लगे, इसपर तुर्कमानो और रूसियोमें जग छिड गई, जो दो महीनेतक चलती रही। आसपासके गावोसे चीजोका आना-जाना बन्द हो गया, नगरके लोग दिन-पर-दिन भूखे मरने लगे, न बच्चोके लिये दूध था, न लोगोके लिये खानेका सामान। तुर्कमानोने काफी रूसियोको मारा, और खुद भी उनकी काफी क्षति हुई। ३१ मई (१३ जून)को ३ बजे सवेरे तुर्कमानोपर आगे बढ कर आक्रमण करनेके लिये बोल्शेविकोकी टुकडी भेजी गई, जिसने उनको काफी नुकसान पहुचाया। अन्तमे १ (१४) जुलाईको सुलह करानेके लिये बुखाराके अमीरने ईशान सद्र तथा दूसरों के साथ अपने आदमी काजीबेकको बातचीत करनेके वास्ते भेजा, लेकिन उसका कोई परिणाम नही निकला। इसके बाद ४, ५, ६ (१७, १८, १९) जुलाईको तुर्कमानोने आक्रमण करके नगरपर अधिकार करना चाहा, लेकिन सोवियतकी तोपो और मशीनगनोने उन्हे मार भगाया। जुलाईके मध्य (अन्त)मे स्टीमरसे एक दूत-मडल ताशकन्द भेजा गया, जिसे बुर्दालिक गावमें तुर्कमानोने रोक लिया। फिर केर्कीमें बातचीत हुई, अन्तमे तुर्कमानोने स्टीमरको जाने दिया। अमीर-बुखारा उस समय करमीनामे था। केर्कीमें बोल्शेविकोके इतने जबर्दस्त प्रतिरोध और तुर्कमानोकी हानि देखकर अमीर बुखाराके आदमी सुलह करानेके लिये १० जुलाईके १२ बजे दोपहरको केर्की पहुचे। १२ (२५) जुलाईके ७ बजे सबेरे तुर्कमानोके साथ सधिकी बातचीत शुरू हुई। इस बातचीतमें बुखाराके प्रतिनिधि थे—तोकसावा मिर्जा खोजा, मीर अखुर कारी उसमानबेक और कराउलबेगी जाहिरोफ, और तुर्कमानोके प्रतिनिधि—ईशान सदुर, ईशान उराक, मुल्ला वलीनियाज, मुल्ला बाबा और मुल्ला जूराकुल तोकसावा। १९ जुलाई (अगस्त) सधिके ऊपर हस्ताक्षर भी हो गया। तुर्कमानोने केर्कीके घेरेको हटा लिया। ३० जुलाई (१२ अगस्त)को केर्कीका बाजार खुल गया, गावोसे सब तरहकी खानेकी चीजे आने लगी।

इस प्रकार ऐरापेतोफकी बदर-घुडकीको खतमकर तुर्कमानोके खतरेसे भी अपनेको मुक्त करके केर्कीमें बोल्शेविकोने अपनी शक्ति मजबूत कर ली। २२ सितम्बर (५ अक्तूबर) को स्टीमर द्वारा चारजूयसे नई कम्युनिस्त सेना केर्की आ रही थी, लेकिन केर्कीसे पच्चीस वेर्स्तपर तुर्कमानोन फिर स्टीमरको रोक लिया। लेकिन चार घटेके बाद उन्होने उसे छोड देनेम ही खैरियत समझी। इसी साल ताशकन्दसे कुछ लाल सैनिकोके साथ तीस लाख रूवल खजाना लेकर लगोदा और शीर्निकोफ आ रहे थे, जिन्हे २५ अक्तूबर (८ नवम्बर)को उसी गाव खोज-म्वाजमें तुर्कमानोने फिर रोक लिया। उन्होने हथियार और खजाना छीन बोल्शेविकोको मौतका दड दिया। चार दिन इसी स्थितिमे रहे। केर्कीके बेगपर दबाव पडा, तो तुर्कमानोने उन्हे छोड दिया। केर्कीकी क्रातिकारी समितिने इस बातका बहुत विरोध किया, कि ईरानी, जर्मन, अफगान या दूसरे आदमियोको न रोक तुर्कमान केवल रूसियोको रोकते है।

केर्की-काड (१९१९ ई०) की तारीखवार घटनायें निम्न प्रकार थी —

२४ अप्रैल (७ मई) केर्कीपर चढाईके लिये ऐरापेतोफने सिपाही जमा करने शुरू किये।

५ (१८ ") तख्तबाजारसे ऐरापेतोफकी सेना रवाना हुई।

१२ (२५ ") केर्की-सोवियतको शत्रुके आनेकी सूचना मिली।

१३ (२६ ") युद्ध-परिषद्का संगठन, और नगरकी प्रतिरक्षाकी तैयारी।
१४ (२७ ") ऐरापेतोफकी सेना केर्कीके नजदीक पहुंची।
१५ (२८ ") ऐरापेतोफने अल्टीमेटम दिया, ख्वास्की और ग्रिनिकोफ बात करने गये। परिषद्ने अल्टीमेटम स्वीकार नहीं किया।
१६ (२९ ") युद्ध-परिषद्ने केर्कीबेगको हथियार रख देनेके लिये अल्टीमेटम दे पुराने नगरपर गोलाबारी की।
१७ (३० ") पुराने नगरके प्रतिनिधि बात करने आये। बेग और उसके अफसरोंको गिरफ्तार करके पुराने केर्की नगरको बोल्शेविकोंने ले लिया।
१० मई (१ जून) कगानकी सोवियत सेना समसोनोफ स्टेशनपर आई। तुर्कमानोंने केर्कीका मुहासिरा शुरू कर दिया।
२-३ (१५-१६") तुर्कमान नेताओंके साथ प्रथम बातचीत।
३ (१६ ") केर्की-सोवियतने अपनेको खतम करके सारी शक्ति युद्ध-परिषद्के हाथमें दे दी।
४-६ (१७-१८") तुर्कमानोंने आक्रमण करके केर्की नगरको लेना चाहा।
१० (२३ ") बुखारासे वोइत्केविच तथा अमीरके आदमी सुलह करानेके लिये केर्की पहुंचे।
१२ (२५ ") तुर्कमानोंके साथ सुलहकी बात शुरू हुई।
१९ जून (२ जुलाई) सुलहनामे पर हस्ताक्षर।
२८ सितम्बर (११ अक्तूबर) अपने अपराधोंके लिये बजानोफ शिरियानेत्स् और नेतेरोफको गिरफ्तार किया गया।

४. ईरानका दावा

१९०७ ई०में इंगलैंड और जारशाही रूसका जो समझौता हुआ था, उसमें दोनों राज्योंने बीचके थोड़ेसे स्थानको छोड़कर ईरानको अपने प्रभावक्षेत्रमें बांट लिया था, और बहुतसे राजनीतिक और आर्थिक सुभीते अपने लिये प्राप्त किये थे। क्रांतिके बाद सोवियत सरकारने इस तरहके साम्राज्यवादी सन्धिपत्रोंको फाड़कर फेंक दिया। २६ फर्वरी १९२१ ई०को मास्कोमें ईरानके साथ नये सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर करते हुए सोवियतने ईरानके साथ हुई अन्यायपूर्ण शर्तोंको खतम कर दिया धातु-खुनो, पेट्रोल आदिके सम्बन्धमें जो रियायतें ईरानमें जारशाहीने ली थीं, उन्हें छोड़ दिया। जुल्फा तब्रेज और दूसरी जगहोंमें जारशाहीने जो रेल्वे लाइनें बनाई थीं, उन्हें ईरानको दे दिया। उर्मिया (रजाइया) महासरोवरमें चलनेवाले रूसी स्टीमरोंको ईरानके हवाले कर दिया। तेलीग्राफ, बिजली-स्टेशन, बैंकोंकी इमारतों आदिपर से भी अपना अधिकार छोड़ दिया। कुल मिलाकर प्रायः सात करोड़ सुवर्ण रूबलकी अपनी संपत्तिको देते रूसियोंके बाह्य-राज्यमें विशेष अधिकारको भी छोड़ दिया। एक ओर रूसके नये शासक इस तरहकी उदारता दिखला रहे थे, दूसरी तरफ बख्तियारी सामन्त समसामुस्सल्तनतके नेतृत्वमें ईरान सरकार मार्च १९१९ ई०में पेरिसके अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसमें कौरोश और दारयोशके समयकी ईरानी सीमाको फिरसे कायम करना चाहती थी। समसामुस्सल्तनत उसी बख्तियारी कबीलेका सरदार था, जिसने १९१६ ई०में इंगलैंडके साथ समझौता करके ईरानके प्रसिद्ध तेल-क्षेत्रको अंग्रेजोंके हवाले किया था। इसीके शासनके समय इंगलैंडने ईरानपर पूरी तौरसे अपना अधिकार जमाया, इसलिये अंग्रेजोंकी सम्मतिके बिना वह ऐसी मांगोंको रखनेकी हिम्मत नहीं कर सकता था। उस समय एक ओर अंग्रेज जेनरल डेस्टर्विल्की सेना बगदादसे बाकू पहुंची थी, वहां दूसरी सेनाका कर्नल रौलिसनके अधीन अश्काबाद आई थी। अंग्रेजी सेनाओंके बलपर ईरानकी मांगें यदि लंबी हो जायें, तो आश्चर्य क्या? वस्तुतः यह नई सीमा ईरानकी नहीं, बल्कि अंग्रेजी साम्राज्यकी होती। ईरान सरकारने अपने स्मारक पत्रमें मांग की—बाकू नगरके साथ सारा आजुर्बाइजान, एरेवान, नखचेवान, कराबख आदि नगरोंके साथ रूसी आर्मेनिया, दरबेंदके साथ दागिस्तान (अर्थात् प्रायः सारा काकेशस) ईरानको मिलना

चाहिए। पारे-कास्पियाको लेते हुये ईरानकी सीमा आमू-दरिया, अराल समुद्र और पूर्वी कास्पियन-तट माना जाय, अर्थात् अश्काबाद, मेर्व, ग्वीवा आदिपर ईरानका अधिकार होना चाहिये। कुल मिला पाच लाख सत्तर हजार वर्ग किलोमीतर सोवियतकी भूमिपर ईरानका दावा था। ईरानने बोल्शेविकोको इतना कमजोर समझा था, और अपने सहायक पश्चिमी साम्राज्यवादियो-को इतना मजबूत, कि उसने सोवियत-शासकोके सात करोड स्वर्ण रूबलके स्वार्थ-त्यागको उनकी कमजोरी समझा ।

लेकिन ईरान और उसकी पीठ ठोकनेवाले ब्रिटिश साम्राज्यवादियोके सारे मनसूबोको मध्य-एसियाके बोल्शेविको, उनके लाल-गारद और लाल-सेनाने विफल कर दिया। रूसियोके दात खट्टे करनेवाले तुर्कमानोको यह समझनेमे दिक्कत नही हुई, कि उनके भाग्यका सितारा बोल्शेविको के साथ फिर उगनेवाला है। दूसरी जगहोकी तरह तुर्कमानोमे भी उच्चवर्ग और मुल्ला क्राति-विरोधी सफेद-गारदोके साथ हुये, और अधिकाश गरीब जनता बोल्शेविकोके साथ। इसी जनशक्ति-के बलपर तुर्कमानियामे १९२४ ई०मे किसान-मजदूर-राज्य जातियोके आत्मनिर्णयके अनुसार एक लाख सत्तासी हजार वर्गमील भूमिपर कायम हुआ। यद्यपि इस भूमिका अस्सी सैकडा कराकुम (कालाबालू)का महारेगिस्तान है, लेकिन तेरह लाखके आबादी के लिये बाकी बीस सैकडा भूमि भी कम नही है। अब तो वक्षु (आमू दरिया)को कास्पियनसे मिलानेके लिये ग्यारह सौ कलोमीतरकी जो नहर खोदी जा रही है, उसके कारण इस रेगिस्तान-का बहुत बडा भाग उर्वर भूमिमे परिणत हो जायगा। तुर्कमान घुमन्तू कबीले, और उनके लूट-पाट और लडते-भिडते रहनेके जीवनका अत हो चुका है, उनमे शत-प्रतिशत आधुनिक शिक्षा से शिक्षित नर-नारी है। वह जीवनके हर क्षेत्रमे बडी तेजीसे आगे बढे है।

स्रोत-ग्रंथ

१ रेवोल्युत्सिया स्रेद्नेइ आज़िइ (ताशकन्द १९२९)
२ History of civil war in USSR (2 vols, G F Alexandrov and others, Moscow 1947)
३ La revolution russe (4 vols, C Anet, Paris 1918-20)
४ La revolution russe (Al Ular, Paris 1905)

नहीं है। फारसी भाषा अंग्रेजीसे तुलना करनेपर संस्कृतकी सगी बहन-भतीजी मालूम होती है, उसी तरह युरोपकी दूसरी भाषाओंसे तुलना करनेपर रूसी और उसकी स्लाव बहनें संस्कृतकी बिलकुल भागिनेयी और प्रभागिनेयी सिद्ध होती है। वस्तुत रूसी भाषा युरोपीय भाषाओके वर्गकी नही है, बल्कि वह संस्कृत-ईरानी भाषा-वर्गसे सबंध रखती है। १८वी सदीके आरभतक रूसी भी अपने को युरोपसे अलग समझते थे। आज भी उनके मुखसे जब-तब अपनेसे पश्चिमके देशोको 'युरोपा' कहकर पृथक् करनेकी प्रवृत्ति देखी जाती है।

ईरानियो और हिन्दी-आर्योंका घनिष्ठ सपर्क भाषाके अतिरिक्त उनकी देवावली और पूजा-प्रकारसे भी सिद्ध होता है। रूसी भाषाका संस्कृतसे कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसके बारेमें हजारो उदाहरण हम यहा देने जा रहे हैं, इसलिये बहुत लिखनेकी अवश्यकता नही है। लेकिन मूल-भाषा और उसके बोलनेवालोंसे इतिहास-शृखला कैसे जुडती है, इसे यहा सक्षेपमे दिखलानेकी जरूरत है।

हम आसानीके लिये उस भाषाको "प्राक्‌हिन्दी-युरोपीय भाषा" मान लेते है, जिसे भारत और ईरानके आर्यों और रूसी तथा युरोपीय जातियोके पूर्वज एक कबीला होनेके वक्त बोला करते थे। यहा यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है, कि भाषा बोलनेसे यह मतलब नही, कि वह अपने पूर्वजोके विशुद्ध वशज है। मानव-जातिया स्थावर नही, जगम हैं। कभी वह स्वय दूसरी जातियोंके देशोंमे गई और कभी दूसरी जातिया उनके देशोमें आई। यदि भिन्न-भिन्न भागोमें भारतीय आर्योंके रक्तमे द्राविड, किरात और मगोल जातियोका प्रचुर रुधिर है, तो युरोपकी जातिया भी प्राचीन भूमध्यीय जातियो, और रूसी जाति हूणो, तुर्कों और मगोलोके रक्तसे बची नही है। हा, यह कहा जा सकता है, कि हिन्दी-युरोपीय-भाषा-भाषी जातियोमे उनके प्राक्-हिन्दी-युरोपीय पूर्वजोका रक्त अधिक है, परन्तु पश्चिममें यह बात केवल युरोपमें रहनेवालोपर ही लागू है।

प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जातिके निवास और कालको ढूढते-ढूढते हम नवपाषाण-युगतक पहुचते हैं। उनके आधुनिक वशधरोकी शब्दावलीसे तुलना करनेपर इतना पता लगता है, कि अभी वह कृषिको नही जानते थे। इसका अर्थ यह भी हुआ, कि वह नवपाषाण-युगके आरभिक कालमें थे। यह समय ईसा-पूर्व तीसरी-चौथी सहस्राब्दी या कुछ आगे-पीछे हो सकता है। मानव-तत्त्ववेत्ताओंमें इस सम्बन्धमें मतभेद है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति एसियाकी रहनेवाली थी या युरोपकी। बहुतसे विद्वान् कहते हैं, कि अतिम हिम-युगकी समाप्तिके बहुत देर बाद एसियाकी एक जातिने युरोपपर धावा बोला और वही प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति थी। दूसरी तरफ ऐसे भी विद्वान् है, जिनका कहना है कि हिम-युगके बाद जिन जातियोका युरोपमें पता लगा है, उन्हीकी वशज यह प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति थी।* हमे अभी इस विवादमे नही पडना है। यदि प्राक्-हिन्दी युरोपीय जाति एसिया—मध्य-एसिया—से यूरोपमें गई, तो उसकी पूर्वी शाखा गोबीकी मरुभूमिसे कार्पाथीय पर्वतमालातक फैली हुई थी। पीछे इसके विभाग हुये—आर्य और शक। आसानीके लिये हम पूर्वी शाखाको 'शत वश' या 'शकाऽऽर्य' कह लेते है। पश्चिमी शाखा 'केन्ट' या पश्चिमी युरोपीय जातियोके पूर्वज थे। लेकिन यहा हम यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि हालकी ख्वारेज्म (निम्नवक्षुनदी)की खोजोने बतलाया है, कि वहाकी संस्कृति सिन्धु-उपत्यकाकी संस्कृतिसे सम्बद्ध थी, अर्थात् सिन्धु-उपत्यकाकी जाति और प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जातिकी सीमा अराल-समुद्र और सिर्-दरिया थी।

यदि हम यह मान ले, और जिसकी सभावना भी अधिक है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति हिम-युगके बादकी युरोपीय जातियोसे निकली थी, तो उसके विचरण-स्थानकी सीमा वोल्गा या एम्बा नदी रही होगी, अर्थात् विशाल 'भूम्बे बयाबान' (कजाकस्तान)से पश्चिम ही। इसी विशाल

* 'स्केलेटेन रिमेन्स आफ अर्ली मैन' (हर्द्लिच्का), स्मिथसोनियन् मिसलेनियस् पब्लिकेशन जिल्द ८३ (१९३०) पृष्ठ ३४७-४९

भू-भागके पूर्वीय अशमें पूर्वी शाखावाले शकार्य रहते थे। शकार्य-काल में भी सस्कृतिके तलमे बहुत अन्तर नही पडा था। कृषिकी सभावना कम है। शिकारके साथ पशुपालन भी वह करते थे। समाज जन-सत्ताक था, यानी व्यक्तिकी जगह जनकी प्रधानता थी।

शकार्य जातिका सम्मिलित वासस्थान कार्पाथीय पर्वतमालासे पूरब रहा होगा, जिसके पूर्व-मे आर्य रहा करते थे और पश्चिममें शक। जनसख्याकी वृद्धि या प्राकृतिक विपत्तिके कारण शको और आर्योमे सघर्ष हुआ। परिणामत आर्योको अपना मूल स्थान छोडना पडा। उनका एक भाग कास्पियनके पश्चिम काकेशस पर्वत-मालासे होते क्षुद्र-एसिया (तुर्की) और उत्तरी ईरानके तरफ बढते असीरियाके सभ्य देशकी सीमापर पहुचा, और दूसरा भाग कास्पियनसे पूरबकी तरफ अराल समुद्रके किनारे होते ख्वारेज्मकी भूमिमें पहुच वहाकी सभ्यताके सम्पर्कमे आया। काकेशससे होकर जानेवाले आर्योका पता हमें ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमे वोगजकुई (अकराके पास)मे मितन्नी आर्योके अभिलेखसे मिलता है। यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि इसी सहस्राब्दी में हिन्दी-युरोपीय ग्रीक ग्रीस देशमें दाखिल हुए।

अराल-समूद्र और ख्वारेज्ममें पहुचे आर्योका वहाकी सस्कृत जातिसे सघर्प हुआ होगा, इसमें सदेह नही। ख्वारेज्मकी सभ्य जाति उसी तरह घुमन्तू आर्योके समक्ष नतमस्तक हुई, जिस तरह हजार वर्ष बाद ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमे हिन्दी आर्योके सामने सिन्धु-उपत्यकाकी सस्कृत जाति परास्त हुई, और वहा आर्योका अधिकार जमा। शकोसे आर्योके प्रथम अलग होनेका काल ईसा-पूर्व ३००० वर्षके आसपास था। आगे मध्य-एसियामे आर्य कस्पियनसे पामीर तक फैल गये। वक्षु (ख्वारेज्म) सभ्यताने उन्हें कृषि और सस्कृतिकी दूसरी बातें सिखलाईं। आगेके लिये यह भूमि आर्यो का बीजस्थान (आर्याना बेइजा) बन गई। ईसा-पूर्व २५०० के आसपास आर्योंके भाई—शक सख्या-वृद्धि, दैवी उत्पात या अच्छी चरागाहोकी भनक पा पूरबकी ओर बढे। सभव है, अराल-समुद्र और सिर-दरियाके उत्तरके पशुपाल आर्य-जनोसे उन्हें लडना पडा हो। कुछ भी हो, वह धीरे-धीरे पूरब-में बढते त्यानशान् और अल्ताईकी उपत्यकाओको लेते गोबी और क्विनलुन् पर्वतमालातक पहुच गये।

ईसा-पूर्व १५०० मे तरिम, इली और चूकी समृद्ध उपत्यकायें शकोके निवासस्थान थे। सभव है, वहा वे कुछ खेती भी करते हो, अल्ताईकी खानोसे सोना तो वह जरूर निकालते थे। लेकिन शक अपनी जीविकाके लिये मुख्यतया निर्भर थे पशुओपर—घोडा, गाय और भेडे उनके मुख्य धन थे, ऊटो-से उनका प्रेम न था। इस प्रकार ईसा-पूर्व १५ वी सदीमें गोबीसे कारपाथीय-पर्वतमालातक शक-जातिका वासस्थान था। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमें ग्रीक इतिहासकार दुनाइ (डैन्यूब)के उत्तर तथा अराल-तटपर शको (स्कुथ, सिथ)के होनेकी बात करते हैं। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमें ईरानी शाहशाह कोरोस-को शकोसे वचनेके लिये दरवन्द (वाकूसे उत्तर)की किलावदी करनी पडी थी। सिर-दरियाके किनारे भी उसे शकोसे लडना पडा था और एक शक योद्धाके हाथ ही घायल होकर उसे मरना पडा। ईसा-पूर्व ४थी सदीमें अलिकसुन्दरको दुनाइ और सिरदरियाके तटपर फिर शकोंसे मुकावला करना पडा। इस तरह स्पष्ट है, कि ईसा-पूर्व २००० से अलिकसुन्दर (सिकन्दर)के समयतक कारपाथीय पर्वतमालासे गोबीतककी भूमि शक घुमतुओकी विचरण-भूमि रही, और यही महाशक-द्वीप था। यह भी स्मरण रखना चाहिए, कि अराल समुद्रके पास मगेसगेत् (महाशक) नामकी एक शक जाति का वर्णन हेरोदोतने किया है। ई० पू० २०६ मे जव कि ग्रीक-वाल्हीक राजा युथिदेमोने सिर-दरियापर चढाई की थी, उस वक्त भी वहा शक लोगो हीका निवास था। कितने ही पश्चिमी विद्वानो-का विचार है, कि वहा (महाशकद्वीपमें) रहनेवाली शक जाति वस्तुत एक जाति नही थी, अर्थात् वह भिन्न-भिन्न भाषाए वोलते थे, और उनके रक्तमे भी भिन्नता थी। भिन्न-भिन्न भापाका मतलव यदि यह है, कि उनमे कई बोलिया थी, शब्दोके उच्चारणमे कुछ अतर था, तो इसमे किसीको आपत्ति नही। किन्तु यदि इसका यह अर्थ है, कि वहा 'शतम्' वशकी भापासे विलकुल ही अलग, अथवा हिन्दी-युरोपीय भाषासे भी बिलकुल अलग भाषा बोलनेवाले कबीले रहते थे, और रक्तसे भी वे शकार्य या हिन्दी-युरोपीय जातिसे भिन्नता रखते थे, तो इसके लिये कोई आधार नही है। वस्तुत भापाके

मामूली स्थानीय भेदके साथ भी इस सारे महाशक-द्वीपमें शक जातिका अक्षुण्ण आधिपत्य १७२ ई० पू० तक रहा।

गोबीसे उत्तर, और पूरबमें मगोल-वशीय जातिया निवास करती थी, जिनमें सिन् (चीनी) और हूणका इतिहासमे सबसे पहले नाम आता है। २५० ई० पू०मे तूमन् शन्-यूके नेतृत्वमें हूण बहुत प्रवल हुये और चीनको उनके सामने झुकना पडा। ये हूण—जिनके ही वशज पीछे चिंगिज खाके मगोल थे—आधुनिक मगोलियामें रहा करते थे। इनके आतक और आक्रमणोंके मारे चीनी परेशान थे और इसीलिये उनमे बचनेके लिये विश्वविख्यात चीनकी दीवार बनी। हूणोके पश्चिमी पडोसी शक थे। तूमन शन्-यूके बाद उसका पुत्र माउ-दुन् हूणोका राजा हुआ, और वह १८३ ई० पू०में मौजूद था। इसने चीनको कई बार बुरी तरह परास्त किया, और उमसे अपनी शर्तें मनवाईं। इसके समय हूण राज्य पश्चिममें अल्ताईतक पहुच गया, और पूर्वमें कोरियातक। अल्ताई और वलखाश्से पूर्वके शकोने माउ-दुन्की अधीनता स्वीकार की, और शायद इससे पहले ही बापके समयमें ही अल्ताईके उत्तरकी सोनेकी खानें हूणोके हाथमें चली गई थी। सभव है, अब भी वहा काम करनेवाले शक ही रहे हो। जो भी हो, माउ-दुन्ने शकद्वीपके कुछ भागपर अधिकार करके भी उसने अपनी तरहके घुमतू शकोंके उच्छेद करनेकी अवश्यकता नही समझी। उसके पुत्र ची-युइ (मृत्यु १६२ ई० पू०)ने शकोके साथ पिता जैसा वर्ताव नही करना चाहा और उसने १७२ ई० पू०में शकोके उच्छेदका काम शुरू किया। उसने तरिम्-उपत्यकामे बस गये शको (यू-ची)के राजाको मारकर उसकी खोपडीका मद्य-चपक बनाया। इस समयसे शको और हूणोका सघर्ष शुरू हुआ, और शकद्वीपके पूर्वी भागमें खलबली मच गई। शक अपने पुराने स्थानको छोडकर दक्खिनकी तरफ भागने लगे। दक्खिनकी तरफ भागनेवालोंमें सबसे पहले ये यू-ची, जिन्होने ई० पू० १३० में वाख्तर (वलख)मे ग्रीक-वाल्हीक राज्यको समाप्त कर अपने राज्यकी स्थापना की, और इस तरह हिंदुकुशतकका भूभाग शकोके हाथमें चला गया।

हूणोके दक्षिणी पडोसी चीनी उनसे तग आये हुये थे। हूण उन्हे दुधार गाय समझते थे, और चीनी किसान एव शिल्पी जो कुछ धन जमा करते, हूण सवार आक्रमण कर लूट ले जाते। जब हूणोका शकोसे भी सघर्ष हो गया, तो उनसे मिलकर एक साथ हूणोपर आक्रमण करनेके लिये चीनने अपने एक सेनापति और महापर्यटक चाङ-क्यान्को १३८ ई० पू०में शकोके पास दूत बनाकर भेजा। चाङ रास्तेमें हूणोके हाथमे पड गया और दस सालतक उनका वदी रहा। इस वक्त त्यान्-शान् और अल्ताई पर्वत-मालाओके बीच इली-उपत्यकामें वू-सुन् शक रहा करते थे। किन्ही-किन्ही विद्वानोका कहना है, कि वू-सुन् कुषाण शब्द हीका चीनी रूपान्तर है। जब वू-सुनोने १२८ ई० पू० में हूणोसे अपनेको स्वतत्र कर लिया, तो चाङ-क्यान्को मुक्ति मिली और वह फर्गानाके रास्ते सिर-तटपर खोकद नगरमें पहुचा। वह पहला चीनी यात्री था, जिसने इन देशो और निवासियोका सुदर वर्णन किया, जिसका पीछेके दूसरे चीनी यात्रियोने अनुकरण किया। चीनने यू-ची सरदारोंसे मिलकर उन्हें चीनके सहयोगसे पश्चिमकी तरफसे हूणोपर हमला करनेके लिये प्रेरित किया। लेकिन यू-ची इसके लिये तैयार नही हुये। उन्हें अपना देश छोडे ३० सालसे अधिक हो गया था। यद्यपि वह अब भी सोग्द, तुषार और वाख्तरमें घुमतू जीवन ही बिता रहे थे, लेकिन उनके लिये नगरो और गावोंके रहनेवाले सोग्दी (ताजिक) सारी भोग-सामग्री जुटाते थे। यद्यपि चाङ शकोको हूणोके विरुद्ध नही कर सका, तो भी चीनने अपने ही बलपर एक विशाल सेना हूणोके विरुद्ध १२१ ई० पू०में उनकी भूमि (आधुनिक मगोलिया)पर भेजी। चीनियोकी भारी विजय हुई, लेकिन घुमतू जातियोपर विजय टिकाऊ नहीं हुआ करती। पीछे फिर हूण लूट मार करने लगे। लौटते वक्त चाङ-क्यान् फिर एक साल हूणोका वदी रहा। उसने चीन-सम्राट्से सारी बात सुनाते हुये जे-चुआनके रास्ते भारतसे सबध स्थापित करनेके लिये कहा। चीन-सम्राट्ने फिर उसे इली-उपत्यकाके वू-सुन् शकोके पास साथ मिलकर हूणोपर आक्रमण करनेकी बात करनेके लिये १२१ ई० पू०में भेजा।*

*देखो जिल्द १, हूण भी।

साथ-साथ यू-चियोंने भी अंतमें (चाङ-क्यान्) की मृत्युके दो वर्ष बाद) चीनकी अधीनता स्वीकार की। यही समय है, जब कि शक-राजाओंने चीनी उपाधि 'देवपुत्र' धारण की।

माउ-दुन्से परास्त यू-चियोंने लोबनोरके तटको छोड भागकर बाख्तरके ग्रीक-राज्यको हाथमें ले लिया था, लेकिन वह उतने हीसे संतुष्ट नहीं हुये। सीस्तान (उन्हींके नामसे शकस्तान) और बिलोचिस्तान होते ११० ई० पू०में सिंध पहुंचे, फिर धीरे-धीरे समुद्र-तटके भागपर अधिकार करते ई० पू० ८० में तक्षशिला और गांधारके स्वामी बन गये, और उन्होंने एक शताब्दीसे जड जमाये यवन-राज्यका उच्छेद कर दिया। इससे पहले ८७ ई० पू० में यू-ची काबुलको भी ले चुके थे। यु-ची सरदार मोग भारतका प्रथम शक राजा था। ११०-८०ई०तक गुजरातभी शकोंके हाथमें चला गया था। ६० ई० पू०तक मथुरामें भी शक-छत्रपी कायम हो गई। मोग (Maus) की मृत्यु ५८ ई० पू०में हुई, जिसके बाद शकोंके भिन्न-भिन्न कबीलोंमें झगडा हो गया और राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। तब शकोंके कुषाण कबीलेके यवगू (सरदार) कजुल कद्फिस् I की शक्ति बढी। उसने हिंदुकुश पार हो बाख्तर और तुषारपर भी अधिकार कर लिया। कजुलके पुत्र वीम कद्फिस् द्वितीय (७५-७८ ई०), ने सारे उत्तर भारतको जीता। इसीका पुत्र 'वसीलेउस् वसीलेउन् कनेर् कोस्' (राजाधिराज कनिष्क) हुआ जिसने शक-संवत् चलाया और ७८-१०३ ईसवीतक राज किया। इसके सिक्के अराल-समुद्रसे बिहार तक मिलते हैं। शकोंमें यह सबसे बडा राजा था। इसे बौद्ध धर्ममें नये तौरसे दीक्षित होनेकी अवश्यकता नहीं थी, क्योंकि यू-ची शकोंकी मूल-भूमि तरिम्-उपत्यकामें ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमें ही बौद्ध धर्म पहुंच चुका था और शक ही नहीं, हूण सामन्तोंमें भी बौद्ध धर्मके माननेवाले थे।

शकोंके भिन्न-भिन्न कबीले ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमें इस प्रकार थे—(१) लोब्नोरके आसपास यू-ची, (२) इली-उपत्यकामें वू-सुन्, (३) इस्सिक्कुल् झीलके तटपर सइ-वाङ, (४) ऊपरी तरिम्-उपत्यकामें—जहां आजकल काशगर्-यारकन्द् नगर हैं,—में कस या खश, (५) मध्य सिर-दरिया तटपर शक, (६) सिर-दरियाके मुहाने तथा अरालके पश्चिमी किनारेपर भी मसगेत (महाशक) रहते थे। जान पडता है, काशगरवाले कश नामी शकोंका ही एक उपनिवेश काश्मीरमें था, जिससे उसका यह नाम पडा। उधर हूण और चीनका द्वन्द्व जारी रहा। अंतमें ईसवी प्रथम शताब्दीके मध्यमें हूण चीनके प्रहारसे जर्जर होकर उसकी अधीनता स्वीकार करनेको मजबूर हुए। इसपर सारा हूण-जन उत्तरी और दक्षिणी दो भागोंमें विभक्त हो गया। यद्यपि विभाजन अधीनता स्वीकार करनेके विरुद्ध ही हुआ था, किन्तु स्वतंत्रतावादियोंके लिए वह बहुत महंगा पडा। चीन और अपने भाइयोंकी सम्मिलित शक्तिके सामने अब निर्बल हो गये और ७३ ई०में उत्तरी हूणोंका पश्चिमाभिमुख महा-अभियान आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे शकद्वीपसे शकोंको हटाकर वह उनकी जगह लेने लगे, लेकिन सिर-दरियाके दक्खिन उन्होंने हाथ नहीं बढाया। ३७० ई० में अराल और काम्पियन-तटपर रहनेवाले आलानोंका उन्होंने ध्वंस किया—यह भी शकोंका ही एक कबीला था। ३७५ ई०में अपने सरदार बालामेरके नेतृत्वमें दोन-तटपर पहुंच उन्होंने माओस्त-गत (जाट)को छिन्न-भिन्न किया। फिर द्नियेपर पहुंच गाथोंका ध्वंस किया। आगे भी उनका प्रभुत्व बढता ही गया और हूण-सरदार अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०)के समय मध्य-दुनाइ (डैन्यूब) तक हूणोंके हाथमें आ गया।

मंगोलियासे आरम्भ हो मध्य-दुनाइतक पहुंच गये पौने पांच सौ सालके इस भयंकर हूण-तूफानने सबसे अधिक क्षति शकोंको पहुंचाई, और वोल्गासे गोबीतकके शकद्वीपको शकोंसे खाली करवा लिया। सबसे आखिरमें शकद्वीप छोडकर भागनेवाले शक हेफ्ताल थे, जिन्हें गलतीसे भारतमें हूण और पश्चिममें श्वेत-हूण कहा जाता है। ३६० ई०में हूणोंके एक कबीले अवार (ज्वेन्-ज्वेन्)ने शक्ति सम्पन्न हो पश्चिमकी ओर बढना शुरू किया। इन्हींके प्रहारसे उत्पीडित हो हेफ्ताल भगे और धीरे-धीरे ४२५ ई०में उन्होंने सारे मध्य-एसियाको सिर-दरियासे हिन्दुकुशतक लेकर अपने पूर्ववर्ती कुषाण-राज्यका उच्छेद किया। इनका संगठन कबीलाशाही था, किन्तु सरदारोंका बहुत प्रभाव था। किदार इनका प्रथम महान् नेता था। इसीके नामसे

हेफ्तालोका दूसरा नाम किदारीय हूण पडा। यहा यह स्पष्ट हो जाता है कि हेफ्तालो (किदारियो) का नाम हूण इसीलिये पडा, कि वह हूणोके शासनमें चिरनिवासके वाद वहासे भागकर आये थे। किदारका पुत्र ४५५ ई०में श्वेत हूणोका राजा था। सभवत इसीका पुत्र तोरमान था, जिसने ग्वालियर और सागर-दमोहतकको जीत लिया था। ५०२ ई०में इसकी मृत्युके वाद इसका पुत्र मिहिरकुल राजा वना। मिहिर मित्र(सूर्य)का ही प्राचीन फारसी रूप है मित्र—मित्र> मिथ्र> मिहिर। पीछे शकद्वीपियोके प्रयाससे मिहिर भी उसी प्रकार शुद्ध सस्कृत वन गया, जिस प्रकार शक-द्वीपीय ब्राह्मण शुद्ध भारतीय ब्राह्मण वन गये। कुल—यह हूणी शब्द गुल या ग्युलका अपभ्रंश है, जिसका अर्थ राजकुमार या दास होता है। तोरमान ने ग्वालियरमें सूर्य-मन्दिर वनवाया था, यह उसके शिलालेखसे पता चलता है। मिहिरकुलने मगधपर आक्रमण किया था, किन्तु मगधराज वालादित्यने उसे वुरी तरह हराया। ५३२-३३ ई०के आसपास मालवाके विजयी राजा यशोधर्मा विक्रमादित्यने मिहिरकुलको हराकर उसे कश्मीरकी ओर खदेड दिया। हूण नामसे प्रसिद्ध, किन्तु वस्तुत शक मिहिरकुल अतिम शक राजा था, जिसे भारतीय इतिहास जानता है। हेफ्तालोकी राजधानी वुखाराके पास वरख्शा में थी, जहा हालकी खुदाईमें कितने ही भारतीय शैलीपर वने भित्तिचित्र मिले है।

हमने शकोको ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीके आरम्भमें गोवीसे कारपाथीय-पर्वतमालातक अपने महाशकद्वीपमे वसे देखा। फिर उनकी एक शाखा यू-चीको मध्य-एसिया, तुपार, सीस्तान, सिन्ध, कावुल, तक्षशिला होते मथुरा और उज्जैनतक फैलते देखा। फिर यू-चीकी एक शाखा कुपाणोको कनिष्कके रूपमें अराल-समुद्रसे विहारतक राज करते पाया और अतमे फिर तोरमान और मिहिरकुलके रूपमे शकद्वीपसे सवसे पश्चात् निकले 'श्वेतहूण' नामधारी शकोको मगधतक धावा मारते देखा। शकोके सवसे प्रवल जातीय देवता सूर्य थे। मिहिरकुल (सूर्यदास')का नाम भी इसी वातका परिचायक है।

शकद्वीपीय ब्राह्मणोके उद्गमके वारेमे यह सर्वमान्य कथा है, कि वह शकद्वीपसे आये और सूर्यपूजा उनका मुख्य कार्य था। शकद्वीप कहा था, इसे ऊपरके वर्णनसे अच्छी तरह समझा जा सकता है—अर्थात् वह गोवीसे वोल्गा और, पश्चिम कारपाथियातक फैला शकोका-मुख्य निवास था। दक्षिणकी ओर भारततक भागकर आनेवाले शक पूर्वीय-शकद्वीपके थे।

शकद्वीपी ब्राह्मण और सूर्य-पूजाका घनिष्ठ सम्बन्ध है, इससे शक-द्वीपियोकी सारी परम्परा सहमत है। शकद्वीपी-प्रधानतावाले इलाकोमें अधिकाश सूर्य-मूर्तिया द्विभुज मिलती है। इनके कन्धेके ऊपर सिरकी दोनो तरफ सूर्यमुखीके फूल कुछ असाधारणसे जरूर मालूम होते हैं, क्योकि भारतीय परम्परामें सूर्यमुखी फूलका कोई स्थान नही। लेकिन आश्चर्यकी वात तो यह है, कि सूर्यके पैरोमें दो वूट होते है—वूटधारी हिन्दू देवता दूसरा कोई नही, और, यह वूट भी घुटनोतक पहुचते है। इसकी व्याख्या करते पडित लोग कहते हैं, सूर्यके चरणके दर्शनसे आदमीका अमगल होता है, इसीलिये सूर्यके पैरोको ढाक दिया गया है। परन्तु उसे वूटसे ही ढाकनेकी क्या अवश्यकता? और, फिर वही वूट हमें मथुरासे मिली कनिष्क-प्रतिमाके पैरोमें दिखाई पडता है। यहा कनिष्क, शक, सूर्यमूर्ति और सूर्यपूजक शकद्वीपी ब्राह्मणोका पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। साथ ही यह भी जानना कुतूहलजनक होगा, कि आज भी रूसी लोग जाडोमें उसी तरहके घुटनेतकके वूटो को पहनते है, जिन्हे कि हम कनिष्क और सूर्यकी प्रतिमाओंके पैरोमें देखते है।

इस समानताका क्या कारण है? इसके लिये आइये, हम शकद्वीपमे रह गये शकोकी सुध ले। हूणोने वोल्गासे पूरवके शकद्वीपको शकोसे खाली करा लिया और वोल्गासे मध्य-दुनाइ (डैन्युव) तक भी वह अपनी एक चौडी पट्टी खीचते चले गये। इन्ही हूणोके वशज तुर्क, उइगुर और पीछे मगोल हुए। फिर ५५७ ई०के लगभग तुर्कोने मध्य-एसियासे अवारो (हेफ्तालो)का राज्य खतमकर वहा अपना अधिकार जमाया और पीछे तो मध्य-एसियामें न शकोका नाम रहा, न आर्यवशी साग्दो (थोडेसे ताजिकोको छोडकर) का।

लेकिन, वोल्गासे पश्चिमकी कहानी दूसरी है। दोन और द्नियेपर तटपर जिन जातियोंका हूणोने ध्वस किया, वह शक-वशकी थी। ईसाकी ४थी-५वी सदीमे-मध्य द्नियेपर और क्रिमिया-मे शकोके बहुत-से पुराने नगर-ध्वस मिले है। यद्यपि उत्तरके घने जगलोमें अब भी घुमन्तू शक पशुपाल रहा करते थे, लेकिन द्नियेपर और क्रिमियाके तटपर वह गावो और शहरोमे रहने लगे थे, और ग्रीक सभ्यतासे बहुत प्रभावित हुए थे। हूणोने अपनी ध्वस-लीला मचाकर सभ्यताकी इस प्रगतिमें बाधा डाली। ६ठी सदीमें हम पश्चिमी शकोके कबीलोमे वेन्द (वेनेत्), अन्त, स्लाव, और सरमात् नामके कबीले पाते है। अकदमिक् देर्झाविनके अनुसार इनमे पहले तीन एक ही जातिके नाम थे, और सरमात् भी शकोकी ही जाति थी। आगे चलकर पश्चिमी शकद्वीपके ये सारे शक स्लावके नामसे मशहूर हुए।

शकोकी पुरानी नगरियोकी खुदाईमे निकली चीजें भी बतलाती है, कि आधुनिक स्लाव उन्हीके वशज है। शकोके रेखाचित्र, दीवार और पात्रोके अलकरण अभीतक उक्रइनके गावोमे प्रचलित है। उनके आभूषण रूसी किसानोमें तबतक प्रचलित थे, जबतक कि उनमे पश्चिमी सभ्यता भीतरतक नहीं घुस गई। उनके गोखरूवाले सोनेके कुडल और हसलिया तो आजके भारतमे भी देखी जाती है। लेकिन जैसा कि ऊपर कहा, हूणोंके तूफानने काकेशस और कालासागर तटसे शकोका सबध तोड दिया। अब वहा हूण कबीले पशु-चारण करने लगे। यही हूण कबीले पीछे पेचेनगा अथवा वोल्गा-तटपर बोल्गार, काकेशसके पास खजार (काजार)आदि नामसे मशहूर हुए। हूण-उपद्रवके कारण शक अपनी दक्षिणी भूमिसे ही वचित नही हुए, बल्कि उनका उन्मुक्त सभ्यता-प्रवाह भी रुद्ध हो गया, और एक बार फिर वे केवल घुमन्तू-जीवन वितानेपर मजबूर हुए। इतना ही नही, इसी परिवर्तनके साथ शक या स्किफ नाम भी इतिहाससे लुप्त हो गया और आगे हम अन्त, वेन्द नामवाले कबीलोको पाते है। अरबोके प्रभावसे जिस तरह ८वी शताब्दीमें पहुचते-पहुचते सारा ईरान और मध्य-एसिया मुसलमान हो गया, इसी तरह खजार, बुल्गार आदि हूण-जातियोने भी इस्लाम स्वीकार किया (बुल्गार आजकल चुवाश के नामसे पुकारे जाते है, उनका आजकलके बुल्गारिया देशसे कोई सबध नही। बुलगारियावाले स्लाव है, जब कि वोल्गावाले बुल्गार हूण-वशज)।

अभी भी रूसी ईसाई नही हुए थे, और बहुतसे पुराने देवी-देवताओको मानते थे, जिनमे सूर्य सबसे बडा देवता था। सूर्यके एक खास पर्वपर वे लोग घीमें पके लाल चीले उसी तरह खाते थे, जैसे बिहारमें आज भी कार्तिककी सूर्य-षष्ठीके दिन लाल ठकुआ खाया जाता है। आज भी यद्यपि उस दिन रूसी लोग मीठे चीले खाते है, पर अब उनमे पुराने धर्मका माननेवाला कोई नही है। ९वी शताब्दीके एक अरब पर्यटकने वोल्गाके किनारे खरीद-बेचके लिये आये रूसियोको देखा था। वहा एक रूसी मर गया। लोगोने लकडीकी चिता बनाई और पतिके साथ पत्नी भी सती हो गई।

आगे चलकर इन सभी शक कबीलोका स्लाव (स्क्लाव <शकल) या श्रव नाम पड गया। जिस तरह हमारे यहा उपनिषद्-कालमे सोमश्रवा आदि श्रवान्त नाम बहुत होते थे, उसी तरह स्लावोमें स्लावान्त (स्वेत-स्लाव, व्याचिस्लाव) नाम अब भी होते है—मोलोतोफका नाम व्याचिस्लाव है। स्लाव जाति आज दो भागोमे विभक्त है—(१) पश्चिमी स्लाव जिनमे पोल, चेक और स्लावक है, और (२) पूर्वी स्लाव, जो दक्षिणी और उत्तरी दो भागोमें विभक्त है। दक्षिणी स्लावोमें बुलगर, सर्ब और क्रोवात (क्रोत) सम्मिलित है और उत्तरी स्लावोमे रूसी, उक्रइनी तथा बेलोरूसी है। पोल-चेक् भाषाओका रूसीसे उतना ही अतर है, जितना अवधीका बगलासे। दोनो एक-दूसरेकी भाषाको कुछ कठिनाईसे समझ सकते है। रूसी-उक्रइनी भाषाए भोजपुरी और मैथिलीकी तरहकी है, और रूसी-बुलगारीमे उतना ही अतर है, जितना मैथिली और अवधीमें। सारे पूर्वी स्लाव एक-दूसरेकी भाषा समझ सकते है। पश्चिमी स्लावोके उच्चारणमें अतर कुछ अधिक हो गया है, जिससे वे एक-दूसरेकी भाषाको सुगमतासे नही समझ सकते।

स्लावोमें सबसे पहले बुलगारोने सभ्यतासे सबध स्थापित किया और ग्रीसके ईसाइयोके सपर्क में आ ईसाई-धर्मको स्वीकार किया। छठी-सातवीं सदीमें हुगर या मजार (अत्तिलाके हूणोके वशज)

के वलको तोडनेमे बुलगारोने बहुत काम किया, और वे बढते-बढते ग्रीसके पडोसी बन गये । यद्यपि उन्होंने ग्रीसको सास लेनेकी फुर्सत दी, किन्तु स्वय काटेकी तरह चुभने लगे । लडाकू घुमतुओको पालतू बनानेके लिये संस्कृतिमें उन्नत धर्म बहुत अच्छे साधन होते हैं । बुलगारोपर भी ग्रीसने वही शस्त्र चलाया । स्लाव जातियोका सबसे प्राचीन लिखित साहित्य बल्गारियाकी भाषामे ही मिलता है । उस वक्त पश्चिममें ईसाई-धर्म रोम और ग्रीक दो सम्प्रदायोमें विभक्त हो चुका था । दोनो सम्प्रदायो-में जहा क्रिया-कलाप और मतमतातरका कितना ही अंतर था, वहा दोनोकी लिपिया भी अलग थी । लिपिहीन असभ्य जातिया जिस चर्च (सम्प्रदाय)से धर्मकी दीक्षा लेती, उसीकी लिपिको स्वीकार करती है । स्लाव-जातियोमें पोल, चेक, स्लावक यानी सारे पश्चिमी स्लाव तथा पूर्वी स्लावोमे क्रोवात रोमन-चर्च द्वारा ईसाई बनाये गये, इसलिये उन्होंने रोमन-लिपि स्वीकार की । वाकीने ग्रीक चर्चका अनुयायी बन ग्रीक-लिपि स्वीकार की ।

बुलगारियाके ईसाई होनेका यह मतलब नही था, कि सारे पूर्वी स्लाव भी जल्दी ही ईसाई बन गये । स्लावो की मूल भूमिमें अब भी पुराने देवी-देवताओका जोर था । ये उस समय बहुत लडाके भी थे । हूणी कबीलोका जब-जब प्रहार ग्रीसपर होता, तो वह स्लावोसे मदद मागता । क्रिमियामें ग्रीक लोगो की बहुत-सी व्यापारिक बस्तिया थी और यहा हर वक्त उनका हूण-वशज पेचेनगोसे झगडा रहता था । अभी इन स्लावोमे राजा नही थे, कबीलाशाहीका जोर था । सारा काम जन-सभा (वेचे) कबीले का जिर्गा करता था । लेकिन जैसे-जैसे बाहरके राज्योसे लडने-भिडने और लूट-पाटकी प्रवृत्ति बढती गई, वैसे-ही-वैसे सरदारोका अधिकार बढा ।

९वी सदीके अन्तमे एक स्वीडिश राजकुमार रूरिक् आकर उनका शासक बन गया । रूरिक्के पुत्र ओलेग (९११ ई०) और ईगर (९११-५७ ई०)ने अपनी लडाकू प्रजाको खूब सगठित किया और दूर-दूरतक विजय-यात्राए की । ईगरने काकेशसके खजारोके खान और ग्रीस (विजन्तीन)के सम्राट दोनोको नतमस्तक किया । ग्रीकोने उसे एक किला और बहुत सा धन क्षतिपूर्तिके तौरपर दिया, साथ ही सन्धिद्वारा ईगरको वचनबद्ध किया, कि तुर्की घुमतुओके आक्रमणके वक्त वह ग्रीक-साम्राज्यकी रक्षा करेगा । ईगरने अपनी शक्ति बहुत बढाई । उसका पडोसियोपर बहुत आतक रहा । ईगर के पुत्र स्व्यातोस्लाव (९५७-७३ ई०)ने पिताकी शक्तिको और आगे बढाया । उसने हूणी बुलगारोके बोल्गा-तटवर्ती तथा उनके सबधी चेर्कासोके कूबन-तटीय नगरोको लूटा, और अपने पूर्वज शकोके खोये काला-सागर-तटपर फिर प्रभुत्व जमाते हुए किमेफको एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानीमें परिणत कर दिया । स्व्यातोस्लाव जब विजय-यात्रा करते (९६९-७१-ई०) दूनाइ (डैन्युब)के तटपर पहुचा, तो ग्रीस-सम्राट् घबडा उठा और उसने कालासागरके उत्तरी तटके बयाबानके निवासी पेचेनेगा घुमतुओ और दुनाइ-तटवर्ती बुलगारोको मिलाकर स्व्यातोस्लावका मुकाबला करना चाहा । लेकिन ग्रीसको स्व्यातोस्लावके साथ सधि करनेको मजबूर होना पडा । स्व्यातोस्लाव अपने समयका महान विजेता था । ग्रीक ऐतिहासिक उसके आकार-प्रकारके बारेमे कहते हैं—'उसका आकार मझोला, नाक उभडी हुई, डाढी भरी और लबी, शिर बिलकुल नगा, सिर्फ एक ओर कुछ छुटा बाल (शिखा) था, जो कि कुलीनताका परिचायक था । उसकी गर्दन मोटी, कधे चौडे, सर्वांग सतुलित शरीर । उसके एक कानमें दो मोतियो और पद्मराग-जटित सोनेका कुडल था ।" स्व्यातोस्लावने विजयीके तौरपर गर्वके साथ विजन्तिन (ग्रीस)की राजधानी कन्स्तन्तिनोपोलमें प्रवेश किया । लौटनेपर पेचेनेगा घुमन्तुओने दनिप्रेपरके जल-प्रपातोके पास धोकेसे उसे मार डाला ।

स्व्यातोस्लावका पुत्र ब्लादिमिर (९७८–१०१५ ई०) पिताकी ही तरह बहादुर निकला और नतमस्तक शत्रुओको उसने शिर उठानेका मौका नही दिया । उसने अपने राज्यका विस्तार पश्चिममें बाल्तिक समुद्रतक किया और पोलो तथा लिथुवानियोके कितने ही नगरोको छीन लिया । विजन्तिन्का तो वह सरक्षक ही था । जब ग्रीक सेनाने विद्रोह किया, तो सम्राट्की गुहारपर ब्लादिमिर ने जाकर उसे दबाया । सम्राट्ने पारितोषिकमें अपनी बहनसे ब्लादिमिरका ब्याह कर दिया । विजन्तिन् दरबारकी तडक-भडक, उसके शामती विलास, कला, सगीतने ब्लादिमिरको मुग्ध कर दिया, और

९८८ ई०मे उसने ईसाई-धर्म स्वीकार करनेका निश्चय किया। उसने अपनी प्रजाको हुक्म दिया, कि कल द्नियेपरजो धर्माभि-षेक (बप्तिस्मा)के लिये नही पहुचेगा, वह मेरी कृपाका पात्र नही होगा। किसकी मजाल थी, राजाकी कृपाका अभाजन हो। इस तरह प्राय सारी राजधानी एक दिनमे ईसाई बन गई। ईसाई-पुरोहितोने परामर्श दिया और व्लादिमिरकी आज्ञासे कियेफके सारे देवालय स्लावोके पुराने देवताओसे खाली हो गये। लेकिन इसका यह अर्थ नही, कि लोगोने अपने हजारो वर्षोंसे चले आये धर्म और देवताओको आसानीसे छोड दिया। उसके लिये कितनी ही जगह विद्रोह हुए।

कियेफके रूसोने इस तरह अपनी प्राचीन सस्कृतिकी बहुतसी निधियोको खोया। पुराने देवताओकी मूर्तियो और पूजा-प्रकारोके साथ उनके हजारो शब्द भी लुप्त हो गये। लेकिन अब उसकी जगह उन्हें एक उन्नत सस्कृतिसे सपर्क स्थापित करनेका मौका मिला, अपनी भाषाके लिए लिपि मिली, ग्रीक-साहित्य, ग्रीक-कलाके सीखनेका रास्ता खुल गया।

१०१५ ई०मे व्लादिमिरके मरनेपर उसके लडकोमें झगडा हो गया और तीन पुश्तोके परिश्रमसे एकताबद्ध कियेफ-रूस-राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। इसमे सदेह नही, कि प्राचीन परम्परासे अत्यत विच्छेद होना भी इसका एक कारण हुआ। ग्यारहवी सदीसे रूस बहुतसे राजुलोमें विभक्त हो गया। तेरहवी सदीके मध्यमे पहुचनेतक छिङ्गिस् खानके मगोल उसके पौत्र बातूखानके नेतृत्वमें पहुचे और फिर प्राय डेढ सौ वर्षोंतक रूसियोको शिर उठानेका मौका नही मिला। हा, मगोलोके शक्तिशाली शासनसे लाभ उठाकर मास्कोके राजुलने अपने प्रभावको बढाया—मगोलखानके कृपापात्रके तौरपर ही। तेमूरने दिल्ली लूटने (१३९८ई०)से तीन साल पहले जब (१३९५ई०) मास्कोके पास तकका धावा करके मगोल-खान तोक्तामिशकी शक्तिको क्षीण कर दिया, तो मास्कोके महाराजुलोको रूसको एकताबद्ध करनेका मौका मिला। यह काम वासिली प्रथम (१३८९-१४२५ई०)के कालमें आरम्भ हुआ, और उसे पाचवे उत्तराधिकारी तथा प्रपौत्र महाराजुल (पीछे जार) क्रूर ईवान चतुर्थ (१५३३-ई०) ने पूर्णताको पहुचाया। उसके पुत्र फेदोर (१५८४-९८ई०) के साथ रूरिक-वशकी समाप्ति हो जाती है। लेकिन, वह अपने कर्तव्यको पूरा कर चुका था। अब रूसी रियासतें मिलकर एक ही नही हो गई थी, बल्कि रूसी राज्य कास्पियनके तटपर पहुचकर वोल्गा और उरालसे भी पूरबकी तरफ पैर बढा चुका था। यह अकबरका समय था, जबकि भारतने भी देशकी एकतामे कम सफलता नही प्राप्त की थी।

हमने देखा, हूणोके प्रहारके बावजूद भी पश्चिमी शक-द्वीपके रहनेवाले शक एक बार जगलो की तरफ भागे। फिर स्लावोके रूपमें प्रगट हो अतमें आधुनिक रूसियो और दूसरी स्लाव जातियोकी शक्लमें अस्तित्वमे आये, और आज भी मौजूद है। शकद्वीपसे भागकर पूर्वी शक दूसरे कितने ही देशोमे बिखरने भारतके शकद्वीपी ब्राह्मणो, कितने ही राजपूतो, गूजरो, जाटो आदिके रूपमें हिन्दुओमें मिल गये। इस सारे इतिहासपर गौर करनेसे स्पष्ट हो जायेगा, कि क्यो रूसी भाषासे सस्कृतका इतना घनिष्ठ सबध है। यह इसीलिए कि रूसी उन्हीं शकोके वशज है, जिनके भाई-बद आर्य पुराने कालमे आकर हिन्दुस्तान और ईरानमे बस गये, और उनका पारस्परिक सबध वही नही टूट गया, बल्कि सहस्राब्दिया बीतनेपर फिर बहुतसे शक हिन्दुस्तानमें आये। सस्कृत और रूसी भाषाओमें जो घनिष्ठ सबध मालूम होता है, वह उसी पुराने सबध ही के कारण।

स्लाव भाषा—रूसी भाषाकी सस्कृतसे कितनी समीपता है, इसके लिये शब्दकोष और शब्द-विश्लेषणको देनेसे पहिले यहा दो शब्द कहनेकी अवश्यकता है। यह एक मान्यता बन गई है, कि लिथुवानी भाषा सस्कृतके बहुत समीप है। रामानद और कबीरके समयतक लिथुवानी लोग ईसाई धर्ममें दीक्षित न हो अपने प्राचीन धर्मपर आरूढ थे, उनके कितने ही देवता वैदिक देवताओमेंसे थे। उनकी भाषाका विकास भी बहुत मद गतिसे हुआ था। किन्तु इसका यह अर्थ नही, कि लियुवानी भाषा रूसीकी अपेक्षा सस्कृतके बहुत समीप है। हिन्दी-युरोपीय भाषाओके 'शतम्' और 'केन्तम्' दोनो भाषा-समुदायोमे स्लाव-भाषायें सस्कृत और ईरानीके साथ 'शतम्' वशकी है, जब कि लियुवानीकी समीपता 'केन्तम'

से ह। उच्चारण भी उसके रूसीकी अपेक्षा सस्कृतसे कितन दूर हैं, इसे निम्न तालिका मे देखिये —

लियुवानी	प्राचीन स्लाव	रूसी	सस्कृत
केतुरि	चेतुरे	चेतीरे	चतुर्
केत्विर्तम्	चेत्वरेते	चेत्वेर्त	चतुर्थ
व्रोतेरेलिम्	ब्राते	ब्रात्	मातृ
मोते	माति	मात्	मातृ
गुवम्	झिवे्	झिव्	जीव

रूसी भाषा स्लाव-भाषा-वशकी पूर्वी शाखाकी एक भाषा है। पूर्वी स्लाव-भाषायें है—रूसी, बोलगारी और सेर्वी। उक्रइनी और वेलोरूसी भाषायें यद्यपि अब स्वतत्र साहित्यिक भाषायें हैं, किन्तु वह रूसीके अत्यत समीप हैं। इसलिये तालिकामें उनके शब्द पृथक् नही दिये जा रहे हैं। पूर्वी और पश्चिमी स्लाव-भाषाओंका आपसका सम्बन्ध निम्न तालिकासे मालूम होगा —

पूर्वी स्लाव				पश्चिमी स्लाव		
प्राचीन स्लाव	रूसी	बोलगारी	सेर्वी	स्लोवानी	चेकी	पोली
वेल् (या)	विल्	विल्	वियेळ्	वेल्	वेलु	इयलु
दिम् (धूम)	दिम्	दिम्	दिम्	दिम्	दूम्	दूम्
द्न् (दिन)	देन्	देन्	दन	दन	देन्	जिएन्
स्न (सूनु)	सोन,सिन्	सन्	सन	सन्ज	सेन्	सेन्
म्लेको (दूध)	मोलोको	म्लाकु	म्यिेको	म्लेको	म्लेको	म्लेको
ग्लवा (गल)	गोलोवा	ग्लवा	ग्लवा	ग्लव	ग्लव	ग्लोवा
स्म्रत् (मृत्यु)	स्मेर्त्	स्म्रत्	स्म्रत्	स्म्र्त	स्म्र्त्	श्मिएरे
मृत्व (मृत्यु)	मेर्त्विइ	म्रत्व्	म्रत्	म्रतेव	म्रत्नु	मर्त्वु
प्ल.न् (पूर्ण)	पोल्न	प्लन्	पुन्	पोल्न	[illegible]	पेल्नु
पन् (पच)	प्यत्	पेत्	पेत्	पेत्	पे[illegible]	पिएत्स
रउका (कर)	रुका	(रका)	रुका	रोका	रुका	रेका
मेझ्दा (मध्य)	मेझा	मेझ्दा	मेह	मेया	मेज़े	झिएउजा
ज़ेम्ल्य् (जमा)	ज़ेम्ल्या	ज़ेम्या	ज़ेम्ला	ज़ेम्ल्या	ज़ेमे	जिएमिए

हम रूसी शब्दो* को नागरी अक्षरमें दे रहे है, जिसमें कुछ नये सकेतोकी अवश्यकता है। ओ का उच्चारण रूसीमें कभी ओ और कभी अ होता है, किन्तु सन्देह उत्पन्न हो जानेके डर से हमने यहा उच्चारणका विचार न कर लिखे जानेवाले अक्षर (ओ)का ध्यान रखा है। रूसी स्वरोंका ह्रस्व-दीर्घ उच्चारण ऐच्छिक है, इसलिए नागरी स्वरोंमें ह्रस्व-दीर्घको ध्रुव नहीं समझना चाहिये। रूसीमें उदात्त सकेत लगानेकी प्रथा है, जिससे उच्चारणमें ही अन्तर नही हो जाता, बल्कि अर्थमे भी भेद हो जाता है। हम यहा उदात्त सकेतको विस्तार और दुरूहताके कारण नही दे सके।

*रूसी शब्दोंके सग्रहमें हमने व क म्युलर, स क बोयानुस्के कोश (रुस्को-आंग्लिइ-स्किइ स्लोवार, मास्को १९३५) के ६०,००० शब्द, तथा व फ गेतश्ताइनके कोश (मास्को १९३८)का उपयोग किया है।

परिशिष्ट (१)

रूसी शब्द-कोश

(१) शब्द

अ—अ (निवार्य)
अजर्त—आज्वाल, ताप
आ—आह!
वेग्—वेग (दौड)
वेगत्—वेजति (दौडना)
वेग्लेत्स—वेगक (भगेलू)
वेग्स्त्व—वेगकत्व (भगेलुत्व)
वेगून्—वेगकत्व (भागून, भग्ग्)
वेजात्—वेजति (भागना)
वेज्—विना (विना)
वेज्-वोज्निक्—वि-भगक (आनीश्वरवादी)
वेज्-वेत्रेन्निइ—वि-वातीय (विना (वायुका)
वेज्-वोलोसिइ—वि-वाल, (केशरहित)
वेज्-ग्लविइ—वि-गल (शिर बिना)
वेज्-गोलोविइ-वि-ग्रीव (शिर विना)
वेज्-दोज्दिए—विदुह (वर्षा बिना)
वेज्-दिम्निइ—वि-धूम (धूम-रहित)
वेज्-जिज्नेविइ—वि-न्न-जीवन (जीव विना)
वेज्-नोसिइ—वि-नास, (नासिका विना)
वेजो—वि (विना)
वेज्-रोगिइ—विशृंग (शृंग बिना)
वेर्योजा—भुर्ज (वृक्ष)
वेस्—वि (विना)
वेस्-प्रि-मेस्नि—वि-प्र-मिश्रण (मिश्रण-रहित)

वेस्-सेर्देच्नोस्त्—वि-हृदयत्व (हृदयहीनता, श्रद्-हीनत्व)
वेस्-स्लाविये—वि-श्रवी (कीर्त्तिहीन)
वेस्-स्लावेस्निइ—वि-श्रवणक (वाणी-हीन)
वेस्-स्मेर्तिये—वि-मर्यता (अमरत्व)
वेस्-स्नेज्निइ—वि-स्नेही (हिम-हीन), स्नेह-स्नेज्ञ (वर्फ)
वेस्-सो-ज्नातेल्-निइ—वि-स-ज्ञातर् (चेतना-हीन)
वेस्-सोन्नित्सा—वि-स्वप्नता (निद्राहीनता)
वेस्-स्त्राश्निइ—वि-त्रास्नु (त्रास-हीनता)
विर्युक—वृक (भेडिया)
विस्—द्विस् (फिरसे)
वित्—भिद् (तोडना, ताडना)
वित्स्या—भिद् (ताडना, भिडना)
वत्यो—भिद् (तोडना, भिडना)
व्लागो—भर्ग (अच्छा, आशी)
व्लागो-दात्—भर्गदाति (आशीर्दान)
व्लागो-देतेल्.—भर्गदात (उपकारक)
व्लागो-देयानिये—भर्गदान (आशीदान)
व्लागोइ—भर्ग (अच्छा, सुखी, उपयोगी)
व्लागो-प्रियात्निइ—भर्गप्रियत्नु, (प्रिय)
व्लागो-रोद्निइ—भर्गरोध्नु (सुजात)

व्लागो-स्लोवेनिये—र्गभ-श्रवण! (मगल सुनना, आशीर्वचन)
व्लागो-त्वोरीतेल्—भर्गत्वष्टर् (उपकारक)
वोग्—भग (भगवान्)
वोगातेइ—भगत (धनी पुरुष)
वोगात्स्त्वो—भगत्व (धनाढ्यता)
वोगाच्—भगक (धनाढ्य)
वोगी-निया—भगिनी (भगवती)
वोगो-मातेर्.—भगमातर् (भगवान्‌की मा, मरियम)
वोगो-पोची-निये भग-पूजा
वोगो-रोदित्सा—भग-रोहिणी (मरियम)
वोगो-स्लाविये—भगश्रवणा (भगवान्‌की भक्ति, धर्म-शास्त्र)
वोगो-स्लुज़ेनिये—भगश्रूपणा (भगवान्‌की सेवा)
वोज़े मोइ—भग मे! (मेरे भगवान्)
वोज़ेस्त्वो—भगत्व (भगवत्-तत्त्व)
वोक्—पक्ष, वक्षशरीर-पार्श्व)
वोकोवाइ—पक्षत (शरीर-पार्श्वसे)
वोकोम्—पक्षेण (शरीरपार्श्वसे)
वोले—भूरि (वहु, अधिक)
वोलेये—भूरि (वहु अधिक)
वोल्लात्—वोल्लति (वोलना)
वोल्तोव्न्या—वोल्लति (वोलना)
वोल्तिइ—वोल्लन्त (वोलक्कड)
वोल्तून्—वोलतू (वोलक्कड)
वोल्शे—भरिश (वहुत—सा) कुस्क्या
वोल्शेविक—भरिक (वहुमतिक)

वोल्शिइ–भूरिश (अधिकतर)
वोल् शे–भूरिश (अधिकतर)
वोल् शिन्स्त्वो–भूरित्व (बहुमत)
वोल् शोइ–भूरिश (बहुतर)
वोयाज्न–भयान (भय, आतक)
ब्रात्–भातृ
ब्रतानिये–भ्रातृना (भाई बनना)
ब्रात्वा–भ्रातक (भैयवा)
ब्रात्स्किइ–भ्रातृकीय (भाई-चारा)
ब्रात् –भरति, हरति (लेजाना)
ब्रात् स्या–भ(ह)रति (ले जाया जाना)
ब्रेम्या–भर (भार)
ब्रोवि–भ्रू (भौं)
ब्रोव् –भ्रू (भौं)
ब्रोदित–ब्रवेति (उठना, हटाना)
ब्रोम(सि)त् (स्या)–भ्रशति (फेंकना, फिकाना)
बुदुचि–भूति (होना)
बुदुश्चिइ–भविष्यति (होने वाला)
बुद् -भूति (हो सकना)
विवात् –भवति (हो जाना)
विक्–वृष (बैल)
विलो–भूत (भइल, भोजपुरी)
वित् –भूति (होना)
वाम्–वा (तुमको)
वामि–वा (तुम्हारे द्वारा)
वम्–व (तुम, तुम्हारा)
वश्–व
व्-वेगात् –वि-वेजति (भीतर भागना)
व्-वेदेनिये–वि-वेदना (निवे (दना, नमिका)
व्-वेस्ति–विविशति (भीतर लाना)
व्-व्यज्गात्.-वि-वयति (भीतर वाधना)
व-ग्लुबइ–वि-गर्भ (हृदयमें)
व-दलेके–विदीर्घ (दूर)
व्-द्वोये–द्वि (दो वार)
व्दोवो–विधवा
व्दोव्स्त्वो–विधवात्व
वेदत् –वेत्ति (जनाना)
वेदेनिये–वेदना (जाना, विद्या)
वेलीकान्–वरक (वडका)
वेलीकिइ–वरक (वडा)
वेलिचाइशिइ–वरेण्य (सवसे वडा)
वेर्नुत्–वर्तयति (लौटाना)
वेर्तेत् –वर्तयति (घुमाना)
वेर्तूश्का–वर्तक, (लट्टू, परेता)
वेसेन्निह–वासतिक
वेस्ना–वमत
वेस् –स्वे (सारे)
वेतेर–वात (हवा)
वेतेरोक्–वातक (हवा)
व्ज्-वेगात्–विवेजति (दौड जाना)
वेशात् –विशति (लटकना)
वयात्–वयति (फूक लगाना, फटकना, वनना)
विवात्.–भवति (वो, दीर्घ जीयो)
विद्–विदि (देखना, प्रकट होना)
विदेनिये–वेदना (दर्शन)
वीदेत् –वेत्ति (देखना)
विद्नेत स्या–वेद्दते (दिखाई देना)
व्-लेतात् –वि-डयति (उडना)
व्-ल्युवित् –वि-लोभति (प्रेम में पडना)
व्-ल्युवन्योन्नोम्त्–विलोभित्व (प्रेम-परायणता)
व्-ल्युव्ल्यत्–विलोभति (प्रेम करना)
व्-ल्यपत् स्या–वि-लिपति (चिपकाना)
व्-माजत्–विमापति (चिपकाना)
व्-मेशातेल–विमिश्रयितर् (बीचमें पडनेवाला)
व्-मेशिवात् –विमिश्रति (मिलाना)
व्-नीज़–वि-नीचै (नीचे)
व्-नीज़ु–नीचैस् (नीचेकी जगह)
व्-निकात्- (निगाह करना)
व्-नोवे- वि-नव (नया)
व्-नोसित् –वि-नेपति (भीतर लाना)
व्-नुत्रि–अन्तरीय (भीतरमें)
वोदा–उद (पानी)
वोदापाद्–उदपात
वोद्निक–उदनिक (जलकल)
वोज़्–वाह (गाडीका वोझ)
वोज़् –वुदित् } वि-बोधिति
वोज़्-बुज़्दात् } (जगाना, तेज करना, वढाना)
वोज़्-वेदेनिये–विबोधना (यशोगान करना)
वोज़्-व्रात् –वर्तति (लौटाना)
वोज़्-विसित्–वि-विशति (उठाना)
वोज़ित्–वहति, वोहित (लेजाना)
वोज़्का–वाहक (गाडी ढोना)
वोज़ोक्–वाहक (ढोनेवाले)
वोज़्रोपित् –वि-हवति (पुकारना)
वोज़्-रादोवात स्या–वि-राधति (आनन्द मनाना)
वोल्–वैल (बैल)
वोल्क–वृक (भेडिया)
वोलोस्–-वाल (केश)
वोलचोनोक–वृक शाव (भेडियेका बच्चा)
वोप्रोस्–वि-प्रश्न (प्रश्न)
वो-प्रोसित् } वि-पृच्छति
वो-प्रोसान् } (पूछना)
वोर–हार (चोर)
वोसेम् –अष्ट (आठ)
वोसेम-न-देस्यत्–अष्टादश (अठारह)
वोसेम-देस्यत–अशीति. (अस्सी)

वोम्-पोल्नित्–विपूर्णयति (अदर भरना)
वोस्-सेदात्.—वि-सीदति (बैठना)
वोस्-स्तवात्–वि-स्थाति (विद्रोह में उठ खडा होना)
वोस्-ख्वलेनिये–वि-स्वरति (प्रशसा करना)
वोत्–वत् (यहा, हा)
व्-पदात् –विपतति (गिरना)
व्-पिवत्.–विपिवति (पीना)
व्-प्लाव्. - वि-प्लाव (तैरना)
व्-प्लिवात्.-वि-प्लवति, -(भीतर तैरना, नौयात्रा करना)
व्-पोल्ने- वि-पूर्ण (पूर्णतया, सारा)
व्रात्.–भ(ह)रति (लेटना)
व्-रेज़ात्.–विरेजति (रेज़ीदन्-फारसी)
व्-रेज़क–वि-रेजक (काटना, भीतरी काट)
व्-सदीत्–विशातयति (भीतर कुतरना)
व्-साद्निक–वि-सादनिक (घोडे पर बैठने वाला, सवार)
व्स्यो–स्वे (सारे)
व्स्-क्रिचात्.–वि-क्रोशति (चिल्लाना)
व्-स्लुख्–वि-श्रू (जोरसे बोलना)
व्-स्लूश्(इव)त्.स्या–वि-श्रूपति (सुनना)
व्स् -पाचेइवात्–विपाययति
व्स्-पोइत् (पिलाना)
व्स्-प्लि (वा) त्.–विप्लवति (उतराना, तिरना)
व्स्-पो-म्नित्.–विप्र-मनुति (सोचना, स्मरण करना)
व्–स्तवानिये-स्थापना (उठना)
व्-स्ताव्का–वि-स्थापका (अदर रखना)
७२

व-स्तव्ल्यात्–वि-स्थापयति (भीतर डालना)
व्स्-व्याखिवात्.–वि-श्वासयति (हिलाना)
व्-तिकात् –वि-टीकति (टिकाना भीतर डालना)
व्-शि(वा) त्-वि-सीव्यति (सीना)
वि–व (तुम
वि-वेगात् वि-वेजति (दौडना)
वि-वेजात्
वि-विवात्.–वि-भवति (मार गिराना)
वि-बिरात्.–वि-वरति (चुनना)
वि-बोर–वि-वर (चुनाव)
वि-बोर्का-विवरका (चुनना)
वि-ब्रासिवात्–वि-भ्र शयति (फेक देना)
वि-ब्रोसित्–वि-भ्र शति (फेंक देना)
वि-वारिवात्. -वि-बालति (उबालना)
वि-वेदिवात्.–वि-विदति (पा-जाना)
वि-वेज़्ति } –वि-वहनि (बाहर
वि-वोजित् } ले जाना)
वि-व्यजात्.–वि-बधति (बाधना, गूथना)
वि-इग्रात्.–वि-क्रीडति (जोतना, खेलना)
वि-गोवारिवात् –वि-गवति (बोलना)
वि-दवित् –वि-दावति (दाबना)
वि-दिरात् –वि-दारयति (विदा-रना, फाड़ना)
वि-ज़ितात् –वि-छिनत्ति (काटना)
वि-ज़ोव् –वि-हवि (पुकारना)
वि-कज़ात् –वि-काशवति खिलाना)
वि -कपिवात्–वि-कल्पि (खोदना)
वि-क्लिकात्.–वि-किलकति (चिल्लाना)

वि-मिरानिये.–वि-मरण (मरना)
वि-नुदित्.–विनोदयति (जोर-डालना)
वि-पाद्–वि-पात (भीतर डालना घुसेडना)
वि-पदेनिये–वि-पतना (गिरना)
वि-पिलिवानिये–वि-पीडना (चीरना)
वि-पिसात्–वि-पिंशति
वि-पिसिवात्– ,, (लिखना)
वि-पोल्नेनिये–वि-पूर्णना (पूरना)
वि-रेज़ेनिये–वि-राजना (प्रकाशन)
वि-रुगात् –(रिगाना, गाली-देना, चिढाना)
वि-स्लुशात्.–वि-श्रूषति (खूब सुनना)
वि-स्तवका-वि. स्थापका (प्रदर्शन)
वि-स्तुपात् –विस्तोति (बोलना)
वि-सुशिवात्–वि-शुष्यति (सुखाना)
वि-सिपात् स्या–वि-स्वपिति (खूब सोना)
वि-सिखात्.–वि-शुष्यति (सूखना)
वि-तिरात्.–वि-तिरति (झाडना पोछना)
वि-त्योचिपात्- वि-तक्षति (आकार काटना)
वि-तोपित्-वितपति (गर्मकरना)
वि-त्यसात्-वि श्वासयति (हिला देना)
वि- श्रिखात्–तृप
वित्.–भिद् (काट गिराना)
वि-त्यनुत्स्या–वि-तनोति (फैलाना)
वि-व्ज़ेनिक्–श्रि -श्रावनिक'
वि-उचान् (शिक्षित)

वि-चितात् –वि-चिंतयति (पढना)
वि-श्चुपात् –वि-छुवति (छूना)
व्यज न्का–वचका (बोझवावना)
व्यजात् –वचति (वावना)
गदाल्का–गदका (भाग्य भाखना)
गदानिये–गदना (भाग्यभाखना)
गलेरा } -(गली, गलियारा)
गलेर्का }
गर् –ज्वर (जलन)
गल्-स्तुक्–गल-ववनी (टाई)
ग्दे–कुत्र (कहा)
गेइ–हे (सबोधनार्थ)
गिर्या- गुरु (भार)
ग्लवा–गल (शिर)
ग्लवाग्–गलक (सरदार)
ग्लोतात् –गिलति (निगलना)
ग्लोत्का–गल (कठ)
ग्लुवीना–गर्भीणा (गहराई)
ग्लुवोकिइ–गर्भिक, गभीरक (गहरा)
गोवोर् (गवार्)–गवति (वोलना)
गोवोरित् (गवरित्)–गवति (वोलना)
गोव्यादिना (गव्यादिना)–गव्यादनीय (गोमास)
गोलोवा (गलवा)–गल (शिर)
गोलोम्-गलक–(स्वर)
गोलिइ–नग्न (नगल)
गोरा (गरा)–गिरि (पहाड)
गोरेल्का ज्वरक (ज्वालक, वर्नर)
गोरेनिये (गरेनिये)–ज्वरणा (जलना)
गोर्ल्यो (गर्ल्यो)–गल्ल (कठ)
गोर्किइ (गर्की)–ज्वर (जलन-वाला, कडआ)
गोर्युचिये (गर्युचिये) ज्वरक (जारन, ईवन)
गोर्याचिइ (गर्याची)–ज्वलक (गर्म)
ग्रब्योज्–ग्राभ (ह)क (लूटनेवाला)

ग्रबीतेल्–गृभी (ही) तर् (लुटक)
ग्रेत् –ज्वलन (गर्माना, तपाना
ग्रीवा–ग्रीवा (गर्दन)
ग्रोजित्.–कुत्यति (धमकाना)
गुवा –जिह्वा (ओठ)
गुवित् –कुभति (नष्ट करना)
दयात्.–दाति (देता)
दविलो. (दावल, भार, दवाव)
दवित् – (दावत, दवाना)
दव्का–दावक (दवाव)
दालेये–दूर
दाल्योकिइ–दीर्घक (दूरका)
दालेको–दीर्घक (दूरका)
दाल् –दीर्घ (दूर)
दाल् नि–दीर्घ (दूर)
दाल्नो-विदेनिये–दीर्घवेदना (दूरदर्शक)
दाम्का–दामा (राजा, रुद्र-दामा)
दन्निइ–दान (भेंट, दिया)
दात्.–दान (भेंट)
दार्–दान
दरेनिये–दान (दान देना)
दरोवानिये–दान (दान देना)
दरोवोइ–दान (भेंट)
दात्.–दाति (देन)
दावा–दान
दयानिये–देय
द्वा–द्वौ (दो)
द्व-द्त्सत् –द्वाविंशति (वीस)
द्वाज्दि–द्वि (दोवार)
द्वेन्ना-द्त्सत्.–द्वादश (वारह)
द्वेर्नोइ–द्वारीय (द्वार)
द्वेर् –द्वार
द्वे-स्ति–द्विशत (दो सौ)
द्विगात् –वेगति (चलना)
द्वोये–द्वौ (दो)
द्वोइत्.–द्वितयति (दूना करना)
द्वोइका–द्विक (जोडा)
द्वोर्–द्वार (आगन)
द्वोर्त्स–द्वारक (महल, दर्वार)

द्वोर्यानि–द्वारीय (राजावावू)
द्वोयु-रोद्निइ–द्विरोवनीय (चचेरा भाई)
देवेर्–देवर
देवा–देवी (कुमारी)
देवित्सा–देविका (कन्या, चेरी)
देव्का–देविका (कन्या, षोडशी, श्यामा)
देवोमातेर्.–देवमातर् (कुमारी मरियम्)
देवोच्का–देविका (वच्ची)
देवस्त्वेन्निक्–देवत्विक (ब्रम्हचारी)
देव्चका–देविका (कन्या)
देवुश्का–देविका (कन्या, कुमारी)
देव्चाता–देविका (कन्या, कुमारी)
देद्–पितामह (दादा)
देद्,-प्रे-,–प्रपितामह (परदादा)
देदुश्का–पितामह (दादा)
देदुश्का,-प्रे-,–प्रपितामह (परदादा)
देका-द्निक–दश-दिनक
देलत्.–दारयति (करना)
देलित्.–दरति (विभाजित करना)
देलो–द्र, धर, वर्म (काम)
देन्.–दिन
देरेवा–दारु (वृक्ष)
देरेवत्सो–दारुक (छोटा वृक्ष)
देर्झाव्–दृ हति (शक्ति)
देर्झानिये–दृ हना (रोकना, थामना)
देर्झातेल् –दृ हितर् (थामने-वाला)
देर्झात्.–दृ हति (थामना)
देस्यत् –दश (दस)
देस्यातिइ–दशम (दसवा)
देस्यत्का–दशक (दस)
दे (वा) त् –धाति (रखना)
देयातेल् –धातर् (कर्ता, चाकर)
द्लिन्ना–दीर्घ (लवाई)
द्लिन्निइ–दीर्घ (लवा)

दनेव्निक्–दैनिक (डायरी)
दो–तावत् (तक)
दो-वावित्.–तावद् भवति (जोडना)
दो-वूदित्.–तावद्-बुध्यति (जागना)
दो-गोवोर् (दगवार्)–(समझौता)
दोदात्.–ददाति (जोडना, बढाना)
दो-एदात्.–तावद् अत्ति (खा डालना)
दोएनिये–दुहति (दूहना)
दोझ्द–दुहति (बरसना)
दो-झि (वा) त्.–तावद् जीवति (तवतक जीना)
दो-ज्वोनित्.स्या–तावद् ध्वनति (द्वार पर ध्वनि करना)
दो-ज्न (वा) त्स्या.–तावद् जानाति (जानना, चाहना)
दोइत्.–दु हति (दूहना)
दोइनिक्–दुहनिक (दूहनीवर्तन)
दो-कज्ञात्.–तावत् काशति (प्रकाशना)
दो-कुदा–कुत्र यावत् (कहातक)
दोल्गिइ–दीर्घ (दूर)
दोलेये–द्राघीय (दीर्घतर)
दोलिना (दलिना)–द्रोणी, (उपत्यका, दून)
दोल्-शे–द्राघीयस् (दूरतर)
दोम्–दम (घर)
दोम्ना–धूमक (भट्ठा)
दोच्.(का)–दुहितर् (पुत्री)
द्राज्नित्–त्रासयति (चिढाना)
दात्.–दरति (चीरना)
द्रात्.स्या–दरति (लडना)
द्रोवा–दारु (ईंधन, लकडी)
दुनुत् –द्नोति (फूकना, हवा देना)
दुर्नेत.–दुर् नीति (कुरूप होना)
दुर्-नोइ–दुर् (बुरा)

दिम्–धूम (धुआ)
दिरा–दरी (छिद्र, चीर)
द्याद्या–दादा (चाचा, मामा)
द्यादेन् का–(चाचा, मामा)
एदा–अद (भोजन)
एदोक् (एदक्)–आदक (भक्षक)
एझे-गोदनिक्–एकवार्षिक (वर्षपत्र)
एझे-देकाद्नो–एकैकदशदिन (प्रतिदशाह)
एझे-नेदेल् निक्–एकैकसप्ताह (साप्ताहिक)
एस्त् –अस्ति (है)
एस्त्–अश्नोति (खाना)
एस्म्.–अस्मि (मैं हू)
एस्तेस्त्वो–अस्तित्व, (स्वभाव,) द्रव्य)
एस्त्. -अत्ति (खाना)
एखात्. -एजति (हटाना, चढना, जाना)
झार–ज्वल (जलन, तपन)
झारा–ज्वाला (तपन, गर्म)
झरेनिये–ज्वलन (जारना, भूजना, तलना)
झरेन्निइ–ज्वलित (जारी, भुनी, तली)
झार्किइ–ज्वालक (गरम, मुस्तैद)
झे –हि (किंतु, और)
झे वानिये–चर्वणा (चवाना, जेंवना)
झ्योल्तेन्किइ–हरितक (पीला-सा)
झे ल्तेत्–हरितामति (पीला करना)
झे ल्तोक्–हरितक (अडे का पीला)
झे ल्तिइ–हरित (पीला, जर्द)
झे ना–जनि (स्त्री)
झे नित्.(स्या)–जनीयति (व्याहना)
झे नित्वा.–जनितव्य (व्याह)
झे निख्–जनिक (वर)
झे योन्का–जनिका (वधू)

झे नोल्युविविइ -जनिलोभी (स्त्रीप्रेमी)
झे न्स्किइ–जनिका (स्त्री)
झे नुस्का–जनिका (मेहरिया)
झे न्श्चिना–जनि (स्त्री)
झे र्त्वा–ज्वलत्व (यज्ञ)
झे च्.–दह, धक्ष, दाग (जलाना)
झि व्–जीव (जीता, जिंदा),
झिवितेल् निइ- जीवयितर् (जीता)
झिवोइ–जीव (सजीव)
झिवोत्नये–जीवन्त (प्राणी, पशु),
झिवुश्चिइ–जीवक (जीता)
झिव्चिक्–जीवन (जीवटवाला)
झिव्-योम–जीवक (जीता)
झिज्न–जीवन (जिंदगी)
झिलित्स–जीवस्थ (निवास-स्थान)
झिलोइ–जीवल (वसल, वसा)
झितेल्–जीवितर् (रहनेवाला)
झितिये–जीवन (जीवन-चरित्र, जीवन)
झित्.–जीवति-(जीना, रहना)
ज़ा–पश्चात्, आ, ता (बाद, आगे)
ज़ा–विरात्.–आ-भ (ह) रति (ले जाना)
ज़ा-वोल्तात् –आ-वोल्लति (वहुत बोलना)
ज़ा-व्रसिवात् –आ-भ्रशति (फेंकना)
ज़ा-व्रात् (स्या)–आभ (ह) रति (ले जाना)
ज़ा-व्रोसत्.–आ-भ्रशति (फेंकना)
ज़ा-विवात् आ–भवति (भूलना)
ज़ा-वर्नोइ–आ-वारित (उबाला)
ज़ा-वेदेनये–आ-वेदना (उच्च-शिक्षणालय)
ज़ा-वेर्तेत्.(स्या)–आवर्तति (घूमना, फिरकना)
ज़ा-विदेत्.–आ-विदति (देखना)
ज़ा-वाज़ित्–आ-वहति (ले जाना, खींच ले जाना)

ज़ा-व्यक्का–आ-वचक (वचन)
ज़ा-व्रज़िवात्–आ-वचति (वाचना)
ज़ा-गार्–आ-ज्वल (धूपमें जला)
ज़ा-ग्लावियें–अ-गल (उपाधि, पदवी)
ज़ा-गोरानियें–आ-ज्वालन (आतपतप्त, भरा)
ज़ा-गोरेन्निइ–आ-ज्वल (धूपमे जला)
ज़ा-दाचा–आ-दान (समस्या)
ज़ा-दोनोक्–आदत्त, आवत्त (रखना, निधि)
ज़ा-द्रात्–आ-दरति (भेडियेका भेड खा जाना)
ज़ा-एदात्–पश्चाद् अत्ति (पीछे खाना)
ज़ा-झिवानियें–पश्चाद् जीवन (घाव पूरना)
ज़ा-झिवो–यावद्जीव (जीवन-भर)
ज़ा-झिगाल्का–जाज्वलक (सिगरेट जलावक)
ज़ा-काज्–आ-काश (आज्ञा)
ज़ा-कोनो-दातेल्–०धातर्—दातर्(विधाता, दाता, कर्ता)
ज़ाल्–शाल, हाल
ज़ाला–शाला
ज़ा-लिज़ात्–जालिहति (चाटना)
ज़ानिमात्–आ-जानाति (पढना)
ज़ा-मेर्त–मृत (मरा)
ज़ा-मोरित्–मरति (भूखा मरना)
ज़ा-ओब्लाचुनिद–आ-अभ्रक (बादलोंके परे)
ज़ा-पद्–पश्चात्-पद (पश्चिम)
ज़ापिस्–आपिश (अभिलेख)
ज़ा-प्रो-वेद्–आ-प्र-वेद (आज्ञा, विधि)

ज़ा-प्रोस्–आपृच्छ (पूछना)
ज़ा-रेज़्(इव)ात्–आ-रिहति, आ-रेतति (हनन करना)
ज़ा-रेकात् स्या–आ-रेचति (त्यागना)
ज़ा-रुबात्–आ-रुभति (कुठार से गढना)
ज़ा-सद्का–आ-सीदना(बैठाना, बीज बोना)
ज़ा-स्वेतित्–आ-श्वेतति (प्रकाश करना)
ज़ा-सुख़ा–सूखा (जल-अकाल, सूखापन)
ज़ा-सुखेन्नेइ–सुखान(सूख गया)
ज़ा-सिखात्–आ-शोषयति (सूख जाना)
ज़ा-तप्लिवात्–आतपति (आग जलाना)
ज़ा-तेम्नेनियें–आ-तमना (अंधकार करना)
ज़ा-तिखात्–आतुष्यति (शांत होना)
ज़ा-तोपित्–तोपना (जहाज डुबाना)
ज़ा-तुमानित् स्या–आ-धूमति (अंधेरा होना)
ज़ा-तुखानियें–आ-तोषयति (बुझाना)
ज़ा-शिपेत्–आ-शपति (सिसकारना)
ज़्वानिइ–ध्वनीय(पुकारा गया)
ज़्वेनेत्, ज़्वोनित्–ध्वनति (घंटी बजाना)
ज़्वोनोक्–ध्वनक (घंटी)
ज़ेवात्–जभति(जम्हाई लेना)
ज़ेलेनेत्–हरितायति (हरित होना)
ज़ेलेन्नोइ–हिरण्य (हरा)
ज़ेलेनिइ–हरित (हरा)
ज़ेलेन्–हरित (जर्द, हरा)
ज़ेम्लेवेदेनियें–ज्मावेदना (भूविद्या, भू-गोल)
ज़ेम्ल्या–ज्मा (भूमि)

ज़ेम्ल्याक–ज्माक (देश-भाई)
ज़ेम्ल्यानिका, ज़ेम्ल्यान्का–ज्मालिका (स्ट्राबरी)
ज़ेम्नोवोद्निइ–ज्मोदकीय (जल-थलका जीव)
ज़ेम्नोइ–ज्मानीय (भूमीय)
ज़िमा–हिम (जाडाऋतु)
ज़िमोवानियें, ज़िमोव्का–हिमानना (जाडा बिताना)
ज़िमोइ–हिमीय(जाडा,हेमन्त)
ज़्लातो–हरित (सोना)
ज़्लित्–हेनि (सिहराना, चिढना)
ज़्नाकवात्–जानाति(जानना)
ज़्नाक–ज्ञानक (चिह्न)
ज़्नाकोमित्–जानापेति (परिचय करना)
ज़्नाकोम्स्त्वो–जानकत्व (परिचय, ज्ञान)
ज़्नाकोमया–जानक (परिचय)
ज़्नामेनियें–जानना (चिह्न)
ज़्नामेनितोस्त्–ज्ञानित्व(प्रसिद्धि)
ज़्नामेनोवात्–जानापेति (दिखलाना, सिद्ध करना)
ज़्नात् निइ–ज्ञान (प्रसिद्ध)
ज़्नात्नोस्त्–जातीयत्व (कुलीनता, सामन्तता)
ज़्नातोक्–ज्ञाता(जज, विशेषज्ञ)
ज़्नात्–जानाति (जानना)
ज़्नाचेनिय–जानना (महत्व, अर्थ)
ज़्नाचितेल्–ज्ञातर् (जाननेवाला)
ज़्नाचितेल्नोस्त्–ज्ञातृत्व (महत्त्व)
ज़्नाचित्–जानाति (जानना, अर्थ लेना)
ज़ोव्–हव (पुकार, निमंत्रण)
ज़ोलोता–हरित, जर्द (सोना)
ज़ोलोतोइ–हरितीय(स्वर्ण-मुद्रा)
ज़ुब्–जिह्वा, जबान (दांत)
ज़ुबोक्–जिजक (छोटा दांत)
ज़्यात्–जामाता, दामाद

इ–च, अ (और, अपि)
इवो–इव (जैसे, लिये)
इगो–युग (जुआ)
इदृति -एति (जाना, आना)
इज़–अत्, अज् (से)
इज्-व्रानिये–आ-वरणा (चुनाव)
इज्-व्रात्.–आवरति (चुनना)
इज्-दवात्– (प्रकाशन)
इज् दानिये–(संस्करण)
इकात् –हिक्कति (हिचकियाना)
इस्-पोल्नेनिये–आपूर्णना (पूरा करना)
इस्-पोल्नितेल् –आ-पूर्णयितर् (पूरा करनेवाला)
इस्-प्राज़्नियॆ–अपराजयना (दोष, खाली करना)
इस्-प्राशिवात्.–आपृच्छति (मागना, पूछना)
इस्-स्यकात्.–··· (सेंकना, सुखा देना)
इस्-तोपित्.– ··(तोपना)
इतक्–इतिक (ऐसे, तैसे, और)
इत्ति–एति (जाना, चलना)
इख्– . (इसका)
क– (को, से, लिये, प्रति)
कज़ात् स्या-काश्यते (प्रकाशित होना, दिखाई पडना)
काक्-कथ (कैसे, जैसे, यथा)
ककोर्–कथ (किस भांतिका)
कनाव–खनुवा, कदन् (खाई)
करात्.–कारयति (दड देना, सासत देना)
केमु–केन (किसके द्वारा)
कोये–कहा (कहींपर)
कोझा–कोश (चमडा)
कोइ–क: (कौन)
कोमु (कमू)–कम् (किसको)
कोलेसो–चक्र, चर्खे (पहिया)
कपानिये–कापना (खोदना)
कोपित् (कपित्) -गोपायति (रक्षा)
कोरोचे–क्षुद्र, खुर्द (जटा)
कोचान्–गुच्छ (गोभी फूल)
क्रसित्–क्रपति (अलकार करना, रगना, चित्रित करना)
क्रस्नेत्.–कृ-णोति (लाल करना)
क्रस्त् –ग्रसति (चुराना)
क्रिचात् –क्रोशति (चिल्लाना)
क्रोव्.–कुभा (गुहा, छत, घर)
क्रोव् –क्रव्य (रुधिर)
क्रोइका–कृन्तन (काट डालना)
क्रोइत् –कृत् (कटाना)
क्रुग्–चक्र (चर्ख–फारसी),
गोल
क्रुझित्.स्या–चक्रीयते (चक्कर काटना)
क्रुझोक्–चक्रक (वृत्त)
क्रित्–कृनी (ढाकना)
क्तो–कतर (कोन)
कुब्रोक्–कुभक, कुप्पक (प्याला, गिलास)
कुव्शिइ–कूपिका (लोटा)
कुदा–कदा (कहा)
कुर्नका–कुर्नी
कुसात्–कुस (काटना)
कुचा–गुच्छा (समूह, ढेर)
कुचका–गुच्छक (छोटी ढेरी)
कुशात.–ग्रसति, घसति (खना)
लजित्–लघति (लाघना)
ल्योगकिइ- लघुक (हल्का, आसान)
लेग्को–लघुक (हल्का, आसान)
लेग्चे–लघीयस् (आसानतर)
लेझात्–लेटना
लेन्त्यइका -लेक (आलसी)
ल्योत्–डयन (उडन)
लेतात्–डयति (उडना)
लेतो–ऋतु (ग्रीष्म)
लिजानिये–(चाटना)
लिझात्.–लिहना (चाटना)
लिप् किइ–लेपकी (चिपकना, उलझना)
लिप्नुत्–लिंपति (लगाना, चिपकाना)
लोब्जानिये–लोभना (चूमना)
लोबिजात्–लोभति (चूमना)
लोवित् (ल्वित्) -लोभति (लुब्धक, फसाना, शिकार करना)
लोव्ल्या–लोभाना (शिकार करना)
लोवुश्का–लोभका (जाल, फसाव)
लोवचिइ–लोभिक, लुब्धक (शिकारी)
लोद्का–रोधका (नाव)
लोदि - रुद्र (लदभेसर, आलसी)
लोझित्. स्या—लोटत (लोटना, गिरना)
लोपन्स्या (लोप्नुत्)–लोपत (तोडना, फोडना)
लुच्—रोचि (किरण)
लुच्शे—रोचीय (बेहतर)
ल्युबितेल्—लोभितर् (कुत्ता शिकारी)
ल्युबित्—लोभति (प्यार करना)
ल्युबोव्—लोभ, लभ (प्यार)
ल्युबोव्निक्—लोभिक (प्रिय, प्रेमी)
ल्युब्याश्चिइ—लोभीय (प्रेमी)
ल्युद्—रोध (लोग, जनता)
माज़त् (माज़ुत्)—मापत (माखना, माजना)
मज़्न्या—मापना (तेल माखना, माजना)
मज्.—माप (माखना, माजना)
मस्लो—ममका (मक्खन)
मात्का—मातृका (माता)
मातुश्का—मातृका (माता)

म.त्.—मातृ (माता)
मखात्—महति, म्हिति (माखन, हिलाना)
म्योद्—मधु (शहद)
म्योद्वेद्—मध्वद (भालू)
मेद्निइ—(तावेका)
मेदोव्निक्—माध्वीक (अमृतीय, मधुर)
मदोत्—मधूक (अमृत, मदिरा)
मेद्—मधु (तावा)
मेझ्, मेझ्दु } —मध्य (बीचमें)
मेन्या—मे (मुझे)
मेरेत्—मरति (मरना)
म्योर्-त्विइ—मृत (मरा)
मेस्यत्स—मास (महीना चद्र)
मेतित्—मति (चिहुन करना, लक्ष्य करना)
मेशात्—मिश्रयति (मिश्रित करना)
मिगानिये—मलकाना
मीलोस्त्—मेल (कृपा, अनुकंपा)
मीलोच्का—मिलक (मेली, प्रिय)
मीलिइ—मेली (मधुर, दयालु)
म्ने—मे (मुझे)
म्नेनिये—मनन (विचार, मनन)
म्नित्—मनुते (सोचना)
म्नोगो—महा (बहुत, बडा)
म्नोइ, म्नोयु—मया (मेरे द्वारा)
मोगूवेस्त्—महत्त्व, महिष्ट (शक्ति)
मोगूचिइ—महान् (शक्तिशाली)
मोयो, मोइ—मे (मेरा)
मोइका—मोइत (भोजपुरी) (धोना)
मोल्निया (मल्निया)—विद्युत् (मेघकी)
मोलोत्—मर्दति (पीसना)
मोलोत्वा—मर्दन (दबना)
मोरित्—मरत (भूखे मरना, मारना)
मोचा—मुच (पेशाब)
मोचित्—मेहति (भिगोना, नम करना)
मूझ्—(मनुष्य, पति)
मुराव्येद—मूर (फारसी), चींटी भक्षक
मुखा—मक्षी, मगस् (फा०) (मक्खी)
मुश्का—मग्स (मक्खी)
मी—हम
मित्—मोइत् (धोना)
मिश्का—मूषक (चूहा)
मिश्—मूषक (चूहा)
म्यासो (म्यास)—मास
म्यत्.—मथति (मथना)
न—नि, परि (ऊपर, द्वार)
न-बेग्—निवेग (दौड, आक्रमण)
न-बेलो—न-अविल (परिशुद्ध साफ)
न-बोर-नि-हार (एकत्रित करना)
न-वेश् (इवात्)—नि-वेशयति (टागना)
न-विसात्.—निवेशयति (टागना)
न-वोजित्—नि वहति (ले आना ले जाना)
न-व्यज् (इव) ातू—निबधति (बाधना)
नगिशोम्, नगोइ } —नग्न (नगा)
नगोलो—नग्नल (नगा)
न गोवत् (रेत)—नि ज्वलति (जलना)
न-रेगो—नि गिरि (गिरि पर)
न-ग्रवित्—नि-गृभीति (लूट लेना)
नाद्—परि, उपरि (ऊपर)
ना-दोल्गो—नि-दीर्घ (चिर-कालसे)
ना-एखात्—नि-एषति (आना)
न-झिनात्—नि-छिनत्ति (फसल काटना)
न-काज्—नि-काश (शासन-पत्र, आज्ञा)
न-लगात्—नि-लगत (ऊपर रखना, लागू करना)
न-लेगात्—निलगत (आश्रित होना)
न-लेपित्—निर्लिपति (चिपकाना, लेपना)
नामि—न (हमारे द्वारा)
न-पदेनिये—निपातना (आक्रमण करना)
न-पेकात्—नि-पचति (पकाना, भूनना)
न-पिवात् स्या—नि-पिवति (पीना)
न-पिरात्—नि-पीडयति (दबाना)
ना-पितोक—निपीतक (पान)
न-पोकाज—नि-प्रकाश (दिखाने के लिये)
न-पोल्नेनिये—नि-पूर्णना (पूरा करना)
न-पोस्लेदोक् (न-पस्लेदक्)—नि-पश्चात्तन (पीछे, अतमें)
न-रोद्—नि-रोध (जनता)
नोस् (नस्)—नासिका, नासा
न-सादित्—नि-सादयति (रोपना)
न-सदात्—नि-सादयति (रोपना)
न-सेदानिये—निपीदका (बहुसख्यकोका बैठना)
न-सेद्का—निपीदका (बैठकी)
न-स्लिश्का—नि-श्रूपका (सुनना)
न-स्मेयात् स्या—निस्मयति (हसना)
न-स्तावित्—नि-स्थापयति (रखना)
ना-सुख—नि-शुष्क (सूखा)
नश्—न (हमारा)

ने–न (नही)
ने-ब्लागो-प्रियत्निइ–न-भर्ग-प्रियत्नु (अशुभ, अननुकूल)
ने-वेदेनिये–न-वेदना (अविद्या, अज्ञान)
ने-वीदल्–न-वित्त (अनदेखा, अद्भुत)
ने-ग्दा–नकुत्र (कही नही)
ने-पोच्तेनिये–न-पूजना (असम्मान)
ने-प्रियातेल्–नप्रियतर् (शत्रु, अमित्र)
ने-प्रियत्न–न-प्रिय (अप्रिय)
ने-प्रोवद्निक्–न-प्रबोधक (बिजली-रोधक)
ने-प्रोशेन्निइ–न-प्रश्नीय (विना पूछा)
ने-स-वेदुश्चिइ–न-सवेदीय (अज्ञ)
ने-सो-ज्नातेल्.–न-स-ज्ञातर् (अचेतन, अनभिज्ञ)
नेस्ति–नेपति (लेजाना, ढोना)
नेत् }
नेत्तो } –नेति (नही)
ने-उच्–अन्–अनूचान (अपठित)
ने-चेगो–न-कि (कुछ नही)
ने-याव्का–न-आयान (अप्रकाशन)
नि–न (नही)
नि-ग्दे–नकुत्र (कही नही)
निझइशिइ–नीचीयस् (बहुत छोटा, बहुत नीच)
निझे–नीचैस् (नीचे)
निझ्–नीच (सबसे नीचे)
निझ किइ–नीच (नीचे)
झनि निइ–नीचीय (नीचेका)
निज्–नीच (सबसे नीचे)
निज़ात्–नहति (बाधना)
निज़ीना–नीचीय (निम्नस्थान, नीचा)
निज़्किइ–नीचक (नीचा, छोटा, तुच्छ)
निज़ोस्त्.–नीचत्व (नीचता)
निज़्शिइ–नीचीयस् (बहुत नीचा)
नि-काक्–न कथ (किसी तरह नही)
नि-ककोइ–न क (कोई नही)
नि-कोग्दा–न कदा (कभी नही)
नि-क्तो–न क (कोई नही)
नि-कुदा–न कुत्र (कही नही)
निस्–निस् (नही)
निस्-पदात्.–नि-पतति (गिरना)
नो–नु (किंतु)
नोवेइशिइ–नवीयस् (नवीनतम)
नोवो (नवो)–नव (आधुनिक)
नोवोस्त्–नवत्व (समाचार)
नोगोत्–नख (नर)
नोस् (नस्)–नासा (नाक)
नोसिक–नासिका (नाक)
नोसितेल्–नेष्टर् (ले जानेवाला)
नोसित्.–नेपति (लेजाना, ढोना)
नोसो-रोग–नासा-शृग (गैंडा)
नोचेव्का–निशीयिका (रात को रहना)
नोच्.–निशा (रात)
नु–नु (सचमुच, हा, क्यो ?)
नुत्रो–अन्तर, अदर (फारसी) (भीतर)
ओ–अ (निषेध)
ओबा–उभौ (दोनो), अभि (उपसर्ग)
ओव्-वि-नितेल्–अभि-वि-नेतर् (अपराध लगानेवाला)
ओब्-वि-नित्–अभि-वि-नेति (दोषारोपण करने वाला)
ओव-विसात्.–अभि विशति (लटकाना)
ओबे–उभे (दोनो)
ओव्-एद्–अभि-अद (भोजन)
ओव्-झिगानिये–अभिजागरण (जगाना, बालना)
ओब्लक–अभ्रक, अब्र (फारसी) (बादल)
ओबो-रोना–अभि-रग (रक्षार्थ युद्ध)
ओबो-रोन्यत्.–अभि-रुजति (फटकारना, रिगाना, गाली देना)
ओब्-रुगात्.–अभि-रुजति (रिगाना)
ओब्-ससिवात्–अभि-चूषति (स्तन पीना)
ओब्-स्लुझिवात्–अभि-श्रूषति (सेवा करना)
ओवेन्–अवि (मेष, भेड़)
ओवचिइ–अविक (भेड़क)
ओव्का–अविका (भेड़ी)
ओग्ने–अग्नि (आग)
ओग्ने-विद्निइ–अग्निविध (आग-जैसा)
ओग्ने-स्लुझेनिये–अग्नि-श्रूषण (अग्नि-पूजा)
ओग्ने-तुशीतेल्–अग्नि-तोष्टर् (आग-बुझावक)
ओगो–अहो!
ओगोन्योक्–अग्निक (प्रकाश)
ओदिन् (अदिन्)–(एक)
ओद्नो–आदि (एक बार)
ओ-झिवात्–आ-जीवति (फिर जिलाना)
ओ-झोग्–आ-ज्योति (जलन)
ओझार–आज्वर, अजोर (जलाना)
ओको–अक्षि (आख)
ओलेन्.–हरिण
ओन्–एषत् }
ओना–एषा } यह
ओनो–एनत् }
ओ-पिवात् स्या–आ-पीयते (पी-पीकर अपनेको मारना)
ओप्यत् (अपेत्)–अपि

ओ-प्.यामेनिये–आ-पीवना (शराब पीना)
ओसादा–आ-साद (दुर्गन्ध करना)
ओ-स्वेतित्–आ-श्वेतति (प्रकाश करना)
ओ-स्लुशानिये–अवश्रूपणा (आज्ञा न मानना)
ओ-स्लिशात् स्या–अवश्रूयति (ठीक न सुनना)
ओ-स्मेनिवात्–आ-स्मयत (परिहास करना)
ओम्–अक्ष (धुरा)
ओस्मि-नोग्–अष्टनख (अठपैरा)
ओत्–आत् (से)
अत्-वेचात्–उद्-वचति (उत्तर देना)
ओत्-व्यज़ात्.–उद्-वयति (वचन खोलना)
ओत्-दानिये–उद्-दान (प्रति-दान)
ओ-त्योसिवात्–आ-तक्षति (गढना, पत्थर छाटना)
ओत्-झिवात्–अ-जीवति (मरजाना)
ओत्-कज़ात्.–प्रति-कथयति (इन्कार करना)
ओत्-कुदा (अत्-कुदा)–कुत (कहांसे)
ओत्-मिरानिये–उत-मरण (मर जाना)
ओतो–आत् (से)
ओत्-पदात्.–आ-पतति (गिर जाना)
ओत्-रज़ात्–आ-राजते (प्रतिबिंबन करना)
ओत् नोचित्–उत्-तीक्ष्णति (तेज करना)
ओत्-तुदा–तत (वहांसे)
ओख्–आह !
ओखोता–आखेट (शिकार)
ओचरोवानिये–आश्चर्य करना, जादूमें होना
ओचि–अक्षि (आंख)
पा–पाद (पग)
पदात्.–पतति (गिरना)
पदेनिये–पतना (गिरावट)
पाइ–पाद (भाग)
पल्का–फल्क (डंडा)
पार–बाष्पर (भाप)
परेनिये–परायणा (पलाना)
पास्तुव–पातुक (मेषपाल, चरवाहा)
पतेर्–पितर् (पिता)
पखात्–(जुती भूमि)
पेना–फेन
पेर्विइ–पूर्व (पहिला)
पेरे–प्र, परि, प्राग्
पेरे-विरा(त्रा)त्.–परि-भ(ह) रति (हटाना)
पेरे-वोज़ित्.–परिवहति
पेरे-व्यज़्का–परिवय
पेरे-ग्रिज़ात्–परि-ग्रसति (काट डालना)
पेरे-देल्–परिदार (पुनर्विभाजन)
पेरे-एदात्.–प्र-अत्ति (बहुत खाना)
पेरे-झिवानिये–परि-जीवना (अनुभव)
पेरे-झोग्–प्रजाग (बहुत गरमाना, दीप सजाना)
पेरे-लेज़ात्–प्र-ऋधते (ऊपर चढना)
पेरे-पइवात्–प्र-पिबति (पान-मत्त होना)
पेरे-पिवात्–प्र-पिबति (पान-मत्त होना)
पेरे-प्लिवात्–परि-प्लवति (तैर जाना)
पेरे-पोइत्–प्र-पिबति (पान-मत्त होना)
पेरे-पुत्ये–प्रपथ (चौरस्ता)
पेरे-रोदित्–प्र-रोहति (पुन-रुज्जीवन करना)
पेरे-रुबात्–प्र-रुभति (मारना, काटना)
पेरे-सीदेत्–प्रसीदति (बैठ जाना)
पेरो–पक्ष, पर (फारसी), पख (लेखनी)
पेचेनि(न्)ये–पचना (पकाना)
पेच्का–पचक (चूल्हा)
पेचुर्का–पचक (छोटा चूल्हा)
पेच्.–पच (भूनना, तलना, झुलसना)
पिव्नया–पिवनिया (मद्यशाला)
पीवा–पान (हलकी शराब)
पीला–पीडा (आरा)
पीलित्–पीडयति (चीरना)
पिसानिये–पिशना (लिखना)
पिसातेल्–पिशयितर् (लेखक)
पिसात्–पिशति (लिखना)
पित्–पीति (पीना)
प्लवानिये–प्लवना (तैराकी)
प्लाव(वि)त्.–प्लवति (तैरना)
प्लावेत्स्–प्लावक (तैराक)
प्लोद–फल (संतान)
पो–प्र, परि (द्वारा, ऊपर, भीतर, को)
पो-बेग–प्र-वेग (भागना)
पो-बेझात्–प्रवेजति (भागना)
पो-व्(वि)रात्–प्रभ(ह) रति (ले जाना)
पो-बुदीतेल्–प्र-बोधितर (भडकानेवाला)
पो-बुदीत्–प्र-बोधति (भड-काना, उठाना, उत्तेजित करना)
पो-वेदेनिये–प्र-वेदना (प्रवृत्ति, चाल-चलन)
पो-वेसित्–प्रविशति
पो-व्योर्त्तिवानिये–प्र-वर्त्तना (घुमाना)
पो-वोज़्का–प्रवहका (प्रवहण, यान)
पो-व्यज़्का–प्र-वयक (सिर बंद)

पो-गोलोव्निइ—प्र-गल (सरदार जेनरल)
पोद्—पद (अन्तर, नीचे)
पो-दवात् —प्रदाति (देना, भेंट देना)
पो-दारित् —प्रदाति (देना, भेंट देना)
पो-दारोक—प्रदारक (भेंट)
पो-दात् —प्रदाति (कर देना)
पो-दाचा—प्रदाक (देना, सेवा)
पोद्—वोद्नया—पद्-उदीय
पोद्-व्यज्का—पद्-बधक
पोद्-झारित् —पजारत (तलना)
पो-दिरात्—प्र-दरति (चीरना, फाडना)
पोद्-तच्चिवात् —प्र-तीक्ष्णति (तेज करना, धार लगाना)
पो-दुर्नेत् —प्रदुर्नेति (कुरूप होना)
पो-एज़्द्—प्र-एत् (ट्रेन)
पो-एज़िदत् —प्र-एति (चलना, फिरना)
पो-झार—प्रज्वार (आग लगना)
पो-झार्निइ—प्रज्वारनिक (आग-बुझावक)
पो-झिरात् —प्र-जीर्यति (खा डालना)
पो-ज़्योविवात्—प्र-जम्भति (जम्हाई लेते रहना)
पोजझे—प्रहि
पो-ज्न (वा) नियॆ—प्रजानना (ज्ञान, प्रज्ञान)
पोइत् —पिबति (पीना)
पो-इती—प्र-एति (जाना)
पो-काज़्—प्रकाश (दिखलाना)
पो-कज़ानियॆ—प्रकाशना (गवाही)
पो-कुशात् —कोशीदन् (फारसी—कोशिश करना, यत्न करना)
पोल्नेत् —पूर्णति (भरना, पूरा करना)
पोल्नो—पूर्ण (पूर्णतया, भरा)
पोल्नो-वोद्निइ—पूर्णोदिनी (गहरी नदी)
पोल्नोस्त् यु—पूर्णत्व (पूर्णता)
पोल्नोता—पूर्णता
पो-मज़ात् —प्र-माखत (तेल लगाना)
पो-माज़ोक्—प्र-मार्जक (झाड, ब्रुश)
पो-मेस्यच्नो—प्रतिमास
पो-नीझे—प्र-नीचै (कुछ नीचे)
पो-पदानियॆ—प्र-पतना (गिरना)
पो-प्लवोक्—प्रप्लावक (तिरनेवाला, काग्)
पो-पोइत् —प्र-पाययति (घोडो को पिलाना)
पो-पोइका—प्रपायिका (प्रपा, नौका)
पो-प्रोसित् —प्र-पृच्छति (पूछना)
पो-राझे नियॆ—पराजयना (पराजय)
पो-रझात् —पराजयत
पो-रेज़्—प्र-रिंह, रेज़ (फारसी-काटना, घायल करना)
पो-रोदा—प्ररोह (सतान, जाति, रुधिर)
पो-रोझ् दात् —प्र-रोहति (जन्म देना)
पो-सादित् —प्र-सादयति (बैठाना)
पो-सीदेत् —प्र-सीदति (थोडा बैठना)
पोस्ले—पश्चात्, पस् (फारसी)
पोस्लेद्निइ—पाश्चात्तन (पिछला)
पोस्ले-दोवातेल् —पश्चाद्-धावितर् (अनुगामी)
पो-स्लुशानियॆ—प्रश्रूषणा (आज्ञाकारिता, तपस्या)
पोस्-मेर्त् निइ—पश्चात्-मृत्यु (पोस्टमार्टम्)
पो-स्मेशित्—प्र-स्मयत (हसाना)
पो स्पात् —प्र-स्वपिति (थोड़ा सोना)
पो-स्तावित्—प्रस्तावयति (रखना, उपस्थित करना)
पो सुख़ु—प्र-शुष्क, खुश्क (फारसी,-सूखे मार्गसे)
पो-तुशानियॆ—प्र-तोपण (बुझाना)
पो-तुशित्—प्र-तुषति (बुझाना)
पोचितात् —पूजति (सम्मान करना)
पो-चिनित् —प्रचिनोति (मरम्मत करना)
पोच्तेन्निइ—पूजनीय (माननीय)
पो-शिव्का—प्र-सीव्यक (सिलाई)
प्र्—प्र
प्र— प्र (महा)
प्राविलो—प्रभृत्
प्रावितेल् —प्र-भवितर (शासक)
प्रावितेल् स्त्वो—प्र-भवितृत्व (सरकार, राज्य)
प्रावो—प्रभु (कानून, अधिकार)
प्रावो-वेद—प्रभु-वेद (कानूनदा)
प्र-देद् / प्र-देदुच्का } —परदादा
प्र-मातेर् —प्र-मातर् (जगन्माता)
प्र-रोदितेल् —प्र-रोधितर् (पुरुखा), वश-पिता,
प्रेदो—प्रति (सामने, सम्मुखे)
प्रेद् (पेरेद्)—प्रति, प्राग् (सम्मुख, सामने)
प्रे-दातेल्.—प्रति-धातर् (विश्वासघाती, देशद्रोही)
प्रेद्-वे (वि) देनियॆ—प्राग्वेदना (पहिले जानना, भविष्यदर्शिता)
प्रेद्-गोर् ये—प्रति-गिरि (पहाडको जड, सानु)
प्रेद्-सेदातेल्—प्र-सीदितर् (प्रेसीडेंट, प्रसीदन्त)

प्रेद्-स्कत्रानिये–प्राक्-कथना (भविष्यद्-वाणी)
प्रेद्-गदात्–प्राग्-गदति (भाखना, दूर-दर्शिता)
प्रेभ्द्दे–प्राग्दा (पूर्वत)
प्रि–प्र
प्रि-वेगात्–प्र-वेजति (लेजाना, करने जाना)
प्रि वेभात्–प्र-वेजति (दौडना)
प्रि-वोज्–प्र-वह (लाना)
प्रि–ज्नाक–प्र-ज्ञक (चिह्न, भूचन)
प्र-ज्नानिये–प्र-जानना (स्वीकारना)
प्रि–काज्–प्र-कय (आज्ञा)
प्रि-नदित्–प्र-नुदति
प्रि-न्यातिये–प्र-नीति (स्वीकार, स्वागत)
प्रि-पादोक्–प्र-पातक (आक्रमण)
प्रि-रोद–प्र-रोह (प्रकृति)
प्रि-रोस्त्–प्र-रोह (उगना, वढना)
प्रि-रुचात्–प्र-रोचति (पालतू वनाना)
प्रि सोस्का–प्र-चू (शो) षक (चूसनेवाला)
प्रिसिलात्.–प्रेषयति
प्रि-त्यनुत्– प्र-तनोति (तानना)
प्रि-चितानिये–प्र-चितना (शोक करना)
प्रियातेल्–प्रियतर (मित्र)
प्रियत्निइ–प्रियत्नु (प्रिय)
प्रो–प्र (लिये, के)
प्रोवेग्–प्रवेग (दौडना)
प्रो-ब्लेस्क–प्र-भ्राज (प्रकाश)
प्रो-वुदित्–प्र-वुध्यति (जागना, उठाना)
प्रो-वोज्–प्र-वह (शकट, ढोने का साधन)
प्रो-दवात्–प्र-दापयति (बेंचना)

प्रो-दाश–प्र-दाक (वेंची, विक्रय)
प्रो-दान्निइ–प्रदत्त (विका)
प्रो-दिरात्–प्र-दरति (चीरना)
प्रो-प्रो-वेदिनक–प्र-प्र-वेदनिक (उपदेशक)
प्रोमित् –पृच्छति (पूछना, मागना)
प्रो-सिपात् स्या–प्र-स्वपिति (जगाना)
प्रो-स्पात्–प्र-स्वपिति (सो जाना)
प्रोस् वा–प्र-श्न (मागना)
प्रोतिव्–प्रतीप (विरुद्ध)
प्रो-चितात्.प्र-चितयति (पढना)
प्रोच्–प्राच् (दूर, दूर जाना)
प्रो-शि (वा) त्–प्र-सीव्यति (सीना, टाकना)
प्रोश्लोये–पश्चा (पिछला)
पुत्निक–पथिक (यात्री)
पुत्योव्का–पथीयिका (यात्रा)
पुतेशेस्त्विये–पथिकत्व (यात्रा)
पुत्–पथ (मार्ग, सड़क)
पुन् यानित्सा–पानका (मदिरामत्ता)
प् यानिस्त्वो–पानकत्व (मत्तता)
पिशात्–पिशति (प्रकाशना)
प्यातोक्–पचक (पाच)
प्यत्-ना-द्त्सत्–पच-दश (पाच ऊपर दस)
प्यातो–पच (पाच)
प्यातया-पचतय (पाचवा)
प्यन्–पच (पाच)
प्यन्-देस्यत्–पचाशद (पाच-दस, पचास)
राव्–लाभ (दास)
रवोता–लाभता (काम, श्रम)
राद्–राध, ह्लाद (प्रसन्न, खुश)
रादोवात्.–ह्लादति (हर्षित होना)

रादोस्त्–ह्लादित्व (खुशी)
राझ्–राग (क्रोध)
राज् } -प्रति, —वि (विना,
रास् } दूर)
रज्-वेग्–वेग (दौडना)
रज्-वोर–वर (चुनना, वाटना)
रज्-वुदित्–वुध्यति (जागना)
रज्-वेद्का–वेदका (खोजना)
रज्-वेद्-चिक्–वेदक (ढूढने वाला, स्काउट)
रइ–रै (स्वर्ग)
रन्–रण (घाव)
रस्ति–रोहति (उगना, वढना)
रत्-निक्–राति (योद्धा)
रत्–व्रात (सेना)
रदेनिये–रोहणता (लालपन)
रेव्योनक्–ऋभुक (लडका)
र्योव्–रव (शोर, गर्जन)
रेवेत्.–रवति. (शोर करना)
रेज़त्–रिहति, रेतति (काटना)
रेज्निक–रेतक, रिहक (कसाई)
रेका–रेखा, लेखा (नदी)
रेच्.–ऋक् (भाषण)
रिसोव्का–लेख, रेख (रेखाकन)
रोग्–शृग (सीग)
रोद्–रोध (परिवार, वश)
रोदिना–रोधिनी, रोहिणी (जन्मभूमि)
रोदितेलि–रोदितर (माता-पिता)
रोदित्.–रोहति (पैदा करना, जन्म देना, फारसी, रोईदन्)
रोझात्
रोझ दात्.
रोदित् स्या–– } —रोधति (प्रसव करना)
रोझ देनिये–रोहणा (जन्म)
रोझोक्–शृगक (छोटी सीग)
रोस्त्–रोह (वृद्धि)
रुव्का– रुभका (काटना)

रुगात्.–(रिगाना, गालीदेना, शाप देना, चिढना)
रुगान्.–(गाली देना, शाप देना, चिढ़ना)
रुसिइ–ऋषि (पिंगल, श्वेत)
रिदात्.–रोदति (रोना-सिसकना)
रिझिइ–रोह, लोह (लाल)
रिचान्.–ऋचति (शोर करना, चिल्लाना)
स्–स, सम् (सह, लिये, से, ऊपर)
सद्–सद् (उद्यान)
सदित् स्या } —सीदति
सझात्. } (बैठना)
साम्–स्वय
सामो–वार्-स्व वाल (समावार चूल्हा)
सामो-ले्त्–स्वयडयन (विमान)
सामिइ–स्वय
साखर–शर्करा
स्-वेगात्–स-वेगति (दौडजाना)
स्-वोर–स-वर, स-भर (सभा)
स्-वेदेनिये–सवेदना (ज्ञप्त, सूचना)
स्-वेदुश्चिइ–स-विद्वस् (विद्वान्, निपुण)
स्व्योकोर– श्वशुर (ससुर)
स्वेक्रोवि–श्वश्रू (सास)
स्-वेर्ख–स्वर्ग (ऊपर)
स्वेत्–श्वेत (सफेद, ससार, प्रकाश)
स्वेतत् } –श्वेतति (प्रकाशना)
स्वेतित् }
स्वेत्लो–श्वेतल (प्रकाशमान)
स्वेतोच्–श्वेतक (मशाल, दीपक)
स्-विदानिये—स-विदना (मिलना)
स्-विदेतेल्–स-वेत्तर् (गवाह)
स्वोयो } –स्वीय (अपना)
स्वोइ }

स्वोइस्त्वो– स्वीयत्व (गुण)
स्वोयाक्–स्वीयक (बहनोई)
स्-व्यज्का–स-बधक (मुट्ठा)
स-व्यज्.–स-वध (बधन)
स्-देर्झात्–स-दृहति (पकडना)
सेबे
सेबे } —स्वीये (अपने लिये)
सेब्या
सेगो-द्नया–स्वक-दिन (आज)
सेदेन्–श्वेतति (बाल सफेद होना)
सेदोइ–श्वेत (सफेद बालवाला)
सेइ
सिया } –स (यह)
सिओ
सेमि-सोतिइ—सप्त-शती (सात सौ)
सेम्-ना-द्त्सत्.–सप्त-दश (सात ऊपर दस, सत्रह)
सेम्–सप्त (सात)
सेम्—देस्यत्–सप्त–दशन् (सत्तासी)
सेम्-सोत्- सप्त-शत (सात सौ)
सेर्द्त्से–श्रद, हृत् (हृदय)
सेस्त्रा–स्वसर् (बहिन)
सेस्त्–सीदति (बैठना)
सिदेन्–सीदना (घर बैठना)
सिदेत्–सीदति (बैठना)
सीला–शील (बल)
स्-कज्–स-कथा (कहानी)
स्-कजात्–स-कथयति (कहना)
स्-कज्का–स-कथका (कहानी)
स्-कुचात्.–स-कुचति (उदास होना)
स्लव.–श्रव (यश)
स्लाविन्.–श्रवति (यश बखानना, श्लोक करना)
स्लाव्निइ–श्रवणीय (यशस्वी)

स्-ले.ग्का–स-लघुक (हल्का)
स्लुगा–श्रूपक (सेवक)
स्लुझान्का–श्रूषणिका (सेविका)
स्लुझ्बा–श्रूपा (सेवा)
स्लुझेनिये–श्रूषणा (सेवा करना, काम करना)
स्लुझित्–श्रूषति (सेवना, काम करना)
स्लुख्–श्रूपा (सुनना, कान)
स्लुशानिये–श्रूपणा (सुनना)
स्लु (स्लि) शात्–श्रृपति (सुनना)
स्-मेझा (झि) त्—स-मेचति (आख मीचना)
स्-मेर्त्–स-मर्त (मृत्यु)
स्-मेस्–स-मिश् (मिश्रण करना)
स्मेख्–स्मय (हसना)
स्मेयात् स्या–स्मयति (हसना, मुसकराना)
स्नेग्–स्नेह (हिम, वर्फ)
स्नोवा–स-नव (नया, ताज़ा)
स्नोखा–स्नुपा (नोह, पुत्रवधू)
सो–सम्, स
सोबाका–श्वक (कुत्ता)
सो-विरानिये–स-हरणा (सभा एकत्रित होना)
सो-विरात्–स-हरति (एकत्रित करना)
सो-वेत्–सवेत (सभा, मत्रणा)
सोवेत्निक्–सवेतक (कौसलर, परामर्शदाता)
सोव्-पदत्–स-पतति (सपात, एक साथ पडना)
सो-ज्नानिये–सजानना (चेतना, ज्ञान, स्वीकार)
सो-ज्नातेल्–स-ज्ञातर् (जानने वाला)
सो-इति–स-एति (जाना)
सोल्न्त्से–सूर्य

मो-म्नेनिये—स-मनना (सदेह)
सोन्—स्वप्न
सोन्निक्—स्वप्नक (स्वप्न, जोतिसी)
सो-रात्निक्—स-अरातिक (सह-योद्धा)
सोसानिये—चूपणा (चूसना)
सो-सेद्—स-सद् (पडोसी, फारसी—हम्सद)
सोसोक्—चूपक (स्तनमुख)
मो-स्ताव्—म-स्ताव (जोडना, गुफना)
सो-स्तोयानिये—स-स्थाना (स्थिति, अवस्था)
सोसून् (रोक्)—चपण (चूसना, स्तन पीना)
सोत्—शत (सौ)
सोतिया—शती (सौ)
सोतिइ—शतीय (सौवा)
सोखनुन्—शुष्णति (सूखना)
स्-पदानिये—स-पतना (गिरावट, पतन)
स्-पोइवात्—स-पाययति (मदिरामत्त बनाना)
स्पाल्न्या—स्वापालय (शयन-गृह, शयन-यान)
स्पानियो—स्वपना (सुलाई)
स्पात्—स्वपिति (सोना)
स्प्का—स्वपका (नीद)
स्रम्—(शर्म फारसी, लज्जा)
स्रेदे—श्रद्, हृद् (मध्य)
स्रेद्स्त्वो—हृत्त्व (मध्यता)
स्तवित्—स्थापयति (रखना)
स्तान्—स्थान (केप, आकार)
स्तानोवित्—स्थानयति (रखना)
स्तानोक्—स्थानक (बेच)
स्तानित्स्या—स्थानका (स्टे-शन)
स्-रागिवात्—स-नशनि (राटना)
सो—सन (सो)
स्तोइत्—स्थिति (ठहरना)
स्तोइ—स्थाहि (ठहर)
स्तोइकिइ—स्थायुकीय (दृढ)
स्तोल्—(टेबुल)
स्तोल्—स्थाल (स्थाणु, खम्भा)
स्तोयानियो—स्थानि (खडा होना)
स्तोयात्—स्थायति (खडा होना)
स्-त्राख्—स-त्रास (भय, लडाई)
स्-त्राशित्—स-त्रस्यति (भय-खाना, आतंकित होना)
स्-त्रशानिये—स-त्रासना (डराना)
सु-दार्न्या—सु-दाना (महिला)
सु-दर्—सु-दान (भद्र पुरुष)
सुत्—सत् (सत्त, सार)
सुखो—शुष्क (सूखा)
सुखोवेइ—शुष्कीय (सूखा, सूखी हवा)
सुखो-पुत्निइ—शुष्क-पथ (खुश्की का मार्ग, स्थल-पथ)
सुखोस्त्—शुष्कत्व (सूखाई, सूखा-मा)
सुशा—शुष्क (सूखी भूमि)
सुशे—शुष्कीयम् (अधिकतर सूखा)
सुशेनिये—शोषणा (सुखाई)
सुशित्—शुष्यति (सूखना)
सुश्का—शुष्का (सूखना)
सूप्—सूप (मास-रस)
स्-चितात्—स-चिनति (गिनना)
सिन्—सूनु (पुत्र)
स्-युदा—इह (पाली— इध, यहा)
स्-यक—एतादृक् (ऐसा)
स्-यम्—तत्र (यहा)
ता—सा (वह)
तोन्—म (वह)
तो—तद् (वह)
तइन्—तायति (छिपाना, शरण देना)
तइना—तायना (रहस्य, भेद)
ताक्—तादृक् (ऐसा)
ताक्-झे—तादृक हि (भी, ही)
त्वोइ } —त्वदीय (तेरा)
त्वोया }
त्वोयो }
तेम्नेत्—तमस्यति (अधेरा करना)
तेम्नो—तमस् (अधेरा, अस्पष्ट)
तेप्लेत्—तप (ल) ति (गर्म होना)
तेप्लो—तपल (गर्म)
तेप्लोता—तपल्लता (फैलती आच)
तेर्ज़ानिये—तर्जना (सताना, चीरना)
तेर्ज़ात्—तर्जति (चीरना, छिन्न करना)
तेसानिये—तक्षणा (काटना, फाडना)
तेसात्—तक्षति (काटना)
तेस्नित्—तीक्ष्णोति (दबाना, गारना)
तेतिवा—ततुव (धनुपकी ज्या)
त्योत्का—ताती (चाची, बुआ)
त्योत्या—ताती (चाची, बुआ)
तिखिइ—तुषी (शात, नीरव)
तो—तद् (वह, नपुसक)
तोग्दा—तदा (तब)
तो-एस्त्—स अस्ति (वह है, अर्थात्)
तोनिन्का } —तनुका, तन्वी
तोन्किइ } (पतली)
तोपित्—तपति (तपाना, पिघलाना)
तोप्का—तपका (लालटेन की बत्ती, गर्मना)
तोत्—स (वह, पुल्लिंग)
तोचेनिये—तक्षणा, तीक्ष्णना (घिसना, तेज करना)
तोच्योनिइ—तीक्ष्ण (छेनी किया)
तोचिल्का—तक्षलिका (घिसने का पत्थर)

तोचिल्नया–तक्षलका (घिसने की चक्की)
तोचित्–तक्षति (घिसना, तेज करना)
त्रवा–दूर्वा, तृण (घास, बूटी)
त्राव्का–दूर्वका (पत्ती, घास)
त्रेतिइ | त्रेत् |–तृतीय (तीसरा)
त्र्योख्–त्रिक (तिन-)
त्रिअदा–त्रिधा (त्रिप्रकार)
त्रि-द्त्सत्–त्रि-शत् (तीस)
त्रिझ्दि–त्रिधा (तीन बार)
त्रि-ना-द्त्सत्–त्रयोदश (तीन ऊपर दस, तेरह)
त्रि-स्ता–त्रि-शत (तीन सौ)
त्रोइका–त्रिका (तीनवाली)
त्रुसित्–त्रस्यति (भय खाना)
त्र्यसेनिये–त्रसना (कापना, हिलना)
त्र्यस्ति–त्रस्यति (कापना, डोलना)
तुदा–तत्र (वहा)
तुमान्–धूमन् (भाप, कुहरा, धुआ; फारसी–दूदमान्)
तुशित्.–तुषति (बुझाना)
ति–ते (तू)
त्मा–तम (अधकार)
त्फु–थू (थूकना)
त्यानुत्–तनोति (तानना, खींचना)
उ–उद्, अव, वि
उ-बेगात्–उद्-वेजति (भाग जाना)
उ-वेदित्–उद्-वेदयति (समझाना)
उ-वित्–उद्-भिदति (मार डालना)
उ-वितोक्–उद्-भित्क (क्षति, हानि)
उ-वझात्–उद्-भजति (सम्मान करना)
उगोल्–इगाल, अगार (कोयला)
उ-दाल्–उद्-दार (साहस)
उ-दार–उद्-दार, विदार (चोट, आघात, फारसी–दरीदन्)
उ-दारित्–उद्-दारयति (मारना, चोट करना)
उ-झे–उद्हि (पहिले ही)
उ-इति–एति (जाता है)
उ-काज़–उत्-कथ (आज्ञा)
उ-लेतात्–उद्-डयति (उडता है)
उ-निझे नियां–अव-नीचना (नीचा दिखाना)
उस्त–उत्स (मुह, ओठ)
उस्त्.यें–ओष्ठ (मुह, ओठ)
उख्–(उह, ओह, आह)
उचेनिये–ऊचना (पढाना, सिखाना)
उचीतल–ऊचितर् (शिक्षक)
उचित्–ऊचति, वक्ति (सीखना, सिखाना)
फु (इ)–थू (धिक्कारना)
ख्वाला–स्वर (प्रशसा,)
ख्वालित्–स्वरति (प्रशसा करना)
खोलोद्–शरद (सर्दी)
खुदेनिये–क्षुद्रणा (पतला होना)
खुदोइ–क्षुद्र (बुरा)
खुदिश्का–क्षुद्रिका (पतली तरुणी)
त्स्वेत्–श्वेत (रग, फूल)
त्सेलो–सकल (सारा, सियल)
त्सेन्त्र–केन्द्र
चशा–चष (प्याला)
चशेच्का–चपक (प्याली)
चश्का–चपक (प्याली)
चेइ–कस्य (किसका, जिसका)
चेरेप्–कर्प (र) (खोपडी)
चेत्वेरो–चत्वारि (चार)
चेत्वेर्–चतुर्थ (चौथाई)
चेतिर्–चत्वारि (चार)
चेतिरेझ्द्–चतुर्धा (चार बार)
चेतिरे-स्त–चतु शत (चार सौ)
चेतिर्-ना-द्त्सत्–चतुर्दश (चौदह)
चिनित्–चिनोति (मरम्मत करना, पेवद लगाना)
चितातेल्–चितयितर् (पाठक)
चितात्–चितयति (पढना)
चिखानिये–छिक्कणा (छीकना)
चिखात्–छिक्कति (छीकना)
च्मोकात्–चुबति (चूमना)
च्तो–कति (कि) (क्या, फारसी, चि)
शकाल्–शृगाल (गीदड, फारसी, शगाल)
शेप्तात्–शपति (पुकारना)
शेस्ति-द्नेव्का–षट्-दिनक (पखह)
शेस्तोइ–पष्ट (छठा)
शेस्त्–षट् (छ)
एइ–अयि
एता–एता (यह, वह)
एतत्–एप (यह, पुंल्लग)
युनोस्त्–युवत्व (जवानी)
युनिइ–यून (जवान)
यावित् } याव्ल्यात् }–आयाति (दिखलाना)
याव्का–(आवक, वर्तमान)
याव्लेनिये–(आवना, प्रकट होना)

(२) शब्दानुकरण

मर्गात्–आख मलकाना
आख्–आह
खाखा–हाहा
चप्कात्.–चप्चप् (खाना)
इकात्–हिक्कति (हिचकी लेना)
चिखात्–छिक्कति (छीकना)
त्फु–थू
फु–फू
कश्ल्यात्–खासना
गेइ–हे (सबोधन)

(३) उपसर्ग

रूसी भाषामें उपसर्गोंका महत्त्व बहुत अधिक है। समाजके विकासके साथ नये शब्दोंकी अवश्यकता होती है। नये शब्दोके निर्माणमें उपसर्गोंको जोडनेका जितना अधिक प्रयोग रूसी भाषामें हुआ है, उतना किसी दूसरी हिन्दी-यूरोपीय भाषामें नही देखा जाता। वैसे सस्कृतमें भी माना गया है—"उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहार-सहार-विहार-परिहार-वत।" किन्तु इस बारेमें रूसी भाषा बहुत दूरतक गई है।

रूसी उपसर्ग (अव्यय भी)

अ—अ (निषेधार्थ)
वेज्, वेजो, वेस् —वि (विना)
व्—(अन्तर्)
वो, वोज, वोस्, वि —वि
दो—तावत् (फारसी—ता, तक)
दुर् (नोइ)—दुर् (बुरा)
ज़ा—आ, पश्चा (पीछे, परे)
इज्, इस् —अत्, आ (से, फारसी-अज़्)
क्—(के, लिये, प्रति)
ना—नि (ऊपर, द्वार)
ने, नि —निर्, न (निषेधार्थ)
निस्—निस् (निषेधार्थ)
ओ—आ, अ (निषेधार्थ), अव
ओव्—अभि (चारो ओर)
ओवेज्, ओवेस् —वि (विना)
ओत्—आ, आत्, उत् (से, के, परे, लिये)
ओतो—अत्
पेरे—प्र, परि, प्राग्, पुनर्
पो—परि, प्र (ऊपर, द्वारा, अतर्, को)
पोद्—पद (नीचे)
पोरा—परा (पोराझे नियेपरा-जय)
पोस्ले—पश्चात् (फारसी—पस्)
प्रा—प्र (बडा)
प्रे—प्र
प्रेद, प्रेदो —प्रति, प्राक् (सामने)
त्रि, प्रो —प्र
राज्, रास् —(प्रति, पुनर्, वि, दुर्, अभाव, विकार)
स, सो —म, स (द्वारा, लिये, से, ऊपर, फारसी—हम्)
उ—उत्, अव

(४) रूसी धातु

पसावेत्., पो,—प्रभवति (जोडना)
वेदित्, उ-, वेझ्दात् उ-, —वेदयति (जतलाना)
वेगत्—, वेगत, उ- वेगति (भागना)
विवात्, दो—भवति, तावद् (मारना)
विरात्—चुनना,
विरात्, वि-, —चुनना,
विरात् इज्-, —चुनना,
विरत्, ज़ा-, —भ(ह)रति, फ्यीमक् (लेजाना)
विरात्, ना-, —हरति, नी—(सचय करना)
विरान्-, मो, —हरति, म—(सचय करना)
विरात्, उ-, —हरति, अव—(हटाना)
वित्—भिद् (मारना)
वित्, उ-, —√भिद्, उद् (मार डालना)
वीवात्, प्रो-, —प्रभवति—(परीक्षण करना, जाचना)
वोल्तात्—वोल्लति (वोलना)
वोयात् स्या—भय (डरना)
व्रसि (वा) त्—भ्रश (फेंकना)
व्रसि, वि—वि + √भ्रश (फेंकना)
व्रात् स्या—भर्, √हर (लेजाना)
व्रदित्— √वर्ध (उठना, उभडना)
व्रोस (सिवा) त् (स्या)—√भ्रश (फेंकना)
वुदित्, व्रुदित्, वोज्-, वुदित्., पो-, —वि + √ वुध (उत्तजितकरना, भडकाना। (प्र √ वुध् (भडकाना)
वझ्दात् विज्-, —वि + √वुध (भडकाना)
विवात्—√भव (आना)
वि्—√भव (होना)
वझत्., उ, —प्र + √भज (भजन करना, सम्मान करना)
वरित्—√वल् (उबालना पकाना)
वरित्, प्रद्-, —प्रति + √वल् (खबरदार करना)
वेदि (व) त्—√विद् (जानना)
वेदि, वि—√ विद् (पाना, ढूढ़ना)
वेदोमित्, उ-, —अव + √विद

णिज् (सूचित करना)
वेर्ग्नें नियें, ओत्-, –अव + √वर्ज (अस्वीकार करना, फेंक देना)
वेर्तत्– √वृत् (मोडना, लौटना)
वेशिवात्, प्रे-, –प्र + √विश् (जोडना, लटकाना)
विवात्–√भव् (होना, दीर्घ-जीवी होना)
विदत्, प-, –प्र + √विद् (देखना)
विदेत्– √विद् (देखना)
विद्नेत् स्या–√विद्+य (दिखाई देना)
विनित्, ओब्-, –अव + √नी (अपराध लगाना)
विसत्.,पो-, – प + √ विश् (लटकाना)
वोज़ित् –√वह (ढोना, लेजाना)
वोजित्, ना-, – ति + √ वह (लेजाना)
वोचत्, ओत्-, –उत् + √वच् (उत्तर देना)
व्रतित्, प्रो-, –प्र + √ वर्त (लौटाना)
व्रात्.–√हृ, भर (रखना)
व्रात्., वोज़., वि + √वर्त (काटना)
विसित्, प्रो-, –प्र + √विश् (उठाना)
व्यज़ात् –√वध (बाधना)
गोवोरित्– √गो (बोलना, फारसी–गोईदन्)
गोरत्.,वि-, –वि+√गर् (जलाना)
गोरत्.,ना-, – नि + √ गर, नि + √ज्वल } जलना, गर्म करना
गोरेत् –√गर, √ज्वल (जलाना)
ग्रेत्–√गर, √ज्वर (गर्म करना)
ग्रोवित्– √गृभ
ग्रोबित्, उ-, –उद् + √गृभ (गार डालना, नष्ट करना)
ग्रोज़ात्., उ-, –उद् + √गर्ह (धमकाना, खतरेमें डालना)
ग्रिज़ात्, वि-, –वि + √ग्रस् (छिकोड खाना, चबाना)
ग्रिजात्, पेरे, –परि + √ग्रस (फाडखाना)
गुबित्– √क्षुभ, √ खुभ (खोभना, नष्ट करना)
दवात्.– √ दा (देना)
दवात्.,ज़ा-, –आ + √ धा (रखना, सवाल पूछना).
दवात्., प्रो-, –प्र + √दा (बेचना)
दावित्.– √ दाव (दाबना)
दावित्, ज़ा-, –आ + √ दाब (चढ दौडना, चूर्ण करना, आ दाबना)
दावित्., प्रो.-, –प्र + √ दाब (दबाना)
दारित्.,पो.-, –प्र + √ दार (देना)
दारित्. स्या,उ-, –उद् + √दार (मारना, प्रहार करना)
दात्, – √ दा (देना)
दात्.,पो-, –प्र + √ दा (भेंट देना)
दात्. (स्या), जा-, –पा + √धा (रखना)
दे (वा) त् – √ धा (रखना)
देलत्. (स्या)– √ दर् (करना)
देलित्.– √ दार् (बाटना)
देलयत्., ओत्-, –उद् + √दार (बाटना, अलग करना)
देर्ज़ात् – √ दृह (थाम्हना, रोकना)
दिरत्., वि-, –वि + √ दर् (चीरना, फाडना)
दिरत्, प्रो-, –प्र + √ दर (चीरना, जीर्ण करना)
दोझ्.दत्.स्या– √ दुह् (पाना)
दोझ् दित्.– √ दुह (बरसना)
दोइत् – √ दुह (दूध दूहना)
द्रात्. (स्या)– √ दर् (चीरना, लडना)
द्रात्.,ज़ा–; आ + √दर (फाड खाना)
दुवात्.-वि,–; –वि + √ धूम (धौंकना, फूकना)
दुनूत्.–वि + √ धून् (धौंकना)
येदत्.,–वि–,वि + √अद् (खा डालना)
येस्त्.– √ अष (खाना
येस्त्.– √ अस् (होना, है)
येखात्.–√एष (हाकना, चढाना, जाना)
झरित्., – √ ज्वर (जारना, तलना)
झेवत्.–√ चर्व (चीभना, कूचना जीमना)
झेल्तेत्.– √ हरित (पीला करना, फारसी–जर्दीदन्)
झ नियें., परा-, –परा + √जिन (हराना, पराजय करना)
झेनित्. (स्या) – √ जनो (व्याह करना)
झच्.–√ धक्ष (जलाना)
.झीवित्,ओत्––अव √ जीव (मर जाना)
.झीवित्.–√ जीव (जिलाना)
झिगात्, ओब्–– √ अभि
झिगात्., पेरे-, –प्र √ जग (जलाना)
झिनेत्., वि-; –वि √ छिद (फसल काटना)
झितत्. न, – नि √ छिद (फसल काटना)
झित्.–√ जीव (बसना, रहना)
झित्.,– ओत्-, ––अव √ जीव (मर जाना)
ज्वइवात्, वि., ––वि √ ध्वन (घटी बजाना)
ज्वत्.– √ हृ (पुकारना, – बुलाना)
ज्वेनेत्–– √ ध्वन (घटी

बजाना)
ज्योमित्—v घटी बजाना)
ज़ेवत् — v जृभ (जभाई लेना)
ज़ेवत्. पो, ओ —प्र v जह (त्यागना, छोड देना)
ज्योविवात्., पो-, — प्र v जृभ (जभाई लेते रहना)
ज़ेलेनेत् — v हरित (हरा होना)
ज्नात् } v ज्ञा (जानना
ज़्नवात्. }
ज़्नवात् सो-, —स v ज्ञा (पहिचानाना, स्वीकार करना)
ज़्नाकोमित्.– v ज्ञाप् (परिचय कराना)
ज़्नामेनोवात् — v ज्ञाप् (दिखलाना, सिद्ध करना)
ज़्नोचित् —v ज्ञा (समझना, नेमिक, जताना)
ज़ालोतित्. वि ,–वि-, v हरित (सोना लगाना, मुलम्मा करना)
ज़्यब्नुत् -इज् -आ,, v हिम (बर्फ बनना, ठिठुरना)
इद्ति—v एत् (जाना, आना)
इकात् – v हिक्क (हिचकी लेना)
इत्ति–v एत (आना, जाना, टहलना)
कज़ान् (स्या)—v काश (प्रकट होना, जान पडना)
कज़ान्. विम्-,–वि v कथ }
वि v काश }
(प्रकट करा)
कज़ान्.न्—म v कथ (कहना)
कजिवात्—कथ,
कहना, दिखलाना, इगित करना)
कज़न्, ना –नि v कथ (काश) (इगित करना) -
कज़ात्, प्रि,–प्र vकथ (काश) इगित करना
क्लिकात्., वि-, –दि vकिलक (क्रुश) (पुकारना)
क्लिक्नुत् –वि v क्लिक क्रुश (पुकारना)
करत्.– v कार (दड देना)
क्रसी (शी) वत् ,प्रिज़ क्रुप (पुन रगना, मोमियाना)
क्रसित्.,पेरे-; –परि v कर्ष (पुन रगना)
क्रशात्., उ-; –उत् v कर्ष (सजाना, अलकृत करना)
क्रिकिवात्.,व्स्-, –वि v क्रुश् (चिल्लाना, हल्ला करना)
क्रिसात् , व्स्-, –वि v क्रुश (चिल्ला उठना)
कोपात्.— v कल्प (कापना, खोदना)
क्रोडत्.–v कृत् (काटना)
क्रुशात्.,स्-, – स v क्रुप (तोडना, विचूर्ण करना)
क्रित् –v कृत (ढाकना)
कुचात् ,स्-.–म v कुच (थूकना)
कुचित्, प्रिम्-, – प्र v कुच् (थकना)
कुशात्. पो-, –प्र v कुश (कोशिश करना)
लगात् ,ना-, –नि v लग (लगाना)
लदत्, स्-, म v ह्लद (ह्लादित होना)
लगात् –v लग (लेजाना)
लेगात् -ना,–नि vलग (लेजाना)
लेझात्— v लेट (लेटना, विश्राम करना)
लेज़ात्—v लघ (१) चढना,
लेज़ात्-, पेरे.–परि लघ v (चढ जाना)
लेपित् वि.,–वि v लिप (लेपना, चिपकाना)
„ - , जा, ––आ v लिप (चिपकाना)
लेतात्.– v डय (उडना)
लिज़ात्.– v लिह् (चाटना)
लिपात्.– v लिप् (चिपकाना)
लोविज़ात्.– v लुभ (चूमना)
लोवित्.–v लुभ् (लुब्धकी करना, फसाना, आहत करना)
लोगत्., पो-, –प्र v लग् (रखना, लगाना)
लोझित्. (स्या)– v लोट (लेटना, गिरना)
लोपन्.स्या–v लोप (फटना, टूटना) -
लुपित्.,ओत्-, उत् v लोप् (मारना)
लुचत्., इज़-, —आ v रोच् (प्रकाशित होना)
लुचत् , ओत्–अव v रोच् (वहिष्कृत करना)
लुच्शात् ,उस-, –उद् रोच् (धारना, वेहतर वनाना)
ल्युवित् – v लोभ (प्यार करना)
ल्युवित् , रज़-, –वि vलोभ (प्यार करना)
मज़ात्., मज्नुत्.– v माप् (माखना, चुपडना लगाना)
मज़ात , वृ-, –वि v माप (चाटना)
मज़ात्., पो-, –प्र v माप (तेल लगाना)

मज़ोक., पो-,–प्रvमार्ज (झाडना)

मरत्., वि-;–विvमर (घात करना)

मचिवात्., ज़ा-,–vमिह (भिगोना)

मेझ (झि)त्, स्-,–सv मिप (आख मीचना)

मेरेत्.–vमर (मरना)

मेरेत्. वि-,–विvमर् (मर जाना)

मेरित्.–vमा (नापना)

मेतत्.–vमथ (ढकेलना)

मेशिवत्. व्-,–विvमिश्र (मिश्रण करना)

मीलोस्त्–vमिल (मेल करना, कृपा करना)

मितात्.–vमिष (आख मलकाना)

मिगनुत्.–vमिष (आख मलकाना)

मिरत्.,वि-,–विvमर (मर जाना)

म्नुत्.–vमनु (सोचना, मनन करना)

मोकात्. वि-,–विvमुच् (निकल जाना)

मोलोत्.–vमर्द (घिसना, मलना)

मोरित्.–vमर (हत्या करना, भूखा मरना)

मोचित्.–vमेह (भिगोना)

मि(वा) त्.–vमोना (धोना)

नामेकात्.–vनाम (इगित करना)

नशिवात् ज़ा-,–आvनश्(जीर्ण करना)

निज़ात्–vनह (बाधना, सूत पिरोना)

निज़ि (झि) त्., उ-,–अवv नीच (अपमानित करना)

निमात्., वि-,–विvनय (ले जाना)

नित्., ओव-,वि-;–अभि-विvनय (अपराध लगना)

निच्तोझित्., उ-,–उद्vछिद् (नष्ट करना, बद करना)

नोस्ति.–v नेष (ले जाना, ढोना) (तेल्.)

नोसि्त्., ज़ा-,–आvनेष (लिख छोडना)

नोचिवात्.–vनिश् (रात बिताना)

नुदित्, वि-,–विv नुद (बाध्य करना)

नुझ्दात्.,-वि-,–विvनुद (बाध्य करना)

पदत्.–vपत (गिरना)

पदत्, नस्-,–निस्vपत् (गिरना)

पदत्. व्स-,–सvपत (एक समय एक स्थान में होना)

पइवात्. व्स्-,–विvपा य (पिलाना, पोषण करना)

पेइवान् पेरे-,–परिvपाय (मद्यपान मे अति करना)

पेरेनिये—पलायना (भागना)

पास्त्–vपा (पास्तुख् मेषपाल)

पास्त्–vपत (गिरना)

पेकात्., दो-,–आvपच् (पकाना)

पेच्.–vपच् (पकाना, तलना, भूजना)

पिवात्. ज़ा-,–आvपिव् (पीना)

पिवात् वि-,–विvपिव (पीना)

पिलित्.–v पीड (चीरना)

पिलिवात्.–v पीड (चीरना)

पिसात्.–v पिश (लिखना)

पिसिवोत्.–पिश (लिखना)

पित्.–v पिव (पीना)

प्लवात्–v प्लव (तैरना)

प्लवित्, वि-,–विvप्लव (पिघलना)

प्लिवात्., व्-,– विvप्लव (तैरना, नावपर चलना)

पोइत्–vपिव (मद्यप बनना)

पोल्नोत्–vपूर्ण (भरा पूरा होना)

पोल्नोत्., निस्-,–विv पूर्ण (भरना)

पोल्नित्., वि-,–विvपूर्ण (पूरा करना)

पोतेत्, व्-,–विvपोन (पसीने में नहाना विvस्विद्)

पोचितात्.–vपूज (समान करना)

प्रशिवात्., वि-,–विv पृच्छ (पूछना)

प्रियुतित्. (स्या)–v प्रिय (?) (शरण देना व पाना)

प्रोसित–v पृच्छ (पूछना, मागना)

प्रोप्सत्., वो-,–विvपृच्छ (पूछना)

पुखात्., ना-,–निvपुप् (फूल जाना)

पुखात्., प्रि-,–प्रvपुप् (फूल जाना

पिशात्.–v पिश (दहकना)

राद्दोवात्–vलाद (आदादित होना)

रादोवात्. स्या, वेज्-,–विv ह्लाद

रझात्., ओत्-,–आ v राज

दर्पणमे प्रतिबिंबित होना)
रनत्.–v रण (घायल करना)
रस्ति–v रोह (रोहण करना, बढना, फारसी-रोईदन)
रेवेत्.–v रव (शोर करना)
रेज्रत्, रेजिवात्.–v रिह (काटना, फारसी रेज़ीदन्)
रेजिवात्, प्रि–प्रvरिह (मारना, जोडना)
रेझात् स्या, जा-, आvरेच (तोडना)
रोदित्. स्या–vरोव, रोह (जन्माना)
रोझात्.–vरोव, रोह (जन्माना)
रोझदात् –vरोव, रोह (जन्माना)
रोझित् –vरोह (जन्माना)
रुगात्., वि-, –विvरिग- (रिगाना, फटकारना)
रुगात्. ओव्-, अभिvरिग (रिगाना, फटकारना)
रवात् जा-, –आvरभ,v लभ (कुल्हाडेसे गढना काटना)
रवात्, परे-, –परिvलभ (काटना, मारना)
रवात् पो, –प्रvसभ (चीर डलना)
रिवात्.-नज्–vस्द (मिनकी भरना)
मदित् —vसीद् (बैठना, मादी=असवार)
मदित्.व्, —विvसीद (भीतर घाव करना)
स्वेतन्.—vश्वेत (प्रकाशित होना)
„ , ओ–, —आvश्वेत (प्रकाशित करना)
स्वेनित् –vश्वेत (प्रकाशित करना)
सेदेत्. — vश्वेत (बाल सफेद होना)
सिदेत्.— vसीद (बैठना)
स्लवित् .— vश्रव (यश गाना)
स्लुझित्.—vश्रूप (सेवा करना, काम करना)
स्लुशत् —vश्रूप (काम करना)
स्मेनिवात्. ओ–, —आ v स्मय (परिहास करना)
स्मेखात्स्या, ना , — न v स्मय (परिहास करना)
स्मेशित्., पो–, —प्रv स्मय (हसाना)
स्मेयात्. स्या—vस्मय (हसना)
सोसात् — vचूष (चूसना)
सोखनुत् — vशुष (सूखना)
स्पात् पो–, —प्रvस्वप (थोडा सोना)
स्तावित्, पो–, –प्रvस्थाप (रखना, स्थापित करना)
स्तानोवित् —vस्थान (रखना, स्थापित करना)
स्तोइत् —vस्था (आना)
स्तोयात् ,पो–, –प्रvस्था (खडा होना)
सुखनुत्.,–पो–, —प्रv शुष (सूखना, पो–सुखी –स्थल से)
सुगात्., इस्–, –आvशुष (सुखाना)
सुशि (वा) त.— vशुष (सुखाना)
सुशि, पेरे–, –प्र vशुष (बहुत सूखना)
सिपात्., पो–, –प्रvस्वप (पूरा सोना)
सिग्रात्., वि–, –विv शुष (अति सूखना)
स्यकात्.— vसेंक (सूख जाना)
सइ (वा) त्. —vताय (छिपाना, त्राण देना)
तल्किवात्. — vतर्क (हिलाना)
तल्किवात्., प्रो–, –प्र vतर्क (ढकेलना)
तेम्नेत् vतम्– (अधकार करना). –v
तेप्लेत्. vतप (गर्म होना)
तेजत्.—vतर्ज (चीरना, खडन करना)
तेरेत्.स्या, वि–, —वि–vतिर (खतम करना, सुखाना)
तेस्त्.— vतक्ष (काटना)
तेस्नित्.—vतीक्ष्ण (दबाना, गालना)
त्योसिवात्,. वि–, – विv तक्ष (आकार गढना)
तिरात्,. वि–, –वि vतीर (पोछना, सुखाना)
तिरत्, स्या, स, —स तीर (भाग जाना)
तिखात्. स्–, —सvतुप् (शात होना)
तोपित्.—vतप (गर्म करना, पिघलाना)
तोपित्., जा–, –आ vतोप (जहाज डुबाना)
तोप् (तिव) त्. वि–, –विv दव (दाबना, रौंदना)
तोपित्.— vतक्ष (घिसना तेज करना)
त्रशित्., स–, —सvत्रस (डराना, खतरा मानना)
त्रिगत., सोस् –, स v तृह (काटना)
त्रुमित्.— vत्रस (भय खाना)
त्र्यसत्.,— वि–, –वि vत्रस (हिलाना)

श्यत्, पो–, –वv त्रस् (हिलाना)
श्यस्ति— vत्रस (हिलाना, डुलाना)
श्यख (खिवा), त्,., –, –वि v त्रास् (हिला डालना)
श्यख, पो–, –प्रvत्रास् (हिला डालना)
तुमेनित्.स्या, जा–आvतम (मध्यम पडना, भोथा होना, मद पडना)
तुपित्., पो-, –प्रvतुप् (गिरना)
तुपित्, प्रि-, –प्रvतुप् (गिरना)
तुशित्., -जा–आvतुष् (बुझना, शनै चला जाना)
तुसित्.पो-, –प्र-vतुष् (बुझाना, शनै चला जाना
तिकात्.—(टिक,vटिकना, घुसेडना)
त्युनुत्.–vतनु (खीचना, तानना)
उचित्.–v वच (सीखना, सिखाना)
स्वलित्.–v स्वर् (प्रशसा करना,)
खोदित्.-, –विvसिद् (चला जाना)
च्नोत्., नेपेरे-, –नि प्रv चित (गिनना, बतलाना)
चिनित्.–v चिन् (मरम्मत करना, पेबद लगाना)
चितात् –vचित (पढना)
चितात्.,पो-, –प्र v चित (पढना)
चिनिवात्. व्स-, –विसv चित (गिनना)
चिखात्.–v छिक्क (छीकना)
च्मकात्.–v चुम्ब (चूमना)
शेतात्.–v शप (फुसफुसाना)
शिवात्, वून-, –वि v सीव (सीना)
शित्., व्-, –वि v सीव (सीना)
श्चुपात्., वि-, –वि v छुप (छूना) स्पर्श करना,
श्चुपात्., ना-, – नि v छुप् (छूकर पता लगाना, चिकोटी काटना)
युचित्, वि-, – वि vयुज (लादना)

(५) प्रत्यय-सूची

अत्— ति (बेगत्.)
अवत् — ति (दवात्)
इइ—इन् (बेज्ररोगिइ)
इक् —इक (स्तोलिक्)
इकिइ—इक (वेलिइकिइ)
इको—इक (लिचिको)
इज्न—(क्रिविज्न)
इच्क—इक (प्तिच्का)
इत—थ (स्कज़ीते)
इत्—ति (वित्)
इत्सा—ता (वेस्-सोन्नि-त्सा = नि स्वप्नता)
इत्सा—इका (वर्नित्सा-मदिर निर्माणागार)
इत्सा—इक (देवित्सा = देविका)
इत्सा—इक (वोदित्सा)
इना—इनी (ग्लुवीना = गभी-रिणी, ज्वेरिना)
इन्या—इनी (वोगिन्या = भगिनी, भगवती)
इम्—म (वीदिम्, विद्म)
इये—ईय (वेस्स्लाविये)
इवत्—ति (पिलिवत् = पीड-यति)
इवोस्त्.—त्व (इग्रिवोस्त् = क्रीडित्व)
इशिइ—ईयस् (निझाइ शिइ = नीचीयस्)
इश्—सि, से (वीदिश् = वीक्षसे)
इश्चा—इका (रुचिश्चा,अगु-लिका)
इश्चे—इक (दोमिश्चे‌द्मिक)
इश्चे—(झिलिश्चे = जीव, वास-गृह)
ईइ—इन् (वेज़्-ग्लाविइ = वि-ग्रीवी)
ईइ—ईय (ज़्वनिइ = ध्वनीय)
ईत्—त (वित्.)
ईन्का—इनिका (प्रोस्तिन्का)
ईलो—(विलो = भइल)
ईवत्.— ति (विवत्.)
ईश्को—इक (पेरिश्को)
उ—मि-(बुदु = भवामि)
उत्—न्ति (इदुत् = यन्ति)
उत् —(नावेर्नुत्.)
उन्—आन (वेगुन्)
उश्का—उका (वेतुश्का = वर्तुका, चकरी) देवुश्का = देविका, बच्ची) (देरेवुश्का)
उश्चिइ—इष्य (बुदुश्चिइ = भविष्य)
उश्चिइ—न्त् (झिवश्चिइ,जीवन्
उश्चिइ—वान् (वेतुश्चिइ, = विद्वान्)
ओइ—ईय (ज़ेम्नोइ, मीय
ओक्—क (वेतेरोक् = वातक) (वोज़ोक् = वाहक, गाडी)
ओक्.—क (गोलोसोक्)
ओचेक्—(ओगोन्योचेक् = अगिया)
ओच्का—का (तसेपोच्का = टोपिया, देवोच्का, देविका = कुमारी)
ओता—इमा, ता (चेर्नाता = कालिमा)

ओत्न्या—त्नु, (वेगोत्न्या)
ओनोक्—क (वोव्चोनोक्=वृकक)
ओवानिये ना (जिमोवानिये, हिमना)
ओव्—ईय (इवानोव, इवानीय)
ओन्नया—नीय (वोल्तोन्या)
ओस्त्.—त्व (स्वेझ ोस्त् , ज्नामेनिमोस्त्.=ज्ञातत्व)
किइ—कीय (ब्रात्स्किई=भ्रातीय)
(गोर.किइ्=कटुकीय)
का—का (वोज्का=वाहक, ढोना) (गोदात्का—गदका, जोतिस) (ओव्शिव्का—भूल) (ब्ल्यश्का)
को—क (उश्को=कनवा)
गा—पा (विस्लुगा=विश्रूपा, सेवा)
ग्दा—दा (स्रोग्दा=सदा)
चा—य (दाचा=देय)
चिइ—(गोर्याचिइ=गरम)
च्—क (वोगाच्=भगक, धनी)
चिक्—क (झ वि्चिक=जीवक, जीव)
चिक्—क (म्लादेन्चिक्.)
चाता—ता (देव्चाता=देवता, तरुणी)
चन्—आलु (वोदाचन्=नयालु)
ज्दि—धा (द्वाझ्दि=द्विधा)
ता—ना (पोल्नोता=पूर्णता)
ति—ति (इद्ति=एति)
तिये—ना (वेन्-मेतिये=विमृत्युना)
तिई—नीय (वोल्तिई=वोल्लनीय, वोतस्कड)

तून्— (वोल्तून्— वोल-क्कड)
तेई—तीय (वोगातेई=भगीतीय धनी)
तेल्—तर् (वेस्सोज्नोतेल् वि=विसज्ञातर्, अज्ञानी)
त्—ति (इकात्=हिक्कति, हिचकी मारता है)
त्लिइ—त्लु (प्रियत्लिइ=प्रिय-त्लु प्रिय)
त्नोये—त्नु (झिवोत्नोय=जीवत्नु जीव)
त्से—इक (व्ल्युद्-त्से)
त्सो—व (पिस् मेत्सो)
(ओज़ोर्त्सो)
(देरेवृत्सो)
निक्—इक् (वोद्निक=उद-किक)
(स्साद्निक=सादिन्)
(द्वोर्निक=दौवारिक)
(ज़ेम्ल्यानिका=ज्मालिका)
नो—(स्व्याज्नो)
नोइ—(द्वेर्नोइ)
नोस्—(चेस्त नोस्त्.)
न्—न (दान्.=दान, भेंट, (पोल्न=पूर्ण)
न्का—क (ज़ेम्ल्यान्का)
न्या.—(रेज्न्या)
वा—(प्ल्व्वा)
(खुदोवा)
मोम्त्.— (द्विझिमोस्त् , =वेजनीय)
(ज्नामेनिमोम्त् =ज्ञातत्व)
यात् —ति (देल्यात् ,=दारयति)
यानि—इन् (द्वोर्यानि,=द्वारिन्, वायू)
यानिये—ईय (दयानिये दानीय)
युत्—न्ति

येचुक्—इका (दोश्च्का=छोटी मेज)
येच्को—इका (कोल्येच्को=कुइया, कूपिका)
ते—थ (स्कजीते=कथयथ)
येत्.—(वेग्लेत्स्)
येत्स्.—(उरोदेत्स्)
येत्सो—(पिस्-मेत्सो)
येद्—(मेद्वेद्=मध्वद)
येनिक्—इक (उचेनिक्=वाचक)
येनिये—(स्लुझ निये=श्रूपणा)
यम्—आम
येल्—इल (नावेलो=नाविल)
येश्—सि (देलयेश्)
येत्.—त्व (स्वेझ् येस्त्.)
योक्—क (ओगोन्योक् अग्निक)
योझ्—क (ग्रब्योझ्=ग्राभक, लुटेरा)
र्—र (ग्लवार्=ग्रीवार, नेता)
र्—न (दार=दान)
लो—न (नगोलो=नग्न)
ल्या—ना (लोव्ल्या=लोभना), आखेट)
वा—का (क्नावा खनुवा=खाइ)
वानिये—ना (ज़िमोवानिये=हिमना)
विइ—वीक (मेदोविइ=माध्वीक, अमृत-जैसा)
वोस्त्.—(लुकावोस्त्.)
शिइ—श (वोल्. शिइ=भूरिश)
शे—श (वोल्शे=भूरिश, बेहतर)
शोइ—श (वोल्शोइ=भूरिश)
शोन—ईय (नगिशोन=नग्नीय, अतिनग्न)
स्त्विये—त्व (देइस्त्विये)
स्त्वो—त्व (वेगुस्त्वो=भगेलुत्व)
स्या—य (आत्मनेपदी, भावार्थ)

(६) उच्चारण-परिवर्त्तन

संस्कृत–रूसी उदाहरण
अ अ, (निषेधार्थ)
अ ओ, ओस्. (अक्ष) ओगोन्
आ ज़ा, ज़ाशिवात्=आसी-व्यति
या यावचित्. स्या
उ वो,वोदा–उद
ओ ओवे–उभे
(ऋ आल्) शकाल–श्रृगाल,
ओल् वोल्क–वृक थर् क
येर् देर्झात–दृहति
येल् झितेल्–जीवितृ
योर् म्योर्त्विइ–मृत्यु
र् ग्रबित्–गृभीति
रि क्रित्–कृत्ति
रु रुसिइ–ऋषि, ऋचि
स्त्रुन–तृण
रे रेव्योनोक्–ऋभुक छङ्
रो प्रोसित्.–पृच्छति
क को कोग्दा–कदा
कोरिह–कतर
ग क, शकाल–श्रृगाल
इग्रोज़ित्.–कुप्यति
क चेरेप्–कर्प
क्ष स, ओस्.–अक्ष
च, झेच्–धक्ष
क्षु खु, खुदेत्.–क्षुदति
खुदोइ–क्षुद्र
ख क, कुसात्.–खुसति
स, रिसोवात्.–लिखति
ग क, ग्रस्त्.–ग्रसति
ग ग्रिवा–ग्रीवा
ग्लोतात्.–गिलति
नगोइ–नग्न
झ वेझात्–वेग
दोझ्द.–दोग्घि
द् प्रेद्–प्राग्
घ ग दोल्गिइ–दीर्घ
ज़ लज़ित्.–लघति
च क प्रेद्की–प्राच् (पूर्वज)
च पोचितात्–पूजति
ज़ निज़ु–नीचे येठङ
झ निझे–नीचैं
निझात्.–नीचयति
स प्रिपासी–प्रपाच
(भोजन-सामग्री)
सोरोक–चत्वारिंश
छ च कुचा–गुच्छ
झ झेवात्–छीवति
(चबाना)
श प्रशिवात्.–पृच्छति
स प्रोसित्.–पृच्छति
ज गद वेग–वेज
गोरात्.–ज्वलति
ज़ वेर्योज़ा–भुर्ज
प्रिज़नाक–प्रिज्ञानक
ज़ेम्ल्या–ज्मला
झ झार–ज्वर
पोझार–प्रज्वाल
झेना–जनि
द पोवेदा–प्रविजय
ट झ लेझात्.–लेटति
पोलझित्.–प्र-लेट
ड ल, लेतात्–डयति
पीला–पीडा (आरा)
ढ ल पोलोत्.–(लोढना)
ण न पोल्नो–पूर्ण
त त स्त्राख–त्रास
द पदात्.–पतति
न ज़ेलेन्–हरति
ज इज़्–अत्
द झ, झेच्–दह
सझात्–सादयति
द द्रोवा–दारु शिङ
दोल्शे–द्राघीय
दोलिना–द्रोणी
ध ज़, ज़्वान्–ध्वन
झ मेझदु–मध्य
रोझात्.–रोधति
द व्दोवा–विधवा
देयातेल्.- धातर
(नेता)
न न, तोन्किइ––तनुक।
प्रेस बा––प्रश्न
प प, पतात्.––पतति
पास्तुख्––पातुक
पिसात्.––पिशति
फ प पल्का––फलक
(लकडी)
ब व
भ व वोल्-शोइ––भूरिश
अब्लका––अभ्रक
ब्रात्––भ्रात
ब्रोवि––भ्रू
म म, म्यासो––मास
य य युनोस्त् ––युवन्
र र, ब्रात्––भ्रात
ल लुच्––रोचिष्
पोल्नो––पूर्ण
व व, इवा––इव
ओवोरोत्––अववर्त
वेज़्––वि (विना)
व वोज़––वह
श च, नोच्.––निश्
श ख, खोलोदे––शरद
श शकाल––श्रृगाल
च मेशात्––मिश्रयति
स देस्यत्––दश न् (दस)
सुखात्––शुष्यति
सोवाक––श्वक
स्वेकोर––श्वसुर
ख सिखात्.––शुष्यति
सुखोइ––शुष्क (सूखा)
ज़,
झ कोझा––कोष (चर्म)
श स्लुशत्.––श्रूपति
स स सझ्दात्––सदयति
स्वेया––स्वीय

ह शिवात्–सीव्यति
नश्–नस्
ह ओ, ओलेन्–हरिण फो
ख स्मेखात्–मेहति

ह ग, स्नेग्–स्नेह
ज जिमा–हिम
वोज्–वह

झ देर्झात्–दहति
झ–हि
द पोरोदो–प्ररोह (ध)

(७) सामाजिक विश्लेषण

संस्कृत रूसी उभयभाषाओं में एक से मिलनेवाले शब्दों के तुलनात्मक विश्लेषण से तत्कालीन सामाजिक विकास पर भी बहुत प्रकाश पड़ता है। "बोल्तात्" (बोलना), "दव्ल्यात्" (दाबना)-जैसे शब्द बतलाते हैं, कि कितने ही संस्कृतमें अप्रसिद्ध किंतु प्राकृत, अपभ्रंश तथा आधुनिक भाषाओंमें प्रचलित शब्द अपनी जड़ बहुत दूर आर्य-शक कालमें रखते हैं। इसी तरह छीकना-खासना जैसे अनुकरणात्मक शब्द उसी समयमें पहुंचते हैं। यहा हम इन शब्दोंके आधारपर यह बतलाना चाहते हैं, कि उस कालमें जबकि आर्य और "शक" अपने मूल-निवासमें अलग-अलग हुए, उनका सामाजिक विकास कहा तक हुआ था। इसके लिए हम शब्दोंका यहा वर्गीकरण करते हैं।

भूमि वर्ग

ज़ेम्ल्या–क्षमा (भूमि)
पुत्–पथ (मार्ग)
गोरा (गरा)–गिरि
दोलिना (दलिना)–द्रोणी (दून)
कामेन्–अश्मन् (पत्थर)

उदक वर्ग

वोदा (वदा)–उद (पानी)
वोद्का–उदक (शराब)
पेना–फेन
स्नेग्–स्नेह (हिम)
ल्योद्–रोधस् (बर्फ, फारसी–रूद नदी)

अग्नि वर्ग

ओगोन्–अग्नि
उगार्–अगार
उगोल्–अगार
झार–ज्वाल (ताप)
झाग–ज्वाल
तेम्नो–तम (अंधेरा)
तुमान्–धम (धुआं, कुहरा)
दिम्–धूम

वायु-वर्ग

वेतेर्–वात (फारसी, बाद)

नभ-वर्ग

स्वेर्ख–स्वर्ग (ऊपर)
नेबो–नभस् (आकाश)
ओब्लका–अभ्र (बादल)
सोल्न्से–सूर्य
मोल्निया–मालिनी (बिजली)

काल-वर्ग

देन्–दिन
नोच्–निशा
मेस्यत्स्–मास
लेत्–ऋतु (वर्ष)
वेस्ना–वसंत
जिमा–हिम (हेमंत)

वृक्ष वर्ग

देरेवो–दारु (वृक्ष)
द्रोवा–दारु (ईंधन)
बेर्योज़ा–भुर्ज (भोजपत्र वृक्ष)
त्रवा–तृण

पशु-वर्ग

झिवोत्नोये–जीवन्त, जंतु (प्राणी)
पेस्–पशु
रोग्–शृंग
सोबाका–श्वक (कुत्ता)

ओलेन्–हरिण
शकाल–शृगाल
मेद्वेद्–मध्वद (भालू)
मिश्–मूष
ओखोता–आखेट
ओवेन्–ओव्का, अवि (भेड़)
गोव्य–(दन्या)–गो (अदनीय)
वोल्–बैल
वोल्क–वृक (भेड़िया)

शस्त्र-वर्ग

पाल्का–फलक (डंडा)
ओस्–अक्ष (धुरा)
इगो–युग (जुआ)

पात्र-वर्ग

कुव्शोक्–कूपक (प्याला)
कुव्शिङ्–कूपिका (लोटा)
चश–चषक (प्याला)
चश्का–चषक (प्याला)

आहार-वर्ग

एदा–अद (भोजन)
एदोक्–अत्ता (भक्षक)
सूप–सूप (मांसरस)
म्यासो–मांस
क्रोव्–क्रव्य (रुधिर)
म्योद्–मधु (शहद)

पीवो–(पीवा)—पेय (हल्की शराब)

वस्त्रवर्ग

कोझा–कोष (चमडा)
नगीइ—नग्न (नगा)
नगोला—नग्नल (नंगा)
शिवात्.—सीवन
शित्.–सीवन
ओदेवात्.स्या—अधिवास (पहनना)

शरीराग-वर्ग

ग्रिवा–ग्रीवा (गर्दन)
गल–गल
गोलोवा–गाल (शिर)
गोर्लो–गल (कठ)
ग्लवा–गल (शिर)
ग्लोत्का—गल (शिर)
चरेप्–कर्पर (कपाल)
वोलोस्–बाल (केश)
ब्रोवि–भ्रू (भौ)
नोस्–नासा (नाक)
जुब्–जिह्वा (दात)
ओचे–अक्षि (आख)
पा–पाद (चरण)
पाइ–पाद (भाग)
पोद् (व्यक्का)—पाद- (-बधक)
बोक्–वक्ष (पार्श्व)
सेर्दत्स–हृद् (हृदय)
क्रोव्.–क्रव्य (रुधिर)
पेरो–पक्ष (फारसी, पर)
रेच्–ऋक् (भाषा)

सबधि वर्ग

मात्–मातृ (मा)
ब्रात्–भ्रातृ (भाई)
सेस्त्रा–स्वसृ (बहिन)
सिन्–सूनु (पुत्र)
दोच्–दुहितृ (बेटी)
देवा–देवी (कुमारी)
देव्का–देवी (कुमारी)
देवोच्का–देविका (बालिका)
देवुश्का–देविका (कुमारी)
ज्यात्–जामात्
स्नोखा–स्नुषा (पुत्र-वधू)
स्वेकोर–श्वशुर (ससुर)
स्वेक्रोवि–श्वश्रु (सास)
झेना–जनि (स्त्री)
वृदोवा–विधवा
देवेर्–देवर
द्याद्या–दादा (चचा)
देद्–दादा (पितामह)
प्रेदेद्–परदादा
प्रियातेल्–प्रिय (मित्र)

व्यवसाय-वर्ग

ओखोता–आखेट
लोवुश्चा–लुब्धका (जालक)
लोव्चिइ–लुब्धक (शिकारी)
राना–रण (घाव)
पस्तुख–पातुक (मेषपाल)

वर्ण और धातु

ज्लातो–हरित (सोना)
ज़ोलोता–हरित (सोना)
ज़ेल्योनिइ–हिरण्य (हरा)
ज़ेलेन.–हरित (=हार)
ज्योल्तिइ–हरित (पीला, फारसी-ज़र्द)
स्वेत–श्वेत (प्रकाश)
सेद्रोइ–श्वेत (सफ़ेद बाल)
त्स्वेत्–श्वेत (रग)

धर्म-वर्ग

बोग्–भग (भगवान)
बोगिनिया–भगिनी (भगवती)
पोचितिये–पूजा (पूजना)

सख्या-वर्ग

एझे–एक =एझे (गोद नि, एकवार्षिकी)
द्वा–दो
त्रि–त्रीणि (तीन)
चेतिरे–चत्वारि (चार)
प्येत्.–पच
शेस्–षष् (छ)
सम्–सप्त (सात)
वोसेम्–अष्ट (आठ)
देस्यत्–दश (दस)
सोत्–शत (सौ)
स्तो–शत (सौ)

गृह-वर्ग

दिरा–दरि (छेद, गड्ढा)
दोम् (दम)–दम (गृह)
द्वेर्.–द्वार
द्वोर्–द्वार (आगन)
ज़ाल–शाल
ज़ाला–शाला
शलश्–शाला

उस समय के शब्दकोशमे किसी अनाजका नाम नही आया है, न कृषि-सबधी ही कोई शब्द है–इगो (युग) है, किंतु वह आरभमें जोडे (युगल)के अर्थमें रहा। इससे सूचित होता है, कि अभी लोग कृषिकी अवस्थामें नही पहुचे थे। हिंदी और ईरानी आर्य एक जनके रूपमे रहते समय कृषि से परचिति थे, क्योंकि जौ, गोधूम, माप (उडद)–जैसे धान्यवाची शब्द दोनोके शब्दकोशोंमें मौजूद हैं। गाय, भेड (अवि)–जैसे शब्द आर्य-शक शब्दावली के है, किंतु दूधके लिए समान शब्दका अभाव है, हालाकि आर्य-शब्दावलीमें क्षीर (सस्कृत), शीर (फारसी) मौजूद है। इससे जान पडता है, कि यदि वे पशु पालक थे तो भी कम-से-कम क्षीरके उपयोगके लिये पशुओका पालन आरभ नहीं हुआ था।

धातुओ और वर्णोके वाचक शब्दोकी जिस प्रकारकी अनिश्चितता और व्यवस्था है, उससे जान पडता है, कि अभी धातुओसे उनका परिचय न था।

हथियारोपर विचारनेसे जान पडता है, उनके पास काष्ट और पाषाणके हथियार थे, और ऐसे हथियारोके गढनेके लिये "तक्ष" धातुका प्रयोग होता था। पीछे हम "तक्ष" को सस्कृतमें जहा काठ गढनेके लिये रूढ पाते हैं, वहा रूसी "तेसात्" और "त्योसिवात्" पत्थरके गढनेमें रूढ पाया जाता है।

सब देखनेसे पता लगता है, कि जिस समय आर्य और शक पृथक् जन (कबीले)के रूपमें परिणत हुए, उस समय वह अभी कृषि और धातु से अपरिचित थे। शिकार (आखेट)के अतिरिक्त वह पशु पालन शायद ही जानते थे, जिसमें श्वक (कुत्ता) उनका अवश्य सहायक था। यह युग मध्य पीषाण या आरभिक नवपाषाण- युग रहा होगा। वह अपने निवासस्थानो को दम (दोम) कहते थे, जो प्राय पर्वत की दरि (गुह) हुआ करते थे। द्वार गुहाके द्वार और आगन दोनोके लिये प्रयुक्त होता था। दारु, अश्म और अस्थि के हथियारो वाले इन दरी-निवासियो को अग्निकी सहायता मिल चुकी थी, और इसकी मददसे अपना त्राण और भक्षण प्राप्त करते थे। सरदीसे बचनेके लिये अभी वह सलोम चमडे (कोझा)का व्यवहार करते थे, जिसे हड्डीकी सूइयोसे सी भी लेते थे--ऊनी कपडा अभी उन्हे मालम न था। मास उनका प्रधान भोजन था, जिसका वह पचन करके सूप भी बनाते थे, जिसकाअर्थ है, किसी प्रकारका मिट्टी का बर्तन वह बना सकते थे। जगली मधु उनका प्रिय भोजन था।

रुधिर-सबधियोमें नाता दूरतक चला गया था। मा, भाई-बहिन, बेटा-बेटी, देवर और विधवा ही नही स्नुषा (पुत्रवधू), ससुर और सास से भी परिचित थे, इससे यह भी स्पष्ट है, कि समाज मातसत्ताक नही पितृसत्ताक था। दम केवल घरके लिए ही नही परिवार और जनके लिए भी प्रयुक्त होता था, जिसका अधिपति दमक (दास्का) भी कहा जाता था। यही राजवाची शब्द दामाके नामसे पीछे के शको में राजाके लिये व्यवहृत होने लगा था।

आर्य-शक जनमें देवता (भग)का विचार आ चुका था। यह देवता अधिकतर सूर्य,अग्नि, जैसे प्रत्यक्ष देवता थे।

परिशिष्ट २

स्रोत ग्रंथ (१)

(भाग १ से भाग २ तककी छूट)

भाग १ अध्याय ५

१. जामेउत्तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२ स्वोर्निक मतेरिअलोफ अत्नोस्यश्चिवस्या क् इस्तोरिइ जोल्तोइ ओर्दी (लेनिनग्राद १९४१)
३. History of Mangols, 3 Vols : H. H. Howarth (London 1876-88)
४ जुब्दतुत्-तवारीख हाफिज अबरू (१२२६–८३ई०, अनुवादक के० एम० मैत्रा, लाहौर)
५ तारीख जहागुशा अलाउद्दीन अता मेलिक जुवैनी
६. तवकाते-नासिरी अबू-उमर मिनहाजुद्दीन उस्मान जुजजानी (११९३–१२०० ई०)
७. युआन् चाउ बि शि (१२४० ई०, सपादक ग० अ० कोजिन, लेनिनग्राद १९४१)
८. सल्जूकनामा . नासिरुद्दीन यहिया इब्न वीवी (१२८२–८५ ई०)
९. जफरनामा ' निजामुद्दीन शामी (१३९२–१४०० ई०)
१० शज्रतुल्-अत्राक
११. जोलोतया ओर्दा : अ० यु० याकुवोव्स्की
१२. Geschichte des goldeners Horde in Kiptchak · Hammer-Purgstall (Budapest 1840)

भाग १ अध्याय ३

१. जामेउत-तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२ History ef Mangols . H. H. Howarth
३. असह्हुत्-तवारीख अनोनेम इस्कदर
४. तवारीख जहागुशा जुवैनी

भाग १ अध्याय ४

क सिथ और स्लाव

१. एलिलन्स्त्वो इ इरान्स्त्वो ना युगे रोस्सिइ . म० इ० रोस्तोव्त्सेफ (पेत्रोग्राद १९१८)
२ Les Sycthes F. Bergmann (Halles 1860)
३ ओव्रजोवानिये द्रेव्ने रुस्स्कओ गसुदार्स्त्वा : व० ग० माव्रोदिन (लेनिनग्राद १९४५)
४. स्लाव्याने द्रव्नोस्ती न० स० दे.रज्ञाविन (मास्को १९४५)
५ On the Origin of the Antae : George Bernadsky (Journal of American Oriental Society Vol 59, PP. 56- 64

ख. सिथ सरमात

६ प्लेमैना येवरोपेइस्कोइ सरमातिइ · अ० द० उदाल्त्सोफे, सोवियेत्स्कया एत्नाग्राफिया १९४६।२ पृ० ४१–५०

७. मतेरिअली क् व्से सो युज्नोमु अर्खेआलोगिचेस्केम सोवेश्चन्यो (मास्को १९४५)
८ स्लाव्यान्स्कोये यजीकोज्नानिये अ॰ म॰ सेलिश्चेफ (लेनिन॰ १९४१)
९ इस्तोरिया वोल्गाइरिइ न॰ स॰ देर्झाविन् (लेनिन॰ १९४६)
१०. इस्तोरिचेस्कया ग्योग्राफिया · स॰ म॰ सेरेदोन (पीतरबुर्ग १९२६)
११. एन्त्सिक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया दू० व॰ यागिचा (पीतरबुर्ग १९०९)

ग. कियेफ रूस

१२ कियेव्स्कया रूस व॰ अ॰ ग्रेकोफ (मास्को १९४४)
१३ प्रोइस्खोझदेनिये रुस्कओ नरोदा : न॰ स॰ देर्झाविन् (मास्को १९४४)
१४ वोर्बा रुसि जा सोज्दानिये वयेवो गमुदास्तर्वा व॰ अ॰ ग्रेकोफ (मास्को १९४५
१५ इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
१६ इस्तोरिया रुस्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद १९४१)
१७ Histoire de Russie N Brian Chamnor (Paris 1929)
१८ स्लवो ओ पोल्कु इगोरयेवे (व्याख्या) : अ॰ स॰ ओर्लोफ (मास्को १९४६)
१९. ,, ,, (मूल) लेनिनग्राद १९४५)
२० La Lithuanie Michel Pietiewicz (Bruxelles 1832)
२१. History of U S S. R. 3 Vols (Moscow)
२२ Histoire de l' Empire Byzantin . Ch Dihl (Paris 1919)
२३. कियेव्स्कया रूस एम्॰ सी॰ गुशेव्स्की
२४. द्रेव्नेइशये अरव्स्कीये इज्वेस्तिये ओ कियेवे . अ॰ य॰ गर्कावी
२५. इज्वेस्तिया ओ खजाराख बुर्तासाख' वोल्गराख, मद्याराख, स्लाव्यानाख इ रुस्साख: अबुअली अहमद विन्-उमर इब्न-दस्त:

भाग २ अध्याय १

१. जामेउत्-तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई॰)
२. तवारीख वस्साफ शिहाबुद्दीन, अब्दुल्ला वस्साफ हजरत (१३००–२४ ई॰)
३ History of Bokhara Arminus Vambery (London 1873)
४ Heart of Asiea : E D Ross (London 1899)
५ History Mongol H H Howarth
६. ओचेर्क स्तोरिइ सेमिरेच्या व वर्तोल्द (वेर्नी १८९८)
७. तारीख रशीदी मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत, अनुवाद (London 1888)
७ History of U S S R 3 Vols (Mascow)
९. इस्कुस्त्वो स्रेद्निइ आजिइ . व॰ व॰ वेइमार्ना
१०. ,, ,, ,, व॰ व॰ दनिके, १९२७
११ समरकद प्रि॰ तिमूरे इ तिमूरिदाख अ॰ यु॰ याकूबोव्स्की (लेनिनग्राद, १९३३)
१२ Exploration in Turkistan, 2 Vols . R Pumpelly (Washington 1808)
१३. इस्तोरिया कुल्तुर्नोइ झिज्नि तुर्कस्ताना . व॰ व॰ बर्तोल्द (लेनिनग्राद, १९२७)
१४. इस्कुस्त्वो सोवेत्स्कओ उज्बेकिस्ताना व॰ व॰ चेपेलेफ (लेनिनग्राद १९३५)
१५ Voyages d' ibna. Batoutah

भाग २ अध्याय २

१. जामेउत्-तवारीख रशीदुद्दीन

२. „ इस्तोरिइ ज़ोलोतोइ ओर्दी (लेनिनग्राद, १९४१)

३. तवारीख वस्साफ वस्साफ (–३००–२८–)

४. तारीख-गुज़ीदा : हम्दुल्ला कज़वीनी (१२८१–१३२९–)

५. तारीख जहागुशा : अलाउद्दीन जुवैनी (१२२६–८३)

६ History of Mangol H. H Howarth

७ History of U S S. R 3 Vols

८. वोस्तोच्नो-इरान्स्किइ वोप्रोस : व० व० बर्तोल्द (इज्वेस्तिया रोस्सिस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी तोम II (पेत्रोग्राद, १९२२)

भाग २ अध्याय ३

१. ज़फरनामा निज़ामुद्दीन शामी (–१३९२–१४००–)

२. मत्ला सादैन व मज्मा बहैरन अब्दुर्रज्जाक समरकदी (१४१३–८२)

३ History of Bokhara A Vambery

४ Heart of Asia E D Ross

५ History of Mangol . H H Howarth

६. अलीशेर नवाई अ० क० बरोव्कोफ आदि, मास्को, १९४६,

७. Memoire de Baber (बाबरनामा) . बाबर (सपादक A Beveridge)

८. खुलासतुल्. अखबार खोदमीर

९ The Miniature Painting and Painters of Persia, India and Turkey (London, 1912

१० The Persion Miniature Paintings (London 1933)

११. गिरात्स्केओ इस्कुस्स्त्वो व् एपोखु अलीशेरा नवाई . अ० अ० सेमेनोफ

१२. सफरनामा नासिर खुसरो

१३. मशारिउल्-उश्शाक

१४. नवाई इ निज़ामी ये० ए० वेर्तेल्स, अलीशेर नवाई पृ ६८–९१

१५. खम्सा अलीशेर नवाई (ताशकद, १९०५)

१६. बाबरनामा—सपादक न० इल्मिन्स्की, कज़ान, १८५७

१७. Histoire des Mongols et des Tatars (Peterburg, 1871)

१८ The Mobaiel-lughat Mirza Mehdi Khan (Calcbtta, 1910)

१९. Literary History of Persia E Browne (London, 1919)

२० Le Meteriel du miniaturiste de l' enlumineur Iranien (Behzaad Taberzadeh)

२१ Musalmanic Painting XIIth–XVIIIth centbry · E Blochet Tran M Binijon (London, 1929)

२२ Painting in Islam Th Arnold (Oxford, 1924)

२३ Manuel de' Art Musalman G Migeons (Paris, 1907)

२४. मोनेती उलुगबेका, व० व० वर्तोल्द, इज्वे० रो० अकद० इस्त० म० कुल्तुरी तोम II

२५. तारीख रशीदी मिर्ज़ा मुहम्मद हैदर दुगलत (लदन १८८८)

२६. रौजतुस्सफा खोदमीर (बबई)

२७. इस्कुस्स्त्वो स्रेद्नेइ आज़िइ व० प० वेइमार्न (मास्को १९४०)

२८. तैमूर अभिलेख (वोस्तोकोवेदेनिया १९४०–४५)

२९. इरान्स्कोये इस्कुस्स्त्वो इ ओर्खेआलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)

२९. उलुगबेक इ येओ व्रेम्या . व० व० वर्तोल्द (१९१८)

३०. र्‌युन गोज्‌देस् दे क्लावियो
३१ सोवोर्नया मेचेत् तिमूरा . बीबी खानम, म० ये० मस्सोन् (ताशकद, १९२६)

भाग २ अध्याय ४

१ शैवानीनामा· मुहम्मद सालेह
२ Heart of Asia : E D Ross
३ History of Mangol : H H Howarfh
४ तारीख रशीदी मिर्जा हैदर
५ History of Bokhara · A Vambery

भाग २अध्याय ५

१ History of Bokhara A Vambery
२ Heart of Asia · E D Ross
३ History of Mongol : H H Howarth
४ ओ चेत् ओ कोमन्दिरोव्के व तुर्कस्ताने . व० व० वेर्तोल्द (इज्वेस्तिया रोस्स्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी, तोम II)

भाग २ अध्याय ६

१ किताबुल्. हिंद अबूरेहा अल्बेरुनी, अनुवादक सैयद असगरअली (अजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली, १९४१)

स्रोत ग्रंथ (२)

अबरू, हाफिज जुब्दुतुत्-तवारीख (अनुवादक के० एम० मैत्र, लाहौर)
अलवसन्दरोफ, व० अ० तुर्कमेनिया इ येये कुरोत्'निये बगास्त्वो (मास्को, १९३०)
अल्बेरुनी, अबूरेहा किताबुल् हिंद (अनुवादक सैयद असगर अली, अजुमन तरक्की उदू, दिल्ली १९४१)
इब्नदस्ता, अबअली अहमद बिन्-उमर इज्वेस्तिया ओ खजाराख, बुर्तासाख, बोल्गाराख, मद्याराख, स्लाव्यानाख इ रुस्साख
इब्नबीबी, नासिरुद्दीन यहिया सल्जूकनामा (१२८२-८५ ई०)
इस्कन्दर, अनोनेम् अमह्-हु-तवारीख
उदाल्त्सोफ, अ० द० प्लेमेना येव्रोपइस्किइ सरमातिइ (सोवियेत्स्कया एत्नाग्राफिया, १९४६/२)
ऐनी, सदरुद्दीन गुलामान (जो दास थे, अनुवादक राहुल सांकृत्यायन, पटना, १९४९)
" " दाखुन्दा " " प्रयाग, १९४९
" " बुखारा (अनुवादक—म. बोरोदिन, (मास्को, १९५२)
ओर्लोफ, अ० म० स्लवा ओ पोल्कु इगोरयेवे-व्याल्या (मास्को, १९४६)
ओम्प्रियालोफ इस्तोरिया रमात्वबोवानिया पेया वेलीकओ, (तोम् ५ पीतर्बुर्ग, १९१५-७१ ई०)

कजवीनी, हम्दुल्ला तारीख गुजीदा (१२८१–१३२९)
कुवेर, अ आजियात्स्कया रोस्सिया (मास्को, १९१०)
क्लाविवो, रुयुन् गोन्ज़्देम्
खान, मिर्जा मेहदी मब्निउल्–लुगात (कलकत्ता, १९१०)
खुसरो, नासिर सफरनामा
खोदमीर रौजतुस्सफा (बबई)
गर्कावी, अ० य० द्रेव्नेइशेये अरव्स्कोये इज्वेस्तिये ओ कियेवे।
ग्रुम. ग्झिमाइलो, ग. ये म. ये पुतेशेस्त्वियें व् जापद्निइ किताइ (पीतरबुर्ग, १९०१)
ग्रुशेव्स्की, म० स० कियेव्स्कया रूस
ग्रेकोफ, व० ,अ० कियेव्स्कया रूस (मास्को १९४४)
" " बोर्बा रूसि जा सोज्दानिये स्वेयवो गसुदार्स्त्वा (मास्को, १९४५)
जाकुविन्, इ० इ० नमेलेनिये समरस्कन्द्स्कोइ ओब्लास्ति (लेनिनग्राद, १९२६)
जुजजानी, मिन्हाजुद्दीन उस्मान (११९३–१२०० ई०) तबकातेनासिरी
जुवैनी, अलाउद्दीन अता-मैलिक तारीख जहागुशा
टेलर, अर्थर अन्थ्रपोलोजी
त्रेवर, क व कोव्रा इज नोइनुला (लेनिग्राद, १९४७)
देनिके, ब प. इस्स्कुस्त्वो स्रेद्नेइ आज़िइ (१९२७)
द्मित्रियेफ -कव्काज्स्की पो स्रेद्नेइ आजिइ (पीतरबुर्ग, १८९४)
देर्झाविन, न स इस्तोरिया बोल्गारिइ (लेनिनग्राद, १९४६)
" " पोइस्खोझ्देनिये रुस्कओ नरोदा (मास्को, १९४४)
" " स्लाव्याने व् द्रेव्नोस्ती (मास्को, १९४५)
नवई, अलीशेर खम्सा अलीशेर नवाई (ताशकद १९०५)
पोतेम्किन् व प इस्तोरिया दिप्लोमातिइ तोम (लेनिनग्राद, १९४५)
पोलोस्स्कया, न क् वप्रोसु ओ खिस्तियान्स्त्वे ना रुसि दो व्लादिमीरा (१९१७)
फेदोरोव्स्की, न म पो गरामि पुस्तिन्याम् स्रेद्नेइ आजिइ (मास्को, १९३७)
बरोव्कोफ, अ क अलीशेर नवाई (मास्को, १९४६)
बर्तोल्द, व प इस्तोरिया कुल्तुर्नोइ झिज्नि तुर्किस्तान (लेनिनग्राद, १९२७)
" " उलुगबेक इ येओ व्रेम्या (१९१८)
" " ओचेर्क इस्तोरिइ नरोदा (१९२८)
" " ओचेर्क इस्तोरिइ सेमिरे च्या (वेर्नी १८९८)
" " ओत्चेत् ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्किस्तान (इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरि, तोम् २, द० १–२२)
वर्तोल्द, व. व. मोनेती उलुगबेका (इज्वे रो अ इ ह म कु. तोम् २, पृ०१९०–२)
" " वोस्तोच्नो-इरान्स्किइ वोप्रोस (,, १९२२ तोम् २, पृ० ३६१–८८)
बाबर बाबरनामा, Memoire de Babar, (edit A Beveridge)
" सपादक न इल्मिन्स्की (कजान १८५७ ई०)
बिल्वस्सोफ इस्तोरिया एकातेरीनि व्तरोय (बर्लिन १९९०० ई०)
Bourgeois, E Manuel historique de politiqe etrangere (Paris, 1927)
Bergmann, F G Les Scythes (Halles 1860)

वेर्तेल्स, ये. ए नवाई इ निजामी अली शेर नवाई, पृ० ६८-९१ (लेनिनग्राद)
Browne, E. Literary History of Persia (London, 1919)
Blochet., E. Musalmanic Painting XII—XVIII century (Tran M Binijon, London, 1929)
मस्सोन, म. ये. रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (ताशकद, १९२६)
" " सोबोर्नया मेचेत् तिमूरा बीबी खानिम् (ताशकद, १९२६)
माग्रोदिन, व व ओत्रज्योतानिये द्रेव्ने रुस्स्कओ गसुदार्स्त्वा, (लेनिनग्राद, १९४५)
यागिचा, इ व. एन्तिसक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया (पीतरबुर्ग, १९०९)
याकुबोव्स्की, अ. यु जोलोतया ओर्दा
समरकद प्रि-तिमूरे इ तिमरिदाख (लेनिनग्राद, १९३३)
रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०) जामेउत् तवारीख
Rouire, A M F La rivalite anglo-russean XIX Siecle en Asie (Paris 1908)
Robzianko, Le regne de Rasputine (Paris, 1928)
Ross, E.D Heart of Asia (London, 1899)
रोस्तोव्त्सेफ, म इ एल्लिनस्त्वो इ इरान्स्त्वो ना युगे रोस्सिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)
रुवदोनिकस, व इ इस्तोरिया ससस र ४ तोम्
लेस्नेइ, ल व वोस्तानिये १९१६, गदा व् किर्गिजस्ताने (मास्को, १९३७)
लोगोफेत्, द न ना ग्रानित्साख स्रेद्नेइ आजिइ (पीतरबुग, १९०९)
वस्साफ, शहाबुद्दीन अब्दुल्ला तवारीख वस्साफ (१३००–२८ ई०)
वित्कोविच् व. किर्गिजिया (१९३८)
विलिस्की, स. ग यजीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरि (मास्को, १९१४)
वेइमार्न, व. व इस्स्कुस्त्वो स्रेद्निइ आजिइ
Vernadsky, G on the Origines of the Antae (Am. G. D. S., Vol II L, pp 56-64)
वोल्खोन्स्की, स आ देकाब्रिस्ताख पो सेमेइनिम् वोस्पोमिनानियाम्
शामी, निजामुद्दीन जफरनामा (१३९२–१४०० ई०)
समरकन्दी, अब्दुर्रज्जाक (१४१३–८२ ई०) मत्ला-सादैन व मज्मा-वहरैन
सालेह महम्मद शैबानीनामा
सिदिकत्रेकोफ, तुगेलबाइ तेमिर (उपन्यास, अनुवादक व रोझदेस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)
सेमेनोफ, अ अ गिरात्स्कओ इस्कुस्स्त्वो व् एपोख, अलीशेर नवाई
सेरेदोन, म म इस्तोरिचेस्कया ग्योग्राफिया (पीतरबुर्ग, १९२६)
मेल्लिरचेक, अ. म स्लाव्यान्स्कोये यजीकोज्नानिये (लेनिनग्राद १९४१)
सोलोवियेफ, म इस्तोरिया रोस्सिइ २९ तोम् (१८७९–८५)
Hanson, G F Europe and China (London 1931)
Hammer Purgstall Geschichte des goldenen Horde in Kiptchaka (Budapest, 1840)
Hardlicka Scaleten remains of Early mecn (Smithsonian M S: Pub Vol Lxxiii, pp 34,-49)
Howarth H H History of Mongol, 3 Vols (London, 1876-88)
० इरान्स्कोये इस्कुस्स्त्वा इ अर्खेओलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)

- इस्तोरिया रुस्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद, १९४१)
- इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
- ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिविरि १७ वी-१८ वी शती (मास्को, १९४६)
- किर्गिजिया, त्रुदी पेर्वोइ क.न्फ्रेन्तिसइ (लेनिनग्राद, १९३४)
- तुर्कस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग ३ तोम् (१८८०)
- तेमूरी अभिलेख (वोस्तोकोवेदेनिया, १९४०, १९४५)
- त्रुदी ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजी इस्तोरिया यजीक-लितेरातुरा (लेनिनग्राद, १९४०)
- द्वाद्त्सत् लेत् कजाकस्ताना (लेनिनग्राद, १९४०)
- Persian miniature Paintings (London, 1933)
- मतेरिअली क् ब्सेसोयुजनोमु अर्खेआलोगिचेस्केमु सोवेश्चन्यो (मास्को, १९४५)
- मशारिउल्उश्शाक
- युआन्, चाउ. वि. शि (सपादक ग. अ. कोजिन् लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
- रेवोल्युत्सिया व् स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकद, १९२९)
- वोस्तोकोवेदेनिया (लेनिनग्राद, १९४५)
- "शजरतुल् अतराक"
- सोवियत्स्कया एत्नोग्राफिया (१८३६/६-पृ० ११)
- स्बोर्निक मतेरिअलोफ अत्नोस्यश्चिरख्स्या क् इस्तोरिइ ज्रोल्तोइ ओर्दा (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)

Histoir edes Mongolse t lest atares . (Petersburg 1871)
History of Civil War in U S S R
History of U S S R 3 Vols (Moscow)

स्रोत ग्रंथ (३)

१. पमपेली, रा एक्सप्लोरेशन इन तुर्किस्तान, २ जिल्द
२ स्वेन्-चाङ यात्रा २ जिल्द
३ स्क्रिन, एफ० एच०, और रास, ई० डी० हार्ट आफ एसिया (१८९९ ई०)
४. बरर्तोल्द, वी तुर्किस्तान डौन टु द मगोल इन्वेजन (१९०० ई०)
५. होवर्थ एच० एस० हिस्ट्री आफ मगोल, ३ जिल्द (लदन, १८८० ई०)
६ पारकर, ई० एच० ए थौजड यर्स आफ दी टारटर्स (शाघाई, १८९५ ई०)
७ लेम्ब, हेराल्ड जिगिज खान (लदन, १९२८ ई०)
८. कार्पिनी, जौन आफ प्लानो ट्रैवल, (हक लइट सोसाइटी लदन १९००)
९ इब्न-बतूता, ट्रैवल, अनुवादक—दफे मेरी और साकी नेती, (पेरिस, १९५३ ई०)
१० मार्को पोलो ट्रैवल, अनुवादक हेनरी यूल (लदन, १९२१ ई०)
११. रूबरिक, विलियम ट्रैवल टू दी ईस्टर्न पार्टस आफ दी वर्ल्ड (हकलूइट सोसाइटी लदन, १९००)

१२ ईनोस्त्रान्तोफ, क खुन्नी ई गुन्नी (लेनिनग्राद, १९२६ ई०)
१३ वाम्बेरी अर्मिनस, हिस्ट्री आफ बुखारा (लदन, १८६३ ई०)
१४ वारर्तोल्द, व. ओचेर्क इस्तोरिइ सेमीरेच्या (लेनिनग्रा, १९२८ ई०)
१५ रियाल गिरार्द दे मेम्वार सुर ला आज्ञी सात्राल (पेरिस, १८७५ ई०)
१६ हैदर, मिर्जा तारीख रशीदी-ए हिस्ट्री आफ द मोगल आफ सेंट्रल एसिया, अनुवादक एलियस और रास ई दी (लदन, १९९५ ई०')
१७ वरर्ताल्द, व. व. ओचेर्क इस्तोरिइ तुर्कमन्स्कओ नरोद (१९२८ ई०)
१८ वेर्गमान, एफ० जी०, ले सित, (हाल्स, १८६० ई०)
१९ ए हिस्ट्री आफ दी यू० एस० एस० आर० ३ जिल्द (मास्को, १९४८ ई०)
२० दमोर्गन ज़ेक, लु' मानिते प्री-इस्नारिक (पेरिस, १९२४ ई०)
२१ मापेरो, जी. इस्त्वार आसियान दे प्यूप्ल दे लोरिया (पेरिस, १९०५ ई०)
२२ तार्न, डब्ल्यू, डब्ल्यू, द ग्रीक्स इन वैंक्ट्रिया एड इडिया (कैम्ब्रिज, १९३८ ई०)
२३ पीगुलेवस्कया न सिरिइस्किये इस्तोच्निकी प' इस्तोरिड नरोदोफ एस० एस० एस० एर (मस्क्वा, १९४१ ई०)
२४ त्रेवेर, क. व पाम्यात्निकी ग्रीको–वाख्त्रिइस्कवो इस्कुस्त्वा (मस्क्वा, १९४० ई०)
२५ त्रेवेर कमीला टेराकोटाज फ्राम अफ्रासियाव, (मास्को, १९३४ ई०)
२६ ई. अ ओर्वेली, ई० अ०, और त्रेवेर क. व सासानिद्स्किई मेतल (मस्क्वा, १९३५)
२७ ईरान्स्कये इस्कुस्त्वा इ आर्खेओलोगिआ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
२८ सत्यश्रवा, द शकाज इन इडिया (लाहौर १९४७ ई०)
२९ पीगुलेवस्कया न व विजन्तिया इ ईरान (मस्क्वा, १९४६ ई०)
३० रोस्तोव्त्सेफ, म० ई० एलिन्स्त्व इ ईरान्स्त्व ना युग रोसिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)
३१ ईरान्स्किये यजीकि, (अकदमिइ नावुक मस्क्वा, १९४५ ई०)
३२ चाइल्ड, गोर्डन द ब्रौंज एज (कैम्ब्रिज, १९३० ई०)
३३ चाइल्ड, गोर्डन, प्रोग्रेस एड आर्केआलोजी (लदन, १९४१ ई०)
३४ हैडन, ए० सी०, हिस्ट्री आफ अन्थ्रापोलोजी (लदन, १९४५ ई०)
३५ टेलर, ई० वी०, अन्थ्रापोलोजी, २ जिल्द (लदन, १९४६ ई०)
३६ मार, न. य यजीक इ इस्तोरिया (लेनिनग्राद, १९३६ ई०)
३७. योवान चाउ वी. सी , अनुवादक कोजिन, स. अ. (मस्क्वा, १९४१ ई०)
३८ वेर्ईमार्न व व इस्कुस्त्व स्रेदनेइ आजिइ (मस्क्वा, १९४० ई०)
३९ गिन्जवुर्ग, व. व. गोर्नियें ताजिकी (मस्क्वा १९३७, ई०)
४० इस्तोरिय दिप्लोमातिइ, ३ जिल्द (मस्क्वा, १९४५ ई०)
४१ सुनकोफ, व. ई. ओचेर्क प इस्तोरिइ कलोनिजात्स्इ सिविर (मस्क्वा, १९४६ ई०)
४२ मेरेदोनिन, स म. इस्तोरि चस्कया ग्योगराफिया (पेत्रोग्राद, १८१६ ई०)
४३ दमित्रीयेफ कफकाजस्की ल.ई , प रेद्नेइ आजिआ जापिस्की खुरोजनिका(पीतरवुर्ग, १८९४ ई०
४४ इस्तोरिआ रुस्कइ लितेरातुरि, अकदमी नाउक (मस्क्वा, १९४१ ई०)
४५. यागिच ई व , एन्सिक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिललोगिया, (सा पेतेरवुर्ग, १९०९) ई०
४६. यजीकोज्न नियें इ इस्तोरिया लितेरातुरि (मस्क्वा, १९१४ ई०)
४७ ग्रुम ग्रजीमाइलो, पुतेशस्त्वये व् ज़ापद्निइ किताई (पीतरवुर्ग, १९०१ ई०)
४८ प्रजेवाल्स्की, न० म० मगोलिया इ स्त्राना तुगतोफ (मस्क्वा १९४६, ई०)
४९ आर्खीआत्स्कया रोसिया (मस्क्वा, १९१० ई०)

५०, ग्रकोफ, व० द० कियेफ्स्कया रूस (मस्क्वा, १९४४ ई०)
५१, मावरोदिन, व० व०, ओवराजोवानिये द्रेव्न-रुस्कवो गसुदार्स्त्वं (लेनिनग्राद, १९४५ ई०)
५२ देर्झाविन, न० स० इस्तोरिया बोल्गारिइ, (मस्क्वा १९४६ ई०)
५३ देर्झाविन, न० स०, स्लाव्यिाने व् द्रेवनोस्ति (मस्क्वा, १९४५ ई०
५४ स्वॅ निर्क मातेरियालोफ क-इस्तोरिइ जोलोतोइ ओर्दि, जिल्द २ (मस्क्वा, १९४१) ई०
५५ बोरोफकोफ, अ० क०, सपादक अलीशेर नवाई (मस्क्वा, १९४६ ई०)
५६ हिस्ट्री आफ दी सिविल वार इन दी यू. एस. एस० आर. २ जिल्द (मास्को १९४६ ई०)
५७ बोआस, फ्राज और दूसरे, जेनरल अन्थ्रापोलोजी (न्यूयार्क, १९३८ ई०)
५८ वर्किट, एम० सी० आवर अर्ली एन्सेस्टर्स (कैम्ब्रिज, १९२९ ई०)
५९ त्रेवेर कमीला, एक्सकवेशन्स इन नार्दर्न मगोलिया (लेनिनग्राद, १९३२ ई० १)
६० इस्तोरिया रसिइ, चित्रमय (पीतरबुर्ग, १९०४ ई०)
६१ केन-शेन-वेग, रसो चाइनिज डिप्लोमेसी (शाघाई, १९२८ ई०)
६२ चूइमची ए शार्ट हिस्ट्री आफ् चाइनिज सिविलिजेशन (लदन १९४५ ई०)
६३ रिस्कुलोफ, तु. र वोस्तानिये १९१६ ग० व०, किर्गिजिस्ताने
६४ बेर्नस्ताम अ., तुरोक (मस्क्वा १९४६ ई०)
६५ ग्रेकोफ, व० द० बोर्बा रोसी जा सोज्दानिये स्वोयेवो गसुदार्स्त्व (मस्क्वा, १९४५ ई०)
६६ देर्झाविन, न० स० प्रोइस्खोज्दानिये रुस्कवो नरोदा (मस्क्वा, १९४४ ई०)
६७ लोगोफेत द० न० ना ग्रानित्साख स्रेद्नेइ अजीइ (पेतेरबुर्ग, १९०९ ई०)
६८ एफीमेन्को, प० प० पेर्वोबित्नीवे ओव् शेस्त्वा (लेनिनग्राद, १९३८ ई०)
६९ स्त्रूवे, व० व० इस्तोरिया द्रेव्नेओ वोस्तोका (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
७० शचनित्सर, या० व० इस्तोरिया पिस्मेन (पीतरबुर्ग, १९०३ ई०)
७१ बाचिन्स्की, न० म० आर्खित्रोक्तुर्निय पामेत्निकि तुर्कमेनिइ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
७२ अलेक्सन्द्रोफ, ब० अ० तुर्कमनिया इ येवो कूरोर्तनिये बगात्स्त्व (मस्क्वा, १९३० ई०)
७३ वेइमार्न, ब० व० इस्कुस्त्व स्रेद्नेइ आज़िइ (मस्क्वा, १९४० ई०)

सग्रह और अनुसधान-पत्रिकाये

१ सोव्येत्स्कये वोत्स्तोको-वेदनिये जिल्द I–III
२ सोव्येत्स्कया आर्खओलोगिया
३ सोवेत्स्कया एत्नोग्राफिया
४ वस्तनिक द्रेव्नेइ इस्तोरिइ
५ मतरियलि इ इस्स्लेदोवानिया प आर्खेओलोगिइ एस० एस० एस० एर०
६ क्रत्किये सोओव्श्चनिया
७ ताजिक्स्कया कम्प्लेक्सनया एक्सपदेत्सिया १९३२ ई०
८ ताजिक्स्के-पामिर्स्कया एक्सपेदित्सिया १९३५ ई०
९. कराकल्पकिया
१० इस्तोरिचेस्किये जापिस्की
११ ओजेरो इस्सिक्कुल (मस्क्वा, १९३५ ई०),
१२. किर्गिजिया, अकदमि नाउक (लेनिनग्राद, १९३४ ई०)
१३ इजवेस्तिया रोसिइस्कोइ अकदेमिया (पीतरबर्ग, १९२२ ई०)

१४. नाउच्नये इतोगी ताजिक्स्को–पामिर्स्कोइ एक्सपदित्सि (मस्क्वा, १९३६ ई०)
१५ उज्वेकिस्तान त्रदि इ मातरियलि पर्वोइ कन्फरन्सिइ प इजुचनियू प्रोएजवोदित्नीख सील उज्व-किस्ताना देकाब्र्या १९३२ (लेनिनग्राद, १९३४ ई०)
१६ मातेरियलि क. व्सेसोयुज्नोमु आर्खओलोगिचेस्कोमू सोवश्चेनीयु (मस्क्वा, १९४५ ई०)
१७ नासलनिये समरकदस्कोइ ओवलास्ति (लनिनग्राद, १९२६ ई०)
१८ एपिग्राफिका वोस्तोका

परिशिष्ट ३

नामानुक्रमणी

अइगिर—२९७
अइबुगिर—४८१
(देखो एबुगिर भी)
अउसकाकुल—११
अकार—५६
अककु गात—२८०
अक-ओर्दू—१८ (श्वेत-ओर्दू), ४२, ५०
अककला—४८४
अककामिश—४८३
अककियक—३४९
अककुयाश—३१०
अकखोजा—५१
अकताई खान—२०१
अकताग—५९ (श्वेत-ओर्द), ३६१
अकत्यूबिन्स्क—४१५
अकदमी—२६५
अकनजर—६९
अकबर—१११, ११६, १५४, १८०, १८१, १८३, १८८, २१९, २२४, ३१३, ३२१, ३२४, ४४४, ५४६ (–तुकसाबा वासमची)
अकबास—३०२
अकबुका—३२
अकबेत—५१६ (उज्बेक)
अकमस्जिद (पेरोव्स्की बदर)—३७८ (अकमेचेत), ३७९, ४२६, ४३०, ४३२, ४७४, ४७७
अकयूर्त—१६६, २७५
अकरमान—३६८
अक-रबात—४९८
अकराम—५२६ (मुफ्ती हाजी)
अक-शक्काल—२१० (जेठ), ४२५ (=अकसक्काल), ४४५, ४७०
अकसाई—३११
अकसी—१७६, १८८, २८१, ३०५, ३०७, ३०८, ४४२
अक्सू—२९६, ३०२, ३०३, ३०४, ३०७ (पू० तुर्किस्तान), ३०८, ३०९, ३१०, ३३१, ४२५
अक्कल (ओसी)—४८९, ४९०, ४९२ (तेक्का), ४९९ (में अश्काबाद)
अक्तूबर-क्रांति—५१० ,५१८ (=बोल्शेविक-क्रांति), ४२४, ५२६, ५४९
अक्तूबरी—४१०
अक्त्युबिन्स्क—५३४
अखताची—३०५
अखताना—५१५ (उज्बेक)
अखतूबे—५१
अखलकला—३६८
अखसू—१६६
अखुन—३१६, ३५८
अखुन्दजादा—४७५
अखोत्स्क—२४० (शिकारवाला), २४४, २७१, ३८१
अख्तेखोजा—४७१
अगतमा—४४५
अगताई—२००
अगरका—३१७
अगस्तस्—१०९, २४९
अगामइली—५१६ (उज्बेक)
अगिर—५१५ (उज्बेक)
अचकियान—४२६
अचमइली—५१६ (उज्बेक)
अज—५१६ (उज्बेक)
अजक—५६ (अजक जेर्नुक), ५९, ६०, ६२ (क्रिमिया), ६४, १५१ (=अजाक)
अजीज—४३
अजीम—२०५
अजोफ—३५, ७४, ७७, २२९, २४७, २४८, २४९, २५१, २८९, ४०९
अतबाश—२९७, ३०१, ३१०
अतरक—४९४
अतलातिक समुद्र—३७२
अताकरागुई—५८
अताकुर—२९७
अताजान—४७८ (०मुराद), ४८५ (०तैमूर, ०त्युरा)
अतालीक—१४९, १९२, ४३९ (मुख्य परामर्शक), ४८०, ८६९
अताबेग (अध्यापक, संरक्षक)—३१२
अतिक—११२
"अतेचेस्तत्वेन्निये जापिस्की"—३९२

अत्तार—१४७
अत्तिला—७२
अत्लसोफ—२५२, २५३
अदकली—२०० (सैनिक)
अदल्फस—२२५
अदामत—२९१
अदाशेफ—१०७
अदेस्सा—३८०, ३८३, ३९१
अद्नोदेरेव्की—७७ (एकदारुक डोंगी)
अद्रियातिक—६, २४
अद्रियानोपोल—३४, ५९,४११
अधिकार-पत्र—९३
अनवर पाशा—५२६, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५
अनस्तासिया—११५
अनहाल्ट-ज्वर्स्त—२५८
अनाकरागुई—५८
अनादिर—२५२
अनाम—७
अनी—६
अन्नीम इसकदर—४१, ४३, ५१ (इस्कदर भी)
अनुशा—१९० (खान), २११ (अनुशाह)
अनोइर्चेको—३७६
अन्त (जन)—७१-७३, ९३
अनराष्ट्रीयतावादी—५९३
अन्तर्वेद—५५, १२१, १२२, १२८, १३२, १३४, १६५, २७७, ३०६, ३५२, ५३६ (वक्षु-सिरका द्वाबा, मावरा-उन-नह्र)
अनर्-मगोलिया—३२८
अन्धनी—१९०
अधकार-भूमि—३७, ७३,२८
अन्दगुई—१३५ (अदखोई), १८६, १९८, ४५१, ४८१, १९१, १९२, ४६१, ४६३ (अदगुद)
अदराव—१३७, १७९, ४६०
अदा—१३०, १३१ (परममित्र)
अन्दिजान—५५, १५३, १६१ (फरगानामें), १६४, १७५, १७६, १८०, २८०, २८१, ३०२, ३०४, ३०६, ३०८, ३०९, ३१०, ३१२, ३३६, ३९४, ४२१, ४२२, ४२७, ४३१, ४३५, ४३६, ४३७, ४९९, ५१९-२२
आन्द्रेइ—२७, ५१ (वेनेरिस), ९१, ३१८ (=आद्रेइ)
अद्रोनिकस्—३७
अन्ना—८३, १०७, २५७, ४६७ (रानी)
"अन्ना करेनिना"—३९३
अन्नादे—२५५
"अपराध और दड"—३९२
अप्पक—३२८ (खोजा), ३३३
अफगान—१९२, १९४ ४२२, ४४२, ४४६, ४९८ (वस्ती)
अफगानिस्तान—६, ३७, ४७, १२१, १३२, १३४, १३७, १४७, १५०, १५९, १७२, ३०४, ३४७, ३७८, ३८८, ३९०, ४०१, ४१५, ४५० (-युद्ध), ४५३, ४६२, ४७४, ४८८, ४९७, ४९८, ५२०, ५२५, ५२७, ५४१, ५४४, ५४५, ५४६, ५५१
अफनासी—२०१
अफशर—४२५ (अफ्सर), ५६० (तुर्कमान)
अफ्रीका—१८१, ३७२ ४०८, ४११
अबकस—२०१
अबका—८, २८, २९, ३१ (खान), १३०, १३१, १३२, १३८, १८३, १८८, २८५
अवखाजिया—३९
अवदावाद—४०
अवनोस्कीं—३९० (विक्तर)
अवरकुन—१०४
अवलाई (मध्य-ओर्दू)—३३६, ३४१, ३६१ (अवलइ)
अवलिन—२४१
अवलेक—१९६
अवलै—३१५ (० गिराई), ३३७ (०खान)
अवादुल—२८५
अवालक—११२, ११५
अविश्का—१२८
अवीवर्द—१८५, १९९, २०१, २०२, २०३, २०४, ४६७
अवुल्खैर—१५६, १५९ (खान)' १६५, १९६, १९७, २७५, २९१, ३०९, ३१७, ३१८, ३४३, ३४४, ४६७ (लघु-ओर्दू)
अवुल्गाज़ी—१९०, २०६, २०७(इतिहासकार), २०८, २०९, २८१, ३५६, ३५७, ४४०,४६८(द्वितीय खान), ४६९
अवुल्फज़्ल—१४७ (अकवरके प्रधान मत्री)
अवुल्फतह—१६७
अवुल्-फेदा—४७
अवुल्फैज़—१९२, १९३, ३४९, ४६६, ४६९ (खान)
अवुल्मन्सूर—१६६
अवुल्मुहम्मद—२०३, ४६८
अवूतालिव—१८७
अवूवकर—६०, ६६
अवू-याकव-यूसुफ—१२५
अव-सईद—२३, ६३, १२१, १८५, १८७, १४९, १५९ (खान, वावरका दादा), १६० १६५, १६६, १७७ १७८,

३०२ (मिर्जा), ३०३
अब्दाली—१९२
अब्दुर्रज्जाक—६४ (समरकदी), १५०, १५६ १५७
अब्दुर्रशीद—२७८
अब्दुर्रहमान, मुल्ला—४९२ (तेक्का)
अब्दुर्रहमानोफ—५३३
अब्दुर्रहीम खान—४७२
अब्दुल अजीज—१९०, २१० (खान)
अब्दुल अहद—४५३
अब्दुल्करीम—४७१, ४७२
अब्दुल-मोमिन—१८०, १८१, १८२, १९४, २०४
अब्दुल्लतीफ—१५८, १५९, १७९
अब्दुल्ला—१३६, १४६, १५९, १६१ (खान), १६५, १७९ (प्रथम), १८० (२), १८२, १८३ (द्वितीय), २०४, २८१, ३३१ (तर्खनबेग), ४७७ (खीवा), ४८६ (मेहतर)
अब्दुस्समद—४४६ (खा), ४५० (नायव–), ५२६ (जदीद)
अब्बास—१८१, १८२, १८३, १८५, १८६, १८७, २०७, २०९ (प्रथम), ४९०, (मिर्जा, शाह)
अब्बासी—१२१
अब्रामोफ (जेनरल)—४५३, ४५७, ४५८
अमनगेल्दी—४१५
अमलाकदार—४५३
अमस—१०८
अमामची—३०३, ३०४ (शैशी=अमासाजी)
अमीन—१७७ (मिर्जा), १९६, ४७६ (खान)
अमीनियाना—४३३
अमीनेक—१९६
अमीर—११३, १४५, १४८, १५०, ४२५, ५२३ (देखो बुखाराके अमीर)
अमीरअली (तुर्कमान)—४७१
अमीरवली—५४, ५५
"अमीरुल् मोमिनीन"—४४६ मुसलमानोका प्रमुख)
"अमीरोका घोमला"—३९२
अमुरसना—२६३, ३३५, ३३६, ३४६, ४६०
अमूर—३८१
अमेरिका—९, २४०, २५९, २६३, ३६६ ३७२, ५०५ (युद्धमें), ३९७ (सयुक्त राष्ट्र), ४००, ५५०
"अम्बन" (महामात्य)—३२४
अम्बर—७५
अयहन—२४३
अयागुज—५३०
अरक—१६५
अरक्चेयेफ—३६५, ३७१, ३७४, ३७५
अरखगेल्स्क—२२६, २६५
अरगन—५१४ (उज्बेक)
अरगन—४६ (खान), १३१, १४३, ३८१, ५३० (नदी)
अरग—४६५
अरतक—१६७, २९८ (कुत)
अरपा—३६ (खान) १३२, २९७, ३१० (-उपत्यका)
अरब—३१, ७४, ८१, ८९, १०३, २०४, २०६, ३०१, ४९३ (घोडे), ५१७, ५३६, ५३९, ५४१, ५४८
अरब मुहम्मद—३३८
अरबशाह—१५३, ३१५ (शाह), ३३८ (मुहम्मद),
अरबाजी—२००
अरबात—३०९
अरबी—१५४, ५१४ (उज्बेक) ५२९
अरलत—१३५, ५१४ (उज्बेक)
अरसलन—१३८ (खान), २७९ (अर्सलन), २८९ (बेग)
अरसू—३२४
अरा—३२४
अराक तेमर—१६६
अराजकतावादी—५५०
अराजखान—४९० (किला–)
अराजान—२९८
अराल (सागर)—६, ६२, १९६, २०६, २०९, २१०, २९०, २९१, ३५२, ३८७, ४३०, ४६४, ४६७, ४७३, ४८६, ४८९, ५२८, ५३५, ५३७, ५५५
अरालद्वीप—४७१
अराली—३५३, ४६१ ४६६
अराल्स्क—३५८, ३७९, ४२९, ४३०, ४७६ ५३०
अरिकबुगा—८, १२८, १२९, १४३ (=अरिगव का)
अरिक्षलार—३११
अरिग—३०८ (मुगोलिस्तान)
अरिदमियका—११३, ११४
अरिम—२७९, ५३०
अरिस्तनवेल—४८२
अर्क—१६५ (=अरक), १९०
अर्जमस—२३७
अर्ज म—८, १०४, २०३
अर्दहान—३८६, ३८७
अर्व-दास—९४, २१८, २३६, ३८५
अर्पचन (रत्तन)—३३१ ३५० (=अर्वतन भी)
अर्मनी—६, ३९, १२५, १२७, १४१, १६५ (अर्मेनिया), २५१, २६३, ५१२ (गण-

राज्य), ५५१, ५५४
अर्रान—२८, ३१, ३३, ५५ (द० काकेशसमें नगर), १४१, १४५, १४६
अर्ऊई पहाड—४३७
अलक—११६
अलकनदा—१५२
अलकमदरिया—१३५
अल्कुसुना—५६
अलगू—८, १२८, १२०
अलचिन—५१६ (उज्बेक), ५३०
अलची—२९
अलजई—३०
अलतिन-एमेल—३३१
अलतुन-क्युरगे—२९८
अलदल—२८०
अल्वर्ट—९५
अलवाजीन—२४२, २४३, २५५
अलवानिया—२३
अलमाती—२९९
अलरा (खान)—५३५
अलमस्-लोरेन—४११
अलाउद्दीन—१३४, १४१, १४६, १५७, १५८
अलाउलमुल्क—१३५
अलाकामक—१२७
अलाची (बहादुर)—३०७ (=अलची)
अलाताउ—१२७, २७७ (=अलताग) ३११, ५३५
अलान—४८४
अलानिया—२६
अलाबुग—३०१
अलास्का—१५३
अलितमुदर—४५१
अलिमन—२३६
अली—१०३, १८३, २००, ३१५ (ओगलान), ५४४ (उराक)
अली—५७ (-बेक), १०३, १३६ (-सुल्तान), १५० (-मोरैयद), १८३, २००, ३१५ (-ओगलोन), २५५ (-मुल), ४६८ (-कुल्ली), ५४४ (-उराक)
अलेक्सान्द्र—३४ (त्वेर), ९५, ९७, ३४९, ४७८ (जार), २६८ (१), २७१, ३७०, ३९३ (३), ४९५ (२)
अलेक्सान्द्र (उलियानोफ)—३९५
अलेक्सान्द्रोवयेव्स्क—४६५
अलेक्सी—९८, १०७, २३५ (अलेक्सांद्र), २४१, २५१, २५२, ४१९
अलेक्सी नेवस्की—२१, २७, ९५, ९६ (=अलेक्सांद्र)
अलेक्साद्रोवा-स्लवोदोवा—१०८, १०९
अलेक्सेन्द्र (जारिना)—३९४
अलेप्पो—१८० (=हलब)
अलेफ—१०३
अलोई—२५४
अल्कोगिदना—२९७
अल्टीमेटम—५२२, ५२४, ५५२, ५५४
अल्तन—३१५ (=सुवर्ण)
अल्तन खान—२२७, ३२१, ३२४, ३२६, ३३८
अल्ता-ओर्दू—२११
अल्ताई—४८, १२१, १३२, २३४, २६४, २६७, २७१, ३२१, ३२६, ३३८, ३७९, ३८७, ४०१, ४८९, ५२८, ५३०, ५३५
अल्ताकुल—११०
अल्ती—४०२ ४८० (-कुतुक), ५३०, (अता)
अल्तून-कला—४२६
अल्त्वीन—१०३
अल्त्शिन—३२४
अल्पअर्सलन—३१८
अल्पमास—४८४
अल्वानिया—४११
अल्माअता—२९८, ३३४ (सेवका वाप) ३६१, ३७९, ४१५, ५३०, (वैनी,) ५३२, ५३३ ५३४
आल्मालिक—५६, १२१, १२२, १२५, १२६, १२८, १२९, १३४, १३५, १३७, १३९, १४९, २९६, २९८
अल्मौत—१३९
अल्लाकुल खान—४७३
अल्लावर्दी जौज़—४५९
अल्लामदार—१५३
अवरत—५१४ (उज्बेक)
अवशा—५४७ (तुर्कमान)
अवानेक खान—१७८, २००
अवार—२८४
अश्वाकुम—२९
अशगर—१८७
अशुरबेक—४६४, ४६५, ५६५ (=असुर बेक)
अश्कखाशी—५४४
अश्कावाद—३८८, ४९३, ४९८ ४९९, ५४५, ५५१, ५५५
असदुल्ला—४३२ (डाक्टर)
असमानक—३१८
असहयोग-आदोलन—५ ०
असेन—६ (ओसेन)
अस्कोल्द—७५, ७७
अस्त्राखान—५१, १००, १०८ १६७, १८५, २०५, २२५, २२६, २३६, २३७, २५०, २८७, २८८, २९१, ३३८, ३३९, ३६०, ३६९, ४०३

४२०, ४४४, ४६५, ४७३, ४७४, ४७५
अस्त्राबाद—१५४, १५६, १६१, १६८, १७६, २००, २०३, २०४, ४६५, ४७०, ४९०
अस्पहान—३, १०४, १५०, १५४, २०९
अस्पेराई—२०० (अस्त्राबाद के समीप)
अस्फन्दयार—२०४, २०६, २०७ (=इस्फन्दयार)
अस्साकी—४३७
अहमद—६७, १००, १२६, १३०, १४३ (-तगूदर), १४७, १५३ १६०, १९१ (२), २७६, ३०४–५ (-मिर्जा)
अहमदशाह—१९४, ३४७,४३९, ४४१, ४४२ (अब्दाली)
अहरार(खोजा)—१५३, १६१, १८३
अहोम—१४
अका—५५ (-तुरा), ६३
अगा-त्यूरी—२९७, २९८
अगारा—२३८, २७२, ३२१
अगोरा—१५२
अंग्रेज—२२२, २४०, ३९०, ४४४, ४९७(से तनातनी), ४९८, ५१९, ५२०, ५२२, ५३०, ५४२, ५५१, ५५२, ५५४
आइतोफ (लेफ्टनेंट)—४७६
आइशा—२००
आइने-सिकदरी—१६१
आकचा—१९४
आक्सफोर्ड—१५८
आक्सू—५४४
आगरा—१७७, ३१३
आगाखान—१४०
आगामुहम्मद–४४२ (तुर्कमान), ४९० (काजारवंश-संस्थापक)
आगा यूसुफ—४७२
आगिस—२००
आगूज—५७, २८२ (तुर्क), ४८९ (तुर्कमान)
आजुरबाइजान—३९, ५४, ६२, १२१, १३१, १४५, १४६, १५०, १६०, १६४, १७२, १७६, ३०१, ३७२, ३७७, ५१२, ५४८ (तुर्की), ५५४,
आतमन (सरदार)—११०, २२३, २३०, २३५, २६१, ५२५ (=अतमन)
आत्माराम दीवानबेगी—४६०
आदमक्रिल्गन—४८२
"आधारिक राज्यविधान–"४०४
आफताबचा अब्दुर्रहमान—४३४, ४३५
आफदी—४७८ (मुल्ला)
आफरीकद—२८०
आबदरा—१७४
आबुदन—४५८
आबेल्दिन—५३७
आबेसफेद—५३९ (गाव)
आमिन-संधि—३६६
आमू—१२१, १३०, १७३, १८९, २०५, ३३४, ४८२, ४९९ (=वक्षु), ५३५, ५५०, ५५५(=आमूदरिया)
आमूर—२४०, २४२, २७१, ३८८
आमूर्स्की—३८९ (ग्राफ)
आमूल—१०३ (=चारजूय)
आम्सटर्डम—२४८
आयुका—२३५, २५३, ३३२ (खान)
आयुर्वलीभद्र—१५
आरदोक—२०५
आरजित्जान—१०८
आरिस—५६
"आरोरा"—५०९ (क्रूज़र)
आर्क—२११, ५२६ (किला), ५२७ (बुखारा)
आर्कलैम्प—३९६
आर्खेंगेल्स्क—३६५
आर्थिक संकट—३९३
आर्य—५१६, ५३६, ५४१, ५४८
आलक—३३० (अलाताउ)
आलमखान—५२६ (अंतिम अमीर बुखारा), ५४१, ५४८
आलाखाना—५३९ (यगनावमे)
आलान—१८
आलेस—१११
आल्प—२७०
आवक—६
आवा—७ (वर्मा)
आवार—७२, ७३
आस—२८४
आसफुद्दौला—४९० (खुरासान)
आसाम—१४
आसियावी—४६२
आर्स्टलिज (वोहीमिया)—३६६, ३६७ (चेकोस्लोवाकिया)
आस्ट्रिया—२४८, २५९, २६०, २६३, २६६, २६९, ३८०, ३८६, ४०७, ४११, ४१२ (-युवराज), ४१३
आस्ट्रेलिया—२४४
आहगर—१२९
आहनीदरवाजा–१७० (लौहद्वार)
इइगदेर—५४७ (तुर्कमान)
इइंवे—५४७ (तुर्कमान)
इक—५९ (शकमाराकी शाखा)
इकान—३५३
इकोनियम्—१८३
"इखलास"—१६०

इख्तियार —४९२ (तेक्का)
इगर्दी—४८३
इगदेर—५४७ (तुर्कमान)
इगलान—५१५ (उज्बेक)
इगेल्स्त्रोमन—३५५, ३५६, ३५७
इग्नातियेफ—३८९, ३९० ४७८ (जेनरल)
इचनीबुचनी—२९८
इज्ज़तुल्ला–४६०(इतिहासकार), ४६२
इज़्वोर्स्क—७५
"इज्व्रान्नया रादा'—१०७
इज्माइलोवो—२४६
इज्यास्लाव—८६
इड्स—२५३
इनशकी—२००
इताली—३९, २६६, २६८, २६९, ३७३, ३७९ ३८२, ४११, ४१२
इतिहास—१५६, २०६- ८, ३०४ (-लेखक), ४२५ (-कार)
इन्तू—१२८ (इन्दू)
इतेल्मेन—२७१
इत्तिल (वोल्गा नदी)—२०, २६, ३०, ३१, ७१, ७३, ७४, ७५, ७९, ८०
"इत्तिफाक"(=लीग)—५१८, ५२१, ५२३
इदिक—४९, ५६ (उज्बेक), ६२, ६३, ६८, २८६
इनफ़ान—५२०
इनारी—२८९ (नारी समान)
इन्नोर्मेन—२६
"इन्स्पेक्टर जेनरल'—३८८
इपविन—६३ (निविर)
इपोर—६३
इब्राहीम—७३, १५६, १६६, ५३९ (सफर), ५४६
(-गल्लू वासमची)
इब्न-फज़्लान—७९
इब्न बतूता—३६, १३४, १३५
इब्न-यमीन—१४७
इब्न-हौकल—७३
इमानोफ–५३१ (अमनगेल्दी), ५३२
इमाम—१७४, १७७, १८१ (रज़ा), १८५, २०८ (-कुल्ली) ३०४ (-जाफर)
इमिल—२६, ३२७ (नदी)
इरबेक—४६८
इरलात—३०७
इरसारी—१९९, २००
इराक—३३, ३७ (केइलखान), १२४, १४७, १५०, ३०१, ३०३
इरिना—११५
इर्किवइ—४८१, ४८२
इर्कुत्स्क—२३८, २४२, ३२४, ५३२
इर्गिच—३४१
इर्जइ—४५२
इर्ताशअली ईनक–४८५, ४८६
इर्तिश (नदी)—११०, ११२, ११३, ११४, ११५, १३२, १३३, २३५, २५१, २७१, २७९, २९६, २९८, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२५, ३२६, ३२८, ३३०, ३३३, ३३६, ३३८, ३४५, ५३०, ५३४, ५३५
इल-अलरगू—१२५
इलखान—२८, ३२, १३०, १३२, १३३, १३९, १४३, १६७, २८५ (ईरानी)
इलबक—३१५
इल्वर्स—१९३, १९६, १९०, २०६, २०७, २०८
इला—१२५
इलाक—१६८
इलान्चुक—१८ (सर्पसदृश), २७९
इलालबालिक—१२७
इलिकदई—१३४
इलिकमिस—५६
इलित—३२७
इलिबै—४८४
इलिमिश—५६
इलिम्स्क—२४३
इलिया—६४, ३९२,
इलियास—१३७ (खोजा), १४९
इलिश—१११
इली–१२१ (इली नदी), १२५, १२७, १२८, १३२, १३३, २६४, २९७, २९८, ३०० ३०४, ३२५, ३२८, ३३१, ३३३, ३३४, ३३६, ३३७, ३४०, ३४१, ३४२, ३४७, ३६०, ३६०, ३७८ (देखो इलि भी)
इलेत्स्क—३५७
इल्तज़ार—४४४, ४७० (खान)
इल्तेइज्ज़े—४८१, ४८४
इल्दिर नौयन—१२४
इल्वर्सखान—४६७
इल्मन—७५, ७७, ९३
इवान—३९, ४२ (मास्को), ५२, ९७ (प्रथम, द्वितीय) ९९-१०० (तृतीय), १०६ (चतुर्थ), १०७, १०९, ११५ १३३, २२०, २२७, २३४, २८८, ३३३ ३९२
इवान—२५० (-माज़ेपा), ३१६ (-म्यारजोइ), ३३१ (चेरदोफ)
इवानगोरद—१०० (इवान-नगरी), ११६, ४१३
इवान सुसानिन—३८५
"इवानोफ—२९२, ३८४, ४८६" (लेफ्टनेंट), ४१७ (जेनरल)
इवानोवो- वोज्नेसेन्स्क—५०८

इवेंकी—२७१
इशकासिम—४६२
इशकिली—५१६ (उज्वेक)
इशवरदी—११३
इशमा—१११
"इशरतखाना—१६०"
इशिकली—५६१ (उज्वेक)
इशिम—११२, ११३, ११४, १८२, २८१, ३१५, ३१७, ३१८, ३१९, ३२५, ३२७ (खान), ३४१, ३५५
"इश्तेराक"—२८९
इसनवुगा—१६६, २७५ (=इस्सन बुगा)
इसायेफ—५२५, ५३३
इसुगो-स्कोय—२२४
इसंत— ३१७
इस्कन्दर—१५८, १७९, १८० (-खान), ४५८ (-कुल, सरोवर)
"इस्क्रा" (=चिनगारी)–३९७
इस्तखर—१६१
इस्तम्बूल–१०४ (समुद्र), ४७८
इस्त्रा—७३
"इस्फारा"—४२१
इस्मत—१५८
इस्माइलोफ—२५४
इस्माईल–१४९, १६३, १७१, १७२, १७३, १८३, १९४, १९९, २६३, ३०४, ३०९, ३२८
इस्माईली—१३९, १४०
इसराईली–१५७ (=यहूदी)
इस्लाम—३४, १२४, ३१६, ३४६, ४४६ (-खलीफा), ५२२
इस्सन—३२
इस्सिकुल—१२५, १३३, २७५, २९५, २९७, २९८ (सरोव०), ३०१, ३०२, ३१०, ३१३, ३३०, ३३१, ३३२, ४५२, ५३५
इस्सून—१२६
इंगलैंड—३९, २२५, २२६, २४८, २५६, २६३, २६९, ३६६, ३७७, ३८०, ३८७, ४०६, ४०७, ४०८, ४१२, ४१४, ४७५, ४९७, ५०३, ५५०, ५५४
इंग्रिया— २४१
इंगलिश-चैनल—२४
इंजन—२६७
इंवा—१०२ (यत्रा)
ईकान—२४६
ईगर -७८, ७९ (रुरिक-पुत्र), ८३, ८७, ८९, ९०
"ईगर सेना-गाथा"—८९
ईतल—२७
ईनक–१९७ (सरदार), ४६९ (प्रधान-मंत्री)
ईवक—३१५
ईरान—७, ३३, ५५, ७१, ७५, १००, ११०, १२१, १३२, १४१ १५०, १५९, १७३, १८३, २३६, २५१, २७१, ३७१, ४०५, ४०६, ४०७, ४६६, ४८९, ४९८, ५२०, ५२५, ५३५, ५५४ (का तुर्कमानियापर दावा), ५५५
ईरान-इराक—१३२, १४५
ईरानी—११० (शाह), १५३, १७७, १९२, ४०७ (क्रांति), ४५०, ४९४, ४९६, ५१६, ५१९, ५३९ (भाषावश), ५४१, ५४२, ५४८, ५५१
ईलक—४७८
ईवे—५४७ (तुर्कमान)
ईशान—१५३ (=पीर, गुरु, आखन)
ईशा नकीव–४४३ (-ख्वाजा), ५४३ (-औलिया, शेख, -सुल्तान), ५४४-४५ (-सुल्तान, सुलेमान), ५५३ (-उराक, सदूर)
ईसन यैसी—३००, ३०१, ३०२
ईसाइकी सबोर—३७५
ईसाई–३८, ८३, १०४, १२५, ३१६, ३७२, ४४२
ईस्ट इंडिया कंपनी—११०, २६८, ४४९
उइगुर–९ (सिरियावाली), ३०, ५७ (लिपि), १२१ (डाडा), १२४, १६१, १६७, २०२, २०८, ४७०, ५१६ (उज्वेक), ५१५, ५२९, ५३०, ५४८ (चगताई तुर्क)
उइगुर नैमन—५१४ (उज्वेक)
उइची—५१५, (उज्वेक)
उइशुन—५१५ (उज्वेक), ५३० (उइसुन, वूसुन)
उइस्क—३४६
उई—३४३, ३५८
उकमेत—४६२, ४६३
उकाक—६१
उकाजे (=राजादेश)—३५७, ३६१, ४३७, ४५२, ४९९, ५३१
उकुर-कितची—२९८
उक्रइन—३९, १००, २२९, २३०, २३२-२३४, २४१, २५९, २८९, ३०२, ३७३, ३७५, ३७६, ३७७, ३९१, ३९९, ५१२, ५१९
उस्तोम्स्की—४०३
उगफेरमर–२९७ (पूर्वी तुर्किस्तान
उगरी—६६
उगलान—५१४ (उज्वेक), ५१५
उगलिच—१०२, ११५, २१८
उगुजमान—१६८

उगेची खासाग—३००
उगताइ–५ (छिङ्ग-गिस्-पुत्र), २१
उगोलिन—२४
उग्रा—१००, ११४
उग्रिउमोफ—३३४
उचउचक—४८२, ४८३
उचकुर्गान—४३५, ४३७
उचमा—४८१
उचाच्र—१२८
उज़—४५५, ४६०, ५१४ (उज़्वेक)
उज़तेमूर—१६६, ३०३ (यैची)
उज़ान—४०
उज़ियाक—२७८, ३५०
उज़ी—२९, ३०
उजुन—१०४, १६० (-हसन), २८१ (-सुकाल), ४९५ (आदा), ५२६ (कज़ाक)
उज़कन्द—१२८, १६५, १८०, ४३५
उज़गाद—१२९, २९७, ५३८
उज्जयिनी—१५८
उज़्वेक—२६, ३१, ३३, ३४, ३५, ३७, ४८, ५१, ६७ (दश्ते किपचक), ९७, १४५, १५६, १५८, १५९, १६१, १६५, १६९, १७४, १७७, १७९, १९३, १९४, २०२, २०७, २०९, ३७८, ४१५, ४२१, ४३१ (किपचक), ४४२, ४४३, ४५५ (कबीले), ४५९, ४६४, ४६७, ४६९, ४८६, ५१४, ५१६ (-जाति-निर्माण), ५१७ (-भूमि), ५२७, ५२९, ५४२, ५४४, ५४८ (=चगताईतुर्क) ५४९
"उज़्वेक-उलुस"—३१
उज़्वेक-कज़ाक—२७५, २७६, ३०३, ३०५, ३११, ३१३
उज़्वेक खान—३३, ३६, १३३, १४६, ४६५, ५२९
उज्वेक सुल्तान—२७७
उज्वेकिस्तान—१२१, १६२, ४५३, ४५९, ५१४ (में क्राति), ५१७, ५२७
उज्वेकी—१८३ (भाषा)
उज्वोई—४८०, ४८३
उतखुर सूफी—४४३
उतरार—४६, ४८, ४९, ५५, ५६, ६०, १६८, (=अतरार)
उताची—५१४ (उज्वेक)
उत्किया—३५२
"उत्तर तारा"—३७४
उत्तर प्रदेश—५२८
"उत्तरी सघ"—३९३
"उत्तरी सम्मिलनी"—३७४
उद्मुर्त—१०७, २३४, ३९०
उन्कोव्स्की—३३१, ३३३
उपा—२२१
उपुलेची—५१४ (उज्वेक)
उपेन्स्की—९१
उवसा (सरोवर)—३२६
उवान—२८४
उवैदुल्ला—१६० (-अहरार), १७४, १७६, १७८, १८३, १९२ (१), २०३, २८०, ३०५, ३०९ (खान)
उमरगाज़ी—१७८, २०१
उमरशेख—५५, ५६, ५९, १६०, १६३, २९७, ३०५, ३०६
उयान—५१५ (उज्वेक)
उयुगली—५१६ (उज्वेक)
उयेन्द–५३१ (=जिला)
उयेमीत—५१४ (उज्वेक)
उरगज—५६, ६४, १३५, १७८, १९६, १९९, २०१, २०२, २०४, २०५, २०८, २०९, २१२, २८१ (ख्वारेज्म), ३३०, ४६०, ४६६, ४६८, ४७०, ४७३, ४७५, ४७७ (-कुहना), ४७८, ५२६ (मिर्जा-)
उरमानजोजिन—५३७
उरमिया—५५६ (रज़ाइया)
उरलुक—३१९, ३२१
उर-साग—३११
उरातिप्पा—१८२, ३०६ (उरातेपा), ४२२, ४२३, ४३७, ४४४, ४४८, ४५२, ४५८
उरानिया—२८९ (देवी)
उराल—२१ (ऊराल), ४९, ९४, १००, १०१, १०७, २०५, २०८, २३४, २३५, २४४, २६१, २६७, २८६, ३१७, ३२१, ३४४, ३५१, ३७६, ४०५, ५०८, ४२०
उराल-अल्ताई—५४८ (भाषा-वश)
उराल्स्क—२८९, ३५६
उराल्स्की—५५२
उरियानकुत—३२१
उरुस—१८, ५५, ५१५ (उज्वेक)
उरुसखान—४३, ४८, ५४, ६१ (खान), ५० (-खोजा)
उरुसलन—३२१ (थैशी)
उरुसोफ—३४५, ४५७
उरेंगयार—२९७
उर्गा (अराल)—२४२, ३२४ (उरगा), ३२९ (-महालामा), ४७८, ४८२,
उर्जाय—५१४ (उज्वेक)
उर्दा—१०२
उर्मितान—४५८
उर्लुक—३२६, ३३८ (तोर्गुत राजा)
उलकुम दरिया—४८४
उलजइ—२९

उल-जैं-तू—१५, ३३, १३३, (ईरान), १४५
उलरिच—२५७
उलाइओन्दलुग—५४८ (तुर्कमान)
उला इवोन्तली—५४८(तुर्कमान)
उलागचारलिग—२९७
उलाञ तुमान—३२१ (लाल ऊटवाले ओर्दू), ३३९
उलाद—१४४
उलानबातुर—३२४ (=उर्गा, ताहुरे)
उलियस्सुतै—३२४
उलियानोफ—३९२, ३९४, ५१० (=लेनिन)
उलियानोव्स्क–२३७ (समारा), ३९४
उलुक—६६ (-मुहम्मद), ६७, ३१७ (-बरमा), ३४६ (-ताग)
उलुकची—२६
उलुगताग—५७ (महापर्वत), १५१, १७०, २७९, २८०
उलुग-तूवे-ताश—२०२
उलुग-दुर्जी—१८
उलुगबेक—६७-६८ (शाहरुख-पुत्र), ६८, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १६३, १६५, १७०, १९०, २९९, ३००, ३०२
उलुग-मदरसा—१७१
उलुस—२९, ३३ (मगोल, =बातू, खुलाकू, चगताइ और चीन), ५१, १२१, १२५ (-इपू), ३०९, (उलुसबेगी), ३२४(-थैशी)
उलेखातून—४९८
उलेची—५१५ (उज्वेक)
उलेमा—५१७ (धर्माचार्य, मुल्ला)
उल्जे-थू—१६, ३२ (खान)
उश-तुर्फान—३३६
उशाकोफ—२४१, २६३, २६९
उशामला—४८०
उसरी—३८९
उसमानअली—१५२, १६४, १७९, २०७, ६१ (०बहादुर), ५५३ (-कारी)
उसा—१११
उसिउन—५२९ (कज़ाक)
उसुन—५१६ (उज्वेक)
उस्तउर्त—१९७,२०४, ३५७, ४६५, (चिकया ईकित्स गिरि), ४८१,४८२,४८४
उस्तकामेन्नेगोर्स्कया— ३३३, ३४९, ३६१
उस्ती—५३०
उस्मानी—१७८, १८१, ५४८ (तुर्की)
उडीसा—१२२
उग—५१४ (उज्वेक)
उगाचित—५१४ (उज्वेक)
उगुत—५१४ (उज्वेक)
ऊफा—३१९, ३५०, ३५१, ३५६
ऊ-ह्रो-चे-यू—३२९
एउफ्रेसिया—२२
"एक शिकारीके पत्र"—३९२
एकातेरिना—२५९, २६७(१), ३४७, ३४९, ३५४-५६ ३६१, ३६५, ३६६, ३७२ (२)
एकातेरिना-नहर—३६५
एकातेरिनोस्लाव्ल—२६३, ४१४
एगमन वातिर—४९६ (एगमन वातिर, सुमर्स्क)
एचुवक—३५५
एडवर्ड सप्तम—४०७
एडिसन—३९६
एतियक—२८२
एतिसन—३३९
एदेनिया—३३७
एदेस्सा—८, १४१
एबट (कप्तान)—४७४, ४७५
एबुस्किन—१२६
एमिल—१२१, २९५, २९६, ३३६
एमिलगूचूर—२९८
एम्पेरातोर—२५६
एयागुज—३४९ (नदी)
एरअली—३४५
एरगस—५२० (शेख), ५२२, ५२३, ५२४, ५४२ (एरगेशलाम)
एरगेना—१२७
एरदेनी लामा बातुर खुङ थैची—३३५
एरमिताज़ सग्रहालय—५७ (लेनिनग्राद)
एरमिन—३७
एरली—३५१ (-सुल्तान), ३५६, ४६८
एरसारी—५४७ (तुर्कमान)
एरापतोफ–५५०, ५५१, ५५२, ५५३
एरेवान—५५४
एर्रेक—२१२ (औरग)
एर्चिश —३३८ (इर्तिश)
एर्जन—४८
एर्तकईनक—४६८
एर्दन-बआतुर—३२६
"एर्दनी सूकितू बआतुर खुङ थैशी"—३३३
एर्दबेर्ग (कर्नल) —४६७
एलची–३३ (जनदूत,'महादूत), १३९
एलवा—२४
एलात्ज़—६१

एलिज़ावेत—१९३, २५५, २५७, २६८, २९१
एलिज़ावेतोपोल—३७१
एलियोत—२४३, ३२६ (ओइरोत), ३३२
एलूतियान—३७२
एलेक्ज़ोल्सिसिन—३८३
एल्व—३७० (द्वीप)
एल्वर्स—४८२
एवज़ ईनक—४६९
एव्रदी—१३५
एवेंकी—२४४
एस्० एर्० (=समाजवादी क्रांतिकारी)—५१९, ५३८
एसम्प्सन—६२
एसाउलेंको—५२५
एसुन—१३३
एसेन—२०७
एसेन—३२, १३३, १३४ (-बुगा), १६६ (-खान)
एस्तोनिया—५२८
एगल्म—३७४, ३८६, ३३२, ३३३, ३३५
एट्रह विनियस—२२६
ऐगुन—२५५, ३८८, ३८९ (-सधि)
ऐत्नुवा—३५३
ऐदिन—४८३
ऐनी—४९३ (सदरुद्दीन)
ऐनक—१६१, १६७, १७९, ४६० (=यईवक)
ऐगुनिर—४०८, ४८४ (खाडी), (=अरगुनिर)
ओइनोग—२१७
ओइरोत—१४२, २०१ (मंगोल), ३०१, ३३७ (कल्मक), ३३८
ओइरोतिया—२७१
ओइरोद—१६६, ३२१, ३२८ (=ओइर्यात, देखो ओइरात)
ओका—२२, ५१, ७४, ८२, ९०, ९२, ९६, ९८, १००, १०९, २३४, २४७,
ओगलान—६, ५४, ५६ (राजकुमार), ६१, १०२, १३६, १४४, १४५, १६५
ओगिन्स्की—३६५
ओगूज़—१०३
ओगोताइ—४ (छिङ गिस्-पुत्र), २३, २५, ४७ (ओगोदाई), १२१, १२५, १२६, १२७, १३० (कँदूका पिता), १३३
ओङ्-खान—१८
"ओचाकोफ"—४०२
ओज़ेरो—११४
ओज़ेर्नया—३५१
ओडेर—६, २३
ओडेर-पर फ्राकफोर्त—२५८
ओडोनोवेन—४९१, ४९२
ओतकची—५३०
ओतरार—५६, १२७, १२९, १५३, १६८, १६९, २७७, ३४६, ३५३ (-उतरार)
ओरतेपयेफ—२१८
ओतामिश—४९१ (तुर्कमान, तेक्का)
ओतियक—६
ओदुलियो—२३८
ओदूल—२७१
ओनेगा—९४
ओपेरा—३२४, २६६
ओप्पेलन—२७
ओप्पेचनिना—१०८, १०९
ओव—११४, २२७, २३८, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२४, ३२६, ३३३, ४८९ (ओवलास्त=तहसील)—५३१
ओम्स्क—२५१, ५३०
ओवम्न्या क्रेपोस्त—३३३
ओयरोत—२४३ (=ओइरोत ओइरोद)
ओरखोन्—५ (मंगोलियामें)
ओरगान—१२८
ओरगाना—१२७, १२८, १३९
ओरताग—५७ (उच्च पर्वत)
ओरदा—१८, २०, ४५, ४६, ५० (-उलुस), ५१, १५७ (जूछि-पुत्र), १६५, २८७, ३४३ (=ओर्दा)
ओरदिन्-नाश्चोकिन्—२४१
ओरनाक—२९७ (=ओजनाक, ओरतक)
ओरमुज्द—१०३, १५७
ओरलोफ—२५९, ५२५
ओरसोवा—२३
ओरी—३४३, ३५१, ३५९ (नदी)
ओरेन्ज़ा—२६ (दुनियेपर दक्षिण-तट)
ओरेन्बुर्ग—२६१, २६२, २७१, २९१, ३४४, ३४५, ३४८, ३५१, ३५२, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३७८, ३७९, ४२५, ४३१, ४३२, ४३५, ४४५, ४४६, ४४८, ४५२, ४६८, ४७३, ४७४, ४८१, ४८४, ४८५, ४९५, ५१८, ५२२, ५२५, ५३०, ५३२, ५३५, ५४४, ५४९, ५५०
ओरेल—११०, ४०१
ओर्जोनीकिद्ज़े—४०५
ओर्तुक—४८०
ओर्तांकिया—४८३
ओर्दाशेख—४२
ओर्दू—४२ (अक्-), ५३० (मध्य, महा-)
ओर्दु-बालिक—५ (कराकोरम्)
ओर्मुज़—१०३
ओर्स्क—३४१, ३७८, ४४८
ओ-ला-पू-छू-यो-र—२५३
ओलिगर्द—९८
ओलिओत—३२४ (ओरिओत्)

ओलेकमा—२४२
ओलेग—७७, ७८, ८३
ओलसिये—५०८
ओल्गा—८२, ८३
ओलगर्द—३८, ५२
ओल्ज़े—१४८,१४९(=ओल्ज़इ)
ओल्मुत्ज़—२४
ओश—३०५, ४२१ (अजीवी), ४२२, ४२५, ४३१, ४३५, ४३६, ५३८
ओशुन—५२९ (उज़्बेक)
ओसतेइ—५२
ओस्तियाक—११०, ११२, ११३, ११४, ११५, ३१६
औरगजेव—११६, १९१, १९४, २११, २१२, २४१, २४६, २४७, २४८, २४९, २५२, ३२८, ४६४
औरग तेमूर—५०
औल—३५८, ४२९ (गाव), ४७८, ४९३ (तुर्कमान गाव), ४९५
औलियाआता—४२९, ४३२, ५३०, ५३३, ५३४, ५३६, ५३७
औहदी—१४४, १४५
कआन—१२१, १२६, १३२, १३५ (चीन-सम्राट्), १३९, (=कगान, खाकान)
ककमा-बुरुजी—२९८
ककाई—१९२
कखोस्क—३७५
कगान—५५०, ५५१, ५५४ (=कआन)
कगानोविच—४१४, ५०८
कचर—६
कचाई—५१५ (उज़्बेक)
कज़खोफ—५२१
कजगन—१३६, १४८
कज़नची—४९
कज़लोफ—५४९
कजवीन—१८१, २००
कजाक—११०, १५६, १६८, १६९, १७२, १८०, १८७ २०९, २६१ (एसियाई), २७६, २७७, २९३, ३०७, ३११, ३१३, ३१७, ३२१ ३२६, ३३१, ३३७, ३४३ (उज्बेक-कज़ाक), ३४७, ३४८, ३७८, ४१६, ४१५, ४३३, ४६४ ४६७, ४६९, ४७१ (चेकली, तुर्तकारा, चूमे, जलैर),४७३, ५१७, ५२४, ५२५, ५२८, (जातिका निर्माण), ५२९, ५३१, ५४९
कज़ाकखाना—२९१
कज़ाकस्तान—१२१, १५७, ३६१ (गणराज्य), ४५३, ४८९, ५१२, ५२८ (में क्राति)
कज़ची—५२५
कज़ान—२७, ३७, ६८, १००, १०२, १०३, १०६, १०७, ११०, ११२, २३४, २६२, ३१५, ३५०, ३११, ३५४, ३६६, ४०१, ४६५, ५४८ (तारतार)
कज़ाला—४३०, ४८२
कज़ालिन—५३३, ५३४
कज़ालिन्स्क—४८१
कजुलई—६५
कतक—२९६
कतगन—४६०, ५४९ ५१४, (उज़्बेक)
कताई—४९, ३६५,
कताकुल—१०
कतापुल्त—२५
कतुज़ोज़—३६६, ३६८, ३६९, ३९८
कत्ताकुर्गान—४८७, ४५८ (कता), ५१८, ५१९, ५२०, ५२४
कनली—५१६ (उज़्बेक)
कनवान—१६६
कनाई—३२१
कन्जुर—१३ (बुद्ध-वचनानुवाद)
कन्दहार—१७२, १९२, १९३, ४९९ (कधार), ५४३
कंदुर्च—५९
कन्फूसी—१२
कन्स्तन्तिनोपोल—२९, ३६, ३७, ७५
"कप्तान-कन्या—२६६, ३८४"
कफ्फा—५६, १०४ (कफा)
कबक—३०
कवतेरून—३२१
कवाका—३००
कबात—५१४ (उज़्बेक)
कवादियान—१७७, १९२, ५२६
कविलककला—३१०
कवीकलर—३१०
कवूल—१९०
कमकर-प्रतिनिधि-सोवियत—४१७
कमचत्का—२५३
कमचादल—२५३
कमारोफ—४९७ (महाराज्यपाल), ४९८ (जेनरल)
कमाल—५५, १४७
कमालुद्दीन—१३८, १४४, १६२
कमिस्ती—४८४
कम्युनिस्ट—३७९ (—पार्टी, लीग), ५५०, ५५३
"कम्युनिस्ट घोषणा"—३७९, ३९३
कम्युनिस्ट सरकार—३९१, ३९२
कम्स्चदाल—२७१
कयान—५१५ (उज़्बेक)
कयालिक—१८, १२५, १२७
करइत (केरगुदी)—३२५
करकर—३३४
करकी—४५३ (=केर्की)
करकुल—१२८
करगालचेन—३१८
करगोपोल—२२१
क [illegible]—५७ (गदा पर्वत),

१८७
करदासली—५४७ (तुर्कमान)
करबला—१७७
करमजिन—२५, ३५, ६३, (करमाजिन), २६६, २७१, ३१८
''करमाजोक भाई—३१२
करमीना—१२४, १९०, २११, ४८७, ५२६
करशी—१२९, १३२, १३४, १३६, १४८, १४९, १५०, १६२, १७०, १७४, १७५, १७६, २१०, ३००, ४३९, ४८६, ४८७, ४५१, ४५३, ४५६, ४५९, ४७१, ५५२
करशी-नखि—२३४ (करशी०)
करसागलेन—३२७
कर मावरान—५५
करस्तचिक—४८८
करा—१२७, ४८९
कराअसमन—२७९ (करासामा)
कराइलू—२०३
करा-इर्तिश—३२६
कराउजियक—४३०
कराकल्पक-६२(=काली टोपी), २८०, २३०, २३२, ३४६, ३४८, ३५०, ३५१, ३५३, ३५६, ३७८, ४६६, ४६३, ४३०, ४७३, ४८८, ४८६, ५१५ (उज्बेक), ५४८ (तातार-भाषा)
कराकल्पक-कुस्नमगली—५१५ (उज्बेक)
करा[illegible]—२१०
करा-[illegible]—२१३
करा[illegible]—४८८
करा[illegible]—४२८
करा[illegible]—३४०
करा[illegible] (काला बालू)—१२७, २१९, २२६, ४७३, ४८०, ४८१, ४८८, ४८९, [illegible]
करा[illegible]—५१५ (उज्बेक),
५१६
कराकुल—१६८, १७०, १७१, १७६, १९३, २१०, ४५६, ४७२, ४९९, ५३३, ५३४
कराकेचिन—५३७
कराकोरम—५, ६ (मगोलिया में), ७, २६, १२७, १२८, १३५, १४५, ५३०
कराखानी—१२४
कराखिताई—२१, १२४, २९३
कराखोजा—२९७
करागन—४६५
करातगिन—५२७
करागुचुर—२९७, २९८
कराचा—११३, ११५
कराचार—१४८
कराचिन—११२
कराचिनवग—१६७
कराची—१९६
कराचुक—५७
करातगिन—४२६, ५२७, ५४५, ५४६
कराताउ—१८०, २७९, ४३२, ४८१ (पहाड़)
करातागा—५० (=कराताउ)
कराताल—५०, ५१, २९८, ३३१, ३६१
करातुकाई—३०४, ३१२
करातुरगई—५८
करातेपे—३३९
करावस—५५४
करावाग—५५, ६७ (ईगन), १४६
करावुरा—५१५ (उज्बेक)
करावुलात—३५८
करामुहम्मद—५५
करास्की—३९३
करायुत्युक—५४७ (तुर्कमान)
करायेवली—५४७ (तुर्कमान)
करासकाल—३४५ (काली दाढ़ी)
कराशर—१५२, २९८, ३०४, ३०९, ३३२
करासू—१४३
कराहुलाकू—१२६
करी—५१४ (उज्बेक)
करीमवर्दी—६५, ३०५ (-दोगलत)
करेला—११६, २२२
करेलिया—२५१
करोपत्किन (राज्यपाल)—५३७
कर्त—१३५, १४८ (खुरासान)
कर्तू—५१४ (उज्बेक)
कर्मकची—४३०
कर्मिनिया—४४१
कर्मीना—१७६
कर्स—३८६, ३८७
कलकत्ता—३७७
कलखान—१८९ (महासेनापति), १९१, २०३ (युवराज)
कलगन—२२७, २४२
कलगा—१७३, १७६
कलाखम्ब—५४३ (दरवाज़), ५४५, ५४६ (किला खुम)
कलिनतई—१४४
कलिनिन—९६, ४०६
कलियान (हुक्का)—४४०
कलीम (भेंट)—४२९
कलृगा—२२०, २२२, ३७८
कलेची—५१४ (उज्बेक)
कलेगियो (=परिषद्)—५५१
कलोम्ना—२२, ५२, ६१, ९६, ९७, २२०, २८९
कल्पक—४९४ (=टोपी)
कल्परोत—२८९
कल्मक—११४, १५९, १६६, १८७, १९६, २०६, २०८, २०९, २१०, २१२, २३५, २३७, २६१, २८०, २८२ (मगोल), २९१, २९६, ३०४, ३०५, ३०८, ३१०, ३१६, ३१८, ३१९, ३२१, ३२४ (जुगर), ३२५, ३२६, ३२७, ३३२, ३३५,

३३७, ३३८, ३४०, ३४१, ३५१, ३५२, ३५४, ३५७, ३६८, ३७२, ३८५, ४६४, ४६७, ४८०, ४९०, ५१४ (उज्बेक), ५४८
कल्मक-थैची—३०७, ४६५ (आयुका)
कवामुद्दीन—१५७
कवि—१७५, १९०
कशलतिन—५३७
कश्क—४५८ (-उपत्यका)
कश्तुत—४५७, ४५८ (-डाडा)
कश्मीर—२९९, ३११, ३१८ ४२६
कसतिमूर—४८
कसलोफ—२१७
कसाक—३९, १०८, ११०, २०६, २०८, २२४, २३०, २४३, २८८, ३१७, ३४१ (रूसी-), ३४४, ३५७, ३७८, ४०१, ४०७, ४२४, ५०६, ५०९, ५१०
कसाकान—३३५
कसिमिर—३८, ३९
कसौवी—८२ (चिरकास)
कगली—५१४ (उज्बेक-किपचक)
कस्तेक—२९७
कस्त्रोमा—६३
कस्साव हैदर—१५०
कहेत—५१५ (उज्वेक)
ककली—२१, ४७१ (तुर्कमान)
ककुरत—१८, २०, ३०, ४७, ५१, १९२, ४५९, ४६४, ४६९ (कुनगरद), ४७१ (तुर्कमान) ककुरत वश—४७०-८७(वश)
ककोर—११०
कग—५१७, ५३० (=ककली, कगली), ५४८
कगरवेइन—३४१
कग्-ली—२६, २०७, ४६१, ५१७, ५२८, ५२९, ५३० (कज़ाक), ५४१
कगडा—५२८
कगुल—१६६
कचुवार—३१९
कजिगली—५१६ (उज्वेक), ५३० (कज़ाक)
कदुरता—६०
काइइ—५४७ (तुर्कमान)
काइड—६
काइतक—६१
काइप—३५०, ३५३ (द्वितीय), ३५५, ३५६
काउ-चुङ—२६४, ३३४, ३४७, ४२१
काउट वित्ते—४०४
काउ-ताउ—४२१ (दडवत्)
काकेशस—५१, ६१, १०१, १४१, १५०, १५१, ३६७, ३८३, ३९९, ४१३, ४५३, ४७२, ४८४, ४९४, ४९६, ४९७, ५०८
काखोव्स्की—३७६
काज़ान—१३६ (-कज़ान)
काज़ार—१०७, ४४१, ४४२, ४७२ (ईरानी), ४९०
काज़ी—१५७
काज़ी अख्तियार—१७२
काज़ी कुरगान—५४४
काज़ी पायन्दा—१८३
काज़ीबेग—५५३
काज़ी मुल्ला—३७७
कात—३२, ५३, ५४, ५६, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०६, २०८, ३००, ४८५
कादिर कुलोफ—५५२
कादिर नदी—३५३
कादिर बर्दी—६९, २८६
कादेत—४१०, ५०८, ५११
कानियेफ—२६
कानून—१५४
कातन—३७४
कास्तन्तिन—७३, ८७
कास्तन्तिनोपोल—१०, ११, ७२, ७७, ७८, ७९, ८३, ८४, १०१, १०५, १०६, ११६, १५९, २३०, २६०, २८४, ३६७, ३७७, ३८०, ३८६, ४३४, ४७८, ४७९, ४९५, ४९७
कापबहादुर—५०
काफमान (जेनरल)—३८७, ४३५, ४३६, ४५२, ४५७, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८५, ४९४
काफिर (बौद्ध)—३१३, ३२४, ३३५, ५२३, ५४९
काफिरनिहा—४५५
काफिर-रवात—४४०
काफिर-यारिग—३१०
काफिरिस्तान—३११ (लदाख)
काबिलशाह—१३७, १४९
काबुल—१५१, १६६, १७२, १७६, १८०, १८९, ३०७, ३०८, ३०९, ३१३, ४४१, ४४२, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५९, ४६०, ४६३, ४७५
काबूशान—१५०
कामचत्का—२५६, ३७२, ३७३, ३८१
कामरान—१७९
कामा—७३, १०९, ११०, १११, २३४, २८७ २८९, ३६५
कामिल (हामी)—३०८
कामेनेफ—५०६
काम्बालू—११ (पेकिङ, खान-वालिग)
कायिप—४६८, ४६९ (=काइप)
कार—२६२
कारकिन—५४८ (तुर्कमान)
कारपीनी—२४, २६
कारपेथीय—२३
कारवासराय—५५२
कारा—५१५ (उज्बेक)
काराई—१८५, १८६
कारासमन—५७

कारिक—५४८ (तुर्कमान)
कार्ल मार्क्स—७७, ९५, ३७०, ३८२ (मार्क्स)
कार्ल पीतर—२५७
कार्सिका—२६९
काठ—२०१
कालासागर—७२, ७८, १०१, १०४, १०७, ३६५, ३७७, ३८०, ३८६, ४००, ४०२, ४१३
कालिदास—१६०, ३८३
कालीकट—१०३
काली हड्डीवाले—३५८ (साधारण जनता)
काले—९४, ४२५ (कालेखोजा)
काले पहाड़ी—३३२
काज्जोक—११३
काशकुपिर—४८५
काशगर—३२, १२१, १२४, १२८, १४४, १४८, १६९, १६१, १६४, १७६, १८०, २७५, २९३, २९५, २९७, २९८, ३०२, ३०३, ३०७, ३०८, ३१०, ३१३, ३२५, ३२८, ३३२, ३३३, ३३५, ३६३, ४२२, ४२६, ४२५, ४६२, ५२०
काशगरिया—३०२, ३०९
काशान—१०८, १५३, १५७
कासिम—१०२, १७२, १९०, ३०९, ४२९
कासिम खान—६९, २७७ (जानी-बेग-पुत्र)
कासिम सुल्तान—११०
कासिमोव—२०७, ३१८, ३५८
कास्पियन—३८, ७२, १०८, ११६, १३१, १३७, १९६, २०३, २०५, २३६, २८४, ३३४, ३६२, ३५२, ३७१, ३७०, ४३६, ४६५, ४७२, ४८८ (मैं नदी), ४८९, ४९६, ४९८, ४९९, ५२२, ५३१, ५३७, ५४८, ५५०
किर्गान—४८८ (नदी)
किचिक खानिम—२९८ (छोटीरानी)
किज़िनज़िली—५१६ (उज्वेक)
किज़िल—१७४
किज़िल अगिर—४८४
किज़िल अयाक—५५१
किज़िल अर्वत—४८०, ४८९, ४९०, ४९५, ४९९
किज़िल-ओर्दा—५१८, ५३३ (पेरोव्स्की), ४३४
किज़िलकाक—४८१
किज़िलकिया—५२०
किज़िलकुम—१७४, १९६, ४१५, ४८०, ४८१, ४८२, ४८६
किज़िलजार—४२४
किज़िल तेप्पे—५२४
किज़िलपू सइस्सन—३२८ (झील)
किज़िलवास—१९१, २०२ (शिया), २११, ४७२, ४७४ (ईरानी)
किज़िल-बुर्कोव्स्की—५३१
किज़ी—३८१
कितकी—४२४
कितकी कराकल्पक—४२३
किताई—४८४, ५२९ (कज़ाक)
किताई-किपचक—३२१, ३३९
किनाव—४५६, ४५७
कितू-बुका—७
कित्तन—४ (राजवंश)
कि सु—४७७
किदेरी—४८१
किन्—५ (चीन)
किनगिज़—५१५
किनवर्न—२६३
किनिर—४८४
किन्द्रेली—४८४
किपचक—६, १३, १८ (वर्तमान कज़ाकस्तान), ३६ (सुवर्ण-ओर्दू), ४९, ५०, ५२, ५४, ५५, ५६, ६०, ९७ (मगोल), १२१, १३०, १३१, १३२, १४३, १५६, १६५, १९१, २७५, २८४, ३४३ (जूछि-उलुस), ४२७ (तुर्क) ४२९, (कज़ाक), ४३१, ४३३, ५१४ (उज्वेक), ५१६, ५२९
किपचक ओगलान—१३०, १३१
किपचक-कज़ाक—४२७
किपचक खान—१४४ (तोकताइ) १४५
किपचक-तुर्क—२७७
किपचकभूमि—४१, ५२८
किवत मिर्ज़ा—३३६
किवित्का—२८२, ३३८, ४२९ (=तवू, परिवार), ४९२, ४९४, ४९६
किविरली—३१८
किवेक—६६
कियाचिक—११४
किथेफ—५ (-रूस), ६, २२ (विजय), २३, २६, ६२, ६३, ७३, ७५, ७७, ७८, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ९२, १००, १८३, २१८, २२९, २३०, २४१, २४६, ३७५
किरकिन—५१५ (उज्वेक)
किरकिपी—२१७
किरगिन—१६६, २७१, २७८, २८२, २९३, ३०७, ३०८, ३१०, ३११, ३१३, ३२४, ३२५, ३२६, ३३०, ३३६, ३३७, ३४१, ३५८, ३७८, ३७९, ४०५, ४२४, ४१४, ४१५, ४२७, ४३४, ५१७, ५१९, ५२१, ५२९, ५३०, ५३४, ५३५ (पुराने कबीले), ५४४, ५४८ (तारतार भाषा)
किरताम—२०३
किरदार—५१५ (उज्वेक)

किर-मगिशलक—२०१
किरमान—१०४, ४४७ (-शाह)
किरिलोफ—३४४, ३४५, ३५१, ३५२
किरेइत—५१४ (उज्बेक)
किरोफ—३९९, ४१४, ५०८
किर्क—५१४ (उज्बेक)
किर्गिज़-कजाक—३१३, ३३२, ३४१, ३४४, ३५३, ५३८
किर्गिज-जाति—५३६
किर्गिजिस्तान—१२१, ४०५, ४५३, ५३५ (किर्गिजिया), ५३८
किलदीबेग—४२
किला—१२१, १९०, २०६, २११, ४६२
किला-अफगान—४६१, ४६२
किलिज़ नियाजबी—४८४, ४८५
किशलिक—५१५ (उज्बेक)
किशिनेफ—३८३
किश्म—४६२
किस्लेफ—१०२
कीतू-चुगान—१४०
कीनिन—५४७ (तुर्कमना)
कीनिख—५४७ (तुर्कमान)
कीसलप्-नोर—३२७ (सरोवर)
कीसिम—१३१
कुइलवाइन—२९२
कुइलुक—१३२
कुइबिशेफ—२३७, २९१, ५०८
कुउक—५१५ (उज्बेकिस्तान)
कुइ-सुई—३०२
कुकचा-तेङगिज—२९६
कुकिलताश—५५
कुकेर्दलिक—२१०
कुक्कुरगान—१६५
कुङको—३८९
कुक्रियान—५२
कुचुक—१३१, ३१९
कुचका—९१
कुचुम—११०-, १२, ११४, २८९ (खान), (=कूचुम)
कुचेई—३०९
कुजमा—२२४
कुजहुर—५१५ (उज्बेक)
कुजाश—१९७
कुतन कुनचेक—५१
कुतुगाई—१११
कुतुबुद्दीन—१२५, १४४
कुतुलुक—५७, ६२, ६४, १४५, १५६, ३१० (मुगोलिस्तान)
कुतुलुकबुगा—४९
कुतुलुक मुराद—४७०, ४७१, ४७७ (खीवा खान)
कुतुलुग निग़ार—३०४
कुतेबेरोफ—३५८
कुतैसी—३७१
कुदुक—४८२
कुनग्रद (कीयेत)—५१६ (उज्बेक)
कुनचुकताग—५७
"कुती"—८६ (चर्म)
कुनेगज—५१४ (उज्बेक)
कुन्दुज़—५६, ४६०
कुपरुकी—२००
कुवकसरी—३२७
कुबरा—२७
कुबलुक—४७ (क्यूलुक)
कुबान—१२१, २९१, ३३९ (-स्तेपी)
कुबिले—७, १३, १२१, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३९
कुबी—४७
कुबुलुक—४७, ४८
कुम—१०४
कुमकद—२०१
कुमा—३३९
कुमासिया—२३
कुरगान—४५९
कुरगानतेप्पा—४६०
कुरचाकिश—३१९
कुरतुगी—५१५ (उज्बेक)
कुरतुत—३२१
कुरमीतान्—४२४
कुरसेवे—१३३
कुरा—६ (काकेशसमें नदी), २८, ३३, ५५, ६१, ७९, १४३, १४६
कुरान—१४८, १७२, १७९, ३४५, ३५२, ४७९
कुरामा—४३६
कुरालस—५१४ (उज्बेक)
कुरी—३२१
कुरुक—१७२
कुरेन—२०४
कुरोपत्किन (जेनरल)—३९८, ४१५, ५३७
कुर्द—४५०, ४९०
कुर्बान बेक—४४८
कुल—५१५ (उज्बेक)
कुलअबी—५१५ (उज्बेक)
कुलक—४०५, ४१४, ५३० (धनी किसान)
कुलजा—१२१
कुलपति—३९० (रेक्तर)
कुलफा—४२
कुलमलिक—१७४
कुलमुराद—४६९
कुला थैची—३२६
कुलाब—५४ (-दर्रा, =कुल्याब)
कुलारचोक—११४
कुलारेप्स्काया—११३
कुलिकोवो—९८
कुलिबिन—२६७
कुली—१५१
कुलीन—३३१
कुलेसालार—१८५

कुज़ा—२३५, ३२५
कुर्दाली—५१५ (उज्वेक)
कुल्याब—४२६, ४५१(कुलाब), ४६१ ५२७
कुल्लरा—११८
कुवान—४८०
कुशवेगी—४२३, ४२६, ४४६ (प्रधान सेनापति), ४४७, ४७४, ४७८, ४८१ (कोशवेगी)
कुश्क—३८८, ४३९, ५५१
कुषाण—४३२, ५६१, ५४८
कुसल—१५
कुमान—३०८
कुसियकवी—४२२
कुस्मू—३६१
कुकुर्त—५३० (=कुग्राद)
कुग्राद—२९२, ४१६ (उज्वेक) ४७८ (राजधानी), ४८२, ४८८, ५१५, ५१६, ५२६ (कज़ाक), ५३०
कुचोक—१५३
कुर्जी आगलान—५६
कुजेक—१३३
कुजुकबल—१४३
कुजीनगर—२५०
'कुतुर् मजानी"—१८५
कुदुग—१३६, १४७, १४९, १६३, १७२, १७४, १८६, १८३, ३०९, ४४२
कुदोंग्ना तार्हीं—२८२
कुना—२३५
कुन्ची—३१०, ३११
कुचुरताग—५५१ (उपपर्वत)
कुचुनी—१६६, १६३ १७३, १७६, १८३
कुचुन—११०, ११२, ११८, २१२-२२, २८२, २८३ (खान), २१५, ३१७, ३२६, ३३८
[illegible]
कूज़ालिक—५१५ (उज्वेक)
कू-तन—५
कूनिश—२०२, ४२९ (-कुर्गान), ४३०
कून्ग्रत—२०२ (=कुकुर्त, कुग्राद्)
कफा—३१८
कफी—१५४
कूबा—३७१, ५१६ (उज्वेक)
कूवान—३६, ६२
कूबेक—१४२ (ओलेज)
कूमिस—२१, २५३
कूयाश—१२५ (सूर्य)
कूयुक—१२६
कूरलड्, ड्यूक—२५६
कूरिल—३७२
कूरिल्ताई—३, ४, ५ (महा-), ७, ८, १४, २१ (महाससद्), २९, ३०, १२६, १२७, १३० (महापरिषद्), १३३, १३७, १३९, १४९, १५०, ३२५
कूलन—५१६ (उज्वेक)
कूली खुलाकू—४६
कूलेसालार—१८२
कूसउली—५१६ (उज्वेक)
कसिम-तुरा—११५
केसहोलम—१२२
केगेन—३३१
केजक—१३०
केतनेन—३३१ (पहाड)
केताक—१०२
केत्तात्युरा—४५७
केतेकेसर—५१६ (उज्वेक)
केनिगेज आइम—४५६
केनेगुज—५१६ (उज्वेक)
केनेसरी कासिमोफ—३७८
केन्दरलिक—२७१ (नदी)
केपेक मङ्गुत—४९
केवदिली—२४७ (तुर्कमान)
केवेन—१३३, १३४
केरइत—१८
केरगेदान—११०
केरमान—१४५, १५७
केरमारोन—३२
केरुलोन—३२१, ३२९, ३३०, ५३० (नदी)
केरेन्स्की—४१८, ५०३, ५०५ (समाजवादी क्रांतिकारी), ५०६-१०, ५१९-२१, ५२५, ५४९ (=करेन्स्की)
केर्की—५५०-५४ (-काड)
केर्कीवेग—५५४
केर्चे—२६०
केलमिश—३०
केलार—३१
केलायस्त—७३
केलेमा—३१७
केश (=शहरसब्ज)—४९, ५४, १३६, १४८, १४९, ४५०
केसलोप—२१८
कैखुसरो—१५०
कैगली—५१६ (उज्वेक)
कैजर—१०७
कैथलिक—३८, १०१ १३४, २३०, ३८० (धर्म
कैन्दू—१४ (मगोल खान), २३, २४, २९, ४७, १२८, १२९, १३०, १३१-३३ (=काइदू)
कैदोल—११५
कैरोली—४५५
कैरून—३२१
कैसर—१०७, ३९७ (जर्मन)
कोइचरी—३११ (भेड़वाला)
"कोइतुल"—१०२, १०३
कोइविन—३३१
कोइरिअक—६१, ६२, ६३, ६६
कोइमुइ—३०१
कोइसू—३३१

कोक-ओर्दू—१८ (नील-ओर्दू), ४९
कोक-काशाना—१६६
कोकताल—३३१
कोकताश—१२५ (नीलपाषाण)
कोकतुनगुलु—५३०
कोकतुनचुई—५३०
कोकतेपे—२९७, (पर्वत) २९८, ५३९ (गाव)
कोकतेरेक—३३१
कोकपताश—४२१
कोकलताश–१८१, १८३, १८६, ३०० (नीलपाषाण), ४४७
कोकशुल—३१९
कोकाजू—१३०
कोकोनोर—३२८, ३२९, ३३२
कोगिलदे—३५९
कोचकर—२९७, ३१०
कोजिन—४६५ (लेफ्टनेंट)
कोजुकोफ—२४७
कोज़्लस्क—२२
कोतियक—२२
कोलो—२४१, ३७४ (साष्टाग दडवत्, काउ-ताउ भी)
कोनिचि—४६, १४४
कोनु ग—७५ (राजकुमार)
कोनुर-उलेन—३१०
कोनोक्लोफ—४१८
कोनोली–४२६, ४५० (अर्थर), ४७६ (कप्तान)
कोन्या—१४३
कोपी—५२०
कोपेतदाग—४८९, ४९०, ४९२ ४९५, ४९९, ५०३
कोपोरये—११६
कोवलेफ—३८२
कोवुक—१३३
कोव्दो—३२४ (पश्चिमी मगोलिया)
कोमानिया—२६
कोमी—९४, ९८, ५२८ (-गणराज्य)
कोयनिग्सवर्ग—२५८
कोरकान—१४८
कोरचिन—३२९
कोरफू—२६९
कोरिया—३, ५, ३९७, ३९८, ४००
कोरुक—५९ (सूखा)
कोर्ट—४४६ (अग्रेज चर)
कोर्ट मार्शल—४०२
कोर्दक—११४
कोर्निलोफ—५०५, ५०६ (जेनरल), ५०७
कोर्याकि–३८,२७१ (=कोरिअक)
कोर्साकोफ—३८८
कोलचक—५३४
कोलुमा—२४०
कोलेसोफ—५२५
"कोलोकोल"–३८२ (कलकल)
कोलोम्ना—६
कोल्चकली—३४७ (नदी)
को ज़ोफ—१११, ११२, ३१७ (=मोसाल्स्की)
कोल्त्सोफ–३८२, ३८२ (कवि)
कोवालेव्स्की—४४८ (कप्तान)
कोशकुर्गान—४३०
कोशुर—३१९
कोशोत—२१०
कोसका—६४
कोस्त्रोमा—३५, ५१, १०२ (त्वेर)
कोस्मेस—११०
कोस्सागोल—३२१ (झील)
कोहक—१५७, १५९ (नदी)
कोहिस्तान—३०४, ४२६, ४५८
कौतू—२५३ (=काउ ताउ)
कौनदी—४८४
कौरदक—३१७
कौरोश—५५४
क्याज़—२२, ३१७
क्याउ-चाउ—३९७
क्याङ—४८८ (जगली गदहा)
क्याङ-नान्—५
क्याख्ता—२५५, २५६, २५७, ३८९
क्योरिग—३५७
क्राइ—५२४ (=प्रदेश)
क्राको—६ (=क्राकोफ), २३, २६, २७, २१८, २३४, ४१०
क्राति (१९०५ की)—३९८–४००
क्राति-विरोधी—५२२
"क्रामवेल"—३७०
क्रास्नोयार्स्क—२३८, ३५७, ४०३
क्रास्नोफ—५१० (जेनरल)
क्रास्नोवोद्स्क—४६५, ४७२, ४८०, ४८१, ४८३, ४८६, ४८८, ४९४, ४९५, ४९६, ४९९
क्रिम—३०, ८३
क्रिमिया—३६, ३९, ५१, ५६, ६०, ७२, ८३, ९६, १००, १०१, १०६, १०७, १०९, ११६, १५१, २२५, २३०, २३१- २३२, २३३, २३५, २४६, २४७, २४८, २५०, २५७, २६०, २६१, २६२, २६३, २८७, ३१८, ३३९, ३४०, ३५४, ३८० (-युद्ध), ३६५, ३६८, ३८६, ४५३
क्रुज़ेन्स्तर्न—३७२, ३७४
क्रेमलिन—३५, ९८ (दुर्ग), १०५, १०६ (=क्रेमल), १०९, २१९, २२०, २२४, ३६९, ५१०

क्रोन्स्ताद्—२, २५१, ४०२
क्रोपत्किन—३८८, ४९८ (जेनरल)
क्रोपोतोफ—२६४
क्रोवात—३६८
क्रोमी—२१८, २२०
क्रोमोफ—५०७ (जेनरल)
क्रोनिया—६ (युगोस्लाविया)
क्लपकोफ—३२७
क्लाइव—३९०
क्लुगिनो—२२२
क्ल्याज्मा—९०, ९१
क्विर्गिशियेफ—४१४ (कुइवि-शियेफ)
क्विनलन—३३४
क्वेटा—४९१
खकास—२७१, ५३५
खताई—१३०
खबारोफ—२४२, २७२, ३७४, ३८०, ३९०, ४१७
खराखुल—३२१, ३२४, ३२५ (चोरोस)
खर्किर—३३१
खर्काफ—३६६, ५५०
खर्गोश—३३१
खल्खा—३२१, ३२४, ३२६, ३२८, ३२९, ३३८, ५४८ (मगोल)
खल्ना—४८२
खल्वा—३२१ (इल्वा)
खलीता—३४, ९७ (पैसेका थैला)
खलीफा—१२१, १८०
खलील—६३, १३५, १५८, १५५
खलील मिर्जा—१५८
खलीलबेग—१०२
[illegible]—१६६ (उज्बेक)
[illegible]—२२१
[illegible]—१२६
[illegible]—१७५
खङ्गवीर—९५
"खम्सा"—१६१, १६२ (पचक)
खस्तमीनारेसी—२०८
खकिरिन—१२७ (खूकिरान)
खाइत—३००
खाइकानाक—३०८
खाकान—७४, १३९ (=कआन, कगान)
"खाकानेजहा"—१७९ (दुनिया का राजा)
खाङ्-सी—२४३, २५३, २५४, ३२४, ३२८, ३२९, ३३१, ३३२, ३४० (चीन-सम्राट्)
खाजार—२० (खजारदरवन्द), ७३, ७४, (वहीरा खाजार), ७५, ८३
खाजासलीम वी—५४५ (सामी पाशा)
खातून—२९
खान—५३, ५४, १००, १३२, १९७, २३२, २७५, ३७८ (राजा)
खानकाह—१९३, ४६७ (ख्वारेज़्म)
"खानकाह-शफाइया"—१६१ (सार्वजनिक अस्पताल)
खानज़ादा—१७१, १७३, (-वेगम)
खान तिङ्करी—५३५ (शिविर)
खानजादा नोगाई—२८४
खान पुलाद (बुलात)—३४३
खानवालिग—११, १३ (पेकिङ्)
खानम—१८५
खान-वश—६८
खान्स्की—५५२
खानाबाद—१३१, १९२
खाप—१८१
खामिल—३२८, ३३०, ३३१
खार्कोफ—५०८ (=खर्काफ)
खावद—१३८
खाविद-तुहर—३०६
खाविंद विकी—१६०
खिज़िर—४२, ४८, ६५, १३३, २०१, ३१५
खिताई—१०३, ५१४ (उज़्बेक), ५१६
खियाली—१५८
खिंगन—५३० (पर्वतमाला)
खीवा—५३, ५६, १३७, १६९, १७८, १९१, १९६, १९९, २०१, २०४, २०८, २१०, २११, २५१, २७१, ३०५, ३५१, ३५२, ३५३, २५८, ३७८ (ख्वारेज़्म), ३७९, ३८७, ४२६, ४३१, ४३२, ४४४, ४४८, ४५०, ४५१, ४९०, ४९२, ४९४, ५१७, ५२५, ५३५, ५५५
खीवा-खान—१९६, ४६४-८७ (-खान), ४८६ (-सधि-पत्र)
खुई—४०
खुङ् थैची—३२७, ३२८, ३३१, ३३३ (=महाराजा), ३५३
खुतकताई—३३८
खुतुलुन—१३२
खुत्तल—५६, १७३, १७४ (खुत्तलान)
खुदादाद—१५५
खुदावदा—१३३, १४५
खुदायार वी—४५५ (वी), ४५१
खुदायेफ—५३३
खुन-थैची—३२५ (=खुङ्थैची)
खुनबुका—५
खुविले—३ (कुवले), २९

खुम्बान (चश्मेसब्ज)—४९९ (डाडा)
खुम्स—१०३
खुरासान—६, ५६, १०४, १३०, १३३, १४३, १४५, १५४, १७३, १७६, १९६, १९९, २७७, ४४३, ४५०, ४६७, ४७२, ४८२, ४९१, ४९२, ५३९
खुर्रमसराय—४२०
खुलफा—४८
खुलाकू—३, ६, ७ (हुलाकू), ८, २७, २८, २९, ३१, ३६, ३८, ४७, ५४, १२१, १२७, १३९ (खुलागू)
खुल्म—१७९ (खुल्म), १९४, ४४९, ४६०
खुसरो—७, ११४, १४६ (अमीर), १६१
"खुसरो-व-शीरीं"—१६१
खू-जिन खातून—२०
"खूनी रविवार"—३९९,४००, ४१०,४१२,४१४, ४१५
खूरियानी—१५८
खू-लुग—१४, १५
खेर्सोनेस—८३
खैरतुल्-अतरार—१६१
खैयाम—१३९
खैर हाफिज—१८३
खैरावाद—४९९
खोकद—१६३ (फरगाना), १८०, ३३६, ३३७, ३४७, ३५८, ३६०, ३७८, ३७९, ३८७, ३८८, ३९४, ४२१, ४४०, ४४८, ४५०, ४५१, ४५५, ४५९, ४७६, ४७७, ४७८, ४८६, ५११, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०-२३ (स्वायत्ततावादी), ५२४, ५२५, ५२६, ५३५, ५४०, ५५०
खोजकी काशानी—१८३
खोजद—२७, ३२, ५६, ६७, १२२, १२८, १३०, १३८, १४८, १५९, १८०, २००, २११, २७९, २८०, ३०७ (-नदी), ३४३, ४२२, ४२५, ४३१, ४३२, ४३३, ४३६, ४४२, ४४४, ४४७, ४५१, ४५५, ५१८ (=लेनिनाबाद), ५२०
खोजम्वाज—५५३ (गाव)
खोजर—१७४
खोजा—१४९, १६१, १६६, १६९ (-यहिया), १८३, २९१, ३३३ (-अहमद), ३३६, ३३७ (=सत), ४५५, ४६७ (=सैयद)
खोजा दानियल—३३२
खोजा नियाज़—४७७
खोजा—१७७(-दीदार), १८३ (-बहाउद्दीन), २०६(-कुल), ३३२ (-दानियाल), ३३५ (-यूसुफ)
खोजार—१७०, १७५
खोजेइली—४८४
"खोजेनिये ज़ा-त्रि-मोर्या"—१०१ (अफनासी यात्रा)
खोतन—१८०, ३६८, ४२५
खोदमीर—१६१
खोन्दा—३५७ (नदी)
खोयेत—३३५
खोरवात—७१ (क्रोवात्)
खोरसोन—८३ (खोरसुन)
खोरोत—३२५ (चोरोस)
खोरोशिन—४८६
खोर्तित्सा —२३०
खोलोपगोरोदक—३५
खोल्मोगोरी—२६५
खोशकुर्गान—४२९
खोशोत—१६६, २८२, ३००, ३२८, ३३२ (खोसोत्)
ख्मेल्नित्स्की—२३१
ख्रिसोवेर्द—८३
ख्वाजा—१४३, १५३, १५६, ४९८ (=खोजा)
ख्वारेज्म—१८, २१, २७, ३२, ३६, ३८, ४१, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ६४, ६५, ६६, ७१, ७४, १४५, १५०, १५६, १५७, १५९, १६६, १६७, १६८, १७८, १८१, १८२, १९०, १९३, १९६, २०४, २०९, २१०, ३०८, ३१५, ३२५, ३३८, ४४२, ४६४, ४६७ (गुलाम-मडी), ४९८, ५३९, ५४८
ख्वारेज़मशाह—१२५
गगरिन—३३३
गज़न—३१, ३९, ४६ (खान), ६४, ६५, १०३ (गज़ान), १३२, १४४ (=गज़ान)
गज़नी—२८, ४७, ४८ (गज़ना), १३४
"गज़ा"—५४४ (=धर्मयुद्ध)
गज़ारिन—२५३
गटफ्रिड ग्रेग्रोरी—२४१
गत्चिना—२६८, ३९० (-वदी), ५१०
गदुनोफ—११५, ११६, २३८, ३१८
गन्दन—२८२, ३२९, ३३०, ३३१, ३३३ (-छेरिङ्), ३४३, ३४६, ३५९, ३६०

(-कुसिमन), (=गल्दन)
गपेयेफ—५२५
गपोन (पादरी)—३९९
गफ़्फ़ारी—४८, ६४, ६५
गयतोन—१२७
गयासुद्दीन—१४६, १५६, १५७, १६१
गरवीन—३२
गरम—५४६
गरविलोन—२४४
गरसरदार—५५२
गराव—५३९ (गाव)
"गरोद्‌निची"—२६२
गलवाचेफ—४३६ (जेनरल)
गल्दन—१६६, ३२८, ३३४ (गदन), ३४५ (-छेरिङ)
गलिसिया—३८, २६०, ४१३
"गसूदर'—१०० (=स्वामी)
गगा—४३०, ४९९
गधार—१४ (पूर्व-,मुग्नन्)
"गाज़ी"—५४४ (धर्मयोद्धा)
गाय—७२
गालिच—८३ (हालिज), ८४, ८८
गालिच-वोलोहुन्स्क—९२
गालित्जिन (राजुल)—४६५
गालित्स—८२
गाले—५१५ (उज्वेक)
'गाड़ीवानोंके गीत"—३८८
'गायके गरीबोंसे"—३९७
गिज्दुवान—१०५, २११
गियाउर—४८९, ४९७, (उपत्यका)
गिरती—२०५
गिगई—१६७ (-बेग), २३७, ३०३
गिरिदक—८२०
गिल्गित—३११
गिलान—२८०, २९१, ३८१
गिलज़ई (अफ़गान)—१९३, १९४, ४४०
गिज़्बुर्ग—५२५
गीलान—१०३ (गेलान)
गुइउक—२८५
गुइगुदार—२४२
गुचकोफ़—४१८, ४१९
गुजार—१७२, ५२६
गुर्बानिया (=प्रदेश)—२५१, २६२, ३७०, ४०४, ४३२, ५०३, ५१२
गु-युक—२६
गुयेदिक—४७५
गुरज़ोफ—१०४
गुरलान—४८४
गुरलेत—५१५ (उज्वेक)
गुरियेफ—४६५
गुर्जिस्तान—३३ (जार्जिया), १४४
गुर्जी (जार्जिया)—६, ६०, ९२, १४५, १८१, १९२, २५१, २७१, २७२, ३६९, ३७१, ३९५, ३९९, ४०५, ४७२, ५१२
गुर्लिन्स्क—३५१
गुलबाग—४२५
गुलाम—४९१
"गुलामान"—४९३
"गुलिस्ता"—४१, १४३
गुलिस्तान सधि—३७२
गूज—२०७, ४८९ (तुर्कमान)
गूनिब—३७७, ३७८
गूनेज़ो ओगलान—५६
गूरगान—१४८, ४२० (कूरकान), ४७०, ४८९ (नदी), ४९०
ग-युग—६, १३१ (गूयुक)
गूशी (गश्री)—३२८
गेगेन्—१५
गेदोई—५१५ (उज्वेक)
"गेनरलिस्सिमो'—२७० (महा-महासेनापति)
गेनादी—१०२
गेनोवा—११, ३५, ३६ (गेनोआ), ३९
गेरेतू—३२४
गेरेवाल—३२४
गेरेसजा—३२४
गेविलोन—३२९
गेलन—१९२
गेलेसिया—३९ (=गिलिसिया)
गैखातू—१४४
गैरतशाह—५४५
गैरमुल्की—१२९
गैरिसन (छावनी)—५२४, ५५२
गोकलान—२००, ४७२, ४९०, ४९४, ५४७ (तुर्कमान)
गोगलन—३८४, ३९२
गोनजालेज—१५२, १५३
गोबी—३४२
गोयेज़—३१३
"गोयेवेन"—४१३
गोरदेत्स—६३
गोरलाने—२९२
गोरलोव्का—४०३
गोरियान—१७६, १८१
गोरिल्ला-युद्ध—२२१
गोरी—१७६, १७९, ४६०
"गोरे-अमीर"—१५४
गोरेलोफ—५२५
गोर्की—९२, २६७, ३९६, ४१७, ४४६
गोर्डन—२४६, २४९
गोर्देयेफ़—२९१
गोलिच—४१३
गोलित्सिन—२४६, २५६
गोलोफ़—४८१
गोलोवात्सोफ—४८१ (जेनरल)
गोलोविन—२३९

गोलोव्किन—३७४
गौहरशाद—१५७, १६०
ग्नेज्दा—९२ (कुलाय, घोसला)
ग्योकतेपे—३८८, ४९३, ४९५, ४९७
ग्रह-कक्षा—१५८
ग्रानोवितया ग्लाता—१०५
ग्रिगोरी—१०, ११०, २१८ (ग्रेगरी)
ग्रिवोयदेफ—३८२, ३८३ (कवि)
ग्रिवना—८५
ग्रीक—३६, ५३, ७४, ७८–७९ (-अग्नि), ८२ (पूर्वी रोम), १०५, २२९, २४०
ग्रीक चर्च—३४, ८३, २३०, २५९
ग्रीफ्स—१५८
ग्रोवेन्स्क—४६५
ग्रीस—३९, ८३, ४११
ग्रोज्नी—१०९ (क्रूर)
ग्रोद्नो—४१३
ग्रोसा—१११
ग्लादिश्येफ—२९१, २९२, ४६७
ग्लिन्का—३८४, ३८५
ग्लिन्स्की—१०७
ग्लिन्स्कया—१०७
ग्लव—८४
ग्वोज्देफ—२५६
घग्घर—१४१
घटना-लेखक—१५६ (=वकायानवीस)
चगताइ—१४ (खान), १७, ३२, ४९, ५६, १०३, १०४, १२१ (-वंश), १२२, १२४, १२५ (खान), १२७, १३०, १३३ (-उलुस), १३७, १६१, १६२, १७४, २७८, २९३, २९५, ३१२, ३१३, ५४८ (तुर्की भाषा)
चगन—५४३ (गाव)
चगान खान—२६४ (श्वेत राज।),
चगानतारा (एम्बे=-वेत तारा)
चचकली—५१६ (उज्बेक)
चदो—४७१, ४७८ (तुर्कमान)
चपकुल—५२०
चपची—५१४ (उज्बेक)
चपराच—१३०
चपलेती—५१८ (उज्बेक)
चवी—३०, ३१
चमगुल—३१७
चमन—४९९
चरवा—४९३ (बस्तीवासी तुर्कमान)
चरापेन—३६१
चर्चिल—५२५, ५२६
"चश्मये फैज़"—१४५
चश्मी—२०८
चहार देह—१९९
चहार-राह—१६९, १७०
चाउ—१४१
चाउ-हाइ—३३६ (जेनरल)
चाउ-हो-येइ—४२१
चाङ-काइ-शेक—१२
चाङ जू—५
चाङ-ते—१२८
चागन—५ (चगन)
चागा—१३२
चाणक्य—१३९, ३२६
चाता—३१८
चादिरकुल—२९८, ३१०
चापर—१४, ४७, १३२, १३३
चापरग्गिर—२९७
चावुकोफ—३१६
चारजूय—१९३, २११, ४४२, ४५६, ४५८, ४६७, ४६८, ४७३, ४९५, ४९९, ५२०, ५५०, ५५३ (चारजूइ)
चारबेकर—४६७
चारयक—४३३
चारिन—३००, ३३१
चारुनचलाक—३०८
चार्ल्स—२२२, २३४, २४९, २५०
चार्लोत—३७४
चालिश—२९८, ३०४, ३०८ (कराशार)
चिकिसलर—४८१, ४९५
चिङ-गिस्—६५, ४६०, ४६४ (छिङ-गिस्)
चिङ-माङ—१६६ (उपराज)
चित्रकला—३९३
चित्राल—४६०, ४६२ (-मेहतर)
चिन्नरन—४४३
चिनास—१६९
चिमकन—४२८, ४२९, ४३२, ४३५, ४५१, ४६०, ५३०, ५३६
चिमकुर्गान—४२१, ४३०
चिमताई—४२, ४८
चियान-लुङ—३४७
चि-येन-लुङ—३३४
चिर—१६६, १६८
चिरचिक—१६८, ४२८ (नदी)
चिरागकुश—३०४ (दीपबुझाव सम्प्रदाय)
चिरागची—४५७
चिलकेस—५१५ (उज्बेक)
चिलिक—३१७ (झील), ३३१ (-उपत्यका)
चिह काका—५४३
चिह-दरा—५४४, ५४५
चिंगीज़—३११, ३१६, ४६९ (खान), ४८८ (छिङ-गिस्)
चीचक—५१४ (उज्बेक)
चीचिहार—२५३
चीता—४०३
चीन—३, ९, १६, ३८, ७१, ७५, १०३, १२१, १३३,

१४५, १८३, २४०, २६१, २५४, २६३, २६४, २७३, ३२२, ३०४, ३२७, ३६१, ३६७, ३६८ (-भाषा), ३८९, ३९७, ३९८, ४०८ (-जाति), ४२१ (-तन्त्र) ४२५, ४९८, ५३७
चीन-रूस-सन्धि--३९०
"चीनीखाना"—१५८
चीनी तुर्किस्तान—४२४
चुरचीं—२७१
[illegible]—२५६, ३७३
चुपसुन तम्बा—३१८ (जे-चुन-तन्-पा), उर्गाका लामा
चुबुरगान—५१५ (उज्बेक)
चीमिर—५३०
चुरान—५१५ (उज्बेक)
चुरिगेइ—३६१
चुलपान—५६ (मलिक)
चुल्लिक—५१५ (उज्बेक)
चुवाक—३१५
चुवाद—१३०
चुवाश—७१, १०७, ११२, २२०, २३४, २३७, ३१६, ३७२, ४०१
चु-मिमा—९, ४०० (च्शिमा)
[illegible]—१०९, ११०
[illegible]—१२५, १२८, १३२, [illegible], २७५, ३००, ३०९, ३७२ (-उपत्यका), ४३२, ५३०, ५३१ (-नदी)
[illegible]—३३८
[illegible]—३३१
[illegible]—३१९
[illegible]—२८३
[illegible]—३२२
[illegible]—३२६
[illegible]—१६
[illegible]—४२३, ४२८
[illegible]—२१३
चेक—२४
चेकली—४७१
चेका—४३३
चेकोव्स्की (संगीतकार)—३९६
चेखोफ--३०६
चेगेन—३३४
चेचन--३७७
चे-ताइ—३३०
चेन्-दू--११ (सदा)
चेवती--५४८ (तुर्कमान)
चेरकास--२२ (राजा), ३३, ३९, ४२ (वेग) ५६, १४५, २०९, ३१७, ३३९
चेरदिन—११३
चेरमिस--११०
चेरेन सन्लुप--३११ (छे-रिङ्-सन्-डुप.)
चेरमिसी--२२१, २३८
चेर्न्यायेफ—३८६, ३८७
चेर्नीवाशी--४३८
चेर्नोक्लोबुक—८२ (करा-कल्पक)
चेर्निगोफ—७२, ८८, ८६, ८८, ९१, १००, २२५, २७५ (=चेरनीगोफ)
चेर्नियेफ-- ३८६, ३८७ (चेर्न्यायेफ़), ४३२, ४५१
चेर्नोशेव्स्की–३८५, ३८६, ३८७
चेलखान--९७
चेलियाबिन्स्क--३८९
चोका--३८९
चोगा- ७९
चोकारोफ--५२१ (मुस्तफा)
चोइमी हाई--३३१ (गदन-पुश्री)
चोपचाक --५४६ (गाव)
चोपान-अता--१५८
चोवान--३३, ३९, १६५, १६७, १९०
चोमरी--४९३ (घुमन्तू तुर्क-मान)
चोरोस--३००
चोनिये--९४
चोयान--२७९
चौदार --५४७ (तुर्कमान)
च्यान्-लुङ--४२१ (=चियान्-लुङ)
च्वाङ-चिन्-वाङ--३३६
छग्दोर—३२९
छङ-अन्--५ (सि-यन-फू, शेन्सीमें)
छ-नगर--३३३
छलनी--१२२
छिङ-गिस्--३, १०, १३, ३२, ४०, ५४, ५८, १२१, १२६, १३७, १३९, १४०, १४४, १४८, १५३, १६३, १६६, १७७, १८०, १९६, २००, २८०, ३००, ३०९, ३३०, ३५८, ४२०, ४३९, ४७० (=चिंगीज)
छ-मिश--३२४
छेर्तन पल्जोर--३३१
छेरिङ-दोण्डुब्–३३१ (=दीर्घायु सिद्धार्थ, ०ममडुब्), ३३३, ३३४, ३३५
छेवङ-अर्पचन--२८२, ३२९ (=अर्वतन्), ३३०, ३४० (-रत्तन), ३३१, ३५३ (०दोर्जे)
ज़कात (=शुल्क)–४२९, ४३३
जगताइ--८, ५३, १२१, ५१६ (उज्बेक)
जगात--१४२, १४३
जज़ीरत्--८ (मेसोपोतामिया)
जदीद--४५३, ५२६ (नवी-नतावादी)
जद्दा—१०३
जन-कमीसर—५१०, ५११,

५२३, ५२५ (मंत्री)
जनतंत्रता—३५१
"जनता सकल्प"—३८७
"जनतांत्रिक समाजवादी पार्टी"
—५०८ (कम्युनिस्ट पार्टी, बोल्शेविक)
जनदूत—१३९
जनयुग— ८३ (कबीलाशाही), ८५
जनवादी—३८७
जनसमाजवादी दल—४१८
जनसींज (गुप्तचर)—४७८
जनेवा—३९३ (स्वीजर्लेण्ड)
जब्बा—४९४ (चोगा)
जब्बारबर्दी—६५, ६६, ३०७, ३०८ (—वर्दी)
जमजम—१८०
जमशवर—३२
जमशीद—१५७, ३१३ (जमशेद), ३७६ (ईरानी)
जमानसरतोफ— ५३७
जमायतूलउलेमा—५१७
जमाऊ— १२९
जमालुद्दीन सिताजी—१३८
जमीन—१८०, १८२, १८३
जम्बूल—५२८, ५३० (=औलियाअता), ५३४
जरगळान—३३१
जरफ्शा—१३१, १४१ (सोग्द), १७५, ४५२, ४५७, ४९९, ५३५, ५३९
जरलिग—२९२
जरावाद— ४९१
जर्मन—३८, ९४, १००, १०९, २२२, २४०, २५६, २७०, ३४० (-उपनिवेश), ३६८, ३७२ (-प्रवासी), ३९२ (भाषा), ३९६
जर्मनी—२३, २४, ३९, ७४, ३६६ (बवेरिया), ४०६, ७९
४०८, ४११, ४१२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०७
जलाना—८० (मुर्दा-)
जलायर—१४७, १६८, १७० (=जलैर)
जलाल—१५६
जलालुद्दीन—६४, ६५, १४३, १६५
जलियावाला बाग—३९९
जलील—१५७
जलेरताउ—१३१
जलैर—५१४ (उज्बेक), ५३० (कज़ाक, उज्बेक)
जवात—१३१
जस्सकतु खान—३२१
जहाद (=धर्मयु)—३४७, ५२१, ५२६, ५३६
जहादी—४४३ (=धर्मयोद्धा)
जहानशाह—१०४
जहागीर—५३, ५४, १५०, १५५, १८७, १८८, १८९ २०६, २९७
जहागीर खोजा —४२४
ज़हीरुद्दीन— १५८ (बाबर)
जगली ऊट—३००
जगी अता—३६
जजीरा —१४१
जद—४८
ज़ाइच्नेव्स्की—३८५
जाइसन—२३५, ३२५
जाउल्दुर—५४८ (तुर्कमान)
ज़ाकास्पी—५४९ (पारेकास्पियन)
जागन नोमेन—३२६
जागिएलो—९८
जाता—३१२ (सीमाती)
जाति-व्यवस्था—१२
'जातिक सदन"—५१३ (सोवियत)
जातियोंका अधिकार—५११
जाते—१४८
जादल्म—१५७
"जा-दुनाइस्की"—२६० (दन्यूबवाला)
जान—६४
जान मुराद—४७१
जानीबेग—३८, ४०, १६६, १६७, १७३, १७९, १८५, ३०३, ३०९, ५३० (-बेग)
जापान—८, ९, १४०, ३७२, ३९७, ३९८, ४०० (सधि), ४०६, ४०७, ४१० (-युद्ध) ४१२),
ज़ापोरोज्ये—२२१, २३०, २३१ (=ज़ापरोजे)
ज़ापोरोगियान—३९
जावत्—१०, १०३ (जावा)
जाम—१७७, १८१
जामा मस्जिद—४५३
जामी—१६१, १६३
जाम्कशिर—४८३
"जामेउत्-तवारीख" -२६, १४५
"जामेजम"—१४६
ज़ामोस्तये—२३२
ज़ाम्सिफ—५२५
ज़ार—१०७, १८८, २०६, २१७, २३३, २३४, २५५, २५६, २८१, ३९९, ४५२
जारकद—५३३, ५३७
ज़ारग्राद—७९ (राजनगरी)
ज़ारशाही—५१४
ज़ारिना—४१६, ४१७ (=ज़ारपत्नी)
ज़ारित्सिन—२३६, २६२, २८८ (=स्तालिनग्राद)
ज़ारुत्स्की—२२३, २२५
जार्ज—२१, २२, ३४
जार्जिया—६२, १०३, २६३,

४८३, ८८६ (गुर्जी)
जार्स्कोसेलो—३८३, ४१७, ५१० (=पुश्किन)
जाउ—१५३
जालेस्की—६३
जावा-१० (=जावत्), १०३
जामी—२९७
जाम्अल्की—३११
जाहिरोफ—५०३ (कराउल बेगी)
जिगिन—८९२ (=बहादुर)
"जिजे इउखनी"—१४२ (इलखानी नक्षत्रसूचि)
"जिजे-उलुगबेग"—१५८ (उलुगबेगी नक्षत्र-सूचि)
जिट—५११ (उज्बेक)
जिर्गा—८३३ (=रोमनी, जिगान)
जिभारेटफ—२६१
जिम्बिउ—३३८
जिरियार्गी—११९
जिगाचिग—२७९
"जियो नचालनया तोइस्त्रा"—१०२ (जीवन-प्रगायक निर्माता)
[illegible]—३८० (=जिङ्-गिस्, चंगेज)
[illegible]—२३६, २३०, २७१, २८७, [illegible], [illegible], ८२६, [illegible], [illegible], ८८३, ८५२, [illegible], [illegible], ५२०, ५२८, [illegible]
[illegible]—३०३
[illegible]—१८३
[illegible]—१८०
[illegible]—[illegible]
[illegible]—[illegible] (उज्बेक)
[illegible]—[illegible]
[illegible] (गाजिन)
[illegible]—[illegible], २०
जुजिली—५१६ (उज्बेक)
जुवान—५४८
जुवैनी—१२८, १३१ (जुवैनी)
जुरजान—२०३
जुराकुल तोक्साबा—५३३ (मुल्ला)
जुरावयेफ—५१३
जुरा बेक—४५७
जुल्फा—५५४
जुलियन—२१, १५२ (-सचाग)
जुलून—५१४ (उज्बेक)
जुल्फिकार—४९८ (डाडा)
जुवाल्दर—५४८ (तुर्कमान)
जुगर (कल्मक बामवल)—२६३, ३२५, ३२६, ३२८, ३३२, ३३३ (वंश), ३३८ (-सेना), ३३६, ३३७, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३५०, ३५२, ३५९, ३६०, ४२०, ४२२
जुगारिया—२३५, २८२, २९१, २९६, ३१९, ३२८ (कल्मक-भूमि), ३२९, ३३८, ५३०
जुर्के—३०
जूकोव्स्की—४१०
जूर्ची—३० (=जूर्छी, तुर्छी), जूर्चीयुग—३१५
जू-ठि—१७, १८ (=पवक), ३९, ८३ (-वंश), ८५ (जू-ची), ८९, ५१, ५८, ६३, १२१, १२२, १२८, [illegible], १३२, १९२, १९९, १८५, २१६, २७७, ३०३, ३१५ (जूर्ची भी)
जमा—५२८
जूमान—५३९ (गाव)
जूयुन—५१४ (उज्बेक)
जूयुन (चित-)—५१८ (उज्बेक)
जूबेकार—२११
ज्लेक—४२९
ज्लेगन—५१० (उज्बेक)
जेगुर—२०५
जेल्वात्—४७
जेङ गिन कुल्जी—१२४
जेचुन तम्पा—३२९ (उर्गा लामा)
जेजेद्—१९९
जेते—१४९, १५०, १६९ (मुगोलिस्तान खानकी सेना), २९६
जेनेवा—४०२
जेन्किन्सन—२०५, २०६, २८७, ३१३
जेंद—२७
जेवक—४६२
जेवनी—५४८ (तुर्कमान)
"जेम्ला-इ-वोल्या"—३८७
जेम्स्की सबोर—१०८, ११६, २१७, २१९, २२४, २२६ (राष्ट्रीय सभा), २२८, २३३
जेम्स्चिना—१०८ १०९
जेम्स वाट—२६७
जेया—२३९, २४०, ३८८, ३८९
जेरेवो गोरोद्ची—११५
जेरेमिया—११६
जेर्जिन्स्की—४१७
"जेल-जामे-उत्तवारीख"—३२
जेलेर—५१६ (उज्बेक)
जेसाउल मामित—४८४
जेसुइत—३२९ (ईसाई)
जेकिंग—१३५ (जिकशी), १३६
जेंकिन्स—१९०
जेंक्रिया—२८६
जेंगिर-मराय—५५
जोङ-सान् ताउ-फ्—१२५
जोकी—६८
जोचोकवालिक—१३२

ज़ोरकुल--४९८ (विक्टोरिया झील)
ज़ोहरा--१८५, १८७ (-ख़ानू)
ज़ोहाव--३१३
ज़्दानोफ--४१४, ५०८
ज्योतिषशास्त्र--२६५
ज्वालामाई--१०३
ज्वेज्दा--४०९ (सितारा)
ज्वेनीगोरद--५२, ९६
ज्वोइकोफ--३८८
ज्वोरोफ--२३२
टर्की--१७७
टाड (मेजर)--४७४, ४७५, ४७६
टामस हाइड--१५८
टिमरमान--२४७
टुल्कू--३४० (अवतारी)
टेम्स--२४८
डच--२४०
डन्जिग--२६०
डेनमार्क--१०८, २५६
डेन्स्टरविल--५५४ (जेनरल)
डेप्टफर्ड--२४८
डोम--२०३, ४३३ (रोमनी, जिप्सी)
ड्रेडनाट--४११
ड्रेसडन--३६८
तकफीर--३७ (सम्राट्)
तकमक अता--४८४ (द्वीप)
तकात--१०४
तख़्तबाजार--५५१, ५५३
तख़्त-सुलेमान--४३१
तगनरोग--३६५, ३७४ (तगन्रक)
तगिल--१११
तजलर (कजाक)--५२९
तजीमारी--३०
तनजुर--१३ (शास्त्रानुवाद)
तनाव (भूकर)--४३३
तवी नूस--४८१
तब्रेज--३२, ३३, ३९, ४०, ४१, ४३, ५४, १०४, १३९, १४१, १४४, १५०, ४४६, ५५४ (=तब्रीज)
तबोल--५१, २३४, ३१७, ३१८
तबोल्स्क--११२, २१९
तमगाज चुरा--२०१
तमगीर--५४८ (तुर्कमान)
तमता--६
तमदी--४८१
तमन--८४
तमातोकत्--३०
तमूतरकान--८४
तम्वोफ--२२
तम्मेरफोर्स--४०२
तरकू--३०
तरखन--५९, २३४, ३१६ (तर्खन-राजकुमार)
तरखन्स्कोये ओस्त्रोग--३१६
तरत्--८४
तरनोफ--४१३
तरबगताई--२९७
तरबू--२९
तरस--४६, १२७
तरानचिन--२९६
तरानचिन्स्की--२९६
तरिम--१२४, १४१
तरी-उइगुर--५२९ (कजाक)
तरुण कम्युनिस्ट कांग्रेस ५३३
तरुण तुर्क--४०७, ४०८
तर्खन जारुकतू--३३४
तर्गुत कल्मक--२५३
तर्तुगू--५१६ (उज्वेक)
तर्मा छेरिङ--२० (=तरमा शेरिन), १३४, १३५
तलजियान--४९
तलतगा--३४६ (जेनरल)
तलदिक--४८०
तलदी बुलाक--५३७
तलस--२६ (तरस), १२७, १३०, १३२, १३३, १८०, २७८, २७९, २४९, ४३२, ५३५ (नदी)
तलिकू--१३३
तल्लिन--१०८
तलेउ--५१५ (उज्वेक)
तले७ वेर्दिन--५३७
तवक्कल खान--१८०, २७९, ३२४, ३२५, ३५०
तवाची--५६
"तवारीखे-नासिरी"--२०
तवील-दरा--५४४, ५४६
तस्ली-यामिश--२०७
तहमास्प--१७६, १७७, १७८, १८१, १८३, २००, २०२ (शाह-)
तका--४३३ (=छ आना), ४७८ (=तगा)
तगिदीवान--१९२
तगुत--३, ३३१ (अम्दू)
ततसीला--३३१
ताइ-चुङ--४ (मगोल)
ताइगा--२७१
ताइ-न्याउ--८ (धर्मशाला)
"ताइ-युवान्-तोङ-शी--१५ (मगोल-महाविधान)
ताङ-चु--३२४
ताउ--१२
ताउरा-अतलस--२९७
तागबुई--१९९, २०३
ताज़--५१६ (उज्वेक), ५२९
ताज़न्द--४८८, ४९० (उप-त्यका)
ताजमहल--१५७
ताजिक--५६ (=सर्त), १३५, १९४, ३०५, ३७८, ४२७, ५१७, ५३६, ५३९ (सोग्दी), ५४४
ताजिकिस्तान--१२१, १७१,

३०६, ४५३ ४५८, ५१०, ५२७ (पू० बुखारा), ५३०, ५६०, ५६१ (-खानराज्य)
ताजिकी—५३० (भाषा फारसी)
ताजुद्दीन—१३८
तातातुंगा—१२२
तातार—२३८ (तारतार), २३७, २०८, ११८, (मंगोलायित) ५११,
ततिश्चेक—३४५
तातीशेफ—३५२
तान—३०
ताना—३८
तानिशेफ—३५२, ५२२
ताब्रिन—५ ५ (उज्बेक)
तामा—५१५ (उज्बेक)
ताम्र-युग—५०१
तायगा—३४ (=ताइगा)
तायनशान—३२१, ३२२, ३२४, ३२५
तारनाग—२८, ५१, ९३ (मंगोल, तुर्क,) १६७, २२४, २८४, ३१६, ३६८, ३७२, ४०१, ५१०, ५१५ (उज्बेक), ५१८ (मंगोलिया), ५१०, ५८८ (भाषा)
तारतारी—३८१ (-वाड़ी), ४८८ (चगताइ तुर्की)
तारा—३१७ (नगर) ३१९, ३२६, ३३३
ताराज—१२२
[illegible]"—१८६
[illegible]"—११०
[illegible]"—७३, १७५, २०२, ३०२, ३०८
[illegible]"—१८६
[illegible]'—२०, ३९
[illegible]"—३०
[illegible]—१३०
तार्नोपोल—५०५
तालिकान—१३१, १७९, ४६०, ४६२
तालिश—१४५
ताले—३२४
ताल्की—३२८ (डाड़ा)
तावदा—१११, ११३, ११४
ताज—५२५
ताशकंद—५५, ५७, १३२, १४९, १५०, १५९, १६१, १७१, १७२, १७६, १७४, १७८, १८०, १८२, २०९, २७८, २८०, २८१, २९१, ३०२, ३०५, ३०७, ३२४, ३२५, ३३१, ३४३, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५९, ३६०, ३७८, ३८७, ४१५, ४२०, ४२२, ४२३, ४२८, ४३९, ४४४, ४५२, ४५५, ४८१, ४८६, ५११, ५१७, ५१८, ५१९, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५३०, ५३३, ५३७, ५३८, ५४४, ५६९, ५५३
ताश-कुपुरुक—२०८
ताशकुर्गान—४२९
ताशकपरी—५५१
ताश तेमर—२०६
ताशदकान—११८
'ताश-रबाद'—२११
ताशबेग—३४ (ताशबेग)
ताहिर खान—३२८, ४६८
ताहिरी—१६३
ताहुरे—३२८ (=उलान-बातुर)
तिउद—३५०
तिङ री—१५३
तिखविन—२६५
तिफलिस—२८, ३९६, ४८०
तिब्बत—७, ९, १६, १३५, ३०९ (लदाख), ३१३, ३२७, ३२८, ३३३ (हस्तलेख), ३३४ (भाषा), ३४० (थिबोत)
तिमिरियाजोफ—३९२
तिमुर कथुक—४८१
तिमोवियेज—११०, ५४२, (कर्नल)
तियान्त्सिन—३८९
तिर्किश—५१६ (उज्बेक)
तिर्स—५१६ (उज्बेक)
तिला—४३३, ४७८ (सिक्का)
तिल्ज़ित—३६७, ३७०
तिसिया—७२
तीकासगरुल्कू—३०५
तीवेची—२००
तुईख्वाजा—४९
तुकातेमुर—२०, ४९
तुकान—२२
तुकावेक—३१५
तुकाल—१६३
तुखार—४४२, ५१६ (देश)
तुखारिस्तान—१९१
तुगराई—१४५
तुगलक—२०, १३४, १३५, १४८, १४९
तुगलक तेमूर—१३७
तुगाई—१४८, ४२२, ४२३
तुगाचार—२८
तुगागी—१२६, १२७
तुगुम—३६१
तुङ-कुङ-चुङ-फू—७ (शेन्सी)
तुङ-नुम्—२७१
तुजुक—१५४
"तुजुक-जहांगीरी—१६३"
तुजुकात—१४९

"तूजुकात-तेमूर"---१४८
तुतार--२८ (ततार)
तूनबेगा--२७
तूदा-मड-गू--२९
तुपकारा--५१५ (उज्बेक)
तुबेदा--११४
तुमाई--५१४ (उज्बेक)
तुमान--३०, ६३,४४५
तुमूलाड--५ (मगोल)
तुमेत-- ३२१
तुमेनेत--२२७
तुरका--१४८
तुरखन---१११
तुरगाद--१३७, १४८, ३४१, ३५८, ४१५, ५३१, ५३२
तुरगुत --२६४, ४५७, ४५८ (मगोल)
तुरतेस--११४
तुरसुन-- १८७, २०९, २८१, ३४५ (खान)
तुरा--१११, १५४, १७६, २८०, ३००(=यासाक, यास्सा), ३१६, ३१७, ३२१, ३२८, ४३५ (-कुर्गान)
"तुरावी"--१८७, १८८
तुरा मुराद--४७२
तुराश--३१७
तुरा सूफी--४६९, ४७०, ४७१
तुरी--३१
तुरे कुतुलुक--२९
तुरेव्स्की--७३
तुरोफ-पिन्स्क--८८
तुर्क--५६, ७१, १००, १०२, १०५, ११६, १६१, १७२, २८४, ४६८(-जाति), ५१७, ५२६, ५२९, ५३६, ५४१, ५४२, ५४८ (-भाषा), ५४९
तुर्कमान--५४, ५५, १५८, १६४, १७५, १७६ (इस्माईलके सैनिक), २००, २०३, २०४, २०५, २०७, २०९, २८७, ३२१, ३३८, ३४८, ३४९, ३५५, ३५७, ३७८, ३८८, ४१५, ४५० ४६३, ४६७, ४७०, ४७१ (तेक्के, यामूद, सलार, चदोर, अमीरअली, बूजजी, ककुरत ककली, मगित), ४८३, ४८४, ४८६, ४८८, ४८९ (-कबीले,-बुज,आगूज) ४८९-९३ (तेक्के, सारिक, सलोर), ४९४ (-रूससे युद्ध), ४९३ (पोशाक), रूपरेखा), ५१५(उज्बेक), ५१७, ५४७ (कबीले), ५४८ (जाति-निर्माण चगताई तुर्की), ५४९ ५५३, ५५५
तुर्कमानिया--५४९
तुर्कमानिस्तान--१२१, ४५३, ४८९, ४९७ (गणराज्य) ५१९, ५२१, ५४७, ५५०
तुर्कमानी--५५२ (भाषा)
तुर्क-वंश--१७२
तुर्किस्तान-- ३७, ३८, ५७, १२१, १२८, १३४ (पूर्वी), १४१, १६५, १६६, १६८, १६९, १७४, १८०, २६१, २७७ (सिर-उपत्यका), २७८, २८०, ३०२, ३०४, ३४८, ३५०, ३७८, ४३२, ४४२, ४५१, ४७९, ५११ (-सोवियत सरकार), ५१२ (-गणराज्य), ५१७, ५१९, ५२०, ५२७, ५३४, ५५२
तुर्किस्तान कमेटी--५१७, ५१८
तुर्किस्तान प्रदेश--३०४ (सिर-दरिया)- ४३५, ५३६, ४५२ (गुर्वनिया), ५५०
तुर्किस्तान शहर--१८२, २७५, २८२, ३१०, ३३१, ३२५ (निम्न सिर-उपत्यकामें), ३४३, ३४५, ३५३, ३६०, ४२०, ४२३, ४२९, ४३२, ४८१, ५२८, ५३०-३४
तुर्की--८२, १००, १०३, १५४ १५९, १८३ (भाषा), २०३, २२०, २२६, २३१, २३३, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५७, २५९, २६०, २६४, २६९, ३४०, ३५६, ३६७, ३६८, ३७१, ३८६, ४०६, ४१२, ४५०, ४९५ (युद्ध), ५२६ (सुल्तान), ५४३, ५४५, ५४९
तुर्गनेफ--३९२
तुर्तकारा--४७१
तुर्फान--२९७ (तुरफान), ३००, ३०२, ३०४, ३०८, ३०९, ३१०, ३१३, ३२८, ३३०, ३३१, ३३२, ४२५
तुलचिन--३७३
तुलचिन्स्की --४१०
तुलसी--२६६
तुला---५ (मगोलियामें नदी), २२१, २३५, ३२१, ३३०, ३८१
तुलार --११३
तुलिशिन--२६४
तुलीख्वाजा--४९
"तुलुगमेह"--१७१
तुशिने--२२१, २२२ (चुशिमा)
"तुशिनो जार"--२२१
तुशियेतू--३२८
तुगर--३८१
तुगान -- ५३७ (चीनी मुसलमान)

तुगुत्—[illegible] (अम्दू)
तुगुन—२३०, ५८८ (मचू भाषा)
तुद्दा-जेत्र—९४
तुप —२०६
तुर्क किला—२०३
तुर्केगबाद—१७३
तु-ची—९ (=जू-छी)
तुज—२१०
तुनिग्गा—५४७ (तुर्कमान)
तुफाङ्—१२ (तिब्बती)
तुमें—५१५ (उज्बेक)
तुमेन—३२४
तूरातू—६१
तुरान—१४१, १७३, २८६
तुराना-अधित्यका—१६५ (किरगिज-स्तेपी)
तुरान-सुल्तान—५८
तुर्गिन्स्क—३१६
तुल मेहमत—३१८
तू-ला—१५
तु-ली-शिन्—२५३
तुलुइ—३ (छिङ्-गिस्-पुत्र), [illegible], (तो-लोइ), १७, १२१ (उलुस), १२०, १३९
तू-शि—१८ (ज-छि)
तुशियेतु खान—३२१, ३२९,
तुस—१३, १५०, १७६
तुर्गाय विभाग—३८५ (तुर्किया-विभाग)
तेअयरा—३५०
तेक-नाई—४३३
तेगाचिन—३३१
तेगिन—१२५, ३३८
तेजे (तुर्कमान)—२००, २०८, २०३, २०९, [illegible], ३८८, ४३१, [illegible], ४३६, ४८३, [illegible], ४९०, ४९१-९३, [illegible], ४९७, ४९९, [illegible]
तेपियर—३५४
तेबेन्दा—११४
तेमिर—५३०
तेमिरलिक—३३४
तेमूर—५०, ५४, ५५, ५६, ५७, १००, १२१, १२९, १३१, १३४, १४५, १४८, १४९, १५३, ४४७
तेमूर अब्दाली—४४२
तेमूर एज्बेक—४९
तेमर कआन—३२ (चीन), १३२
तेमूर कुतुलुक—५६, ६२
तेमूर खान—६४, १४४
तेमूर खोजा—४३
तेमूरताश—३९
तेमूर यँशी—१६६
तेमूर बेग—५०, ५८, ४८१
तेमूर बेग नोगाई—१६७
तेमूर मलिक—४९, ५६ (खान)
तेमूर लग—१३, ४९, ५३, ५४, १६-१३७, १४१, १४८ (-वश), २८६, २९० २९८, ४७०, ४९३ (=तेमूर)
तेमूरशाह—१३६, १९४, ४४१
तेमूर सुल्तान (खीवा)—४६६, ४६७
तेमूरी—१६३
तेमूरी साम्राज्य—३१६
तेयेन—२१०
तेयेन्कू—३३०
तेरक—२८
तेरमिज—५४, १३०, १३६, १३५, १६३, १७७, ५५२ (=तेर्मिज)
तेरनेक—१३१
तेरान—१५१
तेरेक—६१, १०८, १४५
तेरेदचेको—४१८
तेलेंगुत—३१९
तेवकेलेफ़—३५१
तेवल—२८४
तेहरान—१५७, १८१, ४९२
तैंगरी—५
तैलम्वार—५६
तोइरिन—३३०
तोकताई—१३२ (सुवर्ण-ओर्द्-खान), १४४, १४०, २८४
तोकतामिश (खान)—४३, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ६३, ६८, १५०, १५१, १५८, १६५, ४९१ (तुर्कमान)
तोकमक—२८१, ३७९, ४३२, ५३७
तोकसावा—५५३ (तुकमावा)
तोका—१३१
तोकाजी—१३३
तोकारेफ—५२५
तोगताइ—२९, ३०, ४०, (तुगताइ भी)
तोग्ताकिया—५०
तोग्तोगू—१३२
तोगान तेमूर—१६, १५० (०तिमुर)
तोदा—३१७
तोप—६३, १०१ (-खाना)
तोपचीवाशी—४४७ (तोपखाना का जेनरल)
तोपियातान—४८३
तोबोल—५८, ११०, १११, ११३, २७१, ३१६, ३१९, ३२४, ३२६, ३३०, ५३५
तोबोल्स्क—२२७, २५३, ३१६ ३१७, ३१८, ३२१, ३२६, ३३१, ३३३, ३३८
तोम्—३२७
तोम्स्क—३२७
तोरगुत—२१०, ३००,

३१९, ३२१ (तोर्गुत)
तोरिदा—२६२
तोरोपेत—२४९
तोरोवोलोद—३२४
तोर्गुत—२१०, ३००, ३१९, ३२१, ३२६, ३३८, ३३९, ३४० (वोल्गाकल्मक), ३४१, ३४२, ३४३, ३४८, ३४९, ३५०, ३५५, ३६० (तोरगुत)
तोर्गुत—३०९ (डाडा)
तौकेल खानम्—१५१
तौकेलेफ-४६५ (=तवेकलेफ)
त्यानशान—३२५, ३२६, ३२८, ३४१, ३७८, ४२५, ५३५-३७
त्युकमे—१३३
त्युकेर—५४८ (तुर्कमान)
त्युतोनिक—९५
त्यूपा—३३१
त्यूपेलिक करक—२९७
त्यूमेन—१११ २८६, ३१५, (प० साइबेरिया), ३१७, ३१८, ३१९, ३२१, ३२६, ३३८
त्यूलेस—२९८
त्योम्नी—९९ (अब)
त्राउवेन्वर्ग—२६१, ३४१
त्रान्सिल्वनिया—२३
त्रिगुट—४०७
त्रिपोलितानिया—४०८
त्रुदोविकी—४१०
त्रुवेत्स्की—२२३, ३७५
त्रुवोर—७५
"त्रूतेन"—२६८
त्रेपोजन्द—१०४
त्रोइत्सा—९९
त्रोइत्स्क—३४८, ३४९, ३५५, ३७८, ४४६ (=त्रोयत्स्क)
त्रोइत्स्क सेर्गियेफ—२२१, २४६
त्रोक—६२
त्रोत्स्की—५३७ (जेनरल), ५०६, ५०८
"तृतीय भाग"—३७६
त्वेर—२२, ३४ (कलिनिन), ९६, ९७, ९८, १००, १०१, १०२, ४०१
त्वेर्त्सा—९६
तिसतिसयानोफ—३७१
थाइ—७, १४ (=स्याम)
थाङ—१४ (-वंश)
थामस—१३५
थुबु थेमुर—१४
थेओगोनस्—३७
थेगन-थेमुर—१६
थैची—३२६ (तालेह), ३६०, (उबासा)
थैशी—३०४, ३१९ (राजा), ३२५ (थैची)
थोर्न—२६०
थ्रेस—३४
दक्षिणपक्ष—५१९
दन्यूब—५९, ७२, ७३, ८२, ८३, ८८, २५०, २६०, २६३ (दुनाइ), २८४, ३६७, ३८६, ४१२
दन्दुर—४८३
दबूसिया—१६९, १७१
दमिश्क—१०३, १४०, १५२
दरकद—५२७
दरखन—३२९ (तरखन, तर्खन)
दरबन्द—२२, २८, ३०, ३३, ४१, ५१, ५४, ५५, ६१, ६२, १०२ (कास्पियन), १३१, १४१, १४३, १४४, १५१, १७४, २५१, ४५९, ५५४
दरबदे-आहनी—१७४ (लौह द्वार)
दरवाज—४२६, ४५९, ५२७, ५४४
दरवेश—१५३, ४२३, ४७९
दरवेशखाना—४३४
दराज—५४३
दरा-जू—५४३
दरेदानियाल—२६० (दारदानेल्स), ३६७, ३७७, ३८०, ४०७, ४०८, ४११, ४१३, ४९७
दर्वेत—३२६, ३४०
दर्विस—६६
दर्रागूज—४६०
दर्राकोह—४२३
दलननोर—१४४
दलनी—४००
दलमासिया—६
दलाई लामा—३२४, ३२८, ३२९, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५
दश्त—१५६ (मैदान), २९३, ३५८ (स्तेपी), ४१५ (निर्जन भूमि), ४८०
दश्ते-कजाक—३७८, ४४५, ४६७, ४७६
दश्ते-किपचक—३३, ३६, ४९, ५०, ५५ (कजाकस्तान), ५६ (तोकतामिशका राज्य), १५६, १६६, १६८ १६९, १७६, १८०, २७७, २८०, ३०३, ३०९, ३५१, ४४५, ४८१, ५२८
दश्ते-किर्गिज—३७९
दश्ते-कुलाक—१७३
दश्ते-खाजार—३३, १४६ (-दश्तेखिज़िर)
दसैया—२४०
दहयक (दशांश)—४४५, ४५३
दहित-स्तान—१४५
दगिल—४९६ (-गोल)

दगिल तेप्पे—४३५, ४३६, ४९७
दाइशिंग—३२१
दाङ-नोयन—१८
दागिस्तान—३७१, ३७७, ४६८, ५५४
दाजबग—७३ (सूर्य, स्वारोग-पुत्र)
"दादख़ाह"—४५७, ४७१ (बुखारी), ५२६ (हाजी)
दानियल—१६, १३७, ५४६ (वामनची), ४३९, ४६९ (-नो),
दानिशमन्द—१३६
दावुल—१०३
दार्योश—५५४
दरोगा—१२, १६८, १७८
दालय—३२१
दावा—१४ (खान), ४७, १३१, ३६६
दाविद—८७
दाविदोफ—३७३
दाशा सेवस्तापोल्स्कया—३८०
दास—८५, ८६, ३०५, ४८६ (-प्रथा)
दिदेरो—२५९, २६७, ३७३
दिनोबेक—३३, ३८
दिमित्रि—३४ (लेर), ५१, ५२, ५३, ९८, २१८ (१), २२१ (२), २२५, ३९२
दिमित्रियेफ़—५२
दिमित्रोफ़—६३
दिग्तबेगर—५, ७, [illegible], १४१
दि[illegible]—[illegible], ७७
"दिरहम"—२५१
दिल्वेरो—५१५ (उज्बेक)
दिलावर शाह—५६५
दिल्ली—[illegible]

दिसवरी—३८२ (वीर)
दीन अहमद—११०
दीन मुहम्मद—१७८, १७९, १८१, १८५, २००, २०१
दीनार—५८
दीनू—२०१, २०३
दीनवेइ—३२१
दीपालपुर—१४४
दीर्घबाहु—९०
दीवान—१९० (कविता-संग्रह)
दीवानबेगी—१८७, ४२३, ४७८ (प्रधानमंत्री), ४८०
दुचात—११
दुदुरगा—५४७ (तुर्कमान)
दुनाई—२४ (दन्यूब), २५०
दुनायेफ—५२१
दुर्रानी—१९४
दुर्मेन—५१५ (उज्बेक), ५१६
दुलानोफ—५३१
दुलियाना—३८
दुवा—१३१
दुश—२६
दुशाम्बे—५२७ (स्तालिनाबाद), ५४४
दुसतनिक—५१५ (उज्बेक)
दूतोफ—५२२, ५२५ (आत्मन), ५३२, ५४९ (सफेद जेनरल), ५५०
दूमा—१०८, २२०, २२८, ३७०, (=संसद्), ४१६, ४१७, ५२३
दे बलाबियो—१५३
देर्झन्येफ—२४०, २५६ (देर्जानिओफ)
देनिकिन (जेनरल)—५०७, ५५२
देनिसोव्का—२६५
देमावद—१०३
देमियान्का—११३
देमियान्कोय—३१६

देमेसोन—४४८ (डाक्टर)
देरवेत—३२५, ३२६ (मगोल)
देरून—१७८, १९९, २०१, २०४
देर्झाविन—२६६ (=दर्झाविन्)
देलनोई—२९१
देलागारदी—२२२
देलाग—२५४, २५५
देवकेसकेन—२०४
देवा—७३
देवोत्तर-सम्पत्ति (वक्फ)—४५३
देसियातिन—३७२ (=अस्सी एकड)
देहकान (=किसान)—५१८, ५१९, ५२३
देहनौ—४५९
देहविद—१८३
देहबुलन्द—५३९ (गाव)
देहरादून—१५१
देहलवी—१४४
दै-शिङ्—३३८
"दोख्तरखाना"—५२७
दोगलत—२९५, ३०२, ३६१ (=दूलत)
दोण्डुब् यैची—३५२, ३५४
दोन—२२, ३९, ५१, ६१, ६२ ७१, ७२, ७५, ९०, ९८, ११०, १५२, २१७, २२०, २२५, २३०, २४७, २६१, २३५, २३६, २३७, २८४, २८७, २८८
दोन-कमाक—२७१, ३५४, ४८०
दोनेत्स—२३२, ४०३, ५८० (=उपत्यका)
दोनेत्स-उपत्यका—४०९
"दोन्स्की"—९८ (दोनवाला)
दोबरोनीची—२१८
दोमनिकन—१३५
दोमोशेरोफ—३१७

दोरेपत—२४९, ३६६
दोर्जे (दर्शा) लामा—३३५
दोलोन्-नोर—३२४ (द० मगोलिया), ५३०
"दोलगोरुकी"—९१, २५६
दोस्त खान—२०२
दोस्त मुहम्मद—४४७ (खान), ४६१
दोस्तोयेव्स्की—३९२
दौग—४६२
दौर—२७२
दौरिया—५३०
दौरी—२४०
दौलत गिराइ—१०९, ३१५
दौलत बर्दी—६९
द्युकेर—५४८ (तुर्कमान)
द्नियेपर—२२, २९, ३९, ६३, ७४, ७५, ७७, ७९, ८३, ८५, ९३, २१८, २३०, २५७, २६०, २६३, २८४
द्नियेपरोपेत्रोव्स्क—२६३
द्नियेस्तर—५१, ७१, ७२, २६०, २६३
द्मित्रोफ—९२
द्रविड—५१६, ५२८, ५४८
द्रागोमिरोफ—५२०
द्रेव्ल्यान—७७, ७८, ७९ (दीहाती), ८३
द्रेश्चेर्न (कर्नल)—४८२
द्विना—७४, ७५, ९५, ३६५
धनुर्धर—२२४
धर्म-छे-रिङ—१३४ (तर्मा-शेरिन्)
धर्मपाल—३३९
धर्मशास्त्र—१२४
धर्माचार्य—३५४
धातु-उद्योग—३७६
"धुआ"—३९२
ध्रुवीय—२४०, २६५, ४०९ ८०
(कक्षा), ४८९ (महासागर)
नई सराय—४१
नकशबदी—१५३
नक्षत्र (तारा)-सूची—१५८ (=जिज)
नक्शबदी—४४०, ४४५
नखचेवान—३७७, ५५४
नखजवान—५५
"नखली"—१८७
नखशेब—१३४, १४८, १८७
नखिमोफ—३८०
"नचलनया लेतोपिस्"—८५
नचार—५१५ (उज्बेक)
नजर—१८७, १८८ (दीवान-बेगी)
नजारोफ—४२४
नजिमोर—४६७
नतालिया—२४७
नदेजदिन्स्क—४१०
नमगान—४२२, ४३५, ४३६, ४३७, ५१९, ५२०, ५२१
नमिश्का—३३४
नम्दारोहण—८० (सिंहासना-रोहण)
नया ओर्दू—४१
नया गुलिस्ता—४१
नये किर्गिज—३४८
नरगिल—५१५ (उज्बेक)
नरबुते—४५५
नरिन—३०७, ४३७
नरोद्नये—३७३ (बेचे, लोक-सभा)
नरोद्निक—७३, ३८७, ३९१, ३९३, ३९५
नवगोरद—२२, ३५
नवपाषाण-युग—५२८
नव-ताम्र-युग—३३४
नवसिबेरीय—३७२
नवाई—१६०, १६१, १६३
नवावाद—५३९
नवीन तुर्क—५२६
नवोअलेक्सान्द्रोव्स्की—३५८
नवोगोरद—७५, ७७, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८८, ९१, ९३, ९६, ९९, १०९, २१८, २२३, २२५, २२८, २४९, २६२, २६३
नवोग्राद—२१, २७ (०गोरद), ३९
नवोशेरिमन्स्क—३५०
नवोसिबिर्स्क—४०३, ५३०
नसरुल्ला—४२४, ४२६ (अमीर बुखारा), ४४७, ४६८, (-मिर्जा), ५२६ (कुशबेगी)
"नस्ख"—१५५
"नस्खजहानारा"—४८
"नस्तालीक"—१५४
नस्तेरोफ—५५१
नस्तोरी—२९६
नाइटिंगल—३८०
नाट्य-कला—१४, २४१, २६६, ३९३
नाट्यशाला—१६१
नादिर—१८५ (नासिर), १८७, (वजीर), १९०, १९२
नादिर मुहम्मद—१८९, २१०
नादिरशाह—१९२, ३५२, ३७८, ४४२, ४६७, ४७०, ४९० (तुर्कमान)
नान्सेन—२६५
नारवा—१००, २४९
नारिन—२९९
नारी (नारिन)—१७९ (डाडा)
नार्थब्रुक (वायसराय)—४८१
नार्वे—८४
नार्समेन—७५
नाविकशास्त्र—२६५
नासिर—७, ३६
नासिरुद्दीन—१०, १३, २०, २७ (मुहम्मद), १२७, १४२,

१८८, १५१, ४९३ (शाह), ५५१ (कराउल्बेगी)
निदवेई ओगल—१३०
निस्ना—२१७
निक्नित्र—६८, ११०
निकितिन—२०१
निकिफोरोफ (क तान)—८७६
निक दर—१३०
निकोन—२२३, २३८, ३८१
निकोलन—८८२ (जेनरल)
निकोलाइ—८३, १३५, ३९२, ३७२, ३९५,, (२), ३९८, ८०६, ४७३ (१), ५३१ (२)
निकोलाइ म्याथेरी—२४२
निकोलायेव्स्क—३८१
निकोलार्स्को—५२२
निगपई—१३१
निगार खानम्—२७३
निजामी—१९१ (कवि)
निजाम् मुल्क—१३१
निजार-अल्यरा—३१६
निजनीनवगोरोद—५१ (निचला नवीन नगर), ५२, ६३, ६७, ७८, ९०, १०२, १७२, २२३, २६२, २६७, ८१६, ८८६, ८७३
निध —२८३
निमिनन—२७१
निवाज तुरमान—१८८
"निशोन्मा"—८५
निश्चर—८०८
निजा—३७५, १३३, २०३, २०२ २०८, २०८
—८, १८८
—१०१
—१११
—८३१
नीमा—३४६
नीमेन—९५, ३६८ (नदी)
नीवखी—२७१
नूजी—६२
नूरअली—३३७, ३६१, (लघ-ओर्दू), ३६५, ३४९, ४८६,
नूरजहां—१५५
नूरतुकाई—१६६
नूर मुहम्मद—२०३
नूरवर्दी खान—४३२ (तेवका)
नूरन्टाचू—३२४
नूरद्दीन निराखुर—५५१
नेक्रासोफ—३९२
नेन्सी—९४, १०१, २३८
नेन्स्कान्स—२५०
नेन्मवेग—५२१
नेपटस—२४, २६९
नेपाली—५४६
नपोलियन—७८, २६९, २७० ३६६, ३६७, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७४, ४२०
नेप्रयाद्वा—२८
नेप्नुइयेक्र—३५२, ३५३, ३५४
नेमन—२६, १३६, २०२, २०६
नेरेजेम—२११
नेचिन्स्क—२४३, २५३, २८१, २८६
नेवा—९८, ३६, २५०, २६७, ३७५, ४१६ (नदी)
नेवेल्स्की—३८१
नेनापोर—१३१, १८३ (नुरासान), १५०, १८१
नेस्तोरी—१२५
नेस्तोरीय—१३६
नेस्तोरोफ़—८१२, ५५८
नेग्री—८८५
नेषाद नामा—१२२
नेमन—२१, २०८, ३८७, ३८९,
३५३, ५१४ (उज्बेक), ५१६, ५२९ (कज़ाक), ५३०
नोक्रम मगित—५१४ (उज्बेक) ५१६
नोवस—५१६ (उज्वेक)
नोगाई—२७, २८, २९, ३०, ३१, ११०, १४१, १४५, १६७, १६८, १९७, २०१, २०८, २०९, २७७, २७८, २७९, २८७, ३१० (मगीत), ३१६, ३१७, ३१८, ३२१, ३२४, ३३८, ३३९, ३४३, ४६५, ५१५ (उज्बेक), ५१६
नोयन—६१, १०३, १४३, १४८
नोविकोफ—२६८
नौकर—६८ (अफसर)
"नौजवान विद्यार्थी सघ"—५३२
नौरोज अहमद—३२४
नौरोजबेग—४२
नौरोज मुहम्मद—१७९
न्यस्टाट—२४, २५
पगन्नुये—११४
पचिमान—२२
पजार्स्की—२२३
पत्चीमन—६
पद्य-नाटक—२२४, २६६ (ओपेरा)
पपाइ—३५२
पपोफ—३३६ (बेतार-आविष्कारक)
पयार—३४६
परताल—३०६ (रसद)
परमाणु-विदरण—२६५
परमानेन्नी—१८८

परशैन्निकोफ—२४१
पराक—३०६
परिषद्—२२८, ३३३
पर्लाविका—५२०
पलासी—१६, २५८, ३३६, ४२०, ४५२
पलियोलोगस्—२८४
पवित्र-सधि—३७०
पचक—१६१
पचवर्षीय योजना—५३४
पचायत—४०१
पज—५२७ (वक्षु), ५४६
पजकद—१७५, ४५८
पजदेह—४९१, ४९८
पजाव—१३४, ४१६, ४४८
पातर—३२७
पानिखेर—२७०
पामीर—१०, १७४, १९२, ३०४, ३३४, ३७८, ४५०, ५३६, ५३९, ५४१
पारस—११ (खाडी), १४५, १५०
पारेकास्पियन—५४९ (जा-कास्पी), ५५०, ५५५
पार्लियामेंट (ब्रिटिश-)—४९८
पावल—२६८ (१), ३४९, ३५७ (जार), ३६५
पावलोफ—३९६
पाषाणपुल—२०८
पाषाण-युग—५२८ (मध्य-, पुरा-, नव-), ५४१, ५४८
पासख—१०४ (ईस्टर)
पिलोतेइ—१०६
पाषाण-युग (मध्य)—५४१, ५४८
पित्तल-युग—५२८, ५४१, ५४८
पित्रुस्का—३९१
पिल्याव्का—२३२
पिश्पेक (फ्रुंजे)—३७९, ४३२, ५३३, ५३७, ५३८, ५३९
पिशागर—४४७
पिशिमा—३१७
पिसारोफ—३९२
पीतर—६४, ९७, ११६, २१२, २४६, २४७, २४८, २६५, ३३३, ३३९, ३७५, ४४८, ४६५, ४६६, ४९३, ४९५ (१), २५५, २५८ (२), २६१ (३)
पीतर-पावल-दुर्ग—२५२, ३८५, ३९२, ५०८, ५१०
पीतरवुर्ग—२१२, २५०, २५२, २५७, २६६, २६८, २७१, २९१, ३३७, ३४८, ३५०, ३५१, ३५३, ३६५, ३६६ (=लेनिनग्राद), ३७०, ३८८, ३७४, ३७५, ३७७, ३७८, ३९०, ३९१-९५, ४०१, ४०२, ४०९, ४१२, ४२६, ४३२, ४४४, ४४८, ४५०, ४५३, ४६४, ४७५, ४७६, ४८६, ४९५, ४९८, ३९७-९९
"पीतरबुर्गसे मास्कोकी यात्रा"—२६७
"पिता और पुत्र"—३९२
पीर मुहम्मद—१५१, १५४, १७९, १८२, २८१
पीरअली—३५५
पील—२००
पुगाचेफ—२६०, ३६१, २६२, २६८, ३५५
पुतियातिन—३८९ (अद्मिरल)
पुतिलोफ—३९९, ४१६
पुतिवल—२१८, २२०
पुरगस—९२
पुराना पचाग—४०१, ४१७
"पुराने वर्षोंका इतिहास"—८५
पुलकोवो—५१०
पुलाद—५४ (-व्रेक), ६३, ६४, १०२ (-व्रेग), १३६, १५६, १९६ (खान), २९५ (ची)
पुलेकश्ती—४९८
पुलेसिरात—४२३
पुश्किन—२३८, २६६, ३७१, ३७३, ३७७, ३८२, ३८३ (कवि), ३९२
पुश्किन—५१० (जास्कोंयेसेलो)
पुस्तोज़ेर्स्क—२२९
पूद (=१६ सेर)—३७, ४८४
"पूजी" (मार्क्स)—३९३
पूजीपति—४०८, ४०९
पूजीवाद—३६५, ३७६, ३९३
पूजीवादी—३९२ (युग), ४०६ (व्यवस्था)
पेइ-हो—३८९
पेकिङ—४, ८, १०, ११, १६, २२७, २५३, २५४, ३२९, ३३७, ३४७, ३५४, ३६१, ३७४, ३८१, ३८९, ४२१
पेचेनेग—७५, ७९, ८२, ८३, ८४, ८६, २८४
पेचेनेत—५४८ (तुर्कमान)
पेचेर्स्क—८४, ८५
पेचिङ—२५५, २६३, ३८८ (पेकिङ)
पेचोरा—१११
पेत्रोग्राद—४१६, ४१७, ४१९, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८ (पर बोल्शेविक अधिकार), ५०९, ५११, ५१७
पेत्रोग्राद सोवियत—५०८
पेत्रोपावलोव्स्क—३४७, ३४८, ३४९, ३८०, ३८२
पेत्रोफ—२२७, ३८३, ३८५
पेन्-किङ—५ (नानकिङ)

पेनुजा—२९
पेन्दा—५२५
पेपच—१११ (पस)
पेरियेम्लाव्ल—६३
पेरिशिकन—३३६
पेरिस—२६१ ३७०, ३७४, ३७९, ३८०, ३८२, ३९०, ३९७, ४००, ४०६, ४१०, ४१२, ४१३, ५५४
"पेरिस कमून"—३११, ५०४
पेरुन—७३, ७६, ८८ (देव)
पेरेइस्लाव—५२
पेरेया—८२
पेरेयास्लाव—८७
पेरेयास्लाव्ल—८२, २३३, २६६, २८७
पेरे-वोलोग—२८८ (प्राग्-वोल्गा)
पेरोफ—३९३ (चित्रकार)
पेरोव्स्की—३७८, ३७९, ४३०, ४३१, ४५०, ४७३, ४७६, ५१८ (किजिल-ओर्दा)
पेर्फिलियेफ—२४१, ५२५ (पेर्फिलेफ)
पेर्म—१००, ५०३
पेशिन—५१८
पेत्पेलिजिन—११३
पेलोव्स्की—८६
पे[illegible]—१२३, [illegible], ४६०
पेस्त—६, ७२ (बुदापेस्त), ७[illegible]
पेस्तेल—३७३, ३७५, ३७६, ३८२
पेस्ते[illegible]फ—[illegible]
पे[illegible]—२६२
पे[illegible]—२२[illegible]
[illegible]—[illegible]२३
[illegible]—१९[illegible]
[illegible]—[illegible]३७
[illegible]"(मुद्रास)—[illegible]००
पोनोमारेफ—५२५
पोप—१०, २४ (ग्रेगरी), १०१
पोयार्कोफ—२३९, २४०
पोर्ट आर्थर—३९७, ३९८, ४००
पोर्ट्स्मथ—४०० (-संधि), ४०६
पोल—५३, १९०, २१९, २३२, २३८, २८०, ३१७, ३७७
पोलकसाक—३१७
पोलंद—३, १०, ३६, ३८, ५३, ८४, ९२, १००, १०९, ११८, २२७, २३३, २५९, २७२, ३६७, ३७०, ३९९, ४०२, ४०५, ४१३
पोलाद-तेमूर—३१५
पोलेयान—८३
पोलेत्स—८२
पोलोत्स्क—८८
पोलोत्स्की—२४१
पोलोव्सी—८७, ८९, ९०
पोलोविना—९४
पोल्जुनोफ—२६७
पोल्तरोत्स्की—५१८, ५२८, ५२५
पोल्तावा—२५०, २५२
"पोल्यार्नया ज्वेज्दा" (ध्रुव-तारा)—३८२
पोशारोफ (लेफ्टनेंट)—४८६
प्याचिये—२२८ (निम्न लेखक)
प्योत्र अलेक्सियेफ—३९१
"प्रतिनिधि-सदन"—५१३ (सोवियत)
प्रशांत—३७२, ३७८, ३८१, ३९०
प्रशांत-महासागर—२५२, २७२, ३९७
प्रशासन-संस्था—३७३
(देखें ल्नियाद्मा)
"प्राव्दा" (अधिकार, सत्य)—८५, ४१०, ५०४, ५०५, ५०६ (बोल्शेविक पत्र), ५०८
प्रासादी क्रांति—२५५
प्राहा—४०५, ४०६ (प्राग)
"प्रकाजी"—२२८
प्रिस्तोफ—३४० (किर्शिन्स्की), ३६१
प्रुथ—२५० (नदी)
प्रुशिया—२५८, २५९, २६०, ३५४, ३६५, ३६७ (जर्मनी), ३६८, ३७४, ३७९, ३८०
प्रेयोब्रजेन्स्कोये—२४१, २४६, २४९
प्रोकोपी—२२३
प्रोद्गोल—४०८
प्रोद्मेत—४०८
प्रोद्रूद सेंडीकेट—४०९
प्रोलेतारी—५५२ (-सर्वहारा)
प्र्जेमित्स्ल—४१३
प्र्झेवाल्स्की—२९४, ५३७, ५३८
प्र्याज्नुखा—३३३
प्र्याज्नोये ओजेरो—३३३
प्लातेन—२३
प्लातोन—१०४
प्लेखानोफ—३९३, ३९७, ४०३
प्लेग (महामारी)—३८
प्लेश्चेयेफ—२२७, २२८
प्सादनिक—९१ (नगरपाल)
प्सोल्स्की प्रिकाज—२२८
प्स्केविच—३७९
प्स्कोफ—३९, ९६, ९७, १०६, १०९, २१८, २२५, २२८, २२९, २६७ (-प्रासाद), ४१७, ४१९
फ्लालिफ—१३५
फग्-पा—८९, ९३ (तिब्बती लामा), ९५ (फग्-पा=आर्य)

फगफूर-३७ (भगपुत्र, देवपुत्र)
फज़ल—४५५
फज़लान—७४
फज़लुल्ला—१४५
फतेह अली—४९० (काजार)
"फतेहनामा-कुचुक"—६०
फ़ना (खान)—४७९
फरगाना—१६७, १७६, १८०, २८०, २९६, २९८, ३०४, ३०५, ३०७ ३३०, ३८८, ४१५, ४२०, ४५१, ५१८, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५३५, ५३६, ५४४, ५४६
"फरहाद-शीरी"—१६१
फराखर—४६२
फरास—२०८ (झाऊ), ४२९ (सक्सौल), ४८८
फरिश—४८१
फरीदुद्दीन—१४७
फरीदून मिर्जा—४७६
फर्वरी क्रांति—५०३, ५११, ५१७, ५१९, ५२६, ५३२
फलगर—४५७, ४५८
फान—४५८
"फानी"—१६१ (नामनाम)
फायनका—२४
फारसी—१५४, ५३९
फाराब—४५७, ४५८
फितनियेफ—४७७
फिन (सुओमी)—७१, १००, ५४८
फिनलन्द—७४, ७५, ९४, ११६, २२३, २२५ (-खाड़ी), २५०, २५१, ३६७, ३९९, ४०२, ४०५, (=फिनलैंड), ५०४, ५०७
फिनो-द्रविड—५१६, ५२८, ५४१, ५४८
फिलस्तीन—९५, ३८०, ३८४ ४११
फिलारेत—२१७, २२४
फिलिपोफ—१०४
फिशर—३१६
फीरोज—१४०, १४१
फीरोज़ा—१७०
फुज़ैल मख्दूम—५४४-४६ (वाममची)
फुनछोक्—३३४
फन्ते—३३६
फसड—१८१
फेदेरोफ—५३२, ५३३
फेदोतोवा—३९३ (अभिनेत्री)
फेदोर—६४
फैज़ाबाद—४२५, ४५९, ४६२
फोक—७३
फोनविज़िन—२६६
फोलबौम—५३१, ५३७
फयोदोरोफ—२५६
फयोदोसिया—३६५, ४१३
फयोरात्रेन्ते—१०५
फ्राकेन्वर्ग (मेजर)—४६५
फ्रास—२३, ३९, ८४, १६०, २५९, २६३, २६९, ३६६, ३८०, ३८२, ३८८, ३९०, ३९६, ३९७, ४०६, ४०७, ४०८, ४१४, ५५०
फ्रास-वेकोफ—२४२
फ्रासिस—३६६ (१)
फ्रामिस्कन—१३५
फ्रीडलैंड—३६७
फ्रुज़े—४०५, ४१४, ५०८, ५३३ (पिश्पेक)
फ्रेंच—२४, १९१, २२२, ३७३ (भाषा), ३८९, ३९४, ५५२
फ्रेंच-क्राति—१६५, २६७, २६८, २७०, ३६५, ३७०, ३७३
'फ्रेंच महामारी"—२६७
फ्रेडरिक—२४, २५८, २६०, २६८-६९ (२)
फ्योदोर—२२, ११५, २०६, २१७, २१८, २१९, २८१, ३१७, ३२५ (जार)
फ्लोरेन्स—३८०
बइकेचर—१३३
बकलान—१७९
बकसी—१६२
बकुनिन—३९१
बक्सी (भिक्षु)—१६२, ३२६
बक्सीगिर—३३४
बखरिन—५१५ (उज़्बेक)
बखसमबी—१६५ (मगत)
बख़्तियार—१६५
बख़्तियारी—५५४
बगचतोफ—४६५
बगजले—६४
बगदाद—३१, ५६, १३२, १४५, ५५४
बगाबाद—१९९, २०१
बगदान—२३१
बगरातियोन—३६६, ३६८, ३६९
बगोल्युबोव्स्की—९१
बतपकरा—४१५ (बत-बकरा), ५३२
बतरेक—५१४ (उज़्बेक)
बतलान—५६
बतानियेफ—४५०
बतुमसी—३३४
बतूता—३८, १३५
बत्का—२३६
बथोरी—१०९
बदख्शा—५६, १२१, १३१, १५०, १६६, १७७, १७९, १८१, १९१, १९४, २९७, ३०४, ३१०, ३१३, ४६०, ४६१
बनीकन्त—१४७
बन्दर—१०३, ३६८
बदूक—१७७

बबायेफ—५५१
बयन्तू—१३३
बयात—५८७ (तुर्कमान)
बरका—२०, १८१, १९६, (बेरेका)
बरका-सराय—२१ (सुवर्ण-ओर्दू)
बरत्रियागेक—६१
बरकुल—१३३, २९६
बरगडी—१३५
बरगत—३२१
बरचिन—४१
बरज़ाब—५३९ (नदी)
बरदआ—७९
बरदआ—२११
बरदी—८१, ८२ (बेग)
बरन्ली— २६५
बरन्दा—१११
बरमस—५१५ (उज्बेक), ५१६
बरमा—३१७
बरलस—१८८, ३१३, ५१८ (उज्बेक)
बरनावा (पोलद)—३६७
बराबिन—३१७, ३१९, ३४७
बरानिस्की—३८२
बरेकेआम—१०२
[illegible]—५२५
[illegible]—९५
[illegible]—५५१, ५५४
[illegible]—२६७, ५३०
[illegible]—३, ९ (मो-यन), १०, १३, १८
[illegible] तैमर—१६६
[illegible]—२५८, ३६७, ६०७ (तारेम), ६११, ६१६
[illegible]—१०८, १५९ (पुरोप)
[illegible]—[illegible]
[illegible]—[illegible], १२७, २६८, [illegible]

(=वलखाश)
वलख—१३, ५६, १२१, १३५, १४३, १४४, १४९, १५०, १५१, १७१, १७६, १८१, १८६, १८७, १९१, १९४, २११, ४४२, ४५१, ४६० (वली), ५६१
वलखान—१९९, २०९, ४६८ (पहाडी), ४८०
वलगली—५१६ (उज्बेक)
वलजुवान—५२७, ५४३
वलदुमाज—१९९
वलवर्म—१९९
वलम्बर—७२
वलाकिरेफ—३९३ (सगीतकार)
वलाचिया—३६७
वलाजर—७४ (दक्षिणी दागिस्तान)
वलिकची—४३६
वलिकली—५१६ (उज्वक)
वलिजक—५०
वलोग्दा—४०६
वलोचिस्तान—१५० (=विलोचिस्तान)
वलूची—१४९
वलोत्निकोफ—२२०, २२१
वल्कान—३७३, ३८६, ४०७, ४११, ४१२, ४९५
वल्जुवान—४५९
वल्तासदिर—४८१
वल्ती-वालूर—३११
वल्शोइ तियात्र—३८५ (महानाट्यशाला)
वशीकुर्जी—२७५
वस्किर—१८, २६२, ३१५, ३१६, ३२१
वसकाफी—[illegible]३
वसमानोफ़—२११
वसन्त—५१८ (उज्वेक)
वसुन—३३८

वहमनी—१५७
वहराम अली—४४१
वहरैन—१०३, १०४
वहाउद्दीन—१२६, १२७
वहादुर—१८७, २३४
वहावलपुर—१९४
वगाल—१०, १३
वदे-हरम—१९२
वाइतक—२९७
वाइवल—८५
वेगीजान—४४३ (शाह मुराद)
वाइवेगिस—३१९
वाइलियर—४८४
वाइसून—४५९, ५२७, ५४४
वाइ—३१०
वाइ तुर्सुनोफ—५३१
वाउलिन—३५७
वाकिन—५३७
वाकी मुहम्मद—१८६
वाकू—१०३, २५१, ३७१, ४१२, ४१६, ४६५, ५५०, ५५४
वाक्सर (-विद्रोह)—३९८
वागी—४९८ (उपत्यका)
वागर्लू—५१६ (उज्वेक)
वागेनी—१६९
वाख्तेयारोफ—२३९
वाज़नोफ—२६७
वातुर—२३०, ४६८ (वातिर)
वातुर खुङ-यैची—२८२ (खुङ-यैची), ३२५ (यैची)
वातू—५ (छिङ-गिस्-पौत्र), ६, १८, २०, ३२, ४९, ६३, ९२, ९५, १००, १२६, १२७, १२८, १४५, १६५, २८६, ३१५, ३७७
वातूम—३८७
वातूसराय—२१, २६, २७, २९, ३१, ३७
वादगी—१९२
वादाकुल—३१५

बापू—२३६
बाबर—६८, १०६, १४७, १५४, १५८ (-मिर्जा), १५९, १६०, १६३, १६५, १६७, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७७, १७९, १८३, ३०२, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३१३, ४२१, ४३७, ४६२
"बाबरनामा"—१७२
बाबा—३२, १४५, १८० (खान, जान), २७८ (-सुल्तान), ४५७ (-बेक)
बावुश्किन—५१८, ५२२
बाबुल—१०३
बामियान—४७, ४८, १२६, १९४, ४६१
बामिर—४९६
बामे-दुनिया—२१०
बाय—५३१ (सामत)
बायज़ीद—१७३, ३८७
बायन—९, ४७, १३२ (खान), १३६ (-क़ुल्ली,-सुल्दूज), २१
बायर—३५ (अमीर), ४३, ५१, ५२ (सामत), ८५, १०४, १०६, १०९, २१९, २२०, २२४
बारक़ुस—५२५
बाराबिन—३१६
बारोन—५०३ (बैरन)
बार्नेस—४५०, ४४८ (कप्तान) ४७३, ४९०
बालक्लोफ—१०४
बालिकची—४३४, ४३५ (बालीकिची)
बालिगू—१३०
बालुका वृष्टि—२९३, २९६
बालुका-समुद्र—२९४
बालूर—३११ (बाल्ती)
बाल्तिक—७४, ७५, ८४, ९४, १००, १०८, ११६, २२५, २३४, २४८, २६५, ३९९, ४१२, ४१३, ५०८
बाश्किर—२१ (तातार), २३, ३१, ५६, १०७, ११०, २३४ (तुर्क), २३५, २३७, २५०, २६१, २८४, ३१७, ३२४, ३३९, ३४३, ३४४, ३४५, ३४७, ३४९, ३५१, ३५२, ३५४, ३५५, ३५७, ३६८, ३७२, ३७८, ४०१, ५१२, ५४८ (तारतार (भाषा, बाश्किर)
बासफोरस—४११
बासमची—५२३ (डाकू), ५२७, ५४२, ५४३, ५५०
बाह्य-धर्मी—३४० (रूसी)
बाह्य-मगोलिया—३२१, ३२४
बाह्य राज्य विशेषाधिकार—५५४
बितूत—६३
बिल्कोविच—४५०
बिन सब्वाह—१३९ (हसन-)
बिपुरी—२५१
बिरकुलक—५१६ (उज़्बेक)
बिरलस—१३६, १३७ (तेमूर-वंश), १४८ (बरलस)
बिलकेलिक—५१५ (उज़्बेक,
बिलिकची—२९
बिलुक-अकची—१८६
बिशअक्ति—४८१, ४८४
बिशकद—१७५
बिशचगन—४८१
बिशबालिग—१३५, ५३०
बिशवाला—५१५ (उज़्बेक)
बिस्मार्क—३९० ४०६
बीज़ने—५४८ (तुर्कमान)
बीतेइ—३३७,
बीदर—१०१, १०३
बीनाई—१७५
बीनीत—७२
बीबी खानम्—१५४
बीबीज़ेह—२०३
बीरेन—२५७
बुआल—२८ (मोवाल)
बुइदश—२७८
बुइमोत—५१४ (उज़्बेक)
बुकन्द—४८१ (पहाडी)
बुका-बोशा—१२५
बुकान—४८० (पर्वत)
बुकेइ—३५७, ५३२ (खानोफ)
बुकइथेफ—३५८
बुकोविच चेर्कास्की—४६५ (राजुल)
बुखारा—२६, ४९, ५४, ५५, ११०, ११२, ११३, ११४, ११५, १२२ (-विद्रोह), १२४, १२९, १३२, १३४, १३५, १३७, १४३, १५४, १५८, १६३, १६७, १६९, १७४, १७६, १७८, १८०, १८१, १८५, १८८, १९०, २०१, २०३, २०४, २०९, २१०, २११, २२७, २७१, २७८, ३०७, ३१५, ३१८, ३१९, ३२५, ३३०, ३३६, ३५३, ३५६, ३७८, ३७९, ३८७, ४२१, ४२२, ४२४, ४२६, ४२७, ४२८, ४३२, ४४०, ४४१, ४४३, ४५३, ४५४, ४५५, ४६४, ४६५, ४६६, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७५, ४७६, ४८४, ४८९, ४९०, ४९३, ४९४, ४९८, ४९९, ५१७, ५१८, ५१९ (नवीन), ५२५ (अमीराका भागना), ५२७ (पूर्वी), ५३५, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५५०, ५५१,

५५२, ५५४
बुखारेस्त—३६७, ३७१, ४११ (-सन्धि)
बुखोल्ज—३३३
बुग—७८ (नदी), ८८, २६०, २६३
बुगर्ट—३१९
बुगरैनी—४८३
बुगान—२७९
बुग्रान—१०२, १३५, ५१५ (-मजन उज्बेक)
बुगुगा—२००
बुद-जेर—६
बुदग्—१६६, १६७ (बुदग)
बुम्मक—२९७
बुरन्दक—१५८
बुरलक—६७
बुराक—१५६ (खान), १६५
बुरी—१२७, १३०, १३३, २९७ (-वासी)
बुरुत—२७८, ३३०, ३३२ (काले किर्गिज), ३४७ (जंगली किर्गिज), ३४८, ३५८ (करा-किर्गिज), ३४९, ३६०, ४२१
बुर्जेगी—१४०
बुर्ते-फुजिन्—१८
बुर्येत (मंगोल)—२३८, २७२, ४०१, ५८८
बुर्तुं त्युने—५३०
बुर्राक—३८५, ३८६, ३५३ (=बुराक)
बुलोल—३२८
बुल्दुन—१६८
बुल्गा—२३०
बुल्गनार—१६६
बुल्गार—३०, ८३, ५१, ५६, ८१ (कजाक), ८२, ८३, ९२
बुल्गारिया—२० (बुल्गारी),
८३, २८४, ३८६, ४११, ४१२
बुस्तू खान—३२८ (बोधिसत्व राजा)
बुस्साग—४८४
बूअली सेना—१९२
बूकजली—५१६ (उज्बेक)
बूकेइ—३४९
बूखाची—५१५ (उज्बेक)
बूजेजी (तुर्कमान)—४७१
बूतुलिन—३५०
बूरव—३६६, ३७०
बूरीची—२०६
बूरुत (किर्गिज)—३३७
बूरुज ओगलान—३०५
बूर्वा (पूंजीवादी)—४०५, ५२१, ५२५
बूर्वाजी—३७०, ५२१, ५२५
बेइनेग्स—२८९
बेइसखान—२९९
बेउलिन—३५५, ३५६
बेक—३२४, ४५३, ४५७ (ठाकुर)
बेकतिली—५४७ (तुर्कमान)
बेक पुलाद—४७०
बेकेचेर—१३२
बेकोविच—२५१, ३५१, ४६४-६६, ४८४ (राजुल)
बेग—५५१, ५५३ (=राज्यपाल)
बेगचिक—१६३
बेगतरबेग—२०९
बेग-तैमूर—१३०
बेगफुतान—११३
बेगातकिरी—१७८
बेगीमान—१३८
"बेचारी लीजा"—२६६
बेनरहेम—३८०
बेनाय—५१५ (उज्बेक)
बेंदिलोफ—५१९
बेन्देसेन—४९५
बेरकुत—५१४ (उज्बेक)
बेरेकेइ गुरयानी—२९७
बेगातखोजा—५५
बेरिंग—२४० २५६, २७२, ३७३
बेरियोजोफ—२५६ (माइबेरिया)
बेरेक—८, २२, २६, २८, १२८ (-खान), १४१
बेरेकचर—१२९, १३०
बेरेकसराय—५१, ५५
बेरेजिना—३७०
बेरेदक—१६८
बेरेफ्किन (जेनरल)—४८०, ४८४, ४८५
बेरेस्त—२३२
बेरोइ—५१५ (उज्बेक)
बेर्ग—५२५
बेर्दव्स्की—५०६ (एडमिरल)
बेर्दस्कोइ—३५१
बेर्दीकुलियेफ—५४९
बेर्वे—७७
बेल—२९१
बेला—२३
बेलिन्स्की—३८२, ३८३ (कवि)
"बेलीकी गमुदार"—२२५, २२३
बेलो—(=श्वेत)
बेलोअम्भोफ—५०४
बेलोगोर्स्क—११५
बेलोजेरोफ—४०९
बेलोरुसिया—२३०, २६०, ३७७, ५१२
बेलोरूसी—९८, १००, २३४, २५९
बेलिजयन—३०४
बेलो—२९३

वलोवद्स्क—५३७
व्रसकाउन-द्रोणी—३१०
वेसराविया—३६७, ३६८
बेम्तुज़ेफ-र्यूमिन—३७६
वेह्ज़ाद—१६२ १७२
वैकाल—२३८, २७१, २७२, ३२१, ५३०
वैचगिर—४८४
वैदू—१४४
वमनतती—४८२
वैराम अली—१५० (मेर्व), ५५१
वैसुकर—१५६, १५७, १६२
वोइत्केविच—५५४
वोकल—५२०
वोकल-वेर्दगन—१२०
वोग—७२
वोगुन—२३२
वोगोल्युवोवो—९१ (भगवत्-प्रिय)
वोग्दाउला—३२५
वोतपाई—५३० (खित्तन)
वोदी तायन—३२४
वोनद—१०४
वोयकोफ—३१७
वोयन्-थू—१५, ३३
वोरक—८, ६६, ६७, ६८, ६९, १४३
वोरकचीन—२९
वोरकचिन खातून—२६
वोरका—१८०
वोराक—१२९, १३०, १३१, १५८, १६७
वोराविन—४६५ (इतालियन)
वोरिस—८४, ११५, २२६
"वोरिस गदुनोफ"—३८४
वोरोदिन—३९३ (सगीतकार)
वोरोदिनो—३७३
वोरोन मेयेदोर्फ—४४५
वोरोलदाईताउ—४३२
वोरोशिलोफ—४०३, ४०६, ५०८
वोर्गा—३६७
वोलोस्त (पर्गना)—३७०
वोल्गार—६, १८, २०, ७३
वोल्गारी—१६६
वोल्शेविक (बहुमतीय)—१८५, ३९७, ३९८, ३९९, ४०३, ४०४, ४०५, ४१३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५१८, ५१९, ५२०, ५३८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५३, ५५५
वोल्शेविक-कमीटी—४१६
वोल्शेविक क्रान्ति—२५०, २५२, ३५८, ३६१, ३८५, ३९२, ३९६, ४०१, ४१५, ४१७, ४३९, ४४२, ४५३, ४७३, ४८६, ४९७, ५०१, ५०६, ५०७ (तैयारिया), ५०९, ५१२, ५१७ (तुर्किस्तानमें), ५२१, ५३२, ५३५, ५३६
वोलशेविक नेता—५०८
वोल्शेविक पार्टी—४०५, ४१७, ५०६, ५०८, ५२१ (-पार्टी), ५२६
वोशोक्तू (वुश्तू)—३२८
वोस—२५४, ३९६ (जगदीशचद्र)
वोसनिया—३८६, ४०७, ४०८, ४११
वोसफोरस—४०७
"वोस्ताने मुज़क्करीन"—१३८
"वोस्ता"—१४३
वोस्ताम—१७६, २०९
वौद्ध—३०, ३४, १२७, १३५, २९६, ३०० (-कलमक), ३२४, ३२८
वौद्ध-धर्म—८, १५, २०, ३१, ४१ (मदिर), १३३, १३५, १३८ (सत), १४५, ३२७, ३२८, ३३३ (-विहार), ३४६
व्येलोओजेरो—७५ (श्वेत सरोवर)
व्योर्क—४०६
व्रन्सविक—२५७
व्राडेनवर्ग—२६०
व्रातिस्लावा—३९
व्रियास्गा—१११, ११४
व्रिटिश चैनल—३६६ (-चेनेल) ३८९, ५५५
व्रूलोफ—३८४
व्रेस्त—२३०
व्रेस्त-लितोव्स्क—४१३
"व्रेस्ला"—६, ४१३
व्रौनो—३६६
व्यास्क—२१७
व्लाकेननागेल (मेजर)—४६९
व्लित्ज्क्रीग—२५८
भागीरथ—१५२
भारत—३५, ३७, १५०, १५३, १५७, १६३, १७४, २७१, ३५१, ३५७, ३६६, ३८४, ३८७, ३९६, ४२६, ४४४, ४६७, ४७४, ४९७, ४९८, ५२१, ५२८, ५३०, ५४२
भारतीय—७४, २२६, २२७, २९५, ३३१, ३७४, ४१२, ४३३, ४६५ (व्यापारी)
भापातत्व—५२८
भिक्षु—१६२
भूमध्यसागर—२६९, ३८६, ४१३
"भूमि-घोषणा"—५१०
भौगोलिक अभियान—३७२
मगोल—३१९ (पूर्वी-)
मई-दिवस—३९७
मकदूनिया—४०७
मकरियेफ—४४६
मकरी—१०७
मक्का—१०४, १४३, १८०,

१८५, २०३, २०७, ३५८, ४३४, ४४१, ४५२
मखचकला—७४
मखदूम—१५३, ४९२ (कुल्ली, तेक्का)
मखवेचको—११२
"मख्जनुल्-असरार"—१६१
मगयार — २१, २२ २४ (हुंगेरियन), ३७१, ५४८
मगरदी—१४७
मग्ज—२०३
मद्य किरमान—६१
मद्य किशलक—१३०, १७८ (मद्यगिशलक)
मङ्गू—६, ७, २१, २९, १२७, १२९, १४७ (खान), २३० (चिपटी नाकवाला)
मङ्गू तेमूर—२९, १३०, १४३
"मजदूर इत्तिफाक"—५१८ (मजदूर लीग)
मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियत—४०१, ४०३
"मजनू-लैला"—१६१
मजार—५८६ (गाव)
मजीदुद्दीन—१२६
मतनियाज—४८६ (दीवानबेगी)
मतमुराद—४८५ (दीवानबेगी)
'मतुलउस्-सादेन"—१५६, १५७
"मत्लउल-अनवार"—१६१
मर्लेन्स्क—६८
मत्स्य-न्याय—४०९
मथुरा—१५१
मदरसा—१७०, १९३
'मदरसा-खुसरविया"—१६१
'मदरसा निजामिया"—१६१
"मदरसा-तैरदिज"—१३८
मदर्शा तान—५८०
मदर्जन—५१६, ५०८
मदिनाबाद—१३०
मदीना—१८५, १९०
मध्य-एसिया—१०३, ४०५, ५११
मध्य-ओर्दू—३३२, ३३७, ३४३, ३४७
मनाप—५३७ (सरदार)
मनाह्दान—१६५
मनोमाख—७, १०५
मन्तज्ञोला—१३५
मनलूक—१४०, १४१, १५२
ममाइ—५०, ५१, ९८ (खान)
मरकित—१८
मरगा—१४१
मरगिनान—१७६
मराग-जगात—२८
मरागियान—४१
मरिगोरोफ—३३३
मरियतबुर्ग—२४९
मरिया—११५ (नगाया), २८४
मरीना—२१९, २२५
मरुन्स्क—३८८
मार्कोजोफ (कर्नल)—४८०, ४८३
मर्गिलान—१७६, ३०५, ३०६, ४२१, ४२४, ४२८, ४३१, ४३६, ४३७, ४४८, ४२०, ५१८, ५२० (मर्गिलान)
मलदाविया—६
मलिक—३६
मलिक अशरफ—३९, ४०, ४१
मशहद—१५८ (खुरासान), १७३, १७६, १७७, १७८, १८१, १८२, १८७, १९१, २०३, २११, ४४२, ४४६, ४६१, ४६६, ४७६, ४९१
मशहदी—१८५
मसऊदबेग—१३०, १३२ (-बेग), १५०
मसऊदी—५३
मसद—५१८ (उजबेक)
मसूरी—४६२, ४९१
मसूरी झील—४१३
मसोपोतामिया — ५, ४११
(इराक)
मस्कत—१०४
मस्क्वा—९० (मास्को)
मस्ची—४८२
मस्जिद—१८३
"मस्नवी"—१४३ (कथाकाव्य)
महमतकुल — ११०, ११२, ११३, ११४, ३१८
महमूद—६९, १२२, १२३, १९२, २७५
महमूद काश्गरी—५४७
महमूद—१६८-६९ (खान), १९१, २११, २१६, (-वी अतालीक), २७७ (मिर्जा)
महमूद मिर्जा—२७७
महम्मद—(देखो मुहम्मद, मोहम्मद)
महरम—४३४ (एक अफसर)
महाओर्दू—३४३, ३४९, ४२५
महाकेविन—३३१
महाखान—१२१
महा-गाडी—३ (नगर)
महाचीन—१०३
महादूत—३२
महानोगाई—३३९
महामवराज—३५, ११६, २२९
महराजुल—३४, ७७, ९३, ९६, ९७
महामागर—३७२
महीने—१९९
मगजेमा—२३८
मगलइ सूयाह—३०२
मगला—२९५
मगलाई-सूबे—२९५, २९६
मगलिक—३३८, ३४६
मगित—१६७, १६८, १६९, १८५, १९२, १९४, २०९, २७९ २८९, २९१, ४२०, ४७१ (तुर्कमान), ४३९

(वश), ४८४, ५१६ (औगुत, उज्बेक), ५२७ (=मगीत)
मगिशलक—१६८ (कास्पियन तट), १८५, १९९, २०३, २०५, २०७, २०९, ४६९ (तुर्कमान), ४७२, ४८१, ४८९ (=मकिशलक)
मगुत—२८७, २९१, ३१८
मंगुत (मगित)—५१४ (करगी बुखारामें)
मगुश्लक (मगिश्लक)—३५८
मगू तेमर—३१५ (मङ्-गू-तेमूर)
मगोल — ३ (-खाकान), १३ (भाषा), ३१, ९२, १००, ११४, १२९, १४१, १४२, १५४, १९६, २१०, २२७, २६३, २७३, ३००, ३१३, ३१६, ३४० (तोर्गुत), ५१७, ५२९, ५३०, ५४१, ५४८
"मगोल-उन्‌निगुचा"—१३ (तोपची)
मगोलायित—२८४, ३०५, ४८६, ५२८, ५३९
मगोलिया—१२४, १४५, २३८, ३२२, ५१२ (बाह्य), ५३०
मगोलिस्तान—२९५
मंगोलिस्तानी—१४९
मचू (छिङ)—३२४, ३२९, ३३७, ३८९
मंचूरिया—३९७, ४०२
मचूरी—३८९
मदारिन—२५३ (अफसर)
मदोफ—२२७
मसी—२३५
मसूर—१६९
माखिम—११०
मागियान—१८७, ४५७, ४५८
माचा—४५७, ४५८
माचीन—१३०
माज़न्दरान—६३ (ईरान), १०३, १४५, १५४, १५७,
माजूर—४६०
मानी—१६२
मामियान—१८७
मार—३१५
मारमोरा—३८६ (समुद्र)
मारी—१०७, २२१, २२४, २३४, २३७, ४०१
मारीइन्स्क—३६५
मार्कोनी—३९६
मार्को पोलो—७, १०, १२, १३, ४६, ४८, ६६, १२५, ४६२
मार्क्स—३७९, ३८६, ३९१, ३९३ (कार्ल मार्क्स), ३९५
मार्क्सवाद—३८७, ३९३, ५०७
"मार्क्सवाद और राष्ट्रीय प्रश्न"—४११
मार्क्सवादी—४१०
"मार्कोपोलोकी यात्रायें"—११
मार्शल-ला—४१७
"माली तियात्र"—३८५
माल्‌ता—२६९, २७०
माल्‌ता-धार्मिक-सगठन—२६९
मावरा-उन्-नह्र—१२१ (=अन्तर्वेद)
मासूम—१९४
मास्को—६, २२ (मकस), २६, ३५, ४३, ५१ (-ध्वस), ५२, ५३, ६१, ९१, ९२, ९६, ९७, १०१, १०५, ११४, १५१, २०५, २१७, २१८, २१९, २२०, २२२, २२४, २३३, २३७, २४०, २४१, २४६, २४७, २४८, २४९, २५२, २६६, २८९, ३१७, ३१८, ३२५, ३२७, ३३८, ३६५, ३६६, ३६८, ३६९, ३७३, ३७७, ३८३, ३८५, ३८९, ३९८, ३९९, ४१६, ४४४, ४९३, ५०७, ५०८, ५१०, ५११, ५३३, ५५०, ५५४ (मस्क्वा, मास्क्वा)
मास्को राजुल—३४
मास्को-विजय—२२
मास्क्वा—१०१ (नदी), २२१
मिकादो—१४०
मिखाइल—३४, ९६, ९७, १०२, १३५, १८८, २२४, ४०५, ४१९, ४८० (महाराजुल)
मिखाइल रोमानोफ—४१९
मिखाइलोफ—२४८, ५२५
मिखाइलोव्स्कया—३८३
मिखाइलोव्स्की—३९२, ४८८ (खाडी)
मिङ-वश—१६ (=प्रकाश)
मितन—५१६ (उज्बेक)
मित्र-शक्तिया—५०३, ५०६
मित्रासोफ—३४१
मितिल्‌स्कया—३८५
मिनुसिन्स्की—३९५
मिन्‌जान—४६२
मिन्स्क—३९५
"मिन्हाजुल्‌मज़क्करीन"—१३८
मियानकुल—१६३, १७०, १७६, १८२
"मिरातुल्-मफ़तूह"—१४५
मिर्जा—११३, १६५, २८७
मिर्जा अस्कन्दर—२९८
मिर्जा खोजा—५५३
मिर्जा रहीम—५४३ (ईशान औलिया)
मिर्जा शम्स—४२५
मिर्जा शहबाई (बुखारा)—५२६
मिल—३६५
"मिलियनी"—११ (=करोडी)
मिलोरदोजिच—३७५
मिलोस्लाव्स्की—२२७
मिल्‌की खिराज—४५३
मिल्‌तेक—५१५ (उज्बेक)
मिलयुकोफ—४१८

मिस्र—३१, १०३, १३०, १४०, १४१, १४२, १४४, १४५, १५२, २६१, ४११

मिग्—१३१, ५१४ (उज्बेक), ५१६, ४२१ (कबीला)

मिगुलक—३००

"मिगूबाशी"—१४८, ४२८ (वजीर)

मिग् बुलाक—४८०, ४८१, ४८२

मीनारकला—४५३

मोमिन—२२४

मीर अरब—१८३, १९३

मीरअली—१५४ (तब्रेजी), १६२ (मजनू)

मीर अलीशेख—१८१

मीर आबूर—५५२, ५५३

मीरखोजन्द—१३६

मीर नजीम—१७५, १७६

मीरशब (कोतवाल)—४४१

मीराशाह—५६ (तेमूर-पुत्र), ६१, ६६, १५०, १५३

मुगानोफ़—५४२

मुक़ीम—१३१ (खान), १९२

"मुक्ति-संघ"—३७३

मुगजर—३५५

मुगल—१८८, ३०५, ३११, ३१३

मुगल-साम्राज्य—१८७

मुगोल—५१५ (उज्बेक)

मुगोलिस्तान—४३, ५५, ५६, ६१, १२१, १३६, १३७, १४८, १५५, १६६, १६८, १७१, १७३, १७४, १७५, १७७, २०१, २०७, २३८, २५३, २९८, ३०५, ३०७, ३०८ (मध्यन्तर)

मुगलि खानों—१७१

[illegible]—१२ २२, १२७, १२८ (रेशम) [illegible]

मुज़फ्फर—१७२, ४३१, ४३२ (अमीर, बुखारा)

मुजफ्फरी—१४७, १५० (-वंश)

मुजार्त—३३६ (डाँडा)

मुजाहिद—४४३ (धर्मयोद्धा)

मुद्रा-स्फीति—५०६

मुबारक—८, ४८, ६६, १२९ (शाह)

मरगाब—१४१, १७२, २०३, ४७७, ४८८

मुरमो—८२

मुरश्किन—२८८

मुराद—४६०, ४८९ (अमीर)

मुराविन—४६७

मुराव्येफ—२७२, ३७३, ३७४

मुरावेफ—३७४, ३८०, ३८१, ३८८, ३८९, ३९०, ४७२

मुराव्योफ-अपोस्तोल—३७५, ३७६

मुरीद—४३, ३७७ (-वाद)

मुर्गाब—४४१, ४८९, ४९८ (वाला), ४९१

मुर्ज़ा—५३ (मिर्जा), २८७

मुर्तुज़ा—३१५, ३१६

मुलर—३१६

मुलतान—७, १८, १४६, १५१

मुल्ला कारी—४९५

मुल्ला मीरक—१८३

मुल्ला मुशफिकी—१८३

मुल्ला शम्सुद्दीन—१२२

मुशरिफुद्दीन—१८३

मुसलमान—३०

"मुसलमान कमकर संघ"—५२३

मुसल्मानकुल चूलाक (लुज)—४२७, ८२९

मुस्लिमों युद्ध-विधि—५६

मुसैबी—१३५

मुस्तफा रनाउ—५१३

मुस्तफा खान—१६५

मुस्तैर—५१६, ५२८

मुहम्मद—६९, १०३ (पैगम्बर), १२५, १३५, १३६, १४२, १४४, १४५, १५९ (२), १६१, १६६, १६७, १६८, १९०, १९१, २०१, २०४, २०६ (देखो मुहम्मद भी)

मुहम्मद अमीन—४६९ (ईनक), ४९० (खान)

मुहम्मद अली—३९४

मुहम्मद उसमान—११६

मुहम्मद किर्गिज—३१०, ३१२

मुहम्मद खान—६७

मुहम्मद गूरगान—३०६

मुहम्मद जहूर—४२३ (दीवान-बेगी)

मुहम्मद जौकी—१५६

मुहम्मद तर्खन—१६०

मुहम्मद तेमूर—१६९

मुहम्मद नियाजवी—४७१, ४८२ (दीवानवेगी)

मुहम्मद रज़ा वेक—४७१

मुहम्मद रजावेक—४२३ (तुगाई) ४७१

मुहम्मद रहीम खान—४७१ (खीवा)

मुहम्मदशाह—३११, ४७४ (ईरान)

मुहम्मद शिकावी—१६२

मुहम्मद शैबानी—१६३, १६५, १६७, १६८, १६९, १८०, १८३, १९७, २७७, ३०६, ३०७ (शाहीबेग)

मुहम्मद सालेह—१८३

मुहम्मद सुल्तान—५८

मुहम्मद हैदर—३०२

मुगत नोगाई—२८६

मुगा—१९७

मू-चुङ—२२७

मूजातिच—५५२

मूजार्त—३३१

मूज़िक—२२८, ५३०, ५३१

मूमिन—५१५ (उज्बेक)
मूरक्राफ्ट—४६०, ४६२
"मूर्ख"—३९२
मूलर—१११, ३४५, ३५९ (मुलर भी)
मूसा—१५०
"मूसी"—४२५
"मृत आत्मायें"—३८४
"मृतक गृहके सस्मरण"—३९२
मेकआर्थर—१४०
मेक्नेल—४४९
मेक्सिको—४७३
मेगलान बुका—१४३
मेचनिकोफ—३९६
मेज़मिर—७३
मन्—१५३
मेन्दली—४८४
मेन्देलेयेफ—३९२
मेन्शेविक—३९७, ४००, ४०, ४१०, ४१६, ४१७, ५०५, ५०६, ५०९, ५१७, ५१९, ५२१, ५३८ (अल्पमतीय)
ममक—५०
मेमना—१९१, ४५१, ४८९
मेयाफरकिन—७
मेरकेंद—४३४
मरकुत—५१४ (उज्बेक)
मरेगन—३२१, ३२४
मरगास—१४२
मेरगुल—१३१
मेराउरिक—१२५
मरिया—७७, ९०
मर्कुलोफ—५४४
मर्गलानी—१२६
मेर्व—१३, १३१, १५४, १६१, १६७, १७०, १७३, १७६, १८१, १८५, १८९, २०३, २०४, ३०९, ३८८, ४४०, ४४१, ४४२, ४४४, ४७३, ४७६, ४८९, ४९१, ४९२, ४९७, ४९९, ५००, ५४८, ५५०, ५५५
मशकरी—३५५
मेश्केरियक—३५४
मेहतर—४३४, ४३५, ४६०, ४७२ (वित्त-मंत्री), ४७५ ४७७, ४७८
मेहमानखाना—५४० (सामूहिक घर)
मेहरवान खानम—१७७
मेहरानरूद—४०
मेहीन—१९९
मेंगली गिराई—१००
मेंगू—८
मेंशिकोफ—२५५, २५६
मैमना—१९४
मैमाचेन—२५६, २५७
मैलवाश—३२१, ३३९
मोइसेचेको—३९३
मोक्सी—४१
मोगक—१८३
मोगल—३१२
मोगाकपुल—१७०
मोगिलेफ—५०३
मोज़ाइस्क—५२, ९७, २२१, ३६९
मोज़ेर—४९४
मोतिनान—५४६ (गाव)
मोतुगान—१२६
मोन्तेनिग्रो—३८६, ४११
मोन्तेस्को—२५९
"मोरगू"—२५४
मोरान—१३३
मोराविया—२३
मोरोज़ोज़—२२६, २२७, २२८, ३७६, ३९३
मोर्दवी—३७२
मोर्दावी—९०, ९२
मोर्द्वा—१०७
मोर्द्विन—२२, २२१ (मोर्द्-वीन)
मोर्द्विनी—२३४, २३७
मोलियेर—२६६
मोलोगा—३५
मोलोतोफ—४०६, ४१६
मोल्दाविया—२३, ३९, ३८० ३६७, ३८०
मोसली—१४४
मोहम्मद ओगलान—४९ (सुल्तान), ५० (ओगलान), ६५ (खान), १६६ (मिर्जा)
मोहीउद्दीन—३९ (बुरदइ), १५७
म्निस्ज़ेफ—२१८
म्स्तिस्लाव—८४
यउज़ा—२४६
यक्सा—२४३
यग्नान—४५७, ४५८
यग्नाव—५३९ (गाव, नदी)
यग्नावी—५३९ (-भाषा, गलचा)
यङ्गी—१३५, ३०२
यज़्द—१०३, १०४, ३०१ (ईरान)
यतीकद—३०८
यतीकुदुम—१७४ (सप्तकूप)
यदकू—४९
यदा-तासी—१८३
यनकुरु—१५२
यमागुरची—१६७, २८६
यमासोफ—५३३
यमीशफ—३३३ (यामीशेफ)
यम्वा—२०५, २०८, २८४, २८६, ३२१, ३३९, ३५० (नदी), ३५६, ४६५, ४७८
यलानतुश—२८२
यवन—२६९
यशमुत—१४३
यस्सू-मङ-गू—२९
यस्सी—५६ (तुर्किस्तान), ५७, १५९, १६५ (तुर्किस्तान शहर), १६८, १६९, १८०, २७९, ४३२
यसाउर—१३४, १३५
यहिया करती—१५०
यहूदी—३६, ७४, ८३, ३९०, ४४२, ४४५, ४४६, ४५०, ४५२

यर्गा आरिक—४८५
यर्गा कला—६९६
यर्गा-शहर—१९९
यर्गा-हिसार—३०९, ६२५
यजील—१६०
याइगी—२११
याइलक—३० (याइलग), १३० (गरम चरागाह)
याकुत्स्क—२३८, २४४, ३९१
याकूगिर—२३८
याकूब—७१ (नाद्वेरियामें), २३८, २७१, २७२, ६०२
याकूतिया—३९१
याकूब—११०, ४६२४, ७६ (मेहनत)
याकोव—३४८
यागोबी—३८३
यागग्नी—५१५ (उज्बेक)
यागलान—६०
यागलिवी—६१
यागेलोन—६१
यागनिस्त—२९२
याङ-चाउ—१०
याङ-ची—५, १६ (याङ चौ)
याचिम्ली—५८८ (तुर्कमान)
याजगद—५४३-८५
याजगिर—५८७ (तुर्कमान)
याजिर—५८७ (तुर्कमान)
यातूज—२८०
यादगार—२०८ (महम्मद), (खान), २०८, २१० २६०, २६६, २९६, ३१६
यान—२०१
यान तुर्गान—५८३ (गाव)
यानीरग—६८६
यानी [illegible]—४८१
याना-तिरिन्द—३४६
यानीतुर्गान—४२२, ४३४, [illegible]
[illegible]—६ (डिब्बे)
[illegible]—[illegible] (नदी), ४८०, ४८१
याबू—५१५ (उज्बेक)
याम—११६
यामच वी (वावर)—४२१
यामिश—३२६ (सरोवर), ३३३
यामूत (तुर्कमान)—२००, २०७, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ५७७, ४८४, ४८७, ४९०, ४०४, ५४७ (यामद)
यायिक—२१, ४९, ५८ (उराल), ७५, २०५, २०६, २३५, २३६, २६१, २८४ (उराल), २८५, २८६, २८७, ३१८, ३१९, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४३, ३५०, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८
यायित्स्क—२३६, २६१
यारकन्द—१६४, ३०३, ३०७, ३०९, ३१३, ३२८, ३३२, ३३३ ३४७, ४२५, ४६४, ४६५
यार मुहम्मद—१७५, १९५
यार मुहम्मदोफ—५३३
यारलिक—२६ (शासन-पत्र), २९, ३३, ५१, ६०, ९३ (अधिकार-पत्र, शासन-पत्र), १८३
यारलिक तुराखान—६७७
यारोशाक—८३
यारास्लाव—२६, ५२, ८८ (?), ८९, ९२, २२८, ३१८
"यारोस्लाव्स्की-प्रावदा"—८४
यार्कग—१३०
यार्तुग—१०२
यार्तोनिज—३१६
यार्लोमेफ—२२७
यार [illegible] (उत्कवता)—३०८
यार्तोन [illegible]—३१६ (बिजली [illegible])
यास्सा—१२१ (यास्सा), १५४, १६३ (विधान)
यासी—८२ (ओसेती), २९७
यास्माक—१७६ (कानून, यासा)
यास्सी—२६३
याहक पश्ने—५४३, ५४४
यिदिम्मे—३४९
यिबु-येमूर—१५
यु-अन—९
युकलिक—५५
युक्त राष्ट्र (अमेरिका)—४०८, ४१२, ४१४
युग—१५८
युगक्रमिक पद्धति—३९२
युगुर—३१६ (उइगुर)
युग्रा—३४
युङ-चेन—३३२
युज—५१४ (उज्बेक)
"युद्ध और शांति"—३९३
युन्नन—१४
"यूनी कमनिस्त" (युवक कम्-निस्ट)—५३३
युरेकिर—५४७ (तुर्कमान)
यरेकी—५४७ (तुर्कमान)
युर्ची—६५९
युर्त—३०५ (आर्द्र वाले देश), १३२
युलदुज—१३३, २९८, ३००
युल्दाश—४५७ (परमाची)
युवान-मिङ-युवान—३८९
युसकुदुक—४८१
यूकागिर—२७१
"यूगेनी-ओनेगिन"—३८४
यूजक—५१५ (उज्बेक)
यूदेनिच—५५२
यूनस—१६६ (खान), २०२, २७७, २९३, ३०५, ३०६, ३१२, ४२१ (खोजा)
यूनिया—२६९
यूफियोसि—२८८

यूरियेफ—५२, ८४, १०८
यूरी–९० (१), ९२, ९६ (३), ९७, ९९, २३७ (सेनापति)
"यूरोपा"—२४१
यूर्ति—३१९
यूलर—२६५
यूसुफ—४२ (-मिङबाशी), ५३ (सूफी), ५४, १५७, २७८ (अमीर)
येइयूयुर (तुर्कमान)—५४७
येकाजुखोर—२४१
येज़्द—१०३ (उयेज़्द), १०४
येदेची—११६ (मत्र द्वारा वर्षा करानेवाला)
येदिस्सन (एतिसन)—३२१
येनिसेइ—२३८, २७१, २७२, ३७६, ३९५, ४८९
येनिसेइस्क—२३८
येपचिन्स्की—११५
येम्बा—३४३ (यम्बा)
येयेमयुर—५४७ (तुर्कमान)
येरेवान (अरमनी)—३७१, ३७७ (येरिवान)
यरोफेइ—२४२
येर्मक—१०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, २३५, २३८, २७१, २७२, ३१५, ३१६, ३७४, ३८०, ३९० (-एरमक)
येर्मकोवो-गोरोदिची—११०
येर्मकोवा पेरेकोफ—११४
येर्मोलाई—११०
येर्मोलोवा (अभिनेत्री)—३९३
येलचिन—५१४ (उज्बेक)
येलिगइ—११४
येलदेङ—३२१
येलिज्की—३१७
येली—४८९ (तुर्कमान), ४९०,
येलेना—१०६
येल्तन—३५१
येल्दिङ—३३८
येल्यु—५
येल्यु चुत्साइ—४ (मगोल)
येवेंकी—२३८
येसू-मुङ-खे–१२६ (-येस्सू मङ-गू)
येस्केल्विनियान—११३
येस्सुन—१३६
येस्सू मङ गू—१२६, १२७
योदोकिया—२५१
योव—११६
योरोशिलम—३८०
योलेतान—४९०, ४९१, ४९७ (उपत्यका)
योलोतेम (किला)—४७६
योसफ—२६७, ३९६ (=स्तालिन)
योहन—१३५
यौजा—२४१, २४६
"रईस शरीयत"—४४३ (धर्माधिकारी)
रगूसा—२४
रजव कराजार—४२४
रज़ाइया—५५४ (उर्मिया सरोवर)
रज़ाकुल्ली—१९३
रजीमखान—४६६
रणजीतसिंह—४४८, ४५०
रतिवर—६, २३
रबात—१६१ (धर्मशाला), २९८ (पाथशाला)
"रबोचया ज़ार्या" (कमकरो की उषा)—३९१
"रबोचीपुत"–५०८ (बोल्शेविक पत्र)
रबोचेयोदेलो—५१८
रबूतन—३३२, ३३३
रमजन—५१
रशीद खान—२७७
रशीदुद्दीन—२६, ४६, १३३, १४५, ५४७
"रस्कोल्निकी—२२९"
रस्तिसियन-द-पीसा—११
रस्तोफ—८२, २२४, ४०२
रस्पुतिन—४१५, ४१६
रहमतुल्ला—५४६
रहीम—१८८
रहीमकुल खान—४७६
रहीम बी—१९२ ४५५ (मगित)
रा—७१ (वोल्गा नदी), ७३
राइ—८१ (स्वर्ग)
राइन—४११
राइम्सक—३५८, ४२९, ४७६
राग—४६२
राजकुमार द्वीप—३१९
राजा (वाङ)—३४७
राजादेश—३५७ (उकाज़े)
राज़िन—२३६, २३७, २३८, २६१
राजुल—५ (कन्याज़), ७५ २५३, ३१७
राजुल उरुसोफ—३५२
राजुल गागरिन—४६४
राजुल ल्वोफ—४१७
राज्यदूमा—३७०, ४०४ (ससद्), ४१०
राज्यपाल–१६८, १७८, २१७
राज्य-परिषद्—३७०, ५०६, ५०७
"राज्य-विधानोका सहिंतीकरण"—३७०
रादा—२३२
रादिमिची—७७
रादिश्चेफ—२६७, २६८
रानी—२५५ (एकातेरिना), ३४४, ३५१, ३५२ (अन्ना)
राबर्ट (जेनरल)—४९८
रायन—५३३ (=जिला)
रायमुन्दर—१३५
रावलपिंडी—३१३
राष्ट्रीय परिषद्—११६, २१७
राष्ट्रीय सभा—१०८
रिचार्ड—१३५

रिनदान—५१५ (उज़्बेक)
रिदाल्फो—१०५
रिन्-छेन्-पल्—१६
रिन्-छेन्-फग्—१५
रिपेन्स्की—३५७
रिलेयेफ—३७८, ३७५, ३८२, ३८३ (कवि)
रीगा—३५, १०८, २५१, ५०७
रुदकोफ—५०६
रुयेनिया—२३
रुबरिक—७, ८, १०, १२५, १२७
रुमानिया—३८६
रुम्यान्सेफ—२५८, २६०
"रुस्कया प्राव्दा"—८५, ३७३, ३७४
रुस्ी अकदमी नाउक—२६४
रुस्तम—१५८
रुज़वेल्ट—४०० (अमेरिकन)
रुज़ा—१६
"रुदिन"—३१२
रुवल—२५५
रूम—१८३
रूमानिया—१०३, २२३, ४००, ४१२
रूमी—१८३, १८७, १५२
रूरिक—७५, ३०२
रूरिक-वंश—११५, २७८
रूस—५, १६, २३, ६८, ७१, ७३, ७७, ७८, ८३, १०३, १०८, १५३, १६७, २०६, २०७, २१० २३३, २६९, २९८, ३२१, ३२८, ३२९, ३३२ ३४७, ३६६, ३९८, ४२०, ४२४, ४५० ४९८ (तुर्कमानयुद्ध) ५२९, ५५६
रूस-जापान-युद्ध—३९७
रूस में क्रांति—५०३, [illegible] (१९०५)
[illegible]"—
३९५
रूसी—५६, ७२, ७४, २४३, २४४, २५३, २७०, २७९, ३१६, ३२६, ३७६, ३८९, ४९३, ५२२ (सफेद), ५३५, ५३६, ५५२
रूसी अभियान—४७४, ४८०
रूसी-एसियाई बैंक—४०९, ५२३
रूसी किसान संघ—४०१
रूसी गणराज्य—५१२
रूसी गुलाम—४६५-६६
रूसी-चीनी—४०९
"रूसी तियात्र"—२६६
रूसी भाषा—३९२, ५५६ (और भारत)
"रूसी मजदूरोंका उत्तरी संघ"—३९१
रूसी विज्ञान अकदमी—२६४
रूसी तत्व-अविकार—३७३
"रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी"—४०५
रूसो—२६७, ३७३
रूस्तक—४६२
रे—१०३ (तेहरान)
रेगिस्तान—४४९
रेडियोग्राम—५५०
रेतेनकाम्फ—४१३
रेनाउ—३३१
रेपिन—३९३ (चित्रकार)
रेल-इंजन—३७६
रेल-निर्माण—८९९
रेव्-कम—५२८ (रेवल्युशनरी कमिटी, क्रांति-समिति)
रेवेन्द—१०८
रेगर—३७३
रोज़ म्यान—४७०
रोज़िम्स्की—२२१
रोम—७३, १०६, १४१, १८५, २१०, २६९, ४३३
रोनन—६ (ईरान-पुत्र), २२, ६३, ७३
रोमन-पोप—२२९
रोमनोफ—११५, २१७, २५६
रोमनोवा—११५
रोमनी—२०३, ४३३, ४३४ (=जिप्सी)
रोमानोव्स्की—४३२, ४५२ (जेनरल)
रोयरिक—७५ (=रोइरिक, रोरिक)
रोरिक—७५
रोरिक-वंश—५१७
रोलेट कानून—५२१
रोस्तोफ—३५, ६३, ८६, ८८, ९०
रोस्तोव्त्सेवो—५२५
रोहा—८, १४१
र्ज़्याद्नीप्रिकाज़—२२८
र्याज़िन—२२, ३४, ५१, ५२, ६४, ६८, ८२, ८८, ९१, ९२, ९८, १००, १०६, २२०, २२३
लगोदा—५५३
लघु-ओर्दू—२७८, ३३७, ३३९, ३४३, ३४९, ४६७, ४६९
लत्विया—४०१
लत्वियन—५१९
"लताफतनामा"—१५८
लतीफ—१६६
लदोगा—९४, ११६, २४९ (सरोवर), ५५१
लश्करवाशी—५४५
लंका—१०, १०३
लंग—१४९ (लंगड़ा)
लंदन—३९, ३८२
लाइप्ज़िक—२६७, ३७०
लादा—७२ (=ह्लादा)
लादिगिन—३९६ (बिजली-आविष्कारक)
लादिस्लाउस—५३ (=ह्लादिस्लाव)

लामा—१२ (साधु), १३८
लायक पसद (बासमची)—५४४
लायोस कोशुन—३७९
लार—१०३, १०४
लारगा—२६०
लाल गारद—५४९
"लाल जेनरल"—४०६
लाल सरोवर—४१५
लालसेना—५३३, ५४६, ५४९ (तुर्कमानियामें निर्माण), ५५५
लावाज़िये—२६५
लाव्रेन्तोफ (जेनरल)—५३१
लाश—८०
लाहार्प—३६५, ३६६, ३७०
लाहौर—७, २८, १४४, ३१३
लिखारेफ—३३३
लिगनित्ज़—६, २३, २५
लिङ-अन्—९
लित्वा—३१९
लित्के—३७३
लियुवन—९८
लियुवानिया—३४, ३८, ५३, ६०, ६८, ९७, १००, १०८, २२९, २३४, ३७७, ४१३
लियुवानी—५२, ६२, ८३, ९१, ९८, १००, २२१, ३१७
लियो—१५५
लिपि—९
लिफलैंदिया—२४९
लियागर—४२५
लिवोनिया—७८, ९४, ९५ (बालतिक-तट), १००, १०८, १०९, ११६
ली-चुङ—८, ९
लुई—२३, २६७, ३७० (अठारहवाँ)
लुगान्स्क—४०३, ४०६
लुगुई—३१७
लुत्स्क—६३
लुब्लिन—६, २७, २३४
लुवा—३१७
लूओरावेतलन—२७१
लूकस—११०
लूल्—४०
लेस्कोइ—३१७
लेन—२३८, २३९, २४०, २७१, २७२, ३७३, ३७६, ४०९
लेनिन—३७६, ३८७, ३९२, ३९४-९६, ३९७, ३९९, ४०२, ४०३, ४०५, ४०६, ४१०, ४११, ४१३, ४१९, ५०३, ५०९ (प्रथम राजकीय घोषणा), ५१०, ५१३ (देहात)
लेनिनग्राद—५७, १६२, २५०, ३९२, ५३३
लेनिन-पर्वत—१०७
लेनिन पुस्तकालय—२६७
लेनिनाबाद—४३१, ४५१, ५१८ (खोज द)
लेनिन्स्क—५३५ (शिखर)
लेपेस—३४९
लेप्सा—३३१
लेबाउज़्की—३१६
लेम्बर—२३
लेर्मन्तोफ—३८२, ३८३ (कवि), ३६९, ३८४
लेव ताल्स्त्वा—१८०, ३९२
लेवितन—३९६ (चित्रकार)
लेंडसेल—२९९
"लैला-मजनू"—१६१
लोचा (सार्तेरिया)—३३५
लो-डो-ग्यर्-छेन—८
लोपुखना—२५१
लोब्—३००
लोबनोर—२९७
लोबाचेव्स्की—३८२
लोब्जाङ—३२१
लोब्जाङ जाजेर—३४०
लो‌ञ्जुङ—३३८
लोमकार्ट—५५२
लोमनिद्ज़—२४
लोमाकिन—४८१, ४८४, ४९५ (जेनरल)
लोमोनोसोफ—२६५, २६७
लोयाङ—५ (होनान्‌में)
लोली—२०३, ४३४ (जिप्सी)
लोवात—७५
लोसवा—१११
"लौह-पुरुष"—२७१
लौह-युग—५२८
ल्याउ तुङ (प्रायद्वीप)—३९७
ल्याखोफ—४०७
ल्यापुनोफ—२२३
ल्यूप—३३१
ल्योन-परिषद्—६
ल्योनहार्ड—२६५
ल्योन्ति—२२७
ल्योपोल्द—२५७
ल्वोफ—२३२, ४१३, ४१८
ल्हचन खान—३३२
ल्हासा—३३२, ३४२
"वकाया"—६७ (घटना), १५६, १५९
वकुलिंचुक—४००
वक्षु—६ (आमू दरिया), ७, १३०, १३१, १३४, १३७, १३९, १५४, १७३, १८६, १९४, २०५, २०८, ४३९, ४४२, ४६५, ४६७, ४८०, ४८८, ४९०, ४९९, ५२७, ५३९, ५४१, ५५१
वखान—४६१, ४६२
वखेया (इलाका)—५५६
वज़ीर—१२५, १२६, १२७, १३१, १३७ (अमात्य), १८३, १८६, १८७, २०८, ४४५
वज़ीरआज़म—१३६ (महामन्त्री)

वत्शिर—३२४
वदगिस—६७
वरगी—७५, ७६
वरनामिनार—४५८
वरमावा—२३४ (वारसा)
वर्गचेतना—३९१
वर्णमाला—९
वर्स्त—१११, ४२५ (=८$\frac{3}{3}$ फर्सख)
वस्तुवाद—२४१
वस्साफ—१२७, १२९, १३३, १४५
वहीउद्दीन—१५३
वर्षपत्र—१६
वलाचिया—३९, ३८०
"वलायत-उजबेक"—१५६
वली—३०४
"वली-निजम"—४४२, ४५६
वली नियाज़—५३३ (मुल्ला)
वली मुहम्मद—१८६
वली कुरजो—१८८
वाटरलू—३७०
वादाचा—४५६
वामपक्ष—५१९
वामपक्षी—४०५
वाम्बेरी—१६७, ४७६, ४७८, ६०९ (वम्बेरी)
वायजीद—१४८, १६५
वाधान्दुर—५४७ (तुर्कमान)
वारज़ाद—८८
वारसा—२३८, ४१३ (वरमावा)
वाल्टरन—२६०
वाल्स्टाट—६ (युद्धक्षेत्र), २३
वासलाफ़—२६६
वाल्टेर—५५२
वा[illegible]—१७५
वाशिंगटन—५२०
वासिलेव्स्की—३९९, ५११
वासिली—८२ (तेरह), ५२, ५३, ६१, ६३, ६८, ९९ (१, २), १०२, १०६, १०९ (३), ११०, ३१६
वासिली—२१९ (शुइस्की), ३९१ (गेरासिमोफ)
वासिल्को—८७
वास्को-द-गामा—१०१
वाह्लीक—१४९, ४४२
विज्ञान—३९६
विजन्तीन—७३, ७५, ७७ (पूर्वी रोम), ८४, १०५
विजिक—११२
विजयनगर—१५७
वितुत—६० (वियोल्द)
वित्कोविच—४४८
विधान-संहिता—८५
विनिक—२८
विम—१११ (नदी)
विमान-विद्या—४१२
"विरा"—८५ (अर्थदंड)
विलनास्—५३, २३४ (विलनो), ४१३
विलायत (अन्तर्वेद)—३०८ (=वलायत)
विलियनोफ—३३३
विलियम—४११ (विल्हेल्म)
विलियासुवर—१४३
विल्युइन्स्क—३८६
विल्हेल्म—३७५ (३), ४०६ (२)
विशबालिग—१२७, ३०१
विश्चेरा—१११
विश्लिप्ट—९३
विश्वयुद्ध—५२०
विस्तुला—६, २७, २५९
वीट्स बेरिंग—२५६
वीना—१०१, २४९, ३७०, ३७९ (आस्ट्रिया)
वीबोर्ग—४१७ (विपुरी)
वुचेगदा—१११
वृतिगुन—३२८
वू-चाङ—३११
वृद्ध—४६१
वेद-ग्राद-वेद—३३०
वेगुइश—११४
वेगुइशेव्स्कोये—११४
"वेचे"—८९ (पंचायत), ९३, ९४, ९६
वेज़िर—१६८, १७८, १९६, १९७, १९९, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०७
वेतुलगा—२३४
"वेदोमोस्ती"—२५२
वेधशाला—१५७
वेनिद—७१ (वेंद)
वेनिस—१०, ३६, ५१
वेनिसी—३८
वेनीउकोफ—३६१
वेनेविनिनोफ—३८२, ३८२ (कवि)
वेनेवेनी (इतालियन)—४६६, ४९३
वेन्द—७१
वेन्युकोफ—५३३
वेम्बरी—१२४, १८३, २९२
वेरदआ—५५
वेरेन्दे—८२
वेर्खोव्स्की (जेनरल)—५०६
वेर्खोव्नी सवोर (उच्चतम सभा)—३७४
वेर्ख्नेमउराल्स्क—३४९
वेर्ख्ने-निजिन्सकया—३१९
वेर्दगन—५२०
वेर्नी—२९९ (अलमाअता), ३७९, ४१५, ५३०, ५३१, ५३७
वेर्नीये—२७७, ३६१ (श्रद्धा), ३७९, ४३२ (अलमाअता)
वेर्स्त—५५१ (वर्स्त)
वेला—२४
वेल्ज़ली—३९०
वेल्लोर—४५२
वेल्यानोफ—३३१
वेल्स्की—१०६
वेवोद—१०९ (राजपुरुष)
वेसिफ—७३
वेसिर—१६८, १९६, १९७

वेसी—७७, ९०
वेस्ना—७३ (=वसत)
वैदिक—५३
वैदू—१४३
वैधानिक जनतान्त्रिक—५१७
वोगोल—११०, १११, ११२, ११३, २३५
वोत्याक—२३४
वोद्का (शराव)—४३६
वोयकोफ—३१८
वोयवोद—२१७, २२३ (=राज्यपाल), २२८, २३८, ३२७
वोरोदिनो—३६९
वोरोनेज्ञ—२४७
वोरोव्योवो—१०७
वोर्स्कला—२५०
वोलिन्स्क—८२
वोलेस्लाउस्—८४
वोलोस्त (=जिला)—४०४, ५२०
वोल्खोफ—२२१
वोल्खोव्स्की—११४
वोल्गा—२०, २९, ६०, ६१, ७१ (=रा, इत्तिल), ७७, ९०, ९२, ९६, १०२, १९६, २०९, २१०, २३५, २३६, २४७, २४८, २६१, २६४, २८७, २८८, ३२१, ३२५, ३३९, ३४०, ३४२, ३४८, ३५५, ३५७, ३६०, ३७२, ४०१, ४२०, ४६९, ४८०, ५०८ (प्रदेश)
वोल्गा-कलमक—२३५, ३१९, ३३८, ३४५, ३५२, ३५५
वोल्गार—५, २१, ७३, ७४, ७५, १५१ (वोल्गार)
वोल्गारी—७१
वोल्ताइक आर्क (प्रदीप)—३८३
वोल्तेर—२५९, २६६, २६७, ३७३
वोल्ना—६२
वोल्फ—१५३, ४९१, ४९२, ४९३, ४५० (डाक्टर)
वोल्हूनिया—२६, ३८
वोस्ताम—२०४
व्यत्का—२३४
व्यातिची—९०
व्युकद्युज—५४७ (तुर्कमान)
व्रूनवोल्ड—१०८
व्लादिमिर—६, २१, २२, २४, ३५, ५२, ६१, ७८, ८३, (स्व्यातोस्लाव-पुत्र), ८४, ८७, ९१, ९३, ९७, १०५, २५२
व्लादिमिर मनोमाख—९०, ९४
व्लादिस्लाव—२२२
व्लारम्बेर्ग—४३०
व्सेवोलोद—४१ (खोलम), ८६, ८७, ८८, ९१, ९४
व्सेस्लाव—८६
शक—७१, २८४, २८९ (=सिथयिन), ३३४, ४५९, ५१६, ५१७, ५२८, ५२९, ५३६, ५३९, ५४१, ५४८
शकलाओ—२७
शकार्य—५२८, ५४१
शगनान—४५९
शगिन—२६२
"शज्रतुल्-अतराक"—१८, २६, २९, ३६
शतरज—४९४
शफी—२०९
शविनादावेग—२५५
शमसमान—२८५
शमसा—११४
शमाजहान—२९८
शम्वेगाजानी—४०, ५४
शम्शुद्दीन—१३१, १४३, १४४, १५०, १५३
शम्शवान् आइम—४३९
शम्सिन्स्की—११३
शरफुद्दीन यज्दी—३०१, ३०४
शरवान—१५६
शरातजिन—३३४
शरावखाना—२८० (ताश्कन्द इलाकेमें)
शरावखानी—२७९
शरीकाना—४३४
शरीयत—१३७, ४४५, ५२६
"शरीयत-शरीफ" (सद्धर्म)—५२६
शर्रा-उसुन—३४१
शहवाई—५२६ (मिर्जा)
शहरसब्ज—१४८, ४२४ (=किश), ४२७, ४३९, ४४२, ४४९, ४५१, ४५२, ४५३, ४५६, ४५७, ४६२ (दक्षिणी)
शहरेखान—४३७
शाङ-तू—८ (कै-पिङ-हू)
शादमुल्क—१५५, १५६
शादीवेक—६३, ६४, ६९
शान—१४ (बर्मा), ३८९
शान्ति-घोषणा—५१०
शापूरगान—१३१, १३५, १८६, १९३, १९४
शाबिरगान—४६३
शाम—३३, ३९, १२१, १४०
शामिल—३७७
शावकान—३२
शाह अब्बास (१)—२०८
शाह इस्माईल—१७४, १७६
शाहजमा—१९४, ४४६
शाहजहा—१५७, १८७, १८९, १९०, २०७, २२६, २२८, २४०, ३२५
शाहर्जिदा—१५४
शाहतेमूर—४४२
"शाहनामा"—१५७
शाह फखरुद्दीन—१३८
शाहवेग—१०२, १८६
शाह वूदग—१६६
शाह महमूद—१९४

शाह्मातोफ—७१
शाह्मुराद—४२१, ४६०
शाह याकूब—५४३
शाह् राजीउद्दीन—३०४
शाहरुख—६६ ६८, ६९, १५८, १५५, १५७, १५८, १६३, १६५, १९४, २९८, २९९, ३०१
शाहरुखिया—६७, १६७, १७१, २८०, ३०५
शाह शुजा—४८८, ४८९
शाह सफर—४८०
शाह हुसेन (ईरान)—४६५
शाही (सिक्का)—४७८।
शाहीबेग—३०६, ३०७, ३०८ (मुहम्मद शैबानी), ३०९
शाघाई—३८९
शिकतुर—१८३
शिगाई खान—३८६
शिल्का—२३९
शिमला—४९९
शिया—१४५, १५३, १७३, १७४, १७७, १८९, १९९, ४६१, ४६२, ४७२, ४९२
शिरवान—२८, ३३, ३९, १०२, १५४, २०३
शिरामृन—२८
शिरियानेत्स—५५३ (शीर्या-नेत्स), ५५४
शिन्—१२५
शिन्मत—१२५
शी-चुङ—३३२
शीन्—२८१
शीगात—२०, १०३, १०८, १५८, १६६, ३०१
शीगाँ—१८८, १८६, १५०
शीरीन—१२५ (उज़बेक)
शीरनुमुदी—२६१
शीरी खोजा—१८३
शुइस्की—१०६, २२२
शुगनान—४२६
शुमिलोफ—५१८
शुलगिन—४१९
शुल्दुर—५१५ (उज्बेक)
शुशेन्स्कोये—३९५
शुस्तर—१५४
शुस्तोफ—५२५
शकेर—३२८
शूरखाना—४८२, ४८३
"शूरा इस्लामिया"—५१७, ५१८, ५२४ (इस्लामीलीग)
"शूरा उलेमा"—५१७
शूल्ज—४२९
शेक्सपियर (लेफ्टनेंट)—४७५
शेख—१६९
शेख आरिफ—४८३
शेख जलील—२०६
शेख नूरुद्दीन—१५५
शेख मस्लहत—५७
शेख मिर्जा—५४३
शेखहैदर—१६७
शेखुल्-इस्लाम—५९ (इस्लाम के महागुरु), १६६, १६९
शेङ्-च्—२४३, ३२४
शेदरिस—५६
शेन्सी—५ (चीन), ३४० (शेनूशी)
शेवास्त—१०३
शेमाख—१०३
शेमीअका—३४४, ३४५ (पुलाद)
शेम्याका—२९
शेरअली—८६१
शेरकुली—१२५
शेरगाजी—२०१
शेरपुर—१९८
शेरगत—५८५
शेर मुहम्मद—५८५
शेरखान—२०४
शेरमार—८५०
शेरेमेतोफ—२४९, २५०
शेलगुनोफ—३८५, ३९४
शैबान—६९, १६५, ३१५
शैबानी—१६३, १६७, १७०, १७३, २७५, २८१, ३२१
"शैबानीनामा"—१८३, १९६
शैबानी-वंश—१६५
शोकुर—१११
शोनग्रावेन—३६६
श्चेप्किन—५१७
श्माइलर—३५८
"श्रम-वेतन"—३९३
"श्रमिक मुक्ति"—३९३
श्रीनगर—१५२
श्लिष्ट—९३
श्लुशेल्बर्ग—२५०, २५७
श्वेत-ओर्दू—४५ (अक-ओर्दू), ५०, ५१, ५६, ६८, १६५, १६७, १६८, ३४३
श्वेत-मेश—१७२
सइकुयु—४८४
सइसान झील—३१८ (नोर)
सइस्सन—३२९, ३३३
सईदाबाद—४०
सकसिन—२१ (निम्न वोल्गा-उपत्यका)
सकसीनत—१८
सक्या पण्छेन्—८
सखसौल (फरास)—४२९
सखालिन—३७२, ३८०
सगर्स्की—३२७
सगीरदश्त—५४५
सङ्-जी—३३४
सज्रोनोफ—५२२
सतलुज—१५१
सती—८२
सदरुद्दीन अर्दबेली—३९
सदरे जहान—१२३
सदोव्स्की—३९३ (अभिनेता)
सद्दे-सिकन्दरी—१६१
सन्-जक—३३४
सन्लित-चापू—३३२

सपिएहा—२२१
सपित्रोफ—३७२
सप्तनद—१२१, १२५, १३२, १३४, २९५, २९७, ३२४, ५१९, ५२८, ५३१, ५३२, ५३३, ५३६, ५३७, ५३८
सफर बी—४२८
सफरवीज—५१५ (उज्बेक)
सफावी—१७२ (वंश), १७३, १७७, १७९, १८१, १९४, १९६
सफेद खोजा—४२५
सफेद गारद—५५०-५२, ५५५
सफेदरान—५४३
सफेद हड्डी—३५८ (पुराना राजवंश)
"सबका थोडा"—२५९
सबा—१०४
सब्जवार—१५०, १५४, १७८, १८२, ४९९
"सब्रेमेन्निक"—३८५ (समकालीन)
समद—४४८
समय-माप—१५८
समर—५१९, ५२१, ५२५
समरकंद—२७, ३२, ४९, ५४, ५६, ५७, ६०, ६८, १२१, १२२, १२५, १२७, १२८, १२९, १३४, १३५, १३९, १४८, १४९, १५०, १५२, १५३, १५४, १५५, १५७, १६०, १६३ १६५, १६६, १६८, १६९, १७२, १७४, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८२, २०८, २७७, २७९, २८०, २८१, २९६, २९८, ३०२, ३०५, ३०७, ३३०, ३३६, ३४३, ३८७, ३९०, ४१५, ४२७, ४४७, ४५१, ४५५, ४५७, ४५८, ४६१, ४६२, ४६५, ४९९, ५१७, ५१८, ५१९, ५२१, ५२४-२५ (-विजय), ५२५
समरकंदी—६७, १५९
समसामुस्-सल्तनत —५५४ (ईरान)
समसोनोफ—४१३, ५५२, ५५४
समची—४२९
समदर—७४
समाजवाद—५०४
"समाजवाद और राजनीतिक संघर्ष"—३९३
समाजवादी क्रांतिकारी—३९७, ४१६, ४१७, ४१८, ५०५ (करेंस्की दल), ५१८, ५१९, (एस्० एर्०), ५२१, ५५०
समाजवादी जनतांत्रिक पार्टी—४०४, ५१८ (०मजदूर पार्टी)
समानोफ—४६४, ४६६ (राजुल)
समारा—२३७, २९१, ३५१, ३५८
समोयद (भाषा)—५४८
समोयित—९४
"समृद्धि-संघ"—३७३
सम्ड्व वआतुर—३३४
सरकश—५५
सरकेल—७४
सरखावा—४३७
सरख्स—४७३, ४७६, ४९०, ४९७
सरतक—२६, २७
सरदावाकुल—४८३
सरबाज—४३३, ४४८ (सिपाही)
सरमात—७१
सरवान—१३०, १३२, १८०
सरस्वती—१४१, ४८८
सरातोफ—२३७, २६२, ३७२, ३८६
सराय—१३, ३०, ३७, ३८, १०२, १५१, ५१४ (उज्बेक, महल)
सराय ओर्दा—२९८
सराय चिक—२९
सराय चुका—२८८
सराय तेमूर—४१
सराय बरका—३९, १८५
सराय बातू—३२
सराय बेरेक—६२
सराह—४०
सरिक—५४७ (तुर्कमान)
सरिकामिश—४१३
सरिकोल—४९८ (पर्वतमाला)
सरी—२०१
सरीखाना—४३६
सरीदुगान—५२०
सरीपुल—१७१, ४६१, ४६३ (सरेपुल)
सरीदागिसेफ—५३७
सरीसू—५७
सरूकउज़ेन—५७
सरेजूय—४५९
सरोग—७३
सरोवर—११३, १२५, १८६
सर्गा—३३३
सर्त (फारसी भाषी)—१९९, २०२, २०४, २०७, २०८, ३३१, ३६०, ४२७, ४२८, ४३१, ४५२, ४६९, ४८६, ५१८ (ताजिक)
सर्व—७१ (मकदूनी)
"सर्वरूस महाराजुल"—३९
सर्वदारी—१४७
सर्वहारा—३८७, ३९३, ३९९, ५०४ (प्रोलेतारी)
सर्वियन—३८६
सर्विया—३८०, ३८६ (बोसेनिया), ४११
सर्वेदार—१५०
सलगुर—५४७ (तुर्कमान)
सलजीदइ—३०
सलजूक—२०७
सलवर—३१९
सलार (तुर्कमान)—४७१, ४७३, ५४७
सलाहुद्दीन—१५७

सलूरी—२००
सलोर (तुर्कमान)—२००, ४९०, ४९१ (सलूर)
सल्जूकी—१२३, ४९९
सल्तानिया—३२१, ३३८
सल्तिकोफ-श्चेद्रिन—३९२
सवीवगा—८८
संगीत—१५६, २६६, ३९३ (-कला)
संदगाज—९७, ९८, १०७, ११६, २२३
संजर—१२३, १६६, ४८९
संत जार्ज—१२१, ४८२
संत-महत—२३१
संत मिखाइल—३५
संति—३८६
"संयुक्त स्लाव सम्मिलनी"—३७५
संविधान-सभा—४०१, ५१८
समद—१०८, २२०, ५१३
संस्कृत—९३
संस्कृति—३९६
साइबेरिया—६, ४६, ४७, ६३, १०१, १०८, १०९ (-विजय), १११, २१८, २१९, २२७, २३१, २३५, २४४, २६८, २८०, ३१५, ३१७, ३२६, ३२७, ३३३, ३३८, ३४६, ३४८, ३६१, ३७९, ३८८, ३९५, ३९७, ३९९, ४०९, ४०८, ४११, ५२८, ५२५, ५२८, ५३५, ५८८ (सिबेरिया)
सादन नोयन—३२१
सादात-सरोवर—३३२
सादिक—३०५
सादमोनफनी—११२
साबिर—३५५
साबिर हसन—५४३, ५८८
सादसू—८०
साउ आगर सानत—२२२
सा—१८०, २८०
सादुमान—५६
सान् स्तेफानो-सन्धि—३८६, ३८७
सावरान—४९, २७९ (नदी)
साम—६४
सामंत—८५ (युग), १०९, ४०६ (-वादी)
सामानी—४५३, ५१७, ५४१
सामी पाशा—५४५, ५४६
साम्प्रदायिक नेता—५१८
साम्यवाद—५२४, ५४९ (देखो कम्युनिस्ट, कम्युनिज्म भी)
सायन—२६ (भला राजा)
सायत—५१६ (उज्बेक)
सायत्र इस्पहानी—१९०
सायो—२४
सारदम—२४८
सारणी—१५७
सारा—१०३
सारिक—२००, २०७, २१०, ४७६, ४९१ (तुर्कमान), ४९२
सालार—११४
सालिस्क—३१७
सालीमराय—१४९, १५०
सावरान—८८, ५६, ५७, ६०, १६७, १६८
सावजी—१४७
सावा व्लादिस्लाव—२२५
साष्टांग प्रणिपात—२४१ (कौ-तो)
सासानी—७३ (ईरानी)
साहेब गिराई—२८७
साहित्य—१३७, १४७, ३९६
सिकंदर (ग्रीक)—५४३ (अलि-कसुन्दर)
"सिकन्दरनामा"—१६१
सिगनक—४६-४९, ५०, ५५, १६५, १६६, १६८, २७५, २८०, ३४६, ४५३
सिगाई—१८०
सिगान—३८८, ४३३, ४६१ (रोमनी, जिप्सी, लोली)
सिगवा—१११ (लपिना)
सिगस्मिन्द—१०९, २१८, २२२ (३)
सिङ-क्याङ—१८३, ३३५ (चीनीतुर्किस्तान)
सिताजी—१३८
सितारा-मुखासा—५२६ (बुखारामें)
सिय—७१
सिद्दी अहमद मिर्जा—१५८
सिनेउस—७५
सिन्ताव—४८१
सिवको—५२५
सिमओन—३८, ३९, ५२, ११०, २४१
सिम्बिर्स्क—२२, २३७, ३९४
सियाङ-याङ—५, ८ (सियाङ-फू), ११
सियानोफ—५२५
सियापोश (काफिर)—४६०
सिर (नदी)—४९, १२७, १५३, १७४, ३५२, ४३७, ४८४, ५१६, ५२०, ५३८, ५४१ (सिर-दरिया, यक्जर्त)
सिरगिली—५३०
सिरदरिया—६, ५५, १२१, १२९, १४९, १५०, २७९, ३०५, ३५१, ३५७, ३६०, ४२५, ४६७, ४७६, ४७८, ४७९, ४८०, ५२४, ५२८, ५३०, ५३५, ५३९, ५४१
सिरनाग—५१
सिरवान—५४ (शिरवान)
सिरिम (वातिर)—३५५-५७
सिरिया—३९ (शाम), १३०, १४०, १४५, १५१, २८९
सिर्दजान—१०३
सिलजीवुल—७२
सिल्ट वरगर—६६
सिल्वा—११०
सिवालिक—१३२

सिवास—१५२
सिविर—११२-१४, ११६, २३५, २३८, २७९, २८७, २८९, ३१९
सिविरखान—२८१
सिबोरगान—१३५
सिसिली—२४
सिहतियान—५१५ (उज्बेक)
सिंधु—१५१, २७१, १९४, ४४२ (सिंधु)
सिंविर्स्क—३९२
सिंहल—१०३
सी-खिम्—५३०
सीनिङ-फू—३३२
सीनोप—३८०
सीमा कमीशन—४९८
सीला—३४६
सीलेंड—२९९
सीमाती—१४८
सीस्तान—१४९, १५०, १५४
सुइउनिच—१६६, १६९, २१० (-वाला)
सुओमी—५४८ (फिन भाषा)
सुक—४३५
सुकलेन—११३
सुङ-ताइ—२१
सुङ-वश—५ (चीने), ७, ८
सुज्दल—२२, ३५, ८२, ८६, ९०, ९४, ९८
"सुदूर" (अध्यक्ष)—५४४
सुन्ताइ—५ (मगोल)
सुन्नी—१४५, ४४२, ४७२, ५२६
सु-वो-ताइ—२१, २३ (-सुवोदाइ)
सुभानकुल्ली—१९१, २११, ४६६ (दूत)
सुमारोकोफ—२६६
सुरखाव—१७४, ४५९, ५४४
सुरा—२३४
"सुरिम"—५८
"सुरून"—४९
सुलेमान—५६, १४७, १९४
सुल्तान—१४१, १४४, १४७, १५४, १५६, १५८, १६५, १६८, १८०, १९१, १९९, २००, २०१
सुल्तान अली—१६२ (मशहदी), १६३, १७२
सुल्तान अबुल्फ़ैज़—३४८
सुल्तान—१६० (हुसैन), १६२ (-मुहम्मद), १६६ (-गिराई), २७८ (निगारखानम्), ३०४ (महमूद), ४४१ (-सजर)
सुल्तानिया—३३, ५५, ६० (ईरान), १०४
सुवर्ण-ओर्दू—३, ८, १८, ३८, ५१, ९८, १००, १०६, १२१, १२८, १३३, १४२, १६५, १८५, ३१५, ५१४, ५२९
सुवाइत—३२१
सुवारोफ—२६०, २६३, २६९, ३६८, ३६९, ३८२, ३९८
सुसगन—११२
सुगारी—२४२, २४३
सूइरमान—३३०
सूइलहिन्—३३०
सूकिन—३१६
सूक्ष्मचित्र—१५७
सूचाउ—५, ३१३ (चीन)
सूज़क—१६५, १६८, ४३५
सूनित—३२१
सूफी—५६, १२४, ३०५ (सत), १३८, ४३४ (मुअज़्ज़िन)
सूवुइ—१९९
सूयुन्ज़िक—१७६
सूयुनज़ी—१९६
सूर—२६६
सूरिकोफ (चित्रकार)—३९६
सूर्यदेवी—१४०
सेइराम—३२८
सेकिज़-इगाचे—२९७
सेगोन-गर—१६६
सेङगे—३२८ (सेत्सेन खान)
सेच—२३०
सेचक—३१९ (थैशी)
सेचेनोफ—३९२
सेतजुलेत सराय—६६
सेत्सेन खान—३२१, ३२८
सेनेकसे—४८४
सेपूकोफ—५१
सेप्तेन वल्जुर—३३१
सेवल—३७
सेवान—२१
सेमरेक—३६१ (सप्तनद)
सेमारचिम—५१४ (उज्बक)
सेमियोन—५२, ११४
सेमीप्लातिन्स्क—२५१, ३१९, ३३३ (सप्तप्रासाद), ३४७, ३४८, ३७९, ५३०
सेमी-वायर्-श्चिना—२२२
सेमीरेचिन्स्क—४५२
सेमीरोद्सक—३५५
से-मू—१२ (तुर्क मुसलमान)
सेमूर—५९
सेमेओन—९७
सेरख्स—१६१, १८१ (सरख्स)
सेरपूकोफ—६३, २२०, २८९
सेराब्रेंका—१११
सेराय—४९, ६० (सराय)
सेरायचुक—६० (सरायचुक)
सेराय सोलकुल—५०
सेरेनइका—४०८
सेरोफ (चित्रकार)—३९६
सेर्गेयफ—५०८ (अत्योंम)
सेलिगोर—२२
सेलिगिन्स्की—२५३, २५४
सेलीजर—२०५
सेली-त्रेन्नोय—५१
सेलेसिया—६
सेलदूज—१३७
सेल्गा—११०
सेल्वेस्तर—१०७
सेवक्रन—१३३

सेवर्दिनो—३६९
सेवलरी—२५
सेवस्तापोल—३८०
"सेवस्तापोलकी कथायें"—३८०
सेविनत्रेड—५३,५४ (खानजादी)
सेव्रेर—८२ (निवरि)
सेवेन्यान—७७
सेवेर्ग—८४, ८९, १००, २१८, २०५
सेहन—१२९
सेंटीरेट—४०८
सैकार्की—१२५
सैची केर्शेस—३२२
सैदान (गाव)—५६३
सैदिक—१६७
सैदियत—११३, ११५
सैफुद्दीन—२७ (त्रावगी), ६०, १२३, १८०
सैयद अबुल्गाजी—१२८
सैयद इमामकुल्ली—१८७
सैयद उबैदुल्ला—१९४
सैयद—६९ (-खान), १५० (-बरका), १५९ (यवका), १६६ (-बाबा), २३५ (-नादिर), ४७७ (-मुहम्मद खान), ४७९ (-मुज्रहीमखान)
सैरान—८९
सैराम—५५, १६६, १७६, १८०, २९७, ३०२, ३०७, ३०९, ३१०, ३३०, ३३९, ३६२, ३५०
सैरामकासिम—५०
सैमन क्लीट—३३२
सो—८२८
सोग्द—५५ (देश), १३०, ४०८, ५२६
सोग्दी—५१६, ५२७, ५३६, ५४९, ५५१
सोर्ना—८०१
सोरदा—१२८
सोलतुर (सेना)—८७३
सोफिइस्कया—९३
सोफिया—८५ (-गिर्जा), १०९ २४६, २४७, २४९
सोफिया पालेओलोगस—१०१
सोफियान—११९, २२०
सोलम्दर्स्सा—३३४
सोलोवेत्स्क—३८०
सोवियत—१२१, ५०३, ५०५, ५०८ (कांग्रेस), ५१२, ५२२, ५६९
सोवियत-शासन—४३३, ५२३ ५३९
सोवियत समाजवादी गणराज्य-सघ—५१२, ५१३
सोविति सयुक्त समाजवादी गण-राज्य—५१२
सोमकान—११४
सोमवा—१११
स्कदनेविया—३१, ७८, ७५ (स्कॅडनेविया)
स्किफिया—७३ (शकस्तान)
"स्कोत"—८६ (पशु)
स्कोवेलेफ—४३७ (जेनरल), ४८४, ४९५, ४९६, ५१८, ५२२
स्कीन—४९७
स्टाकहोम—४०४
स्टुअर्ट—४२६
स्टोडर्ट—४८८, ४८५, ४७४ (कर्नल)
स्तानित्सा—१०८ (थाना)
स्तानिस्लाउस—२५३
स्ताफ—३९८ (अडमिरल)
स्तालिन—२६७, ३९६, ४०२, ४०५, ८१०, ८११
स्तालिनवाद—५१, २३६, २६२
स्तागोफ—३९३ (मानिकार)
स्तिफन—२०९
स्तेपान—२३५, २३८
स्तेपान रजुनिन—३८०, ३९०
स्तेपानोफ—१२५, ५५२
स्तेपी—३१९, ४८० (दश्त, मैदान, मरु)
स्तेफन बाथोरी—२३०
"स्तेरेगुश्ची" (ध्वसक पोत)—३९८
स्तेलमाशेस्की—५३३
स्तोल्पिन—४१०
स्तोरज़ेवो—२२५
स्त्रान्दमान—३४९
स्त्रूवे—४३२
स्त्रेल्त्सी—२२४, २३७, २४६, २४९ (गारद सैनिक), २३६ (राज-सैनिक), २५२, ३१७
स्त्रेल्त्स्की—२२८
स्त्रोगोन—११० (पीटन)
स्त्रोगनोफ—१०९, ११०, १११, ११३
स्थानीय बोर्ड (जेम्स्त्वो)—४०४
स्पा—१०२ (त्राता)
स्पाल्नो—२३
स्पोरिदोन—१०९, ११०
स्मेत—१५२, २४८, ३७३
स्मेनिश—१३५, ३६८
स्मेरित्स्की—३७०, ३७२
स्मोलेन्स्क—५, ७७, ८२, ८८, ९१, १०१, १०६, २१८, २२२, २२३, २२५, ३६८, ३९१
स्मोल्नी—५०८, ५०९, ५११
स्याहकुलाह—२३
स्याहपोश (अवहूप)—४४९
स्लाव—३९, ७१, ७५, ८४, २३०, ३८६, ४०६ (-वाद)
स्लावानिक—२५२ (अक्षर), २६५
स्लावेत्स—८२
स्लिकी—१२५
स्लेव—३४

स्लोवोदा—११३
"स्वतंत्र रूसी प्रेस"—३८२
स्वाप्निक समाजवाद — ३९१ (उटोपियन)
स्वायत्ततावादी (खोकद-)—५१९, ५२०
स्वारोग्—७३, ७६ (देवता)
स्वारोज्रिक—७३ (स्वारोचिप)
स्विट्जरलंड—२७०, ३६५ (स्वीजर्लैण्ड), ४१२, ४१३, ५०४
स्वीड्—९४, ९६, १००, २२२, ४६५
स्वीडन—१०८, १०९, ११६, २२२, २३४, २४८, २५०, २५३, २५६, २५९, २६३, ३१८, ३३१, ३६६, ३६७, ४३०, ५०३
स्वीयाज्रेस्क—१०७
स्व्यातोपोल्क—८३, ८४ (१), ८७ (२)
स्व्यातोस्लाव—७८, ८२ (१), ८४, ८६, ८७, ८८
स्वेन्-चाङ—२९३, ४५९
स्वेर्द् लोफ्—४०५, ५१८
हकीम—१२६
हगान—३ (कआन, खाकान, खआन, खान)
हङ-वाउ—९
हचवेचा—५१५ (उज्वेक)
'हज्रत'—४४६
हजरत-इमाम—४६०, ४६१
हज़ार—१९४
हज़ारज़मीन—३२
हज़ारा—१४७, १७२
हज़ारास्प—३२, १७८, १९६, १९९, २०१, २०२, २०३, २०४, २०६, २०७, २०८, २१०, २११, ४६७, ४६९, ४७५, ४७६, ४८३, ४८५
हनफी—३२५
हनीफा—३२५
"हफ्त-किश्वर"—१६१
"हफ्त-पैकर"—१६१
हवश आमिद—१२६, १२७
हमदान—३३, १४०, २०९
'हमारे मतभेद"—३९३
हम्दुल्ला मुस्तौफी—१४६
हम्माम—१६१ (स्नानागार)
हरावल—२९५
हरिद्वार—१५१
हरिनोके नरकट—५०
हरीरूद—४९१, ४९८
हर्बिन—३९७
हर्मांगन—२२३
हर्शल—२६५
हलव—८ (अलेप्पो), १४०
"हश्त-बहिश्त"—१६१
हश्तरूद—४० (अष्टनद)
हमज़ा—१७५
हसन—१०२-४ (-बेग), १३९, १४४, १९९ (-कुल्ली), १५०, (-दमगानी), २००, ४७१ (-मुराद)
हड़ताल—४१४
हसीय—९४
हसे—९४
हाकिम—५४३
हाकिमबेग—३३२
हागान—१३९ (हगान भी)
हाजिम—२०३, २०५
हाजी—४३ (खा), ६०-६२ (-तर्खन-अस्त्राखान), १३६, १३७, १५७, १९१, २०२–३ (-मुहम्मद), ५२६ (अकरम, -दादखाह)
हाजी बिरलस—१३७, १४८
हान्स-संघ—३५
हाफिज़—१४७, १९१, ५१५ (उज्बेक)
हामी—३१० (चीन), ३३०
हालैंड—२२५, २४८, ३६७
हावड़ा—३७७
हांगकांग—३९७
हिट्लर—१०१, २५८, ३६८, ४०६
हिंद-चीन—३, १०, ३९७
हिंदी-युरोपीय—५३९
हिंदुस्तान—१०३, १०४, १४४, १७६, १८३, २०३, ३५५, ४२६, ४४२, ५३६
हिंदू—१०३, १८८, ४४२
हिंदूकोह—१५१, १७२, १८९, १९०, ४४२ (हिंदकुश), ४६१ (हिंदूकुश)
हिंदू मंदिर—२९९
हिंदू-विहार—२९९ (बौद्ध)
हिप्पोक्रेत—१९२, २८९
हिंदो आंग्लियन—२६६
हिमानी—५३५
हिरात—६६, ६९, १५०, १५४ (खुरासान), १५४, १५५, १५७, १५८, १५९, १६१, १७२, १७३, १७६, १७८, १७९, १८१, १८२, १८५, १९३, ३०३, ४४१, ४४२, ४४९, ४५५, ४६१, ४७४, ४९०, ४९७, ४९८, ४९९, ५२७
हिल्ला—१४४
हिसार—५६, १६७ (ताजिकिस्तान), १७१, १७३, १७४, १७६, १७७, १७८, १८६, २११, ३०६, ३०९, ४३९, ४५९, ५२७
हिसार कुदुज—३०४
हुगली—३७७
हुमायू—१०६, १७७, १७९, १८३, ३०८, ३१३
"हुर्रियत" (=स्वतंत्रता)—५२६
हुलाकू—८ (वंश), १०, १७, १२५, १२६–३०, १३९, १४०, २८४
हुलीजन हान—३३२
हुसेन—३३ (चोवान), १०३, १३५, १४८, १५०, १५७,

१७७
हूनेन सूफी—५३ (सूफी), १६० (-मिर्जा), १७१ (-बेकरा), ३०४
हुगर—६ (मगयार)
हुगरी—२३, ३९, ७८, ८४ (मगयार), ५४८
हुगेन्यिन—१०९
हु-कुङ—५
हू-तुकन्तू—३२४
हूण—२४, २८४, ३३४, ३४३, ५१७, ५२८, ५२९, ५३६, ५४१, ५४८
हेक्तर—५३६
हेजिर—१२५, १२६
हेतमन—२२१, २३०, २३१, २३४ (प्रधान), २५० (अतमन)
हेदविग—५३
हेदेनस्त्रोम—३७२
हेनरी—६, १५२
हेक्ताल—७२, ५१७, ५३९, ५४१, ५४८
हेमन्तप्रासाद—२५७, ३८७, ३९९, ५०९ (पेत्रोग्रादमें), ५१०
हेया—५१७
हेरमोलोस—११०
हेराकिल—७३
हेरात—१३१, १३५
हेर्जन—३८२ (एर्ज़न)
हेर्जेगोविना—३८६, ४०७, ४०८, ४११
हेनगियोस्—४४८ (कप्तान)
हेलमन्द—१७२
हेलसिंकी—५०७, ५०८
हेलेना द्वीप—३७०
हेस्टिंग्स—३९०
हैदर—६८, ११६, १७३, १७५, १७९, २९९, ३०५, ३०७, ३०८, ३११, ३१२, ३१३, ४२३, ४५८ (अमीर बुखारा), ४७१
हैदर मिर्जा—३०३ (इतिहास-कार), ३०५
हैरत शाह—५४५
हो—३४६ (चीन सेनापति)
होनान्—५ (चीन), ७
होर्द—२८७
हो-लो-लो-कि-या—२९३
होल्स्टाइन—२५७
ह्वाङ-हो—९ (पीत नदी)